Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

महाकवि आ० ज्ञान सागर

बृहद् संस्कृत-हिन्दी शब्द कोष

उदयचन्द जैन

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

महाकवि आ० ज्ञान सागर

बृहद्
संस्कृत-हिन्दी शब्द कोष

भाग-१
(अ से ण)

प्रो० उदयचन्द्र जैन

न्यू भारतीय बुक कॉर्पोरेशन
दिल्ली (भारत)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इस पुस्तक का कोई भी भाग किसी भी रूप में या किसी भी अर्थ में प्रकाशक की अनुमति के बिना प्रकाशित नहीं किया जा सकता। सर्वाधिकार प्रकाशक के अधीन हैं।

प्रकाशक :
न्यू भारतीय बुक कॉर्पोरेशन
५८२४, (समीप शिव मंदिर) न्यू चन्द्रावल,
जवाहर नगर, दिल्ली-११०००७
फोन : २३८५१२९४, २३८५०४३७ ५५१९५८०९
E-mail : newbbe@indiatimes.com.

कोबा (गांधीनगर)
पि.३८२००९

प्रथम संस्करण : २००६

आई.एस.बी.एन. : ८१-८३१५-०४८-९ (set)

मुद्रक :
जैन अमर प्रिंटिंग प्रेस
दिल्ली-७

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विषय सूची

आत्म कथ्य	(v)
संक्षेपिका	(x)
वर्ण अ से ह तक	१-१२५०
पारिभाषिक शब्द	१२५१-१२५८
भौगोलिक शब्द	१२५९-१२६३
नामवाचक शब्द	१२६४-१२८३
विशिष्ट शब्द	१२८४-१२९६

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आत्म कथ्य

पंचविधमाचारं चारंति चारयन्तीत्याचार्याः चतुर्दशविद्यास्थानपारगाः एकादशाङ्गधरा।

पांच प्रकार के आचार का जो आचरण करते हैं, उनके अनुसार चलते हैं, वे आचार्य हैं। वे चौदह विद्या स्थानों में पारगामी एवं ग्यारह अंगों के धारी होते हैं। वे ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप और वीर्य से परिपूर्ण बौद्धिक एवं आध्यात्मिक विचारधारा से युक्त सूत्र का व्याख्यान करते हैं। स्वयं स्वाध्याय में लीन दूसरों को भी स्वाध्याय की ओर लगाते हैं। उनके श्रुत से प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग और द्रव्यानुयोग के विषय प्रकाश में आते हैं, जो श्रुत कहलाते हैं। वे श्रुत जिन वचन हैं, जिन्हें आगम, जिनवाणी, सरस्वती, आप्त वचन, आज्ञा, प्रज्ञापना, प्रवचन, समय, सिद्धांत आदि कहा जाता है।

श्रुत के धारण करने वाले श्रुतधराचार्य कहलाते हैं। वे प्रबुद्ध होने से प्रबुद्धाचार्य, उत्तम अर्थ के ज्ञाता होने से सारस्वताचार्य आदि कहलाते हैं। उनकी रचनायें तीर्थ बन जाती हैं। क्योंकि वे तीर्थंकर की वाणी हैं जिन्हें आचार्य गुणधर, आचार्य धरसेन, आचार्य पुष्प दन्त, आचार्य भूतवलि, आचार्य मंछू, आचार्य नागहस्ती, आचार्य वज्रयस, आचार्य कुन्दकुन्द, आचार्य वट्टकेर, शिवार्य, स्वामी कार्तिकेय आदि प्राकृत मनीषियों के साथ-साथ संस्कृत के सूत्रकार, काव्यकार, कथाकार, पुराण काव्य प्रणेता आदि ने सारस्वत मूल्यों की स्थापना की।

तावार्थसूत्र के सूत्रकर्त्ता उमास्वामी ने दस अध्यायों में वीतराग वाणी के समग्र पक्ष को प्रस्तुत कर दिया। आचार्य समन्तभद्र की भद्रता के आचार विचार आदि के साथ-साथ दार्शनिक मूल्यों की स्थापना के लिए आप्तमीमांसा जैसे ग्रंथ को लिखकर संस्कृत दार्शनिक साहित्य को पुष्ट किया। उन्होंने स्वयंभूस्त्रोत, स्तुतिविद्या, युक्त्यानुशासन, रत्नकरण्डश्रावकाचार जैसे सारगर्भित ग्रन्थों की रचना की। वे कवि हृदय सारस्वताचार्य हैं जिन्होंने ई० सन् द्वितीय शताब्दी में जीवसिद्धि, प्रमाणसिद्धि, तावविचार, कर्म आदि पर पर्याप्त प्रकाश डाला। आचार्य सिद्धासेन ने अनेकान्तसिद्धि के लिए सन्मतिसूत्र ग्रंथ की रचना की और उन्हीं ने कल्याण मंदिर स्त्रोत काव्य की रचना की। वे नय और प्रमाण की व्यापक दृष्टि को लिए हुए उक्त ग्रंथों को मूल्यवान् बनाते हैं।

आचार्य पूज्यपाद को आचार्य देवनंदी भी कहा गया वे एक कुशल व्याकरणकार हैं। उन्होंने जैनेन्द्र व्याकरण की सूत्रबद्ध रचना की। उनको तावार्थ सूत्र पर लिखी गई वृत्ति सर्वार्थसिद्धि के नाम से प्रसिद्ध है वे योग, समाधि, आदि के विषय को आधार बनाकर समाधितन्त्र एवं इष्टोपदेश की रचना करते हैं। पात्र केशरी का पात्र केशरी स्त्रोत भावपूर्ण है। आचार्य जोइन्दु प्राकृत, संस्कृत और अपभ्रंश के काव्यकार हैं, उनका परमात्म प्रकाश (अपभ्रंश) योगसार, श्रावकाचार, आध्यात्मसंदोह, सुहासिततंत्र जैसे संस्कृत रचनाएं भी प्रसिद्ध हैं। आचार्य मानतुंग का भक्तामर स्त्रोत जन-जन में प्रिय है। आचार्य विमल सूरि का प्राकृत का काव्य पउमचरियं रामायण के विकास में योगदान प्रदान करता है। आचार्य रविसेन ने भी राम से संबंधित पद्म चरित्र नामक ग्रंथ की रचना की, जो संस्कृत में सर्वबद्ध है। आचार्य जहानदीना वरांगचरित्र भी चरित्रकाव्य की परंपरा का सुन्दरतम् अलंकृत ग्रन्थ हैं।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आचार्य अकलंकदेव न्यायशास्त्र के विशेषज्ञ माने जाते हैं। जिन्होंने जैन न्याय की यथार्थता को संस्कृत में प्रस्तुत किया। उनके प्रसिद्ध ग्रंथ इस बात के प्रमाण हैं। लघीयस्त्रय (स्वोपज्ञवृत्तिसहित) न्यायविनिश्चय (स्वोपज्ञवृत्तियुक्त) सिद्धिविनिश्चयसवृत्ति, प्रमाण संग्रहसवृत्ति, तत्त्वार्थवार्तिक सभाष्य, अष्टशती (देवागम-विवृत्ति) आचार्य वीरसेन की ध वला टीका, जय धवला टीका, सभी दृष्टियों से महत्वपूर्ण है। आचार्य जिनसेन ने भगवान ऋषभदेव से संबंधित जो रचना की है वह आदि पुराण के नाम से प्रसिद्ध है। उन्होंने संस्कृत में पार्श्वाभ्युदय नामक महाकाव्य की रचना की है यह नवीं शताब्दी का महत्वपूर्ण ग्रन्थ है।

आचार्य विद्यानंद परीक्षा प्रधानी आचार्य माने जाते हैं जिन्होंने दर्शन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य किया। आप्तपरीक्षा, प्रमाण परीक्षा, पत्र परीक्षा, सत्यशासनपरीक्षा विद्यानंद महोदय, श्रीपुर पार्श्वनाथ स्त्रोत, तावार्थ श्लोक वार्तिक अष्टसहस्त्री युक्त्यनुशासनालंकार आदि जैसे दार्शनिक ग्रंथों का महत्वपूर्ण स्थान है। आचार्य देवसेन का दर्शनसार भावसंग्रह, आराधनासार, तावसार, लघुनयचक, आलापपद्धति आदि ग्रंथ संस्कृत साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

जैन संस्कृत काव्य परम्परा

संस्कृत काव्य परम्परा राष्ट्रीय मानवीय और सांस्कृतिक मूल्यों से जुड़ी हुई परम्परा है। जिसमें वैदिक परंपरा और श्रवण परंपरा इन दोनों ही परंपराओं का महत्वपूर्ण स्थान है। वेद उपनिषद् आदि के उपरान्त, रामायण, महाभारत आदि महाप्रबंधों की रचना हुई, जिन्होंने विषय, भाषा, भाव, छन्द, रस, अलंकार आदि के साथ-साथ मूल कथा को गतिशील बनाया। रामायण, महाभारत आदि के महाप्रबंध को जो काव्य शैली प्रदान की उसे कवि भाष अश्वघोष, कालिदास, भारती, माघ, राजशेखर आदि ने काव्य-शैली को गति प्रदान की। उनके प्रबंध महाप्रबंध बने।

संस्कृत काव्य परंपरा का संक्षिप्त विभाजन

१. **आदिकाल**-ई० पू० से ५ ई० प्रथम शती तक।

२. **विकासकाल**-ई० सन् की द्वितीय शती से सातवीं शती तक।

३. **ह्रासोन्मुखकाल**-ई० सन् की आठवीं शती से बारहवीं शती तक।

संस्कृत काव्य परंपरा के विविध चरणों में माघ, हर्षवर्धन, वाणभट्ट, मल्लिनाथ, आदि कवियों के काव्यों ने प्रकृति का सर्वस्व प्रदान किया। उनके कवियों ने अनेक महाप्रबंध लिखे, तथा महाकाव्य भी अनेक लिखे हैं। इसी तरह चरित काव्य, खण्ड काव्य, कथा-काव्य, चम्पूकाव्य आदि ने काव्य गुणों को जीवन्त बनाया।

जैन संस्कृत काव्य परम्परा

महावीर के पश्चात् सर्वप्रथम जैन मनीषियों ने आगम ग्रंथों की रचना की जो प्राकृत में है। प्राकृत के साथ जैनाचार्यों ने संस्कृत में भी अनेक रचनायें की हैं। जो कवि प्राकृत में रचना करते थे वे संस्कृत के भी जानकार थे परंतु उन्होंने संस्कृत में रचनायें प्राय: नहीं की, परंतु जो संस्कृत कवि थे उन्होंने प्राय: संस्कृत में ही रचनायें की, और कुछेएक रचनायें प्राकृत में की, प्रारंभिक में बारह अंग, उपांग, चौदह पूर्व, जैसी रचनाएं प्रसिद्ध हुई इसके अनंतर संस्कृत के प्रथम सूत्रकार आचार्य उमा स्वामी ने संस्कृत की सूत्र परंपरा को गति प्रदान की जो काव्य जगत् में कवियों के मुखारबिन्द की अनुपम शोभा बनी। आचार्य समन्तभद्र जैसे सारस्वताचार्य ने संस्कृत में न्याय, स्तुति और श्रावकों के आचार योग्य काव्यों की रचना की। इसके अनन्तर संस्कृत में ही आचार्य पूज्यपाद, आचार्य योगेन्द्र, आचार्य मानतुंग, आचार्य जिनसेन, आचार्य विद्यानन्द, आचार्य देवसेन, आचार्य अमितगति, आचार्य अमरचन्द्र, आचार्य नरेन्द्रसेन आदि ने जो धारा प्रवाहित की वह

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

काव्य परम्परा को गतिशील बनाने में सहायक हुई। पुराणकाव्य और महाकाव्य दोनों ही जहां विकास को प्राप्त हुये वहीं अनेक चरित काव्य भी काव्य की रमणीयता से युक्त पौराणिक और ऐतिहासिक विवेचन को करने में समर्थ हुये।

डॉ० नेमीचन्द्र शास्त्री ने काव्य-विकास यात्रा के तीन चरण प्रतिपादित किये हैं।

(क) चरितनामांत महाकाव्य

(ख) चरितनामांत एकान्त काव्य

(ग) चरितनामांत लघु काव्य

चरित्रनामांत नाम से युक्त अनेक काव्य रचनायें हुई, जटासिंह नन्दी का वरांगचरित, रविसेण का पद्मचरित, वीरनंदी का चन्द्रप्रभुचरित, असग कवि का शान्तिनाथ चरित, वर्धमान चरित, महाकवि वादिराज का पार्श्वनाथ चरित, महाकवि महासेन का प्रद्युम्नचरित, आचार्य हेमचन्द्र का कुमारपाल चरित, गुणभद्र का धन्यकुमार चरित, उत्तर जिनदत्त चरित, नेमिसेन का धन्यकुमार चरित, धर्मकुमार का शाभद्रचरित, जिनपाल उपाध्याय का सनत कुमार चरित, मलधारी देवप्रभ का पांडवचरित, मृगावतीचरित, माणक चन्दसूरि का पार्श्वनाथ चरित, शान्तिनाथ चरित, सर्वानंद का चंद्रप्रभुचरित, पार्श्वनाथ चरित, विनयचंद्र का अजितनाथ चरित, पार्श्वचरित, मुनिसुब्रतचरित आदि कई ऐसे महाकाव्य हैं जो चरित प्रधान हैं।

विक्रम की चौदहवीं शताब्दी में मलधारी हेमचंद्र ने अनेक चरित ग्रंथों की रचना की। जिनमें नेमिनाथ चरित प्रमुख है। इसी तरह भट्टारक वर्धमान का वरांगचरित, कमलपभ का पुंडरीकचरित, भावदेवसूरि का पार्श्वनाथचरित, मुनिभद्र का शांतिपथचरित एवं चन्द्र तिलक का अभयकुमार चरित, शास्त्रीय महाकाव्य के लक्षणों से युक्त हैं जो पुराण कथा से परिपूर्ण प्रबंध की काव्यगत विशेषताओं को लिये हुए है।

संस्कृत काव्य की परंपरा में अकलंक, गुणभद्र, समन्तभद्र, मिमरचंद, काव्य महाभारत के कवि का काव्यत्व अनुपम है। इसके अतिरिक्त भी अनेक काव्य महाकाव्य लिखे गये। महाकवि हरिश्चंद्र का धर्मशर्माभ्युदय वैदिक परंपरा के संस्कृत काव्य रघुवंश, कुमारसंभव एवं किरात् आदि उस समय का प्रतिनिधित्व करते हैं। कवि हरिचंद्र का जीवंधर चंपू महाकवि असग का वर्धमान चरित भी महत्त्वपूर्ण है। वादीभसिंहसूरि की क्षत्रचूणामणि सूक्ति शैली का काव्य हैं। *जिनसेन का आदिपुराण, हरिवंश पुराण आदि भी महत्वपूर्ण हैं। शिशुपालवध की शैली पर आधारित जयंतविजय का भी* महत्वपूर्ण स्थान है। वस्तुपाल ने स्तुति काव्यों की विशेष रूप से रचना की आदिनाथ स्त्रोत, अंबिका स्त्रोत, नेमिनाथ स्त्रोत, आराधना गाथा आदि भक्ति प्रधान रचनायें हैं। इसमें कवि भारती के निरात आजुनेय की काव्य शैली भी है।

संधान ऐतिहासिक और स्तुति अभिलेख आदि काव्य भी लेन परम्परा में लिखे। द्विसंधान में कवि धनंजर ने कथा और काव्य दोनों का समावेश किया जो महाकाव्य की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। सप्तसंधान के रचनाकार मेघ विलयमणि है उनकी अन्य रचनाऐं भी है, जिनमें देवनन्द महाकाव्य, शांतिनाथ चरित, दिग्विजय महाकाव्य, हस्तसंजीवन के साथ-संस्कृत युक्ति प्रबोध नाटक मिलते हैं। नेमिदूत समस्यापूर्ति काव्य है। जैन मेघदूत कवि मेरुगुप्त की प्रसिद्ध रचना है। इसी तरह शीलदूत चरित्रगणि की रचना है। प्रबंध दूत के रचनाकार वादिसूरी हैं।

जैन काव्य परम्परा में द्वितीय, तृतीय शताब्दी से लेकर अब तक अनेक रचनाएं लिखी जा रही है। बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में जैन जगत् के प्रसिद्ध महाकवि ज्ञानसागर् ने अनेक प्रकार की रचनाएं की। उनमें जयोदय, वीरोदय, सुदर्शनोदय, भद्रोदय जैसे महाकाव्य दयोदयचम्पू, सम्यंक्त्वसारशतक, मुनि मनोरंजनाशीति, भक्तिसंग्रह, हितसम्पादक आदि कई काव्य हैं।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

महाकवि ज्ञानसागर सिद्धांतवेदता के साथ-साथ प्रबंध काव्य में निपुण एवं सुलझे हुए महाकवि हैं उनके काव्यों की संस्कृत साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका मानी जाती है क्योंकि उनमें संस्कृत काव्य कला के पक्ष आदि विद्यमान हैं। उनकी ज्ञान-साधना में सिद्धांत एवं प्रबंध का महत्वपूर्ण स्थान है।

संस्कृत काव्य के आलोक में संस्कृत नाटकों का भी महत्वपूर्ण योगदान है। जैन जगत में विक्रांत कौरव जैसा नाटक प्रसिद्ध है। उसी संस्कृत में भास, कालिदास का शाकुन्तलम्, चन्द्रोदय, अविमारक, उत्तररामचरित, प्रतिमानाटकम् आदि अनेक नाटक संस्कृत और प्राकृत का प्रतिनिधित्व करते हैं। काव्य की रमणीयता में उनके शब्द क्या है उनका अर्थ क्या है एवं उनके क्या महत्व है यह तो ज्ञान-संस्कृत हिन्दी कोष से ही ज्ञात हो सकेगा। इस ज्ञान-संस्कृत शब्द-कोष में जैन संस्कृत काव्यों एवं वैदिक संस्कृत काव्यों के कुछ एक उद्धरण भी दिये गये हैं।

यह महाकवि आ० ज्ञान सागर संस्कृत हिन्दी शब्द-कोष सभी दृष्टियों से महत्वपूर्ण बनाया गया है। इसमें अधिक से अधिक ज्ञान के आधारभूत शब्दों को सम्मलित किया गया है। यह वैदिक एवं जैन दोनों ही विद्याओं के शब्दों से संबंधित कोश ग्रंथ है। इसे साहित्य के अनेक विषयों के साथ जोड़ने का प्रयास किया गया परन्तु यह सीमित शब्दों का शब्द कोश केवल शब्द कोष नहीं है अपितु विविध शब्दार्थ का शब्द-कोष भी है। कुछ स्थानों पर शब्द चयन के साथ-साथ व्युत्पत्ति, परिभाषा, शब्द विश्लेषण, अर्थ गाम्भीर्य आदि को भी उचित स्थान दिया गया, जिससे इसकी उपादेयता अवश्य ही शब्द के अर्थ में सहायक बनेगी। इस कोश में सामान्य शब्द के अर्थ के साथ-साथ विशिष्ट अर्थ बोधक शब्दों को भी महत्व दिया गया।

शब्द संकलन

संस्कृत के स्वर और व्यंजन दोनों ही को क्रमबद्ध रखकर उन्हें उपयोगी बनाया गया है। इसमें सीमित शब्दों के उपरांत भी शब्द योजना को विशिष्टत अर्थों के साथ उद्धरण शब्द, पर्यायवाची शब्द आदि भी संख्याक्रम के अनुसार दिये गये है। यद्यपि संस्कृत में कई कोश ग्रंथ प्रकाशित हुए हैं। उनका अपना महत्वपूर्ण स्थान है। उनके क्रम युक्त शब्द में आचार्य के वों काव्य के शब्द संस्कृत हिन्दी शब्द कोश में समाहित हो गये हैं। इसे आवश्यक एवं अधिक उपयोगी बनाने के लिए वैदिक और जैन दोनों ही संस्कृतियों के शब्दों को स्थान दिया गया है। यहां यह ध्यान देने योग्य विचार है कि इसमें विस्तार की अपेक्षा संक्षिप्त में ही विषय विवरण को दिया गया है। इसके शब्द संग्रह में प्रायः प्रचलित शब्दों को स्थान दिया गया।

कोश का शब्द प्रवष्टियां एवं भाषागत विशेषताएं भी कुछेक संकेत के साथ ही दिये गये हैं। संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, कृदन्त, विशेषण, तद्धित आदि कितने ही प्रयोग कोश को महत्वपूर्ण बनाते हैं। इसलिए आवश्यकतानुसार कुछ ही स्थानों पर शब्द और अर्थ के चयन में उनकी सहायता दी गई है।

ज्ञान संस्कृत-हिन्दी शब्द कोश में आचार्य ज्ञानसागर के परम शिष्य आचार्य विद्यासागर और आचार्य विद्यासागर के ही प्रबुद्ध विचारक मुनि पुंगव सुधासागर जी, क्षुल्लक गंभीर सागर, क्षुल्लक धैर्यसागर एवं अन्य प्रबुद्ध विचारकों के परम आशीष से इस शब्द कोष को गति दी गई। यह कहते हुए मुझे अत्यंत गौरव का अनुभव हो रहा है कि जिन शब्द कोशकारों के शब्द और अर्थ के चयन करने में सहयोग मिला वह अत्यंत ही उपकारी है। जैनेन्द्र सिद्धांत कोश, जैन लक्षणावली, संस्कृत-हिन्दी शब्द कोश, राजपाल हिन्दी शब्दकोश, प्राकृत हिन्दी शब्द कोश आदि के संपादकों का मैं अत्यंत आभारी हूं। इसके तैयार करने में मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय उदयपुर के दर्शन विभाग के प्रोफेसर के० सी० सोगानी, जैन विद्या एवं प्राकृत विभाग में प्रोफेसर प्रेम सुमन जैन, सह आचार्य हुकुमचन्द्र जैन एवं अन्य विभागीय

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सहयोग से इसे इस रूप में प्रस्तुत किया गया। जिन्होंने प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप में इसे गतिशील बनाया उनका मैं हृदय से आभारी हूं।

संस्कृत जगत् के वे सभी काव्यकार पूज्य हैं जिनकी विविध कृतियों को देखने का अवसर प्राप्त हुआ। मैं उनके शब्द सागर में प्रवेश नहीं कर पाया। परंतु यदा कदा जो कुछ भी उनसे ग्रहण किया या उन ग्रंथ कर्त्ताओं या उन संपादकों के पाठों को स्थान दिया। इसलिए मैं इस सहायता के लिए हृदय से आभार व्यक्त करता हूं।

आभारी हूं हितैषियों का, सहयोगियों का और अत्यंत आशीष को प्राप्त हुआ मैं आचार्य विद्यानंद के चरणों में बारंबार नमोस्तु करता हूं और यही भावना व्यक्त करता हूं कि उनका आशीष तथा मुनि पुंगव सुधासागर की सुधामयी वाणी इस महाकवि आ० ज्ञान सागर संस्कृत हिन्दी शब्द कोश की ज्ञान गंगा को गतिशील बनाये रखेगी। विशेष आभार है उन व्यक्तियों का जिन्होंने मुझे बहुत सम्मान दिया और उत्तम सुझाव भी दिये। इस शब्द में गागर से सागर तक की यात्रा गृह आंगन में ही हुई जिसमें सहयोगी बने घर के सदस्य ही। श्रीमती डॉ० माया जैन ने गृहणी के उत्तरदायित्व के साथ-साथ इसे उपयोगी बनाने में भी सहयोग किया। पुत्री पिऊ जैन एम- एस. सी०, बी० एड०, एवं प्राची जैन के अक्षर विन्यास ने भी गति प्रदान की। मैं इस शब्द-कोश के प्रकाशक श्री सुभाष जैन, न्यू भारतीय बुक कारपोरेशन, दिल्ली का भी आभार व्यक्त करता हूं। जिन्होंने इसे छापकर जनोपयोगी बनाया। मैं, साहित्य मनीषियों से निवेदन करता हूं कि वे अपने सुझावों से इसे उपयोगी बनाने का प्रयत्न करेंगे ताकि आगे आने वाले संस्करण में यदि उनको समावेश किया गया तो अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव करूंगा।

२ अप्रैल, २००५ —डॉ० उदयचंद्र जैन

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संक्षेपिका

अमर०	अमरकोष
जयो०	जयोदय महाकाव्यम्
जयो० म०	जयोदय महाकाव्यम्
तत्त्वा०	तत्त्वार्थसूत्र
त०वा०	तत्त्वार्थ राजवार्तिक
त०वा० श्लोक	तत्त्वार्थ श्लोकवार्तिक
दयो०	दयोध्यम्
धव०पु०	धवला पुस्तक १ से १६
न्या०	न्यायदीपिका
प्रमे०	प्रमेयरत्नमाला
भ० सं	भक्तिसंग्रह
मू० मूला०	भगवती आराधना
मुनि-	मुनिरञ्जनासीति
मू०/मूला०	मूलाचार
वि० लोचन	विश्वलोचन कोष
वीरो०	वीरोदयम्
सुद०	सुदर्शनोदय
समु०	समुद्रदत्त चरित्र
सम्य०	सम्यक्त्वशतकम्
स०सि०	सर्वार्थसिद्धि
हि०सं०	हितसंपादक

मूल शब्द

पु०	पुलिंग
नपुं०	नपंसुकलिंग
स्त्री०	स्त्रीलिङ्ग
क्रि०वि०	क्रिया विशेषण
वि०	विशेषण
अव्य०	अव्यय
अक०	अकर्मक
सक०	सकर्मक

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अ

अ देवनागरी लिपि का प्रथम अक्षर। प्रथम स्वर। इसका उच्चारण स्थान कण्ठ है। 'अ' को अकार, अवर्ण भी कहते हैं।

अः पु० [अव्+ड] महादेव, विष्णु, पवित्र। अकारो महादेवः (जयो० १/२), 'अ' अर्थात् विष्णु। (वीरो० १/५)

अ (अव्यय) यह कई अर्थों में प्रयुक्त होता है। निषेधात्मक अर्थ के लिए इसका प्रयोग संज्ञा शब्दों से पूर्व किया जाता है। वैधव्य-दानादयशोऽप्यनूनम् (जयो० १/६०) 'न नूनमनूनम्' (जयो० वृ० १/६०)

(क) **सादृश्यवाची**-समानता, सरूपता या सादृश्यता व्यक्त करने के लिए, संज्ञा से पूर्व 'अ' अव्यय का प्रयोग किया जाता है। विद्याऽऽनवद्याऽऽप न वालसत्त्वम्। (जयो० १/६)

(ख) **अभाव**-वाची-जहाँ निषेध, अविद्यमानता, अभाव, प्रतिषेध, रहित आदि को व्यक्त किया जाता है वहाँ 'संज्ञा शब्दों से पूर्व 'अ' अव्यय का प्रयोग किया जाता है। अहीनलम्बे भुजमञ्जुदण्डे। जयो० १/२५ रूपं प्रभोरप्रतिमं वदन्ति। वीरो० (१२/४४) केनाप्यजेयं भुवि मोहमल्लम्। (वीरो० १२/४५) उपद्रुतः स्यात्स्वगमित्ययुक्तिर्यस्य (वीरो० १२/४७)

(ग) **भिन्नता**-अन्तर, भेद, विभिन्नता, अयोग्य। कैर्देहिभिः पुनरमानि न योग्ययोगः (वीरो० २२/१३ जो युक्तियुक्त कहते हैं, उनका यह कथन युक्ति संगत नहीं है। सहेत विद्वानृपदे कुतो रतम् (जयो० २/१४०) विद्वान् अयोग्य पद पर कैसे स्थित हो सकता?

(घ) **अल्पता** लघुता, न्यूता, कृश आदि अल्पार्थवाची अव्यय के रूप में प्रयुक्त होता है। अनल्पपीताम्बर-धाम-रम्याः (वीरो० २/१०)।

(च) **अप्राशस्त्य्** बुराई, अयोग्यता, लघुकरण, अनुपयुक्त, अकार्य, आदि में इस अव्यय का प्रयोग होता है। कार्योऽप्यकार्यो जगते जनस्य (वीरो० १/३८)

(छ) **विरोध-वाचक**-विरोध, प्रतिक्रिया, विपरीतता, अनीति आदि के रूप में इस तरह के अव्ययों का प्रयोग होता है। वर्णेषु पञ्चत्वमपश्यतस्तु, कुतः कदाचिच्चपलत्वमस्तु। (जयो० १/४८) अनीतिमत्यत्र जनः सुनीतिस्तया। (सुद० १/२३)

(ज) क्रिया एवं विशेषण में भी अव्यय का प्रयोग होता है।

(झ) कृदन्त प्रयोगों के साथ 'अ' होने पर नहीं अर्थ होता है।

(ट) 'अ' अव्यय संज्ञा में प्रयुक्त होने पर कभी-कभी उत्तरपद की प्रधानता को भी प्राप्त होता है।

(ठ) विस्मयादि बोधक के रूप में भी 'अ' का प्रयोग होता है।

(ड) सम्बोधन में भी 'अ' का प्रयोग होता है।

(ढ) भूतकाल के लङ्, लुङ् और लृङ्लकार में भी 'अ' का प्रयोग होता है। स शुचेव शुक्लत्वमवाप शेषः। (जयो० १/२५)

अऋणिन् (वि०) ऋण रहित, कर्ज से मुक्त नास्ति ऋणं यस्य जहां 'ऋ' व्यञ्जन ध्वनि माना गया है। ऋणमुक्त।

अंघ्रिन् (नपु०) चरण, पाद, पैर। (वीरो० ३/१०)

अंश् [चुरादि उभयादि अशंयति ते] हिस्सा करना, वितरित करना।

अंश [अंश्+अच्] भिन्न संख्या, लव। (वीरो० हि० २/१४)

अंशः [अंश्+अच्] हिस्सा, भाग, टुकड़ा। करिष्णवो दुग्ध मिवार्णसोंऽशात्। (भक्ति, पृ० ७) पानी के अंश से दुग्ध की तरह।

अंशः [अंश्+अच्] तद्रूप। सृष्टिर्यस्य समन्तात् सर्वस्त-दंशरूपतापन्नो भवेत्। (जयो० २६/८८)

अंशकः [अंश्+ण्वुण्] लग्न, शुभलग्न। मृदु मौहूर्तिक-संसदोंशकम् (जयो० १०/२०) ज्योतिर्विद गोष्ठी से निर्दोष लग्न प्रस्तुत करते।

अंशकः [अंश्+ण्वुण] निर्मित, रचित, जटित। रत्नांशकैः पञ्चविधैर्विचित्रः। वीरो० १३/५। पांच प्रकार के रत्नों से निर्मित। हिस्सेदार, भागीदार, सम्बंधी, सहभागी सहयोगी (सम्य० १०८)

अंशकिन् (वि०) विचारशील, चिंतन युक्त। पश्यांशनिन्दारुणमाशुगेवा (वीरो० ४/१९)

अंशनम् (अंश्-ल्यट्) बांटने का कार्य, विभाजन का कार्य।

अंशभाज (वि०) [अंशभाज] अंशधारी, सहभागी।

अंशयितृ (पु०) [अंश्+णिच्+तुच्] विभाजक, हिस्सेदार।

अंशल (वि०) [अंशं लाति ला+क] हिस्सेदार, सांझेदार, विभाजक, सहभागी।

अंशि [क्रि०वि०] सहभागी, सहयोगी।

अंशिन् [अंश्+इनि] सहभागी, सहयोगी, विभाजक, हिस्सेदार।

अंशी (वि०) [अंश्+इनि] अंशी, यह एक दार्शनिक शब्द है।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अंशीह तत्क्र० खलु यत्र दृष्टि, शेष: समन्तात्, तदनन्य सृष्टि, स आगतोऽसौ पुनरागतो वा, परं तमन्वेति जनोऽत्र यद्वाक्।। (जयो० २६/८८)

इस जगत् में अंशी कौन? जिस पर दृष्टि होती है, वही अंशी है और सब ओर विद्यमान शेष पदार्थ अन्य रूप हैं। जिसकी अपेक्षा होती है, वही अंशी हो जाता है, तदरूप कहलाने लगता है और शेष अतद्रूप है।

अंशुः [अंश्+कु] किरण, रश्मि, प्रभा, कान्ति। रदांशु पुष्पाञ्जलिमपर्यन्ती। (सुद० पृ० १२) दांतों की कान्ति पुष्पाञ्जलि अर्पित करती हुई। कृत: श्वेतांशु-कायाऽपि भूया। (सुद० पृ० ८७) श्वेत किरण के समान काया। शीर्षे हिमांशुमुकुलम्। (१८/७०)

अंशुः (पु०) सूर्य, रवि। उपद्रुतोंऽशुस्तिमिरैः (जयो० १५/२२) संकट के समय अंशु/सूर्य ही अपने शरीर को खण्ड-खण्डकर दीपकों का वेष रख घर-घर में सुशोभित हो रहा है। (अंशुस्त्विषि रवौ लेशे 'इति विश्वलोचने)

अंशुकम् [अंशु+क-अशवः सूत्राणि विषया यस्य] वस्त्र, कपड़ा, परिधान, (जयो० २/८०) अम्भसा समुचितेन चांशुक-क्षालनादि परिपठ्यतेऽनकम्। (२/८०)

निर्मल जल से धोए गए वस्त्रादि निर्दोष माने जाते हैं। ध्वजाली विपादांशुका। (जयो० ८) ध्वजाओं की पंक्तियां निर्मल वस्त्र/सफेद वस्त्र भी हैं। अंशुक इत्यनेन कुचाञ्चले। (जयो० वृ० १७/६४) अञ्चल का वस्त्र भी इसका अर्थ है। प्राय: रेशमी वस्त्र या मलमल के लिए इस शब्द का प्रयोग होता है।

अंशुजाल (न०) किरण समूह, प्रभामण्डल, कान्तरूप।

अंशुधर (वि०) किरणधारक, प्रभामण्डित।

अंशुपति (पु०) सूर्य, दिनकर, रवि।

अंशुबाण (पु०) सूर्य, दिनकर, रवि।

अंशुभृत् (वि०) अंशुधारक, किरण युक्त, प्रभारञ्जित।

अंशुमान (वि०) अंशुवाला, सूर्य। (वीरो० ८/९)

अंशुमालिन् (वि०) सूर्य, दिनकर, रवि।

सद्योऽलिमुद्धरति शल्यमिवांशुमाली।

सूर्य अपनी प्रिया कमलिनी को कांटे की तरह निकाल रहा है। (अंशुमाली सूर्योऽब्जिनीभ्य: कमलिनीभ्य: शल्यमिव कण्टकमिवालिं षट्पदमुद्धरति। (जयो० वृ० १८/६१)

अंशुल (वि०) प्रभायुक्त, कान्तिवान्, सूर्य, चमकीले वस्त्र। (जयो० ५/६२)

अंशुस्वामिन् (पु०) दिनकर, सूर्य।

अंशुसमाजः (पुं०) किरण समूह, चमक युक्त परिधान।

अंशुहस्तः (पु०) सूर्य, दिनकर, रवि।

अंस् [चु० पर०] अंसयति-अंसापयति, अंश, खण्ड करना।

अंसः [अंस्+अच्] ०भाग, खण्ड० स्कन्ध। (जयो० ६/४०)

अंसकूटः (पु०) बैल का कंधा।

अंसफलक (वि०) रीढ़ का ऊपरी भाग।

अंसभार (वि०) कंधे पर रखा गया भार, जूआ।

अंसभारिक (वि०) भारवाहक।

अंसभारिन् (वि०) भारवाहक।

अंसल (वि०), [अंस्+लच्] बलवान्, शक्तिसम्पन्न।

अंसु (पुं०). सूर्य ०प्रभानन्दन, ०दिनपति (सुद० १/३८) ०अंसुमाली, सूर्य।

अंह् (भ्वा० आ० अंहते, अंहितुं, अंहित) जाना, समीप जाना, प्रयाण करना, आरम्भ करना, भेजना, चमकना, बोलना, प्रतिपादित करना, कथन करना।

अंहतिः (स्त्री) [हन्+अति-अंहादेशश्च] भेंट, उपहार, व्याकुल, कष्ट, चिन्ता, दु:ख, बीमारी।

अंहस् (न०पुं०) अंह:हसी आदि।

अंहितिः (स्त्री)[अंह्+क्तिन् ग्रहादित्वान्त् इट्] उपाहार, दान, प्राभृत, भेंट।

अंह्रि [अंह्+क्रिन्-अंहति गच्छत्यनेन] अंध्रि, पेड़ की जड़, पैर, चरण।

अकंदता (वि०) असारता, ०अनिहयता, ०अनिश्चयता।

अक् (भ्वा०प०र० अकति, अकित) जाना, सांप की तरह टेढ़ा-मेढ़ा चलना।

अक (नपुं०) दु:ख, पीड़ा, पाप। नाकमवानानुष्ठानेन। (जयो० २२/२४) अकं न प्राप्तवान् (जयो० वृ० २२/२४) दु:ख नहीं प्राप्त किया। नाकं स्वर्गं तथैवाकेन दु:खेन रहितं नाकम्। (वीरो० २/२२ वृ०)

अकाय नाम पापाय क्लेशसंभूत: कष्टकारक:। (जयो० २८/१२)

अकम् [न कम्-सुखम्] सुख का अभाव, पीड़ा, पाप, दु:ख (सम्य ६/६)

अकच (वि०) कच हीन, केश रहित, मुण्डित।

अकञ्चित् (वि०) पापापहार, दु:खापहारी, दु:खजयी, पापजयी। त्वकयि त्वकजिच्च नस्तता। (जयो० २६/५) अस्माकं प्रजाजनामकजित् पापापहारो।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अ-कथि (वि०) कष्टवर्जित, दुःखरहित। (जयो० ३/६)

अकनिष्ठ (वि०) [न अकनिष्ठः] बड़ा, श्रेष्ठ, उत्तम, ज्येष्ठ।

अकन्या (वि०) [न कन्या अकन्या] जो कुमारी न हो, पत्नी।

अ-कर (वि०) [न करः अकरः] कर मुक्त, निष्क्रिय, अकर्मण्य, अपाहिज।

अकनाशिनी (वि०) दुःखहारिणी, पाप विनाशिनी। हृदयमाशु ददावकनाशिनी। (जयो० ९/७८)

अकप्रद (वि०) दुःखदायी (सम्य १५४/१०१)

अकरणम् (न०) [कृभावे ल्युट्] अक्रिया, कार्य का अभाव।

अकरिणः [स्त्री०) [नञ्+कृ+अनि] असफलता, निराशा, अप्राप्ति।

अकरणीय (वि०)[नास्ति करणं योग्यः] नहीं करने योग्य। (दयो० पृ० ३३)

अकर्ण (वि०) [न कर्णः] कर्ण रहित, श्रवणशून्य, बहरा। कर्ण रहित सर्प भी होता है। [कलङ्करहितोऽस्ति] कलङ्क-रहित, निष्कलङ्क, श्रेष्ठ, उत्तम।

नोटः–अकर्तन् से **अकलङ्क** (वि.) [कलङ्क रहितोऽस्ति] ०कलङ्क रहित, निष्कलङ्क, ०श्रेष्ठ, उत्तम ०शुद्ध, विशुद्ध। विभिद्य देहात्परमात्मतत्त्वं, प्राप्नोति सद्योऽस्तकलङ्कसत्वम्। (सुद० १३३)

जो अन्तरात्मा बनकर देह से भिन्न, निष्कलङ्क-सत्, चिद् और आनन्द रूप परमात्मा का ध्यान करना है, वह स्वयं शुद्ध बनकर परमात्म तत्त्व को प्राप्त होता है।

अकलङ्कार्थमभिष्टुवन्ती कुमुदानां समूहं चैधयन्ती किलास्ति। लङ्कानां व्यभिचारिणीनामार्थो लङ्कार्थः, अकोऽघकरश्चासौ लङ्कार्थश्च तम्। (वीरो० १/२५)

अकलङ्कः (पुं०) आचार्य अकलङ्कदेव।

अकलङ्कस्य यशसः प्रतिष्ठानाय यन्मति। (जयो० २२/८४) अष्टसहस्री नामटीका किलाकलङ्कस्य नामाचार्यस्य यशसः प्रतिष्ठानाय भवति। जिसका ज्ञान अकलङ्क नामक आचार्य के अष्टशती नाम ग्रन्थ की प्रतिष्ठा/स्पष्टीकरण के लिए आवश्यक है। किलाकलङ्को यशसीति वा यः। (जयो० ९/९०) यश में कलङ्क रहित, अकलङ्क हैं/आचार्य अकलङ्क का यश न्यायशास्त्र में प्रसिद्ध है। अतुलकौतुकवती वा या वृततिरकलङ्कसदधीतिः। (सुद० पृ० ८२), अत्यन्तमनन-पूर्वक आत्मसात् करके अतुल कौतुक वाली महावृत्ति अकलङ्क की है।

अकलङ्ककृतिः (स्त्री०) ०अकलङ्क रचना, आचार्य अकलङ्क द्वारा रचित अष्टशती और अष्ट सहस्री टीका जैन न्याय के विषय से सम्बंधित कृतियाँ हैं। ०विशिष्ट रचना। अकलङ्ककृतिः शाला, विधानन्दविवर्णिता। (जयो० ३/७७) यह कलङ्क रहित/निर्दोष रचना अष्टशती आचार्य अकलङ्क द्वारा रची गई, आचार्य विद्यानन्द द्वारा न्याय की श्रेष्ठतम् कृति अष्टसहस्री मानी गई, जिस पर आचार्य अकलङ्क द्वारा विवर्णिका प्रस्तुत की गई।

अकलङ्का कलङ्कवर्जिता कृतिर्विनिर्मितिर्यस्याः सा। यस्माद्विद्याया आनन्देन विवर्णिता। अनेन अष्टसाहस्रीनाम-न्यायपद्धतिश्च समस्यते। (जयो० वृ० ३/७७) निर्दोष/ कलङ्करहित चमत्कार जन्य महावृत्ति राजवार्तिक की रचना आचार्य अकलङ्क ने की है।

अकलङ्कदेवः (पुं०) आचार्य अकलङ्क अष्टशती न्यायग्रन्थ के कर्ता, राजवार्तिक महावृत्ति के प्रणेता और अष्टसहस्री विवर्णिकार आचार्य अकलङ्कदेव हैं।

अकलङ्कारलङ्कारः (पुं०) अष्टशती वृत्ति (वीरो० . ४/३९)

अकल्क (वि०) नियन्त्रित, योग्य, निष्पाप, शुद्ध।

अकल्प (वि०) [न कल्पः] कल्प रहित, विचार रहित, ०अयोग्य, ०दुर्बल, अतुलनीय।

अकल्प्य (वि०) अग्राह्य।

अकषाय (वि०) कषाय रहित, क्षमत्वशील। यस्मिन् नास्ति कषायः।

अकषायत्व (वि०) विगतकषायता।

अकषायवेदनीय (नपु०)ईषत् कषाय रूप से वेदन जहां होता है।

अकस्मात् (अव्य०) अचानक, सहसा, एकाएक।

अकस्मात्क्रिया (स्त्री०) दूसरे किसी को लक्ष्य करके बाण आदि के छोड़ने पर जो उससे उसका घात न होकर अन्य ही किसी व्यक्ति का घात हो जाता है। सहसाक्रिया।

अकाण्ड (वि०) [समयो रहितः] अवसराभाव, असमय, विकाल।

अकाण्ड एवाथ शिखण्डिमण्डलः। (जयो० २४/२२) अकाण्ड एवावसराभावेऽपि। (जयो० २५/२२) मयूरों का समूह आनन्द से पुलकित होता हुआ असमय में ही कोमल नृत्य करता है।

अकाण्ड (वि०) आकस्मिक, अप्रत्याशित, सहसा, अचानक।

अकाण्डजात (वि०) असमय में उत्पन्न, सहसा उत्पन्न, आकस्मिक उत्पादक।

अकाण्डपात (वि०) आकस्मिक घटना।

अकान्त (वि०) अकस्य दुःखस्यान्तकरीमकान्तां, किञ्चाकान्ता-शोभनीयाम्। (जयो० पृ० ११/५६) दुःख को मिटाने

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वाली, अशोभनीय, कान्तहीन, प्रभारहित। सुपर्वधामाभिभवामकान्ताम्। (जयो० ११/५६)

अकाम (वि०) इच्छा, रहित, काम मुक्त, अनुराग विहीन।

अकाम (वि०) अनिच्छापूर्वक। (सम्म०८४)

अकामनिर्जरा (स्त्री०) अनिच्छापूर्वक जो कर्म निर्जरा होती है, वह अकामनिर्जरा है।

अकाम-मरण (नपु०) अनेच्छमरण। अकामेन अनीप्सितत्त्वेन म्रियतेऽस्मिन् इति अकाममरणं बालमरणम्।

अकामुक (वि०) शान्तिपूर्वक। (जयो० २/१४१) गतानुगत्याऽन्यजनैरथाहता, मृता च साऽकामुकनिर्जरावृता। (जयो० २/१४१)

अकामुकनिर्जरा (स्त्री०) शान्तिपूर्वक कर्म निर्जरा। अकामुकनिर्जरया शान्तिपूर्वक कष्ट-सहन-हेतुना आवृताऽलङ्कृता। (जयो० वृ० २/१४१)

अकाय (वि०) निरङ्कुश। (वीरो० १/३८) अशरीर, सिद्ध।

अकाय (वि०) कामातुर, काम की शङ्का सहित। अकस्य दुःखस्याय: सम्प्राप्तिभावस्तस्य। (जयो० वृ० १५/३९)

अकाय (वि०) अनङ्ग, काम, कामातुर। अकायस्य अनङ्गस्य कामस्य शङ्का सहित: कामुतरो भवतीति।

अकाय (वि०) ०काम रहित, ०शरीर रहित, ०सिद्ध, ०अशरीरी। कायोऽप्यकायो जगते। (वीरो० १/३८)

अकाय-क्लेश (वि०) पाप परिकर। अकाय नाम पापाय क्लेशसंभूत: कष्टकारक:। (जयो० वृ० २८/१२)

अकाय-क्लेशसंभूत (वि०) पाप परिकर रूप। पापकष्ट कारक। (जयो० वृ० २८/१२)

अकार (पु०) अवर्ण, प्रथम स्वर। अकारेण शिष्टं प्रारब्धोच्चारणम्। (जयो० वृ० २८/२०) 'अ' से शिष्ट उच्चारण भी होता है।

अकार (वि०) अपूर्व, आद्य। (जयो० वृ० १६/४९) अकारस्य ईषदर्थकत्वेन हीनार्थकत्वात्। (जयो० ५/११) अकार: पूर्वस्मिन् यस्याक्तामपूर्वाम्।

अकारण (वि०) कारण रहित, निराधार। कथं पुनरकाणरमेव विपरीतं गीतवान्। (दयो० ९०) आज बिना कारण ऐसी उल्टी बात क्यों कर रहे हैं।

अकारात्समारभ्य (वि०) 'अ' से लेकर 'म' पर्यन्त। (जयो० वृ० २८/२६)

अकारिन् (वि०) स्थान, (जयो० १७/५२)

अकारिन् (वि०) [न कारिन्] प्रयोजन रहित। हनन, घातक। सुदर्शनोऽकारि विकारि। (सुद० १०७)

अकाय-शङ्कासहित (वि०) दु:ख प्राप्ति की शङ्का सहित। (जयो० १५/३१)

अकार्य (वि०) अनुपयुक्त।

अकाल (वि०) असमय, विकाल। अकाल एतद् घनघोररूपमात्तम्। (सुद० १२०)

अकाल (वि०)असामयिक, प्राक्कालिक।

अकालमृत्यु (त्रि०) असमय मरण।

अकिञ्चन (वि०) निष्परिग्रही, त्यागयुक्त, नग्न। मेरा कोई नहीं और मैं भी किसी का कुछ नहीं हूँ। अकिञ्चनोऽस्म्यन्तरनुस्मरेण, कायोऽपि नायं मम किं परेण। (भक्ति सं० ५०)

अकिञ्चनता (वि०) अकिञ्चनत्व, सकलग्रन्थत्याग, संगमुक्ति।

अकिञ्चनधर्म (वि०) आकिञ्चन्यधर्म, सकलग्रन्थत्यागधर्म। (जयो० २८/३१) हमारे पास कुछ नहीं। (जयो० वृ० १२/१४१) संगीत गुण संस्थोऽपि, सन्नकिञ्चन रागवान्। प्रशंसनीय गुणों की स्थिति होने पर भी सकलग्रन्थत्यागधर्म वाले। द्रागकिञ्चनगुणान्वयाद्धतेदृङ् न किञ्चिदिह सम्प्रतीयते। (जयो० १२/१४१)

न विद्यते किञ्चनापि यत्र सोऽकिञ्चनो गुणस्तस्यान्वयाद्धेतोरिहास्माकं गृहे, ईदृक् किञ्चिदपि परं न प्रतीयते तदस्मात्। (जयो० वृ० १२/१४१) हम लोग अकिञ्चन गुण के धारक हैं, अत: हमारे पास आपके (वरपक्ष) सत्कार करने योग्य कोई वस्तु नहीं है।

अकिञ्चिज्ज (वि०) [अकिंचित्+ज्ञा+क] कुछ न जानने वाला, निपट अज्ञानी।

अकिञ्चित्कर (वि०) निरर्थक, अर्थहीन। अत्यये च तयोश्चासावकिञ्चित्करतां व्रजेत्। (जयो० ७/३७)

अकिञ्चित्करता (वि०) निरर्थकता, कुछ नहीं रहना। तयोरत्यये नाशे सति असौ अकिञ्चितृकरतां निरर्थकतां व्रजेदिति चिन्तनीयम्। (जयो० वृ० ७/३७)

अकिता (वि०) दु:खित्व, कष्ट। इति असौ अकितायाः स्थलं अभूत्। ऐसी सभा देखकर मन में थोड़ा सा कष्ट का अनुभव किया। (जयो० ५/३५)

अकी (वि०) दु:खी, पीड़ित। गङ्गामभङ्गां न जहात्यथाकी। (जयो० १/८, ९) दु:खी होकर शङ्कर नित्य प्रवाहित होने वाली गङ्गा को कभी नहीं छोड़ते।

अकुञ्चित (वि०) उदरचेता। न कुञ्चितोऽकुञ्चित:, मरालतुल्य-उदारभावना युक्त: (जयो० ३/९) हंसवद् कुञ्चिताश्रय: (जयो० २/९)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अकुटिलत्व (वि०) कुटिलता रहित, सरल (सुद० १/२७)
अकुण्ठ (वि०) अनल्पपरिणामभृत। (जयो० १०/
अकुष्ट (वि०) अबाध, स्थिर, प्रबल। *अत्यधिक, अबाध, स्थिर, प्रबल।
अकुतः (क्रि०वि०) कहीं से नहीं, कुछ भी नहीं।
अकुप्यम् (नपुं०) सोना, चांदी, बिना खोट की धातु।
अकुलीन (वि०) नाभेरुत्पन्न उत्तमकुलजात। (जयो० वृ० (१/३५)
अकुशल (वि०) असंयम, अविरति। अशुभ, दुर्भाग्यपूर्ण।
अकुशलभावः (पुं०) असंयमभाव, अशुभभाव। अकुशलो भावो अवरत्यादिरूपः।
अकूपारः [नञ्+कूप+ऋ+अण्] ०समुद्र, ०सूर्य, ०कछुआ, ०पाषाण।
अकृच्छ (वि०) ०सरलता, सुविधाजनक, ०कठनाई से युक्त।
अकृत (वि०) [नञ्+कृ+क्त] जो नहीं किया गया, अधूरा, ०त्रुटित, अनिर्मित, अपरिपक्त्व। ०कष्टदायक। ननु परिग्रह एष बलादककृदथ। (जयो० २५/२७)
अकृत् कष्टदायकोऽस्ति। (जयो० २५/२७)
अकृतता (वि०) कष्टदायकता। ०त्रुटि पूर्ण।
अकृतार्थ (वि०) असफल।
अकृतात्मन् (वि०) अज्ञानी, मूर्ख, असंतुलित।
अकृत्य (वि०) वृत्ति अभाव। (वीरो० १७/१९) ०अपूर्ण गृहस्थस्य वृत्तेरभावो ह्यकृत्यं भवेत्यागिनस्तद्विधिर्दुष्टकृत्यम्।
अकृष्ट (वि०) [नञ्+कृष्+क्त] ०वंजर, ०उपज रहित भूभाग बिना जुता, अकृषता।
अक्का (स्त्री०) [नञ्+कत्+टाप्] माँ, माता, जननी।
अक्त (वि०) [अक्+क्त] अभिषिक्त, सिंचित, सना हुआ।
अक्तम् (अञ्च्+क्त) कवच, वर्मन्।
अक्रम (वि०) [नास्तिक्रमो यस्य] अव्यवस्थित।
अक्रिय (वि०) निष्क्रिय, क्रिया हीन।
अर्कः (पुं०) सूर्य, दिनकर, रवि। (जयो० २/११) जयो० वृ० ७/७३ अर्क एव तमसावृतोऽधुना। अमावस्या के दिन सूर्य के समान इस माङ्गलिक बेला में।
अर्कः (पुं०) आक, आकवृक्ष, क्षुद्रवृक्ष। अर्कः क्षुद्रवृक्षविशेषः (जयो० वृ० ७/६७)
अर्ककीर्तिः (पुं०) अर्ककीर्ति, भरतेशसुत। भरतेशसुतस्य अर्ककीर्तेः अनेकसदस्यैः। (जयो० वृ० ४/३०) अकम्पनदेश का राजा। (जयो० ४/१)
आदिराज इमाह सुरम्यमर्ककीर्तिमचिरादुपगम्य। (जयो० ४/१)
(ख) अर्ककीर्ति का अपर नाम रविरीति। रविरीतिरर्ककीर्तिः। (जयो० वृ० ४/५) अर्कस्य सूर्यस्य कीर्तिरिव कीर्तिर्यस्य सः। (जयो० ४७/३४)
जिसकी कीर्ति अर्क/सूर्य के समान है।
अर्कचारः (पु०) सूर्योदय (जयो० १८/२)
स्वस्तिक्रियामतति विप्रवदर्कचारे (जयो० १८/२)
सूर्योदय विप्र के समान स्वस्तिक्रिया शोभनक्रिया/स्वस्तिपाठ को प्राप्त हो रहा है।
अर्कता (वि०) आक सदृश। (जयो० ७/६९)
अर्कतापरिणत (वि०) आक सदृश सम्भूत। (जयो० ७/६९)
अर्कः क्षुद्रवृक्ष विशेषस्तत्तायाः परिणतौ सम्भूतौ। अर्थात् जो अर्क/क्षुद्रवृक्षविशेष है वह उत्पन्न हुआ।
अर्कदलम् (नपुं०) आक पत्र। (जयो० ६/१८)
अर्कदलजातिः (स्त्री०) आकपत्र की उत्पत्ति। (जयो० ६/१८)
कटुकं परमर्कदलजातिः। (जयो० ६/१८) आक के पत्तों की जाति अत्यन्त कटुक होती है।
अर्कदेवः (पु०) अर्कप्रभ देव। (समु० ६/२४) कापिष्टलोऽभ्येत्य बभूव पुत्रः, किलार्कदेवः स मुदेकसूत्रः। (ससु ६/२४) रश्विवेग ही कापिष्ट स्वर्ग में जाकर अर्कप्रभदेव हुआ।
अर्कदेवः (पुं०) अर्कदेव, अर्ककीर्ति, अकम्पनदेश का राजा। (जयो० १८/६८) अर्कदेवः सूर्यनामनरपतिः। (जयो० वृ० १८/६८)
अर्कपराभवचक्रबन्धः (पुं०) कवि द्वारा सर्ग के अन्त में दिया गया छन्द। इसके प्रत्येक चरण में १९, १९ अक्षर हैं।
वन्दना अर्कः सक इह परम्पराध्वंसभवाश्रवम्।
ऽ।ऽ, ऽऽ।, ।।।, ।ऽ।, ऽऽ। ।ऽ।, ऽ
अर्कप्रभदेवः (पुं०) अर्कदेव। कापिष्ट स्पर्श को प्राप्त राजा। (जयो० वृ० ६/२४)
अर्कबिम्बः (पुं०) सूर्यमण्डल। (जयो० १५/४४)
अर्कयशः (पुं०) अर्ककीर्ति राजा, भरतेशसुत, अकम्पन देश का नृप। (जयो० १९)
अर्करीतिः (स्त्री०) सूर्यचेष्टा, सूर्य की उदय रूप चेष्टा। (जयो० वृ० १८/५१) अम्भोरुहस्य सहसा समुदर्करीतिं स्वोकुर्वतो मधुरसं प्रतिजातगीतिम्। (जयो० १८/५१) सूर्य की उदय रूप चेष्टा मधुरस और कमल की स्पष्टता को प्राप्त हो रहा है। अर्कस्य सूर्यस्य रीति चेष्टामुदयलक्षणामुत चोदर्करीतिम्। (जयो० वृ० १८/५१) ०अर्ककीर्ति नामक राजा।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अर्कसार: (पुं०) सूर्य हर्ष, सूर्यप्रसरण। अर्कस्य सूर्यस्य सार: प्रसरणम्। (जयो० वृ० १८/७१) पुण्याहवाचन परा समुदर्कसारा। सूर्य का प्रसरण यह कहने में तत्पर है कि 'आज पवित्र दिन है।'

अर्कसंस्कृत-कुड्यम् (नपुं०) भास्करभासितभित्ति, सूर्य 'की' किरणों से देदीप्यमान दीवारें। अर्केण संस्कृतानि यानि कुड्यानि तेषु भास्करभाषित भित्तिषु। (जयो० वृ० १०/८९)

अर्काङ्कित (वि०) सूर्यप्रभाभासित। (जयो० १०३) विधु-बन्धुरं मुखमात्मनस्वमृतै: समुक्ष्यार्काङ्कितम्। (जयो० १०३) शोभनाङ्गी ने प्रातर्वेला में सूर्य की प्रभा से चिह्नित अपने चन्द्रमा के समान मुख को अमृत/दूध/जल से धोया।

अक्ष् [भ्वा०स्वा०पर०अक०] अक्षति अक्ष्णोति। पहुंचना, व्याप्त होना, संचित होना।

अक्ष: [अक्ष्+अच्+अश्+स: वा] धुरी, धुरा, गाड़ी के बीच की छड़, लोहे की लम्बी-मोटी छड़, जिसमें दाएं-बाएं पहिए लगाए जाते हैं। ०तराजू, ०चौसर, ०पांशा, ०रुद्राक्ष, ०चक्र, पहिया। (जयो० वृ० १/१०८) ०गाड़ी, शकट (जयो० वृ० १/१०८) अक्ष: शकट एव। (जयो० वृ० १/१०८) अक्षस्तु पाशके चक्रे शकट च विभीतके। इति विश्वलोचन:।

अक्ष: (पुं०) बहेडे का पौधा। (जयो० १/१०८) विभीतक, बहेड़ा,

अक्ष: (पुं०) ०दृष्टि, ०आंख, नेत्र, ०स्कंध, कंधा। (सुद० १/४० जयो० १४/३६)

अक्ष: (पुं) ०ज्ञान, ०आत्मा ०आचार। अक्षस्याचारस्य (जयो० १८/१६)

अक्षम् (नपुं०) इन्द्रियाँ, इन्द्रिय विषय। अक्षाणि इंद्रियाणि यस्य। ते अक्षैर्हता त्रपुषि चात्मधियं श्रयन्ति। (सुद० पृ० १२७) इन्द्रिय-विषयों से आहत होकर शरीर में ही आत्म-बुद्धि करते हैं।

अक्षेषु सर्वेष्वपि दर्पकारी। (सुद० पृ० १३१)

जित्वाऽक्षाणि समाबसेदिह जगज्जेता स आत्मप्रिय:। (वीरो० १६/२७)

अक्षक: (पुं०) आत्मा। सत्यधर्ममयाऽवाममक्षमाक्ष क्षमाक्षक:। (जयो० १/१०८)

अक्षजय (वि०) इन्द्रिय जय (वीरो० १४/३६) इन्द्रियजयी। (वीरो० १८/२३)

अक्षजयी देखो अक्षजय।

अक्षणिक (वि०) स्थिर, दृढ़, निश्चल।

अक्षत (वि०) [नञ्+क्षण्+क्त] अखण्ड, पूर्ण, ०अविभक्त, सम्पूर्ण। (जयो० ३/८४) २४/१५) ०पूजा द्रव्य।

विशदाक्षयातान्ता सुभापेव सुलोचना। (जयो० ३/८४)

विशदं चाक्षतमखण्डम्। (जयो० व० ३/८४)

शिरसि स्फुटमक्षतान ददौ। (जयो० १३/२)

शिर पर मङ्गलसूचक अक्षत अर्पण किए।

अक्षत (वि०) आचार पालक। (जयो० १८/१६) अक्षतस्य-अक्षस्याचारस्य परिपालनकर्ता यस्तस्याचारव्यवहारत:। (जयो० वृ० १८/१६) ०पूर्ण निष्ठावान् ०सुयोग्य ०श्रेष्ठ।

अक्षतति: (स्त्री०) अक्षमाला, सुलोचना की छोटी बहिन, राजा अकम्पन की पुत्री तथा राजकुमार अर्ककीर्ति की भार्या। अक्षततिं अक्षमालां नाम सुताम् (जयो० वृ० ९/३)

अक्षतरु: (पुं०) अखरोट। (वीरो० ७/२५)

अक्ष-बुद्धित (वि०) इन्द्रिय ज्ञात। (जयो० २३/३२) श्रुतं च दृष्टं क्व कटाक्ष-बुद्धित:। (जयो० २३/३२)

जो इन्द्रिय ज्ञान से कभी कहीं नहीं सुना गया या देखा गया।

अक्षभोग्य (वि०) इन्द्रिय भोग्य। (भक्ति सं० पृ० ४८) रुचिं मनोज्ञे विषये विषयेऽक्षभोग्ये। (भक्ति सं० वृ० ४८)

अक्षमाक्षम् (वि०) जितेन्द्रिय। अक्षमाणि असमर्थानि, अक्षाणि इन्द्रियाणि यस्य जितेन्द्रियत्यर्थ:। (जयो० वृ० १/१०८)

अक्षमाला (स्त्री०) रुद्राक्षमाला।

अक्षमाला (स्त्री०) सुलोचना की छोटी बहिन, अकम्पन राजा की पुत्री। (जयो० १/५७) राजकुमार अर्ककीर्ति की पत्नी। (जयो० ९/५७)

अक्षमति: (स्त्री०) इन्द्रियज्ञान। (वीरो० २०/७) ०परोक्षज्ञान।

अक्षय (वि०) ०अनश्वर, ०अटूट, ०अविनाशी। दापयामि भवते परितोषं, सज्जनाक्षयमित: कुरु कोषम्। (जयो० ४/४६)

अक्षयतृतीया (स्त्री०) अक्षय तृतीया व्रत, वैशाखमास के शुक्लपक्ष की तीज। ऋषभदेव के आहार का दिन। प्रतिरेवा-क्षयतृतीयादिनं यत्किललग्नविधौ सर्वसम्मतम्। (दयो० पृ० ६९)

अक्षय्य (वि०) अविनाशी, अनश्वर, अनित्य।

अक्षर (वि०) अविनाशी, अनश्वर, अटूट। क्षरदक्षरसौध-सत्तरा। (जयो० २६/४) झरते हुए अविनाशी अमृत समूह। अक्षरं-बहुकालस्थायि। (जयो० वृ० २६/४)

अक्षर (वि०) अपराधकारी शब्द। (जयो० १/३९) अक्षराणि इन्द्रियाणि। ०इन्डिय जन्य अक्षर।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अक्षर (वि०) पाप। (जयो० वृ० १/३९)

अक्षरः (पुं०) इन्द्रिय विशेष।

अक्षरः (पुं०) शिव, विष्णु।

अक्षरक [स्वार्थेकन्] अक्षर, स्वर।

अक्षरमाला (स्त्री०) अक्षरपंक्ति, वर्णमाला। (जयो० ६/२३) स्रजाक्षरार्णमिति कर्णकूपयोः। (जयो० २०/७२)

अक्षरयुगं (नपुं०) दो अक्षर, अक्षर समूह। (जयो० २५/३३) यदनुलोमतया पठितं वताक्षरयुगं विषयेषु मुदेऽर्वताम्। (जयो० २५/३३) ०युगल वर्ण समूह।

अक्षरशः (क्रि०वि०) [अक्षर+शस् (वीप्सार्थे)] एक एक अक्षर, पूर्ण। (जयो० २०/७४) पूर्ण अक्षर सहित ०अक्षर विन्यास युक्त।

तव प्रणेऽक्षरशोऽनुगत्य वृद्धिं (जयो२०/७४)

अक्षराभ्यासम् (नपुं०) अक्षरज्ञान, वर्णमालाभ्यास। (जयो० वृ० १/३९) ०वर्ण शिक्षा।

अक्षरोधक (वि०) इन्द्रियजयी। अक्षाणां रोधकः परिहारकः। (जयो० २८/५१)

अक्षलता [स्त्री०] अक्षमाला, सुलोचना की छोटी बहिन, अकम्पन राजा की पुत्री।

अक्षवश (वि०) इन्द्रियार्थ, इन्द्रियनिमित्त, विषय निमित्त, विषय कामना।

अक्षाणामिन्द्रियाणां देवशब्द-वाच्यानां येऽर्था विषयाः। (जयो० वृ० २४/८९)

अक्षाधीन (वि०) अक्षवश, इन्द्रियाधीन। (मुनिमनो०१९) अक्षाधीनधिया कुकर्मकलना, मा कुर्वतो मूढ! ते। (मुनिमनोरञ्जनाशीति १९)।

इन्द्रियाधीन बुद्धि के कारण खोटे कर्मों का बन्ध करने वाले तेरी यहाँ क्या दशा हो रही है?

अक्षार (वि०) प्राकृतिक लवण।

अक्षि (नपुं०) [अश्नुने विषयान्-अस्+क्सि] अक्षिणी, नेत्र, आंख, नयन। (जयो० ३१४) अक्षिवच्चरनराः सुदर्शिनः (जयो० ३/१४)

गुप्तचर आंखों के समान दूर तक की बात देखते थे। अक्षिणी एव मीनौ तयोर्द्वितयी युग्यम्। (जयो० वृ० १/१)

अक्षिकृत (वि०) दृश्यमान्। (वीरो० २१/१७)

अक्षिगत (वि०) दृश्यमान, दृष्टिगत।

अक्षिगोल (वि०) आंख का तारा।

अक्षिपक्ष्मन् (नपुं०) आंख की झिल्ली, आंख के पटल।

अक्षिपटलम् (नपुं०) नेत्र पटल, नेत्रभाग।

अक्षिपुरम् (नपुं०) नेत्रभाग।

अक्षीण (वि०) [न क्षीणः] अहीन, पुष्ट, प्रभावशाली, पूर्ण। (जयो० ११/५४)

अक्षीण-कान्ति (वि०) न हीनकान्ति, प्रभास युक्त, आभायुक्त। (जयो० वृ० ११/५४)

अक्षीणपथगत (वि०) अक्षि-समागत।

अक्षीणमहाणसम् (नपुं०) ऋद्धि विशेष, णमो अक्षीणमहाणसाणमित्यदः। (जयो० १९/८२)

अक्षुण्ण (वि०) अभिनव। विचक्षणेक्षणाक्षुण्णं। (जयो० ३/३८) अक्षुण्णमभिनवं क्षणदमानन्दप्रदं मतम्। (जयो० वृ० ३/३८)

अक्षुण्ण (वि०) अखण्ड, अक्षत, पूर्ण, अविजित।

अक्षुद्र (वि०) गम्भीर, (जयो० ६/५८) ०उत्तम ०विशिष्ट ०योग्य।

अक्षुद्रपदः (पुं०) उदार (जयो० १६/२७) ०योग्यस्थान ०समुचित ०प्रतिष्ठा।

अक्षुब्ध (वि०) क्षोभ रहित, दुःख विहीन, अशान्ताभाव। (सुद० पृ० ९८) ०शान्त, सौम्य ०चिंतनशील।

श्रीदेवाद्रिवदप्रकम्प्य इति योऽप्यक्षुब्धभावं गतः। (सुद० ९८)

अक्षुब्धभाव (वि०) क्षोभरहित भाव, शान्तभाव। (सुद० पृ० ९८)

अक्षोटः (पुं०) (अक्ष+ओटः) अखरोट।

अक्षोपरिप्रदेश (पुं०) स्कंध के ऊपर का भाग।

अक्षोभ् (वि०) अनुद्विग्न, क्षुब्धता रहित। (जयो० १/४३) ०प्रशान्त ०दत्तचित्त।

अक्षौहिणी (स्त्री०) (अक्षाणां रथानां सर्वेषामिन्द्रियाणां वा ऊहिनी-षष्ठी तत्पुरुष)। [अक्ष+ऊह्+णिनि+ङीप्] चतुरांगिणी सेना। रथ, हाथी, घोड़ा और पदाति सहित सेना।

अखण्ड (वि०) अक्षत, अविनश्वर, विनाशरहित, सम्पूर्ण, समस्त, अटूट। (वीरो० २/१२) व्यनपायी, विच्छेदरहित। (जयो० १३/२७) चिदेकपिण्डः सुतरामखण्डः। (भक्ति सं० ३१) एक ज्ञानशरीरी अत्यन्त गुण गुणी के भेद से रहित है। ०एक सा, समान।

अखण्ड-निवेदन (वि०) पूर्ण सूचित, विशेष कथित। (जयो० २५/५४)

सुखवतस्तदखण्डनिवेदनम्। (जयो० २५/५४) सुख सम्पन्न आत्मा की अखण्डता को सूचित करने वाला।

अखण्डमहोमय (वि०) सकलतेजोमय। (जयो० ६/११२)

अखण्डवृत्ति (स्त्री०) सततयोधन व्यापार, निरन्तरवृत्तिः। (जयो० ८/७३)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अखण्डितः (वि०) ०अविभाजित, ०अवाधित, ०अविनाशित, ०अक्षतित, ०अक्षरित।

अखल (वि०) [न खलः] सज्जन, सदाचारी। समाश्रयायैवम-श्राखलानाम्। (जयो० २०/७५)

अखर्व (वि०) प्रशस्त, गौरवशाली, गुणगुर्वी, उदारचित्त वाले। (जयो० ६/६३) हे अखर्वे प्रशस्तरूपे। (जयो० वृ० ६/१०३) नगौकसश्चाखर्वे। (जयो० ६/८)

अखर्वसूत्री (वि०) दीर्घ विचारवान्। (जयो० ३/८५) मतिं क्व कुर्यान्नरनाथपुत्री भवेद्भवान्नैवमखर्वसूत्री। (जयो० ३/८५)।

अखात (वि०) पोखर, प्राकृतिक गर्त।

अखिल (वि०)[नास्ति खिलम् अवशिष्टं यस्य] सम्पूर्ण, समस्त, पूर्ण। (सुद० पृ० ७०) ०एक मात्र।

अखिलकर्मन् (नपुं०) सम्पूर्ण कर्म, समस्त कार्य निखिल क्रियाकाण्ड। (जयो० ९/५५)

भगवतोऽखिलकर्मनिषूदनम्। (जयो० ९/५५) भगवान् की पूजा निखिल कर्मों का नाश करने वाली है।

अखिलकायः (पुं०) सम्पूर्णदेह, समस्त शरीर। वीक्षितुं यदधुनाऽखिलकायः। (जयो० ४/४) ०समग्र अङ्ग।

अखिलज्ञ (वि०) सर्वविद्, सर्वज्ञ, लोकमार्गदर्शी। (जयो० १/१)

श्रियाश्रितं सन्मतिमात्ययुक्त्याऽखिलज्ञमीशानमपीतिमुक्त्या। (जयो० १/१) जो अच्छी बुद्धि के धारक हैं, आत्मतल्लीनता के द्वारा जो सर्वज्ञ बन चुके हैं। अखिलज्ञं लोकमार्गदर्शिनम्। (जयो० वृ० १/१)

अखिलदेशवासिन् (वि०) समस्त देशवासी, देशदेशान्तर वासी। सम्पूर्ण देश निवासी। (जयो० वृ० ४/१)

अखिलवेदित (वि०) सरर्वज्ञ, सर्वज्ञाता। (वीरो० १९/३४)

अखिलाङ्गसुलभ (वि०) सर्वाङ्गपूर्ण, सभी तरह से योग्य। (जयो० ३/१५)

अखेटिकः (पुं०) [नञ्+खिट्+पिकन्] (१) वृक्षमात्र, (२) शिकारी कुत्ता।

अखेद (वि०) खेदवर्जित, दुःखरहित। (जयो० २/१३७)

अखुरः (पुं०) मूसक, चूहा। (वीरो० १४/५१)

अख्यातः (पुं०) प्रसिद्ध, लोकप्रिय। (सुद० १/४२)

अख्याति (नपुं०) अपकीर्ति, अपयश।

अख्यातिकर (वि०) लज्जाजनक।

अंगीकृत (वि०) स्वीकृत, अंगीकार। (जयो० ९/८०)

अंग्रेज (वि०) गौराङ्ग शरीरी, फिरङ्गी। (जयो० वृ० १८/८१)

अग (भ्वा०पर०अक०सेट्-अगति, आगीत् अगात्, अगम) जाना, गति करना। टेढ़े मेढ़े चलना। (सुद० ९७)

अग (वि०) [न गच्छतीति-गम्+ड] चलने में असमर्थ, अगम्य। (जयो० ३/२७)

अगः (पुं०) वृक्ष, तरु। (जयो० २८/३३)

अगच्छ (वि०) [गम्-बाहुलकात्] न जाने वाला।

अगच्छः (पुं०) वृक्ष। (जयो० २८/३३)

अगच्छाया (स्त्री०) वृक्ष की छाया। सम्पल्लवसमारब्धा योऽगच्छायामुपाविशत्। (जयो० २८/३३) अगस्य छाया-वृक्षस्य छायामुपाविशत्। (जयो० वृ० २८/३३)

अगणित (वि०) संख्यातीत, असंख्य। (जयो० १/९४) अगणिताश्चगुणा गणनीयतामनुभवन्ति भवान्तकाः। (जयो० १/९४)

अगणित-कष्ट (वि०) अनन्तकष्ट युक्त, अधिक दुःख युक्त। (समु० ५/४)

अगण्य (वि०) पर्याप्त संख्या, अधिक गणना। (जयो० १३/८७)

अगतिः (स्त्री०) आश्रयाभाव, उपाय का अभाव, विराम।

अगति/अगती (वि०) निःसहाय, निरुपाय, निराश्रय, आधारहीन।

अगद (वि०) नीरोग, स्वस्थ, रोगरहित। (जयो० १४/४)

अगदंकारः (पुं०) [अगदं करोति-अगद्+कृ+अण् मुमागमश्च] वैद्य, चिकित्सक।

अगदत् (अ+गद्-) बोली, कहती, प्रतिपादित करती।

अगदलम् (नपुं०) वृक्ष पत्र, तरु पल्लव। (जयो० १४/४) अगस्य वृक्षस्य यानि दलानि पत्राणि। (जयो० वृ० १४/४)

अगदलसच्छाया (स्त्री०) रोपापहारिणी सुन्दरछाया। अगदस्य गदरहितस्य लसन्ती या छाया। अथवा अगस्य वृक्षस्य यानि दलानि पत्राणि तेषां सती या छाया। (जयो० वृ० १४/४)

अगम् (वि०) प्राप्त हुई। (सुद० ३/४६)

अगम्य (वि०) [न गन्तुमर्हति-गम्+यत्] दुर्गम, अनुलङ्घनीय। अकल्पनीय।

वैरीश-वाजि-शफराजिभिरप्यगम्याम्। (जयो० ३/२७) अगम्यामनुलङ्घनीयाम्। (जयो० वृ० ३/२७)

अगम्या (स्त्री०) व्यभिचारिणी। गमनं चैव अनुचितम्। ०कुत्सिता, ०कुमार्गगामिनी।

अगरु (नपुं०) [न गिरति-गृ+उ] अगर, एक प्रकार का चन्दन।

अगस्त्यः (पुं०) वृक्ष, देवदारु वृक्ष, प्रियाल। प्रियालागस्त्यादि-वृक्षाणाम्। (जयो० वृ० २१/२८)

अगस्त्यः (पुं०) [विन्ध्याख्यम् अगम् अस्यति, अस्+क्तिच्]

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(अगं विन्ध्याचलं स्त्यायति स्तम्नाति-स्त्यै क-वा अग: कुम्भ: तत्र स्त्यान: संहत: इत्यगत्य:) ०एक ऋषि, ०नक्षत्र।

अगाढ़: (पुं०) सम्यग्दर्शन का दोष। ०प्रगाढ़।

अगात् (वि०) प्राप्त, आया। (सुद० ९७, १२३)

अगात् (वि०) बिताना। (सुद० ४/१) तयोरगज्जीव नमत्यघेन। (सुद० ४/१७)

अगाश्रित (वि०) अगान् वृक्षानाश्रिता:। वृक्षाश्रित, वृक्ष का सहारा लेने वाले। (जयो० १४/७)

अगारम् (नपुं०) घर, गृह, सदन। (जयो० २/१३९) ०स्थान ०वास ०निवास। ०स्थल।

अगारि (वि०) गृहस्थी, गृह में रहने वाला। (सम्य० ११०) (जयो० २/१३९)

अगारिराट् (पुं०) गृहस्थशिरोमणि:, सद् गृहस्थ। (जयो० २/१३९) अगं न गच्छन्तम् ऋच्छति प्राप्नोति (अग्+ऋ+अण्) ०गृह स्वामी ०गृहस्थ का उच्च व्यक्ति। अगारे निवसते स अगारि।

अणुव्रतोऽगारि। (त०सू० ७/२०) तस्य राट्

अगालित (वि०) अस्वच्छ, अनिर्मल, प्रदूषित, जीव युक्त। (सुद० पृ० १२९)

अगालितजलं [नपुं०] जीव युक्त जल। (सुद० १२९)

अगिर: (पुं०) [न गीयते दु:खेन] स्वर्ग। ०शुभस्थान ०उत्तमस्थल।

अगुण (वि०) गुण रहित, दोष मुक्त।

अगुण (वि०) निर्गुण।

अगुणज्ञ (वि०) गुणों को न जानने वाला। तेनागुणज्ञोऽभवमेवमेतत्। (भक्ति०सं० ४८) गुणवानों के गुण को जाना नहीं गर्व सरकारी से।

अगुणी (वि०) गुण रहित।

अगुर-गमन (वि०) प्रफुल्लगमन, अच्छी गति (जयो० वृ० ६/११)

अगुरु (नपुं०) अगुरु, धूम्र, गन्ध विशेष, विलेपन। (जयो० १२/६८) ०दीर्घ ०व्यापक भाव का न होना।

अगुरुपरिणाम: (नपुं०) बिलेपन, शीतल परिणाम। चंदन लेप। (जयो० १४/४१) अगुरुचंदनस्य परिणामो विलेपनम्। (जयो० वृ० १४/४१) यद्वा लघुभावो (जयो० वृ० १४/१४)

अगुरुलघु (वि०) षट्गुण हानि-वृद्धि गुण।

अगूर (स्त्री०) सूक्ष्म, लघु (सुद० १३३)

अगृह (वि०) गृह विहीन, घर रहित, अगार रहित।

अगृहीत (वि०) मिथ्यात्व विशेष।

अगोचर (वि०) [नास्ति गोचरो यस्य] ०अदृश्य, ०अज्ञेय, ०ब्रह्म ०अतीन्द्रिय।

अग्नायी (स्त्री०) [अग्नि+ऐङ्+ङीष] अग्निदेवी।

अग्नि: (स्त्री०) [अंगति ऊर्ध्वं गच्छति अङ्ग+नि न लोपश्च] अग्नि, वह्नि ०आशुशुक्षणि। (जयो० १२/७५) अग्नि: त्रिकोण: रक्त:। अग्नि त्रिकोण और लाल होती है। स्वयमाशु पुन: प्रदक्षिणीकृत आभ्यामधुनाशुशुक्षिणी। (जयो० १२/७५)

आशुशुक्षणिरग्नि: प्रथमं दक्षिणीकृत:। (जयो० वृ० १२/७५) अग्नि प्रथम दक्षिणीकृत हुई।

अग्नि को समुद्रदत्तचरित्र में **'पावकेकिल'** भी कहा है। 'समेत्यमन्त्रोत्थित-पावकेकिल (समु० पृ० ४४) अग्नि के कई भेद हैं-यज्ञीय अग्नि (गार्हपत्य अग्नि), आहवनीय, दक्षिण, जठराग्नि: (पाचनशक्ति), पित्त, सोना आदि से उत्पन्न शुद्ध अग्नि, सामान्य अग्नि आदि। आगमों में धुंआ रहित अंगार, ज्वाला, दीपक की लौ, कंडा की आग, वज्राग्नि, बिजली आदि से उत्पन्न शुद्ध अग्नि, सामान्य अग्नि आदि। (देखें-जैनेन्द्रसिद्धान्त कोष पृ० १/३५)

आध्यात्मिक अग्नियाँ क्रोधाग्नि, कामाग्नि और उदराग्नि भी अग्नियां हैं (महापुराण) पंचमहागुरुभक्ति में साधक की पञ्चाचार रूप क्रियाओं को भी अग्नि कहा गया है।

अग्नि-अस्त्रम् (नपुं०) अग्नि अस्त्र, अग्नि उत्पन्न करने वाला अस्त्र।

अग्नि-कर्मन् (नपुं०) अग्नि क्रिया। ०तय कर्म ०ऊर्जा सम्बंधी क्रिया।

अग्नि-कलित (वि०) अग्नि में तपाया, वह्नितापित। (जयो० २/८१) ०अग्नि से संस्कारित।

अग्निकायिक (वि०) अग्निजीव वाला। (वीरो० १९/)

अग्नि-कुण्डम् (नपुं०) अग्निपात्र।

अग्निकुमार: (पुं०) देव नाम।

अग्निकेतु: (स्त्री०) अग्निध्वज, अग्नि पताका।

अग्निकोण: (पुं०) दक्षिण-पूर्व का कोना।

अग्निगति: (स्त्री०) एक विद्या विशेष।

अग्निज: (वि०) अग्नि से उत्पन्न।

अग्निजन्मन् (वि०) अग्नि ज्वाला, अग्नि लपट। ०लौ, ०प्रदीप्त कारण

अग्निजीव: (पुं०) अग्निकायिक जीव।

अग्निज्वाल: (पुं०) विजयार्ध की उत्तर श्रेणी का नगर, विद्याधर नगर।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अग्नितपस् (वि०) अग्नि सा चमकीला। ०तेज युक्त।

अग्निदाहः (पुं०) अग्नितपन।

अग्निदीपन् (वि०) क्षुधा वर्द्धक।

अग्निवृद्धिः (स्त्री०) पाचन शक्ति।

अग्निदेवः (पुं०) अग्निदेवता। (दयो० २८)

१ भूतकालीन ग्यारहवें तीर्थंकर।

१ लोकपाल के भेद रूप अग्नि।

१ अनलकायिक आकाशोत्पन्न देव।

१ अन्याभजातिके लोकान्तिक देव।

१ अग्निज्वाला नामक ग्रह।

१ अग्निकुमार भवनवासी देव।

१ अग्निरुद्धनामा असुरकुमार देव।

अग्निपक्व (वि०) अग्नि में पकाया गया। (सुद०)

अग्निप्रभदेवः (वि०) ज्योतिर्देव, जिसने देशभूषण और कुलभूषण मुनियों पर उपसर्ग किया था।

अग्निपुराण (पुं०) अग्निपुराण, एक वैदिक पुराण। (दयो० ३१)

अग्निभूतिः (पुं०) मगधदेश शालिग्राम निवासी सोमदेव ब्राह्मण पुत्र। गौतम का छोटा भाई। (वीरो० १४/२)

युतोऽग्निना भूतिरिति प्रसिद्धः श्री गौतमस्यानुज एवमिद्धः। (वीरो० १४/२)

अग्निमित्रः (पुं०) एक ब्राह्मण पुत्र।

अग्निमुखं (नपुं०) अग्निपंक्ति, अग्निज्वाला। (जयो० १२/७१) ०लौ, ०तेजस् क्रिया।

अग्निमुखी (स्त्री०) रसोई घर।

अग्निरक्षणं (नपुं०) पवित्र गार्हपत्य।

अग्निरजः (पुं०) इन्द्रगोप, एक सिन्दूरी कीड़ा।

अग्निवधू (स्त्री०) स्वाहा।

अग्निवर्धक (वि०) पौष्टिक, शक्तिशाली।

अग्निवीर्यं (नपुं०) अग्निशक्ति, अग्निबल।

अग्निशाला (स्त्री०) यज्ञशाला, अग्निस्थान।

अग्निशिखः (पुं०) दीपक, प्रदीप। ०लौ, ०ज्वाला।

अग्निसंस्कारः (पुं०) अग्निप्रतिष्ठा।

अग्निसहः (पुं०) एक ब्राह्मण पुत्र।

अग्निसात् (अव्यय) अग्नि की दशा।

अग्र (वि०) आगे, प्रथम, सर्वोपरी, मुख्य, प्रमुख, प्रान्त, भाग, पुरस्तात्। (जयो० ११/८९/सम्य० ५८) स्फुटत्करागा मृदुपल्लवा। (जयो० ११/८९) मनोहर नख के अग्रभाग। रात्रं तदग्र उपकल्पित बह्निभावः। (सुद० ४/२४) रात्रि की शीतबाधा दूर करने के लिए आगे आग जलाता। (सुद० ४/२४)

सदभावेन च पुञ्ज दत्वाऽप्यग्रे जिनमुद्रायाः। (सुद० पृ० ७१)

अग्रकरः (पुं०) अग्रहस्त। ०हाथ का प्रथम हिस्सा।

अग्रगण्यः (पुं०) श्रेष्ठ, प्रथम, मुख्य, प्रधान। (वीरो० १८/४६) (जयो० ८/१९)

अग्रगामित् (वि०) आगे आगे रहना। (जयो० ४/३५)

अग्रगामिन् (वि०) अग्रणी, मुखिया, प्रधान। (जयो० ३/८९)

अग्रचर्मन् (नपुं०) नूतनचर्म। (जयो० २/५)

अग्रज (वि०) अग्रणी, पहले उत्पन्न। (जयो० ५/७६)

अग्रजः (पुं०) बड़ा भाई।

अग्रजतः (पुं०) पितृजन, बड़े लोग। (जयो० २/१०५)

अग्रजा (स्त्री०) बड़ी बहन।

अग्रजाया (स्त्री०) बड़े भाई की पत्नी, भौजाई, भ्रातृजाया। वीरो० (१५/४९)

अग्रणीः (पुं०) प्रमुख, प्रधान, सैन्यमुख्य, नायक। स पुनः परमानन्दमेदुरो मानवाग्रणी (जयो० ३/९५) मानवानाम-ग्रणीर्नायकः (जयो० वृ० ३/९५)

अग्रक्षणं (नपुं०) आगामी, भविष्यत् कालीन।

अग्रायणी (स्त्री०) एक पूर्व ग्रन्थ का नाम। अग्र अर्थात् द्वादशांगो में प्रधानभूत वस्तु के अयन/ज्ञान को अग्रायण कहते हैं और उसका कथन करना जिसका प्रयोजन हो उसे अग्रायणी कहते हैं।

अग्राह्य (वि०) छोड़ने योग्य, त्याज्य। (वीरो० १६/२३) प्राणिजनित वस्तुओं में जो पवित्र होती है, वह ग्राह्य है, अपवित्र नहीं। अतः शाक-पत्र और दूध ग्राह्य है और मांस और गोबर आदि ग्राह्य नहीं है, ऐसा कथन उपादेय नहीं है, क्योंकि गोबर और दूध ये दोनों ही गाय-भैंस आदि से उत्पन्न होते हैं, फिर भी मनुष्य दूध को पीता है, परन्तु गोबर को नहीं खाता।

अग्रणीका (वि०) अग्रणी, प्रधान, प्रमुख। उद्दिश्य-तं साम्प्रतम-ग्रणीकम्। (वीरो० १४/२०) जिनके पीछे ब्राह्मण समूह था, उन अग्रणी इन्द्रभूति को उद्देश्य करके वीरप्रभु ने कहा।

अग्रतः (क्रि० वि०) [अग्रे अग्राद्वा-तसिल्] आगे, प्रमुख। (सुद० १०५) जगदिहतेच्छोद्दुर्तमग्रतस्तौ। (सुद० २/२६)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जगत् के प्राणिमात्र का हित चाहने वाले मुनिराज आगे हाथ जोड़कर स्थित थे। ०आगे आगे, ०अग्रणी, ०प्रधान।

अग्रदूतः (पुं०) अग्रगामी दूत, अनुचर।

अग्रपादः (पुं०) पैर का अग्रभाग।

अग्रपूजा (स्त्री०) प्रमुख अर्चना।

अग्रभागः (पुं०) प्रान्तभाग। (जयो० ३/७४)

अग्रभागः (पुं०) शिर, मस्तक।

अग्रभागचालक (वि०) शिरचालन।

अग्रभागिन् (वि०) सर्वोत्तम भागी।

अग्रभूमिः (स्त्री०) मुख्यधरा, उद्दिष्ट भाग।

अग्रवर्तित् (वि०) अग्रणी।

अग्रवर्तिनी (वि०) अग्रणी, अग्रप्रवर्तिनी। (जयो० १/२३) (जयो० १३/५६)

अग्रवस्तु। कलश विशेष। तस्याग्रवस्तु कलशस्तद्वत्। (जयो० १३/९०) कलश वस्तु, मङ्गलवस्तु। ०प्रमुख पदार्थ सर्वोपरि रहस्य।

अग्रसंलग्न (वि०) आगे प्रयुक्त, अग्रप्रान्त व्यापी। (जयो० १/३१)

अग्रसर (वि०) अग्रगामी, अग्रगण्य।

अग्रहस्तः (पुं०) नखभाग।

अग्रिम (वि०) [अग्रेभवः-अग्र-डिमच्] प्रथम, अग्रणी, प्रधान, मुख्य, ज्येष्ठ, बड़ा, महत्। (जयो० १३/५४)

अग्रिम-वर्षपवित्रः (पुं०) प्रथमवर्षधर पर्वत, हिमालय, हिमवान् पर्वत। (जयो० १३/५४) अग्रिमवर्षपवित्रः प्रथमवर्षधरस्य हिमालयस्य (जयो० वृ१३/५४)

अग्रिमः (पुं०) बड़ा भाई, ज्येष्ठ भ्राता।

अग्रिय (वि०) [अग्रेभवः-अग्र+च] प्रमुख, आदि।

अग्रे (क्रि०वि०) के सामने, के ऊपर। (जयो० वृ० ५/९३)

अग्रेऽग्र (वि०) यथोत्तर। (जयो० वृ० ५/९३)।

अग्रेतन (वि०) अग्रगामी, पुरश्चारी। (जयो० १३/१६)

अग्रेसर (वि०) नेतृत्व करने वाला, पुरश्चारी, अग्रगामी, प्रवर्तनशील। मोक्षमार्गाग्रेसरस्य यद्वा जनान् मोक्षमार्गे प्रवर्तनशीलस्य। (जयो० वृ० २/६८) मोक्षमार्ग पर निरन्तर आगे बढ़ने वाले।

अग्रेसरभावः (पुं०) अग्रगामी के भाव। (जयो० वृ० १/२)

अर्गल (वि०) अवरोधक, आगल। (दयो० ३७) समुदङ्गः समुदगाद्मार्गलं मार्गलक्षणम्। (जयो० ३/१०९) लक्ष्मी के बाधक मार्ग को शीघ्र ही पार कर गया। अर्गले प्रतिरोधकम्। (जयो० वृ० ३/१०९)

अर्गलतातिः (स्त्री०) ०अर्गला पंक्ति, ०निगडपंक्ति। या तिर्यगुत्तार्गलतातिस्तु वक्षः (जयो० १/५२)

अघ् (दे०) [चु०उभ०] बुरा करना, पाप करना,

अघं (नपुं०) [अघ्+अच्] पाप, कुकृत्य, उपद्रव। (जयो० १/६९, सुद० पृ० १०४) जयो० ८/५३ भो द्वाः स्थजनाः कोऽयमघमितः। (सुद० पृ० १०४) देखो वह कौन पापी आ रहा है।

अघचर्वणं (नपुं०) पापक्षय, पापविनाश। अघस्य पापस्य चर्वणं मास्तु। (जयो० २६/३१)

अघदा (वि०) पाप प्रदाता, पापदाता, कष्टदाता। अघ पापं कष्टं वा ददातीत्यघदा। (वीरो० ३/१७)

अघन (वि०) [न घनं अघनं] कर्पूर रहित। (जयो० ५/८१)

अघनसारपात्री (वि०) अति सुन्दर, रूपवान्। सा घनसारस्य पात्री न भवति। तत एवाघं पापमेव, न सारो यस्य स सारहीनः पदार्थस्तस्य पात्रीति तु कुतः स्यात्। (जयो० वृ० ५/८१) 'अघ' का अर्थ पाप है, वह जहाँ साररूप में नहीं, वह अघनसारपात्री है, परमपवित्र और अतिसुन्दर है।

अघनाश (वि०) परिमार्जक, शुद्ध, पाप रहित, कष्ट विहीन।

अघनाशक (वि०) शुद्ध, परिमार्जित।

अघनाशन (वि०) निर्मल, उत्तम, श्रेष्ठ।

अघनिग्रह (वि०) दुःखविच्छेदक, कष्टनिवारक। (जयो० २७/१०) हे भव्य! शरीर ही दुःख का निग्रह करने वाला है, ऐसा मानकर भोगों में निरत हुआ प्राणी गृहस्थ बना हुआ है। अघस्य दुःखस्य निग्रहं विच्छेदकम्। (जयो० वृ० २७/१०)

अघभू (स्त्री०) पापभूमि। (सुद० पृ० १०५)

अघभूरा (वि०) पाप की प्रचुरता। (सुद० पृ० १०५)

अघभू-राष्ट्रः (वि०) अपराध संयुक्त। (जयो० वृ० ७/६३) अघेन अपराधेन मानितः संयुक्तः सम्भवति। (जयो० वृ० ७/६३)

अघमथनं (नपुं०) पाप रहित, निष्पाप। सुलोचननाया अघमोचनायाः (जयो० १/६८)

अघमोचन (स्त्री०) तुच्छ वस्तु, निम्नपदार्थ, पापकारिवस्तु। (वीरो० १/२१)

अघलोपिन् (वि०) पापक्षयी (समु० ५/२८)

अघवज्रः (पुं०) पापकणी (जयो० वृ० २/१५७)

अघ-विध्वंसिन् (वि०) पाप नाशनि, पापक्षयी। सर्वेसन्तु निरामयाः सुखयुजः सर्वेऽद्यविध्वंसिनः। (मुनि० पृ० १६)

अघविराधि (क्रि०वि०) पापनाश पापक्षय, बाधानाश, अघानां

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विराधिस्तस्यै पापनाशाय। (जयो० वृ० २/६१) अभीष्ट कार्यों की बाधाओं का नाशक।

अघस्रजः (पुं०) निशापति, चंन्द्र (जयो० १५/५५)

अघसम्भवः (पुं०) रोगोत्पत्तिः रोग का जन्म। (जयो० २/५४)

अघहरणी (वि०) पापनाशिनी। (सुद० पृ० ७३)

अघहेतुः (नपुं०) पाप का कारण, दुःख का हेतु। (समु० १/२) नमामि तं निर्जितमीनकेतुं, नमामि तोहन्तु यतोऽघहेतुः। (समु० १/२)

अघर्म (वि०) ठंडा, शीतल, जो गरम न हो।

अघाति (स्त्री०) अघातियां कर्म।

अघातिकर्मिन् (वि०) अघाति कर्म वाला। (वीरो० १२/३८)

अघास्पदं (नपुं०) पापस्थान, कष्टमूल। इत्यनेकविधमत्यघास्पद मस्ति। (जयो० २/८९) अनेक प्रकार के बहुत से पाप स्थान हैं।

अघावृत (वि०) पतन से घिरा हुआ। अघेन पतनेनाभावेन वा आवृता। (जयो० ३/२३)

अघृण (वि०) घृणा रहित।

अघृणी (वि०) घृणा शून्य। (जयो० २२/८२) घृणासद्भावाद् अविकलो। (जयो० ३/३२) कुशेशयं वेद्मि निशासु मौनं दधानमेकं सुतरामघोनम्। (जयो० ११/५०) मौन रहकर एकाकी तपश्चरण भी निष्पाप है।

अघोनिका (स्त्री०) अघादूनाऽघोनिका, पाप की न्यूनता। (जयो० १/८९)

अघोर (वि०) सुन्दर, अच्छा, सुहावना। (समु० १/२३)

अघोरः (पुं०) शिव, शङ्कर।

अघोरा (स्त्री०) सुहावनी। (समु० १/२३)

अघोष (वि०) [नास्ति घोषा यस्य यत्र वा] ध्वनिरहित, निःशब्द, अल्पध्वनि।

अङ्क् (चु०उभ०) ०अङ्किता, ०कहना, ०प्रतिपादित करना। (जयो० २/६) * चिह्नित करना, छाप लगाना।

अङ्कः (पुं०) [अङ्क+अच्] ०गोद, ०क्रोड, ०तल। उत्सङ्ग मातृस्थानीयाया अङ्के क्रोडे। (जयो० वृ० ३/२३) लावण्यअङ्कोऽपि मधुरतनु। (जयो० ६/५४) लावण्य का घर होकर भी मधुर है।

अङ्कं (नपुं०) भूषण, सुन्दर। (जयो० ६/९१)

अङ्क (नपुं०) लक्षण, चिह्न, प्राप्त, ०वृत्ति। अङ्केन लक्षणेन कलिता। (जयो० ५/५२) अङ्कः चिह्नमन्तःकरणपरिणामः। (जयो० १/६६)

अङ्कः (पुं०) लोक, भाग, स्थान। नादौ सुराङ्के च्युतिशङ्कयेव। (सुद० २/१४) स्वर्गलोक के नीचे गिरने की शङ्का।

अङ्कः (पुं०) संख्या विशेष।

अङ्कः (पुं०) अपराध, कलंकार। अंङ्कोऽपराधस्तस्य निवारणम्। (जयो० ९/३९) अनेकता का कलंक दूर करने वाली। 'अङ्कश्चित्र रणेमन्ताविति' विश्वलोचनः।

अङ्कः (पुं०) प्रबन्ध। (सुद० १/५) इदं स्विदङ्के द्रुतभ्युदेति। (जयो० १/५) ०काव्य का अंश ०नाटक का एक दृश्य।

अङ्ककः (पुं०) ०गोद, ०उत्सङ्ग, क्रोड। सकलङ्कः पृषदङ्ककः। (सुद० पृ० ८७) चन्द्रमा कलंक सहित है, शशक को गोद में बैठाए हुए है। (सुद० पृ० ८८)

अङ्कगतः (पुं०) अङ्क में विद्यमान, उत्सङ्ग स्थित। चन्द्रस्याङ्के उत्सङ्गे कलङ्कं च गतो वर्तमानः। (जयो० ६/४५)

अङ्कनं (नपुं०) [अङ्क+ल्युट्] ०चिह्न, ०प्रतीक। ०मुहर, ०लाञ्छन। ०चिह्न लगाना ०संकेत देना।

अङ्कतिः (पुं०) [अञ्च्+अति, कुत्वम्-अञ्चेःको वा अञ्चतिः अङ्कतिर्वा] हवा, अग्नि।

अङ्कदलं (नपुं०) अक्षर समूह, (जयो० १/१४) कलङ्कमेत्वङ्कदलं तदर्थ विभावनायाम्। (जयो० १/१४)

अङ्कपरिस्थितिः (स्त्री०) चन्द्रचिह्न पर स्थित। टङ्ककृत चिह्नस्य परिस्थितिः (जयो० १५/५२)

अङ्कभाज (वि०) अङ्क में बैठा हुआ।

अङ्कमुखं (नपुं०) कथावस्तु का क्रम।

अङ्कृतिः (पुं०) विधाता, ब्रह्मा। कृतवान् यन्त्रिकमङ्कमङ्कृतिः (जयो० १०/४४) अङ्गृतिर्विधाता। (जयो० वृ० १०/४४)

अङ्कविद्य (वि०) अङ्क में बैठा हुआ।

अङ्कविद्या (स्त्री०) संख्या विज्ञान, अङ्कगणित।

अङ्कय् (सक्) आंकना, देखना, मूल्यांकन करना। (दयो० पृ० ७१) एतत्कृतस्य पुण्यस्याप्यहो केनाङ्कयतेऽवधिः। (दयो० ७१)

अङ्कस्थित (वि०) गोद में बैठा हुआ। नाभि में स्थित (मुनि०२४) एणोऽङ्कस्थितगन्धहेतु-कृतये वाऽज्ञानतो गच्छसि। (मुनि०२४) कस्तूरी-मृग अपनी नाभि में स्थित गन्ध की प्राप्ति के लिए वन में भटकता है।

अङ्काशायी (वि०) उत्सङ्गवर्ती। (जयो० १२/७८)

अङ्कित (वि०) ०व्याप्त, फैला हुआ, विस्तीर्ण। प्रकल्पित। अङ्कितः प्रकल्पितो गूढो यो मार्गः। (जयो० २/१५४)

अङ्कित (वि०) व्याप्त। (जयो० वृ० १/१४)

अङ्कित (वि०) उपस्थित। स्वस्थानाङ्कितकाममङ्गलविधौ निर्जल्यतल्पं क्रमेत्। (जयो० २/१२३)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अङ्कित (वि०) निर्मित। सुवर्णरेखाङ्कितमेव बाणम्। सुवर्ण की रेखा युक्त बाण। (जयो० ८/६६) सुवर्णस्य हेम्नो रेखयाऽङ्कितं निर्मितम्। (जयो० वृ० ८/६६)

अङ्कुट [अङ्क्+उटच्] ताली, कुंजी।

अङ्कुरः (पुं०) [अङ्क्+उरच्] किसलय, कोंपल, हरित्तृण। (जयो० ८/५८) यशस्तरोरङ्कुरकाः समन्तात्। (जयो० वृ० १/५८) अकुरैः रोमोद्गमैः हरित्तृणैश्च। (जयो० वृ० १/८८)

अङ्कुरः (पुं०) कलम, संतान, प्रजा, बाल।

अङ्कुरकः (पुं०) अङ्कुर, हरित्तृण। (जयो० वृ० ११/४३)

अङ्कुरमात्रकः (पुं०) कन्द्र प्रकार, एक जमीकंद विशेष। (जयो० १/८८)

अकुरय (सक्) अङ्कुरित करना, पल्लवित करना। (जयो० ३/९२) इत्थं वारिनिवर्षैरङ्कुरयन् संसदं तथैव रसैः। (जयो० ३/९२) इस प्रकार वचन रूप जलवर्षा से सारी सभा को अङ्कुरित करता हुआ। अङ्कुरयन्, अङ्कुरितां कुर्वत् (जयो० वृ० ३/१२)

अङ्कुरित (वि०) पल्लवित, प्रफुल्लित। (जयो० वृ० ३/९२)

अङ्कुराङ्कित (वि०) ०रोमाञ्चित, ०हर्षित, ०प्रसन्नता युक्त। (जयो० १/८८)

अङ्कुरोत्पादनं (नपुं०) अङ्कुर उत्पादन। (जयो० २३/६६) अङ्कुराणामुत्पादनकृद्भवति। (जयो० २३/३६) वर्षा ऋतु अङ्कुर उत्पादन करती है।

अङ्कुशः (पुं०) [अङ्क+उशच्] कांटा, कीला, नियन्त्रक, प्रशासक, निदेशक।

अङ्कुशित (वि०) [अङ्कुश+इतच्] अङ्कुश से नियन्त्रित किया गया।

अङ्कुशिन् (वि०) [अङ्कुश+णिनि] अङ्कुश रखने वाला, महावत।

अङ्कोटः (पुं०) पिस्ते का वृक्ष।

अङ्कोलिका [अङ्क+उल+क+टाप् या अङ्क-पालिका] आलिंगन।

अङ्क्य (वि०) [अङ्क्+ण्यत्] चिह्नित, लाञ्छित।

अङ्ख (चुर० पर० अक०) [अङ्खयति-अङ्खित] रोकना, सरकना।

अङ्ग् (भ्वा० पर० अक०) जाना, चलना, चक्कर काटना, चिह्न लगाना।

अङ्ग (अव्य) [अङ्ग+अच्] संबोधन अव्यय जिसका अर्थ है 'अच्छा', ०श्रेष्ठ, ०उत्तम, ०श्रीमन, ०निःसन्देह। (जयो० २४/१३३)

अङ्गसंबोहनेऽसंख्यं पुनरर्थप्रमोदयोः इति विश्वलोचनः निजशक्त्याङ्गरनुयोगमयम्। (जयो० २४/१३३) अङ्गस्य स्वशरीरस्यानुयोगमयम्। अङ्ग। हे भद्र (जयो० २/१२९)

अङ्गं (नपुं०) ०शरीर, देह, ०शरीर का हिस्सा, ०भाग। (सुद० १२२), चतुराख्यानेष्वभ्यनुयोक्त्रीं भास्वङ्गतामिह भावय। (सुद० १२२) जिनवाणी चार अनुयोगों और द्वादश अङ्गों को धारण करती है। चतुर आख्यानों को बना देती है। ०प्रणाली ०पद्धति ०बिचार ०आख्यान।

अङ्गं (नपुं०) उपाय। (जयो० ३/४०) अङ्गान्यनङ्गरम्याणि। (जयो० ३/४०) अङ्गमुपायस्ततोऽनङ्गरम्याणि। (जयो० वृ० ३/४०)

अङ्गं (नपुं०) प्रबन्ध। अङ्गागम ग्रन्थ, द्वादशाङ्ग सूत्र, आचारांग, सूत्रकृतांग आदि ग्रन्थ। ०सूत्र ग्रन्थ षट्खंडागम आदि।

अङ्गं (नपुं०) ०अवयव, ०गुण, ०एक दार्शनिक शब्द जिसके गुण-गुणी की विशेषता को स्पष्ट किया जाता है। (जयो० २६/८१)

अङ्गः (पुं०) अङ्गदेश (सुद० १/१५)

अङ्गं (नपुं०) सर्वाङ्ग, पूर्णाङ्ग। (सुद० २/१९) अङ्गोऽङ्गिभावसाद्य। (सुद० वृ० १२८) स्पष्टं सुधासिक्तमिवाङ्गम्। (सुद० २/१९)

अङ्गक (वि०) अवयव विशेष वाले, १७/१७)

अङ्गक (नपुं०) शरीर, देह। लाति त्यजति चाङ्गकम्। (सुद० ४/८)

अङ्गगत (वि०) शरीरगत, देहजन्य। किलकिलाटवदङ्गगतं। (जयो० २४/१३७)

अङ्गधूर्णा (स्त्री०) बावड़ी, वापी, सीढ़ीदार कुआ। (जयो० ८/४२) यशः समारब्धपरागधूर्णा स्म राजते सा समुदङ्गघूर्णा। (जयो० ८/४२)

अङ्गज (वि०) शरीर से उत्पन्न हुआ, शरीर संभव। (जयो० १/४०) तदङ्गजा तच्छरीरसंभवा। (सुद० ३/१), (समु० ३/६) (जयो० १/४०)

अङ्गजः (पुं०) सुत, पुत्र। स्थितिर्विनाङ्गजेनेति सतामियं मिति। (जयो० २/१२४) शिरोमणि गृहस्थ की बिना पुत्र के बुरी स्थिति होती है।

अङ्गजनुस (पु०) प्रेम, काम, विषय-वासना।

अङ्गजन्मन् (नपुं०) शरीर उत्पन्न, देहजन्म। (सुद० ३/८)

अङ्गजा (स्त्री०) पुत्री, सुता, धूया, लड़की।

अङ्गजा (वि०) शरीरगत, ०देह से उत्पन्न हुआ। ०शारीरिक, ०सुन्दर, ०अलङ्कृत।

अङ्गणं (नपुं०) मण्डपलक्षण, आंगन। टहलने का स्थान। चतुष्कपूरणे स्त्रीभिः प्रयुक्तानि यदङ्गणे। (जयो० १०/९१) स्वच्छे यस्याङ्गणेऽधुना। (जयो० १०/९२) स्वच्छेऽङ्गणे पारदर्शकप्रस्तररचिते। (जयो० वृ० १०/९२)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अङ्गतिः (स्त्री०) यान, सवारी।

अङ्गदः (पुं०) अङ्गद राजा। (जयो० ७/८७)

अङ्गदं [अंगं दायति द्यति वा] आभूषण विशेष, भुजा में पहनने का आभूषण। ०बाजूवंद: बाहु का अलंकरण।

अङ्गदेशाधिपतिः (पुं०) अङ्गदेश का राजा। (जयो० ६/५१)

अङ्गना (स्त्री०) [प्रशस्तं अङ्ग अस्ति यस्याः, अङ्ग+न+टाप्] स्त्री, वनिता, रमणी। (सुद० पृ० ८३) जीवन संगिनी। अङ्गनानुकरणप्रतिपत्तेः। (जयो० ४/३४)

अङ्गनाकुलं (नपुं०) स्त्री समूह। (जयो० १३/३८)

अङ्गन्यासः (पुं०) अङ्गस्पर्श, मन्त्र द्वारा शरीर स्पर्श।

अङ्गपालिः (स्त्री) रेखा परम्परा, आलिंगन। (जयो० २३/२५) कुलैस्तमालीभवदङ्कपाली (जयो० २३/२५)

अङ्गभागः (पुं०) अङ्गांश, शरीर भाग। (सुद० १०१) प्रयुक्तये साम्प्रतमङ्गभागः। (सुद० १०१)

अङ्गभूः (पुं०) पुत्र, कामदेव। (सुद० ४/९)

अङ्गमन्त्रं (नपुं०) शरीर मन्त्र।

अङ्गमतिः (वि०) एकादश वेत्ता मसकपूरण यति। (जयो० २३/८७)

अङ्गमर्दः (पुं०) देहमर्दन, मालिश। ०उपटन, ०संबाहन।

अङ्गमर्दिन् (पुं०) मालिश।

अङ्गमर्षः (पुं०) गठिया रोग। ०गांठ ०देहागत मस्सा।

अङ्गरक्षकः (पुं०) सेवक, व्यक्तिगत सेवक, शरीर रक्षक।

अङ्गरक्षणं (नपुं०) किसी व्यक्ति की रक्षा।

अङ्गरक्षणी (स्त्री०) कवच, पोशाक।

अङ्गरागः (पुं०) सुगन्धित लेप। (जयो० १४/६४)

अङ्गरागी (पुं०) प्रियतम। (जयो० २३/८९) ललनाऽऽलिङ्गन-मङ्गरागिणा।

अङ्गलता (स्त्री०) शरीर वल्लरी। प्रागेवाङ्गतायाः पल्लविता। (जयो० १/९१)

अङ्गवत् (वि०) प्राणिजन्य (सुद० ४/३०)

अङ्गवत्त (वि०) आत्मीय भाव, निजभाव।

अङ्गवान् (वि०) अङ्गवाला, शरीर युक्त। मृदु-चन्दन- चर्चितङ्ग-वानपि। (सुद० ३/७)

अङ्गविकल (वि०) अपाहिज, पङ्गु; मूर्छित, अङ्गशून्य।

अङ्गविकृतिः (स्त्री०) अवसाद, शरीर विकार, मिरगी।

अङ्गविकारः (पुं०) शारीरिक दोष, देहकष्ट।

अङ्गविक्षेपः (पुं०) अङ्गसंचलन, शरीर गति, देहचेष्टा।

अङ्गविद्या (स्त्री०) शरीर सम्बन्धी शास्त्र। ०काय चिकित्सा, ०अष्टांग क्रिया सम्बंधी ग्रन्थ।

अङ्गविधिः (पुं०) शरीर क्रिया।

अङ्गवीरः (पुं०) नायक, प्रधान।

अङ्गस् (पुं०) [अञ्ज्+असुन्-कुत्वम्] पक्षी।

अङ्गसंस्कारः (पुं०) शरीर क्रिया, देहालंकरण।

अङ्गसंहतिः (स्त्री०) अङ्गशक्ति, शारीरिक बल।

अङ्गसंपर्कः (पुं०) संभोग, आलिङ्गन। ०देह लीला, ०मैथुन।

अङ्गसंसर्गः (पुं०) अङ्गसङ्ग, अङ्गसंपर्क, मैथुन, संभोग। अङ्गस्पर्श, शरीरालिंगन। (जयो० १३/९०)

अङ्गसारः (पुं०) शरीरप्रभा, देहकान्ति। (वीरो० १/३)

अङ्गसेवकः (पुं०) निजी भृत्य। ०अंग रक्षक।

अङ्गस्थ (वि०) शरीरस्थ, देहजन्य। (भक्ति सं० पृ० ३०)

अङ्गस्फालन (वि०) अङ्गविक्षेप, स्फोत्कर, अङ्गस्फुरण, शरीर स्पंदन। (जयो० वृ० २७/१८)

अङ्गाख्यः (पुं०) आचारांग आदि अंग आगम (वीरो० २२/६) ०शरीर सम्बंधी निरुपण।

अङ्गाङ्गः (पुं०) शरीर, देश। अङ्गेति मृदु-भाषणे। (जयो० १५/१६)

अङ्गाङ्गिन् (नपुं०) शरीर और आत्मा। अङ्गाङ्गिनारेकयनुदेऽथ घाणी। (समु० १/५)

अङ्गातिग (वि०) अंगवर्जित, शरीर रहित। (जयो० २/१५७)

अङ्गातीत (वि०) आत्मीय, निजीय, स्वकीय। (जयो० वृ० ११/१००)

अङ्गाधिपतिः (पुं०) अङ्गदेशाधिपति। (जयो० ६/५१) ०अंग देश का राजा।

अङ्गाभिधानः (पुं०) अङ्गदेश (सुद० १/१५)

अङ्गान्तरितं (नपुं०) एक्सरे यंत्र (वीरो० २०/८)

अङ्गायित (वि०) अङ्गगत। (सम्य० ५८)

अङ्गारः (वि०) अङ्गार, वह्निस्फुलिङ्ग। (जयो० ६/५१)

अङ्गारं (नपुं०) अङ्गार, अग्निखण्ड।

अङ्गारकः (पुं०) [अङ्गार+स्वार्थकन्] कोयला।

अङ्गारकं (नपुं०) वह्निकण। (जयो० १६/२४)

अङ्गारकभावः (पुं०) वह्निकणभाव। अङ्गारकाणां वह्निकणानां भावः। (जयो० १६/२४)

अङ्गारकित (वि०) [अङ्गारक्+इतच्] झुलसा हुआ, भुना हुआ।

अङ्गारतुल्य (वि०) अंगारे के समान। (वीरो० ६/२७)

अङ्गारिः (स्त्री०) [अङ्गार-मत्वर्थेठन् पृषो-कलोप] अंगीठी, कांगड़ी।

अङ्गारिका (स्त्री०)[अङ्गार-मत्वर्थे ठन्-कप्-च] अंगीठी, हसन्ती, कांगड़ी। (जयो० २२/८)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अङ्गारिका (स्त्री०) अंगारे, स्फुलिंग। (वीरो० ९/२४)

अङ्गारित (वि०) [अङ्गार+इतच्] अध जला, झुलसा हुआ।

अङ्गारितः (पुं०) पलाश-कली, लता।

अङ्गारीय (वि०) [अङ्गार+छ] कोयला तैयार करने की सामग्री।

अङ्गिका (स्त्री०) चोली, अंगिया।

अङ्गिन् (वि०) अवयवी, गुणी, एक दार्शनिक दृष्टि, जिसमें गुण-गुणी दोनों का महत्त्व होता है। अवयव के बिना अवयवी/गुणी और अवयवी/गुणी/अङ्गि के बिना अवयव/अङ्ग/गुण भी संभव नहीं। (जयो० २६/८१) जैसे सौ पत्रों/कलिकाओं का समूह शतपत्र कहलाता है। यहाँ सौ पत्रों और कमल में भेद नहीं है-अभेद है, क्योंकि एक-एक पत्र के पृथक् करने पर शतपत्र/कमल ही नष्ट हो जाता है। यही बात गुण और गुणी में भी है। प्रदेश भेद न होने से गुण में अभेद है, क्योंकि गुणों के कष्ट होने पर गुणी भी नष्ट हो जाता है।

अङ्गिन् (पुं०) प्राणी, जीव। (जयो० २/१३४) (सुद० ४/४१) कौतुकात् किल निरागसोऽङ्गिनः। (जयो० २/१३४) अङ्गिनो जीवान् (जयो० वृ० २/१३४) अङ्गिनां प्राणीनां कष्टम्। (जयो० वृ० २/९९)

अङ्गिन् (पुं०) पुरुष। अङ्गिनः पुरुषान्। (जयो० ३/७४)

अङ्गिजन (वि०) प्राणिवर्ग, जनसमूह। (जयो० १/९०) प्राणिवर्गाय जनशब्दोऽत्र समूहवाचकः। (जयो० वृ० १/९८)

अङ्गिमात्र (वि०) प्राणिमात्र। (सुद० ४/३५) सौहार्दमङ्गिमात्रे तु क्लिष्टे कारुण्यमुत्सवम्। (सुद० १/९८)

अङ्गिना (वि०) संसारिणा, संसारगत। (वीरो० १/९) ०संसारस्थ, ०प्राणि वर्ग युक्त।

अङ्गिरः (पुं०) [अङ्ग+अस्+इरुट्] नाम विशेष।

अङ्गी (वि०) शरीरधारी, देहधारी। (जयो० २७/२)

अङ्गीकृ [अङ्ग+च्वि+कृ०सक०] अंगीकार करना। अङ्गीकरोति सम्भवता रसेन। अङ्गीकरोति किल सम्भवता रसेन। (जयो० १८/३२) (वीरो० २२/३५) अङ्गीकुर्यात्

अङ्गीकृतः (वि०) स्वीकृत, प्रतिज्ञ। (दयो० ५५) (सुद० १/१७)

अङ्गीकृत्य-समेत्य स्वीकार करके। (जयो० वृ० १/५५)

अङ्गीकृतवती (वि०) स्वीकृतवती, स्वीकार की जाने वाली। (जयो० वृ० ११/२)

अङ्गीकरणं (नपुं०) स्वीकृति, सहमति। (दयो० ६७)

अङ्गीकरणयोग्यः (पुं०) स्वीकार करने योग्य। (दयो० ६७)

अङ्गीकारक (वि०) धारण करने वाला, ग्रहण करने वाला। (जयो० वृ० १०/८०)

अङ्गुलिः (स्त्री०) [अंग+उलि] अंगुली जयोदयकार ने 'पञ्चशाखः' नाम दिया है। पांच अंगुलियों वाला हाथ। पञ्चशाखा अङ्गुलियो यस्य स हस्तः। (जयो० वृ० १/५१) अंगुष्ठ, तर्जनी, मध्यमा, अनामिका और कनिष्ठा (सुद० ३/२४)

अङ्गुली (स्त्री०) अंगुली, पञ्चशाखा।

अङ्गुलीमूल (नपुं०) नख, नाखून। (वीरो० १/८)

अङ्गुलीयकं (नपुं०) अंगूठीसहित। (जय०वृ० १०/४७)

अङ्गुसह (वि०) अङ्ग में उत्पन्न, शरीर जय। (सुद० २/४१)

अङ्गुष्ठः [अंगु+स्था+ल] अंगूठा। (जयो० ११/१९, १/५७),

अङ्गुष्ठनिगूढ (वि०) अंगुष्ठ से हाथ दिया। (जय०१२/९९)

अङ्गुष्ठाङ्ग (वि०) अंगूठे का अग्रभाग। (जयो० ६/४८)

अङ्गेरुह (वि०) अङ्ग में उत्पन्न, शरीर जन्य। (सुद० २/४१)

अङ्घ्रि-अह्निः [अङ्घ्र+असुन्] पैर, चरण, पाद। (जयो० ५/१००) घृणाङ्घ्रिघृणाधारि। (जयो० १/४७)

अङ्घ्रिचाल (पुं०) पादविक्षेप, चरण गति। (जयो० ८/१४)

अङ्घ्रिदासिका (स्त्री०) चरणोर्दासिका, सेविका। (जय०)

अङ्घ्रिपः (पुं०) वृक्ष, तरु। (जयो० ४/२२) वायुनाङ्घ्रिप इवायमपापः। (जयो० ४/२२) अङ्घ्रिय इव वृक्ष इव।

अङ्घ्रिपद्म (नपुं०) चरण कमल (जयो० १९/१८)

अच् (भ्वा०उभ०इदित-अक०) [अचति, अञ्चित, अञ्चन] जाना, ०हिलना, ०विनर्तन करना, ०सम्मान करना, ०प्रार्थना करना, ०पहुंचना, ०प्राप्त करना। (जयो० ४/३४)

अच् (पुं०) अच् प्रत्याहार, अ, इ उ, ऋ, लृ, ए, ओ।

अचक्षुस् (वि०) नेत्रहीन, अन्धा।

अचक्षुस् (वि०) ०अदृश्य, ०अदर्शनीय। ०रोग विशेष। ०अंधापन, विमूढ, ०विमोह।

अचङ्ग (वि०) विचारहीन, निर्विचार। (जयो० २७/५७)

अचण्ड (वि०) शान्त, क्षमाशील, सौम्य।

अचतुर (वि०) अनपढ़, अनाड़ी।

अचर (वि०) स्थिर, दृढ, अचल।

अचरः (पुं०) स्थावर जीव। (१/५४) सुरुचिरा विचरन्ति चरा चरे।

अचल (वि०) निश्चल, दृढ., निश्चल, निश्चित, स्थायी। (जयो० १/९४) यतिपतेरचलादर दामरे।

अचलः (पुं०) अचल पर्वत। स एवाचलः पर्वतः। (जयो० ३/११) ०सुमेरु।

अचलः (पुं०) अचल नामक नवां गणधर। (वीरो० १४/१०)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अचलः (पुं०) द्वितीय बलदेव, षष्ठरूद्र, ०भरतक्षेत्र का एक नाम, ०पश्चिम धातकीखण्ड का मेरु।

अचलः (पुं०) काल प्रमाण।

अचलज (वि०) पर्वत से उत्पन्न।

अचलत्व (वि०) दृढ़त्व, स्थायित्व। (वीरो० ३/२)

अचलदेवी (स्त्री०) मन्त्री चन्द्रमौलि की भार्या। नामतोऽचलदेवी या बभूव दृढ़धार्मिका (वीरो० १५/४१)

अचलात्म: (पुं०) काल का प्रमाण।

अचलावली (स्त्री०) [नञ्+चित्+क्विप्] ०अचेतन, ०जड़, धर्मशून्य, शक्तिहीन। चिदचित्प्रभेदात्। (जयो० २६/९२) अचिज्जडात्मकमिति प्रभेदाद्। (जयो० २४/१२) ०रूपी पदार्थ, निर्जीव।

अचित (वि०) गया हुआ, समाप्त हुआ, ०अविचरित, अकल्पनीय; ०बुद्धिरहित, ०अज्ञान, मूर्ख।

अचित्तः (पुं०) योनि विशेष।

अचिन्तनीय (वि०) [नञ्+चिन्त्+अनीयर, चित्+यत्] जो सोचा न जा सके, अकल्पनीय, अविचारित। (सुद० १०७)

अचिन्त्य (वि०) अविचारित, अकल्पनीय। (समु० १/३२) व्यापारकार्यार्थमचिन्त्य।

अचिन्त्यधामः (पुं०) अपूर्वनाम, अनुपम नाम। (समु० १/३२)

अचिन्त्यप्रभावः (पुं०) अप्रत्याशित, आकस्मिक।

अचिर (वि०) क्षणस्थायी, क्षणिक, शीघ्रता (सुद० पृ० १००)

अचिरात् (अव्य) शीघ्रमेव, जल्दी, तुरन्त। सुरम्यमर्ककीर्तिम-चिरादुपगम्य। (जयो० ४/१)

अचेतन (वि०) निर्जीव, पुद्‌गल। अचेतनं भस्म सुधादिकन्तु। (वीरो० ९९/२८)

अचेनं (नपुं०) अचेतन, निर्जीव।

अचेलकः (पुं०) निर्ग्रन्थ, दिगम्बर।

अचेलकत्व (वि०) बाह्य और आभ्यन्तर दोनों ही परिग्रह से मुक्त।

अच्छ (वि०) [नञ्+छो+क] स्वच्छ, निर्मल, पारदर्शक। न विद्यते छाया यस्याः सा, अच्छो निर्मलः अयो भाग्यं यस्याः सा। (जयो० १४/४वृ०) छाया सूर्यप्रिया कान्ति प्रतिबिम्बमनातपः इत्यमरः।

अच्छः (पुं०) भालू, रीछ, ०स्फटिक, ०असूर्य। (जयो० २३/१)

अच्छता (वि०) स्फटिकरूपता।

अच्छन्दस् (वि०) अक्षत, निर्दोष।

अच्छल (वि०) छलरहित (वीरो० ९/५७)

अच्छिद्र (वि०) अक्षत, निर्दोष, दोषरहित।

अच्छिन्न (वि०) अटूट, अविभक्त।

अच्छोटनम् (नञ्-छुट+णिच्+ल्युट्) आखेट, शिकार।

अच्युत (वि०) ०दृढ़, ०देव विशेष। ०स्थिर, ०निश्चल, ०अचल, निर्विकार।

अच्युतः (पुं०) प्रभु, नायक, इन्द्र। (दयो० पृ० २८)

अच्युतेन्द्रः (पुं०) स्वर्ग नाम। (क्षीरो०११/३६)

अच्युतेन्द्रः (पुं०) देव नाम। (दयो० पृ० २८)

अचौर्यमहाव्रतं (नपुं०) अचौर्यमहाव्रत, साधु का एक निरपेक्ष व्रत। (मुनि० पृ० ३) अचौर्यमहाव्रत की भावना-शून्यागारा-वास, विमोचितावास, परोपरोधाकरण, भैक्ष्यशुद्धि और सधर्म विसंवाद।

अज् (भ्वा०पर०अक०) अजितुम्। ०जाना, ०हाँकना, ०गमन करना।

अज (वि०) [न जायते नञ् जन+ड] अजन्मा, अनादि।

अजः (पुं०) परमात्मा, परब्रह्म। (जयो० १९/९२) अजस्य नाम परमात्मनोऽनुभावको भवन्। (जायें०१९/९२) अज का नाम परमात्मा और अनुभावक दोनों हैं। अकार नाम का वर्ण/अक्षर प्रथम और जकार नाम का वर्ण अन्तिम इस तरह अज शब्द निष्पन्न हुआ। यह 'अज' परमात्मा और परब्रह्म का वाचक है। इसी तरह अट्ठाइसवें सर्ग में 'अज' शब्द का विश्लेषण इस प्रकार किया है-'अकारेण शिष्टं प्रारब्धोच्चारणम् अन्त्येभवोऽन्त्यो जकारो यस्य जं' **'अजं'** परमात्मरूपम्। (जयो० वृ० २८/२०)

अजः (पुं०) आत्मा। (जयो० ६/७४) निजतेजसाऽजसाक्षी (जयो० ६/७४) 'अज' आत्मेव साक्षी यस्य स आत्म-प्राणवान्। (जयो० वृ० ६/७४) ०शिव।

अजः (पुं०) १. मेंढा, बकरा, मेषराशि। (जयो० ११/८२) २. चन्द्रमा, कामदेव।

अजः (पुं०) ०स्थान नाम, ०अजमेर का नाम, ०अजयमेरू, ०अज उपाधि विशेष।

अजः (पुं०) सौभाग्य, सुहाग। (जयो० ६/७४)

अजकवः (पुं०) शिव धनुष।

अजका (स्त्री०) छोटी बकरी, मेमना।

अजकावः (पुं०) [अजं विष्णु कं ब्राह्मणाम् अवति-वा-क] शिवधनुष।

अजगरः (पुं०) अजगर सर्प, वालव। (जयो० १३/४५) वालवस्याजगरस्य। (जयो० वृ० १३/४५)

अजड (वि०) ०विज्ञ, समझदार, ०चिन्तनशील। (जयो० १/४१) समुद्रोऽप्यजडस्वभावात्। ०प्रज्ञाशील, ०ज्ञानी, बुद्धिमान्।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अजडप्रकृतिः (स्त्री) विज्ञस्वभाव।

अजडभावः (पुं०) प्रज्ञाभाव, ज्ञानभाव।

अजड-मतिः (स्त्री०) तीव्र बुद्धि, श्रेष्ठ बुद्धि, चिन्तनशीलमति।

अजडस्वभावः (पुं०) १. नीरप्रकृति रहित, २. जलप्रकृति रहित। (जयो० १/४१) ०ज्ञान स्वभाव, प्रज्ञ स्वरूप, ०आत्म परिणाम।

अजडाशय (वि०) ०अजलाशय, ०अजड़ता रहित। (सुद० २/३)

अजत्व (वि०) अमरत्व, (जयो० २७/३)

अजत्व-प्रकृतिः (स्त्री०) अमर स्वभाव, अमरभाव। (जयो० २७/३)

अजन (वि०) उत्पन्न, पैदा हुआ। (जयो० वृ० ३/९३)

अजन (वि०) निर्जन, जन विहीन, एकान्त, मनुष्यशून्य।

अजन्मन् (वि०) अनुत्पन्न।

अजन्मन् (पुं०) परमानन्द, परपद।

अजन्य (वि०) प्रतिकूल, अयोग्य।

अजंभः (पुं०) १. सूर्य, २. मेंढक।

अजंभ (वि०) दन्तहीन, दशन-विहीन।

अजपक्षिन् (पुं०) कृष्णखग, गरुड़। (जयो० २८/२२) गरुडेन नामाजपक्षिणा कृष्णखगेन। (जयो० वृ० २८/२२)

अजपक्षिन् (पुं०) आत्मचिन्तक। अजपक्षिणा आत्मचिन्तकेन। (जयो० वृ० २८/२२)

अजपोक्त (वि०) जप रहित कथन। (जो०२८/४६)

अजमारी (वि०) अजमृत्यु, बकरा, बकरी की अपमृत्यु। (जयो० १९/७९)

अजय (वि०) अजेय, अपराजित।

अजयः (पुं०) नाम विशेष।

अजयः (पुं०) पराजय।

अजय्य (वि०) [नञ्+जि+यत्] जो जीता न जा सके।

अजर (वि०) जरारहित, बुढ़ापाहीन। (जयो० १३/३९)

अजर (वि०) अनश्वर, (वीरो० १४/४१) ०जन्म-मृत्यु रहित।

अजरः (वि०) देव, देवता, अमर। (वीरो० १८/४१)

अजर्यः (वि०) [नञ्+जृ+यत्] अभिहित, अध्याहत।

अजवप्रम् (नपुं०) छागशरीर (जयो० २२/३१)

अजसाक्ष (वि०) आत्मप्रमाणपूर्वक। (जयो० ६/७४)

अजस्र (वि०) [नञ्+जस्+र] अविच्छिन्न, निरन्तर।

अजस्रं (अव्य) सदा, अनवरत, लगातार। (सम्य० ११५)

अजा (स्त्री०) बकरी, छाली। (जयो० ११/८२)

अजा (स्त्री०) [नञ्+जन्+ड+टाप्] सांख्यदर्शन द्वारा मान्य प्रकृति या माया।

अजागलस्तनः (पुं०) बकरियों के गले में लटकने वाला स्तन तुल्य थन। यह एक न्याय/तर्कशास्त्र का प्रचलित शब्द भी है, इसका उदाहरण किसी वस्तु की निरर्थकता सूचित करने के लिए दिया जाता है।

अजाजिः (स्त्री०) [अजेन आजः त्यागः यस्याम् अज+आज+इन] सफेद या काला जीरा।

अजात (वि०) ०अनुत्पन्न। ०न समझ, नानुमान्यमाना। (जयो० १४/९३)

अजातशत्रुः (पुं०) मगध का शासक।

अजानती (वि०) अज्ञानी, ०मूढ, ०विज्ञहीन।

अजानिः [नास्ति जाया यस्य-जायाया निङादेशः] विधुर, पत्नी विहीन।

अजानिकः (पुं०) [अजेन जानो जीवनं यस्य ठन्] गडरिया, बकरियों का व्यापारी।

अजानुभविन् (वि०) अजर-अमर आत्मानुभव करने वाला। (सुद० ४/३) अजानुभविनं दृष्टुं जानुजाधिपतिर्ययौ। (सुद० ४/३)

अजानेय (वि०) [अजेऽपि आनेयः-यथा-स्थान प्रापणीयः-इति अज्+अप्+आ+नी-यत्] उत्तम कुल वाला।

अजातपुत्रः (पुं०) छागल, बकरा। (दयो० ५७, जयो० २५/१२) ०अजातपुत्र नाम विशेष, ०ऐतिहासिक पुरुष।

अजित (वि०) [नञ्+जित+क्त] अजेय, अपराजिय, न जीता हुआ, अनियन्त्रित।

अजितः (पुं०) अजितनाथ, जैनधर्म के चौबीस तीर्थंकरों में द्वितीय तीर्थंकर अजितप्रभु। (भक्ति सं० १८)

अजायबघरं (नपुं०) अजायबघर 'इति देशभाषायाम्' विचित्रवस्तुगेह। (जयो० १८/४९)

अजितेन्द्रियत्व (वि०) वशेन्द्रियत्व (वीरो० १६/१५)

अजितंजयः (पुं०) मगध राजा।

अजितंधरः (पुं०) अष्टम रुद्र।

अजितसेनः (पुं०) राजा अजितंजय का पुत्र।

अजिनं [अज्+इनच्] बाघ।

अजिनः (पुं०) महादेव, चर्मैवाजिन चर्मकं येन, तस्मै लब्धाजिनचर्मकाय महादेवनामकाय। (जयो० वृ० १९/२२) देवाधिदेवाय नमो जिनाय न किन्तु लब्धाजिनचर्मकाय। (जयो० १९/२२) देवाधिदेव ऋषभ का महादेव के साथ

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नाम सादृश्य होने पर उन्हें नमस्कार किया है, किन्तु जो अजिन/चर्म को धारण करने वाले हैं, उन महादेव को मेरा नमस्कार है।

अजिनं (नपुं०) १. चर्म। (जयो० १९/२२) चमड़े की धौकनी।

अजिनपत्री (स्त्री०) चमगादड़।

अजिनयोनिः (पुं०) हिरण, मृग।

अजिनवासिन् (वि०) मृगचर्मधारी।

अजिर (वि०) [अज्+किरन्] शीघ्रगामी, स्फूर्तिवान्।

अजिरं (नपुं०) आंगन।

अजिरं (नपुं०) शरीर, देह।

अजिला (स्त्री०) शोभा। (जयो० वृ० ५/१०७)

अजिह्म (वि०) सीधा, सरल,

अजिह्मः (पुं०) मेंढक, दुर्दर।

अजिह्वः (पुं०) मेंढक, दर्दुर।

अजीर्ण (नपुं०) अपचन, न पचा हुआ। (दयो० ८०)

अजीर्ण (वि०) नया, नूतन।

अजीर्ण (नपुं०) अपच।

अजीर्णिः (स्त्री०) [नञ्+जृ+क्तिन्] मन्दाग्नि, शक्तिक्षय।

अजीव (वि०) निर्जीव, जीव रहित। (वीरो० १९/३०)

अजीवः (पुं०) पुद्गल, अचेतन, अचित्त। अजीव/पुद्गल द्रव्य-पुदगल, धर्म, अधर्म, आकाश और काल ये पांच अचेतन द्रव्य हैं इन्हें अजीव या पुद्गलद्रव्य कहते हैं। जो न जीवति, जीविस्यति न वा जीवितः सो अजीवः। अजीव में पुद्गल द्रव्य रूप, रस, गन्ध और स्पर्शयुक्त हैं, इसे रूपी/मूर्त भी कहा जाता है। धर्म, अधर्म, आकाश और काल अरूपी/अमूर्त द्रव्य हैं। चेतना च यत्र नास्ति स भवत्यजीव इति विज्ञेयम्। (द्रव्य सं० टी०१५/५०)

अजीवभावः (पुं०) अचित्तभाव। (वीरो० १९/३०)

अजीवनिः (स्त्री०) [नञ्+जीव+अनि] मृत्यु, जीवपने का अभाव।

अज्झलं (नपुं०) ढाल, जलता हुआ कोयला।

अज्ञ (वि०) [नञ्+ज्ञा+क] मूर्ख, अज्ञानी, ०अनुभवहीन, ०ज्ञानरहित, ०नहीं जानने वाला। (जयो० १२/१४३, भक्ति०सं० २७, सुद० पृ० ११०, वीरो० १६/१) अज्ञोऽपि विज्ञो। (वीरो० १६/१) शत्रुश्च मित्रं च न कोऽपि लोके हृष्यज्जनोऽज्ञो निपतेच्च शोके। (सुद० ११०) अज्ञानी मनुष्य व्यर्थ ही किसी को मित्र मानकर कभी हर्षित होता है और कभी किसी को शत्रु मानकर शोक में गिरता है।

अज्ञः (पुं०) ०अज्ञान, ०अनभिज्ञ (जयो० १२/१४३) स्वागतमिह भवतां खलु भाग्यान्निःस्वागतगणना अपि चाज्ञाः। (जयो० १२/१४३)

अज्ञता (वि०) मूर्खता, अज्ञानता। (जयो० २/४५) अज्ञता हि जगतो विशोधने। (जयो० २/४५) अपने घर की जानकारी न रखते हुए दुनिया को खोजना अज्ञता ही होगी। स्वगृहाचारज्ञानाभावे जगतः संसारस्य विशोधनेऽन्वेषणेऽज्ञतैव मूढतैव स्यात्। (जयो० २/४५)

अज्ञाङ्गजः (पुं०) अज्ञानी का पुत्र, मूर्ख व्यक्ति का पुत्र। (वीरो० १७/३३) भो सज्जना विज्ञतुतज्ञ एवमज्ञाङ्गजो यत्नवशाज्ज्ञदेवः। (वीरो० १७/३५) विद्वान् पुरुष का लड़का अज्ञ देखा जाता है और अज्ञानी पुरुष का लड़का विद्वान् देखा जाता है।

अज्ञात (वि०) आज्ञा प्राप्त वाला। अज्ञातोऽपि न दातृदेहमृदुताद्यालोकने व्याकुलः। (मुनि०१०) आज्ञा प्राप्त होने पर भी दाता के शरीर की कोमलता आदि के देखने में व्याकुल न हो।

अज्ञात (वि०) मद/प्रमाद बिना जाने प्रवृत्ति करना।

अज्ञान (नपुं०) अज्ञान, अनजान। (वीरो० १६/२६) यदज्ञानतोऽतर्क्यवस्तु प्रशस्तिः। अज्ञान से कुतर्क करके निंद्य वस्तु को उत्तम बताना।

अज्ञान (वि०) अनजान, अनभिज्ञ ०न समझी।

अज्ञानं (नपुं०) अज्ञान, ०वस्तु तत्त्व में विपरीतता ०कुमति, कुश्रुत और कुअविध ये तीन अज्ञान हैं। जैन सिद्धान्त ग्रन्थों में अज्ञान के दो अर्थ किए गए हैं-१. ज्ञान का अभाव और २. मिथ्याज्ञान-कुमति, कुश्रुत और कुअवधि है। मिथ्यात्व सहित ज्ञान को ही ज्ञान का कार्य नहीं करने से अज्ञान कहा जाता है। नित्यानित्य विकल्पों से विचार करने पर जीवाजीवादि पदार्थ नहीं हैं, अतएव सब अज्ञान ही हैं।

अज्ञान-अतिचारः (पुं०) अज्ञान दोष, अज्ञ जीवों के आचरण की तरह आचरण।

अज्ञान-स्थानं (नपुं०) अज्ञान का कारण।

अज्ञानपरिषहः (पुं०) जैन सिद्धान्त को प्रतिपादित बाईस परिषहों में एक अज्ञान परिषह भी होता है। मे अद्यापि ज्ञातातिशयो नोत्पद्यत इति। मुझे आज भी ज्ञान का अतिशय नहीं उत्पन्न हुआ है।

अज्ञानमयी (वि०) अज्ञानयुक्त। (हित०सं० वृ० ५८)

अज्ञानिन् (वि०) अज्ञानी। (भक्ति ३८)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अज्ञानिता (वि०) अज्ञानभाव वाला। (भक्ति०३८) अतोऽधुना हे निजप! त्वदग्रे प्रमादनोऽज्ञानितया समग्रे। हे जिनेन्द्र! प्रमाद से अज्ञानभाव वाला हूँ।

अञ्च् (भ्वा०उभ०सक०) [अञ्जति, अञ्चितुम् अञ्चेत्] स्वीकार करना, झुकना, हिलना। (जयो० ४/२८) सत्तनुननु परं जनमञ्चेत्।

अञ्च् (सक०) ०प्राप्त होना, ०बन जाना। ०योग्य स्थान को पाना। पहुंचना, लोहोऽथ पार्श्वदृषदाऽञ्चति हे महसत्त्वम्। (सुद० ४/३०) पारस पाषाण का योग पाकर लोहा भी सोना बन जाता है। स्वच्छत्वमञ्चेदिति भावनालः। (सुद० २/४८) मन्दत्वमञ्चत्पदपङ्कजा वा। (वीरो० ६/२)

अञ्च् (सक०) प्रार्थना करना, इच्छा करना, पूजा करना, भक्ति करना। आत्मीयमञ्चेदथसन्निधानम्। (भक्ति सं० २५, १९)

अञ्च् (सक०) ढकना, आच्छादित करना। (सुद० वृ० ८५)

अञ्चता (वि०) प्राप्त करने वाला। भूतले तिलकतामुताञ्चताम्। (जयो० २/४६)

अञ्चन (नपुं०) पूजन, अर्चन, प्रार्थना। धर्मं च शन्तिं खलु कुन्थुमञ्चन्नरं च मल्लिं मुनिसुव्रतं च। (भक्ति १९)

अञ्चन् (वि०) प्राप्त होने वाला। (सुद० ७९) सारोमाञ्चनतस्त्वं भो मारो। कर स्पर्श से रोमाञ्च को प्राप्त हुई।

अञ्चनं (नपुं०) निवर्तन। (जयो० ४/२६) परिफुल्लोलपाञ्चनेनासीद्यासौ। (जयो० ४/२६) पुष्पित लताग्र को नीचा करने का प्रयत्न कर रही थी।

अञ्चनं (नपुं०) रोमाञ्चन, हर्ष, प्रमोद। दर्शनादञ्चनैः प्रमोद रोमाञ्चैः कृत्वा। (जयो० ३/३४)

अञ्चल (वि०) निश्चल, स्थिर। (जयो० ५/१५)

अञ्चलः (अञ्च्+अलच्) पल्लू, किनारा, गोट, झालर, वस्त्र का छोर, कोना। गृहिणोऽखिलाञ्चलाः। (जयो० २/१९) गृहस्थी के चारों पल्ले कीचड़ में हैं।

अञ्चलपाकः (पुं०) अञ्चल की स्थिति। (जयो० ५/१५)

अञ्चलवान्तभाग (पुं०) वस्त्र प्रान्त। उभयोः शुभयोगाकृतप्रबन्धः समभूदञ्चलवान्तभाग-बन्धः। (जयो० १२/६३) दोनों का शुभयोग कृत प्रबन्ध हुआ और आपस में वस्त्र का गठबन्धन भी किया गया।

अञ्चित (भूतकालिक कृदन्त) [अञ्च्+क्त] पूजित, अर्चित, सम्मानित, अलंकृत। पल्लवैरभितवैरथाञ्चिता। (जयो० ३/९)

अञ्चित (वि०) युक्त, व्यवस्थित, उचित। निर्णयाञ्चिता (जयो० २/५) (जयो० वृ० ३/९)

अञ्चित (वि०) धनुषाकार, टेढ़ा, सुन्दर। सुलसद्धार-पयोधराञ्चिताम्। (सुद० ५०) स्तनमण्डल पर लटकता हुआ सुन्दर हार।

अञ्चित (वि०) आच्छादित, आवृत्त। कापि मञ्जुलताऽञ्चिता। (सुद० वृ० ८५) सुन्दर वृक्ष किसी सुन्दर लता को ढकलेता है।

अञ्ज् (सक०) लेपना, रंगना, पोतना।

अञ्ज् (सक०) ०चमकना, ०सम्मानित करना, ०सजाना, समारम्भ करना।

अञ्ज् (सक०) ०स्पष्ट करना, ०प्रस्तुत करना, ०सजाना, ०समारम्भ करना।

अञ्जजनः (पुं०) सानत्कुमार स्वर्ग का प्रथम पटल।

अञ्जनं (नपुं०) कज्जल, सुरमा। तस्याः दृशोश्चञ्चलयोस्तथा-ऽन्याऽञ्जनं चकरातिशितं वदान्या। (वीरो० ५/१२) चञ्चल नेत्रों में अत्यन्त काला अञ्जन। अञ्जनं जयति रूपसम्पदि। (जयो० ११/९६)

अञ्जनगिरिः (पुं०) अञ्जनगिरिः, अञ्जन गिरि नामक पर्वत। नन्दीश्वरद्वीप की पूर्वादि दिशाओं में ढोल के आकर के चार पर्वत हैं, उनमें अञ्जनगिरि, अञ्जन के सदृश्य पर्वत है।

अञ्जनचोरः (पुं०) अञ्जन नामक चोर। (हित०सं० २८) यत्राञ्जनस्तस्करादिजनाः मुक्तिं गताःकिल। निःशंकित अंग में दृढ़ व्यक्ति, जिसने राजदण्ड के भय से नवकार मन्त्र का स्मरण किया।

अञ्जनमूलः (पुं०) मानुषोत्तरपर्वत का एक कूट।

अञ्जनमूलकः (पुं०) रुचक पर्वत पर स्थित कूट।

अञ्जनराशिः (स्त्री०) कज्जलपंक्ति (जयो० १०/३)

अञ्जनवरः (पुं०) एक प्रमुख सागर, मध्यलोक के अन्त से १२वाँ सागर व द्वीप।

अञ्जनशैलः (पुं०) विदेहक्षेत्र का पर्वत, भद्रशाल वन में स्थित पर्वत, दिग्गजेन्द्र पर्वत।

अञ्जना (स्त्री०) महेन्द्रपुर के राजा महेन्द्र की पुत्री, पवनञ्जय की भार्या और हनुमान की मातुश्री।

अञ्जनौघः (पुं०) कज्जलकुल। (वीरो० २/१२)

अञ्जलिः (स्त्री०) कर युग सम्पुट, दोनों हाथ का कमल-कली रूप भाग। संहिताञ्जलिरहं किलाधुना। (जयो० २/१)

अञ्जलिपुटं (नपुं०) करसम्पुट। बद्धाञ्जलिः (दयो० वृ० ११६)

अञ्जरीङ्गित (वि०) कर युगल सम्पुट वाला। (जयो० २०/८५) परमञ्जरीङ्गितं विदधामि। (जयो० २०/८५) केवलमञ्जरीङ्गितं स्वकीय-करपुटसंपुटम्। (जयो० वृ० २०/८५)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अञ्जस (वि०) सीधा, सरल।

अञ्जसा (अव्य०) सीधी तरह से, यथावत्, उचित, शीघ्र, त्वरित।

अञ्जिष्ठः (पुं०) [अंज्+इष्ठ्च] सूर्य, रवि।

अञ्जीरः (पुं०) अञ्जीर फल।

अञ्जीरं (नपुं०) अञ्जीर फल।

अट् (अक०) घूमना, परिभ्रमण करना, इधर-उधर जाना।

अट (वि०) [अट्+अङ्] घूमने वाला।

अटनं (नपुं०) [अट्+ल्युट] परिभ्रमण, हिण्डन।

अटनिः (स्त्री०) [अट्+अनि] धनुष का सिरा।

अटरुः (पुं०) वासक लता, अडूसा।

अटविः (स्त्री०) जंगल, वन, अरण्य।

अटविक (वि०) वनचारी।

अटा (स्त्री०) [अट्+अङ्+टाप्] परिभ्रमण प्रवृत्तिः।

अटूट (वि०) विशाल, अखण्ड। (वीरो० २/१२) ०दृढ़: शक्ति संपन्न

अट्ट (अक०) कम करना, घटाना, घृणा करना।

अट्ट (अक०) वध करना, अतिक्रमण करना।

अट्ट (वि०) [अट्ट्+अच्] ऊँचा, उन्नत, लगातार आने वाला, शुष्क, सूखा।

अट्टः (पुं०) [अट्ट्+घञ्] ०अटारी, ०कंगूरा, ०मीनार, ०दुर्ग, ०हाट, ०मण्डी, ०विशाल भवन, महल।

अट्टं (पुं०) भोजन, भात।

अट्टहास (पुं०) हंसी, ठहाका।

अट्टालिका (स्त्री०)शृंगाग्र, उच्च, ऊँचा। उत्तुंग भवन,

अट्टालिकोपरि (वि०) ऊँचे भाग, उन्नत भाग। (वीरो० २/४२)

अट्टांगः (पुं०) एक प्रमाण विशेष।

अण् (वि०) प्रत्याहार विशेष। आदि, अन्तिम और मध्यपाती अक्षरों को लेकर प्रत्याहार बनता है। 'अ इ उ ण्' यहां अंतिम 'ण' इत् संज्ञक है।

अण् (अक०) ०शब्द करना, ०सांस लेना, ०बोलना, ०जीना।

अण (वि०) [अण्+अच्] बहुत छोटा, तुच्छ, ०नगण्य, ०अधम, ०ह्रास, कम, हीन, ०अल्प, लघु।

अणक देखो अण।

अणिः (स्त्री०) [अण्+इन्] ०सूची अग्रभाग, ०कील की नोंक, ०धुरे की कील, कमल, अग्रदेश। (जयो० वृ० १८/३७)

अणिका (वि०) लेशमात्र। (जयो० १७/९)

अणिमन् (पुं०) [अण+इमनिच्] सूक्ष्मता, लघुता, एक दैवीशक्ति।

अणिमा (स्त्री०) अणिमा ऋद्धि।

अणु (वि०) [अण्+उन्] ०सूक्ष्म, बारीक, ०लघु, छोटा, ०परमाणु, पुद्गल का एक भेद। (भवेदणु-स्कन्धतया स एव) (वीरो० १९/३६) पुद्गल के अणु और और स्कन्ध के दो भेद हैं। अण्यन्ते शब्दयन्ते ये ते अणवः। जो परिणमन करते हैं और इसी रूप से शब्द के विषय होते हैं, वे अणु हैं। 'अणु' शब्द से प्रदेश भी लिया जाता है, जिसका आदि, मध्य और अन्त एक ही है।

अणुक (वि०) अणुमात्र, अल्परूपक। न व्यापकं नाप्यणुकं भणामि। (जयो० २६/९५) शुचिवंशभवच्च वेणुकं बहुसम्भावनया करेऽणुकम्। (जयो० १०/२१)

अणुमात्र (वि०) दार्शनिक विचार, कुछ लोग कथन करते हैं कि आत्मा समस्त ब्रह्माण्ड में व्याप्त है और कुछ का कहना है कि अणुमात्र है, अलात चक्र के समान समस्त शरीर में शीघ्रता से घूमता रहता है।

अणुव्रतं (नपुं०) व्रत का एकांश, स्थूल पापों का त्याग, व्रत के एक अंश का त्याग। अणूनि लघूनि व्रतानि अणुव्रतानि। हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील और परिग्रह ये पांच पाप हैं, इनका एक अंश त्याग अणुव्रत है। स्थूलेभ्यः पापेभ्यो व्युपरमणमणुव्रतम्।

अण्डः (पुं०) [अम्+ड] अण्डकोष।

अण्डं (नपुं०) फोता। (दयो० ३२) ०अण्डकोष

अण्डः (पुं०) ०ब्रह्मा, ०ब्रह्माण्ड, ०शिव।

अण्डः (पुं०) शुक्र-शोणित-परिवरणमुपात्तकाठिण्यं शुक्र-शोणित-परिवरणं परिमण्डलं तदण्डम्।

अण्डक (वि०) ०अण्डे से उत्पन्न ०अण्डे जाता अण्डज।

अण्डरः (पुं०) निगोदजीव।

अण्डाकार (वि०) अंडे की आकृति।

अण्डकोषः (पुं०) अण्डकोष, फोता। (दयो० ३२)

अण्डज (वि०) अण्डे से उत्पन्न। अण्डे जाता अण्डजा।

अण्डालुः [अण्ड+आलुच्] मछली।

अण्डायिक (वि०) अण्डे से उत्पत्ति वाला।

अण्डीरः [अण्ड+ईरच्] हृष्टपुष्ट पुरुष।

अत् (अक०) जाना, चलना, घूमना, ०चक्कर काटना, ०परिभ्रमण करना। अनवयन् दहनं शलभोऽतति। (जयो० २५/७७) पतङ्ग अग्नि के पास जाता है। अतति-संगच्छति। (जयो० २५/७७)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अत् (अक०) प्राप्त करना, बांधना।

अत एव (अव्य) तो भी, फिर भी, इसलिए, इससे, इस कारण, फलतः, हि। अत एव कियत्या: स राजा भूमेर्भवेत् पतिः। (वीरो० १६/२९) अत एव अकी दुःखीभवन् पिना की। (जयो० वृ० १/८)

अतट (वि०) तट रहित, खड़ी ढाल वाला, किनारे रहित।

अतटः (वि०) चट्टान।

अतथा (अव्य) [नञ्+तृ+था] ऐसा नहीं।

अतद्गुणं (नपुं०) जहां शब्द प्रकृति नहीं, ०गुण नहीं, ०क्रिया नहीं, ०एक अलंकार विशेष। न विद्यते शब्दप्रवृत्तिः यस्मिन् वस्तुनि तद्वस्तु अतद्गुणम्।

अतद्भावः (पुं०) द्रव्य रूपता का अभाव।

अतद्रूपः (पुं०) अंशी रहित। अनेक धर्मात्मक वस्तु में जिस समय जिस धर्म की विवक्षा की जाती है, उस समय वह वस्तु तद्रूप हो जाती है और शेष वस्तु अतद्रूप। अंशीह तत्कः खलु यत्र दृष्टिः, शेषः समन्तात्, तदनन्य सृष्टिः। (जयो० २६/८८)

अतन्त्र (वि०) विना रस्सी, तार रहित, लगाम विहीन।

अतन्द्र (वि०) [नास्ति तन्द्रा यस्य] सतर्क, सावधान, अम्लान, जागृत।

अतर्क (वि०) तर्कहीन, युक्ति रहित।

अतर्कः (पुं०) तर्क अभाव, युक्ति अभाव।

अतर्कित (वि०) अप्रत्याशित, चिन्तक विहीन।

अतर्क्य (वि०) निंद्य, निन्दयीय। (वीरो० १६/२६)

अतर्क्यवस्तु (वि०) निंद्यवस्तु। (वीरो० १६/२६)

अतनु (नपुं०) ०विशाल, ०काम। (जयो० १६/१८) ०बहुत, भारी। विपुल।

अतनुज्वरं (नपुं०) कामज्वर, विशालज्वर। नतभ्रु तप्तास्यतनुज्वरेण। (जयो० १६/१८) अतनुज्वरेण कामज्वरेण वा तप्तासि। (जयो० १६/१८)

अतर (वि०) अप्रसन्न, प्रसन्नता रहित। स कोकवत्किन्त्वि तरस्त्व शोकः (सुद० १/१०)

अतल (वि०) तल रहित, अथाह, गहरा। (सुद० २/१६) पारोऽतलस्पर्शितयाऽत्युदारः (सुद० २/१६)

अतलं (नपुं०) ०पाताल ०निम्नभाग, ०अधोभाग।

अतस् (अव्य०) [इदम्+तसिल] इसकी अपेक्षा इससे, तो यहां से इस कारण से (समु ३/२, सुद० ए ५९) रुज्यमानोऽत इत्यत्र। (सुद० ४/८) सम्भावितोऽसः खलु निर्विकारः (सुद० २/१९) अतो जयकुमारस्य। (जयो० वृ० १/११) प्रायमुदीक्ष्यतेऽतः। (सुद० पृ० ४०)

अतसः (पुं०) [अत्+असच्] हवा, वायु।

अतसी (स्त्री०) [अत्+असिच्+ङीप्] सन, पटसन, अलसी।

अतानि (वि०) विस्तारित। (जयो० २३/३६)

अति (वि०) [अत्+इ] अति का प्रयोग विशेषण या क्रिया विशेषण के रूप में होता है, जिसके कई अर्थ होते हैं। यह उपसर्ग रूप अव्यय है। अत्यन्त, बहुत, अधिक, विशेष, अतिशय, अत्यधिक। अतिबृद्धतयेव सन्निधि। (वीरो० अत्यन्त वृद्ध होने से आने में असमर्थ है। "चतुर्दशत्वं गमितात्युदारैः" (जयो० १/१३) इसमें उदार से पूर्व 'अति' का प्रयोग है जिससे उत्कर्ष/विशाल/निर्दोषभाव का बोध कराया गया। "विनयो नयवत्येवाऽतिनये" (जयो० ७/४७) यहां नय के साथ अति का प्रयोग शिष्टाचार की विशेषता को प्रबल कर रहा है।

'पुष्टतमेऽतिसंरसात्' (वीरो० ७/३१) 'संरस' से पूर्व 'अति' उपसर्ग विशालता को प्रकट कर रहा है अतिमव्वेऽप्यतिधार्मिका। (वीरो० ७/३१) 'अतिधार्मिका' का 'अति' महान्, अर्थ को प्रकट कर रहा है। पारोऽतलस्पर्शितयाऽत्युदारः (सुद० २/१६) इसमें प्रयुक्त 'अति' का अर्थ स्पष्ट है।

अतिंतर (वि०) संलग्न, समाहित। श्रुतारामे तु तारा मेऽप्यतिंतरामेतु सप्रीति। (सुद० वृ० ८२)

अतिकथा (स्त्री०) अतिरंजित कथा, निरर्थक कथन, ०निष्प्रयोजन वचन।

अतिकर्षणं (नपुं०) [अति+कृष्+ल्युट्] अधिक परिश्रम, बहुत उद्यम।

अतिकश (वि०) [अतिक्रान्तः कशाम्] कोड़े न मानने वाला घोड़ा।

अतिकाम (वि०) निरर्थक काम।

अतिकाय (वि०) [अत्युत्कटः कायो यस्य] भारी/विशाल/स्थूल शरीर वाला।

अतिकोमल (वि०) मृदीयसी, अत्यधिक सरल। कलहंसततिः-सरिद्वृत्ति प्रतिवर्तिन्यतिकोमलकृतिः (जयो० १३/५७) अतिकोमला-म्रदीयसी-बड़ी कोमल/स्वच्छ (जयो० वृ० १३/५७)

अतिकृच्छ्र (वि०) [अत्युत्करः कृच्छ्रः] अति कठिन, बहुत कष्टदायी।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अतिक्रमः (पुं०) [अति+क्रम्+घञ्] सीमा या मर्यादा का उल्लंघन, विलम्बन। (जयो० वृ० ५/१५) मार्गातिक्रमे विलम्बनम्।

अतिक्रमः (पुं०) उल्लंघन, अतिक्रमण, लांघना, बीतना, मानसिक शुद्धि का अभाव, दिग्व्रत का अतिचार।

अतिक्रमण (नपुं०) [अति+क्रम्+ल्युट] उल्लंघन, लांघना। (दयो० ६५)

अतिक्रमणीय (वि०) [अति+क्रम्+अनीयर] उपेक्षणीय, उल्लंघनीय, अतिक्रान्तय, मर्यादा भंग करने योग्य।

अतिन (वि०) [अति+क्रम्+क्त] अतिनय। अतिक्रान्तोऽतिनयः। (जयो० वृ० ७/२७)

अतिक्रान्त (वि०) असीम उद्वेलित, वेलप्रसक्ति युक्त, बीता हुआ, अभ्यतीत, आगे बड़ा हुआ। (जयो० ३/१२) जयोदय में अतिक्रान्त का अर्थ 'वेलातिग सीमातीत भी किया। (जयो० ११/५३) प्रत्याव्यान का नाम।

अतिक्रान्ततटं (नपुं०) वेलातिग, सीमातीत, उल्लंघनीय तट। (जयो० वृ० ११/५३)

अतिखट्व (वि०) [अतिक्रान्तः खट्वाम्] चरपाई रहित।

अतिग (वि०) [अति+गम+ड] रहित, दूर, ०दूरवर्ती, ०वर्जित। (जयो० २७/६६, २/१५७) दोषातिगः किन्तु कलाधरश्च। (सुद० २/३) दोषों से रहित होते हुए भी कलाधर था।

अतिग (वि०) सर्वोत्कृष्ट रहने वाला, बढ़ने वाला।

अतिगन्ध (वि०) [अतिशयितो गन्धो यस्य] प्रबल गन्ध, दुर्गन्ध युक्त।

अतिगत (वि०) दूर, दूरवर्ती, ०रहित। चित्रं जडतातिगसोऽसौ। (जयो० ६/११०)

१ जडतातो वारिरूपातातोऽतिगतो दूरवर्ती भवन्नपि।

१ जडतामतिगतो मूर्खता रहितः। (जयो० पृ० ६/११०)

अतिगमोह (वि०) मोह रहित। (जयो० २/१५७)

अतिगव (वि०) [गामतिक्रान्तः] अत्यन्त मूर्ख, अधिकजड।

अतिगुण (वि०) [गुणमति क्रान्तः] गुणहीन, गुणरहित, निर्गुण।

अतिगुण (वि०) विशिष्ट गुणों वाला। ०विशिष्ट ०योग्य।

अतिगौर (वि०) उत्तरोत्तर गौरवपूर्ण वाली। (सुद० २/४६)

अतिग्रह (वि०) [ग्रहम् अतिक्रान्तः] दुर्बोध, सत्यज्ञान।

अतिघोर (वि०) भयानक, तीव्र, कठिन। (समु० २/३०)

अतिचर (वि०) [अति+चर्+अच्] अति परिवर्तनशील, विशिष्ट परावर्तन, क्षणभुगंर।

अतिचर (अक०) [अति+चर्] घटित होना। (वीरो० १७/२८)

अतिचरा (स्त्री०) पद्मिनी, स्थलपद्मिनी, पद्मचारिणी लता।

अतिचरणं (नपुं०) [अति+चर्+ल्युट्] अधिक प्रयत्न, विशिष्टाभ्यास।

अतिचारः (पुं०) ०विकार, ०दोष, ०अतिक्रमण, ०उल्लंघन, ०व्रतमर्यादा विकार, ०सामर्थ्य। स्याद्दीपिकायां मरुतोऽधिकारः क्व विद्युतः किन्तु तथातिचारः। (वीरो० ६/११) तेलवत्ती वाली साधारण दीपिका बुझाने में पवन का अधिकार है। पर क्या वह बिजली के प्रकाश को बुझाने में सामर्थ्य रखता है? अतिचारो निर्वापणं। (वीरो० ६/११)

अतिचारः (पुं०) बन्ध, बन्धन, दुर्गुणभार (जयो० ५/४४) विभावि परिणामः (जयो० ५/९०) सन्तनोति सुतरामतिचारः अतिचारो बन्धनं भवति। (जयो० वृ० ३/४४)

'गतौ बन्धेऽपि चारः स्यादिति विश्लोचनः'

अतिचारः (पुं०) ०व्रत का अतिक्रमण, ०मालिन्य, ०अपकर्ष, ०अंशभंजन, ०मर्यादातिक्रम। 'अतिचार व्रतशैथिल्यम्' (मूलाचार वृ० ११/११) अतीत्य चरणं ह्यतिचारी महात्म्यापकर्षोऽशतो विनाशो वा। (मूला०१४४) ०असत् अनुष्ठान, ०चरित्रस्खलन, ०विषय/इन्द्रिय प्रवर्तन, ०व्रतांश भंग, व्रत शैथिल्य, ०असंयम सेवन इत्यादि नाम अतिचार के है।

अतिच्छत्रः (पुं०) [अतिक्रान्तः छत्रम्] कुकुरमुत्ता, खुंब, सोया, सौंफ का पौधा।

अतिजवेन (अव्य०) सद्य, शीघ्र, त्वरित। आव्रजत्यतिजवेन पत्तनम्। (जयो० २१/५) पत्तनं नगरमतिजवेन सद्य। (जयो० वृ० २१/५) नगरशीघ्र आ रहा है।

अतिजात (वि०) [अतिक्रान्तः जातं-जातिं जनकं वा] पिता से बड़ा हुआ, उत्पन्न हुआ।

अतितर (वि०) [अति+तरप्] अधिक, उच्चतर। (समु० १/१ उत्तेजनयातितरां समर्थः)।

अतितृष्णा (वि०) [तृष्णातिक्रम्य] लालसा, अधिक इच्छा।

अतिथिः (नपुं०) [अतति-गच्छति न तिष्ठति-अत्+इथिन्] अभ्यागत, प्राघूर्णिक, स्वागत योग्य। (जयो० १२/१२) अतिथयेऽभ्यागताय (जयो० वृ० १२/१२) न विद्यते तिथिः यस्य योऽतिथिः।

अतिथिः (नपुं०) संयम विराधन हित साधु भी अतिथि है। साधुरेवारतिथिः। यत्नेनातति गेहं वा न तिथिर्यस्य सोऽतिथिः। (सागारधर्मामृत ५/४२) संयममविराधयन् अतति भोजनार्थं गच्छति यः सोऽतिथिः। (तत्त्वार्थ वृ० ७/२१)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अतिथिः (पुं०) पति, जयोदय में अतिथि/पति अर्थ भी किया है। जिसे प्राघूर्णिक भी कहा है। शातवती होत्थितासनतः। परिधानमतिथिरागम्। (जयो० १५/१००) पति को आया देखकर पत्नी आसन से उठी और अतिथि/पति राग को व्यक्त किया। तावदेवातिथौ प्राघूर्णिके रागः प्रेमभाव। (जयो० वृ० १३०)

अतिथिदानं (नपुं०) अतिथि संविभाग नाम व्रत, ०श्रावक का एक व्रत।

अतिथि-पूजनं (नपुं०) अतिथि संविभाग नाम, संयत के लिए उत्तम आहार।

अतिथिरागः (पुं०) प्राघूर्णिक राग, पतिराग। (जयो० १५/१००)

अतिथिसत्करणं (नपुं०) अतिथि सत्कार। अतिथिसत्करणं चरणं व्रते गुणसमुद्धरणं जगतः कृते। भवावदारणं च महामते निखिलदेवमयोऽतिथिरूच्यते।। (दयो० वृ० ५८) अतिथि सत्कार सदाचार है, इससे जगत् के गुण प्रकट होते हैं, और यह भगवन् स्मृति का उचित माध्यम है, क्योंकि अतिथि पूर्णरूप से देवतुल्य है।

अतिसत्कारः (पुं०) अतिथि पूजन, अभ्यागत अर्चन। (जयो० १२/१४१)

अतिथिसत्कृति (वि०) अतिथि सत्कार करने वाली। (सुद० २/६, जयो० वृ० १२/१४१)

अतिदानं (नपुं०) [अति+दा+ल्युट्] उदारता, अधिक दान।

अतिदुर्लभः (पुं०) अत्यन्त दुर्लभ, कनिष्ठता से प्राप्त। (सुद० १२८) मर्त्यभावो अतिदुर्लभः। (सुद० १२८)

अतिदेशः (पुं०) [अति+दिश्+घञ्] हस्तान्तरण, समर्पण, (वीरो० ३/४) 'अतिदेशः सजातीयपदार्थेभ्यां विशिष्टता' इति सूक्तेः। (वीरो० ३/४)

अतिदेशालङ्कारः (पुं०) अलङ्कार नाम। (वीरो० ३/४)
जिसमें ११ वर्ण हों। ऽऽ। ऽऽ। ।ऽ। ६५
भूयावहो वीतकलङ्कलेशः,
भव्याब्जवृन्दस्य पुनर्मुदे सः।
राजा द्वितीयोऽथ लसत्कलाढ्य,
इतीव चंद्रोऽपि बभौ भयाढ्यः।।

अतिद्वय (वि०) [द्वयमतिक्रान्तः], अद्वितीय, अनुपम, अतिशय युक्त। दोनों से बड़ा हुआ।

अतिधन्वन् (पुं०) [अत्युत्कृष्टं धनुर्यस्य] योद्धा, धनुर्धर।

अतिधार्मिक (वि०) बहुत धर्म प्रवृत्ति वाला, पुण्यशील वाला। (वीरो० १५/३९)

अतिधार्मिका (वि०) उत्तमधर्म वाली। (वीरो० १५/३९)

अतिधीरः (पुं०) अधिक गम्भीर। (सुद० २/३९)

अतिनय (वि०) अतिक्रान्तनीति, नीति त्यागने वाला, नीति रहित। विनयो नयवत्येवाऽतिनये तु गुरावपि। प्रमापणं जनः पश्येन्नीतिरेव गुरुः सताम्।। (जयो० ७/४७) नयम् अतिक्रान्तोऽतिनयस्तस्मिन्नतिनये अतिक्रान्तनीतौ तु। (जयो० वृ० ७/४७)

अतिनिगूढ पद (वि०) अधिक छिपी हुई अवस्था वाले। (समु० ७/८)

अतिनिद्र (वि०) [निद्रामतिक्रान्तः] अनिन्द्रालु, कम निद्रा वाला, निन्द्रा रहित।

अतिनिन्द्य (वि०) अति निन्दनीय (वीरो० १७/२)

अतिनुत्ति (स्त्री) प्रगाढभक्ति (वीरो० २२/४०)

अतिपञ्च (वि०) [पञ्चवर्षमतिक्रान्तः] पांच वर्ष से अधिक।

अतिपत्तिः (स्त्री०) [अति+पत्+क्तिन्] असफलता, सीमापार।

अतिपत्रः (पुं०) [अतिरिक्तं बृहत् पत्रम्] सागौन वृक्ष।

अतिपथिन् (पुं०) [पन्थानमतिक्रान्तः] सन्मार्ग, अच्छा पथ।

अतिपर (वि०) [अतिक्रान्तः परान्] अपराजित, शत्रु को परास्त करने वाला।

अतिपरिचयः (पुं०) अधिक पहचान, विशिष्ट परिचय।

अतिपानः (पुं०) [अति+पत्+घञ्] ०अतिक्रमण, ०उपेक्षा, भूल, विस्मरण, ०विरोध, ०दुष्प्रयोग, वैपरीत्य।

अतिपाति (वि०) अधिक पाने वाले। (सुद० ३/१८)

अतिपातकः (पुं०) [अतिपात-स्वार्थे कन्] जघन्य पाप, व्यभिचार।

अतिपातिन् (वि०) [अति+पत्+णिच्+णिनि] शीघ्रतर, अग्रगामी, गतिवान।

अतिपात्य (वि०) [अति+पत्+णिच्+यत्] विलम्बित, स्थगित।

अतिपीतः (पुं०) अधिक पुष्ट। (जयो० १२/१२)

अतिपेशल (स्त्री०) अति पुष्ट (वीरो० २१/४) ०बलिष्ट, शक्ति सम्पन्न।

अतिप्रखरः (पुं०) तेज, दीप्त। (जयो० १/२४)

अतिप्रबन्धः (पुं०) [अतिशयितः प्रबन्धः] विशिष्ट रचना, श्रेष्ठ काव्य।

अतिप्रबन्ध (वि०) बन्धयुक्त, अत्यन्त समीप्य।

अतिप्रगे (अव्य) [अति+प्र+गै+के] प्रातःकाल में, प्रभात बेला में।

अतिप्रश्नः (पुं०) [अति-प्रच्छ्+नङ्] विशिष्ट प्रश्न, उचित निवेदन।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अतिप्रसङ्ग (पुं०) [अति+प्र+संज्+घञ्] अति लगाव, धृष्टता, अधिक सम्पर्क।

अतिबल (वि०) शक्तिशाली, विशिष्ट योद्धा, शक्तियुक्त।

अतिभर (वि०) अत्यधि भार वाला।

अतिभव (वि०) उत्कृष्टता।

अतिभीः (स्त्री०) बिजली, विद्युत, वज्रप्रभा।

अतिभीतिः (स्त्री०) सार्वत्रिक भय से भीत। अभितः समन्तात् इता प्राप्ता भी सन्त्रस्तपरिणतिः साऽभीतभीस्तस्या भावस्तस्मात् अतिभीतिभावादित्यर्थः (जयो० वृ० ६/५९)

अतिभूमिः (स्त्री०) पराकाष्टा, प्रमुखता, साहसिकता।

अतिभैरवः (पुं०) भीषण ध्वनि, तीव्र ध्वनि। पटहादुद्विजितोऽभैरवात्। (जयो० ७/१०८)

अतिमन्थर (वि०) अत्यन्त मंदगति वाला (वीरो० २१/१४)

अतिमव्वे (स्त्री०) नागदेव की महारानी। निर्मापय्य जिनास्थानं तदर्थं भूमिदायिनी। महिषी नागदेवस्यातिमव्वेऽप्यतिधार्मिका।। (वीरो०) राजा नागदेव की महारानी अतिमव्वे अधिक धर्मात्मा थी, जिसने जिनालय बनवाकर उसकी रक्षा हेतु भूमि प्रदान की थी।

अतिमुक्त (पुं०) तिनिशवृक्ष, वासन्ती लता। (जयो० २१/२७) अतिमुक्तस्तु वासन्त्यां तिनिश निष्फले त्रिषु इति विश्वलोचनः

अतिमुक्तक (पुं०) तिनिशवृक्ष, वासन्तीलता। (जयो० २५/२५)

अतिमौक्तिक (पु०) अतिमुक्तक वृक्ष, तिनिशवृक्ष। (जयो० २५/२५)

बकुलमप्यतिमौक्तिकमाक्षिपन्।

अतिमतिः (स्त्री०) अहंकार, घमंड, अधिक मान।

अतिमनोहरः (पुं०) अमूल्य, सुन्दर। (जयो० ११/१५)

अतिमार्दवः (वि०) अधिक सरल। (समु० २/८) ०मार्दव परिणामी

अतिमात्र (वि०) [अतिक्रान्तो मात्राम्] मात्रा से अधिक, अत्यधिक, अतिशय, अधिकता। आममन्नमतिमात्रयाऽशितं। (जयो० २/६३)

अतिमात्रशं (अव्य) अतिशय, अत्यधिक।

अतिमात्रशंः देखो ऊपर।

अतिमानुषः (पुं०) अनर, देव। नराणां गोचरं न भवतीति अनरगोचरमतिमानुषं कार्यं साधयति। (जयो० २/३९)

अतिमाय (वि०) [अतिक्रान्तो मायाम्] पूर्णतः मुक्त, सांसारिक छल से रहित।

अतिमुक्त (वि०) [अतिशयेन मुक्तः] पूर्णमुक्त, छूटा हुआ।

अतिमुक्तः (वि०) बंजर, ऊसर।

अति-मुक्त (वि०) एक लता, माधवी लता।

अतिमुक्ति (स्त्री०) मृत्यु से रहित, प्राण हीन।

अतियत्न (स्त्री०) प्रयत्नशील। (जयो० २/५७)

अतिरहस् (वि०) [अतिशयित रहो यस्मिन्] क्षिप्रतर, शीघ्रतर।

अतिरथः (पुं०) अतिरथ योद्धा।

अतिरभसः (पुं०) द्रुतगमन, शीघ्रगमन।

अतिराजन् (पुं०) श्रेष्ठ राजा।

अतिरात्रः (पुं०) रात्रि का मध्य भाग।

अतिरिक्त (वि०) [अति+रिच्+क्त] आगे बढ़ा हुआ, ०अत्यधिक, ०द्रुतगामी, ०अद्वितीय, उत्तुंग।

अतिरेक (वि०) [अति+रिच्+घञ्] आधिक्य, अतिशयता, महत्ता, गौरव, बाहुल्य।

अतिरेकः (पुं०) अभाव। (जयो०)

अति रूच् (पुं०) [अति+रूच्+क्विप्] घुटना।

अतिलंघनं (नपुं०) [अति+लंघ+ल्युट्] अधिक उपवास रखना, अतिक्रमण।

अतिलंघिन् (वि०) [अति+लंघ्+णिनि] त्रुटी करने वाला, उल्लंघन करने वाला।

अतिलङ्घित (वि०) गत, समाप्त, गया। जनभूमिर्नगरभूर्ताऽतिलङ्घिता। (जयो० वृ० १३/४२)

अतिलपातिनि (वि०) तिल भर जगह से रहित। पूर्ण भरा हुआ।

न तिलाः पतन्ति यस्मिन्नत्यतिलपाति। (जयो० वृ० ५/९) मानवैरतिलपातिनि राजवर्त्मनि। (जयो० ५/१)

अतिवयस् (वि०) [अतिशयित वयः यस्य] वृद्ध, जरा युक्त, अधिक आयु वाला।

अतिवर्तन (नपुं०) [अति+वृत+ल्युट्] क्षम्य अपराध, सामान्य अपराध, दण्डमुक्त।

अतिवर्तित (वि०) ०अछूता, ०अतिक्रमण करने वाला, ०परागामिन्, ०अग्रगामी, ०अतिलंघिनि। (सुद० १०७)

अतिवर्तिनी (वि०) उल्लङ्घितवती, अतिक्रमण शालिनी। (जयो० ६/२८ सुद० ४/३२) रतिमतिवर्तिन्यस्मादस्यासि च वल्लभयोग्या। (जयो० ६/२८)

अतिवादः (पुं०) [अति+वद्+घञ्] अतिकठोर, भर्त्सना, अपमान युक्त वचन।

अतिवादिन् (वि०) मुखरी, अधिक बोलने वाले, वाचाल।

अतिवाहनं (नपुं०) प्रेषण, यापन, अतिभार वहन।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अतिविकट (वि०) भीषण, कष्टदायी। (जयो० ४/३१) स्यादुत्थिताऽतिविकटैव समस्या।

अतिविमल (वि०) निर्दोष, निर्मलता युक्त।

अतिविमला (वि०) निर्मलता, निर्दोषता। अतिशयेन बिमला निर्दोषाऽसीत्। (जयो० वृ० ४/३१)

अतिवियुज (सक०) [अति+वि+युज्] सम्मिलित होना, मिलना, अनुरक्त होना, नियुक्त करना, केन्द्रित करना, प्रयुक्त करना, स्थिर करना।

अतिवियुज् (अक०) वियोग होना, विरह होना। (जयो० ९/३) अतिवियुज्यते।

अतिविशद (वि०) निर्मल, पवित्र। (जयो० ४/४९) मतिमतिविशदां ततश्चकोरदृशाम्।

अतिविस्तर (वि०) अधिक व्यापकता, बहुव्यापी, अतिप्रसरित।

अतिविस्तीर्ण (वि०) उदार, उदाराऽतिविस्तीर्णा (जयो० वृ० ३/१७) कुविंदवदुदारधारणा। (जयो० ३/१७)

अतिवृत्तिः [अति+वृत्+क्तिन्] अतिक्रमण, अतिगामी, अतिरंजिता।

अतिवृद्ध (वि०) अधिक वृद्धता। (वीरो० २/१७)

अतिवृष्टिः (स्त्री०) अत्यधिक वर्षा, प्रवल व्याधि। (जयो० १/११) जगत्यविश्रान्ततयाऽतिवृष्टिः (जयो० १/११)

अतिवीरः (पुं०) [अतिशयितो वीरः] ०अतिवीर, ०प्रबल वीर, ०उत्कृष्ट योद्धा, ०चौबीसवें तीर्थंकर महावीर का उपनाम।

अतिवीर्य (पुं०) अतिवीर्य नाम, जिसने नर्तकी के वेष में शत्रुओं को बांधा, जो बाद में मुनि बन गया।

अतिवेग (वि०) शीघ्रतर, बहुत वेग पूर्वक। अतिवेगत उद्यदायुधा अभिभूपानरयः प्रपेदिरे। (जयो० ७/११०)

अतिवेगः (पुं०) राजा अतिवेग, पृथ्वी तिलकनगर का राजा, विद्याधरों का मुखिया। रामात्र पृथ्वीतिलकाधिपस्य नाम्नाऽतिवेगस्य खगेश्वरस्य।

अतिवेल (वि०) [अतिक्रान्तो वेलां मर्यादां वा] सीमारहित, मर्यादा विहीन, अत्यधिक।

अतिवेलंवः (पुं०) वरुण देव।

अतिव्याप्त (स्त्री०) [अति+वि+आप+क्तिन्] ०अनुचित विस्तार, ०नियम का अनुचित प्रयोग, ०प्रतिज्ञा में अभिप्रेत वस्तु का मिलाना। लक्षण में लक्ष्य के अतिरिक्त, अन्य अनभिप्रत वस्तु का भी आ जाना। दोष विशेष। (हित संपादक १७)

अतिशय (वि०) आधिक्य, अधिकता, प्रमुखता, उत्कृष्टता। (सुद० पृ० ८२)

अतिशयः (पुं०) अतिशय, भगवान् के चौंतीस अतिशय-जन्म के दश अतिशय, केवलज्ञान के दश अतिशय और देवकृत चौदह अतिशय। १. स्वेदरहितता, २. शरीर निर्मलता, ३. दुग्धसम रुधिर, ४. वज्रवृषभनाराच संहनन, ५. समचतुरस्त्र शरीर संस्थान, ६. अनुपम रूप, ७. उत्तम गन्ध, ८. उत्तम लक्षण, ९. अनन्तबल और १०. हित-मित भाषण।

केवलज्ञान-अतिशय-१. एक सौ योजन सुभिक्षता, २. आकाश-गमन, ३. अहिंसा, ४. भोजन, ५. उपसर्ग-परिहीनता, ७. सब ओर मुख स्थिति, ८. निर्मिमेष दृष्टि, ९. विद्याओं की ईशता, १०. नख-रोम-वृद्धि रहित और ११. अठारह महाभाषा।

देसकृत अतिशय–१. संख्यात योजन वन समृद्धि, २. सुखदायक-वायु-प्रवाह, ३. मैत्रीभाव, ४. दर्पणवत् भूभाग, ५. सुगन्धित जलवृष्टि, ६. शस्य-रचना, ७. निर्मल आकाश, ८. शीतल-पवन, ९. जल की परिपूर्णता, १०. रोग-निरोधता, ११. दिव्यधर्मचक्र प्रवर्तन, १२. नित्यानन्द और दिव्य मात्र।

अतिशयः (वि०) श्रेष्ठ, प्रमुखता, प्रशंसा युक्त। (जयो० वृ० २२/१६)

अतिशय-उक्तिः (स्त्री०) अतिशयोक्ति वचन।

अतिशयधर (वि०) प्रशंसा धारक। (जयो० वृ० २२/१६)

अतिशयन (वि०) [अति+शी+ल्युट्] बड़ा, प्रमुख, अग्रगामी।

अतिशय-पावन (नपुं०) अधिक पवित्र, पूर्ण स्पष्ट। (सुद० पृ० ७०) कलिमलधावनमतिशय पावनमन्यत्किं निगदाम। (सुद० पृ० ७०)

अतिशय-शोभन (वि०) अधिक शोभा युक्त।

अतिशय-शोभावान् (वि०) धृतशंस, प्रशंसा धारण करने वाला। (जयो० वृ० २२/१६) धृतशंसोऽतिशय-शोभावानिति।

अतिशयालु (वि०) [अति+शी+आलुच्] अग्रगामी, आगे बढ़ने वाला।

अतिशयिता (वि०) पुष्ट, पीन, प्रशंसा योग्य। पीनं पुष्टिमतिशयितामापन्नम्। (जयो० वृ० १/३८)

अतिशयितामापन्न (वि०) प्रशंसा को प्राप्त करने वाला। (जयो० वृ० १।३८)

अतिशयिन् (वि०) [अति+शी+णिनि] प्रमुख, श्रेष्ठ, प्रधान, ०उच्च, योग्य, ०यथेष्ट, ०समुचित। (भक्ति सं० २०)

अतिशयिप्रधानं (नपुं०) अतिशय युक्त।

श्री पार्श्वनाथं भुवि वर्द्धमानं, पादानलोक्तातिशयिप्रधानम्। (भक्ति सं० २०)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अतिशायन (वि०) श्रेष्ठता, प्रमुखता, प्रधानता।

अतिशायिन् (वि०) [अति+शी-णिनि] अग्रगामी, अतिशयवान्। (जयो० ११/२२) अन्य से बढ़कर। अन्यातिशायी रथ एकचक्रो, रवेरविश्रान्त इतीध्मशक्रः।। (जयो० ११/२२)

अतिशयोक्तिरलंकारः (पुं०) अतिशयोक्ति अलंकार, चित्तभित्तिषु समर्पितदृष्टौ तत्र शश्वदपि मानवसृष्टौ। निर्निमेषनयनेऽपि च देवव्यूह एव न विवेचनमेव।। (जयो० ३/१९) वहां नगरी की चित्रयुक्त भित्तियों से एक टक दृष्टि लगाने वाले मानवसमूह और निर्निमेष नयनवाले देवों के समूह में परस्पर विवेक प्राप्त करना बड़ा कठिन हो गया था।

अतिशयोन्नतिः (स्त्री०) विशेष उन्नति, प्रमुख प्रगति। (वीरो० ७/३२)

अतिशयोपयुक्तिः (स्त्री०) अतिशय पुण्य योग का विचार। (सुद० २/४२) बभावर्था स्वातिशयोपयुक्तिमती सती पुण्यपयोधिशुक्तिः। (सुद० २/४२)

अतिशीतत्व (वि०) अधिक शीतलता, विशेष शैत्य, प्रचुर सर्दी। (जयो० वृ० १२/२०)

अतिशेषः (पुं०) अवशिष्ट भाग, अवशेष अंश, बचा हुआ हिस्सा।

अतिश्रेय (वि०) अतिकल्याणकारी, विशेष उपकारी।

अतिश्रेयसिः (श्रेयसीमतिक्रान्तः) श्रेष्ठता युक्त पुरुष।

अतिसक्तः (पुं०) [अति+षंज्+क्त] आसक्त, तल्लीन, प्रेम, अतिस्नेह। (जयो० १/८४) स वैनतेयः पुरुषोत्तमोऽतिसक्तो न।

अतिसक्तिः (स्त्री०) भारी आसक्ति, प्रगाढ़ संपर्क।

अतिसंधानं (नपुं०) [अति+स+धा+ल्युट्] छल करना, धोखा देना, चालाकी, जालसाजी।

अतिसङ्कटः (पुं०) अतिक्रम, जनबाहुल्य का संकट। (सातिसङ्कटतया नरराजां) (जयो० ५/१५)

अतिसङ्कटता (वि०) विकट समस्या वाला।

अतिसरः (पुं०) [अति+सृ+अच्] आगे बढ़ने वाला, नेता, नायक।

अतिसरः (पुं०) अतिसार, दस्त। (सुद० ९१) ज्वरिणः पयसि दधिनि अतिसरतो द्रवयोऽपि क्षुधितस्य।

अतिसर्गः [अति+सृञ्+घञ्] स्वीकार करना, अनुमति देना, पृथक् करना।

अतिसर्जनं (नपुं०) [अति+सृज्+ल्युट्] देना, स्वीकार, उदारता, वियोग।

अतिसर्व (वि०) सर्वोत्तम, सर्वश्रेष्ठ।

अतिसारः (पुं०) [अति+सृ+णिच्+अच्] अतिसार रोग, पेचिश, मरोड़ युक्त दस्त। (जयो० २८/३०)

अतिसारिन् (पुं०) अतिसार नामक रोग से पीड़ित।

अतिसुन्दरः (पुं०) अतिमनोज्ञ (जयो० ५।५१) ०सर्वाङ्गः सुन्दर

अतिसुन्दरगात्री (वि०) अतिसुन्दरशरीरा, मनोज्ञ देह वाली (जयो० ५।२५१) अतिसुन्दरं गात्रं शरीरं यस्याः सा।

अतिसुन्दरी (स्त्री०) सुभगा, सुन्दर रूपा, मनोज्ञा। (जयो० ३/५८) सुभगाऽतिसुन्दरी कृता।

अतिस्नेहः (पुं०) अधिक अनुराग, परमप्रीति।

अतिस्पर्शः (पुं०) परम स्पर्श, विशेष स्पर्श।

अतिहितं (नपुं०) अनुरूप, अपने अनुकूल। भाति चातिहितं तेन। (जयो० ३/६७) अतिशयेन हितरूपमुत्तममाभाति। (जयो० वृ० ३/६७)

अतीत् (सक्) [अति+इत्] त्याग करना, छोड़ना, उपेक्षा करना। (जयो० ४।६७, सुद० १/२७) व्रजति वेदमतीत्य पुनर्वचः।

अतीत्य-त्यक्त्वाऽन्यत्व एव क्वचिन्मौनतो व्रजति, शास्त्रमतीत्य समुपेक्ष्यान्यत् एव व्रजति। (जयो० वृ० ४/६७)

अतीत (वि०) [अति+इ+क्त] रहित, मृत, व्यतीत, बीता हुआ, भूतकालिक, प्राचीन। (सुद० २/२, पृ० ७०) बाह्याडम्बरतोऽतीतास्ते। (सुद० पृ० १२७)

अतीतगुणं (नपुं०) अपरिमितगुण। द्विजिह्वातीतगुणोऽप्यहीनः। (सुद० २/२/) * दुर्गुणहीन, सद्गुणयुक्त। (सुद० २/२)

अतीतवती (वि०) विरहित। (जयो० २६/) व्यतीत करती हुई। (वीरो० ५/४२) तासां गर्भक्षणं निजमतीतवती मुदा सा। (वीरो० ५।४२) हर्ष से अपने गर्भकाल को बिता रही थी; हर्षेणातीतवती व्यतीयाय। (वीरो० वृ० ५/४२)

अतीतिः (स्त्री०) आगामी काल। (जयो० २७/६६) ०भविष्यत् काल।

अतीन्द्रिय (वि०) इन्द्रिय द्वारा अगम्य, इन्द्रियों से परे। (जयो० ४/३४, ८४)

अतीन्द्रिय-ज्ञानं (नपुं०) प्रच्छन्न ज्ञान। (वीरो० पृ० ३१६) प्रच्छन्न/गुप्त ज्ञान भी लोगों को होता हुआ देखा जाता है। देखो-प्रास्कायिक/अङ्ग निरीक्षक एक्स रे यन्त्र के द्वारा शरीर के भीतर छिपी हुई वस्तु को देख लेता है और सौगान्धिक मनुष्य पृथ्वी के भीतर छिपे हुए/दबे हुए पदार्थों को जान लेता है, फिर यदि अतीन्द्रज्ञान का धारक

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यतीश्वर देश, काल और भूमि आदि से प्रच्छन्न सूक्ष्म, अन्तरित और दूरवर्ती पदार्थों को जान लेता है तो इसमें विस्मय की क्या बात है?

अतीव (अव्य०) [अति+इव] अधिक, बहुत, बड़ा। अस्मन्मनसोऽयमतीवानन्ददायी लगति। (दयो० पृ० ५८)

अतुच्छ (वि०) अनल्प, विपुल। (जयो० ८/२६)

अतुच्छरसं (नपुं०) नव रसों की विपुलता। (जयो० १/४)

अतुल (वि०) ०अनुपम, असाधारण, ०अनन्य ०अद्वितीय, ०बेजोड़, अपूर्व। (जयो० ६/१५) सम्भूयभूयादतुलः प्रकाशः। (वीरो० १४/२३) जयो० १२/१२

अतुल-कौतुकवती (वि०) अपूर्व आनन्ददायी, विशेष प्रशंसनीय। (सुद० पृ० ८२) अतुलकौतुकवती वा या वृततिरकलङ्कसद-धीतिः। (सुद० पृ० ८२)

अतुलप्रभा (स्त्री०) अपूर्वकान्ति। अतुला प्रभा कान्तिर्यस्य। (जयो० वृ० ६/१५)

अतुल्य देखो नीचे।

अतुल्या (वि०) ०अनुपम, अद्वितीय, ०अपूर्व, ०विशिष्ट। (जयो० ११/१) न विद्यते तुला यस्याः सा तामनन्य सदृशीम्। (जयो० वृ० ११/१)

अतुषार (वि०) शीतलता रहित।

अतेजस् (वि०) कान्तिहीन, प्रभाविहीन, धुंधला, निरर्थक।

अतोष (वि०) अप्रसन्न, संतुष्टि रहित, गरीयसी स्वस्य गुणेऽप्यतोषः। (समु० १/१८)

अत्ता (स्त्री०) माता, मां। [अत्+तक्+टाप्] सास, बड़ी बहिन।

अत्नः [अतति सततं गच्छति-अत्+न] १. हवा, २. सूर्य।

अत्थु (अव्य) है, अत्थु शब्दः पादपूरणार्थः। (जयो० १९/७६) णमोत्थु आमोसहिपत्ताणं।

अत्य (वि०) व्यतीत करना, बिताना। दिनादि अत्येति तटस्थ। (सुद० १११)

अत्यज् (सक०) अत्याग करना, ग्रहण करना। (जयो० वृ० १/२०) स्वामिनः सङ्गमत्यजन्ती।

अत्यक्त (वि०) अपरित्यक्त, बिना छोड़े। अत्यक्तदारैक-समाश्रयैः कृती। (वीरो० ९/६)

अत्यग्नि (वि०) पाचन शक्ति की अधिकता।

अत्यग्निष्टोमः (पुं०) यज्ञ का भाग, ज्योतिर्भाग।

अत्यंकुश (वि०) निरंकुश, उच्छृंखल।

अत्यन्त (वि०) [अतिक्रान्तः अन्तम्सीमाम्] अत्यधिक बहुत, नितांत, अनंत, बड़ा, तीव्र। (जयो० वृ० १/१५)

अत्यन्तं (अव्य०) अत्यधिक, बहुत, अधिक।

अत्यन्ताभावः (पुं०) एक दार्शनिक कथन, एक द्रव्य का दूसरे द्रव्य रूप नहीं होना। पटस्य वस्त्रस्यार्थी जनो घटं न प्रयाति, न स्वीकरोति ततस्तत्त्वं वस्तु तदनुभानुपाति। (जयो० वृ० २६।८७)

अत्यन्तिक (वि०) [अत्यन्त+ठन्] बहुत अधिक, तीव्रतर, तीव्रतर गामी।

अत्यय (वि०) [अति+इ+अच्] ०जाना, ०बीत जाना, ०व्यतीत होना, ०समाप्ति, ०उपसंहार, ०अतिक्रमण, ०अपराध, ०दोष, दुःख अवसान, ०अनुपस्थिति, ०अन्तर्धान, नाश, ०भय, हानि। (जयो० २/१५४)

अत्ययकर (वि०) हानिकर। प्रत्ययमत्ययकरं विद्धि यदि विद्धि नरं त्वम्। प्रत्ययं विश्वासमत्ययकरं (जयो० २/१५४) हानिकारक।

अत्ययित (वि०) [अत्यग्र+इतच्] बढ़ा हुआ, आगे निकला, उल्लंघन किया गया।

अत्ययिन् (वि०) [अति+इ+णिनि] बढ़ने वाला, आगे निकलने वाला, उड़ाई गई। (जयो० ५/३) वात्ययाऽत्ययिनि तूलकलापे। (जयो० ५/३) वात्या तयाऽत्ययिनि अत्ययभृति वातप्रेरिते। (जयो० वृ० ५/३)

अत्यर्थ (वि०) अत्यधिक, बहुत भारी।

अत्यर्थ (क्रि०वि०) अत्यन्त, अधिक। (सम्य १००)

अत्याचार (वि०) [आचारमतिक्रान्तः] आचार उपेक्षक, व्यभिचार, दुराचार।

अत्याचारः (पुं०) धर्म विहीन आचरण।

अत्यादित्य (वि०) तीव्र तेजस्वी, अधिक कान्तिवाला।

अत्याय (वि०) अतिक्रमण, उल्लंघन।

अत्यारूढः (वि०) अधिक बढ़ा हुआ।

अत्यारूढः (पुं०) अभ्युदय, उच्च।

अत्यारूढं (नपुं०) उच्च, अभ्युदय।

अत्यारूढिः (स्त्री०) उच्चासीन।

अत्याहित (वि०) [अति+आ+धा+क्त] ०अधिक दुःखित, ०व्याकुल, ०अधिक पीड़ित, ०दुर्भाग्य, ०विपत्ति, भय।

अत्युक्तिः (स्त्री०) [अति+वच्+क्तिन्] अतिशयोक्ति, अधिक बढ़ा चढ़ाकर कहना।

अत्युदार (वि०) निर्दोष, अत्यन्त उदार। (जयो० १/१३, सुद० २/१६) तैरत्युदारैः निर्दोषैः। पारोऽतलस्पर्शितयाऽत्युदारः। (सुद० २/१६)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अत्युन्नत (वि०) प्रांशुतर, उत्तम, उच्च। प्रांशुतरमत्युन्नतं। (जयो० वृ० १३/७)

अत्यूहः (पुं०) प्रवल चिन्तन, उत्कृष्ट विचार।

अत्र (अव्य०) [इदम्+त्रल्=प्रकृतेः अशभावश्च] यहां, इस स्थान पर इस विषय में। जातु नात्र हितकारि। (जयो० २/६६) जो शास्त्र यहां लौकिक कार्यों में हितकर न हो। वस्तु पुनरत्र पवित्रमा। (जयो० २/६७)

अत्र (अव्य०) इस जगह, उस स्थान, इसमें। अनीतिममत्यत्र जनः सुनीतिः। (सुद० १/२३)

अत्र (अव्य०) दृष्टान्त या उदाहरण के लिए भी 'अत्र' का प्रयोग है।
समोदनस्यात्र भवादृशस्य। (जयो० ३/७२) तुम जैसे मोद-सम्पन्न महापुरुष के प्रयोग के लिए उपमा देने का अवसर प्राप्त कर लिया।

अत्र (अव्य०) अन्तराल/प्रदेश/भाग में। गङ्गापगासिन्धुनदान्तरत्र पवित्रमेकं प्रतिभाति तत्र। (सुद० १/१४) गङ्गा और सिन्धु नदियों के अन्तराल में अवस्थित हैं।

अत्रंतरे (क्रि०वि०) इसी बीच में।

अत्र च (अव्य०) और यहां पर। सम्पादयत्यत्र च कौतुकं नः। (सुद० २/२१)

अत्रत्य (वि०) [आत्रभव-अत्र+त्यप्] इस स्थान का, यहां उत्पन्न।

अत्रप (वि०) निर्लज्ज, अविनीत, अशिष्ट।

अत्रिः (पुं०) ऋषि।

अथ (अव्य०) [अर्थ्+ड-पृषो० रलोपः] प्रयोजनभूत, इस तरह, इस प्रकार, अब। सुखलताऽयमथ च पुनः। (सुद० पृ० ८४ जयो० १/४)

अथ (अव्य०) शुभसंवादे अथेत्यव्ययं। (जयो० वृ० १/३) प्रकरण पुरा प्राचीनकाले पुराणेषु। (जयो० वृ० १/२) अथाभवत्तद्दिशि सम्मुखीन। (जयो० १/७९) अथ प्रकरणे सम्यगुत्थानं सूत्थानम्। **और अर्थ में**–वाविन्दुरेति खलु शुक्तिषु मौक्तिकत्वं लोहोऽथ। (सुद० ४/३०) बिन्दु सीप के भीतर मोती और पारस पाषाण का योग पाकर लोहा भी सोना बन जाता है। **पश्चात् अर्थ में**–अथ प्रभावे कृतमङ्गला सा। (सुद० २/१२०) **मानो कि के लिए**–मिथोऽथ तत्प्रेमसमिच्छकंषु। (सुद० २/२६)
उक्तिविशेषे–जहावहो मञ्जुदृशोऽथ तावत्। (वीरो० ६/६) नाभि ने मानो अपने गम्भीरपने को छोड़ दिया हो। अथेत्युक्तिविशेषे। (वीरो० वृ० ६/६)
शुभ-सम्भाषणे–अथ भो भव्या भवेन्मुदे। (जयो० २२/१) सर्वर्तुमयामोदथायात्। (जयो० वृ० २२/२)
क्रमार्थे–इतीव पादाग्रमितोऽथ यस्या। (वीरो० ३/२०) अथ शब्दः क्रमेणावयवर्णनार्थमिति। (वीरो० वृ० ३/२०)
शुभसंवाद-करणे–रचितानि पदानि रामयथातदातिथ्य-कृतेऽभिरामया। इस पर में अथेति शुभसंवाद-करणे। तथा (२/९४), प्रकरणारम्भे, (जयो० वृ० १०/६६), (जयो० ११/७) अनन्तरे सुद० (जयो० १०/५८) इत्यादि अथ अव्यय के कई अर्थ हैं। यह प्रश्न पूछने, संवाद करने आदि में भी प्रयुक्त होता है।
'अथाथो च शुभे प्रश्ने सकल्यारम्भ-संशये' इति विश्वलोचनः। (जयो० ८ वर्ग)

अथ किल (अव्य०) इसके अनन्तर निश्चय ही। इसके बाद, निश्चय से। (भक्ति सं० १८)

अथ किम् (अव्य०) और क्या? ठीक ऐसा ही।

अथ च (अव्य०) और भी, फिर भी, तथापि। (सुद० वृ० ८४)

अथर्वन् (पुं०) [अथ+ऋ+वनिप्] उपासक, पुरोहित। प्रचराथर्वण तद्धि कार्मणम्। (जयो० २७/३१)

अथर्वण-काव्यं (नपुं०) ऋग्वेद, वैदिक ग्रन्थ, वेदग्रन्थ। (दयो० २८)

अथर्वणिः (पुं०) अथर्ववेद में निपुण।

अथर्वाणः (पुं०) [अथर्वन्+अच्] अथर्ववेद की पद्धति।

अथर्ववेदः (पुं०) अथर्ववेद, वेद ग्रन्थ। (दयो० २२)

अथवा (अव्य) या, और, अधिकतर, क्यों, कदाचित्। धर्मपात्रम-धमर्षकर्मणे कार्यपात्रमथवाऽत्रशर्मणे। (जयो० २/९४) यहां 'अथवा' शब्द का प्रयोग और अर्थ में हुआ है।
अथवेत्युक्त्यन्तरे-मानो कि–समुप भान्ति लवा अथवागसः। (जयो० १/१२) अथवा/या (जयो० वृ० १/२)
वर्णनान्तरार्थम्-समङ्कितं यद्वरणेऽथवा भीः। (वीरो० २/२९)
पादपूरणार्थे–आम्रं नारङ्गं पनसं वा फलमथवा रम्भायाः। (सुद० पृ० २/२)

अथवा तु (अव्य०) या तो, फिर भी, तो भी। अथवा तु न पक्षपातः शमनस्य जातु। (सुद० पृ० १२१)

अथात्र (अव्य०) ०इसके अनन्तर ०यहां, ०इसके पश्चात् यहां/इस समय में। अथात्र नाम्ना विमलस्यं वाहनं। (सुद० पृ० ११४)

अथात्र (अव्य०) तदनन्तर, इसके पश्चात्। अथात्र विद्या विशदा नियोगिनीः। (जयो० २२४/१)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथान्यदा (अव्य०) कदापि, कदाचित्, तो भी। अथान्यदा स्वैरितया चरन्तौ। (जयो० २३/७१)

अथापकृष् (वि०) अपकर्षण। (सुद० १०२)

अथैकदा (अव्य०) इसी प्रकार, इसी तरह। अथैकदा भूमिरुहोपरिष्टात्। (समु० ३/३७) अथैकदा दान्त हिरण्य सम्मती। (समु० ४/१६) इस पंक्ति में **'अथैकदा'** का अर्थ है-अब कुछ दिन बाद।

अथेति (अव्य०) इसके अनन्तर भी। (जयो० वृ० १/२)

अद् (सक्) खाना, निगलना। (सुद० ११२) गौस्तृणानि समादरणेऽत्ति। (जयो० ४/२१) बिना आदर के गाय भी तृण/घास नहीं खाती है।

अद (वि०) [अद्+क्विप्, अच् वा] खाने वाला, निगलने वाला। (सुद० १२१३)

अद (वि०) भव, सम्पूर्ण संसार (जयो० २/३)

अद्भुत (वि०) अपूर्व, अनुपम, अद्वितीय। (जयो० ३/१६, सुद० ३/९) यौवनेनाद्भुतं तस्याः। (जयो० ३/४३) अद्भुतम भूतपूर्वमेव। (जयो० वृ० ३/४३)

अद्भुतच्छटा (स्त्री०) अपूर्वाछटा, अपूर्व कान्ति, अनुपम प्रभा। (जयो० ३/१६)

अद्भुत-बोधदीपः (पुं०) असाधारण ज्ञानदीप। अद्भुतोऽन्यजनेभ्योऽसाधारणश्चासौ बोधो ज्ञानमेव दीपः, स्व-परप्रकाशकत्वात्,। (जयो० १/८५)

अदंष्ट्र (वि०) दन्तहीन, जिसके दांत निकाल दिए हों ऐसा सर्प।

अदक्षिण (वि०) वाया, दक्षिणा बिना।

अदण्ड्य (वि०) दण्डमुक्त। ०अपराध रहित।

अदत् (वि०) दन्त रहित, दन्तविहीन।

अदत्त (वि०) न दिया हुआ, अनुचित रूप से संग्रहीत, चुराया गया, अपहृत। (सुद० ४/४२)

अदत्तादानं (नपुं०) चोरी, स्तेय।

अदत्तभाग (वि०) चौर्य रहित।

अदन्त (वि०) १. दन्त रहित, २. वह शब्द जिसने अन्त में 'अत्' या 'अ' हो।

अदन्तः (पुं०) जोक।

अदन्त्य (वि०) दांतों के लिए हानिकारक।

अदभ्र (वि०) अनल्प, प्रचुर, पुष्कल, बहुत।

अदम्भ (वि०) विशाल, उन्नत, रमणीय। हीरवीरचिताः स्तम्भा अदम्भास्तत्र मण्डपे। (जयो० १०/८८) अदम्भा विशालाः स्तम्भास्ते। (जयो० वृ० १०/८८)

अदम्य (वि०) पर पराभवरहित। (वीरो० २/१०)

अदय (वि०) दयाहीन। (जयो० १८/३७)

अदर्शन (नपुं०) अनावलोकन, अनुपस्थित, अदृष्ट, लुप्त, लोप अभाव।

अदर्शिन् (वि०) अदृष्ट, लोप युक्त, अदर्शनता अभावता, लोपता। (सुद० ९८) दस्याऽदर्शि सुदर्शनो मुनिरिवं (सुद० पृ० ९८)

अद० (अव्य०) उधर, निम्नलिखित। (सुद० ९४) गदितं च वचोऽदः। (जयो० ४/५०) अदो निम्नलिखितं वचः। (जयो० वृ० ४/५०)

अदस् (सर्व०) [पु० स्त्री-असौ] (जयो० १/१४) नपुं०-अदः यह, असौ कुमुद-बन्धुश्चेद्हितैषी। (जयो० ३/५१०) काशिका ययुरमी धिषणाभिः (जयो० ४/१६) 'अमी' शब्द प्रथमा बहुवचन। दरिणो हरिणा बलादमी। (जयो० १३/४७) अस्याः क आस्तां प्रिय एवमर्थः। (सुद० २२)

अदातृ (वि०) कृपण, नहीं देने वाला।

अदादि (वि०) 'अद्' से आरम्भ होने वाली धातु, दूसरे गण की धातुओं का समूह

अदाय (वि०) [नास्ति दायो यस्य] अदान, अप्रदाता, हिस्से से विमुख।

अदायाद (वि०) उत्तराधिकारी से विमुक्त।

अदायिक (वि०) उत्तराधिकारी न हों।

अदितिः (स्त्री०) [दातुं छेत्तुं अयोग्या दो+क्तिन्] पृथिवी, भूमि, भू। कालः किलायं सुरभीतिनामाऽदितिः समन्तान्मधुविद्धधामा। (वीरो० ६/१२)

अदिग्ध (वि०) देवमय (जयो० १४/६८)

अदीन (वि०) दैन्य रहित। (जयो० १७/२१), उत्तम, श्रेष्ठ (जयो० ४/१०)

अदुर्ग (वि०) जो दुर्गम न हो, सुगम, पहुंचने में सरल।

दुष्ट (वि०) पुण्यवान्। (जयो० ३/२६)

अदून (वि०) अहीन, ०पूर्ण, ०कम नहीं, निर्दोष, ०कुलीन। (जयो० १/८१) व्रताश्रितिं वागतवान दूनाम्। (जयो० १/८१)

अदूना (स्त्री०) न्यूना, अहीना, पूर्णा। (जयो० ५/७३)

अदूर (वि०) समीप, निकट, पास। (जयो० १९/१५)

अदूरवर्तिम् (वि०) निकटवर्ती, समीपस्थ, सन्निकटस्थ। (जयो० ५/७३)

अदृश् (वि०) [नास्ति दृग् अक्षि यस्य) दृष्टिहीन, अन्धा।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अदृष्ट (वि०) [नञ्+दृश्+क्त] अदर्शनीय, अनदेखा, अनवलोकित। (सुद० २/२१) वार्ताऽप्यदृष्टश्रुतपूर्विका। (सुद० २/२१) बात भी अदृष्ट है।

अदृष्ट-पार (वि०) अपार से पार, अगाध से उस पार। (सुद० १/२) हेतुरदृष्टपारे कविताभरे तु। (सुद० १/२)

अदृष्टफलं (नपुं०) शुभाशुभ कर्म वाला फल।

अदृष्टिः (स्त्री०) कुदृष्टि, मिथ्यादृष्टि, द्वेषपूर्ण दृष्टि।

अदृश्य (वि०) देव कर्म की अदृश्य विधि दृष्टुमयोग्या। (वीरो० ३/१७) (सम्य० २४) देखने में असमर्थ।

अदृश्यरूपं (नपुं०) अदर्शन स्वरूप। (जयो० ३/८८)

अदेय (वि०) जो दिया न जाए, अप्रदत्त।

अदेव (वि०) देवविहीन, अपवित्र।

अदेशः (पुं०) कुदेश, खोटा स्थान

अदेशस्थ (वि०) अनुपयुक्त स्थान, अनुचित स्थान।

अदैव (वि०) भाग्यहीन, अभागा।

अदोष (वि०) दोषमुक्त, निर्दोष। (वीरो० २८/३५) काव्य साहित्य में प्रयुक्त अदोषविधि।

अदोषभावः (पुं०) निर्दोषभाव (वीरो० २२/३५)

अद्धः (पुं०) मार्ग। (सुद० ३/४०)

अद्धा (अव्य०) सचमुच, वास्तव, अवश्य, बिलकुल, निःसन्देह।

अद्य (वि०) [अद्+यत्] खाने योग्य, भोज्य।

अद्य (अव्य०) आज, अभी, इस दिन, अब।

अद्यकालः (पुं०) सुद० १३४, जयो० २७/५६ सम्प्रत्यय (जयो० १२२११८) आज।

अद्यतन (वि०) [अद्य+ष्ट्यु, तुट् च] वर्तमान काल, प्रत्युपन्न, इस समय, आज से सम्बन्धित।

अद्यतनीय (वि०) आज का, आधुनिक।

अद्यवा (अव्य०) आज ही। (सुद० ३/३७)

अद्याध (अव्य०) आज, इस प्रकार। (वीरो० ६/४३)

अद्यावधि (अव्य०) इस समय, इस काल। (भक्ति सं० १, जयो० वृ० २३/८, आज तक (वीरो० १८/५५)

अद्यापि (अव्य०) आज भी। (जय०वृ० १/८९)

अद्रव्यं (नपुं०) द्रव्य हीन, तुच्छ वस्तु, निर्धन, अकर्मण्य।

अद्रिः (पुं०) [अद्+क्रिन्] पर्वत, गिरि। (सुद० १२१)

अद्रिः (पुं०) वृक्ष विशेष। (वीर जयो० १४/४५)

अद्रिः (पुं०) सूर्य, रवि। (जयो० १४/४६)

अद्रिईशः (पुं०) पर्वतराज।

अद्रिनाथः (पुं०) गिरिपति, शिव, ऋषभ।

अद्रिमतिः (पुं०) शिव, ऋषभ।

अद्रिराजक (पुं०) सम्मेदाचल, (जयो० १४/४६) अद्रिः शैले द्रुमे सूर्ये इति विश्वलोचन। उपमधुवनमद्रि राजकं च। (जयो० १४/४६) अद्रिभिर्नानावृक्षराजकं शोभितम्। अद्रिराजकं सम्मेदाचलमाराधयन्न। (जयो० वृ० १४/४६)

अद्रि-शासिना (वि०) पर्वत शासित। (वीरो० ७/२)

अद्रि संगुप्त (वि०) पर्वताक्षिदित, गिरि संरक्षित। पर्वतों से घिरा हुआ। (सुद० ७७) दुर्गम उच्च स्तनों से संरक्षणीय।

अद्रिसुता (स्त्री०) पार्वती, गौरी।

अद्रिसानुः (स्त्री०) पर्वत कूट।

अद्रिसारः (पुं०) पर्वतसार, गिरि सत्त्व।

अद्रोहः (पुं०) मृदुता, सरलता।

अद्वय (वि०) [नास्ति द्वयं यस्य] अद्वितीय, ०अनुपम, ०परम, ०उत्कृष्ट, ०एकमात्र।

अद्वितीय (वि०) अपूर्व, ०अनुपम, ०एकमात्र, ०असाधारण, ०अनन्य। (वीरो० २/१६, जयो० १/१०, भक्ति सं० १, जयो० ११/४

अद्वैत (वि०) द्वैत हीन, एक स्वरूप, ०एक स्वभाव, ०समभाव, ०अपरिवर्तनशील। ०अनन्य सदृशी वाग्वाणी। (जयो० वृ० ११/५५) ०एकमात्र, ०अनुपम, ०अनन्य। (जयो० ११/५५)

अद्वैतः (पुं०) अद्वैतवाद। (जयो० ११/५५)

अद्वैतवाक् (नपुं०) अद्वैतवाद। अद्वैतस्येकं ब्रह्मः द्वितीयो नास्तीत्यादि इत्यादिसम्प्रदायस्य वाग्यस्य। (जयो० वृ० ११/५५)

अद्वैतवादः (पुं०) एक ब्रह्मवाद सिद्धान्त। नान्यद् इति वादोऽद्वैतवादः। (जयो० वृ० २७/८६)

अद्वैतसम्वादः (पुं०) एकाकिन प्रसङ्ग, एकान्त का प्रसङ्ग। (जयो० १६/२२) अद्वैतस्येकाकिनः सम्वादं प्रसङ्गमुपेत्य। (जयो० वृ० १६/२२)

अधस् (अव्य०) [अधर+असि, अधरशब्दस्य स्थाने अधादेशः] नीचे, निम्न भाग पर, निम्न प्रदेश में। अधः स्थितायाः कमलेक्षणायाः। (जयो० १३/८६)

अधः देखो ऊपर।

अधकरं (नपुं०) हाथ का निचला भाग।

अधःस्थ (वि०) नीचे की ओर (जयो० १४/३३)

अधम (वि०) [अब+अम्-वस्य स्थानेधादेश) निम्नतम, जघन्यतम।

अधरः (पुं०) ओष्ठ, ओंठ (सुद० १/३०, जयो० १/७२) होंठ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अधर (विपुं०) नीच प्रकृति, निम्नभाव। नीचप्रकृतिरपि। (जयो० वृ० १/७२)

अधर (वि०) ऊपर, ऊपर की ओर। अधरमिन्द्रपुरं विवरं। (सुद० १/३७) इन्द्र का नगर स्वर्ग तो अधर है।

अधर (वि०) बीचों बीच, मध्य में। स्वतोऽधरं पूर्णमिदं सुयोगैः। (सुद० १/३०)

अधरदलं (नपुं०) रदच्छद, (जयो० २/१५५)

अधरशोणि (वि०) ०दन्तच्छदलोहित, ०अधरोष्ठ की लालिमा, ०राग युक्त ओष्ठ। (जयो० १८/१०२) दन्तावलीमधर-शोणिमसंभृदङ्काम्। अधरोष्ठ की लालिमा से चिह्नित दन्तपंक्ति।

अधरबिम्बं (नपुं०) ओष्ठमंडल। (जयो० ३/५२) अधरभाग। बहुस्य वृत्तितावाऽधरबिम्बस्य दृश्ताम्। साध्व्या यतोऽधरं बिम्बनामकं च फलं परम्।।

अधरलता (स्त्री०) ओष्ठतति, ओष्ठपंक्ति। (जयो० ३/६०)

अधरीकृ (अक०) [अधर+च्वि+कृ] आगे बढ़ जाना, पराजित करना। (जयो० २२/६७)

अधरीकृत (वि०) अधरौष्ठ परिणत, निरादर भाव। (जयो० २२/६७)

अधरीण (वि०) [अधर+ख] तिरस्कृत, निंदित।

अधरेद्यु (अव्य०) [अधर+एद्युस्] पहले दिन, परसों।

अधरोष्ठः (पुं०) दन्तवास, दन्तच्छद।

अधर्मः (पुं०) ०तामसभाव, ०बुरा, ०अन्याय, ०धृष्टता। (सुद० ४/१२)

अधर्मः (पुं०) अधर्मद्रव्य, षट्द्रव्यों में चतुर्थ द्रव्य। यह जीव और पुद्‌गलों के ठहरने में सहायक निमित्त कारण है। यह एक है, और असंख्यात प्रदेशी तथा सम्पूर्ण लोकाकाश में फैला है (सम्य० १९) (वीरो० १९/३६७) (सम०२२)

अधर्मद्रव्यम् (नपुं०) अधर्मद्रव्य (वीरो० १९/३७)

अधस्तन (वि०) [अधस्+ट्युः, तुट् च] निचला, निम्नकर्म, नीचकार्य। (जयो० २४/४७)

अधस्तन कृष्टिः (स्त्री०) निम्नकर्म।

अधस्तनद्रव्यं (नपुं०) निम्न द्रव्य।

अधस्तनद्वीपः (पुं०) अधो द्वीप।

अधार (वि०) आधार भूत।

अधारिन् (वि०) धारण नहीं करने योग्य। (सुद० २/३)

अधि (वि०) [आ+धा+कि] ऊर्ध्व, ऊपर।

अधि (अव्य०) मुख्य, प्रधान, प्रमुख।

अधि+उष् (अक०) बैठना, स्थित होना। अध्युषित नृपतिमलिना-नानानुलिङ्गः। (जयो० ६/१००) अध्युषिता उपविष्टा। (जयो० वृ० ६/१००)

अधि+एत् (सक०) पाना, प्राप्त करना। शाश्वत राज्यमध्येतुं प्रयते पूर्णरूपतः। (वीरो० ८/४५)

अधिक (वि०) [अधि+क] ०बहुत, ०अतिरिक्त, ०बृहत्तर, ०अधिक से अधिक। (सम्य० १००/६६)

अधिक (वि०) हेतूदाहरणाधिकमधिकम्। हेतु और उदाहरण के अधिक होने से अधिक नामक निग्रहस्थान है।

अधिकर्तृ (वि०) अधिकारिणी। (जयो० ३/७३)

अधिकरणं (नपुं०) [अधि+कृ+ल्युट्] ०सम्बंध, ०उल्लेख, ०अन्वय, ०कारक चिह्न। तस्याधिकरणमधिकारस्तम्मात्। (जयो० वृ० १/४)

अधिकरणं (नपुं०) दार्शनिकशैली, जिस धर्मी में जो धर्म रहता है, उस धर्मी को उस धर्म का अधिकरण कहते हैं। 'घटत्व' धर्म का अधिकरण 'घट' है। यह अधिकरण, जीवाजीव रूप होता है। जीवाधिकरण समरम्भ, समारम्भ और आरम्भ रूप है, यह कृत, कारित और अनुमत रूप भी है। अजीवाधिकरण निर्वर्त्तना, निक्षेप, संयोग और विसर्ग रूप है। (सम्य० १५)

अधिकरणिकः (पुं०) [अधिकरण+ठन्] न्यायधीश, दण्डाधिकारी।

अधिकर्मन् (नपुं०) उच्चकार्य।

अधिकर्मिकः (पुं०) [अधि+कर्मन्+ठ] अध्यवेक्षक, कर अधीक्षक।

अधिका (वि०) सुशोभित शोभनीया, (जयो० २०/४७) सा रसाधिका प्रभूतजलवती किं वा सारपक्षिभिरधिका शोभनीया। (जयो० वृ० २०/४७)

अधिकाधिक (वि०) उत्तरोत्तर, अधिक से अधिक, बृहत्तर। क्षणसादधिकाधिकं जजृम्भे। (जयो० १२/६९)

अधिकाम (वि०) [अधिकः कामो यस्य] अधिक अभिलाषी, कामातुर, कर्त्तव्येच्छुक।

अधिकारः (पुं०) [अधिक+कृ+घञ्] अनुग्रह, अधीक्षण, निरीक्षक, नियो० ७ (जयो० १/४) तस्याधिकरण-मधिकारस्तस्मात् कृत्वा, आरात् समी पादेव कथं न पुनातु पवित्रयत्वेव। (जयो० वृ० १/४) नवरसों के विपुल अनुग्रह द्वारा शीघ्र ही क्यों न पवित्र करेगी अर्थात् अवश्य करेगी। ''नियोगादधिकारादेव भुवः पृथिव्याः स्त्रियाः करं शुक्लं जग्राह। (जयो० १/२१) यत्नः कर्त्तव्योऽत्यधिकारे। (सुद० ७/४)

अधिकारः (पुं०) प्रभुसत्ता, शासन। अस्या धराया भवतोऽधिकारः (वीरो० १७/१) स्वामित्व, प्रकरण, अनुच्छेद, अनुभाग।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अधिकारक: (पुं०) स्वामी, नायक, पालक। (जयो० १०/५६) गुणकृष्ट इवाधिकारक:। (जयो० १०/५६)

अधिकारिन् (वि०) [अधिकार+णिनि] शक्ति सम्पन्न, सत्ता युक्त, स्वामित्व संयुक्त।

अधिकारिणी (स्त्री०) मालकिन्, स्वामिनी। 'मञ्जुवृत्त विभवाधिकारिणी' (जयो० ३/११) मञ्जुवृत्तस्य मनोहराचरणस्वरूपस्य आख्यानादेर्विभवस्याधिकारिणी। (जयो० वृ० ३/११) **कामिनी**-मञ्जुलस्य सुन्दरस्य मनमोहकस्य वृत्तस्याचरणस्य यो विभवस्तस्याधिकारिणी। (जयो० वृ० ३/११) **कविता**–मञ्जुनां निर्दोषाणां वृत्तानां छन्दसां विभवस्य आनन्दस्य अधिकारिणी भवत्येव। (जयो० वृ० ३/११)

अधिकारिणी (वि०) गणनाकर्त्री, गणिनी। (जयो० वृ० २२/७०)

अधिकारिणी (वि०) अधिकारी। (सुद० २१/३२)
शाटीव समभूदेषा गुणानामधिकारिणी।
सदारम्भादनारम्भादघादप्यतिवर्तिनी।।

अधिकारित्व (वि०) अधिकार वाली। (हित०सं० १४)

अधिकर्तृत्व (वि०) अधिकारी (वीरो० १८/४९) अधिकार्य की अधिकारी (वीरो० १७/४)

अधि+कृ (सक्) भरना, ग्रहण करना। कञ्चन-कलशे निर्मलजलमधिकृत्य। (सुद० वृ० ७१) निर्मल जल को स्वर्ण घट में भरकर लाऊ। अधिकुर्वते-धारण करना। (जयो० २४/४६)

अधिकृत (वि०) [अधि+कृ+क्त] अधिकार प्राप्त, नियुक्त। अधिकृत्ये ति अधियोगे सप्तमी। (जयो० वृ० ९/५२)

अधिकृत: (पुं०) राजपुरुष, पदाधिकारी।

अधिकृति: (स्त्री०) [अधि+कृ+क्तिन्] स्वामित्व, प्राधिकार।

अधिकृत्य (अव्य०) [अधि+कृ+ल्यप्] उल्लेख करके।

अधिक्रम: (पुं०) [अधि+क्रम्+घञ्] आक्रमण, धावा, हमला।

अतिक्रमणं (नपुं०) आक्रमण, हमला।

अधिक्षेप: (पुं०) [अधि+क्षिप्+घञ्] ०अपमान, ०गाली, ०अनादर, ०दोषारोपण। ०आधात, ०प्रहार।

अधिगत (वि०) [अधि+गम्+क्त] ०प्राप्त, ०अर्जित, ०उपार्जित, ०संगृहीत। अधिगतस्तदलङ्करणे। (समु० ७/११)

अधिगत (वि०) अधीत, सीखा गया।

अधि+गम् (सक०) [अधि+गम्] पहुंचना, आना, जाना, प्राप्त करना। (अधिगच्छते, अधिगच्छति, अधिगन्तुम्) (जयो० १/५५) चन्द्रोऽधिगन्तुं मुहुरेव भाष्यम् (जयो० १/५५) चन्द्रमा बार-बार पहुंचने के लिए तत्पर रहता था। अधिगच्छेत्तदा तदास्य तुल्यता। (जयो० वृ० १/५५) तन्निर्जरत्वमधिगन्तुमपीत: (जयो० ४/५२) निर्जरपन प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील है। अधिगन्तुं स्वीकर्तुमपि। (जयो० वृ० ४/५८) 'जयोदय' के चौथे सर्ग के ५८वें श्लोक में 'अधिगम्' का अर्थ स्वीकार करना भी है। 'परिकृत: परितोऽत्यधिगच्छति' (जयो० ९/३१) इसमें 'अधिगम्' का अर्थ चलना है। अन्धा दूसरे के हाथ पकड़ लेने पर चलता है। क्षणादेव: विपत्ति: स्यात्सम्पत्तिमधिगच्छत:। (वीरो० १०/२)।

अधिगम (पुं०) ०पदार्थ ज्ञान, ०प्रमाण या नय का भेद। अधिगमोऽर्थावबोध: (स०सि०१/३) अर्थवबोध।

अधिगम: [अधि+गम+घञ्-ल्युट् च] ०अर्जन, प्रापण, ०अध्ययन, ०प्राप्ति। ०स्वीकृति (सम्य० ८३) (वीरो० १६/२७)

अधिगमज (वि०) सम्यग्दर्शन का गुण।

अधिगुण (वि०) [अधिका गुणा यस्य] योग्य, गुणी, श्रेष्ठ गुण वाला।

अधिचरणं (नपुं०) [अधि+चर्+ल्युट्] प्रतिगमन, विचरण।

अधिजननं (नपुं०) [अधि+जन्+ल्युट्] जन्म, उत्पत्ति।

अधिजिह्व: (पुं०) सर्प।

अधिजिह्वा (स्त्री०) जिह्वा रोग।

अधिज्य (वि०) [अध्यारूढा ज्या यत्र, अधिगतं ज्या वा। धनुष पर खींचे, डोरी ताने।

अधित्यक्त (वि०) [अधि+त्यकन्] समतल भूमि।

अधिदन्त: (पुं०) [अध्यारूढो दन्त:] दान्त के ऊपर दांत।

अधिदेव: (पुं०) इष्ट देव, प्रधान देव।

अधिदेवता (पुं०) विद्या देवता, वाणी देव। पुनरवददेव तां साधिदेवता। (जयो० ६/७२)

अधिदेवता (स्त्री०) अधिष्ठात्री देवी। हिंसातीत्यधिदेवताभिरुचये

अधिदेवं श्रीमान् प्रशस्तोदय:। (मुनि० पृ० २)

अधिदैवतं (नपुं०) इष्टदेव। (जयो० २/३५) भूमिकासु जिननाम सूच्चरंस्तत्तदिष्टमधिदैवतं स्मरन्। गृहस्थ किसी भी कार्य के प्रारम्भ में जिनदेव का नाम लेकर अपने इष्टदेव का स्मरण करे। इष्टदैवतं स्वेष्टदेवताम्। (जयो० वृ० २/३५)

अधि+ध्या (सक०) ध्यान करना, चिंतन करना।

अधिधान्यं (नपुं०) विशेष धन धान्य। वीक्ष्य लोकमधिधन-धान्यधनेशमाप। (जयो० ४/६९)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अधिनाथः (पुं०) स्वामी, परमेश्वर। (जयो० ८/७)

अधिपः (पुं०) [अधि+पा+क] अधिपति (सम्य० १००) ०नरपति, राजा, ०स्वामी, ०नायक, ०शासक, ०प्रभु ०प्रधान, ०सम्राट्। अधिपस्य बभौ तनूदरी। (सुद० ३/३)

अधिपतिः (पुं०) [अधि+पा+इति] ०नरपति, राजा, प्रभु, शासक, ०नायक, ०प्रधान ०स्वामी। यथाऽधिपतिरेष विशां स्वदृशा तथा। (सुद० २/४९) फुल्लल्यलङ्काधिपतिं। (जयो० १/८१)

अधिपत्नी (स्त्री०) शासिका, स्वामिनी।

अधिपायमानः (वि०) अधिपति बनाते हुए। द्वीपेषु सर्वेष्वधिपायमानः। (सुद० १/११)

अधिपा (वि०) नीतिविद्। (जयो० १५/७८)

अधिपुः (पुं०) स्वामी, प्रभु, परमेश्वर।

अधिपोदः (पुं०) सूर्योदय (जयो० १९/१)

अधिभूः (वि०) स्वामी, प्रभु, परमेश्वर, नाथ।

अभिभुव (वि०) बढ़ाने वाला। (सुद० ३/१४) वृद्धि को प्राप्त हुए (वीरो० १८/४५)

अधिभित्तिः (वि०) विभक्ति का आश्रय।

अधिमात्र (वि०) [अधिका मात्रा यस्य] अपरिमित, अत्यधिक।

अधिमासः (पुं०) अधिकमास, मलमास, लौंद का महिना।

अधियज्ञः (पुं०) प्रधान यज्ञ।

अधियोगः (पुं०) ध्यान विशेष ध्यानधिकृत्यम् (जयो० २७/३)

अधिरथ (वि०) [अध्यारूढो रथं] रथारूढ सारथि, सूत।

अधिराजः (पुं०) (अधि+राज्+क्विप्) परमशासक, सम्राट्। हस्तिपुराधिराजः। (जयो० १/५)

अधिराज्यं (नपुं०) [अधिकृतं राज्यम्] साम्राज्य, सर्वोच्च शासन।

अधिरूढ (वि०) अधि+रूह्+ल्युट्। चढ़ना, सवार होना, बिठाना।

अधिरूह् (सक०) बिठाना, स्थापित करना, आरूढ करना। (जयो० १३/७) सुरथ स्वयमध्यरू रुहन्निति स प्रांशुतरं सुखाशयः। (जयो० १८/७) अध्यरूरुहत्। (जयो० वृ० १३/७)

अधिरोहणं (नपुं०) [अधि+रूह्+ल्युट्] चढ़ना, सवार होना।

अधिरोहिन् (वि०) [अधि+रूह्+णिनि] सवार होने वाला, आरूढ़ होने वाला।

अधिलोकम् (नपुं०) विश्व से सम्बंध रखने वाला।

अधिवचनं (नपुं०) [अधि+वच्+ल्युट्] पक्षसमर्थन, उपनाम, अभिधान।

अधिवासः (पुं०) ०वासस्थान, निवास, ०संस्कार विशेष, ०आवास। (जयो० ८/७)

अधिवासनम् (नपुं) [अधि+वस्+णिच्+ल्युट्] सुगंध रखना, सुरभि रखना।

अधिवेशः (पुं०) अधिवेशन, समारोह। भो सुभद्र! भवतामधिवेशः। (जयो० ४/३६) अधिवेशोऽधिवेशनम्। (जयो० वृ० ४/३६)

अधिश्रयः (पुं०) [अधि+श्रि+अच्] आधार, आश्रय।

अधिश्रयणं (नपुं०) [अधि+श्रि+ल्युट्] गरम, उबालना।

अधिश्रित (वि०) तत्पर, उद्यत, आश्रित। सम्यक्त्वसूर्योदय-भूभृतेऽहमधिश्रितोऽस्मि। (सम्यक्त्वसार श० पृ० १)

अधिश्री (वि०) [अधिका श्रीर्यस्य] उच्च प्रतिष्ठा, उन्नत लक्ष्मी।

अधिष्ठ-शरीरम् (नपुं०) मृदुलशरीर, सुकुमार देह। (वीरो० २१/२०)

अधिष्ठानं (नपुं०) [अधि+स्था+ल्युट्] ०परिनिर्वाण, ०निवास स्थान, ०आवास, ०आसन, ०नगर, ०पद, उपनिवेश। तमप्यधिष्ठानमहीध्रं। (जयो० २४/३१) श्री नाभेयस्याधिष्ठान् महीधरं परिनिर्वाणस्थलं। भगवान वृषभदेव का निर्वाणस्थान। (जयो० वृ२०२४/३१)

अधिष्ठात्रीदेवी (स्त्री०) ०इष्टदेवी। (मुनि०वृ० २) कुलदेदेवी, ०अधिदेवता।

अधिष्ठित (वि०) [अधि+स्था+क्त] ०स्थित, विद्यमान, ०अधिकृत, ०निदेशन, ०परिरक्षित, ०सुरक्षित, ०अधीक्षित। (सम्य ९३) परमार्थमधिष्ठितः (हित०सं० पृ० ५)

अधि+स्था (अक०) बैठना, रहना, स्थित होना (वीरो० २२/५) शिक्षा प्रदातुमधितिष्ठति सर्वकृत्वः (वीरो० २२/५)

अधीट् (पुं०) स्वामी, नायक, प्रभु। (जयो० ७)

अधीत (वि०) योग्य, पढ़ा लिखा। (सुद० १३५) स्तुताञ्जन-तयाऽधीतः। (सुद० १३५)

अधीतारे–पढ़ी (अधीत) विशेष रूप से पढ़ी गई। 'प्रभवति कथा परेण पथा रे युवते रते मयाऽधीतारे।। (सुद० पृ० ८८)

अधीतिन् (वि०) [अधीत+इनि] अध्ययन की गई, पढ़ी गई, रची गई। उपसकानामधीतिश्च। (जयो० २/४५) उपासकाध्ययन का अध्ययन करें। अधीतिबोधाऽऽचरण-प्रचारैश्चतुर्दशत्वम्। ०विद्या विशद रूप अधीति/ ०अध्ययन, बोध/ज्ञान, ०आचरण और प्रचार के द्वारा चतुर्दशत्व को प्राप्त हुई।

अधीतिः (स्त्री०) ०अध्ययन, अनुशीलन। ०स्मरण, ०प्रत्यास्मरण,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

०अनुचिंतन, ०आगम। (जयो० २३/४७, सुद० ८२, सम्य० ११७/७४)

अधीन (वि०) [अधिगतम् इनम् प्रभुम्] आश्रित, निर्भर। (समु० ९/७) अनेकान्तमताधीनोऽप्येकान्तम्।

अधीनस्थ (वि०) आश्रित रहने वाला। (वीरो० १७/१६) निराकुलभावेनाधीतिः समध्ययनम्। (जयो० वृ० २३/४७)

अधीयानः (व०कृ०) [अधि+इ+शानच्] ०विद्यार्थी, ०पाठक, ०अध्ययनशील। ग्रन्थ पुनरधीयानो। (समु० ९/७)

अधीयानः (व०कृ०) आश्रित, आधीन। भाग्यतमस्तमधीयानो विषयानुयाति यः। (सुद० वृ० ८२)

अधीर (वि०) ०उत्तेजित, ०उद् विग्न, ०व्याकुल, ०अस्थिर, ०धैर्यहीन, ०चपल, ०निराश, धीरतारहित। (जयो० ८/५१) सम्भोगमन्तः स्मृतवानधीरः। (जयो० ८/५१) अधीरो धीरतारहितोऽपरः। (जयो० वृ० ८/५१)

अधीरता (वि०) चञ्चलता, चपलता। विषयोपभोग-सङ्कर्षे अधीरतया चञ्चलतया। (जयो० वृ० ७/११४)

अधीर-दृष्टिः (स्त्री०) चञ्चल दृष्टि, चपल दृष्टि। (जयो० ५/८५) अधीरा चञ्चला दृष्टिर्यस्यास्तस्याम्। (जयो० वृ० ५/८५)

अधीरा (स्त्री०) ०चञ्चला, चपला, सनकी, ०कलहप्रिया। (जयो० वृ० ५/८५)

अधीशः (पुं०) ०नरनाथ, नरपति, ०अधिपति, ०राजा, ०स्वामी। तदधीशाज्ञयाऽऽयातः। (जयो० ३/३१) अधीशस्य नरनाथ-स्याज्ञया शासनेन अहमायातोऽस्मि। (जयो० वृ० ३/३१) अधीशः स्वामी। (जयो० वृ० ४/५१)

अधीश्वरः (पुं०) ०स्वामी, नरनाथ, ०अधिपति, ०प्रभु, राजा। श्रीधरोऽधीश्वरो यस्याः। (जयो० ३/३०) समु० ३/१८ (जयो० १२/२४) अधीश्वरः स्वामी (जयो० वृ० ३/३०) सम्बभूव च सुलक्षणिकाऽस्याधीश्वरस्य शुचिरधिमभृदास्या। (समु० ३/१८)

अधीष्ट (वि०) [अधि+इष्+क्त] प्रार्थित, सत्कारित, सम्मानित।

अभीष्टः (पुं०) कर्त्तव्य, पद। ०इच्छित।, ०उचित।

अधुना (अव्य०) अब, इस समय, साम्प्रतम्। यौवनेनाधुनाऽञ्चिता। (जयो० ३/५९, सम्य० १४८/९७) अधुना पुनर्यौवनेने अञ्चिता। (जयो० वृ० ३/५९) अधुना साम्प्रतमानन्दवारिधिः। (जयो० वृ० १/१०२) भक्तोऽधुना समगच्छतोंपसम्मति। (जयो० २/१५८) यहां 'अधुना' का अर्थ पश्चात्, फिर भी है। ०पश्चात् आज्ञा पाकर घर लौट गया। अधुना कुतः (सुद० ७९) अब कहां। ममाधुना निर्वृतिरेव योग्या। (सुद० पं०१११)

अधुना तु (अव्य०) इस समय तो। (सुद० ३/४०) क्षिप्ताऽसि विक्षिप्त इवाधुना तु। (सुद० ३/४०)

अधुनात्र (अव्य०) [अधुना+अत्र] अब यहां, इस समय यहां। (जयो० ४/६१) तापमधुनात्र दिनेशः। (जयो० ४/६१)

अधुनातन (वि०) [अधुना+ट्युल्] आधुनिक, वर्तमान काल से सम्बंधित।

अधोगत (वि०) विकृष्ट, निम्नगत। (सुद० १/३०) ०नीचे की ओर

अधोगतिः (पुं०) निम्नगति (वीरो० १६/१४)

अधोविधानम् (नपुं०) निम्न गति (वीरो० १६/१४)

अधोजटी (वि०) [अधो गच्छति जटा यत्र] नीचे की ओर जड़ वाली। (जयो० १४/६)

अधोभागः (पुं०) निम्नभाग, निचला हिस्सा। (जयो० वृ० १३/७)

अधोमुखं (नपुं०) झुका मुख, नम्र मुख। (जयो० १६/५३)

अधोवस्त्रं (नपुं०) परिधान (जयो० १५/१००)

अध्रुवत्व (वि०) अनित्यत्व, अविनश्वर। (जयो० २३/८४)

अधृतिः (स्त्री०) [नञ्+धृ+क्तिन्] असंयम, धैर्याभाव।

अधृष्टय (वि०) अजेय, दुर्धर्ष, अनभिगम्य।

अध्यक्ष (वि०) [अधिगतम्+अक्षम्+इंद्रियम्] अक्ष्णोति व्याप्नोति इति अध्यक्षः। ०प्रमुख, ०अधिष्ठाता। ०प्रत्यक्ष (वीरो० २०/१८)

अध्यग्नि (अव्य०) विवाह संस्कार की अग्नि के निकट, अग्नि साक्षी।

अध्यधि (अव्य०) [अधि+अधि] ऊपर, ऊँचे, उच्च।

अध्यधिक्षेपः (पुं०) दुर्वचन, कुत्सित वाणी, अपशब्द।

अध्यधीन (वि०) वशीभूत, आधीन, पूर्ण आश्रित।

अध्ययः (पुं०) [अधि+इ+अच्] ज्ञान, अध्ययन, स्मरण, अध्याय।

अध्ययनं [अधि+इ+ल्युट्] ०सीखना, ०जानना, ०पढ़ना, ०स्वाध्याय, पठन। (सम्य ९४) अधीति। (हित०सं० १७, जयो० १८/४६) तस्यैवाऽध्ययनं तथा यतिपतेः स्वाध्याय संज्ञं धनम्। (मुनि०२१) सूक्तों/सुभाषितों का चिन्तन या अध्ययन मुनिराजों का स्वाध्याय है। परमागम-पारगामिना विजिता स्यां न कदाचनाऽमुना। स्म दधाति सुपुस्तकं सक्ष सविशेषाध्ययनाय शारदा।। (सुद० ३/३१) शारदा विशेष

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अध्ययन के लिए पुस्तक को सदा हाथ में धारण करती हुई चली आ रही हैं।

अध्ययन-कालः (पुं०) स्वाध्याय का समय, पठन का काल।

अध्ययन-गत (वि०) अध्ययन/पठन को प्राप्त।

अध्ययन-पदं (नपुं०) अध्ययन योग्य पद।

अध्ययनप्रतिष्ठा (स्त्री०) पठन की प्रतिष्ठा, स्वाध्याय की स्थापना। (जयो० १८/४६)

अध्ययन-रत (वि०) पढ़ने में तल्लीन, स्वाध्यायरत।

अध्ययन-शील (वि०) पढ़ने वाला, स्वाध्याय करने वाला, ज्ञानेच्छुक।

अध्ययन-समय (नपुं०) स्वाध्याय का समय, पठनकाल। (दयो० १/१०)

अध्यर्ध (वि०) [अधिकमर्धं यस्य] जिसके पास अतिरिक्त आधा हो।

अध्यवसानं (नपुं०) [अधि+अव+सो+ल्युट्] ०प्रयत्न, ०बुद्धि व्यवसाय, ०अध्ययवसान, ०मति, ०विज्ञान, ०चित्त, ०भाव, ०परिणाम, ०दृढ़ निश्चय, ०एक दार्शनिक विचार, जो प्रकृत और अप्रकृत दोनों वस्तुओं को एक रूप करें। ०अतिशयोक्ति अलंकार पर आश्रित। ०अज्ञान, अदर्शन और अचारित्र भी अध्यवसान है।

अध्यवसायः (पुं०) [अधि+अव+सो+घञ्] ०प्रयत्न, ०दृढ़ निश्चय, ०प्रयास, ०संकल्प, ०धैर्य, उद्यम, परिश्रम, कोशिश।

अध्यवसायिन् (वि०) [अधि+अव+सो+णिनि] प्रत्यनवान्, दृढ़शील, प्रयासरत, संकल्पयुक्त।

अध्यशनं (नपुं०) [अधि+अश्+ल्युट्] अधिक खाना।

अध्यात्म (वि०) [आत्मनः संबद्धम्] ०आत्मा या व्यक्ति से सम्बन्ध रखने वाला। ०शुद्धात्म में अनुष्ठान् की प्रवृत्ति, ०शुद्धात्म में विशुद्धता का आचरण, ०अनुकूल पदों का व्याख्यान, ०आत्म के आश्रय का निरूपण।

अध्यात्मज्ञानं (नपुं०) आत्म ज्ञान।

अध्यात्मरूचि (स्त्री०) आत्मरूचि।

अध्यात्मविद्या (स्त्री०) आत्मानुभवशास्त्रवृत्त, ग्रन्थ नाम। (जयो० १०/११८)

अध्यात्मश्रुतिः (स्त्री०) आत्मानशासक की दृष्टि। आत्मख्याति-नमिका। (जयो० ५/५१)

अध्यात्मिकः (वि०) अध्यात्म से सम्बन्ध रखने वाला।

अध्यापकः (पु०) [अधि+इ+णिच्+ण्वुल्] उपाध्याय, ०पञ्चपरमेष्ठियों में चतुर्थ परमेष्ठी, परमपद में स्थित। ०गुरु, शिक्षक, ०पढ़ाने वाला। अर्हन्नथो सिद्ध इतो गणेश श्चाध्यापकः साधुरनन्यवेशः। (भक्ति०१७)

अध्यापनं (नपुं०) [अधि+इ+णिच्+ल्युट्] शिक्षण, सिखाना, पढ़ाना, वेदमति। (जयो० वृ० ४/५७)

अध्यापयितृ (पुं०) [अधि+इ+णिच्+तृच्] अध्यापक, शिक्षक, गुरु।

अध्यायः (पुं०) अध्ययन, चिन्तन। (दयो० २४) अध्याय को सर्ग, खण्ड, पाठ, उच्छवास, भाग, अंश, हिस्सा, व्याख्यान आदि भी कहते हैं।

अध्यायिन् (वि०) [अधि+णिनि] अध्ययनशील, पढ़ने वाला।

अध्यारूढ़ (वि०) [अधि+आ+रूह्+क्त] १. आरूढ़, सवार, ०स्थित हुआ, ०ऊपर स्थित। २. ऊँचा, श्रेष्ठ, निम्नतर।

अध्यारोपः (पुं०) [अधि+आ+रूह्+णिच्+पुक्+घञ्] उठना, खड़े होना। मिथ्या या निराधार कल्पना दार्शनिक दृष्टि से इस शब्द का अर्थ है एक वस्तु को अन्यवस्तु समझना, भ्रम पैदा होना, भ्रान्तिपूर्ण विचार होना।

अध्यारोपणं (नपुं०) [अधि+आ+रूह्+णिच्+पुक्+ल्युट्] बीज बोना, उठना।

अध्याश्रित (वि०) उपढौकित, प्राप्त हुई। कौतुकेन महता मुहुरध्याता। (जयो० २२/४४) (अध्याश्रिता उपढौकिता) जयो० वृ० २२/४४।

अध्यासः (पुं०) १. मिथ्या आरोप, मिथ्या ज्ञान। २. स्व-पर के एकत्व का अध्यास। ३. कुचलना, समाप्त करना।

अध्यासनं (नपुं०) [अधि+आस+ल्युट्] प्रधानता देना, स्थित होना, ऊपर बैठना।

अध्याहारः (पुं०) [अधि+आ+हृ+घञ्] ०अनुमान करना, ०तर्क करना, ०कल्पना करना, ०अनुमान लगाना। दार्शनिक जगत् में जो वस्तु स्थिति को स्पष्ट करने के लिए कई प्रकार की कल्पनाएं की जाती हैं अनुमान या तर्क आदि प्रस्तुत किए जाते हैं, वे 'अध्याहार' कहलाते हैं।

अध्याहरणं (नपुं०) [अधि+आस्+ल्युट्] तर्क करना, अनुमान लगाना।

अध्युष्ट्रः (पुं०) [अधिगतः उष्ट्रं वाहनत्वेन] ऊँट गाड़ी।

अध्यूढः (पुं०) [अधि+वह्+क्त] उठा हुआ, उन्नत, उच्च।

अध्येषणं (नपुं०) [अधि+इष्+ल्युट्] प्रेरणा।

अध्येषणा (स्त्री०) सत्कार पूर्वक व्यापार।

अध्रुव (वि०) अनित्य, अविनश्वर।

अध्रुवत्व (वि०) अनित्यत्व, अविनश्वर, अनिश्चित, अस्थिर,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चञ्चल। दर्शनशास्त्र की दृष्टि से वस्तु दो प्रकार की होती है। १. ध्रुव और २. अध्रुव। 'ध्रुव' की सत्ता सदैव विद्यमान रहती है और 'अध्रुव' की नहीं। जैनसिद्धान्त में 'अध्रुव' को मतिज्ञान का भेद माना है। 'अध्रुव' प्रकृतिबन्ध में भी आता है। (तत्त्वार्थसूत्र महाशास्त्र वृ० १९) विद्युत्प्रदीप ज्वालादौ उत्पाद-विनाश-विशिष्टवस्तु-प्रत्ययः अध्रुवः। धव-पु० १३/वृ० २३१)

अध्रुव-बन्धं (नपुं०) कालान्तर व्यच्छेदभावा।

अध्रुव-बन्धिनी (वि०) कदाचित् बन्ध होना, नहीं होना।

अध्रुवानुप्रेक्षा (स्त्री०) अनुप्रेक्षा का नाम। ०अनित्य भावना।

अध्रुवावग्रहः (पुं०) हीनाधिक रूप पदार्थ का अवग्रह।

अध्रुवोदयः (पुं०) सातावेदनीय प्रकृति।

अध्वन् (पुं०) [अद्+क्वनिप् दकारस्य धकारः] (क) पथ, मार्ग, रास्ता, दूरी स्थान। (जयो० २१/१३) (सुद० वृ० १२) (ख) समय, यात्रा, भ्रमण, प्रसरण, उपाय, साधन, प्रणाली।

अध्वकर्तनं (नपुं०) मार्ग काटना, मार्ग व्यतीत करना, मार्ग व्यत्ययन। अध्वनो मार्गस्य कर्तनं व्यत्ययनम्। (जयो० वृ० २१/१३) अध्वकर्तनविवर्तविग्रहास्ते। (जयो० २१/१३)

अध्वखेदः (पुं०) मार्गश्रम, पथगमन उद्यम, परिश्रान्त। (जयो० १३/८५)

अध्वग (वि०) यात्री, पथिक।

अध्वगा (स्त्री०) गङ्गा नदी।

अध्वनिन् (वि०) [अध्वन्+क्विन्] पथिक, राहगीर, यात्री, बटोही, मार्ग पर चलने वाला। (वीरो० २/१३) सुद० वृ० १२ अध्वनीनस्य पथिकस्य चित्ते (वीरो० वृ० २/१३)

अध्वपतिः (पुं०) अध्वपतिः तु सूर्यः सूर्य, रवि, दिनकर।

अध्वन्य (वि०) [अध्वन्+यत्] यात्रा पर जाने योग्य।

अध्वरः (पुं०) [अध्वानं सत्पथं राति-इति न ध्वरति कुटिलो न भवति] संस्कार युक्त सोमयज्ञ। यज्ञस्थल। (जयो० २/२५)

अध्वरभू (स्त्री०) यज्ञस्थल। (जयो० २/२५) स्वीकरोति समयः पुनः सतामग्निरध्वरभुवीव देवता। (जयो० २/२५) अध्वरभुवि यज्ञस्थले अग्निर्देवता देवरूपेण श्रेष्ठ कथ्यते। (जयो० वृ० २/२५)

अध्वविद (वि०) मार्ग ज्ञाता, पथ ज्ञायक। अध्वविदपवर्गमार्ग-ज्ञातास्त रागो। (जयो० वृ० २७/५१)

अध्वविमुख (वि०) नीतिपथाच्युत, नीतिपथानुगामी नहीं। नीतिरेव हि बलाद् बलीयसी विक्रमोऽध्वविमुखस्य को वशिन्। (जयो० ७/७८) अध्वविमुखस्य नीतिपथाच्युत। (जयो० वृ० ७/७८)

अध्वर्युः (पुं०) (अध्वर+क्यच्+युच्) ऋत्विक, पुरोहित, याजक।

अन् (अक०) सांस लेना, हिलना, जीना।

अनः (पुं०) [अन्+अच्] प्रश्वास, निश्वास, उच्छवास।

अनंश (वि०) अधिकार विहीन।

अनक (वि०) (नञ्+अक्) अनक, निष्पाप, मतवर्जित, निर्दोष। कष्टवर्जित, सरल। (जयो० १/१०९) अनकं कष्टवर्जितं सरलमित्यर्थः। (जयो० वृ० १/१०९) अभ्यसा समुचितेन चांशुकक्षालनादि परिपठ्यतेऽनकम्। (जयो० २/८०) यहां **'अनकं'** का अर्थ निर्दोष है।

अनकाङ्गि-प्रहारः (पुं०) निरपराध प्राणियों को मारना। (वीरो० १६/२१)

अनकायः (पुं०) निर्दोष, पाप मुक्त। (वीरो० १६/१७) स्तनं पिवन वा तनुजोऽनकाय। (वीरो० १६/१७) स्पृशंश्च कश्चिन्महतेऽप्यधाय। कुलीन स्त्री के स्तन को पीने वाला बालक निर्दोष/अनकाय/पापरहित है, किन्तु उसी के स्तन का स्पर्श करने वाला अन्य कामी पुरुष महापाप का उपार्जक है।

अनकिन् (वि०) निष्पाप, निर्दोष, पापरहित, पापी। श्रीमतां चरणयोः समुपेतः स्वामि एवमनकिन् सहसेतः। (जयो० ४/२४) सहसाभक्त्या स्वामी स्वयमेव। समुपेतोऽस्ति, अतोऽनेनानिष्पापोऽस्तीत्यर्थः। (जयो० वृ० ४/२४)

अनक्ष (वि०) दृष्टिहीन, अन्धा।

अनक्षर (वि०) ०मूक, गूंगा, ०बोलने में असमर्थ, ०अशिक्षित, ०अनपढ़, ०अयोग्य।

अनक्षर (वि०) ०उच्चारण, ०श्रुत का एक भेद। ०उच्छवासित, ०निःश्वसित, ०निष्ठ्यूत, ०कासित, ०छींक आदि अनुस्वार ध्वनि, ०हुंकारादि संकेत अनक्षर हैं।

अनक्षरं (नपुं०) अपशब्द, दुर्वचन।

अनक्षरात्मक (वि०) शब्द विशेष, दिव्यध्वनि रूप शब्द। अनक्षरात्मको द्वीन्द्रिया दिशब्दरूपो दिव्यध्वनि रूपश्च। (पंचावृ० ७९)

अनक्षरायित (वि०) अनक्षर रूप।

शृ श्रृषुणामनेका वाक् नानादेशनिवासिनाम्।
अनक्षरायितं वाचा सर्वस्यातो जिनेशिनः॥

नाना देश के निवासियों की भाषा अनेक प्रकार की थी,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

परंतु जिनेन्द्र की वाणी सार्वहितैषी अनक्षरायित/अनक्षर रूप से प्रकट हुई। (वीरो० १५/८)

अनगारः (पुं०) अनगार, साधु, श्रमण। (सुद० ४/२५) न विद्यतेऽगारमस्येत्यनगारः। (स०सि०७/१९) प्रातः समापितसमाधिरिहानगारधुर्यो नमोऽर्हत इतीदमदादुदारः। (सुद० ४/२५)

अनग्न (वि०) [नञ्+नग्न +घञ्] वस्त्रधारी।

अनग्नि (वि०) अग्नि रहित, ०जलन विहीन, ०निस्तेज।

अनघ (वि०) निष्पाप, निर्दोष, (जयो० २/२५) निष्कलंक।

अनघः (पुं०) शिव, विष्णु।

अनघानक (वि०) निर्दोष रूपार्थ, निर्दोष रूप अर्थ बताने वाला। (जयो० २/२५) साम्प्रतं प्रणदितानघातकं। (जयो० २/२५)

अनङ्ग (वि०) आकृतिविहीन, अशरीरी, देह रहित।

अनङ्गः (पुं०) काम, कामदेव, रतिपति। (जयो० १०/११५)

अनङ्ग (वि०) परम सुन्दर (जयो० ६/५१) मदनश्चानङ्ग एवाङ्ग (जयो० ६/५१) परिपूर्णमङ्ग यस्य सः परमसुन्दरः इत्यर्थः। यस्यावलोकने कृते सति मघ्नः कामः स पुनरनङ्गः एव शरीररहितः, स्वल्पसुन्दरो वा, प्रतिभातीति। (जयो० वृ० ६/५१)

अनङ्गक्रीडा (स्त्री०) कामक्रीड़ा, अन्य अंग की कामना। (अङ्ग प्रजननं योनिश्च, ततोऽन्यत्र क्रीडा अनङ्गक्रीडा। (स०सि० ७/२८)

अनङ्गजिष्णु (वि०) मदन विजेता, कामजयी मदन महेन्दु। (जयो० ११/२८) जगज्जिगीषाभृदनङ्गजिष्णु। (जयो० ११/२८)

अनङ्गजूर्तिः (पुं०) कामज्वर (सुद० १०२)

अनङ्गता (वि०) तुच्छशरीरता (जयो० १/४६) कामो भस्मीभावं गतवान्। (जयो० वृ० १/४६)

अनङ्गदशा (स्त्री०) काम भाव, [अन्+अङ्ग दशा] शरीर रहित अवस्था। (सुद० वृ० १२३) सङ्गच्छन् यत्र महापुरुष, को नाऽनङ्गदशां याति। (सुद० १२३)

अनङ्गदर्शिक (वि०) १. कामदर्शक, २. अङ्ग नहीं दिखलाने वाली। (जयो० ५/१०६)

अनङ्ग प्रविष्टं (नपुं०) आगम ग्रन्थ, स्थविर रचित रचना।

अनङ्गभास (वि०) एकान्त, जहां शरीर नहीं दिखाई दे। सावश्यक ग्लानिरनङ्गभासे। (भक्ति सं० ४७)

अनङ्गरम्य (वि०) कामदेव के लिए रमणीय, अनङ्गरम्याणि निरूपायरमणीयानि सुहजसुन्दराणि। (जयो० ३/४०) अङ्गेन शरीरेण रम्यो मनोहरो न बभूवेति विरोधः, किन्तु अनङ्गः कामदेव इव रम्यो मनोहरोऽभूदिति। (जयो० वृ० १/४१)

अनङ्गलेखं (नपुं०) प्रेमपत्र।

अनङ्गसङ्ग (वि०) काम साहचर्य। (जयो० १०/११५)

अनङ्गसमवाय (वि०) कामदेव की सादृशता, कामदेव सम्बन्ध वाला। (दयो० ६८)

अनङ्गसुखसारः (पुं०) काम-वासना जन्य सार, काम सुख का प्रयोजन, शरीरातीत सुख, मोक्ष सुख। (जयो० ५/५१)

अनञ्जन (वि०) बिन अंजन, कज्जल रहित।

अनच्छ (वि०) गर्त, गड्ढा। उन्मार्गगामी निपतेदनच्छे। (वीरो० १८/४२)

अनणि (वि०) विपुल विस्तार। (जयो० वृ० २१/७६) अनणौ विपुलविस्तारे। (जयो० वृ० २१/७६)

अनति (अव्य०) बहुत अधिक नहीं, कम।

अनति (वि०) स्वीकृति, अङ्गीकृत। (जयो० २४/३) नयस्य नीतेरानतिः स्वीकृतिः। (जयो० वृ० २४/३)

अनद्यतन (वि०) आज/प्रारम्भिक/आधुनिक/वर्तमान से सम्बन्ध न रखने वाला यह लङ्लकार और लट्लकार के अर्थ को भी प्रकट करता है।

अनधिक (वि०) अधिकता रहित, असीम, पूर्ण।

अमधीन (वि०) अपने आधीन, स्वाधीन।

अनध्यायः (पुं०) अनाभ्यास।

अनध्ययनं (नपुं०) अध्ययन पर विराम।

अननं (नपुं०) [अन्+ल्युट्] सांस लेना, जीना।

अननुका (वि०) आज्ञा। (समु० ३/४)

अननुगामी (वि०) अवधिज्ञान का एक भेद।

अननुभाषण (नपुं०) निग्रहस्थान।

अननुभावुक (वि०) न समझ, अनभिज्ञ।

अननुया (वि०) पीछे दौड़ना।

अनन्तः (पुं०) अनन्तनाथ, चौदहवें तीर्थंकर। (भक्ति सं० १९)

अनन्तः (पुं०) शक्ति विशेष, जिसे अनन्त चतुष्टय भी कहा है।

अनन्तः (पुं०) शेष नाग। (वीरो० २/२३)

अनन्त (वि०) [नास्ति अन्तो यस्य] अन्त रहित, (सम्य १२२) अक्षय, असीम, अपरिमित। (जयो० १७/१०७) न विद्यतेऽन्तो यस्य। (जयो० वृ० १७/१०७) अन्तो विनाश, न विद्यते अन्तो विनाशो।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अनन्त वि०) अनन्त संख्या विशेष, आय-रहित और निरन्तर व्यय सहित होने पर भी जो राशि समाप्त न हो या जो राशि एकमात्र केवलज्ञान का ही विषय हो।

अनन्तकाय: (पुं०) अनन्तजीव, जिन अनन्त जीवों का एक साधारण शरीर हो तथा जो अपने मूल एवं जो शरीर से छिन्न-भिन्न होने पर भी पुन: उग आते हैं, ऐसे थूवर, गुडूची आदि अनन्तकाय हैं।

अनन्तचतुष्टयं (नपुं०) अनन्त दर्शन, ज्ञान, सुख और बल। (भक्ति०१९)

अनन्तजिन: (पुं०) चौदहवें तीर्थंकर अनन्तप्रभु इन्हें 'अनन्तजिद्' अनन्तनाथ, भी कहते हैं।

अनन्तजीव: (पुं०) अनन्तकाय।

अनन्तता (वि०) अनन्त रूपता। (वीरो० ७/२३)

अनन्तदेव: (पुं०) अनन्तनाथ। (चौदहवें तीर्थंकर)

अनन्तधर्मता (वि०) अनन्तधर्म वाला। (सुद० ९१)

अनन्तनाथ: (पुं०) अनन्तजिन, अनन्तप्रभु। चौदहवें तीर्थंकर। (भक्ति सं० १९)

अनन्तपार (वि०) असीम विस्तार युक्त, निस्सीम।

अननन्तमिश्रित (वि०) अनन्तकायिक,

अनन्तर (वि०) [नास्ति अंतरं यस्य] ०सीमा रहित, ०अन्त रहित, ०सटा हुआ, ०संसक्त, ०निकटवर्ती।

अनन्तरं (नपुं०) सन्निकटता।

अनन्तरं (अव्य०) पश्चात्, तुरन्त बाद, इसके बाद, पुनश्च। (सम्य ७२) क्षेमप्रश्नानन्तरं ब्रूहि। (सुद० ३/४५) योग-भोग-योरन्तर खलु। (सुद० वृ० ७०) पुनरनन्तरं (जयो० वृ० ११/१५)

अनन्तर-बन्धं (नपुं०) कर्मरूप प्रथम परिणमन।

अनन्तरसिद्ध: (पुं०) सिद्धगति प्राप्त होना।

अनन्तरूपत्व (वि०) जरा रहित, अन्तवर्ण रहित। न विद्यतेऽन्तो यस्य तत्तादृग्रूपं यस्य तस्य भावं। (जयो० १७/१०७)

अनन्तवियोजक (वि०) अनन्तानुबन्धी कषाय की विसंयोजना वाला जीव।

अनन्तवीर्य (पुं०) राजा जयकुमार और रानी शिवंकरा का पुत्र। (जयो० २७/२)

अनन्तवीर्यं (नपुं०) वीर्यान्तराय कर्म के क्षय से प्राप्त शक्ति, अनन्त चतुष्टय में अन्तिम चतुष्टय, जिसे **'अनन्तबल'** भी कहते हैं।

अनन्तसंसारी (वि०) अर्ध पुद्गल प्रमाण काल तक परिभ्रमण करने वाला जीव।

अनन्तानुबन्धी (वि०) अनन्तभवों की परम्परा को बनाए रखने वाली कषाय। (सम्य० १२२)

अनन्तानुरूपं (नपुं०) अनन्त रूप। (सुद० १/२९)

अनन्तालय: (पुं०) शेषनाग का भवन। (वीरो० २/२३) विभात्यनन्तालयसंकुलं। (वीरो० २/२३)

अनन्तालय: (पुं०) अगणितालय, असीम भवन।

अनन्य (वि०) [न अन्योऽपरो वा] अभिन्न, अद्वितीय, अप्रतिहत (जयो० १/९) निश्चित, दृढ़ (जयो० ५/१०६) (१/१०), ०अनुपम, ०एकमात्र, ०अविभक्त, ०अविभाज्य, ०समरूप, ०एक सा, पूर्व। (जयो० ११/७२) रमणे चरणप्रान्ते प्रणतिप्रवणेऽस्त्यनन्यशरणे वा। (जयो० १६/६१) इस पंक्ति में 'अनन्य' का अर्थ परम है। पाणिपीडनमनन्यगुणेन। (समु० ५/२२) यहां 'अनन्य' का अर्थ यशस्वी, अनुपम, अद्वितीय है। (तवालसत्त्वं स्विदनन्यभास:) (जयो० ८/७१) अनन्यभासोऽसदृशतेज:।

अनन्यकर्मन् (नपुं०) अपूर्वकर्म (वीरो० २२/२७)

अनन्यगति: (स्त्री०) एकमात्र सहारा, एकमात्र आश्रय।

अनन्यगुणं (नपुं०) यशस्वीगुण, अद्वितीय गुण। (समु० ५/२२)

अनन्यचित्तं (नपुं०) एकाग्रचित्त।

अनन्यजन: (पुं०) परम जन। (वीरो० २१/१९)

अनन्यजन्मन् (पुं०) कामदेव। ०मदन।

अनन्यता (वि०) स्वार्थपरता। (वीरो० १/३४)

अनन्यतम (वि०) अभिन्नतम। (जयो० १०/२३) सुहृदोऽनन्यतमे गुणक्षमे। (जयो० १०/२३)

अनन्यतेज: (पुं०) अनन्यभास। (जयो० १/९)

अनन्यभाव: (पुं०) अनुपमभाव (वीरो० २२/३६)

अनन्यभास: (पुं०) असदृश तेज, अनुपम कान्ति। (जयो० ८/७१)

अनन्यमनस् (नपुं०) अनमने का रहस्य। (समु० ३/३१)

अनन्यरमणीय (वि०) परम रम्य, अद्वितीय, सुन्दरता। (जयो० वृ० ३/४५)

अनन्यवृत्ति: (स्त्री०) परमवृत्ति, अन्यत्र नहीं गमन। (भक्ति सं० २९) अनन्यवृत्त्यात्मनिमग्नतात:। (भक्ति०२९)

अनन्यवेष: (पुं०) [न अन्यो अपरो वेषो परिवेष: रूप:] दिगम्बर रूप।

अनन्यशरणं (नपुं०) परमशरण, पूर्णशरण, अद्वितीयाश्रय। (जयो० १६/६१)

अनन्य-सहाय (वि०) इतर साहाय्य। (जयो० ६/११४)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अनन्य-सेविका (वि०) परमसेविका, प्रमुख सेवा करने वाली। (जयो० २३/२९)

अनन्यसेवा (स्त्री०) समर्थित भाव। (भक्ति १२)

अनन्य-सुन्दरी (वि०) अपूर्व रूपा, परमसुन्दरी, (जयो० ११/७६)

अनन्वयः (पुं०) सम्बन्धाभाव।

अनन्वयालङ्कार (पुं०) अनन्वय अलंकार, जिसकी किसी वस्तु की तुलना उसी से की जाए और उसको ऐसा बेजोड़ सिद्ध किया जाए जिसका और कोई उपमान ही न हो। तथापि भूमावपि रूपराशावाशाधिकनार्यो बहुलास्तु तासाम्। का सावरम्या स्मरसारवास्तु सुरोचना नाम सुरोचनास्तु।। (जयो० ३/७३) सुरोचना तु सुरोचनैव, सूत्तमतया रोचना रूचिकरी विलसतु। न किल काचनापि स्त्री समकक्षतामेतस्या उपढौकतामिति। अनन्वयालङ्कारः।

अनप (वि०) जलहीन, जल रहित, क्षुद्र जलाशय, सूखा तालाब। (जयो० वृ० १/५)

अनपकारणं (नपुं०) चोट न पहुंचाना।

अनपकर्मन् (नपुं०) ऋण न चुकाना।

अनपक्रिया (स्त्री०) पुनः वापस नहीं करना।

अनपकारः (पुं०) उपकार का अभाव, अहित का अभाव।

अनपकारिन् (वि०) उपकार का अभाव।

अनपत्य (वि०) निस्संतान, सन्तानरहित।

अनपत्रप (वि०) निर्लज्ज, लज्जाविहीन।

अनपभ्रंशः (पुं०) शुद्ध शब्द, व्याकरण सिद्ध शब्द।

अनपवृत्ति (स्त्री०) यथोत्तर प्रवृत्तिशील। (जयो० वृ० ११/५)

अनपसर (वि०) अन्यायोचित, अक्षम्य।

अनपाय (वि०) प्रसन्न, अनश्वर, अक्षीण, निर्बाध पूर्ण (भक्ति सं० १६, २४)

स्वयंत्त्वमानन्ददृशोऽनपायः। (समु० ३/६)

मनोरथस्तस्य सदाऽनपायः। (भक्ति पृ० २४)

अनपायः (पुं०) शिव, कल्याण, निर्दोष (वीरो० २२/१)

अनपायिन् (वि०) [अनपाय+णिनि] ०विच्छेद रहित, ०दृढ़, स्थिर, अचल। गोहिनो हि जगतोऽनपायिनी भक्तिरेव खलु मुक्तिदायिनी। (जयो० २/३८) अनपायिनी-विच्छेदरहिता। (जयो० वृ० २/३८)

मनसा मन्यमानानां, वचसोच्चरतामिदम्।

कायेन कुर्वतामेवं, सिद्धिः स्यादनपायिनी।। (हि०सं० वृ० २)

अनपेक्ष (वि०) ०असावधान, ०अपेक्षा रहित, ०उदासीन, ०ध्यानशून्य। (मुनि०वृ० ९)

अनपेक्षक (वि०) अपेक्षा रहित।

अनपेक्षिन् (वि०) असावधान, उदासीन।

अनपेत (वि०) विचलित नहीं हुआ।

अनभिज्ञ (वि०) अनज्ञान, अनभिज्ञ, अपरिचित, अनभ्यस्त। (वीरो० ३/९) (सम्य ३२)

अनभिज्ञत्व (वि०) अपरिचितपना; अज्ञत्व (वीरो० वृ० ३/९) मोक्षपुरुषार्थसम्पत्तयेऽनभिज्ञत्वमज्ञत्व वेद।

अनभिव्यक्त (वि०) गुप्त। (जयो० वृ० १६/४२) वेद। (वीरो० वृ० ३/९)

अनभ्यावृत्ति (स्त्री०) पुनरुक्ति का अभाव।

अनभ्यास (वि०) अभ्यास रहित।

अनम्बर (वि०) दिगम्बर, निर्ग्रन्थ।

अनयः (पुं०) अन्याय, अनीति, नीति-वर्जित। दुराचार, दुर्नीति, विपत्ति, दुःख। दुर्भाग्य। (जयो० ७/६०)

अनयन (नपुं०) अन्धा, जन्मान्ध (जयो० २५/७०) २५/६८) अनयनोऽन्धोऽपि जनः। अनयनश्च जनः श्रुतमिच्छति। परिकृतः परितोऽप्यधिगच्छति। अहहसूढतया न मया हितं सुमतिभाषितमप्यवगाहितम्।। (जयो० ९/३१)

अनरः (पुं०) अतिमानुष (जयो० २/३९)

अनर-गोचर (वि०) देव गोचर। (जयो० २/३९) नराणां गोचरं न भवतीति अनरगोचरमतिमानुषं कार्यं साधयति। (जयो० वृ० २/३९)

अनभ्र (वि०) मेघ विहीन।

अनम्र (वि०) नम्रता हीन, अविनीत।

अनर्गल (वि०) ०अव्याहत, ०फैलाव, ०अनियन्त्रित, ०स्वेच्छाचारी। (जयो० १३/३०)

अनर्गलसद्रिन् (वि०) ०अव्याहत प्रसार, ०बहुत तेजी के साथ फैलाव। किमनर्गलसर्पिणे स्थितिं, क्षमता दातुमहो बलाय मे। (जयो० १३/३०)

अनर्घ (वि०) अमूल्य, अनमोल। (सुद० ७२)

अनर्घ्य देखो ऊपर।

अनर्ध्य (वि०) ०अनुपयुक्त, ०भाग्यहीन, ०निष्क्रिय, ०निरर्थक, हानिकारक।

अनर्थः (पुं०) ०अनुपयुक्त वस्तु, ०विपत्ति, ०दुर्भाग्य, ०विप्लवकरी, ०अनिष्ट।

अनर्थक देखो अनर्थकर।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अनर्थकर (वि०) ०अनिष्टकर, ०हानिकर, अलाभदाई, निरर्थक, सारहीन।

अनर्थकरी (वि०) अनिष्टकारी, हानिकारक, अलाभदायक।

अनर्थता (वि०) व्यर्थमेव, हानिकारिता। (जयो० ४/२७)

अनर्थदण्डः (पुं०) अनर्थदण्डव्रत, दिग्व्रत का एक भेद। प्रयोजनं बिना पापादानहेत्वनर्थदण्डः। (चा०सा०१६/४) पापोपदेश, हिंसादान, अपध्यान, दुःश्रुति और प्रमादचर्या ये पांच अनर्थदण्ड हैं। (तत्त्व ७/२१)

अनर्थनीतिः (स्त्री०) विप्लवकरी चेष्टा। आयाति भो भरत-भूभृदनर्थनीतिः। (जयो० २०/३०) अनर्थस्य नीतिर्विप्ल-वकरी चेष्टा प्रतीतिमायाति। (जयो० वृ० २०/३०)

अनर्थ-सूदनं (नपुं०) अनिष्टनाशन। देवपूजनमनर्थसूदनं। (जयो० २/२३) अनर्थं सूदयतीत्यनर्थ सूदनम् अनिष्टनाशनम्। (जयो० वृ० २/२३)

अनर्ह (वि०) अयोग्य, अपूज्य, अनुपयुक्त।

अनलः (पुं०) [नास्ति अलः पर्याप्तिर्यस्य] अग्नि, बह्नि, आग। (जयो० २/८१) १/७६)।

अनलः (पुं०) पाचनक्रियाशक्ति, पित्त।

अनलद (वि०) [अनलं द्यति] गर्मी को नष्ट करने वाला।

अनलदीपन (वि०) जठराग्नि बढ़ाने वाला, पाचनशक्ति कारक।

अनलार्चिः (स्त्री०) वह्निज्वाला। (जयो० १२/५६)

अनल्प (वि०) अनून, बहुमूल्य (जयो० २७/४९) विपुल (जयो० २/१४९) गहरा (वीरो० २/१९) विशाल (सुद० १०८) बहुत (दयो० १९) अनल्पतूल-तल्पस्थं। (जयो० २/१४९)

अनल्पजलं (नपुं०) गहरा जल, तटाक, नाल्पमनल्पं जलं येषु तेऽनल्पजल-तटाकाः। (वीरो० २/१९)

अनल्पतल्पः (पुं०) बहुमूल्य पल्यङ्क (जयो० २७/४७)

अनल्पतर (वि०) बहुमूल्यतर। (दयो० १०४)

अनल्पतूलं (नपुं०) अतिकोमल। (सुद० २/११) अनल्पतूलोदित-तल्पतीरे। (सुद० २/११) अतिकोमल रूई दार गद्दा से संयुक्त।

अनल्पतूल-तल्पस्थ (वि०) विपुल रूई के गद्दे वाले शयन। (जयो० २/१४९) स्त्रियोऽनल्पं तूलं यस्मिन् तादृशं यत्तल्पं शयनं तत्र। (जयो० वृ० २/१४९)

अनल्परूप (वि०) अलौकिक रूप। (जयो० वृ० ६/६३)

अनल्पश (अव्य०) ०बारं बार, ०भूयो भूयो, ०पुनः पुनः, ०समय समय पर। (जयो० २/१५५) स्मितरूचिताधर-दलमनल्पः यशो जल्पन्ती। (जयो० २/१५५) देवमन्न-वसनाद्यनल्पशः। (जयो० २/९९) अनल्पशो बहुवारम्। (जयो० वृ० २/९९)

अनल्पित (वि०) अधिकतम्, अत्यधिक, अति। (जयो० ७/६६)

अनल्पितक्रुध (वि०) अतिक्रोधित, अत्यन्तक्रुद्ध। अनल्पितक्रुधोऽतिकोपवतः। (जयो० ७/६६)

अनवकाश (वि०) अप्रयोज्य, अनाहूत।

अनवकाशः (पुं०) कार्य क्षेत्र का अभाव, स्थानाभाव।

अनवग्रह (वि०) अतितीव्रगामी।

अनवच्छिन्न (वि०) ०अनिद्रिष्ट, ०अविकृत, ०अबाधित, ०अपृथक्कृत, ०सीमांकन रहित, ०सीमा रहित।

अनवधानं (नपुं०) असावधानी। असत्यवक्ताऽनवधानतोऽपि। (समु० ३/२२)

अनवधानता (वि०) बिना प्रयोजन, कारण बिना। (समु० ३/२२)

अनवधि (वि०) असीमित, अपरिमित।

अनवद्य (वि०) निर्दोष, अनिंद्य, समीचीन, उत्कृष्ट, निष्कलंक। ततोऽनवद्यप्रतिपत्तिवन्मतिः (जयो० ३/६६) नावद्याऽनवद्या निर्दोषा। (जयो० वृ० ३/६६) ततोऽनवद्ये समये। (सुद० ३/४८)

अनवद्यपथः (पुं०) पापरहित मार्ग, निर्दोषपथ। (जयो० २७/५६)

अनवद्यप्रतिपत्तिपत्तिः (स्त्री०) योग्य कर्त्तव्य। नवद्याऽनवद्या निर्दोषा चासौ प्रतिपत्तिरिति कर्त्तव्यज्ञानम्। (जयो० ३/६६)

अनवद्यमतिः (स्त्री०) निर्दोष बुद्धि। (जयो० ७/३२)

अनवयनं (वि०) अजानयत्, ०नहीं जानता, ०अनभिज्ञ. (जयो० २५/७७)

अनवरत (वि०) अविराम, निरन्तर।

अनवलंब (वि०) निराश्रित, आलंबन हीन।

अनवलोभन (वि०) लोभ रहित।

अनवसर (वि०) निरवकाश, व्यस्त।

अनवशेष (वि०) जूठन रहित, सम्पूर्ण। (जयो० २/१०८)

अनवस्थ (वि०) अस्थिर, अंचल।

अनवस्था-दोषः (पुं०) अनवस्था दोष। तस्याप्य वित्तेराकृत्या, यदि सामान्यरूपतः। उपायान्तरतो वित्तिरनवस्थेति वर्तते।। हित सं० वृ० १४/२ यदि कहा जावे कि उसकी भी अभिव्यक्ति जाति विशेष में ही होती है तो उसका ज्ञान किसी आकार विशेष से होता नहीं, अतः उसके लिए भी और उपायान्तर मानना पड़ेगा। ऐसे आगे से आगे चलते चलो तो अनवस्था हो जाती है।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जहां विश्रांति का अभाव होता है, वहां अनवस्था दोष होता है। अप्रामाणिकानन्तपदार्थ परिकल्पनया विश्रान्त्य-भावोऽनवस्था। (प्रमे०रत्न०२२७)

अनवस्थान (वि०) अस्थिर, चंचल, अस्थायी।

अनवस्थित (वि०) अस्थिर, चंचल, परिवर्तित।

अनवेक्षक (वि०) असावधान, उदासीन।

अनवेक्षणं (नपुं०) [नञ्+अव+ईक्ष्+ल्युट्] अनवधानता, असावधानता, उदासीनता। ०परीक्षण अभाव, ०पर्यालोचन शून्यता।

अनशनं (नपुं०) उपवास [नञ्+अश्+ल्युट्] बाह्य तप का प्रथम भेद अनशन तप। (जयो० वृ० १/२२) अशनत्यागोऽनशनम्। मुक्त्यर्थं तपोऽनशनमिष्यते। (अनगार धर्मामृत ७/११) उपवास भी अवधूतकाल और अनयधूत काल रूप है।

अनश्वर (वि०) अविनाशी, शाश्वत।

अनस् (पुं०) १. गाड़ी, २. जन्म, ३. प्राणी। भोजन, रसोईघर।

अनसूय (वि०) [नञ्+सूय] ईर्ष्यारहित, द्वेष रहित।

अनाकाङ्क्षः (पुं०) (अन+आकाङ्क्ष) अनादर भाव रखना।

अनाकाङ्क्षणा (स्त्री०) निष्कांक्षित अंग।

अनाकाङ्क्षित (वि०) अनाकांक्षा भाव वाले, आकांक्षा से रहित। (मुनि०१०) नो गच्छेदतिभूमिगेहिसदनं निष्टोऽप्यनाकाङ्क्षितः। (मुनि०१०)

अनाकार (वि०) आकार रहित, विकल्प रहित।

अनाकालः (पुं०) कुसमय, दुर्भिक्ष।

अनाकुल (वि०) ०व्यग्रताविहीन, ०शान्त, ०अविनाशिनी। ०स्वस्थित, ०आत्मस्थ, ०स्वस्थ, ०दृढ़। पापं न मनागनाकुलः। (जयो० २३/६)

अनाकुला (वि०) प्रसाधनीया, प्रसाधिता। ललाटप्रान्तेऽनाकुलाः प्रसाधनी प्रसाधिता। (जयो० वृ० १०/३३)

अनाग (वि०) आगोवर्जित, निष्पाप, शीत बाधा समाप्त करने वाला। द्यौर्मूर्च्छिताप्यनिशि चित्त्वमिताप्यनागः। (जयो० १८/७०)

अनागत (वि०) भविष्यत् काल, आगे आने वाला। (जयो० १२/७३) गतवत्स्युरनागतानि। (जयो० १२/७३) अनागतानि भविष्यत्कालप्रभवाणि।

अनागस् (वि०) निरपराध, निर्दोष। (जयो० ३/५)

अनागसेवित (वि०) निरपराध द्वारा सेवित, सत्पुरुषों से संरक्षित। नागैः सत्पुरुषैः सेवित आराधितः सन् अनागसे निरपराधजनाय अनितः संरक्षित इति। (जयो० वृ० ३/५)

अनागम (वि०) अप्राप्ति, न आना।

अनाचार (पुं०) ०विषयासक्ति, ०इन्द्रियाधीनता, ०अनुचित आचरण, ०दुराचरण, ०कुरीति, ०व्रत भंग होना। (अनाचारो व्रतभङ्गः, सर्वथा स्वेच्छया प्रवर्तनम्) (मूला० वृ० ११/११)

अनाचिन्न (वि०) ग्रहण करने में अयोग्य।

अनाच्छादित (वि०) प्राङ्गण, खुला स्थान। (जयो० वृ० २/१४९)

अनाज्ञाद्य (वि०) छाया, ताप रहित, ठण्डा। (जयो० वृ० ३/११३)

अनातुर (वि०) उदासीन, खिन्न, अप्रसन्न, थका हुआ, अक्लांत, अनुत्सुक।

अनात्मन् (पुं०) पुद्गल, अजीव। आत्माऽनात्मपरिज्ञानसहितस्य। (सुद० १३३)

अनात्मन् (वि०) आत्मा से रहित, मन से रहित। ०अचेतना पुद्गलपना।

अनात्मभूत (वि०) अनात्मभूत लक्षण या हेतु। जो लक्षण वस्तु के स्वरूप में मिला हुआ न हो।

अनात्मशंसनं (नपुं०) आत्म स्वरूप के अतिरिक्त अन्य पदार्थों के स्वरूप का कथन। ०स्व प्रतिपादन का अभाव।

अनात्म-सदनं (नपुं०) स्वगृहाचार। (जयो० २/४५)

अनात्म-सदनावबोधनं (नपुं०) अपने घर की जानकारी न रखने वाला। (जयो० २/४५) आत्मनः सदनं तस्याव बोधनमात्मसदनावबोधनं नात्मसदनावबोधनं तस्मिन् स्वगृहाचार ज्ञानाभावे। (जयो० वृ० २/४५)

अनात्मवत् (वि०) [आत्मा वश्यत्वेन नास्ति इत्यर्थे-नञ्+आत्मन्+मतुप्] असंयमी, इन्द्रियाधीन।

अनाथ (वि०) स्वामिरहित, असहाय, निर्धन, त्यक्त, मातृविहीन। (जयो० ८/८४)

अनादर (पुं०) तिरस्कार, अवज्ञा, उपेक्षा, प्रीत्यभाव, उन्मनस्क प्रकार। (जयो० १७/२३) अनादरः प्रीत्यभावः। (जयो० वृ० ८/१९)

अनादर (वि०) उपेक्षा करने वाला, उदासीनता।

अनादरः (पुं०) प्रोषधोपवास में लगने वाला अतिचार।

अनादरः (पुं०) जम्बूद्वीप का अधिपति व्यंतर देव।

अनादर-भाक् (वि०) अवज्ञा जन्य कथन करने वाला (वीरो० १७/२२)

अनादानं (नपुं०) दानशील। (जयो० १/७२)

अनादानकर (वि०) दानशीलत्व। (जयो० वृ० १/७२)

अनादि (वि०) नित्य, आदि रहित, अनादि से आगत। (सम्य० ४७)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अनादिकरणं (वि०) एक साथ अवस्थान।

अनादिकालः (पुं०) अनादिकाल, प्रारम्भिक काल से पूर्व। (सम्य० ४७)

अनादित (वि०) अनादिकाल युक्त (सम्य० ६/५)

अनादिता (वि०) अनादिकाल युक्त। (सम्य ४७)

अनादिनयं (नपुं०) सादि अनादि पर्यायार्थिक नय।

अनादिनिधनं (नपुं०) अकृत्रिम नय।

अनादि-परिणामः (पुं०) गति स्थिति आदि का उपकार।

अनादि-रूपः (पुं०) जो पूर्व काल में नहीं उत्पन्न। आदौ पूर्वस्मिन् काले न जातं यत्तदतादिरूपं यस्या सा अनादि रूपा। (जयो० १७/१०७)

अनादि-सन्तानम् (नपुं०) अनादि परम्परा (वीरो० १९/४)

अनादिसिद्ध (वि०) अनादि से सिद्ध। (सुद० १/१२)

अनादिस्थानं (नपुं०) प्रारम्भविहीनस्थान। (जयो० २८/४५)

अनादीनव (वि०) निर्दोष, स्वस्थ, स्वच्छ।

अनादृत (वि०) आदर बिना। आदरः सम्भ्रमस्तत्करणमादृता सा यत्र न भवति तदनादृतमुच्यते।

अनादृत (वि०) दोष विशेष।

अनादेय (वि०) आदेयता विहीन, श्रद्धा विहीन, युक्ति युक्त वचन हीन।

अनादेशः (पुं०) अनुवृत्ति स्वरूप सामान्य।

अनाद्य (वि०) निरन्तर, विच्छेद हीन। न आदि अन्तो। (सम्य० ८)

अनाद्य (वि०) [अन+अद्+ल्युट्] अभक्ष्य, खाने के अयोग्य।

अनाद्यनिधनं (नपुं०) अनादि निधन। (सम्य० ८)

अनानुगामिक (वि०) अवधिज्ञान का एक भेद।

अनानुपूर्वी (वि०) विकल्प प्ररूपणा।

अनानुपूर्व्यं (नपुं०) नियत क्रम का अभाव।

अनापदी (वि०) आपत्ति विवर्जित, दुःख रहित। सुरासुराध्यपदान नापदी। (जयो० २४/३) अनापदी किलापत्तिविवर्जितः। (जयो० वृ० २४/१३)

अनाभिग्राहिक (वि०) सभी दर्शन/मत-मतान्तर की पुष्टि करने वाला।

अनाभोगः (पुं०) ०उपयोग के अभाव का नाम, ०आगम का पर्यालोचन न करना, ०क्रिया, ०निक्षेप, ०निर्वर्तित कोप, ०बकुश आदि पर्यालोचन न करना।

अनाभोगिक (वि०) विचार शून्य, विशेष ज्ञान से रहित।

अनामक (वि०) अप्रसिद्ध, बिना नाम का।

अनामय (वि०) [नास्ति आमयः रोगो यस्य] रोग रहित।

अनामा (स्त्री०) [नास्ति नाम यस्याः] अनामिका अंगुली।

अनामिका (स्त्री०) [नास्ति नाम अन्यांगुलिवत् यस्या, स्वार्थे कन्] कानी और बीच की अंगुली के मध्य की अंगुली। (जयो० ७/३२) अङ्गुष्ठेन सहिता अनामिका। (जयो० वृ० ६/३२)

अनामिषः (पुं०) मांस विहीन, शाकाहार। (सुद० ४/४३)

अनामिषाशनी (वि०) शाकाहारी, अन्न भोजी। अनामिषाशनी-भूयाद्वस्त्रपूतं विवेज्जलम्। (सुद० ४/४३) सदा अनामिष भोजी रहे/मांस नहीं खावे, किन्तु अनामिष भोजी और शाकाहारी रहें।

अनायत्त (वि०) जो दूसरों के आधीन न हो।

अनायतनं (नपुं०) सम्यग्दर्शन का आधारभूत गुण।

अनायास (वि०) ०स्वयमेव, ०स्वयं ही, ०अपने आप, ०आसान, ०सरल। सहजतयैव अनायासेन। (जयो० वृ० १/५) स्वयमेव अनायासेनैव। (जयो० वृ० १/९६) स्वत एव अनायासेनैव सूत्रप्रयोगादिना बिनैव। (जयो० १/३१)

अनारत (वि०) निरन्तर, अनवरत, अबाध, नित्य। (जयो० २८/, वीरो० ४/२५(जयो० २३/५९ अनारताक्रान्तधनान्धकारे। (वीरो० ४/२५)

अनारम्भः (पुं०) आरम्भ न होना, हिंसा का अभाव। सदारम्भादनारम्भादघादप्यतिवर्तिनी। (सुद० ४/३२)

अनार्जव (वि०) कुटिलता, छल।

अनार्य (वि०) ०अधम, ०नीच, ०अप्रतिष्ठित ०म्लेच्छ, ०शूद्र। (जयो० ४/४८) जिनका आचरण निंद्य है।

अनार्ष (वि०) [अन+आर्षः ऋषि] ऋषि रहित, ऋषियों के कथन से रहित।

अनालंब (वि०) असहाय, आश्रय विहीन। ०निराश्रित, ०अनाथ

अनालंबु (स्त्री०) रजस्वला स्त्री।

अनालब्ध (वि०) अप्राप्त, कायोत्सर्ग का एक अतिचार।

अनालोच्य (वि०) असत्य वचन।

अनालोकित (वि०) दिखाई नहीं देने वाला। (जयो० वृ० ६/३४)

अनावर्तिन् (वि०) परावर्तन रहित, पुनः नहीं लौटने वाला।

अनावश्यकं (नपुं०) करने योग्य नहीं, अकरणीय। (जयो० २/४०) आवश्यकता रहित (वीरो० २२/२२) शिष्टमाचरणमा-श्रयेदनावश्यकम्। (जयो० २/४०)

अनाविद्ध (वि०) छिद्र रहित, बन्धन हीन।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अनावृत्तिः (स्त्री०) मोक्ष, मुक्ति।

अनावृष्टिः (स्त्री०) वर्षा का अभाव। आवृष्टिर्वर्षणम्, तस्य अभावः अनावृष्टिः। (धव०पु०१३, वृ० ३३६)

अनाशंसा (स्त्री०) इच्छा का अभाव। सर्वेच्छोपरमः।

अनासक्त (वि०) निःस्पृह, आसक्ति रहित। (जयो० वृ० २/१२)

अनासाद्य (वि०) निःस्पृह। (सम्य० ११६) रत्नत्रयमनासाद्य यः साक्षात् ध्यातुमिच्छति।

अनास्वादित (वि०) आस्वादन रहित। (जयो० वृ० १६/३०)

अनाश्रमिन् (वि०) आश्रम की कमी।

अनाश्रव (वि०) [नञ्+आ+श्रु+अच्] जो न सुने। ०अनसुनी करने वाला।

अनास्रव (वि०) उदासीनता, तटस्थता।

अनाहत (वि०) आघात रहित, अक्षत।

अनाहार (वि०) उपवास करने वाला।

अनाहारः (पुं०) औदारिकादि तीन शरीरों के योग्य पुद्‌गलों को नहीं ग्रहण करना।

अनाहारक (वि०) विग्रहगति को प्राप्त, तीन शरीर, तथा छह पर्याप्तियों के योग्य पुद्गल स्वरूप आहार न ग्रहण करने वाला।

अनाहुतिः (स्त्री०) होम न होना, आहूति न देना।

अनाहूत (वि०) अनिमन्त्रित, अनामन्त्रण।

अनिकाचित (वि०) उत्कर्षण, अपकर्षण, संक्रमण, उदीरणा।

अनिकेत (वि०) [नञ्+निकेत] गृहहीन, अनगार।

अनिगीर्ण (वि०) निगला न गया, अगुप्त, अच्छादित।

अनिध्नन्न (वि०) बन्धोदय न होना। (सम्य० १२१)

अनिचार (वि०) आचार विहीन।

अनिच्छु (वि०) [नास्ति इच्छा यस्य] [नञ्+इच्छुक्] इच्छा रहित, निःस्वार्थ। आख्याति विख्यातिमनिच्छुरेव। (जयो० २७/२२) अनिच्छुरेव सन् निःस्वार्थः। (जयो० वृ० २७/२२)

अनित्य (वि०) ०क्षणभंगुर, ०अशाश्वत, ०नश्वर, ०आकस्मिक, ०अस्थिर, ०चंचल, ०अनिश्चित, ०अनियमित। अनित्यो प्रतिक्षण विनाशी। (स्याद्वाद मंजरी)

अनित्य (वि०) वस्तु तत्त्व विवेचन की शैली, स्याद्वाद की अनेकान्त शैली में सामान्य विशेष, सत-असत्, नित्य-अनित्य आदि दृष्टियां होती हैं। पर्याय की अपेक्षा अनित्य। (वीरो० १९/२१) अनित्य नाम भावना/अनुप्रेक्षा का भी है। जिसके अनित्य भावना या अनित्यानुप्रेक्षा भी कहते हैं। यह प्रथम भावना है, इस संसारी जीव का शरीर ही विनश्वर है, तो फिर उससे सम्बन्ध रखने वाली भोगोपभोग की साधन भूत इतर वस्तुओं में टिकाऊपन हो ही कैसे सकता है, ऐसे विचार करने का नाम अनित्यानुप्रेक्षा है।

अनित्यनयं (नपुं०) सद्भावानित्य-पर्यायार्थिक नय।

अनित्यभावना (स्त्री०) अनित्यानुप्रेक्षा।

अनित्य-स्वभावः (पुं०) क्षणभुंगुर स्वभाव। ०अस्थिर परिणाम, ०चंचल प्रवृत्ति, चपल भाव।

अनित्यकैता (वि०) क्षणस्थिति। (जयो० २६/८९)

अनिदा (स्त्री०) वेदना विशेष, विवेक के अभाव में उत्पन्न वेदना।

अनिद्र (वि०) निद्रा रहित, जागृत। (जयो० २८/२)

अनिद्रालु (वि०) अनालस्य, सावधान, जागृत। (जयो० २८/२)

अनिधत्त (नपुं०) कर्म प्रदेशाग्र का अपकर्षण।

अनिन्द्रियं (नपुं०) मन, जो इन्द्रिय का विषय न हो। अनिन्द्रियं मनो।

अनिन्द्य (वि०) अप्रशंसनीय, अवंदनीय, प्रशंसा रहित। (जयो० १/१२)

अनिन्दित (वि०) प्रशस्त, समुचित, यथेष्ठ। (जयो० ५/५६)

अनिबद्ध (वि०) सार्वजनिक, प्रकाशित, अस्थिर, चंचल।

अनिबन्धनं (नपुं०) निरावरण, निराकरण। णमो अमिय-सव्वीणमापत्तेरनिबन्धनम्। (जयो० १९/८१)

अनिभृत (वि०) सार्वजनिक, प्रकाशित, अस्थिर, चंचल।

अनिमित्त (वि०) निष्कारण, निराधार, आकस्मिक, बिना प्रयोजन। (जयो० १५/६२) केचिच्छशं केचिदितः कलङ्कं वदन्तु हीन्दोनिमित्तमङ्कम्।

अनिमित्तं (नपुं०) पर्याप्त कारण का अभाव।

अनिमेषः (पुं०) ०मत्स्य, ०मीन का नाम, सफर नामक मच्छली, बृहन्मीनभावमवापेति। (जयो० ५/७३)

अनिमेषः (पुं०) अनिमेष नमक देव, निमेषरहित देव। अनिमेष निमेषरहिता देवा। (जयो० ११/७४)

अनिमेषः (पुं०) मत्स्य नामकदेव। (जयो० ११/७४) अनिमेष हशैव पश्यति। (समु० २/७) देव एकटक से देखता है

अनिमेष (वि०) टकटकी लगाए, बिना पलक झपके। अनिमेष हशैव पश्यति। (समु० २/७)

अनिमेष-दृष्टिः (स्त्री०) निर्निमेष दृष्टि, स्थिर दृष्टि।

अनिमेष-लोचनं (नपुं०) स्थिर दृष्टि, अचपलता रहित नयन।

अनियत (वि०) अनियंत्रित, अनिश्चित, संदिग्ध, कारणरहित, आकस्मिक, नश्वर।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अनियन्त्रण (वि०) असंयत, स्वतन्त्र।

अनियमः (नपुं०) नियम का अभाव, नियन्त्रण।

अनियम (वि०) ०अनिश्चितता, ०निश्चयाभाव। ०संदेह, ०अनुचित। नियम पर विचार नहीं करने वाला

अनिरुक्त (वि०) ०स्पष्ट व्युत्पत्ति का अभाव, ०व्याख्या का ०उचित प्रयोग नहीं, ०अनुचित कथन। ०शब्द विश्लेषण का उचित प्रयोग नहीं होना।

अनिरुद्ध (वि०) अनियन्त्रित, स्वच्छंद, अनिश्चित, आकस्मिक।

अनिर्णय (वि०) अनिश्चितता। ०विचारों में एक रूपता न होना, नीति निर्धादण नहीं होना।

अनिर्दश (वि०) कम समय।

अनिर्देश (वि०) नियम का अभाव, निर्देश की अवज्ञा।

अनिर्देश्य (वि०) अवर्णनीय। ०वर्णन शून्य, निर्देशन की उचित व्यवस्था का अभाव।

अनिर्धारण (वि०) नियमाभाव।

अनिर्धारित (वि०) नियमाभाव।

अनिर्वचनीय (वि०) कहने के अयोग्य, अवर्णनीय, कौशल चातुर्य। (जयो० वृ० ३/२७)

अनिर्वाण (वि०) निर्वाण का अभाव।

अनिर्वेद (वि०) उत्साह, उमंग, सम्यक्त्व की ओर।

अनिवार्य (वि०) अव्यवहार। (जयो० वृ० १३/९) अव्यवहारोऽनिवार्य एवास्ति। (जयो० वृ० १३/९)

अनिवार्य (वि०) आवश्यक। ०करने योग्य, ०विषय की निर्धारण पद्धति।

अनिर्वृत (वि०) खिन्न, अशान्त।

अनिर्वृत्ति (वि०) विकलता, व्याकुलता।

अनिर्वृत्तिः (स्त्री०) निर्धनता।

अनिवृत्तिः (स्त्री०) विशिष्ट आत्मपरिणाम, निवर्तनशीलं निवर्ति, न निवर्ति, अनिवर्ति। सम्यक्त्व की अतिशयता।

अनिवृत्तिकरणः (नपुं०) नवम् गुणस्थान का नाम। (जयो० २८

अनिलः (पुं०) [अन्+इलच्] पवन, वायु, हवा।

अनिलः (पुं०) देव नाम, वायुदेव।

अनिशम् (अव्य०) निरन्तर, लगातार। कुर्यात्प्रयत्नमनिशं मनुजस्तथापि।

अनिषेवणं (नपुं०) प्रयोग का अभाव। (हित ७) (वीरो० १८/५८)

अनिःशेषित (वि०) शेष नहीं, सम्पूर्णता। (जयो० २/१०७)

अनिष्ट (वि०) ०अनर्थ ०अननुकूल, ०दुर्भाग्यपूर्ण, ०हानिकारक। (जयो० २/९०) अमङ्गलसूचक। (जयो० वृ० २/२३) (सम्य० १३५) ०अशुभ कारक।

अनिष्टता (नपुं०) निःसारता, दुर्भाग्यपूर्णता, अमङ्गलसूचकता। (जयो० वृ० ११/२०)

अनिष्टनाशनं (नपुं०) अनर्थसूदन। (जयो० २/२३)

अनिष्टसंयोगः (पुं०) करणीय नहीं निर्दोष नहीं, अनिष्ट पदार्थों का मिलन। (जयो० १/१०९) इष्टवियोगनिष्ट-संयोगतया। (जयो० वृ० १/१०९)

अनिष्टसंयोगजं (नपुं०) आर्तध्यान का नाम, विष, कण्टक आदि अनिष्ट पदार्थों का संयोग होने पर उसके दूर करने के लिए मन में जो बार-बार संकल्प-विकल्प उठते हैं, वे अनिष्टसंयोगज कहलाते हैं।

अनिष्टहानि (पुं०) अमंगल, अभाव (वीरो० २०/७)

अनिष्ठा (वि०) महती (जयो० १/१६)

अनिष्पन्नं (अव्य०) बहुत बलपूर्वक नहीं।

अनिस्तीर्ण (वि०) अपारगामी, छुटकारा से रहित।

अनिसृष्ट (वि०) दोष विशेष, अनियुक्त, अनधिकारी द्वारा प्रदत्त वसति।

अनिस्सर (अक०) (अनि+सृज्) अनप्रित करना, अकेन्द्रित करना, बाह्यमनिस्सरन्तीमसतीं निगाह्य। (जयो० १/२०) अनिस्सरन्ती न निर्गच्छन्तीम्।

अनिस्सरणात्मक (वि०) तैजस शरीर विशेष। औदरिक, वैकल्पिक और आहारक शरीर के भीतर स्थित देहदीप्ति।

अनिह्नवः (पुं०) अधीत गुरु का उल्लेख, ज्ञानाचार का एक गुण, जिस गुरु के पास जो पढ़ा, उसके विषय में उसी गुरु का उल्लेख करना, अन्य का नहीं। (भक्ति० ८)

अनिह्नवाचारः (पुं०) (यस्मात् पठितं श्रुतं स एव प्रकाशनीयः) ज्ञान के आठ भेद हैं-शब्दाचार, अर्थाचार, उभयाचार, कालाचार, उपधानाचार, विनयाचार, अनिह्नवाचार और बहुमानाचार। उनमें अनिह्नवाचार नामक सातवां भेद।

अनीकः (पुं०) सेना, सैन्यपंक्ति, सैन्यदल, सैनिक, संग्रामदल।

अनीकः (पुं०) अनीक नामक देव, जिनके पास हाथी, घोड़े, रथ, पादचारी, बैल, गन्धर्व और नर्तकी ये सात सैन्य रूप होते हैं।

अनीक को दण्डस्थानीय भी कहा है, जो क्षेत्र की दण्ड-व्यवस्था करते हैं।

अनीक्षित (वि०) दृष्टि से पर, अनालोकित, अदृष्टव्य, अनदेखे। (भक्ति सं० ४४) अनीक्षितायोग्यपुरः प्रदेशे।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अनीतिः (स्त्री०) ०ईति का अभाव, ०व्याधियों का नाश, ०अतिवृष्टि। धर्मार्थकामेषु जनाननीतिं (जयो० २/१२०) अनीतिमीति वर्ज्य (जयो० वृ० २/१२०) अनीतिप्रथितं राजा नीतिमान् पुरमप्यसौ। (जयो० ३/१०८) उक्त पंक्ति में 'अनीति' शब्द दुराचार को प्रतिपादित करता है। एकाधृतानीतिर भक्ष्य वृत्ति। (समु० ८/४८) यहां 'अनीति' का अर्थ अन्याय है। ०अन्याय।

अनीतिप्रथित (वि०) दुराचार युक्त। (जयो० ३/१०८)

अनीतिभावः (पुं०) अन्याय भाव, दुराचार भाव, ईतियों/उपाधि का अभाव। (जयो० २३/२) आचार्य ज्ञानसागर ने ईतियों का उल्लेख इस प्रकार किया है–
अतिवृष्टिरनावृष्टिर्मूषकाः शलभाः शुकाः।
प्रत्यासन्नाश्च राजानः षडेता ईतयः स्मृताः।। (जयो० वृ० १०५३, सि०उत्तरार्ध)

अनीतिमतिः (स्त्री०) अन्याय बुद्धि। (सुद० १/२३) अनीतिमत्यत्र जनः सुनीतिः (सुद० १/२३)

अनीतियुक्त (वि०) अनीतिप्रथित, दुराचार युक्त। (जयो० वृ० ३/१०८)

अनीश (वि०) प्रमुख, सर्वोच्च, प्रधान, श्रेष्ठ।

अनीशः (पुं०) प्रभु, स्वामी, ईश्वर।

अनीश्वर (वि०) असमर्थ, अनियन्त्रित। (जयो० ८/१६) फणीश्वरस्त्यक्तुमनीश्वरोऽस्ति।
अनीश्वरोऽसमर्थस्तत्र। (जयो० वृ० ८/१६)

अनीश्वर (वि०) दोष विशेष, स्वामी से भिन्न।

अनीश्वर-वादः (पुं०) ईश्वर को नहीं मानने वाले। नास्तिकवाद।

अनीह (वि०) उदासीन, व्याकुल।

अनु (अव्य०) सदृश, लक्षण, क्रम, निरन्तर, सम्बद्ध संकेत, फलस्वरूप, पश्चात्वर्ती, तरह, अनुरूप आदि के अर्थ में 'अनु' का प्रयोग किया जाता है। (सम्य० १२३/७८) 'सादृश्ये लक्षणेऽप्यनु' इति विश्वलोचनः। (जयो० २१/४२) पातालमूलमनुखातिकया स्म सम्यक्। (सुद० १/३६) उक्त पंक्ति में 'अनुखातिकया' के साथ 'अनु' शब्द 'भाग' या अंश को प्रतिपादित कर रहा है। तरल-तरीष-विशिष्टो-ऽनुकर्ण-धाराशुगेन सन्तरति। (जयो० ६/६६) कर्णस्य धारामनु समीपं वर्तते। (जयो० वृ० ६/६६) इसमें 'अनु' का अर्थ समीप है।

अनुक (वि०) [अनु+कन्] कामुक, विलासी, लालची, लोलुपी, लोभी।

अनुकथनं (नपुं०) [अनु+कथ्+ल्युट्] वार्तालाप, सम्वाद, कथोपकथन। (जयो० १२/३१)

अनुकर्णधारः (पुं०) कर्णप्रान्तगत। कर्णस्य धारामनु समीपं वर्तते सोऽनुकर्णधारो, यद्वाऽनुकर्णधरा यस्येति वा, स चासौ आशुगो बाणस्तेन कर्णप्रान्तगतबाणेन। (जयो० वृ० ६/६६)

अनुकंपक (वि०) [अनु+कंप्+ण्वुल्] दयालु, करुणाशील।

अनुकंपनं (नपुं०) [अनु+कंप्+ल्युट्] करुणा, दयालुता, दयाभाव, सहानुभूति।

अनुकंपा (स्त्री०) [अनु+कंप+ल्युट्] करुणा, दया, सहानुभूति, अनुकंपनमनुकंपा। (सि६/१२) सर्वप्राणिषु मैत्री अनुकंपा। (त०वा० १/२) क्लिश्यमान-जन्तूद्धरणबुद्धिः अनुकंपा। (भ०आ०टी० १६९६) कारुण्यपरिणामोऽनुकंपा (चा०प्रा० टी० १०) 'अनुकंपा' सम्यक्त्व का कारण है। (जयो० ४/३४) (सम्य० ६४)

अनुकरणं (नपुं०) [अनु+कृ+ल्युट्] अनुरूपता, सादृश्यता, समानता, अनुकूलन। अनुकरणस्यानुकूलनस्य। (जयो० वृ० ४/३४)

अनुकरणीय (वि०) अनुकरण करने योग्य, आदर्श रूप। महादर्शनमनुकरणीयम्। (जयो० वृ० ३/१०१) आदर्शस्य अनुकरणीयस्य। (जयो० वृ० १/९१)

अनुकर्त्री (वि०) सेवाकारिणी। (जयो० वृ० १२/९२)

अनुकर्षः (पुं०) [अनु+कृष्+अच्] आकर्षण, लगाव, झुकाव।

अनुकल्पः (पुं०) [अनु+कल्प्+अच्] अनुदेश भाव की प्रयुक्ति।

अनुकाम (वि०) काम वाला, अपनी इच्छानुसार काम करने वाला।

अनुकाल (वि०) समयोचित, सामायिक गुण।

अनुकालित (वि०) अनुकरण। (वीरो० ७/१६)

अनुकीर्तन (नपुं०) कथन, प्रतिपादन, प्रकाशन, गुणस्तवन, गुणगान। (सम०१/३)

अनुकूल (वि०) [अनु+कूल+अच्] अनुवर्तिनि, मनोवाञ्छित, अभिमत, अनुरूप, कृपापूर्ण, (जयो० ३/९१) वामेन कामेन कृतेऽनुकूले। (जयो० ३/९१) अनुकूले भवदिच्छानु-वर्तिनि कृते। (जयो० वृ० ३/९१) सरस-सकल-चेष्टा सानुकूला नदीव। (वीरो० ३/३३) हारं हृदाऽनुकूलं स। (जयो० ३/९४) हृदोऽनुकूलं हृदयग्राह्यं हारं (जयो० ३/९४) हृदयग्राह्य हार। अनुकूले सति सुरथे। (जयो० ६/११) इस पंक्ति में (अनुकूलेऽभिमुख भावमिते) अभिमुख अर्थ है, सम्मुख भी इसका अर्थ है। छाया तु लोमावलिकानुकूले।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(जयो० ११/४९) उक्त पंक्ति में 'अनुकूल' का अर्थ सहज सहायक किया है। 'यत्: किलानुकूले सहजसहायके। (जयो० वृ० ११/४९)

अनुकूल (अव्य०) [अनु+कूल्] ०अनुकूल होना, ०कृपापूर्ण होना, ०अभिमत होना, ०मनोवाञ्छित होना। तानि तावदनुकूलयन् बलात्। (जयो० २/१९) अनुकूलयन् स्वहितान्याचरन् यात्। (जयो० वृ० २/१९)

अनुकूलक (वि०) स्वाभीष्ट, अपने योग्य। स्त्रियस्त्यक्त्वाऽनु-कूलकम्। (जयो० २/१४९)

अनुकूलकर (वि०) अनुसार चलने वाले। आदिश त्वदनुकूल-कराय। (समु० ५/२)

अनुकूलचेता (वि०) अनुकूल चित्त वाला। सम्भावयन्नित्यनु-कूलचेता। (वीरो० १८/३४)

अनुकूलचेष्टावती (वि०) प्रकृत्यानुसारी। (वीरो० ३/३३)

अनुकूलपतिः (पुं०) मनोनुकूलपति। (जयो० वृ० ३/६५)

अनुकूलसाधनं (नपुं०) योग्य साधन, अभीष्ट साधन। (जयो० २०/८९)

अनुकूला (वि०) सादृशी, मनोवाञ्छिता। (जयो० १/३८)

अनुकूलाचरणं (नपुं०) योग्य-व्यवहार, उचित आचरण। (दयो० ४२)

अनुकूल्यार्थ (वि०) अनुकूलता के लिए। (जयो० वृ० २/५०)

अनुकृ (सक०) [अनु+कृ] अनुकरण करना, अनुसरण करना। (हित वृ० ९) अनुकुर्वाणा। गिरेत्यमृतसारिण्या श्रीवनञ्चानुकुर्वतः। (जयो० १/८८) तदनुकर्तुममुष्य किलाक्षिकम्। (जयो० ७/१९) निर्जगाम नृपनाथतनूजा स्त्री न यामनुकरोति तु भूजा। (जयो० ५/५८) अनुरोति। (सम्य० ६४)

अनुक्रमः (पुं०) [अनु+क्रम्+अच्] उत्तराधिकार, क्रम, क्रमबद्धता, विषयतालिका, विषयसूची।

अनुक्रमणं (नपुं०) [अनु+क्रम्+ल्युट्] अनुगमन, अनुशरण, क्रमबद्धानुसार, क्रमगमन।

अनुक्रिया (स्त्री०) अनुकरण, अनुशरण।

अनुक्रोशः (पुं०) [अनु+कृश्+घञ्] दया, करुणा, दयालुता।

अनुक्षणम् (अव्य०) प्रतिक्षण, निरन्तर, सदैव, बार बार, पुनःपुनः। (जयो० १०/५९) श्रिया सम्बर्धमानन्तभनुक्षणमपि प्रभुम्। (वीरो० ८/७)

अनुक्षेत्रं (नपुं०) क्षेत्रानुसार।

अनुख्यातिः (स्त्री०) [अनु+ख्या+क्तिन्] विवरण देना, प्रकट करना, प्ररूपणा, निरूपणा।

अनुग (वि०) [अनु+गम्+ड] पीछे चलना, गतानुगतिक, अनुचारी।

अनुगः (पुं०) अनुचर, सेवक, आज्ञापालक।

अनुगत (वि०) प्राप्त, समागत, आगत। (वीरो० २१/२१) सादृशऽनुगत मानवमाला। (जयो० ५/३१)

अनुगत्व (वि०) समागत, प्राप्त हुआ। (सम्य० ७८)

अनुगतिः (स्त्री०) [अनु+गम्+क्तिन्] अनुचरी, गतानुगतिक, पीछे चलने वाला, अनुकरण करने वाला।

अनुगतात्मवस्तु (नपुं०) ०अनुशरणशील ०वस्तु, ०अनुकूल आचरण समागत पदार्थ। (वीरो० १८/३५) घृत्वाऽखिलेभ्यो मृदुवाक् समस्तु सूक्तामृतेनानुगतात्मवस्तु। (वीरो० १८/३५)

अनुगुण (वि०) ०समान गुण रखने वाला, ०दूसरे के गुण सदृश, ०अनुकूल, ०उपयुक्त, ०रुचिकर, ०अनुरूप। (सुद० ४/४७)

अनुगम् (अनु+गम्) अनुगमन करना, जाना, पीछे-पीछे चलना, (जयो० २४/१००) अनुगच्छतोर्निम्ननिबद्धगाथा। (जयो० २४/१००)

अनुगामिन् (वि०) अनुयायी, सहचर, सहगामी। (जयो० वृ० ४/२९)

अनुगामिनी (वि०) आज्ञाकारी, आज्ञानुसारिणी। पत्नी तदेकनामाऽभूत्तस्यच्छन्दोऽनुगामिनी। (दयो० १/१३) रुचिरम्बुमुचोऽनुगामिनी। (समु० २/१२) उक्त पंक्ति में 'अनुगामिनी' का अर्थ पीछे-पीछे होने वाली है।

अनुग्रहः (पुं०) [अनु+ग्रह+अप्] प्रसाद, कृपा, दया, अनुग्रह, उपकार। (जयो० २/६७) (जयो० वृ० १/८७) गुत्तोर्महानुग्रह एव हेतुः। (समु० १/६) तेषां गुरुणां सदनुग्रहोऽपि कवित्वशक्तौ मम विघ्नलोपी। (वीरो० १/६) स्व-परोपकारोऽनुग्रहः (स०सि०७/३२)

अनुग्रह् (सक०) [अनु+ग्रह्+अच्] अनुग्रह करना, कृपा करना, उपकार करना। क्षणमनुजग्राह च देवतागणः (वीरो० ७/२४) चेतोऽनुगृह्णाति जनस्य चेतो। (वीरो० १/२७) किन्नानुगृह्णाति जगज्जनोऽपि। (वीरो० २०/१३) न तेऽनुगृह्णन्तु किमीश्वराः सुराः। (जयो० २०/५८) परमेप्युगृह्णीयादात्मने। (सुद० ४/४४)

अनुग्रहकारिन् (वि०) ०अनुकारिन्, ०उपकारक, ०अनुकंपक ०अनुग्रहक। (जयो० वृ० २४/१५) ०कृपा दृष्टि वाला।

अनुग्रहणं (नपुं०) अनुग्रह, उपकार, कृपा। अनुग्रहणं कृपां विना। (जयो० ९/१४)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अनुग्रहपोषक (वि०) उपकारक, ०अनुकंपा को स्वीकार करने वाला।

अनुग्रहपोषी (वि०) अनुग्रह को पुष्य करने वाला। उपकार पुष्टीकर्ता। (जयो० १२/१८) त्वमनुग्रहं पुष्णासीत्यनुग्रहपोषी। (जयो० वृ० १२/१८) विशेषानुग्रहपोषकोऽसीत्यर्थ:।

अनुगृहीत (वि०) कृपा दृष्टि। (दयो० ५५)

अनुग्राह्य (वि०) अनुग्रह करने वाला।

अनुचर् (अक०) [अनु+चर्] ०काम लेना, ०स्वीकार करना। ०अनुशरण करना, ०अनुगमन करना। (मुनि० ३०) उद्दण्डाशनकारितामनुचरेन्नित्यं। (मुनि० ३०) योग्यतामनुचेरन्महामति:। (जयो० २/५१) जनो योग्यतामनुचरेत् स्वीकुर्याद्। (जयो० वृ० २/५१)

अनुचर: (पुं०) [अनु+चर्+ट] ०सहगामी, ०सेवक, ०भृतिक, ०आज्ञाकारी, ०अनुगामी। भोगा भुवीहानुचरा न भोगा। (भक्ति०४)

अनुचरी (स्त्री०) सेविका, सहकारिणी, दासी।

अनुचाटुवचस् (नपुं०) [अनु+चाटु+वच्+असुन्] मीठी मीठी बात, मधुर मधुरवचन। (समु० ३/४२) संक्रीडके तमनुचाटुवच: प्रभावात् (समु० ३/४२)

अनुचारक: (पुं०) [अनु+चर्+ण्वुल्] अनुचर, सेवक, सहगामी।

अनुचारिणी (स्त्री०) आज्ञाकारिणी, सेविका। (सुद० ८९)

अनुचित (वि०) अनुपयुक्त, अयोग्य, गलत। न क्षेमपृच्छाऽनुचितास्तु सापि। (जयो०३/२६) अहो किलोचितानुचितविकलेनानेन। दुर्लभं नरजन्मापि, नीतं विषयसेवया। चिन्तारत्नं समुत्क्षिप्तं काकोड्डायनहेतवे। (दयो० वृ० १०१) किमनौमिचत्यमत्र। (दयो० वृ० ८१) यहां 'अनुचित' को 'अनौचित्य' भी दिया है।

अनुचित-क्रियत्व (वि०) अनुपयुक्त क्रिया वाला, अयोग्य क्रिया वाला। (वीरो० १६/१५)

अनुचिंतनं (नपुं०) विचारणा, सोचना, पुन: पुन: चिंतन। (अनु+चिंत्+अ+ल्युट्)

अनुचिन्तना (स्त्री०) विचारणा, सोचना। (जयो० वृ० १३/४७)

अनुचिन्ता (स्त्री०) ०याद करना, ०स्मरण करना, ०चिन्तन करना, ०निरन्तर सोचना।

अनुचिन्तय् (अक०) ०सोचना, ०विचारना, ०ध्यान देना, ०अवलोकन करना। विवराणि भुवोऽनुचिन्तयन्निव दृष्टिं। (जयो० १३/४३) उक्त पंक्ति में अनुचिन्तमन् का अर्थ अवलोकन है।

अनुच्छाद: (पुं०) [अनु+छद्+णिच्+घञ्] पल्ला लटकना।

अनुच्छित्ति: (स्त्री०) [अनु+छिद्+क्तिन्] कट कर अलग न होना, नाश न होना, अनष्टगत।

अनुच्छेद: (पुं०) [अनु+छिद्+घञ्] पैरा, अंग, भाग। ०अंश, ०हिस्सा।

अनुच्छिष्ट (वि०) अनन्यमुक्त। श्रीमाननुच्छिष्ट भुजामिवाद्य:। (जयो० १९/१)

अनुज (वि०) [अनु+जन्+ड] छोटा भाई, बाद में उत्पन्न, पीछे जन्मा। (समु० ४/२१) श्रूयतां श्रवणयोरनुजेन, न श्रुतं च भवतामनुजेन। (जयो० ४/२) नानुजेन भवत: पिताजित:। (जयो० ७/६७) स केवलेन अनुजेन बाहुबलिना न जित: किमु, अपि तु जित एवेत्यर्थ:। (जयो० वृ० ७/६७)

अनुजा (स्त्री०) [अनु+जन्+टाप्] छोटी बहिन। (जयो० ९)

अनुजान् (सक०) समझना, मानना, कहना। घटकं तु विधिं तयो: सतो रनुजानामि वरं विचारिणाम्। जडमित्यनुजानतां वच: शुचि तावद्धरणौ विरागिणाम्।। (जयो० १०/७७, जयो० ४/३४) परमतांश्रितामाशङ्कामनुजग्राह। (जयो० १०/७७) समुन्नतं नक्रमिवानुजाने। (सुद० १/२४)

अनुजायता (वि०) स्मरणता, अनुष्ठीयता। (जयो० २/३६)

अनुजायमान (वि०) उत्पद्यमान। (सम्य० १२३)

अनुजीविन् (वि०) ०अनुचर, ०सेवक, ०आज्ञाकारी। ०परजीवि, ०पराश्रित। (जयो० ९)

अनुजीविजन: (पुं०) अनुचर लोग, सेवकजन। आश्रित लोग। (जयो० १०

अनुज्ञा (स्त्री०) ०अनुमति, ०स्वीकृति, ०आज्ञा, ०सहमति। 'पित्रोरनुज्ञामनुवर्तमाना।' अन्य की अनुमोदना (समु० ८/४)

अनुज्ञानम् (नपुं०) [अनु+ज्ञा+ल्युट्] आज्ञा, आदेश, अनुमति, स्वीकृति।

अनुज्ञात (वि०) अपरिचित, अनभिज्ञ। (जयो० वृ० ३/२१)

अनुज्ञापक (वि०) [अनु+ज्ञा+णिच्+ण्वुल्] आज्ञा देने वाला, आदेश देने वाला।

अनुज्ञापनम् (नपुं०) [अनु+ज्ञा+णिच्+ल्युट्] ०आज्ञा ज्ञापित करना, ०आदेश देना।

अनुतर्ष: (पुं०) [अनु+तृष्+घञ्] प्यास, कामना, इच्छा, मद्य।

अनुतप्प (वि०) संताप युक्त, दु:ख युक्त। (जयो० ९/४३)

अनुताप: (पुं०) [अनु+तप्+घञ्] पश्चाताप, संताप, पीड़ा, दु:ख। (जयो० ९/४)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अनुतापरत (वि०) संतापजन्य, दुःखजन्य। (जयो० ९/४३)

अनुतिलम् (अव्य०) सूक्ष्मता से, कण कण करके।

अनुतिष्ठ (वि०) स्थित रहने वाले। (भक्ति०१४)

अनु-तुप् (सम०) संतुष्ट करना, प्रसन्न करना। (जयो० २/७२)

अनुतेजस् (पुं०) निजप्रभाव, अपना यश। (जयो० ६/२३) तनुतेऽनुतेजसा स्वां। (जयो० ६/२३)

अनुत्क (वि०) खेदयुक्त। ०दुःखी, ०मानसिक पीड़ा युक्त।

अनुत्कृष्ट (वि०) उत्कृष्टता रहित, वेदना जन्य। सिद्धान्त की दृष्टि से आयु की द्रव्यवेदना भी 'अनुत्कृष्ट' कही जाती है।

अनुत्तम (वि०) अनुपम, सर्वोत्कृष्ट।

अनुत्तर (वि०) प्रमुख, प्रधान, सर्वोत्कृष्ट, अनुपम, उत्तर देने में असमर्थ, अद्वितीय। नात्स्युत्तरो अनुत्तरः। (जयो० ५/१२)

अनुत्तरमानी (वि०) अद्वितीय मान धारक। नास्त्युत्तरो मानः स्मयोः यस्मात् सोऽनुत्तरमानी। (जयो० वृ० ५/१२)

अनुत्तरंग (वि०) स्थिर, अनुद्वेलित, अविक्षुब्ध। ०व्याकुलता रहित, ०प्रशान्त, ०सुखी।

अनुत्तरलोकः (पुं०) अनुपम लोक (वीरो० १८/१६)

अनुत्थानं (नपुं०) प्रयत्न, प्रयास।

अनुत्सूत्र (वि०) नियमित। ०क्रमबद्ध, ०सूत्रागामी, पारम्परिक।

अनुत्सेकः (पुं०) सरल, क्षमाशील। उत्सेको गर्वः तस्य विजितः।

अनुदध् (अक०) धारण करना, पास रखना, पकड़ना। (तुल्यतामनुदधाति तस्य) (जयो० ४/५९)

अनुदयात्मक (वि०) दोष कारकता विहीन नहीं, दया दृष्टि रहित नहीं। दया जन्य, कृपा दृष्टि करने वाला। सम्यक्त्वे स कुतोन्यायाज्ज्ञाने वाऽनुदयात्मकं। (सम्य० वृ० १२१)

अनुदर (वि०) पतली कमर वाला, कृश, दुबला, क्षीण।

अनदुरि (स्त्री०) कृशोदरि (वीरो० ४/३२) स्वप्नावलि त्वनुदरि प्रतिभासि धन्या। (वीरो० ४/३२)

अनुदार (वि०) कंजूस, उदारता रहित, अपरोपकारी, स्वार्थी।

अनुदिनं (अव्य०) प्रतिदिन। (जयो० वृ० १२/४६)

अनुदेशः (पुं०) [अनु+दिश्+घञ्] संकेत, नियम, निर्देश, आदेश।

अनुद्विग्नत्व (वि०) अक्षोभ, क्षुब्ध नहीं होने वाला। (जयो० वृ० १/४९) ०प्रशान्त, ०सहनशील।

अनुद्दिष्ट (वि०) संयम विधि का साधक गुण, उद्दिष्ट त्याग। अनुदिष्ट आहार, अपने लिए बनाए गए भोजन का त्यागी। (सुद० वृ० १३२) (वीरो० १८/२५)

अनुद्दिष्टं चरेद्भुक्तिं यावन्मुक्तिं न सम्भवेत्।
स्वाचारसिद्धये यस्य, न चित्तं लोकवर्त्मनि।। (सुद० वृ० १३२)

अनुद्धत (वि०) अहंकार शून्य, मार्दव युक्त।

अनुद्भट (वि०) विनीत, सौम्य।

अनद्रुत (वि०) [अनु+द्रु+क्त] अनुगत, पीछा किया गया।

अनुधाव (अक०) अनुसरण करना, पीछे जाना। (जयो० १/४४)

अनुधावनं (नपुं०) अनुसरण, [अनु+धाव्+ल्युट्] पीछे जाना, भागना। (जयो० १/४४)

अनुध्या (सक०) [अनु+ध्या] विचार करना, मनन करना, चिन्तन करना, स्मरण करना। निरीहत्वमनुध्यायेद्यथाशक्त्यर्तिहानये। (सुद० १२५)

अनुध्यानं (नपुं०) [अनु+ध्या+ल्युट्] विचार, चिन्तन, मनन, स्मरण।

अनुनयः (पुं०) [अनु+नी+अच्] ०वाक्य परम्परा, ०शालीनता, ०शिष्टता, ०नम्रनिवेदन, ०आमन्त्रण, ०प्रार्थना, ०विनय, ०पूजन। नित्यमित्यनुनयप्रयच्छने। (जयो० २/१९६) पुनरनुनयोऽपि विनयोऽपि। (जयो० वृ० ४/१८) तनयां विनयाश्रयां ममाथानुनयाख्यानकरीति रीतिः-गाथा। (जयो० १२/५०) अननुयं नयानुसारं देशकालानुसारो वचनपद्धतिप्रकारो नयस्तुदनुसारम्। (जयो० वृ० १७/९०)

अनुनयन् (वि०) अनुकूलां कुर्वन्निव, अनुकूल करते हुए। (जयो० ३/१००)

अनुवादः (पुं०) [अनु+वद्+घञ्] ०प्रतिपादन, ०प्रति कथन, ०अनुकथन, ०प्रतिध्वनि, ०कोलाहल, शब्द। ०अर्थ प्रतिपादन, ०शब्दार्थ का विवेचन, ०भाषान्तरण।

अनुनायक (वि०) [अनु+नी+ण्वुल] विनम्र, सुशील, विनीत।

अनुनायिक (वि०) [अनु+नय+ठक्] अनुचरिक, अनुसारिक, अनुचारी।

अनुनासिक (वि०) [अनु+नासा+ठ] नासिका से उच्चरित, नासिक्य।

अनुनिर्देश (पुं०) [अनु+निर्+दिश्+घञ्] पूर्ववर्ती क्रम से वर्णन, क्रमानुसार वर्णन।

अनुनीत (वि०) साधित, सिद्ध किया गया। स्वीयन-भोगजनुष्वनुनीता विद्या अद्यागत्य विनीता। (जयो० २३/७९)

अनुनीत (वि०) समीपागत, समीपप्राप्त। जयस्य मुखचन्द्रमनुनीतः। (जयो० ६/२२) मुखमेव चन्द्र आहलादकत्वात्। तम्नुसमीपं नीतः प्रापितो ननु। (जयो० ६/१२२)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अनुनीतिः (स्त्री०) अनुनय, प्रार्थना, शालीनता, शिष्टता, नम्रनिवेदन।

अनुनीविः (स्त्री०) कटिवस्त्र बन्धन, नाडा। नीविमनु समीपमनुनीवि। (जयो० १२/१७)

अनुपघातः (पुं०) उपघात का अभाव, क्षति का अभाव।

अनुपचर् (सक०) स्वागत करना, सम्मान करना, आदर करना। आगतानुपचचार विशेषमेष। (जयो० ५/६)

अनुपतनं (पुं०) [अनु+पत्+ल्युट्] ऊपर गिरना, एक के बाद एक गिरना, पीछा करना, अनुसरण करना, क्रमिक अनुसरण करना।

अनुपथ (वि०) मार्गानुसार अनुरसण करने वाला, राजपथ के साथ साथ।

अनुपद (वि०) कदम के साथ कदम, अनुसरण करता हुआ, गीत टेक, गायन गति, सम्मिलित गायन।

अनुपदवी (स्त्री०) मार्ग, पथ, सड़क।

अनुपदिन् (वि०) [अनुपद+णिनि] अनुसरण करने वाला, अनुगामी।

अनुपदीना (स्त्री०) उपानत, जूता, ऊँची एड़ियों का जूता।

अनुपधः (वि०) उपधा रहित, जिसके पूर्व कोई अक्षर न हो।

अनुपधि (वि०) छल रहित, कपट रहित।

अनुपन्यासः (पुं०) वर्णन न करना, प्रमाणाभाव, संदेह, अनिश्चितता, कथनाभाव।

अनुपम (वि०) अनन्यसदृशी, सर्वोत्तम, अतुलनीय।

अनुपमा एनां विधायानुपमां भविष्यत्। (जयो० ११/८७)

अनुपप्लुतः (पुं०) सहायक। (सम्य० ८४)

अनुपमता (वि०) सर्वोत्तमता, श्रेष्ठत्व, योग्यतम। साम्यमहिंसा स्याद्वादस्तु सर्वज्ञतेयमुत्तमवस्तु। अनुपम-तयाऽनुसन्धेयानि पुनरपि चत्वारीत्येतानि। (वीरो० १५/६३)

अनुपमत्व (वि०) ०अनुपमता, ०उत्कृष्टता, ०प्रशास्यता ०सर्वोत्तमता। (जयो० ३/६२) ०श्रेष्ठ भाव युक्त।

अनुपमित (वि०) [नञ्+उप+मा+क्त] अतुलनीय, सर्वोत्तमता, बेजोड़।

अनुपमेय (वि०) अतुलनीय, अनुपमता, सर्वोत्तमता, श्रेष्ठता।

अनुपलम्भः (पुं०) किसी एक के अभाव स्वरूप जो अन्य की उपलब्धि होती है, वह अनुलंभ है। जैसे क्षणक्षण एकान्त सम्भव नहीं है, क्योंकि उसका अनुपलंभ है।

अनुपवासः (पुं०) आहार परित्याग, चतुर्विधाहारत्यागः, ईषदुपवासोऽनुपवास इति।

अनुपलंभः (पुं०) [नञ्+उप+लभ्+णिच्+घञ्] अप्रत्यक्ष होना, बुद्धि अभाव, ज्ञान हीन। अन्योपलभोऽनुपलंभः प्रमाण।

अनुपवीतिन् (वि०) यज्ञोपवतीत रहित।

अनुपशयः (पुं०) भड़काना।

अनुपसंहारिन् (वि०) हेत्वाभास का एक भेद, जिसके अन्तर्गत पक्ष सम्बन्धी सभी ज्ञात बात आ जाती है और उदाहरण द्वारा विधेयात्मक या निषेधात्मक, कार्य-कारण सिद्धान्त के नियम का समर्थन नहीं हो पाता।

अनुपसर्गः (पुं०) उपसर्ग का अभाव। निपातादि का अभाव।

अनुपस्थानं (नपुं०) [अनुप+स्था+ल्युट्] ०अभाव, ०विहीन, ०अनुपस्थिति, ०अप्रस्तुत, ०उपमा रहित स्थान, ०स्थिति का न होना।

अनुपस्थित (वि०) [नञ्+उप+स्था+क्त] अप्रस्तुत, उपस्थित न होना, सम्मुख न होना।

अनुपहत (वि०) अप्रयुक्त, कोरा, अक्षत, नया (कपड़ा)

अनुपातः (पुं०) अनुपतन, ऊपर पड़ना।

अनुपातक (वि०) [अनु+पत्+णिच्+ण्वुल्] अपराधी, घातक, अति आरम्भी, समारम्भी, हिंसक।

अनुपानं (नपुं०) [अनु+पा+ल्युट्] पश्चात् पान, औषधि के बाद पीने योग्य वस्तु का ग्रहण।

अनुपुरुषः (पुं०) अनुयायी, अनुचर, सहगामी, सहचर।

अनुपूर्व (वि०) क्रमशः, नियमित, क्रमबद्ध, मान रखने वाला।

अनुपूर्वशः (क्रि०वि०) क्रमागत रीति, क्रमानुसार।

अनुपूर्वेण (क्रि०वि०) क्रमागत रीति, अनुक्रम से।

अनुपेत (वि०) विरहित, ०विहीन, ०अभावजन्य।

अनुप्रज्ञानं (नपुं०) [अनु+प्र+ज्ञा+ल्युट्] अनुसारण, अनुगमन।

अनुप्रपातम् (अव्य०) क्रमागत, रीतिपूर्वक।

अनुप्रयोगः (पुं०) अतिरिक्त, उपयोग, आवृत्ति।

अनुप्रविधानं (नपुं०) [अनु+प्र+विधान+ल्युट्] अनुकूलकार्य, योग्य कार्य। मातुर्मनोरथमनुप्रविधानरक्षा। (वीरो० ५/४२) इच्छानुकूल कार्यचरणनिपुणा। (वीरो० वृ० ५/४२)

अनुप्रवेशः (पुं०) [अनु+प्र+विश्+घञ्] प्रविष्ट, अनुगमन, अन्दर जाना, अन्तः समावेश।

अनुप्रश्नः (पुं०) प्रश्न के बाद प्रश्न, एक प्रश्न पूछे जाने के बाद दूसरा प्रश्न।

अनुप्रसक्तिः (स्त्री०) [अनु+प्र+संज्+क्तिन्] प्राप्त करना, पहुंचना।

अनुप्रसङ्ग (वि०) अति संलग्नता, अन्तः संपर्क। विशेष एकाग्रता।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अनुप्राप्त (वि०) बार-बार अंङ्गीकृत। (सम्य० १४०)

अनुप्रास: (पुं०) अनुप्रास नामक अलङ्कार।

अनुप्रासालङ्कार

अनुप्रासोऽलङ्कार अलङ्कार, एक समान ध्वनियों या वर्णों की पुनरावृत्ति। वर्णसाम्यमनुप्रास:। (काव्यप्रकाश) तुल्य-श्रुत्यक्षरावृत्तिरनुप्रास: स्फुरद्गुणे: (वाग्भट्टालंकार ४/१७) समान सुनाई देने वाले अक्षरों की बार-बार आवृत्ति और माधुर्यादि गुणों की स्फुरणा जहां होती है। (जयो० ३/१११, ५/६, ५/२६, ५/३३ ८/६५, १४/२९, २२/७०, २३/६७ न भाविनो दिवसा इव शाश्वता मितिरर्निशयोरिह सम्मता। स्फुटमनाथ इतो नरनाथतां प्रमुदितो सदितं पुनरीक्ष्यपताम्।। (जयो० २५/६)

विरम विरमत: सुरमेऽमुकत:।

सुकतत्त्वमत्र न हि जातु। (जयो० २४/१४०)

अनुप्रासोपमा (स्त्री०) अनुप्रासोपमालङ्कार:। (जयो० ३/३६) विचक्षणेक्षणाक्षुण्णं वृत्तमेतद्गतं मतम्। क्षणदं क्षणमाध्यानात् कर्णालङ्करणं कुरु।। (जयो० ३/३८)

अनुप्रेक्षा (स्त्री०) ०भावना, ०बार-बार चिन्तन, ०अनुचिन्तन। (जयो० १८/८) ०स्वभावानुचिन्तनम्, तत्त्वानुचिन्तनम्। अनु- पुन: पुन: प्रेक्षणं-चिन्तनं अनुप्रेक्षा। अनुप्रेक्षा ग्रन्थार्थ योरेव मनसाऽभ्यास:। ०अभ्यास स्वाध्याय, ०तत्त्वार्थ चिन्तन आदि का नाम भी अनुप्रेक्षा है।

अनुप्रेक्षार्थ (वि०) प्रेक्षा/चिन्तनार्थ। (सम्य० ११६)

अनुबद्ध (वि०) [अनु+बन्ध्+क्त] संलग्न, तत्पर, संबद्ध, बंधा हुआ, सदान्ततरात्मन्यनुबद्ध शोक: (समु० १/३३) एवं जिनाज्ञामनुबद्धबुद्धे र्व्यापायत: पूर्णतया ऽऽप्तशुद्धे:। (भक्ति सं० ९.२८)

अनुबन्ध: (पुं०) [अनु+बन्ध्+घञ्] बन्धन, गठबन्धन, सम्बन्ध, प्रणय। आसक्ति, शृंखला, श्रेणी, नियोजन, प्रयोजन, उपक्रम, बाधा। (जयो० १२/१०) अनुबन्ध: कार्यविषय: प्रवाहपीणम:।

अनुबन्धनं (नपुं०) प्रत्यनुवर्तन, सम्बन्ध, नियोजन, उपक्रम, गठबन्धन। (जयो० २५/७०) अनयनो नितरां निजगन्धवे व्रजति हा विपदामनुबन्धने। (जयो० २५/७०)

विपत्तीनामनुबन्धने प्रत्यनुवर्तने (२५/७०)

अनुबन्धमूल्यं (नपुं०) प्रणयबन्धन का परिणाम, अनुबन्ध: प्रणयस्तर-परिणामश्च मूल्यं यस्या: सा ताम्। (जयो० ११/१)

अनुबन्धवशग (वि०) परमप्रेमवश, प्रणय-बन्धनवश, अनुराग युक्त, प्रणयवशीकृत। (जयो० १२/१०)

अनुबन्धिन् (वि०) [अनुबन्ध+गिनि] सम्बद्ध, सलम, संयुक्त, क्रमबद्ध, जोड़ने वाला। [स्वमिति सम्वदतोऽङ्गमिदं] गलन्तदनुबन्धि च बन्धुतया दलम्। (समु० ७/१८) (सम्य १२२)

अनुबन्धय (वि०) [अनु+ बन्ध+व्यन्] प्रधान, प्रमुख।

अनुबलं पीछे की सेना।

अनुबाहु: (पुं०) निजबाहु, अपना हुआ। वागाह नदनुबाहु र्निजबाहु (जयो० ६/२७)

अनुबिम्बित (वि०) प्रतिफलित, प्रतिबिम्बित। हृदये जयस्य विमले। प्रतिष्ठिता चानुबिम्बिता। (जयो० ६/१२६)

अनुबोध (वि०) [अनु+बुध्+णिच्+घञ्] अनुचिन्तन, अनुशीलन, पुनर्विचार, प्रत्यास्मरण।

अनुबोधनं (नपुं०) [अनु+बुध्+ल्युट्] पुनर्स्मरण, प्रत्यास्मरण, अनुचिन्तन।

अनुभव: (पुं०) [अनु+भू+अप्] प्रत्यक्ष व्यक्तिगत अवलोकन, समझ, ज्ञान। वस्तु के यथार्थस्वरूप की उपलब्धि, पर पदार्थों में विरक्ति, आत्मस्वरूप में तल्लीनता और हेय-उपादेय का विवेक। सिद्धान्त की दृष्टि से इस शब्द कर अर्थ इस प्रकार किया जाता है। "यो विपाको सो अनुभव इत्युच्यते" जो कर्म विपाक है, वह अनुभव है। विप्पकोऽनुभव:। (स०सि०८/३) रस विशेष भी अनुभव है। अनुभव को अनुभाग भी कहते हैं। कर्मपुद्गल-सामर्थ्य-विशेषोऽनुभवो मत:। (ह०पु०) ५८/२१२)

अनुभवनीय (वि०) भोग्य, अनुभव करने योग्य। (जयो० वृ० ४/३०)

अनुभवित्व (वि०) अनुभावित, विचारशीलत्व। (सुद० ४/३) (जयो० वृ० २/७४)

अनुभाविन् देखो ऊपर।

अनुभाग: (पुं०) ०अनुभव, ०ज्ञान, ०प्रत्यक्ष, ०अवलोकन, ०उपलब्धि, ०तल्लीनता। ०शुभाशुभ रस का प्रादुर्भाव। (सम्य० ४६) अनुभाग: कर्मणां रसविशेष:। (मूला०वृ० ५/४७)

अनुभाग-बन्ध: (पुं०) शुभ-अशुभ कर्मों के परिणाम।

अनुभाग-मोक्ष: (पुं०) निर्जीर्ण अनुभाग, अपकर्षित, उत्कर्षित, संक्रामित या अध: स्थिति गलन के द्वारा निर्जीर्ण अनुभाव का नाम अनुभाग मोक्ष है।

अनुभावय् (अक०) अनुभव करना, प्रकट करना। [अनु+भू+णिच्] अन्तस्तले स्वामनुभावयन्तुस्तुरिं (वीरो० १४/१४) सदैवाऽनुभावन्त्यो जननीमुदे वा। (वीरो० ५/४१)

अनुभाव: (पुं०) [अनु+भू+णिच्+घञ्] ०प्रभाव, ०मर्यादा, ०बल, ०अधिकार। अन्तस्थ सम्यग्वलिनोऽनुभाव:। (सुद०

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

२/४३) गर्भस्थ अतिबलशाली पुत्र का प्रभाव। तपोऽनुभावं दधता तथापि। (सुद० वृ० ११८) तप के प्रभाव को धारण करने वाला। स्वप्नावलीयं भवतोऽनुभावात्। (सुद० २/३५) उक्त पंक्ति में **'अनुभाव'** शब्द कृपा का सूचक है।

अनुभावः (पुं०) अनुभव, अवलोकन, ज्ञान, समझ। (विपाकोऽनुभावः। जो जिस कर्म का शुभाशुभ विपाक है, वह अनुभाव है। कर्मविशेषानुभवनं अनुभावः।

अनुभावि (वि०) आगमी काल। (सुद० ३/२५)

अनुभावित (वि०) अभिषिक्त, अभिसिञ्चित, द्रवीभूत। (जयो० ९/५४) मुदुदिताश्रुन्जलैरनु भावितम्। (जयों ९/५४) यान्यश्रुजलानि तैरनुभावितं समभिषिक्त मित्याशयः। (जयो० वृ० ९/५४)

अनुभावित (वि०) प्रत्येक बात का विचार करना, अनुभव वाला, विचारशीलता। (जयो० २३/३४) त्यागिताऽनुभाविता। (जयो० २/७४)

अनुभाषणं (नपुं०) [अनु+भाष्+ल्युट्] क्रमानुसार उच्चारण। उच्चारित, प्रत्याख्यान सम्बन्धी अक्षर, पद, व्यञ्जन आदि जिस क्रम से वर्णित हैं, उसी क्रम के अनुसार उनका अनुवाद रूप से घोषशुद्ध उच्चारण।

अनुभू (सक०) [अनु+भू] अनुभव करना, ०जानना, ०समझना, चिन्तन करना। (सम्य० १०९) अगणिताश्चगुणा गणनीयतामनुभवन्ति भवन्ति भवान्तकाः। (जयो० १/९४) गुणं जनस्यानुभवन्ति सन्तः। (वीरो० १/१४) पर्यटन्तोऽमी सुखमनुभवन्तु। (जयो० वृ० ११/७४)

अनुभूत (वि०) अनुभव करने योग्य, चिन्तनीय। (सुद० ९४) अनुभूता शतशो मयाऽ हो। (सुद० ९४)

अनुभूतमत (वि०) अनुभवजन्य, चिन्तनीय विचार। (समु० २/२४) अनुभूतमतः समुत्थितं। (समु० २/२४)

अनुभूतत्व (वि०) बार-बार अनुचिन्तन करने वाला।

अनुभूतिः (स्त्री०) अनुभव, चिंतन। (सम्य० ८४)

अनुभूष्णु (वि०) अनुभवकर्ता, विचार करने वाला, परिशीलन वाला।

उपपीडनतोऽस्मि तन्वि भावादनुभूष्णुस्तवकाम्र-काम्रतां वा। (जयो० १२/१२७)

अनुभूष्णुरस्मि, अनुभवकर्ता भवामीत्युक्ते। (जयो० वृ० १२/१२७)

अनुभोगः (पुं०) [अनु+भुज्+घञ्] उपभोग, प्रयुक्त, प्रयोगजन्य।

अनुभ्रष्टः (वि०) भ्रष्ट हुआ, पतित हुआ। सिद्धान्त की दृष्टि से 'अनुभ्रष्ट' वह है जो सम्यग्दर्शन से च्युत है। दर्शनाद् भ्रष्ट एवानुभ्रष्ट इत्यभिधीयते। (वराङ्गचरितम् २६/९६)

अनुभ्रातृ (पुं०) छोटा भाई, अनुज।

अनुमत (वि०) [अनु+मन्+क्त] सम्मत, अनुज्ञात, मानित, सम्मानित, अनुज्ञप्त, इच्छित, अभिलषित, अभीप्सित, मान्य। (जयो० २२/८०) ०स्वयं न करोति, न च कारयति, किन्त्यवभ्युपैति यत्तदनुमननम् (भ०आ०टी०८१) ०अनुमतं अनुज्ञातम्। ०अन्यदप्यनुमतादुरीकुरु लोक एव खलु लोक संगुरुः। (जयो० २/९०) ०जो सज्जनों द्वारा **'सम्मत'** हो उसे स्वीकार करना चाहिए। तं खलु विशेष कायानुमतं। (जयो० २२/८०) ०नामानुमतं मानितम्। (जयो० वृ० २२/८०)

अनुमतं (नपुं०) अनुमोदन, अनुज्ञप्ति, स्वीकृति।

अनुमतिः (स्त्री०) [अनु+मन्+क्तिन्] स्वीकृति, अनुज्ञा, अनुमोदन, अनुमनन।

नैव लोकविपरीतमञ्चितु शुद्धमप्यनुमतिर्गृहीशितुः। (जयो० २/१५)

अनुमतिः स्वीकृतिः। (जयो० वृ० २/१५)

अनुमन् (अक०) [अनु+मन्] सम्मत होना, अनुज्ञात होना। नैवानुमन्यते धाष्ट्र्यात्समाजस्यानुशासनम्। (हित सं० वृ० ५) तमनुमन्तुमवाप्य चचाल सः। (जयो० २/१४२) यहां **'अनुमन्तुम्'** का अपराध करने/ आक्रमण करने के लिए भी है।

अनुमननं (नपुं०) [अनु+मन्+ल्युट्] स्वीकृति, सम्मति, अनुज्ञप्ति।

अनुमा (स्त्री०) अनुमति, स्वीकृति। (वीरो० २०/१७) दिए गए कारणों से अनुमान।

अनुमाता (वि०) स्वीकृति दाता (वीरो० ८/१७)

अनुमात्व (वि०) [अनु+मा+ल्युट्] अनुमान करने वाला। (वीरो० ३/६) ततोऽनुमात्वे प्रति चाद्भुतत्वं। (वीरो० ३/६)

अनुमानं (नपुं०) [अनु+मा+ल्युट्] न्यायशास्त्र का एक नियम, ०उपसंहार, ०सादृश, ०अटकल, ०अन्दाज। (जयो० ५/६०) ०अभिनिबोधस्य अनुमानस्य विसर्गः प्रवृत्तिः (जयो० वृ० ५/१७) ०साधन से साध्य के ज्ञान को अनुमान कहा जाता है। जैसे धूम को देखकर अग्नि का ज्ञान करना। ०यत्कृष्णवर्त्मत्वमृते प्रतापवह्निं सदाऽमुष्य जनोऽभ्यवाप। (वीरो० ३/६) परन्तु राजा जो कृष्णवर्त्मा/पापाचार से

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रहित था, फिर भी लोग 'कृष्णवर्त्मा' (काले मार्ग वाला धूम) के बिना ही इसके प्रताप रूप अग्नि का अनुमान करते थे। **कौतुकाशुगसुलास्य विधाने रङ्गभूमिरियमित्यनुमाने।** (जयो० ५/६०) यह सुलोचना 'पुष्पक्षायक' कामदेव के शोभन नृत्य की रङ्गभूमि है, रङ्गमंच है, इस प्रकार अनुमान लगाने पर वहां सूत्रधार महेन्द्रदत्त नामक कञ्चुकी ही कहा जाएगा। **'०साधात्साध्यविज्ञानमनुमानम्'** (परीक्षमुख ३/१४)

अनुमानाभासः (पुं०) पक्ष न होने पर पक्ष के समान प्रतीत होने वाले अनिष्ट, सिद्ध या प्रत्यक्षादिबाधित साध्य युक्त धर्मी से उत्पन्न होने वाले ज्ञान अनुमानाभास है।

अनुमानित (वि०) अनुमेय, अनुमान किया जाने वाला। अनुमानित दोष भी माना गया है।

अनुमानालङ्कारः (पुं०) प्रत्यक्षाल्लिङ्गतो यत्र, कालत्रितप्रयर्तिनः लिङ्गिनो भवति ज्ञानमनुमानं तदुच्यते। (महा० ४/१३७) जिस अलंकार में प्रत्यक्ष चिह्न या कारण से भूत भविष्यत् और वर्तमान से होने वाली सादृश्य वस्तु का बोध होता है। (जयो० ६/८०) जिसमें गुरु के अभिप्राय या उपाय से ज्ञात्व की आलोचना की जाती है।

आजिषु तत्करवलैर्हय-क्षुर-क्षोदितासु संपतितम्।
वंशान्मुक्तावबीजं पल्लवितोऽभूद्यशोद्रुरितः।। (जयो० ६/८०)

घोड़ों के खुरों से खोदी गई युद्धस्थल की भूमियों में इस राजा के करवालों द्वारा हाथियों के कुम्भस्थलों से मोती रूप बीज गिर पड़ा, इसी कारण यहां इस राजा का यशरूपी वृक्ष खड़ा हुआ पल्लवित हो रहा है।

अनुमान्य (वि०) समादरणीय, अनुमेय। 'मुनेः सदा न्यायपथानुमान्या' (जयो० २७/६१) ''अनुमानविषयाऽनुमेया भवति।'' (जयो० वृ० २७/६१)

अनुमितं (नपुं०) अनुमान। (जयो० १४/६४) अवश्यम्भावी (वीरो० १७/३)

अनुमितिः (स्त्री०) अनुमान ज्ञान। (वीरो० २०/१६) सा चेदसत्याऽनुमितिः कथम्। (वीरो० २०/१६) कार्य-कारण के अविनाभावी सम्बन्ध के स्मरण पूर्वक तो अनुमान ज्ञान उत्पन्न होता है। यदि ऐसा कहो तो अनुमान ज्ञान भी अवस्तु है/अप्रमाण रूप है।

अनुमिति-अलंकारः (पुं०) अनुमानालङ्कार (जयो० १४/६४)

निमज्जिताया जले जवेन नेत्रानुमितं मुखं सुखेन।
तदङ्ग राग-गन्ध-लुब्धेन सम्पतता रोलम्बकुलेन।।

(जयो० १४/६४) किसी स्त्री ने वेग से-पति को जताए बिना ही पानी में डूबकी लगा ली। उसके अङ्गराग की सुगन्ध के लोभी भ्रमरों का समूह वहां मंडराने लगा। इस भ्रमर समूह के पति को अनायास ही अनुमान हो गया कि यह डूबी है। अतः यहां अनुमिति अलंकार है।

नेत्रा स्वामिनाऽनुमितं ज्ञातमित्यनुमितिरलंकार। (जयो० वृ० १४/६४)

अनुमेय (वि०) ०अनुमान्य ०समादरणीय, ०दर्शनीय। (जयो० १/३२) (जयो० २७/६१) लास्यं रसा सम्यजनानुमेयम्। (जयो० १/३२)

अनुमुद् (सक०) समर्थन करना, ०स्वीकृत करना ०अनुमोदन करना। समायाता जिनस्यास्य प्रस्तावमनुमोदितुम्। (वीरो० १०/२३)

अनुमोदनं (नपुं०) [अनु+मुद्+ल्युट्] सहमति, स्वीकृति, अनुमोदना, समर्थन, सम्मति।

अनुमोदना (स्त्री०) प्रशंसा, गुणगान। सिद्धान्त में अधः कर्मदूषित भोजन करने वाले साधु की प्रशंसा करना भी अनुमोदना है।

अनुया (अक०) [अनु+या] अनुभव करना, प्राप्त होना। (सम्य० २१) जानना, समझना, अनुचिन्तन करना। अनुययौ (जयो० १९/४) अनुयान्ति (मुक्ति ५) वर्णभावमनुयान्तु सुतायामित्यभूत। (जयो० ५/३५) अनुयान्तु प्राप्नुवन्तु।

अनुयाजः (पुं०) [अनु+यज्+घञ्] अनुष्ठान करना, यज्ञ करना, अनुयोग।

अनुयातृ (पुं०) [अनु+या+तृच्] अनुगामी अनुगमनशील।

अनुयात्रं (नपुं०) [अनु+यातृ+अण्] परिजन, अनुचरवर्ग, अनुसरण।

अनुयानं (नपुं०) अनुसरण, अनुगमन।

अनुयायिन् (वि०) [अनु+या+णिनि] अनुगामी, सेवक, अनुवर्ती, अनुचर। (वीरो० २२/१०) (दयो० ३१)

अनुयायिनी (वि०) अनुसरणकर्त्री। (जयो० २२/८२)

अनुयुक्तः (स्त्री०) ०निरंकुश, ०निराधार। (सुद० १०३) (सम्य १००,) यदृच्छयाऽनुयुक्तापि न जातु फलितीं नरि। (सुद० १०३)

अनुयुक्तिः (स्त्री०) आसक्ति, अनुरक्त। त्वच्छासनैकाशनकानुयुक्ती। (जयो० २६/१००)

अनुयोक्तृ (पुं०) [अनु+युज+तृच्] ०परीक्षक, ०जिज्ञासु, ०अध्यापक, ०नियोक्ता, ०निर्देशक।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अनुयोगः (पुं०) उपयोग, उद्देश्य, परीक्षा, ०अनुयोजन, ०संलग्नता, ०संयोग, ०उदय। (दयो० १०४, समु० ६/२३, सुद० १२०, जयो० २/६५) भुक्त्यन्तर तज्जरणार्थमम्भोऽनुयोग आस्तामध एव किम्भो। (सुद० १२०) अम्भोऽनुयोग-जल का उपयोग या जल का पीना यह अर्थ है। भवतामनुयोगेन तृणवत्सम्मतोऽप्यहम्। (दयो० १०४) भवतामनुयोगे-आपके सहारे से, या आश्रय से यह अर्थ कवि ने लिया है। सापीह सौभाग्यगुणानुयोगादनेन सार्द्धं सुकृतोपयोगा। (समु० ६/२३) उक्त पंक्ति में 'सौभाग्यगुणा योगादनेन' में 'अनुयोग' का अर्थ संयोग है। जयोदय महाकाव्य के बीसवें सर्ग में प्रयुक्त 'अनुयोग' का अर्थ सम्बन्ध या संयोग भी है। यथा-दुग्धस्य धारेव किलाल्पमूल्यस्तत्रानुयोगो। मम तक्रतुल्यः। (जयो० २०/८४) तत्र ममानुयोगः सम्बन्धस्तक्रतुल्योऽल्पमूल्य एव यथा तक्रसंयोगे दुग्धस्य दधिपरिणतिर्भूत्वा नवनीतसम्पत्तिकर्त्री स्वयमेव भवति।

अनुयोगः (पुं०) सूत्र की अनुकूल योजना। अनुयोजनमनुयोगः (जयो० वृ० १/६) 'अनु' का अर्थ पश्चात् भाव का स्तोक है। अर्थात् स्तोक सूत्र के साथ जो 'योग' होता है, वह 'अनुयोग' है। यह 'प्रथम-करण-चरण-द्रव्यानुयोग रूपेण। १. प्रथमनुयोग, २. करणानुयोग, ३. चरणानुयोग और ४. द्रव्यानुयोग से चार प्रकार का है। 'जयोदय' के प्रथमसर्ग में अनुयोग चतुष्टय पर इस प्रकार प्रकाश डाला है-"प्रकर्षेण योगो मनोनिग्रहाख्यः प्रयोगः, करणानां स्पर्शनरसनादीनामिन्द्रियाणामनुयोगः संसर्गस्ते समेत्य, हे सुदृढोपयोग श्रावक! अनुयोग चतुष्टये प्रथम-करण-चरण-द्रव्योपनामके शास्त्रचतुष्के नवता नवीनभावो बभूव। (जयो० वृ० १/३४) इस प्रथम सर्ग के चौंतीसवें श्लोक में 'करणानुयोग' का कथन मात्र है, परन्तु कवि ने चारों 'अनुयोगों' का कथन करके 'करणानुयोग' की विस्तृत व्याख्या की है। करणानुयोग नाम गणितशास्त्रम्। (जयो० वृ० १/३४) प्रथमसर्ग के इक्कीस एवं बाइसवें श्लोक में भी अनुयोग पर प्रकाश डाला है। द्वितीयसर्ग में प्रत्येक अनुयोग के महत्त्व पर विचार किया गया है।

अनुयोग-चतुष्टय (वि०) चार अनुयोग सम्बन्धी प्रथम-करण-चरण-द्रव्यानुयोगरूपेण।

अनुयोगद्वारः (पुं०) अनयोगद्वार (जयो० १/३४) ग्रन्थ (जयो० १/६)

अनुयोगवर्तिनी (वि०) ०चक्रवर्तिनी, ०चक्राकार प्रवृत्ति। (जयो० ५/९२) ०आज्ञानुसार इधर उधर जाती।

अनुयोग-मात्रता (वि०) ग्रन्थकर्तुरुद्देश्य भाव। (जयो० २/४२)

अनुयोग-समयः (पुं०) अनुयोग शास्त्र। निमित्तकमुखेषु शास्त्रेषु, अनुयोगसमयेषु। (जयो० वृ० २/६४)

अनुयोगिनी (वि०) अङ्ग संगत, अङ्ग से लिपटी हुई। (जयो० १०/११५) अङ्गेनानुयोगोऽस्या अस्तीत्यनुयोगिनी। (जयो० १०/११५)

अनुयोजनं (नपुं०) [अनु+युज्+ल्युट्] प्रवर्तन, प्रश्न, पृच्छा। एतकैर्निजहितेऽनुयोजनमस्ति। (जयो० २/५०) आत्मकल्याणे योजनं प्रवर्तनमस्ति। (जयो० वृ० २/६०) अनुयोग का भी अनुयोजन नाम है। अनुयोजनमनुयोगः (जयो० वृ० १/६)

अनुयोजनं (नपुं०) बिना प्रयोजन, मनोमालिन्य, निरादर। (जयो० ४/२७) अर्ककीर्तिरनुयोजनमात्रगता वयमनर्थतयाऽत्र। (जयो० ४/२७)

अनुयोज्य (वि०) [अनु+युज्+ण्यत्] सेवक, अनुचर, सहभागी।

अनुरक्त (वि०) [अनु+रज्+क्त] रत, अनुराग, प्रेम, आसक्ति, निष्ठावान्, संतुष्ट, प्रसन्न। (जयो० वृ० ३/८८,

अनुरक्ति (स्त्री०) [अनु+रंज्+क्तिन्] अनुराग, प्रेम, आसक्ति। (जयो० ४/१५) छाययाऽभिददतीत्यनुरक्तिम्।

अनुरञ्ज् (सक०) [अनु+रंज्] प्रसन्न करना, अनुराग करना, संतुष्ट करना। शरीरर्मन तादृशं हन्त यत्रानुरज्यते। (वीरो० १६/९)

अनुरञ्जक (वि०) प्रसन्न करने वाला, संतुष्ट करने वाला, अनुराग करने वाला।

अनुरञ्जनं (नपुं०) [अनु+रंज+ल्युट्] अनुराग करने वाला, संतुष्ट करने वाला, आनन्दित करने वाला। (जयो० २५/१५) भुवि जनाभ्यनुरञ्जन तत्परः भवति वानर इत्यथवा नरः। (जयो० २५/१५)

अनुरञ्जित (वि०) [अनु+रञ्ज्+क्तिन्] ०गुणानुरागी, ०प्रशंसनीय, ०अनुरागिणी। ०रंगे हुए। पादद्वयाग्रे नखलाभिधानोऽनुरञ्जितः। (जयो० ११/१४)

अनुरञ्जिनी (वि०) ०गुणानुरागी, ०प्रशंसनीय, ०अनुरागयुक्त, ०रंगे हुए। गृहस्थस्य समा भाति, समन्तादनुरञ्जिनी। (हित संपा०७)

अनुरज्य (वि०) अनुरक्त, अनुराग युक्त, संतुष्ट। (जयो० २७/३६) सुद० ४/११, (अनुरज्यते सम्य, २४) घने वने ब्रह्मधनेऽनुरज्य।

अनुरणनं (नपुं०) [अनु+रण्+ल्युट्] ०अनुरूप लगना, ०प्रतिध्वनि, ०नुपूरध्वनि, ०घुंघरू प्रतिशब्द।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अनुरतिः (स्त्री०) [अनु+रम्+क्तिन्] प्रेम, ०सानुकूलवृत्ति, ०आसक्ति। (जयो० २३/६८) रताद विरक्ताप्युनरतिमापालतं जगतश्छाया। (जयो० २३/६८)

अनुरथ्या (स्त्री०) पगडंडी, उपमार्ग।

अनुरसः (पुं०) प्रतिध्वनि, गुंजन।

अनुरहस (वि०) गुप्त, एकान्तप्रिय, शान्त।

अनुरागः (पुं०) [अनु+रंज्+घञ्] प्रेम, स्नेह। (वीरो० २२/५१)

अनुरागकः (पुं०) रति ०आसक्ति, ०अनुराग, ०भक्ति, ०निष्ठा, ०श्रद्धा। (जयो० १/४०)

अनुराग-करणं (नपुं०) अनुराग का कारण, अनुराग करना, आसक्ति रखना। वस्तुत्वेन ततोऽनुरागकरणं (मुनि०१७)

अनुरागधारिणी (वि०) अनुराग धारण करने वाली, स्नेहवती। तव सुदृगनुकरिण्यां प्रान्तेष्वनुरागधारिण्याम्। (जयो० २०/२१)

अनुरागसम्बर्द्धन् (वि०) अनुराग बढ़ाने वाला (वीरो० २१/१९)

अनुरागार्थ (वि०) ०प्रीत्यार्थ, ०स्नेहार्थ। लालिमा यत्रानुरागार्थमुपैति चेतो। (वीरो० १/१३)

अनुरागिन् (वि०) अनुरागी, स्नेही।

अनुरात्रं (क्रि०वि०) (अव्य०) प्रतिरात्रि, प्रत्येक रात्रि।

अनुराधा (स्त्री०) अनुराधा नक्षत्र, २७ नक्षत्रों में सत्तरहवां नक्षत्र।

अनुरुः (पुं०) अ-पद, पैर का अभाव। सूतोऽपदो येन रथाङ्ग-मेकं। (जयो० १/११)

अनुरूध (अक०) आश्रय लेना, विचार करना, इच्छापूर्ति करना। मूलसूत्रमनुरुद्धय नृत्यतः। (जयो० २/२९)

अनुरूप (वि०) तुल्य रूप, सदृश, एक समान। भूपेऽमुष्मिञ्छ्रिया पावनयाऽनुरूपे। (सुद० १/२९), (जयो० १/६४) अहो किलाश्लेषि मनोरमायां त्वयाऽनुरूपेण मनो रमायाम्।

अनुरूपता (क्रि०वि०) समनुरूपता, सादृश्यता, अनुकूलता। (दयो० १००) भार्यायामनुरूपताऽऽपि। (दयो० १००)

अनुरूसादित (वि०) जघन स्थल। तावदनुरूसादितः सुभगाद्। (सुद० १००)

अनुरोधः (पुं०) [अनु+रुध्+घञ्] ०आग्रह, ०निवेदन, ०प्रार्थना, ०याचना, (सम्य० १५६) ०आराधना, ०विनय, ०इच्छा, ०विचार।

अनुरोधनं (नपुं०) निवेदन, विनय, प्रार्थना।

अनुरोधिन् (वि०) [अनु+रुध्+णिनि] प्रार्थना करने वाला, विनम्रशील।

अनुलग्न (वि०) अन्तर, लगी हुई, संलग्न। (समु० २/२८, जयो० २१/७५)

अनुलापः (पुं०) [अनु+लप्+घञ्] आवृत्ति, पुनरुक्ति।

अनुलिङ्ग (वि०) अनुमान। (जयो० ६/१००)

अनुलेपः (पुं०) [अनु+लिप्+घञ्] उपटन, मर्दन।

अनुलोम (वि०) नियमित, स्वाभाविक, क्रमानुसार, अनुकूल। अनुलोमं मनोहारी। अजानुलोमस्थितिरिष्टवस्तु। (जयो० ११/८२) उक्त पंक्ति में 'अनुलोम' का अर्थ निर्लोम, रोम रहित है। जयकुमार की दृष्टि के सामने सुलोचना निर्लोम जङ्घाओं से युक्त है।

अनुलोमिन् (वि०) निर्लोमला रहित, नियमित (सम्य० १८)

अनुल्लङ्घ्य (वि०) अतिक्रम्य, आगे ले जाते हुए। अखिलानुल्लङ्घ्य जनान् सुलोचना। (जयो० ६/१०१)

अनुल्वण (वि०) बहुत गम, अधिक नहीं।

अनुवंशः (पुं०) वंशक्रम, वंशतालिका।

अनुवक्र (वि०) अत्यन्त कुटिल, तिरछा, अधिक तिर्यग।

अनुवचनं (नपुं०) आवृत्ति, पाठ, स्वाध्याय।

अनुवर्त् (अक०) [अनु+वृत्] पालन करना, अनुकरण करना। छायेव तं साऽप्यनुवर्तमाना। (सुद० प०११५) छाया की तरह अनुकरण करती हुई। पित्रोरनुज्ञामनुवर्तमाना। (समु० ६/१४)

अनुवर्तनं (नपुं०) [अनु+वृत्+ल्युट्] ०अनुगमन, ०अनुरूपता, ०स्वीकृति, ०आज्ञानुशीलता, ०प्रसन्न करना, ०संतुष्ट करना।

अनुवर्तिन् (वि०) [अनु+वृत्+णिचि] अनुगामी, आज्ञाकारी, अनुकूल, अनुरूप।

अनुवर्तिनी (वि०) अनुकूलवृत्ति, अनुगामिनी, आज्ञाकारिणी। (जयो० वृ० १२/९२) नानुवर्तिनी रवौ प्रतियाते। (जयो० ५/२५) सूर्येऽनुवर्तिनि सानुकूलवृत्ति। (जयो० वृ० ५/२५)

अनुवद् (अक०) ०कहना, ०भाषण करना, ०सुनना (वृत्तं त्वनुवदन् २/१४३) ०प्रतिपादन करना, ०समझना, ०अनुमोदन करना। ध्यानं तदेवानुवदन्ति सन्तः। (समु० ८/३४) तद्दानमप्यनुवदामि पापकृत्। (जयो० २/१०३)

अनुवदता (वि०) अनुमोदन करने वाले, समर्थन करने वाले, प्रशंसक, अनुवादक। आराम-रामणीयकमनुवदताऽदर्शि हर्षिताङ्गेन। (जयो० १/९०)

अनुवश (वि०) आज्ञाकारी, अनुगामी।

अनुवाकः (पुं०) [अनु+वच्+घञ्] ०आवृत्ति करना, ०स्वाध्याय करना, ०पाठ करना, ०याद करना।

अनुवाचनं (नपुं०) [अनु+वच्+णिच्+ल्युट्] सस्वर पाठ करना, अध्यापन, शिक्षण।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अनुवादः (पुं०) [अनु+वद्+घञ्] समर्थन, प्रातिनिध्य, व्याख्या, उदाहरण, दृष्टान्त, प्ररूपणा, निरूपणा। ढक्कानिंनादस्तनितानुवादः (जयो० ८/६७) उक्त पंक्ति में 'अनुवाद' का अर्थ 'प्रातिनिध्य' है, प्रतिध्वनि भी इसका अर्थ है। भवताद्भवतां प्रसन्नपाद-परिणेत्रीति वरं ममानुवादः। (जयो० १२/१६) उक्त पंक्ति में 'अनुवाद' का अर्थ समर्थन है। दृढ़ संकल्प भी इसका अर्थ है।

अनुवादक (वि०) [अनु+वद्+ण्वुक्] व्याख्याकार, वृत्तिकार, अनुवाद करने वाला।

अनुवादिन् (वि०) [अनु+वद्+णिनि] अनुवादक, व्याख्याकार विवेचनकर्ता।

अनुवाद्य (वि०) [अनु+वद्+णिच्+यत्] आख्येय, कथित, प्रतिपाद्य।

अनुवासः (पुं०) सुगन्ध युक्त, सुरभि सम्पन्न, सुगन्धित बनाना। (जयो० १३/१९)

अनुवासना (स्त्री०) सुगन्धदशा, सुगन्ध रूप वासना। (जयो० १३/१९)

अनुवासित (वि०) सुवासित, सुगन्धित किया हुआ, धूपित।

अनुवित्तिः (वि०) [अनु+विंद्+क्तिन्] निष्कर्ष, प्राप्ति।

अनुविध् (सक०) जानना, समझना। तत्किमङ्गमिह नानुविधत्ते। (जयो० ४/३४) नानुविधत्ते नानुजानाति। (जयो० वृ० ४/३४)

अनुबिद्ध (वि०) [अनु+व्यध्+क्त] ०आहत किया, ०घायल किया, ०भेदा गया, ०छेदित, ०मिश्रित, ०व्याप्त, ०विद्ध, ०पूर्ण, फैला हुआ, ०प्रसरित। कामशरैरनुविद्धान, सुगहराम्। (जयो० ६/४४)

अनुविधानं (नपुं०) [अनु+वि+धा+ल्युट्] आज्ञाकारिता, आज्ञाशीलता।

अनुविधायिन् (वि०) आज्ञाकारी, अनुगामी।

अनुविनाशः (वि०) [अनु+वि+नश्+घञ्] पश्चात् नष्ट होना।

अनुविंद् (सक०) [अनु+विन्द्] ०लेना, ०देखना, ०धारण करना वृत्तभावमनुविन्दति नित्यम्। (जयो० ५/४६) ०सदैव वृत्तभाव को धारण करता है। अनुविन्दति सुन्दरे नवीनां दर- रूपोच्चकुचामितः प्रवीणा। (जयो० १२/११४) कामपि वधूटीमनुविन्दति, पश्यति सति। (जयो० ४२/११४) उक्त पंक्ति में 'अनुविंद्' का अर्थ ०देखना, ०अवलोकन करना भी है। तत्परस्य विधिनाभ्यनुविंदन्। (समु० ५/१२) उक्त पंक्ति में 'अनुविंद्' का अर्थ ०प्रतिकार करना भी है।

अनुवृत्त (वि०) [अनु+वृत्+क्त] आज्ञाकारी, अनुगामी, प्रतिगामी। अनुकूल। (वीरो० १७/८)

अनुवृत्तबुद्धिः (वि०) अनुकूल आचरण। (वीरो० १७/८)

अनुवृत्तिः (स्त्री०) [अनु+वृत्+क्तिन्] आज्ञाकारिता, अनुरूपता, अनुगामिता, अनुकूलाचरणकारिणी। (जयो० २२/२७) 'ते चानुवृत्ते अनुकूलाचरणकारिण्यौ' 'यथा राजा तथा प्रजा' इत्यादि सूक्ते, अनुवृत्तेः वर्तुलाकारे। (जयो० २२/२७) उक्त स्थान पर 'अनुवृत्ति' के दो अर्थ हैं। अनुकूलचारिणी और वर्तुलाकार।

अनुविस्मय (वि०) अति विस्मय। (सुद० १२३)

अनुबंध (अक०) घुनना, खराब होना। (जयो० वृ० २/७७)

अनुशतं (नपुं०) सौ के साथ, सतसंख्या युक्त।

अनुशतिक (वि०) सौ रुपये सहित।

अनुशयः (पुं०) [अनु+श्री+अच्] रंज, खेद, पश्चात्ताप, संताप।

अनुशयान (वि०) [अनु+शी+शानच्] खेद प्रकट करता हुआ, दुःख व्यक्त करता हुआ।

अनुशयिन् (वि०) [अनुशय+णिनि] अनुरक्त, श्रद्धालु, आस्थावान, पश्चात्ताप करने वाला।

अनुशयक मूल्यम् (नपुं०) एक रूपता का मूल्य (वीरो० १७/२०)

अनुशरः (पु०) [अनु+शृ+अच्] राक्षस, असुर।

अनुशासक (वि०) [अनु+शास्+ण्वुण्] शासक, निर्देशक, शिक्षण, प्रशिक्षक, प्रशासक, नियन्त्रक।

अनुशासनं (नपुं०) [अनु+शास्+ल्युट्] ०प्रशासन, ०आत्मनियन्त्रण ०प्रोत्साहन, ०आदेश, ०नियामक, ०नीतिज्ञ, ०पितुः प्रसाद, ०विधिकर्ता। (हित०स००५) (जयो० वृ० १/६७) नैवानुमन्यते धाष्ट्यात्समाजस्यानुशासनम्।

अनुशिक्षिन् (वि०) [अनु+शिक्ष्+णिनि] क्रियाशील, सीखने वाला।

अनुशिष्टिः (स्त्री०) शिक्षण, अध्यापन। सूत्रानुसारेण शिक्षादानम्, आज्ञा, आदेश। अनुशासनं शिक्षणं निर्यापकाचार्यस्य। (भ०आ०७०)

अनुशोकः (पुं०) [अनु+शुच्+घञ्] पश्चात्ताप, खेद, संताप।

अनुश्रेणिः (स्त्री०) अनुक्रम से अवस्थित। अनुशब्दस्य आनुपूर्व्येण वृत्तिः श्रेणेरानुपूर्व्येणानुश्रेणीति। (स०सि०२/२६)

अनुश्रोत (पुं०) अतिशय बुद्धिधारक।

अनुषक्त (वि०) [अनु+षंज्+क्त] संबद्ध, संलग्न, संसक्त।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अनुषङ्गः (पुं०) [अनु+षंज्+घञ्] प्रसंग, संलग्न, ०सबद्ध। अनुगृह्णन्ननुषङ्गसम्भवम्। (जयो० १३/४४) ०'प्रसङ्ग प्राप्त' अर्थ है। अशक्नुवन्तो युगपत्पतङ्गा इवाऽऽनिपेतर्दुहनेऽनुषङ्गात्। (जयो० ८/५२)

अनुषङ्गजन्मिन् (त्रि०) प्रसङ्ग प्राप्त/०संलग्न, तत्परता युक्त षडङ्घ्रिमाला ह्यनुषङ्गिजन्मिनाम्। (जयो० २४/८३) प्रसङ्गतः प्राप्तानामागसामपराधानाम्। (जयो० वृ० २४/८३)

अनुषङ्गत् (वि०) प्रसङ्गवश। (जयो० ७/५९) हृष्यदङ्गमनुसङ्गतोऽङ्गना।

अनुषङ्गिक (वि०) [अनुषङ्ग+ठ] सहवर्ती, निकटवर्ती।

अनुषङ्गिन् (वि०) [अनु+षंज्+णिनि] संबद्ध, अनुरक्त, संसक्त, व्यावहारिक।

अनुषङ्गजनीय (वि०) [अनु+षंज्+अनीय] पूर्ववाक्य से ग्राह्य, पूर्वानुसार प्राप्त।

अनुषेकः (पुं०) [अनु+सिच्+घञ्] अभिषेक, पुनः अभिषिञ्चित।

अनुष्टुभ् (स्त्री०) [अनु+स्तुभ+क्विप्] सरस्वती, भारती, वाणी।

अनुष्ठ (सक०) [अनु+स्था] स्मरण करना, याद करना। अनुजायताम नुर्ष्ठीयताम्। (जयो० वृ० २/३६)

अनुष्ठातुम् (अनु+स्था+तुमुन्) स्मरण करने योग्य। (वीरो० १७/४०)

अनुष्ठान (नुपं०) [अनु+स्था+ल्युट्] कार्यनिष्पादन, आज्ञापालन, समीपवास। अनु समीपे स्थानं निवासं। (जयो० २२/२४) अध्ययन, ०बोध, आचरण और प्रचार इन चार अनुष्ठान से युक्त जयकुमार थे। (जयो० वृ० १/१३)

अनुष्ठापनं (नपुं०) [अनु+स्था+णिच्+ल्युट्] कार्य कराना, कार्य निष्पादन।

अनुष्ठायिन् (वि०) कार्य कराने वाला। कार्यनिष्पन्नक, आज्ञापालक। सनाभयस्ते भय एव यज्ञानुष्ठापिनो वेदपदाऽऽशयज्ञाः। (वीरो० १४/३)

अनुष्ठेय (वि०) अनुष्ठानवाला, यज्ञकर्ता। (जयो० वृ० १/२२)

अनुष्ठेयता देखो–अनुष्ठेय।

अनुष्णा (वि०) शिशिर, शीतल, ठंडा, शिथिल, वीतराग, गर्मी रहित। (जयो० वृ० १२/६)

अनुष्णाच्छायः (पुं०) शिशिरच्छाय, शीतल छाया। (जयो० वृ० १२/६)

अनुष्यंदः (पुं०) [अनु+स्यन्द+घञ्] पिछला पहिया।

अनुसज (वि०) संलग्न, तत्पर। स्वगनन्दिगन्धनेऽनुसजत्। (जयो० वृ० ६/१२७)

अनुसज्ज (वि०) संलग्न हुआ, तत्पर हुआ। आकर्ण्य वर्णावनुसज्जकर्णा। (जयो० १/६५)

अनुसन्दधान (वि०) विश्लेषण करने वाला। (सुद० ४/१०)

अनुसन्ध् (सक०) [अनु+सम्+धा] अनुसन्धान करना, खोजना, अन्वेषण करना। (जयो० २/१५५)

अनुसन्धानं (नपुं०) [अनुसम्+धा+ल्युट्] अनुचिन्तन, विचार, विश्लेषण, पृच्छा, गवेषण, निरीक्षण, परीक्षण, क्रमबद्ध करना, खोज, तत्पर रहना। (सुद० १३२, दयो० ६५) इत्येवमनुसन्धानो धनादिषु। (सुद० १३२)

अनुसन्धानकर (वि०) अन्वेषक, अनुचिन्तन करने वाला। (दयो० वृ० ८६)

अनुसंधानधर (वि०) अनुसंधान करने वाला। (दयो० वृ० १/९)

अनुसन्धानवंशगत (वि०) खोज में लीन हुआ। (दयो० वृ० ६५)

अनुसंहित (वि०) [अनु+सम्+धा+क्त] पूछ की गई, पृष्ठवान्।

अनुसंबद्ध (वि०) [अनु+सम्+बंध्+क्त] संयुक्त, संलग्न, तत्पर।

अनुसंधत (वि०) धारण की गई। (वीरो० २२/३)

अनुसन्धेय (वि०) [अनु+सम्+विधातृ] अनुसन्धान/खोज करने योग्य। (वीरो० १५/६३)

अनुसम्बिधात्री (वि०) अनुसन्धान करती हुई, खोज करती हुई। (वीरो० ५/३७) विनोद वार्तामनुसम्बिधात्री।

अनुसरः (पुं०) [अनु+सृ+अच्] अनुगामी, अनुचर, सेवक।

अनुसरण (नपुं०) [अनु+सृ+ल्युट्] अनुगमन, समनुरूपता, अग्रगामी। (जयो० वृ० ३/३३) (जयो० वृ० १/५७)

अनुसर्पः (पुं०) [अनु+सृप+अच्] ०सरीसृप, ०सर्पसदृश चलने वाला जन्तु।

अनुसवनं (अव्य०) प्रतिक्षण, हरक्षण।

अनुसारः (पुं०) [अनु+सृ+घञ्] पीछे जाना, अनुगमन, अनुसरण। (सुद० १/३४)

अनुसारः (पुं०) प्रथा, रीति, पद्धति। (जयो०

अनुसारित्व (वि०) [अनु+सृ+णिनि] अनुसरण करने वाला। (सुद० १/३४) सुरतानुसारिसमयैर्वा। (जयो० ६/९) 'सुरता देवत्वं तस्यानुसारिणः' इस व्याख्या के अनुसार 'अनुसारि' का अर्थ ०बराबरी, ०सादृश्यता है और सुरतं मैथुनं तस्यानुसारिभिः की व्याख्या से 'अनुसारि' का अर्थ ०कुशल है।

अनुसिंच् (सक०) [अनु+सिंच्] सींचना, प्रक्षेपण करना। अनुसिच्यमाना खलता प्रवर्धते। (वीरो० ९/११)

अनुसुखं (नपुं०) यथासुख, प्रसन्न रखना। मुखं बभारानुसुखं च। (जयो० १/५७)

अनुसूचिनी (वि०) सूचनाकारिणी, संदेशदायिनी। (जयो० ६/३९) गुण संश्रवणावसरे विजृम्भणेनानुसूचिनीं शस्ताम्। (जयो० ६/३९)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अनु+सृ (अक०) प्राप्त होना, अनुसरण करना, गमन करना, पीछे जाना। (भक्ति ९) दौर्गत्यमेवानुसरन्ति सत्त्वा। (भक्ति ९) भूतात्मकमङ्गं भूतलके वारिणि बुद्-बुदतामनुसरतु। (सुद० १००) यथा रात्रिः सूर्यमनुसरति। (जयो० वृ० २२/१) यहां 'अनुसरति' का अर्थ ०अनुगमन करना है।

अनुसृतिः (स्त्री०) [अनु+सृ+क्तिन्] अनुगमन होना, अनुसरण होना, पीछे जाना।

अनुस्कंदं (अव्य०) क्रमानुसार अन्दर होना।

अनु+स्था (अक०) बोलना, कहना। कर्त्तव्यमिति शिष्टस्य निमित्तं नानुतिष्ठतात्। (सुद० वृ० १२५)

अनु+स्मृ (सक०) स्मरण करना, बार बार याद करना। नासौ दीर्घमनुस्मरेदपि मुनिर्दीव्यं न बोधं धरेत्। (मुनि०३१)

अनुस्मरणं (नपुं०) [अनु+स्मृ+ल्युट्] स्मरण करना, पुनर्स्मरण, अनुचिन्तन।

अनुस्मृतिः (स्त्री०) [अनु+स्मृ+क्तिन्] स्मृतिजन्य, स्मरण योग्य, बुद्धिस्थित।

अनुस्यात् (वि०) आने नहीं देना। कदर्थिभावः कमथाप्नयुष्यात्। (वीरो० १८/३४)

अनुस्यूत (वि०) [अनु+सिव्+क्त+ऊठ्] ०नियमित/०निर्बाध रूप से मिला हुआ संसक्त। ०बंधा हुआ। ०ध्रुव। यह दार्शनिक शब्द है, पर्याय की अपेक्षा वस्तु में स्यूति (उत्पत्ति) और पराभूति विपत्ति/विनाश पाया जाता है। ध्रुव भी वस्तु का एक कारण है, उत्पत्ति और विनाश में बराबर अनुस्यूत रहता है। अनुस्यूत की अपेक्षा वस्तु न उत्पन्न होती है और न विनष्ट होती है। (वीरो० १९/१६)

अनुस्वनः (पुं०) अनुकूल शब्द, अनुरूप शब्द। सज्ज-वारिनिधिरित्यनुस्वनः। (जयो० ७/५७) अनुस्वनोऽनुकूलः शब्दः। (जयो० वृ० ७/५७)

अनुस्वानः (नपुं०) [अनु+स्वन्+घञ्] अनुरूप शब्द करना, अनुरणन, अनुकरण रूप शब्द, प्रतिध्वनित शब्द।

अनुस्वारः (पुं०) [अनु+स्यु+घञ्] बिन्दु, नासिक्य ध्वनि, अनुनासिक शब्द। (दयो० वृ० ७६) बिन्दुमनुस्वारमाप्नोति। (जयो० ३/५१)

अनुहरणं (नपुं०) [अनु+हृ+ल्युट्] नकल, मिलना, अनुकरण, समानता।

अनूकः (पुं०) [अनु+उच्+क] कुल, वंश, मनोवृत्ति, स्वभाव, चरित्र।

अनूचान (वि०) ब्रह्मचर्य, श्रुत, संयम, यम, नियम, संयत आदि से युक्त।

अनूचानत्व देखो ऊपर।

अनूचानः (पुं०) अनूचानः प्रवचने साङ्गेऽधीती। (अमरकोश, २, ७, १०) श्रुते व्रते प्रसंख्याने संयमे नियमे यमे। यस्योच्चैः सर्वदा चेतः सोऽनूचानः प्रकीर्तितः। (उपासक: ८६८) पुरापि श्रूयते पुत्री ब्राह्मी वा सुन्दरी पुरोः। अनुचानत्वमापन्ना स्त्रीषु शस्यतमा मता।। (वीरो० ८/३९)

अनूढ (वि०) अविवाहित स्त्री, न ले जाया गया।

अनूढा (वि०) अनूढा, नवोढा, अविवाहित युवती। (सुद० २/२१) करोत्यनूढा स्मयकौ तु कं न। (सुद० २/२१) अनुरक्ते सुरक्तेन स्वीकृते स्वयमेव ये अनूढा परकीये ते भाषिते शिथिलव्रते।। (अलंकारचिन्तामणि ५/९२)

अनूत (अव्य०) (अनु+उत) पुनरपि, फिर भी। (जयो० १७/८३)

अनूत (वि०) अति नूतन।

अनूतना (वि०) यथोत्तर नूतन। नूतना नूतनायां रुचिरवश्यंभाविनी। अनूत (अनु+उत) पुनरपि तृप्तिर्नापि न प्राप्ता तदालिङ्गनादीच्छानिवृत्तिर्नाभूत् किन्तु अनूतना वृप्तिरपि यथोत्तरं नूतनापि नवीनेवानुभूता। (जयो० वृ० १७/८३)

अनूदकं (नपुं०) [उदकस्य अभावः] जलाभाव, सूखा।

अनूद्देशः (पुं०) [अनु+उत्+दिश्+घञ्] अलंकार नाम, जिसमें यथाक्रम पूर्ववर्ती शब्दों का उल्लेख होता है। यथासंख्यमनूद्देशः उद्दिष्टानां क्रमेण यत्। (साहित्यदर्दण ७३२)

अनूद्य (वि०) सुनाकर, श्रवण कराकर। वृत्तोक्तिोऽनूद्य तदीयचेतः। (सुद० ११६)

अनून (वि०) ०अनल्प, ०पूर्ण, ०सम्पूर्ण, ०सम्मत, ०वृहद्, ०महान्, ०बड़ा ०बहुतर। वाक्यकौशलं किञ्च मदेन यूनाछिटा कटाक्ष दृशोरनूना। अनूना बहुतरा। (जयो० १६/४३) ०तपस्यताऽनेन पयस्यनूनममुष्य। (जयो० १/५४) ०अनूनम-नल्पं। (जयो० वृ० १/५४) ०कलशः कलशशर्मवागनून। (जयो० १२/५) अनूनेनानल्पेन। (जयो० वृ० १२/५)

अनूप (वि०) [अनुगताः आपः यस्मिन् अनु+अप्+अच्] जलीय, जल की बहुलता, दलदल प्रदेश। अनूपे सजले देश। नद्यादिपानीय बहुलोऽ नूपः। (जैनलक्षणावली पृ० ८१) जलप्रायमनूपं स्यात्। (अमरकोश २, १, १०)

अनूपः (पुं०) देश का नाम।

अनूरु (वि०) जंघा रहित।

अनूर्जित (वि०) अशक्त, दर्परहित, दुर्बल।

अनृच् (वि०) बंजर प्रदेश, अनुत्तम स्थान।

अनृजु (वि०) कुटिल, वक्र, अयोग्य।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अनुणं (वि०) कर्जरहित, ऋण रहित।

अनृत (वि०) अप्रशस्त वचन, असत् वचन, मिथ्या वचन, झूठ, असत्य। ऋतं सत्यार्थे-न ऋतमनृतम्। (त०वा०७/१४)

अनृत-भाषणं (नपुं०) मिथ्योपदेश।

अनृतवादिन् (वि०) मिथ्यावादी।

अनेक (वि०) विविध, नाना प्रकार, एक से अधिक, कई कई, कतिचित्, अलग अलग। कौतुकेन भरतेशसुतस्यैवं परस्परमनेक सदस्यैः। (जयो० ४/५०) 'अनेकसदस्य' से यहां 'कतिचित्सभासद' अर्थ किया गया।
'अनेकधान्यार्थ कृतप्रचारा।' (सुद० १/८) ०विविधि प्रकार या अलग-अलग धान्य। अनेक-कल्पांघ्रियान्यत्र सतां विवेकः। (सुद० १/२०) नाना जाति के कल्पवृक्ष।

अनेक-अध्यायः (पुं०) पृथक्-पृथक् अध्याय, सर्ग। (सुद० १/३२)

अनेककालः (पुं०) अनेक समय। (समु० ८/१४)

अनेक-गुणं (नपुं०) नाना गुण, पृथक्-पृथक् अस्तित्व। दार्शनिक दृष्टि में एक और अनेक का विशेष महत्त्व है। इसकी व्याख्या 'जयोदय' में विस्तार से की गई। 'सत्' सर्वथा एक नहीं है, क्योंकि वह अनेक गुणों का संग्रह रूप है। घृत, शक्कर और आटा आदि को मिलाकर लड्डू बनाया जाता है, अतः वह देखने में एक प्रतीत होता है। पर जिन पदार्थों के संग्रह से बना है, उसकी ओर दृष्टि देने से वह अनेक रूप हो जाता है। परन्तु जीवादि द्रव्य रूप 'सत्' अनेक गुणों के संग्रह रूप होने से लड्डू की तरह अनेक रूपता को प्राप्त नहीं होता, क्योंकि घृत, शर्करा आदि पदार्थ अपना पृथक्-पृथक् अस्तित्व लिए हुए 'लड्डू' में संगृहीत होकर एक रूप दिखते हैं, इस प्रकार जीवादि द्रव्यों में रहने वाले ज्ञान, दर्शन, सुख, वीर्य आदि गुण अपनी अपनी पृथक् सत्ता नहीं रखते और न कभी जीवादि द्रव्यों से पृथक् थे, इसलिए 'सत्' में जो अनेकत्व है, वह उसमें अनेक गुणों के साथ तादात्म्य होने से है, संग्रह रूप होने से नहीं।

अनेकजन्मन् (नपुं०) अनेक जन्म, नाना प्रकार की उत्पत्ति। (सुद० १२८) अनेकजन्मबहुत-मर्त्यभावोऽतिदुर्लभः।

अनेकधा (अव्य०) [नञ्+एक+धा] विविध रीति से।

अनेक-धान्यार्थ (वि०) ०नाना प्रकार के धान्य के लिए, ०अलग-अलग धान्य के प्रयोजन हेतु। अनेकधान्यार्थमुपाय-कर्त्रोर्महत्सु शीरोचितधाम-भर्त्रोः। (सुद० २/२९) "अनेकधान्यार्थ कृत प्रवृत्ति"-(जयो० १९/२९) अनेक प्रकार के अनाजों के उत्पन्न करने में प्रवृत्ति है। अनेकधा अन्य अर्थ कृति-प्रवृत्ति-अनेक प्रकार के अर्थ-अभिधेय, व्यङ्ग्य और ध्वन्य अथवा अनेक मनुष्यों के प्रयोजन सिद्ध करने में प्रवृत्त हैं।

अनेक-पदं (नपुं०) अनेक पद या समूह यह सामान्य अर्थ है। आचार्य ज्ञानसागर ने इसका 'अनेकान्तपद' अर्थ करके विस्तृत व्याख्या की है" अनेकपदेन-अन्ततां यान्ति बहुलरूपेण भवन्तोऽपि सुन्दरतामनुभवन्ति, अन्तशब्दस्य सुन्दरता वाचकत्वात्। यद्वाऽनेकपदेन सार्धमन्ततामनेकान्ताम्, अनेकेऽन्ता धर्मा एकस्मिन्नित्यनेकान्तस्तस्य भावं स्याद्वादरूपतामित्यर्थः। (जयो० वृ० ५/४४)

अनेकरूपं (नपुं०) नाना प्रकार, पृथक्-पृथक् रूप। 'विचारजाते स्विदनेकरूपे' (सुद० ८/४)

अनेकविध-कारणं (नपुं०) अनेक साधन। (जयो० २/१०५)

अनेकविधरूपः (पुं०) नाना प्रकार के रूप (वीरो० २०/२१)

अनेकविधा (स्त्री०) सर्व प्रकार। (सुद० वृ० ७२) विनाशमनेक-विधायाः। (सुद० ७२)

अनेकशः (अव्य०) ०कई प्रकार, ०बार-बार, ०विविधरीति से, ०नाना प्रकार से ०मुहुर्मुहुः। (जयो० २/२६) पद्मयोनिप्रभृति-ष्वनेकशो देवतां परिपठन्ति सैनसः। (जयो० २/२६)

अनेकशक्त्यात्मकवस्तु (नपुं०) अनेक शक्ति वाली वस्तु (वीरो० १९/८)

अनेक-सदस्यः (पुं०) कतिचित्सभासद। (जयो० ४/५०)

अनेकाथतता (वि०) अनेक विभाग, पृथक्-पृथक् अध्याय। (सुद० १/३२) यस्मिज्जनः संस्क्रियतां च तूर्णं योऽभूद-नेकाथतया प्रपूर्णः। (सुद० १/३२)

अनेकान्तः (पुं०) दर्शन का प्रमुख विचार। "अनेकेऽन्ता धर्मा एकस्मिन्नित्येनकान्तः" (जयो० वृ० ५/४४) अनेक+अन्ता अर्थात् नाना प्रकार के धर्म जिसमें पाए जाते हैं, वह अनेकान्त है। एक वस्तु में मुख्य एवं गौण दोनों की अपेक्षा अस्तित्व नास्तित्व आदि परस्पर विरोधी धर्मों का प्रतिपादन जहां हो, वहां अनेकान्त है। "अनेके अन्ता धर्माः सामान्या विशेष-पर्याया गुणा यस्येति सिद्धोऽनेकान्तः।" (न्यायदीपिका ३/७६) जिसमें सामान्य-विशेष, पर्याय व गुण रूप अनेक अन्त या धर्म हैं, वह अनेकान्त है।

अनेकान्तपदम (नपुं०) अनेकान्तवाद (वीरो० १९/२२)

अनेकान्तप्रतिष्ठा (स्त्री०) अनेकान्त सिद्धान्त की पुष्टि। अनेकान्त

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

एकान्ते न भवतीति संकीर्णो देशः, तत्प्रतिष्ठाः सन् एकान्ते निर्जने देशे स्थितिमभ्यगाद् इति विरोधः, तस्मादनेकान्ते नाम स्याद्वाद सिद्धान्त प्रतिष्ठा यस्य स इत्यर्थः।

अनेकान्तमतः (पुं०) अनेकान्त मत, अनेकान्त विचार। "एकोऽपि सम्पातितमामनेकलोकाननेकान्तमतेन नेकः।" (वीरो० १/५) हे नेक/भद्र! आपने एक होकर भी अनेकान्त मत से अनेक विरोधियों को एकता के सूत्र में बांध दिया है। अनेकान्तमताधीनोऽप्येकान्तं समुपाश्रयत्। (समु० ९/७)

अनेकान्तसिद्धि (स्त्री०) अनेकान्त मत की पुष्टि। 'सुदर्शनोदय' में 'अनेकान्त सिद्धि' के 'सिद्धिरनेकान्तस्य' राग युक्त पंक्तियां दी हैं।" सा सुतरां सखि पश्य सिद्धिरनेकान्तस्य। (सुद० वृ० ९१)

हे सखि! देख! अनेक धर्मात्मक वस्तु की सिद्धि स्वयं सिद्ध है अर्थात् कोई भी कथन सर्वथा एकान्त रूप नहीं है। प्रत्येक उत्सर्ग मार्ग के साथ अपवाद मार्ग का भी विधान पाया जाता है। इसलिए दोनों मार्गों से ही अनेकान्त रूप तत्त्व की सिद्धि होती है। देख-एक वेश्या से उत्पन्न हुए पुत्र-पुत्री कालान्तर में स्त्री-पुरुष बन जाते। पुनः उनसे उत्पन्न हुआ पुत्र उसी वेश्या के वश में हो गया अर्थात् अपने बाप की मां से रमने लगा। इस अठारह नाते की कथा में पिता के ही पुत्रपना स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर हो रहा है। फिर किस मनुष्य का किसके साथ तत्त्व रूप से सच्चा सम्बन्ध माना जाए। इसलिए अनेकान्त की सिद्धि अपने आप प्रकट है। बाजार में जब वस्तु सस्ती मिलती है, व्यापारी उसे खरीद लेता है और जब वह मंहगी हो जाती है, तब ग्राहक के मिलने पर उसे अवश्य बेच देता है, यही व्यापारी का कार्य है।

अनेकान्तरङ्गस्थलं (नपुं०) अनेक द्वार वाले रङ्गस्थल, रङ्गस्थान/रङ्गभूमि। (सुद० १२२) अनेकान्तरङ्गस्थल-भोक्त्रीं किञ्चिद्वृत्तमुखामाश्रय। (सुद० १२२) जिनवाणी जैसे अनेकान्त सिद्धान्त की किञ्चिद् कथञ्चित् पद की प्रमुखता का आश्रय लेकर प्रतिपादन करती है उसी प्रकार यह देवदत्ता भी अनेक द्वार वाले रङ्गस्थल का उपभोग करती है।

अनेडः (पुं०) [न एडः] मूर्ख पुरुष, अज्ञानी, मूढ।

अनेनस् (वि०) निष्पाप, निष्कलङ्कक।

अनेहलः (पुं०) [न हन्यते-हन्+असि-धातोः एहादेशा-नञ्+एह+अस्] समय, काल।

अनैकान्त (वि०) परिवर्त्य, अनिश्चित, अस्थिर, असहाय।

अनैकान्तिक (वि०) [नञ्+एकान्त-ठक्] अस्थिर।

अनैक्यं (नपुं०) एकता का अभाव, अव्यवस्था अशान्ति, अराजकता।

अनैतिह्यं (नपुं०) परम्परागत, प्रामाणिकता का अभाव।

अनो (अव्य०) नहीं, न, न तो।

अनोकहः (पुं०) [अनसः शकटस्य अकं गतिं हन्ति-हन्+ड] वृक्ष, तरु। पदे पदेऽनल्पजलास्तटाका अनोहका वा फल-पुष्पपाकाः। (वीरो० २/१९) अनोकहस्य सुकृतसंगीति। (जयो० १४/६)

अनौचित्यं (नपुं०) [नञ्+उचित+ष्यञ्] अनुपयुक्तता, अनुचितता। किमनौचित्यमत्र, किमहं भवतां पुत्री नास्मि। (दयो० ८१)

अनौजस्यं (नपुं०) [नञ्+ओजस्+ष्यञ्] शक्ति सामर्थ्य का अभाव, बल हीन।

अनौद्धत्यं (नपुं०) [नञ्+उद्धत+ष्यञ्] शालीनता, उदारता, विनय, शान्ति।

अनौरस्म (वि०) ०औरस न हो, ०विवाहिता स्त्री से न उत्पन्न, ०गोद लिया पुत्र।

अन्त (वि०) [अम्+तन्] निकट, अन्तिम, सुन्दर, मनोहर, मध्य, छोर, मर्यादा, अन्तिम बिन्दु, परिसर, पराकाष्ठा, सामीप्यता, सन्निकता, परिसर, किनारा, सीमा, निकटवर्ती (जयो० १६/१५) श्रीमन्तमन्तः शयवैजयन्ती। (जयो० ३/८६) अन्ततां स्फुटमनेकपदेवं। (जयो० ५/४४) ०अन्त-शब्दस्य सुन्दरतावाचकत्वात्। (जयो० वृ० ५/४४) ०'अन्त' शब्द धर्मवाचक भी है। अनेकेऽन्ता धर्मा। ०अन्तो भोग-भृगुपरितु योगो। (सुद० १०५) उक्त पंक्ति में 'अन्त' का अर्थ अन्तरङ्ग है। ०अन्तः-भीतर/अन्दर-अन्तः समासाद्य। (सुद० ११९) (भीतर ले जाकर) प्रसरति किन्नहि जगदन्तः। (सुद० ८१) ०अन्त-बाद में-पश्चात्-निर्धूमसप्तर्चिरिवान्त-तस्तु। (सु०२/४०) (सम्य० ११०)

०अन्तः-आभ्यन्तर-अन्तर्विषमया नार्यो। (सुद० जयो० २/१४६)

०अन्तः-मध्य-आम्रस्य गुञ्जकलिकान्तरतो। (वीरो० ६/२)

०अन्तः-अवसान-(वीरो० वृ० ५/१९)

०अन्तः-अन्तरङ्ग-परस्य घोण्टाफलवत्कठोरान्तस्त्वेन वृत्तिर्बहिरस्त्वघोरा। (समु० १/२३)

०अन्तः-समाप्त-जड़तायाश्च भवत्यन्तः। (सुद० ८१)

अन्तक (वि०) विघ्नविनाशक। (जयो० १०/२) [अन्तयति-अन्तं

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करोति-ण्वुल्] घातक, नाशक, संहारक, मारक, यम, मृत्यु। नाश करने वाला। (जयो० १/९४) समवेत्य तदात्ययान्तकं (जयो० १०/२)

अन्तकः (पुं०) यमराज। (जयो० १२/८१) द्विषदग्रे पुनरन्तकस्य जिह्वा। (जयो० १२/८१) अन्तकान्तिक समात्तशिक्षिणः। (जयो० २/१३४)

अन्तकरी (वि०) दुःखकरी, दुःख उत्पन्न करने वाली। (जयो० वृ० ११/५६)

अन्तकान्तिक (वि०) ०यमराज के निकट। ०मृत्यु के समीप अन्तकस्य यमस्यान्तिके (जयो० २/१३४)

अन्ततः (अव्य०) [अन्त+तसिल्] किनारे से, अन्यत्र, कुछ, भीतर, नष्ट, अन्त। (जयो० वृ० १८/४८, सुद० २/४०)

अन्ते (अव्य०) अन्त में, निकट, पास। (सम्य० ५७)

अन्तर् (अव्य०) [अम्+अरन्+तुडामगश्च] बीच में, मध्य में, अन्दर, भीतर, आन्तरिक।

'लोकान्तरायाततमः प्रतीपे।' (सुद० २/३३) उक्त पंक्ति में 'अन्तर' का अर्थ अन्तरङ्ग है। 'रूपोऽर्हतो मे च किमन्तरा धीः।' (भक्ति०२८) यहां 'अन्तर' का अर्थ ०मध्य बीच है। अर्हत् और स्वभाव दोनों के मध्य कोई अन्तर नहीं है। 'अनुचक्रे स हि तीरमन्तरा' (जयो० २१/७५) इसमें 'अन्तर' का अर्थ 'अनुलग्न' है

अन्तःकरणं (नपुं०) अन्तःस्थल, चेत, चित्त। (जयो० १६/१५) (जयो० ४/४४)

अन्तःक्रिया (स्त्री०) मन की चेष्टा, चित्त की प्रवृत्ति। (जयो० १६/१५)

अन्तर्घोषः (पुं०) अन्तर्ध्वनि, अन्तरंग स्वर। उद्योतयन्तोऽपि परार्थमन्तर्घोषा। (जयो० २/२२)

अन्तर्दधाती (वि०) अन्दर छुपाती हुई, भीतर ले जाती हुई। (दयो० २/७)

अन्तर्नीति (स्त्री०) अन्तरङ्ग नीति, हृदयगतभाव। अन्तर्नीत्याऽखिलं विश्वं वीर-वर्त्मभिधावति। दयते स्व- कुटुम्बादौ हिंसकादपि हिंसकः।। (वीरो० १५/५९)

अन्तःपुरं (नुपं०) अन्तःपुर, राज्ञीप्रासाद, रनवास, अन्तःपुरे तीर्थकृतोऽवतारः। (वीरो० ५/५) अन्तः पुरप्रवेशायोद्यतसा। (सुद० ७/१) अन्तःपुरं द्वाः स्थनिरन्तरापि। (८/१) जयोदय के दशमें सर्ग में अन्तःपुर का अर्थ अवरोध किया है। (जयो० १०/३) अवरोधमन्तः पुरमितः (जयो० १०/३)

अन्तर्विशुद्धिः (वि०) अन्तरङ्ग की विशुद्धि।

अन्तःशयः (पुं०) काम, कामदेव। (जयो० ३/८६) अन्तःशयं हृदि वर्तमानं कामदेव स्वयं। (जयो० वृ० १४/१४)

अन्तःस्तलं (नपुं०) अपना अन्तरंग, निज स्वभाव, आत्मभाव। (वीरो० १४/२४)

अन्तस्त्रुटि (स्त्री०) आत्मत्रुटि, निजभूल। अन्तस्तले स्वामनुभावयन्तस्त्रुटिं। (जयो० १४/१४)

अन्तःस्फुरत (वि०) हृदयान्तर्गत शोभा। (जयो० ११/१९) तदन्तःस्फुरदम्बुजं च। (जयो० १/४९) तदन्तो हृदयान्तर्गत स्फुरच्छोभनं।

अन्तरङ्गक्रिया (स्त्री०) ज्ञान क्रिया, आभ्यन्तर शक्ति।

अन्तरङ्गच्छेदः (पुं०) अशुद्ध उपयोग, अशुद्धोपयोगो हि छेदः। (प्रवचनसार टी ३/१६)

अन्तरङ्गज (वि०) आभ्यन्तर में उत्पन्न होने वाला।

अन्तस्थ (वि०) प्रान्तभाग, हृदयभाग। अन्ते प्रान्त भागे तिष्ठति य-र-लवानां। (जयो० ११/७२) अन्तस्थ ध्वनियां-य, र, ल, व। गर्भस्थ।

अन्तस्थ (वि०) गर्भस्थ।

अन्तस्थ-तीर्थेश्वरः (पुं०) गर्भस्थ तीर्थंकर। बभूव भूपस्य विवेकनावः सोऽन्तस्थतीर्थेश्वरजः प्रभावः। (वीरो० ६/८)

अन्तःस्थलं (नपुं०) ०अन्तःकरण। ०अन्तःस्थलसत्। ०अन्तःकरण की शोभा। (जयो० १/६६)

अन्तस्था (वि०) समीपवर्तिनी, प्रान्तवर्तिनी। (जयो० २०/४८)

अन्तःस्थित (वि०) अन्तरंग में स्थित। (जयो० १३/१००)

अन्तर (वि०) [अन्तराति ददाति-रा+क] अन्दर होने वाला, निकट, समीप, संबद्ध, घनिष्ट। (सम्य० ६५)

अन्तरङ्ग (नपुं०) चित्त, हृदय, चित्त, अन्तःकरण, मनसस्तत्त्व। मुकुरार्पितमुखवद् यदन्तरङ्गस्य हि तत्त्वम्। (जयो० २/१५४) अन्तरङ्गस्य मनसंस्तत्त्वं। (जयो० २/१५४) यस्यान्तरङ्गेऽद्-भुतबोधदीपः। (जयो० १/८५)

अन्तरङ्गस्थलं (नपुं०) आभ्यन्तर स्थान। (सुद० १२२)

अन्तरतः (नपुं०) अन्तराल, भीतर, आन्तरिक, मध्य, अन्त में। (वीरो०)

अन्तरतम (वि०) [अन्तर+तमप्] ०अत्यन्त निकट, ०निकटतम, ०अनिष्टतम।

अन्तरन्वेष्टुम् (वि०) अन्तरङ्ग में प्रविष्ट हेतु। (वीरो० १०/२५)

अन्तरलिः (पुं०) चित्त रूपी भ्रमर। (जयो० ९/९१)

अन्तरा (अव्य०) [अन्तरेति-इण+डा] भीतर, अन्दर, बीच, मध्य। न तु इतरस्तरामन्तरा यामि (सुद० वृ० ७३)

अन्तरात्मन् (पुं०) [अन्तर्+आत्मन्] आत्मशुद्धिभाव, ज्ञान युक्त आत्मा। (सम्य० ११५) समस्ति देहात्मविवेकरूपः,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शुभोपयोगो गुणधर्मकूपः। किलान्तरात्माऽयमनेन भाति परीत-संसार-समुद्र-तातिः।। (समु० ८/२२) शरीर को आत्मा से भिन्न मानते हुए विवेक रूप विचार होने का नाम शुभोपयोग है, इस शुभोपयोग से आत्मा गुणवान् और धर्मात्मा बन जाता है तथा अन्तरात्मा कहलाने लगता है। ०ज्ञानमयं परमात्मानं ये जानन्ति। ते अन्तरात्मनः। (कार्तिकेयानुप्रेक्षा टी० १९२) ०"सिद्धि स्यादनपायिनी" (हित०सं० ३) सिद्धि के सम्मुख जो होता है, वह अन्तरात्मा है। आत्मा के भेदों में एक भेद है, इसे-'अन्त-रात्मतामेति विवेकधामा' (सुद० वृ० १३५) ०विवेकधाम भी कहा है।

अन्तराविष्ट (वि०) आभ्यन्तर प्रवेश, अन्तरंग प्रविष्टि। (जयो० १४/५८) चान्तराविष्टतया युवतिः। (जयो० १४/५८)

अन्तरायः (पुं०) विघ्न, बाधा, अवरोध, रूकावट। ज्ञानविच्छेदकरणमन्तरायः। (स०सि० ६/१०) किसी भी ज्ञान में बाधा पहुंचाना, या जो दाता और देय आदि के बीच में अवरोध आता है। 'अन्तरमेति गच्छतीत्यन्तरायम्' (धव०पु० १३ वृ० २०९) आठ कर्मों में अन्तिम तथा घातियां कर्मों में चतुर्थ कर्म।

अन्तरालम् (वि०) [अन्तरं व्यवधानसीमाम् आरति गृह्णाति-अन्तर+आ+टा+क रस्य लत्वम्] ०भाग, ०मध्यवर्ती प्रवेश, ०स्थान, ०काल, ०अवकाश। ०भीतर, ०अन्दर। (सुद० वृ० २६) पितामहस्तामरसान्तराले। (जयो० १/८) अन्त-राले मध्ये। (जयो० वृ० १/८) शाखाभिराक्रान्तदिगन्तरालः। (जयो० २/१५) विशाल शाखाओं से दिशाओं को पूरित करने वाला।

अन्तरि (वि०) [अन्तः स्वर्गपृथिव्योर्मध्ये ईक्षते-इति+अन्तर्] मध्यवर्ती प्रदेश, वायु, वातावरण, आकाश।

अन्तरिक्षः (अन्तः स्वर्गपृथिव्योर्मध्ये ईक्षते-ईति-अन्तर्+ईक्ष-घञ्) आकाश, वातावरण, वायु। आकाशगत सूर्य, चन्द्र, ग्रह, नक्षत्र और तारा आदि।

अन्तरित (वि०) [अन्तः+इ+क्त] ०भीतर, ०अन्तरङ्ग। ०गुप्त, ०अन्तर्हित, ०छिपी हुई। (जयो० २६/२५) ०समीपवर्ती (वीरो० २०/८) दद्यादन्तरिताऽन्धिका शिशुमती रूग्णा पिशाचान्विता। (मुनि०११) स विरलो लभतेऽन्तरितं च य। (जयो० ९/८६) योऽन्तरितमन्तर्हितं गुप्तरहस्यं लभते। (जयो० वृ० ९/८६) अम्भोजान्तरितोऽलिरेवेमधुना। (सुद० १२७)

अन्तरित-शत्रु (पुं०) आन्तरिक शत्रु, काम कोध-आदि।

अन्तरीषः (पुं०) ०टापू, ०द्वीप, ०समुद्र का जल विहीन उच्च स्थान।

अन्तरीपि (स्त्री०) टापू, द्वीप। विभात एतावधुनान्तरीपौ। (जयो० ११/३५) अन्तरीपौ द्वीपौ विभात। (जयो० वृ० ११/३५)

अन्तरीयं (नपुं०) [अन्तर+छ] अधोवस्त्र। निरस्य शैवाल दलान्तरीयं। (जयो० १८/२७) समन्तरीयोद्भिदि। (जयो० १७/७४)

अन्तरेण (अव्य०) [अन्तर+इण+ण] इसके बिना, सिवाय, अतिरिक्त, अन्य, इतर, पश्चात्। (दयो० वृ० २/२६) त्रिवर्गसंसाधनमन्तरेण। (दयो० २/२६) यहां 'अन्तरेण' का अर्थ 'व्यर्थ' भी है।

अन्तर्गत (वि०) [अन्तः+गम्+क्त] गया हुआ, समाहित, अन्तस्थित। (सम्य० ४६)

अन्तर्गमिन् (वि०) [अन्तः+गम्+णिनि] गुप्त, रहस्यपूर्ण, मध्यगत, गूढ।

अन्तर्धा (वि०) आच्छादन, गोपन।

अन्धानं (नपुं०) अदृश्य, नहीं दिखना।

अन्तर्भव (वि०) आन्तरिक, आत्मगत।

अन्तर्भावः (पुं०) अन्तर्भूत, आत्मगत।

अन्तर्भावना (स्त्री०) आत्मभावना, हृदयगत भावना।

अन्तर्मुहूर्तः (पुं०) समय विशेष। (सम्य० ५६)

अन्तर्य (वि०) आन्तरिक।

अन्तर्हृदयं (नपुं०) मनोमध्य, हृदन्त। (जयो० वृ० २३/४०)

अन्तर्व्याप्तिः (स्त्री०) साध्य के साथ साधन का होना।

अन्तलता (स्त्री०) अन्तरता, आत्मगत। (जयो० १७/

अन्तसमयः (पुं०) चेतनस्यात्मनोऽभावे। (जयो० २५/५६)

अन्ति (अव्य०) [अन्त+इ] पास में, निकट, समीप।

अन्तिक (वि०) [अन्तःसामीप्यमस्यतीतिअन्त+ठन्] निकट, समीप। (सम्य० ४३) जिनालयस्यान्तिकमेत्य मृत्यु। (सुद० ४/१८) अन्तकान्तिक समात्त-शिक्षिण। (जयो० २/१३४)

अन्तिम (वि०) [अन्त+डिमच्] ०आखरी, ०चरम, ०सर्वोत्कृष्ट, ०सम्पन्नावस्था। कुज्ञानातिगमन्तिमं स मनसा तेनार्जितः सिद्धये। (जयो० २७/६६) तथान्तिमं सम्पन्नावस्थं। (जयो० वृ० २७/६६) पौरुषोऽर्थ इति कथ्यतेऽन्तिमः। (जयो० २/२२) अन्तिमश्चरमः पुरुषस्यायं पौरुषः। (जयो० वृ० २/२२) सुदर्शनाख्यान्तिमकामदेव। (सुद० १/४)

अन्तिममनु (पुं०) अन्तिम कुलकर। अन्तिम मनु-तेष्वान्तिमो नाभिरमुख्य देवी प्रासूत पुत्रं जनतैक सेवी। (वीरो० १८/१२)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अन्तिमाम्भोभिः (पुं०) पश्चिमादिशा समुद्र। (जयो० १५/१६)

अन्ती (स्त्री०) चूल्हा, अंगीठी।

अन्ते (अव्य०) अन्ततः, भीतर, निकट।

अन्त्य (वि०) [अन्त+यत्] अन्तिम, चरम, आखिरी। (भक्ति०२)

अन्त्यकः (पुं०) [अन्त्य एवेति स्वार्थे कन्] निम्न पुरुष। (जयो० २८/२०, १/५४

अन्त्यजः देखो अन्त्यकः।

अन्त्य-यमकालङ्कारः (पुं०) अन्तपद यमक। यदुपान्तिकेषु सरलाः सरला यदनूच्चलन्ति हरिणा हरिणा। तदिदं विभाति कमलं कमलं मुदमेत्य यत्र परमाय रमा।। (वाग्भट्टा० ४/३३) जहां अन्त्य पदों की आवृत्ति हो वहां 'अन्त्य यमकालङ्कार' होता है। 'सौष्ठवं समभिवीक्ष्य सभाया यत्र रीतिरिति सारसभायाः। वैभवेन किल सज्जनतायाः मोदसिन्धुरुद्भूज्जनतायाः।। (जयो० ५/३४)

अन्त्रं (नपुं०) अन्त्+ष्ट्रन्+अम्] आंत, अंतड़ी।

अन्दुः (स्त्री०) [अन्द्+कु पक्षे ऊङ् स्वार्थे कन्] ०श्रृंखला, ०बेड़ी, ०आभूषण, ०विशेष अलंकृति। (जयो० १७/५२) 'अन्दुः स्त्रियामलङ्कार' इति विश्वलोचनः। अन्दुभिस्तु पुनरंशुकराजैः। (जयो० ५/५६)

अन्दोलनं (नपुं०) [अन्दोल्+ल्युट्] झूलना, हिंडोलना।

अन्ध् (सक०) अन्धा बनाना, अन्धा करना।

अन्ध (वि०) [अन्ध+अच्] अन्धा, अनयन, नेत्रहीन। (जयो० वृ० २५/६८)

अंधक (वि०) ०अन्धापन, दृष्टि हीनता।

अन्धकरण (वि०) [अन्ध+कृ+ल्युट्] अन्धा करने वाला, दृष्टिहीन करने वाला।

अन्धकलोष्ठः (पुं०) धूर्त पाषाण। (जयो० ९/२८) ०सफेद पत्थर जिसका उपयोग नहीं होता।

अन्धकारः (पुं०) ०तिमिश, ०तमस्, ०अंधेरा, ०तिमिर, ०प्रकाशाभाव। (जयो० वृ० ११/९३, १५/९) अन्धं करोतीति अन्धकारो यं दृष्ट्वा। (जयो० वृ० १५/२४) हाहान्धकारोऽपि निशाचरो पि। (जयो० १५/२४)

अन्धकारः (पुं०) अन्धकासुर दैत्य। हे धीरश्वरासुरहित सहसान्धकारम्। (जयो० १८/३०)

अन्धकारः (पुं०) दिशाओं की प्रभा का शून्यता। दिगम्बर। अयं दिगम्बरोऽन्धकारश्चरति। (जयो० वृ० १३/४८) अन्धकार हाथियों के झुण्ड के बहाने विचरण कर रहा है।

अन्धकाररूप (पुं०) अन्धकार स्वरूप। (जयो० वृ० १५/२६)

अन्धकार-रूपधारक (वि०) अन्धकार के स्वरूप को धारण करने वाला।

अन्धकार-रूपिणी (स्त्री०) तिमिर-रूपवाली, श्यामवर्णा। (जयो० १५/२७) तमोमयीमन्धकाररूपिणीं श्यामवर्णां।

अन्धकार-सत्ता (स्त्री०) तमस्थितिः, अन्धकार परिणति। (वीरो० ५/२४) यथा प्रभातो दयतोऽन्धकारसत्ता विनश्येदयि बुद्धिधार। (वीरो० ५/२४)

अन्धकार-स्वरूपः (पुं०) श्यामशय, कलुषपरिणाम, कृष्णपक्ष। (जयो० १/१०१)

अन्धकारस्थित (वि०) तमोस्थित (वीरो० २०/२०)

अन्धकारी (वि०) अन्धकार वाला, अन्धकार धारक। (सुद० २/२५) केशान्धकारीह शिरस्तिरोऽभूद्।

अन्धकूप (पुं०) खंडहर कूप, पानी से रहित कूप, गहरा कूप। (नाभिभ्रमणान्धकूपा। सुद० २/४)

अन्धकूपा (वि०) अन्धविश्वासी। (सुद० २/

अन्ध-तमस् (पुं०) अन्धकाराच्छन्न, गहन अन्धकार। (जयो० २/८६) दिक्षुचान्धतमसायते।

अन्धता (वि०) अवलोक हीनता, दृष्टि हीनता (जयो० ९/२७)

अन्धिका (वि०) अन्धी, रात्रि। [अन्ध+ण्वुल्,इत्वम् टाप्] दद्यादन्तरिताऽन्धिका। (मुनि०११)

अन्धुः (स्त्री०) कूप, कुआं। [अन्ध+कु]

अन्नं (नपुं०) खाद्यान्न, चना, मूंग, गेहूं। सदन्नमातृप्ति तथोपभुज्य। (सुद० १३०) अन्नं करोतीत्यन्नकृद धान्य पाचको भवति। (जयो० २/३६)

अन्नकृत (वि०) अन्न को पकाने वाला। अन्नं करोत्यन्नकृद धान्यपाचको भवति। (जयो० वृ० २/३६) यद्वदेव तपना-तपोऽन्नकृच्छ्रीजिनानुशय)। (जयो० २/३६)

अन्नकूटः (पुं०) खाद्यान्न समूह।

अन्नकोष्ठः (पुं०) अनाज की कोठी।

अन्नगंधिः (स्त्री०) पेचिश रोग।

अन्नदोषः (पुं०) आहार दोष।

अन्नशुद्धिः (स्त्री०) आहार शुद्धि।

यदुद्दशादिदोषेभ्योऽतीतं स्वस्मै प्रसाधितम्।
शोधिताऽन्नप्रदेयं स्यात्तदेयं हि तपस्विने।। (हित०सं० वृ० १४०)

अन्नोत्पादनं (नपुं०) खाद्यान्न उत्पादन। (जयो० वृ० २/५)

अन्य (वि०) भिन्न, दूसरा, और, अनोखा, असाधारण, अतिरिक्त। (सम्य० २१) त्वममुष्यासि सवर्णाऽलमन्यथा हे सुकेशि वर्णनया। (जयो० ६/८५) उक्त पंक्ति में 'अन्य' वर्णन अर्थ को प्रकट कर रहा है। अधिक वर्णन करने से क्या

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लाभ? विनाऽन्ये न जातुचित्। (सुद० ४/४०) यहां 'अन्य' शेष वाचक है। तमन्यचेतस्कमवेत्य तस्य। (सुद० ३/३९)
युधिष्ठिरो भीम इतीह मान्यः,
शुभैर्गुणगणैरर्जुन एव नान्यः, (जयो० १/१८)

अन्यक (वि०) अन्य, दूसरा, इतर, भिन्न। (जयो० वृ० १/७२)

अन्य-कृति (स्त्री०) सर्वसाधारण बात। (जयो० वृ० १/७२) (जयो० ४/२३)

अन्यग (वि०) अन्य, दूसरे के पास जाने वाला।

अन्यगत (वि०) दूसरे की ओर प्राप्त हुआ। समादरोऽल्पेऽन्यगतेऽप्यहो। (समु० १/१८)

अन्यगामिन् (वि०) अन्यत्र जाने वाला।

अन्यगोत्र (वि०) दूसरे वंश या कुल का।

अन्यगुणं (नपुं०) परगुण (वीरो० , जयो० ४/६७)

अन्यजनः (पुं०) भिन्न लोग। (वीरो० १६/३)

अन्यज (वि०) अन्य जन्मगत।

अन्जजात (वि०) अन्य जन्म को प्राप्त। (सम्य० १५४)

अन्यच्च (अव्य०) अन्यत् भी, दूसरी ओर। तत्तत्सम्बन्धि चान्यच्च। (सुद० ४/११)

अन्यजन्मन् (वि०) भिन्न कुलोत्पन्न। मनोऽन्यजन्मादि यतः समस्यते। (जयो० ३३/३९)

अन्यज्जमान् (वि०) भवान्तर प्राप्त, पूर्व जन्म सम्बन्धी। (जयो० वृ० २३/३३)

अन्यत् (वि०) अन्य, भिन्न, इतर, अपर, क्वचित्, पृथक्, असाधारण। (सम्य० २३) (जयो० २/६२१) शिखिजनोऽन्यत एव तया स च। (जयो० ४/६७)यान्तोऽन्यतोऽभ्युद्गत (जयो० १३/८२) तत्स्वर्गतो नान्यदियाद्वदान्यः (सुद० १/६) मत्वा निजं परं सर्वमन्यदित्येषु मन्यते। (सुद० ४/७) उक्त पंक्ति में 'अन्यत्' भिन्न या पराए अर्थ को प्रतिपादित कर रहा है। साम्प्रतं धनिविमोचितं पटाद्यन्यतः श्रणति भूषणच्छटाम्। (जयो० २/२८)

अन्यत्किं (अव्य०) और दूसरा क्या? कलि-मल-धावनमतिशय पावनमन्यत्किं निगदाम। (सुद० वृ० ७०)

अन्यत्स्थानं (नपुं०) अन्य स्थान, दूसरा स्थान। (जयो० वृ० ४/२६)

अन्यतम (वि०) [अन्य+उतम्] बहुत में से एक।

अन्यतर (वि०) [अन्य+तरफ] दोनों में से कोई एक।

अन्यतंत्रः (पुं०) परतन्त्र। (सम्य० २१)

अन्यतः (अव्य०) दूसरे से, अन्य से।

अन्यत्वः (पुं०) ०भावना विशेष, ०जीव का किसी के साथ सम्बन्ध नहीं है, ऐसा विचार।

अन्यत्र (अव्य०) [अन्य+त्रल्] और स्थान, दूसरा, इसके अतिरिक्त, सिवाय, अन्यथा, दूसरी अवस्था में। रुग्दारिद्रियमन्यत्र धनं यथारूक्। (सुद० वृ० १२१) अभिधानेऽन्यत्राहो। (सुद० वृ० ८७)

अन्यत्रगत (वि०) अन्य पदार्थों में संलग्न। प्रवृत्तिमन्यत्रगतामुदस्य। (भक्ति सं० २९)

अन्यत्रसंकल्प (वि०) अन्य पदार्थ में संकल्प। (भक्ति ३०)

अन्यदशा (स्त्री०) अन्य पर्याय। (भक्ति वृ० ३) निरञ्जनोश्चान्य-दशाप्रतीपान्।

अन्यदा (अव्य०) किसी समय, अब, इस समय, अधुना, कभी। समुदीक्ष्य मुदीरितोऽन्यदा। (सुद० ३/३४) जातोऽन्यदा सम्बदा। (सुद० वृ० ९६) पुत्रः शत्रुत्वमन्यदा। (सुद० ४/६० ४/९)

अन्यथा (अव्य०) [अन्य+थाल्] क्योंकि, जो कि, अन्य रीति से, परथा। कामुकीनामन्यथापि, परिप्लावन दर्शनात्। (हित सं० १६) निर्बलस्य बलिना विदारणमन्यथा सहजकं सुधारण। (जयो० २/११२) यहां 'अन्यथा' का अर्थ क्योंकि है।

अन्यथा तु (अव्य०) क्योंकि, और भी। (जय वृ० १/२०)

अन्यलिङ्गः (नपुं०) अन्य वेश, विपरीत वेष।

अन्यथानुपपत्तिः (स्त्री०) अर्थापत्तिप्रमाण। (जयो० ७/१५) अन्यथानुपपत्त्याऽहं गतवान्स्त्वदनुज्ञया। (जयो० वृ० ७/१५) 'अन्यथा साध्याभावप्रकारेण अनुपपत्तिः अन्यथानुपपत्तिः' (सिद्धिविनश्चय टी०वृ० ३५८) साध्य के अभाव में हेतु का घटित न होना।

अन्यथानुपत्तिरलङ्कारः (पुं०) अलंकार नाम। (जयो० २४/१२०)
लताप्रताने गता महति या चकर्ष कान्तं परिरम्भधिया।
मुमुदे साम्प्रतमितो वयस्या वलयस्वनेन वध्वास्तस्या।।
(जयो० १४/२५)

अन्यदृष्टिः (स्त्री०) अन्य मत मतान्तरो में अनुराग।

अन्यदृष्टि प्रशंसा (स्त्री०) मिथ्यादृष्टि के गुणों का गुणगान।

अन्यधनं (स्त्री०) परधन, दूसरे का द्रव्य। हिंसामृषाऽन्यधन दार-परिग्रहेषु। (सुद० वृ० १२७)

अन्यपरिक्षणम् (नपुं०) पररक्षण (वीरो० २२/२५) ०दूसरे की रक्षा का विचार।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अन्यपुरुषः (पुं०) ०परपुरुष, ०व्याकरण प्रसिद्ध क्रियात्मक अभिव्यक्ति का कारण। (जयो० वृ० १२/१४५)

अन्यपुष्टः (पुं०) पर पुष्टि, दूसरे का पोषण। (मौन्यन्यपुष्टः स्वयमित्यनेन। (वीरो० ४/८)

अन्यभावः (पुं०) दुर्वृत्ति, दुष्परिणाम, प्रजादुरीहाधिकृतान्यभावं। (वीरो० १८/४५)

अन्यमनस्कता (वि०) अप्रस्तुत का आरोप, (जयो० वृ० १/२१)

अन्यया (अव्य०) कदापि, कभी भी। (क्षेत्रेऽन्यया कान्तिझरैकयोग्ये) (जयो० वृ० १५/७७)

अन्ययोग व्यवच्छेदः (पुं०) एक दार्शनिक दृष्टि। विशेष्य के साथ प्रयुक्त एवकार। ०पक्ष-प्रतिपक्ष के चिंतन के साथ अपना मत प्रस्तुत करना।

अन्यविधिः (स्त्री०) अन्यथा विधि (वीरो० १८/५१)

अन्यहितः (पुं०) परोपकार। (जयो० वृ० १८/१७)

अन्या (वि०) अन्य, दूसरा, ऊपर। उदग्र-कुसुमोच्चिचीषयान्या। अन्या-काचिन् (जयो० १४/२७)

अन्यार्थ (वि०) परोपकारार्थ, अन्य पुरुष वाचक। अन्यार्थसाधकतया विचरन् सुवंशे। (जयो० १४/१४५) अन्यार्थस्य परोपकारस्यान्यपुरुष-वाच्यस्य। (जयो० वृ० १४/१४५)

अन्यानपेक्षिन् (वि०) अन्य से निरपेक्ष। नित्यं पादप-कोटरादिषु वशोदन्यानपेक्षिष्वथा। (मुनि०३)

अन्यापोहता (वि०) अन्य सांसारिक प्रपञ्च का अभाव। अन्यापोहतया चित्तलक्षणेऽथ क्षणे स्थितिम्। (जयो० २८/२४) अन्यस्य सांसारिकाप्रञ्चस्यापोहोऽसद्भावः। (जयो० वृ० २८/२४)

अन्याय (वि०) न्यायरहित, अनुपयुक्त।

अन्यायिन् (वि०) न्यायहीन, अनुचित।

अन्याय्य (वि०) न्यायहीन, अनुचित।

अन्येऽपि (अव्य०) और भी। अन्येऽपि बहवो जाता कुमारश्रमणा नरा। (वीरो० ८/४१)

अन्योक्ति-भावः (पुं०) अन्य दूसरे के माध्यम से कथन।

अन्योक्तिमानं (नपुं०) दूसरे की उक्तियों पर निर्भर। स्याण्णमो संयबुद्धीणं नरो नान्योक्तिमानतः। अन्यस्येतरस्योक्तिमान्त भवति। (जयो० वृ० २१/६४)

अन्योक्तिरलङ्कारः (पुं०) प्रत्येक्यश्येकाभिधयाथ मूर्च्छन्नारक्त-फुल्लाक्षितयेक्षितः सन्। दरैक धातेत्यनुमन्यमानः कुजातितां पश्यति तस्य किन्न।। (वीरो० ६/१५) यहां कु+जाति-भूमि से उत्पन्न, दूसरे पक्ष में खोटी जाति वाला अर्थ है। इसी प्रकार 'दरैकधाता' का अर्थ दर अर्थात् पत्रों पर अधिकार रखने वाला और दूसरे पक्ष में डर या भय को करने वाला है।

अन्योन्य (वि०) [अन्य-कर्मव्यतिहारे द्वित्वम्, पूर्वपदे सुश्च] एक दूसरे को, परस्पर, प्रायः। (जयो० वृ० २/११५) (वीरो० २७/२०) अन्योन्यानुगुणैकमानसतया। (सुद० ४/४७)

अन्योन्य-कलहः (पुं०) पारस्परिक द्वेष।

अन्योन्यघातः (पुं०) आपस में ईर्ष्या।

अन्योन्याभावः (पुं०) एक वस्तु में अन्य का अभाव।

अन्योन्य सामाश्रय (वि०) एक दूसरों का आश्रय। (हित सं० २२)

अन्योन्यानुकरणं (नपुं०) गतानुगति। (वीरो० वृ० ५/३३)

अन्योन्यानुभावः (पुं०) एक पर्याय का दूसरी पर्याय में न होना। भावैकतायामखिलानुवृत्तिर्भवेदभावेऽथ कुतः प्रवृत्तिः। यतः परार्थी न घटं प्रयाति हे नाथ! तत्त्वं तदुभानुपाति।। (जयो० २६/८७)

अन्योन्याश्रयः (पुं०) अन्योन्य समाश्रय, (हित सं० २२)

अन्वक् (अव्य०) [अन+अञ्च्+क्विप्] बाद में, पीछे, अनुकूल रूप।

अन्वञ्च (वि०) [अनु+अञ्च्+क्विप्] पीछे जाने वाला, पीछा करने वाला।

अन्वक्ष (वि०) [अनुगतः अक्षम्-इन्द्रियम्] दृश्य, अवलोकित।

अन्वतः (वि०) इधर उधर। मुहुरुदिग्लनापदेशतस्त्वतिपातिस्तन-जन्मनोऽन्वतः। (सुद० ३/१८)

अन्वमं (नपुं०) निश्चित, सही, उचित, ठीक। (जयो० ४/३०) अन्वमानि रविणेदमयोग्य मित्यतोऽपयश एव हि भोग्यम्।

अन्वय (वि०) अनूकूल्य, सम्बन्ध युक्त, (सुद० ३/१७) ०कुल परम्परा, ०अनुगमन, ०अनुगामी, ०अनुचर, ०सहभागी, ०तात्पर्य, ०अभिप्राय, ०प्रयोजन, समूह। (सम्य० २३) ०एक दार्शनिक विवेचन, जिसका तदङ्गजाप्यन्वय-नीत्यधीना। (जयो० १/४०) यहां 'अन्वय' का अर्थ ०कुलाकूल या ०कुल परम्परा है। 'सदा सुलेखान्वय-सेव्यमानः'' (जयो० १/५१) यहां 'अन्वय' का अर्थ-आनुकूल्य है, दूसरा अर्थ, समूह भी है। सत्कर्माख्यदि-नोदयात्प्रथमतो भूमण्डलास्यान्वये। (मुनि० पृ० १) उक्त पंक्ति में 'अन्वय' का अर्थ कुल है। अस्यां समानभावेन यतिवाचीन चान्वयः। (जयो० वृ० ४/६६) यहां 'अन्वय' का अर्थ विचार, है। अन्वयो विचारो भवति। (जयो०

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

४/६६) साभिधेयमभिधानमन्वयप्रायमाश्रयत्। (जयो० २/५५) यहां 'अन्वय' का अर्थ समन्वय, संबंध भी है।

अन्वयव्यतिरेकः (पुं०) विधायक और निषेधात्मक प्रतिज्ञा।

अन्वयायाङ्क (वि०) समागम। सुदर्शनान्वयायाङ्का स्थापिता कपिलाख्यया। (सुद० वृ० ८६)

अन्वयी (वि०) अनुयायी, मंडाराने वाले। कमलान्वयिभ्रमरविस्तारा। (जयो० २२/१९) १. 'कमलेन संतोषेण्णान्वयी संयुक्तो', २. 'कमलानां' वारिजानामन्वयी अनुयायी' (जयो० २२/१९) दोनों भी पंक्तियों में 'अन्वयी' का अर्थ अलग-अलग है, प्रथम में 'अन्वयी' का अर्थ 'संयुक्त' और द्वितीय में 'अनुयायी' अर्थ है।

अन्वर्थ (वि०) [अनुगतः+अर्थम्] सार्थक, अनुकूल। (जयो० १४/२९)

अन्वर्थभावः (पुं०) सार्थकभाव, अनुकूल परिणाम। रुचात्मनस्तु जगत्तिलकाया अन्वर्थभावमेवमथायात्। (जयो० १४/२९)

अन्वरक्षीत्-रक्षा करने लगा। (सुद० ४/२२) श्रेष्ठी मुहुः स्नेहतयाऽन्वरक्षीत्।

अन्यवसित (वि०) [अनु+अव+सो+क्त] संयुक्त, संबद्ध, बंधा हुआ।

अन्ववायः (पुं०) [अनु+अव+अय्+घञ्] कुल, जाति, वंश।

अन्ववेक्षा (स्त्री०) (अनु+अव+ईक्ष+अङ्+टाप्) विचार, चिन्तन, मनन, अनुशीलन।

अन्वहं (अव्य०) [अनु+वहन्] प्रतिदिन, नित्यमेव, सदैव। वैरिषन् रसिति वैरिसंग्रहमव्यथेऽकथि पथि स्थितोऽन्वहम्। (जयो० ३/६) ऋद्धिं वारजनीव गच्छति वनी सैषान्वहं श्री भुवम्। (वीरो० ६/३७)

अन्वाख्यानं (नपुं०) [अनु+आ+ख्या+ल्युट्] उल्लेख पूर्वक कथन, पूर्वानुसार विवेचन।

अन्वाचयः (पुं०) [अनु+आ+चि+अच्] जोड़ना, प्रधान के साथ गौण का कथन।

अन्वाजे (अव्य०) [अनु+आजि+डे] असहाय का उपकार।

अन्वादिष्ट (वि०) [अनु+आ+दिश्+क्त] पश्चात् कथित, प्रतिभाषित।

अन्वादेशः (पुं०) [अनु+आ+दिश्+घञ्] पूर्वोक्त का कथन, पूर्व की पुनरुक्ति।

अन्वाधानम् (नपुं०) [अनु+धा+ल्युट्] समिधा निक्षेपण।

अन्वाधिः (स्त्री०) [अनु+आ+धा+कि] पश्चाताप, खेद, यथार्थ प्रतिदेय।

अन्वासनम् (नपुं०) [अनु+आस्+ल्युट्] सेवा, परिचर्या, पूजा, शक्ति, शोक, खेद।

अन्वाहिक (वि०) प्रतिदिन का, नैमिस्तिकता।

अन्विचारः (पुं०) चिन्तन, विचार। (समु० ८/२१) शरीर मेवाहमियान्विचारः।

अन्वित (वि०) [अनु+इ+क्त] अनुगत, अनुष्ठित, सहित, युक्त, अधिकार जन्य, संयुक्त, क्रमगत, परिपूर्ण, साथ। शुचिबोधकदायतेऽन्वितः। (सुद० ३/२२) केयं केनान्विताऽनेन। (सुद० वृ० ८४) शुशुभे छविरस्य साऽन्विता। (सुद० ३/१९) तत्कुलक्लेदसम्भार धारान्वितम्। (जयो० २/१३०)

अन्विततनुः (स्त्री०) पूर्ण शरीर। वैवर्ष्येनान्विततनुः। (सुद० पृ० ७९)

अन्वितिः (स्त्री०) आदि, अनुसार। कन्यकाकनक-कम्बलान्विति। (जयो० २/१००) अत्रान्वितिशब्दआदिवाचकोऽस्ति। (जयो० वृ० २/१००) स्वामिजनान्वितिरिति चरणेन। (सुद० वृ० ९२) स्वामी की आज्ञानुसार चलना।

अन्वीक्षणं (नपुं) [अनु+ईक्ष्+ल्युट्] गवेषणा, अनुसन्धान, खोज।

अन्वेषणं (नपुं०) विशोधन, गवेषणा, (वीरो० १८/२५) अनुसन्धान, खोज। (जयो० वृ० २/४५)

अन्वेषणकारिन् (वि०) खोजकर्त्ता, अन्वेषण कर्त्ता, गवेषक, अनुसन्धानक। रत्नान्वेषणकारि एतदिति कृत्सम्बोधयुक्तात्मना। (मुनि०वृ० ८)

अन्वेषिणी (स्त्री०) एषणा, गवेषणा, खोजना। (जयो० वृ० १३/४३)

अप् (स्त्री०) [आप्+क्विप्+ह्रस्वश्च] जल, वारि।

अप (अव्य०) विरोध, निषेध, अपवह। धातु से पूर्व लगने वाला एक उपसर्ग। अपकार्तुम्। (समु० २/११)

अपकरणं (नपुं०) [अप+कृ+ल्युट्] अनुपयुक्त कार्य, अनुचित कार्य बिगाड़। पथप्रस्थायिनामपि किलापकरणम्। (दयो० वृ० १०१)

अपकर्तृ (वि०) [अप्+कृ+तृच्] कष्टयुक्त, हानिसंयुक्त।

अपकर्म (वि०) कर्त्तव्यविहीन। (जयो० १८/४)

अपकर्षः (पुं०) [अप+कृष्+घञ्] घाटा, नीचे करना, खींचना। (सम्य० ९९)

अपकर्षणं (नपुं०) [अप+कृष्+ल्युट्] ०दूर करना, ०खींचना, ०वञ्चित करना, ०नीचे करना।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सत्तागते कर्मणि बुद्धिनावाऽपकर्षणोत्कर्षणसंक्रमा वा। (समु० ८/१५) कम असर कर देने का नाम 'अपकर्षण' है।

अपकर्षणकर्त्री (वि०) मायाजन्य विद्या। (जयो० वृ० ५/५)

अपकर्षणविद्या (स्त्री०) माया, कपट विद्या। कन्यका यदपकर्षणविद्या। (जयो० ५/५)

अपकार: (पुं०) [अप+कृ+घञ्] दु:खोत्पादन, आघात, कष्ट, अविनय, अपकारि, उत्पीड़न, दुष्टता। (वीरो० १/३३)

अपकारक (वि०) [अप+कृ+ण्वुल्] कष्टप्रद, हानिकारक, अपमानजन्य।

अपकारणं (नपुं०) निवारण। (जयो० १९/७९) णमो वच्चबलीणं यदजममारीनिवारणम्। णमो काय बलीणं च गोरोगस्या-पकारणम्।। (जयो० १९/७९

अपकारपदा (वि०) अपकर्त्री। (जयो० ५/५९)

अपकारि (वि०) अपकार करने वाला, अपमान कर्ता।

अपकारिणी (वि०) विनाशकारी। जडताया अपकारिणीमत:। (सुद० वृ० ५४)

अपकृ [अप+कृ] उपकार करना।

अपकृति (स्त्री०) [अप+कृ+णिनि] आघात, कष्ट, दु:ख, अपमान।

अपकृष् (सक०) [अप+कृष्] ग्रहण करना, लेना। ''लताप्रतानस्य भुवोऽपकृष्य'' (जयो० १/५०) अपकृष्य-गृहीत्वा। (जयो० वृ० १/५०)

अपकृष् (सक०) [अप+कृष्] हटाना, दूर करना, खींचना, अपकर्षण करना। 'अपकर्षति स्म शिविकावाह।' (जयो० ६/४९) 'समयं स्वरूत्पन्नरुचोऽपकृष्ट्म्' (वीरो० २/४२)

अपकृष्ट (वि०) [अप+कृष+क्त] खींचा गया, बाहर निकाला, दूर हटाया गया।

अपक्व (वि०) कच्चा, अपच, अजीर्ण। (जयो० २/१५२)

अपक्वमृण्मयभाजनं (नपुं०) आमपात्र, कच्चापात्र। (जयो० वृ० २/१५२)

अपक्रम: (पुं०) [अप+क्रम+घञ्] हटना, भागना, पलायन करना।

अपक्रम: (पुं०) दुष्क्रम, दुर्मत। (जयो० १२/४) वृषचक्रम-पक्रमप्रभाव। (जयो० वृ० १२/४)

अपक्रमप्रभाव: (पुं०) दुर्मतप्रभाव, दुष्क्रम प्रसार। (जयो० वृ० १२/४)

अपकीर्ति: (स्त्री०) दुर्यश, दुष्प्रभाव। (जयो० २/९४)

अपकोश: (पुं०) [अप्+कृश+घञ्] भर्त्सना, निन्दा, गाली, अपमान शब्द।

अपक्ष (वि०) १. पक्षहीन, पंख रहित। २. पक्षाभाव, विपक्ष। ३. निष्पक्ष।

अपक्षय: (पुं०) [अप+क्षि+अच्] ह्रास, नाश, विनाश, अभाव।

अपक्षेप: (पुं०) [अप+क्षिप्+घञ्] नीचे फेंकना, नीचे रखना।

अपगत (वि०) रहित, विहीन। (जयो० ११/५५) ''आपगाऽपगत-लज्जमिवाङ्कम्''

अपगत-लज्ज (वि०) लज्जा रहित, नि:सङ्कोच। (जयो० ४/५५)

अपगतवेद (वि०) वेदन रहित, त्रिविध पुं०, नपुं०, स्त्री, वेद रहित।

अपगति (स्त्री०) [अप+गम्+क्तिन्] अशोभन गति, दुर्भाग्य, अविनीत। उद्धतामथापगतिं भगवदागमे तु।। (जयो० २३/८७)

अपगर: (अप+गृ+अप्), निन्दा, गर्हा।

अपगुणं (नपुं०) दुर्गुण, खोटे परिणाम। नाबन्धमवाप सापगुणदस्यु। (जयो० ६/९७)

अपगुण दस्यु (वि०) दुर्गुणों को हरण करने वाली। 'अपगुणानां दुर्गुणानां दस्युर्हर्त्री'। (जयो० वृ० ६/९७)

अपघनं (नपुं०) १. मेघ रहित, मेघविरोधिनी, 'अपघन रुचोचिता या'। (जयो० ६/७६) अपघना घनहीना मेघविरोधिनी। (जयो० वृ० ६/७६) २. अवयवयुक्त-अवघनेषु सर्वेष्ववयेषु।

अपङ्कपात्री (वि०) कीचड़ रहित। (वीरो० २१/६)

अपचय: (पुं०) [अप+चि+अच्] ह्रास, न्यूनता, कमी, छीजन, गिरावट, परिश्रम हीन।

अपचरितं (नपुं०) [अप+चर्+क्त] दोष, दुष्कृत्य, दुष्कर्म।

अपचार: (पुं०) [अप+चर्+घञ्] मृत्यु, अपराध, दोष, अभाव। दुराचरण, क्षति।

अपचारिन् (वि०) [अप+चर्+णिनि] दुष्ट, दुराग्रही, दुष्टकर्मी।

अपचिति: (स्त्री०) [अप+चि+क्तिन्] १. हानि, नाश, व्यय। २. प्रायश्चित्त, सम्मानन, पूजन, आदर।

अपच्छत्रं (वि०) छत्र विहीन, छतरी रहित।

अपच्छाय (वि०) छाया रहित, कान्तिहीन।

अपच्छेद: (पुं०) [अप+छिद्+घञ्] हानि, नाश, व्यय।

अपजय: (पुं०) [अप+जि+अच्] हार, पराजय।

अपजात (वि०) [अप+जन+क्त] कुपुत्र, माता-पिता से हीन।

अपजित (वि०) पराभूत, पराजय। अपजितस्य ममेदमुपायन। (जयो० ९/२१)

अपज्ञानं (नपुं०) छिपाना, गुप्त रखना, मेटना, मुकरना।

अपट (वि०) पट रहित, पर्दा हीन।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अपटी (स्त्री०) [अल्पः पटी] पर्दा, कनात।

अपटु (वि०) मंद, अदक्ष, अनिपुण।

अपठ (वि०) पढ़ने में असमर्थ।

अपण्डित (वि०) मूर्ख, अज्ञानी, बुद्धिहीन।

अपण्य (वि०) अमूल्य, बिक्री हीन।

अपतनु (स्त्री०) कृश शरीर, शरीर रहित। अपगता दूरवर्तिनी तनुः शरीरं। (जयो० २२/५)

अपतम (वि०) ०अन्धकार अभाव, ०अन्धकार रहित, ०प्रसूति स्थान में अन्धकार का अभाव। (सुद० ३/११) कुलदीपयशः प्रकाशितेऽपतमस्यत्र जनीजनैर्हिते। (सुद० ३/११)

अपतानकः (पुं०) [अप+तन+ण्वुल्] मूर्च्छा रोग, मृगी रोग।

अपति (वि०) अविवाहित, जो पति रहित हो।

अपतुषार (वि०) हिम रहित, शीत रहित। (जयो० २२/८)

अपतीर्थं (नपुं०) कुतीर्थ, खोटा तीर्थ स्थान, अपवित्र स्थान।

अपत्यं (न०) [न पतन्ति पितरोऽनेन-नञ्+पत्+यत्] संतति, सन्तान, प्रजा।

अपत्रता (वि०) वाहनविहीनता। (जयो० वृ० १७/४८) दृढंच यूनः करवारमाप्त्वाप्यपत्रतावापि किलाकुलेन।

अपत्रप (वि०) त्रपावर्जित। अपत्रपः पत्रं वाहनं पाति स पत्रपो न पत्रयोऽपत्रपः अथवा त्रपावर्जितः सन् (जयो० वृ० ८/५१)

अपत्रपः (पुं०) सन्नपरोऽत्र वीरः। जयो० ८/५१ कन्दर्प स्विदपत्रपाः। (जयो० ३/१०५) ०सत् रहित।

अपत्रप (वि०) निर्लज्ज, लज्जाशून्य। (जयो० ३/१०५)

अपत्रपत (वि०) निर्जल्लता, सङ्कोचवर्जितता। स्वयं तु पत्रं पातीति पत्रयो न पत्रयोऽ पत्रपस्तस्य भावस्तया युक्तोऽपि सन् पत्ररहितोऽपि भवन्। (जयो० वृ० ३/३५)

अपत्रपता (वि०) १. लज्जालुभावता, निर्लज्जता। किलापत्रपतां लज्जालुभावं उमामवाप्य महादेवोऽपि च श्रयन्ति। (जयो० २४/२३) गत्वाऽपत्रपतायाम्। (सुद० वृ० ११२)

अपत्रपा (वि०) ०लज्जाभाव ०निर्लज्जता, ०सङ्कोचता। (जयो० वृ० १७/१९, ६/११७)

अपत्रपा (वि०) पल्लवभावरहित, पत्रविहीनता। त्रपापि न पत्राणि पाति रक्षतीत्यपत्रपा पल्लवभावरहिता स्यात्। (जयो० वृ० १७/१९)

अपथ (वि०) मार्ग रहित, कुमार्ग, उत्पथगामी। किमुद्यपथो गुह्यलम्पटः सञ्चरत्यपि। (जयो० २/१३२)

अपथ्य (वि०) ०अयोग्य, ०अनुचित, ०असंगत, (सम्य० ९०) ०अस्वास्थ्यकर, ०रोगजन्य, ०व्याधिजनक।

अपथ्यवत् (वि०) व्याधिजनक के समान (सम्य० ९०)

अपदः (पुं०) ०पैर का अभाव, ०अनूरुभंग। ०एक पैर। (सूतोऽपदो येन रथाङ्गमेकं) (जयो० १/१९)

अपदः (पुं०) १. अयोग्य स्थान, ०आवास का अभाव। (जयो० २/१०९) सहेत विद्वानपदे कुतो रतम्। (जयो० २/१४०) २. अनुचितमार्ग-निःस्नेहतात्मनि संस्रुवाणस्तथापदे संकलित प्रयाणः। (जयो० ८/७०) अपदेऽनुचिमार्गे। (जयो० वृ० ८/७०)

अपदक्षिणं (अव्य०) बाईं ओर, वामभूत।

अपदम (वि०) आत्म संयम रहित।

अपदानं (नपुं०) [अप+दा+ल्युट्] उत्तम कार्य, पवित्राचरण, स्वच्छ चर्या।

अपक्षर्थः (पुं०) सत्ता का अभाव, वस्तु तत्त्व की कमी।

अपदिशं (अव्य०) मध्यवर्ती प्रदेश में।

अपदूषणं (नपुं०) दूषण का अभाव। (जयो० ७/२९)

अपदूषत्व (वि०) दूषणता रहित, किसी प्रकार का दूषण नहीं। (जयो० १/२९) दयालुतां चाप्यपदूषणत्वं।

अपदेशः (पुं०) [अप+दिश्+घञ्] ०उपदेश, ०बहाना, ०छल, ०कारण, ०ब्याज, ०चिह्न, ०स्थान, ०दिशा। (जयो० ११/४६)

अपदेशतः (वि०) बहाने, ब्याज, कारण, चिह्न। (जयो० ११/४६)

अपदेशतः (वि०) इधर-उधर। मुहुरुद्गिलनापदेशतस्त्वतिपातिः। (सुद० ३/१८)

अपदोष (वि०) दोष रहित, दोष वर्जित। न त्वाप सापदोषाऽप्यनङ्गरुपाधियं भाभिः। (जयो० ६/३१) पुनरपि द्रष्टुमभूदपदोषा। (जयो० १४/८)

अपदोष (वि०) निर्दोष, पक्षपातरहित। रोषो न तोषो जगदेकपोष ऋषेर्भवत्येव भवेऽपदोषः। (जयो० २७/२१) अपदोषः- पक्षपातेन रहितो। (जयो० वृ० २७/२१)

अपद्रव्यं (नपुं०) अनिष्ट वस्तु, कुपदार्थ। ०प्रदुषित पदार्थ, प्रदूषित।

अपद्वारं (नपुं०) ०अतिरिक्त द्वार, ०अन्य द्वार। ०मलद्वार/वातावरण करने वाली वस्तु।

अपधूम (वि०) धूम रहित। ०स्वच्छ, ०शुभ्र।

अपध्यानं (नपुं०) आर्तध्यान।

अपध्वंसः (पुं०) ०अधः पतन, ०गिरावट, ०लांछन, ०निम्नगति।

अपध्वस्त (वि०) [अप+ध्वंस्+क्त] अतिपिष्ट, अभिशप्त, घृणित, निन्दित।

अपनयः (पुं०) [अप+नी+अच्] हटाना, निराकरण करना, दूर करना।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अपनयनं (नपुं०) [अप+नी+ल्युट्] कर्त्तव्य निर्वाह, पकड़ना, ले जाना।

अप+नी (सक०) दबाना, नष्ट करना, दूर करना, निराकरण करना। (जयो० ६/६३) पुरुषोत्तमयोग्यामपनिन्युः (जयो० ६/६३) अपनिन्युः—अपनीतवंता। प्रतिष्ठितानात्मतमोऽपनेतुम्। (भक्ति वृ० ३)

अपनोदः (अप+नुद्+घञ्) हटाना, ले जाना, दूर करना।

अपपाठः (पुं०) अशुद्ध पाठ, स्वररहित, पठन, अनुच्चारण।

अपपात्र (वि०) अपात्र, निम्न पात्र।

अपपात्रित (वि०) पात्रता रहित पात्र।

अपपानं (नपुं०) [अप+पा+ल्युट्] अपेय, अपान, पानयोग्य नहीं। ०प्रदूषित पेय पदार्थ, ०रस विकृत पेय।

अपूत (वि०) अडोल। ०निश्चल, ०स्थिर।

अपप्रजाता (वि०) [अपगतः प्रजातो यस्याः] गर्भपात युक्त स्त्री।

अपभय (वि०) निडर, निर्भय, निश्शंक।

अपभरणी (स्त्री०) [अप+भू+ल्यूट्+ङीप्] अंतिम नक्षत्र पुंज।

अपभाषणं (नपुं०) [अप+भाष+ल्युट्] अपयश, भर्त्सना, कुप्रवचन, कुवचन।

अपभीतिः (स्त्री०) भयवर्जित, भयमुक्त, निर्भय। रङ्कः पापपवेरपभीतिस्तिष्ठति किमुत विचित्रम्। (जयो० २/१५७)

अपभूषणं (नपुं०) अपदोष, दूषणाभरण (जयो० १/२९

अपभूषणत्व (वि०) भूषणता का अभाव। (जयो० १/२९)

अपभ्रंशः (पुं०) [अप+भृंश+घञ्] गिरना, नीचे जाना, पतन, शिष्टाचार शून्य।

अपभ्रंशः (पुं०) अपभ्रंश भाषा, जिसमें उकार की बहुलता होती है, यह प्राकृत के पश्चात् विकास को प्राप्त होती है, प्राचीन हिन्दी का विकास इसी से हुआ।

अपभ्रंशवेदिन (वि०) अस्पष्टभाषी। (जयो० २८/२७)

अपमः (पुं०) क्रान्तिवलय, घुमाव युक्त चक्र।

अपमर्दः (पुं०) [अप+मृद्+घञ्] धूल, रज।

अपमर्शः (पुं०) [अप+मृश्+घञ्] छूना, स्पर्श करना।

अपमल (वि०) दोष रहित, मलयुक्त, निर्दोष। कमलामिवा-पमलाम्। (जयो० ६/६३)

अपमार्गः (पुं०) [अप+मृग+घञ्] लघुमार्ग, अपथ, लघुपथ, संकरा मार्ग, तंग गली, छोटा रास्ता।

अपमार्जनं (नपुं०) [अप+मार्ज+ल्युट्] मांजना, साफ करना, स्वच्छ बनाना।

अपमानः (पुं०) [अप+मन+घञ्] अनादर, असम्मान, निरादर। अतोऽपमानादतिदुःखितोमही सुरः-परित्यज्य तनुं वभावहिः। (समु० ४/५)

अपमानित (वि०) निरादर युक्त। (समु० ४/५)

अपमुख (वि०) नीचे की ओर मुंख, अधोमुख।

अपमूर्धन् (वि०) शिर विहीन।

अपमृत्युः (पुं०) असामयिक मरण। (जयो० १९/७७)

अपमृत्युमंत्र (पुं०) मृत्यु निवारण मंत्र। णमो विडोसहिपत्ताणं (जयो० १९/७७)

अपमृत्यु-विनाशन (वि०) मृत्य निवारण। णमोत्थु खिल्लोसहिप-त्ताणं (जयो० १९/७६)

अपमृषित (वि०) [अप+मृष+क्त] अस्पष्ट, अवकत्वता।

अपयशस् (पुं०) अकीर्ति, दुर्यशस्, कलंक, (जयो० वृ० १२/८०) लाभालाभौ जनुर्मृत्युर्यशोऽपयश एव च। (दयो० १०)

अपयशः परिणति (स्त्री०) अपकीर्ति, अकीर्ति। वै-परिणाम कीर्तिरपयशः परिणतिः। (जयो० वृ० ६/४३)

अपयानं (नपुं०) [अप+या+ल्युट्] भागना, पलायन करना, वापस जाना, दूर होना।

अपयोगः (पुं०) दुरुपयोग, उपयोग न होना। अपयोगो दुरुपयोग, स एव गहनं दुःखमेव। (जयो० वृ० ४/४३)

अपर (वि०) १. अद्वितीय, अप्रतिद्वन्द्वी, अनुत्तर, अनुपम। तव शिक्षा समीक्षा परा नाभिन्। (सुद० ७४) २. दूसरा, अन्य, इतर, अतिरिक्त, एक से एक। किमपरैरधिकाधिककातरैर्विषयताप-समुत्थतृषातुरैः। (समु० ७/१०) मुखेसु सत्तां सुतरां समाप सदञ्जनं चापरपार्थिवानाम्। (जयो० ६/११३)

अन्य—परकरोपलेखकोऽपरपुरुषस्य सहाय्येन लिखति। (जयो० २/१३)

दूसरा—स्यादत्र कश्चित्त्व परो हि रोगः। अपरोऽत्र नृपः। (जयो० २३/५२) (सुद० १०७) **पर**-भुवि सत्या अलमपरेण। (सुद० ८८)

अपरक्त (वि०) [अप+रञ्+क्त] रक्त रहित।

अपरथा (अव्य०) ०पुनः, ०फिर से, ०पश्चात्, (वीरो० २/४७) ०अन्यथा। 'सर्वतो ह्यपरथाऽऽगसां निधिः। (जयो० २/८४)

अपरत्र (कि०वि०) [अपर+त्रल्] दूसरे स्थान पर, अन्यत्र, कहीं।

अपरदिशा (स्त्री०) पश्चिमदिशा। न्यात्माधिपेऽपरदिशिं प्रतियादि राजन्। (जयो० १८/३६)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अपरपुरुषः (पुं०) अन्य पुरुष, दूसरा आदमी। अपरपुरुषस्य साहाय्येन। (जयो० वृ० २/१३)

अपर-पार्थिवः (पुं०) इतर राजा, अन्य नरेश। सदङ्गनं चारपरपार्थिवानाम्। (जयो० ६/३१)

अपरप्रणीति (वि०) अन्य ज्ञान (वीरो० २०/१९१)

अपरम (वि०) विपत्ति, हानि। (सुद० १०४) किमु यावकलां कलामये परमस्यापरमस्य हानये।

अपरत्व (वि०) ०अतिरिक्त, ०अन्य, दूसरा। ०प्रशस्त गुणों से विपरीतता, ०अधर्मजन्य तत्त्व। सिद्धान्त में परत्व और अपरत्व ये दो निमित्त भी हैं।

अपरविदेहः (पुं०) विदेह क्षेत्र का आधा भाग, मेरु पर्वत से पश्चिम दिशा की ओर स्थित विदेह क्षेत्र का आधा भाग।

अपरसंग्रहः (पुं०) भेदों की उपेक्षा रूप नय।

अपरस्पर (वि०) [अपरंच परं च] एक के बाद अन्य, अनवरत।

अपरस्मिन् (वि०) कस्मिश्चित्, किसी से भी। (जयो० ६/२०) गिरमपरस्मिन्निष्टे महाशये।

अपरागः (वि०) १. रागाभाव, अरुचि, राग रहित, २. अनुराग रहित, असंतोष युक्त।

अपराध-विहीन (वि०) दोष रहित, पाप रहित। मा स्म कञ्चिदपराधविहीनः। (समु० ५/१३) रागाभावस्यात्साऽ-परागस्य हृदीह शुद्धया, कुतोऽपरागः परमात्मबुद्धया। (वीरो० ५/२९) इह संसारे सा मोहक्षतिरपरागस्य विरक्तस्य पुरुषस्य हृदि चित्ते विशुद्धया चित्तशुद्धया स्यादित्युत्तरम्। अपरागो रागाभावः इति प्रश्न? उक्त पंक्ति में प्रथम 'अपराग' का अर्थ विरक्त और द्वितीय का 'रागाभाव' है। दोनों का अभिप्राय एक है, परन्तु एक से परमात्मविशुद्धि अर्थ का प्रतिबोध होता है और दूसरे से विरक्तपरिणाम। १. जयोदय (वृ० ६/८९) में अपराग का एक अर्थ **'अरुचि'** भी है। परमापरागवतोऽपि जयंतं। (जयो० २२/४३) ०अपराग-विराग या रागरहित भी अर्थ है। प्रोदि्भद्यमङ्क्षु कमलं स्फुरतापराग-भावेन भूरि-भरिताखिलभूमि भागः। (जयो० १८/५४) उक्त पंक्ति में 'अपराग' का अर्थ वीतराग भी है।

अपरागभावः (पुं०) वीतराग परिणाम। (जयो० वृ० १८/५४)

अपराञ्च (वि०) [अपर+अञ्च्+क्विप्] दूर किया गया, विमुख हुआ।

अपराञ्च (अव्य०) सामने, संमुख।

अपराजित (वि०) अजेय, अखण्ड। जल्पान्तीमपराजित हृदि मुदा मन्त्रं मृधान्तार्थतः। (जयो० ८/८६) ०युद्ध से हुए पाप से दूर हटाने के लिए अर्हत् मन्त्र की आराधना। ०अभिलषित ०अपराजित मन्त्र, ०इष्टसिद्धि मन्त्र।

अपराजितः (पुं०) अपराजित नाम का राजा, भरतक्षेत्र के चक्रपुर नगर का शासक। कदाचिदासीदपराजिताख्यः, पराजिताशेष नरेशवर्गः। (समु० ६/९) एक विमान का नाम भी 'अपराजित' है।

अपराजिता (स्त्री०) पार्वती, गौरी, महेश भार्या। (वीरो० वृ० ३/३४)

अपराजितेशः (पुं०) शिव, शंकर, महादेव। (वीरो० ३/५) स चापराजितेशोऽपराजितायाः पार्वत्याः स्वामी महादेवः। (वीरो० वृ० ३/५)

अपराजितेश्वरः (पुं०) महादेव, शिव। (वीरो० ३/५)

अपराध (पुं०) [अप+राध्+घञ्] ०पाप, ०दोषोऽन्वित, ०दुष्कर्म। (सुद० ११०) 'मन्तु स्यादपराधेऽपि मानवे परमेष्ठिनि' इति विश्वलोचन। (जयो० वृ० १/३९) मन्तुमन्ति अपराधकारीणि अक्षराणीन्द्रियाणि लान्तीति। (जयो० वृ० १/३९) कोऽपराध इह मङ्गलेऽन्वितः। (जयो० ७/५८) ०'अपराध' शब्द 'दोषोऽन्वित' दोष युक्त इस अभिप्राय को व्यक्त कर रहा है। 'चित्तेऽपराध-क्षमणादिवेदं' (भक्ति सं० ९) इस पंक्ति में 'अपराध' शब्द ०प्रायश्चित्त वाचक है। अपगतो राधो यस्य भावस्य सोऽपराधः। (सम्य० ३३२) जो राध से रहित है, वह अपराध है। सुदर्शनोदय (वृ० १२४) में अपराध का अर्थ दोष भी है। कृतापराधाविव बद्धहस्तौ। (सुद० २/२६) आत्मापराधस्य नराः स्मरन्तु। (जयो० १५/९) अपराधस्य दुष्कर्मणः। (जयो० वृ० १५/९)

अपराद्ध (वि०) ०अपराध, ०दोष, ०पाप करने वाला, ०दुष्टकर्म करने वाला। स्वामिं स्त्वय्यपराद्धमेवमिह। (सुद० १२४) (जयो० वृ० १५/९)

अपराद्धिः (स्त्री०) [अप+राध्+क्तिन्] पाप, दोष, दुष्टकर्म।

अपराधकारी (वि०) दोषपूर्ण कार्य करने वाला, दोषी, दुष्टकर्मी। (जयो० १८/२४) निर्यातु जातु न तम्पेऽप्यपराधकारि। (जयो० १८/२४) यहां 'वियोगकारी' अर्थ भी है।

अपराधिन् (वि०) [अप+राध्+णिनि] दोषी, अपराधी, दुष्ट। दण्डं चेदपराधिने न नृपतिः। (सुद० ११०) यद्वा राज्ञाऽ-पराधिन एवैते किलेति प्रतिज्ञायते। (दयो० ४९) संयोगतश्चा-समिहापराधी। (भक्ति सं० २९)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अपराधित्व (वि०) अपराधता, दोष करने वाला। (जयो० वृ० ११/२६)

अपराधीन: (पुं०) स्वतन्त्र न हो। न भवेदपराधीन: पराधीनश्च मानव:। (जयो० १९/९१)

अपरिग्रह् (सक०) [अ-परि+ग्रह्] पकड़ना, लेना, चढ़ना। (मुनि०११) नि:श्रेव्यापरिगृह्य दत्तमपि नो गृह्णाति योगी स वा। (मुनि०११)

अपरिग्रह: (पुं०) पांच व्रतों में अन्तिम व्रत।

अपरिग्रहत्व (वि०) अपरिग्रहपना, वस्तु के प्रति ममत्वाभावपना। (सुद० १३२) सदुक्तिमस्तेयममैथुनञ्चापरिग्रहत्वं विटपप्रपञ्च:। (सुद० १३२)

अपरिघूर्ण (वि०) चिर अभिलषित की पूर्णता। पूर्णाऽऽशास्तु किलाऽपरिघूर्णोऽस्माकमहो तव सत्त्वात्। (सुद० ९९)

अपरिचित (वि०) ०परिचय रहित, ०अनजान, ०अनुज्ञान। कस्य अपरिचितनामधेयस्य जनस्य करक्रीडनं। (जयो० वृ० ३/६९ जयो० वृ० ३/२१)

अपरिच्छद (वि०) दरिद्र, निर्धन। ०परिचिंतित, ०मनोयोय आदि से पीड़ित।

अपरिच्छिन्न (वि०) सीमा रहित,

अपरिणत (वि०) रूपादि से विकृत नहीं हुए, आहार का एक दोष।

अपरिणय: (पुं०) ०ब्रह्मचर्य, ०बाल ब्रह्मचारी, ०परिणय शून्य।

अपरिणाम: (पुं०) भाव रहित, विचार रहित, परिवर्तन रहित। (जयो० २६/८६)

अपरिणामक (वि०) यथा श्रद्धान रहित वाला।

अपरिणामभृत (वि०) परिणाम के कारण बिना। ०एक दार्शनिक दृष्टि। ०परिणाम का कारण स्वीकृत किये बिना स्वयं परिणाम नहीं हो सकता और परिणाम को स्वीकृत किया जाए तो 'अद्वैतवाद' समाप्त हो जाएगा। अद्वैतवादोऽ-परिणामभृत्। (जयो० २६/८६)

अपरिणीता (स्त्री०) अविवाहिता कन्या।

अपरिवर्तमान (पुं०) विशुद्ध परिणाम, प्रति समय वर्धमान, हीनमान, संक्लेश तथा विशुद्ध परिणामों को अपरिवर्तमान कहा जाता है।

अपरिश्राविन् (वि०) १. दूसरों के दोषों को न कहने वाला, २. कर्मास्रव से रहित अयोग केवली।

अपरिसंख्यानं (नपुं०) असीमता, अपरिमित, असंख्यता, अपरिहरणीय।

अपरिहारभृता (वि०) अपरिहरणीय, निषेधयनीय। (वीरो० ६/३६)

अपरीक्षित (वि०) १. अप्रमाणित, अविचारित, विचार रहित, मूर्खतायुक्त। २. अपवाद् विशेष की प्रवृत्ति।

अपरीक्षिन् (वि०) अविचरित, अप्रमाणित, योग्यायोग्य की परीक्षा रहित।

अपरुष (वि०) कुरूप, विरूपता जन्य, अशोभनीय।

अपरेद्यु: (अव्य०) [अपर+एद्युस्] अगले दिन, दूसरे दिन, अन्य दिवस।

अपरोक्ष (वि०) दृश्य, प्रत्यक्ष। ०आत्मगत ज्ञान, ०आत्म दृष्टि।

अपरोचमान (वि०) अरुचिकर, अनुकूलता रहित। आत्मनेऽपरोचमानमन्यस्मै नाऽऽचरेत् पुमान्। (सुद० १२५)

अपरोध: (वि०) [अप+रुध्+घञ्] निषेध, वर्जन।

अपर्ण (वि०) पर्ण विहीन, पत्रविहीन।

अपर्णा (स्त्री०) नाम विशेष, पार्वतीनाम, दुर्गा नाम।

अपर्याप्त (वि०) ०अपूर्ण, ०पूर्णता रहित, ०यथेष्ट शून्य, ०असीमित, ०अयोग्य, असमर्थ।

अपर्याप्त: (पुं०) यथायोग्य पर्याप्ति का अभाव अपर्याप्त है।

अपर्याप्तनाम: (पुं०) जीव यथायोग्य पर्याप्तियों को पूर्ण न कर सके।

अपर्याप्ति: (स्त्री०) [नञ्+परि+आप्+क्तिन्] १. अयोग्य, अपूर्ण, यथेष्टशून्य। २. अपर्याप्तीनार्धनिष्पन्नावस्था अपर्याप्ति:। (धव०पु०१ वृ० २५७) पर्याप्तियों की अपूर्णता या अर्धपूर्णता।

अपर्याप्तिनाम: (पुं०) छ: पर्याप्तियों के अभाव का कारण।

अपर्याय (वि०) परिवर्तन/परावर्तन रहित, क्रम रहित

अपर्युषित (वि०) [नञ्+परि+वस्+क्त] नूतन, नवीन, अद्यतन नि:सृत।

अपर्वन् (वि०) अनुपयुक्त समय, पर्व से भिन्न। ०गांठ का अभाव, ०एक समानता।

अपल (वि०) [नञ्+पल] मांस रहित।

अपलज्जा (वि०) निर्लज्जता, सङ्कोचता रहित, लज्जाविहीना। (जयो० १७/२०) लज्जाऽपलज्जा भवतीव कान्त।

अपलपनं (नपुं०) [अप+लप्+ल्युट्] मुखरी, वाचाल, मुकरना, मेटना, टाल-मटोल करना, मुकरना।

अपलाप: (पुं०) [अप+लप्+घञ्] वाचाल, मेटना, मुकरना।

अपलाप: (पुं०) [अप+लप्+घञ्] अन्य का कथन, दूसरे का कथन। कस्यचित्सकाशे श्रुतमधीत्यान्यो गुरुरित्यभिधानम-पलाप:। (भ०आ०टी० ११३)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अपलापिन् (वि०) [अप+लप्+णिनि] छिपाने वाला, मेटने वाला।

अपलाषिका (स्त्री०) [अप+लष्-ण्वुल-स्त्रियां टाप्] अत्यधिक प्यासा अतिभिलाषी।

अपलाषिन् (वि०) [अप+लष्+णिनि] प्यासा, इच्छुक, अभिलषित।

अपवन (वि०) वायु विहीन, पवन शून्य। ०प्रशान्त भाव युक्त, ०शान्त वातावरण।

अपवनं (नपुं०) उपवन, उद्यान, बगीचा।

अपवरक: (पुं०) [अप+वृ+वुन्+घञ्] वातायन, शयनागार, आभ्यन्तर कक्ष।

अपवरणं (नपुं०) [अप+वृ+ल्युट्] आच्छादन, पर्दा, आवरण।

अपवर्ग: (पुं०) [अप+वृज्+घञ्] मोक्ष (सुद० ११२) १. मुक्ति-अथाऽ पवर्ग-परिणामपण्डिते। (जयो० ३/२०), २. नि:श्रेयस्-मृदुनिश्रेयसेऽपवर्ग रूपे। (जयो० वृ० १२/२८), ३. मोक्ष-अपवर्ग प्रतिवददिव ताभि:। (जयो० १२/१०८) स्वर्गापवर्गाद्यभिधानशस्य। (जयो० २/६) अपवृज्यते उच्छिद्यन्ते जाति-जरामरणादयो दोषा अस्मिन्नित्यपवर्ग: मोक्ष:। (जैन०ल०पृ० ९८)

अपवर्ग: (पुं०) [अप+वृज्+घञ्] समाप्ति, पूर्ति, पूर्णता, निष्पन्नता, उपहार, त्याग, विसर्जन।

अपवर्ग-पथ: (पुं०) [अप+वृज्+पथ+घञ्] मोक्षमार्ग, मुक्तिपथ। नापवर्गपथि चोपयोगिनी। (जयो० २/८८)

अपवर्ग-परिणाम: (पुं०) मोक्षभाव। (जयो० ३/२०)

अपवर्गप्रतिपत्ति: (स्त्री०) मोक्ष पुरुषार्थ की भावना, मुक्ति का ज्ञान। यस्यापवर्गप्रतिपत्तिमत्त्वं। (जयो० १/२४)

अपवर्गप्रतिपत्तिमत्त्व (वि०) मोक्ष पुरुषार्थज्ञता। (जयो० १/२४)

अपवर्गमयी (वि०) अपवर्ग/मुक्ति का सेवन करने वाला। अपवर्गमयी साधो। (हित सं० ७)

अपवर्जनं (नपुं०) [अप+वृज्+ल्युट्] छोड़ना, त्याग, विसर्जन।

अपवर्त: (पुं०) [अप+वृत्+घञ्] १. निकालना, दूर करना, हटाना। २. आयु स्थिति में कमी। ह्रासोऽपवर्त:। (त०वा० २/५३)

अपवर्तनं (नपुं०) [अप+वृत्+ल्युट्] १. स्थानान्तरण, हटाना, त्यागना, दूर करना, वञ्चित रखना। २. अपनी प्रकृति में ही स्थिति कम करना या अन्य प्रकृति में उस स्थिति को ले जाना।

अपवर्तना (स्त्री०) [अप+वृत्+टाप्] अपकर्षण, कुछ किया जाना।

अपवाद: (पुं०) [अप+वद्+घञ्] निन्दा-भिया चैव जनापवाद:। (जयो० १/६७) लोकापवाद-(जयो० वृ० १/६७) **क्षीणता, कृशता**-बभूव यस्या उदरेऽपवाद:। निन्दापरिणामोऽथवा। (वीरो० ३/२३) नास्तीति वादो लोकोक्तिर्बभूव। यथायोग्य विशेषता भी अर्थ है। (वीरो० वृ० ३/२३)

अपवादित (वि०) निन्दा करने वाला, दोषभाव लगाने वाला। निरौष्ठ्यकाव्येपवादिता तु। (सुद० १/३३)

अपवारित (वि०) (भूतकालिक कृदन्त) [अप+वृ+णिच्+क्त] छिपा हुआ, आच्छादित।

अपवाह: (पुं०) [अप+व्यध्+घञ्] हटाना, अलग करना, पृथक् करना।

अपविघ्न (वि०) बाधा रहित, निर्विघ्न।

अपवित्व (वि०) ०पवनाभाव, ०पक्षी अभाव। अपगता विनष्टा वय: पक्षिणो यत्र स अपविस्तस्याभाव: अपवित्वम् अथवा न विद्यते यस्य पवनस्य निरवकाशो यत्र तस्य भाव:।'' (जयो० १४/४० वृ० ६८४ के नीचे)

अपविद्ध (वि०) [अप+व्यध्+क्त] ०त्यक्त, ०परित्यक्त, ०छोड़ा गया, ०मुक्त, ०उपेक्षित, ०अस्वीकृत, ०विहीन, ०अभाव।

अपविद्या (स्त्री०) माया, ०अविद्या, ०अज्ञान, ०अध्यात्माभाव। ०कुविधा खोटा ज्ञान।

अप-वीण (वि०) वीणाशून्य।

अपवेदनार्थ (वि०) निराकरणार्थ, खेदशमनार्थ, श्रमश्रान्तार्थ। (जयो० १३/८५)

अपवृक्ति: (स्त्री०) [अप+वृज्+क्तिन्] पूर्ति, सम्पर्णता, निष्पत्ति।

अपवृत्ति: (स्त्री०) [अप+वृत्+क्तिन्] वृत्ति रहित, ०आजीविका रहित, ०श्रम रहित, ०उपार्जन रहित, ०धनोपार्जन विहीन। नवीक्ष्यते योऽपिजनोऽपवृत्ति:। (समु० ६/८)

अपवृत्ति: (स्त्री०) [अप+वृत्+क्तिन्] अन्त, समाप्ति, पूर्णता, निष्पन्नता।

अपवृत्ति: (स्त्री०) १. जल युक्त, वारि सम्पन्न, जलवति। पतञ्जले मन्दकलेन, २. भूतलेऽपवृत्तिराप्तान्य दृश: किलामले। (जयो० १२/१३१) कवि ने 'अपवृत्ति' के दो अर्थ किए हैं-जलवति और जलपान। दोनों ही श्लोक के भाव को स्पष्ट करते हैं।

अपवृद्धि (स्त्री०) अनन्त गुणित हानि रूप परिणाम।

अपव्यय: (नपुं०) अधिक खर्च, व्यर्थ-व्यय निष्प्रयोजन खर्च।

अपशकुनं (नपुं) अनर्थ सूचक संदेश, खोटा शकुन।

अपशङ्क (वि०) नि:शङ्क, शङ्कारहित, आशङ्का मुक्त।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अपशब्दः (पुं०) ०दुर्वचन, ०निन्दा, ०अविनीत वचन, ०ग्राम्य प्रयोग, असभ्यव्यवहार। ०दुष्ट वचन, ०अभद्र व्यवहार।

अपशिरस् (वि०) [अपगतं शिरः] ०शिर हीन, ०छिन्न शिर वाला।

अपशुच् (वि०) शोक रहित, आकुलता विहीन।

अपशैत्य (वि०) उष्णत्व, स्फूर्तिसत्करण। यथापशैत्यं जयराट् स तेन। (जयो० १७/३७)

अपर्शमन् (पुं०) [अप+शृ+मनिन्] ०लज्जाविहीन, ०प्रसन्नता का अभाव, ०आनन्दाभाव। (जयो० २/१९) अपगतं शर्म येषु तेषु तथा भूतेषु सत्सु तानि। (जयो० वृ० २/१९)

अपश्चिम (वि०) ०सर्वप्रथम, ०अन्तिम, ०जिसके पीछे अन्य कोई न हो। (जयो० १८/४३) 'संसूयते तनयरत्नमपश्चिमातः।'

अपश्रयः (पुं०) [अप+श्रिय+अज्] उपधान, तकिया।

अपश्रम (वि०) सम्पन्न, समाप्त। अपूर्वमानन्दमगान्मनोरमा- सुदर्शनाख्यानकयोरपश्रमात्। (सुद० ३/४८)

अपश्री (वि०) श्री विहीन, शोभा रहित।

अपष्ठं (नपुं०) [अप+स्था+क] अंकुश की नोक।

अपष्ठु (वि०) [अप+स्था+कु] विरुक्त, विपरीत, प्रतिकूल।

अपष्ठुर (वि०) विरुद्ध, विपरीत।

अपसदः (पुं०) [अप+सद्+अच्] बहिष्कृत, च्युत, पतित।

अपसरः [अप+सृ+अच्] पलायन, प्रस्थान, अनुगमन।

अपसरणं (नपुं०) [अप+सृ+ल्युट्] उत्सर्ग, त्याग, विसर्जन।

अपसृ (अक०) [अप+सृ] दूर होना, हटना, अलग होना। (जयो० १३/१३ किमु वर्त्मविरोधिनो जना अधुना चापसेरत् चैकतः। (जयो० १८/१३ अपसरेत्-एकपार्श्वे स्थितो भवेत्।

अपसर्पः (पुं०) [अप+सृप्+ण्वुल्] गुप्तचर, जासूस।

अपसर्पणं (नपुं०) [अप+सृप्+ल्युट्] ०लौटना, ०पीछे आना, ०दूर होना, ०पलायन। दर्पोऽपसर्पणमगात्स्विदनन्यगत्या। (सुद० ८०)

अपसव्य (वि०) विरुद्ध, विपरीत।

अपसव्यम् (अव्य०) दाईं ओर, दाहिनी ओर।

अपसारः (पुं०) [अप+सृ+घञ्] लौटना, बाहर जाना।

अपसारणं (नपुं०) हांकना, निकालना, बाहर करना।

अपसिद्धान्त (वि०) सिद्धान्त च्युत, भ्रमयुक्त। ०नियम विरुद्ध

अपसृप्तिः (स्त्री०) [अप+सृप्+क्तिन्] दूर जाना।

अपस्करः (पुं०) [अप+कृ] विष्ठा, मल।

अपस्कारः (पुं०) रोग विशेष, मल-मूत्र रोग। (जयो० १९/७६) ''णमो आमोसहिपत्ताणं-'' यह 'अपस्कार' रोग को दूर करने वाला मन्त्र है।

अपस्मारः (पुं०) मिरगी रोग, मूर्छा रोग। णमो मणवलीणं चापस्मारपरिहारभृत्। 'णमो मणवलीणं' इदं पदमपस्मारस्य नाम मृग्युन्मादेर्मलोविकारस्य परिहार भृद् भवति। (जयो० वृ० १९/७९)

अपस्मारिन् (वि०) [अप+स्मृ+णिनि] मिरगी/मूर्छा रोग से पीड़ित।

अपस्मृति (वि०) विस्मरणशील, स्मृति विहीन।

अपसृ (सक०) [अप+सृ] चुराना, अपहरण करना। (जयो० ६/३४)

अपह (वि०) [अप+हा+ड] ०दूर हटाना, ०नष्ट करना, ०क्षय करना।

अपहतिः (स्त्री०) [अप+हन्+क्तिन्] ०क्षय करना, ०नाश करना, ०दूर हटाना।

अपहननं (नपुं०) [अप+हन+ल्युट्] दूर करना, निवारण करना।

अपहरणं (नपुं०) [अप+हृ+ल्युट्] छीनना, चुराना, बलपूर्वक ले जाना। (सुद० ९२)

अपहसित (वि०) अट्टहास करना, अकारण हंसी।

अपहस्तित (वि०) [अप+हस्त+इतच्] ०परित्याज्य, त्याज्य, ०छोड़ा गया। त्याग, छोड़ देना, निकालना।

अपहानिः (स्त्री०)

अपहारः (पुं०) [अप+हृ+घञ्] निरादर। (जयो० ५/९७) चुराना, ०छिपाना, ०दूर ले जाना, ०अपहरण करना। (समु० ४/१२) ०अपहरण करना। कुतोऽपहारो द्रविणस्य दृश्यते तथोपहारः स्ववचः प्रपश्यते। (वीरो० ९/१५)

अपहारिन् (वि०) अपहरण करने वाला। (सुद० २/२३) निवारक (जयो० १९/४५)

अपहृ (सक) [अप+हृ] ०अपहरण करना, ०आधीन करना, ०शान्त करना। (वीरो० १९/४०) जिनामवापजहार शुद्धचित्। दर्शकैरपि परैरपहर्तुम्। (वीरो० ७/१३) (जयो० ५/२) श्रमं लुनीतेऽपहरति। (जयो० वृ० ८/८२) उक्त पंक्ति में अपहरति का अर्थ शान्ति करना भी है। दृष्ट्या याऽपहरेन्मनोऽपि। (सुद० १०२) दृष्टि से तो मनुष्य मन को हर लेता है। वश में कर लेता है। प्राह भो प्रतिभवा- भ्यपहर्तुम्। (जयो० ४/२९)

अपहृत (वि०) तोड़ लिया, ले लिया, विनाश किया। गणनातिगैः सहायस्यूतीत्यपहृता जनैर्वनस्य भूमि। (जयो० १४/२८) भूतिः सम्पत्तिरपहृता विनाशं लीला। (जयो० १४/२८)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अपहृषः (पुं०) [अप+हृषु+अप्] ०छिपाना, ०गुप्त रखना, ०अपनी भावना व्यक्त न करना।

अपह्रिय (वि०) निर्लज्ज, अपत्रप। (जयो० ९/७५)

अपह्नवोऽलंकारः (पुं०) जिसमें सत्य को छिपाया जाता है। (जयो० २६/५९, ६१, ६४, ६५-६६)

मणसा वचसा च कर्मणाऽर्चनमिन्दुः। परिपूर्य शर्मणः।
त्रिगुणं वपुराप्य घूर्णते क्षयजिच्छत्रतया जगत्पतेः।।
(जयो० २६/६१)

अपह्नुतिः (स्त्री०) [अप+ह्नु+क्तिन्] १. सत्य को छिपाना, असत्य की स्थापना। २. अपह्नुतिरलंकार-एक अलंकार-इसमें दो वस्तुओं में साधर्म्य होने के कारण एक को छिपाकर कहा जाता है कि 'अमुक वस्तु यह नहीं है', अपितु यह है। नैतदेतदिदं ह्येतदित्यपह्नपूर्वकम्। उच्यते यत्र सादृश्यादयह्नुतिरियं यथा। (वाग्भटालङ्कार-४/८५) (जयो० ३/४९, २१/१५, २/५४, वीरो० ६/३७)

मुहुर्मद्रङ्गिभिरङ्ग यत्र भ्रश्यद्रजाः श्रीस्थलपद्म आस्ते। समुद्वमन् सन् हुतभक्कणान् स शाणोपलः स्मारशिलीमुखानाम्।। (जयो० २४/१११) वायु के झोंको के कारण बार-बार पराग गिर रहा है, ऐसा शोभायमान गुलाब वहीं अग्नि-कणों को उगलने वाला कामदेव के बाणों को क्षीण करने का शाणोपलमसांण ही है।

अपह्रासः (पुं०) [अप+ह्रास्+घञ्] ०घटना, ०कम करना, ०क्षीण करना, ०क्षय करना।

अपाकः (पुं०) १. अपच, २. अजीर्ण, ३. अपरिपभव,

अपाकरणं (नपुं०) [अप+आ+कृ+ल्युट्] ०निराकरण, ०हटाना, ०समेटना, ०दूर करना। द्रुतं पुराऽऽप्त्वा वसतिं मनोज्ञामापात्य-कापाकरणाकुलेन। (जयो० १३/८२)

अपाकर्मन् (नपुं०) [अप+आ+कृ+मनिन्] चुकता करना।

अपाकर्षम् (वि०) हटा लेना। (जयो० ६/९०)

अपाकृतिः (स्त्री०) [अप+आ+कृ+क्तिन्] अस्वीकृति, संवेग, भयाकृति।

अपाक्ष (वि०) [अपनतः अक्षमिन्द्रियम्] १. विद्यमान, ०प्रत्यक्ष, वर्तमान, अद्यतन। ३. नेत्रहीन।

अपाङ्क्त (वि०) बहिष्कृत, पंक्ति में बैठने का अधिकारी नहीं।

अपाङ्ग (पुं०) [अपाङ्गतिर्यक् चलति नेत्रं यत्र अप+अङ्ग+घञ्] १. कटाक्ष, नेत्रप्रान्त, आंख का कोर, नेत्र का बाहर भाग। २. कामदेव, मदन, प्रेमदेव। प्रणयविकाशविदः पुनरपाङ्गम-यगोभिरुचितचित्त हृतः। (जयो० १५/८६) कवि ने उक्त पंक्ति में 'अपाङ्ग' के दो अर्थ है-१. कटाक्ष और २. काम/कामदेव/मद। तथापाङ्गो मदनः पक्षेऽपाङ्गाः नेत्रप्रान्ताः। (जयो० वृ० १५/८६) जयोदय के तृतीयसर्ग में 'अपाङ्ग' का अर्थ हीन अङ्ग भी किया है। हीनानामपाङ्गानाञ्च। (जयो० वृ० ३/६)

अपाङ्ग दर्शनं (नपुं०) तिर्यक् दृष्टि।

अपाङ्गदृष्टिः (स्त्री०) तिर्यक् दृष्टि, तिरछी चितवन।

अपाङ्गदेशः (पुं०) नेत्रप्रान्त।

अपाङ्गशरं (नपुं०) कटाक्ष-बाण, सा तस्या अपाङ्गशरसंहतिरप्यशेषा। (सुद० १२३) यस्या अपाङ्गशर-संकलितो जिनेशः।

अपाङ्गसम्पदा (स्त्री०) कटाक्ष सम्पत्ति, कटाक्ष विक्षेप सम्पदा। धृत आसीत्तदपाङ्गसम्पदा। (सुद० ३४)

अपाच् (वि०) [अपाञ्चति+अञ्च् क्विप्] पीछे की ओर जाने वाला, पश्चिमी।

अपाची (स्त्री०) [अप+अञ्च्+क्विन् स्त्रियां ङीप्] दक्षिण या पश्चिम दिशा।

अपाचीन (वि०) [अपाची+ख] पीछे स्थित, पश्चिमी, दक्षिणी।

अपाच्य (वि०) [अपाची+यत्] पश्चिमी या दक्षिणी।

अपाणनीय (वि०) पाणनीय-व्याकरण की सिद्धि का अभाव।

अपात्रं (नपुं०) १. अयोग्य, ०अनधिकारी व्यक्ति, ०अयोग्य बर्तन। (दयो० ११८) जघन्यमन्य एताभ्यामपात्रं त्वतिगर्हितम्। (दयो० ११८

अपादानं (नपुं०) [अप+आ+दा+ल्युट्] (जयो० १९/९३) अपसरण ले जाना। * पञ्चमी विभक्ति-पृथक् होने के योग।

अपादान-विहीन (वि०) कुत्सित आजीविका रहित, व्याकरण विहितादपदान कारणविहीना (जयो० १९/९३)

अपाध्वन् (पुं०) [अपकृष्टा, अध्वा] कुमार्ग, कुपथ।

अपानः (पुं०) श्वास लेने की क्रिया। ०निःश्वास लक्षण आत्मना बाह्यो वायुरभ्यन्तरीक्रियमाणो निःश्वासलक्षणोऽपानः। (स०सि०५/१९)

अपानृत (वि०) मिथ्या रहित, सत्य।

अपाप (वि०) ०निष्पाप, ०निर्दोष, ०कुटिलता रहित, ०पापाचाररहित ०सरलहृदय। (जयो० २४/१२३, २२/२४) वायुनाङ्घ्रिप इवायमपापः। (जयो० ४/२२) प्रसञ्चरन् वात इवाप्यपापः। (सुद० ११९)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अपापिन् (वि०) क्षण निष्पापी, पुण्यात्मा, पापवर्जित। (जयो० २७/४७) (सम्य० ९८) 'कलङ्कयेन्मज्जनतोऽप्यपापिन्।'

अपामार्गः (पुं०) [अप+मृज्+घञ्] अद्धाझारा, एक जड़ी बूटी, चिचड़ा।

अपामार्जनं (नपुं०) [अप+मृज्+ल्युट्] शुद्धिकरण, प्रमार्जन।

अपायः (पुं०) [अप+इ+अच्] अभाव, नाश, लोप, हानि, संहार, विनाश, अदृश्य। "लताङ्गि ते जातु न वास्त्वपायः।" (जयो० १७/२२) उक्ति पंक्ति में 'अपाय' का अर्थ हानि है। 'केशरेण सार्धं विसृजेयं पादयोर्जिनमुद्रायाः, न सन्तु कुतश्चापायाः। (सुद० ७१) उक्त पंक्ति में 'अपाय' का अर्थ विनष्ट या विनाश है। पापानि वापायभियोद्गिरन्तः। (जयो० १/८२) अपायस्य प्रत्यवायस्य। (जयो० वृ० १/७२) उसकी थकान से मेरा मन आकुलता का अनुभव कर रहा है।

अपायः (पुं०) अभ्युदय और निःश्रेयस की सांधक क्रियाओं का विनाशक प्रयोग। अभ्युदय-निःश्रेयसार्थानां क्रियाणां विनाशक प्रयोगोऽपायः। (स०सि०७/९) अपाय को अवाय भी कहते हैं। भाषादि विशेष के ज्ञान से यथार्थरूप जानने का नाम अपाय/अवाय है। दार्शनिक दृष्टि यही कथन किया जाता है कि-यह दक्षिणी युवक है, यह पश्चिमी।

अपाययुक्त (वि०) भयभीत, व्यपायि। (जयो० वृ० २/१३५)

अपायविचयः (पुं०) धर्मध्यान का एक भेद-यह संसारी जीव अपने ही किए हुए कुकर्मों के द्वारा किस प्रकार की आपत्तियों में पड़ता है इत्यादि विचार का नाम अपाय विचय है। (समु०वृ० १०३) "सन्मार्गापायचिन्तनमपाविचयः'। (त०वा०९/३६) असन्मार्गापायसमाधानं वा। जिनमत के कल्याणकारक-सम्यग्दर्शन, ज्ञान और चारित्र का चिन्तन अपायविचय है। स्थिति खण्डन, अनुभाग खण्डन, उत्कर्षण और अपकर्षण का चिन्तन तथा जीवों के सुख-दुःख का विचार करना अपायविचय है। 'अपाय' अनुप्रेक्षा भी है-जिसमें आश्रवद्वारों से उत्पन्न अनर्थों का बार-बार विचार/अनुचिन्तन किया जाता है।

अपार (वि०) सीमा विहीन, पार न करने वाला, असमर्थ (सुद० २/१६)

अपारयन् (वि०) पार को प्राप्त नहीं हुआ, असमर्थ "परिपातुमपारयश्च सोऽङ्करुपामृतमद्भुतं दृशो।। (सुद० ३/९) "अपारयन् वेदनयान्वितत्वाच्चिक्षेप ता मूर्ध्नि विधिर्महत्त्वात्। (जयो० १/५९)

अपार्ण (वि०) [अप+अर्द्+क्त] दूरस्थ, दूरवर्ती, निकटस्थ।

अपार्थ (वि०) [अपगतः अर्थः यस्मात्] अकल्याणकर, निरर्थक, अर्थहीन। शिशोरिवान्यस्य वचोऽस्त्वपार्थं। (जयो० २६/७४)

अपार्थक (वि०) ०अकल्याणकर, ०निरर्थक, ०अर्थहीन, ०असबद्ध अर्थ।

अपार्य (वि०) दुरभिप्रायः। (जयो० १६/६९)

अपावरणं (नपुं०) [अप+आ+वृ+ल्युट्] उद्घाटन, गोपन, लपेटना, छिपाना।

अपावर्तनं (स्त्री०) [अप+आ+वृत्+ल्युट्] अपकर्षण, परावर्तन, लौटना।

अपावृत्तिः (स्त्री०) [अप+आ+वृत्+क्तिन्] परावर्तन, अपकर्षण, लौटना।

अपाश्रय (वि०) आश्रयहीन, निरवलंब, असहाय।

अपाश्रयः (पुं०) शरण, सहारा।

अपांशु (वि०) निष्प्रभ, प्रभा हीन, किरण रहित, आभाविहीन। 'तद्योगयुक्त्या निवहेदपांशु"। (जयो० २७/४२) "अपगता अंशवः किरणा यस्मात्तथाभूतं निष्प्रभमित्यर्थः।" (जयो० वृ० २७/४२)

अपासंगः (पुं०) [अप+आ+संज्+घञ्] तरकस।

अपासनं (नपुं०) [अप+अस्+ल्युट्] समाप्त करना, हटाना, फेंकना, दूर करना।

अपासरणं (नपुं०) [अप+आ+सृ+ल्युट्] लौटना, दूर हटना, विदाई।

अपासु (वि०) निर्जीव, मृत, मरा हुआ, चेतना शून्य।

अपास्त (वि०) ०विनष्ट, ०क्षयगत ०गिरी हुई। अपास्तमाल्यं च्युतयावकाधरं। (जयो० १४/८२)

अपि (अव्य०) भी, एवं, पुनश्च, इसके अतिरिक्त, और भी, तथापि तो भी, बहुधा, प्रायः, संभावना आदि। 'अपि तु फलत्येवेति काकुः।' (जयो० २७/४) 'लावण्याङ्कोऽपि मधुरतनुः।' 'लावण्य का घर होकर भी मधुर है। 'विलसति सर्वतोऽपि मे' अपि इस प्रकार या 'एवं' को व्यक्त कर रहा है। 'नैव जात्वपि स दूषणतायाः' दूषणता का कदाचित् भी लेश नहीं है। आत्मानं सततं रक्षेद् दारैरपि धनैरपि। (जयो० २/४) श्रूयते हस्ति-हन्तापि। (दयो० वृ० ४६) अपि तु भवत्येवेति। (जयो० वृ० ५/१०४) अपिशब्दोऽवच्छेदार्थो वर्तते। (जयो० ८/७८) शरोऽपि नाम्नाऽवरोऽथ जीत्या बभूव भूत्याः प्रसरः प्रतीत्या। (जयो० ८/७८)

अपि च (अव्य०) और भी। (जयो०

अपि तु (अव्य०) और तो, फिर तो।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अपिगीर्ण (वि०) [अपि+गृ+क्त] कथित, प्रतिपादित, व्यक्त, अर्चित, ज्ञेय।

अपिच्छिल (वि०) स्वच्छ, गहरा।

अपितृक (वि०) पितृविहीन।

अपित्र्यः (वि०) अपैतृक।

अपिधानं (नपुं०) [अपि+धा+ल्युट्] ढकना, आवरण।

अपिव्रत (वि०) व्रत में सहभागी।

अपिहित (वि०) [अपि+धा+क्त] बंद, आच्छादित, आवरण युक्त।

अपीतिः (स्त्री०) [अपि+इ+क्तिन्] ०प्रवेश, ०उपागम, ०विघटन, ०नाश, ०बाधाकारक। ''सपदि सोऽहमपीति-कथाश्रितः''। (जयो० २५/७८)

अपीति-कथा (स्त्री०) बाधाकारकवार्ता। (जयो० वृ० २५/७८)

अपीनसः (पुं०) जुकाम, नजला, सर्दी।

अपुत्रः (पुं०) पुत्र-अभाव।

अपुनर् (अव्य०) एक बार ही, फिर नहीं, सदा के लिए।

अपुष्ट (वि०) दुबला, निर्बल, क्षीण देह, कृश शरीर।

अपुष्पता (वि०) नहीं खिला हुआ।

अपूपः (पुं०) [न पूयते विशीर्यते] माल पुआ, मिष्ट एवं स्वादिष्ट खाद्य पुड़ी।

अपूपीय (वि०) आटा, भोजन।

अपूर्ण (वि०) अधूरा, असम्पन्न।

अपूती (वि०) अपवित्रता, कुवासनाजन्य। (समु० ३/२१)

अपूतीङ्गित्त (वि०) कुचेष्टायुक्त। (समु० ३/२१)

अपूर्व (वि०) ०अनन्य, ०अद्वितीय, ०असाधारण, ०अद्‌भुत, ०अभूतपूर्व, ०अनिर्वचनीय, ०अलौकिक। (सुद० ३/४८)

अनन्य-अपूर्वेषामनन्यसदृशानाम्। (जयो० वृ० १/२)

अद्‌भुत-अपूर्वा छटा। (जयो० वृ० ३/१६)

सुन्दर-अपूर्वरूपाम्बुधितोऽपि। (जयो० ५/९३)

अनिर्वचनीय-श्रियोऽप्यपूर्वा इह सञ्जयन्तु। (जयो० ११/३८)

अद्वितीय-चरिष्णु सदृशोऽप्यपूर्वाम्। (जयो० ११/४)

अलौकिक-प्रियामलब्धपूर्वामिन् सुन्दरीं श्रिया। (जयो० २३/११)

अकार-सहित-पुनरकारः पूर्वस्मिन् यस्यास्तामपूर्वाम्। (जयो० वृ० १६/४९)

अनुपम-बभौ पुरं पूर्वमपूर्वमेतत्। (सुद० १/२५)

अपूर्वकरणं (नपुं०) १. इन्द्रिय रहित, योग्य कार्य रहित। २. अपूर्वकरण-पृथक्त्व वितर्क विचार नामक शुक्लध्यान से अपूर्वकरण नामक अष्ठम् गुणस्थान। ''आत्मानं अपूर्व अकारः पूर्वस्मिन् यस्य तत्करणं अकरणं करणैरिन्द्रियैरहित मतीन्द्रिय कृतकृत्यं वा। (जयो० वृ० २८/१७) अपूर्वकरण गुणस्थान है, इसमें स्थितिघात, रसघात, गुणश्रेणि और स्थिति बन्ध आदि के निवर्तक अपूर्व कार्य होते हैं। अपूर्वः करणो येषां भिन्नं क्षणमुपेयुषाम्। (पंच संग्रह १/३५) अपूर्वकारण परिणाम भी होते हैं-''अपूर्वाः समये समये अन्ये शुद्धतराः कारणाः यत्र तदपूर्वकरणम्'' (पं०सं० १/२८८) अपूर्वाश्च ते करणाश्चापूर्व करणाः। (धव०वृ० १८०)

अपूर्व-कल्पना (स्त्री०) नूतन कल्पना, अद्वितीय कल्पना। (जयो० वृ० ३/११५) 'नवा नवा नूतना नूतनाऽपूर्व-कल्नात्मिका'

अपूर्वकृतिः (स्त्री०) अनुपम रचना (मुनि०)

अपूर्वगुणः (पुं०) अद्‌भुत गुण, विचित्र गुण। अपूर्वा अद्‌भुता गुणाः शौर्यादयो यस्य। (जयो० वृ० ६/८४)

अपूर्वगुणवान् (वि०) अद्वितीय गुणों वाला, अनुपम गुण युक्त। अपूर्वेषामनन्यसदृशानां गुणानामुदयः। (जयो० १/२)

अपूर्वगुणोदयः (पुं०) अनन्य गुणों से समन्वित, अद्वितीय गुणों से सम्पन्न। (जयो० वृ० १/२)

अपूर्वत्व (वि०) अद्‌भुतत्व, विचित्रता, अपूर्वता, अनिर्वचनीयता। (वीरो० वृ० ३/६)

अपूर्वप्रतिमा (पुं०) ०अनन्य प्रतिमा, ०विशिष्ट प्रतिमा, ०अपूर्व प्रभाव। सक कोमलाङ्गी वलये धराया धाकोऽप्यपूर्वप्रतिमो-ऽमुकायाः। (जयो० ५/८६) अपूर्वाऽनन्यसम्भवा प्रतिमा। ०अद्वितीय बिम्ब, ०अलौकिक मूर्ति।

अपूर्वरूप (वि०) सुन्दर रूप। (जयो० ५/९३, सुद० ३/३७)

अपूर्वरूपा (वि०) अनन्य सुन्दरी, परमसुन्दरी। (जयो० ११/६२)

अपृथक् (अव्य०) साथ-साथ, एक साथ, अलग-अलग नहीं, सम्पूर्ण रूप से।

अपेक्षणं (नपुं०) [अप+ईक्ष्+ल्युट्] विचार, उल्लेख, आवश्यकता, सम्मान, समादर।

अपेक्षा (स्त्री०) सम्बन्ध, आवश्यकता, विचार, उल्लेख, (वीरो० १९/१०)

अपेक्षणीय (वि०) [अप+ईक्ष्+अनीयर्] आवश्यकता योग, आशा योग्य।

अपेक्षितव्य (वि०) आवश्यकता योग, आशा योग्य, वाञ्छनीय, इच्छुक।

अपेक्षित (वि०) इच्छुक, विचारणीय।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अपेत (भू०क्रि०) [अप+इ+क्त] ०गया हुआ, ०व्यतीत, ०विमुक्त, ०विचलित, ०विरुद्ध, ०मुक्त, ०वंचित।

अपोढ (वि०) [अप+वह्+क्त] दूर हटाया गया।

अपोहः (पुं०) [अप+वह्+घञ्] ०अभाव, ०विरोपण, ०हटाना, ०दूर करना, ०विनाश, ०असद्भाव। तर्कशक्ति विशेष। अन्यापोहतया चित्तलक्षणेऽथक्षणे स्थितिम्। (जयो० २८/२४) अपोहोऽसद्भावः। (जयो० वृ० २८/२४) अपोहनं अपोहः, अपोह्यते संशय-निबन्धन-विकल्पः अनया इति अपोहा। (धव०१३/२४२) जिससे संशय के कारणभूत विकल्प को दूर किया जाय, ऐसा ज्ञानविशेष 'अपोह' है

अपोहनं (नपुं०) [अप+वह्+ल्युट्] हटाना, व्यावर्तन।

अपोहनीय (वि०) [अप+वह्+अनीयर] ०दूर हटाने योग, ०प्रायश्चित्त योग्य, ०तर्क द्वारा स्थापित करने योग्य, ०व्यावर्तन योग्य।

अपौरुषेय (वि०) [नास्ति पौरुषं यस्मिन्] अलौकिक, पुरुषकृत नहीं, ईश्वरकृत।

अप्कायः (पुं०) जलकाय, जलशरीर। एवमापः अप्कायः। (त०वा०२/१३)

अप्कायिक (वि०) जल ही जिनका शरीर है अप्कायो विद्यते यस्य स अप्कायिकः।

अप्जीवः (पुं०) अप्काय नामकर्म के उदय से युक्त जीव। विग्रहगति प्राप्त जीव। अपः कायत्वेन यो गृहीष्यति विग्रहगति प्राप्तो जीवः सोऽप्जीवः। (जैन लक्षणावली पृ० १०३)

अप्ययः (पुं०) [अपि+इ+अच्] ०उपागमन, ०सम्मिलन, ०प्रवेश, ०अन्तर्धान।

अप्रकट (वि०) अव्यक्त, अकथित। (जयो० २/२३६) 'नूनमप्रकटरूपतो।'

अप्रकम्प (वि०) अकम्पभाव/स्थिरता युक्त 'श्री देवाद्रिवदप्रकम्प।' (सुद० ९८)

अप्रकरणं (नपुं०) ०अप्रासंगिक, ०असम्बद्ध विषय, ०प्रधानता का अभाव।

अप्रकाश (वि०) ०प्रभाहीन, ०कान्तिहीन, ०आभा रहित, ०अन्धकार युक्त, ०तिमिराछन्न, ०अप्रकट।

अप्रकृत (वि०) ०अप्रसंगिक, ०असम्बद्ध विषय, ०अप्रस्तुत, ०अप्रकरण।

अप्रगम (वि०) शीघ्रगामी, तीव्र गमनशील।

अप्रगल्भ (वि०) साहसहीन, लज्जालु।

अप्रगुण (वि०) व्याकुल, आकुल, दुःखित।

अप्रज (वि०) सन्तान हीन, अजात।

अप्रजस् (वि०) सन्तान हीन, बांझ स्त्री। बन्ध्या।

अप्रतिबद्ध (वि०) निर्मोही, अनासक्त।

अप्रतिबुद्ध (वि०) बहिरात्म जीव, आत्मा के स्वभाव को न जानने वाला।

अप्रदेश (वि०) प्रदेश रहित, एक प्रदेश मात्र। काल द्रव्य का प्रदेश है।

अप्रदेशत्व (वि०) प्रदेश विहीनता, एक प्रदेशता।

अप्रतिकर्मन् (वि०) अनिवार्य, अद्वितीयकारक।

अप्रतिकार (वि०) असहाय, सहारा हीन।

अप्रतिघातः (वि०) व्याघात रहित, बाधा रहित। एक ऋद्धि-जिसके प्रभाव से बिना किसी व्याघात के पर्वत, भित्ति आदि को पार कर जाता है।

अप्रतिचक्रं (नपुं०) अप्रतिचक्र नामक मन्त्र। "ऊँ ह्रीं अर्हं नमः" (जयो० १९/५४-५५) ओं ह्रां ह्रीं ह्रूँ, ह्रौं ह्रः असि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रो झ्रौं स्वाहा।

अप्रतिद्वन्द्व (वि०) अप्रतिरोध्य, जिसका प्रतिद्वन्द्वी न हो।

अप्रतिपक्ष (वि०) अप्रतियोगी, विपक्षशून्य, अनुपम।

अप्रतिपत्तिः (स्त्री०) ०अस्वीकृति, ०निश्चय का अभाव, ०उपेक्षा, ०अवहेलना, ०अव्यवस्था, ०विह्वलता।

अप्रतिपाति (स्त्री०) नहीं छूटने वाला। (वीरो० १०/२७)

अप्रतिबन्ध (वि०) निर्बाध, अबोध। बिना रोकटोक।

अप्रतिबल (वि०) अनुपम बलशाली, अधिक शक्ति सम्पन्न।

अप्रतिनिवृत्तिः (स्त्री०) ०सन्मार्गमपरित्यज्य ०सन्मार्ग विहीन। ०सन्मार्ग नहीं छोड़ता हुआ ०नहीं छोड़ना। नित्यशोऽप्रतिनिवृत्त्य सत्पथात्। (जयो० २/४८) अप्रतिनिवृत्त्य-अपरित्यज्य।

अप्रतिभ (वि०) १. विनीत, विनम्र, २. विवेकहीन, मंदमति।

अप्रतिभट (वि०) अप्रतिद्वन्द्वी।

अप्रतिम (वि०) अतुलनीय, अनुपम, अप्रतिद्वन्द्वी। (जयो० १६/४४)

अप्रतिमा (स्त्री०) अतुलनीय, अनुपम 'रूपं सदेवाप्रतिमच्छवित्रं'। (जयो० १६/४४) 'न विद्यते प्रतिमा प्रतिरूपं यस्याः साऽप्रतिमा।' (जयो० वृ० १६/४४)

अप्रतिरथ (वि०) अप्रतिद्वन्द्वी वीर, अनुपम योद्धा।

अप्रतिरव (वि०) निर्विरोध, निर्विवाद।

अप्रतिरूप (वि०) १. अयोग्य, अननुरूप, २. अनुपम रूप वाला।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अप्रतिलेरव (वि०) अप्रमार्जित विधि करना।

अप्रतिवीर्य (वि०) प्रबल शक्ति सम्पन्न, उत्कृष्ट शक्तिमान्।

अप्रतिशासन (वि०) अनुपम शासक, परम शासक।

अप्रतिष्ठ (वि०) अस्थिर, सुदृढ़।

अप्रतिष्ठापनं (नपुं०) दृढ़ता का अभाव, स्थिरता शून्य।

अप्रतिहत (वि०) बाधा रहित, निर्बाध, अप्रतिरोध्य।

अप्रतीत (वि०) अप्रसन्न, असंतुष्ट।

अप्रत्यक्ष (वि०) अगोचर, अदृश्य।

अप्रत्यय (वि०) आत्म विश्वास रहित, अनभिज्ञ, विश्वास नहीं करने वाला। व्यलीकिनोऽप्रत्ययसम्विघाऽत:। (समु० १/९, वृ० ८)

अप्रदक्षिणं (अव्य०) वाम ओर से दाहिनी ओर।

अप्रधान (वि०) अधीन, गौण, प्रमुखता रहित।

अप्रधृष्य (वि०) अजेय, अपराजित, जीतने में न आ सके।

अप्रभु (वि०) ०शक्तिहीन, ०अशक्त, ०असमर्थ, ०अयोग्य, ०अक्षम, ०बलहीन, ०स्वामित्व रहित।

अप्रमत्त (वि०) प्रमाद रहित, संयत/सदध्यान लीन। एकाग्रचित्त। (हि०सृ०५६)

अप्रमत्तात्मक (वि०) एकाग्रात्मा, संयतात्मा, प्रमत्तविरतात्मा। अप्रमत्तोगिरागेन हृदापि परमात्मन:। (हित०सं० वृ० ५६) गार्हस्थ्यतोऽभ्योतीतोऽपि द्वैधीभावमुपादधत्। प्रमत्तो हि भवेत् सोऽभिनन्दने परमात्मन:। (हि०सं० वृ० ५६, १४७)

अप्रमद (वि०) अप्रसन्न, दु:खित, कष्टजन्य।

अप्रमा (स्त्री०) संशय जन्य ज्ञान।

अप्रमाण (वि०) ०अविश्वस्त, ०असीमित, ०अपरिमित, ०प्रमाण की प्रस्तुति का अभाव।

अप्रमाद (वि०) ०समस्त कषायों का अभाव, ०प्रमाद रहित, ०आलस्य मुक्त, ०जागृत, ०प्रतिबुद्ध।

अप्रमादिता (वि०) प्रसन्नता, आनन्ददायक। अप्रमादितया पूर्णचन्द्रस्याह्लादकारिण:। (समु० ४/३९)

अप्रमादी (वि०) पापाचार रहित, पापाचारविहीन। स्वान्त इहाप्रमादी। (जयो० २७/५३)

अप्रमार्जनं (नपुं०) आगमोक्त विधि की उपेक्षा, विधिपूर्वक मांजना नहीं।

अप्रमेय (वि०) जिसका अच्छी तरह निश्चित न किया जा सके, या जाना जा न सके। प्रमेय विहीनता, २. अपरिमित, असीमित, असम्बद्धता।

अप्रयाणं (नपुं०) प्रस्थान न किया गया, गमन न किया गया।

अप्रयुक्त (वि०) प्रयोग रहित, अव्यहृत, त्रुटिजन्य, असामान्य, विरल।

अप्रवृत्ति: (स्त्री०) कर्त्तव्य हीन, आलस्य, प्रमादजन्यवृत्ति।

अप्रसङ्ग: (पुं०) सम्बन्ध का अभाव, अनुपयुक्त समय।

अप्रसिद्ध (वि०) अविख्यात, असामान्य, अज्ञात, अनुभव हीन।

अप्रशस्त (वि०) अयोग्य अंश, प्रशस्त/प्रशंसीनय गुण का अभाव। (जयो० वृ० १/२४, २/४४)

अप्रशस्तक (वि०) स्व विषय से अप्रशंसनीय। (जयो० २/४३) शस्तमस्तु तदुताप्रशस्तकं, व्याकरोति विषयं सदा स्वकम्।

अप्रशस्तध्यानं (नपुं०) आर्त-रौद्र स्वरूप ध्यान, पापास्रव रूप ध्यान

अप्रशस्त-निदानं (नपुं०) मान से प्रेरित इष्ट की कामना, तीर्थंकरादि की भावना।

अप्रशस्त भाव: (पुं०) अयोग्य का भाव, प्रशंसा विहीन का परिणाम।

अप्रशस्तराग: (पुं०) विकथाओं के प्रति आसक्ति।

अप्रशस्त-वात्सल्य: (पुं०) अवसन्न के प्रति प्रीति, दु:ख के प्रति अनुराग, परित्यक्त के प्रति वात्सल्य।

अप्रशस्त विहायोगति: (स्त्री०) निन्द्यनीय गमन।

अप्रस्ताविक (वि०) असमर्थक, असंगत, अप्रसांगिक, आकस्मिक, मूढजन्य।

अप्रस्तुत (वि०) अप्रासङ्किकता, असंगत। (जयो० १६/४२) ''अप्रस्तुतत्त्वात्सुदृशां सदङ्गे।'

अप्रहत (वि०) परतभूमि, खनन मुक्त क्षेत्र।

अप्राक् (वि०) अपूर्व, अद्वितीय, अनुपम। 'न प्राग्भवन्निति अप्राक्।' (जयो० वृ० १/५६) 'तत स्तद प्राक्सुकृतैकजाति:' (जयो० १/५६)

अप्राकरणिक (वि०) प्रकरण विहीन, अप्रासंगिक, असंगत।

अप्राकृत (वि०) १. असाधारण, २. विशेष, ३. जो पूर्वकृत न हो, मौलिकता का अभाव।

अप्राख्य (वि०) अविख्यात, अप्रधान, गौण, अप्रसिद्ध।

अप्राणक (वि०) प्राणवर्जित, चेतनाशून्य। अप्राणकै: प्राणभृतां प्रतीकै:। (जयो० ८/३७)

अप्राप्त (वि०) अनुपलब्ध, प्राप्ति से परे।

अप्राप्ति: (स्त्री०) अनुपलब्धि, न मिलना, सुलभ नहीं।

अप्रामाणिक (वि०) मान्यता रहित, मूल्य विहीन, अयुक्तियुक्त, अविश्वसनीय।

अप्रामाण्य (वि०) यथार्थता का अभाव।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अप्रिय (वि०) अस्निग्ध, स्नेहरहित, अरुचिकर। प्रियोऽप्रियोऽथवा स्त्रीणां कश्चनापि न विद्यते। (जयो० २/१४७)

अप्रासुकता (वि०) सजीवता, प्रासुकता का अभाव। (वीरो० १६/२४)

अप्रियकर (वि०) अरुचिकर, निष्ठुर, कठोर।

अप्रियकारी (वि०) निष्ठुर/कठोर भाषी, अहित भाषी, अमृदुभाषी।

अप्रिय-वचनं (नपुं०) विरोध जन्य वचन। अरतिकरं भीतिकरं खेदकरं वैर-शोक-कलहकरम्। यदपरमपि तापकरं परस्य तत्सर्वमप्रियं ज्ञेयम्।। (पुरुषार्थसिद्ध्युपाय ९८)

अप्रीतिः (स्त्री०) स्नेहशून्य, अरुचि। प्रायः प्राग्भव-भाविन्यौ प्रीतत्यप्रीती च देहिनाम्। (सुद० ४/१६)

अप्रीतिदायक (वि०) अरतिकर, अरुचिकर, अप्रसन्नता उत्पादक। (जयो० वृ० ३/१२)

अप्रौढ़ (वि०) भीरु, असाहसी, अवयस्क।

अप्लुत् (वि०) ध्वनि विशेष, वह स्वर जो दीर्घ न किया जा सके।

अप्सरस् (स्त्री०) [अद्भ्यः सरन्ति, उद्गच्छन्ति-अप्+सृ+असुन्] अप्सरा, स्वर्वेश्या, स्वर्गसुन्दरी, इन्द्रनर्तकी। जलक्रीड़ा रुचिकरा। (वीरो० २/१०) (जयो० वृ० ३/७९) "इय मप्सरसामिवाधिका।" (समु २/१७) "अपां जलानां सरस्सु स्थानेषु विचरन्ति" अर्थात् जो जल/जलक्रीडा स्थानों में विचरण करती है। ग्रामान् पवित्राप्सरसोऽप्यनेक। (सुद० १/०)

अप्सरः सारमयी (वि०) १. स्वर्ग सुन्दरियों में श्रेष्ठतम्-त्वं पुनरप्सरसां स्वर्गवेश्यानां सारमयी। (जयो० वृ० १६/१५) २. जलयुक्त सरोवरों में श्रेष्ठतम अप्सरसां जलयुक्तसरोवराणां।

अप्सरोमयी (वि०) १. स्वर्ग की अप्सरा रूपवाली। २. जल के सरोवर रूपवाली। "स्वर्गीयवेश्यास दृशायां सरोमयी चाराच्छीघ्रमेवाभूत्।' (जयो० वृ० २२/६८)

अफल (वि०) ०निष्फल, ०निरर्थक, ०प्रयोजन रहित, ०पुरुषत्व ०विहीन।

अफलत्व (वि०) फलाशय रहितपना, निरर्थकता (वीरो० १८/३६)

अबद्ध (वि०) १. बन्ध मुक्त, बन्धन हीन, बन्ध रहित, २. स्वच्छंद, अर्थहीन, प्रयोजन रहित।

अबन्ध (वि०) ०अनुराग रहित, प्रीति सम्बंध नहीं। ०सिद्ध, मुक्त (जयो०)

अबन्धक (वि०) मित्र रहित, एकाकी, अकेला।

अबल (वि०) बलहीन, शक्ति रहित, दुर्बल। (जयो० ३/१२)

अबला (स्त्री०) सुकुमारी। (जयो० वृ० १/७१)

अबला-मृषा साहसमूर्खत्वलौल्य कौटिल्यकादिकान्। सर्वानव-गुणांल्लातीत्यबला प्रणिगद्यते।। (जयो० २/१४५) "झूठ बोलना, दुस्साहसता, मूर्खता, चंचलता और कुटिलता आदि जितने भी अवगुण हैं, उन सभी को जो ग्रहण करती है, वह 'अबला' है।

अबलाकुल (वि०) स्त्री जनासक्त। नित्यमत्रावसीदन्ति मादृशा अबलाकुलाः। (जयो० १/१०७)

अबलाधिकारी (वि०) १. बलहीनता का अधिकारी, २. अबलाओं का अधिकारी "अबलस्य बलाभावस्य, अवलायाः स्त्रियो वाऽधिकारी। (जयो० वृ० ८/५९) बभूव भूयोऽबलाधिकारी। (जयो० ८/५९)

अबहु (वि०) कम, हीन।

अबहुश्रुतं (नपुं०) अध्ययन का विस्मरण। अधीतं वा विस्मारितम्।

अबाध (वि०) ०बाधा रहित, ०अनियन्त्रित, ०पीड़ा मुक्त, ०रोग मुक्त।

अबाधा (स्त्री०) बंधने के पश्चात् कर्म का आवरण। (वीरो० २०/५) उदय में न आना।

अबाधावृत्तिः (वि०) आवरण निवृत्ति (वीरो० २०/५

अबाधित (वि०) बाधा रहित, पीड़ा से मुक्त।

अबाल (वि०) १. मूर्खता का अभाव, ज्ञानयुक्त, २. पूर्ण, यौवन रहित, युवक। ३. निर्लोभ युक्त। "बालो मूर्खः, न बालोऽबालस्तद्भावतो मूर्खत्वाभावाद् हेतोः।" (जयो० वृ० ३/४६) "अबालभावतो निर्लोमत्वात्।" (जयो० वृ० ३/४६)

अबाला (स्त्री०) न बाला अबाला, जो बालिका नहीं, सुदीर्घा, अलध्वी। (जयो० वृ० ३/३९)

अबाह्य (वि०) आभ्यन्तर, आन्तरिक, भीतरी, अनुचित। (वीरो० १८/४८)

अबुद्ध (वि०) [नञ्+बुध्] अज्ञानी, मूर्ख, अनभिज्ञ, मतिविहीन।

अबुद्धिः (स्त्री०) अज्ञान, मति हीन, मूर्खता। "आत्मस्थ-दुःख-बीजापायोपायचिन्ताशून्यत्वादनिवार्य-पर-दुःख शोचनानुचरणाच्चाबुद्धिः।" (भ०अ०टी० १/५४)

अबोध (वि०) मूढ, मूर्ख, नादान, छोटा, लघु, अज्ञानी। (जयो० १७/९)

अबोधा (स्त्री०) बोधविहीना, ज्ञानशून्य। (जयो० १७/९)

अब्ज (वि०) [अप्सु जायते-अप्+जन+ड] जल में उत्पन्न हुआ।

अब्जं (नपुं०) [अप्सु जायते] कमल, अरविंद, पद्म, सरोज।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(जयो० १/५४) "अन्ते भवतीत्यन्त्यो जकारो यस्य अब्जस्य, तस्यादौ प्रारम्भै मवर्णो यस्य तस्य भाव आदिमवर्णता किं स्यात् न स्यात् मुखभाव इत्यर्थः। (जयो० वृ० १/५४) आकर्षताब्जं च सहस्रपत्रं। (सुद० ४/१९) * कमल।

अब्जबुद्धिः (स्वी०) पद्मबुद्धि, कमलबुद्धि। वध्वा स वध्वानयनेऽ-ब्जबुद्धिं। (जयो० १६/४८)

अब्जयः (पुं०) सूर्य, दिनकर (वीरो० २/११)

अब्जज (वि०) कमल को उत्पन्न करने वाला।

अब्जनेतः (पुं०) सूर्य, दिनकर। (जयो० वृ० १५/४)

अब्जा (स्त्री०) सीपी।

अब्जिनी (स्त्री०) [अब्ज+इनि स्त्रियां ङीप्] कमल वल्ली, कमलवेल, कमललता, कमलिनी। (वीरो० ६/३४) निमीलिताम्भोजदृगब्जिनीति। (जयो० १५/८)

अब्दः (पुं०) [अपो ददाति-दा+क] ०बादल, ०मेघ, वार्दर, ०वर्ष। (जयो० २०/५)

अब्दरम्य (वि०) रमणीय मेघ। 'अब्दो मेघस्तदिव रम्यः।' (जयो० वृ० २०/३२)

अब्द-संकुलः (पुं०) वार्दर व्याप्त, मेघाच्छादित, मेघ समूह। (जयो० २०/५) अब्दैः संवत्सरैः संकुला षोडशवर्ष-वयस्क। (जयो० वृ० २०/५)

अब्दसारः (पुं०) कर्पूर (जयो०)

अब्धिः (पुं०) [आपः धीयन्ते अत्र अप+धा+कि] उदधि, सागर, वारिधि, समुद्र। परापराब्धी हि पुरा स्फुरन्तौ। (जयो० ८/१) भवाब्धितीरं गमितप्रजावान्। (जयो०सुद० १/१)

अब्रह्म (वि०) न ब्रह्म अब्रह्म (स०सि०७/१७) ब्रह्म अभाव, मैथुन भाव। यद्वेदराग-योगान्मैथुनमभिधीयते तदब्रह्म। (पु०सि० १०७) स्त्री-पुरुष सम्बंधी राग चेष्टा।

अब्रह्मचर्य (वि०) ब्रह्मभाव रहित, ब्रह्मचर्य से विहीन, अब्रह्म/मैथुन की अभिलाषी।

अब्रह्म-वर्जनं (नपुं०) अब्रह्म का त्याग, परस्त्री स्मरण का परित्याग।

अभक्ति (स्त्री०) ०भक्ति विहीन, ०अविश्वास, ०संदिग्धता, ०अर्चना की हीनता।

अभक्ष्य (वि०) भक्षण योग्य नहीं, खाने के लिए निषिद्ध। नरस्य दृष्टौ विष्भक्यवस्तु किरेत्स्तेदतदरऽभक्षमस्तु। सन्धानक त्यजेत्सर्वं, (वीरो० १९/४) दधि-तक्रं, द्वयहोषितम्। दध्ना तक्रेण वा मिश्रं, द्विदलञ्च न भक्षयेत्।। पिप्पलोदुम्बर-प्लक्ष-वट-फल्गु-फलानि तु त्यजेदन्यफलं जन्तु शून्यं कृत्वा च संभवेत्।। (हि०सं० १२०-१२१ श्लोक०)

अभक्ष्यवृत्तिः (स्त्री०) अभक्ष्य प्रवृत्ति (समु० ४/४८)

अभग (वि०) अभागा, भाग्यहीन, बेसहारा।

अभङ्ग (वि०) नित्य, शाश्वत, स्थाई। न भङ्गा अभङ्गा प्रवाहयुक्ता। (जयो० १/८) "गङ्गामभङ्गां न जहात्यथाकी"

अभद्र (वि०) अशुभ, अकल्याणकारी, कुत्सित, दुष्ट। अभद्रं हि संसारदु:खम्।

अभय (वि०) ०निर्भय, ०भयमुक्त, ०सुरक्षित, ०निर्भयभाव, ०अभय-दान। (जयो० १/९८) अभयमङ्गिजनाय नियच्छता। (जयो० १/९८)

अभयंकर (वि०) भय रहित, निर्भयता जन्य।

अभयकुमार (पुं०) राजा श्रेणिक का पुत्र, रानी ब्राह्मणी का तनय।

अभयचन्द्रः (पुं०) आचार्य, गोमट्टसार के टीकाकार।

अभयदान (नपुं०) अनुग्रह करने वाला दान, प्राणिमात्र का कृपा दान।

अभयदेवः (पुं०) सन्मति तर्क के टीकाकार।

अभयदेवी (स्त्री०) राजा दार्फ वाहन की रानी। दार्फवाहनभूपस्या-भया नाम नितम्बिनी। (वीरो० १५/२८)

अभयनन्दिः (पुं०) वीरनन्दि के शिक्षा गुरु।

अभयप्रदः (वि०) अभयप्रदाता।

अभयमति (स्त्री०) अभयमती रानी, राजा धारणीभूषण की रानी। (सुद० पृ० ८४) चम्पा नगरी के एक शासक धात्री वाहन की रानी का नाम भी अभयमती था। अभयमतीत्य भिधाऽभूद्धार्या। (सुद० १/४०)

अभयमती देखो अभयमति।

अभयमुद्रा (स्त्री०) ध्वाजाकार मुद्रा।

अभवः (पुं०) ०अनुत्पन्न, ०अनुजाय, ०नहीं उत्पन्न।

अभव्य (वि०) ०अनुपयुक्त, ०अशुभ, ०दुर्भाग्यपूर्ण, ०अभागा। सिद्धान्त में 'अभव्य' उसे कहा गया है जो सिद्धिगमन के लिए अयोग्य, सम्यग्दर्शनादि पर्याय से कभी भी परिणत न हो। 'निर्वाणपुरस्कृतो भव्यः, तद्विपरीतोऽभव्यः।' (धव० १/५०-१५१)

अभाग (वि०) अविभक्त, विभाज्य योग्य नहीं।

अभागिनी (स्त्री०) भाग्य विहीन, सौभाग्य सुख हीन। राज्ञी प्राह किलाभागिन्यसि त्वं तु नगेष्वसौ। (सुद० वृ० ८५)

अभावः (पुं०) ०अनुपस्थिति, ०विमुक्त, ०हीन, ०रहित, ०असफलता, अनस्तित्व। निषेध, अपाय, प्रहानि। (जयो० १/२४) अतिरेकोऽभावस्तु। (जयो० वृ० १/१९) 'अभाव' अतिरेक को भी कहते हैं। 'अभाव' को अपाय भी कहा। (जयो० २४/३७) अभाव को 'प्रहाणि' भी कहा। (जयो०

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१८/३७) जैन दर्शन में 'अभाव' को निषेधकारी न मान-कर कथंचित् रूप में स्वीकार किया है। 'भावान्तरस्वभावरूपी भवत्यभाव इति। (प्रव०वृ० १००) भावान्तर स्वभाव रूप ही अभाव है। जिस धर्मी जो धर्म नहीं रहता उस धर्मी में उस धर्म का अभाव। (जैनेन्द्र सि०१२७) महाकवि ज्ञानसागर ने जयोदय महाकाव्य के छब्बीसवें सर्ग में 'अभाव' की व्याख्या करते हुए कहा है कि—भावैकतायामखिलानुवृत्ति भवेदभावोऽथ कुतः प्रवृत्तिः। (जयो० २६/८७) यतः पटार्थी न घटं प्रयाति हे नाथ! तत्त्वं तदुभयानुपाति।।" (जयो० २६/८७) यदि भाव रूप ही पदार्थ की माना जावे तो सबकी सब पदार्थों में प्रवृत्ति होना चाहिए और सर्वथा अभाव रूप ही पदार्थ माना जाए तो प्रवृत्ति किस कारण होगी? क्योंकि वस्त्र का इच्छुक मनुष्य घट को प्राप्त नहीं होता। इसलिए-पदार्थ भाव और अभाव दोनों रूप हैं। इसके चार भेद किए हैं—१. अन्योन्याभाव, २. अत्यन्ताभाव, ३. प्रागभाव और प्रध्वंसाभाव। उपर्युक्त चारों अभावों को जिनागम में स्वीकृत किया गया है।

अभावना (स्त्री०) अनुचिन्तन का अभाव, अनुप्रेक्षा का अभाव।

अभाषित (वि०) अकथित, अनुच्चरित

अभासिनी (वि०) १. न ज्ञानवती, २. प्रकाशहीन, प्रभाहीन। (जयो० २७/६)

अभि (अव्य०) [नञ्+भा+कि] धातु या शब्दों से पूर्व लगने वाला प्रत्यय। 'अभि' के लगने से की ओर के लिए आदि अर्थ का बोध होता है। 'गम्' धातु से पूर्व 'अभि' लगने से 'अभिगम्' का अर्थ चलना तो है, परन्तु किस ओर यह स्पष्ट हो जाता है। 'जाति' शब्द से पूर्व 'अभि' लगने से 'अभिजाति' प्रकृति या प्रशंसनीय अर्थ का बोध हो जाता है।

अभि-अनुबध् (सक०) गूंथना, गुंफन करना। माला विशालाऽ-भ्यनुबद्धयते सा (भक्ति०१३)

अभिईप्स् (सक०) जानना, समझना। "एवं सुविश्रान्तिम-भीप्सुमेताम्।" (वीरो० ५/३४)

अभिकंप् (अक०) कांपना, हिलना,

अभिकर (वि०) [अभि+कन्] अभिव्याप्त, वेष्टित, लंपट, कामी। द्राक्षादिसार-रसनाद्रसनाभिकनाभिके सरसलेशे। (जयो० ६/४६)

अभिकांक्षा (स्त्री०) [अभि+कांक्ष्+अङ्+टाप्]०कामना ०भावना, ०इच्छा, ०अभिलाषा, ०लालसा, ०वाञ्छा।

अभिकांक्षिन् (वि०) [अभि+कांक्ष्+णिनि] कामना करने वाला, इच्छुक, अभिलाषी।

अभिकाम (वि०) [अभिबृद्धः कामो यस्य-अभि+कम+अच्] ०इच्छुक, ०कामुक, ०वाञ्छाशील, ०अभिलाषी।

अभिक्रमः (पुं०) [अभि+क्रम्+घञ्] ०प्रयत्न, ०आरम्भ, ०व्यवसाय, ०प्रयान, ०अभियान, ०आक्रमण।

अभिक्रमणं (नपुं०) [अभि+क्रम्+ल्युट्] उपागमन, आरोहण।

अभिक्रोशः (पुं०) [अभि+क्रुश+घञ्] चिल्लाना, पुकारना, बुलाना, आह्वाहन करना, अपशब्द कहना।

अभिक्रोशकः (वि०) [अभि+क्रुश+ण्वुल्] कोशने वाला, कलंक लगाने वाला।

अभिख्या (स्त्री०) [अभि+ख्या+अङ्-टाप्] ०कांति, ०प्रभा, शोभा, ०आभा, ०कीर्ति, ०प्रसिद्धि, ०यश, ०ख्याति।

अभिख्यानं (सक०) [अभि+ख्या+ल्युट्] ख्याति, कीर्ति, प्रसिद्धि, यश।

अभिगत (वि०) अभिमुख, सन्निकट।

अभिगम् (सक०) ०पास जाना, ०चलना, ०पहुंचना। "फुल्लदानन इतोऽभिजगाम। (जयो० ४/४७)

अभिगमनं (नपुं०) [अभिगम्+ल्युट्] पहुंचना, गमन करना, जाना, पास आना।

अभिगम्य (सं० कृ) [अभि+गम्+य] अनुगम्य, उपागम्य, समीप जाकर, निकट पहुंचकर, अभिगम्य बिम्बुच्चै। (जयो० १४/९०)

अभिगर्जनं (नपुं०) [अभि+गर्ज्+ल्युट्] ०चीत्कार, ०चिंघाड़ ०भीषण गर्जना।

अभिगामिन् (वि०) [अभि+गम्+णिनि] समीप पहुंचने वाला, संभोग करने वाला, निकट जाने वाला।

अभिगुप्तिः (स्त्री०) [अभि+गुप्+क्तिन्] ०संरक्षण, ०सुरक्षा, ०निग्रह, ०निरोध

अभिगोप्तृ (वि०) [अपि+गुप्+तृच्] संरक्षक, निग्रहकर्ता।

अभिग्रहः (पुं०) [अभि+ग्रह्+अच्] १. अधिकार, प्रभाव, ठगना, धावा। २. जैन सिद्धान्त में 'अभिग्रह' एक नियम विशेष माना गया है। 'अनगार' आहारार्थ गमन से पूर्व जो विधि लेता है, वह 'अभिग्रह' है।

अभिग्रहणं (नपुं०) [अभि+ग्रह्+ल्युट्] निश्चित नियम, अभिग्रह।

अभिगृहीतः (पुं०) [अभि+गृह्+ईत्] दूसरे के उपदेश से ग्रहण करना, मिथ्यावचनों पर श्रद्धान करना, यथार्थवस्तु के श्रद्धान से विमुख दृष्टि रखना।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अभिघातः (पुं०) [अभि+हन्+घञ्] ०मारना, ०कष्ट पहुंचाना, ०घातना, ०ताड़ना, ०प्रताड़ना, ०प्रहार, ०आघात, ०विध्वंस, ०नाश, ०विनाश, ०विघात, ०विहनन।

अभिघातक (वि०) विध्वंसक, विनाशक, प्रताड़क, विघातक।

अभिघातिन् (वि०) विध्वंसक, शत्रु, बैरी, विनाशक।

अभिघारः (अभि+घृ+णिच्+घञ्) घी की आहूति।

अभिघ्राणं (नपुं०) [अभि+घ्रा+ल्युट्] मस्तक सूंघना, शिर चुम्बन।

अभिचरणं (नपुं०) [अभि+चर्+ल्युट्] ०मारना, ०झाड़ना-फूंकना।

अभिचारः (पुं०) [अभि+चर्+घञ्] जादू करना, झांड़ना।

अभिचारिन् (वि०) अभिचार करने वाला।

अभिजनः (अभि+जन्+घञ्) ०स्व जन्म स्थान वंश, ०उत्पत्ति स्थान, ०जन्मभूमि, ०मातृभूमि कुटुम्ब, कुल अपने अपने स्थान। जनोऽभिजनसाम्प्राप्तो वर्धमानाभिधानतः। (जयो० ८/८३)

अभिजनवत् (वि०) [अभिजन+मतुप्] उत्तम कुल का, श्रेष्ठ कुटुम्ब में उत्पन्न।

अभिजयः (पुं०) [अभि+जि+अच्] विजय, जीत।

अभिजात (भू०क०कृ०) [अभि+जन्+क्त] ०उत्कृष्ट कुलोत्पन्न, कुलीन, ०उच्चकुल, ०उन्नत वंश। (प्रवालोऽपि चाभिजातः) (जयो० ४१/१३) सद्योजात प्रवाल। सैवाभिजातोऽपि च नाभिजातः। (वीरो० १/२) अभिजातः सुभगोऽपि नाभिजातः सौन्दर्यरहित इति। (वीरो० वृ० १/२) 'अभिजात' का अर्थ उत्कृष्ट कुलोत्पन्न है। "अभिजातदपि नाभिजातकम्" (सुद० ३/१३) यहां ०'अभिजात' का अर्थ तत्काल उत्पन्न है। हे नाभिजातासि किलाभिजातः। (जयो० १९/१७) ०अकुलीन होकर भी 'कुलीन' का बोधक है। २. ०'अभिजात' का अर्थ सुन्दर, ०मनोहर, ०बुद्धिमान, ०श्रेष्ठ, ०मधुर, ०उपयुक्त विद्वान् भी किया जाता है।

अभिजातत्व (वि०) विवक्षित अर्थ रूप कथन शैली।

अभिजातिः (स्त्री०) [अभि+जन्+क्तिन्] प्रशंसनीय प्रकृति, उत्तम जाति, श्रेष्ठ कुल। भोगीन्द्रदीर्घाऽपि भुजाभिजातिः। (जयो० १/५२)

आभिजिघ्रणं (नपुं०) [अभि+घ्रा+ल्युट्] सिर का स्पर्श करना।

अभिजित् (पुं०) [अभि+जि+क्विप्] १. नक्षत्र, २. विष्णु। पराभिजिद् भूपतिरित्यनन्तानुरूपमेतन्नगरं समन्तात्। (सुद० १/२९)

अभिज्ञ (वि०) [अभि+ज्ञा+क] ०जानने वाला, ०प्रमाण ज्ञाता, ०ज्ञानवान्, ज्ञानीजन। इत्येवमालोक्य भवेदभिज्ञः। (सुद० १२१) वनस्थानमभिज्ञोऽभूत् स एव प्रमोक्षोपसंग्रही। (जयो० २८/५९), २. कुशल, अनुभवशील, ०दक्ष,चतुर, ०निपुण।

अभिज्ञा (स्त्री०) [अभि+ज्ञा] ०ज्ञाता, ०ज्ञायक कुशल, ०निपुण, दक्ष, ०प्रज्ञाशील। स्वनिन्दयेत्थं निगदन्त्यभिज्ञाः। (भक्ति सं० ३७)

अभिज्ञा (नपुं०) [अभि+ज्ञा+ल्युट्] दर्शन की परम्परा में 'अभिज्ञा' को प्रत्यभिज्ञा/प्रत्यभिज्ञान भी कहते हैं। 'तदेवेदम्' इति ज्ञानमभिज्ञा। (सिद्धि वि०२२६) 'यह वही है' इस प्रकार का ज्ञान 'अभिज्ञा है।

अभिज्ञानं (नपुं०) [अभि+ज्ञा+ल्युट्] प्रत्यभिज्ञान, स्मरण, स्मृति, पहचान।

अभितः (अव्य०) पर्यन्ततः, (अभि+तसिल्) ०दोनों ओर। निकट, सब ओर, सभी तरफ। ०समस्त, चारों ओर। (सुद०३/८) अस्मिन् पर्वाणि तमसा रभसादसितोऽभितोऽर्कयशाः। (जयो० ६/१९) अभितः समस्तभावतो। (जयो० वृ० ६/९) प्राचालि लोकैरभितोऽप्यशः। (वीरो० १/३०) श्रणनाङ्के मृदुतापुताऽभितः। (सुद० ३/२१) प्रमदाश्रुभिराप्लुतोऽभितः जिनपं। (सुद० ३/५)

अभितापः (पुं०) [अभितप्+घञ्] ०अत्यन्त गर्मी, ०संताप, ०कष्ट, ०पीड़ा, ०भावावेश।

अभिताम्र (वि०) प्रवल रक्त, पूर्ण राग।

अभिदक्षिणं (अव्य०) दक्षिण की ओर।

अभिद्रवः (पुं०) [अभि+अप+घञ्] आक्रमण, प्रहार।

अभि+दा (अक०) प्रतीत होना, "अभिददतीत्यनुरक्तिम्"। (जयो० ४/१४)

अभिद्रोहः (पुं०) [अभि+दुह्+घञ्] ०षड्यन्त्र रचना, ०हानि, ०क्रूरता, ०द्रोह, ०गाली, ०निन्दा।

अभिद्वारं (नपुं०) मुख्य द्वार, प्रवेशद्वार। देवांशे स्फुरदेव देवदिगभिद्वारे प्लवालम्बने। (जयो० ३/७१)

अभिधं (नपुं०) पाप, दुष्टकर्म। "निरन्तर जन्तुबधाभिधेन।" (सुद० ४/१७)

अभि+धा (सक०) कहना, बोलना। "नानैवमित्यभिधाय नागः।" (जयो० २/१५८) अभिधाय कथयित्वा।

अभिधा (स्त्री०) [अभि+धा+अङ्+टाप्] १. स्मरण, स्मृति (जयो० १६/३) "रामाभिधामकलयन्ति नामाधुना।" स्त्री

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

के नाम स्मरण, २. नाम, संज्ञा, ध्वनि। ''अभयमतीत्य-भिधाऽभूद्भार्या'' (सुद० १/४०)

अभिधा (स्त्री०) शब्दशक्ति विशेष। स मुख्योर्थस्तत्र मुख्यो यो व्यापारोऽस्याभिधोच्यते (काव्य० २)

अभिधातः (पुं०) संज्ञा, नाम। (वीरो० १/२) समागमान्यो वृषभोऽभिधातः।

अभिधानं (नपुं०) [अभि+धा+ल्युट्] १. कहना, प्रतिपादित करना, बोलना, संकेत करना। २. धारण करना, संज्ञा युक्त, नाम वाला। विदेहदेशेत्युचिताभिधानः। (वीरो० २/९) ३. वाचक शब्द-साभिधेयमभिधानमन्वयप्रायमाश्रयतु तद्धि वाङ्मयम्। (जयो० २/५५) अभिधान-वाचक शब्द (जयो० वृ० २/५५) 'पादद्वयाग्रे नखलाभिधानो' (जयो० ११/१४) यहां 'अभिधान' का अर्थ पर्याय किया गया है। इसका सार्थकता भी अर्थ है। जो अपना ही बोध कराता है वह 'अभिधान' है।

अभिधायक (वि०) [अभि+धा+ण्वुल्] नाम करने वाला, कहने वाला, निर्देश करने वाला।

अभिधावनं (नपुं०) [अभि+धाव्+ल्युट्] पीछे पीछे दौड़ना, अनुगमन, अनुसरण।

अभिधेय (स०कृ०) [अभि+धा+यत्] कथनीय, प्रवचनीय, नाम योग्य।

अभिध्या (स्त्री०) [अभि+ध्यै+अङ्+टाप्] ०चाह, ०इच्छा, ०लालच, ०लोभ, ०आसक्ति।

अभिध्यानं (नपुं०) [अभि+ध्यै+ल्युट्] ०मनन-चिन्तन, ०अनुचिन्तन, ०अनुस्मरण।

अभिनन्द (अक०) [अभि+नन्द्] ०अभिनन्दन करना, ०सम्मान करना, ०प्रशंसा करना। ''मालाञ्चोपैमि बाहां हि नीतिविद्योऽभिसन्दति।'' अभिनन्दति/प्रशंसति (जयो० ७/३१)

अभिनन्दनः (पुं०) चतुर्थ तीर्थंकर का नाम अभिनन्दन नाथ। 'श्रीसम्भवं चाप्यभिनन्दनं च।' (भक्ति सं० १८)

अभिनन्दनः (पुं०) विदेह क्षेत्र के पुष्कल देश की नगरी छत्रपुरी का राजा अभिनन्दन। (वीरो० ११/३५) छत्राभिधे पुर्यमुकुलस्थलस्य श्री वीरमत्यामभिनन्दस्य। (वीरो० ११/३५)

अभिनन्दन (नपुं०) [अभि+नन्द्+ल्युट्] अभिवादन ०सम्मान, ०प्रसन्नता, ०स्वागत, ०अनुमोदन करना। ०खुशी, ०आनंद, ०प्रहर्षण।

अभिनन्दि (वि०) ०आनन्दित, ०प्रहर्षित, ०प्रसन्नता। युक्त। ''प्रवरमात्मवामभिनन्दिषु।'' (सुद० ४/२)

अभिनन्दिनि (स्त्री०) [अभि+नन्द्+अनि]०आनन्दकारिणी, ०प्रहर्षिणी, ०प्रफुल्लमना।
अभिनन्दिनि तदवसरे गगनं स्वगनन्दिगन्धनेऽनुसजत्। (जयो० ६/१२७)

अभिनन्दनीय (वि०) [अभि+नन्द्+अनीय]०प्रशंसनीय, ०वन्दनीय, ०सम्मानीय, ०आश्रयणीय।

अभिनन्द्य (वि०) [अभि+नन्द्+ण्यत्] प्रशंसनीय, वन्दनीय, सम्माननीय, आश्रयणीय।

अभिनम्र (वि०) पूर्णमत, विनम्र, प्रनत।

अभिनयः (पुं०) १. समारोह, सभासङ्घटन। ''सारयति स्माऽभिनये। (जयो० ६/२०) अस्मिन्नभिनये समारोहे सभासङ्घटने।'' (जयो० वृ० ८/२०) 'सोऽथ शुशुभेऽभिनयोऽपि।'' (जयो० ५/२६) सो अभिनयः सभासमारोहोऽपि। (जयो० वृ० ५/२६) २. आश्चर्य स्थान-अभिनय आश्चर्यस्थानम्। (जयो० ४/९) २. उत्सव-(जयो० ४/९)

अभिनयः (पुं०) नाटक, अंग निक्षेप, नाटकीय प्रदर्शन।

अभिनवः (पुं०) समारोह, अवसर। ईदृशेऽभिनयके प्रतियाति। (जयो० ४/१३) सार्वजनिकेऽभिनयके समारोहे। (जयो० वृ० ४/१३)

अभिनयता (वि०) ले जाने वाला, अनुसरण कराने वाला।

अभिनयन्तु (विधि०) ले जाएं।

अभिनयानुरोधिनी (वि०) प्रसङ्गानुसारिणी। भूरिशो ह्यभिनयनुरोधिनी। (जयो० २/५४)

अभिनव (वि०) ०नवीन, ०नूतन, नए नए। पल्लवैरभिन-वैरथाञ्चिता। (जयो० ३/९) नव-नवै-अभिनवः। (जयो० वृ० ३/९) नृव्रातोऽभिनवां मुदं। (जयो० ६/१३२)

अभिनव-वसनं (नपुं०) [अभि+नह्+ल्युट्] आंख पर बांधने की पट्टी, अंधा।

अभिनियुक्त (वि०) [अभि+नि+युज्+क्त] ०संलग्न, ०कार्य संयुक्त, ०व्यस्त।

अभिनिर्याणं (नपुं०) [अभि+निर्+या+ल्युट्] प्रयाण, प्रस्थान, अभिगमन, आक्रमण।

अभिनिविष्ट (भू०क०कृ०) [अभि+नि+विश्+क्त] ०संलग्न, ०तत्पर, ०लगा हुआ, ०कार्यशील।

अभिनिविष्टता (वि०) दृढ संकल्पता, पूर्ण निश्चय।

अभिनिवृत्तिः (स्त्री०) [अभि+नि+वृत्+क्तिन्] पूर्ति, संपन्नता, निष्पन्नता।

अभिनिबोधः (पुं०) अनुमान का भेद। (जयो० ५/१७) 'अभिनिबोधनमभिनिबोधः। (स०सि०१/१३) 'अभिमुख्यं

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नियतं बोधनमभिनिबोधः।' (त०वा०१/१३) अपने नियत विषय का बोध-जैसे चक्षु से रूप का ज्ञान। सत्तरङ्गतर-लैर्निजकंन्द्राप्रादागता हयवैस्तु नरेन्द्राः। तावतैव हि हयानन-वर्ग, प्राप्तवान भिनिबोध निसर्गः।। वहां जितने भी पृथवीतल के राजा थे, वे सब अपने अपने स्थान से तरंग के समान चंचल घोड़ों पर आरूढ़ होकर आये थे। अतः वहां हयानन आ गए, यह सहज ही अनुमान होता था। अर्थात् जिससे अर्थाभिमुख होकर नियम विषय का ज्ञान किया जाता है, वह 'अभिनिबोध' है।

अभिनिवेशः (पुं०) [अभि+नि+विश्+घञ्] ०आग्रह, ०आसक्ति, ०संलग्न, ०तत्पर, ०तैयार, ०एक निष्टता। "इत्येवमभिनिवेशा द्वन्द्वमतिः।" (जयो० ६/२) दर्शन की दृष्टि से इसका अर्थ यह है कि "नीतिमार्ग पर न चलते हुए भी दूसरे के तिरस्कार के विचार से कार्य प्रारम्भ करना।

अभिनिषेशिन् (वि०) [अभि+नि+विश् णिनि] आसक्त, तत्पर, संलग्न।

अभिनिष्क्रमणं (नपुं०) [अभि+निश्+क्रम+ल्युट्] प्रयाण करना, बाहर निकलना। सिद्धान्त की दृष्टि से बाह्य और आभ्यन्तर परिग्रह का त्याग करके प्रव्रज्या की ओर अग्रसर होना।

अभिनिष्टानः (पुं०) [अभि+नि+स्तन्+घञ्] वर्णमाला का अक्षर।

अभिनिष्पतनं (नपुं०) [अभि+निस्+पत्+ल्युट्] निकलना, टूट पड़ना

अभिनिष्पत्तिः (स्त्री०) [अभि+निस्+पत्+क्तिन्] ०समाप्ति, ०सम्पन्नता, ०पूर्ति, ०निष्पन्नता।

अभिनिह्नवः (पुं०) [अभि+नि+ह्नु+अप्] छिपाना, मुकरना, मेटना।

अभिनीत (भू०क०कृ०) [अभि+नी+क्त] अभिनय किया गया, ०मंचित, ०अलंकृत, ०सुसज्जित, ०पहुंचाया गया, ०निकट लाया गया।

अभिनीतिः (स्त्री०) [अभि+नी+क्तिन्] इंगित, मित्रता, सहितष्णुता।

अभिनेतृ (पुं०) अभिनेता, नाटक का नायक।

अभिनेय (सं० कृ०) [अभि+नी+यत्] अभिनय योग्य मंच, दृश्य स्थान।

अभिन्न (वि०) ०अखण्ड, पूर्ण, ०एक रूप, ०अपरिवर्तित, ०स्थिर। (जयो० २/१२२) दर्शन की दृष्टि में वस्तु वर्णन के लिए भिन्न और अभिन्न दोनों का प्रयोग किया जाता है।

अभिन्नचेतस् (पुं०) स्थितचित्त, चित्त की स्थिरता। प्रार्थयेत् प्रभुमभिन्नचेतसा। (जयो० २/१२२)

अभिन्नाक्षरं (नपुं०) परिपूर्ण अक्षर, दशपूर्व का ज्ञान अभिन्नाक्षर कहलाता है।

अभिन्नाचारः (पुं०) ०अतिचार/दोष रहित, ०आचार/आचरण। ०निर्दोषाचार।

अभियतनं (नपुं०) [अभि+पत्+ल्युट्] ०गिरना, ०टूटना, ०भंग होना, ०उपागमन।

अभिपत्तिः (स्त्री०) [अपि+पद्+क्तिन्] उपागमन, गिरना, निकट जाना।

अभिपद (वि०) ०सुशोभित, ०व्याप्त, ०संयुक्त। "मृगमदाभिपदा किल।" (जयो० २५/५६)

अभिपन्न (भू०क०कृ०) [अभि+पद्+क्त] उपागत, समीपागत, संन्निकट।

अभिपरिप्लुत (वि०) [अभि+परि+प्लु+क्त] भरा हुआ, परिपूर्ण युक्त, डूबा हुआ।

अभिपूरणं (नपुं०) [अभि+पू+ल्युट्] परिपूर्ण, पूर्ण, संपन्न, भरा हुआ।

अभिपूर्वं (अव्य०) क्रमशः, एक के बाद एक।

अभिप्रणयः (पुं०) [अभि+प्र+नी+अच्] ०प्रेम, ०कृपादृष्टि, ०स्नेह, ०परस्पर अनुरञ्जन, ०अनुरक्ति, ०लगाव।

अभिप्रणीत (भू०क०कृ०) [अभि+प्र+नी+क्त] संस्कारित, निर्मित, आनीत।

अभिप्रथनं (नपुं०) [अभि+प्रथ्+ल्युट्] विस्तार युक्त, प्रतान, व्यापकता।

अभिप्रदक्षिणं (अव्य०) दाहिनी ओर, दक्षिण ओर।

अभिप्रमाणक (वि०) प्रमाणानुसारी (जयो० २/६२)

अभिप्रवर्तनं (नपुं०) [अभि+प्र+वृत्+ल्युट्] १. प्रयाण, प्रतिगमन, प्रस्थान, २. आचरण, प्रवाह।

अभिप्रायः (पुं०) [अभि+प्र+इ+अच्] ०प्रयोजन, ०वाञ्छा, ०इच्छा, ०कामना, ०आशय, ०तात्पर्य, अर्थ, ०भाव, विचार, ०सम्मति, ०विश्वास, ०सम्बन्ध, ०उल्लेख। (जयो० १/११) "नीरीतिभावाभिप्रायो निष्फलो बभूव।" (जयो० वृ० १/११)

अभिप्रायनेदिनी (वि०) अभिप्राय को जानने वाला, अन्तरंग-भावस्य वेदिकी। (जयो० १४/९)

अभिप्रायवेदी (वि०) अभिप्राय को जानने वाला। (जयो० वृ० १४/१०)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अभिप्रेत (भू०क०कृ०) [अभि+प्र+इ+क्त] ०लक्षित, ०उद्दिष्ट, ०अर्थपूर्ण, ०अभिप्रायजन्य, ०अभिलषित, ०इष्ट, ०स्वीकृत।

अभिप्रोक्षणं (नपुं०) [अभि+प्र+उक्ष्+ल्युट्] छिड़काव, छिड़कना, सिञ्चित करना।

अभिप्लुतः (भू०क०कृ०) [अभि+प्लु+क्त] पराभूत, अभिभूत, व्याकुल।

अभिप्लुवः (पुं०) [अभि+प्लु+अप्] पीड़ा, दु:ख, बाधा, रुकावट।

अभिबुद्धिः (स्त्री०) १. ज्ञानेन्द्रिय। २. ज्ञान की ओर।

अभिबोधितुम् (अभि+बुध्+इ+तुमुन्) ०समझने के लिए, ०जानने के लिए, ०ज्ञान के लिए। पूर्णचन्द्रमभिबोधितुम्' (समु० ५/१)

अभिबोधिनी (वि०) ०बोधप्रध, ०बोधदायिनी, ०यथोचित बोध कारक। (जयो० २/५४) भूरिशो ह्यभिनयानुरोधिनी वागलङ्करणतोऽभिबोधिनी।। (जयो० २/५४)

अभिभवः (पुं०) [अभि+भू+अप्] ०पराभव, ०हार, ०तिरस्कार, ०अपमान, ०निरादर। बलिरलत्रयमृदुलोदरिणिं नाभिभवार्थां सुगुणाश्रय। (सुद० १२२)

अभिभवनं (नपुं०) [अभि+भू+ल्युट्] पराजित करना, जीतना।

अभिभावकः (वि०) ०रक्षक, ०प्रतिपालक, ०भाई-बन्धु, ०माता-पिता। (जयो० ३०

अभिभावनं (नपुं०) [अभि+भू+णिच्+ल्युट्] विजयी कराना।

अभिभाविन् (वि०) पराजित कराने वाला।

अभिभाषणं (नपुं०) [अभि+भाष्+ल्युट्] सम्बोधन करना, समझाना, बोध देना, दिशानिर्देश देना।

अभिभूत (वि०) ०आक्रान्त, ०पराभूत, ०दु:खित, ०वेदनाशील। (जयो० ११/११) 'नतभ्रुवो भोगभुजा भिभूत:।' (जयो० ११/११)

अभिभूतिः (स्त्री०) [अभि+भू+क्तिन्] १. प्रभुत्व, प्रधानता, आधिपत्य, अधिकार, २. पराभव, जीतना, पराजित करना।

अभिभ्रमणं (नपुं०) परिभ्रमण, घूमना, चलना। बभूव नाभिभ्रमणान्धकूपा। (सुद० २/४)

अभिमत (भू०क०कृ०) [अभि+मन्+क्त] १. इष्ट, वाञ्छनीय, ०रुचिकर, ०योग्य, ०प्रिय, ०स्नेही। २. सम्मत, स्वीकार, इच्छित, ''षट्पद-मत-गुञ्जाभिमता।'' (सुद० ८२) अघ-भूराष्ट्र- कण्टकोऽयं खलु विपदे स्थितिरस्याभिमता। (सुद० १०५) जिनवोऽभिमत: पराजय। (जयो० २६/४५)

अभिमतिः (स्त्री०) स्वीकृति, सम्मति। (सुद० ९१)

अभिमनस् (वि०) उत्कंठित, लालायित, आतुर, प्रतीक्षक।

अभिमन्त्रणं (नपुं०) संस्कार जन्य, पवित्रीकरण, मनोरम, आमन्त्रित, परामर्शित।

अभिमरः (पुं०) [अभि+मृ+अच्] ०घात, ०प्रतिघात, ०नाश, ०हानि, क्षय।

अभिमर्दः (पुं०) [अभि+मृद्+घञ्] ०मर्दन, ०गलन, ०उच्छेद, कुचलना।

अभिमर्दनं (नपुं०) मद्रन, नाश, उच्छेद।

अभिमादः (पुं०) [अभि+मद+घञ] मादकता, मदहोशी, नशा।

अभिमानः (पुं०) [अभि+मन्+घञ्] १. अहंकार, गर्व, घमण्ड, दर्प। (मुनि०) मा चित्तेऽभिमानं भजे-२. स्वाभिमान, सम्मान, योग्य भावना। मानकषायोदयापादितोऽभिमान:। (जयो० ५/१८) (स०वा०४/३१)

अभिमानवंत (वि०) स्वाभिमानी, सम्मानीय। (जयो० वृ० ५/९)

अभिमानिन् (वि०) [अभि+मन्+णिनि] १. घमण्डी, अहंकारी, दर्पी, गर्वीला, अहमन्यता। (जयो० १५/१५) प्रत्युपक्रिया-मिवाभमानी। (जयो० १४/३४) अभिमानी-मानस्य पराकाष्ठामित:। (जयो० वृ० १५/१५) २. समादर सहित, सम्मानीय, योग्यता युक्त, पूजनीय, विश्वसनीय, स्नेही। (जयो० वृ० १५/१५)

अभिमानिनी (स्त्री०) नायिका विशेष। [अभि+मन्+णिनि+ङीप्] वैमुख्यमप्यस्त्वभिमानिनीनामस्तीह यावन्न निशा सुपीना। (वीरो० ९/३९)

अभिमुख (वि०) ०अनुकूल, ०सम्मुख, ०सामने, ०अग्रगण्य, ०सन्निकट, ०समीपस्थ। (जयो० वृ० ६/११)

अभिमुख्य (वि०) ०प्रमुख, ०मुखिया, ०प्रधान, ०द्विरदेष्विव मेदिनीपतिष्वभिमुख्य:। (समु० २/१६) उक्तवती सुगुणवती दर-वलिताङ्गं तदाभिमुख्येन। (जयो० ६/३४) ''वर्ण्यमानजनस्याभिमुख्येन संमुखत्वेन।'' (जयो० ६/३४) उक्त पंक्ति में 'अभिमुख्य' का अर्थ सम्मुखत्व है।

अभियाचनं (नपुं०) [अभि+याच्+युच्] निवेदन, अनुरोध, प्रार्थना।

अभियातिः (पुं०) शत्रु, प्रतिपक्षी।

अभियानं (नपुं०) [अभि+या+ल्युट्] ०उपगमन, चढ़ाई, ०आरोहन, ०ऊपरी गमन। ०युद्धप्रस्थान।

अभियुक्त (भू०क०कृ०) (वि०) [अभि+युज्+क्त] १. परिवारित, परिवेष्टित, आच्छादित, २. दक्ष, कुशल, निपुण,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विज्ञ, प्रज्ञावन्ता, ३. आक्रान्त, प्रहार, विघात। ४. प्रतिवादी, प्रतिपक्षी। 'वयोभियुक्तेयमहो नवा लता' (जयो० ५/८८) उक्त पंक्ति में 'अभियुक्त' का अर्थ रहित है। इसकी व्युत्पत्ति इस प्रकार की-''वयोभियुक्ता-वयसा नवयौवनेमाभियुक्ता। (जयो० ५/८८) इसी का दूसरा अर्थ- परिवारित भी किया है-'वयोभि: पक्षिभिरभियुक्ता परिवारिता।'' (जयो० वृ० ५/८८)

अभियुज् (अक०) ०दोष होना, ०वियोग होना, ०विरह होना। ''तदथ कोकषयस्यभियुज्यते।'' (जयो० ९/३८) ''अभियुज्यते-दूषणं जायते'' (जयो० वृ० ९/३८)

अभियोक्तृ (वि०) [अभि+युज्+तृच्] आक्रमण करने वाला, ०प्रहारक, ०दोषापकरण, ०आक्रमणकारी, ०आक्रान्ती, ०आरोपक।

अभियोगः (पुं०) [अभि+युज्+घञ्] १. आरोप, ०दोषारोपण, आक्रान्तक। उपद्रवात्मक परिणाम। (जयो० २७/११) 'जनस्य तु स्याद्विजनेऽभियोग:। केवले नाभियोगस्य, ततः कार्या प्रतिक्रिया। (हि०सं० ३, श्लोक ३)

अभियोगिन् (वि०) [अभि+युज्+णिनि] आक्रमणकारी, दोषारोपक।

अभिरक्षणं (नपुं०) [अभि+रक्ष्+ल्युट्] सभी तरह से रक्षा, पूर्ण संरक्षण।

अभिरक्षा (स्त्री०) सुरक्षा, पूर्णरक्षा।

अभिरतिः (स्त्री०) [अभि+रम्+क्तिन्] ०संतोष, ०हर्ष, ०आनन्द, ०लगन, ०अभिरुचि। **अभिराध्म्**- अनुचिंतन करें, आराधना करें। (जयो० ४/३३०

अभिराम (पुं०) [अभि+रम्+घञ्] ०आनन्ददायक, ०हर्षयुक्त, प्रसन्नतापूर्ण, मनोहर, सुन्दर, मनोरम, सत्समन्वित, प्रसन्नता। (जयो० १०/६६, ३/३३) ग्रहमाव्रजते सतेऽथ वामा क्रियते नाम मया सदाभिरामा। (जयो० १२/९१) सद्यभिरामा मनोहरा (जयो० वृ० १२/९१) समन्ताद् राभाऽभिरामा। (जयो० ६/८५) वसन्तवच्छ्रीसुमनोऽभिराम:। (जयो० १/७७) १० राम सहित। (जयो० १३/५९)

अभिराम (पुं०) अभिराम नामक औषधी।

अभिरुचिः (स्त्री०) [अभि+रुच्+इन्] प्रवृत्ति, वाञ्छा, कामना, महत्त्वकांक्षा। नानाकुकर्माभिरुचिं समेति। (जयो० २/१२७) नैसर्गिका मेऽभिरुचिर्वितर्के। (वीरो० ५/२३)

अभिरुचित (वि०) [अभि+रुच्+अच्] हर्षित, प्रेमासक्त, आनन्दित।

अभिरुढ (वि०) अर्थभेदक।

अभिरूप (वि०) [अभि+रूप्+अच्] ०अनुरूप, ०उपयुक्त, ०योग्य, ०हितकर, ०आनन्ददायक।

अभिलङ्घनं (नपुं०) कूदना, छलांग लगाना।

अभिलभ् (सक०) प्राप्त करना, ग्रहण करना, लेना। (मुनि०३३) योगं यः परमात्मनाऽभिलभते योगीत्यसौ संमत:। (मुनि०३३)

अभिलष् (सक०) इच्छा करना, चाहना/अभिलषेत् (जयो० वृ० ३/८६)

अभिलषित (वि०) [अभि+लष्+क्त] इच्छित, वाञ्छित, उत्कण्ठित, प्राप्त करने योग्य। (जयो० वृ० ४/४७) अभिलषितं वरमाप्तवान्, लोक: किन्न विमान। (सुद० ७३)

अभिलापः (पुं०) [अभि+लप्+घञ्] ०कथन, ०प्रतिपादन, ०प्रस्तुत, ०घोषण, ०वर्णन, ०विवेचन, ०प्ररूपण, ०निरूपण।

अभिलावः (पुं०) [अभि+लू+घञ्] काटना, निकालना।

अभिलाषः (पुं०) [अभि+लष्] इच्छा, कामना, उत्कण्ठा, अनुराग, मनोरम, सुन्दर, श्रेष्ठ, मनोरथ। जयस्य मनोरथोऽभिलाष एव। (जयो० वृ० १/९१) व्यर्थं च नार्थाय समर्थनं तु पूर्णो यतश्चार्श्याभिलाषतन्तु। (जयो० १/१७)

अभिलाषक (वि०) [अभि+लष्+ण्वुल्] इच्छा करने वाला, कामना करने वाला, मनोरथी, उत्कण्ठित।

अभिलाषुक (वि०) इच्छुक, चाहने वाला। स्तनमदेनाभिलाषुक इति। (जयो० वृ० १२/११७)

अभिलाषवती (वि०) उत्कण्ठित, आकांक्षाशीला, (जयो० वृ० १/७८)

अभिलाषिन् (वि०) [अभि+लष्+णिनि] इच्छुक, उत्कण्ठित, चाहने वाला। नाभिलाषी भवन् किञ्चिद्दत्तवानेकदा दिने। (समु० ९/९) भवानिनो वत्सलताभिलाषी। (सुद० १/२१)

अभिलाषिणि (वि०) स्पृहणीय। (जयो० वृ० ३/६४)

अभिलाषा (स्त्री०) आशा, इच्छा, कामना। (जयो० वृ० ५/१०१)

अभिलिख् (सक०) लिखना, प्रस्तुत करना, उत्कीर्ण करना, खुदवाना।

अभिलिखित (वि०) [अभि+लिख+क्त] उत्कीर्ण किया, लिखा गया।

अभिलीन (वि०) [अभि+ली+क्त] आसक्त, संयुक्त, संलग्न, लिपटा हुआ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अभिलुलित (वि०) [अभि+लुड्+क्त] बाधित, क्षुभित, पीड़ित।

अभिवद्धित (वि०) प्रमाण विशेष।

अभिवदनं (नपुं०) [अभि+वद्+ल्युट्] नमन, प्रणमन।

अभिवन्द् (सक०) वन्दन करना, नमन करना। (सुद० ४/२)

अभिवन्दनं (नपुं०) नमन, प्रणमन। (जयो० वृ० २७/५३)

अभिवह्निः (स्त्री०) यज्ञाग्नि, यज्ञ की आग। अभिवह्नि कृतप्रदक्षिणोऽसि। (जयो० १२/९५)

अभिवर्द्धमान (वि०) बढ़ते हुए, आगे जाते हुए। मिथोऽभिवर्द्धमानतः। (जयो० २३/७८)

अभिवन्द्य (वि०) पूजनीय, समादरणीय। (वीरो० १७/२)

अभिवाञ्छ (सक०) चाहना, कामना करना, इच्छा करना। (दयो० १०७) तव दर्शनमिति साऽभिवाञ्छतो। (जयो० १७/१०६) इष्टसिद्धिमभिवाञ्छतो। (जयो० वृ० २/३७)

अभिवाञ्छित (वि०) ०अभिलषित, ०इच्छित, ०चाहा गया, ०कामना जन्य। (समु० ३/४४) संसिद्धत्यभिवाञ्छितं मनसि। (समु० ३/४४) अभिवाञ्छितमग्रतो। (जयो० १०/६८)

अभिवादः (पुं०) [अभि+वाद्+घञ्] बोलबाला, बातचीत, वार्तालाप। (जयो० ४/४५, समु० ८/२५) सत्तमोऽसि भवतामभिवादः। (जयो० ४/४५) सत्यप्रतिज्ञावतोऽभिवा-दस्तथात्र मिथ्यावदतो विषादः। (समु० १/२८) द्वेधा जिनोयस्य वरोऽभिवादः। (समु० ८/२५) जिन भगवान् ने बतलाया।

अभिवादः (पुं०) प्रणाम, नमस्कार, एक-दूसरे को नमन।

अभिवादक (वि०) नमस्कार करने वाला, प्रणामकर्ता।

अभिवन्दनक (वि०) अभिवादी, प्रणामकर्ता, नमन करने वाला। (जयो० वृ० २७/५३)

अभिवादिन् देखों नीचे।

अभिवादी (वि०) वन्दना करने वाला, अभिवन्दनक। (वीरो० १९/४४), (जयो० २७/५३) गुणाधीनतयाभिवादी। निराधार वचोऽभिलाषी। (वीरो० १७/२७)

अभिविधिः (स्त्री०) [अभि+वि+धा+कि] पूर्णविधि, संबोध, सीमा का प्रारम्भ, प्रारम्भिक विधि।

अभिविद् (सक०) प्रकट करना, कहना, व्यक्त करना।

अभिविदित (वि०) प्रकट किया, प्रतिपादित, अभिव्यक्त, कथित ययाऽभिविदितो नरपो नार्या। (सुद० १/४०)

अभिविश्रम्भ (वि०) विश्वासपूर्वक, निष्ठाजन्य, संतोष युक्त। (जयो०१०/११९) ग्रहण ग्रहणस्यादौ परमो भविनोरभिविश्रम्भ। (जयो० १०/११९)

अभिविश्रुत (वि०) [अभि+वि+श्रु+क्त] सुविख्यात, प्रसिद्ध, अति व्यापक।

अभिवीक्ष्य (सं० कृ०) देखकर, अवलोकनकर, निश्चेलक तमभिवीक्ष्य बभूव। (सुद० ४/२)

अभिवृत्तिः (स्त्री०) अभिव्यक्ति (सम्य० १०२)

अभिवृद्ध (वि०) अत्यन्त विस्तृत, अति विशाल, विशिष्ट। (सुद० ४/२१) सर्वेषामभिवृद्धाय जिनाय समहोत्सवम्। (सुद० ४/२१) 'निशङ्कितात्र्यष्टगुणाभिवृद्धं।'' (भक्ति० ७) उक्त पद में 'अभिवृद्ध' का अर्थ परिपूर्ण, पूर्ण, सम्पूर्ण, परिपुष्ट भी है।

अभिव्यक्तः (भू०क०कृ०) [अभि+वि+अंज्+क्त] १. उद्घोषित, प्रतिपादित, प्रकाशित, २. स्पष्ट, स्वच्छ, साफ।

अभिव्यक्ति (स्त्री०) [अभि+वि+अंज्+क्तिन्] प्रदर्शन, स्पष्टीकरण, कथन, विवेचन। अकृत्या तदिभव्यक्तौ (हितो०१४)

अभिव्यक्तिः (स्त्री०) ०प्रकाशित होना, ०स्पष्ट दिखना, ०अभिव्यक्त करना। ''सौभाग्यमाहत्सीयमभिव्यनक्ति'' (वीरो० वृ० १२)

अभिव्यञ्जनं (नपुं०) [अभि+वि+अञ्ज्+ल्युट्] प्रकट करना, अभिव्यक्त करना, प्रकाशन करना।

अभिव्यापक (वि०) [अभि+वि+आप्+ण्वुल्] १. प्रसार करने वाला, फैलाने वाला, २. समझने वाला, स्पष्ट करने वाला।

अभिव्याप्तिः (स्त्री०) [अभि+वि+आप्+क्तिन्] ०सम्मिलित करना, ०जोड़ना, ०व्यापक बनाना, ०सर्वत्र फैलाना।

अभिव्यावहरणं (नपुं०) [अभि+वि+आ+हृ+ल्युट्] ०उच्चारण करना, ०ध्वनित करना, ०बोलना कहना।

अभिशंसक (वि०) [अभि+शंस्+ण्वुल्] अपमानक, दोषारोपक, कलंककर।

अभिशंसनं (नपुं०) [अभि+शंस्+ल्युट्] दोषारोपण, आक्षेपक, अपमान, निरादर।

अभिशङ्का (स्त्री०) [अभि+शङ्क्+अ+टाप्] आशङ्का, संदेह, चिन्ता, भय।

अभिशपनं (नपुं०) [अभि+शप्+ल्युट्] ०शाप, ०दोषारोपण, ०आरोप, ०लाञ्छन, ०मिथ्याशङ्का।

अभिशब्दः (पुं०) [अभि+शब्द] ०उद्घोष, ०कथन, ०प्रतिपादन, प्ररूपणा, ०निरूपण।

अभिशब्दित (वि०) [अभि+शब्द+क्त] ०प्रकाशित, ०प्ररूपित, ०निरूपित, ०प्रतिपादित, ०कथित, ०भाषित।

अभिशस्त (भू०क०कृ०) [अभि+शंस्+क्त] ०अलंकित, ०अपमानित, ०बाधित, ०दुःखित, ०अशुभी, ०पापी, ०दुष्ट।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अभिशस्तिः (स्त्री०) [अभि+शंस्+क्तिन्] ०अनिष्ट, ०हानिकर, ०कलंक, ०अपमान, ०दुष्ट, ०दुर्भाग्य, ०संकट।

अभिशापनं (नपुं०) [अभि+शप्+णिच्+ल्युट्] शाप देना, दोषारोपण, लाञ्छन।

अभिशीत (वि०) [अभि+श्यै+क्त] शीतल, शर्द, ठण्डा।

अभिशोचनं (नपुं०) [अभि+शुच्+ल्युट्] कष्ट, पीड़ा, ०अत्यन्त शोक, ०प्रगाढ़ व्याधि, ०तीव्र कष्ट।

अभिश्रवणं (नपुं०) [अभि+श्रु+ल्युट्] उच्चारण, श्रुतश्रवण।

अभिषङ्ग (पुं०) [अभि+षंज्+घञ्] १. आसक्ति, लगाव, संयोग, सम्पर्क। २. हार, पराजय। ३. वैराग्य, वियोग, ४. अभिशाप, लाञ्छन, आरोपण, ०अनादर।

अभिषञ्जनं (नपुं०) आसक्ति, संयोग, सम्पर्क।

अभिषवः (पुं०) द्रव या दृश्य द्रव्य।

अभिषवः (पुं०) अभिषेक, स्नान "जिनेश्वरस्याभिषवं सुदर्शनः।" (सुद० ११४)

अभिषिक्त (भू०क०कृ०) [अभि+सिंच्+क्त] अभिषेक किया गया, स्नान युक्त (सम्य० ४१)

अभिषिंच् देखो नीचे।

अभिषिञ्च् (सक०) [अभि+सिंच्] ०अभिषेक कराना, ०स्नान कराना, ०जलधारा छोड़ना। 'जिनपं चाभिषिषेच भक्तितः।' (सुद० ३/५) ०अभिषेक, जलाभिषेक का प्रयोग भगवन् प्रतिमा के लिए होता है। किन्तु राज्याभिषेक स्नान आदि के प्रयुक्त 'अभिषिञ्च्' शब्द का अर्थ स्नान कराना, छिड़काव कराना, जल सिंचन करना, तिलक करते हुए संस्कार करना। 'अभिषिञ्च्' अर्थात् अभिषेक के लिए प्रयुक्त जल शुद्ध, प्रासुक या पवित्र होता है। पञ्चम् सर्ग के (९८) श्लोक में 'अभिषिञ्चामि' क्रिया स्नान से सम्बन्धित है।

अभिषेकः (पुं०) [अभि+सिंच्+घञ्] १. अभिषेक, पवित्र जलाभिषेक, प्रतिमाभिषेक। २. स्नान, सिञ्चन। शरीरि-वर्गस्य तमां विवेकहान्या महान्याग गुणाभिषेकः (जयो० १६/२५) उक्त पंक्ति में 'अभिषेक' का अर्थ समर्पित, संयमित, संस्कारित है। 'हे यागगुणाभिषेक! यागस्य हवनस्य गुणे वृद्धिकरणेऽभिषेको दीक्षाप्रयोगो यस्य तत्सम्बोधनम् अर्थात् हे यज्ञकर्तः।" (जयो० वृ० १६/२५)

अभिषेचनं (नपुं०) [अभि+सिच्+ल्युट्] प्रक्षालन, जलाभिसिंचन। (जयो० २२/२२)

अभिषेचन-विधि (स्त्री०) प्रक्षालन विधि। (वीरो० २२/२२)।

अभिषेणन (नपुं०) [अभि+सेना+णिच्+ल्युट्] कूच करना, सैन्य ले जाना, शत्रु की ओर जाना।

अभिष्टवः (पुं०) [अभि+स्तु+अप्] ०प्रार्थना, ०अर्चना, ०पूजा, ०प्रशंसा, ०स्तुति।

अभिष्यः (पुं०) [अभि+स्यन्द्+घञ्] १. टपकना, बहना, ०स्राव होना। २. अतिरेक, आधिक्य, विशेष वृद्धि। ३. नेत्र रोग होना।

अभिष्वङ्गः (पुं०) [अभि+स्वञ्ज्+घञ्] सम्पर्क, संयोग, स्नेह, अनुराग। विषयसुखे राग आसक्तिः। (जै०११६)

अभिसंश्रयः (पुं०) [अभि+सम्+श्रि+अच्] आश्रय, आधार, शरण।

अभिसंस्तवः (पुं०) [अभि+सम्+स्तु+अप्] सुस्तवन, विशेष स्तुति, महगुणगान।

अभिसंतापः (पुं०) [अभि+सम्+तप्+घञ्] ०संघर्ष, ०अति दुःख, ०विशेष व्याधि, ०पीड़ा, ०अधिक आकुलता।

अभिसन्देहः (पुं०) [अभि+सम्+दिह्+घञ्] १. विनिमय, विनियोग, २. अति संदेह, अधिक संशय।

अभिसन्दध्यात् (भू०) लगाना, व्यतीत करना। 'समयं सोऽभिस्सन्दध्यात्परमं।' (सुद० १३२)

अभिसन्धः (पुं०) [अभि+सम्+धा] ०लाञ्छक, ०वञ्चक, ०निन्दक, छली, कपटी।

अभिसंधा (स्त्री०) [अभि+सम्+धा+अङ्+टाप्] ०भाषण, ०उद्घोषण, ०प्रस्तुतिकरण, ०विवेचन, ०प्रतिज्ञा, ०कथन।

अभिसन्धानं (नपुं०) [अभि+सम्+धा+ल्युट्] प्रतिज्ञा, ०उद्घोषण, ०कथन, ०प्रयोजन, ०उद्देश्य, ०लक्ष्य।

अभिसन्धिः (स्त्री०) [अभि+सम्+धा+कि] ०विचारधारा, ०भाषण, ०उद्देश्य, ०प्रवचन ०अभिप्रेत, ०सम्मति, ०विश्वास, ०अनुबन्ध, प्रतिज्ञा, ०प्रस्ताव। 'कृताभिसन्धिरभ्यङ्गनीराग, महितोदय।" (जयो० २८/८)

अभिसन्धित (वि०) [अभि+सम्+धा+णिनि+क्त] 'वञ्चकता, ठगीभावसा। रमन्ते प्राङ्गणेऽन्येनाहो विचित्राऽभिसन्धिता। (जयो० २/१४९)

अभिसमवायः (पुं०) [अभि+सम्+अव+इ+अच्] एकता, संयोग, मेल, सम्बन्ध।

अभिसम्पत्तिः (स्त्री०) [अभि+सम्+पद्+क्तिन्] परिवर्तन, बदलना, प्रभावित होना।

अभिसम्पातः (पुं०) [अभि+सम्+पत्+घञ्] ०समागम, ०संगम, ०संयोग, ०संघर्ष, ०युद्ध।

अभिसम्बन्धः (वि०) [अभि+सम्+बन्ध्+घञ्] १. संपर्क, सम्बन्ध, समवाय, एकरूपता, संयोजन। २. मैथुन, अब्रह्म

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अभिसम्मुख (वि०) सम्मुख, सामने, प्रत्यक्ष।

अभिसारः (पुं०) [अभि+सृ+अच्] अनुगामी, अनुचर, मित्र।

अभिसरणं (नपुं०) [अभि+सृज्+घञ्] सृष्टि, रचना, निर्माण।

अभिसर्जनं (नपुं०) [अभि+सृज्+ल्युट्] उपगमन, सम्मिलन, सम्प्राप्ति, संयोग।

अभिसर्ग (पुं०) उपहार भेंट, दान, प्रदान।

अभिसात्वः (पुं०) [अभि+शान्त्व+घञ्] धैर्य, साहस बनाना।

अभिसायं (अव्य०) सान्ध्य समय, सूर्यास्त काल।

अभिसारः (पुं०) [अभि+सृ+घञ्] ०नियत मिलन, ०नायिका का नायक के प्रति मिलन, काम, इच्छा।

अभिसारिन् (वि०) [अभि+सृ+णिनि] ०गमनशील, ०प्रयाणशील, उद्यत। ०चलने वाले। "शनकैः सम्प्रति सस्वजेऽभिसारी।" (जयो० १४/९१) अभिसरतीत्यभिसारी कामुकः (जयो० वृ० १४/९१) 'सैन्यसागर इहाभिसारिणः" (जयो० २१/८) सेनारूपसमुद्रेऽभिसारिणो-गमनशीलाः।" (जयो० वृ० २१/८)

अभिसिञ्च् (सक०) [अभि+सिच्] छोड़ना, समर्पण करना। 'कर-वारिरूहेऽभ्यसिञ्चदारादिति" (जयो० १२/५३) कर कमल में जल की धारा समर्पण कर दी।

अभिसृ (सक०) ०अभिसरण करना, ०गमन करना, ०अनुसरण करना, ०गावस्तृणमिवारण्येऽभिसरन्ति नवं नवम्। (जयो० २/१४७) अभिसरन्ति-गच्छन्ति। (जयो० वृ० २/१४७) अभिसरन्ति तरां कुसुमक्षणे समुचिताः सहकारगणाश्च। (वीरो० ६/३५)

अभिसृत (वि०) सेवित, अनुसरित। भूराख्याता फलवत्ताया विलसति सद्विनयाभिसृता। (सुद० ८२)

अभिस्नेहः (पुं०) [अभि+स्निह्+घञ्] ०आसक्ति, ०अनुराग, ०प्रेम, ०इच्छा, ०प्रीतिभाव।

अभिस्फुरित (वि०) [अभि+स्फुर्+क्त] विकसित, प्रफुल्लित, विकासयुक्त।

अभिहत (वि०) [अभि+हन्+क्त] घातक, प्रहत, विदारक, दुःखी, पीड़ित, शोक ग्रस्त।

अभिहतिः (स्त्री०) [अभि+हन्+क्तिन्] प्रहार, घात, चोट करना, प्रताड़ना, पीटना, घायल करना।

अभिहरणं (नपुं०) [अभि+हृ+ल्युट्] सन्निकट/समीप लाना, जाकर लाना।

अभिहवः (पुं०) [अभि+ह्वे+अप्] आमन्त्रण, निमन्त्रण, आह्वानन

अविहारः (पुं०) [अभि+हृ+घञ्] १. हरण करना, ०चुराना, ०ले जाना, ०छीनना, २. आक्रमण, आघात, प्रहार।

अभिहासः (पुं०) [अभि+हस्+घञ्] ०परिहास, ०हंसी, ०विनोद

अभिहित (भू०क०कृ०) [अभि+धा+क्त] ०कथित, ०प्रोक्त, ०भाषित, ०सम्बोधित ०उद्घोषित। सम्यक्त्वयाभिहितम-स्मदुपक्रियार्थं। (जयो० १२/१४६)

अभिहृत (वि०) अभिघट, दोष विशेष, आहार दोष।

अभी (वि०) निर्भय, निडर, भय मुक्त। स्वैः सहस्रतनयैः सुराऽभीः। (जयो० ७/८७)

अभीक (वि०) [अभि+कन्] ०आतुर, ०इच्छुक, ०कामुक, ०अभिलाषी, ०लालसाजन्य, ०विलासी।

अभीक्ष्ण (वि०) [अभि+क्ष्णु+ड] सतत्, निरन्तर, सदा ही, बार-बार।

अभीक्ष्णं (अव्य०) निरन्तर, पुनः, सदैव, लगातार।

अभीत (वि०) भयमुक्त, निडर, निर्भय। "यत्प्रतापतोऽभीतभी भावात्।" (जयो० ६/५९)

अभीप्सव (वि०) वाञ्छक, इच्छुक, कामना जन्य, चाहने वाला। सर्वेऽप्यमी मङ्गलतामभीप्सवः। (जयो० ३/९)

अभीप्सित (वि०) [अभि+आप्+सन्+क्त] वाञ्छित, इच्छित, चाहा गया, अभिलषित। "हर्षतयाशु मुहुरस्मदभीप्सितानि"। (जयो० १२/१४६) 'अभिप्सितानि अस्मदभिषितानि।" (जयो० वृ० १२/१४६)

अभीप्सिन् (वि०) [अभि+आप्+सन्+णिनि] इच्छुक, वाञ्छक, चाहने वाला।

अभीरः (पुं०) [अभि+ईर्+अच्] अहीर, गोपाल, गडरिया।

अभीशापः (पुं०) [अभि+शप्+घञ्] दोषारोपण, लाञ्छन, कोसना।

अभीशुः (पुं०) [अभि+अश्+उन्] लगाम, बागडोर।

अभीष्ट (भू०क०कृ०) [अभि+इष्+क्त] १. वाञ्छित, इच्छित, अभिलषित, चाहा गया। (समु० २/१८, वीरो० ४/५३) "अभीष्ट-संभारती विशाला।"। (जयो० ८/३७) "स्फुट-स्तनाभोग-मिषादभीष्टम्" (जयो० ११/३६) उक्त पंक्ति में 'अभीष्ट' ०का अर्थ सारभूत भी है।

०मङ्गलकर-'सुरभिर्नुरभीष्टदर्शना मे।" (जयो० १२/२३) ०अभीष्टं- मङ्गलकरं दर्शनं यस्याः सा। (जयो० वृ० १२/२३)

प्रमाणित-यः विज्ञैरभीष्टः कुपलख्यया यः।' (जयो० ११/४१)

अभीष्टः (पुं०) प्रियतम, प्रिय।

अभीष्टकृत्व (वि०) उचित फलदायी। "सम्पद्यते सपदि तद्वदभीष्टकृत्वम्।" (सुद० ४/३०)

अभीष्टदायक (वि०) वरदायक, मङ्गलकारक। (जयो० २२/३)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अभीष्टपुष्टि (वि०) वाञ्छितसिद्धि। (जयो० २

अभीष्ट-संवदक (वि०) ०ज्ञाता, ०कुशलज्ञ, ०ज्ञानी। (जयो० वृ० १५/५३) ०प्रियवादी, ०यथेष्ट भाषी।

अभीष्टसिद्धिः (स्त्री०) वाञ्छितनिष्पत्ति, इच्छित अर्थ की सिद्धि। (जयो० २३/३५) (वीरो० २०/१७) 'अभीष्टसिद्धेः सुतरामुपायः।' (सुद० १०१)

अभीष्टा (स्त्री०) प्रियतमा, प्रेमिका।

अभुग्न (वि०) सीधा, सरल, एक सा, वक्रता रहित।

अभुज (वि०) बाहुविहीन, खञ्ज, लूला, लंगड़ा।

अभुजिष्या (स्त्री०) एकाकी स्त्री, अकेली नारी।

अभूत (वि०) अविद्यमान, मिथ्या, सत्ताविहीन। (वीरो० १४/४७)

अभूतपूर्व (वि०) जो पहले न हुआ हो। "समागमः क्षत्रिय-विप्र-बुद्ध्योरभूतपूर्वः।" (वीरो० १४/४७)

अभूतार्थ एक नय भी है। जिसका विषय विद्यमान न हो या असत्यार्थ हो। जैसे गधे के सींग विद्यमान न होने के कारण अभूतार्थ है, और घट-पट आदि संयोगी पदार्थ असत्यार्थ होने के कारण अभूतार्थ है।

अभूतार्थता (वि०) अद्भुतरूपता। (जयो० १३/९९)

अभूतिः (स्त्री०) १. सत्ताहीनता, अविद्यमानता।, २. विभूति रहित, धन रहित।

अभूमिः (स्त्री०) अनुपयुक्त स्थान, पृथ्वी का अभाव, स्थान रहित। अरीकिर्तापि सुरीतिकर्ताऽऽगसामभूमिः स तु भूमिकर्ता। (जयो० १/१२) अभूमिः-स्थान रहित इति। (जयो० वृ० १/१२)

अभूषणत्व (वि०) शोभा विहीनता। (समु० ९/३)

अभेद (वि०) अविभक्त, समरूप, भेदाभाव, भिन्नता रहित।

अभेदः (पुं०) द्रव्यों और गुणों की युगपत् वृत्ति, प्रदेश भेद न होने से गुण-गुणी में अभेद। (जयो० वृ० २६/८१) अभेद-शतपत्र के समान सत्य है, सौ पत्र और कमल में भेद नहीं है।

अभेदनयः (पुं०) अभेदनय, गुण-गुणी/अवयव-अवयवी/अङ्ग-अङ्गी सम्बन्ध विवक्षी। सदेतदेकं च नयादभेदाद् द्विधाऽभ्यधास्त्वं चिदचित्सुप्रभेदात्।" (जयो० २६/९२)

अभेदभुज (वि०) एक रूपता, अनुकूलप्रतिकूल पदार्थों में एक रूपता को धारण करने वाली। भूत्वा ममाभेदभुजः समाधीः। (भक्ति०२६)

अभेद-भेदात्मक (वि०) एक विचारात्मक दार्शनिक दृष्टि जब व्यक्ति अभेद और भेद रूप पदार्थ को पूर्ण रूप ग्रहण करता हुआ कहना चाहता है, सब पत्नी के पुत्र के समान कह नहीं सकता है। तात्पर्य यह है कि पुरुष की पत्नी को पुत्र माता कहता है और पति पत्नी कहता है, उसे सर्वथा न माता रूप कहा जा सकता है और न पत्नी रूप, क्योंकि उसमें माता और पत्नी का व्यवहार पुत्र और पति की अपेक्षा से है, इसी तरह किसी वस्तु को भेद और अभेद दोनों रूप कहा जाता है। प्रदेश भेद न होने के कारण वस्तु अपने गुणों से अभेद रूप है और संज्ञा, लक्षण आदि की अपेक्षा भेद रूप है। दो रूप वस्तु को एकान्त रूप से एक रूप कहना तलवार आकाश को खण्डित करने के समान अशक्य है। (जयो० २६/७६) अभेद-भेदात्मकमर्थमर्हंस्तवोदितं संकलयन् समर्हम्। शक्नोमि पत्नीसुतवन्न वक्तुं किलेह खड्गेन नभो विभक्तुम्।।

अभेद-वृत्तिः (स्त्री०) व्यतिरेक न होना, द्रव्यार्थत्वेनाश्रयेण तदव्यतिरेकादभेदवृत्तिः। (रा०वा०४/४२)

अभेद-स्वभावः (पुं०) एक रूप परिणाम, एक रूप भाव। गुण-गुणी आदि में एक रूप भाव अभेद स्वभाव है।

अभेदोपचारः (पुं०) एकत्व का अध्यारोप।

अभेद्य (वि०) अविभाज्य, अविभक्त, अभिभाजित।

अभोगः (पुं०) विस्तार, उन्नत। "बृहत्स्तनाभोगवशाद्विलग्नः।" (जयो० ११/३४) ०(वि०) भोग रहित, ०भोग विहीन।

अभोक्तृत्व नयः (पुं०) नय की एक दृष्टि।

अभोक्तृत्वशक्तिः (स्त्री०) उपरम स्वरूप, समस्त कर्मों से किये गए, ज्ञातृत्वमात्र से भिन्न परिणामों के अनुभव का उपरमस्वरूप।

अभोज्य (वि०) अभक्ष्य, खाने में अयोग्य।

अभ्यगत (वि०) नष्ट हुआ, समाप्त हुआ, क्षीण हो गया। तमो विलयमभ्यगात्। (सुद० १०८)

अभ्यग्र (वि०) निकट, समीप, पास।

अभ्यङ्क (वि०) तात्कालिक चिह्न से युक्त।

अभ्यङ्ग (वि०) [अभि+अञ्ज्+घञ्] मालिश, उपटन, लेप।

अभ्यङ्गं (नपुं०) शरीर के प्रति, देह प्रति। "अङ्गमभिव्याप्य वर्तत इत्यभ्यङ्ग शरीरं प्रति।" (जयो० वृ० २८/८)

अभ्यङ्गनी-राग (पुं०) शरीर के प्रति राग।

अभ्यञ्जन (नपुं०) [अभि+अञ्ज्+ल्युट्] मालिश करना, उपटन, मर्दन।

अभ्यतीत (वि०) ०अतिक्रान्त, ०समाप्त हुआ, ०व्यतीत हुआ,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

०परित्यक्त। "मारवाराभ्यतीतः सन्नथो नोदलताश्रितः।" (जयो० २८/११) 'स्वयं हि तावज्जडताभ्यतीत।' (जयो० १/८५) अभ्यतीतः परित्यक्तः सन्। (जयो० वृ० १/८५)

अभ्यर्थना (स्त्री०) याचना, मांगना, चाहना। (जयो० वृ० १२/१४४)

अभ्यधात् (वि०) दिखलाना, अवलोकन करना। 'तनुसौर-भतोऽभ्यधाद्वरं।' (सुद० ३/२५)

अभ्यधीत (वि०) अवलोकित (सम्य० ५/४)

अभ्यधिक (वि०) देखों अभ्यधिक।

अभ्यधिका (वि०) ०अपेक्षाकृत अधिक, ०अत्यधिक, ०विशालतम, ०साधारण, ०अनुपम। 'इत्यमभ्याधिका ममास्त्या।' (जयो० १२/२२)

अभ्यनुज्ञा (स्त्री०) [अभि+अनु+ज्ञा+अङ्ग+टाप्] सहमति, स्वीकृति, आदेश, आज्ञा।

अभ्यनुयोक्त्री (वि०) निपुण बनाने वाली, योग्य करने वाली। (सुद० १२२) "चतुराख्यानेष्वभ्यनुयोक्त्रीं।" (सुद० १२२)

अभ्यन्तर (वि०) [अभि+अन्तरः] भीतरी, आत्म सम्बन्धी, आन्तरिक, निकटतम, घनिष्ट।

अभ्यन्तर-इंद्रियं (नपुं०) मन।

अभ्यन्तर-करण (वि०) आन्तरिक कला।

अभ्यन्तर-कारण (वि०) आन्तरिक करण, मन का हेतु।

अभ्यन्तरीकृ (सक०) [अभ्यन्तर+च्चि+कृ] दीक्षित करना, परिचित करना।

अभ्यन्तरीकरणं (नपुं०) [अभ्यन्तर+च्चि+कृ+ल्युट्] दीक्षित करना, परिचित करना।

अभ्यमनं (नपुं०) [अभि+अम्+ल्युट्] प्रहार, घात, हानि।

अभ्ययः (पुं०) [अभि+इ+अच्] जाना, पहुंचना।

अभ्यर्चनं (नपुं०) [अभि+अर्च्+ल्युट्] ०पूजन, ०अर्चन, ०श्रद्धान, ०समादर, ०सम्मान।

अभ्यर्ण (वि०) [अभि+अद्र्+क्त] सन्निकट, समीप, पास।

अभ्यर्णं (नपुं०) सान्निध्य, साथ, सहभागी, सामीप्य।

अभ्यर्थनं (नपुं०) [अभि+अर्थ्+ल्युट्] प्रार्थना, अनुरोध, निवेदन, अनुयन।

अभ्यर्थिन् (वि०) [अभि+अर्थ्+णिनि] प्रार्थना करने वाला, ०याचक, ०निवेदक, ०प्रतिवेदक, ०अनुरोधक।

अभ्यर्हणा (स्त्री०) [अभि+अर्ह्+युच्+गप्] प्रार्थना, पूजा, अर्चना, सम्मान, समादर।

अभ्यर्हित (वि०) [अभि+अर्ह्+क्त] १. समादरित, सम्मानित, पूजित, प्रतिष्ठित, २. योग्य, तुल्य, समीचीन, उपयुक्त।

अभ्यवकर्षणं (नपुं०) [अभि+अव्+कृष्+ल्युट्] अनुगमन करना, बहिर्निस्सरण, अभिगमन।

अभ्यवकाशः (पुं०) [अभि+अव+काश+घञ्] स्वच्छ स्थान, खुला स्थान।

अभ्यवस्कन्दः (पुं०) [अभि+अव्+स्कंद्+घञ्] शत्रु सन्निकट आना, भिड़ना, आक्रमण करना, प्रहार करना, आघात, प्रतान।

अभ्यवहरणं (नपुं०) [अभि+अव्+हृ+ल्युट्] निम्नोक्षेपण, अःपतन, गिराना, फेंकना।

अभ्यवहारः (पुं०) [अभि+अव+हृ+घञ्] आहारग्रहण, भुंजन, खादन, खाद्य-पेयन।

अभ्यवहार्य (वि०) [अभि+अव+हृ+ण्यत्] आहार्य, भोज्य, खाद्य, खाने योग्य।

अभ्यसनं (नपुं०) [अभि+अस्+ल्युट्] ०अनु+अभ्यास, ०अनवरत पाठ, ०क्रमशः अध्ययन, ०निरन्तर-चिन्तन।

अभ्यसूचक (वि०) [अभि+असु+ण्वुल्] ईर्ष्यालु, निंदक, आरोपक, दोषारोपक।

अभ्यसूया (स्त्री०) [अभि+असु+यक्+अ+टाप्] ईर्ष्या, डाह, घृणा, द्वेष, आरोप, विरोध।

अभ्यसिचि (वि०) अभिषिक्त, स्नापित। (जयो० ३/२२)

अभ्यस्त (भू०क०कृ०) उचित, अध्ययन युक्त, अभ्यास गत। (जयो० वृ० २१/२४) विषय-वस्तु का अध्येता।

अभ्याकर्षः (पुं०) [अभि+आ+कृष्+घञ्] ललकारना, आमना-सामना करना, भिड़ना।

अभ्याकाङ्क्षित (वि०) [अभि+आ+काङ्क्ष्+क्त] मिथ्या आरोप, निर्मूल कथन, निराधार प्रतिवेदन, इच्छा, आकांक्षा।

अभ्याख्यानं (नपुं०) [अभि+आ+ख्या+ल्युट्] ०आरोप लगाना, निन्दा, ०मिथ्या आरोप, ०असत्य-कथन, ०लाञ्छन।

अभ्यागत (वि०) (भू०क०कृ०) [अभि+आ+गम्+क्त] ०सन्निकट गया, ०समीपस्थ, ०आगतस्थ, ०अतिथि भाव प्राप्त, ०समागत। 'अभ्यागतानभ्युपगम्य सुभ्रुवः।" (जयो० ५/९२) अभ्यागतानुपरिस्थतान्-(जयो० वृ० ५/९२) "अभ्यागताय च मां लक्ष्मीमिवाभि लाषापूर्तिकर्त्रीं।" (जयो० वृ० १२।९२) अतिथयेऽभ्यागताय। (जयो० वृ० १२/९२)

अभ्यागमः (पुं०) [अभि+आ+गम्+घञ्] १. सन्निकट आना, सामीप्य, अनुगमन। २. युद्ध, संग्राम, विद्वेष, कलह।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अभ्यागमनं (नपुं०) [अभि+आ+गम्+ल्युट्] अनुगमन, उपागमन, प्राप्त होना, पहुंचना।

अभ्यागारिकः (पुं०) [अभि+आगार+ठन्] ०यत्नशील, ०परिवार-रक्षणशील।

अभ्याघातः (पुं०) प्रहार, आक्रमण, हनन, विध्वंस।

अभ्याङ्गनं (नपुं०) [अभि+अङ्ग+ल्युट्] तैल मर्दन, शरीर मालिश। (मुनि०११)

अभ्याङ्गनकारिणी (वि०) तैल मालिश करने वाली। (मुनि०वृ० ११)

अभ्यावदानं (नपुं०) [अभि+आ+दा+ल्युट्] ०उपक्रम, ०प्रारम्भ, ०सूत्रपात्र करण, ०समारम्भ।

अभ्याधानं (नपुं०) [अभि+आ+धा+ल्युट्] डालना, रखना, प्रक्षेपण, निक्षेपण।

अभ्यान्त (वि०) [अभि+आ+अम्+क्त] व्याधिजन्य, रोगाक्रान्त, रोगी, पीड़ित, रूग्ण।

अभ्यापातः (पुं०) [अभि+आ+पत्+घञ्] सङ्कट, आपत्ति, विपत्ति, दुर्भाग्य।

अभ्यामर्दः (पुं०) [अभि+आ+मृद+घञ्] आरोहण, चढ़ना, सवार होना, ऊपरीगमन।

अभ्यावृत्तिः (स्त्री०) [अभि+आ+वृत्+क्तिन्] अनुचिन्तन, पुनर्चिन्तन, दुहराना, बार-बार याद करना, ०अनुप्रेक्षण, अनुशीलन।

अभ्याश (वि०) [अभि+अश्+घञ्] व्याप्त, सन्निकता, समीपता, प्राप्त होना।

अभ्यासः (पुं०) [अभि+आ+अस्+घञ्] आवृत्ति, अध्ययन, तल्लीन, अनवरत भाव, (जयो० वृ० ११/४५)

अभ्यासगत (वि०) आवृत्ति प्राप्त, अध्ययन गत, मनन युक्त।

अभ्यास-तत्पर (वि०) अभ्यास में लीन।

अभ्यास-तल्लीन (वि०) अभ्यास तत्पर, ०अध्ययनशील, ०मनन भाव सहित।

अभ्यासपर (वि०) अध्ययन में लीन, अभ्यासाग्रणी, प्रयत्नशील। 'नरायितस्येवाभ्यासपरा।' (जयो० १४/२६)

अभ्यासादनं (नपुं०) [अभि+आ+सद+णिच्+ल्युट्] शत्रु का सामना करना, आक्रमण करना।

अभ्याहननं (पुं०) [अभि+आ+हन्+ल्युट्] उपघात, प्रहरन, पीडन, बाधन, हनन, प्रतिपीडन, प्रतिघातन।

अभ्याहारः (पुं०) [अभि+आ+हृ+घञ्] अपहरण, अनुग्रहण, सं आनयन, बंधन बनाना, ०रोकना।

अभ्युक्षणं (नपुं०) [अभि+उक्ष्+ल्युट्] अभिसिंचन, तर करना, छींटना।

अभ्युचित (वि०) प्रचलित, समुचित, विशेष। अमितोन्नतिमन्ति निर्मलान्यभ्युचितायत-विस्तराणि वा। (जयो० १३/६५)

अभ्युच्चयः (पुं०) [अभि+उत्+चि+अच्] १. बुद्धि, आगम। २. समुन्नत, अतिशिष्टि।

अभ्युज्झित (वि०) त्यक्त, परित्यक्त, त्याज्य। 'स कोऽपि योऽभ्युज्झित-कामसत्कृतिः।'' (वीरो० ९/६)

अभ्युत्क्रोशनं (नपुं०) [अभि+उत्+क्रुश्+ल्युट्] उच्चोचारण, उच्चीत्कार, उच्चोदघोष।

अभ्युत्थानं (नपुं०) [अभि+उद्+स्था+ल्युट्] १. उठना, ०सम्मानार्थ उठना, ०प्रस्थान करना, ०गमन करना, ०कूच करना। २. ०उन्नति, ०सम्पन्नता, ०मर्यादा।

अभ्युत्पतनं (नपुं०) [अभि+उत्+पत्+ल्युट्] ०कूद पड़ना, ०गिरना, ०आक्रमण करना, ०उत्क्रमण, अनुत्पतन, ०छलांग लगाना।

अभ्युदयः (पुं०) [अभि+उद्+इ+घञ्] ०उद्गम, ०उदय, ०निःसरण, ०उत्थान, ०उन्नति, ०सफलता। २. उपक्रम, उत्सव, आनंद। 'समुत्सवकरस्याऽस्याऽभ्युदयेन रवेरिव।' (जयो० १/१११) अभ्युदयेन-पुण्यपरिपाकेन। (जयो० वृ० १/१११) जयोदयं स्वाभ्युदयाय शक्त्या। (जयो० १/१) अभ्युदयो-ज्ञानादिलक्षणः। (जयो० १/१) उक्त पंक्ति में अभ्युदय का अर्थ 'कल्याण' भी। 'कुतः परस्याभ्युदयं सहेरन्।'' (सुद० २/४४) 'भद्रस्याभ्युदयो यथा।' (समु० ९/३१) (भद्र की उन्नति)

अभ्युदयभाजि (वि०) अभ्युदय शील, उन्नतिशील, उदय करने वाला। 'दृष्टिरभ्युदयभाजि जनानां।' (जयो० ५/२८)

अभ्युदस्त (वि०) समुत्थापित, उठाता हुआ, ऊँचा करता हुआ। 'कलितोष्मिमिषोऽभ्युदस्त-वक्त्रो।' (जयो० १२/१२२)

अभ्युदारः (पुं०) अत्युत्कृष्ट, अत्यन्त उदार, प्रबलता युक्त। 'प्रमुक्तये सारतयाभ्युदारं।' (भक्ति०सं० १०) 'सारोऽभ्युदारो दयिते।' (जयो० १७/३६)

अभ्युदाहरणं (नपुं०) [अभि+उद्+आ+हृ+ल्युट्] निदर्शन, उदाहरण, विपरीत युक्ति के लिए दृष्टान्त।

अभ्युदित (वि०) प्रकट हुई, व्यक्त हुई, निकली। स्वस्मिन् कला साभ्युदितास्तु यस्य। (भक्ति० सं० ३९)

अभ्युदितातुकम्प (वि०) दयाधारिन्, करुणाशील, अनुकम्पावान्।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

'देवीति यासौ नवनीत-सम्पत्तयोदियायाभ्युदितानुकम्पं। (जयो० २०/८४)

अभ्युद् (सक०) स्वीकारना, चलना, निकलना। 'इदं स्विदङ्के द्रुतमभ्युदेति।' (सुद० १/५)

अभ्युद्गमः (पुं०) [अभि+उद्+गम्+घञ्] ०निकलना, ०सम्मानार्थ आना, ०उठना, ०आदर देना।

अभ्युद्गतिः (स्त्री०) उठना, ०आदरार्थ बाहर निकलना, ०अतिथि सम्भावनार्थ जाना।

अभ्युद्धृतिः (स्त्री०) स्वीकार करना, अङ्गीकार करना। 'स्वामिन् आज्ञाऽभ्युद्धृतये तु सेवकस्य चेष्टा सुखहेतुः। (सुद० १२)

अभ्युद्यत (भू०क०कृ०) [अभि+उद्+यम्+क्त] १. तत्पर, तैयार, संलग्न, लीन, प्रयत्नजन्य। २. आगे किया, उठाया, लाया।

अभ्युन्नत (वि०) [अभि+उद्+नम्+क्त] अति ऊँचा, उन्नतशील, प्रगति वाला।

अभ्युन्नतिः (स्त्री०) [अभि+उद्+नम्+क्तिन्] तीव्र प्रगति, स्थल प्रगति, उन्नति स्थान। 'समेखलाभ्युन्नतिमन्नितम्बा।' (सुद० २/५)

अभ्युन्नमतिः (स्त्री०) [अभि+उद्+नम्+अति] अति उन्नत, अत्यन्त उच्च, पूर्णता युक्त। 'पयोधरोऽभ्युन्नमतीह।' (जयो० ११/३३)

अभ्युपगतः (वि०) [अभि+अप्+गत्+क्त] प्राप्त होना, मिलना, मानना। (सुद० १२१)

अभ्युपगमः (पुं०) [अभि+उप्+गम्+घञ्] ०उपागमन, ०प्राप्त होना, ०स्वीकारना, ०मिलना, ०मानना, ०समझना।

अभ्युगम्य (सं० कृ०) [अभि+उप्+गम्+ल्यप्] प्राप्त होकर ग्रहण करने। (सुद० १२१) कठोरतामभ्युपगम्य याऽसौ। (सुद० १२१)

अभ्युपत्तिः (स्त्री०) [अभि+उप+पद+क्तिन्] सहायतार्थ जाना, ०कृपा दृष्टि रखना, ०निकट जाना, ०रक्षा, ०धैर्य, ०साहस।

अभ्युपलम्भः (पुं०) सहारा, सम्प्रयाण।

अभ्युपलम्भनंः (पुं०) सहारा, सम्प्रयाण, प्रस्थान। ''सुवर्णसूत्राभ्युपलम्भनेन।'' (जयो० ११/६)

अभ्युपायः (पुं०) [अभि+उप+इ+अच्] साधन (जयो० ३/४८) विधिर्येनाभ्युपायेन। ०प्रबन्ध, ०प्रतिज्ञा, ०उपचार, ०युक्ति। 'विधेश्च संयोजयतोऽभ्युपायः' (जयो० ३/८७) अभ्युपायः प्रबन्धो। (जयो० वृ० ३/८७)

अभ्युपायनं (नपुं०) [अभि+उप+अप्+ल्युट्] १. उपहार, भेंट, सम्मान प्रतीक। २. रिश्वत, घूंस।

अभ्युपासनं (नपुं०) [अभि+उप+अस्+ल्युट्] समर्थनकारी, ०प्रशंसक, ०समालोचक। उपासक ०देव्योऽभ्युपासन-समर्थकारिपक्षाः' (वीरो० ५/४२)

अभ्युपेत (भू०क०कृ०) [अभि+उप+इ+क्त] १. उपागत, प्राप्त, समागत, समीप जाना। (जयो० ४/३६) २. अङ्गीकृत, स्वीकृत, ज्ञात, भिज्ञ, व्याकुलित। निर्वारिमीनमितभिङ्क्तिमभ्युपेता। (सुद० ८६)

अभ्युपेत्य (अव्य०) [अभि-उप+इ+ल्यप्] प्राप्त करके, पहुंच करके, समीप जाकर। 'अभ्युपेत्य पुनराह तमेष।' (जयो० ४/३६)

अभ्युषः (पुं०) [अभितः उ ऊष्यते अग्निना दह्यते] खूबी रोटी।

अभ्यूढ (वि०) विवाहित, परिणीत, परिणय युक्त। 'अस्ति सुदर्शन-तरुणाऽभ्युढेयं।'

अभ्यूहः (पुं०) अनुमान, तर्क, (सुद० ८४)

अभ्योबाधक (वि०) ०बाधा पहुंचाने वाला, ०विघ्नकर्ता, ०अवरोधक। (समु० ९/१५)

परेऽभ्योबाधकं नं स्यादेवमङ्ग स सन्दधत्। (समु० ९/१५)

अभ्र (अक) घूमना, जाना, भ्रमण करना।

अभ्रं (नपुं०) [अभ्र+अच्] मेघ, बादल अवारिषु मेघाः। (धव०१४/३५) वर्षा से रहित मेघ को 'अभ्र' कहते हैं। रणभूमावभ्रे च खगस्ताक्ष्यप्रायं। (जयो० ७/११३) सोऽभ्रेगगने। (जयो० वृ० ७/११३, वीरो० २/५०) 'अभ्रमुवल्लभकमिमति' वा अधिकृत्येऽपि अधियोगे सप्तमी। (जयो० वृ० ९/५२) वीक्ष्य मेलमनयोरिह शातमभ्रतस्ततिरहो निपपात। (जयो० ६/१३०) वहां आकाश से ऐसे फूलों की वर्षा हुई। 'अभ्र' का अर्थ गगन, आकाश भी है।

अभ्रंलिह (वि०) [अभ्र+लिह्+खस् मुमागमः] गगनप्रान्त स्पर्शित, आकाश चुम्बित, ०अधिक उच्च। 'रात्रौ यदभ्रंलिह-शालभृंङ्ग समङ्कितः' (वीरो० २/२७)

अभ्रंलिह-शाल-श्रृंङ्गारं (नपुं०) गगनचुम्बी शाल शिखर, आकाश स्पर्शित पर कोटे के शिखर। (वीरो० २/२७)

अभ्रंलिहाग्र-शिखरावलिः (स्त्री०) गगनचुम्बी शिखरावली। (वीरो० २/५०)

अभ्रकं (नपुं०) [अभ्र+कन्] अबरक, चिलचिल।

अभ्रङ्कष (वि०) [अभ्र+कष्+खच् मुमागमः] बादलों को छूने वाला, मेघ स्पर्शित।

अभ्रम (वि०) निःसंशय, संदेहरहित। (जयो० वृ० ५/१०१)

अभ्रमरीतिकरी (वि०) निःसंदेहचेष्टाकारिणी १. भ्रमरियों को बाधा न पहुंचाने वाली। (जयो० २०/८७)

अभ्रमलोकता (वि०) निःसंशय परिज्ञानं १. भ्रम-रहित देखने

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वाली। २. आकाश की ओर देखने वाली। 'अभ्रमालोकतया चरिष्णोः।' (जयो० ५/१०१) अभ्रमाकाशं चरिष्णोः (जयो० वृ० ५/१०१)

अभ्रमुः (स्त्री०) [अभ्र+मा+उ] हथिनी, हस्तिनी, ऐरावत हाथी की सहचरी। (जयो० २३/६६) गजस्येव कपटाभ्रमुकायां मनसो बहुलापाया।

अभ्रमुका देखो ऊपर।

अभ्राभ्र-विधूदित (वि०) आकाश पटल पर अधिकार करने वाली। (वीरो० १३/७) ''प्रत्येकमभ्राभ्र-विधूदितानाम्।''

अभ्रान्तर (वि०) मेघ के अन्तर, मेघमध्य, आकाश के बीच। 'अभ्रान्तरमितमुपेत्य वारिभरं।' (जयो० ९/९४)

अभ्रिः (स्त्री०) कुदाल, खुरपी।

अभ्रित (वि०) [अभ्र+इतच्] मेघाच्छादित, बादलों से आवृत्त।

अभ्रिय (वि०) [अभ्र+घ] मेघ सम्बन्ध, बादलों से उत्पन्न, मेघोत्पन्न।

अभ्रेष (वि०) योग्यता, उपयुक्तता।

अम् (अव्य०) [अम्+क्विप्] शीघ्र, त्वरित, जल्दी।

अम् (अक०) १. सेवा करना, ०सम्मान करना, ०शब्द करना, २. भोजन करना, ३. आक्रमण करना, टूट पड़ना, ०कष्ट होना, ०रोग होना।

अमः (पुं०) [अम+घञ्] १. कच्चा, अपरिपक्व, २. आमरोग, रुग्णता। ३. अनुचर, सेवक।

अमङ्गल (वि०) ०अशुभ, ०अकल्याणकर, ०अहितकर, ०दुर्भाग्यपूर्ण, ०भाग्यहीन।

अमण्ड (वि०) अनलंकृत, अविभूषित।

अमत (वि०) अज्ञात, असम्मत, अमान्य।

अमति (वि०) दुर्बुद्धिः, दुष्टमन, दुश्चरित्र।

अमतिः (स्त्री०) अज्ञान, संज्ञाहीन, ज्ञानशून्य।

अमत्त (वि०) उन्मत्त, धुत्त।

अमत्रं (नपुं०) [अमति भुक्ते अन्नमत्र-अम्+आधारे अत्रन्] पात्र, भाजन, वर्तन, भाण्ड।

अमत्रं (नपुं०) बल, शक्ति, सामर्थ्य। 'अमत्रमत्र प्रदधार मातुः।' (वीरो० ५/३९)

अमत्रगत (वि०) उदार, ईर्ष्या रहित, द्वेष हीन।

अमनस् (वि०) मन विहीन, अनियन्त्रित।

अमनस्क (वि०) [न विद्यते मनो येषां ते] (स०सि०२/११) मनरहित, मन का अभाव। द्रव्यमन और भावमन से रहित। (तत्त्वार्थसूत्र महा०वृ० ३४)

अमनाक् (अव्य०) अत्यधिक, बहुत।

अमनुष्य (वि०) अमानुषिक, मानवता रहित।

अमनोज्ञ (वि०) ०अप्रिय, ०अनिष्ट, ०घातक, ०हानिकारक, ०बाधा जन्य। ''अमनोज्ञं अप्रियं। 'कृत्वाऽन्यथाभाव-मथामनोज्ञे।' (भक्ति सं० ४८)

अमन्त्र (वि०) असंस्कारित, मन्त्रहीन, मन्त्रों से अनभिज्ञ।

अमन्द (वि०) न्यूनता रहित, स्फूर्तिमान्, शक्तिसम्पन्न, बलयुक्त। (जयो० वृ० १/३२) तेज, प्रबल, अधिक। ''नटी मुदामन्द-पदाममेयं।'' (जयो० १/३२) अमन्दानि, न्यूनतारहितानि प्रशस्तानि च। (जयो० वृ० १/३२) 'बभुः कन्दा इवामन्दाः।' (जयो० १०/८८) उक्त पंक्ति में 'अमन्द' का अर्थ प्रकाशमान है।

अमम (वि०) ०ममकार रहित, ०अहंकार रहित, ०आसक्ति-विहीन, ०ममत्वरहित, ०समत्वशील।

अममता (वि०) समत्वभावना, स्वार्थविमुक्त। इच्छाशून्य।

अमर (वि०) अविनाशी, मृत्यु रहित।

अमरः (पुं०) देव, देवता। ''सम्भृष्यमरवद्विसर्जनमतः।'' (सुद० १०३)

अमरगणः (पुं०) देवनिकाय, देवसमूह। 'अमरगणाश्च वदन्ति महोदयम्।' (जयो० १/९९)

अमर-कोषः (पुं०) अमरसिंह रचित कोष।

अमर-तरुः (पुं०) दिव्य तरु, कल्पवृक्ष।

अमरता (वि०) अमरत्व, देवत्व। (वीरो० १४/२२)

अमरताभिलाषी (वि०) देवत्व का इच्छुक। (वीरो० १४/२२)

अमरपुरी (स्त्री०) देवपुरी, देवलोक।

अमर-वन्दित (वि०) देव पूजित। ''तस्मै समस्तामर-वन्दिताय।'' (भक्ति वृ० २३)

अमरा (स्त्री०) देवाङ्गना, देवी। (जयो० २/१४)

अमराङ्गना देखो अमरा।

अमरावती (स्त्री०) स्वर्गपुरी। (दयो० वृ० ९) ''तिपरिपूर्णतयाऽम-रावतीमतलस्पर्शतया।'

अमरी (स्त्री०) देवाङ्गना, देवी। मितामरीभिर्मधुराधरीभिः। (जयो० २७/१९)

अमरीचय (वि०) देवाङ्गना समूह, देवीकुल। (जयो० २२/२३)

अमरेशः (पुं०) इन्द्र, शक्र, पुरन्दर, देवों का ईश। (वीरो० ९/२६) प्रजल्पनेऽनल्पतयैव तत्परा इवामरेशस्य च चारणा नराः।'' (वीरो० ९/२६)

अमरैकवेदी (वि०) अर्हत् स्वरूप के ज्ञाता, सर्वज्ञत्व वेत्ता। **''वेदिरङ्गुलिमुद्रायां बुधैः संस्कृत भूतले''** इति विश्व-लोचनः।

अमर्त्य (वि०) ०अविनाशी, ०अक्षय, ०अजर, दिव्य ०अहीन।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(जयो० ५/३१) पुनरमर्त्यैहीनजनैश्च। अमर्त्येत्यत्र अकारस्य ईषदर्थकत्वेन हीनार्थकत्वात्।' (जयो० वृ० ५/३१)

अमर्त्यः (पुं०) देव, अमर। (नमर्त्या अमर्त्यास्तैः देवैः (जयो० वृ० ५/३१)

अमर्मन् (नपुं०) मृदु, कोमल, मर्म रहित।

अमर्याद (वि०) मर्यादा रहित, प्रतिकूलता युक्त, अनादर कर्ता, सीमातिक्रान्तक।

अमर्ष (वि०) असहनशील, धैर्यविहीन, शक्ति रहित, सहिष्णुता से रहित।

अमर्षण (वि०) असहिष्णु, धैर्यशून्य, क्षमा न करने वाला।

अमर्षिन् (वि०) १. असहिष्णु, सहनशीलता रहित। २. क्रोधी, प्रचण्ड।

अमल (वि०) निष्पाप, निर्मल, स्वच्छ, परिशुद्ध, मल रहित। (जयो० ७/२) 'नक्षत्रकमालिकाऽमला।' (जयो० १०/४८) (स्वच्छ एवं अति सुन्दर नक्षत्रमाला) "अमले परिशुद्धे भूतले निश्चलामलजलवति।" (जयो० वृ० १२/१३१) प्रभावत्यधुनाऽमलार्या। (जयो० वृ० २३/६९) प्रभावती चामला निष्पापाऽर्याभूता। (जयो० वृ० २३/६९)

अमलगुणः (वि०) निर्मल गुण, पवित्रगुण। (जयो० ७/२)

अमलता (वि०) स्वच्छता, पवित्रता, निर्मलता। 'समेति यत्रामलतामनेन'। (वीरो० १/९)

अमलतोयं (नपुं०) स्वच्छ जल, निर्मल जल। "दृष्ट्वा समुद्रोमलतोयमिष्टः।" (जयो० २१/७८) अमलेन तोयेन मिष्टोऽसौ समुद्रो। (जयो० वृ० २१/७८)

अमला (स्त्री०) अमरा, देवी, लक्ष्मी।

अमलिन् (वि०) स्वच्छ, शुभ्र, श्वेत, पवित्र, निर्मल।

अमसः (पुं०) [अम्+असच्] रोग।

अमहेशः (पुं०) कामदेव, मदन। (जयो० ५/७५)

अमा (स्त्री०) अमावस्या, नूतन चन्द्रमा का दिन, सूर्य और चन्द्र के संयोग का दिन। सूर्या चन्द्रमसावास्यं रेजाते कुण्डलच्छलात्। (जयो० ३/१०१) अमा च अमावस्यातिथिः। (जयो० वृ० ३/१०१) अमावस्यायां सूर्येन्दुसङ्गमो भवतीति ख्यातिः। (जयो० वृ० ३/१०१)

अमा (अव्य०) से, पास, सन्निकट, साथ, जैसा कि।

अमा (पुं०) १. आत्मा, २. व्यास।

अमांस (वि०) जर्जरदेह, मांस रहित, क्षीण काय, मांस छोड़ने वाला।

अमार्गः (पुं०) अनभिज्ञ, अनजान।

अमात्यः (पुं०) [अमा+त्यक्] मन्त्री, अमात्यः देशाधिकारीत्यर्थः (त्रि०सा०टी० ६८३) सहचर, सचिव, अनुयायी। (जयो० ३/२०)

अमात्यवर्गः (पुं०) ०सहचरवर्ग, ०नतवर्ग, ०विनम्रवर्ग। (जयो० ३/२०)

अमानवं (वि०) विनम्र, क्षमाशील, विनीत।

अमानव (वि०) [न मानवोऽमानवो देवः] देवता, देव, अमर। (वीरो० १७/२४) मनुष्यों में असाधारण। (जयो० २८/१०) (जयो० ३/१०१)

अमानवचरित्रं (नपुं०) ०विशिष्ट चरित्र, ०उत्तम चरित्र, ०असाधारण चरित्र। (जयो० ३/२७)

अमानुष (वि०) १. राक्षीस, अमानवीय, २. अलौकिक, अपार्थिव। (दयो० ५१)

अमानुषोचित (वि०) राक्षसी प्रवृत्ति, अमानुषिक वृत्ति। (दयो० वृ० १)

अमानुष्य (वि०) अलौकिक, मानवीयता रहित।

अमाभिधान (नपुं०) अमावस्या की रात्रि। अमाभिधानेऽन्यत्राहो समुदासीनतामये। (सुद० ८७)

अमाम (स्त्री०) अमावस्या।

अमाय (वि०) छल रहित, कपट विहीन, सरलता युक्त, निष्कपट, सौम्य। २. माप विहीन।

अमायिक (वि०) निश्छल, सरल, निष्कपटी।

अमावस्या (स्त्री०) अमा, अमावसी, सूर्य और चन्द्र के संयोग का दिन। अमा च अमवस्यातिथिः। (जयो० वृ० ३/१०१) अमावस्यां सूर्येन्दुसङ्गमो भवतीति ख्यातिः (जयो० वृ० ३/१०१)

अमावसी (स्त्री०) चन्द्रमा का दिन, अमा, अमावस्या।

अमित (वि०) अपरिमित, असीमित, सीमा रहित, विशाल, अत्यधिक, पर्याप्त। 'परिवदामि सदाऽमित-शासन।' (जयो० ९/१०)

अमित-शासनं (नपुं०) अपरिमित शासन, विशाल शासन। 'अमितमपरिमितं शासनं यस्य।' (जयो० वृ० ९/१०)

अमितोन्नतिः (स्त्री०) पर्याप्तोच्चानि, अधिक उन्नति, बहुत ऊँचे। अमितोन्नतिमन्ति निर्मलान्यभ्युचितायतविस्तराणि वा।' (जयो० १३/६५)

अमित्रः (पुं०) [अम्+इत्र] शत्रु, विरोधी, प्रतिद्वन्द्वी, विपक्षी। (जयो० २३/३)

अमित्रजित् (वि०) १. शत्रुपरिहारक, शत्रुजयी। अमित्रजित् शत्रुपरिहारकोऽसावेव-मित्रजिद-पीति विरोधस्तस्य परिहारो।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(जयो० वृ० २३/३) सूर्य को जीतने वाले नहीं। "मित्रं सख्यौ रवौ पुमान् इति विश्वलोचन:"

अमिथ्या (क्रि०वि०) १. जो मिथ्या न हो, विपरीत न हो, अन्यथा न हो, २. सम्यक्, यथार्थ, उचित।

अमिन् (वि०) [अम्+णिनि] रोगी, व्याधी जनित, बीमार।

अमिषं (नपुं०) [अम्+इषन्] १. लौकिक पदार्थ, भोग सामग्री, २. निश्छलता, निष्कपटता, सत्यवादिता, हितवादिता।

अमीर (वि०) धनाढ्य, धनी, वैभव सम्पन्न। वीर! त्वमानन्दभुवामवीर: मीरो गुणानां जगताममीर:। (वीरो० १/५) मीर होकर भी अमीर अर्थात् गुणों के मीर/समुद्र होकर भी जगत् के अमीर/सबसे बड़े धनाढ्य हो। "मीरोऽब्धि-शैल-नीरेषु" इति विश्वलोचनकोश:। समुद्र एव किन्तु जगतां प्राणिनो मध्ये अमीर: सर्वश्रेष्ठ:। (वीरो० वृ० १/५)

अमीवा (स्त्री०) [अम्+वन् ईडागम:] रोग, व्याधि, बीमारी।

अमु (सर्व०) इदम् सर्वनाम शब्द का 'अमु' आदेश हो जाता है। अमुनादेश (जयो० १/९०) अमुस्मिन् (सुद० ४/२८)

अमुक (वि०) इस तरह, ऐसा-ऐसा, व्याज से। "ममामुकं मेव-समूह-जेतो।" (सुद० २/१३) अमुकस्य बभूव दामिनीत्यभिधा भूमिपते: सुभामिनी। (समु० २/१२)

अमुक-गुण-गत (वि०) इस गुण-वर्णन युक्त। अमुकस्य कामरूपाधिपस्य गुणेषु गुणसंकीर्तन इत्यर्थ:। (जयो० वृ० ६/३२)

अमुक-संघ: (पुं०) इस संघ, इस समूह।

अमुक्त (वि०) ०बन्धन युक्त, ०बन्ध वाला, ०परतन्त्र, ०स्वाधीनता रहित।

अमुक्ति: (स्त्री०) ०मोक्षाभाव, ०मुक्ति का अभाव, ०बन्धन, पराधीनता।

अमुत: (अव्य०) [अदस्+तसल्] वहां, वहां से, उस स्थान पर, उस जगह, उस अवस्था में, ऊपर, उच्च स्थान पर।

अमुद्रित (वि०) जाज्वल्यमान, विकसित, विकासशील, देदीप्यमान। "स्वयममुद्रित-शुद्धशिखाश्रय:।" (जयो० ९/२४)

अमुत्र (अव्य०) [अदस्+त्रल्] वहां उस स्थान पर, उस अवस्था में, वहां पर।

अमुथा (अव्य०) [अदस्+थाल-उत्व-मत्व] इस तरह, इस रूप, इस रीति से।

अमुष्य (वि०) ऐसे, इस तरह, उस 'प्रावर्ततामुष्य महीश्वरस्य।' (जयो० १/११) 'दृशोरमुष्या द्वितयेऽवतारं।' (सुद० २/४८)

अमूदृश् (वि०) ऐसा, इस प्रकार का, इस तरह, इस रूप, इस रीति से।

अमूढ (वि०) [न मूढो भवतीत्यमूढ:] (जयो० वृ० १७/१७) अमूर्ख, मुग्धता रहित। 'नास्ति सा यस्य जीवस्य विख्यात:। सोऽस्त्यमूढदृक्। (लाटी०सं० ४/१११)

अमूढ-दृष्टि: (स्त्री०) ०मिथ्यात्व अप्रशंसक, मुग्धता रहित दृष्टि। 'सर्वेषु भावेषु मोहाभावादमूढं दृष्टि।' (समय प्राभृत वृ० २५०)

अमूर्त (वि०) अशरीरी, शरीर रहित, निराकार। (भक्ति०वृ० २७) अरूपी द्रव्य (वीरो० १९/३६)

अमूर्तत्व (वि०) अशरीरीपना, मूर्तता का अभापना।

अमूर्तद्रव्यं (नपुं०) निराकारी द्रव्य।

अमूर्तरुच (वि०) अमूर्तिक स्वभाव वाले। एतैर्ममामूर्तरुच: किमधि: सम्पन्नतामेत्वधुना समाधि:।" (भक्ति सं० वृ० २७)

अमूर्ति: (स्त्री०) रूप का न होना, मूर्त हीन।

अमूर्ति (वि०) रूप रहित, निराकार।

अमूर्तियोगिनी (वि०) अमूर्तविद्या। (जयो० वृ० २४/२)

अमूल (वि०) ०निर्मूल, ०निराधार, ०आश्रय विहीन, ०प्रमाणाभाव युक्त।

अमूल्य (वि) बहुमूल्य, अनमोल। हैमं तुलाकोटियुगं च कस्मान्ममाप्यमूलस्य निबद्धमस्मात्। (जयो० ११/१५) उक्त पंक्ति में 'अमूल्य' शब्द का अर्थ 'अतिमनोहर' रूप में है। 'अमूल्यातिमनोहरस्य।' (जयो० वृ० ११/१५)

अमृत (वि०) [न मृतोऽमृत:] १. जो मरा न हो, अविनाशी, अनिश्वर:, अजर (जयो० ११/७९)

अमृत: (पुं०) अमर, देव, देवता।

अमृतं (नपुं०) अमृत, पीयूष, जल, जीवन, भुवन, दुग्ध, घृत। (जयो० ९/१४) "पय: कीलालममृतं जीवनं भुवनं वनमित्यमर:। (अमरकोश:) "मम समस्तु महीवलेऽमृत।" (जयो० ९/१४) उक्त पंक्ति में 'अमृत' का अर्थ 'सुन्दर' किया है। हे अमृत! सुन्दर। (जयो० वृ० ९/१४) "श्री कामधेनोरमृतप्रशस्ति:।" (जयो० ११/८६) कामस्य सुरम्या वाञ्छितकर्त्री यदेतदङ्गशरीरममृतस्य सर्वश्रेष्ठा। (जयो० वृ० ११/८६) 'लोडयन्ति ललना: स्म मन्दरप्रायमन्थ कलिनाऽमृताय ताम्। (जयो० २१/५७) उक्त पंक्ति में

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

'अमृत' का अर्थ नवनीत/घृत है। 'अमृतन्तु घृते दुग्धे' इति विश्वलोचनीशः। 'अमृतममरण-कारणमितीष्टं।' (जयो० वृ० १४/७९) अमृत्यु का कारण होन से अमृत है

अमृतकरः (पुं०) चन्द्र, शशि।

अमृतकुण्डः (पुं०) अमृत पात्र।

अमृतगुः (स्त्री०) पीयूषवाणी, अमृतवाणी, (जयो० १/९६) सुधारश्मि, चन्द्रकिरण। (जयो० १६/१९)

अमृतगुत्व (वि०) चन्द्ररूपता, शशिरूपता। अमृतस्य गौ रश्मिर्यस्य तस्य भावम्। (जयो० वृ० २२/४८) (मधुरवाणी को धारण करना) अमृतस्य दुग्धस्य गोभूर्मिर्यत्र तस्य भावम्। (जयो० वृ० २२/४८) (गायपने को धारण करना)

अमृतधामः (नपुं०) मोक्ष, मुक्ति पुरुषार्थ, चन्द्र। "धर्मार्थ-कामामृत-धाम बाहुचतुष्टयं।" (जयो० १९/१३) अमृतधाम मोक्षश्चेति। (जयो० वृ० १९/१३) "भिन्ने भवत्यमृतधामनि नाम शुभ्मत्।" (जयो० वृ० १८/४४) अमृतधामनि चन्द्रमसि। (जयो० वृ० १८/४४) उक्त पंक्ति में 'अमृतधाम' का अर्थ चन्द्र है। 'अमृतानां' देवानामाश्रमः स्वर्गः इस व्युत्पत्ति से 'स्वर्ग' भी अर्थ है।

अमृतधारा (स्त्री०) १. अमृत प्रवाह, २. औषधि विशेष, ३. छन्द विशेष।

अमृतप (वि०) अमृत पान करने वाला।

अमृतपुरधर (वि०) १. अमृतपूर्ण अधरों वाली। २. स्वर्गपुरी रूप धारिणी। ३. मङ्गलदर्शन वाली।
धवलयति क्ष्मावलयं वृद्धद्वारास्य भो अमृतपुरधरे। (जयो० ६/१०५)

अमृतपूः (वि०) अमृतस्थान। अमृतस्य पूः स्थानमधरो यस्याः सा। (जयो० ६/१०५)

अमृतपूर्णः (वि०) अमृत से परिपूर्ण, पीयूष से भरी हुई। 'पवित्ररूपामृतपूर्णकुल्या'। (सुद० २/७)

अमृतप्रदात्री (वि०) दुग्ध प्रदान करने वाली, वाक्कामधेनुः खलशीलनेनाऽमृतप्रदात्री सुतरामनेना। (समु० १/२६)

अमृतप्रवाहित (वि०) सुधादानी। (जयो० १८/८५)

अमृतप्रशस्तिः (स्त्री०) १. सर्वश्रेष्ठपूर्ति, प्रशंसा, २. दुग्ध प्रशंसा, दुग्ध सम्पत्ति। 'अमृतस्य सर्वश्रेष्ठा प्रशस्तिः यस्येदृशं।' अमृतं दुग्धमेव प्रशस्तिः सम्पत्तिर्यस्य। (जयो० वृ० २१/८६)

अमृतफलं (नपुं०) द्राक्ष, अंगूर, दाख।

अमृतबन्धुः (पुं०) देव, अमर, देवता।

अमृतभुज् (पुं०) देव, अमर, देवता।

अमृतभू (वि०) अमृतत्व को प्राप्त, जन्म-मरण से रहित।

अमृतमंथनं (नपुं०) सिन्धु मंथन, समुद्र विलोडन।

अमृतरसः (पुं०) पीयूष रस।

अमृतलता (स्त्री०) अमृतदायी वल्लरी।

अमृतलहरी (स्त्री०) पीयूष प्रवाह। (जयो० ७/६३)

अमृतसार (वि०) १. निर्झर, झरना, २. अमृतमय, पीयूष युक्त। येन कर्णपथतो हृदुदारमेत्य पूरयति सोऽमृतसारः। (जयो० ४/५३) 'अमृतस्य सारो निर्झरः' (जयो० वृ० ४/५३)

अमृतसारिणी (वि०) सञ्जीवनी सार, जीवनदायिनी तत्त्व। सुधावत् प्रसक्तिकारिणी। (जयो० वृ० १/८८)

अमृतसिद्धिः (स्त्री०) अमृत की सिद्धि, अमृतपान, जल निष्पत्ति। "अमृतस्य जलस्य मरणाभावस्य च सिद्धिं निष्पत्ति।" (वीरो० वृ० ४/४८)

अमृत-सूः (पुं०) चन्द्र।

अमृतसूति (वि०) अमृत को प्रवाहित करने वाला।

अमृत-सोदरः (पुं०) अमृत भाई।

अमृतस्रवः (पुं०) अमृत प्रवाह, पीयूष धारा। अमृतवर्षिणी। (सुद० ४/१३) वागेव कौमुदी साधु-सुधांशोरमृतस्रवा।" (सुद० ४/१३)

अमृतस्रवा (वि०) दुग्धदात्री, अमृत प्रदायी, अमृत वर्षाने वाली। विस्तारिणी कीर्तिरिवाथ यस्यामृतस्रवेन्दो रुचिवत्प्रशस्या। (वीरो० २/२०)

अमृतस्राविणी (वि०) अमृत देने वाली, दुग्धदात्री, सुधा प्रदात्री। (दयो० वृ० ५३)

अमृतस्रुतिः (स्त्री०) सुधास्रोत, पीयूषधारा। (दयो० वृ० ९)

अमृतस्रुतिमयी (वि०) अमृतप्रवाहिणी, पीयूष प्रवाह वाली। (जयो० १८/८५) तस्यामृतस्रुतिमयीं प्रतिपद्य हे गां। (जयो० १८/८५) अमृतस्रुतिमयीं-पीयूषप्रवाहरूपामुत मोक्षप्राप्ति-रूपाम्। (जयो० वृ० १८/८५)

अमृतस्रोत (वि०) पीयूष निर्झर, सुधा धारा। (दयो० वृ० ९)

अमृता (स्त्री०) शराब, मादक द्रव्य, मद्य।

अमृतांशः (पुं०) पीयूषलव, अमृत अंश, सुधांश। (जयो० वृ० ११/६३)

अमृतांशुः (पुं०) चन्द्र, शशि, इन्दु। (दयो० ८४)

अमृतात्मन् (वि०) अमृत की तरह आनन्ददायिनी, अमृतवदा-नन्ददायिनी। "चारुर्विधोः कारुरुतामृतात्मा।" (जयो० ११/९२)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अमृतायमान (वि०) अमृत वाला, अमृत युक्त, अमृत की तरह आचरण करने वाले। "जगत्यमृतायमानेभ्यः।" (सुद० १२४)

अमृताशी (वि०) अमृत भोजी, सुधापानक, पीयूष पान करने वाले।

तस्मादनल्पाप्सरसङ्गत्वाद्भुत्वाऽमृताशी सुखं-संहितत्त्वात्। (वीरो० ११/२४)

अमृतेशः (पुं०) चन्द्र।

अमृतेशयः (वि०) क्षीर सागर में शयन करने वाले विष्णु।

अमृतोक्तिः (स्त्री०) अमृतवचन (वीरो० १८/२४)

अमृतोर्मि (स्त्री०) अमृत लहर (जयो० ७/६३) मृदुता रहित (वीरो० २०/२२)

अमृषा (स्त्री०) सत्य।

अमृषा (अव्य०) सचमुच, वास्तव में।

अमृष्ट (वि०) अक्षुण्ण, अखण्ड, मर्दित नहीं, विदीर्णता रहित।

अमेचक (वि०) ज्ञायक स्वभावी।

अमेदस्क (वि०) चर्बी रहित, निर्बल।

अमेधस् (वि०) मतिविहीन, ज्ञान हीन, बुद्धि रहित।

अमेध्य (वि०) अपवित्र, अयोग्य, अस्वच्छ, पवित्रता रहित।

अमेध्ययुक्त (वि०) अपवित्रता सहित, मल युक्त।

अमेय (वि०) १. अप्रमेय, एक दार्शनिक दृष्टि जो ज्ञान का विषय न हो। यन्मीयते वस्त्वखिलप्रमाता, भवेदमेयस्य तु को विधाता। (जयो० २६/९८) जो वस्तु प्रमेय है-प्रमेयत्व का गुण का आधार है, वह अवश्य ही किसी के ज्ञान का विषय होता है, अमेय/अप्रमेय का ज्ञाता कौन हो सकता है? अर्थात् कोई नहीं? २. अज्ञेय, सीमा रहित, अपरिमित।

अमेरिका (स्त्री०) अमेरिका देश। साऽमेरिकस्य तु मलिना रुचिः सुमनसामस्ति यथा। (सुद० ५/३)

अमोघ (वि०) अचूक, सफल, व्यर्थता रहित। "भो भो जना वीरविभोर्गुणौघानसौऽनुकूलं स्मरताममोघाः। (सुद० १/४)

अमोघ-बाणः (पुं०) सफलशर, लक्ष्यवेध करने में सफल। (जयो० ११/६१) 'जित्वा त्रिलोकीं स्विदमोघबाणः।'

अम्ब् (सक०) जाना, शब्द करना।

अम्बः (पुं०) [अम्ब्+घञ्] पिता, जनक।

अम्बं (नपुं०) १. नेत्र, नयन, २० जल, नीर।

अम्ब (अव्य०) हाँ! स्वीकृत करने के योग में।

अम्बकं (नपुं०) [अम्ब्+ण्वुल्] नेत्र, नयन।

अम्बधात्रीदोषः (पुं०) साधु का एक दोष, दाता बच्चे के सुलाने का दोष।

अम्बरं (नपुं०) [अम्बः शब्दः तं राति धत्ते इति] मेघ, बादल, आकाश, अन्तरिक्ष। रणे सम्भाषणे संबित तथा अम्बरं रसे कार्पासे 'इति-विश्व' (जयो० ६/१२)

अम्बरं (नपुं०) १. वस्त्र, कपड़ा, परिधान। (जयो० १३/७१) २. केसर, अवरक। (जयो० १/३७)

अम्बरचारी (वि०) विद्याधर। (जयो० ६/१२)

अम्बरीष (नपुं०) [अम्ब+अरिषु] १. सूर्य, रवि, शिव, विष्णु, २. कडाही, ३. खेद, दुःख, ४. युद्ध, संग्राम।

अम्बष्ठः (पुं०) [अम्ब+स्था+क] महावत।

अम्बा (स्त्री०) [अम्ब+घञ्+टाप्] १. जननी, माँ, माता। (जयो० ५/१००) २. सरस्वती-वचोऽभिदेवतेऽम्बा। (दयो० वृ० ३७) (जयो० १२/२)

अम्बिका (स्त्री०) [अम्बा+कन्+टाप्] सरस्वती, जननी, माँ, माता। (वीरो० १५/४०) (जयो० ६/१९)

अम्बु (नपुं०) नीर, जल, वारि, उदक। तत्त्व-धर्माम्बुवाह (सुद० ४/२२) (समु० २/१२)

अम्बुक् (पुं०) मेघ, बादल, जलद। (जयो० १२/९१)

अम्बुकणः (पुं०) जल बिन्दु, नीरकण।

अम्बुकण्टकः (पुं०) घडियाल।

अम्बुकिरातः (पुं०) घडियाल।

अम्बुकूर्मः (पुं०) कच्छप, कछुआ।

अम्बुचर (वि०) जलचर जीव, जल में विचरण करने वाले जीव।

अम्बुजः (पुं०) १. चन्द्र, चन्द्रमा, २. कपूर। ३. सारसपक्षी, शंख।

अम्बुजं (नपुं०) कमल, इन्दीवर, अरविन्द। (सुद० ३/४५) (जयो० १/४९) "त्वदीय-पादाम्बुजालेः सहचारिणीयम्। (सुद० २/३४)

अम्बुज-कलिका (स्त्री०) कमल की कली, कमल पांखुरी, कमल-पत्र। जिनयज्ञमहिमा ख्यातः। जिनपूजा प्रसिद्ध है। मनोवचकायैर्जिन पूजां प्रकुरु ज्ञानि भ्रातः। मन, वचन और काय से जिनपूजा करें। (श्रेणिक राजा हाथी पर सवार होकर जिनपूजा के लिए जा रहा था) मुदाऽऽदाय मेकोऽम्बुज-कलिकां पूजनार्थमायातः। प्रमोद से मेंढक कमल की कली मुख में दबाकर पूजन के लिए चला, किन्तु मार्ग में हाथी के पैर के नीचे दबकर मर गया और स्वर्ग को प्राप्त हुआ।

अम्बुज-कोष (वि०) जलजात कमल। (जयो० ११/४३) 'भुजो रुजोऽङ्कोऽम्बुजकोषकाय।'

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अम्बुजट्टक (नपुं०) कमललोचन, नेत्र रूपी वाले कमल। रूपमम्बुजदृशो ननु जात। (जयो० ५/६९)

अम्बुज-जित् (वि०) कमलजयी। (वीरो० ६/३४)

अम्बुजमाला (स्त्री०) कमल माला (जयो० ६/५५) अम्बुजानां कमलानां माला।

अम्बुजसङ्ग्रहं (नपुं०) कमल समूह। अम्बुजानां कमलानां संग्रहः। (जयो० वृ० १३/८०)

अम्बुजसम्विहीन (वि०) कमल रहित। कृत्वाऽत्र मामम्बुज-सम्विहीनां सरोवरीमङ्ग! किन्नुदीनां। (समु० ३/१३)

अम्बुजामोद (वि०) पद्म आमोद, कमल की प्रफुल्लता। (जयो० १३/९४)

अम्बुजोन्मीलन् (वि०) कमल को उन्मीलित करने वाला। (जयो० १६/६)

अम्बुततिः (स्त्री०) जलधारा, नीर प्रवाह। कुसुमाञ्जलिबद्धभव साऽम्बुततिः पुष्टतमेऽति संरसात्। (वीरो० ७/३१)

अम्बुद (वि०) जल देने वाला, नीरदायी। (सुद० ९९)

अम्बुदः (पुं०) मेघ, बादल, जलद। शिखिनामम्बुदभांसि धूपजानि। (जयो० १२/६८)

अम्बुदात्री (वि०) जलत्यज, जल देने वाला (जयो० १२/६८)

अम्बुधरः (पुं०) मेघ, बादल, जलद। शृंगाग्रलग्नाम्बुधरस्य (जयो० ८/८)

अम्बुधरायणं (नपुं०) मेघ, बादल, जलद। (दयो० ४२)

अम्बुधिः (पुं०) समुद्र, सागर। (सुद० १/१८) सुरवर्त्मवदिन्दु-मम्बुधेः। (सुद० ३/१०)

अम्बुधिवत् (वि०) समुद्र के समान। कुशलसद्भावनोऽम्बुधिवत् सकलविद्यासरित्सचिवः। (सुद० ३/३०)

अम्बुनिधि (नपुं०) जल गृह, समुद्र, वारिधि। 'निःशेषयत्य-म्बुनिधीन् स्म।' (जयो० १/२६) दुरन्त दुःखाम्बुनिधौ तु सेतुः। (सुद० १/२)

अम्बुप (वि०) जल पीने वाला।

अम्बुपः (वि०) सागर, समुद्र।

अम्बुपातः (पुं०) जलप्रपात, जलधारा।

अम्बुप्रसादः (पुं०) कतकवृक्ष, निर्मली वृक्ष।

अम्बुभवं (नपुं०) कमल, नीरज।

अम्बुभृत् (पुं०) जलवाहक, मेघ, बादल, नीरज।

अम्बुमुक्क्षण (वि०) जल के गिरने के समय, वर्षाकाल। मेघस्य क्षणे वर्षाकाले। (जयो० १२/९१)

अम्बुमुच् (पुं०) मेघ, नीरद, बादल। 'रुचिरम्बुमुचोऽनुगामिनी।' (समु० २/१२)

अम्बुराजः (पुं०) समुद्र, सागर।

अम्बुरुह् (पुं०) कमल, सरोज, जलज।

अम्बुवाहः (पुं०) १. वर्षाकाल, वर्षासमय। २. मेघ, बादल। बकाः पताकाः करिणोऽम्बुवाहाः। (जयो० ८/६२)

अम्बुरोहिणी (वि०) जल में उत्पन्न होने वाला, कमल।

अम्बुवाहिन् (पुं०) मेघ, बादल।

अम्बुवाहिनी (स्त्री०) पानी निकालने का लकड़ी पात्र।

अम्बुविहारः (पुं०) जलक्रीड़ा, जलविहार।

अम्भ् (अक०) शब्द करना, आवाज करना।

अम्भज् (वि०) जल में उत्पन्न होने वाला।

अम्भजः (पुं०) चन्द्र, सारस पक्षी।

अम्भजं (नपुं०) कमल, अरविंद, नीरज।

अम्भस् (नपुं०) [अम्भ्+असुन्] जल, नीर। 'गोदोहनाम्भो-भरणादिकार्य' (सुद० ४/२२) अम्भसा समुचितेन चांशुकक्षालनादि परिपठ्यतेऽनकम्। (जयो० २/८०)

अम्भस्यमल (वि०) निर्मल। (जयो० १३/९३)

अम्भोजं (नपुं०) कमल, नीरज, जलज। 'श्रीमन्मुखाम्भोजवती बभार।' (सुद० ३/२०)

अम्भोजदृशी (वि०) कमलाक्षी कमलनयनी।

अम्भोजमुखी (वि०) कमलमुखी (जयो० ६/१४) (जयो० १६/४०)

अम्भोजिनी (स्त्री०) कमल वल्ली, जलज वल्लरी (जयो० १८/३२)

अम्भोदः (पुं०) मेघ, बादल, नीरद। (जयो० २४/२२)

अम्भोदसमूहः (पुं०) मेघ समूह, बादल समूह।

अम्भोधर (वि०) मेघ धारक (वीरो० २१/११)

अम्भोभरण (नपुं०) जल भरना, नीर वाहक। 'गोदोहनाम्भो-भरणादिकार्य' (सुद० ४/२२)

अम्भोनिधिः (पुं०) समुद्र।

अम्भोराशिः (पुं०) समुद्र, क्षीरधि।

अम्भोरुह् (नपुं०) कमल, जलज, नीरज। विमुद्रिताम्भोरुहनेत्र-विन्दुमुखं। (जयो० १५/४९)

अम्मय (वि०) जलीय।

अम्ल (वि०) [अम्+क्ल्+अच्] खट्टा, तीखा।

अम्लकः (पुं०) बड़हट, लकुच।

अम्लानि (वि०) सशक्त।

अय् (अक०) प्रवेश करना, जाना, हस्तक्षेप करना।

अयः (पुं०) शुभावह, श्रेष्ठ, मुख्य, प्रशस्त। (जयो० १४/४)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अय: शुभावहो विधि: इति कोशात् सुष्टु: अय: स्वय:। (जयो० ७/६२) "चेद्वीतरागस्तवइत्युताय।" (भक्ति सं० वृ० २५) वीतराग स्तवन करना पुण्य है। मतल्लिकाम-चर्चिका प्रकाण्डशुद्धतल्लजौ। प्रशस्तवाचकाम्यमून्यय: शुभावहौ विधि:।' इत्यमर:।

अय: (पुं०) जाना, चलना, परिभ्रमण करना।

अयज्ञ (वि०) यज्ञ नहीं करने वाला।

अयत्न (वि०) यत्न नहीं करने वाला, परिश्रम रहित, उद्यमविहीन।

अयत्न: (वि०) श्रमाभाव, उद्यम अभाव।

अयथा (अव्य०) अनुपयुक्त रूप से, अनुचित रूप से, त्रुटिजन्य, जैसा होना चाहिए वैसा नहीं।

अयथार्थ (वि०) अर्थहीन, असंगत, अशुद्ध, त्रुटिपूर्ण, व्यर्थ।

अयथेष्ट (वि०) अपर्याप्त, कम, अल्प।

अयथोचित (वि०) अयुक्त, अनुपयुक्त, अयोग्य, अर्थहीन, लाभरहित।

अयनं (नपुं०) [अय्+ल्युट्] १. स्थान, मार्ग, अवकाश, घर, राह, पथ। (जयो० १६/५९) 'रसायनं काव्यमिदं श्रयाम:।' (वीरो० १/२२) 'रसानांशृंङ्गारादीनामयनं स्थानं वर्त्म वा। (वीरो० वृ० १/२२) अयनं अवकाशं मार्ग वा दातुं। (वीरो० वृ० ५/२०) 'नेतुमासीत्सुवचोऽयने।' (जयो० १७/२२) विश्वासमगेऽयने मार्गे कर्त्तव्यपथे। (जयो० वृ० १७/२२) 'ऋतुवस्त्रयोऽयनम्' (त०वा०३/३८)

अयनं (नपुं०) जाना, परिभ्रमण करना, हिलना।

अयनकाल: (पुं०) सन्धिकाल, दोनों समय की मध्य अवधि।

अयनकोविंदु (वि०) सन्मार्ग ज्ञाता, 'अयनस्य सन्मार्गस्य कोविदो विद्वान् आसीदित्यर्थ:। (जयो० वृ० ९/५६)

अयन्त्रित (वि०) अनियन्त्रित, प्रतिबन्ध रहित।

अयशस् (वि०) ०कीर्तिरहित, ०प्रभावविहीन, ०अपकीर्ति, ०अपमान, ०निन्दा, ०प्रशंसा, अयशकीर्ति।

अयशकर (वि०) यश नहीं करने वाला, कलंकी, अपमानजनित।

अयस् (नपुं०) लोहा, इस्पात, धातु विशेष।

अयस्काण्ड: (पुं०) लोह शर, लोह बाण।

अयस्कान्त: (पुं०) चुम्बक, मूल्यवान् पत्थर, लोहकण। (जयो० २३/४१)

अयस्कार: (पुं०) लुहार।

अयस्कीर्ति: (स्त्री०) अवगुण उद्भावन, ०अपकीर्ति, ०अपयश।

अयस्कुंभ: (पुं०) लोहघट।

अयस् निर्मित (वि०) लोहनिर्मित, (वीरो० १६/३०)

अयस्पात्र (नपुं०) लोह-पात्र।

अयस्प्रतिमा (स्त्री०) लोहमूर्ति।

अयस्मकं (नपुं०) लोहमल, जंग।

अयस् रज: (पुं०) लोह भस्म।

अयस्शूलं (नपुं०) लोह त्रिशूल, लोहे का भाला।

अयस्हृदय (वि०) कठोर हृदय।

अयाचित (वि०) अप्रार्थित, बिना मांगे।

अयाज्य (वि०) बहिष्कृत, त्याज्य।

अयात (वि०) नहीं प्राप्त, न गया हुआ।

अयाथार्थिक (वि०) विरुद्ध, अनुचित, असंगत, तर्कहीन।

अयानं (नपुं०) ठहरना, स्थिर होना।

अयि! (अव्य०) ओह, ए, अरे हे। अयि जिनप, तेच्छविरविकलभावा। (सुद० वृ० ७४) अयि जिनप गिरेवाऽऽसीत्। (वीरो० ३/३३) अयि मञ्जुलर्ह्युपाश्रितं (वीरो० ७/२४) १. यह अव्यय प्रार्थना, गुणगान बोधक रूप में प्राय होता है। "अयि काविलराजोऽयं।" (जयो० ६/४२) २. प्रोत्साहन, अनुनय, विनय, नम्रतादि भी इसका प्रयोग होता है। ३. पृच्छा अर्थ में भी इसका प्रयोग होता है। 'अयि: चेतसि जेमनोतिचार:।' (जयो० १२/११५)

अयुक्त (वि०) पृथक्, अलग, भिन्न, विषम।

अयुग (वि०) पृथक्, अलग, भिन्न, विषम।

अयुगपद् (अव्य०) एक साथ नहीं, यथाक्रम, क्रमश:।

अयुग्म (वि०) एकाकी, अकेला, पृथक्, विषमसंख्या, युगल रहित।

अयुज् (वि०) विषम संख्या, युगल रहित।

अयुत (वि०) पृथक् कृत, असंबद्ध, असंयुत। (सम्य० १००) 'ललनानामयुतानि षट् पुन:।'' (समु० २/१७)

अये! (अव्य०) सम्बोधनात्मक अव्यय, अरे! ए, ओह। यह उदासीनता, खिन्नता, खेदादि अर्थ में होता है।

अयोग: (पुं०) असंगति, अन्तराल, वियोग, अनौचित्य।

अयोग्य (वि०) ०अनुचित, ०अनुपयुक्त, ०उपेक्षणीय, ०निरर्थक। अन्वमानि रविणेदमयोग्यमित्यतोऽपयश एव हि भोग्यम्। (जयो० ४/३०)

अयोग्यस्थानं (नपुं०) अनुचित स्थान, अपद, अनुपयुक्त स्थान। (जयो० वृ० २/४०)

अयोध्य (वि०) जिस पर युद्ध न किया जा सके।

अयोध्या (स्त्री०) अयोध्या नगरी, सरयू तट पर स्थित नगरी। (समु० ४/२५) (दयो:०वृ० ९)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अयोध्यापतिः (पुं०) अयोध्या का राजा। (समु० ४/२५) 'अथाप्ययोध्याधिपतेः सुवल्लभा।'

अयोध्याधीशः (पुं०) अयोध्या के अधिपति, राजा रामचन्द्र। (दयो० वृ० ८)

अयोनि (वि०) अजन्मा, नित्य।

अयोनिज (वि०) जन्मपद्धति से जन्म न लेने वाला।

अयोग (वि०) योगों से रहित, 'न विद्यते योगो यस्य स भवत्योग।' (धव०१/१९२)

अयोगकेवली (वि०) कर्मों के नष्ट करने वाले योग रहित केवली।

अयोगश्चासौ केवली अयोग केवली। (भव०१/१९२)

अयोगव्यवच्छेदः (पुं०) विशेषण का साथ प्रयुक्त एवकार।

अयोगि (वि०) योग से रहित।

अयोगिकेवली (वि०) कर्मों को नष्ट करने वाले योग रहित। चौदह गुणस्थानवर्ती।

अयोगिजिनः (पुं०) योग रहित जिन।

अयोगी (वि०) जो योग युक्त नहीं। न योगी अयोगी। (धव०१/२८०)

अयौगपद्य (नपुं०) युग का अभाव, समकालीनता का अभाव।

अयौगिक (वि०) व्याकरण से व्युत्पन्न न हो।

अरः (पुं०) अरनाथ, अठारहवें तीर्थंकर का नाम। (भक्ति०१९)

अरः (पुं०) पहिए का व्यास, धुरी की परिधि।

अरं (नपुं०) आकाश, गगन। विहाय सा ऽरं विहरंतमेव। (सुद० ७/१८)

अरघट्टः (पुं०) चक्की। राजमाष इव चारघट्टतो। (जयो० ७/८९)

अरजस् (वि०) ०निर्मल, ०स्वच्छ, ०रजोवर्जित, ०वासनामुक्त, ०रजरहित, ०कर्मरज रहित। हासस्वरं त्वरजः। (जयो० ६/१२७) 'अरजो रजोवर्जितं निर्मलं भवत्।' (जयो० वृ० ६/१२७)

अरजा (स्त्री०) मासिक धर्म से रहित स्त्री, मासिक धर्म जिसको न हुआ हो।

अरज्जु (वि०) रस्सी रहित, जिसमें रस्सियां न हों।

अरणिः (पुं०) लकड़ी, जलाउ लकड़ी। वह्निं च पश्यन्नरणे प्रमादी। (जयो० २६/९४)

अरणिः (पुं०) ०सूर्य, ०तपन, ०वह्नि, ०तेज।

अरणी (स्त्री०) लकड़ी, जलाउ लकड़ी।

अरण्यं (नपुं०) [अर्यते गम्यते शेषं वयसि--ऋ+अन्य] वन, जंगल, मनुष्यसंचार शून्य। गावस्तृणमिवारण्येऽभिसरन्ति नवं नवम्। (जयो० २/१४७) जहां वृक्ष, वेलि, लता एवं गुल्मादि की बहुलता होती है।

अरण्यगजः (पुं०) जंगली हाथी, वन में विचरण करने वाला गज/हस्ती।

अरण्यगत (वि०) वन को प्राप्त।

अरण्यगामिन् (वि०) अरण्य में जाने वाली।

अरण्यचंद्रिका (स्त्री०) निरर्थकशृंगार।

अरण्यचर (वि०) वनचर।

अरण्यचारिन् (वि०) वनचारी, एकाकी अरण्य में विचरण करने वाले।

अरण्यजीवः (वि०) वनचर जीव, जंगली प्राणी।

अरण्यदेशः (पुं०) वन प्रान्त, वन भाग। 'सौधमरण्यदेशोऽस्य पुरप्रबोधः।' (सुद० ११७)

अरत (वि०) ०अपरिचित, ०अनासक्त, ०विरक्त, ०असंतुष्ट, ०पराङ्मुख। रताद्विरक्ताप्यनुरतिमायात्यरते जगतश्छाया। (जयो० २८/६८)

अरति (वि०) १. अनुत्सुकता, अप्रेम, रागाभाव, २. कष्ट, पीड़ा, चिन्ता, खेद, क्षोभ, असंतोष। बाह्याभ्यन्तरेषु वस्तुषु अप्रीतिरतिः।

अरतिपरीषहः (पुं०) अरति नामक परीषह, कामकथादि से विरति।

अरतिवाक् (पुं०) शब्दादि वचन।

अरम् (अव्य०) [ऋ+अम्] शीघ्र, तुरन्त, पास ही, निकट, तत्परता से। 'त्वगाद्गर्भवती स्वतोऽरम्' (सुद० २/४६) (अरं शीघ्रम्। (जयो० वृ० २/१७)

अरम (वि०) रमता नहीं, संतुष्ट नहीं। 'मनोऽरमायाति ममाकुलत्वं।'

अरमण (वि०) अरुचिकर, असंतोषजनक, सुख रहित।

अरमणीय (वि०) शोभा रहित।

अरम्य (वि०) अशोभनीय, कान्तिहीन। 'का सावरम्या स्मरसारवास्तु।' 'अरम्या रमणीया न भवति' (जयो० ३/६३)

अररं (नपुं०) कपाट, किवाड़। उपहतः पुनरुक्तपरिश्रमैरररवत्। अररवत्--कपाटवत्। (जयो० २५/७८)

अररे (अव्य०) [अर+रा+के] घृणा सूचक अव्यय, अवज्ञा सूचक।

अरविन्दं (नपुं०) [अरान् चक्राङ्गानीव पत्राणि विन्दते-अर+विन्द्+श] लालकमल, रक्तकमल। म्लायन्ति तद्वधूनां

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मुखारविन्दानि यात्रासु। (जयो० ६/५३) 'अरविन्दधिया दधर्द्रावं।' (वीरो० ७/१०)

अरविन्दः (पुं०) सारस पक्षी।

अरविन्दाक्ष (वि०) कमल सदृश नेत्र।

अरविन्दिनी (स्त्री०) [अरविन्द+इनि+ङीप्] कमल नाल, कमलदण्ड।

अरस (वि०) रसाभाव, नीरस, रसविहीन।

अरसिक (वि०) रसकता रहित, राग विहीन, अनुरागक्षीण।

अराग (वि०) राग मुक्त, विरागजन्य, प्रशान्त, सौम्य, सरस।

अरागता (वि०) राग की शून्यता, सौम्यता, सरसता, शान्तभावता।

अराजक (वि०) प्रभुत्वहीन, राजसत्ता रहित, राजा विहीन।

अराजन् (वि०) जो राजा न हो।

अरातिः (पुं०) वैरी, शत्रु, दुश्मन। 'अरातिवर्गस्तृणतां बभार।' (जयो० ८/४७)

अरातिवर्ग (वि०) शत्रुसमूह, वैरिसमूह। (जयो० ८/४७)

अरादक (वि०) अनर्थ, अनिष्टकारी। (समु० ७/११)

अरादक-सन्तति (वि०) अनिष्टकारी परम्परा। (समु० ७/११)

अरिः (पुं०) शत्रु, वैरी, दुश्मन। (सम्य० १५३) (जयो० १/२) दधुर्नार्योऽरयश्चैव। (जयो० ३/१०५) 'कस्य करेऽसिररिरीति सम्प्रति।' (सुद० ७४) गत्वाऽरिरप्यस्य कथोपगामी। (जयो० १/२५)

अरिकर्षण (वि०) शत्रु पीड़ित।

अरिकुल (वि०) वैरी समूह।

अरिक्त (वि०) ०व्यर्थ नहीं ०'काम नहीं, ०क्षीण नहीं।' ०अनि:शेषित (जयो० २/१०७) (जयो० वृ० १/२७)

अरिचिन्तनं (नपुं०) शत्रु विचार, शत्रु योजना।

अरिता (वि०) शत्रुता, वैमनस्वता। 'नाम्बुधौ मकरतोऽरिता हिता।' (जयो० २/७०)

अरि-तिरीटज (वि०) शत्रुभूपकिरीटज, शत्रु मुकुटों की मणियां। चरणयोर्मणयोऽरितिरीटजा:। (जयो० ९/६३)

अरिञ्जयः (पुं०) अरिञ्जय नामक रथ, जयकुमार का रथ। (जयो० ८/६९) अङ्गीचकाराध्व-कलङ्कलोपी ह्यरिञ्जयं नाम रथं जयोऽपि। (जयो० ८/६९)

अरिदारा (स्त्री०) ०शत्रु स्त्री, ०वैरी नारी कुल-कलंकिनी। 'क्षालितमरिदारदृग्जलौघेन।' (जयो० ६/३८)

अरिनन्दन (वि०) शत्रु को प्रसन्न करने वाला।

अरिनारी (स्त्री०) शत्रु नारी, वैरी स्त्रियां। 'तकाञ्छतत्वेन किलारिनार्य:।' (जयो० १/२६)

अरिनारीनिकर (वि०) शत्रुस्त्रीसमूह। 'किलारिनारीनिकरस्य नूनं वैधव्यदानादयशोऽप्यनूनम्।' (जयो० १/६०)

अरित्रं (नपुं०) [ऋ+इत्र] १. कवच, शत्रु रक्षक कवच, २. पतवार, डांड, लंगर। ''नरतिलको रणजलधिं युक्तोऽरित्रेण विशदमति।'' (जयो० वृ० ६/६६) ''अरित्रेण कवचेन, पक्षे मत्स्यादिभ्य: परित्रायक-काष्ठेन युक्त: सन्।'' (जयो० वृ० ६/६६) 'कृतासु दैवेन विपत्स्वरित्रम्।' (भक्ति०सं० ९)

अरिभावः (पुं०) षष्ठस्थान, चंद्रमा रूप जन्मपत्र के अरिभाव/शत्रुभाव। 'यस्यारिभावे गुरुशुक्लतास्ति।' (जयो० १५/६९)

अरियौवति (स्त्री०) शत्रु नारी, वैरियों की स्त्रियां। निज-निज-कराग्र-टङ्कोट्टङ्कैररियौवतैर्यस्य। (जयो० ६/६०)

अरिवर्ग (वि०) शत्रु समूह, वैरी समूह। 'स्वर्णे तृणे मित्रगणेऽरिवर्गे'। (भक्ति०सं० २६)

अरिवर (वि०) शत्रुजन, वैरी विशेष। 'यमुनमारिवरेण समर्पितां।' (समु० ७/११)

अरिव्रज (वि०) शत्रु समूह। ''अरीणां शत्रूणां व्रज: समूह:।'' (समु० १/७)

अरिष्ट (वि०) ०सम्पूर्ण, ०पूर्ण, ०अविनाशी, ०अक्षत, ०निरापद। न विद्यते अरिष्टं अकल्याणं येषां ते अरिष्टा:

अरिष्टः (पुं०) बगुला, अरण्यवायस्।

अरिष्टं (पुं०) अनिष्ट, अहित।

अरिष्टः (पुं०) अरिष्टनेमि, बाइसवें तीर्थंकर। 'अरिष्टनेमि पृतनजिगाशु।' (दया० वृ० २८)

अरिष्टनेमि देखो अरिष्ट:।

अरिष्टमथनः (पुं०) शिव, विष्णु।

अरिष्टसूदनः (पुं०) विष्णु का उपनाम।

अरीतिः (स्त्री०) दुर्नीति, दुर्व्यवहार, दुराचरण, दुष्प्रवृत्ति। 'अरीतिकर्तापि सुरीतिकर्ता।' (जयो० १/१२)

अरीतिकर्ता (वि०) १. वैरियों के लिए उपद्रव करने वाला। ''अरिषु शत्रुषु ईतिर्व्यथा तस्या: कर्तेति।'' (जयो० वृ० १/१२) २. दुर्नीतिकर्ता-'अरीतिदुर्नीतिस्तस्या: कर्तेति। (जयो० वृ० १/१२)

अरुचिः (स्त्री०) उदासीन, अपराग, अनिच्छा, अहितकर। 'स दानधर्मेकृतवानुपुनारुचितम्।'' (समु० ४/६)

अरुचिता (वि०) अपरागता, अरुचि प्रकट करने वाला, अनेच्छुक। तद्गुणश्रवण-सम्भवदरुचितया कर्णकण्डूतिम्। (जयो० ६/८९)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अरुचिधारिणी (वि०) उदासीन, आलस्यचिह्न, विजृम्भण। (जयो० वृ० ६/३९)

अरुचिर् (वि०) अरुचिकर।

अरुज् (वि०) स्वस्थ, नीरोग।

अरुज (वि०) स्थस्थ, नीरोग।

अरुण (वि०) सन्ध्याराग, सन्ध्यारक्तिम्, सन्ध्या की लालिमा। (जयो० १५/२४) "पातुं किलात्रारूणम स्रमेषं।।" "अरुणोऽनुरुसूर्ययो:, कुष्ठे चाव्यक्त रागे च सन्ध्यारागे च पुंस्यम्।" इति विश्वलोचन:।

अरुण (वि०) व्याकुल, दु:खी, (जयो० २७/४७) 'अरुणो विस्मित, व्याकुलेऽपि च' इति विश्वलोचन:।

अरुण (वि०) राग, अनुराग, लालिमा। (जयो० २५/६०) "अरुणतो गुणत: स्वयमात्मन: विरम्।" "नीरवारक्त-कपिल-व्याकुलष्वरुणोऽन्यवदिति विश्वलोचन:।

अरुण: (पुं०) १. अरुण देव। 'अरुण: उद्यद् भास्कर:, तद्वतेजोविराज्माना:। २. सूर्य का सारथि। (जयो० १२/८२)

अरुणं (नपुं०) १. लाल रंग, २. केसर, ३. सोना।

अरुणदम्य (वि०) सूर्य के घोड़ों को जीतने वाला। 'अरुणस्य सूर्यसारथेदेम्यान् घोटकाञ्जितवान्।" (जयो० वृ० १२/८२)

अरुणप्रिय: (पुं०) सूर्य, दिनकर।

अरुणमाणिक्य (वि०) लाल माणिक से युक्त। (सुद० ३/१९) "शुशुभे छविरस्य साऽन्विताऽरुणमाणिक्य-सुकुण्डलोदिता।' (सुद० ३/९)

अरुणा (स्त्री०) मेहंदी। अरुणया महदीति नामिकयोपभासि रक्त-लोहित।

अरुणाग्रज: (पुं०) गरुड़।

अरुणानुज: (पुं०) गरुड।

अरुणाम्बर (वि०) लोहिताम्बर, आकाश को लाल बनाने वाला। ओष्ठ एवमरुणाम्बर-जल्प:। (जयो० वृ० ६/४२) 'ओष्ठोऽरुणं लोहितमम्बरमाकाशं जल्पतीति।' (जयो० वृ० ५/४२)

अरुणित (वि०) लाल किया गया, रक्तिम, अनुरागित, अनुरञ्जित।

अरुणिम (वि०) अरुणिमा, लालिमा। (जयो० २५/५)

अरुणिमा देखो अरुणिम।

अरुणिमान (वि०) लोहित भाव, आरक्तवर्ण लालिमागत। (जयो० १५/१)

अरुणीकृत (वि०) अरुणिमा, लालिमा, अनुराग युक्त किया गया।

अरुणोपभासि (वि०) ०महदी, मेंहदी, ०लालिमा, ०रागिमा। अरुणया महदीति नामिकयोपभासि रक्तं लोहितं महदी/मेंहदी। (जयो० वृ० १५/७५)

अरुद्र (वि०) ०सौम्याकृति, ०सौम्य् रूपवान्। ०रौद्र रहित, "शिवतातिं गुरुतात्तरामरुद्र:।" (जयो० वृ० १२/५)

अरुन्तुद (वि०) [अरुंषि मर्माणि तुदादि इति-अरुस्+तुद्+खश्+मुम च] पीड़ाजनक, कष्टदायक।

अरुन्धती (स्त्री०) [न रुन्धती प्रतिरोषकारिणी] प्रभात कालीन तारा।

अरुष् (वि०) शान्त, कुद्ध। कान्तिमान, प्रभाजन्य।

अरुष देखें ऊपर।

अरुस् (वि०) [ऋ+उसि] घायल, चोटग्रस्त।

अरुह (वि०) अरहन्त, अर्हत्, संसार रहित।

अरूप (वि०) १. रूप रहित, कुरूप, २. अमूर्तिक, आकार रहित, निराकार, निर्मल, शुद्ध रूप, रूपातीत।

अरूपक (वि०) आकृति रहितता, रूप रहिता, रूपक रहित।

अरूपी (वि०) रूप रहित, शब्द, गन्धादि रहित, अमूर्तिक द्रव्य। अमूर्त द्रव्य (वीरो० १९/३६) न विद्यते रूपमेषामित्य-रूपाणि। (स०सि०५/४)

अरे (अव्य०) [ऋ+ए] ०अपने से छोटे को बुलाने के लिए प्रयुक्त अव्यय, ०ईर्ष्या प्रकट करने के लिए भी 'अरे' का प्रयोग किया जाता है। "अरे राम रेऽहं हता निर्निमित्तं हता।" (सुद० ९५) अरे राम रे! मैं बिना कारण मारी गई।

अरेपस् (वि०) निष्पाप, निष्कलंक, निर्मल, पवित्र।

अरे रे (अव्य०) विस्मयादि बोधक अव्यय, घृणात्मक आह्वानन के लिए प्रयुक्त।

अरोक (वि०) कान्तिहीन, प्रभारहित, मलिन।

अरोग (वि०) रोग रहित, व्याधि विहीन।

अरोगिन् (वि०) रोग से रहित, नीरोग, स्वस्थ, तंदुरुस्त।

अरोचक (वि०) अरुचिकर, जुगुप्सा।

अर्क् (सक०) प्रकाशित करना, उष्ण करना, स्तुति करना।

अर्क् (पुं०) [अर्क्+घञ्] १. सूर्य, दिनकर, रवि। (जयो० ८/२२) २. किरण, प्रभा, चमक, ३. वह्नि, स्फटिक, तांबा, ४. आक का पौधा, मदार। अर्क: क्षुद्र वृक्ष विशेष। (जयो० वृ० ७/६९)

अर्क् (पुं०) अर्ककीर्ति राजा, चक्रवर्ती पुत्र, भरतपुत्र। (जयो० ५७/५६, जयो० ८/२०)

अर्क्कीर्ति: (पुं०) अर्ककीर्ति राजा, चक्रवर्ती पुत्र। आदिराज

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इदमाह सुगम्यर्ककीर्तिर्मिचगद्पगम्य।' अर्कस्य कीर्ते सूर्यस्य वा। (जयो० वृ० ७/६४)

अर्ककीर्तिः (पुं०) सूर्यकान्ति, रविप्रभा।

अर्कता (वि०) आक वृक्षत्व पना, क्षुद्रवक्ष विशेषता। (जयो० ७/६४)

अर्कपद (वि०) अर्ककीर्ति के समीप। (जयो० ७/५६)

अर्कराजन् (पुं०) अर्ककीर्ति राजा।

अर्कयशः (पुं०) अर्ककीर्ति का यश।

अर्गलः (पुं०) सांकल, सिटकनी, ल्योंड़ा।

अर्गला (स्त्री०) आगल, किल्ली, अगड़ी।

अर्गलिका (स्त्री०) छोटी आगल, सांकल।

अर्घ् (अक०) ०मूल्यवान् होना, ०मूल्य रखना, ०मूल्य लगाना

अर्घः (पुं०) मूल्य, कीमत। यः क्रीणाति समर्घमितीदं। (सुद० ९१)

अर्घः (पुं०) पूजा, आहुति। जल, चन्दनादि का एकत्रितकर पूजना। स्थल स्यामनर्घतायाः (सुद० वृ० ७२)

अर्घ्य (वि०) १. मूल्यवान्, अत्यधिक कीमती। २. पूज्य भावना समर्पणता। ३. उपहारत्व, प्राभृतत्व।

अर्घ्यं (नपुं०) अर्चनभाव, पूजनभाव, समादरभाव।

अर्च् (अक०) पूजा करना, अर्चना करना, स्मरण करना, सत्कार करना, अभिवादन करना। "श्रीमतां चरितमर्चतः सताम्।" (जयो० २/४६) अर्चतः स्तुवतः-स्तवन। 'पर्वाणि विशेषतोऽर्चयेत,' (जयो० २/३८) अर्चयेत्-पूजयेत्। पर्व के दिनों में जिन भगवान् का स्मरण किया करें।

अर्चक (वि०) [अर्च्+ण्वुल्] स्मरण करने वाला, स्तुति करने वाला, पूजक।

अर्चन (वि०) [अर्च्+ल्युट्] स्मरण करने वाला, स्तुति करने वाला, पूजा करने वाला, समाराधन, पूजन, स्मरण। 'महामतेः श्रीपुरुपर्वतार्चने।" (जयो० २४/१६) (अर्चने समाराधने-पूजा करने में)

अर्चना (स्त्री०) पूजा, आराधना। (वीरो० ५/१६)

अर्चनीय (वि०) [अर्च्+अनीय] पूजनीय, स्मरणीय, सम्माननीय, आराधनीय, आदरणीय।

अर्च्य (वि०) [अर्च्+ण्यत्] पूजनीय, स्मरणीय, अर्चनीय।

अर्चा (स्त्री०) [अर्च्+अङ्+टाप्] आराधना, पूजा, अर्चना। (वीरो० ५/१९)

अर्चावसानं (नपुं०) पूजा का अन्त, पूजा समाप्ति। आचार्याः पूजाया अवसाने अन्ते गुरुरूपयोरचर्चाद्वारार्हतां। (वीरो० ५/१९)

अर्चासमयः (पुं०) पूजन समय, पूजनकाल, आराधनाकाल, स्तवन काल। 'तत्रार्हतोऽर्चासमयेऽर्चनाय।' (वीरो० ५/१६) अर्चासमये/पूजाकाले तदा अर्चनाय/पूजनाय योग्यान्युचितानि वस्तूनि प्रदाय। (वीरो० वृ० ५/१६)

अर्चिः (स्त्री०) ज्वाला, किरण, स्फुलिंग, ज्योति, प्रभा, कान्ति। (जयो० १२/६९)

अर्चिष् (वि०) प्रज्वलित अग्नि, प्रदीप्ताग्नि। 'नाद्रिताय तु सदर्चिषे धृतं।' (जयो० २/१०३) सम्यक्त्वेन निरीहतार्चिषि तपत्येवं तपस्वी भवेत्। (मुनि०३३)

अर्चिस् (पुं०) सूर्य, अग्नि, तेज, प्रकाश, चमक, प्रभा।

अर्ज् (अक०) उपार्जन करना, उपलब्ध करना, प्राप्त करना, कमाना, संग्रहण करना। "अर्जयन्ति ततः ताभ्यां परमार्थं मनीषिणः।" (दयो० वृ० १२३) "स्वदोभ्यामर्जयेद्वृत्तिं" (समु० २/३४) (अपने हाथों से अपनी आजीविका करें।)

अर्जक् (वि०) [अर्ज्+ण्वुल्] संग्रहण कर्ता, उपार्जन करने वाला, प्राप्तिकर्ता।

अर्जनं (नपुं०) [अर्ज्+ल्युट्] संग्रहण, उपार्जन, अधिग्रहण, प्राप्त करना। 'हलिजनो बुधान्य-गुणार्जने।' (जयो० ४/६७) किसान बहुधान्य अर्जन/संग्रहण/इकट्ठा करते हैं।

अर्जित (वि०) उपर्जित, संग्रहीत।

अर्जुनः (पुं०) १. अर्जुन-नाम, कुन्ती पुत्र, पाण्डुपुत्र, तृतीय पाण्डु। (जयो० १/१८) युधिष्ठिरो भीम इतीह मान्यः शुभैर्गुणैरर्जुन एव नान्यः। (वि) २. [अर्ज्+उनन्+णिलुक् च] धवल, निर्मल, स्वच्छ, उज्ज्वल, प्रभा युक्त, चमक युक्त। (जयो० १/१८) अर्जुनोधवलो। (जयो० वृ० १/१८) ३. अर्जुन नामक वृक्ष, धन्वि, कीहा वृक्ष। (जयो० २४/१०६) (जयो० वृ० २१/२४) (धन्विभिरर्जुनवृक्षैर्बलं)

अर्जुनवृक्षः (पुं०) कीहावृक्ष, धन्विवृक्ष। (जयो० २१/२४)

अर्णः (पुं०) [ऋ+न] सागवान वृक्ष। वर्णमाला का अक्षर।

अर्णवः (पुं०) [अर्णांसि सन्ति यस्मिन् अर्णस्+व सलोपः] समुद्र, उदधि, सागर।

अर्णस् (नपुं०) [ऋ+असुन्+नुट् च] जल, नीर, वारि। "करिण्णत्रो दुग्धमिवार्णसोऽशात्।"

अर्णसांश (वि०) जलांश (भक्ति० सं० ६)

अर्णस्वत् (वि०) [अर्णस्+मतुप्] गहरा जल, अधिक पानी।

अर्तनं (नपुं०) [ऋत्+ल्युट्] आर्त, रुदन, शोक, कष्ट।

अर्तिः (स्त्री०) [अर्द्+क्तिन्] दुःख, शोक, पीड़ा, व्याधि। अशान्ति (भक्ति २४) 'न्यासीत्प्रहर्तुं भवसम्भवार्तिम्।' (समु० १/११)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अर्तिकथाविधानम् (नपुं०) पीड़ाकारक कथा का कथन। (वीरो० १२/३६)

अर्तितोदयः (पुं०) दुःख से दूर (वीरो० १८/३३)

अर्तिका (स्त्री०) नाम विशेष, बड़ी बहिन।

अर्तिहानि (वि०) आकुलता को दूर करने वाला। (सुद० १२८)

अर्थ् (सक०) ०प्रार्थना करना, ०मांगना, ०याचना करना, ०अनुरोध करना, ०प्रयत्न करना, ०चाहना, ०इच्छा करना, ०समर्थन करना 'शास्त्रमर्थयतु सम्पदास्पदं।' (जयो० २/४२) यत्प्रसङ्गजनितार्थदं पदम्।'

अर्थः (पुं०) इच्छा, प्रयोजन, हेतुभाव, अभिप्राय, लक्ष्य, उद्देश्य।

१. **प्रयोजन**-शिशोरिवान्यस्य वचोऽस्त्वपार्थः। मोहाय सम्मोहवतां धृतार्थम्। (जयो० २८/२४) 'अर्थः प्रयोजने वित्ते हेत्वभिप्राय वस्तुषु' इति विश्वलोचन।,

२. **उद्देश्य/लक्ष्य**-त्यजेदेकं कुलस्यार्थे ग्रामस्यार्थे कुलं त्यजेत् ग्रामं देशकृते त्यक्त्वाप्यात्मार्थे पृथिवीं त्यजेत्। (दयो० २/३),

३. **अभिप्राय/रहस्य/ज्ञान**-'कलङ्कमेत्वङ्कदलं तदर्थ-' (जयो० १/१४),

४. **निमित्त-नो** सुलोचनया नोऽर्थो व्यथमेव न पौरुषम्। (जयो० ७/५०),

५. **रहस्य/जहासि** मत्तोऽपि न किन्तु मायां चिदेति मेऽत्यर्थमकिन्तु मात्याम्। (सुद० ३/३८),

६. **अभीष्ट,** इष्ट-अस्याः क आस्ता प्रियएवमर्थः। (सुद० २/२२),

७. **वस्तुतत्त्व का बोध**-''शब्दस्य चार्थस्य तयोर्द्वयस्य।'' शब्दाचार और अर्थाचार तथा उभयाचार ये ज्ञानाचार के भेद हैं। (भक्ति०८) पद को पढ़ना, अर्थ लगाना, मेल मिलाना दोनों का।,

८. **पुरुषार्थ-विशेष**-द्वितीय पुरुषार्थ-त्रिवर्ग- निष्पन्नतया-ऽखिलार्थानमनुष्य मेधा लभतामिहार्थात्। (जयो० २/२८) धर्मश्चार्थश्च कामश्च वर्गत्रितयमदः। (जयो० वृ० १/२८) धर्मार्थ-काम- मोक्षाणामनध्ययनशीलः। (जयो० वृ० १/२४) कारणार्थ के योग--धर्मोऽप्यधर्मोऽपि नभश्चकालः स्वाभाविकार्थक्रिय- योक्तचालः। (सम्यवृ० २२)

अर्थ (नपुं०) धन, कोष, भण्डार, खजाना, सम्पत्ति। 'व्यर्थं च नार्थाय समर्थनं तु। (जयो० १/१७) कामनामरसो यस्य स्यादर्थस्तत्समुच्चयः। (सुद०) काम-भोग तो रस है और धन-सम्पदादि पदार्थों का समुदाय है।

अर्थ-ओघः (पुं०) धन का भण्डार।

अर्थकर (वि०) लाभदायक, धनसम्पन्न करने वाला।

अर्थकृत (वि०) १. लाभ पहुंचाने वाला, लाभदायक, २. पाठक, मत्तहस्तिभिरमुष्य हेऽर्थकृत्। (जयो० ७/१००) हे अर्थकृत/पाठक।

अर्थकाम (वि०) धनेच्छुक, धनाभिलाषी।

अर्थकामपुरुषार्थी (वि०) रमारती 'रमा' च रतिश्च रमारती, अर्थकाम-पुरुषार्थी। (जयो० वृ० २/१०)

अर्थकुलः (पुं०) अर्थसमुदाय। (जयो० २/११०)

अर्थक्रिया (स्त्री०) सार्थक, काम नहीं आना। (वीरो० १९/१२१), (वीरो० १९/१)

अर्थक्रियाकर (वि०) सार्थक, काम नहीं आने वाला। नार्थक्रियाकरो वीरपट्टो माणवसिंहवत्। (जयो० ७/२८)

अर्थ-क्रिया-कारिन् देखें नीचें

अर्थक्रियाकारिणी (वि०) अर्थ क्रिया करने वाली। (जयो० १९/१)

अर्थगौरवं (नपुं०) अर्थ की गम्भीरता, वस्तु की गहराई।

अर्थघ्न् (वि०) व्ययशालिनी, अतिव्ययकर्ती, अपव्ययी।

अर्थजात (वि०) अर्थ से परिपूर्ण, रहस्यगत।

अर्थजातिः (स्त्री०) पदार्थ समूह (वीरो० २९/६१)

अर्थद (वि०) अर्थप्रदाता, धनदाता।

अर्थदूषणं (नपुं०) अन्याय युक्त अर्थोपार्जन, अर्थ दोष।

अर्थदोषः (पुं०) अर्थ दूषण, तत्त्व रहस्य दोष, धन व्यय, अपव्यय।

अर्थनयः (पुं०) भेद से अभिन्न वस्तु का ग्रहण।

अर्थनिबन्धनं (नपुं०) अर्थाश्रय, अर्थसंग्रह।

अर्थ-निश्चयः (पुं०) अर्थ निर्धारण, रहस्य विवेचन, रहस्य निर्णय।

अर्थपतिः (पुं०) धनपति, कुबेर।

अर्थपदः (पुं०) अर्थ परिज्ञान।

अर्थभारः (पुं०) सम्पति का भार (सम्य० ७४)

अर्थरुचिः (स्त्री०) तत्त्वरुचि। (सुद० ३/१२)

अर्थलोभः (पुं०) धन की लालसा, सम्पत्ति की इच्छा।

अर्थविकल्पः (पुं०) अर्थ को तोड़ना, अर्थ दूषण।

अर्थविनयं (नपुं०) आसन देना।

अर्थवेत्ता (वि०) अर्थ/पदार्थ का ज्ञाता। (वीरो० २२/३)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अर्थ-व्यय: (पुं०) धन व्यय, धनखर्च।

अर्थशास्त्रं (पुं०) अर्थशास्त्र, विशेष। (वीरो० १८/१४)

अर्थशास्त्रज्ञ (वि०) अर्थशास्त्रज्ञाता। अर्थशास्त्र को नीतिशास्त्र भी कहा प्रत्युवाच वचो व्यर्थमर्थशास्त्रज्ञतास्मयी। (जयो० ७/८५) अर्थशास्त्रज्ञतास्मयी-नीतिशास्त्रज्ञताभिमानी। (जयो० वृ० ७/८५)

अर्थशुद्धि (वि०) शुद्धार्थ, शुद्धिविधायक विनिमय नीति शास्त्र। सम्यक् सूत्रार्थ निरूपण। (जयो० २/५२)

अर्थशुद्धिदा (वि०) अर्थ की विशुद्धता दिखलाने वाला। अर्थस्य शुद्धिरर्थशुद्धिस्तां ददातीति अर्थशुद्धिदा-शुद्धार्थप्रतिपादिका। (जयो० वृ० २/५२)

अर्थशौचं (नपुं०) अर्थ/लेन-देन में शुचिता, धन के प्रति उचित भाव।

अर्थ-सम्बन्ध: (पुं०) वाक्य से प्रयोजन, अर्थ के प्रति उचित भाव।

अर्थाचार: (पुं०) नयनाश्रित शास्त्राभ्यास।

अर्थात् (अव्य०) नि:संदेह, वस्तुत:, यथार्थत:, ऐसा, इस तरह का।

अर्थातिशय (वि०) गम्भीरार्थवती, गुर्वी, (जयो० वृ० २०/८१)

अर्थानुबन्ध अर्थ नाम की सार्थकता, अर्थ का सम्बन्ध। अर्थाजनसार्थकत्व। (जयो० वृ० २/११०)

अर्थान्तरन्यास: (पुं०) अर्थान्तरन्यास नामक अलंकार। (जयो० ३/१०२, २/४, ३/७०) ७/९१, ७/७८, ५/२५, ३/३१, ३/८७, २३/७०) (वीरो० ५/९४, जयो० १४/३९, १६/४८) उक्तसिद्ध्यर्थमन्यार्थन्योव्याप्तिपुर: सर:। कथ्यतेऽर्थान्तरन्यास: श्लिष्टोऽश्लिष्टश्च स द्विधा।। (वाग्भहालङ्कार ४/९१) किसी उक्ति को सिद्ध करने के लिए जहां युक्तिपूर्वक किसी अन्य अर्थ को प्रस्तुत किया जाता है वहां 'अर्थान्तरन्यास' अलंकार होता है। तदधीशाज्ञयाऽयात: कुशलं व: पदाजयो: विरारराजन्तते: किं स्याज्जीवनं जीवनं विना:। (जयो० ३/३१) उस नगरी के स्वामी की आज्ञा से मैं आया हूं। मेरा कुशल तो आपके चरणों में है, क्योंकि जल के बिना मछली का जीवन कैसे? एवं सुविश्रान्तिमभीप्सुमेतां विज्ञाय विज्ञा रुचिवेदने ता:। विशश्रमु: साम्प्रतमत्र देव्य:। मितो हि भूयादगदोऽपि सेव्य:।। (जयो० ५/३४)

अर्थापत्ति: (स्त्री०) संजात अदृष्ट दृष्टि की कल्पना।

अर्थिक (वि०) [अर्थयते इत्यर्थी+कन्] चिल्लाने वाला, घोषणा करने वाला।

अर्थित (भू०क०कृ०) प्रार्थित, याचित, इच्छित।

अर्थित्व (वि०) चाहने वाला, इच्छा करने वाला। अर्थी दोषं न पश्यति। (जयो० वृ० २०/२९) अर्थित्वत: परवशा: समिता नवीनाम्। (जयो० २०/२९)

अर्थिन् (वि०) [अर्थ+इनि] अर्थ्यभिलष्य, इच्छुक, प्रार्थित, याचित, चाहने वाला। अर्थिनां याचकानामभिलाषो: मनोरथ। (जयो० १/१७)

अर्थिनी (वि०) ०प्रार्थिनी, ०इच्छिनी, ०अभिलाषिनी। तामाह पुनरप्येवं कामातुरतयार्थिनी। (सुद० वृ० ९०)

अर्थी (वि०) इच्छुक, अभिलाषी। (जयो० २६/७९) सम्प्रत्यर्थी च भूभागे। (जयो० ७/२१)

अर्थीय (वि०) पूर्वनिर्दिष्ट, अभिप्रेत।

अर्थ्य् (वि०) [अर्थ्+ण्यत्] योग्य, उचित, यथेष्ट। (जयो० १/१७)

अर्थ्यभिलाषता (वि०) याचक की अभिलाषा वाला। (जयो० १/१७) 'पूर्णो यतश्चार्थ्य भिलाषतन्तु:।'

अर्द् (अक०) दु:ख देना, पीड़ित करना, प्रहार करना, मारना, घायल करना।

अर्दन (वि०) [अर्द+ल्युट्] क्षुभितकर्ता, दु:ख करने वाला, सताने वाला।

अर्दनं (नपुं०) दु:ख बाधा, पीड़ा, उत्तेजना।

अर्दित (वि०) रुग्ण, रोगी, व्याकुलित। नार्दिताय तु सदर्चिषे घृतम्। (जयो० २/१०३) अर्दिताय रुग्णाय-रोगी के लिए।

अर्ध (वि०) [ऋध्+णिच्+अच्] अर्ध, आधा, एक के दो भाग। स गौरीं जिनामधर्मभङ्गम्। (वीरो० ४/३०)

अर्धक (वि०) आधा, अर्धभाग। समुदीक्ष्य जिनासनार्धके स्म। (वीरो० ४/३०)

अर्धकृत (वि०) आधा किया गया।

अर्धगुच्छ: (पुं०) चौबीस लड़ियों का हार।

अर्धचन्द्र: (पुं०) बाण/अर्धचन्द्र नामक हार 'सनागपाशं शरमर्धचन्द्रम्।' (जयो० ८/७७)

अर्धचन्द्राकार (वि०) आधे चन्द्र के आकार वाला। (जयो० वृ० १९/२)

अर्धचन्द्रकृति (वि०) अर्धचन्द्र रूपी आकृति।

अर्धचोलक (पुं०) अंगिया, चोली।

अर्धराजदानम् (नपुं०) आधे राज्य का दान। (वीरो० १७/३९)

अर्धदिनं (नपुं०) आधा दिन, अर्ध दिवस।

अर्धनाराच: (पुं०) अर्धचन्द्रकार बाण।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अर्धनारीश्वरः (पुं०) शिव, शंकर।

अर्धनिशा (स्त्री०) आधी रात।

अर्धपञ्चाशत् (वि०) पच्चीस, पचास का आधा।

अर्धपथं (नपुं०) नीचमार्ग। अर्धपथाच्चपलताऽऽलस्यात्। (जयो० ६/११९)

अर्धप्रहरः (पुं०) अधा प्रहर, डेढ़ घण्टे का समय।

अर्धभागः (पुं०) आधा हिस्सा।

अर्धभाज् (वि०) आधे भाग का हिस्सेदार।

अर्ध-भास्करः (पुं०) दोपहर, दिन का मध्य भाग।

अर्धमाणवः (पुं०) १२ लड़ियों का हार।

अर्धमागधी (स्त्री०) अर्धमागधी भाषा, जो अर्ध मागध में बोली जाती थी।

अर्धमार्गे (अव्य०) मार्ग के मध्य में।

अर्धमासः (पुं०) एक पक्ष, आधा महिना।

अर्धमासिक (वि०) एक पक्ष तक रहने वाला।

अर्धमुष्टिः (स्त्री०) आधा बंद हाथ।

अर्धयामः (पुं०) आधा प्रहर।

अर्धरात्रः (पुं०) आधीरात।

अर्धविसर्गः (पुं०) अर्धध्वनि, व्यञ्जन से पूर्व विसर्ग-क् ख् एवं प् फ् से पूर्व विसर्ग।

अर्धवीक्षणं (नपुं०) ०अर्ध दृष्टि, ०तिरछी ०दृष्टि, ०तिरछी चितवन, ०कनखी।

अर्धव्यासः (पुं०) वृत्त में केन्द्र से परिधि तक की दूरी।

अर्धशतं (नपुं०) पचास।

अर्धशेष (वि०) आधा भाग, श्लोक का आधा हिस्सा, अर्धपाद।

अर्धश्लोकः (पुं०) अर्धपाद का श्लोक।

अर्धसहित (वि०) आधे से युक्त। (जयो० १/३७)

अर्धसम्पूरित (वि०) अर्ध भरे हुए। मत्वाऽर्धसम्पूरित गर्ततुल्यामुवाह। (सुद० २/४७)

अर्धाक्षि (नपुं०) अपांग दृष्टि, नेत्र फड़कना।

अर्धाङ्गं (नपुं०) अर्ध शरीर, आधा शरीर।

अर्धाङ्गि (वि०) अर्ध अंग वाली। (जयो० १/७३)

अर्धाङ्गिता (वि०) अर्ध अंग से युक्त। यदङ्गयार्धाङ्गितया समेति। (जयो० १/७३) पार्वतीमर्धाङ्गितया। (जयो० वृ० १/७३)

अर्धाङ्गिनी (स्त्री०) प्रिया, पति का अर्ध हिस्सा, "अर्धाङ्गिन्या त्वया सार्धम्।" (सुद० ११३)

अर्धांशः (पुं०) आधा भाग।

अर्धांशिन् (वि०) अर्ध भाग धारी।

अर्धासनं (वि०) आधा आसन, आसन का आधा भाग, अतिथि हेतु देना।

अर्धेन्दुः (स्त्री०) अर्धचन्द्र। (जयो० १९/२)

अर्धेन्दु-समन्वयः (पुं०) अर्धचन्द्रकार। लेखकृतार्धेन्दुसमन्वयेन। (जयो० १९/२)

अर्धोक्त (वि०) अर्ध कथित, अर्ध प्रतिपादित।

अर्द्धः (पुं०) आधा। (दयो० ९१)

अर्द्धमङ्गं (नपुं०) अर्ध शरीर। नारी नामार्द्धमङ्गं चेन्नरस्य भवति प्रभोः (दयो० ९१)

अर्द्धराज्यदानं (नपुं०) आधे राज्य का दान। "निजार्द्धराज्यदानेन पुपोष।" (दयो० ११३)

अर्द्धाङ्गिनी (स्त्री०) पत्नी, प्रिया। (जयो० वृ० १२/२१)

अर्द्धाङ्गभावः (पुं०) सार्द्धभाव। (जयो० २२/५५)

अर्द्धावशिष्ट (वि०) अर्ध रूप में व्याप्त। (जयो० २४/११९)

अर्प् (सक०) देना, रखना, समर्पित करना। अर्पयामि निर्दर्पयतयाऽहं पदोयजिनमुद्रायाः। (सुद० वृ० ७१) सम्बलमादायार्पयंगमहमग्रे जिनमुद्रायाः। रदांशु-पुष्पाञ्जलिमर्पयन्ती। (सुद० २/१२) वास्तुमुखमर्पयन्। (जयो० २/९७) अर्पयन्-यच्छन्-अर्पयित्वा-दत्वा (जयो० वृ० ३/५८)

अर्पणं (नपुं०) [ऋ+णिच्+ल्युट् पुकागमः] रखना, स्थिर करना, डालना। (जयो० ४/३२)

अर्पणा (वि०) प्रोत्क्षिप्ति-पटकना, रखना।

अर्पणीय (वि०) क्षेपणीय, निषेपणीय, डालने योग्य। (जयो० ८/१४) तत्तदाप्य निगले हि विभूनामर्प-णीयमिति युक्तिरनूना। (जयो० ४/३२)

अर्दित (वि०) समर्पित, प्रतिबिम्बित, दिया जाने वाला। (जयो० २/१३४) स्थापित, निक्षिप्त, निदर्शित, प्रयोजन वश मुख्यता प्राप्त होना, भक्त्याऽर्पितं नह्ययुपकल्पिशाकं। (सुद० ४/३४) सन् स्यात्किन्तु तदर्पितेन शमनं कुर्यात्क्षुधोऽस्वादुलः। (मुनि०१०) मुकुरार्पितमुखवद् यदन्तरङ्गस्य हि तत्त्वं। (जयो० २/१५४)

अर्पितवती (वि०) समर्पित करने वाली। (जयो० २९/६९) अर्पितवत्यहमेषा दासीह। (जयो० २०/६९)

अर्पितशाप (वि०) आविद्ध, घायल हुआ। तादृशी स्मरश-रार्पितशापे। (जयो० ५/३)

अर्पिसः (ऋ+णिच्+इसुन् पुकागमः) हृदय, कलेजा।

अर्पितसंविधानम् (नपुं०) समर्पित विधान। (वीरो० १८/७)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अर्ब् (अक०) वध करना, चोट मारना, आघात करना।

अर्बुदः (पुं०) सृजन, १. दस करोड़ की संख्या। २. सर्प, ३. मेघ, बादल।

अर्भक (वि०) [अर्भ+कन्] १. छोटा, सूक्ष्म, थोड़ा। २. क्षीण, कृश, मूर्ख, बाल, बौना। ३. बालक, बच्चा, शिशु।

अर्य (वि०) [ऋ+यत्] श्रेष्ठ, उत्तम, अच्छा, उचित।

अर्यः (पुं०) प्रभु, स्वामी।

अर्यमन् (पुं०) [अयं श्रेष्ठं मिमीते-मा-कनिन्] १. सूर्य, रवि। २. मदारलता। (भक्ति २५)

अर्यमा (पुं०) सूर्य, राजा, रवि। (समु० ७/८८) यत्रोदयं यातिकिलार्यमायः। (भक्ति २५) (सूर्य उदय को प्राप्त हो रहा है)

अर्याणी (स्त्री०) वैश्य स्त्री।

अर्वन् (पुं०) १. इन्द्र, शक्र। २. घोड़ा, अश्व। (जयो० १८/९२)

अर्ववरः (पुं०) उत्तम घोड़ा, श्रेष्ठ अश्व। अश्वेऽवन् कुत्सितेऽन्यवदिति विश्वलोचनः। अर्वताभश्वानां मध्ये वराः श्रेष्ठाः। (जयो० वृ० १३/१२)

अर्वाच् (वि०) [अवरे देशे काले वा अञ्चति-अञ्च+क्विन्] इसी ओर आते हुए, इसकी ओर मुख किए हुए।

अर्वाचीन (वि०) [अर्वाच्+ख] १. अद्यतन, आधुनिक, वर्तमान कालिका, २. उलटा, विरोधी।

अर्वाचीनं (अव्य०) इस ओर, इस तरफ।

अर्शस् (वि०) [अर्शस्+अच्] बवासीर

अर्ह् (अक०) १. योग्य होना, पूज्य होना, ०समर्थ, ०शक्य, ०शक्त (जयो० ३/३८) ०सम्मानित होना। २. रहना। योऽर्हतीह। ३. बैठना, स्थिर होना, अर्हामि-(दयो० वृ० १०६) ४. चाहना-(सुद० १२९)

अर्ह (वि०) [अर्ह्+अच्] पूजनीय, सम्माननीय, आदर योग्य, अधिकार योग्य, उपयुक्त, उचित, (सुद० ७५) मतो भक्तिुमर्हति! (सुद० ७७) अर्हं-ऊँ ह्रीं अर्हं नमः' इत्येवं पवित्रमंत्रम्। (जयो० ८/)

अर्हच्छरणं (नपुं०) अरहंतशरण। कुतोऽर्तिरर्हच्छरणं गताय। (भक्ति० २५)

अर्हणं (नपुं०) [अर्ह्+भावे-ल्युट्] पूजा, अर्चना, आराधना, समादर, सम्मान।

अर्हत्स्तवनं (नपुं०) वीतराग स्तवन, जिन पूजन। (भक्ति०२५)

अर्हदार्यः (पुं०) अर्हद्देव, अरहंत। (वीरो० १९/३७)

अर्हत् (वि०) [अर्ह+शतृ] १. पूजनीय, योग्य, (सुद० ४/४७) सम्माननीय, समादरणीय, २. अर्हन्तपद, विनायक (जयो० ८/८६) अर्हत् प्रभु, अरहंत। (भक्ति०वृ० ४) ०ओ शिव जयो० (जयो० १२/१) विनिर्गताऽर्हत्तुहिनाद्रितो या। (भक्ति०४) अर्हत्त्वाय न शक्तोऽभूत्तपस्यन्नपि दो बलिः। (वीरो० १७/४३)

अर्हतः (पुं०) १. अरहंत भगवान, पंच परमेष्ठियों में प्रथम। अर्हत्सु (सुद० २/२९) २. पात्र (दयो० वृ० १०६)

अर्हन् (वि०) [भू०क०कृ०] अर्ह+ अर्हत् अरहन्त, ३. योग्य, पूजनीय, सर्वश्रेष्ठ, समर्थ। ददत्सदुचिताय सदार्हन्। (जयो० ४/४०)

अर्हणीय (वि०) पूजनीय, सेवा योग्य। (सुद० २/४२)

अर्हन्त (वि०) [अर्ह्+झ] योग्य, पूजनीय, आदरणीय।

अर्हन्तः (पुं०) अरहन्त प्रभु। अभ्यच्चार्हन्तमयान्तं। (सुद० ७६)

अर्हन्ती (स्त्री०) पूजा, अर्चना।

अर्हदुपाश्रयः (पुं०) ०समवसरण, तीर्थसभामण्डप। केवल ज्ञान प्राप्ति के समय की जाने वाली सभामंडप। (जयो० २६/५७)

अर्हद्दासः (पुं०) जम्बूकुमार के पिता, नगर सेठ (वीरो० १५/२५)

अर्ह्य (स०कृ०) पूजा के योग्य, आदरणीय, पूजनीय।

अहार्यः (पुं०) पर्वत, गिरि। अहार्यः पर्वते पुंसि इति विश्वलोचनः

अल् (सक०) सजाना, अलंकृत करना, विभूषित करना। सरिताभरण-भूषण-सारैर्मण्डयोऽप्यलमकारि कुमारैः। (जयो० ५/११)

अलका (स्त्री०) केश, घुंघराले बाल। (१४/१५)

अलका (स्त्री०) अलकापुरी, कुबेरपुरी। दर्शकोऽधिपतिरत्र गतयाः सन्मनुष्यवसतेरलकायाः। (समु० ५/२०) (विजयार्धपर्वत पर स्थित नगरी) अलका नाम कुबेरपुरी। (जयो० वृ० २२/२२) ललितालकां मूर्धभुवमस्या (जयो० २२/२२)

अलकानगरी (स्त्री०) कुबेरपुरी। अलकानगरी गरीयसीह। गिरावुत्तरो नदीदृशी। धनदस्य पुरी परीक्ष्यते प्रतिभूषेव समस्तु साक्षितेः। (समु० २/१०)

अलकापुरं (नपुं०) अलकापुर नामक नगर।

अलकावलिः (स्त्री०) १. केशावली, केशराजित, केशपंक्ति। (जयो० १४/१५) ललितामलकावलिं दधान। (जयो० १४/१५) ललितां सुन्दराकारम् अलकानां केशानामावलि पंक्तिं दधामः। (जयो० वृ० १४/१५) २. धात्रीरस की पंक्ति। धात्रीवृक्षाणामावलि। (जयो० वृ० १४/१५)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अल् (अक०) योग्य होना, सक्षम होना, समर्थ होना। 'कवितां मुदाऽलम्।' (सुद० १/७)

अलकः (पुं०) ०केश, ०बाल, ०घुंघराले बाल। कथमप्युदिताल-कालिभिः। (जयो० १३/७१)

अलक्त (वि०) [न रक्तोऽस्मात्, यस्य लत्वं-स्वार्थे कन्] महावर, ०रागिमा लालिमा।

अलक्षण (वि०) लक्षण रहित, चिह्नविहीन अशुभ, अपशकुन।

अलक्षणं (नपुं०) अपशकुन, अशुभ, अशुभ चिह्न।

अलक्षित (वि०) अनवलोकित, अदृष्ट, अदर्शित।

अलक्ष्मी (स्त्री०) दरिद्रता, निर्धनता, लक्ष्मी अभाव।

अलक्ष्य (वि०) अज्ञात, उद्देश्यविहीन।

अलक्ष्यगतिः (स्त्री०) उद्देश्यहीन गति।

अलगर्दः (पुं०) [लगति स्पर्शति इति लग्+क्विप्, लग् अर्दयति इति। अर्द+अच्, स्पृशन्, सन् अर्दो न भवति] पानी का सर्प।

अलघु (वि०) महत्, बड़ा, भारी, अधिक, जो छोटा न हो, अनल्प। (जयो० १/९३)

अलघु-वृक्षः (पुं०) वृहत् वृक्ष, महान् व तरु, उन्नत वृक्ष। (जयो० १/९३)

अलङ्करणं (नपुं०) [अलं+कृ+ल्युट्] १. आभूषण, आभरण, २. सजाना, शोभित करना, विभूषण,शृंगार। (दयो० ३)

अलङ्करणभूत (वि०) सुरम्य, रमणीय, सजे हुए। (दयो० ३) महीमण्डलालङ्करणभूतः सुमृदुलसन्निवेशः।

अलङ्करिष्णु (वि०) [अलम्+कृ+इष्णु च]शृंगार करने वाला, विभूषित करने वाला।

अलङ्कारः (पुं०) [अलम्+कृ+घञ्] आभूषण, आभरण, विभूषण। साहित्य की शोभा, शब्द, अर्थ और शब्दार्थ की रमणीयता। अङ्ग को विभूषित करने वाले वस्त्र, आभरणशृंगार प्रसाधन आदि। विचारस्य हारो हृदयालङ्कारो यस्य। (जयो० वृ० १/८६)

अलङ्कारकः (पुं०) [अलम्+कृ+घञस्वार्थेकन्] आभूषण, विभूषण, आभरण।

अलङ्कारपूर्ण (पुं०) अलङ्कार सहित, काव्य लक्षणों से परिपूर्ण। अलंकारिपूर्णा कविता (सुद० २/६)

अलङ्कारमाश्रितवती (वि०) अलंकार के आश्रय रहने वाली कामिनी। (जयो० वृ० ३/११)

अलङ्कुर्वन् (वि०) अलंकृत करता हुआ। (वीरो० १५/१४)

अलङ्कृ (सक०) अंलकृत करना, सुशोभित करना, सजाना, (वीरो० ५/१४)शृंगारित करना। (जयो० १/८६) अलङ्करोत्याप्रतरुर्विशेषं। अलङ्करोति भूषयति पूरयति चेति। (जयो० वृ० १/८६)

अलङ्कृतवान् (वि०) शोभा जन्य। (सुद० ३/१८)

अलङ्कृतिः (स्त्री०) [अलं+कृ+क्तिन्] १. आभूषण, आभरण, शोभा, रम्यता, सजावट, २. साहित्यिक विभूषण, रस, छन्द, अलंकार पूर्णाकृति। अलंकारशास्त्र। (जयो० २/५५) श्रीमतीं भगवतीं सरस्वतीं साग्लङ्कृति विधौ वपुष्मतीम्। (जयो० २/४१) व्याकृतिं शुचिमलङ्कृतिं पुनश्छन्दसां ततिमिति त्रयं जनः। (जयो० २/५५) (अलंकृतिमलङ्कारशास्त्रम्)

अलङ्क्रिया (स्त्री०) [अलम्+कृ+श+टाप्] विभूषित करना, सजाना, आभूषण धारण करना।

अलङ्घनीय (वि०) उल्लंघन करने में असमर्थ, अपारनीय, पार नहीं करने योग्य।

अलजः (पुं०) [अल+जन्+ड] पक्षी विशेष।

अलञ्जरः (पुं०) [अलं सामर्थ्यं जृणाति] मर्तबान, मिट्टी का बर्तन, घड़ा।

अलम् (अव्य०) १. पर्याप्त, अधिक, यथेष्ट, काफी। (सुद० ८८) २. योग्य, सक्षम, ३. कोई प्रयोजन नहीं, बस, इतना ही, बहुत हो चुका, कोई लाभ नहीं। ४. पूर्ण रूप से, पूरी तरह से। अलमिति पर्याप्तम्। (जयो० वृ० १३/८७) "किं प्रयोजनं किमपि साध्यं नास्तीत्यर्थ।" (जयो० वृ० ५/९८) भुवि सत्या अलमपरेण। (सुद० ८८) अधिक कहने से क्या? विचारसारे भुवनेऽपि साऽलङ्कारामुदारां कवितां मुदाऽलम्। (सुद० १/७) अलंकार युक्त उदार कविता भली भांति सेवन योग्य है। यहां सक्षम, समर्थ के योग में 'अलम्' का प्रयोग है। नाहं त्वत्सहयोगमुज्झितुमलं। (सुद० वृ० ११३)

अलम्पट (वि०) छल रहित, लोभ रहित, पवित्र विचारवाला।

अलम्बि (वि०) धारण किया, देखा गया, ०अवलम्बित, ०आधारित। पुरन्दरेणोदर्शिन। समुत्तरमकम्पनेऽलम्बि पुलोममादरः। (जयो० ५/८९)

अमल्बुष (पुं०) [अलं पुष्णाति इति] १. वमन, छर्दि। २. हथेली।

अलय (वि०) १. अविनश्वर, नित्य, शाश्वत, २. गृहविहीन, इधर-उधर रहने वाला।

अलले (नपुं०) [अर+रा+के रस्य लः] शब्द विशेष।

अलबालं (नपुं०) क्यारी का स्थान, पानी देने का स्थान।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अलस् (अक०) [अ+लस्] कान्तिहीन होना, अप्रभा होना।

अलस (वि०) [न लसति व्याप्रियते-लस्+अच्] १. आलसी, उदासीन, सुस्त, क्रियाहीन, अनुद्यमी, स्फूर्तिरहित, २. थका हुआ, श्रमवियुक्त।

अलसक (वि०) [अलस+कन्] ०अकर्मण्य, ०कर्त्तव्य रहित, ०उदासीन, ०परिश्रम रहित।

अलसज्ञा (वि०) आलस्य को प्राप्त हुई, रसज्ञता रहित। आलस्य (वीरो० ५/२०) गुणांस्तु सूक्ष्मानपि सालसज्ञा। (जयो० २४/८७)

अलसत्व (वि०) ०आलस्य, ०उदासीनता, ०स्फूर्ति का कमी, ०श्रम विहीनता। (जयो० १/६) "विद्याऽनवद्याऽऽपं बालसत्त्वं"। दधाम्यहं तम्प्रति बालसत्त्वं। (वीरो० १/७)

अलब्ध (वि०) अनुपलब्ध, उपलब्धि रहित। (जयो० २३/११)

अलब्धपूर्व (वि०) अलौकिक, पूर्व में नहीं प्राप्त हुई। प्रियामलब्धपूर्वामिव सुन्दरी श्रिया। (जयो० २३२११)

अलातः (पुं०) अंगार, इंगाल।

अलाबुः (स्त्री०) [न लम्बते, न लम्ब्+उ णित्, न लोपश्च बृद्धिः] लम्बी चौकी, आल, गडेलू, तुम्बी। (जयो० १४/६५)

अलाबुफलं (नपुं०) तुम्बीफल, लौकी उरोजयुगलं तत्सहकारि सहाजालाबुफलप्रतिहारि। (जयो० १४/६५)

अलारम् (नपुं०) [ऋ+यङ् लुक्+अच् रस्य लः] द्वार, दरवाजा।

अलिः (पुं०) १. भौंरा, २. भ्रमर, षट्पट। २. बिच्छु, ३. कौवा, कोयल, ४. मदिरा, शराब। त्वदीय-पादाम्बुजालेः सहचारिणीयम्। (सुद० २/३४) तुम्हारे चरण-कमलों में भ्रमर के समान। "अम्भोजान्तरितोऽलिरेवमधुना। (सुद० १२७) गन्ध का लोलुपी भौंरा कमल के अन्दर ही बन्द होकर मरण को प्राप्त होता है।

अलिकं (नपुं०) [अल्यते भूष्यते-अल्+कर्मणि इकन्] शिर, मस्तक, ललाट। अलिके ललाटे च तिलकार्पितं। (जयो० १२/१०१)

अलिकः (पुं०) भ्रमर, भौंरा, अलि, षट्पद। 'ये अलय एवालिया भ्रमरास्तेषां।'' (जयो० १/८२)

अलिकुटुम्बिनी (स्त्री०) भौंरी, भ्रमरी, भ्रमर की गृहिणी। 'बलाहक-कुलमलिकुटुम्बिनीव।" (दयो० ५३)

अलिकुलं (नपुं०) भ्रमर समूह, भ्रमर समुदाय, भ्रमर झुण्ड।

अलिकोचितः (पुं०) ललाट प्रान्त, मस्तक भाग। "अलिकोचितसीम्नि कुन्तला।" (जयो० १०/३३)

अलिजिह्वा (स्त्री०) कोमल तालु, घांटी, गले के अन्दर कौवा।

अलिन् (पुं०) १. भ्रमर, भौंरा, २. बिच्छु।

अलिगर्दः (पुं०) सर्प, अहि।।

अलिङ्ग (वि०) लक्षण विहीन, चिह्न रहित।

अलिञ्जरः (पुं०) [अलनम्-अलिः अल्-अन् तं जरयति इति-जृ+अच्] जलपात्र।

अलिनागः (पुं०) भ्रमरराज, श्रेष्ठभृंग। "वारिजे कमलिनीमलिनागो।" (जयो० ४/५६) अलिर्भ्रमर एव नागः श्रेष्ठभृंगः। (जयो० वृ० ४/५६)

अलिनिनादः (पुं०) भ्रमर गुन गुन (वीरो० ६/१४)

अलिपकः (पुं०) १. कोयल, २. भ्रमर, ३. कुत्ता। 'पिकेऽपिकस्तु स्यात्पिकालिरतहिण्डके' इति विश्वलोचनः।

अलिबलं (नपुं०) भ्रमर सामर्थ्य, भ्रमरशक्ति।

अलाभ (वि०) इच्छित की प्राप्ति न होना, अलाभ नामक परीषह।

अलिमाला (स्त्री०) भ्रमरतति, भ्रमरपंक्ति, भौंरों का समूह। "अनयोः करकुड्मलेऽलिमाला। (जयो० १२/१०१)

अलिसमूहः (पुं०) भ्रमर समूह, भ्रमरपंक्ति।

अलीक (वि०) [अल्+वीकन्] १. मिथ्या, असत्य, असत्प्रलापी। २. अरुचिकर, अप्रिय, अहितकर। (मुनि०२)

अलीक-कथा (स्त्री०) असत्यभाषण, मिथ्या कथन, झूठ प्रतिपादन, मिथ्याव्यापार। चौर्यालीककथाकृतोऽपि न भवेत् सा कामिनी कामिनः। (मुनि०२)

अलीक-भाषणं (नपुं०) मृषाभाषण, मिथ्याकथन, झूठारोपण। मृषानयोऽलीकभाषणप्रमुखा दोषा। (जयो० वृ० २/१४४)

अलीकवचनं (नपुं०) मिथ्यावचन, मृषा कथन, मिथ्यारोप।

अलीकवाक् (पुं०) मिथ्यावाणी, झूठाकथन। 'नालीकवागित्यसकौ धाराया' (समु० ३/२३)

अलीकवादी (वि०) झूठ बोलने वाला, मिथ्या-अभिभाषक, मृषावाची। दत्वा समानेतुमगां वुलादीन्वुत्तो भवानेवमलीकवादी। (समु० ३/३१)

अलीकिन् (वि०) मिथ्यावादिता, अप्रियता।

अलुः (पुं०) छोटा पात्र, कलशी।

अलुक् (पुं०) [नास्ति विभक्तेः लुक् लोपो यत्र] अलुक् समास विशेष, जिसमें पूर्वपद की विभक्ति का लोप नहीं होता।

अलुब्धकः (पुं०) १. बहेलिया (सुद० ७/८), २. लोभ रहित।

अले अलेले (अव्य०) अरे, अए, ए। मागधी, पैशाची प्राकृत में प्रयुक्त।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अलेपक (त्रि०) निष्कलंक, कलंकरहित।

अलेवडं (नपुं०) छांछ आदि। 'अलेवडं यच्च हस्ते न सज्जति।' (भ०आ० टी०२२०)

अलेश (वि०) ०लेश्या रहित, ०कृष्ण-नीलादि लेश्या रहित। ०अयोगकेवली, ०सिद्ध।

अलेश्य देखो अलेश।

अलोक (पुं०) लोक के बाहिर का भाग (न लोक्यते इति अलोकः) शुद्धैकाकाशवृत्तिरूपोऽलोकः। (पंचा०वृ० ३४/वृ० ७५)

अलोकाकाशः (पुं०) लोक के बाहर सब अनन्त आकाश। लोक्यन्ते उपलभ्यन्ते यस्मिन, जीवादिद्रव्याणि स लोकः, तद्विपरीतोऽलोकः। (धव०४/पृ० ९)

अलोकनं (नपुं०) अदर्शन, अन्तर्ध्यान, अदृश्यता।

अलोल (वि०) ०लोभ रहित, ०लालच हीन, ०शान्त, ०इच्छा रहित। ०चपलता विमुक्त।

अलोलुप (वि०) ०आशाओं से रहित, ०अभिलाषा विमुक्त, ०निष्पृह। ०विषयेच्छा विहीन, ०सांसारिक इच्छाओं से रहित।

अलौकिक (वि०) असाधारण, लोकोत्तर, लोक में सर्वश्रेष्ठ, जो लोक में प्रचलित न हो। (जयो० २७/८)

अलौकिकी (वि०) लोकोत्तरा, लोक में उत्तम-(जयो० २७/८) लौकिकहित सहित प्रवृत्ति-(वीरो० १८/१८)

अलौक्य (वि०) अलोलुप, अभिलाषा रहित। अलौक्यं सांसारिकफलानपेक्षा।

अल्प (त्रि०) [अल्प+प] १. कम, थोड़ा, ०किञ्चित्, ०कुछ, छोटा, सूक्ष्म, ०लघु, परिमित। (जयो० वृ० १/६) परिमितानामल्पानां। (जयो०वृ० ५/५८) अन्त्याच्छरीरादपि किञ्चिदल्पा। (भक्ति०२)

अल्पं (क्रि०वि०) जरा सा, थोड़ा सा।

अल्पक (वि०) [अल्प+कन्] १. थोड़ा, कम, सूक्ष्म, छोटा, लघु। २. क्षुद्र, नीच।

अल्पकामः (पुं०) स्वल्प काम, थोड़ी इच्छा। नरोऽल्पकामेन भवन्फलत्रतामुपैति। (समु० ४/३०)

अल्पगंध (वि०) थोड़ी गंध युक्त, कम सुरभि वाला।

अल्पचेता (वि०) व्याकुल चित्तवाली। प्रालेय-कल्प धृतवीरुधिवाल्पचेताः। (सुद० वृ० ८६)

अल्पचेष्टित (वि०) क्रियाशून्यता, इच्छाशक्ति रहित।

अल्पछद (वि०) स्वल्पवस्त्रधारी।

अल्पज्ञ (वि०) स्वल्प ज्ञायक, कम जानने वाला।

अल्प-तनु (वि०) कृशकाय, क्षीणदेह।

अल्पतर (वि०) स्वल्प, अधिक कम। अल्पादल्पतरं गृह्णन्वरेचनमिव क्रमात्। (समु० ९/२८)

अल्पद्वारः (नपुं०) लघु दरवाजा, छोटा द्वार। अल्पद्वारत इत्यदो वदितवान् श्रीनाभिराजात्मजः। (मुनि०१०)

अल्पदृष्टिः (वि०) १. सूक्ष्म दृष्टि। २. अदूरदर्शी, कम उदार।

अल्पधन (वि०) निर्धन, धनहीन।

अल्पधी (वि०) मूढ, मूर्ख, अज्ञानी।

अल्पप्रभज् (वि०) कम सन्तान वाला।

अल्पप्रमाण (वि०) हल्के वचन का, कम वजन का, लघु प्रमाण।

अल्पप्रयोग (वि०) कदाचित प्रयुक्त, कम प्रयोग।

अल्पप्राण (वि०) १. ०स्वल्प श्वास, स्वर, ०अर्धस्वर, ०अनुनासिक अक्षर, ०हलन्ताक्षर।

अल्पबल (वि०) निर्बल, बलहीन, शक्ति रहित।

अल्पबहुत्व (वि०) परस्पर एक-दूसरे से हीनाधिकता।

अल्पबुद्धि (वि०) अज्ञानी, मूर्ख, बुद्धि विहीन।

अल्पमति (वि०) अज्ञानी, मूर्ख, बुद्धिहीन।

अल्पमात्रं (वि०) छोटी मात्रा, लघु थोड़ी मात्रा, कम से कम।

अल्पमूर्ति (वि०) छोटा कद, ठिगना।

अल्पमूल्य (वि०) किञ्चित् मूल्य, कम मूल्य 'दुग्धस्य धारेव किलाल्पमूल्यः।' (जयो० २०/८८)

अल्पमेधा (वि०) कमबुद्धि, मूर्ख, अज्ञानी।

अल्पवयस् (वि०) कम उम्र, लघुवय, छोटा।

अल्पवादिन् (वि०) अल्पभाषी, कम बोलने वाला।

अल्पविद्य (वि०) मूर्ख, अज्ञानी, निरक्षर, अनपढ़, अशिक्षित।

अल्पविषय (वि०) सीमित इच्छा।

अल्पशक्ति (वि०) दुर्बल, बलहीन, शक्ति की कमी वाला।

अल्पसरस् (नपुं०) छोटा तालाब, पोखर।

अल्पश्रुत (वि०) अल्प श्रुतज्ञान वाला।

अल्पाकाङ्क्षिन् (वि०) ०संतुष्ट, ०आशा रहित, ०आकांक्षा रहित।

अल्पागम (वि०) आगम से अनभिज्ञ, ०आगम ज्ञान विहीन, ०श्रुत विहीन।

अल्पाधार (वि०) आधार की कमी, आश्रय से रहित।

अल्पाख्यायिवादिकरण (वि०) कम कथन करने वाला। (जयो० वृ० १/६)

अल्पायुस् (वि०) छोटी अवस्था वाला, कम उम्र वाला।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अल्पाहारिन् (वि०) अल्प भोजी, कम भोजन करने वाला, आहार परिमितता, ०ऊनोदरी।

अल्पेतर (वि०) बड़ा, महत्।

अल्पोपाय (वि०) छोटे साधन वाला।

अव् (सक०) बचाना, रक्षा करना, समझना, पसंद करना, संतुष्ट करना, इच्छा करना, भावना करना, उन्नत करना, "स्वगच्छ गच्छ प्रसादोपरिसृप्तमवेहि नम्"। जो प्रसाद के ऊपर रम रहे हैं, उन्हें ही अपना मित्र समझिए! 'अवेहि नित्यं विषयेषु कामम्' (सुद० पृ० १२१) अवेत्य भुक्तः समयं विवेकात्। (वीरो० ५/३५)

अव (अव्य०) [अव्+अच्] यह क्रिया से पूर्व उपसर्ग रूप में प्रयुक्त होता है। जिसका अर्थ दृढ़, ०संकल्प, ०निश्चय परिव्याप्ति, ०अनादर, ०आश्रय, ०अवमूल्यन, ०आदेश आदि अर्थ निकलता है। 'अवागमिष्यमेवचेदागमिष्यम्।' न किं स्वयम् (सुद० ७७) मया नवागनं भद्रे। सुहृद्यापतितं गदम्! दर्पतः सर्पस्येवास्य तु वक्रगतिः सहसाऽवगता। (सुद० पृ० १०५) दर्प से फुंकार करने वाले सर्प के समान इसकी कुटिल गति का आज सहसा पता चल गया।

अवकट (वि०) [अव-स्वार्थे-कटच्] नीचे की ओर, पीछे की ओर, विपरीत, विरोधी।

अवकटं (नपुं०) विरोध, विपरीत।

अवकर: (पुं०) [अव+कृ+अप्] रज साफ करना, धूल झकटना।

अवकर्त: (पुं०) [अव+कृत्+घञ्] टुकड़ा, धज्जी, वस्त्र के छोटे हिस्से।

अवकर्तनं (नपुं०) [अव+कृत्+ल्युट्] काटना, टुकड़ा करना।

अवकर्षणं (अव+कृष्+ल्युट्) खींचना, निकालना, बाहर करना, निष्कासन।

अवकलित (वि०) [अव+कल्+क्त] १. अवलोकित, दर्शित, दृष्टिगत। २. ज्ञात, गृहीत, लिया हुआ।

अवकाश: (पुं०) [अव+काश्+घञ्] समय, अवसर, मौका। नावकाशममुकान्नृकलापः क्वापि सम्यगिति पातुमवाप। "अवकाशे सुखे वीचिः इति विश्व०) (जयो० ५/६२) (जयो० १५/६)

अवकीर्णिन् (वि०) [अवकीर्ण+इनि] संयमघातक, ब्रह्मचर्य का दोषी।

अवकुञ्चनं (नपुं०) [अव+कुञ्च+ल्युट्] ०झुकाव, ०मोड़, ०परावर्त, ०सिकुड़न, ०आकुञ्चन, ०अप्रसारण।

अवकुण्ठनं (नपुं०) [अव+कुण्ठ्+ल्युट्] घेरना, आकृष्ट करना, परिधि बनाना।

अवकुण्ठित (वि०) [अव+कुण्ठ्+क्त] परिवेष्टित, घेरा हुआ, आकृष्ट।

अवकृष्ट (भू०क०कृ०) [अव+कृष्+क्त] ०निष्कासित, बहिष्कृत, ०निकाले हुए, ०उपेक्षित, ०बहिर्भूत, बाहर किया, दूर हटाया। (जयो० १५/८०) अवकृष्टमिवाशु कोपतो विजिगीषो रमरचक्रवर्तिनः।

अवक्लृप्ति: (स्त्री०) [अव+क्लृप्+क्तिन्] सम्भावना, सभाव्यता, उपयुक्तता।

अवकेशिन् (वि०) [अवच्युतं कं सुखं यस्मात्] फलविमुक्त, बंजर, ०सुख विहीन, ०आधार हीन।

अवकोकिल (वि०) [अवक्रुष्टः कोकिलया] कोकिल द्वारा तिरस्कृत।

अवक्र (वि०) सीधा, अनुकूल, सच्चा। (जयो० २२/६५) वक्रभूः किल विधाववक्रे। (जयो० २२/६५)

अवक्रविधि: (स्त्री०) अनुकूल शुभ आचार, भाग्यानुकूल। (जयो० २२/६५)

अवक्रन्द (वि०) [अव+क्रन्द्+घञ्] क्रन्दन करने वाला, तीव्र रुदन वाला।

अवक्रन्दनं (नपुं०) [अव+क्रन्द्+ल्युट्] अतिक्रन्दन्, तीव्र रुदन, उच्चक्रन्दन।

अवक्रम: (नपुं०) [अव+क्रम्+घञ्] नीचे उतारना, अधोक्रम, उतार, ढलान।

अवक्रम: (पुं०) [अव+क्री+अच्] १. कर, राजस्व वसूली, २. उधार देना।

अवक्रान्ति: (स्त्री०) [अव+क्रम्+क्तिन्] उतार, उपागम।

अवक्रिया (स्त्री०) [अव+कृ+श+टाप्] भूल, विस्मरण, स्मृति में न रहना, चूक जाना।

अवक्रोश: (पुं०) [अव+क्रुश्+घञ्] १. दुर्वचन, निन्दा, अपशब्द, २. अपध्वनि, ग्लानि युक्त वचन।

अवक्तव्य (वि०) एक साथ द्रव्य का कथन, स्वकीय द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव और परकीय काल भावादि के साथ कथन। स्यादवक्तव्य स्याद्वाद की एक दृष्टि। (वीरो० १९/६)

अवक्लेद: (नपुं०) [अव+क्लिद्+ल्युट्] टपकना, गिरना, कुहरा छाना।

अवक्वण: (अव+क्वण्+अच्) व्यर्थ आलाप, स्वरविहीन रूक्ष।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अवक्वाथः (पुं०) [अव+क्वथ्+घञ्] ०कच्चा, ०पकाना, ०कम उबालना, ०कच्चा पाक, ०अपरिपक्व।

अवक्षयः (पुं०) [अव+क्षि+क्षच्] नाश, ध्वंस, विनाश, हानि, तबाही।

अवक्षयणं (नपुं०) [अव+क्षि+ल्युट्] वह्नि शमन साधन, अग्निशमनक।

अवक्षेपः (पुं०) [अव+क्षिप्+घञ्] ०निन्दा, ०आक्षेप, ०लाञ्छन, ०आरोप।

अवखण्डनं (नपुं०) [अव+खण्ड्+ल्युट्] विभक्त करना, विभाग करना, खण्ड करना, बांटना, नष्ट करना।

अवखात (वि०) गहरा खण्ड, खाई खातिका।

अवगणनं (नपुं०) [अव+गण+ल्युट्] अवज्ञा, तिरस्कार, अपमान, असम्मान, आरोप, लांछन, मान, निन्दा, घृणा।

अवगण्डः (पुं०) कपोल फुंसी, फोड़ा।

अवगत (वि०) प्राप्त, पहुंचा, चल गया, ज्ञात हुआ। '**वक्रगतिः** सहसाऽवगता।' (सुद० पृ० १०५) **मया नावगतं भद्रे!** (सुद० ७३) हे भद्रे! तुझे कुछ भी ज्ञात नहीं।

अवगतिः (स्त्री०) [अव+गम्+क्तिन्] दृढ़ता, उचित गति, अच्छा ज्ञान, प्रत्यक्षीकरण, समझ, सम्मुख।

अवगमः (पुं०) [अव+गम्+घञ्] प्रत्यक्षीकरण, समझना, जानना, अधोगमन, नीचे की ओर अग्रसर।

अवगाढ (भू०क०कृ०) १. प्रगाढ़, गहरा, ०अत्यधिक, ०घनीभूत, ०दृढ़। २. प्रविष्ट, निबद्ध, डूबा हुआ, आविष्ट।

अवगाढरुचिः (स्त्री०) दृढ़श्रद्धान, यथार्थरुचि। (त०वा०३/३६)

अवगाढ-सम्यक्त्व (वि०) दृढ़ प्रतीति, श्रुत आस्था/आगम श्रद्धान। (महापुराण ७४/४४८)

अवगाहः (पुं०) [अव+गाह्+घञ्] निमग्न, स्नान, डुबकी लगाना, प्रविष्ट होना।

अवगाहनं (नपुं०) निमग्न, स्नान, प्रविष्ट होना।

अवगाहित (वि०) आलोचित, मान्य। **अहहमूढतया न मया हितं सुमतिभावितमप्यवगाहितम्।** (जयो० ९/३१)

अवगाह्य (सं० कृ०) अवगाह्य, करके। (जयो० वृ० २/१५) निमग्न होकर, प्रविष्ट होकर।

अवगीत (भू०क०कृ०) [अव+गै+क्त] १. निन्दा, आरोप, घृणा, अपमान, कोसना, चोट पहुंचाना, हृदयघात करना। २. परिहास, धिक्कार, उपहास।

अवगुण (सक०) [अव+गुणय्] खोलना, उद्घाटन करना।

अवगुणः (पुं०) अपराध, दोष, लाञ्छन, आरोप, आक्षेप, दुर्गुण। **सर्वानवगुणांल्लातीत्यबला प्रणिगद्यते।** (जयो० २/१४५)

अवगुण्ठ (नपुं०) [अव+गुण्ठ+ल्युट्] घूंघट, वस्त्राच्छादन, छिपाना, बुर्का ओढ़ना, पर्दा करना।

अवगुण्ठनं देखो अवगुण्ठ।

अवगुण्ठनवत् (वि०) वस्त्राच्छादित किया, घूंघट किया, पर्दा किया गया।

अवगुण्ठिका (स्त्री०) घूंघट, पर्दा, आवरण, आच्छादन।

अवगुण्ठित (वि०) [भू०क०कृ०] [अव+गुण्ठ+क्त] आच्छादित, पर्दा किया गया, घूंघट लिया, आवृत किया।

अवगूढ (वि०) आलिंगित, व्याप्त, ०आवृत।

अवगोरणं (नपुं०) [अव+गर्+ल्युट्] आक्रमण करना, प्रहार करना, धमकाना।

अवगूहनं (नपुं०) [अव+गूह्+ल्युट्] छिपाना, आच्छादन, आवरण, प्रच्छन्न करना।

अवगूहित (वि०) आश्लेषित, आच्छादित।

अवग्रह् (सक०) ग्रहण करना, लेना। (वीरो० १८/४७)

अवग्रहः (पुं०) [अव+ग्रह्+घञ्] १. आलोचन, अवधारण, वस्तु का बोध होना, २. साधु की आहार क्रिया की अवधारणा। अवगृह्यते अनेन घटाद्यर्था इत्यवग्रहः। (धव० ९/१४४) वस्तुभेदस्य ग्रहणं तदवग्रहः। (त०श्लो०१/१५) ३. सन्धिच्छेद करना, अलग अलग करना, पद विभाजन करना, पृथक्कता के लिए विराम लगाना, ४. बाधा, रोक, दण्ड।

अवग्रहणं (नपुं०) रुकावट, बाधा, अवरोध, विराम।

अवग्राहः (पुं०) [अव+ग्रह्+घञ्] वियोजन, टूटना, नष्ट होना, अवखण्डन, विखण्डन।

अवघट्टः (पुं०) [अव+घट्ट+घञ्] १. गुहा, बिल, मांद, २. चक्की, घरघट्टी, आटा चक्की।

अवघर्षणं (नपुं०) [अव+घृष्+घञ्] रगड़ना, मलना, पीसना।

अवघातः (पुं०) [अव+हन्+घञ्] पीड़ा पहुंचाना, मारना, घात करना। आरम्भ करना, तीव्र प्रहार।

अवघूर्णनं (नपुं०) [अव+घूर्ण+ल्युट्] घूमना, चक्कर लगाना, परिभ्रमण।

अवघ्राणं (नपुं०) [अव+घ्रा+ल्युट्] सूंघने का भाव, सुरभिग्राहक।

अवचन (वि०) १. मूक, मुखरी, मौन, २. वाणी रहित, वचनाभाव।

अ-वचनीयः (वि०) ०अशिष्ट, ०अश्लील, ०अकथनीय, ०अभाषणीय, ०अनौचित्य।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अवचयः (पुं०) [अव+चि+घञ्] इकट्ठा करना, चयन, चुनना, तोड़ना, ग्रहण करना 'कुसुमावचयार्थमिहाऽऽगता।' (दयो० पृ० ६३)

अवचारणं (नपुं०) इकट्ठा करना।

अवचूडः (पुं०) [अवनता चूडा अग्रं यस्य वा डो लः] ऊपरी वस्त्र, ध्वज-वस्त्र, लहराता हुआ वस्त्र।

अवचूलः देखो ऊपर। * विश्लेषण, विवेचन।

अवचूर्णनं (नपुं०) [अव+चूर्ण+ल्युट्] पीसना, चूर्ण करना, विभक्त करना, पृथक्-पृथक् करना।

अवचूर्णिन् (वि०) चूर चूर किया गया, पृथक्-पृथक् किया गया, पीसा गया।

अवचूलकः (पुं०) [अवनता चूडा यस्य, डस्य लत्वम्] चंवर, उड़ाने का पंखा।

अवच्छ (वि०) [अव+छद्+क] आवरण, ढक्कन।

अवच्छिन्न (भू०क०कृ०) [अव+छिद्+क्त] पृथक् किया, विनष्ट किया, विकृत, सीमित, निश्चित।

अवच्छेदः (पुं०) [अव+छिद्+घञ्] १. विच्छेद, भेद, विभाजन, खण्ड, भाग, सीमा, विवेचन, २. निर्णीत, निश्चय, दृढ़, स्थितिकरण।

अवच्छेदक (वि०) [अव+छिद्+ण्वुल्] १. विवेचक, वियोजक, प्रतिपादक। २. सीमा बांधने वाला, निर्धारक।

अवजयः (पुं०) [अव+जि+अच्] पराजय, पराभूत, दूसरों पर विजय।

अवीजतिः (स्त्री०) [अवि+जि+क्तिन्] विजय पराजय।

अवज्ञा (स्त्री०) [अव+ज्ञा+क] अनादर, असम्मान, अपमान, तिरस्कार अवहेलना, अवमति। (जयो० २७/४५) 'अवज्ञानेक हेतुतया।' (जयो० ६/७०)

अवज्ञानं (नपुं०) अनादर, असम्मान, तिरस्कार, अपमान।

अवज्ञायक (वि०) अनभिज्ञ, अनजान, नहीं जानने वाला। (जयो० वृ० १/४०)

अवटः (पुं०) [अव+अटन्] १. अघटनीय। 'विज्ञैरवाचीत्यवटः प्रयोगः।' (सुद० १०७) २. कूप, गर्त, ०गुफा, ०गड्ढा, ०विवर, ३. देहव्रत, आच्छदितव्रण। "तिरोभवत्येत्र भुवोऽवटे च वटे।" (पृथ्वी के कूप में तिरोहित हो रहा है।)

अवटिः (स्त्री०) [अव+अटि+ङीप्] कूप, गुहा, ०गर्त, ०विवर, ०छिद्र।

अवटी देखो अवटिः।

अवटुः (पुं०) [अव+टीक्+डु] कूप, गुहा, गर्त, विवर।

अवडीनं (नपुं०) [अव+डी+क्त] पक्षी उड़ान, खग विचरण।

अवत् (अक०) रक्षा करना, सम्भालना देख-रेख करना। (जयो० २/९७) कार्यपात्रमवताद्यथोचितं। (जयो० २/९७) कार्यपात्रं भृत्यभवताद् रक्षते। (जयो० वृ० २/९७) 'न कलितं किल गर्ववतावता।' (जयो० ९/७६) तेन अवता रक्षकेण। (जयो० वृ० ३/७६)

अवतंसः (पुं०) [अव+तंस्+घञ्] (सुद० २/१) ०हार, ०कर्णाभूषण, ०आभूषण, ०मुकुट। समङ्गनावर्गशिरोऽवतंसो। (जयो० १/६९) 'शिरांसि मस्तकानि तेषु अवतंसो मुकुटरूपो गुणः। (जयो० वृ० १/६९)

अवतंसकः (पुं०) [अव+तंस्+ण्वुल्] कर्णाभूषण, आभूषण।

अवतंसोत्पादकः (पुं०) कर्णाभूषण। (जयो० ६/६५)

अवततिः (स्त्री०) [अव+तन्+क्तिन्] प्रसार, फैलाव, विस्तार, व्यापक।

अवतप्त (भू०क०कृ०) [अव+तप्+क्त] चमकाया गया, संतप्त किया, तपाया, गरम किया।

अवतमसं (नपुं०) अन्धकार।

अवतर् (सक०) उतारना, उद्धृत करना, आना। अवतरन्ती (जयो० ३/११२) (जयो० वृ० ८०)

अवतरः (पुं०) १. विरत, निर्वाह, २. उतारना। मकरतोऽवतरस्य सरस्वति भवितुमर्हति। (जयो० ९/६१)

अवतरणं (नपुं०) १. उतारना, उद्धृत करना, अनुवाद करना, उद्धरण, २. अवतार, स्नान के लिए उतरना। ३. कार्य, पद्धति। "प्रक्रियावतरणं न दोषभाक्।" (जयो० २/२९)

अवतरणपद्धतिः (स्त्री०) ०निःश्रेणी, ०सीढ़ी, ०सोपान। (जयो० वृ० १२/५)

अवतरणिका (स्त्री०) [अवतरणी+कन्+ह्रस्वः टाप्] ग्रंथारंभ मंगलाचरण, भूमिका, प्रस्तावना, प्रारम्भिकी।

अवतरित (वि०) [अव+तृ+क्त] व्याप्त, जन्म लिया, 'अवतरिता सर्वत्र व्याप्तास्तीत्यर्थः।' (जयो० वृ० ६/६५) उदरे तवावतरितो (वीरो० ४/४०) (दयो० ४३)

अवतरणी (स्त्री०) [अवतरित ग्रन्थोऽनया अवतृ+करणे-ल्युट्] भूमिका, प्रस्तावना, प्रारम्भिकी।

अवतर्पणं (नपुं०) [अव+तृप+ल्युट्] शान्तिभाव, आनन्दभाव, तृप्तभाव।

अवताडनं (नपुं०) [अव+तड्+णिच्+ल्युट्] कुचलना, रौंदना, प्रहार करना, मारना।

अवतानः (पुं०) [अव+तृ+घञ्] १. समागमन, समागम, २.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उदय, आरम्भ, अवतरण, प्रकट, ३. अनुवाद, भूमिका, प्रस्तावना। 'सतृष्णया नाभिसरस्य वापि किलावतार: शतकैस्तयापि। (जयो० ११/५) 'जलाशयेऽवतार: समागमनमपि।' (जयो० वृ० ११/५) ''दृशोरमुष्या द्वितयेऽवतारं।'' (सुद० २/४८)

अवतारक (वि०) जन्म लेने वाला।

अवतारणं (नपुं०) [अव+तृ+णिच्+ल्युट्] अवतरण करना, उतारना, पूजा करना, शान्त करना, आराधना करना। ''अवतारस्यावतरणस्य तं ज्ञानं तदवतारणं'' (जयो० वृ० २४/८२) प्रेषितश्चर इतोऽवतारण हेतवेऽर्कपदयो: सुधारण:। (जयो० ७/५६)

अवतारविधि: (स्त्री०) जन्मविधि, जन्मधारण करना। (वीरो० १९/१८)

अवतीर्ण (भू०क०कृ०) [अव+तृ+क्त] १. अनुरक्त, नीचे आया, उतरा हुआ, २. पार हुआ, पार प्राप्त। ''सा श्रवणेऽवतीर्णा'' (जयो० १/६५) ''राजसभायामवतीर्णा प्राप्ता।'' (जयो० वृ० १/६५)

अवतृ (सक०) [अव+तृ] उतारना, अवसरित आना, जन्म लेना। अवतारयति (जयो० २६/२१ अवतरन्ती (जयो० ३/११२)

अवतोका (स्त्री०) गर्भपात युक्त गाय।

अवत्तिन् (वि०) [अव+दो+इनि] विभाजित, पृथक्करण

अवदंश: (पुं०) [अव+दंश्+घञ्] उत्तेजक आहार, चटपटा भोजन, चटपटी खाद्यवस्तु।

अवदा (सक०) देना, बिठाना, स्थित करना। द्वास्थितो रविकरानवदात उत्पलेषु सरसीव विभात:। (जयो० ५/२२)

अवदाघ: (पुं०) [अव+दह्+घञ्] ०ग्रीष्म, ०गर्मी, तपन, ०तेज, ०निदाघ, ०अग्नि, ०ज्वाला।

अवदात (वि०) [अव+दै+क्त] शुक्ल, निर्मल, पवित्र, स्वच्छ, उज्ज्वल। 'गुणावदाता सुवय: स्वरूपा।' (जयो० १/७४) गुणै: सौन्दर्यादिभि: अवदाता निर्मला शुक्ला च। (जयो० वृ० १/७४)

अवदानं (नपुं०) [अव+दो+ल्युट्] प्रदान, अवग्रहज्ञान, शौर्य सम्पन्न, प्रशस्त दान, बोध 'अवदीयते खण्ड्यते परिच्छिते अन्येभ्य: अर्थ: अनेनेति अवदानम्।' (धव०१३/२४२)

अवदारणं (नपुं०) [अव+दृ+णिच्+ल्युट्] विदारण, फाड़ना, चीरना, विभाजन, खनन।

अवदाह: (पुं०) [अव+दह्+घञ्] उष्ण, गर्मी, जलन, तपन।

अवदीर्ण (भू०क०कृ०) [अव+दृ+क्त] खण्डित, विभाजित, विदीर्ण, टूटा हुआ, विनष्ट।

अवदोह: (पुं०) [अव+दुह्+घञ्] दुहन, दूध, दुग्ध।

अवद्य (वि०) १. त्याज्य, निंद्य, प्रशंसनीय। १. सदोष, निन्दार्ह, अप्रिय, घृणित, २. अधम, नीच, निम्न।

अवद्योतनं (नपुं०) [अव+द्युत+ल्युट्] प्रकाश, चमक, कान्ति, प्रभा।

अवधानं (नपुं०) [अव+धा+ल्युट्] ध्यान, सकर्तका, लगन, रुचिपूर्ण, हर्षसहित। (जयो० वृ० ३/३८)

अवधानपूर्वक (वि०) ध्यानपूर्वक, तल्लीनतापूर्वक। (जयो० वृ० ३/३८)

अवधार: (पुं०) [अव+धृ+णिच्+घञ्] निर्धारण, निश्चय, प्रतिबन्ध, सीमा बन्धन।

अवधारक (वि०) [अव+धृ+णिच्+ण्वुल्] निश्चय करने वाला, दृढ़संकल्पी, उचित निर्णयक।

अवधारणं (नपुं०) [अव+धृ+णिच्+ल्युट्] सीमाकरण, प्रतिबन्धन, निश्चय, निर्धारण।

अवधि: (स्त्री०) [अव+धा+णि] १. सीमा, मर्यादा, २. प्रयोग, ध्यान, ३. उपसंहार। ४. अवधिज्ञान अवधिं प्रति यत्नवान्। (वीरो० ७/४)

अवधिज्ञानं (नपुं०) अवधिज्ञान, मर्यादित ज्ञान पांच ज्ञानों में तीसरा ज्ञान, जो परिमित विषय में प्रवृत्त हो।

अवधीर् (अक०) अनादर करना, अवहेलना करना, अपमान करना।

अवधीरणं (नपुं०) [अव+धीर+ल्युट्] अनादर भाव, अपमान भाव, प्रलोपक। (जयो० २/८३)

अवधीरणा (स्त्री०) [अव+धीर+ल्युट्+टाप्] अनादर, अपमान, असम्मान।

अवधूत (भू०क०कृ०) [अव+धू+क्त] १. लहराया/फहराया हुआ, हिलाया हुआ, २. अस्वीकृत, घृणित, अपमानित, तिरस्कृत।

अवधूननं (नपुं०) [अव+धू+ल्युट्] १. हिलाना, ठहराना, २. तिरस्कार, अपमान, ३. क्षोभ, आकुलता।

अवध्य (वि०) मारने के अयोग्य, वध न करने योग्य।

अवध्वंस: (पुं०) १. परित्याग, विमोचन, २. नाश, चूर्ण करना, खण्ड-खण्ड। ३. निन्दा, घृणा, लांछन।

अवनं (नपुं०) १. रक्षा, सुरक्षा, प्रतिरक्षा, २. कल्याण, हित। ''वाससोऽहि भुवि जायतेऽवनम्।'' (जयो० २/५०) ''अवनं/रक्षणार्थं, परिधानानुकूल्यार्थमेव।'' (जयो० वृ०

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

२/५०) उक्त पंक्ति में 'अवन' का अर्थ रक्षण और अनुकूल, योग्य भी है। भावनाऽपि तु सदावनाय। (जयो० २/७५) उक्त पंक्ति में 'अवन' का अर्थ कल्याण है। 'अवनस्य संरक्षणस्यानन्दस्य च।' (जयो० वृ० २६/२३)

अवनत (भू०क०कृ०) [अव+नम्+क्त] १. विनय, नम्र, नम्रीभूत। २. झुका हुआ, नीचे गिरता हुआ, ३. हर्ष, संतोष, आनन्द, प्रसन्नता। ४. कामना, इच्छा, वाञ्छा।

अवनतिः (स्त्री०) [अव+नम्+क्तिन्] १. नमना, झुकना, सम्मान देना, प्रणाम, "कृतावनत्या अपि सम्वयोभुजः।" (जयो० १२/१३१)कृताऽवनतिर्देहनामनं। (जयो० वृ० १२/१३१), २. छिपना, डूबना।

अवनद्ध (वि०) ०अवनत, ०विनत, ०विनम्रता, ०नम्रीभूतता; ०झुका हुआ, ०नीचे की ओर अग्रसर।

अवना (पुं०) [अव+नी+घञ्] झुका, नम्र, नीचे उतारना।

अवनाट (वि०) [नतं नासिकायाः, अव+नाटच्] चपटी नाक।

अवनामः (पुं०) [अव+नम्+घञ्] विनम्र, झुकना, नमन।

अवनावित (वि०) अवगुणी, विनम्रता रहित। गताऽऽर्थिकात्वं गुणिसम्प्रयोगतः गुणीभवेदेव जनोऽवनावितः। (समु० ४/१६)

अवनावह (वि०) आसक्त, लीन। (सुद० ३/१७)

अवनाविह (वि०) कितने ही, कोई भी। चेष्टा स्त्रियां काचिद चिन्तनीयाऽवनाविहान्यो निजगौ महीयान्। (सुद० ८/३)

अवनाहः (पुं०) [अव+नह्+घञ्] बांधना, कसना, जकड़ना, दृढ़ करना, फेंट लगाना।

अवनिः (स्त्री०) [अव्+अनि] १. भूमि, भू, पृथ्वी, धरा, धरणी, धरती। (वीरो० ३/१) २. आकृति, ३. सरिता, सरि।

अवनिकूर्चन् (वि०) पृथ्वी खनन करने वाला। अवनेः पृथिव्याः कूर्चनलः क्षोदनतः। (जयो० २/१५८)

अवनितलः (पुं०) भू भाग (जयो० ६/३०)

अवनिनाथः (पुं०) राजा, नृप, भूस्वामी।

अवनिपः (पुं०) राजा, अधिपति, स्वामी।

अवनिपतिः (पुं०) राजा, नृप, भूपति। परमपरमवनिपतिं यान्ती। (जयो० ६/८४)

अवनिपशः (पुं०)नरपतिप्रधान। (जयो० १८/८७)

अवनिपालः (पुं०) राजा, नृप, पृथ्वीपाल। (वीरो० ३/१) 'निःशेषनम्रावनिपालमौलि'

अवनिभाजः (पुं०) पृथ्वी मण्डल, भूपात्र, भूनिवासी। (जयो० ६/१५) नास्य समोऽवनिभाजाम्। (सुद० १/३८)

अवनिमण्डनं (नपुं०) भूभूषण, पृथ्वीकरण, भूशोभा। 'अवनि-मण्डन नः सुतरां।' (जयो० ९/१६)

अवनिमण्डलं (नपुं०) पृथ्वीमण्डल, भूभाग।

अवनिमहेश्वरी (स्त्री०) भूराज्ञि, पटरानी, महारानी। श्राद्धे यथावनिमहेश्वरि! विप्रजातः (जयो० १८/१५)

अवनियोगिन् (वि०) पृथ्वी का योगी राजा। अवनियोगीवन्द्यो न नियोगिवन्द्य इत्यर्थः। अवशब्दस्याभावार्थकत्वात् अवगुणवत्। "अवनेयोगिनो भूमिपतयः।" (जयो० वृ० १/१२)

अवनिरुहः (पुं०) वृक्ष।

अवनीश्वरि (स्त्री०) पृथ्वीवरि! महारानी। पृथ्वीश्वरी, महाराज्ञि। कपिलाऽऽहावनीश्वरीम्। (सुद० पृ० ८४) हेऽवनीश्वरि सम्वच्मि। (सुद० ८५)

अवनीश्वरी देखो अवनीश्वरि।

अवन्ति (स्त्री०) [अव्+क्षिच्+ङीप्] अवन्ती नगरी, उज्जयिनी नगरी। क्षिप्रा/क्षिप्रा नदी के तट पर स्थित नगरी। (दयो० पृ० ९)

अवन्ती (स्त्री०) उज्जायिनी, अवंतिका।

अवन्तीप्रदेशः (पुं०) अवन्ती प्रान्त। (दयो० पृ० ९)

अवन्ध्य (वि०) १. फलवती, फलदायी, २. उपजाऊ, उर्वर, उन्नत भू। रदच्छदाभोगमिषादवन्ध्या। (जयो० ११/५४) अवन्ध्या फलवती सती समुदेति। (जयो० वृ० ११/५४)

अवपतनं (नपुं०) [अव+पत्+ल्युट्] अधः पतन, निम्नपतन, नीचे गिरना।

अवपाक (वि०) [अवकृष्टः पाको यस्य] अतिपाक, अधिक पकाया गया।

अवपातनं (नपुं०) [अव+पत्+णिच्+ल्युट्] गिराना, फेंकना, ठुकराना।

अवपात्र (वि०) अमान्य पात्र, निम्न पात्र।

अवपात्रित (वि०) [अवपात्र+णिच्+क्त] बहिस्कृत, जाति से बाहर किया गया।

अवपीडः (पुं०) [अव+पीड्+णिच्+घञ्] दबाना, पीड़ित करना।

अवपीडनं (नपुं०) [अव+पीड्+णिच्+ल्युट्] दबाना, आघात, पीड़न।

अवबुध् (अक०) जागना, सचेत होना, प्रबुद्ध होना, समझना, जानना। (वीरो० ७/४) 'अवबुध्य मुमोचासाविह।' (जयो० ६/४७) अवबुध्य जनुर्जिनेशिनः पुनरुत्थाय ततः क्षणादिनः। (वीरो० ७/३) "अवधिं प्रति यत्नवान भूदवबोद्धुं।

अवबन्धः (पुं०) बन्ध, बन्धन।

अवबद्ध (वि०) नियन्त्रित, बंधा हुआ।

अवबुद्ध (वि०) ज्ञात, अवज्ञात। (वीरो० ७/४) (जयो० १२/४५)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अवबोधः (पुं०) [अव+बुध्+घञ्] १. ज्ञान, जानना, समझना, प्रबुद्ध होना, बोध, २. जागना, जागृत होना, ३. संसूचन, शिक्षण।

अवबोधक (वि०) [अव+बुध्+ण्वुल्] जागृति, ज्ञान संकेत।

अवबोधनं (नपुं०) बोध, ज्ञान, जागृति, प्रकाशन, प्रत्यक्षीकरण। (सम्य० ८२)

अवबोधि (पुं०) १. ज्ञान, २. निश्चय, निर्णय।

अवभङ्गः (पुं०) [अव+भञ्ज्+घञ्] १. जीतना, हराना, नीचा दिखाना, २. तोड़ना, अलग-अलग करना।

अवभा (अक०) चमकना, सुशोभित होना। (जयो० ३/१६) अवभान्ति स्म/शुशुभिरे। (जयो० पृ० ३/१६)

अवभावः (पुं०) विशेष भाव।

अवभावित (वि०) प्रभावित, सुशोभित। मधुनोद्यानभिवावभावितः।

अवभास् (अक०) शोभित होना, चमकना।

अवभासः (पुं०) [अव+भास्+घञ्] १. चमक, प्रभा, कान्ति। प्रकाश, २. ज्ञान, प्रत्यक्षीकरण।

अवभासक (वि०) [अव+भास्+ण्वुल्] प्रकाशक, प्रभावान् कान्तिमय।

अवभासण (वि०) प्रकाशक, प्रभावान्, कान्तिमय, प्रभाकर्ता।

अवभासिन् (वि०) देदीप्यमान्, प्रभावान्।

अवभासित (वि०) प्रकाशित, कान्तियुक्त।

अवभुग्न (वि०) [अव+भुज्+क्त] झुका, वशीभूत, आकुञ्चित।

अवभृथः (पुं०) शुद्धि स्नान।

अवम (वि०) [अव्+अमच्] १. पापपूर्ण। २. घृणित, अपमानित, निन्दनीय। ३. खोटा, घटिया, निम्न, अधम।

अवमत (भू०क०कृ०) [अव+मन्+क्त] घृणित, अपमानित, निन्दनीय। १. अवज्ञात, अवगणित।

अवमतिः (स्त्री०) [अव+मन्+क्तिन्] अनादर, अपमान, घृणा, अरुचि।

अवमर्दः (पुं०) [अव+मृद्+घञ्] कुचलना, मर्दन करना, मसलना, विनाश, नाश।

अवमर्दक (वि०) विनाशक, घातक, मसलने वाला।

अवमन् (सक०) अवज्ञा करना, निरादर करना, अपमान करना।

अवमन्य (वि०) त्याज्य, छोड़ने योग्य। 'तत्कुशास्त्रमवमन्यतमिति।' (जयो० २/६६)

अवमल (वि०) मल रहित, निर्दोष। 'बहुसञ्चरितदमवमलं भुवः।' (जयो० १४/४६)

अवमानः (पुं०) [अव+मन्+घञ्] १. प्रमाण विशेष, अवमित किया जाना, प्रमाण जन्य, ०माप-तौल।

अवमान (नपुं०) अनादर, अवज्ञा, अपमान, निरादर। (जयो० ७/५) अवमानं तिरस्कारं कृतवान्। (जयो० पृ० ७/५)

अवमाननं (नपुं०) [अव+मन्+णिच्+ल्युट्] अनादर, तिरस्कार, अपमान, अवज्ञा।

अवमानना (स्त्री०) अवगणना, अवज्ञा।

अवमानिन् (वि०) [अव+मन्+णिच्+णिनि] अवज्ञाकर्ता, अनादर करने वाला, अपमान करने वाला, तिरस्कार कर्ता।

अवमानित (वि०) अवज्ञात, अनाहत, अवहेलक, अपमानित, उपेक्षित।

अवमारुत (पुं०) नीचे चलने वाली हवा।

अवमूर्धन् (वि०) [अवनतो मूर्धाऽस्य] नम्रीभूत, नम्रगत।

अवमोचक (वि०) मुक्त कर्ता, स्वतंत्र। करने वाला।

अवमोचनं (नपुं०) [अव+मुच्+ल्युट्] मुक्त करना, स्वतंत्र करना, छोड़ना।

अवमौदर्य (नपुं०) कम आहार ग्रहण करना, अवमोदरस्यभावः अवमौदर्यम्/न्यनोदरता। (भ०आ०टी०४८७)

अवमृत्युः (पुं०) अकाल मृत्यु, अकारण मृत्यु।

अवयवः (पुं०) १. पर्व, सन्धि, ग्रन्थि, गांठ। (पर्वेति अवयव सन्धिर्ग्रन्थिर्वा। (जयो० पृ० ३/४०) २., शरीर, व्यञ्जन, स्वररहित अक्षर। (जयो० पृ० ३/८९), ३. तर्कसंगत, युक्ति युक्त, अनुमान घटक। न मनमीति भजः किमु 'विन्दुनाप्यवयवावयवित्वमिहाधुना।' (जयो० ९/४६)

अवयवावयवित्व (वि०) अवयव अवयविभावत्व, अनुमान प्रयोग का वाक्यांश। (जयो० ९/४६)

अवयाविनी (वि०) अवयव युक्त। 'विद्यातन्मयावयविनी विरवद्या।' (जयो० ५/४०)

अवर (वि०) [न वरः इति अवरः] १. आयु में छोटा, २. पश्चात्वर्ती, अन्य, दूसरा, तद्भिन्न, ३. अनुवर्ती, उत्तरवर्ती, महत्त्वहीन।

अवरतः (अव्य०) पश्चात्वर्ती, अन्य, तद्भिन्न।

अवरतिः (स्त्री०) [अव+रम्+क्तिन्] १. विरम, विश्राम, आराम, २. रुकना, स्थिर होना, ठहरना।

अवरीण (वि०) खोटा, मिला हुआ।

अवरुग्ण (वि०) [अव+रुज्+क्त] १. रोगी, व्याधि युक्त, २. त्रुटित, भग्न।

अवरुद्धिः (स्त्री०) [अव+रुध्+क्तिन्] ०प्रतिबन्ध, ०प्रतिरोध, ०अवरोध, ०रुकावट।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अवरूप (वि०) ०कुरूप, ०विकलांग, ०रूपहीन, ०असुन्दर, ०अमनोरम, ०अरम्य, ०अमनोज्ञ।

अवरोचक: (पुं०) [अव+रुच्+ण्वुल्] रुचि का अभाव, क्षुधा का अभाव।

अवरोध: (पुं०) [अव+रुध्+घञ्] १. प्रतिबन्ध, प्रतिरोध, बाधा, रुकावट। २. अन्त:पुर, रनवास, रानियों का निवास। ३. रानिया, रानी। "अवरोधिमितोऽवदत् पदम्।" (जयो० १०/३) अवरोधमन्त:पुरम्। (जयो० पृ० १०/३). ५. बन्दीकरण, नाकेबन्दी, घेरा, किलाबन्दी, आवृत्तिकरण, आवरण।

अवरोधक (वि०) [अव+रुध्+ण्वुल्] प्रतिरोधक, प्रतिबन्धक, रोकने वाला, घेरा डालने वाला, अर्गल। (जयो० पृ० ३/१०१) बाधक।

अवरोधक: (पुं०) पहरेदार, द्वारपाल।

अवरोधनं (नपुं०) [अव+रुध्+ल्युट्] १. अन्त:पुर, २. बाधा, प्रतिरोध, अड़चन। (जयो० १३/३१)

अवरोधनभाञ्जि (स्त्री०) अन्त:पुरसम्बाहका, अन्त:पुर स्त्री। (जयो० १३/३१) अवरोधनभाञ्जि राजितो नरयानानि चलंति विस्तृते। (जयो० १३/३१)

अवरोध-वधू (स्त्री०) अन्त:पुर की स्त्री, "अवरोधस्यान्त: पुरस्य वधू: स्त्रीरवतारयन्।" (जयो० पृ० १३/८१)

अवरोधयनं (नपुं०) अन्त:पुर। 'तदवरोधायने मरुदेव्या।' (दयो० पृ० ३१)

अवरोधिक (वि०) [अवरोध+ठन्] प्रतिरोध जन्य, गतिरोधयुक्त बाधाजनक, आवरण युक्त।

अवरोधिक: (पुं०) द्वारपाल, पहरेदार।

अवरोधिन् (वि०) [अवरोध+इनि] प्रतिरोधक, गतिरोधक, बरधक।

अवरोपणं (नपुं०) उन्मूलन, घटाना, कम करना, नीचे उतरना।

अवरोह: (पुं०) [अव+रुह्+घञ्] उतार, अध: पतन, अधोरुह।

अवरोहणं (नपुं०) १. चढ़ना, आरुढ़ होना। २. उतरना, नीचे जाना।

अवर्ण (वि०) १. वर्ण रहित, कुरूप, २. रंग विहीन, बदरंग, ३. कलंक, लोकापवाद। ४. वर्ण-स्वर एवं व्यञ्जन की हीनता। ५. निन्दा, घृणा, लांछन। (जयो० ३/५०)

अवर्णनीय (वि०) ०अकल्पनीय, ०कथनीय, ०वर्णन से रहित ०अनिर्वचनीय, ०वचनागोचर। अवर्णनीयप्रभयान्विता मेऽवर्णनीयाङ्ग-मिताभिरामे। (जयो० ११/८०) अवर्णनीयोत्तमभास्करा वा। (जयो० ११/७१) अवर्णनीयोऽकथनीयो भास्कर:। (जयो० पृ० ११/७१)

अवर्णवाद: (पुं०) घोरनिन्दा, व्यर्थ निन्दा। (सम्य० ७५) अवर्णवादाख्यपयोनिधिं तु। (जयो० ३/९०) निन्दाकरणं न प्रतिपादित:। जातिवर्णरहितत्त्वं। (जयो० वृ० २८/२५) 'गुणवत्सु महत्सु असद्भूतदोषोद्भावनवर्णवाद:। (स० सि०६/१३)' अन्त:कलुषदोषोद सद्भूतमलोद्भावनमवर्णवाद:। (स०सि०६/१३) अर्थात् गुणी। महापुरुषों में जो दोष नहीं उनका अन्तरंग की कलुषता से प्रकट करना अवर्णवाद है।

अवलक्ष (वि०) [अव+लक्ष्+घञ्] श्वेत, शुभ्र।

अवलग्न (वि०) [अव+लग्+क्त] ०तत्पर, ०संलग्न, ०तल्लीन, ०सटा हुआ, ०चिपका हुआ, ०मध्यगत। माभूक्षमाभूर्लभतेऽवलग्नं। (जयो० ११/२४) स्वच्छ-रक्षणावलग्नायाप्युच्चै: (जयो० ११/९६) अवलग्नो मध्यदेश: (जयो० वृ० ११/९५)

अवलग्नक: (पुं०) कटिभाग। (जयो० १०/५९)

अवलम्ब: (पुं०) आश्रय, आधार, सहारा, आड, स्तम्भ। (सुद० १२१६, पृ० १४१) 'स्वावलम्ब उपदेश कर"

अवलम्बनं (स्त्री०) [अव+लम्ब्+क्त] आश्रित, आधारित। न विलम्बित-शीघ्रमेव निर्गतम्। (जयो० ९/५३)

अवलम्बिन् (वि०) [अव+लम्ब्+इनि] आश्रित, आधारित, गतिर्मिमैतस्मरणैकहस्तावलम्बिन: काव्यपथे प्रशस्ता। (सुद० १/३)

अवलिप्त (भू०क०कृ०) [अव+लिह्+क्त] १. आसक्त, तल्लीन, तत्पर, २. अभिमानी, घमण्डी, अहंकारी। ३. सना हुआ, आबद्ध, घिरा हुआ, लिप्त हुआ।

अवलीढ (भू०क०कृ०) [अव+लिह्+क्त] १. स्पृष्ट, व्याप्त, संरुद्ध। (वीरो० , २. खाद्य, भुक्त, चर्बित किया, अवलेह्य।

अवलीला (स्त्री०) क्रीड़ा, खेल, प्रमोद १. तिरस्कार, अपमान।

अवलुञ्चनं (नपुं०) [अव+लुञ्च्+ल्युट्] १. लोंच करना, केश लुंचन, उन्मूलन, उत्खनन, उखाड़ना, निकालना।

अवलुण्ठनं (नपुं०) [अव+लुण्ठ्+ल्युट्] लोटना, लुढ़कना, भू पर लोटना।

अवलेख: (पुं०) [अव+लिख्+घञ्] टंकन, उत्कीर्ण, उल्लेख, कुरेदना, खुरचना।

अवलेखा (स्त्री०) [अव+लिख्+अटाप्] ०रेखांकित करना, ०सुसज्जित करना, ०विभूषित, ०रगड़ना, ०साफ करना।

अवलेप: (पुं०) [अव+लिप्+घञ्] १. विभूषण, अलंकरण।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

२. लिप्त करना, लीपना। ३. अत्याचार, अनाचार, अपमान, बलात्कार। ४. संघ, समाज। ५. अहंकार, अभिमान।

अवलेपनं (नपुं०) [अव+लिप्+ल्युट्] अलंकरण, विभूषण सुसज्जीकरण, आलिप्त।

अवलेहः (पुं०) [अव+लिह्+घञ्] १. चटनी, अर्क। २. चाटना, लपलपाना।

अवलेहिका (सक०) चटनी, अर्क।

अवलोक् (सक०) देखना, अवलोकन करना। अवलोकयितुं तदा धनी। (सुद० ३/८) 'अर्थशास्त्रभवलोकयन्नृराट्।' (जयो० २/५९) उक्त पंक्ति में 'आवलोक' का अर्थ पढ़ना, अध्ययन करना भी है। अर्थशास्त्रमवलोकयेत् पठेदित्यर्थः। (जयो० वृ० २/५९) दोष नहीं, उनको अन्तरंग की कलुषता से प्रकट करना अवर्णवाद है।

अवलोकः (पुं०) [अव+लोक्+घञ] देखना, दर्शन, दृष्टि।

अवलोकनं (नपुं०) [अव+लोक्+ल्युट्] चक्षुःक्षेप, दर्शन, दृष्टि, पर्यवेक्षण (जयो० ३/६१) 'गात्रावलोकनैर्लब्धफला विधात्रा।' (जयो० ३/९१) 'अवलोकनैः दर्शनात्सवैः।' (जयो० वृ० ३/९१) 'चक्षुत्क्षेपोऽवलोकनमभवत्।' (जयो० वृ० १६/२२) 'साम्प्रतं कुशल तेऽवलोकनादञ्चनैः।' (जयो० ३/३४) २. स्थान विशेष, अन्वेषण, पूछताछ।

अवलोकन-कर्त्री (स्त्री०) पारदर्शिका देखने वाली, दृष्टिशीला। नित्यमेतदवलोकनकर्त्री दृष्टिरस्तु नविकारविभर्त्री। (जयो० ५/६६)

अवलोकनार्थ (वि०) दर्शनार्थ, देखने के प्रयोजन के लिए। (जयो० ८९)

अवलोकनीयका (वि०) दर्शनार्हा, दर्शन के योग्य, दर्शनीय। सुतनाऽस्तु विभूषणैर्यका खलु लोकैरवलोकनीयका। (जयो० १०/३९)

अवलोकित (वि०) दृष्टिपथगत, देखा गया, दृष्टियुक्त। (जयो० वृ० १/७९)

अवलोकिता (वि०) देखती हुई।

आलोकितवती (वि०) दृष्टि गत होती हुई, दिखाई देती हुई। (जयो० वृ० ५/९०)

अवलोचिक (वि०) यथार्थ संवेदनकारिणी, यथार्थ ज्ञान कराने वाले। (जयो० ११/५६) सकज्जले रम्य दृशौ तु तत्त्वावलोचिके अप्यतिचञ्चलत्वात्। (जयो० ११/६६)

अवरकः (पुं०) [अव+वृ+अप्-ततः संज्ञायां वुन्] १. रन्ध्र, छिद्र, छेद, २. खिड़की।

अववादः (पुं०) [अव+वद्+घञ्] १. घृणा, निन्दा, उपेक्षा, अपमान, अनादर, अवहेलना। २. आदेश, आज्ञा, आश्रय।

अवव्रश्चः (पुं०) [अव+व्रश्च+अच्] खपची, छिपटी।

अवश (वि०) १. अवज्ञाकारी, उपेक्षाशीलक, स्वेच्छाचारी, लाचार, स्वतन्त्र, मुक्त। २. न वशो अवशः-जो वश में नहीं, पराधीन, पराश्रित, असह्य, शक्तिहीन।

अवशङ्गमः (पुं०) स्वतंत्र, जो दूसरे के अधीन न हो।

अवशिष्टः (पुं०) १. शेष, बचा हुआ। (जयो० ३/५०) उद्धरित। (जयो० ११२३६) "किं वावशिष्टमिह शिष्टसमीक्षणीयम्।" (जयो० १२/१४२) २. जूठन, थूक। श्रुत्वास्य समुद्दिष्टं खलु, ताम्बूलावशिष्टमुच्छिष्टम्।" (जयो० ६/८२) ३. अन्त्य, अन्य। (जयो० ४/६५, जयो० १/८१

अवशेषः (पुं०) [अव+शिष्+घञ] १. अवशिष्ट, बचा, बाकी, शेष। २. असमाप्त, शेष युक्त।

अवश्य (वि०) नियत, आवश्यक। नपुंसकस्वभावस्य स्वभाऽवश्यमियं नु किम्। (सुद० ८४) बालिकयोस्तनुजो वेश्यावश्यः। (सुद० ९१) "न वश्यमवश्यं चञ्चलम्।" (जयो० ११/७४)

अवश्यं (अव्य०) निश्चय, जरूर।

अवश्यक (वि०) [अवश्य+कन्] आवश्यक, नियत, करणीय कार्य, श्रमण एवं श्रावक के कर्त्तव्य।

अवश्यकरणीय (वि०) अवश्य करने योग्य, आवश्यक कर्त्तव्य योग्य। (जयो० वृ० १/१०९)

अवश्यम्भाविन् (वि०) [अवश्यं+भू+इनि] अनिवार्य, आवश्यक, निश्चत ही, अवश्य होने वाला।

अवश्या (स्त्री०) [अव+श्यै+क] कुहरा, पाला, धुंध।

अवश्यायः (पुं०) ओस, कुहरा, पाला।

अवश्रयणं (नपुं०) [अव+श्रि+ल्युट्] उतारना, लेना।

अवष्टब्ध (भू०क०कृ०) [अव+स्तम्भ+क्त] १. आश्रयवंत, गृहीत, पकड़ा गया। २. बाधायुक्त, झुका हुआ।

अवष्टम्भः (पुं०) [अव+स्तम्भ+घञ] आश्रय, आधार, सहारा।

अवष्टम्भनं (नपुं०) [अव+स्तम्भ+ल्युट्] स्तम्भ, आश्राय, टेका, आधार।

अवसक्त (भू०क०कृ०) [अव+सञ्ज्+क्त] प्रस्तुत, स्थित, संपर्कशील।

अवसक्थिका (स्त्री०) वेष्टन, पट्टी, कमर में विशेष रूप से बांधी जाने वाली पट्टी।

अवसण्डीनं (नपुं०) [अव+सम+डी+क्त] उड़ान, पक्षि समूह का गमन, ऊँचे की ओर गति।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अवसथः (पुं०) [अव+सो+कथन्] गृह, निवास स्थान।

अवसथ्यः (पुं०) [अवसथ+यत्] विद्यालय, महाविद्यालय, शिक्षा स्थान।

अवसन्न (भू०क०कृ०) [अव+सद्+क्त] च्युत। (वीरो० १७/१०)। १. उदास, शिथिल, जिनवचनानभिज्ञः। २. समाप्त, अवसित, अवगत। ३. मोक्षगमन का साधु हीनता।

अवसंज्ञा (स्त्री०) १. अनन्तानंत परमाणुओं का समुदाय। १. संज्ञा रहित, चेतना शून्य, २. आहारादि संज्ञा का अभाव।

अवसंश्रय (पुं०) निवास, घर। (सुद० १/१५)

अवसरः (पुं०) [अव+सृ+अच्] १. समय, मौका, सुयोग, अवकाश स्थान। (जयो० वृ० १/२) १/६९) सम्प्रेरितः श्रीमुनिराजपाद- सरोजयोः सावसरं जगाद। (सुद० २/३२)। २. परामर्श, गुप्त, अवस्था, क्षेत्र।

अवसरणं (नपुं०) अवसर, काल, समय। 'तन्मयाऽवसरणं ब्रहुभव्यम्।' (जयो० ४/७)

अवसराभावः (पुं०) असमय, अकाण्ड (जयो० २४/२२)

अवसर्गः (पुं०) [अव+सृज्+घञ्] मुक्त करना, छोड़ना, स्वतंत्र।

अवसर्पः (पुं०) [अव+सृप+घञ्] भेदिया, गुप्तचर।

अवसर्पणं (नपुं०) [अव+सृप्+ल्युट्] नीचे जाना, नीचे उतारना।

अवसर्पिणी (स्त्री०) काल विशेष, आयुप्रमाण आदि के घटने का काम। अवसर्पयति वस्तूनां शक्तिर्यत्र क्रमेण सा। प्रोक्ताऽवसर्पिणी सार्थो....।। हरिवंश पुराण ७/५७)

अवसादः (पुं०) [अव+सद्+घञ्] १. मूर्च्छा, उदासी, ममत्व। २. विनाश, क्षय, हानि। ३. पराजय, हार। ४. थकावट, थकान, श्रमक्षीण।

अवसादनं (नपुं०) [अव+सद्+णिच्+ल्युट्] १. क्षय, हानि, पतन। २. उत्पीड़न, आघात।

अवसानं (नपुं०) [अव+सो+ल्युट्] १. उपसंहार, समाप्ति, रुकना, अन्त, विराम, गतिरोध। (जयो० ३/१) २. सीमा, परिधि, मर्यादा। (जयो० वृ० ३/४९) ३. मृत्यु, नाश, क्षय, हानि, विश्रामस्थल, निवास स्थान।

अवसानकः (पुं०) [अव+सो+कन्] परिणाम, सीमा, मर्यादा। व्यञ्जनेष्विव सौन्दर्यमात्रारोपानसानकौ। (जयो० ३/४९)

अवसायः (पुं०) उपसंहार, समाप्त।

अवसित (भू०क०कृ०) [अव+सो+क्त] ०अवशिष्ट, ०शेष, ०बचा हुआ, ०पूरा किया गया, ०अन्त किया गया।

अवसेकः (पुं०) [अव+सिच्+घञ्] अभिसिंचेन, छिड़कना।

अवसेचनं (नपुं०) [अव+सिच्+ल्युट्] अभिसिंचन, छिड़कना, अभिषिक्त करना।

अवस्कंदः (पुं०) [अव+स्कन्द+घञ्] १. आक्रमण, प्रहार, घात। २. शिविर, पड़ाव, छावनी।

अवस्कन्दिन् (वि०) [अव+स्कन्द्+णिन्] ०आक्रमण करने ०वाला, ०प्रहारक, ०घातक, ०विध्वसंक, ०नाशक।

अवस्करः (पुं०) [अव-क्रीयते इति अवस्करः] १. मल, निष्ठा, पुरीष। २. गुह्यदेश, गुदा।

अवस्तरणं (नपुं०) [अव+स्तृ+ल्युट्] शय्या, बिछौना, बिछावन।

अवस्तात् (अव्य०) [अवरस्मिन् अवस्मात् अवरमित्यर्थे-अवर+अस्ताति अवादेशः] नीचे से नीचे अधोगत।

अवस्तारः (पुं०) [अव+स्तृ+घञ्] कनात, पर्दा, चादर, चटाई

अवस्तु (नपुं०) तुच्छ वस्तु, निम्न पदार्थ, अप्रमाण-अनुमान ज्ञान भी अवस्तु है अप्रमाणरूप है। (वीरो० २०/१६)

अवस्तोभनं (नपुं०) थू थू करण, ग्लानिकरण।

अवस्था (स्त्री०) [अव+स्था+अङ्] दशा, स्थिति, परिस्थिति।

अवस्था (अक०) ठहरना, आश्रय लेना, आधार होना। (वीरो० १७/४१) संश्रयेत् कमथैकं साऽवस्थातुं स्थानभूषणा। (जयो० ३/६५) अवस्थातुमाश्रयितुम्। (जयो० वृ० ३/६५)

अवस्था (स्त्री०) स्थिति, आश्रय।

अवस्थानं (नपुं०) [अव+स्था+ल्युट्] १. स्थिति, दशा। (जयो० वृ० १५/१५) (सम्य० ८४) २. निवासस्थान, घर, आश्रय, आधार। ३. स्थितियों में बंधने का स्थान।

अवस्थान्तर (नपुं०) स्थिति, अवस्था, दशा। ''सहसैव तदिदमवस्थान्तरं पितुर्दृष्ट्वा'' (दयो० ९५)

अवस्थित (भू०क०कृ०) [अव+स्था+क्त] १. दृढ़, स्थिर, निश्चयी। २. प्रमाणभूत बना रखा, जो मात्रा है, उसको नहीं छोड़ना। ३. ठहरा हुआ, आश्रय प्राप्त।

अवस्थितिः (स्त्री०) [अव+स्था+क्तिन्] निवास, आश्रयस्थान, गृह, आवास, अवस्था।

अवस्यन्दनं (नपुं०) [अव+स्यन्द्+ल्युट्] बूंद, टपकना, रिसना।

अवस्रंसनं (नपुं०) [अव+स्रंस्+ल्युट्] नीचे गिरना, अधःपतन, अधःपात।

अवहतिः (स्त्री०) [अव+हन्+क्तिन्] कुचलना, पीटना, घायल करना।

अवहननं (नपुं०) [अव+हन+ल्युट्] १. मारना, प्रहार, घात। २. कूटना, पीटना।

अवरहणं (नपुं०) [अव+हृ+ल्युट्] हटाना, अपहरण करना, ले जाना, छीनना, लूटना।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अवहस्तः (पुं०) [अवरं हस्तस्य इति] हथेली का उन्नत भाग।

अवहानिः (पुं०) हानि, क्षीण, क्षय, अवचय।

अवहारः (पुं०) [अव+हृ+ण] १. चोर, २. मछली, (शार्क मछली), ३. सन्धि, विराम, ४. आमन्त्रण, ५. त्याग।

अवहारक (वि०) [अव+हृ+ण्यत्] ले जाने योग्य, हटाने लायक, दण्ड देने योग्य।

अवहार्य (स०कृ०) [अव+हृ+ण्यत्] हटाकर, दण्ड देकर।

अवहालिका (स्त्री०) [अव+हल्+ण्वुल्+टाप्] १. दीवा, ०भित्ति, २. अवरोध, ०बाधा, ३. ओट, ०ऊंचाई युक्त अवरोध।

अवहासः (पुं०) [अव+हस्+घञ्] ०हंसी, ०मुस्कान, ०मंद हंसी, ०उपहास।

अवहेल् (अक०) ०अनादर करना, ०उपेक्षा करना, ०तिरस्कार करना, ०अपमान करना। कस्यापि प्रार्थनां कश्चिदित्येवमहेलयेत्। (सुद० पृ० १३४)

अवहेलः (पुं०) तिरस्कार, अपमान।

अवान्तसत्ता (स्त्री०) प्रतिवस्तु व्यापिनी सत्ता, अपने स्वरूप के अस्तित्व की सूचना देना। (पञ्चास्तिकाय पृ० ८)

अवहेलन (वि०) उपेक्षक, तिरस्कारकर्ता।

अवहेला (स्त्री०) ०तिरस्कार, ०अपमान, ०अनादर, ०असम्मान। शुचस्तु भवतादवहेला। (जयो० ५/५३)

अवहोलय् (अक०) भूलना, सन्देह करना।

अवाक् (अव्य०) [अव+अच्+क्विन्] 'नीचे की ओर, दक्षिण की ओर'

अवाक् (वि०) ०तूष्णी, ०चुप रहने वाला। बालग्रमितोग्रदारकान्तिम-वाक्। (जयो० ६/७८) १. मूक, चुप। २. मौन।

अवाक्ष (वि०) [अवनतान्यक्षाणि इन्द्रियाणि यस्य] अभिभावक, संरक्षक।

अवागम् (अक०) आक्रमण करना, आक्रान्त करना।

अवाग्गोचरकृत् (वि०) अवक्तव्य रूप। (वीरो० १९/६)

अवाग्र (वि०) [अवनतमग्रयस्य] नम्रीभूत, झुका हुआ।

अवाच् (वि०) मूक, तूष्णी, मौन (वीरो० पृ० ३८) चुप रहने वाला, वाणी विहीन। दृष्ट्वाऽवाचि महाशयासि। (सुद० ९८)

अवाची (स्त्री०) [अवाच+ख] दक्षिण दिशा दक्षिणी। राहोरनेनैव रविस्तु साचि श्रयत्युदीचीमथवाऽप्यवाचीम्। (वीरो० २/२९)

अवाचीन (वि०) १. अधोगत, निम्नभूत, नम्रीभूत। २. उतरा हुआ।

अवाच्य (वि०) १. दुष्ट, निकृष्ट, ०अस्पष्ट बोले जाने वाला, ०अस्पष्ट कथन, ०अकनीय।

अवांचित (वि०) [अव+अञ्च्+क्त] निम्न, मात्र, झुका हुआ।

अवादि (वि०) अकथित। (जयो० २/१२६)

अवानः (पुं०) [अव+अन्+अच्] श्वास लेना।

अवान्तर (वि०) अतिरिक्त, असम्बद्ध, अधीन, सम्मिलित, अन्तर्गत।

अवान्तसत्ता (स्त्री०) प्रतिवस्तुव्यापिनी सत्ता, अपने स्वरूप की सूचना देना। (पञ्चा० वृ० ८)

अवाप (भू०) प्राप्त, उपलब्ध, गृहीत। पुत्तलं स्फुटित भावमवापाऽत्तो। (सुद० ९५)

अवाप्तिः (स्त्री०) [अव+आप्+क्तिन्] प्राप्त, ग्रहण, स्वीकार।

अवाप्य (सं० कृ०) [अव+आप्+ण्यत्] प्राप्त करके, ग्रहण करके। यामवाप्य पुरुषोत्तमः स्म। (सुद० ११२) उमामवाप्य महादेवोऽपि। (सुद० ११२)

अवामः (पुं०) सरलस्वभाव। (जयो० १/१०८) सरल चित्त, मृदुस्वभाव। सत्यधर्ममयाऽवाममक्षमाक्ष क्षमाक्षक। (जयो० १/१०८) अवामं सरलस्वभावं मां। (जयो० वृ० १/१०८)

अवायः (पुं०) १. अपाय, निश्चय, दृढ़, भाषादि विशेष के ज्ञान से यथार्थ रूप में जानना। 'तत्त्वप्रतिपत्तिरवायः' (सिद्धि वि०२/९)

अवारः (पुं०) किनारा, तट।

अवारीण (वि०) नदी पार करने वाला।

अवावटः (पुं०) दूसरी स्त्री से उत्पन्न पुत्र।

अवावन् (पुं०) चोर।

अवासस् (वि०) वस्त्र विहीन, वस्त्ररहित, नग्न।

अवास्तव (त्रि०) अवास्तविक, विवेक रहित, निराधार, निराश्रय, निर्मूल।

अविः (पुं०) १. मेंढा, मेष। कस्येति यमस्याविलान्तीत्येतेषु वरगिमं सारात्। (जयो० ६/४७) अविं वाहनरूपं मेघ लान्तीति। (जयो० वृ० ६/४७)। २. सूर्य, ३. पर्वत, ४. वायु, हवा, पवन। (जयो० २२/५) ५. ऊनी कम्बल।

अविः (स्त्री०) रजस्वला स्त्री।

अविकः (पुं०) भेड़।

अविकत्थ (वि०) अहंकार नहीं करने वाला।

अविकत्थन (वि०) अभिमान पूर्वक नहीं कहने वाला।

अविकल (वि०) अक्षत, पूर्ण, पूरा। षड्रसमयना व्यञ्जनमदलमविकलमपि च सुधाया। (सुद० ७२)।

अविकल-कुशल (वि०) १. बुद्धिमती, सम्पूर्ण कुशलक्षेम त्वं चाविकल कुशला बुद्धिमती। (जयो० वृ० १४/५५) २. पूर्ण जल वाली, निरन्तर जल प्रवाहित करने वाली।

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

'अविकलमनल्पं कृशं जलं लाति।' (जयो० वृ० १४/५५)
'शरं वनं कुशं नीरम्।' इति धनञ्जयः।

अविकलगिरा (स्त्री०) निर्दोषवाणी, सरलवाणी। श्रुत्वा तथ्यामविकलगिरा हर्षणैर्म-थराङ्ग। (वीरो० ४/३७) अविकलया गिरा प्रस्पष्टरूपया वाचा। (वीरो० वृ० ४/३७)

अविकला (स्त्री०) अन्यून कला, निर्दोष विकास। कारणजन्यकला। (जयो० ३/६४)
स्पृहयति न कं चन्द्रकलाप्यविकलाशया। अविकलोऽयूनां निर्दूषण आशया। (जयो० ३/६४)
यस्याः सा चन्द्रस्य कला। (जयो० वृ० ३/६४)

अविकलित (वि०) १. सर्वाङ्ग सुन्दर, पूर्ण रम्य, सम्पूर्ण कला युक्त। अविकलिताम्बर मणिमयभूपालपितापि रवलतापतनुः सा। (जयो० २२/५) २. सूर्यरूपी आभूषणों से युक्त। (जयो० २२/५)

अविकल्प (वि०) १. विधि, नियम, इच्छा। २. सूर्यरूपी आभूषणों से युक्त। (जयो० २२/५)

अविकल्प (अव्य०) निःसंकोच, निःसंदेह।

अवि-कल्प (वि०) भेड समूह, मेंढा, मेष। (सुद० १/२२) यत्रस्था ग्रामा अविकल्पप्रत्यक्षतया। (जयो० ४)

अविकल्पभाव (वि०) संकल्प-विकल्प भाव से रहित। (सुद० १/२२) यतित्वभञ्जन्त्यविकल्पभावात्।

अविकार (वि०) निर्विकार, राग द्वेष विकार रहित। (जयो० १३/५)

अविकारः (पुं०) अविकृति, अनुकूल। (जयो० १३/५)

अविकारगामिन् (वि०) अनुकूल गमिन, अच्छी तरह चलने वाले। 'अविकाम विकारगामिनां। (जयो० १३/५)

अविकारिन् (वि०) निर्विकारी, विकारभाव को प्राप्त नहीं होने वाले। (सुद० ४/१५) 'हे नाथ! मे नाथ! मनोऽविकारि।'

अविकृतिः (स्त्री०) अनुकूल, अविकार।

अविक्रम (वि०) दुर्बल, शक्तिहीन, क्रमाभाव।

अविक्रिय (वि०) निर्विकार, अविकार, अनुकूल, अपरिवर्तनशील।

अविक्षत (वि०) पूर्ण, अक्षत, अक्षय, समस्त।

अविग्रह (वि०) शरीर रहित, व्याघात रहित। विग्रहो व्याघातः कोटिल्यमित्यर्थः स यस्यां न विद्यतेऽसावविग्रहा गतिः। वक्रता, कुटिलता या मोड़ से रहित। (स०सि०२/२७)

अविघात (वि०) बाधा रहित, घात रहित, अक्षत, पूर्ण।

अविघुष्ट (वि०) वि-स्वरता रहित, विक्रोश रहित, चिल्लाहट रहित।

अविघ्न (वि०) निर्बाध, बाधा रहित। 'सुकाञ्चीगुणतो ह्यविघ्नम्।' (जयो० ११/२४)

अविचार (वि०) १. विवेक रहित, विचारशून्य। २. परिवर्तन रहित ध्यान।

अविचारः (पुं०) अविवेक, अज्ञान, मूढ। (जयो० २/१४५)

अविचारकारित्व (वि०) विवेकता रहित।

अविचारिन् (वि०) विवेक हीन, उचित-अनुचित का ज्ञान न करने वाला।

अविचार्य (वि०) विचार न करते हुए, नहीं सोचते हुए। (जयो० वृ० २/१४२)

अविच्युत (वि०) अपतित, अभ्रष्ट, योग्य।

अविच्छिन्न (वि०) निरन्तर, सदैव, परम्परा। (वीरो० वृ० २/१२)

अविच्छिन्नप्रवाहः (पुं०) सन्तान, परम्परा. (जयो० वृ० ३/१०३)

अविच्छिन्नता (वि०) परम्परागत। (दयो० ४५)

अविच्युतिः (स्त्री०) १. अवाय ज्ञान भेद। २. धारणा, वासना। ३. धारणा बनी रहना, उपयोग से च्युत नहीं होना।

अविज्ञातृ (वि०) अनभिज्ञ, अनजान।

अविहीनं (नपुं०) उडान, सीधी उडान।

अवित (वि०) रक्षित, संरक्षित। (जयो० वृ० ३/५) अवितः संरक्षित। (जयो० वृ० ३/५)

अवितथ (वि०) सत्य, सम्यक्, समीचीन, उत्कृष्ट, उत्तम। वितथमसत्यम्, न विद्यते यस्मिन् श्रुतज्ञाने तदवितथम्, तत्थमित्यर्थः। (धव०१३/२८६)

अवितथं (अव्य०) जो सत्य हो, असत्य न हो, मिथ्या न हो।

अवितर (वि०) सुरक्षित।

अविदूर (वि०) ०समीपस्थ, ०निकटस्थ, ०समीप में, ०निकट ०सन्निकट।

अविद्य (वि०) शिक्षाभाव, मूर्ख, अज्ञानी।

अविद्या (स्त्री०) ०शिक्षा का अभाव, ०अज्ञान, ०मूर्ख। १. असंस्कार, अध्यात्म विद्या का अभाव ०भ्रम, ०मोह, ०माया (भ्रम को उत्पन्न करने वाली। 'अविद्या विप्लवज्ञानम्' (सिद्धि वि०टी० ७४७)

अविद्यामय (वि०) भ्रमोत्पादक।

अविधा (अव्य०) विस्मयादिबोधक अव्यय, सहायतार्थ प्रयुक्त होने वाला अव्यय।

अविधुरा (वि०) १. सौभाग्यवती, सौभाग्यशाली। २. दोष रहित धुरी, रथ की निर्दोश स्थिति थी। गन्तुमेव सुखतो

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रथस्थिति-मात्मवानविधुरां वधूमिति। (जयो० २१/२०) 'अविधुरां धुराया दोषेण रहितां पक्षे सौभाग्यवतीति। (जयो० वृ० २१/२०)

अविधेय (वि०) विपरीत, उलटा, आधीनता रहित।

अविनत (वि०) नम्रता रहित, अहंकारी।

अविनय (वि०) १. अविनीत, ०आज्ञा निर्देश को नहीं पालने वाला, ०अशिष्ट। २. अनादर, अपमान, अपराध।

अविनाभावः (पुं०) १. सम्बन्ध विशेष, ०वियुक्त न होने योग्य सम्बन्ध। २. वियोगाभाव।

अविनाभावीसम्बंधः (पुं०) कार्य-कारण के अविनाश की सम्बंध के स्मरणपूर्वक ही तो अनुमान ज्ञान उत्पन्न होता है। (वीरो० २०/६६)

अविनाभूस्मृतिः (स्त्री०) अविनाभाव सम्बंधी स्मृति। (वीरो० २०/१७)

अविनाशी (वि०) नाशरहित, क्षय रहित, अक्षत, अखण्ड। वस्तुतो यदि चिन्त्येत चिन्तोतः कीदृशी पुनः। अविनाशी ममात्मायं दृश्यमेतद्विनश्वरम्।। (वीरो० १०/३०)

अविनीत (वि०) ०अशिष्टता, ०अभद्रता, ०विनय रहित, ०दुःशील, ०प्रतिकूल ०अनाज्ञाशील, धृष्ट। 'अविनीता सा कुतः कदापि।' (जयो० २२/३१) अविनीता विनयवर्जिता। (जयो० २२/३१)

अविनेय (वि०) विनीतता रहित, अनम्रता, अशिष्टता, सद्गुण असम्पन्न। ''तत्त्वार्थ-श्रवण-ग्रहणाभ्यामसम्पादित गुणा अविनेया।'' (स०सि०७/११) न विनेतुं शिक्षयितुं शक्यन्ते ये ते अविनेयाः। (त०वृ० ७/११)

अविपन्नः (पुं०) अविपत्ति, सुख, अच्छा, इष्ट, मनोरम, विपत्तिशून्य। 'छन्नमित्यविपन्नसमया।' (सुद९०)

अविपाक (नपुं०) कच्चा, बिना पका। अन्नेन नाद्युर्द्विदलेन साकमामं पयोऽध्यापि चाविपाकम्।' (सुद० पृ० १३०)

अविपाकः (पुं०) निर्जरा का एक भेद। जिस कर्म का उदयकाल अभी प्राप्त न हुआ हो।

अविपाकज (वि०) तपश्चरणादि से विपाक को प्राप्त कराने वाली क्रिया। 'कारणवशात् कर्मविनाशः' (अमितगति श्रावकाचार ३/६५) ''उपक्रमेण दत्तफलानां कर्मणां गलनमविपाकजा। (भ०आ०टी०१८४७)

अविप्लुतः (पुं०) अन्य जातिक, सज्जातिक अभाव, विलक्षण। (हित संपाक १७)

अविभक्त (वि०) अविभागी, खण्ड रहित, अक्षय, अविनाशी, संयुक्त।

अविभा (स्त्री०) प्रभा का अभाव, रात्रि का अन्त, प्रातः, दिन।

अविभागः (वि०) १. अविभक्त, अविनाशी, अक्षय, अखण्ड, अन्तिम अंश। २. अनुभाग की बुद्धि।

अविभाज्य (वि०) अविभक्त, अविनाशी, जो बांटा न जा सके।

अविभाजित (वि०) विभाग रहित, अविनाशी।

अविरत (वि०) १. इन्द्रियों से विरत नहीं, जीव रक्षण नहीं करने वाला। २. निरन्तर, सदैव, विरामरहित, गतिवान्। जैनदर्शन में 'अविरत' चतुर्थगुणस्थानवर्ती को भी माना गया है, उसे अविरतसम्यग्दृष्टि कहा गया। जिनवाणी पर श्रद्धा रखने वाला भी 'अविरत' कहलाता है।

अविरतिः (स्त्री०) १. हिंसादि पापों से विरति न हो, असंयम, लोभ परिणाम, तल्लीनता, आसक्ति, आतुरता। 'विरमणं विरति, न विद्यते विरतिरस्येत्यविरतिः।' (धव०वृ० ७७७)

अविरल (वि०) १. सघन, घना, प्रगाढ़, अत्यधिक। २. निरन्तर, लगातार, निर्बाध। 'दधुरविरलवारीत्येवमार्द्राणि।' (जयो० १४/३४)

अविराधना (स्त्री०) अपराध सेवन, अपराध नहीं करना।

अविरामः (पुं०) विश्रान्ति शून्य, विश्राम नहीं, श्रमशील, प्रयत्नजन्य। (जयो० २३/६१) निद्रापि क्षुद्राऽभवद् भुवि नक्तंदिवमविराम। (जयो० २३/६१)

अविराम+कृ (सक०) प्रकट करना, कहना, प्रतिपादन करना। त्रपयेव सम्भवन्ती द्रागाशयमाविराञ्चके।

अविरुद्ध (वि०) १. विचार रहित, विरोध को नहीं प्राप्त। (सुद० २/२) २. शान्त, सरल, मृदु, प्रसन्न। रागद्वेषरहिता सती सा छविरविरुद्धा यस्य। (सुद० पृ० ७०)

अविरोधः (पुं०) विरोध का अभाव, अनुकूलता, संगत, शान्त, सरल। (वीरो० ५/३३) 'न विरोधोऽविरोधः' (वीरो० वृ० ५/३३)

अविरोधक (वि०) विरोध नहीं करने वाला।

अविरोधकर्ता (वि०) १. विरोध नहीं करने वाला। पक्षियों को रोध का कर्ता नहीं, पक्षियों के संचार को करने वाला। 'एवं विरुद्धभवनोऽप्यविरोधकर्ता।' (जयो० १८/७६)

अविरोधभावः (पुं०) संगतभाव, उचित परिणाम, शान्त परिणाम। 'उक्ते तदीये न विरोधभावः। (जयो० ५/३२) 'किं तत्र जीयादविरोधभावः विज्ञानतः सन्तुलितः प्रभावः। (वीरो० ५/३३)

अविलम्ब (वि०) शीघ्रता, तत्कालिक, आशुकारिता। निष्कासयताऽविलम्बमेनमिदमस्माकं चित्तमनेन। (सुद० पृ० १०४)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अविलम्बित (वि०) शीघ्रकारिता, तात्कालिकता, क्षिप्र, आशुकारी।

अविला (स्त्री०) भेड़।

अविवक्षित (वि०) अनभिप्राय युक्त, अनभिप्रेत, अनुद्दिष्ट।

अविवाद (वि०) १. विसंवाद रहित, एक दूसरे के विवाद से रहित, परस्पर सहयोगिता। (जयो० २६/५८) २. मेषादि-राशियुक्त। अविमेषस्तस्य वादं धरन्ति। (जयो० वृ० २६/५८)

अविवादधर (वि०) विसंवाद रहित भाव के धारक। (जयो० २६/५८)

अविविक्त (वि०) १. विस्मित, आश्चर्यजनक। २. अविचारित, अचिन्तनीय।

अविवेक (वि०) अज्ञान, मूढ़, ज्ञानाभाव, विचारशून्य। "कुतोऽविवेक: स च मोहशापात् मोहक्षति: किं जगतां दुरापा। (वीरो० ५/२८)

अविशङ्क (वि०) शङ्कारहित, संदेहरहित, निडर, साहसी।

अविशङ्कित (वि०) ०शङ्कारहित, ०नि:शंकित, ०निडरता युक्त, ०साहसताधारी।

अविशेष (वि०) १. सामान्य, भेद रहित। २. समानता, एकरूपता, सादृश्यता।

अविश्रान्त (वि०) विश्राम रहित, निरन्तर, गमनशील। अन्यातिशायी रथ एकचक्रो, रवेरविश्रान्त इतीध्मशक्र:। (जयो० ११/२२) कदाचिदपि विश्रामं नैति। (जयो० वृ० ११/२२)

अविश्रान्तता (वि०) निरन्तरता, गमनशीलता, प्रगतित्व। (अविश्रान्तया निरन्तररूपेण भावित्री।' (जयो० १/११)

अविष (वि०) जहरशून्य, विषरहित।

अविष: (पुं०) समुद्र, नदी, राजा, पर्वत, आकाश।

अविषय (वि०) १. अगोचर, अदर्शित, अदृश्य, अविद्यमान। २. न विद्यते विषयाणि इन्द्रियजन्य प्रवृत्ति:। जहां इन्द्रियों का योग नहीं, आत्मजन्म।

अविसंवाद: (पुं०) १. परस्पर बाधा न पहुंचाना, पूर्वापर विरोध न करना। २. विच्छेद भाव। (जयो० २६/७४)

अविसंवादता (वि०) विच्छेद भावता। (जयो० २६/७४)

अवी (स्त्री०) [अवत्यात्मानं लज्जया इति अव्+ई] रजस्वला स्त्री।

अवीचि (वि०) तरंगशून्य, तरंग रहित।

अवीर (वि०) कायर, बलहीन, शक्तिशून्य।

अवृत्ति (वि०) १. अविद्यानता, सत्ताविहीनता। २. वृत्ति/अजीविका का अभाव, अपर्याप्त आश्रय।

अवृथा (अव्य०) निरर्थकता रहित, व्यर्थ न, सफलता पूर्वक। (सुद० ११८)

अवृष्टि (वि०) वर्षाभाव, बारिश का न होना।

अवेक्षक (नपुं०) [अव+ईक्ष्+ल्युट्] परिदर्शन, अन्य दर्शन।

अवेक्षणीय (वि०) [अव+ईक्ष्+अनीयर्] अदर्शनीय, अवलोकनीय, देखने में अयोग्य, ध्यान योग्य।

अवेक्षा (स्त्री०) [अव+ईक्ष्+अङ्+टाप्] ०आंख से देखना, ०दृष्टि डालना, ०ध्यान देना, ०विचारना। 'अवेक्षा जन्तव: सन्ति न सन्तीति वा चक्षुषा अवलोकनम्।' जैन लक्षावली (१४.५)

अवेद्य (वि०) ०अनभिज्ञ, ०नहीं जानने योग्य, ०गुप्त, ०रहस्यपूर्ण।

अवेद्य: (पुं०) वत्स, बछड़ा।

अवेल (वि०) १. असीम, अनन्त, असामयिक।

अवेला (स्त्री०) विकाल, समय की प्रतिकूलता।

अवैद्य (वि०) अवैधानिक, संविधान के विरुद्ध, नियम विरुद्ध।

अवैशद्य (वि०) विशदता रहित, विशेष रहित, स्पष्टता का अभाव।

अवोक्षणं (नपुं०) [अव+उक्ष्+ल्युट्] झुककर सिंचन।

अवोद: (पुं०) [अव+उंद्+घञ्] जल सिंचन्, गीला करना, आर्दकरण।

अव्यक्त (वि०) ०अस्पष्ट, ०अप्रकट, ०अदर्शनीय, ०अकथनीय, ०अनुच्चरित। (जयो० वृ० ४/६०)

अव्यक्तकारणं (नपुं०) अस्पष्टकारण, अप्रकट हेतु। (जयो० ४/६०)

अव्यक्तलेखाङ्कित (वि०) अस्पष्ट लेखा से अङ्कित। (जयो० ११/५८) ०धुंधली रेखा युक्त।

अव्यक्तदोष: (पुं०) अनुमत दोष, अलोचनात्मक दोष। 'अव्यक्त: प्रायश्चित्ताद्यकुशलो। (मूल०११/१५)

अव्यक्तमनस् (नपुं०) संशय, विपर्यय युक्त मन।

अव्यक्तमिथ्यात्व: (पुं०) मोह स्वरूप मिथ्यात्व।

अव्यग्र (वि०) ०अक्षुब्ध, ०अनाकुल, ०स्थिर, ०प्रशान्त, ०सौम्य, ०सरल, ०शान्त, ०सीधा, ०स्पष्ट।

अव्यङ्ग (वि०) दोष विवर्जित, निर्दोष।

अव्यञ्जन (वि०) ०लक्षण विहीन, ०चिह्न रहित, ०अस्पष्ट, ०लांछन युक्त।

अव्यत्यय (वि०) संज्ञा परिवर्तन, परस्पर बदलना। 'कुर्यात् कौतुकतस्तन्नामव्यत्ययमथो शस्तम्।' (जयो० ६/६९)

अव्यथ (वि०) व्यथा रहित, पीड़ा मुक्त। 'वैरिषन् रसिति वैरिसंग्रहमव्यथेकथि पथि स्थितोऽन्वहम्।' (जयो० ३/६) 'अव्यथे व्यथारहिते पथिमार्गे कष्टवर्जिते। (जयो० वृ० ३/६)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अव्यधिषः (पुं०) १. सूर्य, २. समुद्र।

अव्यभिचारः (पुं०) वियोग का अभाव, व्यभिचार का अभाव।

अव्यभिचारिन् (वि०) ०अविरोधी, ०अप्रतिकूल, ०अपवाद ०रहित, ०कलंकमुक्त, ०सदाचारी, ०सद्गुणी, ०ब्रह्मनिष्ट।

अव्यय (वि०) ०व्यय रहित, ०विनाश रहित, ०ध्रुव, ०ध्रौव्य, ०शाश्वत, ०नित्य, ०अविनश्वर, ०अखंडित।

अव्ययः (पुं०) १. अनन्त चतुष्टय की प्राप्ति, अच्युत। २. शिव, विष्णु।

अव्ययशील (पुं०) व्यय रहित। (जयो० १/९५)

अव्ययीभावः (पुं०) अनव्ययमव्ययं भवत्यनेन, अव्ययच्वि+भू+घञ्। १. समास विशेष, जिसमें अव्यय की प्रधानता होती है। २. व्ययरहित भाव, अविनश्वर भाव।

अव्यलीक (वि०) ०सत्य, ०प्रिय, ०यथार्थ झूठ से रहित, ०असत्यहीन, ०सत्यार्थ, ०उचित।

अव्यवधान (वि०) व्यधानरहित, बाधा रहित, खुला हुआ, अन्तर रहित, मिला हुआ।

अव्यवस्थ (वि०) ०अस्थिर, ०अदृढ़, ०चलमान, ०अनियमित, ०अनिश्चित।

अव्यवस्था (वि०) अनियमितता, अनिश्चितता।

अव्यवस्थित (वि०) ०अनियमित, ०अनिश्चित, ०विनिमय रहित, ०अयोग्यता युक्त।

अव्यवहारः (पुं०) अनिवार्य, आवश्यक। 'व्यवहारोऽव्यवहार एव भोः!' (जयो० १३/५)

अव्यवहार्य (वि०) व्यवहार के अयोग्य।

अव्यवहित (वि०) व्यधान रहित, बाधा रहित, सुयोग, सुव्यवस्थित।

अव्याकृत (वि०) अविकसित, अस्पष्ट, अप्रफुल्लित, हर्ष रहित, अप्रकट।

अव्याजः (पुं०) मायाचार रहित, छलरहित, निश्छल, शुचि।

अव्याघात (वि०) घात रहित, बाधा रहित।

अव्यापक (वि०) विशेष, व्यापकता का अभाव, विस्तार रहित।

अव्यापार (वि०) १. क्रियाशीलता रहित, अव्यवहारिक। २. व्यापार का अभाव।

अव्याप्त (वि०) जो लक्षण एक देश रहे।

अव्याप्तिः (स्त्री०) लक्षण घटित न होना, एक दोष विशेष। अध्ययनादि-सर्वज्ञात्याप्त्यति व्याप्तिदोषतः। (हित०पृ० १७)

अव्याप्य (वि०) सीमित, समस्त क्षेत्र के विस्तार से रहित। आंशिक विद्यमानता।

अव्याबाध (वि०) काम-विकारादि बाधा रहित, लौकान्तिक देव 'अव्याबाध' कहे जाते हैं। 'न विद्यते विविधा कामादिजनिता आ समन्ताद् बाधा दुःखं येषां ते अव्याबाधाः।'

अव्याहत (वि०) विरोध से रहित, निर्बाध।

अव्युच्छेद (वि०) विवक्षित अर्थ की सिद्धि करने वाले वचन।

अव्युच्छेदित्व देखें अव्युच्छेद।

अव्युत्पन्न (वि०) यथार्थ स्वरूप का अभाव, अनिर्णीत, अकुशल, अनुभव रहित।

अव्रणी (वि०) व्रण रहित, घावविहीन, दोषरहित। "अव्रणी व्रणेन दूषणेन रहितः" (जयो० वृ० ७/८९)

अव्रत (वि०) व्रत का अभाव, नियम का पालन नहीं करने वाला।

अश् (सक०) भोजन करना, आहार करना, उपभोग करना। "यावन्नाग्निपक्वतां याति तावन्नहि संयमि अश्नाति।" (सुद० पृ० १३१) खर-रुचिरिन्दु-बिन्दुमश्नाति। (सुद० पृ० १०४) 'सकृत्समश्नात् यथा न दातुः।' (जयो० २७/४६)

अश् (सक०) १. व्याप्त करना, ग्रहण करना, आनन्द लेना, जाना, पहुंचना। २. उपस्थित होना, रस लेना।

अशकुनः (पुं०) अशुभ शकुन, अशुभ सूचना।

अशक्तः (पुं०) अक्षम। (सम्य० ९४)

अशक्तिः (स्त्री०) १. अक्षमता, बलहीनता। २. अयोग्यता।

अशक्य (वि०) असंभव, असमर्थ। निखिलेऽप्याकाशं मातुमशक्यमासीत्। (जयो० वृ० १/२३) 'ग्रागशक्यमपि शक्यते' (जयो० २/५९)

अशक्यता (वि०) असमर्थता, असंभवता। (जयो० वृ० ५/१५)

अशमनं (नपुं०) जिसके शमन नहीं, रोग, कोप "न शमनमशमनं रोगः' (जयो० वृ० १०/९६) "तुभ्यं नमोऽशमन-संशमनोदमाय" (जयो० १०/९६)

अशक्नुवंत (वि०) असमर्थता युक्त, असहनीय, असंभवता वाला। असोढम् (जयो० वृ० १४/२७) अशक्नुवंतो युगपत्पतङ्गा (जयो० ८/५२)

अशक्नुवान् देखें ऊपर अशक्नुवंत।

अशङ्क (वि०) निडर, निर्भय, आशंका रहित, निश्शंक।

अशङ्कित (वि०) आशङ्का नहीं करने वाला। (जयो० २/१२६)

अशङ्कितकारित (वि०) आशंका नहीं करने वाला (विद्वान्), निर्गलप्रवृत्तिकारिणी। कुत्सिताचरणेष्वशाङ्कितकारिता स्फुटमवादि नास्तिता। (जयो० वृ० २/१२६)

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अशठतावान (वि०) स्खलता रहित, ज्ञान युक्त (जयो० वृ० १/५६)

अशनं (नपुं०) [अश्+ल्युट्] खाना, भोजन, स्वाद लेना, रस लेना, आहार। 'राक्षसाशनमुपात्ततामसं।' (जयो० २/१०९) सुरसनमशनं लब्ध्वा। (सुद० पृ० ७४) अशनं कस्य न धनतृष्णा वा। (सुद० ७४) एतावती स्यादुदरेऽभिवृद्धिर्मृष्टेऽशने सत्यशनेऽतिगृद्धिः। (जयो० २७/४५)

अशनक (वि०) १. भोजी, भोजन करने वाला। २. रात्रि का नाश। सद्वृत्तिरश्वति निशाशनकैः प्रहाणिं। (जयो० १८/३७)

अशनस्थानम् (नपुं०) आहारस्थान। (हित ४३)

अशना (स्त्री०) (अशनमिच्छति) [अशन क्यच् स्त्रियां भावे] क्षुधा, भूख।

१. वज्र-'सो जयन्जयनृपः कृपाशनेः।' (जयो० ३/१९) २. ०विद्युत, विद्युतप्रभा-'अशनिशनिपितृप्रमुखान्।' (जयो० ६/३६)

अशनिघोषः (पुं०) अशनिघोष नामक हस्ति। (समु० ४/३३) 'महीमहेन्द्रोऽशनिघोष सद् द्वीपः।' (समु० ४/१५)

अशबलः (पुं०) स्नातक मुनि, निरतिचार रहित मुनि।

अशबलाचारः (पुं०) चारित्र युक्त साधु, अभ्याहत दोषों का परिहारक श्रमण।

अशब्द (वि०) शब्द विहीन, शब्द से रहित।

अशब्दलिंगज (वि०) अन्यथानुपपत्ति रूप लिंग से होने वाला ज्ञान। (धव०पु०१३/२४५)

अशमनं (नपुं०) ०जिसका शमन नहीं, ०रोष, ०क्रोध। न शमनमशमनं रोषः (जयो० वृ० १०/९५)

अशरण (वि०) १. शरण रहित, आधार विहीन, आश्रयमुक्त, असहाय। २. 'अशरण' अनुप्रेक्षा या भावना का नाम है, इसमें यह भावना की जाती है कि संसार में कोई भी विद्या मरण के समय सहायक नहीं हो सकती। 'नान्यत् किञ्चिच्छरणमिति' (त०वा०९/७) आपत्तियों के घिराव में भटकने वाले इस प्राणी को धर्म के सिवा और दूसरा कोई भी सहारा नहीं। (ता०सू०९/७)

अशरीर (वि०) १. शरीर रहित, देहमुक्त।

अशरीरः (पुं०) सिद्ध, मुक्तजीव, परमात्मा। 'जेसिं शरीरं णत्थि ते असरीरा।' 'अट्ठ-कम्म-कवचादो णिग्गया' (धव०१४/२३९)

अशरीरी (वि०) १. शरीर रहित, अपार्थिव/ २. सिद्धपुरुष, सिद्धि के प्राप्त जीव, अष्टकर्म विमुक्त जीव।

अशस्त (वि०) असुन्दर, कुरूप। 'न वपुषि अशस्ताः' (सुद० १/२९) अर्थात् शरीर में भद्दी और असुन्दर नहीं थी। २. अप्रशस्त। (वीरो० १८/४८)

अशास्त्र (वि०) कुशास्त्र, आत्मज्ञान को नहीं देने वाले शास्त्र।

अशास्त्रीय (वि०) आगम विरुद्ध, श्रुत के विपरीत, शास्त्र के प्रतिकूल।

अशित (भू०क०कृ०) भुक्त, खाया हुआ। आममन्नमतिमात्र-याऽशितं चास्तु भस्मकरुजे परं हितम्। (जयो० २/६३)

अशितः (पुं०) गौरवर्ण। (जयो० १०/२८)

अशितङ्गवीन (वि०) चरगाह स्थान।

अशिता (स्त्री०) गौरवर्णा। (जयो० १०/२८)

अशित्रः (पुं०) १. चोर, २. चावल की आहूति।

अशिरः (पुं०) [अश्+इरच्] आग, सूर्य, वायु, राक्षस।

अशिरं (नपुं०) वज्र, हीरक।

अशिरस् (पुं०) धड़, तना।

अशिव (वि०) अमङ्गल, अकल्याणकारी, अशुभ, भाग्यहीन।

अशिष्ट (वि०) ०असंस्कृत, ०संस्कारविहीन, ०गंवार, ०उजड्ड, ०उपद्रवी, ०असभ्य, ०अयोग्य, ०अप्रामाणिक, ०अशास्त्रीयज्ञ।

अशिष्य (वि०) अयोग्य, असंस्कृत, संस्कारहीन। 'शिक्षा योग्यो न भवति।' (जयो० ११/८७)

अशीत (वि०) उष्ण, गर्म।

अशीतकरः (पुं०) सूर्य, रवि, सूर्यरश्मि।

अशीतिः (स्त्री०) अस्सी, संख्या विशेष।

अशीना (वि०) कर्त्तव्यविचारशीला, 'कलैः कृतातिथ्यक-थाप्यशीना।' (जयो०१५/६)

अशीर्षक (वि०) अशिरस्, धड़, तना, मस्तिष्क रहित।

अशुचिः (स्त्री०) १. अपवित्र, मल। २. अशुचि-अनुप्रेक्षा या भावना। इसे अशुचित्व भी कहा है। (त०सू०९/७) ''अशुभ-कारणत्वादिभिरशुचित्वम्।'' (त०वा०९/७)

अशुचि (वि०) अपवित्रता, अशुचिकरण, मलिनता, मल, विष्ठा।

अशुद्ध (वि०) १. अपवित्र, शुद्धता रहित, धरां समारब्धुमथ प्रबुद्धस्तदीयसंपर्क इतोऽस्त्वशुद्धः। (जयो० १९/१) 'सोऽशुद्धः परस्त्रियाः परपुरुषकरेण स्पर्शो वर्जनीय इति हेतोः।' (जयो० वृ० १९/१) २. पर द्रव्य के संयोग के कारण भूत।

अशुद्ध-उपयोगः (पुं०) अशुद्ध उपयोग।

अशुद्ध-ऋजुसूत्रनयः (पुं०) व्यञ्जन पर्याय रूप।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अशुद्ध-चेतना (स्त्री०) कार्यानुभूति और कर्मफलानुभूति अशुद्ध चेतना।

अशुद्ध-द्रव्यं (नपुं०) द्रव्य उपाधि जन्य।

अशुद्ध पर्यायः (पुं०) व्यञ्जन पर्याय का विषय।

अशुद्धभावः (पुं०) अस्वाभाविक परिणाम, अन्योपाधिक भाव, बाह्यभाव।

अशुद्धसंग्रहः (पुं०) जाति विशेष ग्राहक।

अशुद्धिः (स्त्री०) मलिनता, अपवित्रता।

अशुद्धि (वि०) अपवित्र, मलिन, कर्मबद्ध।

अशुभ (नपुं०) पाप, अनिष्ट।

अशुभ (वि०) १. अकल्याणकारी, अमांगलिक, अनिष्टकारी, अहितकर। २. विषय कषाय से आविष्ट, राग-द्वेषात्मक वृत्ति।

अशुभ-काय योगः (पुं०) काय सम्बंधी प्राणातिपात जन्य योग।

अशुभक्रिया (स्त्री०) अशुभ अतिचार, ज्ञान, दर्शन, चरित्र और तप में दोष।

अशुभयोग (पुं०) मारन ताड़न का योग। (समु० ८/२८)

अशुभोदयः (पुं०) पापोदय, पापकर्म का उदय। नहि विषादमियादशुभोदये। (जयो० २५/६४) 'अशुभस्य पापस्योदये'। (जयो० वृ० २५/६४)

अशुभोपयोगः (पुं०) विषय-कषायादि जन्य उपयोग। "शरीरमेवाहमियान्विचारोऽशुभोपयोगो जगदेककारो।" (समु० ८/२१) "दुष्टाच्चयोगादशुभोपयोगे, पापं महत्स्यादमुकप्रयोगे। (समु० ८/३२)

अशुभोपयोगी (वि०) अशुभ योग वाला जीव, शुभाच्चयोगाद-शुभोपयोगी यदीत पुण्यं च ततः च सभोगी। (समु० ८/३१)

अशून्य (त्रि०) पूरा किया गया, निष्पादित, अभाव रहित।

अशूद्र (वि०) अछूत, अस्पृश्य। जन्मना खलुऽशूद्रः सन्कुलीनस्यात्सुचेष्टया। (हित०सं० २६/

अशृत (वि०) अपरिपक्व, कच्चा, नहीं पकाया गया।

अशेष (वि०) समग्र, सम्पूर्ण, समस्त, सभी। 'तस्या अपाङ्ग शर-संहतिरप्यशेषा।' (सुद० १२४) इत्येव मांहं क्षपयत्रशेषं। (भक्ति०३१) 'प्रतिदेशमशेषवेशिनः।' (जयो० १०/७०) पराजिताशेषनरेशवर्गः। (समु० ६/९)

अशेषपरिच्छदः (वि०) सर्वथा त्याग (वीरो० १८/४०)

अशेष-मानवः (पुं०) सम्पूर्ण नृप समूह। 'अशेषा चासौ भूः पृथिवी तस्या मानवा नराः।" (जयो० १/५७)

अशोक (वि०) [न शोको अशोकः] जिसे शोक नहीं, शोकरहित, प्रसन्न, हर्षित, आमोद युक्त' निश्चिन्त। 'अशोक आलोक्य पतिं ह्यशोकं प्रशान्तचित्तं व्यकसत्सुरोकम्।' (जयो० १/८४)

अशोकं/शोकवर्जितम्, अशोको/निश्चिन्तो। (जयो० वृ० १/८४) 'स कोकवल्किन्निलत्रस्त्वशोकः'। (सुद० १/१०)

अशोकः (पुं०) सम्राट् अशोक, मौर्यवंश का प्रसिद्ध शासक। चन्द्रगुप्त मौर्य का पौत्र। (वीरो० २२/१२)

अशोकः (पुं०) अशोक वृक्ष। (जयो० १/८४) अशोकनाम वृक्षो व्यकसत्। (जयो० वृ१/८४)

अशोकं (नपुं०) कामदेव का एक बाण, पांच बाणों में अशोक बाण भी कामातुर का घातक है।

अशोकतरुः (पुं०) अशोकवृक्ष।

अशोकचित्त (नपुं०) शोक रहित हृदय वाला।

अशोच्य (वि०) अनुचित शोक।

अशोभनीय (वि०) शोभा के योग्य नहीं, कुरूपता युक्त अकान्त। (जयो० वृ० ११/५६)

अशौचं (नपुं०) अशुचिता, अपवित्रता, अस्पृश्य, मैल युक्त। (जयो० १९/५)

अशौच क्रिया (स्त्री०) मलोत्सर्जन क्रिया। (जयो० १९/५)

अशौचविधि (स्त्री०) अशोचक्रिया, मलिन परिणाम।

अशनं (नपुं०) भोजन, खाना, आहार। धात्रीफलं केवलमश्नुवानः। (जयो० १/३८)

अशनीत (वि०) खाने योग्य।

अश्नुवान (वि०) भुञ्जान, भोगने वाला।

अश्मन (पुं०) [अश्+मनिन्] रत्न, प्रस्तर। 'भूषणेष्वरुणनील-सितामश्मनां'। (जयो० ५/६१) 'अश्मानि रत्नानि तेषां भूषणेषु।' (जयो० वृ० ५/६१)

अश्मन्तकः (पुं०) [अश्मानमन्तयति इति अश्मन्+अंत+णिच्+ण्वुल्] अलाव, अंगीठी।

अश्मरी (स्त्री०) [अश्मानं राति इति-रा+क+ङीप्] पथरी, रोग विशेष।

अश्वः (पुं०) तुरग, घोड़ा, अर्वन्, उत्तम घोड़ा। (जयो० १३/९२) 'किं छाग एवं महिषः किमश्वः।' (वीरो० १/३१) अर्वतामश्वानां मध्ये वराः श्रेष्ठाः। (जयो० वृ० १३/९२)

अश्वग्रीवः (पुं०) अलकापुरी के राजा मयूर और रानी नीलंयशा का पुत्र, जो प्रतिनारायण बनकर तीनखण्ड के आधिपत्य को प्राप्त हुआ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अश्ववारः (पुं०) घुड़सवार, अश्वारोही, अश्वाधिगत। (जयो० ८/११)

अ-श्वसंत (वि०) निरुद्धश्वास, श्वास नहीं लेते हुए।

अश्व-समुदायः (पुं०) घोटक समूह, सप्तिसमूह। (जयो० ३/११०)

अवस्थितः (वि०) अश्वारूढ, घुड़ सवार।

अश्वाधिगत (वि०) अश्वारुढ, तुरगारुढ, अवस्थित, अश्ववार।

अश्वारुढ (वि०) तुरगारुढ, घुड़सवार।

अश्वारोह (वि०) घुड़ सवार, तुरगारुढ।

अश्विनी (स्त्री०) अश्विनी नक्षत्र।

अश्विनीकुमारः (पुं०) अश्विनीसुत, वैद्य पुत्र। (दयो० ६८) 'इत्यश्विनीसुतसमानयनाय नाम।' (७/१०९)

अश्विनीसुतः (पुं०) अश्विनीकुमार वैद्यराज। (जयो० १०/७९)

अश्रं (नपुं०) [अश्नुते नेत्रम्-अश्+टक्] १. आंसू, अश्रु। २. रुधिर।

अश्रद्दधत (वि०) अश्रद्धान करता हुआ (सम्य० ७४)

अश्रवण (वि०) श्रवणहीन, बहरा, नहीं सुनने वाला।

अश्रान्त (वि०) १. श्रमशील, थकान रहित, उद्यमी। २. शान्ति वाला।

अश्रि (स्त्री०) [अश्+क्रि+पक्षे ङीप्] किनारा, घर का एक त्रिकोण भाग।

अश्रीक (वि०) श्री विहीन, कुरूप, सौन्दर्य रहित।

अश्रु (नपुं०) [अश्नुते व्याप्नोति नेत्रमदर्शनाय-अश्+क्रुन्] आंसू, वाष्प।

अश्रुजलं (नपुं०) अश्रुनीर, (जयो० ९/५४) 'मुदुदिताश्रुजलै-रनुभावितं।'

अश्रुजात (वि०) आंसुओं की उत्पत्ति। सात्त्विकमेतदश्रुजातम्। (जयो० १२/६७)

अश्रुत (वि०) १. श्रुत विहीन, आगमशास्त्र विहीन। १. श्रुतज्ञान रहित। (जयो० वृ० १/३४) २. नहीं हुई, अनसुनी, श्रवणा रहित। (सुद० २/२६) श्रुतमश्रुपूर्वमिदं तु कुतः। (सुद० पृ० ८४)

अ-श्रुपात (वि०) शोकाकुलजात अश्रु।

अ-श्रुतपूर्व (वि०) श्रुत परम्परा से रहित। (जयो० १/३४)

अश्रुतपूर्विका (वि०) सुनने में नहीं आता। 'वार्ताऽप्यदृष्टश्रुतपूर्विका वः।' (सुद० २/२१)

अश्रुपद (वि०) आंसू समूह। (जयो० वृ० ३/३९)

अश्रुयुक्त (वि०) वाष्पभाग, अश्रुधारा, नयनोत्पलवारिजल। (जयो० वृ० ६/८६)

अश्रुप्रवाह (वि०) अश्रुसन्तान, अश्रुधारा। (जयो० वृ० ५/१०४)

अश्रुवाही (वि०) आंसुओं से युक्त। (जयो० ५/१०४) हर्ष के आंसुओं से युक्त।

अश्रुसंतानं (नपुं०) अश्रुधारा, आंसुओं का प्रवाह। अश्रूणां सन्तानं। (जयो० ५/१०४)

अश्रुसंविद् (वि०) अश्रु समूह। (जयो० २६/१४)

अश्रुसिक्त (वि०) आंसुओं से सिञ्चित। 'अश्रुसिक्तयोगीन्द्रपदो निरेनाः।' (वीरो० ११/२३)

अश्रोत (वि०) आगमिक विहीन, श्रुतविहीन।

अश्रेयस् (वि०) अकल्याण, अहित, अनिष्ट, दुःख।

अषड (वि०) छह रहित।

असाढः (पुं०) आषाढ मास, वर्षा का प्रारंभिक मास।

अष्ट (वि०) आठ प्रकार, आठ भागों वाला।

अष्टक (वि०) [अष्टन्+कन्] आठ भागों वाला, आठ प्रकार का, आठ समूह युक्त। (सम्य० ८८)

अष्टकं (नपुं०) आठ छन्द युक्त, महावीराष्टक। (भक्ति०२१)

अष्टकर्मन् (नपुं०) आठ कर्म।

अष्टकुमारिका (स्त्री०) आठ कुमारियां।

अष्टकृत्वस् (अव्य०) आठ बार।

अष्ठकोण (वि०) आठ कोने वाला।

अष्टग (संख्यावाची विशेषण) आठ।

अष्टगुण (पुं०) आठ गुण, सम्यक्त्व के गुण। 'निःशङ्किताद्यष्टगुणाभिवृद्धं।' (भक्ति०७)

अष्टचन्द्रः (पुं०) अष्टचन्द्र राजा। (जयो० ८/६४) 'निपेतुः पुनरष्टचन्द्राः।''

अष्टचन्दनरपः (पुं०) अष्टचन्द्र नामक राजा। 'सोऽष्टचन्द्रनरपो ग्रहयुक्तिः।' (जयो० ४/१४)

अष्टत्रिंशत् (वि०) अड़तीस।

अष्टत्रिक (वि०) चौबीस।

अष्टदलं (नपुं०) कमल, आठ पंखुरियों युक्त।

अष्टदिश् (स्त्री०) आठ दिशा।

अष्टधा (वि०) आठ प्रकार का, आठ भागों का। ऐहिकव्यवहतौ तु संविधाकारिणी परिविशुद्धरष्टधा। (जयो० २/७६)

अष्टधातुः (स्त्री०) आठ धातु।

अष्टपद (वि०) आठ पैर वाला, शरभ जन्तु।

अष्टपत्रं (नपुं०) स्वर्ण पट्टिका।

अष्टम-प्रतिमा (स्त्री०) आठ प्रतिमा।

अष्टम (वि०) आठवां, आठ भाग।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अष्टमदेवधामः (पुं०) अष्टम स्वर्ग। 'श्रियोधराऽधाष्टमदेव-धाम।' (सम्० ६/२६)

अष्टमसर्गः (पुं०) आठवां सर्ग, आठवां अध्याय।

अष्टशती (स्त्री०) अकलंकदेव कृत न्याय ग्रन्थ।

अष्टसहस्री (स्त्री०) जैन न्याय का प्रसिद्ध ग्रन्थ, इसके रचनाकार आचार्य विद्यानन्द हैं, इसका मूलाधार देवागम स्तोत्र है, जिस पर अष्टशती की व्याख्या अष्टसाही है। (वीरो० १९/१११

अष्टाङ्ग (वि०) आठ अंगों वाली।

अष्टागमः (पुं०) आठ आगम।

अष्टाङ्गमयी (वि०) अष्टद्रव्यमयी पूजा, अष्टपूजा अंग युक्त। आठ अंगों सहित। 'मनोहराष्टाङ्गमयीं प्रभोर्जयः।' (जयो० २४/८१)

अष्टाङ्ग-सिद्धिः (स्त्री०) अष्ट विभूति। अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकम्य, ईशत्व और वशित्व ये आठ प्रकार की विभूतियां हैं।

अष्टादशम् (नपुं०) अठारह (वीरो० १

अष्टाधिक (वि०) आठों से अधिक। 'अष्टाधिकानां परितो ध्वजानाम्।' (वीरो० १३/७) 'अष्टाधिकं सहस्रं सुलक्षणानाम्।' (वीरो० ४/५०)

अष्टाविध (वि०) आठ प्रकार (सम्य० ८८)

अष्टाश्रयः (वि०) आठ आश्रय, आठ आधार।

अष्टिः (स्त्री०) १. पासा, खेल का अक्ष। २. बीज, गुठली।

अष्ठीला (स्त्री०) गिरी, गुठली।

अस् (अक०) होना, रहना, विद्यमान रहना। 'वाग्यस्यास्ति न शास्ति कवित्वगावा।' (सुद० १/१) 'स केवलं स्यात् परिफुल्ल गण्डः।' (सुद० १/७) 'कृपाङ्कुराः सन्तु सतां यथैव।' (सुद० १/९) 'श्रिये जिनः सोऽस्तु यदीयसेवा।' (वीरो० १/१) असेः कदाचिद्यदि सोऽस्तु कोपी। (वीरो० १/१०) वाणीव याऽऽसीत् परमार्थदात्री। (वीरो० १/१८) सा पश्यति स्मेति पण्डिता। 'यद्यसि शान्तिसमिच्छकस्त्वं' (सुद० ७१) लयोऽस्तु कलङ्ककलायाः। (सुद० ७१)

अस् (सक०) फेंकना, छोड़ना, विसर्जित करना। अस्यति, अस्त।

अस् (सक०) १. जाना, लेना, ग्रहण करना। २. चमकना, दीप्त करना।

असंकुचित (वि०) अक्लिष्ट, आयत, विस्तृत। (जयो० ५/४७)

असंकुट (वि०) सर्वलोकाकाश व्याप्त।

असंक्लिष्ट (वि०) अधिक, बहुत, संक्षिप्तता रहित।

असंख्येय (वि०) संख्या रहित, गणनातीत। 'संख्याविशेषातीत-तत्वादसंख्येयः।'

असंघात (वि०) संघात रहित, एक सा।

असंदिग्ध (वि०) स्पष्ट। (जयो० १८/६६)

असंदिग्धकथनं (नपुं०) स्पष्ट कथन। (जयो० २/१३७)

असंभव (वि०) अशक्य, असमर्थ। (जयो० २/५८) (दयो० ४६)

असंमूढ (वि०) विचारशील, बुद्धिमान। असंमूढमतिमर्हद्भिः। (जयो० १५/२२)

असंयत (वि०) १. संयम विहीन, यम-नियम से रहित। महता तपसा युक्तो मिथ्यादृष्टिर-सयतः। (वरांग २६/२७) २. अनियन्त्रित, स्वच्छंद।

असंयमः (पुं०) संयम का अभाव, षट्काय जीवों का घातक, इन्द्रिय एवं मन से संयमित नहीं। (सम्य० ८७)

असंशय (वि०) संदेहजनक, संशय से युक्त।

असंश्रव (वि०) अश्रवित, नहीं सुनाई दिया।

असंसृष्ट (वि०) अमिश्रित, अयुक्त।

असंस्कृत (वि०) संस्कारविहीन, तुच्छ।

असंस्तुत (वि०) अप्रार्थित, अपूजित, असम्मानित, पूजा रहित।

असंस्थानं (नपुं०) संस्थानाभाव, संसक्ति विहीनता।

असंस्थित (वि०) अव्यवस्थित, क्रम विमुक्त।

असंस्थिति (स्त्री०) परम्परामुक्त, अव्यवस्था।

असंहत (वि०) असंयुक्त, विदीर्ण, फैला हुआ।

असकृत् (अव्य०) बार बार, एक बार नहीं, पुनः पुनः, बहुधा, प्रायः।

असक्त (वि०) अनासक्त, निःस्पृही।

असखि (वि०) अमित्र, विरोधी।

असख्य (वि०) शत्रुता, परस्परप्रेम्णा संयुक्तो न। (वीरो० २/३८)

असङ्ग (वि०) १. परिग्रहरहित, अपरिग्रह, निर्ग्रन्थ। फुल्लत्य-सङ्गाधिपतिं मुनीनम्। (जयो० वृ० १/८१) असङ्गानां परिग्रहरहितानाम्। (जयो० वृ० १/८१) २. अनासक्त, सांसारिक बन्धनों से रहित, निर्लिप्त, असंयुक्त, आसक्ति रहित। ३. अकुण्ठित, निर्बाध, शान्त। 'मांक्तुमदेत्यसङ्गः।' (जयो० २७/६०) असङ्गः संयतो जनः। (जयो० वृ० २७/६०)

असङ्गत (वि०) अनुचित, प्रतिकूल, मेल रहित अशिष्ट, अभद्र, असंयुक्त। २. परिग्रहरहित, निर्ग्रन्थ वाला इवासङ्गत-योपरिष्टात्। (भक्ति०१/५)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

असङ्गतिः (स्त्री०) असंयुक्त, अमेलित, असम्बद्ध, अनौचित्य।

असङ्गतिनामालंकारः (पुं०) असङ्गति नामक अलंकार

अन्वास्यं पानकपात्रमाशा समन्विताया वितरन्विलासात्।
हस्तेन शस्तस्तनमण्डलान्त मालिङ्ग्य सम्यङ्गमदमाप कान्तः।
(जयो० १६/२९) कोई स्त्री मदिरा पीना चाहती थी, पर पीने में असमर्थ थी, उसका पति कौतुकपूर्वक मदिरा का पात्र उसके मुख के पास ले जा रहा था और हाथ से स्तनमण्डल का स्पर्शकर रहा था, इस तरह वह मदिरा पान के बिना ही मदहर्षरूप नशा को प्राप्त हो रहा था। संगति न होने पर सङ्ग का आभास।

असङ्गमः (पुं०) वियोग, विछोह, अमिलन।

असङ्गम (वि०) नहीं मिला हुआ, असमबद्ध।

असङ्गिन् (वि०) असम्बद्ध, अमेलित।

असङ्कीर्णः (पुं०) १. विशद, स्पष्ट, २. अक्षत, अखण्ड, ३. संकीर्णता रहित। (वीरो० २/२६)

असङ्कीर्णपदः (पुं०) विशदपद, स्पष्टपद। श्रीमान सङ्कीर्ण पदप्रणीतिः। (वीरो० ७/२६)

असंज्ञ (वि०) संज्ञा रहित, चैतन्य विहीन।

असंज्ञा (स्त्री०) संज्ञा का अभाव, चैतन्यता का अभाव।

असंज्ञित्व (वि०) मन बिना, शिक्षा उपदेशादि न ग्रहण करने वाला। 'मनोऽनपेक्ष ज्ञानोत्पत्तिमात्रमाश्रित्यासंज्ञित्वस्य नियन्धनमिति।' (धव०१/४०९)

असंज्ञि-श्रुत (वि०) असंज्ञियों का श्रुत।

असंज्ञी (वि०) अनमस्क, मन रहित जीव। (सम्य० ४१) सम्यक् जानातीति संज्ञं मनं, तदस्यातीति संज्ञी, तद्विपरीतोऽसंज्ञी। (धव०१/१५२) जो जीव मन के न होने से शिक्षा, उपदेश आदि को ग्रहण न कर सकें।

असती (वि०) दुःशीला, उद्दण्ड। (जयो० १/२०, २/११९)

असत् (वि०) १. अविद्यमान, अस्तित्व हीन। २. सत्ताहीन, अवास्तविक। ३. अनुचित, प्रतिकूल, अव्यवहारिक। ४. एक दार्शनिक दृष्टिकोण उत्पाद, व्यय और ध्रौव्य रूप सत् से विपरीत। साध्य के अभाव का निश्चय करने वाला।
तत्त्वं त्वदुक्तं सदसत्स्वरूपं तथापि धत्ते परमेव रूपम्।
युक्ताप्ययुक्तो जम्भरसेन हि द्रागुपैति सा कुङ्कुमतां हरिद्रा।।
(जयो० २६/८०) ५. दुर्जन, ०दुष्ट, ०पापी, ०अशुभ-परिणामी, ०अनिष्ट। 'यस्यासतां निग्रहणे च निष्ठा मता सतां संग्रहणे धनिष्ठा।'' (जयो० १/१६) 'इक्षो सदीक्षोऽस्यगतः सतोति।' (सुद० १/१६) उक्त पंक्ति में 'असत्' का अर्थ अधिकता भी है। 'दुःखमुच्चलति जायते सुखं दर्पणे सदसदीयते मुखम्।' (जयो० २/४६) उक्त पंक्ति में 'असत्' का अर्थ मलिनता, कुरूपता एवं असुन्दरता भी है।

असत्कर्त्तव्यः (पुं०) असत् कार्य। (वीरो० ६/२०)

असत्कर्मन् (वि०) अनिष्टकर्म, अहितकारी कर्म।

असत्क्रिया (स्त्री०) अनर्थोत्पादक क्रिया, व्यर्थ की क्रिया।

असत्यग्रहः (पुं०) अहितकर ग्रह, अनिष्टकारी दशा।

असत्चेष्टा (स्त्री०) अधार्मिक भाव, धर्मविहीन चेष्टा।

असत्सङ्गम (वि०) असत् योग। (जयो० वृ० ६/२५) ०आर्तध्यान और रौद्रध्यान का संयोग।

असत्चेष्टित (वि०) मलिन चेष्टा वाला, अपवित्र चेष्टा युक्त।

असत्ता (वि०) १. अनस्तित्व, अस्तित्व का अभाव, सत्ता का लोप।

असन्तप्त (वि०) संताप रहित, शान्त, प्रशान्त। (जयो० २८/३८)

असत्पथः (पुं०) दुष्टमार्ग, कुमार्ग, निम्नगति, ०अधर्ममार्ग, ०अनिष्टपथ।

असत्परिग्रहः (पुं०) अनिष्टकारक संग्रह।

असत्भावः (पुं०) इष्ट परिणाम का अभाव।

असत्य (वि०) ०मिथ्या, ०झूठा, ०काल्पनिक, ०अप्रमाणिक। (वीरो० २०/१६) अवास्तविक, झूठ बोलने वाला।
असत्यवक्तुर्नरके निपातश्चासत्यवक्तुः स्वयमेव घातः।
व्यलीकिनोऽप्रत्यय- सम्बिघाऽतः प्रोत्पादयेस्तं न कदापि मातः।। (समु० १/९)

असत्यः (पुं०) ०अलीक, ०झूठ, ०व्यतीक, ०अनृत, ०गर्हित। (वीरो० १४/३८) ०मृषा, ०मिथ्या।

असत्यपक्ष (वि०) मिथ्यामार्ग, ०मृषा कथन, ०मिथ्यात्व का पोषक पक्ष।

असत्यमनोयोगः (पुं०) असत्य जनित के प्रति मन का भाव।

असत्यवचनं (नपुं०) असत्य/मिथ्यापोषक वचन।

असत्यवक्ता (वि०) असत्य बोलने वाला, असत्य प्रतिपादक। 'असत्यवक्ताऽनवधानतोऽपि' (समु० ३/२२)

असत्यवक्तृ (वि०) असत्य भाषक, मिथ्या बोलने वाला, अनृतभाषी। 'असत्यवक्तुः परिहारपूर्वम्।' (समु० १/१०) 'असत्यवक्तुः स्वयमेव घातः।' (समु० १/९)

असत्यवादिन् (वि०) असत्य भाषक, ०मिथ्या कथन करने वाला।

असत्यस्मरणं (नपुं०) ०असत्य कथन, ०असत्य भाषण, ०अलीक स्मरण, ०मिथ्याजन्य स्मरण।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

असदृश (वि०) ०असमान, ०अयोग्य, ०अनुपयुक्त, ०प्रतिकूल, ०असंबद्ध।

असदृश-अनुभागः (पुं०) अनेक वर्गणाओं की उदीरणा।

असदृशवेष (वि०) अनार्यवेष धारक, ०अभद्र परिधान, ०अशोभनीय परिवेश।

असद्ध्यानं (नपुं०) वस्तु स्वरूप का जानना, दुर्ध्यान आर्त-रौद्रध्यान।

असद्रूपः (पुं०) मिथ्यारूप, असत प्रदर्शित। (वीरो० २९/६)

असद्भावः (पुं०) दुर्भाव, मिथ्या परिणाम।

असद्भूत-व्यवहारः (पुं०) अन्य अर्थ में प्रसिद्ध धर्म के अन्य अर्थ में समारोप, अविद्यमानता का समारोप।

असद्यस् (अव्य०) शीघ्रता न करके, बहुत समय व्यतीतकर।

असन् (नपुं०) रुधिर।

असनं (नपुं०) [अस्+ल्युट्] फेंकना, दूर करना, हटाना।

असन्दिग्ध (वि०) ०स्पष्ट, ०स्वच्छ, ०निरापद, ०सार्थक, ०संदेह रहित, ०सम्यक्, ०उचित, ०मंगलकारी।

असन्धि (वि०) १. सन्धि रहित, मेल रहित। २. बन्धनमुक्त, अबद्ध, स्वतन्त्र।

असन्नद्ध (वि०) १. असम्बद्ध, सम्बन्ध रहित। २. धूर्त, अहंकारी।

असन्निकर्षः (पुं०) मन से वस्तुओं का गोचर न होना, पदार्थों का आभास न होना।

असन्निवृत्तिः (स्त्री०) मुड़ना नहीं, लौटना नहीं, परावर्तन नहीं करना।

असफलता (वि०) सफलता रहित। (सुद० ७२)

असभ्य (वि०) ०अशिक्षित, ०अनपढ़, ०शिक्षा विहीन, ०असदृश, ०असमान, ०अयोग्य, ०अशिष्ट, ०अनघट, ०अभद्र।

असम (वि०) ०विलक्षण, ०विषम, ०विसदृश, ०समानता रहित। 'बहिरमीष्वसमेषु विकारतः।' (जयो० २६/६२)

असमञ्जस (वि०) ०विसंवाद, ०वितर्क, ०अस्पष्ट, ०अयुक्त, ०अनुचित, ०निरर्थक (जयो० १२)

असमवायिन् (वि०) ०आनुषंगिक, ०विच्छेद्य, ०अन्तर्हित रहित, ०प्रगाढ़ता विहीन।

असमस्त (वि०) अपूर्ण, अधूरा, वियुक्त, असम्बद्ध।

असमर्थ (वि०) अनीश्वर, सामर्थ्य रहित। (जयो० वृ० ८/१६) अर्थ/रहस्य को नहीं जानने वाला। कलङ्कमेत्वङ्कदलं तदर्थ विभावनायामिह योऽसमर्थः।'(जयो० १/१४)

असमाप्त (वि०) अपूर्ण, अधूरा, पूर्णतारहित।

असमान (वि०) ०अतुल्य, ०समानता रहित, ०सदृश्यता विहीन। (जयो० वृ० १/५३)

असमानगुणः (पुं०) असदृश गुण, विलक्षण गुण, विषम गुण। असमानगुणोऽन्येषां। (समु० ९/२१)

असम्पत्ति (वि०) १. सम्पत्ति रहित, निर्धनता युक्त, दरिद्र। २. दुर्भाग्य, सौभाग्यहीन।

असम्पूर्ण (वि०) ०अधूरा, ०अपूर्ण, ०कम, ०हीन, ०आंशिक।

असम्बद्ध (वि०) ०असंगत, ०निरर्थक, ०व्यर्थ, ०बेकार, ०अनुपयोगी, ०अनुचित, ०अर्थविहीन।

असम्बन्ध (वि०) सम्बन्ध विहीन, अनुपकारी, विच्छेद युक्त।

असम्बाध (वि०) १. विस्तृत, व्यापक, विस्तार युक्त। २. बाधा रहित, एकान्त, निर्जन, सुगम।

असम्भव (वि०) सम्भव नहीं, उत्पत्ति रहित, अस्तित्व विहीन, सम्भावना मुक्त।

असम्भव्य (वि०) अशक्य, अयोग्य, असमर्थ।

असम्भावना (वि०) अशक्यता, असमर्थता।

असम्भृत (वि०) प्राकृतिक, स्वाभाविक, अप्रकाशमान, उपायों से रहित।

असम्मत (वि०) १. तर्क विहीन, ०पक्ष रहित, ०स्वपक्ष बाधक, २. अनुमोदन रहित, अस्वीकृत। ३. अरुचिकर, घृणास्पद। ४. असहमत, भिन्न-भिन्न मत वाले।

असम्मतिः (स्त्री०) असहमति, अस्वीकृति।

असम्मोहः (पुं०) ०मोह का अभाव, ०शान्तचित्त, ०प्रशान्त, ०धीर, ०शुद्धहृदय।

असम्यक् (वि०) अशोभन्, ठीक नहीं। साम्प्रत सुमतिराह निशम्य स्वामिभाषितमिदंसम्यक्। (जयो० ४/१२)

असम्यक्त्व (वि०) ०सर्व पापों से विरत, ०अदर्शन, ०ज्ञानातिशय न होना, ०ऋद्धि प्राप्त नहीं होना, ०सम्यग्दर्शन का अभाव।

असलं (नपुं०) (अस्+कलच्) अयस्क, लोह।

असवर्ण (वि०) भिन्न जाति वाला, भिन्न वर्ण वाला। 'असवर्णविवाहश्च प्रभवत्यार्यसम्मतः।' (हितसंपादक पृ० १९)

असवर्ण विवाहः (पुं०) सज्जाति के अभाव वाला विवाह, विजाति विवाह। 'असवर्णविवाहोऽस्तु, कोऽस्माकं क्षतिरित्यतः।' (हि०सं० पृ० २१)

असह (वि०) ०अधीर, ०अशान्त, ०असहिष्णु, ०असह्य, ०सहन करने में असमर्थ। (वीरो० ११/३८)

असहन (वि०) ०अधीर, ०अशान्त, ०असहिष्णु, ०असह्य, ०ईर्ष्यालु, ०द्रोहजन्य, ०दूसरे की उन्नति न सहने वाला।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तेन सोऽस्य लघिमापि परेषामुन्नतेरसहनात् स्वगमेषः। (जयो० ४/६१)

असहनीय (वि०) दुःसह, असह्य, अक्षन्तव्य, क्षमा योग्य नहीं।

असह्य (त्रि०) दुःसह, असहनीय, अक्षन्तव्य। "त्यजामि यद्वयः स्खलितं ह्यसह्यम्"। (जयो० २७/५६)

असह्यरंहस (वि०) समधिक वेगशाली, आसन नहीं पाने से शीघ्रगामी। व्युत्थिता द्रुतमसह्यरंहसश्चेलुराशुकरभाः सहस्रशः। (जयो० २१/२१)

असहाय (वि०) एकाकी, अकेला, सहयोग रहित, सहभागिता मुक्त।

असहयोग: (पुं०) १. सहयोग नहीं करना, सहायता नहीं देना। २. वस्तु के प्रति उपेक्षा भाव। "सिद्धिमिच्छन् भजेदेवासहयोगं धनादिभिः।" (वीरो० ११/३८)

बहुकृत्वः किलोपात्तोऽसहयोगो मया पुरा। न हि किन्तु बहिष्कारस्तेन सीदामि साम्प्रतम्॥ (वीरो० ११/४०)

असहिष्णुता (वि०) दुस्थिति, अधीरता, ईर्ष्यालुता, द्रोहता। (जयो० वृ० १/२०)

असा (वि०) लज्जिता, लज्जित हुई। 'असा हसेन तत्रापि साहसेन तदाऽवदत्।' (सुद० पृ० ८५)

असाक्षात् (अव्य०) अप्रत्यक्ष रूप से, अदर्शन रूप से, अदृश्य रूप से।

असाक्षिक (वि०) साक्षी के अभाव वाला।

असाक्षिन् (वि०) साक्ष्य से शून्य हुआ।

असात (वि०) दुःख, पीड़ा, कष्ट, व्याधि। असातं दुःखम्। (धव०६/३५) 'अनारोग्यादिर्जनितं दुःखमसातम्।'

असात-वेदनीय (वि०) ०असाता वेदनीय कर्म, ०परिताप जन्य अनुभवन, ०शारीरिक मानसिक दुःख।

असाता (स्त्री०) परिताप, ०दुःख, ०पीड़ा, ०कष्ट, ०व्याधि, ०दुःख का वेदन। * असाता कर्म, दुःखजन्य भाव।

असाधनं (नपुं०) साधन रहित, वस्तु अभाव युक्त, सम्पन्नता न होना।

असाधनीय (वि०) पूर्णता के योग्य न हो, प्रमाणित न किया जा सके।

असाध्य (वि०) १. पूर्ण ठीक नहीं होने वाला, रोगी। २. सम्यक् अर्थवान्। समर्थशक्तिमान्। (जयो० वृ० १/७२)

असाध्यसाधक: (पुं०) समर्थ युक्त साधक। (जयो० वृ० १/७२)

असाधारण (वि०) ०अनन्यभव, ०विशेष, ०विशिष्ट, ०असामान्य, ०अनोखा। 'सुरम्यसाधारण-शक्तितान:' (जयो० १/४२) असाधारण। अनन्यभवाशक्तिः सामर्थ्यं। (जयो० वृ० १/४२)

असाधारण-सौन्दर्य (वि०) अनोखे रूप वाली, असामान्य रूप युक्त। (दयो० पृ० १६८)

असाधु (वि०) १. अप्रिय, ०अस्नेही, ०घृणास्पद, ०ग्लानिजन्य। २. जो साधु/मुनि न हो, ढोंगी।

असामयिक (वि०) अनुकूलता रहित, प्रतिकूल, समय विहीनता।

असामान्य (वि०) १. समय प्रबद्धता रहित। २. विशिष्ट, विशेष, असाधारण।

असाम्प्रत (वि०) अनुचित, अनुपयुक्त, अभद्र, अकल्याणकारी।

असार (वि०) ०सारहीन, ०नीरस, ०रहस्य रहित, ०निरर्थक, ०अशक्त, ०शक्तिविहीन, ०रसाभाव जन्य। 'पपावदः सत्वरमप्यसारम्।' (जयो० १६/३३)

असार: (पुं०) महत्त्वहीन, रहस्याभाव।

असारं (नपुं०) अनावश्यक।

असारता (स्त्री०) [असार+तत्+टाप्] १. नीरसता, निस्सारता, निरर्थकता, निस्सारपरिणति। २. क्षणभंगुरता, विनाशशीलता। 'जायते पुनरसारता रयात्।' (जयो० २/१४) प्राप्य यामपि तु तामसारतां संसृतिस्त्यजति तामसारताम्। (जयो० ११/९४)

असारतीर: (पुं०) निःसारप्रान्त, सारविहीन। भारती स्वयमसारतीरया शर्करैव तव तर्करेखया। (जयो० ७/६२) असारतीरया-निःसारप्रान्तया। (जयो० वृ० ७/६२)

असावद्य (त्रि०) सावद्य कर्मों से रहित, असि-मसि आदि कर्मों से रहित।

असाहस (नपुं०) सुशीलता, साहस का अभाव, शक्तिक्षीणता।

असि: (पुं०) [अस्+इन्] ०तलवार, ०खड्ग। किलासिनामा नृपतेः सुचक्रः। (जयो० १/७) नाभिराज के पुत्र आदिनाथ, ऋषभ में समाज व्यवस्था के लिए जिन कर्मों की व्यवस्था की थी, उनमें 'असि' कर्म का प्रथम उल्लेख आता है। 'कस्ये करेऽसिररेरिति सम्प्रति।' (सुद० पृ० ७४)

असि (अव्य०) जिसका अर्थ तू या तुम है। शयनीयोऽसि किलेति शापितः। (सुद० पृ० ५२) यद्यसि शान्तिसमिच्छकस्त्वं। (सुद० ७१)

असिक: (पुं०) तलवार, खड्ग।

असिकर्मार्य: (पुं०) असिकर्म में कुशल आर्य।

असिकोष: (पुं०) म्यान। (समु० ७/२०) 'असिरिवातिशयाद-सिकोषतः।'

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

असिगंडः (पुं०) तकिया, उपधान।

असिजीविन् (वि०) असि से जीविका चलाने वाले।

असित (वि०) १. श्याम, कृष्ण, अत्यन्त, कृष्ण। 'सितासितप्रायमुतात्मकायम्' (जयो० १५/६१) २. मलिन, (न सितोऽसितो मलिन इति) (जयो० ६/१९)

असितः (पुं०) कृष्ण सर्प।

असितकेशि (वि०) श्लामलकधारिणी। (जयो० १७/५६) ०श्याम केशा, ०अत्यंत काले बाल वाली।

असिदंष्ट्रकः (पुं०) घड़ियाल, मगरमच्छ।

असिदंतः (पुं०) घड़ियाल।

असिद्ध (वि०) अप्रमाणित, अपूर्ण, पूर्णता रहित।

असिद्ध (पुं०) हेत्वाभास का एक भेद जिसका स्वरूप सिद्ध न हो। "संशयादिव्यवच्छेदेन हि प्रतिपन्नमर्थस्वरूपं सिद्धम्।' तद्विपरीमसिद्धम्। (प्रमेयकमलमार्तण्ड ३/२०/३६१)

असिद्धत्व (वि०) जीव की अवस्था विशेष, अष्टकर्मोदय का सामान्य उदय। 'कर्ममात्रोदयादेवासिद्धत्वम्।' (त०श्लोक २/६)

असिद्धत्वपर्यायः (पुं०) १. कर्मोदय सामान्य के होने पर असिद्धत्व पर्याय होती है। २. औदयिक भाव।

असिद्धहेत्वाभासः (पुं०) पक्ष में हेतु का न रहना। 'असिद्धस्त्वप्रतीतो यः।' (न्यायावतार-७३) अन्यथा च संभूष्णुसिद्धः। (सिद्धि०वि०६/३२) असत्सत्तानिश्चयोऽसिद्धः। (परीक्षामुख०६/२२)

असिधारा (स्त्री०) खड्गधार।

असिधाराव्रतं (नपुं०) दृढ़प्रतिज्ञ व्रत।

असिधावः (पुं०) शस्त्रकार, सिकलीकर।

असिधेनु (स्त्री०) चाकू, चक्कू, छोटा चाकू। छुरी।

असिपत्रकः (पुं०) ईख, गन्ना।

असिपुच्छः (पुं०) सूंस, सिंसुमार।

असिपुच्छकः देखो असिपुच्छः।

असिपुत्रिका (स्त्री०) छुरी। (जयो० वृ० २७/२०) धियोऽसिपुत्र्या दुरितिच्छदर्थमुत्तेजनायातितरां समर्थः। (समु० १/१) ममेति कण्ठे विधृताऽसिपुत्री। (समु० ३/२२)

असिपुत्री (स्त्री०) छूरी, ०चाकू।

असिप्रहारः (पुं०) खड्गप्रहार, तलवार घात। तावदेवासिप्रहारेण जीवननिः शेषतामनुबभूव। (दयो० ८४)

असियष्टिः (पुं०) खड्ग, तलवार। (जयो० ८/२६) असिलतिका, खड्गयष्टि।

असिरः (पुं०) [अस्+किरच्] ०किरण, ०तीर ०सिटकनी, ०शहतीर।

असिलतिका (स्त्री०) खड्गयष्टि, तलवार। 'जयश्रियोऽर्पितासि लतिका।' (जयो० १२/८१)

असि-व्यसनं (नपुं०) खड्ग-अभ्यास, असिकला अभ्यास। 'विरोच्चितासि-व्यसनापदे तुक्।' (जयो० १/७५) असिः खड्गस्तस्य व्यसनमभ्यासस्तस्य। (जयो० वृ० १/७५)

असीम (वि०) ०अपूर्व, ०अत्यधिक, ०प्रगाढ़, ०विशेष, ०विशिष्ट, ०अनुपम, ०अगाध। 'दासीमिवासीमयशास्तथैनाम्।' (जयो० १/२१) असीमं/सीमातीतं। (जयो० वृ० १/२१)

असीम-यशः (पुं०) सीमातीत यश, अपूर्वयश। (जयो० १/२१)

असीमशोकचिह्नं (नपुं०) अपूर्व पश्चाताप के लक्षण, अत्यधिक शोकभाव। प्रतीपपत्न्यास्तदेव किन्न समभूत्स्विदसीमशोक-चिह्नम्।' (जयो० १४/३०)

असुः (पुं०) १. प्राण, जीव, श्वास (जयो० १६/४९) (जयो० २०/७३) 'असुंप्ताणमेवेति कृत्वा स्थित्यर्थं जीवनसम्पत्यर्थम्।" (जयो० वृ० १६/४९)

असुं (नपुं०) शोक, दुःख, कष्ट। 'सूक्तिर्भवत्यसुतरामवापि।' (जयो० २०/७३)

असुख (वि०) दुःखी, व्याकुल, कष्टजन्य।

असुखं (नपुं०) ०दुःख, ०पीड़ा, ०कष्ट, ०बाधा, ०व्याधि, ०सुखाभाव।

असुख-करुणा (स्त्री०) दुःखी जीवों पर करुणा/अनुकम्पा। 'असुखं सुखाभावः यस्मिन् प्राणिनि दुःखिते सुखं नास्ति तस्मिन् याऽनुकम्पा। (जैनलक्षणावली पृ० १६०)

असुखित (वि०) दुःखित, पीड़ित। (जयो० ९/७२)

असुखिन् (वि०) दुःखी, व्याकुल, पीड़ित, आघात जन्य। (वीरो० १६/१)

असुत (वि०) निःसंतान, पुत्रहीन।

असुदर्शनं (नपुं०) प्राणाधार, प्राण युक्त दृष्टि। 'सुदर्शनन-भूत्कर्तुमदसुदर्शनमादरात्।' (सुद० पृ० ७६)

असुदा (वि०) प्राणदात्री, जीवन देने वाली। 'न दासि अस्माक-मिहासुदासि।' (जयो० २०/७३)

असुदेवता (वि०) प्राण संरक्षण करने वाला देव, प्राण संरक्षक देव। (जयो० २०/८३) "असुदेवता/प्राण संपादनकर्त्री। (जयो० वृ० २०/८३)

अ-सुदृक् (वि०) उत्तम दृष्टि से रहित। २. प्राण दर्शन।" असूनां प्राणानां 'दृक् दर्शनं तस्याः सिद्धान्तशालिनाऽभि-प्रायधारकेण सुलोचनोपलम्भेनैव जीविष्यामीति।' (जयो० पृ० ३/९७)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

असुनाथः (पुं०) प्राणनाथ, स्वामी। 'तवासुनाथोऽशनि-घोषहस्तितां।' (समु० ४/३३)

असुधारणं (नपुं०) जीवन धारण, प्राण धारण।

असुपवनं (नपुं०) प्राणवायु। 'भुजगोऽस्य च करवीरो० द्विषदसुपवनं निपीय पीनतया।।' (जयो० ६/१०६)

अ-सुभग (वि०) ०असुन्दर, ०कुरूप, ०रूपहीन, बुरा, ०अशोभनीय, ०अदर्शनीय। 'श्रवणासुभगं सतां हृदयविदारकं वृत्तं लिखितं कुतः सम्भव्यताम्।' (दयो० पृ० ६४)

असुभंग (वि०) प्राणघात, जीवननाश।

असुभृत् (पुं०) जीवित प्राणी, जीवनयुक्त जीव।

असुमतः (पुं०) वैर, द्वेष, वैमनस्य। (जयो० ९)

असुमतिः (वि०) शरीरधारिणी, जीवनधारिणी। सदा हे साधो प्रभवति असुमति कर्म। (जयो० २३/७६)

असुरः (पुं०) १. दैत्य, राक्षस। (सम्य० ८४) २. अनुराग जन्य देव, सुरों से विपरीत। अहिंसाद्यनुष्ठानरतयः सुरा नाम, तद्विपरीताः असुराः। (धव०१३/३९१)

असुर-कुमारः (पुं०) असुर कुमार जाति का देव।

अ-सुरभी (स्त्री०) १. सुगन्ध का अभाव, सुरभी का लोप।

असुरभी (स्त्री०) ०प्राणवायु रहित, ०भयरहित, भय-वर्जित। प्राणवायुरुचाभीर्भय- वर्जितः। (जयो० १९/९०)

असुर-हित (वि०) असुरों के लिए हितकारी। 'हे धीश्वरासुररहित सहसान्धकारम्।' (जयो० १८/२०)

असु-रहित (वि०) प्राणरहित, निष्प्राण, जीव शून्य। (जयो० वृ० १८/३०) 'असुरहितमसुभिः प्राणैर्रहितमुतासुरेभ्यो।

असु-राजिः (स्त्री०) प्राणपंक्ति, जीवन धारा, प्राण परम्परा। ''श्वशुरास्वमृराजिरेपका'' (जयो० १२/२०)

असुर-रिपुः (पुं०) राक्षसों का शत्रु।

असुरसा (स्त्री०) तुलसी का पौधा।

असुरहन् (पुं०) राक्षसों का हननकर्ता, इन्द्र।

असुलभ (वि०) ०अप्राप्त, ०कठिनाई से प्राप्त होने वाला, ०अलब्ध, ०अनुपलब्ध, ०अप्राप्त। क्षणिकनर्मणि निजयशोमणिमसुलभं च जहातु। (सुद० पृ० ९८)

असुलोपी (वि०) प्राणलोपी, प्राणनाशक, जीवन नष्टकर्ता। असत्यवक्ताऽनवधानतोऽपि, स्यां चेद्भवेयं त्वनयाऽसुलोपी। (समु० ३/२२)

असुहृतिः (वि०) प्राण घातक जीवनक्षति, कारक, ''असुहृतिष्वपि दीपशिखास्वरम्।' (जयो० २५/२४)

असूतिः (स्त्री०) प्रसूति अभाव। (वीरो० १६/२५)

असूनु (पुं०) अपुत्र, पुत्र नहीं, सन्तान अभाव। ''यूनोऽप्यसूनोरपि।' (जयो० ८/३)

असूय् (अक०) ईर्ष्या करना, द्वेष करना, अप्रसन्न होना, घृणा करना, असम्मान करना।

असूयक (वि०) [असूय्+ण्वुल्] ईर्ष्यालु, द्रोही, घृणाकरी, अपमानी।

असूयनं (नपुं०) घृणा, द्वेष, ईर्ष्या, अपमान, निन्दा, डाह।

असूया (स्त्री०) क्रोधपरिणाम, कुपितभाव, क्रुद्धता, ईर्ष्या, घृणा, द्वेष, अपमान, निन्दा, डाह, स्पर्द्धा। 'तदसूयाफलमस्य सद्रदा।' (जयो० १९/६३) असूया/स्पर्द्धा। (जयो० वृ० १०/६३) वाचा वा श्रुतवाचने निरतया भूया असूयाघृणी। (मुनि०८)

असूयाघृणी (वि०) ईर्ष्या उत्पन्न करने वाले। (मुनि०८)

असूर्य (वि०) सूर्य रहित, रविविहीन।

असूर्यम्पश्य (वि०) [सूर्यमपि न पश्यति-दृश्+खश्+मुम् च] सूर्य दर्शन को नहीं करने वाला, ०चक्षुविहीन।

अस्रः (पुं०) शोणित। अस्रं तु शोणिते लोभे। 'इति वि०' (जयो० १५/२४)

असृक् (नपुं०) रक्त, रुधिर। मनुष्यं परासृक् पिपासुम्। (जयो० २/१२८)

असृज् (नपुं०) परेषाभसृजं रक्तं पिपासु-जयो० वृ० २/१२८) 'असृग् रक्तं रससम्भवो धातुः।' रस से उत्पन्न होने वाली रक्त रूप धातु।

असेचन् (वि०) मनोहर, रमणीय, सुन्दर, रम्य।

असोढुं (वि०) असमर्थ, अशक्नुवान्। असोढुमीशेवोरोजभरं निपपातोपरि धवस्य त्वरम्। (जयो० १४/२७)

असौष्ठव (वि०) सौन्दर्यविहीन, रमणीयता रहित, कुरूप, लावण्यता मुक्त, सौम्यता रहित।

अस्खलित (वि०) ०दृढ़, ०स्थिर, ०निश्चल, ०अकम्प, ०अक्षत, ०अटल।

अस्त (भू०क०कृ०) [अस्+क्त] ०फेंका गया, ०क्षिप्त, ०निक्षिप्त, ०परित्यक्त, ०समाप्त, ०पूर्ण।

अस्तः (पुं०) [अस्यन्ते सूर्यकिरणा यत्र-अस् आधारे क्त] १. अस्ताचल, पश्चिमाचल। २. नाश, समाप्त, पूर्ण, विराम। (जयो० १५/८) ३. सूर्य छिपना, अस्त हो जाना।

अस्तगत (वि०) १. नष्ट, नाश, समाप्त, क्षय। (जयो० वृ० १५/८) २. सूर्यपतन, अस्ताचल की ओर गया, भङ्गं। सूर्ये भङ्गं परिप्राप्तवति सति अस्तगते। (जयो० पृ० १५/८)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अस्तगम् (वि०) डूबा, रुका, समाप्त हुआ।

अस्तगामिन् (वि०) अस्तगत, सूर्य छिपता हुआ अस्त प्राप्त होता है। १. क्षीण होता हुआ।
"रवेरथा बिम्बमितोऽस्तगामि।" (जयो० १५/१०)

अस्तभाव: (पुं०) समाप्त, पूर्ण। (सुद० १३३)

अस्तराग (वि०) ०अनुराग रहित, ०क्षीण राग, ०राग की समाप्ति वाला। 'संशोधयत्यध्वविदस्तराग:।' (जयो० १/५१) अस्तरागो/विषयेष्वनुरागरहित:। (जयो० वृ० २७/५१)

अस्ताचल: (पुं०) १. अस्ताचल पर्वत, सन्ध्या होना। २. सूर्य का अस्त होना। (दयो० १८) ०पश्चिमाचल।

अस्ताद्रि: (पुं०) अस्ताचल पर्वत।

अस्तामित (वि०) समाप्त, पूर्ण, नाशगत। 'अस्तामित: कष्टत एव मुक्ति:।' (समु० ३/३७)

अस्ति (अव्य०) [अस्+श्तिप्] १. ०है, ०होना, ०सत, ०विद्यमान, जैसा कि, ०प्राय:। (वीरो० २०/१६) २. स्याद्वाद सिद्धान्त की दृष्टि से 'अस्ति' का विशेष महत्त्व है, इसमें स्वद्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव की अपेक्षा वस्तु है ऐसा प्रयोग किया जाता है। 'अहो यदेवास्ति तदेव नास्ति, तवाद्भुतेयं प्रतिभाति शास्ति। (जयो० २६/७७)

अस्ति-अवक्तव्यं (नपुं०) स्व-पर-द्रव्यादिचतुष्टय से विवक्षित द्रव्य।

अस्तिकाय: (पुं०) अस्ति स्वभाव, प्रदेश भाव, प्रदेश, प्रचय। "प्रदेशप्रचयो हि काय: स एषामस्ति ते अस्तिकाया: जीवादय:। (त०वा०४/१४) जिनमें अनेक प्रदेश विद्यमान हैं। (त०सू०पृ० ७४) गुण एवं पर्यायों के साथ अभेद एवं तद्रूपता।

अस्तित्व (वि०) १. पदार्थों का सत्ता रूप धर्म, अनादि परिणाम भाव, २. (वीरो० १९/१३) सत्ता, विद्यमानता।

अस्तिद्रव्यं (नपुं०) स्वकीय द्रव्यादि की अपेक्षा से विवक्षित द्रव्य।

अस्ति-नास्ति-अवक्तव्यं (नपुं०) है, नहीं है, ऐसा स्व-पर द्रव्यादि विवक्षित युगपद भाव।

अस्ति-नास्ति द्रव्यं (नपुं०) स्व पर द्रव्यादि की अपेक्षा क्रम से विवक्षित द्रव्य।

अस्ति-नास्तिप्रवादपूर्व: (पुं०) उभय नय पर आधारित ग्रन्थ, द्रव्यार्थिक एवं पर्यायार्थिक नय युक्त विवेचन करने वाला ग्रन्थ/जिसके पदों की संख्या आठ लाख है।

अस्तिस्वभाव: (पुं०) अस्ति ग्राहक नय।

अस्तु (नपुं०) हो, होवे (दयो० ३२) किन्तु (सुद० ९८)

अस्तेयं (नपुं०) अचौर्य, चोरी का अभाव, स्तेयाभाव:, दूसरे की वस्तु का न ग्रहण करना। १. श्रावक अस्तेय और, २. श्रमण अस्तेय। श्रावक एक अंश का त्यागी होने के अचौर्याणुव्रती और श्रमण 'स्तेय' का पूर्ण त्यागी होने से अस्तेयमहाव्रती।

अस्त्रं (नपुं०) आयुध, तलवार, हस्तक्षेपण से किया गया प्रहार।

अस्त्रकार: (वि०) अस्त्र बनाने वाला, आयुध निर्माता।

अस्त्रगारं (नपुं०) आयुध शाला, तोपखाना, शस्त्रगृह, शस्त्रशाला।

अस्त्रचिकित्सक: (पुं) शल्य चिकित्सक, चीर-फाड़ करने वाला चिकित्सक।

अस्त्रचिकित्सा (स्त्री०) शल्य क्रिया।

अस्त्रधारिन् (पुं०) सैनिक, सिपाही, योद्धा।

अस्त्रमंत्रं (नपुं०) आयुध मन्त्र, शस्त्र संचालन के समय का मन्त्र।

अस्त्रमार्जक: (पुं०) सिकलीगर।

अस्त्रमुद्रा (स्त्री०) अंगुलियों को फैलाने की मुद्रा, शस्त्रकार मुद्रा, आयुध सदृश आवृति।

अस्त्रविद् (वि०) शस्त्रवेत्ता, आयुधज्ञाता।

अस्त्रवेद: (पुं०) अस्त्रविद्या, शस्त्रज्ञान।

अस्त्रवृष्टि: (स्त्री०) शस्त्र वर्षा, लगातार शस्त्र प्रक्षेपण।

अस्त्रिन् (वि०) [अस्त्र+इन] अस्त्र से युद्ध करने वाला।

अ-स्त्री (वि०) स्त्रियत्व का अभाव, ०नपुंसकपना।

अस्थानं (नपुं०) अनुचित स्थान, अयोग्य स्थान।

अस्थाने (अव्य०) बिना अवसर के, ऋतु बिना, प्रयोजन बिना।

अस्थावर (वि०) चर, जंगम।

अस्थि (नपुं०) [अस्यते-अस्+कथिन्] हड्डी, मेद से उत्पन्न होने वाली कीकस धातु। 'अस्थि कीकसं मेदसम्भवम्।' 'यतपूतिमांसास्थिवसादिझुण्डम्।' (सुद० १०१)

अस्थियुक् (वि०) हड्डी चबाने वाला। (सुद० १२१)

अस्थुत्थ (वि०) छुट्टी से निकला, आया। (सुद० १२१) रक्तमस्थ्युत्थमेतीति तदेकभक्त:।

अस्पर्शनं (नपुं०) स्पर्शित न होना, स्पष्ट न हो, अछूत।

अस्पष्ट (वि०) धुंधला, अदृश्य, अस्वच्छ, संदिग्ध, मलिन, अव्यक्त। (जयो० ११/५८) जन आत्ममुखं दृष्ट्वा स्पष्टमस्पष्टमेव वा। (सुद० १२५) व्यक्ति अपना स्वच्छ मुख देखकर प्रसन्न होता है और मलिन को देखकर दुखी होता है।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अस्पृश्य (वि०) अस्पर्शित, अछूत, नहीं छूने योग्य, अशुचि, अपवित्र।

अस्फुट (वि०) दुरूह, अस्पष्ट, अव्यक्त, अस्वच्छ।

अस्मद् (सर्व०) [अस्+मदिक्] इसका प्रयोग तीनों लिंगों में होता है। वयं भवामः। (सुद० ७०) वयं वदामः (सुद० २/२७) मयैककाकी किन्नैकदा। (सुद० ८५) रे युवते रते मयाऽधीनारे। (सुद० ८) ममामुकं मेवसमूहजेतो। (सुद० २/१३) वाग्यस्यास्ति नः शस्ति काचित्व गावा। (सुद० १/१) कथा पथायातरथा मुदे नः।। (सु०१/४) निषेवमाणे मयि यस्तु षण्ढः (सुद० १/७) मातः स्तवस्तु पदयोस्तव मे स एव। (जयो० १०/९७)

अस्मत्क्रम (नपुं०) हमारा क्रम, हमारा काम। अस्मत्क्रमो गोनिवहार्जनाय। (समु० १/१९)

अस्मदीय (वि०) मेरे, हमारे, हम सबके। अस्मदीय-करकार्यमनुस्यात्। (जयो० ४/४२) किमस्मदीय-बाहुभ्यां (वीरो० ८/२९)

अस्मयी (वि०) अभिमानी, अहंकारी। स्मयोऽस्यास्तीति अस्मयी। (जयो० ७/८५)

अस्माकं (सर्व०) हमारे लिए, मेरे लिए। (वीरो० १९/२२) किं तस्य कथयाऽस्माकं सिद्धिः। (दयो० पृ० ३२)

अस्मात् (सर्व०) इसलिए, इस प्रकरण, इस हेतु। स्यान्न्यक्कर्मकृदस्मादस्तु। (जयो० २/११६)

अस्मादृश (वि०) हमारे जैसा, हम जैसा। अस्मादृशां भवितुमर्हति भिक्षां। (जयो० ४/४१) अस्मादृशा अपि दृशा विबभुर्विहीना। (जयो० २०/२९)

अस्मि (अव्य०) [अस्+मिन्] मैं हूँ।

अस्मिता (स्त्री०) [अस्मि+तत्+टाप्] अहंकार, अभिमान, गर्व, घमण्ड।

अस्मृतिः (स्त्री०) अस्मरण, विस्मरण, भूलना, याद न रहना।

अस्रः (पुं०) [अस्+रन्] १. किनारा, तट। २. कोश, ३. सिर के बाल।

अस्व (वि०) १. अकिंचन, कुछ भी नहीं, त्यागजन्य अवस्था। २. निर्धन, दरिद्र।

अस्वतंत्र (वि०) परतंत्र, पराधीन, पराश्रित।

अस्वप्न (वि०) ०जागृत, ०स्वप्न रहित, ०निन्द्रा मुक्त, ०सचेत, ०चेष्टावंत।

अस्वरः (पुं०) मन्दस्वर, क्षीणस्वर, स्वराभाव।

अस्वस्थ (वि०) रोगी, व्याधि जन्य।

अस्वादुल (वि०) ०स्वाद न लेने वाले, ०रस विमुक्त, ०आहार में रस पर विचार करने वाले। सन् स्यात्किन्तु सदर्पितंन शमनं कुर्यात्क्षुधोऽस्वादुलः। (मुनि० पृ० १०)

अस्वाध्यायः (पुं०) [न स्वाध्यायो अंगग्रंथानाम्] स्वाध्याय रहित, पठन-मनन मुक्त।

अस्वास्थ्य (वि०) रोग, पीड़ा, बाधा, दुःख।

अस्वास्थ्यकर (वि०) रुज, रोग। (जयो० ११/५३)

अह (अव्य०) ०स्तुति, ०वियोग, ०दृढ़ संकल्प, ०निश्चय, अस्वीकृति आदि के अर्थ में 'अह' का प्रयोग होता है। अहहेति सहर्षाश्चर्ये। (वीरो० २/४९)

अहं (नपुं०) अहंकार, अभिमान, अहंभाव।

अहम्मन्यता (वि०) अहंकार दोष वश। (वीरो० १५/५६)

अहङ्कारित (वि०) अभिमान जनित। (वीरो०)

अहंकरः (नपुं०) अहंकार, अहंभाव, आश्चर्यकारक, (जयो० १०/९५)

अहङ्कारः (पुं०) ०अहंकार, ०अभिमान, ०अहंभाव, ०गर्व, ०घमण्ड। निजाहङ्कारतो व्याजोऽकम्पनेनायमूर्जितः। निजाहङ्करिता स्वर्गकारणात्। (जयो० ७/४) आश्चर्य भाव, अहंभाव अहंकृतिरहंकारोऽहमस्य स्वामीति जीवपरिणामः। (युक्त्यानुशासन-१३२) अपने दुराग्रह का नाम भी अहंकार है। ममकार, मम आदि को भी अहंकार कहा गया।

अहन्त (वि०) अहम्भाव रहित-मुञ्चेदहन्तां परतां समञ्चेत् (वीरो० १८/३८)

अहंयु (वि०) [अहम्+युस्] अहंकारी, अभिमानी, घमण्डी, स्वार्थी, लोलुपी।

अहस्करः (पुं०) सूर्य रवि। (वीरो० १४/१८)

अहत (वि०) क्षय रहित, घात रहित, अक्षत।

अहन् (नपुं०) [न जहाति त्यजति सर्वथा परिवर्तनम् न+हा+कनिन्] दिन, दिवस। यद्वा निशाऽहःस्थितिवद्विपत्ति। (सुद० १११)

अहम् (सर्व०) अस्मद् शब्द के कर्ता एकवचन में 'अहम्' का प्रयोग होता है। त्वामहं न तनोमि जानामि विवृणोमि। (जयो० वृ० १/१) जवनिनाशकृदेवमहं वृक्षा। (जयो० ९/३०)

अहंस् (नपुं०) पाप, अशुभक्रिया। 'मम शान्तिविकृद्धयंहसां तु प्रलयः।' (जयो० १२/१०२) अहंश्च तेषां शान्तिवृद्धि पापानाम्।' (जयो० वृ० १२/१०२)

अहर्निश (नपुं०) रात-दन, नक्तंदिवस्। निदापि क्षुद्राऽभवद्

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भुवि नक्तंदिवमविराम। नक्तंदिवमहर्निशमविराम। (जयो० वृ० २३/६१)

अर्हत्परमागम (पुं०) ०जिनागम, ०सर्वज्ञ प्रणीत शास्त्र (वीरो० १९/२८) ०जिनवाणी, ०जिन-वचन।

अहरणीय (वि०) पूजनीय, सम्मानीय।

अहार्य (वि०) पूजनीय, सम्मानीय, श्रद्धावंत, सम्मानित।

अहह (अव्य०) [अहं जहाति इति हा+क] यह विस्मयादिबोधक अव्यय है, जिसके विविध अर्थ हैं–१. आश्चर्य–अहह पार्श्वमिते दयिते द्रुतम्। (जयो० २/१५६) अहहाग्रहाभावधात्री- (जयो० १२/२१) अहह मूढतया न मया (जयो० ९/३) **खेद अर्थे**–अहह धर्ममृतेऽति पुमान्। (जयो० २५/८२) अहहेति खेदे–जयो० वृ० २५/८२) अहह/महदाश्चर्यस्थानमेतत्। (जयो० पृ० २५/८३)

अहा (अव्य०) प्रसन्नता द्योतक अव्यय। 'सन्ति गेहिषु च सज्जना अहा।' (जयो० २/१२) 'देववादमुपशम्य तन्महा देवतामुपगतो भवानहा।' (जयो० वृ० ७/५९)

अहार्यः (पुं०) पर्वत, गिरि। (जयो० १५/३६) अहार्यः पर्वते पुंसि इति विश्वलोचना।

अहि (पुं०) [आहन्ति–आ+हन्+इण् स च डित आङ्गो ह्रस्वश्च] सर्प, सांप, अजगर, नाग। सङ्गीतैक वशङ्गतोऽहिरपि भो तिष्ठेत्करण्डं गतः। (सुद० पृ० १२७) अहीनां सर्पाणामिनः स्वामी। (जयो० पृ० १/२५) उक्त पंक्ति में 'अहि' के स्थान पर 'अही' का प्रयोग भी होता है ऐसा अभिप्राय भी है।

अहिकांतः (पुं०) वायु, पवन।

अहिकोषः (पुं०) सर्प केंचुली।

अहिचरः (पुं०) नागचर देव, नागदेव। 'स्थानं चकम्पेऽहिचरस्य। (जयो० ८/७६) अहिचरस्य नाम द्वितीयसर्गोकस्य स्थानम्। (जयो० पृ० ८/७६)

अहिछत्रकं (नपुं०) कुकुरमुत्ता।

अहिजित् (पुं०) कृष्ण।

अहित (वि०) अशुभकर, अनिष्टकारी। (जयो० २/३)

अहितत्त्व (नपुं०) सर्प तत्त्व, नाग सार। अहीनां सर्पाणां तत्त्वं स्वरूपं यत्तद्दर्प विषभुज्झित्य पलायते। अहितस्य शत्रो र्भावोऽहितत्त्वम्। (जयो० पृ० ६/७९)

अहिनील (वि०) सर्प सदृश कृष्ण। दीर्घोऽहिनीलः किल केशपाशः। (सुद० २/८)

अहिन्दु (पुं०) हिंसकत्वाभाव। (जयो० २८/२२) ०अनार्य, ०हिंसकजन। 'अहिंदुरयताऽवापि हिन्दुजातेन धीमता।'

अहिपः (पुं०) शेष नाग, शेष राज, सर्पराज। 'प्रासादशृङ्गेऽहि-पहारवैरिणः। (जयो० १५/७६)

अहिपतिः (पुं०) सांपों का स्वामी, वासुकी, सपेरा।

अहि-पुत्रकः (पुं०) सर्पाकार छोटी नाव, किश्ती।

अहिफेनः (पुं०) अफीम।

अहिभयं (नपुं०) सर्प की आशंका, सर्प का भय।

अहिभुज् (पुं०) १. गरुड़, २. नेवला, ३. मोर।

अहिभूत् (पुं०) शिव, शङ्कर।

अहिशय्या (स्त्री०) नागशय्या। 'यामवाप्य पुरुषोत्तमः स्म संशेतेऽप्यहिशय्याम्। (सुद० १२२)

अहिंसनं (नपुं०) अहिंसा, न हिंसा अहिंसा। किसी प्राणी का वध नहीं करना। अहिंसनं मूलमहो वृषस्य। (सुद० १३२)

अहिंसा (स्त्री०) ०प्राणी वध का अभाव, ०प्राणिदया, ०प्राणिकरुणा ०जीवघात का निषेध। अहिंसा वर्त्म सत्यस्य, त्यागस्तस्याः परिस्थितिः। (वीरो० १३/३६) अहिंसा भूतानां जगति विदितं ब्रह्म परमम्। (दयो० पृ० ११) अहिंसाव्रत भी है–श्रमण, अहिंसाव्रत और श्रावक अहिंसाव्रत। मूलतः रागादि भावों की अनुद्भूति या अनुत्पत्ति का नाम अहिंसा है।

अहिंसाधर्म (पुं०) अहिंसा धर्म, रक्षा, जीवरक्षा का कर्तव्य। (दयो० ३३)

अहिंसाधर्मोपदेशक (वि०) अहिंसाधर्म का उपदेश देने वाला, जीव रक्षा/प्राणी का उपदेश। (जयो० पृ० १/९६)

अहिंसाधिपः (पुं०) प्राणि रक्षणाधिपति।
अहिंसायाः प्राणिरक्षणलक्षणाया अधिपतिः। (जयो० पृ० १/११३)

अहिंसापरक (वि०) अहिंसात्मक। (वीरो० १८/५९)

अहिंसा-परमब्रह्मः (पुं०) अहिंसा उत्कृष्ट ब्रह्म। (दयो० ११)

अहिंसामहाव्रतः (पुं०) महाव्रती श्रमण का व्रत। चेतो निग्रहकारितामनुभवन्वाचं यमी सम्भवेत्। संगच्छेच्छयना-सनादिषु दृढं यत्नं स्वकीये भवे। दृक्पूताशन- पान-स्फुटतया हीर्यासमित्याश्रयः हिंसातीत्यधिदेवताभिरूचये श्रीमान्प्रशस्तोदयः। (मुनि०श्लो०४)

अहिंसाव्रतः (पुं०) प्राणिरक्षा व्रत, पांच व्रतों में इसका महत्त्वपूर्ण स्थान है, इसके सद्भाव में अन्य व्रत समुत्पन्न होते हैं प्रमाद से प्राणों का निष्पात करना हिंसा है, ऐसी हिंसा

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

क्या पञ्चसमितियों के पालक पुरुष के समीचीन प्रवृत्ति से हो सकती है? अर्थात् नहीं? तात्पर्य यह है कि पंच समिति पालक के हिंसा संभव नहीं। इसे धर्मवृक्ष का मूल कहा है मूलं धर्मतरोरवेहि मतिमन्यत्वादहिंसाव्रतम्। (मुनि०श्लो ११)

अहिंस्र (वि०) अहिंसक, निर्दोष, प्राणिरक्षक।

अहिन् (नपुं०) दिन, दिवस। 'पादार्दितामह्निरवेस्तुदीनां।' (जयो० १५/७२)

अहिम (वि०) गर्म, उष्ण।

अहीन (वि०) १. उच्च, विशाल, विराट, 'उत्थाय सूत्थानभृतामहीनः।' (जयो० १/७९) अहीन उन्नतिशालिनाम्। (जयो० पृ० १/७९) २. पवित्र, श्रेष्ठ, अच्छा, उत्तम-तथमुचकार पथीहाह्नीने। (जयो० २२/३६) हीने पवित्रे पथीह मार्गे। (जयो० वृ० २२/३६)

अहीनः (पुं०) १. सर्प, द्विजिह्वातीरितगुणोऽप्यहीनः। (जयो० २/२)

अहीनक (वि०) समुत्कृष्ट, उत्तम। हृदि सम्पदिवाथ दीपकः समभात् सोऽवधिरप्यहीनकः। (जयो० २३/३८)

अहीनगुणः (पुं०) उत्कृष्ट गुण, त्रुटिरहित गुण। सदहीन गुणस्थानमञ्चकार्दाभनिर्वृतः। (जयो० १८/९७) अहीनानां मध्ये त्रुटिरहितानां गुणानां तन्तूनां स्थानात्। (जयो० वृ० १८/९६) अहीनानि यानि गुणानि।

अहीन गुणस्थानं (नपुं०) आगमोक्त गुणस्थान, चौदह गुणस्थान। (जयो० १८/९६)

अहीनधुरी (वि०) उत्कृष्टशोभा सम्पन्नता, अतिशय सुशोभित। अम्भोरुहि स्फुरणतः स्विदहीनधुर्ये। (जयो० १८/९)

अहीननय (वि०) अन्यूनत्व, न्यूनता रहित। (जयो० १/२५)

अहीनभाव (पुं०) उत्कृष्टभाव, उचित परिणाम। (जयो० १/२)

अहीनभृत्व (वि०) प्रशंसनीय, सराहनीय। बभार च श्रीमदहीन भृत्वम्। (जयो० १/३०)

अहीनलम्ब (वि०) सर्प सदृश लम्बे। अहीनलम्बे भुजमञ्जुदण्डे। (जयो० १/२५) अहीनां सर्पाणामिनः स्वामी तद्वद् वा लम्बे दीर्घे। (जयो० वृ० १/२५)

अहीन-सन्तानः (पुं०) सर्प संकुल, सर्प समूह। अहीन-सन्तान-समर्थितत्वात्। (वीरो० २/२३) न हीना अहीनाः सद्गुणसम्पन्नास्तेषां सन्तानैर्यद्वाऽहीनामिनः शेषः। (वीरो० पृ० २/२३)

अहीरः (पुं०) अभीर, अहीर जाति, ग्वाल जाति।

अहुत (वि०) अप्रार्थित, आहूति रहित।

अहे (अव्य०) वियोग सूचक। जिसमें भर्त्सना, निन्दा प्रकट की जाती है।

अहेतु (वि०) ०निष्कारण, ०निष्प्रयोजन, ०बिना कारण। (जयो० वृ० १९/२६)

अहेतुवादः (पुं०) अयुक्तिगम्य सिद्धान्त। अहेतुवादस्तु गुरुमुखादेवागम्यते। तत्र युक्तिः प्रवर्तते। (जयो० १९/२६) निःशङ्क और निष्कलङ्क निर्देश युक्त कथन।

अहो (अव्य०) हेलया, प्रशंसा, आश्चर्य, विस्मय, विचारविमर्श, प्रसक्ति हे सम्बोधन, इत्यादि कर्म अर्थों में प्रयुक्त होता है। (जयो० १५/८१, ११/१७, १/१९, सुद० ३/३२, ३/१७
१. प्रसक्ति-व्यधापि अस्माभिरहो-(जयो० २०/८०) अहो इति प्रसक्तिः। (जयो० पृ० २०/८०) आश्चर्याभिव्यक्ति (वीरो० १/२०)
२. आश्चर्य-सौवर्ण्यमुद्वीक्ष्य च धैर्यमस्य दूरं गतो मेरुरहो नृपस्य। (वीरो० ३/२) इत्याश्चर्ये (वीरो० १/३२)
३. विचार-विमर्श-विद्यद्य च व्याधि अभूदहो रुषा। (समु० ४/८) हृदि चिन्तामणिमित्यगादहो। (जयो० २५/८५) वृत्तिकार 'अहो' के विषय में स्वयं कहता है—अहो विचारविमर्शे (जयो० पृ० २५/८५)
४. हे अर्थे-तुगहो गुणसंग्रहोचिते। (सुद० ३/२२) (अहो प्रभातो जातो-(सुद० ५/१)
५. विस्मयार्थ-अहो किलश्लेषि मनोरमायाम्। (सुद० ३/३८)
६. हेलयार्थे-अहो पुनः प्रत्युपकर्तुमुव। (जयो० ८/६५)
७. खेदार्थे-का दृशा पुनरहो जनमञ्चे। (जयो० ४/२८)

अहो किमु (अव्य०) अरे क्या? राज्ञीहाऽहं द्वारिखलु तामीहे गामधिपस्य। अहो किमु। (सुद० ९१!

अहोरात्रक (वि०) रात्रिदिवस् वाला। (जयो० १८/५)

अह्नाय (अव्य०) शीघ्र, त्वरित, तुरंत।

अह्लीक (वि०) निर्लज्ज, ढीठ।

आ

आ—देवनागरी लिपि का द्वितीय वर्ण। यह दीर्घ स्वर है।

आ (अव्य०) १. मर्यादा, सीमा, पर्यन्त, तक। आकण्ठमाश्लेषि (जयो० १७/३६) ०निकट, ०पास, ०चारों ओर, ०समन्तात् ''नाऽऽस्मासमापक्षमुताश्वनुवानः।'' (सुद० ११८) 'आङ्' अयमभिविध्यर्थः। (स०सि०५/६) 'आ' वा अभिविधि अर्थ

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

में भी प्रयोग होता है। प्रयत्नवानादशमस्थलन्तु। (सम्य० पृ० १२६) २. अल्पता, लघुता, थोड़ा। ३. अधिकता, विशेषता, बहुत। तदाऽऽव्रजताऽऽव्रजत त्वरितमित:। (सुद० १०४) ४. विस्मय आश्चर्य, स्मरण। आरतदा सुलुलितं चलितव्यं। (जयो० ४/७) ५. खेद, खिन्नता, कुछ। ओह। आ: स्मृतम्। (दयो० पृ० १५) आ: किमासीत्। (सुद० १०८) इसके अतिरिक्त 'आ' का प्रयोग वाक्य की शोभा हेतु भी प्रयोग किया जाता है।

आं-हाँ!

आंशिक (वि०) एकदेश, एक स्थान, थोड़ा। (जयो० ११/१३) (हित० २३) किलांशिकेषाश्विति तेन मुक्ता। (सुद० २/२०)

आ: (स्त्री०) लक्ष्मी।

आक: (पुं०) अकौआ, मदार, आकड़ा।

आकड़ा (स्त्री०) मदार, आक। (वीरो० १९/११)

आकत्थनं (नपुं०) [आ+कत्थ+ल्युट्] अतिकथन, बहुआलाप, प्रशंसात्मक विवेचन।

आकण्ठ (वि०) कण्ठपर्यन्त, गले तक। 'सम्यगाकण्ठमाश्लेषि वधूर्विनम्य।' (जयो० १७/३६)

आकम्प: (पुं०) [आ+कम्प्+घञ्] हिलना, कांपना।

आकम्पनं (नपुं०) [आ+कम्प्+ल्युट्] हिलना, कांपना, संचालन, गति।

आकम्पित (वि०) [आ+कम्प्+क्त] संचालित, कम्पिता, गति करता हुआ, कम्पायनाम, विक्षुब्ध। २. आलोचना का एक दोष, अल्प प्रायश्चित्त। 'प्रायश्चित्त-लघु-करणार्थ मुपकरणदानम्।' (त०श्लोक ९/२२)

आकर: (पुं०) [आकुर्वन्त्यस्मिन्-आ+कृ+घ] खान, खनिक। जहां से सोना, चांदी आदि की उत्पत्ति होती है। 'अनिरुत्पत्ति स्थानम्। (जयो० २/१४४)

आकरिक (वि०) [आकर+ठन्] खान की देख रेख करने वाला।

आकर्ण् (सक०) [आ+कर्णय्] सुनना, श्रवण करना। (जयो० पृ० ४/२)

आकर्णनं (नपुं०) [आ+कर्ण+ल्युट्] श्रवण, सुनना, कान लगाना, ध्यान देना। (जयो० १/६५) (सुद० ३/४२)

आकर्ष: (पुं०) [आ+कृष्+घञ्] खींचना, तानना, पीछे ले जाना। २. प्रलोभन, सम्मोहन, आकृष्ट, वशीकरण।

आकर्षक (वि०) प्रलोभक, सम्मोहक, वशीकरणकर्ता।

आकर्षणं (नपुं०) [आ+कृष्+ल्युट्] सम्मोहन, वशीकरण, प्रलोभन। शशकृतसिंहाकर्षण-विषये। (सुद० ९२)

आकर्षिक (वि०) सम्मोहक, प्रलोभक।

आकर्षिन् (वि०) [आ+कृष्+णिनि] सम्मोहक, प्रलोभक, खींचने वाला।

आकर्षिक (वि०) सम्मोहक, प्रलोभक।

आकर्षिन् (वि०) [आ+कृष्+णिनि] सम्मोहक, प्रलोभक, खींचने वाला।

आकलनं (नपुं०) [आ+कल्+ल्युट्] स्वीकार, प्रतिग्रहण।

आकल्पितं (वि०) निर्मित, उपयोग युक्त। 'आकल्पितं क्वापि शिवाध्वनेत:' (भक्ति० ४६) गर्भार्भकस्येव यश: प्रसारैराकल्पितं वा घनसारसारै:। (वीरो० ६/३)

आकलितुम् (आ+कल्+तुमुन्) स्वीकर्तुम् स्वीकार करने के लिए। (जयो० ९/३४)

आकल्प: (पुं०) [आ+कृप्+णिच्+घञ्] आभूषण, अलंकरण।

आकल्पक: (पुं०) [आ+कृप्+णिच्+ण्वुल्] दु:खपूर्ण स्मृति, मूर्छा, मुग्धता।

आकष: (पुं०) [आ+कष्+अच्] कसौटी।

आकषिक (वि०) [आकषेण चरति इति-आकष+ष्ठल्] परखने वाला, कसने वाला।

आकस्मिक (वि०) [अकस्मात्+ष्ठक् टि लोप:] १. अप्रत्याशित, सहसा, अचानक, एकाएक। २. निष्कारण, निराधार, निर्मूल।

आकाङ्क्षा (स्त्री०) कामना, इच्छा, वाञ्छा, अभिलाषा।

आकाय: (पुं०) [आ+चि+कर्मणि+घञ् चितौकृत्वम्] चिता, चिता पर क्षेपित अग्नि।

आकार: (पुं०) [आ+कृ+घञ्] आकृति, रूप, संकेत। मम वा यमवाक् सन्धाकारयाऽऽयुधधारया। (जयो० ७/२९)

आकार: (पुं०) आ कार, आवर्ण, मात्रा विशेष। यत्किलानुस्वारस्य स्थाने स्फुटमाकारस्य। (दयो० पृ० ७६)

आकारणं (नपुं०) [आ+कृ+णिच्+ल्युट्] आमन्त्रण, निमन्त्रण, आह्वानन।

आकाल: (पुं०) [आ+कु+अल्+अच्] उचितकाल, यथेष्ट समय।

आकालिक (वि०) [अकाल+ठञ्] अल्पकालिक, किञ्चित् समय, कुछ समय।

आकारूण्य (वि०) निर्दयत्व। (जयो० २/१३०)

आकाश: (पुं०) [आ+काश्+घञ्] गगन, नभ।

आकाश: (नपुं०) [आ+काश+ल्युट्]

१. गगन, खे, आसमान, नभ, अन्तरिक्ष।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

२. आकाश तत्त्व विशेष-वैशेषिक दृष्टि।

३. स्थान, जगह, अवकाश-जैनदृष्टि।

४. ओगाहन, अवगाहन-जैन दृष्टि। नभोऽवकाशाय किलाखिलेभ्यः (वीरो० १९/३८) अवगाहलक्षणमाकशम्। (पंचा० टी० ३) आकाशस्य अवकाशदानलक्षणमेव विशेषगुणः। (नियo वृ० १/३०) आकाशस्यावगाहः। (त० सू० ५/१८) सम्पूर्ण पदार्थों का जगह देना। (त० वृ० पृ० ७७)

आकाश-ईशः (पुं०) इन्द्र, शक्र।

आकाश कक्षा (स्त्री०) क्षितिज।

आकाशकल्पः (पुं०) ब्रह्म।

आकाशगः (पुं०) पक्षी, नभचर जीव।

आकाश-गंगा (स्त्री०) ०स्वर्गगंगा, ०स्वर्णनदी, सुरगंगा देवगङ्गा। (जयो० वृ० ३/१०४)

आकाशगता (स्त्री०) आकाशगामिनी विद्या, ऋद्धि विशेष, जिसमें आकाश मार्ग को प्राप्त किया जाता है।

आकाश-गमनं (नपुं०) आकाशगामिनी विद्या। आकाश में गमन के लिए 'णमो आगासगामिणं मंत्र का जाप।' (जयो० वृ० १९/१०)

आकाशगतेन्दु (स्त्री०) आकाश को प्राप्त चन्द्र। (सुद० १११)

आकाशगामिनी (स्त्री०) नभोगा, आकाशगमनशील। नभसि गच्छन्तीति न भोगाः आकाशगामिनी देवविद्याधराः। (भक्ति पृ० २५)

आकाशगामी (वि०) आकाश में गमन करने वाले विद्याधर, गगनाङ्ग। (जयो० ६/७)

आकाशगृहं (नपुं०) विहायः सदन, गगनगृह। (जयो० १५/३०)

आकाशचमसः (पुं०) चन्द्र, शशि, चन्द्रमा।

आकाशचारणं (नपुं०) भूमि के ऊपर चार अंगुल ऊपर चलने वाली शक्ति, प्राणिघात बिना पादक्षेप रूप शक्ति।

आकाश-जननिन् (पुं०) गवाक्ष, झरोखा, छोटी खिड़की।

आकशतति (स्त्री०) ०आकाश पंक्ति, ०गगनसत्ता। (समु०३/११)

आकाशदेशः (पुं०) आकाश प्रदेश, नभदेश। (जयो० १/२३)

आकाशभाषित (वि०) उच्चासन से कथित।

आकाशमंडलं (नपुं०) गगन मण्डल, खगोल।

आकाशयानं (नपुं०) हवाई यान, हवाई जहाज।

आकाशरक्षिन् (वि०) गगन रक्षक, किले की रक्षा करने वाली दीवार।

आकाशवचनं (नपुं०) आकाशवाणी।

आकाशवाणी (स्त्री०) गगन शब्द।

आकाश-व्यायिनी (स्त्री०) व्योमसर्पिणी। (जयो० वृ० ५/५७)

आकाशातिपाती (स्त्री०) आकाश गमन की विद्या।

आकाशास्तिकायः (पुं०) आकाश प्रदेश, छह द्रव्यों में पंचम आकाशास्तिकाय द्रव्य।

आकिञ्चनं (नपुं०) [आकिञ्चन+अण] १. निराकुल, निर्द्वन्द्व रहित, संक्लेश रहित। (जयो० २८/३९) त्यागयुक्त, परिग्रहमुक्त। 'आकिञ्चनता सकलग्रन्थत्यागः (भ० आ० टी० ४६) २. निर्धन, धन हीन।

आकिञ्चन्यं (नपुं०) ०परिग्रह रहित, ०निराकुल, ०निर्द्वन्द्वरहित, ०संक्लेशरहित, ०त्यागजन्य। ०निर्ग्रन्थवृत्ति- आकिञ्चन्यविदा स्वपूर्वकृतये व्याक्ताश्रुता सुश्रुता। (मुनि० श्लो० २) नास्य किञ्चनास्तीत्यकिञ्चनः, तस्य भावः कर्म वाकिञ्चन्यम्। (स० सि० ९/६) ममेदमित्यभिसन्धि-निवृत्तिराकिञ्चन्यम्।' (त० वा० ९/६)

आकिञ्चन्यधर्मः (पुं०) ०सकलत्यागधर्म, ०सम्पूर्ण संग रहित धर्म, ०बाह्य एवं आभ्यन्तर संग/आसक्ति/परिग्रह रहित धर्म। (जयो० २८/३९)

आकिञ्चन्यविद (वि०) सकलत्याग के ज्ञाता। (मुनि श्लोक २)

आकीर्ण (भू० क० कृ०) १. व्याप्त, पूर्ण, भरा हुआ, परिपूर्ण। २. विक्षिप्त, बिखरा हुआ, फैला हुआ। 'खदिरादि समाकीर्णे चन्दनद्रुमवद्वने। (सुद० पृ० १२८) 'आकीर्यंते व्याप्यते विनयादिभिर्गुणैरिति आकीर्णः।' (जैन लक्षणावली वृ० १९६)

आकुञ्चनं (नपुं०) [आ+कुञ्च्+ल्युट्] १. संकोचन, प्रसारमुक्त, संकुचित, एकत्रित। २. सुकड़ा, एकत्रित होना। 'आकुञ्चनं जङ्गादेः सङ्कोचनम्।' (प्रव०वृ० २०६)

आकुञ्चित (वि०) संकुचित, एकत्रित। (जयो० १८/९४)

आकुट्ट (नपुं०) छेदन-भेदन।

आकुट्टनं देखो ऊपर आकुट्ट।

अकुम्भः (पुं०) गण्डस्थलपर्यन्त। (जयो० १३/९९)

आकुल (वि०) [आ+कुल्+क] आसक्त, ०संलग्न, ०तत्पर। (जयो० १२/६५) 'नित्यमत्रावसीदन्ति मादृशा अबलाकुलाः।' (जयो० १/१०७) २. विक्षुब्ध, उद्विग्न, थका हुआ। ३. आहत, पीड़ित, दुःखित, निराश, टूटा हुआ, विक्षिप्त, हर्षादि रहित। ४. किं कर्त्तव्यविमूढ, अनिर्धारित, अव्यवस्थित।

आकुलक्षणं (नपुं०) आसक्ति के क्षण। (जयो० १२/६५) 'स्वकुले सति नाकुलेक्षणेन।' ०दुःख का समय, ०विक्षिप्त काल।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आकुलता (स्त्री०) व्याकुलता, आसक्ति भावता, आहत, पीड़ित, दुःखित। अपवर्गस्य विरोधकारिणी जनिभुराकुलतायाः। (सुद० वृ० ११२, पृ० ७२)

आकुलत्व (वि०) ०आकुलता, ०निराशता, ०निराशा भाव, ०दुःखत्व, ०भयत्व। ०निराधारत्व। (सुद० ३/३७) मनोऽरमायाति ममाकुलत्वम्। (सुद० ३/३७)

आकुलित (वि०) १. व्याप्त, परिपूर्णता युक्त, भरे हुए। 'श्री पयोधरभराकुलितायाः' (जयो० ५/५५) २. पीड़ित, व्यथित, दुःखित, उद्विग्न, अभिभूत।

आकूणित (वि०) [आ+कूण+क्त] संकुचित, सुकड़े हुए।

आकूतं (नपुं०) [आ+कू+क्त] ०प्रयोजन, ०अभिप्राय, ०कामना, ०भावना, ०विचार। 'स्वाकूतसङ्केतपरिस्पृशापि।' (सुद० २/३२) इति श्रीग्मिममाकूतं निशम्याह यतीश्वरः।

आकृति (स्त्री०) [आ+कृ+क्तिन्] ०आकार, ०रूप, ०तदर्थ रूप, ०तदाकार, ०प्रतिमा, ०प्रतिबिम्ब। २. लक्षण, चिह्न।

आकृष् (सक०) [आ+कृष्] ०खींचना, ०तोड़ना, ०भग्न करना, ०बनाना, ०हरण करना (जयो० वृ० ३/४६) आकर्षताब्जं च सहस्रपत्रम्। (सुद० ४/१५)

आकृष्ट (वि०) बलाद्वशीकृत्, आकर्षित, खिंचा हुआ, तत्पर हुआ। (जयो० वृ० १/८९) इति तच्चिन्तनेनैवाऽऽकृष्टः। (सुद० ३/४३)

आकृष्टिः (स्त्री०) [आ+कृष्+क्तिन्] समाकर्षण, तन्मयता, तल्लीनता, आसक्ति, झुकाव। "दृष्टिः सृष्टिरपूर्वैवाकृष्टिः।" (जयो० ३/५४) आकृष्टिराकर्षरूपा अपूर्वैव सृष्टिर्वर्तते। (जयो० वृ० ३/५४)

आकृष्टिकृत् (वि०) समाकर्षण युक्त, आकृष्ट करने वाला, लुभाने वाला। नभाज भाजन्मभुवं तु बन्धुरं स्वरिन्दिराकृष्टिकृतः करं वरम्। (जयो० २४/८४)

आकृष्टुम् (विध्यर्थक) हर्तुम्, हरण करने के लिए, खींचने के लिए, आसक्ति के लिए। (जयो० वृ० ३/४६)

आकेकर (वि०) [आके अन्तिके कीर्यते इति वा आ+कृ+अप्+टाप्-आकेकरा] अर्धनिमीलित, अर्ध प्रसारित अक्षि।

आक्रन्दः (नपुं०) [आ+क्रन्द्+घञ्] रोना, चिल्लाना, शब्द करना, आर्तशब्द करण, रुदन।

आक्रन्दनं (नपुं०) रुदन, शब्दकरण, चिल्लाहट। आक्रन्द्यते आक्रन्दनम्।

आक्रन्दित (वि०) शब्दित, रुदित। एवं रत्नविनिर्मितैश्च वलयैराक्रन्दितं वेगतः। (जयो० १७/१२१)

आक्रमः (पुं०) [आ+क्रम्+घञ्] १. उपागमन, सन्निकट। २. आक्रमण। 'यतश्च भूतले त्वदङ्गजात आक्रमः कृतः।' (जयो० २०/२५)

आक्रमणं (नपुं०) [आ+क्रम्+ल्युट्] १. आक्रमण, घात, प्रहार, टूट पड़ना। अन्योऽन्यजीविकाम् आक्रमणं न कुर्वन्नित्यर्थः। (जयो० वृ० २/११५) २. भयनाशक-पशुपक्ष्याद्याक्रमण भयनाशार्कः। (जयो० वृ० २/३१)

आक्रान्त (भू० क० कृ०) [आ+क्रम्+क्त] पराभूत, अधिकृत, पकड़ा गया, गृहीत। (जयो० वृ० ११/१२, वीरो० ८/२५) 'न स्यात्कोपि कदापि दुःखिततयाऽऽक्रान्तस्तथात्मंभरी।' (मुनि० १६) २. पूरित, भरा हुआ 'शाखाभिराक्रान्त-दिगन्तरालः।' (सुद० २/१५)

आक्रान्तिः (स्त्री०) [आ+क्रम्+क्तिन्] ०पराभूत, ०तिरस्कृत, ०बहिष्कृत, ०पराजित, ०ऊपर किया गया, ०आरोहण।

आक्राम् (अक०) आक्रमण करना, मारना, घात करना। 'आक्रामतश्चक्रपतेस्तुजं।' (जयो० ८/६८)

आक्रामकः (पुं०) [आ+क्रम्+ण्वुल्] आक्रमणकर्ता, प्रहारक, अभिघातक, विध्वंसक।

आक्रीडः (पुं०) [आ+क्रीड्+घञ्] ०खेल, ०क्रीड़ा, ०आमोद, ०प्रमदवन, ०उद्यान, ०आराम। रतेरिवाक्रीडधरौ भवेन। (जयो० १७/४५)

आक्रीडकः (पुं०) [आ+क्रीड्+घञ् स्वार्थे कन्] उद्यान, आरामगृह, बगीचा, उपवन, क्रीड़ा स्थल, विश्राम स्थान। (जयो० १५/२०)

आक्रीडधर (वि०) क्रीड़ा को धारण करने वाले, क्रीड़ा पर्वत। (जयो० १७/४५) रतेरिवाक्रीडधरौ स्म भातः। (सुद० पृ० १००)

आक्रीडनं (नपुं०) उद्यान, खेल स्थान। (जयो० १५/२०)

आक्रीडकद्रोर्निलयः (पुं०) उद्यान वृक्ष। (जयो० १५/२०)

आक्रुष्ट (भू० क० कृ०) [आ+क्रुश्+क्त] निन्दित, तिरस्कृत, अपमानित।

आक्रोश (पुं०) [आ+क्रुश्+घञ्] क्रोध, उच्च-रुदन, अभिशप्त। अधिक कोप, परीषह।

आक्लेदः (पुं०) [आ+क्लिद्+घञ्] ०गीलापन, ०आर्द्रता, ०सिञ्चित क्षेत्र।

आक्षद्यूतिक (वि०) १. जुएं से प्रभावित। २. द्यूत क्रीड़ा से युक्त।

आक्षपाटिकः (पुं०) [अक्षपट+ठक्] द्यूतक्रीड़ा का निर्णायक।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आक्षपाद (वि०) नैयायिक, तार्किक।

आक्षारः (पुं०) [आ+क्षर्+णिच्+घञ्] दोषारोपण, आक्षेप।

आक्षारणं (नपुं०) दोषारोपण, आक्षेप।

आक्षारित (वि०) कलंकित, दोषित, आक्षेपित।

आक्षिक (वि०) [अक्षेण दीव्यति जयति जितं वा-अक्ष+इक्] पांसों से खेलने वाला।

आक्षिप्तिका (स्त्री०) [आ+क्षिप्+क्त+टाप्] गायन विशेष, रंगमंचीय प्रस्तुतीकरण।

आक्षीव (वि०) [आ क्षीव्+क्त] उन्मत्त, शराबी, उन्मादी।

आक्षेपः (पुं०) [आ+क्षिप्+घञ्] १. दोषारोपण, कलंक, भर्त्सना, निन्दा, अपमान, अवज्ञा, अवहेलना। (जयो० वृ० २०/६२) २. प्रयुक्त करना, भरना, लगाना, कहना, पीछे हटना। (जयो० २०/६२)

आक्षेपक (वि०) निन्दक, दोषारोपक।

आक्षेपकः (पुं०) [आ+क्षिप्+ण्वुल्] फेंकने वाला, निन्दन, अपमानक।

आक्षेपणं (पुं०) [आ+क्षिप्+ल्युट्] फेंकना, उछालना।

आक्षेपिणी (पुं०) आक्षेपिणी कथा, दृष्टान्त युक्त कथा।

आक्षोटः (पुं०) [आ+अक्ष्+ओट्] अखरोट की लकड़ी।

आखः (पुं०) [आ+खन्+ड] फावड़ा, खुर्पा।

आखण्डलः (पुं०) [आखण्डयति भेदयति पर्वतान्-आ+खण्ड+डलच्] १. इन्द्र (जयो० १/२५) (दयो० १०८)

आखनिक (वि०) [आ+खन्+इकन्] खनिक, खोदने वाला।

आखनिकः (पुं०) [आ+खन्+इकन्] चूहा, मूषक, सुअर, चोर, कुदाल।

आखरः (पुं०) [आखन्+डर] फावड़ा।

आखातः (पुं०) जलाशय, तालाब।

आखानः (पुं०) कुदाल, फावड़ा।

आखुः (पुं०) [आ+खन्+कु+डिच्च] १. मूषक, ०चूहा, छछूंदर। (सुद०) 'आखुः प्रवृत्तौ न कदापि तुल्यः।' (वीरो० १७/३४) (वीरो० १/१९, १७/३०) २. चोर, ३. फावड़ा, ४. सुअर।

आखेटः (पुं०) [आखिद्यन्ते त्रास्यन्ते प्राणिनोऽत्र] [आ+खिद्+घञ्] शिकार, पीछा करना, अनुगच्छन। (जयो० वृ० २/३४) मृगया।

आखेटक (वि०) [आखेट+कन्] शिकार करने वाला।

आखेटकः (पुं०) शिकारी।

आखेटिकः (पुं०) [आखेटे कुशल+ठक्] शिकारी, शिकारी कुत्ता।

आखोटः (पुं०) [आखः खनित्रमिव जटानि पर्णानि अस्य। अखरोट का वृक्ष।

आख्यः (पुं०) १. नाम, अभिधान (जयो० वृ० १/२) १. कथन। (जयो० १/४, सम्य० ९) ३. विशेषण रूप में संयुक्त होने पर इसका नाम वाला, नामधारी।

आख्यात (भू० क० कृ०) [आ+ख्या+क्त] (जयो० ३/३६) धर्म एवाद्य अख्यातः (सुद० ४/४०) कथित, भाषित, प्रतिपादित, निरूपित। (वीरो० १४/५)

आख्यात कुलप्रतीतिः (स्त्री०) कुल प्रसिद्धि का निरूपण। कोल्लागवासी भुवि वारुणीति माता द्विजाऽऽख्यात कुलप्रतीतिः।

आख्यातिः (स्त्री०) [आ+ख्या+क्तिन्] प्रकाशन, कथन, प्रतिपादन, प्ररूपण। मृदुसुक्तात्मकताख्याति-सुद० १२२, जयो० २७/२२।

आख्यानं (नपुं०) कथन, निरूपण, प्रतिपादन। चतुराख्यानेष्व-भ्यनुयोक्त्री। (सुद० पृ० १२२)

आख्यानकं (नपुं०) [आ+ख्या+ल्युट्] निरूपण कथन, प्रतिपादन, विवेचन।

आख्यनकः (पुं०) कथानक, कथांश।

आख्यायक (वि०) [आ+ख्या+ण्वुल्] निरूपण करने वाला, प्रतिपादक, विवेचक।

आख्यायकः (पुं०) दूत, संदेशवाक।

आख्यायि (वि०) कथा (जयो० पृ० १/६)

आख्यायिका (स्त्री०) [आख्यायक+टाप्] कथा, कहानी, गद्यांश प्रस्तुति, गद्य कथा रचना, वार्ता। (जयो० पृ० १/३९)

आख्यायिन् (वि०) [आ+ख्या+णिनि] सूचित, प्ररूपित, संदेशित, प्रतिपादित। (जयो० वृ० १/६)

आख्येय (सं०कृ०) [आ+ख्या+यत्] कहकर, प्रतिपादितकर, निरूपित कर।

आग (वि०) पाप, घृणा। प्रकाशि यावत्तु तयाऽथवाऽऽगः। (सुद० १०१)

आगत (वि०) समागत, आया हुआ, प्राप्त, सम्प्राप्त। (५/८८) उपलब्ध। (सुद० पृ० ७८) पृतनापतिपार्श्वमागतः। (जयो० १३/६९) आगतानुपचचार विशेषमेष। (जयो० ५/६)

आगतवान् (वि०) आया हुआ, प्राप्त हुआ। (जयो० १/८१)

आगत-समीरणं (नपुं०) आई हुई मंद-मंद पवन। मंदमंदरूपेण-गतेन समीरणेन। (जयो० १४/२)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आगति (स्त्री०) [आ+गम्+क्तिन्] १. अन्य गति से इच्छित गति में आना। २. उद्गम, अधिग्रहण, उपगम, प्राप्त।

आगतोकृत् (वि०) अभ्यागत उपकार, अतिथि सत्कार। (जयो० २१/२३)

आगन्तु (वि०) [आ+गम्+तुन्] १. आने वाला, पहुंचने वाला। २. नैमित्तिक, आनुषंगिक, आकस्मिक।

आगन्तुक (वि०) आने वाला, आया हुआ, सोत्सुक आगत। (जयो० वृ० ३/२८)

आगम् (सक०) [आ+गम्] आना, पहुंचना, जाना, प्राप्त अवागामिष्यमेवं चेदागमिष्यं न किं स्वयम्। (सुद० ७७) **किमिहाऽऽगत्य** स्थितः किं तया। (सुद० ९८) स्वयमेवाऽऽजगामाली। (सुद० ३/४३) आगच्छताऽऽगच्छत भो। (सुद० ५/पृ० ६९) कालः पुनर्द्वापर आजगाम्। (वीरो० १८/४)

आगमः (पुं०) [आ+गम्+घञ्] आना, प्राप्त होना, समागत, अधिग्रहण, दर्शन।

आगमः (पुं०) निर्दोष शिक्षण। (सम्य० ९२) परम्परा से आगत शिक्षा। सर्वत्र देवागमगुर्वभिज्ञः। (९२)

आगमः (पुं०) १. आप्तवचन, ०वीतरागवचन, ०श्रुत, ०सिद्धान्त, ०प्रवचन, ०निरूपण, ०आख्यान ०प्रतिपादन, ०प्ररूपणा, उपादेय तत्त्व ख्यापक। 'आगम्यन्ते परिच्छिद्यन्ते अर्था अनेनेत्यागमः।' (जयो० २/८५) आप्त-व्याहृति, तत्त्वोपदेशकृत शास्त्र। २. दार्शनिक प्रतिपादन में साधन भूत प्रमाण, आगम प्रमाण। (जयो० २६/९९) युक्त्यागमाभ्यामविरुद्धकोप! (जयो० २६/९९)

आगमद्रव्यं (नपुं०) विवक्षित ज्ञाता।

आगमद्रव्यकर्मन् (नपुं०) कर्मागम का ज्ञाता।

आगमद्रव्यकालः (पुं०) कालविषयक ज्ञाता।

आगमनं (नपुं०) [आ+गम्+ल्युट्] आना, पहुंचना, प्रस्थान, अधिग्रहण। (जयो० १/७८)

आगमनसंदेशः (पुं०) अधिग्रहण सूचना। (जयो० वृ० १/७८)

आगमाश्रयः (पुं०) आगम का आधार। (हित० सं० ३)

आगमसिद्धिः (पुं०) आगम प्रमाणित।

आगमिन् (वि०) [आगम+णिनि] आने वाला। निकटस्थ पहुंचने वाला।

आगमोक्तपथः (पुं०) शास्त्रकथितमार्ग। आगमोक्तपथतो यथापदं सावधानक उपैति सम्पदम्। (जयो० २/८५)

आगमोपलब्धिः (स्त्री०) आगम कथित अक्षर लाभ।

आगमोल्लंघनं (नपुं०) आगम का उल्लंघन/अतिक्रमण। (भक्ति० ३९)

आगस् (नपुं०) [इ+असुन्+आगादेशः] दोष, अपराध, पाप, बुरा, निन्दनीय। आगस्त्यक्तोऽस्मि संसारसागरश्चुलुकायते। (जयो० १/१०३) समुपभान्ति लवा अथवागसः। (जयो० १/९२) आगसः पापस्य लवा अंशा। (१/९२) आगसाम् अपराधानाम्। (जयो० वृ० ३/१२) आगसाम् अपराधानां निधिः स्थानम्। (जयो० वृ० २/८४)

आगस्ती (स्त्री०) दक्षिण दिशा।

आगस्त्य (वि०) दक्षिणी, दक्षिण प्रान्त वाला।

आगाध (वि०) [अगाध एव स्वार्थे अण्] अधिक गहरा, अथाह।

आगामिक (वि०) [आगम+ठण्] अतीत। (सम्य० ९१) भविष्यत्कालीन, आगे वाली, भावी। (जयो० वृ० २७/६६)

आगमी देखो आगमिक।

आगामुक (वि०) [आ+गम्+उकञ्] आने वाला, पहुंचने वाला।

आगारं (नपुं०) [आगमृच्छति+ऋ+अण्] घर, आवास, निवास, स्थल, स्थान, रुकने का स्थान। (वीरो० २७/१८)

आगारवर्तिन् (वि०) घर में रहने वाला। (वीरो० २२/४)

आगारवर्तिन् (पुं०) श्रावक। (वीरो० २२/१९)

आगुर् (स्त्री०) [आ+गुर्+क्विप्] स्वीकृति, सहमति, प्रतिज्ञा।

आगू (स्त्री०) सहमति, स्वीकृति।

आगोहर (वि०) पापनाशक। (जयो० ८/९४)

आग्निक (वि०) अग्नि से सम्बन्ध रखने वाला, यज्ञकर्ता।

आग्नेय (वि०) अग्नि से सम्बन्ध रखने, प्रचण्ड, आज्वल्यमान। आग्नेय अस्त्र।

आग्रहः (पुं०) [आ+ग्रह+अच्] अभिनिवेश, प्रयत्न, निवेदन, कृपा, दृढ़ता। (जयो० वृ० ६/२)

आग्रहधर (वि०) प्रयत्नशील, उतावली। युग्यसंयुतयुगा अथो रथा गन्तुमाग्रहधराः सता पथा। (जयो० २१/२)

आग्रह हाव-भाव-धात्री (वि०) आग्रह हाव एवं भाव को धारण करने वाली। (जयो० १२/२१) आग्रहश्च हावश्च भावश्च तेषां धात्री। (जयो० वृ० १२/२१)

आग्रहायणः (पुं०) मार्ग शीर्ष का माह।

आग्राहारिक (वि०) दान दी जाने वाली।

आघट्टना (स्त्री०) [आ+घट्ट्+णिच्+युच्+टाप्] कांपना, हिलना, घर्षण।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आघर्षः (पुं०) [आ+घृष्+घञ्] ०मर्दन, ०मालिश, ०उपटन, ०संमार्जन, ०प्रमार्जन।

आघाटः (पुं०) [आ+हन्+घञ्] सीमा, परिधि, परिकर, परिषद।

आघातः (पुं०) [आ+हन्+घञ्] प्रहार, चोट, मारना, घायल करना, दुःख पहुंचना।

आघारः (पुं०) [आ+घृ+घञ्] सिञ्चन, आर्द्रीकरण।

आघूर्णनं (नपुं०) [आ+घूर्ण+ल्युट्] ०लोटना, ०घूमना, ०परिभ्रमण करना, ०परिवर्तन करना, ०उछालना।

आघोषः (पुं०) [आ+घुष्+घञ्] आह्वानन, आहूत, बुलाना।

आघोषणं (नपुं०) उद्घोषणा, हिंडोरा, शब्द करना, संकेत करना।

आघ्राणं (नपुं०) [आ+घ्रा+ल्युट्] सूंघना, सुगंध लेना। २. तृप्ति, संतोष।

आख्य (वि०) कथित, प्रतिपादित। (सम्य० १०२)

आङ्गणं (नपुं०) आंगन, गृह का खुला चौक। क्षणं संशोच्याऽऽङ्गणतो बहिव्रर्जत्।

आङ्घ्री (स्त्री०) चरण (जयो० वृ० १/५) (दयो० पृ० १६७)

आङ्गारं (नपुं०) [आङ्गाराणां समूहः-अण्] अंगारों का समूह।

आङ्गिक (वि०) शारीरिक, कायिक, शरीर सम्बन्धी।

आङ्गिरसः (पुं०) [अंगिरस्+अण्] बृहस्पति।

आङ्गोपाङ्ग (पुं०) अङ्ग एवं उपाङ्ग। यावत्तावदेवाङ्गोपाङ्गानि तानयित्वा। (दयो० पृ० ९५)

आचक्षुस् (पुं०) [आ+चक्ष्+उसि वा] प्रज्ञ पुरुष, ज्ञानी पुरुष।

आचमः (पुं०) [आ+चम्+घञ्] कुल्ला करना, हथेली में जल लेकर पान करना, आचमन करना।

आचमनं (नपुं०) कुल्ला करना, हथेली में जल लेकर पान करना।

आचमनकं (नपुं०) पीक दान, थूकदान।

आचारभृष्ट (वि०) आचरण/संयम से पतित।

आचयः (पुं०) [आ+चि+अच्] इकट्ठा करना, बीनना, एकत्रित करना।

आचर् (अक०) आचरण करना, अभ्यास करना, पालना। (जयो० २/८, २/७०) (वीरो० ५/७) स्त्रीरूपं न विलोकयेत्र च तथा संलापमेवाचरेत्। (मुनि० ३)

आचरणं (नपुं०) अभ्यास करना, अनुकरण करना, २. चाल-चलन, व्यवहार, अनुष्ठान। (जयो० वृ० १/१३) आवश्यक कर्त्तव्य, मर्यादा, सीमा। चारित्रमिन्द्रियनिरोधादिलक्षणम्। (जयो० पृ० १०/८४) सन्निवेद्य च कुलङ्करैः कुलान्वित-दाचरणमिङ्गितं बलात्। (जयो० २/८) अधीत- बोधाचरण प्रचारैः। (जयो० १/१३) आचरणमनुष्ठानम्। (जयो० पृ० १/१३)

आचरणशास्त्रं (नपुं०) आचारशास्त्र, इसे आचार्य ज्ञानसागर ने वृत्तशास्त्र भी कहा है। (वीरो० १/२६)

आचरित (वि०) १. आचरण किया गया, २. आचरित दोष, वसतिका, उद्गम दोष। तच्च-कुट्टी कटकादिकं दूर देशादानीतमाचरितम्। (भ० आ० टी० २३०)

आचान्त (वि०) [आ+चम्+क्त] आचमन के योग्य।

आचामः (पुं०) [आ+चम्+घञ्] आचमन, कुल्ला।

आचारः (पुं०) १. व्यवहार, चाल-चलन, प्रथा, परम्परा। आचारव्यवहारवतो-(जयो० वृ० १८/१६) आचारे व्यवहारे च चुल्लावक्षः समिष्यते इति विश्वलोचनः।
२. आचारांग-आगम आचरणमाचारः, आर्चयत इति
३.आचारः। आचार-गुण विशेष के लिए प्रयुक्त-(सम्य० ९८) चरन्ति चाचारमिषुप्रकारम्। (भक्ति पृ० १६) आचारे चर्याविधानं शुद्ध्यष्टक-पञ्चसमिति- त्रिगुप्तिविकल्पं कथ्यते। (धव० ९/२७) आचरन्ति समन्ततोऽनुतिष्ठन्ति मोक्षमार्गमाराधयन्ति अस्मिन्ननेनेति वा आचारः। (गो०जीव०३५६)

आचारः (पुं०) मुरब्बा, संधान, आमादिक अचार। (हित०४६)

आचारगुणः (पुं०) सदाचार गुण, व्यवहार गुण।

आचारगृहं (नपुं०) सद्व्यवहार गृह, ०आश्रम, ०उपाश्रय।

आचरणं (नपुं०) आचरण। (सम्य० १५५) ०योग्य चरण, ०समीचीन व्यवाहार

अचारपथः (पुं०) आचारमार्ग,)आनुपूर्वी मार्ग।

आचारभावः (पुं०) आचरण परिणाम, अनुष्ठान भाव।

आचमनक्रिया (स्त्री०) चलने की क्रिया। (वीरो० २२/१६)

आचारमार्गः (पुं०) व्यवहारमार्ग।

आचारवर (वि०) आचरण में श्रेष्ठ, आचरण को धारण करने वाले। इत्युक्तामाचारवरं दधानः। (सुद० ११८)

आचारवान् (वि०) आचरण करने, कराने वाला।

आचारविनयः (पुं०) समाचारी का गुण, संयम स्थान का विशेष गुण, ०श्रमण का विशेष गुण।

आचाराङ्गः (पुं०) आचाराङ्ग आगम, प्रथम श्रुत, प्रथम अङ्ग ग्रन्थ।

आचारिक (वि०) [आचार+ठक्] नियम पालक।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आचार्यः (पुं०) [आ+चर्+ण्यत्] १. संघ नायक, अध्यात्म के पद पर प्रतिष्ठित गुरु, (जयो० वृ० १/२) २. पञ्च परमेष्ठियों में तृतीय स्थान। ३. पञ्चाचार से पूर्ण, पंचेन्द्रिय दान्त, धीर, वीर गुणों में गम्भीर, नाना गुण से युक्त। आचरन्ति तस्माद् व्रतानीत्याचार्यः। (स० सि० ९/२२४) पृथक्तयं सारतयाभ्युदारं, चरन्ति चाचारमिपुप्रकारम्। आचारयन्तोऽत्र यतींश्च शेषान्, सङ्घस्य ते सन्तु मुदे गणेशाः।। (भक्ति० १०)

आचार्यता (वि०) आचार्यपना, आचार्यगुणयुक्त, आचार्य के गुणों वाला (वीरो० १४/१३) आचार्यतां बुद्धिधरेषु याताः। (वीरो० १४/१३)

आचार्यपदः (पुं०) आचार्य का पद। (वीरो० १७/२०)

आचार्यभक्तिः (स्त्री०) आचार्य की भक्ति, भावविशुद्धियुक्त भक्ति (भक्ति १०) 'आचार्येषु भावविशुद्धियुक्तनुराग आचार्यभक्तिः (स० सि० ६/२४, त० वा० ६/२४)

आचार्यवर्णः (पुं०) आचार्य प्रशंसा।

आचलित (वि०) उत्सुक, चलायमान। त्वाचमाचलितचित्त इवारात्। (जयो० ४/६) आसमन्ताच्चलितं (जयो० वृ० ४/६)

आचलित-चित्तं (नपुं०) चंचल चित्त, विक्षिप्त उत्साह युक्त मन। (जयो० ४/६) 'आसमन्ताच्चलितं चित्तं यस्य स आचलितचित्तो!' (जयो० वृ० ४/६)

आचीर्णः (पुं०) आहार दोष। (मूला०वृ० ६/२०)

आचलेक्य (वि०) निर्ग्रन्थपना, दिगम्बर रूपता। (जयो० वृ० १/२२)

आचेलक्य (वि०) दिगम्बरत्व, निर्ग्रन्थता, सकलपरिग्रहत्याग। सकलपरिग्रहत्याग अचेलक्यम्। (भ० आ० टी० ४२१)

आच्छपाषाणः (पुं०) स्फटिक मणि, स्फटिक पत्थर। (जयो० वृ० १२/११६)

आच्छादः (पुं०) [आ+छद्+णिच्+घञ्] वस्त्र, कपड़ा, पहनने का परिधान।

आच्छादयत् (भू०) संवृतञ्चकार, ढंक लिया, आवृत किया। (जयो० ४/२९) आच्छादयत्तावदुपेत्य वक्रम्।

आच्छादनं (नपुं०) [आ+छद्+णिच्+ल्युट्] आंख-मिचौली, छिपाना, ढकना, आवृत्त करना। तमोवगुश्ठातिमता (जयो० १५/५०)

आच्छादयन् (सं०कृ०) ढंककर, आवृत्तकर। वस्त्रेणाऽऽच्छाद्य निर्माप्य। (सुद० ९४)

आच्छुरित (वि०) [आ+छुर्+क्त] मिला गया, खुरचा गया, खुजलाया गया।

आच्छेदः (पुं०) [आ+छिद्+घञ्] काटना, छेदना।

आच्छेद्य (त्रि०) भयभीत करके दान देना संयत का दोष। परकीयं यद्दीयते तदाच्छेद्यम्। (भ० आ० टी० २३०)

आच्छोदनं (नपुं०) [आ+छिद्+ल्युट्] शिकार करना, अनुगमन करना।

आजकं (नपुं०) बकरों का झुण्ड।

आजगवं (नपुं०) शिव-धनुष।

आजननं (नपुं०) [आ+जन्+ल्युट्] प्रसिद्धकुल, ख्यातकुलः।

आजन्म (वि०) उत्पत्तिकालादद्यावधि उत्पत्ति से अब तक। (जयो० १३/२२)

आजानुबाहु (पुं०) घुटने तक बाहु (वीरो० ३/११) लम्बी भुजाएं।

आजिः (स्त्री०) युद्धभूमि, रणक्षेत्र, रणस्थल, समरस्थान, युद्धस्थान। चाजिः प्रतता सतीकैः। (जयो० ८/३७) आजिषु तल्करवालैः (जयो० ६/८०) आजिषु/रणभूमिषु।

आजिर्युद्धः (पुं०) रणभूमि। (जयो० १/

आजीवः (पुं०) [आ+जीव्+घञ्] १. आजीविका, वृत्ति, व्यापार, २. आजीव नामक दोष जाति, कुल गण, कर्म और शिल्प इस प्रकार पांच आजीव हैं।

आजीवकुशीलः (पुं०) अपनी जाति को प्रकट कर भिक्षाचर्या करना। (भ० आ० टी० १९५०)

आजीवनं (नपुं०) आजीविका, व्यापार, व्यवसाय, वृत्ति। आजीवनं यन्निगदाभि नाम तदङ्गभृज्जीवननाशधाम। (दयो० ३५)

आजीवनदायिनी (वि०) प्राणप्रदा, जीवनदायक, आजीविका प्रदायक।

आजीविका (स्त्री०) आय, व्यापार, वृत्ति।

कला बहत्तर पुरुष की उनमें दो सरदार।

प्रथम जीव की जीविका, दूजो जीव उद्धार।।

आजीविका (स्त्री०) वृत्ति, व्यापार। (दयो० ३५)

आजुहाव (भू०) मन्त्रयतिस्म, आमंत्रित किया, प्रकट किया। (जयो० २२/६) नवधान्यस्य मुदं सौभाग्यमाजुहाव सहजेन हि राज्ञः।।

आजू (स्त्री०) व्यर्थ, बेकार, परिश्रम रहित।

आज्यं (नपुं०) घृत। पात्रस्थितमाज्यं घृतम्। (जयो० १२/११७) यदमत्रगतं बुभुक्षराज्यं।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आज्ञा (स्त्री०) [आ+ज्ञा+अङ्+टाप्] (सुद० १२) आदेश, अनुमति, अनुज्ञा, शासन। (जयो० ३/७३) तदधीशाज्ञया-ऽऽयात:। (जयो० ३/३)

आज्ञाकर (वि०) आज्ञा पालक, आज्ञा मानने वाला।

आज्ञाकारिन् (वि०) आज्ञा मानने वाला, अनुचर। (जयो० वृ० ६/१०)

आज्ञापनं (नपुं०) [आ+ज्ञा+णिच्+ल्युट्] शासन, अनुमति, आदेश, इङ्गित, संकेत। (जयो० ५/३८)

आज्ञाकारिन् (वि०) आज्ञा मानने वाला, अनुशासन युक्त (वीरो० १/३८)

आज्ञात (वि०) अनुभूत, अनुभव जन्य। 'नाज्ञातमाज्ञातरणोत्थशर्म।' (जयो० ८/१३)

आज्ञारुचि: (स्त्री०) सर्वज्ञ के प्रति श्रद्धा।

आज्ञाविचय: (नपुं०) आगमानुसार चिन्तन, आगमानुकूल विचार, धर्मध्यान का एक भेद, निजात्मा में लीन। जिनाभ्यनुज्ञातनुभागपाय, विपाकसंस्थानचयाय धर्म्यम्। (सम्० ८/३१) 'श्रद्धानादर्थावधारणमाज्ञाविचय:।' (स० सि० ९/३६) 'सर्वज्ञाज्ञाप्रकाशनार्थत्वादाज्ञाविचय:।' (भ०आ० १७०८)

आज्ञानुसारिणी (वि०) १. आज्ञा के अनुसार चलने वाली अनुचरी, आज्ञाशीला। (दयो० ११२) २. छन्दोनुगामिनी। (जयो० वृ० २७/२) छन्दोऽनुग। विरुद्धवृत्तौरुपमेति लोकश्छन्दोऽनुगे तन्निदर्शनीक:। आच्छादन को अवगुण्ठन भी कहते हैं। अवगुण्ठनमाच्छादनम् (जयो० वृ० १५/५०) तत्र तल्पे नभ: कल्पे घनाच्छादनमन्तरा। (सुद० ७८)

आञ्जनं (नपुं०) [आ+अञ्ज्+ल्युट्] सींग, शस्त्र विशेष।

आञ्छ (अक०) लम्बा करना, विस्तार करना, बढ़ाना।

आञ्छनं (नपुं०) [आञ्छ्+ल्युट्] ठीक बैठना, एक सा होना।

आञ्जनं (पुं०) अञ्जन।

आञ्जन: (पुं०) मारुति, हनुमान।

आञ्जनी (स्त्री०) अञ्जन, मरहम, सुरमा।

आञ्जनेय: (पुं०) मारुति, हनुमान, पवनपुत्र।

आटविक: [अटव्यां चरति भवो वा] वनवासी।

आटि: (स्त्री०) पक्षी विशेष।

आटीकनं (नपुं०) [आटीक्+ल्युट्] बछड़े की उछल कूंद।

आटीकर: (पुं०) [आ+कृ+अप्] सांड।

आटोप: (पुं०) [आ+तुप्+घञ्] अहंकार, अभिमान, गर्व।

आडम्बर: (पुं०) [आ+डम्ब+अरन्] दिखावा, परिग्रह, सम्पत्ति

आम्बरिन् (पुं०) [आ+डम्बर+इनि] संपत्ति वाला, अभिमानी।

आढक: (पुं०) [आ+ढौक्+घञ्] माप विशेष, जिससे धान्य मापा जाए।

आढ्य (वि०) १. सम्पन्न, पूर्ण, २. धनी।

आढ्यङ्करण (वि०) सम्पन्नता युक्त।

आढ्यता (वि०) परिपूर्णता, सम्पन्नता। भयाढ्यतामभ्युपगम्य शिष्टा:। (जयो० १७/१) सर्वे युवानो रहसि प्रविष्टा:।

आण: (पुं०) शब्द, स्वर, आवाज। सुष्ठ पस्य पवनस्याण: शब्दो यत्र। (जयो० वृ० २७/७)

आणक (वि०) १. शब्द युक्त, आवाज रहित। २. नीच अधम।

आणव (वि०) अत्यन्त छोटा।

आणि: (पुं०स्त्री०) [अण+इणि] धुरे की कील, अक्षकील। १. घुटने के ऊपर का भाग, २. सीमा, परिधि। ३. तलवार की धार।

आण्ड (वि०) [अण्डे+भव: अण्] अण्डे से पैदा होने वाला।

आण्डीर (वि०) [आण्डमस्ति अस्य-ईरच्] १. वयस्क, युवावस्था वाला। २. अण्डेधारी।

आत: (पुं०) आघात, घात, हानि। (सुद० ४/२६) काष्ठसङ्घाततो मृत्युं मन्त्रस्मरणपूर्वकम्।

आतङ्क: (पुं०) [आ+तङ्क+घञ्] ०रोग, ०व्याधि, ०पीड़ा, ०कष्ट, ०व्यथा, ०वेदना, ०भय, ०त्रास, ०दु:ख: जन्मातङ्कजरादित: स। (जयो० २५/८७)

आतञ्चनं (आ+तञ्च्+ल्युट्) १. गाढ़ा दूध, छांछ। २. वेग गति।

आतत (वि०) [आ+तन्+क्त] विस्तृत, फैला हुआ, प्रसरित।

आततायिन् (वि०) १. साहसी, बलिष्ट, २. अत्याचारी, आतंक फैलाने वाला हत्यारा। 'आततेन विस्तीर्णेन शस्त्रादिना अयितुं शीलमस्य'

आतप: (पुं०) १. गर्मी, उष्णता। २. प्रचण्ड, प्रकाश। 'न पूज्यो महात्माऽतपदेकतान।' (सुद० ११८)

आतपत्रं (नपुं०) छाता, छत्र। (जयो० १६/१५)

आतपनं (नपुं०) गर्मी, प्रकाश।

आतपलङ्घनं (नपुं०) लू में रहना।

आतप-वारणं (नपुं०) छत्र, छाता। त्रितयं चातपवारणोक्तमेतत्। (जयो० १२/६)

आतप-विनाशि (वि०) गर्मी नाशक।

आतविनाशिन् (वि०) संताप विनाशिनी, दु:ख विध्वंसिनी। (सुद०) अन्धकार शील ०प्रकाश से रहित।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आतापः (पुं०) [आ+तप्+घञ्] १. सन्ताप, दुःख, कष्ट, पीड़ित। (भक्ति० २४) २. गर्मी, उष्णता, तपन।

आतापिन् (वि०) [आ+तप्+णिनि] १. संतप्त किया गया। (पुं०) पक्षी विशेष, गृद्ध, चील।

आतिथेय (वि०) [अतिथिषु साधुः—ढञ् अतिथये इदं ढक् वा] अतिथियों के अनुकूल, अतिथि सत्कार। 'आतिथेयेन विलसन्ती करुणा येषां ते तेषामातिथेय। ' (जयो० ५/२९)

आतिथ्य (वि०) [अतिथि ष्यञ्] सत्कारशील, अतिथि सत्कार। 'आतिथ्ये वस्त्रुटिरिव तु नः।' (जयो० १२/१३६)

आतिथ्यविधिः (स्त्री०) अतिथि सत्कार, सत्कारशील विधि। तासां किलाऽऽतिथ्यविधौ नरेश। (वीरो० ५/२)

आतिथ्यविधानं (नपुं०) अतिथि सत्कार, स्वागताचरण। पतिं यतीनां समृतिं प्रतीक्ष्य तदा तदातिथ्य-विधानदीक्षम्। (जयो० १/८०)

आतिथ्यरूपः (पुं०) अतिथि सत्कार। (दयो० २४)

आतिथ्यसत्कारः (पुं०) स्वागताचरण, अतिथि सेवा, अतिथि सम्मान। सुदर्शनपिताऽप्यत्राऽऽतिथ्यसत्कार तत्परः। (सुद० ३/४४)

आतिदेशिक (वि०) [अतिदेशः+ठक्] उपदेश से सम्बन्धित, अतिदेश से सम्बन्धित।

आतिरेक्यं (नपुं०) अधिकता, विशालता, अत्यधिक, बृहत्तर।

आतिशय्यं (नपुं०) [अतिशय+ष्यञ्] अतिशयता युक्त, विशालतम, बहुत्व परिणाम।

आतुः (स्त्री०) बेड़ा, बांसादि का बनाया गया बेरा, बाँड।

आतुलित (वि०) आगे-पीछे होने वाली। (वीरो० १९/१९)

आतुरः (वि०) [ईषदर्थे आ+अत्+उरच्] १. उत्कण्ठापूर्ण- पातुं नृगातुरतया तु न यातु कश्चिद्। (जयो० २७/६४)
२. कष्टानुभवी, कष्ट को अनुभव करने वाला-'तनये मन एतदातुरं तव।' (जयो० १३/९)
३. घायल, ०पीड़ित, ०दुःखी, ०त्रस्त, ०प्रभावित।
४. उत्सुक, ०तत्पर, ०सन्नद्ध, ०क्रियाशील।

आतुरः (पुं०) रोगी, व्याधिग्रस्त मनुष्य।

आतोद्यं (नपुं०) यन्त्र विशेष, वाद्य यन्त्र। (वीरो० २/३३)

आतोद्यनाद (पुं०) भेरी शब्द। वाद्यं वादित्रमातोद्यं काहलादि निरुच्यते इति विश्व०

आत्त (भू० क० कृ०) [आ+दा+क्त] ०समागत, ०प्राप्त, ०लब्ध, ०उपार्जित, ०आया हुआ, ०प्रतिगृहीत, ०स्वीकृत, ०अंगीकृत। जगाम मैरेयभृते त्वमत्र आघ्रातुमात्तप्रतिमेऽलिरत्र। (जयो० १६/४८) आत्तानां समागतानामलीनाम्। (वीरो० वृ० २/१२)

आत्त-कल्मष (वि०) मलिनता युक्त, पाप जन्य। तुरगा अपि ते रजस्वलावनि संपर्कत आत्तकल्मषाः। (जयो० २१/६५)

आत्तनयी (वि०) गृहीत, लिया गया, समागत। स्वयमिति यावदुपेत्य महीशः मरणार्थमस्यात्तनयी सः। (सुद० १०८)

आत्तमूर्ति (स्त्री०) साक्षात् प्रतिमा। (सुद० २/२४)

आत्तवरद (त्रि०) लाना, प्राप्त होना। आत्ता वरदा कन्या येन सा। (जयो० वृ० ३/११६)

आत्मक (वि०) [आत्मन्+कन्] ०स्वाभाविक, ०आत्मजन्य, ०स्वभाव स्वरूप।

आत्म-कर्त्तव्यः (पुं०) अपना कार्य। (दयो० ३२)

आत्म-कल्याण (नपुं०) आत्म कल्याण, अपना हित, निज रक्षा। (जयो० वृ० २/५०) निजहित।

आत्मकाम (वि०) परमात्मा इच्छुक, आत्म इच्छुक।

आत्मकारिणी (वि०) आदरकर्त्री, सम्मानदात्री। (जयो० ३/११)

आत्मकृत् (वि०) निजकृत, स्वकृत।

आत्मखेदी (त्रि०) दुःखी, मन से दुःखी। (वीरो० १६/८)

आत्मगत (वि०) मनोगत, अपने द्वारा उत्पन्न।

आत्मगुणी (वि०) ०स्वाभाविक गुणी, ०सहज स्वभावी। (हित० सं०पृ० १) ०विशुद्ध स्वभावी, ०आत्म परिणामी

आत्म-गेहं (नपुं०) मनः कुटीर। ममात्मनो गेहमेतत् मदीयं मनः कुटीरकं मनोरमत्वम्। (जयो० १/१०४)

आत्मगोत्रं (नपुं०) स्वकुल, निजकुल। (जयो० १/१३३)

आत्मज्ञ (वि०) आत्मज्ञानी, ०तत्त्वज्ञ, ०स्व स्वरूप ज्ञाता।

आत्मज्ञान (नपुं०) स्वज्ञान, निजज्ञान।

आत्म-ज्ञानी (वि०) स्वभाव जानकार।

आत्मचिन्तनं (नपुं०) स्वकीय ध्यान, आत्मध्यान। (जयो० २२/८६)

आत्मज् (पुं०) पुत्र, तनय, सुत। दक्षिणगवेचरात्मजांस्तु सती। (जयो० ६/६)

आत्मजम्मन् (पुं०) पुत्र, तनय, सुत।

आत्मतम (वि०) स्वकीय ज्ञान (भक्ति० ३) ०आत्म बोध।

आत्म-तत्त्वं (त्रि०) स्वभावलीनता, अपनी समाधि (जयो० १/१)

आत्म-त्यागः (नपुं०) निज कल्याण त्याग, स्वार्थ त्याग।

आत्मत्यागिन् (वि०) आत्मघाती, निज स्वरूप विध्वंसी।

आत्मत्राणं (नपुं०) आत्मरक्षा, स्वरक्षा, अपना हित।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आत्म-दर्शनं (नपुं०) निज दृष्टि, आत्म दर्शक, स्वभाव अवलोकन, ०स्वमत परिदर्शक।

आत्मदृष्टि (स्त्री०) आत्म दर्शन। (दयो० १००)

आत्म-द्रोहिन (वि०) अपने आपको पीड़ित करने वाला।

आत्मधीः (स्त्री०) स्वकीय बुद्धि। (सुद० १२७)

आत्मध्यान परायण (वि०) आत्म-स्वरूप चिंतन करने वाला। (सुद० १३३)

आत्मन् (पुं०) १. आत्मा, ०जीव, ०चैतन्य,
२. इव, ०निज, ०अपना, ०आत्मीय,
३. मन, बुद्धि। (सम्य० १३८, १३१)
४. आत्मा, ०परमात्मा, ०बहिरात्मा, अन्तरात्मा।
५. निज-स्वस्यात्मनोऽभ्युदयो यस्य। जीव आत्माऽनात्म-परिज्ञानमहितस्य। (सुद० पृ० १३३)
अपना-परमप्यनुगृह्णीयादात्मने पक्षपातवान्। (सुद० ४/४४) ज्ञानेनाद्याऽऽत्मनश्चिन्त (सुद० ४/३६)
आत्मा-सच्चिदानन्दमात्मानं ज्ञानी ज्ञात्वाऽङ्गतः पृथक्। (सुद० ४/११) तत्तत्सम्बन्धि चान्यच्च त्यक्त्वाऽऽत्मन्यनुरज्यते।। (सुद० ४/११)
स्व-सुस्थितिं समयरीतिमात्मनः सङ्गतिं परिणतिं तथा जनः। (जयो० २/४७)
देहं यदात्वं बहिरात्मनामाऽन्तरात्मतामेति विवेकधामा। विभिद्य देहात्परमात्मतत्त्वं प्राप्नोति सद्योऽस्तकलङ्कसत्त्वम्।। (सुद० १३३) आत्मन्येवाऽऽत्मना। चिन्तयतोऽस्य धीमतः। (सुद० १३५) आदर्श इव तस्यात्मन्यखिलं बिम्बितं जगत्। (सुद० १३५) 'आत्मास्ति ज्ञानसम्पन्नोऽप्यभियुक्तोऽप्यनादितः। (हित० सं० १) आत्मने हितमुशन्ति निश्चयम्। (जयो० २/३)

आत्मनाथः (पुं०) प्राणेश्वर, प्राणप्रिय। (जयो० १२/१०)

आत्मनिन् (वि०) आत्महित युक्त। (सुद० ११९)

आत्मनीन् (वि०) आत्महितकारी, आत्मकल्याणकारी। (भक्ति० ४) स्वभावभूतं सुखमात्मनीनम्। (भक्ति० ४)

आत्मपथं (नपुं०) आत्ममार्ग। (वीरो० १६/१५) ०स्वपथ, ०कल्याणपथ।

आत्म-परिणामः (पुं०) आत्म स्वरूप, आत्म स्वभाव। (जयो० वृ० १/७४) ०निजभाव, ०आत्म भाव।

आत्मपुरुषः (पुं०) निज व्यक्ति, स्वकीय पुरुष। (मुनि० २९)

आत्मप्रतिष्ठ (वि०) आत्मनिष्ट, आत्माधीन। योगे नियोगेन मुनिः प्रवृत्त आत्मप्रविष्ठः खलु तन्निवृत्तः। (जयो० २७/१०) आत्मनि प्रतिष्ठा स्थितिर्यस्य सः।

आत्मप्रथा (स्त्री०) आत्मा की स्थिति। आत्मनः स्वस्य प्रथा। (जयो० २/११०)

आत्मप्रिया (स्त्री०) प्राणप्रिया। (वीरो० २२१/१९)

आत्म-फल (वि०) आत्म परिणाम, आत्म स्थिति।
उदीर्य कर्मनुदय-प्रणाशात्तदग्रतोबन्धविधेः समासात्। यथोत्तरं हीनतयानुभावादजन्ममृत्योरयमीक्षिता वा।। (समु० ८/१७) कर्मों के अभाव से जन्म-मृत्यु रहितपना की प्राप्ति आत्मा के प्रयत्न का फल है।

आत्मबलं (नपुं०) ०आत्मशक्ति, ०आत्मप्रभुत्व, ०आत्म तेजस्। (जयो० १/११३) बलमखिलं निष्फलं च तच्चेदात्मबलं नहि यस्य। (सुद० ७०)

आत्मभावः (पुं०) अन्तर्भाव, आत्मबुद्धि। (सम्य० ११/४५) ०आभ्यन्तर परिणाम, ०आत्मशक्ति।

आत्मभूः (पुं०) १. प्रज्ञ पुरुष, विद्वान्। २. ब्रह्मा, ब्रह्मदेव। मासि मासि सकलान्विधु बिम्बानात्मभूस्तिरयते श्रितडिम्बान्। आत्मभूः ब्रह्मा, यः खलु लोकैः सृष्टिकर्ता कथ्यते। (जयो० वृ० ५/२३)

आत्मभूत (वि०) आत्मने यो भूतो हितकरः। आत्म हितकारी। 'आत्मभूतनयताऽधिगमाय।' (जयो० १४/१)

आत्म-मानिन् (वि०) स्व उपयोगशाली। (जयो० २४/१२९)

आत्ममित्रमय (वि०) स्वकीय सखा वत्। (जयो० १/२३)

आत्ममुखं (नपुं०) अपना मुख, निजानन। (सुद० १२५)

आत्ममत्रि (वि०) स्वामात्य। (जयो० ३/६६) ०निजीय, आत्म दृष्टि युक्त।

आत्मयुत् (वि०) आत्म सहित।

आत्मयुक्तिः (स्त्री०) आत्म-उपाय। (जयो० १/१)

आत्म-रत (वि०) आत्मतल्लीनता।

आत्मति (स्त्री०) आत्म राग।

आत्मरमा (स्त्री०) प्राणप्रिया, मनोरमा। (सुद० ११३) एवं विचिन्तयन् गत्वा पुनरात्मरमां प्रति। (सुद० ११३)

आत्म-रश्मिः (स्त्री०) अक्षि किरण, आंख का प्रकाश। आत्मनः स्वस्य रश्मि अक्षिकिरण। (जयो० १०/११९)

आत्मरीतिः (स्त्री०) स्वकुलाचारनियम। सम्पठेत् प्रथमतो ह्युपासकाधीतिगीतिमुचितात्मरीतिकाम्। (जयो० २/४५)

आत्म-वञ्चित (वि०) आत्म वंचिता, निज ठगित, अपने आप ठगा गया। विश्व-विश्वसनमात्मवञ्चितिः। (जयो० २/५१) आत्मनो वञ्चितिर्वञ्चना भवति।

आत्मवत् (वि०) आत्म तुल्य, निजात्म स्वरूप। शवभूरात्मवता वितता। (सुद० ९२)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आत्म-वपु (नपुं०) अपना शरीर, स्वदेह।
आत्मनो वपुः शरीरं। । (जयो० १३/७३)

आत्मवश (वि०) जितेन्द्रिय, इन्द्रियजयी। (जयो० २/२३)
जगाम मोदेन युतो जिनस्य महालयं वन्दितुमात्म-वश्यः।

आत्मवादः (पुं०) आत्मकथन, चेतन विचार। ०स्वा-स्वरूप विवेचन।

आत्मविकासः (पुं०) अपना विकास, निज कल्याण।
धर्मेऽथात्मविकासे नैकस्यैवास्ति नियतमधिकारः।
योऽनुष्ठातुं यतते सम्भाल्यतमस्तु स उदारः। (वीरो० १७/४०)

आत्मविचारकेन्द्र (पुं०) अपने विचारों का केन्द्र 'आत्मा भवत्यात्म विचारकेन्द्रः' (वीरो० १८/५)

आत्म-विनाश (वि०) अपना अहित। कूपे निपत्य तेनात्मविनाशः। (दयो० ४७)

आत्मविदः (वि०) आत्मचिंतक।

आत्म-वेदी (वि०) आत्मवेत्ता, निज स्वरूप ज्ञाता। (सम्य० १०७/६९) प्रदोषतोऽस्मात् समुपैति खेदमिहायमस्यास्ति न चात्मवेदः। (जयो० २६/९६)

आत्मवेशित (वि०) आत्मजयी। ०आत्माधीन।

आत्म-संयमी (वि०) आत्माधीन, आत्मजयी। साम्प्रतमात्मसंयमी (समु० ४/२)

आत्म-सञ्जातिक (वि०) तन्मयता से युक्त। आत्मनः सञ्जातिकयोस्तन्मनसोऽपि (जयो० २४/७६)

आत्म-सदन (नपुं०) अपना घर, निज गृह।
अज्ञता हि जगतो विशोधने स्यादनात्म-सदन-बोधने। (जयो० २/४५) आत्मनः सदनं आत्मसदनं।

आत्म-समय (पुं०) आत्म भाव, आत्म स्वभाव, निजात्मसार।

आत्मसमयानुसारः (पुं०) देश कालानुसार। इत्थमात्म-समयानुसारतः। (जयो० २/१२२)

आत्मसाक्षिन् (वि०) निज साक्षात्, आत्म प्रतीति। (वीरो० ४/१४)

आत्मसात् (अव्य०) [आत्मन् साति] अपना जिन स्वरूप। झेलना। (वीरो० २२/२९) अपना बनाना, अनुकूल करना, आत्मधीन। आत्मसादुपनयन्निह भूपान्। (जयो० ५/१२) त्वं कृतावान् भूपमात्मसात्। (सुद० १३४) तूने राजा को अपने अनुकूल किया। दौरात्म्यमात्मसात् कुर्वन्नाह। (जयो० ७/१)

आत्म-साधन (नपुं०) आत्म ध्यान, आत्म तल्लीनता। (सुद० ११४) ददर्श योगीश्वरमात्मसाधनम्।

आत्मसारिन् (वि०) आत्म रहस्य वाला।

आत्मसुख (नपुं०) निजात्म सुख, स्व सुख, सहज सुख, इष्ट सुख। धन्यः स एवात्मसुखैकवस्तु। (सुद० ११७)

आत्मसुताः (पुं०) निजपुत्र। (वीरो० १७/३९)

आत्मस्फूर्तिः (स्त्री०) निज शक्ति, आत्मबल। जिनमूर्तिमात्मस्फूर्ति (सुद० ५/१)

आत्मशक्तिः (स्त्री०) आत्मोत्कर्ष, निजबल, स्वात्मोत्कर्ष। आत्मशक्त्या खलु मूर्तया तम्। (जयो० १/७०) यां वीक्ष्य वैनतेयस्य सर्पस्येव परस्य च। क्रूरता दूरतामञ्चेच्छूरता शक्तिरात्मनः।। (वीरो० १०/३२)

आत्महित (नपुं०) आत्म-कल्याण, आत्म रक्षा। (सम्य० ४२/२३) आत्मनो हितमात्महितम्। (जयो० २/४६)

आत्महित-भावना (स्त्री०) सन्मार्ग भावना, अपने कल्याण की इच्छा। (जयो० २/४८)

आत्मश्रीः (स्त्री०) आत्मशोभा, आत्म लक्ष्मी। (सुद० १/२३) विसर्गमात्मश्रियः ईहमानः।

आत्मार्थ (वि०) आत्म प्रयोजन। (दयो० ७)

आत्माधिपः (पुं०) राजन्, राजा। (जयो० १८/३६)

आत्माधीन (वि०) अपने आधीन, स्वाधीन। (मुनि २७)

आत्माङ्गीकरणं (नपुं०) अपना स्वीकार करना, अपना बनाना। (जयो० ६/१२३) आत्मनोऽङ्गीकरणस्याक्षराणाम्। (जयो० वृ० ६/१२३)

आत्मानुभव (वि०) आत्म अनुभूति जन्य। आत्मानं पश्यतोऽपि तस्य नान्यः कोऽपि बभूव दृशि यस्य। आत्मवत् सर्वभूतेषु य पश्यति स पण्डितः 'इति' (जयो० २२/२६) आत्मानं पश्यतः स्वात्मानुभवं कुर्वतः। (जयो० वृ० २२/२६)

आत्मानुसन्धानं (नपुं०) अपनी परितृप्त चित्तवृत्ति। (जयो० वृ० ६/९०) ०आत्म परिचय, ०आत्मावलोकन।

आत्मादरयुत (वि०) आत्म सम्मान सहित। आत्मनि स्वरूपे आदरयुतेन तल्लीनेन। (जयो० वृ० २८/२६) आत् अकारात्समारभ्य सकारे आदरयुतेन सम्पूर्णानामक्षराणां समक्षराणां क्षणः। (जयो० वृ० २८/२६)

आत्मानुभवकारिणी (वि०) आत्म बुद्धिशाली। (जयो० २७/४९)

आत्मानुभूति (स्त्री०) आत्म अनुभव।

आत्मानुरूप (नपुं०) आत्मा के अनुरूप, आत्मा अनुकूलता, अपने लिए अभीष्ट। (जयो० वृ० ३/६६)

आत्मापराधः (पुं०) अपने अपराध, स्वयं के अवगुण। "स्वेनानुष्ठितस्यापराधस्य दुष्कर्मणः।" (जयो० १५/९)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आत्मानुशासनं (नपुं०) आचार्य गुणभद्र की रचना, संस्कृत रचना।

आत्मिक (वि०) स्वात्म सम्बंधी, निजात्मक। (जयो० वृ०

आत्मिकसुखं (नपुं०) निजात्मानुभूति जन्य सुख। (मुनि० २६)

आत्मीय (वि०) स्वकीय, निजात्मक, आत्मिक, अपनी। 'इत्यात्मीयमलोत्कारं च भवतैकान्ते तथा त्यज्यताम्।।' (मुनि १३) आत्मीयमन्नेदथसन्निधानम्। (भक्ति० २९)

आत्मीयगुणं (नपुं०) निजात्मक भाव। (सुद० १२१)

आत्मीय-निन्दा (स्त्री०) ०अपनी गर्हा, ०अपनी निन्दा स्वकीय गुणों की आलोचना। (सुद० १२४)

आत्मीयपदं (नपुं०) निजात्मक पद, स्वकीय चरण। (वीरो० १/३) सुखज्ञनं संलभते प्रणश्यत्तमस्तयाऽऽत्मीयपदं समस्य। (वीरो० १/३)

आत्मीयभावः (पुं०) स्वकीय भाव, मैत्री भाव। सिंहो गजेनाखुरथौतुकेन वृकेण चाजो नकुलोऽहिजेन स्म स्नेहमासाद्य वसंति तत्र चात्मीय भावेन परेण सत्ता। (वीरो० १४/५१)

आत्मोपयोगः (पुं०) आत्म उपयोग, निज उपयोग। (जयो० १/ मुनि०)

आत्मैक कविः (पुं०) आत्मध्यानी/रवेरिवात्मैककवेरुदारभूतं स मुदोऽधिकारः। (समु० ६/३४)

आत्मोकर्षि (वि०) आत्म विस्तार। (जयो० १/६०) आत्मन उत्कर्ष आत्मोकर्ष। (धव० ७७३)

आत्मोपासित (वि०) आत्मा से उपासित, अपने निजभाव से आराधित। (मुनि० १) आत्मोपासितयैहिकेषु विषयेष्वाशाधुता साधुता। (मुनि० २)

आत्यंतिक (वि०) [अत्यन्त+ठन्] १. निरंतर, अबाध, प्रवाह युक्त, स्थायी, अनंत, २. मरण विशेष। ३. अत्यधिक, प्रचुर, सर्वाधिक। ४. सर्वोच्च, सम्पूर्ण, पूर्ण।

आत्ययिक (वि०) [अत्यय+ठक्] १. नाशकारी, घातक, विध्वसंक, विनाशक। २. पीड़ाजन्य, दुःख युक्त अशुभकारक, हानिकारक,

आत्रिक (वि०) ऐहिक, लौकिक। (जयो२/३९, २/९८)

आत्रिकस्थितिः (स्त्री०) अत्र भवा आत्रिकी स्थितिर्ययोस्तौ लौकिक सौख्यसम्पादकौ स्तः। (जयो० २/१०)

आत्रिकेष्ट (वि०) लौकिकेप्सित, लौकिक सफलता। (जयो० २/३९)

आत्रिकेष्टिनिरत (वि०) व्यावहारिक नीति से युक्त, गृहस्थ। (जयो० २/११)

आत्रेय (वि०) [अत्रि+ढक्] अत्रि का वंशज।

आत्रेय (पुं०) आर्यखण्ड का एक देश।

आत्रेयिका (स्त्री०) [आत्रेयी+कन्+टाप्] रजस्वला स्त्री।

आथर्वण (वि०) [अथर्वन्+अण्] अथर्ववेद ज्ञाता, अथर्ववेदी, अथर्वविद।

आथर्वणः (पुं०) अथर्ववेदध्यायी विप्र।

आदंशः (पुं०) [आ+दंश्+घञ्] डंक, घाव, दांत।

आदत्त (वि०) अप्रदत्त, बिना दी गई। न चादत्त मधाद्वृत्तिम्। (समु० ९/५) स हितस्करतां गतः।

आदरः (पुं०) [आ+दु+अप्] १. सम्मान, पूजाभाव, २. व्यन्तरदेव। २. **प्रीतिभाव** कोमुदादरपदाति शयायां, प्रेक्षिणी नतु नृणामुदितायाम्। हर्षसम्मान स्थानस्य। (जयो० वृ० ५/६७) नानुयोगसमयेष्विवादरः। (जयो० २/६४) क्षणादुरीरयन्नेवं करव्यापारमादरात्। (सुद० ७८)

आदरणं (नपुं०) ०आदर, ०सम्मान, ०सत्कार, ०सेवा ०पूजा। (जयो० वृ० १/१६)

आदरणविषय (नपुं०) सर्वोत्तम पूजनीय, ०भाव (जयो० १/१६)

आदरणीय (वि०) सम्माननीय, पूजनीय, अर्हयोग्य। वासनाभरणैरादरणीयाः सन्तु मूर्त्तयः किन्तु न हीयान्। (सुद० ७५)

आदरदा (वि०) प्रतिष्ठाप्रदायिनी, सम्मान देने वाली। 'नापि नाथ दरदाऽऽदरदा।'' (जयो० २०/२६) 'आदरं ददातीत्याद-रदा' (जयो० वृ१२०/२६)

आदर-भाव-कर्ता (वि०) सम्मान प्रकट करने वाला। प्रत्यादरस्य भावस्य प्रकटयिता। (जयो० १७/११)

आदरवादः (पुं०) नम्रवचन, पूज्यवाद, सम्माननीय वाणी। साम-दाम-विनयादर-वादैर्धामनाम च वितीर्य तदादैः। (जयो० ५/६)

आदरशालिनी (वि०) विनयान्वित, नम्रस्वभाविनी। (जयो० वृ० १२/३०)

आदरसात् (अव्य०) नम्रतापूर्वक, विनयगत। चक्रिसुतादींश्च रसाद् राजतुजो भूचरानथाऽऽदरसात्। (जयो० ६/१३)

आदरिणी (वि०) सम्मान प्रकट करती हुई, पूज्यभाविनी। (सुद० १२४) 'सम्प्राहाऽऽदरिणी गुणेषु।'

आदरी (वि०) समादरी, आदर योग्य। (सुद० १/५) यदादरी तच्छिशुको मुदेति।

आदरार्ह (वि०) समादर योग्य, पूज्य। (जयो० ५/१०४)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आदर्शः (पुं०) [आ+दृश्+घञ्] दर्पण, शीशा, आईना। आदर्श इव तस्यात्मन्यखिलं बिम्बितं जगत्। (सुद० १३५)

आदर्शः (पुं०) १. प्रशस्त, योग्य, उचित, प्रामाणिक। (सुद० ७६) २. छवि, अनुसरणस्थान। निजमादर्श इवाङ्गजन्मनि। (सुद० ३/८) आदर्शमङ्गुष्ठनखं च। (जयो० १/५७)

आदर्शतलं (नपुं०) दर्पण प्रान्त, दर्पण भाग। स्वमास्यमादर्शत-लेऽभिपश्यंस्तल्पोत्थितो नैश्यरहस्यमस्यन्। (जयो० २७/५०)

आदर्श-दर्शनं (नपुं०) अनुकरणीय दर्शन, उचित अवलोकन। 'आदर्शस्य अनुकरणीयस्य महर्षेर्दशनेऽवलोकने जाते सति।' (जयो० वृ० १/९१)

आदर्शनं (नपुं०) [आ+दृश्+ल्युट्] प्रदर्शन, दिखावा।

आदर्श-वर्त्मन् (पुं०) प्रशस्त मार्ग, अनुकरणीय पथ। (जयो० २/११९)

आदहनं (नपुं०) [आ+दह्+ल्युट्] १. जलन, तपन, २. पीड़ा, कष्ट, ३. प्रतिघात।

आदानं (नपुं०) [आ+दा+ल्युट्] १. लेना, स्वीकार करना, (सम्य० १९) ग्रहण करना, उठाना। (मुनि० १२), २. उपार्जन करना, ३. उच्चारण का पद, ४. समिति विशेष।

आदान-निक्षेपण-समिति (स्त्री०) ग्रहण एवं निक्षेपण में समभाव। साधु की क्रिया। जिसमें वह शस्त्र रखते, उठाते समय यत्नाभाव धारण करता है। रात्रेर्याम-निमित्तमासनमपि संशोधयेद्योगिराट् सूर्यास्तात्प्रथमं ततश्च तदसौ प्रातः प्रकाशेऽचिरात्। आदानेऽप्युपरक्षणेऽपि कुरुताद् ग्रंथादिकानां तथा, यत्नं यत्नवतो हि संवर इति प्राप्ताः प्रणीतेः पृथा।। (मुनि० १२) धर्मोपकरणानां ग्रहणं विसर्जनं प्रति यतनमादाननिक्षेपणसमितिः। (त० वा० ९/५)

आदानपदं (नपुं०) विवक्षा में जो पद दिया जाए, आगम अध्ययन का प्रारम्भिक पद। आदानपदं नाम आत्तद्रव्यनिबन्धनम्। (धवला १/७५)

आदानभयं (नपुं०) जो ग्रहण किया जाता है, इसके लिए भय। आदीयत इत्यादानम् इत्यर्थं चौरादिभ्यो यदुभयं तदादानभयम्।

आदासादित (वि०) प्राप्त, उपलब्ध, गृहीत। एतद् गुणानुवादादासादितसम्मदेव सा तनया। (जयो० ६/७०)

आदाय (सं०कृ०) लेकर, ग्रहणकर। (जयो० वृ० १/१९)

आदायिन् (वि०) [आ+दा+णिनि] ग्रहण करने वाला, प्राप्त करने वाला।

आदि (वि०) [आ+दा+कि] १. प्रारम्भ, (सम्य० ११०) प्रथम, ०प्राथमिक, ०पहला, २. प्रधान, प्रमुख। सुरादिरेवादियते मयाऽऽदौ। (सुद० २/१४) ०ग्रहण-ग्रहणम्यादौ परमो भविनोरभिविश्रम्भम्। (जयो० ११/११९)

आदि (पुं०) आदिनाथ, आदिब्रह्मा, नाभिराय पुत्र ऋषभ। श्री प्रजाकृति निरीक्षणे त्वतः। (जयो० ३/३) 'प्रातः काले आदिपुरुषस्य ऋषभ तीर्थंकरस्य पद-पद्माः। (जयो० वृ० ३/३)

आदिक (वि०) ०अन्तिम, ०प्रधान, ०प्रमुख, ०प्रारम्भिक (सुद० ३/३)

आदिकर (वि०) आदिकर्ता, ०प्रारम्भिक प्रतिपादन करने वाला।

आदिकविः (पुं०) आदिकवि, प्रथम कवि, ऋषभदेव।

आदिकाण्डं (नपुं०) प्रथमकाण्ड, प्रारंभकाण्ड।

आदिकरणं (नपुं०) प्रथम परिणाम।

आदिकाव्यं (नपुं०) प्रथम भाग, पहला हिस्सा।

आदिज (वि०) प्रथम वर्णोत्पन्न। अशिष्टमन्त्यजं स्पृष्ट्वा वर्णाः यस्तदादिमः। (जयो० २८/२०) "आदौ जकारो यस्य एतादृशो यः यकारोऽर्थात् जयः।" (जयो० वृ० २८/२०)

आदितः (अव्य०) [आदि+तसिल्] आरंभ से लेकर, सबसे पहले।

आदित्यः (पुं०) १. सूर्य, रवि, दिनकर। (२. देवता, ३. राजा, ४. लौकान्तिक देव। आदौ भव आदित्यः।

आदित्यगतिः (पुं०) राजा, पुण्डरीकिणी नगर के विजयार्ध पर्वत का एक राजा। (जयो० २३/५) तद्गत-खगसानुमति ह्यादित्यगतिर्नृपतिः। (जयो० २३/५)

आदित्यवारः (पुं०) रविवार, सूर्यवार। (जयो० १९/७२)

आदित्यवेगः (पुं०) धरणीतिलक नाम के नगर का राजा, जिसकी रानी सुलक्षणा थी। पत्तनम्य धरणीतिलकस्या-दित्यवेगनरपो विजयार्द्धे। (समु० ५/१७)

आदित्यसूक्तं (नपुं०) सूर्यस्तवन। आदित्यस्य सूर्यस्य सूक्तं स्तवनं विपदोपहतप्रकारः। (जयो० १८

आदिदेवः (पुं०) १. आदिब्रह्मा, आदिनाथ, आदिपुरुष, २. जैनधर्म के प्रथम प्रवर्तक ऋषभदेव, जो नाभिराय के पुत्र थे। (जयो० ४/८६) ०आदिप्रभु, ०नाभेयज।

आदिदृष्टा (वि०) प्रथम दृष्टा, प्रारंभ उपदेष्टा। (सुद० २/१९) यदादिदृष्टाः सम दृष्टसाराः। (सुद० २/१९)

आदिनाथः (पुं०) आदिपुरुष, प्रथम तीर्थंकर।

आदिपर्वन् (पुं०) आदिखण्ड, प्रथम अंश।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आदिपुरुषः (पुं०) ०आदिब्रह्मा, ०आदिनाथ, ०जैनधर्म के आद्य प्रवर्तक, ०प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव। (जयो० पृ० ३/३)

आदिपरं (नपुं०) प्रथम स्थान। (सम्य० ११०)

आदिबलं (नपुं०) प्रारम्भिक शक्ति।

आदिबन्धुः (पुं०) बड़ा भाई, ज्येष्ट भ्राता। स आदि प्रथमजातश्चासौ बन्धुर्भ्राता। (जयो० वृ० ३/६८)

आदिभव (वि०) सर्वप्रथम उत्पन्न, पहले उत्पन्न, प्रथमजात।

आदिभृत् (वि०) प्रथमजात। (जयो० वृ० १/१)

आदिम (वि०) [आदौ भवः-आदि डिमच्] ०प्रथम, ०आदि, ०प्रारंभिक, ०पुरातन, ०प्राचीन, ०पुरा, ०पहला ०आद्य। "द्राक्षेवमृद्धी प्रथिताऽऽदिमस्य।" (समु० १/२३) ०प्रधान, ०सर्वप्रथम।

आदिमतीर्थनाथः (पुं०) आद्य तीर्थंकर, प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव, जैनधर्म के आद्य प्रवर्तक। जयत्यहो आदिमतीर्थनाथ। (जयो० २७/७१)

आदिमवर्णता (वि०) ब्रह्मणत्वर्णयुक्त। (जयो० १/५४)

आदिराजः (पुं०) अर्ककीर्ति राजा। अकंपनदेश के आदिराज अर्ककीर्ति। (जयो० ४/१)

आदिवर्णः (पुं०) क्षत्रियवर्ण, प्रथम वर्ण, वर्ण व्यवस्था का प्रारम्भिक चरण क्षत्रिय। "आदिवर्ण-क्षत्रियभावाद् अस्यापि क्षत्रियत्वाद् अयमिनेवास्ति।" (जयो० पृ० ४/१०८)

आदिश् (सक०) ०कहना, ०संकेत करना, ०प्रदान करना, ०अर्पण करना, ०आदेश देना, ०आज्ञा देना, ०सौंपना। पृष्ठवानिति सपृततमाय, आदिश त्वदनुकूलकराय। (समु० ५/२) स्वावलम्पनं ह्यादिशंस्तवं शान्तये सुवेश। (सुद० ७४)

आदिष्ट (भू०क०) [आ+दिश्+क्त] ०दिखलाया, ०संकेत किया, ०प्रदर्शन किया, ०निर्दिष्ट किया। स्मरादिष्टमथाह शस्तम्। (जयो० १/७५) क्षेमप्रश्नानन्तरं ब्रूहि कार्यमित्यादिष्टः। प्रोक्तवान् सागरार्यः। (सुद० ३/४५)

आदिसुतः (पुं०) आदिनाथ का पुत्र भरत, जिसके नाम से इस देश का नाम भारत पड़ा। आगमों, पुराणों में जंबूद्वीप में भरतक्षेत्र या भारतवर्ष का नाम विशेष उल्लेखनीय है। (जयो० ४/४६) आदिदेवस्य सुतो भरतसम्राडपि। (जयो० वृ० ४/४६)

आदिसुनुः (पुं०) आदिनाथ का पुत्र भरत। भरतचक्रवर्ती। (जयो० २४/४५) 'किमादिसूनोः सुकृतोच्चमोदयः।' (जयो० २४/४५) 'आदिसूनोर्भरतमहाराजस्य-' (जयो० वृ० २ ४/४५)

आदिसृष्टा (वि०) प्रारंभिक सृष्टि वाला। (सुद० २/१९)

आदीपनं (नपुं०) [आ+दीप्+ल्युट्] ज्वलन पैदा करना, आग लगाना।

आदीनव (वि०) संक्लिष्ट। (जयो० २७/५३) 'आदीनवस्तु दोषे स्यात् परिक्लिष्टदुरन्तयोः' इति विश्वलोचनः।

आदीशः (पुं०) आदीश्वर, आदिनाथ, प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव। (वीरो० ११/२१)

आदीशपौत्रः (पुं०) मरीचि जीव। स आह भो भव्य। पुरूरवाङ्ग भिल्लोऽपि सद्धर्मवशादिहाङ्ग। आदीशपौत्रत्वमुपागतोऽपि कुदृक्प्रभावेण सुधर्मलोपी। (वीरो० ११/२)

आदेर्नृः (पुं०) श्री नाभेय, नाभिराज, आदिनाथ के पिता। (जयो० २६/७०)

आदेवनं (नपुं०) [आ+दिव्+ल्युट्] जुआ खेलना, जुआ खेलने का पासा।

आदेशः (पुं०) [आ+दिश+घञ्] भेद, अपरः (धव० १/१६०) निर्देशः आदेशेन भेदेन विशेषेण प्ररूपणं। ०आज्ञा, ०निर्देश, ०उपदेश, ०विवरण, ०सूचना, ०संकेत, ०कथन। (जयो० १/९०) आदेश एवास्ति यतो गुरुणां फलप्रदोऽस्मभयमहापुरूणाम्। (समु० ३/२) बड़े लोगों का आशीर्वाद ही हम लोगों को सफल बनाने वाला होता है। उक्त पंक्ति में 'आदेश' का अर्थ आशीर्वाद है। आदेशं कुरुतान्महन् भो सुखप्रवेशनकस्य। (सुद० ७/४)

आदेशो भवतामस्ति, न परप्रत्ययत्रायकृत्। (समु० ७/३४) **'आदेश'** का अर्थ अनुशासन भी है।

आदेश-युत् (वि०) अनुशासन सहित, निर्देश, उपदेश।

आदेशविधिः (स्त्री०) आज्ञा का पालन। त्वदादेशविधिं कर्तुं कातरोऽस्मीति वस्तुतः। (सुद० ७९)

आदेशिन् (वि०) [आ+दिश+णिनि] आज्ञा देने वाला, अनुशासित करने वाला।

आदोहणात्मक (वि०) दोहन करने योग्य।

आद्य (वि०) [आदौ भव-यत्] प्रथम, (दयो० ३४) प्रधान, पुरातन, प्राचीन, प्रमुख, नायकः (मुनि० २) आग्रणी। (सुद० ४/४०)

आद्यक्रिया (स्त्री०) प्रारंभिक क्रिया। (जयो० २१)

आद्यदेवः (पुं०) आदिदेव, प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव।

आद्यमूलगुण (नपुं०) प्रथममूलगुण। (मुनि० २)

आद्यून (वि०) [आ+दिव्+क्त] बहुभोजी, अधिक भुंजी।

आद्योतः (पुं०) [आ+द्युत+घञ्] कान्ति, प्रभा, चमक, प्रकाश।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आधमनं (नपुं०) [आ+धा+कमनम्] धरोहर, निक्षेप राशि।

आधमर्ण्यं (वि०) [अधमर्ण+ष्यञ्] कर्जदारी, ऋणता।

आधर्मिक (त्रि०) [अधर्म+ठञ्] अन्यायी, वचनविरुद्ध, बेइमानी। धर्म विरुद्ध होने वाला।

आधर्षः (पुं०) [आ+धृष्+घञ्] घृणा, निन्दा, दोष।

आधर्षणं (नपुं०) [आ+धृष्+ल्युट्] दोष, अपराध, घृणा, निराकरण, अपमान।

आधर्षित (भू०कृ०) [आ+धृष्+क्त] तिरस्कृत, अपमानित, निंदित, घृणित, दोषासक्त।

आधाकर्मन् (नपुं०) प्राणियों को बाधा पहुंचाना। आहा अहे य कम्मे आहाकम्मे। आधा अधे य कर्मे आधाकर्मे आधानं आधा साधुनिमित्तं चेतसः प्राणिधानम्। या षट्जीवनिकायानां विराधनोद्रापनादि आधाकर्म नाम।

आधाकर्मिक (वि०) साधुओं के निमित्त बनाया गया आहार।

आधाकर्मिका (वि०) अधः कर्म वाला।

आधारः (पुं०) [आ+धृ+घञ्] आश्रय, स्तंभ, टेक, सहारा।

आधारि (त्रि०) आश्रयजन्य। (सुद० २/३०)

आधि (स्त्री०) [आ+धा+कि] मानसिक खेद, मानसिक व्याधि, ०पीड़ा, ०वेदना, ०दुःख, ०सन्ताप, ०विपत्ति, ०अभिशाप, ०रुज। (जयो० ६/३१) (जयो० २४/८९) पुंस्याधिर्मानसी व्यथा 'इत्यमरः।'

आधिकरणिकः (पुं०) न्यायधीश।

आधिकरिणिकी (स्त्री०) अधिकरण क्रिया, हिंसा जन्य क्रिया।

आधिकारिक (वि०) अधिकारी, सर्वोच्च, सर्वश्रेष्ठ, प्रधान।

आधिक्य (वि०) [अधिक+ष्यञ्] बहुलता, बहुतायत, भारी, अधिकता।

आधिदैनिक (वि०) [अधिदेव+ठञ्] दैवकृत, भाग्याधीन।

आधिपत्यं (नपुं०) [अधिपति+यक्] सर्वोच्चता शक्ति, प्रभुता, अधिकार।

आधिभौतिक (वि०) [अधिभूत+ठञ्] प्रारंभिक, भौतिक, सांसारिक पीड़ा।

आधिराज्यं (नपुं०) [अधिराज्+ष्यञ्] अधिकार, प्रभुता, शक्ति।

आधिवेदनिकं (नपुं०) [अधिवेदनाय हितं] संतोष युक्त, ०संतोष प्रदान, ०प्रारम्भिक संतोष।

आधीनं (वि०) आश्रय, आधार। 'तदङ्गजाप्यन्वयनीत्यधीना' (जयो० १/४०)

आधीनता (वि०) दासता। (जयो० वृ० २/२०) (मुद० १००)

आधुनिक (वि०) [अधुना+ठञ्] ०अर्वाचीन, ०नूतन, ०नवीन, ०नया, ०आज का। सुखैकसिद्ध्यै सुदृशोऽत्र हेतुः श्रद्धामहो, नाधुनिकः स्विदेतु। (जयो० १/६६)

आधोरणः (पुं०) [आ+धोर्+ल्युट्] महावत, हस्ति आरोहक।

आध्यात्म (वि०) आत्म सम्बन्धी।

आध्यात्मनिष्ठ (वि०) आत्म सम्बन्धी विचार में परिपूर्ण 'शुक्लध्यानपरायणोऽऽध्यात्मनिष्ठः' (जयो० २२) ०शुक्लध्यान परायण। ०विशुद्ध स्वभाव वाला।

आध्यात्मिक (वि०) [अध्यात्म+ठञ्] आत्मा से सम्बन्ध रखने वाला, परमात्म दृष्टि वाला।

आध्यानं (नपुं०) [आ+ध्यै+ल्युट्] संसार, शरीर, भोगादि का बार-बार चिन्तन, मनन, चिन्ता।

आध्यापकः (पुं०) १. उपदेष्टा, उपाध्याय, जो स्वयं अध्ययन करता या कराता हो। (अध्यापक+अण्) २. शिक्षक, गुरु, दीक्षा गुरु।

आध्यासिक (वि०) [अध्यास+ठक्] वस्तु आरोपण, एक दूसरे पर आक्षेप।

आधृ (सक०) [आ+धृ] धारण करना, आधार बनाना, उपाय करना। सारयन् पथि निजं परानऽऽधारयेन्नृपतिरीतिहल्कथाः। (जयो० २/११८)

आध्वनिक (वि०) [अध्वन्+ठक्] यात्री, प्रवासी।

आनः (पुं०) [आ+अन्+क्विप्] १. श्वास लेना, फूंक मारना। २. उच्छ्वास जो संख्यात आवली प्रमाण है। संख्येया आवलिका आनः, एक उच्छ्वास इत्यर्थः।

आनकः (पुं०) [आनयति उत्साहवतः करोति अण्+णिच्+ण्वुल्] ०ढक्का, ०पटह, ०दुन्दुभी, ०ढोल, ०नगाड़ा, ०भेरी 'आनकः पटहो ढक्का' इत्यमरः। आनकोऽप्येष पुनः प्रवीणः (मुद० २/२१) अहो यदीयानकतानकेन रवैः सकंपं गमनं च तेन। (जयो० १/१९)

आनकतानं (नपुं०) प्रयाण की आवाज, 'आनको जयकुमारस्य प्रयाणवादित्रं, तस्य तानकेन शब्देन भयभीतः।' (जयो० वृ० १/१९)

आनणीय (वि०) हितकारी (वीरो० २२/२६)

आनत (वि०) [आ+नम्+क्त]नम्रीभूत, नमित, झुका हुआ। (जयो० ६/3)

आनतिः (स्त्री०) [आ+नम्+क्तिन्] पञ्चाङ्गप्रणामकरणम्। ०प्रणाम, ०नमन, ०नमस्कार, ०झुकाव, ०झुकना, ०नम्रता, ०अभिवादन, ०सत्कार, ०श्रद्धा।

आनद्ध (वि०) [आ+नह्+क्त] बांधा गया, मढ़ा हुआ, अवरुद्ध।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आनद्धः (पुं०) वाद्य विशेष, ढोल, नगाड़ा। (जयो० १०/१६)

आननं (नपुं०) मुख, वदन। [आ+अन्+ल्युट्] 'फुल्लदानन इतोऽभिजगाम।' (जयो० ४/६७) 'रामामानने सपदि कामुकनाम्ना।' (जयो० ४/५६)

आननदेशः (पुं०) मुखभाग, मुखमण्डल। 'पीतिमानमिममाननदेशे' (जयो० ५/८)

आनन्तर्यं (नपुं०) [अनन्तर+ष्यञ्] उत्तराधिकारी, व्यवधान रहित आसन्नता।

आनन्त्य (नपुं०) शाश्वत, नित्य, अनश्वर। (भक्ति० २०)

आनन्दः (पुं०) [आ+नन्द्+घञ्] हर्ष, प्रसन्नता, आत्मिक सुख।

आनन्ददशा (स्त्री०) सुख की अवस्था।

आनपानं (नपुं०) उच्छ्वास शक्ति।

आनपान-पर्याप्तिः (स्त्री०) श्वासोच्छ्वास से निकलने वाली शक्ति।

आनपानप्राणः (पुं०) उच्छ्वास, निःश्वास की कारणभूत शक्ति। (बृ० द्रव्य संग्रह ३)

आनप्राणः (पुं०) उच्छ्वास, निःश्वास, इसका काल असंख्यात आवलियों का होता है।

आनमंती (वि०) नमन करती हुई। (सुद० २/२६)

आनय (भू०) लाना, भिजवाना। (जयो० २/११३) बध्नामि भुजपाशेन जपाशंसामिहानय। (सुद० पृ० ७६)

आनयनं (नपुं०) मंगवाना, मर्यादित क्षेत्र से वस्तु का मंगवाना। 'प्रयोजनवशादभिप्रेतदेशे अदानयेत्याज्ञापनमानयनम्।' (स० सि० ७/३,त० वा० ७/३१) 'अन्यमानयेत्याज्ञापनमानयनम्' (त०वृ० ७/३)

आनयनप्रयोगः (पुं०) क्षेत्र से वस्तु मंगवाने का प्रयोग। (भक्ति श्लोक ३)

आनन्दक (वि०) सुखदाता। (वीरो० १०/२१)

आनन्दकर (वि०) सुख प्रदान करने वाला। विमानमानन्दकरं च देव। (सुद० २/१८)

आनन्दगिरा (स्त्री०) प्रसन्नवाचा, सुख प्रदान करने वाली वाणी। 'अस्मदानन्दगिरामस्माकं प्रसन्नवाचाम।' (जयो० १/४३) 'नाभेयमानन्दगिराऽजिनं च।' (भक्ति पृ० ७)

आनंददायिनी (वि०) आनन्ददायक।

आनन्ददायी (वि०) प्रसन्नता प्रदायी। (दयो० ५८) (जयो० वृ० ३/२५५)

आनन्ददृक् (नपुं०) आनन्दृष्टि, सुख का विशेपना, प्रसन्नता भाव। 'समानन्ददृगेकदृश्यम्।' (जयो० १/७७)

आनन्दनिबन्धनः (नपुं०) आनन्द की धारणा, प्रसन्नता का कारण। किन्त्वानन्दनिबन्धनस्तवदपरः को मे कुलीनास्थितेः। (सुद० ११३)

आनन्दप्रदः (पुं०) प्रसन्नचित्त। (जयो० ८/६३)

आनन्दप्रदकला (स्त्री०) नन्दक-कला, सुख प्रदान करने वाली कला। (जयो० ८/६३)

आनन्दमय (वि०) सुखमय, प्रसन्नता युक्त। 'श्रेयांसमानन्दमयं च वासु।' (भक्ति पृ० १९)

आनन्दवती (वि०) आह्लाद उत्पन्न करने वाली, सुखदायिनी, प्रसन्नताप्रदायिनी। (सुद० १/४१)

आनन्दवारिधिः (पुं०) सुख सागर, प्रसन्नोदधि। (जयो० १/१०२)

आनन्दसंधानं (नपुं०) आत्मिक सुख, आभ्यन्तर आनन्द। (मुनि० २६)

आनन्दिः (स्त्री०) [आ+नन्द्+इन्] हर्ष, प्रसन्नता, सुख।

आनन्दित (भू० क० कृ०) [आ+नन्द+क्त] आनन्द करने वाला, हर्षित, प्रफुल्लित।

आनन्दिन् (वि०) [आ+नन्द्+णिनि] प्रसन्न, खुशी, हर्ष, प्रफुल्लता।

आनर्तः (पुं०) [आ+नृत्+घञ्] नाट्यशाला, नृत्यगृह, रंगमंच।

आनर्थक्यं (नपुं०) [अनर्थस्य भावः ष्यञ्] निरर्थकता, अनुपयुक्तता, अयोग्यता।

आनायः (पुं०) [आ+नी+घञ्] जाल।

आनायिन् (पुं०) [आनाय+इनि] धीवर, मछुवारा।

आनाय्य (वि०) [आ+नी+ण्यत्] सन्निकटता के योग्य।

आनाहः (पुं०) [आ+नह्+घञ्] १. बन्धन, मलावरोध, कब्ज।

आनिप् (सक०) दबाना, पीड़ित करना। (जयो० ८/४८)

आनिल (वि०) [अनिल+अण्] वायु से उत्पन्न।

आनीय (सक०) प्राप्त होना, उपस्थित होना। आनीयते प्राप्यते माक्षिकं माक्षिकाव्रातधातोत्थितं तत्कुल-क्लेद-सम्भार धारान्वितम्। पीडयित्वाऽप्यकारुण्यमानीयते सांशिभिर्वंशिभिः किन्तु तत्पीयते। (जयो० २/१३०)

आनील (वि०) नीलापन।

आनुकूलिक (वि०) [अनुकूल+ठक्] हितकारी, अनुकूलता युक्त, उपयुक्त।

आनुकूल्यं (वि०) [अनुकूल+ष्यञ्] ०उपयोगी, ०उपयुक्त, ०हितकर, ०आश्वासन कारक, ०समीचीन, ०यथेष्ठ। (जयो० वृ० १/५१) कारुण्यमौदार्यमियद् हृदा चानुकूल्य-सम्वादविधिश्च वाचा। (समु० ८/२९)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आनुगत्यं (वि०) [अनुगत+ष्यञ्] परिचय, पहचान।

आनुगामिक (वि०) अनुगामी, देशान्तर या भवान्तर में जाता हुआ, अवधिज्ञान विशेष। 'अनुगमनशीलं आनुगामिकम्।'

आनुगुण्य (वि०) हितकर, सुखकर, गुणों के योग्य।

आनुग्रामिक (वि०) [अनुग्राम+ठञ्] ग्रामीण, देहाती, गंवार।

आनुनासिक्य (वि०) [अनुनासिक+ष्यञ्] अनुनासिकता।

आनुपदिक (वि०) [अनुपद+ठक्] अनुसरणकर्ता, पदचिह्नगामी।

आनुपूर्व (नपुं०) [अनुपूर्वस्य भावः ष्यञ्] क्रम, परम्परा, विधिक्रम।

आनुपूर्वी (वि०) क्रम, परम्परा, विधिक्रम अभीष्ट स्थान को प्राप्त करना। २. अंग एवं उपांग आगम के क्रम का नियामक।

आनुमानिक (वि०) [अनुमान+ठक्] अनुमान प्राप्त।

आनुयात्रिकः (पुं०) [अनुयात्रा+ठक्] सेवक, अनुचर, अनुयायी।

आनुरक्तिः (स्त्री०) [आ+अनु+रञ्ज्+क्तिन्] राग, स्नेह, अनुराग, प्रीति।

आनुलोमिक (वि०) [अनुलोम+ठक्] नियमित, क्रमबद्ध, अनुक्रम।

आनुलोम्य (वि०) [अनुलोम+ष्यञ्] उपयुक्त, उचित, नैसर्गिक, सीधा।

आनुवेश्य (वि०) पड़ौसी, समीपवर्ती, गृह के समीप रहने वाला।

आनुषङ्गिक (वि०) [अनुषङ्ग+ठक्] १. सहवर्ती, सहयोगी, २. आवश्यक, अनिवार्य, आपेक्षिक, आनुपातिक।

आनूप (वि०) आर्द्र, गीला, जलीय।

आनृण्य (वि०) दायित्व युक्त।

आनृशंस (वि०) [अनुशंस्+अण्] मृदु, कोमल, दयालु।

आनैपुणं (नपुं०) [अनिपुण+अण्] मूर्ख, मूढ, जाड्य।

आन्त (वि०) [अन्त+अण्] अन्तिम, अन्त का।

आन्तर (वि०) [आन्तर्+अण्] १. आभ्यन्तिर, आत्म सम्बंधी, २. गुप्त, छिपा, अन्दर।

आन्तर-तपः (पुं०) आभ्यन्तर तप,

आन्तरि (स्त्री०) अन्तरिक्ष युक्त, दिव्य, स्वर्गीय।

आन्तरिक्ष (वि०) दिव्य सम्बन्धी, आकाश प्रदेशी, स्वर्ग सम्बन्धी।

आन्तर्गणिक (वि०) [अन्तर्गण+ठक्] सम्मिलित।

आन्तर्गेहिक (वि०) [अन्तर्गेह+ठक्] गृहान्तर युक्त, घर में स्थित।

आन्तिका (स्त्री०) ज्येष्ठ भगिनी, बड़ी बहिन।

आन्दोल् (अक०) झूलना, हिलना, स्पन्दन करना।

आन्दोलः (पुं०) [आ+दोल्+घञ्] झूला, हिंडोला, झूलना।

आन्दोलनं (नपुं०) [आन्दोल्+ल्युट्] झूलना, हिलना, स्पंदन करना, कांपना।

आन्धसः (पुं०) [अन्धस्+अण्] मांड, चांवल मांड।

आन्धसिकः (पुं०) [अन्धस्+ठक्] रसोइया, आहारपाचक।

आन्ध्यं (वि०) अन्धापन।

आन्वयिक (वि०) [अन्वय+ठक्] सुजात, अभिजात, उत्तम कुल वाला।

आन्वीक्षिकी (स्त्री०) [अन्वीक्षा+ठञ्+ङीप्] आत्मविद्या विशेष, युक्तिसंगत तर्क, विद्या नीति। (वीरो० कृ० ३/१४)

आप् (सक०) प्राप्त करना, ग्रहण करना, उपलब्ध करना, स्वीकार करना।

आप् (अक०) प्राप्त होना, उपलब्ध होना। सम्भवित्री समाहाहो विपदाप्ताऽपि सम्पदि। (सुद० १०३) शीतरश्मिरिह तां रुचिरमाप या पुरा नहि कदाचिनाप। (जयो० ४/६०) प्राप्तवानिति वर्तमानार्थे भूतकालक्रिया। (जयो० वृ० ४/६०) काशिकापतिरितो नतिमाप। नतिमाप-लज्जितोऽभूत्। (जयो० वृ० ४/२०) आपि-प्राप्ता (जयो० वृ० ११/८५) विद्याऽनवद्याऽऽप। (जयो० १/६) उक्त पंक्ति में 'आप्' का अर्थ व्याप्त होना है।

अभिलषितं वरमाप्तवान् (सुद० पृ० ७३) (३/२९)

आप्य (सं०कृ०) (सुद० पृ० ५३) प्राप्तकर।

आप्य (सं०कृ०) (जयो० २/६३) स्वीकार्य। 'आप' क्रिया के कई अर्थ हैं-जाना, पहुंचना, पकड़ लेना, मिलना, व्याप्त होना आदि।

आप (नपुं०) जल, नीर। (वीरो० २/१०)

आपकर (वि०) [अपकर+अण्] अनिष्टजन्य, दूषण युक्त, दोषकर, अशुभगत।

आपक्व (वि०) [आ+पच्+क्त] १. पक्व रहित, सचित्तगत, २. रोटी, चपाती।

आपक्ष (वि०) पक्ष पर्यन्त, एक पक्ष तक। (जयो० २७/३२, सुद० पृ० ११८)

आपगा (स्त्री०) [अपां समूहः आपम् तेन गच्छति गम+ड] नदी, सरिता। (जयो० २०/८७, सुद० १/१५) 'आपगाऽपगत लज्जमिवाङ्गं।' (जयो० ४/५५)

आपगेयः (पुं०) सरित् पुत्र।

आपणः (पुं०) [आपण्+घञ्] दुकान, विक्रय वस्तु स्थान।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

'अगण्यानां पण्यानां क्रय-विक्रय-योग्य-वस्तूनामापण:।' (जयो० १३/८७)

आपणिक (वि०) [आपण+ठक्] वणिक, दुकानदार, व्यापारी।

आपणिक: (पुं०) दुकानदार, सौदागर, विक्रेता, वितरक। तत्कालमेवापणिका: क्षणेन। (जयो० १३/८७) 'आपणिका वणिजो जना:।'

आपणिका (स्त्री०) हाट, बाजार, विक्रयस्थान। (जयो० २/१८३) 'गणिकाऽऽपणिका किलैनसाम्।'

आपन्निकर (वि०) आपत्तिजन्य। (वीरो० १८/२८)

आपन्निनिबन्धनं (नपुं०) संकटमोचन, दु:खहरण। णमो अमियसव्वीणं। (जयो० १९/८१)

आपत्रता (वि०) पत्ररहिता, पतझड़। पत्राणि दलानि यानि रक्षीति पत्रया तस्याभाव पत्रयता, सा न भवतीति आपत्रता। (जयो० २२/९)

आपत् (अक०) [आ+पत्] निकट आना, पास होना, घटना, मया नावगतं भद्रे सुहृद्यापतितं गतम्। (सुद० ७७) कुत्राप्यापतिते ददाति न पदं चेदस्ति शुद्धा मति:। (मुनि० ९) उक्त पंक्ति में 'आपत्' क्रिया का अर्थ 'भरना' घटित होना है।

आपतनं (नपुं०) [आ+पत्+ल्युट्] निकट आना, टूट पड़ना, गिरना।

आपतिक (वि०) [आपत्+ठकन्] आकस्मिक घटित, उपस्थित।

आपत्ति: (स्त्री०) [आ+पद्+क्तिन्] (जयो० १८/८१) १. संकट, अनिष्ट प्रसंग। २. परिवर्तित होना, प्राप्त करना, उपलब्ध होना।

आपत्त्रा (स्त्री०) आपत्ति, विपत्ति। (जयो० २२/९)

आपद् (स्त्री०) [आ+पद्+क्विप्] ०निरापद हित, ०दु:ख, ०संकट, ०कष्ट, ०पीड़ा, ०विपद, ०विपत्ति। कण्टकितं पदमङ्के नेतु: समधिकृत्य चाऽऽपदमपनेतुम्। (जयो० १८/११) 'जयोदय' के आठवें सर्ग में 'आद्' (८/७०) शब्द का अर्थ 'विपद' भी किया है। इसी के प्रथम सर्ग में (१/७५) 'विपत्ति' अर्थ है। 'चिरोच्चितासिव्यसनापदे' (जयो० १/७५)

आपदर्त: (पुं०) [आ+पद्+अर्त्+घञ्] आपत्ति से दु:खी, विपत्ति से पीड़ित। आपदर्ते धनं रक्षेद्दारान् रक्षेद्धनैरपि। आत्मनं सततं रक्षेद् दारैरपि धनैरपि।। (दयो० २/४)

आपदन्त (वि०) १. दन्त रहित, २. आपत्ति रहित। (जयो० ८/८७) आऽऽपदन्तवचना जरतीवाऽऽराद धावृतपयोधरसेवा। (जयो० ८/८७)

आपदा (स्त्री०) [आ+पद्+टाप्] ०संकट, ०दु:ख, ०विपत्ति, ०आपत्ति, ०कष्ट। हृदियदि क्षणमेकमयं यदा, जगति अस्य भवेत् कुत आपदा। (समु० ७/२१) ०बाधा, ०रोक, ०अशुभ।

आपदाधार: (पुं०) ०विपत्तिनामाधार, ०विपत्तिस्थान, ०अशुभ स्थान, ०कष्टजन्य आश्रय। आपदानां विपत्तिनामाधार: स्थानम्। (जयो० वृ० १६/१३) आपदस्य नाप्रत्ययस्याधार- स्तस्मिन्।

आपदुदीरिण (त्रि०) ०आपत्ति नाशकी ०दु:ख संहारिणी, ०विपत्ति विघातिनी। ''आपत् तामुदीरयति यस्तस्य हदयसार एव गम्भीर:।'' (जयो० वृ० २५/२) ०विपद हारिणी।

आपदुद्धर्ता (वि०) आपत्ति निवारक, विपत्ति नाशक। 'आपदो विपत्तेरुद्धर्ता निवारक:।' (जयो० वृ० २३/४२) अहो तज्जनसमायोगो हि जगतामापदुद्धर्ता।' (जयो० २३/४२)

आपनिक: (पुं०) [आ+पन्+इकन्] १. पन्ना, नीलम। २. किरात, चिलात, झिल्ल/भील या असभ्य।

आपन्न (भू० क० कृ०) [आ+पद्+क्त] १. लब्ध, ०प्राप्त, ०सम्पन्न, ०गत, ०ग्रस्त, ०समाप्त। (जयो० वृ० ३/६३) २. ०पीड़ित, ०कष्टजन्य।

आपमित्यक (वि०) [अपमित्य, परिवर्त्य, निर्वृत्तम्+कक्] विनियम द्वारा उपलब्ध।

आपयामासु (भू०) समर्पण करवा दिया। (सु०४/२१)

आपराह्निक (वि०) [अपराह्न+ठञ्] तीसरा प्रहर।

आपवर्गिक (वि०) मोक्षवर्ती, मुक्ति की ओर अग्रसर। (जयो० २/६८)

आपवर्गिक-पन्थाग्रवर्तिन् (वि०) मोक्ष पथ की ओर अग्रसर। मोक्षमार्गस्तस्याग्रे वर्तते तस्य मोक्षमार्गग्रेसरस्य। (जयो० २/६८)

आपस् (नपुं०) [आप्+असुन्] १. जल, वारि २. पाप, अशुभ।

आपात् (सक०) जागृत करना। आपादयितुम्। (सुद० १२३)

आपात: (पुं०) [आ+पत्+घञ्] टूटना, गिरना, घायल करना, टूट पड़ना, आ धमकना, उतरना, नीचे फेंकना। (जयो० २७/६४) 'आपातमात्ररमणीयमणीय एतत्।'

आपातमात्रं (नपुं०) गिरनामात्र। (जयो० २७/६४)

आपातत: (अव्य०) [आपात+तसिल्] शीघ्र टूट पड़ना, तुरन्त आ गिरना।

आपात्यक (सं०कृ०) आगत्य-आकर, उतरकर, उपस्थित होकर। (जयो० १३/८२) ''द्रुतं पुराऽऽप्त्वा वसतिं मनोज्ञामापात्य- कापाकरणाकुलेन।''

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आपादः (पुं०) [आ+पद्+घञ्] प्राप्ति, उपलब्धि, पारितोषिक, पारिश्रमिक।

आपादनं (नपुं०) [आ+पद्+णिच्+ल्युट्] १. पहुंचाना, उपस्थित करवाना। २. प्रकाशित करना, तल्लीनता होना।

आपाद्य (सं०कृ०) बैठकर, स्थित होकर, उपस्थित होकर। 'भास्वानासनमापाद्य' (सुद० वृ० ७८)

आपालिः (स्त्री०) [आ+पा+क्विप्-आपा, तदर्थमलति-अल+इन] जूं, बालों में पड़ने वाला कीड़ा, द्वीन्द्रिय जीव।

आपीडः (पुं०) [आ+पीड्+घञ्] पीड़ा देना, कष्ट पहुंचाना, दु:ख उत्पन्न करना, मसलना।

आपीन (भू० क० कृ०) [आ+प्यै+क्त] पुष्ट, बलिष्ट, शक्तिमान्, मोटा, स्थूल।

आपूतिक (वि०) [अपूप+ठक्] पुए बनाने वाला।

आपूपिकः (पुं०) हलवाई।

आपूपिकं (नपुं०) पूओं का समूह।

आपूप्यः (पुं०) [अपूपाय साधु] आटा।

आपूरः (पुं०) [आ+पृ+घञ्] १. धारा, प्रवाह, २. भरना, पूरा करना, पूर्ण रखना।

आपूरणं (नपुं०) [आ+पृ+ल्युट्] भरना, पूर्ण करना।

आपूरयन (वि०) पूर्ण करने वाला। (सुद० २/१५)

आपूर्तिः (स्त्री०) पूरा करना, पूर्ण करना। तद्वाञ्छापूर्ति वितरामि। (सुद० ९२) ०वस्तु की पूर्ति करना।

आपूषं (नपुं०) [आ+पूष्+घञ्] धातु विशेष।

आपृच्छ् (सक०) १. पूछना, वार्तालाप करना, २. विदा करना, विसर्जन करना। ३. अनुमति चाहना। समं समालोच्य स आत्ममन्त्रिभिस्तदेवमापृच्छय निमित्ततन्त्रिभिः। (जयो० ३/६६)

आपृच्छा (स्त्री०) [आ+पृच्छ्+टाप्] ०पूछना, ०संलाप करना, ०वार्तालाप करना, ०अनुमति लेना, आपृच्छा-प्रतिप्रश्नः (भ० आ० टी० ६९)'आपृच्छा स्वकार्यं प्रति गुर्वाद्यभिप्रायग्रहणम्।' (मूला०वृ० ४/४)

आपेक्षिक (वि०) अपेक्षा कृत, एक-दूसरे की विशेषता युक्त।

आपेक्षिकं बदरामलक-बिल्वतालादिषु।'' (स० सि० ५/२४)

आपेक्ष्य (वि०) अपेक्षा युक्त। (वीरो० २०/२०)

आ· · (पुं०) ०सर्वज्ञ, ०ईश्वर, ०वीतरागी पुरुष, ०हितोपदेशी। 'यो यत्राऽविसंवादकः स तत्राऽऽप्तः।' (अष्टशती-७८) ·· गमो ह्याप्तवचनमाप्तं दोषक्षायाद् विदुः।' वीतरागोऽनृतं वाक्यं न ब्रूयाद्धेत्वसम्भवात्।' (धव० ३/१२)

आप्त (भू० क० कृ०) [आप्+क्त] १. प्राप्त किया, ०उपलब्ध किया, ०पहुंचा, ०उपस्थित हुआ।
२. विश्वसनीय, ०प्रामाणिक, पूजनीय, निष्ठावान्, विश्वस्त पुरुष, योग्य पुरुष।

आप्तडिम्बं (नपुं०) लब्ध प्रमाण, प्राप्त प्रमाण, सटीक प्रमाण।

आप्तनयः (पुं०) समुपलब्ध नय, नीतिमार्ग। (जयो० ९/३०)

आप्तपथरीतिः (स्त्री०) सर्वज्ञमार्ग परम्परा। समन्ताद्भद्रविख्याता, श्रियां भूराप्तपथरीतिः।' (सुद० ८३)

आप्तपरीक्षा (स्त्री०) आचार्य समन्त भद्र की एक रचना। (वीरो० १९/४४)

आप्तपुरुषः (पुं०) सर्वज्ञ। (जयो० वृ० ३/५)

आप्तमार्गः (पुं०) सर्वज्ञपथ।

आप्तलोकः (पुं०) कल्याणमार्ग, ईशपथ, हितकारी दर्शन। लोकस्य य करुणयाभयमाप्तलोकमात्म्यन्नमो भगवते ऋषभाय तस्मै। (दयो० पृ० ३०)

आप्तशाखा (स्त्री०) व्याप्तकीर्ति, शाखाओं से व्याप्त। (सुद० ४/२) समन्तादाप्तशाखाय प्रस्तुताऽस्मै सदा स्फीतिः।

आप्तशुद्धिः (स्त्री०) शुद्धि प्राप्त, हित प्राप्त। 'व्यपायतः पूर्णतयाऽऽप्तशुद्धेः।' (भक्ति० २८)

आप्तोक्ति (स्त्री०) आप्त कथन, सर्वज्ञ निरूपण।

आप्तोक्ति-परम्परा (स्त्री०) आप्तकथन की परिपाटी, सर्वज्ञवाणी का क्रम। (जयो० वृ० ३/११५)

आप्तोक्ति-विशेषः (पुं०) आप्तकथन विशेष, सर्वज्ञवाणी विशेष। (जयो० वृ० ३/११५)

आप्तोपज्ञः (पुं०) आप्तागम, सर्वज्ञवाणी। 'श्रीयुक्तः सम्यगागम आप्तोपज्ञो ग्रन्थः।' (जयो० वृ० ३/११५)

आप्तिः (स्त्री०) [आप्+क्तिन्] प्राप्ति, अधिग्रहण, सम्पूर्ति, आपूर्ति।

आप्य (वि०) [अपाम् इदम् अण् ततः स्वार्थे ष्यञ्] जलमय, नीरयुक्त।

आप्य (वि०) [आप्+ण्यत्] उपलब्धि योग्य, प्राप्ति योग्य।

आप्यान (भू० क० कृ०) [आ+प्याय क्त] १. स्थूल, मोटा, बलिष्ट, पुष्ट। २. प्रसन्न, संतुष्ट, हर्षित।

आप्यायनं (नपुं०) [आ+प्याय्+ल्युट्] १. तृप्त, संतुष्ट, प्रसन्न। २. पूर्ण, पूरित, भरना, मोटा करना, पुष्ट करना।

आप्रच्छनं (नपुं०) [आ+पृच्छ्+ल्युट्] १. विसर्जन, विदा करना। २. स्वागत करना, पूछना, सम्मान करना।

आप्रदक्षिणं (नपुं०) १. हंसी उड़ाना, २. चक्कर लगाना,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

घूमना। समभान्मृदुकेशलक्षणं प्रति गहं हसदाप्रदक्षिणम्। (जयो० २६/१५)

आप्रदोषः (पुं०) सायंकाल तक, सन्ध्या समय तक। "सम्प्रवृत्तिपर आप्रदोषतः।" (जयो० २/१२२)

आप्रपदीन (वि०) [आप्रपदं व्याप्नोति] पाद पर्यंत जाना, चरण तक वस्त्र फैलना।

आप्लवः (पुं०) [आ+प्लु+अप्] स्नान, नहाना, अभिसिंचित होना। आप्लवस्य अम्बु स्नान जलम्। हरत्याप्लवाम्बु तु पुनाति सच्छिरः। (जयो० २/२८)

आप्लवनं (नपुं०) नहाना, स्नान, अभिसिंचन।

आप्लावः (पुं०) [आ+प्लु+घञ्] स्नान, नहाना, अभिसिंचन करना।

आप्लावनं (नपुं०) १. स्नान, अभिसिंचन, (जयो० १/५८, सुद० १०१) २. जल प्लावन, जलपूर, जलप्रवाह।

आप्लुत (भू०) नहाए हुए। (सुद० ३/५)

आफूकं (नपुं०) (ईषत्फूत्कार इव फेनोऽत्र) अफीम, मादक पदार्थ।

आबद्ध (भू० क० कृ०) बन्धा हुआ, निर्मित।

आबद्धं (नपुं०) बांधना, जोड़ना, संयुक्त करना।

आबन्धः (पुं०) [आ+बन्ध्+घञ्] बन्ध, मिलान, संयुक्त।

आबर्हः (पुं०) [आ+बर्ह्+घञ्] फाड़ डालना, विदीर्ण करना, छिन्न-भिन्न करना।

आबाधः (पुं०) [आ+बाध्+घञ्] कष्ट, दुःख, पीड़ा, चोट।

आबाधा (स्त्री०) न बाधा अबाधा। अबाधा चेव आबाधा। (धव० ५/१४८) १. पीड़ा, दुःख, कष्ट। २. कर्मबन्ध को प्राप्त हुआ द्रव्य, जितने समय तक उदय या उदीरणा को नहीं प्राप्त होता वह आबाधाकाल है।

आबाधाकाण्डकः (पुं०) प्रमाण विशेष, जिससे विवक्षित कर्म की उत्कृष्ट स्थिति ज्ञात हो।

आबोधनं (नपुं०) [आ+बुध्+ल्युट्] ज्ञान, सम्बोध, अनुभव, सूचन।

आब्द (वि०) [अब्द+अण्] बादल से उत्पन्न।

आब्दय (वि०) [अब्द+अण्+क] बादल से उत्पन्न। (सम्य० १५५)

आब्दिक (वि०) [अब्द+ठञ्] वार्षिक, सम्वत्सरिक, सालाना।

आभरणं (नपुं०) [आ+भृ+ल्युट्] आभूषण, अलंकरण, विभूषण, गहना, सौन्दर्य के कारण। 'सरिताभरणभूषणसारैः।' (जयो० ५/११)

आ-भरणं (नपुं०) पालन-पोषण।

आ-भद्र-बाहुः (पुं०) भद्रबाहु आचार्य पर्यन्त। (वीरो० २२/५)

आभा (स्त्री०) [आ+भा+अङ्] प्रभा, कान्ति, चमक, वर्ण, रूप। (सुद० १०४) प्रतिबिम्ब छाया।

आभान्त (वि०) प्रतिभासित, चमकीले, प्रभावान्। 'सन्निधानमिवाऽऽभान्तम्।' (सुद० १०४)

आभाणकः (पु०) कहावत, लोकोक्ति, लोककथानक।

आभाषः (पुं०) [आ+भाष्+घञ्] सम्बोधन, प्रस्तावना, भूमिका, प्राक्कथन, प्रारम्भिक उद्बोध।

आभाषणं (पुं०) [आ+भाष्+ल्युट्] सम्बोधन, कथन, संलाप।

आभासः (पुं०) [आ+भास्+अच्] १. प्रभा, चमक, कान्ति, दीप्ति, २. प्रतिबिम्ब, छाया, परछाई।

आभासुर (वि०) उज्जवल, प्रभावान्।

आभिग्रहिक (वि०) कदाग्रह से निर्मित। 'अभिग्रहेण निर्वृतं तत्राभिग्रहिकं स्मृतम्।'

आभिचारिक (वि०) [अभिचार+ठक्] अभिशापित, अभिशापपूर्ण।

आभिजन (वि०) [अभिजन+अण्] जन्म सम्बन्धी, वंशसूचक, कुलात्मज।

आभिजात्यं (नपुं०) [अभिजात+ष्यञ्] १. कुलीनता, वंश की श्रेष्ठता। २. पाण्डित्य, प्रज्ञा युक्त।

आभिधा (स्त्री०) [अभिधा+अण्] ध्वनि, शब्दशक्ति।

आभिधानिक (वि०) [अभिधान+ठक्] अभिधान सम्बन्धी, कोश सम्बन्धी।

आभिनिबोधिक (वि०) मतिज्ञान का नाम, इन्द्रिय और मन द्वारा जानने योग्य। 'अभिनिबुध्यते वाऽनेनेत्याभिनिबोधिकः।' इंदिय-मणोणिमित्तं तं आभिणिबोहिगंवेतं।

आभिनिवेशिक (वि०) दुराग्रह रूप प्रतिपादन। 'अभिनिवेशे भवं आभिनिवेशिकम्।'

आभिमुख्यं (नपुं०) [अभिमुख+ष्यञ्] सम्मुख होना, सामना करना, समीप उपस्थित होना, अपनी बात के लिए आमने-सामने आना।

आभियोगिक (वि०) पराधीनता युक्त कार्य करने वाला। अभियोगः पारवश्यम्, स प्रयोजनं येषां ते आभियोगिकाः।

आभियोगिकभावना (स्त्री०) गौरवपूर्ण प्रवृत्ति की भावना।

आभियोगिकी (स्त्री०) सेवा युक्त भावना। 'आ समन्तात् आभिमुख्येन युज्यन्ते प्रेष्यकर्मणि व्यापार्यन्ते'।

आभियोग्यः (पुं०) दास स्थान, 'आभियोग्या दाससमाना,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वाहनादि कर्मणि प्रवृत्ता:।' (स० सि० ४/४) 'अभियुज्यन्त इत्याभियोग्या: वाहनादौ। दासप्राया आभियोग्या। (लक्षणावली पृ० २०३)

आभियोग्यभावना (स्त्री०) भृतिकर्म की भावना, सेवाकर्म की दृष्टि।

आभिरूपकं (नपुं०) [अभिरूप+वुञ्] लावण्य, सौन्दर्य, रूप।

आभिरूप्यं (नपुं०) [अभिरूप+ष्यञ्] लावण्य, सौन्दर्य, रूप।

आभिषेचनिक (वि०) [अभिषेचन+ठञ्] राज्याभिषेक सम्बन्धी।

आभिहारिक (वि०) [अभिहार+ठञ्] उपहार योग्य, प्रदान योग्य, देय योग्य वस्तु।

आभीक्ष्ण्यं (नपुं०) [अभीक्ष्ण्यस्य भाव:] सतत् आवृत्ति, निरन्तर प्रयास।

आभीर: (पुं०) [आ समन्तात् भियं राति] ग्वाला, अहीर, अमीर।

आभीरी (स्त्री०) अहीरनी, ग्वालिनी।

आभीरीपल्ली (स्त्री०) अहीरों का स्थान।

आभील (वि०) [आभियं लाति ददाति ला+क] भयानक, भीषण।

आभूषणं (नपुं०) अलंकरण, गहना। (जयो० वृ० २२/५)

आभूषणता (वि०) अलंकरणपन। (वीरो० २/२१)

आभोग: (पुं०) [आ+भुज्+घञ्] १. परिसर, पर्यावरण। २. विस्तारण, परिधि, घेरा, विस्तार। ३. लम्बाई-चौड़ाई परिमाण। ४. उपभोग, तृप्ति, विषय भोग। ५. सर्प का फन। ६. अकार्य का सेवन। आभोगनमाभोग:, आभोगो उपयोगा ज्ञात्वाप्यकार्यासेवनमाभोग:। (ल०२०३) ७. परिपूर्ण- "आभोगस्य परिपूर्णत्वस्य विस्तारस्य।" (जयो० वृ० २४/३५)

आमन्त्रणदाता (त्रि०) आमन्त्रणकर्त्री, निमन्त्रण देने वाला। 'आमन्त्रदाता किमु देवताहमहो।' (जयो० २६/८३)

आमन्त्रणार्थ (त्रि०) सम्बोधनार्थ, निमन्त्रणार्थ, आह्वानार्थ। आमन्त्रणार्थमिति चन्द्रमसो रसेन। (जयो० १८/४९)

आभ्यन्तर (त्रि०) [अभ्यन्तर+अण्] आत्मभूत, आत्मगत, अन्तर्भूत, भीतरी, आन्तरिक।

आभ्यन्तर-तप: (पुं०) ०अन्तरतप ०आत्मसम्बन्धी तप, ०अन्त:करण के तप। ०प्रायश्चित्तादितप। 'अन्त:करण व्यापारात् प्रायश्चित्तादितप: अन्त:करण व्यापारालम्बनम् ततोऽस्याभ्यन्तरत्वम्।' (त० वा० ९/२०)

आभ्यन्तरनिर्वृत्ति: (स्त्री०) आन्तरिक अवस्थान, आत्मप्रदेशों का अवस्थान।

आभ्यन्तरप्रत्यय: (पुं०) जीव प्रदेशों के साथ एकता।

आभ्यन्तर-प्रवेश: (पुं०) अन्तर प्रवेश, हृदय प्रवेश। (जयो० वृ० १४/५८)

आभ्यवहारिक (वि०) [अभ्यवहार+ठक] भोज्य, खाने योग्य।

आभ्यासिक (वि०) [अभ्यास+ठक्] अभ्यासजन्य, संलग्नता युक्त।

आभ्युदयिक (वि०) [अभ्युदय+ठञ्] १. मांगलिक, शुभकारी, कल्याणकारक। २. गौरवमयी, महत्त्वपूर्ण, उन्नतशील।

आम: (पुं०) आम्र, रसाल। (दयो० ५३)

आम् (अव्य०) [अम्+णिच्] अंगों के विविध भाव से युक्त अव्यय। १. अङ्गीकृत, स्वीकरण, ओह, हाँ, अब पता लगा, अवश्य ही।

आम (वि०) [आम्यते ईषत् पच्यते-आ+अम्+कर्मणि+घञ्] कच्चा, अपक्व, विपाक, पाक रहित, अनपका।

आम: (पुं०) आमरोग, अजीर्ण, कब्ज। (वीर० १९/३) पेट विकार अजीर्णकर। (जयो० ६/६३) आममन्नमतिमात्रयाऽशित।

आमञ्जु (वि०) प्रिय, इष्ट, रमणीय, रम्य, मनोहर।

आमंड: (पुं०) एरंड वृक्ष, अरण्डीतरु।

आमन् (सक०) उतारना, आगे करना।

आमनस्य (नपुं०) [अमनस्+ष्यञ्] दु:ख, पीड़ा, कष्ट, शोक, मानसिक व्याकुलता, थकान।

आमन्त्र्य (सक०) निमन्त्रण देना, बुलाना। (जयो० ४/२४)

आमन्त्रणं (नपुं०) [आ+मन्त्र+णिच्+ल्युट्] अनुज्ञा देना, बुलाना, अभिवादन, अनुमति, निमन्त्रण। (जयो० ४/१३) कामधारानुज्ञा।

आमन्त्रणपत्रिका (स्त्री०) निमन्त्रणनाति: निवेदन पत्र (जयो० १/१९)

आमन्त्रणी भाषा (स्त्री०) अभिमुख करने की भाषा। 'अमाच्छ भो देवदत्त' इत्याद्याह्वान भाषा आमन्त्रणी।' (गो०जीव०२२५) 'यथा वाचा परोऽभिमुखीक्रियते सा आमन्त्रणी' (भ०मा० ११९५) 'गृहीत-वाच्य-वाचक-सम्बन्धो व्यापारान्तरं प्रत्यभिमुखीक्रियते यया आमन्त्रणीभाषा।' (मूला० ११८)

आममौर: (पुं०) ०रसालकोरक ०आम्र गुच्छक आम्र तरु में लगने वाले पुष्प। (दयो० ५३)

आमंद्र (वि०) [आ+मन्द्र+अच्] गम्भीर स्वर।

आमपात्रं (पुं०) [आ+मी+करणे अच्] १. रोग, आमय-पेट

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

की बीमारी, मनोव्यथा। (जयो० ६/५८, वीरो० ३/२) २. क्षति, हानि, कष्ट, पीड़ा।

आमयाविन् (वि०) [आमय+विन्] मन्दाग्नि से पीड़ित, बीमार रोगग्रस्त।

आमरणान्त (वि०) [आमरणे अन्तो यस्य] मृत्यु पर्यन्त रहने वाला, आजीवन।

आमरणान्त दोषः (पुं०) हिंसादि पापों में प्रवृत्ति। मरणेवान्तो मरणान्तः, आ मरणान्तात् आमरणन्तम् हिंसादिषु प्रवृत्ति सैव दोषाः।

आमरसं (नपुं०) रसाल रस, आम्र रस। (जयो० ४/३९)

आमर्जनं (नपुं०) लीपना, साफ करना, स्वच्छ बनाना। 'आमर्जनं मृद्गोमयादिना लिम्पनम्।'

आमर्त्य (वि०) देव सम्बन्धित। (वीरो० ७/७)

आमर्दः (पुं०) [आ+मृद्+घञ्] मसलना, कुचलना, मर्दन करना, निचोड़ना।

आमर्शः (पुं०) [आ+मृश+घञ्] रगड़ना, घर्षण करना, स्पर्श करना।

आमर्शनं (नपुं०) शरीर स्पर्शन, रगड़ना। 'शरीरैकदेशस्पर्शनम्' (भ० आ० टी० ६४९)

आमर्शलब्धिः (स्त्री०) स्पर्शमात्र की ऋद्धि, स्पर्श से रोग शान्ति वाली ऋद्धि, इसे आमर्शौषधि ऋद्धि भी कहते हैं।

आमर्शौषधि-ऋद्धिः (स्त्री०) स्पर्शमात्र की ऋद्धि जिसके कारण साधक स्पर्श से रोग शान्त करता है।

आमर्षः (पुं०) [आ+मृष्+घञ्] क्रोध, कोप, गुस्सा।

आमल (वि०) निर्मल, मलरहित। 'शुशुभे प्रचलन्निवामलः।' (सुद० ३/७)

आमलकः (पुं०) आंवला तरु। १. धात्रीफल। (जयो० १४/७५)

आमलकं (नपुं०) आंवला फल। (मुनि० २६)

आमलकी (स्त्री०) १. आंवला वृक्ष। २. धात्रीफल।

आमलकीफलं (नपुं०) धात्री फल। (जयो० वृ० १/३८)

आम-शक्तिः (स्त्री०) आमाशयशक्ति (वीरो० १९/३)

आमात्यः (पुं०) [अमात्य+अप्] सचिव, परामर्शदाता, मन्त्री। (जयो० वृ० १/१२)

आमानस्यं (नपुं०) [अमानस्+ष्यञ्] दुःख, मनोव्यथा, व्याकुलता, कष्ट, शोक आर्त, पीड़ा।

आमासः (पुं०) आपक्ष, पक्षपर्यन्त, माह पर्यन्त। (सुद० ११८)

आमिक्षा (स्त्री०) [आमिष्यते सिच्यते मिष्+सक्] छाछ, जमा हुआ दूध, छेना।

आमिषं (नपुं०) १. मांस, (जयो० २५/२०) 'अपि तु पूतिपरं वनितान्नणं यदसृगामिषकीकश यन्त्रणम्।' (जयो० २५/२०)

आमीलनं (नपुं०) [आ+मील+ल्युट्] उन्मीलन, अक्षि मीलन, आंख बन्द होना।

आमुक्तिः (स्त्री०) [आ+मुच्+क्तिन्] १. मुक्ति पर्यन्त, २. ग्रहण/धारण करना, पहनना।

आमुखं (नपुं०) ०प्राक्कथन, ०प्रस्तावना, ०भूमिका, ०प्रारंभकी, ०नाटक का प्रारंभिक विवेचन, ०उद्घोषणा।

आमुखं (अव्य०) सामने, मुंह के सामने।

आमुष्मिक (वि०) परलोक सम्बन्धी।

आमुष्यायण (वि०) प्रसिद्ध कुलात्मक, ख्यात कुल में उत्पन्न।

आमूल (वि०) पूर्णरूप, सम्पूर्ण, सभी। (जयो० १४/३३)

आमेनिर (वि०) सादृश्य, सघन। (सुद० ८३)

आमोचनं (नपुं०) [आ+मुच्+ल्युट्] छुड़ाना, मुक्त करना, स्वतन्त्र करना, निकालना, ढीला करना।

आमोटनं (नपुं०) [आ+मुट्+ल्यट्] विदीर्ण करना, कुचलना।

आमोदः (पुं०) [आ+मुद्+घञ्] १. प्रसन्नता, हर्ष, विनोद, २. सुरभि, सुगन्ध। समुच्चलत्पल्लव-पाणिलेशमशेष-मामोदमहारयेण। (समु० ६/३३)

आमोददा (वि०) १. सुगन्धदात्री, सुगन्ध देने वाली। २. विनोद स्वभावी। आमोददा सुगन्धदात्री 'आ समन्तात् मोदं हर्षं ददातित्यामोददा।' (जयो० पृ० ४/१५)

आमोदनं (नपुं०) [आ+मुद्+ल्युट्] प्रसन्नता, हर्ष, विमोद।

आमोदपूरित (वि०) १. हर्षयुक्त, विनोदभावी, २. सुगन्ध से व्याप्त। कौतुकानकलितालिकलापाऽऽमोदपूरिधरामृदुरुपा। (जयो० ५/६४) 'आमोदेन हर्षभावेन पूरितम्' आमोदेन सुगन्धेन व्याप्तम्। (जयो० पृ० ५/६४)

आमोदपूर्ण (वि०) १. हर्षयुक्त, विनोद स्वभावी 'आमोदपूर्ण-मखिलं जगदेतदुक्तात्।' (जयो० १८/४३) २. सुगन्ध से परिपूर्ण। आमोदेन सुगन्धेन आमोदेन प्रसन्न-भावेन वा पूर्णं सम्भृतमिति। (जयो० वृ० १८/४३)

आमोदमयी (वि०) १. प्रसन्नदात्री, हर्ष प्रदात्री, विनोद स्वभावमयी। २. सुगन्धसहिता। मम वृत्त-कुसुम-मालाऽऽमोदमयी। (जयो० २४/१०३)

आमोदिन् (वि०) [आ+मुद्+णिनि] १. प्रसन्न, हर्षयुक्त, विनोद सहित। २. सुगन्धित।

आमोषः (पुं०) [आ+मुष्+घञ्] चोरी, अस्तेय, तस्करी, अपहरण।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आमोषिन् (पुं०) [आ+मुष्+णिनि] चोर।

आम्नात (भू० क० कृ०) [आ+म्ना+क्त] १. कथित, प्रतिपादित, विचारित, चिंतित। २. अधीत, परम्परा प्राप्त।

आम्नानं (नपुं०) [आ+म्ना+ल्युट्] सस्वर स्मरण, सस्वर अध्ययन।

आम्नायः (पुं०) [आ+म्ना+घञ्] १. सिद्धान्त, शिक्षण, आगम। २. परम्परा प्राप्त, ०कुलगत, ०वंशानुपूर्वी ०आनुपूर्वी, ०परिवर्तन। ३. स्वाध्याय का एक भेद। घोषविशुद्ध-परिवर्तनमाम्नायः (त० वा० ९/२५) आम्नायो गुणना। (भ०आ०१०४) आम्नायो स्वाध्यायो भवत्येव। (भ०आ०१३९)

आम्नायार्थवाचकः (पुं०) आगम प्ररूपित आचार्य, परमागमार्थ-वाचक।

आम्रः (पुं०) रसाल, आम। आम्रं नारंग पनसं वा। (सुद० ७२)

आम्रकाम्रता (वि०) आम्र सरसता। (जयो० १२/१२७)

आम्रकटः (पुं०) आम्रकूट नामक पर्वत।

आम्रतरु (पुं०) आम्रवृक्ष, रसालतरु। (जयो० १/८६)

आम्रतरुस्थ (वि०) आम्रवृक्ष गत, आम्रवृक्षाधीन। (जयो० ९/६९) 'द्युतिरुताम्रतरुस्थपिकानने।' (जयो० ९/६९)

आम्रदायिनी (वि०) चूतदा, आम्रदात्री, रसालप्रदायिनी। (जयो० वृ० १२/१२७)

आम्रपेशी (स्त्री०) आमचूर, अमावट।

आम्रमञ्जरी (स्त्री०) माकन्दक्षारक, रसाल बौर, आम्रकोरक। (जयो० वृ० ६/१०१)

आम्रवृक्षः (पुं०) ०आम्रतरु, ०रसालवृक्ष ०मञ्जरीङ्कित। 'आम्रवृक्ष-वत्सरसता सम्पादकतया।' (जयो० वृ० २०/८५) मद्ररालेनाम्रवृक्षेण सहितो अवलोयते। (जयो० वृ० २१/३१)

आम्रातः (पुं०) [आम्रं आम्ररसं अतति अत्+अच्] अमरतरु, आम्र की तरह खट्टा वृक्ष, जिसे राजस्थान में 'केर' कहते हैं।

आम्रस्तकः (पुं०) [आ+म्रिड्+णिच्+क्त] ध्वनि आवृत्ति, शब्द गुञ्जार।

आम्रेडनं (नपुं०) [आ+म्रिड्+णिच्+ल्युट्] पुनरुक्ति, शब्द प्रतिध्वनि, गूंज।

आम्रेडितं (नपुं०) [आ+म्रिड्+णिच्+क्त] शब्द प्रतिध्वनि, गूंज।

आम्लः (पुं०) इमली का वृक्ष।

आम्लिः (स्त्री०) १. इमली का वृक्ष। २. पेट का विकार।

आम्लिक (स्त्री०) देखो ऊपर।

आयः (पुं०) [आ+इ+अच् अय+घञ् वा] १. आ जाना, पहुंचना, २. सम्यग्दर्शनाद्यवाप्तिलक्षणः आयः। ३. धनागम, राजस्व प्राप्ति, द्रव्य लाभ, धन उपलब्धि। (जयो० ११/३८) आयषष्ठांशं वा समर्पयिष्यतीति। (जयो० वृ० ११/३८)

आय् (सक०) [आ+इ] प्राप्त होना, पहुंचना। (सुद० ५/१) (जयो० २/२३) 'अभ्यच्यार्हन्तमायान्तम्।' (सुद० ७६) बलाहकबलाधानान्मयूरा-मदमाययुः। (जयो० ३/१११) आययुः प्रापुः। 'पिता पुत्रत्वमायाति' (सुद० ८/९)

आयकः (पुं०) उद्देश सिद्धिधारक, शुभावह, शुभभाग्य धारक। सहसैवाभिललाप चायकः। (जयो० २५/८६) 'चन्द्रमस इवाय एवायकाशुभावहो विधिर्यस्य स चन्द्र इवाह्लादकः।' (जयो० वृ० २५/८६)

आयत (भू० क० कृ०) [आ+यम्+क्त] सविस्तार, विस्तार, लम्बा, विशाल, बड़ा, विस्तृत, बृहत्। "तरलायतवर्तिगगता सा" (जयो० १४/११४) मौक्तिकावलिरिवायतवृत्ता। (जयो० वृ० २५/८६)

आयतनं (नपुं०) [आयतन्तेऽत्र आयत+ल्युट्] १. घर, ०स्थान, ०आवास, ०निवास, ०आश्रय, ०आधार, ०सहारा, ०निमित्त। (भक्ति० १६) २. देवायतन, देवगृह। ३. सम्यक्त्वादिगुणों का आधार।

आयतनेत्रं (नपुं०) विस्तृत आंखें।

आयत-लोचनं (नपुं०) विस्तारजनित नयन।

आयत-विस्तारः (पुं०) लम्बाई-चौड़ाई। अमितान्नितिमन्ति निर्मलान्यभ्युचितायत-विस्तराणि वा। (जयो० १३/६५)

आयतवृत्तः (पुं०) १. वर्तुलाकार, २. श्रेष्ठआचरण। 'आयतं विस्तृतं चरित्रं यस्याः।' 'आयताः सविस्तारा चासौ वृत्ता वर्तुलाकारा चेति।' (जयो० वृ० ५/५/३४)

आयता (वि०) दीर्घता, विस्तृत युक्ता। (जयो० १३/४६)

आयताभ्युदित (वि०) असंमुचित। (जयो० ५/८७)

आयतिः (स्त्री०) [आ+यत्+क्त] आश्रित, आधीन, आधारित।

आयतिक (वि०) आधीन, आश्रित।

आयत्त [आ+यत्+क्त] आश्रित, आधीन, आधारित।

आयत्तिः (स्त्री०) [आ+यत्+क्तिन्] आधीनता, आश्रयभूत।

आयथातथ्यं (नपुं०) [अयथा तथ+ष्यञ्] अनुपयुक्त, अनुचित, अयोग्य।

आयनं (नपुं०) गमन, विचरण। (जयो० वृ० १८/४६)

आयय (भू०) आए, पधारे। 'वसन्तवदाययावृपनं' (सुद० ४/१)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आय-व्ययः (पुं०) आय व्यय, खर्च। (जयो० २/११३)

आयस (वि०) लोह, धातुविशेष। (जयो० ४/६६)

आयासस्थितिः (स्त्री०) लोहसना। (जयो० ४/६६)

आयानं (नपुं०) [आ+या+ल्युट्] आना, पहुंचना, जाना।

आयात (भू०) आया, पहुंचा। (जयो० ३/३)

आयात तमस् (नपुं०) आया हुआ अन्धकार, व्याप्त अन्धकार। (सुद० २/३३)

आयामः (पुं०) [आ+यम्+घञ्] विस्तृत, विस्तार, प्रसार, फैलाव।

आयामवत् (वि०) [आयाम+मतुप्] विस्तारित, लम्बित, विस्तारयुक्त।

आयासः (पुं०) [आ+यश+घञ्] प्रयास, प्रयत्न, श्रम, उपयोग, दुःख युक्त चेष्टा।

आयासिन् (वि०) परिश्रान्त, थकावट, प्रयत्नशील, प्रयासरत।

आयित (वि०) आया, प्राप्त हुआ। (सुद० १०७)

आयुः (पुं०) भव, कर्मागत जन्म, जीवन। (जयो० १/७६)

आयुक्त (भू० क० कृ०) [आ+युज्+क्त] नियुक्त, कार्यरत।

आयुक्तः (पुं०) १. मन्त्री, सचिव। २. अभिकर्ता, कमिश्नर।

आयुकर्म (पुं०) आयुकर्म, नारकादि भव को प्राप्त कराने वाला कर्म, अवधारण। नारकादिभवमिति आयुः। (स० सि० ८/४) यस्य भावात् आत्मनः जीवितं भवति। (त० वा० ८/१०) आयुरिति अवस्थितिः। भवधारणं प्रतीति आयुः। (धव० १३/३६२)

आयुतनेत्रिन् (वि०) सहस्त्र नेत्रधारी। (सुद० ३/९)

आयुधः (पुं०) शस्त्र, हथियार, अस्त्र [आ+युध्+घञ्] प्रपक्षयोगयुधसंन्निनाद। (जयो० ८/१२)

आयुधिन् (वि०) आयुध धारक, शस्त्री, शस्त्रधारक। (जयो० २/४१) शाणतो हि कृतकार्य आयुधी। (जयो० २/४१) आयुधान्यस्य सन्तीत्यायुधी। (जयो० वृ० २/४१)

आयुर्विगत (वि०) आयु समाप्ति, विगतजीवन। तम मम तव मम लपननियुक्त्याऽखिलमायुर्विगतम्। (जयो० २३/५६)

आयुर्वेदिक (वि०) चरककार्य में तत्पर। (जयो० वृ० ८/१६)

आयुर्वेदः (पुं०) व्याधि प्रतिकारक शास्त्र, शरीरसम्बन्धीशास्त्र। (जयो० २/५६) ०शरीर शास्त्र, ०कायिक विधि ग्रन्थ।

आयुर्वेदशास्त्रं (नपुं०) शरीर सम्बन्धी शास्त्र।

आयुर्वेदिन् (वि०) आयुर्वेदज्ञ, शरीरशास्त्रज्ञं। भालानलप्लुष्ट-मृगाधवस्य स्वात्मानमुज्जीवयतीति शस्य। प्रसूनवाणः स कुतो न वायुर्वेदी निवेदी विकल्पनायुः। (जयो० १/७६)

आयुष् (वि०) प्रमाण। (जयो० पृ० १/५)

आयुष्मत् (वि०) [आयुस्+मतुप्] जीवित, जीता हुआ, जीवन युक्त, दीर्घायु वाला।

आयुष्य (वि०) [आयुस्+यत्] जीवन युक्त, प्राणधारक।

आयुस् (नपुं०) [आ+इ+उस्] जीवन, प्राण, भव।

आये (अव्य०) सम्बोधनात्मक अव्यय।

आयोगः (पुं०) [आ+युज्+घञ्] कार्य सम्पादन, नियुक्ति, क्रिया।

आयोच्चाल (भू०) पहुंचाया, भेजा गया। (सुद० १२५) सम्पतति शिरस्येव सूर्यायोच्चालितं रजः। (सुद० १२५)

आयोजनं (नपुं०) [आ+युज्+ल्युट्] १. प्रयत्न, प्रयास। २. ग्रहण करना, पकड़ना। ३. सम्मिलित होना, एकत्रित।

आयोधनं (नपुं०) युद्धस्थल, संग्राम। 'आयोधनं श्रीरबुधाधिवासम्।' (जयो० ८/७)

आरः (पुं०) [आ+ऋ+घञ्] १. पीतल, अशोचित लोहा। २. कोण, किनारा।

आरः (पुं०) ग्रह विशेष, मंगल ग्रह। शनि 'आरः शनिस्तस्य'। (जयो० पृ० ११/५२)

आरक्तः (पुं०) लोहित, रक्त, लाल। (वीरो० ६/१५) (जयो० १५/)

आरक्तवर्ण (नपुं०) लालवर्ण, लोहित रूप। अरविंदस्य रक्तकमलस्य वेष इव लोहितभावमुपैति प्राप्नोति आरक्तवर्णोऽवलोक्यते। (जयो० वृ० १५/१)

आरक्ष (वि०) [आ+रक्ष्+अच्] परिरक्षित, रक्षा युक्त।

आरक्षः (पुं०) रक्षण, संरक्षण, सुरक्षा।

आरक्षक (वि०) [आ+रक्ष्+ण्वुल्] ०पहरेदार, ०सन्तरी, ०द्वारपाल, ०सिपाही, ०सुरक्षाकर्मी, ०आरक्षी।

आरघट्ट (वि०) कसाई। (दयो० ५७)

आरटः (पुं०) [आ+रट्+अच्] नट, पात्र विशेष, जो हास्य, नृत्यादि में प्रवीण हो।

आरण (वि०) नाशक, घातक, विध्वंसक, नाश करने वाला। (जयो० वृ० १९/८०)

आरणिः (नपुं०) [आ+ऋ+अनि] भंवर, जलावर्त।

आरण्य (वि०) [अरण्य+अण्] जंगली, वनोत्पन्न, वनोपगत। 'अरण्यस्य भाव आरण्यम्। 'अरण्यमेवारण्यं' जंगल में रहने वाला। ''आरण्यमुपविष्टोऽपिश्रीमान् समरसङ्गतः।'' उक्त पंक्ति में कवि ने 'आरण्य' की दो निरुक्ति की हैं, दोनों ही समभावधारी के समत्व का निर्देश करती हैं।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आरता (वि०) कोप रहित, क्रोधमुक्त। (जये०११/९४)

आरतिः (स्त्री०) [आ+रम्+क्तिन्] १. विश्राम, रोक, आराम। २. रतिजन्य। ३. आरती।

आरनालः (पुं०) [आ+ऋ+नल+घञ्] मांड।

आरब्धः (पुं०) [आ+रभ्+क्त] प्रारम्भ, शुरु, समारब्ध, रचित कृपालतातः आरब्धं तस्येदं मम कौतुकम्। (सुद० १३६) कृपा रूप लता से रचित यह भी निबन्ध कौतुक बढ़ाएगा। समारब्धः आरब्धः पापपथस्य। (जयो० वृ० २/११६)

आरब्धवती (वि०) प्रारम्भ करने वाली, प्रयत्नशील। 'उपसर्गमुपारब्धवती कुर्वतिहासती।' (सुद० १३३)

आरभटः (पुं०) [आरभ+आट] विश्वास, दृढ़ प्रतीति।

आरभटा (स्त्री०) दोष विशेष, उपेक्षणीय क्रिया, विधिवत क्रिया न करना।

आरम्भः (पुं०) [आ+रभ्+घञ्] ०प्रारम्भ, ०समारम्भ, ०रचित, ०शुरु ०क्रियाशील, ०कार्य, ०व्यवसाय, ०व्यापार। 'सदारम्भादनारम्भाद- घादप्यतिवर्तिनी।' (सुद० ४/३२) ग्रन्थारम्भसमये- परिग्रहव्यापाररूपे।' (जयो० वृ० १/११०) प्रक्रमः आरंभः (स० सि० ६/८) आरम्भः प्राणि-पीडाहेतुर्व्यापारः। (स० सि० ६/१५) प्राणि-प्राण-वियोज-नमारम्भो नाम। (धव० १३/४६) प्राणियों के प्राणों का वियोजन/घात का नाम आरम्भ है।

आरम्भ-कथा (स्त्री०) प्राणिविघात सम्बन्धी कथा।

आरम्भकोपदेशः (पुं०) पाप जन्य क्रियाओं का उपदेश, 'अनर्थदण्ड' सम्बन्धी कथन।

आरम्भक्रिया (स्त्री०) छेदन, भेदनादि की क्रिया, प्राणिघात का कार्य। पाप जन्य क्रियाओं का देखकर हर्षित होना।

आरम्भणीय (वि०) हिंसाजनीय, प्राणिघात उत्पन्न करने वाली। (दयो० ६)

आरम्भिक (वि०) संहारक, दूषित, विघात। जिससे घर के खान-पान, लेन-देन, वाणिज्य-व्यापार आदि के करने से होने वाली हिंसा हो। (सुद० ४/३२)

आरम्भिकी (स्त्री०) प्राणिघातक क्रिया। आरम्भः प्रयोजनं कारणं यस्याः सा आरम्भिकी।

आरम्भ-विरत (वि०) ०हिंसा रहित, ०प्राणिघात रहित, ०आरम्भ परित्याग ०'अष्टम प्रतिमा विशेष'-सर्वतो देशतश्चापि यत्रारम्भस्य वर्जनम्। अष्टमी प्रतिमा सा (ला०संहिता ७/३१)

आरा (स्त्री०) आवाज, चिल्लाना। चीखना।

आराडटती (वि०) उतरी हुई, नीचे आगत। (दयो० ४२)

आरात् (अव्य०) इस समय, अब। 'आराम आरात्परिणामधाम' (जयो० १/८३)

शीघ्र 'पय आरात्स्तनयोस्तु पायित।' (मुद० ३/२६) 'आरादधावृतपयोधरसेवा।' (जयो० ४/५७)

तभी से--'यदादिदृष्टाः समदृष्टमारात्तदादिदृष्टा हृदि मुन्ममारात्। (सुद० २/१९) 'आरात्' का अर्थ दूर, दूरस्थ, दूर से निकट, समीप आदि भी है। (जयो० १/४, १/३)

आरातिः (पुं०) [आ+रा+क्तिच्] शत्रु, प्रतिपक्षी, वैरी।

आरातीय (वि०) [आरात्+छ] ०निकट, ०समीप, ०आसन्न, ०दूर का।

आरात्रिकं (नपुं०) [आरात्रर्वापि निर्वृत्तम्+ठञ्] रात्री सम्बन्धी आरती, उपासना के लिए भगवत् आरती।

आराध् (सक०) ०आराधना करना, ०सेवा करना, ०संतोष करना, ०उपासना करना, ०पूजा करना, ०अर्चना करना। (वीरो० ८/४३) आराधयामि 'परोपकारैक-विचार हारा त्कारामिवाराध्य गुणाधिकारम्।' (जयो० १/८६) आराध्य-संपूज्य आराधयेत् (जयो० वृ० २/४१)

आराधक (वि०) उपासक, सेवक। (भक्ति० २४)

आराधनं (नपुं०) आराधना, अर्चना, पूजा, सत्कार, उपासना। (सुद० २/३०)

आराधनकाक (वि०) भटकने वाला पर सेवा तत्पर। स प्रतिहारमाराधनकारक। (जयो० २/३१) आराधनकारकं-पर सेवा तत्पर।

आराधना (स्त्री०) उपासना, अर्चन, भक्ति, सेवा। पारणमस्याः किं भवेत्तामाराधनामुदस्य। (सुद० ९४) आराध्यन्ते सेव्यन्ते स्वार्थप्रसाधनकानि क्रियंते। (भ०आ०१)

आराधना-कथाकोषः (पुं०) एक कथा ग्रन्थ का नाम। (वीरो० १७/२०)

आराधनीय (वि०) सेवनीय, पूजनीय, अर्चनीय। (जयो० वृ० २७/८) ०सम्माननीय।

आराधनीयदलं (नपुं०) समाराध्य समूह, पूजनीय दल। (जयो० १२/१३४) सुखादि समाराध्यं सौधसम्पद्दलं कया।

आराधित (वि०) वंदित, पूजित, सेवित, समाराधित। (जयो० १२/१, जयो० ३/५) वंदितमाराधितं भवति। (जयो० वृ० १२/१)

आराध्य (वि०) सेवनीय, पूजनीय, वंदनीय। (जयो० १/६२)

आराध्यतम (वि०) अत्यन्त आराधनीय, विशेष वंदित। (जयो० २७/८)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आरामः (पुं०) [आ+रम्+घञ्] आगत्य रमन्तेऽत्र स आरामः। १. बगीचा, उद्यान, उपवन। कदाचिदा राममुष्य। (जयो० १/७७) २. प्रीति, स्नेह, रुचि, प्रसन्नता, हर्ष, प्रमोद। (सुद० ८३) 'आसीत्तदाराम-ललाममञ्चमहो' (जयो० १/४९) उक्त पंक्ति में 'आराम' का अर्थ 'विश्राम' है। लक्ष्मी के विश्राम करने का सुन्दर मञ्च।

आराम-धाम (नपुं०) १. बगीचा, उद्यान, उपवन। 'आराम-धामधनतां धरणीं समस्तां।' (सुद० १/३५) २. विश्राम स्थान, आरामगृह।

आराम-रामणीयक (वि०) उद्यान की रमणीयता। 'आरामस्य उद्यानस्य रामणीयकं सौन्दर्यमनुवदता वनपालेन। (जयो० वृ० १/९०)

आराम-वर (वि०) उत्तम बगीचा 'यस्मैकिलारामवरेण' हर्ष-वरेण पुष्पाञ्जलिरर्पितोऽपि। (समु० ६/३२)

आरामिकः (पुं०) माली, बगीचे का रक्षक।

आरालिकः (पुं०) रसोइया। पाचक।

आरार्तिकावतरणं (नपुं०) नीराजन पात्र, आरती भाजन। (जयो० वृ० १२/१०५)

आरु (पुं०) [ऋ+उण्] १. सूअर, सूकर। २. केंकड़ा।

आरु (अक०) बैठना, स्थापित होना, पहुंचना। (जयो० ११/३)

आरुह् (अक०) बैठना, स्थापित होना, पहुंचना। (जयो० ११/३)

आरू (वि०) [ऋ+ऊ+णित्] भूरे रंग का।

आरूढ (भू० क० कृ०) [आ+रूह्+क्त] सवार, चढ़ा हुआ, बैठा, हस्ति आदि पर स्थित। 'हस्त्यारूढः।' (जयो० वृ० ८/११) 'रूढमक्रमामत्' (जयो० वृ० ८/११)

आरूढिः (स्त्री०) [आ+रूह्+क्तिन्] स्थित, आरोपित, उन्नयन।

आरेकः (पुं०) [आ+रिच्+घञ्] रिक्त करना, संकुचित करना।

आरेचित (वि०) [आ+रिच्+णिच्+क्त] संकुचित, उदासीन, उन्मीलित, निमीलित भौंह।

आरोग्यं (नपुं०) [आरोग्+ष्यञ्] स्वस्थ, निरोग, हृस्ट-पुष्ट रोग मुक्त। 'औदार्यं रूपमारोग्यं दृढत्वं पटुवाक्यता।' (दयो० पृ० ७०)

आरोप् (सक०) ०डालना, ०निक्षेप करना, ०मान लेना, ०मढ़ना, ०रोपना, ०गाड़ना। व्यञ्जनेष्विव सौन्दर्यमात्रारोपावसानकौ।' (जयो० ३/४९) 'तत्करोमि किल सा सहजेनारोपयेद्विभुगले तदनेना।' (जयो० ४/३३) 'आरोपयेत् निक्षिपेत्।' (जयो० वृ० ४/३३) 'चापार्थमारोपितशस्यनासा' (जयो० ५/८४)

आरोपणं (नपुं०) [आ+रूह्+णिच्+ल्युट्] रखना, जमाना, डालना, रोपना।

आरोपण-परिणामः (पुं०) निक्षेपण भाव। (जयो० पृ० ३/४९)

आरोपित (वि०) उपात्त, समङ्कित, स्थापित, रखा गया, अंकित किया गया। (जयो० वृ० ३/७४) 'आरोपितोऽन्येन च दन्तमूले।' (जयो० वृ० १३/१०१)

आरोपितवती (वि०) स्थापित करने वाली। (वीरो० ३/२२)

आरोहः (पुं०) [आ+रूह्+घञ्] १. सवार, बैठा हुआ, स्थित, आरूढ। २. संगीतविधा का एक स्वर, जिसमें ऊपर की ओर तान लिया जाता है। ३. ऊभार, ऊँचा स्थल, पहाड़। ४. आरोहः शरीरोच्छ्रायः शरीर की ऊँचाई।

आरोहकः (पुं०) [आ+रूह्+ण्वुल्] सवार, चालक, रथ या अश्व सवार।

आरोहणं (नपुं०) [आ+रूह+ल्युट्] ऊपर चढ़ने की क्रिया 'कुरुतात् सदनुग्रहं हि तु, स्वयमारोहणतः परीक्षितुम्।' (समु० २/२३)

आर्किः (पुं०) शनिग्रह, अर्कपुत्र।

आर्क्ष (वि०) [ऋक्ष+अण्] तारकीय, नक्षत्र सम्बन्धी।

आर्गड (वि०पुं०) सांकल, आगल। (जयो० ८१)

आर्घ्यं (नपुं०) [आर्घा+यत्] जंगली शहर।

आर्च (वि०) भक्त, पूजक, आराधक।

आर्चिक (वि०) [ऋच्+ठञ्] पूजक, वंदक।

आर्जवं (नपुं०) १. सरलता, ०मृदुता ०ऋजुभाव, ०निर्मल प्रवृत्ति। (त० सू० ९/६)। योगस्यावक्रता आर्जवम्। (त० वा० ९/६) ऋजोर्भावं आर्जवम्। (मूला०वृ० ११/५) २. स्पष्टता, ०सद्व्यवहार, ०सदाचरण, ०निष्कपटा, ०अवक्रता, ०अकुटिलता।

आर्द्र (वि०) उत्कण्ठित, द्रवीभूत। 'आर्द्र भूमिपतेर्मनस्थलमलं काशीति संस्त्रोतसा।' (जयो० ३/९८)

आर्त (वि०) [आ+ऋ+क्त] १. पीड़ित, बाधा, दुःखित, कष्ट। २. आर्तध्यान विशेष, जिसमें अनिष्ट का संयोग होने पर पीड़ा होती है। 'ऋतं दुःखम्, अर्दनमतिर्वा, तत्र भवमार्तम्।' (स० सि० ९/२५) ३. रोग, दुःखजन्य। ४. नाद विशेष, जिसमें कष्टदायी स्वर ध्वनित हो।

आर्तदीनं (नपुं०) पीड़ाजन्य। (समु० ३/३६)

आर्तध्यानं (नपुं०) ध्यान का एक भेद, जिसमें अनिष्ट का संयोग होने पर पीड़ा होती है। (समु० ८/३५) आर्तध्यानमिदं समाह भगवास्त्याज्यं सदा योगिता। (मुनि० २१)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आर्तभावः (पुं०) चिन्तातुर, कष्टयुक्त। (समु० ४/५)

आर्तव (वि०) [ऋतुरस्य प्राप्त-अण्] ऋतु सम्बंधी, ऋतुकाल जन्य।

आर्तिः (स्त्री०) [आ+ऋ+क्तिन्] १. पीड़ा, व्यथा, दुःख, कष्ट, बाधा। (मुनि० २१) २. मानसिक कष्ट, अत्यधिक वेदना।

आर्थ (वि०) अर्थाधीन, अर्थ सम्बन्धी, धन का प्रयोजन। (जयो० १०/४७)

आर्थसार्थक (वि०) याचक समूह। (जयो० १०/४७)

आर्थिक (वि०) [अर्थ+ठक्] १. सार्थक, २. धनयुक्त, ३. प्रयोजन भूत, आधारभूत। तथ्यपूर्ण, वास्तविक।

आर्द्र (वि०) [अर्द् रक्] १. गीला, नमीयुक्त, अशुष्क। २. मृदु, कोमल, रस युक्त।

आर्द्रकं (नपुं०) [आर्द्रा+वुन्] अदरक।

आर्द्रता (वि०) कोमल, सुकुमार। (जयो० २/९९)

आर्द्रचेतस् (पुं०) करुणाशील। (जयो० २४/१२०)

आर्द्रता (वि०) उत्कण्ठता, द्रवीभूतता। (समु० ७/१६)

आर्द्रभावः (पुं०) करुणभाव। (वीरो० ४/३)

आर्द्रिय (वि०) उत्कण्ठित।

आर्द्रीकरणं (नपुं०) परिषेचन, द्रवीभूतीकरण। (जयो० २/९३)

आर्द्रय् (सक०) गीला करना, अशुष्क बनाना। आर्द्रियते (सुद० २/१४)

आर्ध (वि०) [अर्ध+अण्] आधा, अर्धभाग।

आर्धिक (वि०) अधिक से सम्बन्ध रखने वाला।

आर्य (वि०) [ऋ+ण्यत्] १. श्रेष्ठ, ०उत्तम, ०समादरणीय, ०सम्मानीय, ०पूज्य, ०कुलीन। 'गुणप्रसक्त्याऽतिथये विभज्य सदन्नमातृप्ति तथोपभुज्य। हितं हृदा स्वेतरयोर्विचार्य, तिष्ठेत्सदाचार परः सदाऽऽर्यः।' (सुद० १३०) 'वृथा साऽऽर्य मुधासुधारा' (जयो० १/३) उक्त पंक्ति में 'आर्य' शब्द सज्जन पुरुष का वाचक है। 'आर्य' सम्य जाति विशेष के लिए भी प्रयोग किया जाता है। व्यशंषयन् वा द्रुतमीर्षयार्य तकाञ्छतत्त्वेन किलारिनार्यः।' (जयो० १/२६) चतुर्थ सर्ग में भी 'आर्य' शब्द को सभ्य व्यक्ति के लिए प्रयुक्त किया गया। (जयो० ४/४८)० 'आर्य' का श्रेष्ठ अर्थ (२२/८३) ०'आर्य' का सेठ-क्षेमप्रश्नानन्तरं ब्रूहि कार्यमित्यादिष्टः प्रोक्तवान् सागरार्यः। (सुद० ३/४९) सुदर्शनोदय (४/२२, ९/१४) में यही अर्थ है। 'बाल्येऽपि लब्धसत्वकया वदाऽऽर्य'। (सुद० ९/१४) ०'आर्य' का अर्थ स्वामी, ०नायक, ०गुरु ०अध्यापक, आदि सभी हो सकता है, क्योंकि इस विशेषण में सम्पूर्ण संस्कृति का समावेश है। गुणैर्गुणवद्भिर्वा अर्यन्त-इत्यार्यः (त० वा० ३/३६, स० सि० ३/३६) सद्गुणैरर्यमाणत्वाद गुणवद्भिश्च मानवैः। (त०श्लोक ३/३७)

आर्यकार्यः (पुं०) श्रेष्ठ कार्य, पुनीत कार्य, उत्तम कर्म। 'आर्यकार्यमपवर्गवर्त्मनः। (जयो० २/१३६)

आर्यखण्डं (नपुं०) आर्यावर्त, आर्यक्षेत्र, सभ्यजनों का क्षेत्र। (सुद० १/१४) (वीरो० २/९)

आर्यगृह्य (वि०) आर्यों से पूजित।

आर्यजनः (पुं०) आर्यलोग, उत्तम लोग। (सुद० १/१४)

आर्यदेशः (पुं०) आर्यदेश, सभ्य संस्कृति का प्रदेश।

आर्यता (वि०) महापुरुषता। (जयो० वृ० २६/३६) उच्चकुलीनता-(वीरो० ९/५)

आर्यपुत्रः (पुं०) सभ्य संस्कृति का सुत।

आर्य-प्रकृतिः (स्त्री०) सभ्य स्वभाव, उत्तम प्रकृति। तुङ्ग पुनः सा परिधाय कायमहार्यमार्यप्रकृतेः समायम्। (११/६) 'अहार्यः पर्वते पुंसि' इति विश्वलोचनः।

आर्यप्राय (वि०) आर्यों की बहुलता।

आर्यमन् (वि०) सज्जन, श्रेष्ठ पुरुष। (समु० ४/२०)

आर्यमिश्र (वि०) आदरणीय पुरुष, मुक्त, सभ्य जन युक्त।

आर्यलिंगिन् (पुं०) पाखंडी।

आर्यवर्तः (पुं०) आर्यखण्ड, आर्यक्षेत्र।

आर्यवृत्ताविन (वि०) भद्र, सदाचारी, योग्य, श्रेष्ठ।

आर्यव्यक्त (वि०) आर्य द्वारा कथित। (वीरो० १४/५)

आर्यसत्यं (नपुं०) उत्कृष्ट सत्य, अलौकिक सत्य, दिव्य सत्य।

आर्यशस्ति (वि०) आर्य खण्ड। (वीरो० २/८)

आर्यशिरोमणि (वि०) महापुरुषों की मुखिया, अग्रणीजन। (दयो० १०९)

आर्या (वि०) १. सम्मानीय, पूजनीया, प्रशंसनीया। (वीरो० १/२७) मनोरमाऽभूदधुनेयमार्या न नम्नभावोऽयमवाप्ति नार्याः। (सुद० ११५) २. आर्या-आर्यिका, दिगम्बर सम्प्रदाय में व्रत अङ्गीकार करके जो सर्व परिग्रह त्यागी बन जाती है वह आर्यिका कहलाती है। आर्यिका व्रत अंगीकार करके समस्त परिग्रह का त्याग करती है तथा श्वेत वस्त्र को धारण करती है। आर्यिका उपचरितमहाव्रतधराः स्त्रियः। (सा०ध० २/७३)

आर्यात्व (वि०) आर्यिकापद वाली। (सुद०

आर्यावर्त (पुं०) आर्यक्षेत्र, आर्य खण्ड। (दयो० ३)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आर्यिका (स्त्री०) आर्यिका (समु० ४/१६) महाव्रतधारी पूज्या नारी। आर्यिका उपचरित महाव्रतधरा: स्त्रियः। (सा०ध० २/७३)

आर्यिकाचर्या (स्त्री०) आर्यिका व्रत चर्या। साध्वीनामपि एतदेव चरणं नान्यं विना जायते यासां क्वापि नहिं त्रपाभरजुषामेकाकिता स्थायते क्षिप्राणामशनं च गहिसदने चैकत्र गत्वा भवेत्तच्च स्यादुपविश्य मौनत इति दृग्दृश्यते संस्तवे। (मुनि० श्लोक ६२)

आर्यिकासङ्घ (वि०) आर्यिका समूह। (सुद० ४/२९)

आर्यितत्त्व (वि०) पाण्डित्य। (सुद० १०८)

आर्य (त्रि०) [ऋषेरिदम्+अण्] ऋषि सम्बन्धी, ऋषिवाक्य। मा हिंस्यात्सर्वभूतानीत्यार्षं धर्मे प्रमाणयन्। (सुद० ४/४१) आर्ष का पवित्र, पूत, पावन, योग्य, आदि भी अर्थ है।

आर्षप्रणीतिः (स्त्री०) आर्ष नीति, आर्ष नियम। (जयो० २/६) 'लोकरीतिरिति नीतिरङ्किताऽऽर्षप्रणीतिरथ निर्णयाञ्चिता।' (जयो० २/६)

आर्षरीति (स्त्री०) वैदिक नियम, आगमिक नियम, आर्षनियम। 'आर्षा चासौ रीतिर्वैदिकनियमः। (जयो० वृ० २/४)

आर्षवाक् (पुं०) आर्षवचन, आर्षसूक्ति, आगामिक वचन, ऋषिवचन। आर्षवाच्यपि दुःश्रुतीरिमाः किन्न पश्यतु गृहे नियुक्तिमान्। (जयो० २/६३)

आर्हत् (वि०) योग्य, पूज्य। (सुद० ९६)

आर्हत (वि०) अर्हत मत से सम्बन्धित, जिन प्रणीत वचन से युक्त।

आर्हत (वि०) योग्यता, पूज्यता। (सुद० ९६)

आर्हतमतानुयायिन् (वि०) अर्हतमत वाले जैन (वीरो० २२/१६)

आर्हन्त्य क्रिया (स्त्री०) अरहन्त सम्बन्धी क्रिया, अर्हन्तपद सम्बन्धी, कल्याणकारी क्रिया। (सम्य० १८/३) आर्हन्त्यमर्हतो भावो कर्म वेति परा क्रिया। (महापुराण ३९/३०९)

आर्हती (वि०) आर्हतमतानुयायी। (वीरो० १५/३३)

आल: (आ+अक्त्+अच्) संखिया।

आलगर्दः (पुं०) कथन, बातचीत, विचार।

आलपद् (वि०) अपशब्द करना, बुरा कथन। किलाऽऽलपद-भिर्बहुशः मर्मैतैः। (सुद० १०५)

आलपित (वि०) कथित, प्रतिपादित, निरूपित। (जयो० ९/२०) तदालपितैः जयद्विपः।

आलभनं (नपुं०) [आ+लभ्+ल्युट्] ग्रहण करना, पकड़ना, लेना।

आलम्बः (पुं०) [आ+लम्ब्+घञ्] आधार, आश्रय, सहारा। (वीरो० २२/३६)

आलम्बनं (नपुं०) [आ+लम्ब्+ल्युट्] आलम्बन बाह्यो विषयः। १. आश्रय, आधार, सहारा, आशय, आवास, स्थान, वास, निवास। (जयो० वृ० ३/७१) २. कारण, हेतु, निमित्त।

आलम्बनभूत (वि०) आधारभूत, आश्रयजन्य। 'शाखाचरणा-लम्बनभूतैः।' (जयो० १२/१३७)

आलम्बनसम्पदा (वि०) आधारभूत। (समु० १/३) भवान्धुगर्ते पतते जनायाऽनुकीर्तिताऽऽलम्बनसम्प्रदा सा।

आलम्बनशुद्धिः (स्त्री०) शास्त्रशुद्धि।

आलम्बिन् (वि०) [आ+लम्ब+णिनि] आधारित, आश्रित, पकड़े हुए, गृहीत जन्य, थामने वाला, पहने हुए, लटकते हुए।

आलम्भः (पुं०) [आ+लभ्+घञ्] १. ग्रहण करना, लेना. उठाना, पकड़ना। २. डालना, पटकना, रखना।

आलयः (पुं०) [आ+ली+अच्] देखो आलयं।

आलयं (नपुं०) स्थान, वास, आश्रय, निवास, घर, गेह, आसन, जगह। 'सुरालयं तावदतीत्य दूरात्।' (सुद० १/२७)

आलवण्यं (नपुं०) [अलवणस्य भावः] १. लवणशून्य, स्वादहीन, नीरस। २. लावण्य रहित, सौन्दर्यविहीन, कुरूपता।

आलवालं (नपुं०) [आसतन्तात् लवं जललवं आलाति आ+ला+क] ०क्यारी, ०खाई, ०पोखर, ०पानी भरने का स्थान।

आलस (वि०) [आलसति ईषत् व्याप्रियक्ते+अच्] उदासीनता, प्रमाद, सुस्त, शिथिलता। 'विद्याऽनवद्याऽऽप न वालसत्वं'। (जयो० १/६) 'समाजन इवाऽऽरामः सालसङ्गममादधत्।'' (सुद० ८३)

आलसता-व्याज (वि०) क्लममिष, आलस्य के बहाने, प्रमाद के कारण। (जयो० १४/३२)

आलस्य (वि०) [अलसस्य भावः] प्रमाद, उदासीनता, सुस्ती। (जयो०१/६)

आलस्य-कला (स्त्री०) प्रमाद जन्यता।

आलस्यचिह्न (नपुं०) विजृम्भण। (जयो० ६/३९)

आलातं (नपुं०) जलती हुई लकड़ी।

आलानं (नपुं०) [आ+ली+ल्युट्] हस्ति बांधने का खम्भा, रस्सा।

आलानिक (वि०) [आलान+ठञ्] हस्ति बांधने का साधन।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आलापः (नपुं०) [आ+लप्+घञ्] वार्तालाप, अभिभाषण, संलाप, परस्पर बातचीत। 'यदद्य वाऽऽलापि जिनार्चनायाम्।' (सुद० ३/३७)

आलापनं (नपुं०) [आ+लप्+णिच्+ल्युट्] बातचीत, संलाप, अभिभाषण, परस्पर संवाद।

आलापन-बन्धं (नपुं०) दूसरे द्रव्यों का सम्बन्ध, दर्भादि से परस्पर बन्धन करना, बांधना।

आलाबुः (स्त्री०) आल, लौकी, घीया, पेठा, कद्दू, कुम्हड़ा।

आलावर्तं (नपुं०) [आलं पर्याप्तमावर्त्यते इति-आल+आ+वृत्+णिच्+अच्] बिजना, कपड़े का पंखा।

आलि (वि०) [आ+अल्+इन्] १. प्रमादी, आलसी, सुस्त। २. वचनबद्ध, सत्य युक्त।

आलिः (स्त्री०) १. बिच्छु, मधुमक्खी। २. सखी। (वीरो० ४/२९) संतति, तति, ३. पंक्ति-'शालिकालिभिरुपाद्रियते वा। आलिभिः पङ्क्तिभिः। (जयो० वृ० ४/५७)

आलि-कलापः (पुं०) सखि कौतुक। (जयो० ६/६५)

आलिकुलं (नपुं०) सखी समूह। (वीरो० ४/२९)

आलिका (स्त्री०) सखि, मित्र, सहेली। 'चितमूहेऽमुकमालिके सितम्।' (जयो० १८/७२) 'पथभ्रष्टा इवालिकाः' (जयो० २३/८१) आलिका-वयस्या (जयो० वृ० २८/८१)

आलिङ्गनं (नपुं०) [आ+लिङ्ग+ल्युट्] समालिंगन, कण्ठालिंगन, वक्षाधार, गले लगाना। (जयो० वृ० ११/३८) 'आलिङ्गन् प्रययौ सप्तिसमूहोऽनुनयन्निव।' (जयो० ३/११०) 'तथाऽऽलिङ्गचुम्बनादिक।' (सुद० पृ० ९९)

आलिङ्गय (सक०) आलिंगन करना, गले लगाना। 'आलिङ्ग्योर्वी विशश्राम।' (समु० ९/१६)

आलिजन (वि०) सखी समूह। (जयो० २२/७६) 'सालिजने किमु मुद्रणमगात्।' (जयो० २२/७६)

आलिञ्जरः (पुं०) मिट्टी का घर।

आलिन्दः (पुं०) चबूतरा, ऊँचा स्थान, मचान।

आलिम्पनं (नपुं०) [आ+लिप्+ल्युट्] लीपना, सफेदी करना, सफाई करना।

आलिविधान (वि०) सखि-संगति, मित्रों का साथ। पार्श्वतः परिमितालिविधाना देवतेव हि विमानसुयाना। (जयो० ९/५८)

आली (स्त्री०) सहचरी, सखी, वयस्या, सहेली, सहचारी। (जयो० ५/७३)

आलीढं (नपुं०) [आ+लिह्+क्त] बैठना, आसीन, निशान बनाने के लिए स्थित होना, प्रत्यञ्चा खींचना, दाहिने पैर को आगे करके और बाएं पैर को पांच पादों के अन्तर से पीछे फैलाकर बाएं हाथ में धनुष लेकर दाहिने हाथ से खींचकर खड़ा होना। (वीरो० २/१०)

आलीढस्थानं (नपुं०) शस्त्रादि को चलाने के लिए किया गया हाथ पैरादि का प्रयास स्थान।

आलीयकं (नपुं०) ताड़ी, शराब, तालवृक्ष रस। 'नालीयकं सौधमिवास्तु।' (जयो० १६/२६) आलीयकं तालवृक्षरसः सुधाविकारः (जयो० १६/२६)

आलुः (पुं०) [आ+लु+डु] उल्लू।

आलुकः (पुं०) ०आलु, ०रतालु, ०एक अभक्ष्य जमोकंद। (वीरो० २२/२३)

आलुञ्चनं (नपुं०) [आ+लुञ्च्+ल्युट्] केशलुंचन, उखाड़ना, फेंकना, निकालना।

आलुञ्छनं (नपुं०) समभाव परिणाम। साहीणो समभावो आलुंछणमिदि समुद्दिट्ठं। (निय० सा० ११)

आलुब्धक (वि०) शिकारी, लोभी, लालची, आसक्तिजन्य। जह्यालुब्धक, खट्टिकादि-रविणां दुष्कर्मणो वेश्म यद्वेन। (मुनि० १०)

आलेखनं (नपुं०) [आ+लिख्+ल्युट्] लिखना, चित्रण करना।

आलेख्य (वि०) [आ+लिख्+ण्यत्] चित्रण, प्रस्तुतिकरण, चित्रांकन।

आलेपः (पुं०) [आ+लिप्+घञ्] उबटन, मर्दन, तेल लगाना।

आलेपनं (नपुं०) [आ+लिप्+ल्युट्] उबटन, लेपन, मर्दन, तेल लगाना।

आलोकः (पुं०) १. प्रकाश, प्रभा, कान्ति, आभा। २. दृष्टि, दर्शन, देखना, अवलोकन। (वीरो० २०/२०) तमेनं विधुमालोक्य स उत्तस्थौ समुद्रवत्। (सुद० ३/४४)

आलोकनं (नपुं०) १. अवलोकन, दर्शन, देखना। २. दृष्टि, पहलू, विविध विचार दृष्टि।

आलोचक (वि०) [आ+लोच्+ण्वुल्] आलोचना करने वाला, समीक्षक, विचारक।

आलोचनं (नपुं०) समीक्षक, सर्वेक्षा दर्शन, विचार-विमर्श विवरण, प्रकाशन, आख्यान, निवेदन। 'आलोचनं विवरणं प्रकाशनमाख्यानं विवर्जितमालोचनम्। (त०भा०९/२२) 'गुरवे प्रमादनिवेदनमालोचनम्।' (मूला०११/१६)

आलोचना (स्त्री०) अपराध गृहन, त्यजन, वस्तु सामान्य का मर्यादित बोध, 'स्वापराध निवेदनं गुरुणामालोचनं। (भ०आ० ६९)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आलोचनाशुद्धिः (स्त्री०) राग-द्वेष रहितभाव करना। 'मायामृषा-रहितता आलोचनाशुद्धिः।'

आलोचनीय (स०कृ०) आलोचना योग्य (वीरो० १७/२१) (भ० आ० टी० १६६)

आलोडनं (नपुं०) [आ+लुड्+णिच्+ल्युट्] १. बिलोना, हिलाना, घुमाना। २. क्षुब्ध करना। ३. मिश्रित करना।

आलोल (वि०) कांपने वाला, घूमने वाला, हिलने वाला विक्षुब्ध हुआ, लोलुपी।

आवन्त्य (वि०) [अवन्ति ञ्यङ्] अवन्ती से आने वाला, अवन्ती से सम्बन्ध रखने वाला।

आवन्त्यः (पुं०) अवन्ती का राजा।

आवद्धकटिः (स्त्री०) हर समय तत्पर। (समु० १/१६)

आवद्य (वि०) दोष। (३/६६)

आवपनं (नपुं०) [आ+वप्+ल्युट्] १. बोना, खेत में रोपना, बिखेरना, डालना, फेंकना, निक्षेपण, बीज बौना। २. हजामत करना। ३. बर्तन, पात्र, मर्तबान।

आवरकं (नपुं०) [आ+वृ+ण्वुल्] ढक्कन, पर्दा।

आवरणं (नुपं०) [आ+वृ+ल्युट्] १. आच्छादन, पर्दा, ढक्कन, बाधा, बाड़, दीवार। (जयो० २६/९७) 'आव्रियते आच्छाद्यतेऽनेनेत्यावरणम्' २. अज्ञानादि दोष भाव, मिथ्यात्व समूह, कर्माच्छादन।

आवरण कर्त्री (वि०) आवारा, भ्रमणशील। (जयो० ३/३९)

आवराङ्गपानं (नपुं०) मस्तक पर्यंत। वरागपर्यन्ताङ्गस्वादन अङ्गपान। 'वराङ्गंमूर्धगुह्ययो रित्यमरः।' वराङ्ग मस्तके योनौ इति विश्वलोचनः।

आवर्जनं (नपुं०) १. उपयोग, व्यापार, कर्मस्थिति का व्यापार। २. निषेध।

आवर्जित (वि०) शुभ भोगों का व्यापार। १. प्रोच्छि, पोंछा गया, प्रमार्जित। (जयो० १९/१०) २. निषेधित, प्रतिबाधित, निरोधित।

आवर्तः (वि०) [आ+वृत्+घञ्] १. भंवर, घेरा, चक्कर, घुमाव। २. पर्यालोचन, परिभ्रमण।

आवर्तकः (पुं०) [आवर्त+कन्] भंवर, जलावर्त, घुमाव, चक्कर।

आवर्तनं (नपुं०) चक्कर, घुमाव। (जयो० २४/२२)

आवर्तवती (वि०) चक्करशील, भ्रमणयुक्त, घुमावदार (जयो० १७/६९) आवर्तवत्या (जयो० १७/६९)

आवलिः (स्त्री०) [आ+वल्+इन्] तति, रेखा, पंक्ति। 'लोमलाजिच्छलेनैतत्पर्यन्ते शाद्वलावलिः।' (जयो० ३/४७) २. असंख्यात समय-आवलि असंख्यातसमयः।

आवलित (वि०) [आ+वल्+क्त] घेरि, घिरा हुआ, परिधि संयुक्त।

आवश्यकः (पुं०) अवश्य करणीय कार्य, (जयो० १२/१४४) अनिवार्य क्रिया, महाव्रती की क्रिया। 'ण वसो अवसो अवसस्सं कम्ममावासयं त्ति बोद्धव्वा।' (मूला०७/११४) १. महाव्रती के करने योग्य आवश्यक षट्कर्म। २. श्रावक या साधु के उपयोग रक्षक गुण। सामायिक, चतुर्विंशतिस्तव, वेदना, प्रतिक्रमण और कार्योत्सर्ग। (राज०वा०६/२२) 'जयोदय' में मुनि की वृत्ति का नाम आवश्यक है। 'न वशोऽक्षमनसामित्यवशः, अवश एवावश्यकस्तस्य भाव आवश्यकं तेन सहिता सावश्यकस्तस्येन्द्रियजयिनो मुनेः।' (जयो० वृ० २७/२३)

आवश्यक-करणं (नपुं०) ०अनिवार्य क्रिया ०साधु या श्रावक की नित्य प्रति करने योग्य क्रिया।

आवश्यक-कर्म (नपुं०) षडावश्यक कर्म, पूजादिकर्म। (जयो० २२/३५)

आवश्यक-निर्युक्तिः (स्त्री०) अखण्डित उपाय की युक्ति। 'जुत्ति त्ति उपाय त्ति य णिरयवा होदि णिज्जुत्ती। (मूला०७/१४) आवश्यक कर्त्तव्यों के प्रतिपादन करने वाले शास्त्र आवश्यकनिर्युक्ति है।

आवश्यकापरिहाणिः (स्त्री०) आवश्यक क्रियाओं का यथा समय पालन। 'आवश्यकक्रियाणां तु यथा कालं प्रवर्तना।' (त०श्लोक ६/२४)

आवश्यकीक्रिया (स्त्री०) कारणसापेक्ष जन्य आवश्यक क्रिया।

आवसतिः (स्त्री०) रजनी, रात्रि, विश्राम।

आवसथः (पुं०) [आ+वस्+अथच्] स्थान, निवास, घर, आवास, पड़ाव, घेरा, विश्रामस्थल।

आवसथ्य (वि०) [आवसथ+ञ्य] गृहस्थी, घर में रहने वाला।

आवसित (वि०) [आ+वस्+सो+क्त] १. स्थित, ठहरा हुआ। २. समाप्त, निश्चित, निर्णीत, निर्धारित।

आवह् (अक०) प्राप्त होना, उत्पन्न होना। (सुद० ४/२९)

आवह (वि०) [आ+वह्+अच्] उत्पन्न करने वाला, जनक, मार्ग दृष्टा। पथप्रदर्शक।

आवापः [आ+वप्+घञ्] बीज बौना, १. रोपना, डालना, निक्षेपण, फेंकना। २. बर्तन, कोटी। ३. उपयोग जन्य चर्चा।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आवापक: (पुं०) [आवाप+कन्] कंकण।

आवापनं (पुं०) [आ+वप्+णिच्+ल्युट्] करघा, खड्डी।

आवार: (पुं०) आवरण, पर्दा। 'पार्श्वे यस्य पवित्रावारा।' (जयो० २२/८)

आवालं (नपुं०) [आ+वल्+णिच्+अच्] थांवला, आलवाल, क्यारी।

आवास: (पुं०) [आ+वस्+घञ्] १. घर, निवास, स्थान, आश्रम, आराम। २. भवनवासी और व्यन्तर देवों के निवास स्थान। ३. निगोदजीव के आश्रय भूत स्थान। ४. पूजा के निमित्त 'देव' को बुलाना।

आविक (वि०) १. भेड़, मेष । २. मेष संबंधी। किन्तु गल्यमिव चाविकं पय:। (जयो० २/७८)

आविग्न (वि०) [आ+विज्+क्त] दु:खी, पीड़ित, कष्टजन्य।

आविद्ध (भू० क० कृ०) [आ+व्यध्+क्त] १. वेधित, बाधित, छेदित। २. गतिजन्य, फेंका गया।

आविर्भूत (वि०) प्रकटीजन्य।

आविर्भाव: (पुं०) [आविस्+भू+घञ्] १. अवतार, प्रकट, उपस्थित। २. अभिव्यक्ति।

आविल (वि०) [अविलति दृष्टिस्तृणाति-विल्+क] मलिन, ०मैला, ०पंकित, ०कीचड़जन्य, ०अपवित्र, ०घनीभूत, ०अनुलिप्त। (जयो० ६/४२) 'लालाविलौष्ठ्यादि निचूष्य।' (जयो० २७/३५)

आविल (सक०) अपवित्र करना, कलंकित करना।

आविष्करणं (नपुं०) [आविस्+कृ+ल्युट्] प्रकटीकरण, दर्शन, अभिव्यक्त।

आविष्कार: (पुं०) [आविस्+कृ+घञ्] अभिव्यक्ति, रचना, चित्रण, प्रस्तुतीकरण।

आविष्ट (भू० क० कृ०) [आ+विश्+क्त] प्रविष्ट, समाविष्ट, ग्रस्त, वशीकृत, निमग्न, तल्लीन।

आविस् (अव्य०) [आ+अव्+इस्] प्रत्यक्ष भूत, आंखों के समक्ष, सम्मुख।

आविश् (सक०) [आ+विश्] प्रविष्ट करना, आना। 'विशेष रसायितं मानसमाविवेश' (जयो० १/७४) 'मानसं हृदयं सरश्च आविवेश, प्राविशत्।' (जयो० वृ० १/७४)

आवृत् (स्त्री०) [आ+वृत्+क्विप्] १. प्रविष्ट होती हुई, समाहित। २. पद्धति, रीति, मुड़ा हुआ।

आवृत्त (भू० क० कृ०) घिरा हुआ, मुड़ा हुआ।

आवृत्ति: (स्त्री०) [आ+वृत्+क्तिन्] ०आना, ०लौटना, ०मुड़ना, ०प्रत्यावर्तन ०प्रतिनिवर्तन, एक जन्म से दूसरे जन्म को प्राप्त होना।

आवृष्टि: (स्त्री०) [आ+वृष्+क्तिन्] बारिश, पानी गिरना।

आव्रज् (सक०) जाना, प्रस्थान करना।

आव्रजंतु (जयो० ४/१८, आव्रजति। (जयो० २१/५) आव्रजत्, आव्रजता। (सुद० १०४) आव्रजति-समागच्छति- (जयो० ४/९७)

आवेग: (पुं०) [आ+विज्+घञ्] क्षोभ, उत्तेजना, चिन्ता, बेचैनी, घबराहट।

आवेदनं (नपुं०) [आ+विद्+णिच्+ल्युट्] सूचना, निवेदन, वर्णन, अपना पक्ष प्रस्तुत करना।

आवेल (अक०) हिलना, कंपित होना, 'मरुदावेल्लिताग्राभिस्त्का-नितिसमन्तत:।' (जयो० ३/७४)

आवेश: (पुं०) [आ+विश्+घञ्] १. प्रवेश, समाहित, घुसना, आना। २. एकाग्रता, अनुरक्ति।

आवेल्कता (वि०) हिलती हुई, सञ्चलता। 'वायुनाऽऽवेल्लतां सञ्चलसां' (जयो० ३/११२)

आवेल्लित (वि०) हिलती हुई, कंपित, लुलित। (जयो० ३/७४)

आवेशिक (वि०) अन्तर्हित, प्रविष्ट, समाहित।

आवेष्टक: (पुं०) [आ+वेष्ट्+णिच्+ण्वुल्] दीवार, आड़, बाड़, घेरा, परिधि।

आवेष्टनं (नपुं०) [आ+वेष्ट्+णिन्+ल्युट्] बांधना, लपेटना, ढकना, घेरना।

आश (वि०) [अश+अण्] खाने वाला, भोक्ता।

आशंस् (अक०) प्रशंसा करना। (जयो० ६/) 'आकाङ्क्षणभाशंसा' (त०वा० ७/३७)

आशंसनं (नपुं०) [आ+शंस्+ल्युट्] ०अभिलाषा, ०वाञ्छा आशा ०इच्छा ०अभिरुचि।

अशंसा (स्त्री०) [आ+शंस्+अ] १. इच्छा, ०अभिलाषा, ०चाह, वाञ्छा, आशा। २. अभिकथन, अभिभाषण।

आशंसा (स्त्री०) इच्छा, अभिलाषा। आशंसनमा शंसा (त०सि० ७/३७)

आशंसु (वि०) [आ+शंस्+उ] इच्छुक, आशावान्, अभिलाषी।

आशङ्का (स्त्री०) [आ+शङ्क्+अ] १. संदेह, संशय, शङ्का। २. भय, डर।

आशङ्कित (वि०) [आ+शङ्क्+क्त] भय युक्त, भीत, संदेहजन्य, शङ्काशीत, संशयपूर्ण। (भक्ति ४१)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आशयः (पुं०) [आ+शी+अच्] १. स्थान, आश्रय, शयनशाला, आसन। (सम्य० ११५, जयो०) 'बभौ समुद्रोऽप्यजडाशयश्च' (सुद० २/३०) २. अभिप्राय, हृदयगतभाव, इच्छा, मन, प्रयोजन, भाव।

आशयज्ञ (वि०) ज्ञाता, जानकार। (वीरो० १४/३) सनाभयस्ते त्रय एव यज्ञानुष्ठायिनो वेद पदाऽऽशयज्ञाः।

आशरः (पुं०) [आ+शृ+अच्] १. अग्नि, वह्नि। २. असुर, राक्षस। ३. पवन, वायु।

आशवं (नपुं०) [आशोर्भावः-अण्] १. गति, आवेग, तीव्रता, स्फूर्ति। २. शराब, अरिष्ट।

आशा (स्त्री०) १. इच्छा, वाञ्छा, अभिलाषा। 'सम्भेदमापादर-मुद्रणाशा' (जयो० ५/१०) 'आशाऽभिलाषा यस्याः सा' (जयो० वृ० ५/१०१) २. दिशा, प्रदेश, दिग्भाग, 'बहुविभ्रम-पूरिताशया' (जयो० १०/१४) आशा दिशतया। (जयो० वृ० १०/१४) २. सफलता, प्रत्याशा। 'नैराग्यमाशा मम सम्मुदे सः' (सुद० ११७) 'सुचिरक्षुधितजनाशा' (सुद० ७४) १. लोभ, तृष्णा, लालच। 'आश्यति तनूकरोत्यात्मान-मित्याशा लोभ इति। 'अविद्यमानस्यार्थ- स्याशासनमाशेत्य-परलोभपर्यायः' (जय०ध०)

आशाढः (पुं०) आशाढ।

आशातीत (वि०) पराकाष्ठा गत। (जयो० २२/६५)

आशाधिकर्तृ (वि०) वेलाधिकारिणी, प्रतीक्षा करने वाली। 'आशाधिकर्तृ-आशाधिकर्त्र्यो वेलाया अधिकारिण्यः' (जयो० वृ० ३/६३)

आशाधुत (वि०) आशाओं से रहित, इच्छाओं से मुक्त, विषयाभिलाषा से रहित। 'आत्मोपासितयैहिकेषु विषयेष्वाशाधुता साधुता' (मुनि० श्लोक २)

आशापाशः (नपुं०) तृष्णा का बंधन, लोभासक्ति, विषयाभिलाष का जाल। 'आशापाशविलासतो द्रुतमधिकर्तृं धनधाम। (जयो० २१/६१) 'आशा तृष्णैव पाशो बन्धन-रज्जुस्तस्य।' (जयो० वृ० २३/६१)

आशाम्बरः (पुं०) दिगम्बर, इच्छा एवं राग रहित साधु। यो हताशः प्रशान्ताशस्तमाशाम्बरमूचिरे (उपासकाध्ययन ८६)

आशालकः (पुं०) आसन, स्थान।

आशावती (वि०) आशिका, मङ्गलवाहिनी आशा करने वाली। (जयो० वृ० ३/८९)

आशासमन्वित (वि०) तृष्णा जन्य, इच्छा युक्त। (जयो० १६)

आशासित (वि०) आश्चर्यचकित, आशाजन्य। (जयो० १६/७५) 'आशासितेति वदनोदलवैश्च शस्यैः' (जयो० १६/७५)

आशास्य (सम्बन्धः कृ०) [आ+शास्+ण्यत्] आशा करके वाञ्छनीय, अभिलषणीय चाह/इच्छा करके।

आशिञ्जित (वि०) मनोरम ध्वनि, झंकार, आभूषणों की रुन-झुन।

आशिका (स्त्री०) ०आशा, ०अभिलाषा, ०इच्छा, ०वाञ्छा ०चाह। शुभाशंसा, आर्शीवाद। (वीरो० ८/३४) (मुनि० १७)

आशिकाधारः (पुं०) आर्शीवाद दायक, आशीष जन्य। 'आशिकाधारभूतेभ्यः शालिवृत्तेभ्य उत्तमम्' (जयो० २८/३४) आशिकाधारभूतेभ्यः-आशीर्वाददायकेभ्यः, आशामात्रस्या-धारेभ्यः। (जयो० वृ० २८/९४)

आशित (वि०) [आ+अश्+क्त] भुंजित, खाया हुआ, भुक्त। 'तिक्तायते यन्मरिचाशिनस्तु' (सुद० १११)

आशितङ्गवीन (वि०) चर्वित, चबाया हुआ।

आशितंभव (वि०) [आशित+भू+खच्] संतोष युक्त, तृप्त, संतृप्त।

आशिर (वि०) [आ+अश्+इरन्] भोजनाभिलाषी, आहारार्थी।

आशिरः (पुं०) १. तेज। अग्नि। २. सूर्य, दिवाकर, आदित्य। ३. राक्षस।

आशिस् (स्त्री०) [आ+शास्+क्विप्-इत्वम्] आशीर्वाद, मंगलकामना, शुभ-भावना। शिवमाशिषि वर्तते च येषां गुरवः श्रीपुरवर्तिनोऽपि शेषाः। (जयो० १२/८)

आशी (स्त्री०) [आ+शृ+क्विप्] (आशीर्यते अनया) १. शुभाशंसन, शुभाशीष, आर्शीवाद, शुभ-कामना, प्रार्थना, चाह। २. दाढ़ 'सा च कस्यात्मन आशीः शुभाशंसन वर्तते।' (जयो० वृ० ३/३०) 'साशीर्वा व्यक्तमङ्गला' (जयो० ३/८४) 'याऽऽशीः शुभाशंसा' (जयो० वृ० ३/१०७)

आशीतिका (स्त्री०) प्रायश्चित्त निरूपिका, प्रायश्चित्त निरूपक।

आशीर्वादः (पुं०) आशीर्वचन, मंगलवचन, कल्याणकारी भाव। (जयो० वृ० २७/२१)

आशीर्वादसूचिनी (वि०) सम्वादकरी, 'सम्वादकरीराशीर्वाद-सूचिनीः' (जयो० वृ० १२/९७)

आशीर्विष (पुं०) एक ऋद्धि विशेष, जो दुश्चरण तप से प्राप्त होती है, जो ऋद्धिधारकमुनि इसे प्राप्त करके 'मर जा' ऐसा कहने पर जीव सहसा मरण को प्राप्त हो जाता

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

है। 'अविद्यमानस्यार्थस्य आशंसमाशीः. आशीर्विषं येषां ते आशीर्विषः।' (धव० ८५)

आशीविषः (पुं०) दाढ़का विष, सर्प। 'आश्यो दंष्ट्रास्तासु विषं येषां ते आशीविषाः' वृश्चिकादयः। 'अहोममासि: प्रतिपक्ष-नाशी किलाहिराशीविष आः किमासीत्।' (सुद० १०८)

आशु (वि०) [अश्+उण्] शीघ्रता युक्त, वेगशील, त्वरित गतिवान्।

आशु (नपुं०) १. शीघ्र, जल्दी, सत्वर 'आशुर्व्रीहौ क्लीबं तु सत्वरं' इति विश्वलोचनः।' (जयो० ११८/१७) २. अनायास-'अथ धराभवमाशुरसातलं' (जयो० १/९७) 'आशु अनायासेन' (जयो० वृ० १/७७)

आशु-पूर्णतया (वीरो० २/३४) आशु-शीघ्रमेव-(जयो० वृ० ८/६५)

आशुकारी (वि०) नाना प्रकार के धान्य। (वीरो० ४/१३)

आशुकृत् (वि०) शीघ्रता करने वाला, वेगशील, शीघ्रगामी, चुस्त।

आशुग (वि०) वेगशाली, तीव्रताजन्य।

आशुगः (पुं०) १. बाण 'आशुगो बाण स्तेन। कुसुमस्य आशुगो बाणो गम्य। (जयो० वृ० ६/६६) २. पवन, वायु, 'आशुगेन, वायुना। (वीरो० ४/१९) संतरति। (जयो० वृ० ६/६६) ३. सूर्य, दिनकर।

आशुचित्व (वि०) शीघ्रवेदित्व, शीघ्रविचारक। (जयो० १९/४४) 'स्विदाशुचित्वं च सदा शुचित्वम्।' (जयो० १९/४४)

आ-शुचित्व (वि०) शुचिता सहित, पवित्रता जन्य। (जयो० वृ० १५/८४)

आशुतोष (वि०) शीघ्र संतुष्ट होने वाला, प्रसन्नताभाव जन्य।

आशुतोषः (पुं०) शिव, कल्याण।

आशुभावः (पुं०) १. शुभपरिणाम, २. शीघ्रपरिणाम। "रूपस्य पश्य कथमद्य किलाशु भावः।' 'आशुभावः शीघ्रपरिणामोऽथवा व्रीहिभावः' (जयो० वृ० १८/१७) 'आशुर्व्रीहिक्लीवे तु सत्वरे' इति विश्वलोचनः।' (जयो० वृ० १८/१७)

आशुमतिः (स्त्री०) शीघ्रविचारकारी बुद्धि, तीव्रबुद्धि, तीक्ष्णबुद्धि, श्रेष्ठधी। (जयो० वृ० १३/८) 'स्मर आशुमतिश्चकार' (जयो० १३/८)

आशुसुखं (नपुं०) शीघ्रता जन्य। (जयो० १७/२८)

आशुव्रीहिः (स्त्री०) आशुधान्य, शीघ्र पकने वाली धान्य।

आशुशुक्षणिः (स्त्री०) [आ+शुष्+सन्+अनि] १. पवन, वायु, हवा। २. अग्नि, वह्नि। 'स्वयमाशु पुनः प्रदक्षिणीकृत' आभ्याममभुनाशुशुक्षिणिः। (जयो.०१२/७५)

आशेकुटिन् (पुं०) [आशेतेऽस्मिन् इति-आ+शी+विच् स इव कुटति इति णिनि] पर्वत, गिरि, पहाड़।

आशौचः (पुं०) सूतक नामा शुद्धि। (जयो० २८/३६)

आशौच-परायण (वि०) १. सूतक नामक अशुद्धि से युक्त। २. शौचकर्मयुस्संतोपशीलस्सन्।' (जयो० वृ० २८/३६)

आश्चर्य (वि०) [आ+चर्+ण्यत् सुट्] अद्भुत, असाधारण, विस्मय, चमत्कारजन्य, विलक्षण। (दयो० ६६)

आश्चर्यं (नपुं०) अद्भुत, असाधारण, चमत्कार, कौतुक, कौतूहल।

आश्चर्यकर (वि०) [आश्चर्यं करोत्याश्चर्यकरः] विस्मयोत्पादक, चमत्कार जन्य। (जयो० ८/७३)'समुत्स्फुरद्रिक्र- मयोरखण्डवृत्त्या तदाश्चर्यकरः प्रचण्डः।' (जयो० ८/७३)

आश्चर्य-चकित (वि०) विस्मित, चमत्कारित। (जयो० वृ० १५/५) 'दृष्ट्वा च साश्चर्यं चकितमानसस्तत्र' (दयो० १०)

आश्चर्यसमन्वित (वि०) विस्मय युक्त, कौतुक से परिपूर्ण, अचम्भे से युक्त। 'सहसाश्चर्यसमन्वितोऽभवत्।' (समु० २/१९)

आश्चर्यस्थलं (नपुं०) अभिनय स्थान, आश्चर्य स्थान 'अभिनयं आश्चर्यस्थानम्' (जयो० वृ० ४/५)

आश्चर्यस्थानं (नपुं०) आश्चर्य स्थल, चमत्कार जन्य स्थान। (दया० ८) 'न किञ्चिदपि किलाश्चर्यस्थानम्।'

आश्चर्यान्वित (वि०) आश्चर्य समन्वित, विस्मययुक्त, आश्चर्यचकित। (जयो० वृ० २२/७)

आश्यान (भू० क० कृ०) [आ+श्यै+क्त] संलग्न, जमा हुआ।

आश्रपणं (नपुं०) [आ+श्रा+णिच्+ल्युट्] पकाना, उबालना।

आश्रम् (नपुं०) अश्रु, आंसु।

आश्रमः (पुं०) आवासकक्ष, निवास स्थान, विद्या स्थान, ब्रह्मणादि स्थान। (जयो० वृ० ३/८१)* उत्तम आवास।

आश्रमगुरु (नपुं०) विद्या गुरु, प्रशिक्षक, आश्रम का अध्यापक।

आश्रमगृहं (नपुं०) विद्या स्थान।

आश्रमधर्मः (पुं०) विशिष्ट कर्त्तव्य।

आश्रमपदं (नपुं०) आश्रम स्थान, विद्या स्थान, पावनभूमि।

आश्रमभित्तिः (स्त्री०) नृपप्रसाद कुञ्ज। (जयो० १०/१०)

आश्रममण्डलं (नपुं०) तपोवन, तप स्थान, संयमभूमि, पावन क्षेत्र।

आश्रममान् (वि०) आश्रमवाला, आश्रम के नियमों का पूर्ण पालन करने वाला। (जयो० ३/११०)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आश्रम-स्थान (नपुं०) 'कोऽथ तत्र किमितीक्षक्षमो यत्न एव भविनां शुभाश्रमः।' (जयो० २/८५) 'शुभास्याश्रमः स्थानमस्ति।' (जयो० वृ० २/८५) २. जिनाश्रम- 'वर्णि-गेहि-वनवासि-योगिनामाश्रमान् परिपठन्ति ते जिनाः।' (जयो० २/११७) **वर्णि** ब्रह्मचर्य-आश्रम, **गेहि**-गृहस्थाश्रम्, **वनवासि**-वानप्रस्थाश्रम और **योगी**-संन्यास-आश्रम।

आश्रमवासिन् (पुं०) आश्रम निवासी।

आश्रमिक (वि०) [आश्रम+ठन्] संयममार्ग से सम्बन्ध रखने वाला।

आश्रमित (वि०) स्थित, ठहरा हुआ। 'क्षणमिहाश्रमितोऽस्मि' (जयो० ५/६८)

आश्रमित्व (वि०) आश्रम में रहने वाले १. अनिह्नवं ज्ञानमथाश्रमित्वम् (भक्ति० ८)

आश्रय (सक०) १. प्राप्त करना, ग्रहण करना। 'स्नेहाश्रयिपदाद्यादिषयत्' (जयो० वृ० ११/५६) २. सेवन करना, आचरण करना। 'को नु नाश्रयति वा स्वतो हितम्।' (जयो० २/१८) ३. रहना, निवास करना-'किं जीवनोपायमिश्रयामि प्राणाः पुनः सन्तु कुतो वनामो।' (जयो० २/५)

आश्रय् (सक०) अनुकरण करना। सेवन करना। आश्रयेत्-सेवेत (जयो० २/८०)

आश्रयः (पुं०) [आ+श्रि+अच्] अवलम्बन। १. निवास, घर, स्थान, आवास, सदन। 'चम्पापुरी नाम जनाश्रयं तं' (सुद० १/३४) २. विश्रामस्थल, शरणस्थान। ३. अधिकार, सम्बन्ध। (जयो० २/११०)

आश्रयणं (नपुं०) [आ+श्रि+ल्युट्] युक्त प्राप्त। (वीरो० ६/१६) (जयो० ४/१८) संरक्षण प्राप्त, शरणागत आधारभूत।

आश्रयत्व (वि०) आश्रयता,। आधारभूत-उचित मत्वा सुहृदाश्रयत्वम्। (जयो० ३/३७)

आश्रयदानं (नपुं०) आधारभूत धन, अनुकम्पनीय धन। (दयो० ११२)

आश्रयिन् (वि०) [आश्रय+इनि] आश्रित, संयत, एक-दूसरे के आधीन रहने वाला।

आश्रव (वि०) [आ+श्रु+अच्] आज्ञाकारी, प्रतिज्ञाबद्ध, नियम युक्त। 'आत्मविधानकथाश्रवः' (जयो० २/५)

आश्रित (भू० क० कृ०) [आ+श्रि+क्त] अधिकृत। १. आधारभूत, अनुरत, आश्रय जन्य। 'स पारापत्यं भद्रताश्रितोऽपि' (सुद० २/३) २. स्वीकृत 'आश्रितं स्वीकृतं हृदयनः।' मान लिया (जयो० वृ० ४/२५) ३. युक्त-'श्रियाश्रितं सन्मतिमाल्य युक्त्या' (जयो० १/१)

आश्रितः (पुं०) अनुचर, भृत्य, सेवक।

आश्रित कामः (पुं०) काम-वासनातुर, कामासक्त। (जयो० २३/६२)

आश्रितिः (स्त्री०) अवलम्बन, आश्रय, आगार, स्थान। (जयो० ९/९) 'निपतते हततेजस, आश्रितिः।' (जयो० ९/८)

आश्रित्य (सं०कृ०) अवलम्बन करके, आधार बनाकर। (जयो० वृ० १/२२)

आश्रुत (भू० क० कृ०) [आ+श्रु+क्त] १. स्वीकृत, अंगीकृत, मान्य, प्राप्त, प्रतिज्ञात, सहमत। २. सुना हुआ।

आश्रुत-चारुवारि (नपुं०) स्नेहसूचक जल, नेत्रजल, अश्रुप्रवाह, आंखों में आंसुओं का क्रम। (जयो० १३/१७)

आश्लिष्ट (वि०) आलिंगित। (सुद० ८५) सुदर्शन भुजाश्लिष्टा।

आश्लिष्टवती (वि०) लिपटी हुई, आलिंगित। 'पादमाश्लिष्टवती वल्ली' (जयो० १४/१७)

आश्रुतिः (स्त्री०) [आ+श्रु+क्तिन्] १. सुनना, २. अंगीकृत, स्वीकृत।

आलेष (स्त्री०) एक नक्षत्र।

आश्लेषः (पुं०) [आ+श्लिष्+घञ्] १. आलिंगन, मिलन, एक दूसरे के गले मिलना। (सुद० ३/३८) अहो किलाश्लेषि मनोरमायाम। २. संपर्क, सम्बन्ध।

आश्लेषि (वि०) समालिंगित। (जयो० १७/३६)

आश्व (वि०) [अश्व+अण्] घोड़े से सम्बंधित।

आश्वभू (स्त्री०) अनुभाग। (वीरो० २२/८)

आश्वयुज (वि०) [अश्वयुज्+अण्] आश्विन मास से सम्बंधित।

आश्वसित (वि०) आश्वासन युक्त, प्रोत्साहन जन्य। (जयो० वृ० २६/२४)

आश्वासः (पुं०) [आ+श्वस्+घञ्] १. सांस लेना, २. प्रोत्साहन, ३. अनुच्छेद, अनुभाग, गद्य पुस्तक का एक अंश।

आश्वासनं (नपुं०) [आ+श्वस्+णिच् ल्युट्] १. प्रोत्साहन। (वीरो० १९/४०) २. समाश्वास, उत्साहित करना। (जयो० वृ० २६/२४)

आश्वासनावस्था (स्त्री०) आशा, इच्छा, अभिलाषा, वाञ्छा। (जयो० वृ० २३/६५)

आशिवत (वि०) आशीर्वाद युक्त, प्रोत्साहन युक्त। 'किलाशिकेवाशिवति तेन मुक्ता।' (सुद० २/२०)

आश्विनः (पुं०) [अश्+विनि ततः अण्] आश्विनमास। 'तमाश्विनं मेघहरं' (सुद० ४/१४) श्रितस्तदाऽधियोऽपि दासांवृषभस्य सम्पदाम्। मयूरमन्मौनपदाय भन्दतां जगाम दृष्ट्वा जगतोऽप्यकन्दताम्।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आश्विनकृष्ण पक्षः (पुं०) पूजित श्राद्धपक्ष। (जयो० ४/६४)

आश्विनमासः (पुं०) शरदकाल का प्रारंभिक महिना। (जयो० वृ० ४/६५)

आश्विनसमयः (पुं०) आश्विन मास का अवसर। (जयो० १२/१३९)

आश्विनेयः (पुं०) अश्विनीकुमार 'आश्विनेयोऽद्वितीयत्वान्नेद्रोऽवृद्धश्रवस्त्वतः।' (दयो० ६८)

आर्षवर्त्मन् (पुं०) आर्षमार्ग। (जयो० २/१०८)

आषाढः (पुं०) १. आषाढमास। (वीरो० ४/२) २. विजयार्ध की दक्षिणा श्रेणी का एक नगर, विद्याधर नगर।

आषाढमासः (पुं०) आषाढ महिना। (वीरो० ४/२)

आषढीगुरुपूर्णिमा (स्त्री०) (वीरो० १३/३४)

आस् आः (अव्य०) प्रत्यास्मरण, पुनः पुनः स्मरण।

आस् (अक०) बैठना, रहना, स्थित होना, ठहरना, स्थान लेना, रखना, परिणत होना। 'आस्तां मद् विषये देवि' (सुद० ८५) 'अस्याः क आस्तां प्रिय एवमर्थः।' (सुद० २/२२)

आसः (पुं०) [आस्+घञ्] आसन, स्थान,

आसक (अव्यक्त) इस तरह, इस प्रकार।

आसकि (अव्य०) इस प्रकार, इस तरह। यह प्रयोग 'प्रत्यास्मरण' अर्थ में प्रयुक्त हुआ। अङ्गाभिधानः समयः समस्ति यस्यासकौ पुण्यमयी प्रशस्ति। (सुद० १/१५)

आसक्त (भू० क० कृ०) [आ+सञ्ज्+क्त] १. अनुरक्त, संलग्न, तत्पर, उद्यत, जुटा हुआ, लगा हुआ, 'आसक्तं-संलग्नम्। (जयो० ६/१०८) २. स्थिर, शाश्वत, रहने वाला- 'दर्पासक्तमनाः।' (जयो० वृ० ६/१०८) ३. नपुंसकता का एक लक्षण।

आसक्तचित्तं (नपुं०) अनुरक्त मना। 'आसक्तं संलग्नं मनो यस्य सः' (जयो० वृ० ६/१०८) 'त्वय्याऽऽसतमना नरेश' (सुद० ९८)

आसक्तिः (स्त्री०) [आ+सञ्ज्+क्तिन्] अनुरक्ति, अनुराग, अभिलाषा, वाञ्छा। १. भक्ति, गुणानुराग।

आसङ्गः (पुं०) अनुराग, आसक्ति, अनुरक्ति, भक्ति, सम्पर्क, बन्धन।

आसङ्गिनी (स्त्री०) [आसङ्ग+इनि+ङीप्] १. अनुरक्त भाव वाली, २. चक्रवात, वर्तुलाकार पवन, बबूला।

आसञ्जनं (नपुं०) [आ+सञ्ज्+ल्युट्] १. मेल, आसक्ति, अनुराग। २. बांधना, मिलाना, चिपकाना।

आसतिः (स्त्री०) दुराचारिणी (सुद०)

आसत्ति (स्त्री०) [आ+सद्+क्तिन्] १. संयोग, मिलन, बन्धन। ३. लाभ, उपलब्धि, उपार्जन।

आसन् (नपुं०) मुख, मुंह, बदन।

आसनं (नपुं०) १. स्थान, बैठक, डाभ/दर्भ, आसिका (जयो० ३ (वीरो० ४/३१) कुशासन। २. ध्यान की प्रक्रिया, पद्मासन पर्यंकासन, कायोत्सर्गासन। अर्धपर्यंकासन, वज्र, वीर, मुख, कमल। 'भास्वानागमनमायाद्याथो दयाद्रि मिवोन्नतम्। (सुद० ७८) २. शय्या, बैठने या शयन करने का स्थान। (जयो० वृ० १/७९) ३. अवस्थान।

आसनक्रिया (स्त्री०) आसन उपयोग।

आसना (स्त्री०) चटाई, शय्या, सहारा, आश्रय स्थान।

आसानाख्यानं (नपुं०) आसनाभिधान, १ आसन नामक वन अथासनाख्यान-वनेकृतिस्थितिं, निरीक्ष्य भद्रोवरधर्मकं यतिम्। (समु० ४/६)

आसन्दी (स्त्री०) [आसद्यतेऽस्याम आ+सद्-द] तकिया, आराम कुर्सी, टेकने की तकिया।

आसन्न (वि०) दूषित चरित्र वाले। 'संयतसार्थाद् यो हीनः' (भ० आ० टी० २५) **आसमन्तात्** चारों ओर से (जयो० ४/६)

आसन्नकालः (पुं०) मृत्यु की निकटता का समय।

आसन्नतात्र (वि०) निकटता। (वीरो० २०/२०)

आसन्नपरिचायकः (पुं०) सेवक, निकटस्थ, रक्षक।

आसन्नभव्यता (वि०) निकट भव्यता, रत्नत्रय विषयक योग्यता।

आसन्नमरणं (नपुं०) दूषित मरण, चारित्रविमुखमरण।

आसम्बाध (वि०) [आसमन्तात् सम्बाधा यत्र] रोका गया, अवरुद्ध किया।

आसवः (पुं०) [आ+सु+अण्] अर्क, काढ़ा, मद्य, शराब। 'अथोऽथ पीतासव-सुन्दरेभ्यः' (जयो० १९/३७) 'अथासव पानान्तरं पीतेनास्वादितेन तेनासवेन द्राक्षादिसमुत्थेन मद्येन।' (जयो० वृ० १९/३७)

मद्य-'आसवं मद्यं प्रसन्नतयाश्नुते' (जयो० २५/६५) 'ययुर्यदा यान्ति ममासवो ननु जनुष्मता सन्ध्रियते मुहुस्तनुः।' (दयो० ३९) 'दयोदय की उक्त पंक्ति में 'आसव' का अर्थ 'प्राण' भी है।

आसादनं (नपुं०) [आ+सद्+णिच्+ल्युट्] १. प्राप्त करना, ग्रहण करना, उपलब्ध करना। २. वेदन, रोकना, निरोध। ३. द्वितीय गुणस्थान का नाम 'वाक्काभ्यां ज्ञानवर्जन

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मासादनम्।' (त० श्रा० ६/१०) 'आयं सादयतीति आसादनम्' (जैन०ल० २२०)

आसाद्य (सं०कृ०) प्राप्तकर, ग्रहणकर। (सुद० ३/१०, २/२८)

आसाम्परायः (पुं०) कषाय अवस्था तक। आसाम्पराय मदृशोप्यबोधसंचेतनेत्यर्हदधीतिबोधः (सम्य० ११७) १. आगत, प्राप्त, निकट, सन्निहित।

आसारः (पुं०) [आ+सृ+घञ्] १. अत्यधिक वर्षा, धारावाहिक वृष्टि। १. आक्रमण, धावा, आघात। २. प्रसार-प्रसरण समूह, पंक्ति-(जयो० ३/७६, ६/५१)। 'कर्बुरासारसम्भूतं पद्मरागगणान्वितम्।' (जयो० ३/७६) 'आसारस्तु प्रसरणे धारावृष्टौ सुहृदबले' इति विश्वलोचनः। (जयो० ६/२१)

आसिक (वि०) [असि+ठक्] असिधारी, तलवार युक्त, खड्गधारी।

आसिका (स्त्री०) आसन। (जयो० ३/२२)

आसिधारं (नपुं०) [असिधारां इव अस्त्यत्र अण्] असिधाराव्रत, कठिन व्रत, दृढ़ नियम।

आसी (स्त्री०) आशीष, आशीर्वाद। 'उत्तमाङ्ग सुवंशस्य यदासीर्दिषपादयोः।' (सुद० ४/४)

आसीविषः (पुं०) दंत विष, दाढ विष, भुजंगविष। 'आस्यो दंष्ट्रास्तासु विष येषां ते आसीविषः।' (जैन ल०२२०) 'णमो आसीविगाणं, इदं विद्वेषनाशनार्थम्।' (जयो० वृ० १९/१७) जो विद्वेष को दूर करने वाला है वह 'आसीविष' कहलाता है।

आसुतिः (स्त्री०) [आ+सु+क्तिन्] अर्क, काढा, रस, निचोढ़।

आसुरः (पुं०) राक्षस।

आसुर (वि०) असुर से सम्बन्ध रखने वाला, राक्षसी, अमानवीय।

आसुर-विवाहः (पुं०) वर से द्रव्य लेकर कन्या का विवाह अमानवीय विवाह।

आसुरिकी (वि०) प्राणि पीड़न की दृष्टि रखने वाला, दया रहित भावना वाला।

आसुरी (स्त्री०) शल्यचिकित्सा।

आसूचन (नपुं०) विशेष सूचना।

आसूत्रं (नपुं०) १. सूत्र पर्यन्त, आगम विषय पर्यन्त। २. सूत्र युक्त।

आसूत्रिक (वि०) [आ+सूत्र+क्त] सूत्रधारक।

आसेकः (पुं०) [आ+सिच्+घञ्] सींचना, डालना, ऊपर फेंकना।

आसेचनं (नपुं०) [आ+सिच्+ल्युट्] सिंचन करना, छिड़कना, बिखेरना, सींचना।

आसेधः (पुं०) [आ+सिध्+घञ्] प्रतिबन्ध, रोक, बन्धन।

आसेव (अक०) विपरीत आराधना करना। (वीरो० २२/३६)

आसेवनं (नपुं०) १. असंयम का सेवन, विपरीत आराधना, कुशील भावना। 'आसेवना संयमस्य विपरीताराधना तया कुशील आसेवनाकुशीः।' २. क्रियाशीलता, अभ्यास जन्य प्रवृत्ति, सतत् अभ्यास।

आसेवना (स्त्री०) विपरीत आराधना।

आसेवित (वि०) पूजित, सेवा जन्य। (भक्ति० २२)

आस्कन्दः (पुं०) [आ+स्कन्द्+घञ्] १. आक्रमण, धावा, आघात। २. चढ़ना, आरोहण करना। ३. दुर्वचन, निन्दा।

आस्कन्दन (नपुं०) [आ+स्कन्द्+ल्युट्] १. आक्रमण, धावा, आघात। २. आरोहण, चढ़ना, सवारी करना।

आस्कंदित (वि०) आरोहित, चढ़ा हुआ, सवारी जन्य।

आस्तरः (पुं०) [आ+स्तृ+अप्] १. चादर, २. दरी, ओढ़ने का वस्त्र। ३. विस्तरण, प्रसरण, फैलाव।

आस्तरणं (नपुं०) १. झूल, हस्तिकुथ। पथि सादिवरः कृतेक्षणः हस्तिपोष, हाथी की जीन, हस्ति पर लटकती हुई झूल। कृतवानास्तरणं तु वारणे।' (जयो० १३/४) २. बिछावन, दरी, साज, सामान। 'आस्तरणं संस्तरोपक्रमणम्' (सा०ध०५/४०)

आस्तारः (पुं०) [आ+स्तृ+घञ्] बिछाना, फैलाना, प्रसारण।

आस्तिक (वि०) ईश्वर या पूर्वजों पर विश्वास नहीं करने वाले। (जयो० वृ० ४/६४)

आस्तिकजनः (पुं०) पूर्वज, पितर लोग। 'आश्विनकृष्णपक्षे पूर्वजानां प्रीत्यर्थमास्तिकजनैः श्राद्धानि विधीयन्ते' (जयो० ४/६४) * श्रद्धाशील व्यक्ति।

आस्तिकता (वि०) विश्वास करने वाला, श्रद्धास्पद जन्य।

आस्तिक्य (वि०) आस्तिक्य बुद्धि विशेष। ईश्वर--परलोका दौ विश्वासः। (जयो० वृ० २/७४) जीवादि पदार्थ यथायोग्य अपने स्वभाव से संयुक्त हैं, इस प्रकार की बुद्धि। 'जीवादयोऽर्था यथास्वं भावैः सन्तीति मतिरास्तिक्यम्।' (त० वा० १/२)

आस्था (स्त्री०) [आ+स्था+अङ्] श्रद्धा, पूजा, आदर, सम्मान। 'सोमे सुदर्शने काऽऽस्था समुदासीनतामये' (सुद० ८७) 'त्वमिमां शोचनीयास्थामाप्तो नैष्ठुर्ययोगतः।' (सुद० १३४) नवें सर्ग की उक्त पंक्ति में 'आस्था' का अर्थ **'अवस्था'** है। २. आशा, दशा, अवस्था, परिणति भाव। **आस्थातुम-** निवस्तुम्। स्थान पाने के लिए

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आस्थानं (नपुं०) [आ+स्था+ल्युट्] स्थान, जगह, डेरा, तम्बू, आलय (वीरो० १५/३९) आधार, आश्रय, ठहरने का स्थान, विश्रामस्थल, (जयो० १३/१६)

आस्थानशालिनी (वि०) निवेश युक्त। (८/१६)

आस्थित (भू० क० कृ०) निवसित, स्थित, रहने वाला।

आस्थितिः (स्त्री०) योग क्षेम, अप्राप्त की प्राप्ति।

आस्पदं (नपुं०) स्थान, निवास, डेरा, आवास, स्थान। १. आसन, मदास्पदोऽसावधुनोदियाय' (जयो० १६/४०) २. मर्यादा, उचित पद, विशेष आश्रय।

आस्पन्दनं (नपुं०) [आ+स्पन्द्+ल्युट्] कांपना, धड़कना, हिलना।

आस्पर्धा (स्त्री०) प्रतिद्वंद्विता, टक्कर, समान द्वंद्विता, परस्पर समान भिडंत।

आस्फालः (पुं०) [आ+स्फल्+णिच्+अच्] १. स्खलिन्, टूटना, गिरना। २. मारना

आस्फालनं (नपुं०) [आ+स्फल्+णिच्+ल्युट्] हिलना, टूटना, गिरना, नष्ट होना, फड़फड़ाना, घर्षण करना, रगड़ना।

आस्फोटः (पुं०) [आ+स्फुट्+अच्] १. आक वृक्ष, मदार वृक्ष। २. ताल पीटना।

आस्फोटनं (नपुं०) [आ+स्फुट्+ल्युट्] आस्फालन, फड़फड़ाना, फटकना, उड़ाना, फुलाना, शब्द करना। 'स्वीय बाहुबलगर्विता भुजास्फोटनेन परिनर्तितस्वजाः।' (जयो० ७/९३)

आस्माक (वि०) [अस्मद्+अण्] हमारा, हम सभी का।

आस्माकी (स्त्री०) हमारी, हम सब की।

आस्माकीन् (वि०) हमारा, सभी का।

आस्यं (नपुं०) [अस्+ण्यत्] मुंह, जबड़ा, चेहरा, बदन।

आस्यन्दनं (नपुं०) [आ+स्यन्द्+ल्युट्] बहना, झरना, टपकना, रिसना।

आस्यन्धय (वि०) [आस्यं धयति] मुख चुम्बन करने वाला।

आस्यविषः (पुं०) आसीविष, उत्कृष्ट ऋद्धि या तप बल से प्राप्त बल, जिसमें कहने से व्यक्ति मरण को प्राप्त हो जाता है। 'प्रकृष्ट-तपोबला यतयो यं ब्रवते म्रियस्वेति स तत्क्षण एव महाविषपरीतो म्रियते ते आस्याविषाः।' (त० वा० ३/३६)

आस्या (स्त्री०) [आस्+क्यप्] आसना।

आस्रवः (पुं०) [आ+स्रु+अप्] १. बहाव, आना, बहना, टपकना। २. दुःख, पीड़ा, कष्ट, व्याधि। ३. अपराध, आक्रमण। ४. मन, वचन और काय की क्रिया का योग। 'काय-वाङ्मनः कर्मयोगः' (त० सू० ६/१)। ५. नवीन कर्मों के आगमन का रास्ता। (त० सू० ६) आस्र-१. कषायसहित और २. अकषाय रहित। 'आस्रवन्ति समागच्छन्ति संसारिणां जीवानां कर्माणि यैः येभ्यो वा ते आस्रवा रागादयः।' (सिद्धिविनश्चयः पृ० २५६) 'आस्रवति अनेन आस्रवणमात्रं वा आस्रवः' (त० वा० १/४)

आस्रवनिरोधः (पुं०) कर्मागम के कारणों का अप्रादुर्भाव।

आस्रव-भावना (स्त्री०) आर्त-रौद्र परिणाम रूप भावना।

आस्रवानुप्रेक्षा (स्त्री०) दोषानुचिन्तनः (स० सि० ९/७)

आस्रावः (पुं०) [आ+स्रु+घञ्] १. घाव, छिद्र। २. बहना, झरना, टपकना।

आस्वादः (पुं०) [आ+स्वद्+घञ्] चखना, चबाना। (दयो० १/४)

आस्वादु (वि०) चखने योग्य। (वीरो० २२/३४)

आस्वाद्य (पुं०कृ०) [आ+स्वद्+क्यप्] आस्वादन करके, चख करके। (दयो० १/४) (जयो० ९/१७)

आस्वादनं (नपुं०) चखना, खाना, (जयो० ३/६१) 'मिष्टं सितास्वादन आस्यमस्तु' (सुद० १११)

आश्वादनार्थ (वि०) चखने योग्य। (वीरो० २/१३)

आश्वासित (वि०) रसित, स्वाद युक्त।

आश्वासित (भू० क० कृ०) चखा, आस्वादन किया। 'सा यावद्रसिताऽऽस्वादिता श्रुता'' (जयो० वृ० ३/२९)

आह (अव्य०) [आ+हन्+ड] १. कठोरता, कर्कशता, २. आज्ञा, कहना, निर्देश करना 'आदिराज इदमाह' (जयो० ४/१)

आहत (भू० क० कृ०) [आ+हन्+क्त] १. घायल, पीड़ित, दुःखित, ताड़ित। (जयो० २/१४१) २. पीटा गया, रौंदा गया, विक्षिप्त किया गया।

आहतिः (स्त्री०) [आ+हन्+क्तिन्] १. घात, प्रहार, हनन, दुःख, पीड़ा। २. हत्या करना, मारना, पीटना।

आहर (वि०) [आ+हृ+अच्] ग्रहण करने वाला, पकड़ने वाला, ले जाने वाला।

आहरणं (नपुं०) [आ+हृ+ल्युट्] १. ग्रहण करना, पकड़ना। २. दृष्टान्त-साध्य-साधन के अन्वय व्यतिरेक के दिखलाने का साधन। २. निकालना, दूर हटाना। ३. आभूषण, आभरण।

आहरत्व (वि०) आहरण करने वाला। (जयो० २/१०८)

आहवः (पुं०) [आ+ह्वे+अप्] युद्ध, संग्राम, लड़ाई, ललकार, चुनौती, चेतावनी।

आह्वनं (नपुं०) [आ+हु+ल्युट्] आहुति, निक्षेपण।

आह्वनीय (सं०कृ०) आहुति देने योग्य।

आहारः (पुं०) [आ+हृ+घञ्] लाना, ले जाना, निकट आना, समीप जाना।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आहार: (पुं०) भोजन, भूख शान्ति का उपाय।

आहार: (पुं०) शरीर क्रिया, औदारिक, पारिणामिकादि तीन शरीर और छह पर्याप्तियों के योग्य पुद्गलों के ग्रहण करने को 'आहार' कहते हैं। १. जिसके आश्रय से श्रमण सूक्ष्म तत्त्वों को आत्मसात् करता है। 'शरीर प्रायोग्य पुद्गल-पिण्ड ग्रहण माहारः। (धव० ७/पृ० ७) शरीर रचना, संक्लेश रहित शरीर।

आहारकं (नपुं०) सूक्ष्म पदार्थों के निर्धारण के लिए जो शरीर रचा जाता है। 'प्रमत्तसंयतेनाह्रिते निर्वर्त्यते तदित्याहरकम्' (स० सि० २३/३६) शुभं विशुद्धमव्याघाति चाहारकम्। (त० सू० २/४९)

आहारक-जीव: (पुं०) आहार को ग्रहण करने वाला जीव।

आहारक-बन्धनं (नपुं०) आहारक शरीर के योग्य सम्बन्ध।

आहारक-योग: (पुं०) तत्त्व विषयक योग, संदेह के निर्णय हेतु योग।

आहारपर्याप्ति: (पुं०) आहार-वर्गणा को परिणमन कराने वाली शक्ति।

आहारय् (अक०) भोजन करना, आहार लेना। (मुनि० ३)

आहारशरीरं (नपुं०) नौकर्म प्रदेश समूह।

आहारसंज्ञा (स्त्री०) आहार की अभिलाषा, (भक्ति० ४७) 'आहाराभिलाष आहारसंज्ञा' आहारसंज्ञाऽपि किलोपवासे। (भक्ति० ४७) 'आहारे या तृष्णा काङ्क्षा सा आहार संज्ञा' (धव० २/४१४)

आहारसंपदा (वि०) आहार सामग्री, भोजन सामग्री। (जयो० २२/४९)

आहार्य (सं०कृ०) [आ+हृ+ण्यत्] १. ग्रहण करने योग्य, पकड़ने योग। २. नैमित्तिक, कृत्रिम।

आहाव: (पुं०) [आ+ह्वे+घञ्] १. कुंड, नाद, जो पशुओं के पानी पिलाने के लिए बनाई जाती है। २. संग्राम, युद्ध। ३. आह्वान, निमन्त्रण।

आहिण्डिक: (पुं०) [आहिण्ड+ठक्] परिभ्रमण।

आहित (भू० क० कृ०) [आ+धा+क्त] १. आसक्त, प्राप्त, स्थापित, निरूपित। (जयो० ४/५) २. सम्पन्न किया, अनुभूत।

आहितुण्डिक: (पुं०) [अहितुण्डेन दीव्यति ठक्] बाजीगर, ऐन्द्रजालिक, जादूगर, सपेरा।

आहुति: (स्त्री०) [आ+हु+क्तिन्] पूजासामग्री निक्षेपण, देव समीप पुण्य एवं पूज्य भाव व्यक्त करना।

आहूति: (स्त्री०) [आ+ह्वे+क्तिन्] आह्वान, आमन्त्रण।

आहेतु (वि०) प्रयोजन सहित।

आहो (अव्य०) संदेह, विकल्प, प्रायः, आत्मप्रशंसा।

आह्नं (नपुं०) [अह्नां समूहः -अञ्] बहुत दिवस, दिवस ओघ।

आह्निक (वि०) दैनिक, प्रतिदिन का किया गया कार्य, धार्मिक दिवस रूप कार्य।

आह्ल: (पुं०) सुन्दर, उचित, ठीक। (जयो० १/६१)

आह्लाद: (पुं०) [आ+ह्लाद्+ल्युट्] हर्ष, प्रसन्नता, खुशी, आनन्द। 'आह्लाद मधुरताभ्यामनुगृहीतो द्वितीय' (दयो० ५५)

आह्लाद-कारिन् (वि०) प्रसन्नता देने वाला। 'अप्रमादितया पूर्णचन्द्रस्याह्लादकारिणः।' (समु० ४/३९)

आह्लाद-कारिणी (वि०) प्रसत्ति-विधायिनी, आनन्दायिनी, हर्षप्रदात्री। (जयो० ३/४१) प्रसन्न करने वाली। 'अधासौ चन्द्रलेखेव जगदाह्लादकारिणी। (जयो० ३/४१)

आह्लादित (वि०) हर्षित, आनंदित, प्रफुल्लित, हर्ष जन्य। (जयो० वृ० १/१०)

आह्लादित-चित्तं (नपुं०) हर्षितमानस।

आह्व (वि०) [आ+ह्वे ड] बुलाने वाला।

आह्वय (आ+ह्वे) बुलाना, आमन्त्रण देना। 'शृङ्गोपात्त-पताकाभिराह्वयन् स्फुटमङ्गिनः। (जयो० ३/७४) आह्वयत्- आमन्त्रयदिति' (जयो० वृ० ३/७४) 'स्त्रैणं तृणं तुल्यमुपाश्रयन्तः शत्रुं तथा मित्रतयाऽऽह्वयन्तः।' (सुद० ११८)

आह्वयनं (नपुं०) [आ+ह्वे+णिच्+ल्युट्] १. नाम, अभिधान। २. आमन्त्रण।

आह्वानं (नपुं०) [आ+ह्वे+ल्युट्] आमन्त्रण, निमन्त्रण, प्रसत्ति। (जयो० वृ० ५/११)

आह्वाननं (नपुं०) आमन्त्रण, निमन्त्रण। (जयो० २४/१२१)

आह्वाय: (पुं०) [आ+ह्व+घञ्] बुलाना, आमन्त्रण करना।

आह्वायक: (पुं०) [आ+ह्वे+ण्वुल्] दूत, संदेशवाहक।

इ

इ (पुं०) वर्णमाला का तीसरा स्वर है। इसका उच्चारण स्थान तालु है तथा प्रयत्न विवृत है।

इ (अव्य०) १. वाक्य की शोभा हेतु, इसका प्रयोग किया जाता है, इसके विविध अर्थ हैं-तथा, और या, किन्तु, परन्तु आदि। २. क्रोध, सन्तापादि के रूप में भी इसका प्रयोग होता है।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इ (सक०) जाना, गमन करना, पहुंचना, प्राप्त होना, चलना।

इः (पुं०) [अ+इञ्] कामदेव, मदन। इ एव इकः कामः खेदो वा न विद्यते यस्य स नेकास्तस्य सम्बोधनम्। (वीरो० १/५) 'इ' का अर्थ काम एवं खेद भी है।

इक्षुः (पुं०) [इष्यतेऽसौ माधुर्यात्-इष्+क्सु] पौण्ड्, गन्ना, ईख। (जयो० २१/४६)

इक्षुकः (पुं०) गन्ना, ईख।

इक्षुकाण्डः (पुं०) ईख खण्ड, ईख की जाति। (जयो० १३/१०८)

इक्षुकीया (स्त्री०) [इक्षुक+छस्त्रियां टाप्] गन्ने की क्यारी।

इक्षुकुट्टक (वि०) ईख एकत्रित करने वाला।

इक्षुदीक्षा (स्त्री०) आत्मलाभ। इक्षो पौण्ड्रस्य या दीक्षा (जयो० २४/४२)

इक्षुधनुधरः (पुं०) कामदेव। (सुद० ११/४७)

इक्षुपाकः (पुं०) शर्करा, शक्कर, गुड़, शीरा, राव।

इक्षुभक्षिका (स्त्री०) शर्करा युक्त भोज्य पदार्थ।

इक्षुमालिनी (स्त्री०) एक नदी।

इक्षुमेहः (पुं०) मधुमेह, मधुरोग, शर्करा रोग।

इक्षुयन्त्रः (पुं०) कोल्हू, इक्षु रस निकालने का साधन।

इक्षुयष्टिः (स्त्री०) पौण्ड्रविटपिन। (जयो० ३/३९)

इक्षुरः (पुं०) गन्ना, ईख।

इक्षुरसः (पुं०) इक्षु/ईख/गन्ने का रस।

इक्षुवमं (नपुं०) गन्ने का खेत।

इङ्गवशी (वि०) चेष्टा जन्य। 'कामोऽपि नामास्तु यदिङ्गवश्यः' (सुद० २/८)

इक्षुवाटः (पुं०) गन्ने का खेत।

इक्षुवाटिका (स्त्री०) गन्ने का खेत।

इक्षुविकारः (पुं०) गन्ने से बना गुड़, शर्करा, शक्कर, राव।

इक्षुसारः (पुं०) शर्करा, शक्कर, गुड़, राव, शीरा।

इक्ष्वाकुः (पुं०) इक्षुम् इच्छाम्, आकरोति इति इक्षु। आ+कृ+डु। १. सूर्यवंशी राजाओं का वंश। २. कर्मभूमि के प्रारम्भ में आदिब्रह्म आदिनाथ, प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव ने सर्वप्रथम इक्षुरस के संग्रह का उपदेश दिया था, अतएव उन्हें इक्ष्वाकु कहा गया।

इक्ष्वाकु-कुल (नपुं०) कथमिक्ष्वाकुकुलाद्भा वयम्। (समु० २/२७)

इक्ष्वाकुवंशिन् (वि०) इक्ष्वाकुवंश वाला। इक्ष्वाकुवंशिपद्मस्य पत्नी धनवती च या। मौर्यस्य चन्द्रगुप्तस्य सुषमाऽऽसी-दथाऽऽर्हती। (वीरो० १५/३३)

इख्, इंङ्ख् (अक०) १. हिलना, कांपना। २. क्षुब्ध होना, दुःखी होना।

इङ्ग (वि०) [इङ्ग्+क] कांपने योग्य, हिलने योग्य।

इङ्गः (पुं०) संकेत, इशारा।

इङ्गनं (नपुं०) [इङ्ग्+ल्युट्] कांपना, हिलना।

इङ्गालः (पुं०) अंगार। इंगाल सरागप्रशंसनम्।

इङ्गित (वि०) [इङ्ग्+क्त] १. कांपना, हिलना, धड़कना, चलायमान। २. व्याकुलित, दुःखित। 'निर्वारि- मीनमित मिङ्गितमभ्युपेता' (सुद० ८६) ३. चेष्टा दीयतां हीङ्गितं स्व-पर-शर्मणे सताम्। ४. संकेतित- कुलान्वेतदाचरण-मिङ्गित बलात्। (जयो० २/८)
संज्ञासंकेत-'इङ्गितेषु विफलीकृतो युवान्ते' (जयो० १२/३२) 'इङ्गितेषु संज्ञासङ्केतादिना' जयो० वृ० १२/१३२) शारीरिक संकेत-प्रवृत्ति निवृत्ति। जन्य सूचना, इशारा।

इङ्गिनी (स्त्री०) १. अभिप्राय का संकेत। (वीरो० २१/२४) 'इङ्गिनीशब्देन इङ्गितमात्मनो भण्यते।' (भ० आ० टी० २९) २. आगम कथित एक क्रिया विशेष, आयु के अन्त में क्रमशः ध्यान की ओर प्रवृत्ति।

इङ्गिनी-अनशनं (नपुं०) चारों प्रकार के आहार का परित्याग।

इङ्गिनीमरणं (नपुं०) स्वयं परिचर्या करते हुए मरण। 'स्वाभिप्रायानुसारेण स्थित्वा प्रवर्त्यमानं मरणं इङ्गिनीमरणम्' (भ० आ० टी० २९)

इङ्गुदः (पुं०) औषधि वृक्ष।

इच्छा (स्त्री०) [इष्+श+टाप्] १. इच्छा, अभिलाषा, चाह, वाञ्छा, तृष्णा, आसक्ति। विषयीकृत अभिलाषा। (जयो० १/२) कृतापराधाविव बद्धहस्तौ जगद्धितेच्छोद्धृतमप्रशस्तौ' (सुद० २/२६) जगत् के प्राणिमात्र का हित चाहने वाले। 'यदृच्छयाऽनुयुक्तापि न जातु फलिता नगि।' (सुद० २/६३) २. लोभ कषाय का नामान्तर नाम 'एषणं इच्छा' (ज०धव० ७७७)

इच्छाकारः (पुं०) शुभ परिणाम प्रवर्तन। 'इच्छाकारोऽभ्युपगमो हर्षः स्वेच्छया प्रवर्तनम्।' (मूला०४/६५) 'एषणं इच्छा, करणं-कारः।

इच्छाज्ञानं (नपुं०) रूचि वेदन। (वीरो० ५/३४)

इच्छानिरोधः (पुं०) वाञ्छा रहित होना। 'इच्छानिरोधमेवातः कुर्वन्ति यतिनायकाः।' (सुद० १२६)

इच्छानुलोम-वाक् (नपुं०) इच्छानुरूप वचन प्रयोग।

इच्छाफलं (नपुं०) समस्या का समाधान।

For Private and Personal Use Only

इच्छायोगः (पुं०) स्वेच्छपूर्वक क्रिया करना, वाञ्छा रहित योगजन्य क्रिया।

इच्छारत (वि०) अभिलाषा जन्य।

इच्छावर्धक (वि०) लालसाकर, अभिलाषा बढ़ाने वाला। (जयो० वृ० १६/८५)

इच्छावसुः (पुं०) कुबेर।

इच्छासंपद् (स्त्री०) कामनाओं का पूर्ण होना।

इच्छित (वि०) अभिलषित, वाञ्छित। 'सानुकूल इव भाग्यवितस्तिस्तद्भविष्यति यदिच्छितमस्ति।' (जयो० ४/४७) 'तदेव नश्चेच्छितपूर्तिधाम' (सुद० २/२३)

इच्छुक (वि०) चाहने वाला, अभिलाषा करने वाला, अनुरक्ति जन्य, अनुराग युक्त, आसक्ति सहित। 'मिथोऽथ तत्प्रेमसमिच्छुकेषु' (सुद० २/२६)

इज्यः (पुं०) [यज्+क्यप्] १. अध्यापक, पूजा, अर्चना।

इज्या (स्त्री०) [इज्य+टाप्] १. पूजा, अर्चना। २. उपहार, दान, प्राभृत। ३. प्रतिमा।

इज्याविधिः (स्त्री०) पूजाविधि, अर्चना विधि। 'अन्योन्यानुगुणैकमानसतया कृत्वाऽर्हदिज्याविधिं।' (सुद० ४/४७)

इडा (स्त्री०) पृथ्वी, भूमि, धरा।

इडिका (स्त्री०) पृथ्वी, भूमि, धरा।

इडित (वि०) १. अन्य, दूसरा, दो में से एक। २. शेष, अवशिष्ट, भिन्न, पृथक्। ३. वाम, दक्षिण, दायां। ४. सम्बन्ध की अपेक्षा न करना। तत्र चोक्तमितरेण' (जयो० ८/३०) न क्रमेतेतरत्तल्पं सदा स्त्रीयच्च पर्वणि तदितरः को हितः। (जयो० वृ० २/२७) (सुद० ४/४३)

इतरकल्पना (स्त्री०) अन्य कल्पना। (वीरो० १९/४४)

इतरत (अव्य०) ०अन्यथा, ०अन्य प्रकार से, ०भिन्न, ०दूसरी तरह से।

इतरत्र (अव्य०) [इतर त्रल्] ०अन्यथा, ०विपरीत, ०भिन्न, ०अन्य।

इतरथा (अव्य०) [इतर+थाल्] ०अन्य रीति से, ०दूसरी तरह से। ०प्रतिकूल रीति से। 'इतरथा तु तदीयकरार्पण' (समु० ७/९)

इतरः (पुं०) व्यवहार नय (जयो० ५/८८)

इतरस्तर (अव्य०) इधर उधर। (सुद० ७३)

इतरेतरः (अव्य०) सर्वत्रैव, सभी जगह। (वीरो० १/३२)

इतरेद्यु (अव्य०) [इतर+एद्युस्] अन्य दिवस, दूसरे दिन।

इतस् (अव्य०) [इदम्+तसिल्] यहां से, १. इधर, ऐसा, इधर-उधर। २. इस भूतल पर, इस व्यक्ति से 'अस्मिन् भूतले' (जयो० ११/१००)

-'जयतु शूर इतः स्मरसायकं' (समु० ७/१०) 'इत उत्तर सम्भवस्थल, विजयायैति अपैति चोद्दलः।' (समु० २/६) 'व्यहरत्तत्परितः क्षणादितः' (समु० २/२०)

ऐसा, ऐसे-'मुनिवरं वनमेष तदाऽव्रजाच्छ्रियमितः।' (सुद० ४/२)

इस कारण से-'इतोऽस्मादेव कारणादस्य' (जयो० ६/८०)

इतस्ततः (अव्य०) सर्वत्रैव, सभी जगह, (वीरो० १/३२) एक ओर से दूसरी ओर तक, इधर से उधर। (जयो० वृ० १/८९) परितः-चारों ओर। 'तत्र परित इतस्ततो वाससा वस्त्रेण रचितानि वस्त्राणि शिविराणि' (जयो० वृ० १३/६४)

इति (अव्य०) [इ+क्तिन्] यह अव्यय शब्द के स्वरूप को प्रकट करने वाला है इसके कई अर्थ हैं ०दोष- (जयो० १/४) इति-समाप्ति 'जयकुमारकीर्तेः क्रीडनकं भवतीति भावः।' (जयो० १/१०) ०इति-क्योंकि, यतः, जो कि, जैसा कि। (सम्य० ४/३) ०इति-इस प्रकार, ऐसा। 'युधिष्ठिरो' भम इतीह मान्यः। ०इति सोऽपि पुनः प्राह। (जयो० १/१८) (सुद० १२६) ०इति-जहां तक 'इति सूचनार्थमित्यर्थः' (जयो० १२/११६) ०इति वर्तमानशासनप्रशंसनं भवति।' (जयो० १५/४१)

इतिपरिहारः (पुं०) ऐसा अभिप्राय। 'इति सर्गनिर्देशः' (जयो० २३/९०)

इति अत (अव्य०) इतना कि, ऐसा कि।

इतिभावः (पुं०) ऐसा भाव (सम्य० १/६) (जयो० २१/३९)

इतिव्रतं (नपुं०) ईर्या समिति व्रत (मुनि० ६) 'नृत्यर्थं गमनीयमप्यनुदिनं रात्रौ तु नेतिव्रतात्।' (मुनि० ६)

इतिह (अव्य०) परम्परानुकूल, इसी प्रकार।

इतिहासः (पुं०) [इति+ह+आस] उपाख्यान, इतिवृत्य, ऐतिह्य, परम्परा प्राप्त कथावृत्त, पुराण सम्गत कथन, ऐतिहासिक साक्ष्य, गौरव पूर्ण परम्परा।

इतीदृशं (अव्य०) इस प्रकार, इस तरह का। (समु० ४/३) 'इतीदृशं तोपयुक्तं वणिक्तुजं' (समु० ४/३)

इतीव (अव्य०) ऐसा ही, इस तरह का ही। 'इतीव संतप्तया गभस्ति' (वीरो० २१/३)

इतीह (अव्य०) इस प्रकार, परम्परानुसार। (जयो० १/१८)

इत्थं (अव्य०) [इदम्+थम्] अतः, इस प्रकार, ऐसा, इसलिए।

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(मुनि० २३) इत्थं चिंतनमस्तु'। 'तत्कृत्यामित्थं च तदित्युपायपरो नरो' (जयो० २७/५५) स्पृशेदपीत्थं बहुधान्यराशिम्' (सुद० १/२१) उक्त पंक्ति में 'उइत्थं' अव्यय का अर्थ क्योंकि है। 'गुणावलीत्थं सहसाशयाभ्याम्' (सुद० २/३०) 'स्यादित्थं परेण प्रकृता समस्या' उक्त पंक्ति 'ऐसा है' वह अर्थ व्यक्त हो रहा।

इत्थं उक्तरीत्या उक्त प्रकार। 'इत्थं वारिनिवर्षैरङ्कुरयन्' (जयो० ३/९२)

इत्थभूतः (पुं०) एवम्भूतनय, क्रियाश्रय नय।

इत्य (वि०) [इण्+क्यप्, तुक्] जिसके पास जाया जाय।

इत्यतः (अव्य०) इधर, यहां, जो कि जैसा कि, बल्कि, लेकिन 'भवत्कमत्युत्तममित्यतोऽहं' (सुद० १२०) 'शिवायन इत्यतः' (सुद० ८३)

इत्यथ (अव्य०) इधर, यहां, 'पुत्तलमुत्तक्तमित्यथ कृत्वा' (सुद० ९२)

इत्यदः (अव्य०) ऐसा, इस प्रकार। 'अल्पाद्धारत इत्यदो वदितवान्।' (मुनि० १०)

इत्यत्र (अव्य०) यहां, इधर, 'रज्यमानोऽत इत्यत्र' (सुद० ४/८)

इत्यर्थः (अव्य०) ऐसा अभिप्राय, (जयो० १/७) इस तरह का प्रयोजन। (जयो० वृ० १/७)

इत्येवं (अव्य०) इस तरह, इस प्रकार, ऐसा ही, इस प्रकार ही। 'इत्येवं सकलं चरित्रमचिरादेवात्मनः संभवे' (मुनि० ५३) 'इत्येवमुक्त्वा स्मरवैजयन्त्याम्' (सुद० २/२०)

इत्वर (वि०) [इण्+क्वरप् तुक्] १. घृणित, निन्दनीय, अहितकर। २. कठोर, कठिन, उग्र।

इत्वर-अनशनं (नपुं०) परिमित काल तक आहार, अभीष्ट आहार।

इत्वर-परिगृहीतागमनं (नपुं०) १. व्यभिचार जन्य गमन, मैथुन सेवन गमन। २. ब्रह्मचर्य व्रत का अतिचार।

इत्वरसामायिकः (पुं०) अवधि जन्य सामायिक।

इत्वरिका (स्त्री०) घृणित, निन्दित, कुटला, अधर्म, नीच। व्यभिचारिणी (जयो० वृ० १८/३)

इत्वरिकागमनं (नपुं०) ब्रह्मचर्य को दूषित करने वाला गमन।

इत संज्ञकः (पुं०) 'अइ, उ ण्' यहां अन्तिम 'ण' इत् संज्ञक है। (जयो० वृ० २८/३१) 'इता अप्रयोगिवर्णेन स आदेः शब्दस्योपयोगवान्। (जयो० २८/३१)

इदम् (सर्व०) नपुं-इदम-यह। राज्या इदं पृत्करणं। (सुद० १०५) पुं०-अयम्। स्त्री इयम्। 'प्रस्तुताऽस्मै गदा स्फीतिः' (सुद० ८२) 'चाण्डाल एव स इमं लभतामिदानीम्' (सुद० १०५) 'चेतनाऽस्याः समावृता' (सुद० १०१) 'इमामिदानीं मम सौमनास्यं सुधाधुनीमेतितरामवश्यम्' (जयो० ११/७४) 'अस्या हि सर्गाय' (जयो० ११/८४) 'रूपामृतस्रोतस एव कुल्यामिमामतुल्याम्' (जयो० ११/१) 'अस्मिन्नरेश, सुरराया:। (जयो० ३/६१) 'अद्भुताऽय चरणानुयोगः' (जयो० १/२२) इयान (सु०) अनेन (जयो० १/११) जयकुमारस्य राज्ये।

इदंकर (वि०) ऐसा ऐसा करो। 'इदंकरमिदं तथा नैव किन्तु स्वयंवरम्।' (जयो० ७/३)

इदानीम् (अव्य०) [इदम्+दानीम] अब, इस समय, इस विषय में, अभी। 'काञ्चीफलवादिदानीं विलग्नेः विभ्रमार्दितं' (जयो० ६/३५) 'अस्मिन्निदानीमजडेऽपि काले' (सुद० १/६)

इदानीमपि (अव्य०) अब भी, इस समय भी। (वीरो० २२/२८)

इदानीन्तन् (वि०) आधुनिक, प्रत्युत्पन्न, वर्तमान कालिक।

इद्ध (भू० क० कृ०) [इन्ध्+क्त] १. जला हुआ, प्रभा युक्त, प्रकाशवान्, आभा जन्य। २. दीप्ति, चमक, प्रभा, कान्ति। (जयो० २३/८४)

इध्मं (नपुं०) [इध्यतेऽग्निरनेन इन्ध्+मक्] इंधन, लकड़ी, अग्नि।

इन्ध्या (स्त्री०) [इन्ध्+क्यप्+टाप्] चमक, दीप्ति, इंधन प्रभा, कान्ति।

इनः (पुं०) १. सूर्य, दिनकर, रवि। (जयो० २०/२१) २. स्वामी, मालिक, राजा, महाराज। (जयो० २०/२१) दिन एनमिनः समीक्षते। (दयो० १०५)

इनः (पुं०) [इण्+नक्] बल, शक्ति, योग्य, साहसी, अभिष्ट। २. परमात्मन्। (जयो० ४/६५)

इनदेव (पुं०) [इनश्चासौ देवश्चेति इनदेवः] सूर्य।

इनदेवता (पुं०) [इनदेव एव इनदेवता, स्वार्थे तल्] सूर्यदेव। (जयो० २०/८३)

इन्दिन्दिरः (पुं०) [इन्द्+किरच् नि] मधुमक्खी।

इन्दिरा (स्त्री०) लक्ष्मी। (सुद० १/१२) त्रिशलाया उदितं शचीन्दिरा (वीरो० ७/१४) 'मुदिन्दिरामङ्गलदीपकल्पः' (सुद० १/१२) 'किमिन्दिराऽसौ न तु साऽकुलीना।' (जयो० ५/८०)

इन्दीवरः (नपुं०) नीलोत्पल, नीलकमल। नीलाम्बुरुह। (वीरो० २/१६) रुदत्तदिन्दीवरमेव शार्पश्रिया (जयो० १६/३७)

इन्दीवरिणी (स्त्री०) [इन्दीवर+इनि+ङीप्] नीलोत्पल ओघ, नीलकमल समूह।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इन्दीवारः (पुं०) [इन्द्याः वारो वरणं अत्र] नीलकमल, नीलोत्पल।

इन्दुः (स्त्री०) चन्द्रमा [उन्द्+उ+आदेरिच्च] सुर- वर्त्मवदिन्दु-मम्बुधेः (मुद० ३/१०)

इन्दु-स्वच्छ, श्रेष्ठ।

इन्दुकमलं (नपुं०) श्वेत कमल।

इन्दुकला (स्त्री०) १. चन्द्रकला, षोडशकला गणना की कला।

इन्दु-कलिका (स्त्री०) १. केतकीलता, केतकी कली। २. चन्द्रकला।

इन्दुकान्तः (पुं०) १. रजनी, रात्रि। २. चन्द्रकान्तमणि। (वीरो० २/३४)

इन्दुक्षयः (पुं०) १. प्रतिपदा तिथि। २. चन्द्र का प्रथम दिवस।

इन्दुजः (पुं०) रेवा नदी, नर्मदा नदी।

इन्दुजनकः (पुं०) समुद्र, उदधि, सागर, वारिधि, चन्द्र से वृद्धि को प्राप्त होने वाला।

इन्दुजालः (पुं०) चन्द्रकिरण।

इन्दुतः (पुं०) चन्द्र, शशि। 'सितिमानमिवेन्दुतस्तकमभिजादपि नाभिजातकम्।' (सुद० २/१३)

इन्दुत्व (वि०) चन्द्रपना, चंद्र युक्त। (जयो० १/१०)

इन्दुदलः (पुं०) चन्द्रकला, अर्धदल युक्त चन्द्र।

इन्दुदेवः (पुं०) चन्द्रदेव। 'उत्सङ्गजं सूचयतीन्दुदेवं' (जयो० १५/६६)

इन्दुनियोगिनी (वि०) ज्योत्स्ना सदृशी। (वीरो० १/२८)

इन्दुभा (स्त्री०) कुमुदिनी, कमलिनी।

इन्दुभासः (पुं०) चन्द्रकान्ति। 'इन्दोश्चन्द्रस्य भा शोभेव भा यासाम्।' (जयो० वृ० १६/४४)

इन्दुबिम्बं (नपुं०) चन्द्रमण्डल। (सुद० ११५) 'नवोद्धतं नाम दधतदिन्दुबिम्बम्।' (जयो० १६/२३) 'भ्रमाद्यथाऽऽकाश-गतेन्दुबिम्बमङ्गीकरोति' (सुद० पृ० १११)

इन्दुमती (स्त्री०) [इन्दु+मतुप्+ङीप्] १. नाम विशेष, अज की पत्नी। २. पूर्णिमासी।

इन्दुमणिः (स्त्री०) चन्द्रकान्तमणि।

इन्दुमण्डलं (नपुं०) शशि मण्डल, चन्द्र परिकर।

इन्दुरः (पुं०) चूहा, मूषक।

इन्दुरत्नं (नपुं०) चन्द्ररत्न, मणि, श्वेत रत्न।

इन्दुरुचिः (स्त्री०) ज्योत्स्ना सदृशी। (वीरो० १/२८)

इन्दुरेखा (स्त्री०) चन्द्रकला।

इन्दुलोहं (नपुं०) रजत, चांदी।

इन्दुवंशिन् (वि०) सोमवंशजात, सोमवंश में उत्पन्न। 'नाथवंशिन् इवेन्दुवंशिनः' (जयो० ७/९१)

इन्दुबिन्दु (स्त्री०) कान्तिबिम्ब, चन्द्र बिम्ब। 'खर-रुचिरिन्दु बिन्दुमश्नाति' (सुद० १०४)

इन्दुशेखरः (पुं०) शिव, शङ्कर, महादेव। 'अपराजितयेन्दुशेखरः' (सुद० १/४०)

इन्द्रः (पुं०) [इन्द्+रन्, इन्तीति इन्द्रः] इन्द्रतीति इन्द्रः आत्मा। (स० सि० १/१४) १. देवाधिपति, देवों के स्वामी, असाधारण, ऋद्धि। 'परमैश्वर्यादिन्द्रव्यपदेशः' (त० वा० ४/४) २. स्वामी, शासक। ३. इन्द्रिय, चिह्न।

इन्द्रकूटः (पुं०) एक पर्वत का नाम।

इन्द्रगुरुः (पुं०) बृहस्पति।

इन्द्रचापकः (पुं०) इन्द्रधनुष, इन्द्र की कमान। 'समवर्षि चलत्करस्फुरन्मणिभूषांशुकृतेन्दुचापकैः।' (जयो० १२/१३३)

इन्द्रजालं (नपुं०) जादू, बाजीगरी, (दयो० १२३) 'इन्द्रजालोपमा, सम्पदायुर्हरिधृतैणवत्' (दयो० १२३)

इन्द्रजालिक (वि०) १. जादूगरी करने वाला, महेन्द्र (जयो० वृ० ३/४) २. छद्मपूर्ण, भ्रमात्मक।

इन्द्रजित् (वि०) १. इन्द्र को जीतने वाला। २. इन्द्रियजयी।

इन्द्रतूलं (नपुं०) रूई की गादी।

इन्द्रदारुः (पुं०) देवदारु वृक्ष।

इन्द्रधनुषः (पुं०) शक्रचाप, इन्द्रकमान।

इन्द्रधामम् (नपुं०) सुरालय। (वीरो०) (जयो० वृ० ५/६५)

इन्द्रनन्दी (पुं०) १. इन्द्रनन्दी नामक आचार्य। २. इन्द्र के समान प्रसन्न। त्वमिन्द्रनन्दी भुवि सहितार्थः प्रसत्तये संभवतीति नाथ।' (जयो० ९/९०)

इन्द्रनीलकः (पुं०) पन्ना, एक रत्न विशेष।

इन्द्रपत्नी (स्त्री०) शची, इन्द्राणी।

इन्द्रपुरं (नपुं०) इन्द्र नगर। 'अधरमिन्द्रपुरं विवरं पुनर्भवति नागपतेर्नगरं तु नः।' (सुद० १/३७)

इन्द्रपुरी (स्त्री०) इन्द्रनगरी। (जयोवृ० ५/८९) मघोनि केन्द्राणीव (जयो० ६/८९)

इन्द्रपुरोहितः (पुं०) बृहस्पति।

इन्द्रप्रस्थं (नपुं०) इन्द्रप्रस्थ नाम नगर, जो यमुना तट पर स्थित था, यही पाण्डुपुत्रों का केन्द्र था। इसे इस समय दिल्ली कहते हैं।

इन्द्रप्रहरणं (नपुं०) इन्द्रशस्त्र, वज्र।

इन्द्रभूतिः (पुं०) इन्द्रभूति गणधर, महावीर का गणधर-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

'इत्येवमेतस्य सतीं विभूतिं स-वेद- वेदाङ्गविदिन्द्रभूतिः।' (वीरो० १३/२५)

इन्द्रयान (नपुं०) इन्द्र का यान। (जयो० १०/

इन्द्रवज्र (नपुं०) इन्द्रशस्त्र।

इन्द्रसमान (वि०) इन्द्र के सदृश, शक्र समान। 'पृथुदानवारिन्द्रिसमान' (सुद० १/३९)

इन्द्रशासिका (वि०) इन्द्रशासितारविणा ककुविन्दुशारि।

इन्द्रसुनुः (पुं०) जयन्त।

इन्द्राणी (स्त्री०) [इन्द्रस्य पत्नी आनुक्+ङीप] शची, इन्द्र की पत्नी।

इन्द्रियं (नपुं०) १. शरीर की पहचान, शरीर चिह्न, अक्ष। (सुद० १२७) २. इन्द्रस्य लिङ्गमिन्द्रेण सृष्टमिति वा इन्द्रियशब्दार्थः (धव० १/२३७) 'नित्यं निगृह्णन्तीन्द्रियाणि' (सुद० १२२)

इन्द्रियगोचरः (पुं०) इन्द्रिय से ज्ञात।

इन्द्रियग्रामः (पुं०) इन्द्रिय वर्ग, इन्द्रिय समूह।

इन्द्रियज्ञानं (नपुं०) इन्द्रिय चेतना।

इन्द्रियजयः (पुं०) इन्द्रिय अंकुश।

इन्द्रियजयी (वि०) इन्द्रियों को जीतने वाले, अक्षरोधक। (जयो० वृ० २८/५)

इन्द्रियनिग्रहः (पुं०) अक्ष निरोध, पञ्चेन्द्रिय निरोध।

इन्द्रियपराधीनः (नपुं०) इन्द्रिय वश। (सुद० १२७)

इन्द्रिय-पर्याप्तिः (स्त्री०) इन्द्रिय के आकार रूप परिणति, अक्ष परिणति। 'इन्द्रिय करणनिष्पत्तिरिन्द्रियपर्याप्तिः'

इन्द्रियप्रणिधिः (स्त्री०) इन्द्रियों की अनासक्ति।

इन्द्रियप्रत्यक्षं (नपुं०) इन्द्रियों से उत्पन्न होने वाला स्पष्टीकरण। इन्द्रिय-प्राधान्यादनिन्द्रिय बलाधानादुपजातमिन्द्रियप्रत्यक्षम्' (प्रमेयरत्नमाला)

इन्द्रियविषय (नपुं०) अक्ष विषय इन्द्रियों की वासना।

इन्द्रियवृत्ति (स्त्री०) इन्द्रिय प्रवृत्ति। (मुनि० १)

इन्द्रिय-संयमः (नपुं०) पञ्चेन्द्रिय नियन्त्रण, इन्द्रिय निरोध, इन्द्रिय निग्रह। 'इन्द्रियविषय-राग-द्वेषाभ्यां निवृत्तिरिन्द्रियसंयमः' (भ० आ० टी० ४६)

इन्द्रिय-सुखं (नपुं०) इन्द्रिय जनित संतोष।

इन्द्रियाधीनप्रवृत्तिः (स्त्री०) इन्द्रियजन्य वृत्ति। (वीरो० १०/१६)

इन्ध् (सक०) जलाना, प्रज्वलित करना, अग्नि जलाना।

इन्धः (पुं०) [इन्ध्+घञ्] इंधन, लकड़ी।

इन्धनं (नपुं०) इन्धन, लकड़ी आदि जलाना। (भक्ति २, दयो० पृ० ६०, सुद० २/४०)

इभः [इ+भन्] हस्ति, करि, हाथी। (जयो० १३/२३) गज 'तमः समूहेन निरुक्तमूर्तिमिभं' (जयो० ८/६)

इभकुम्भः (पुं०) हस्तिमस्तक। (जयो० १७/५९)

इभनिमीलिक (वि०) बुद्धिमना, धीमान्।

इभपालकः (पुं०) महावत।

इभपोतः (पुं०) वयस्क हस्ति, हाथी का बच्चा, हस्तिशावक।

इभयुवतिः (पुं०) हथिनी।

इभराट् (पुं०) मुख्य हस्ति, प्रधान हाथी। 'चलितोऽन्यगजं प्रतीभराड्' (जयो० १३/३६)

इभेन्द्रः (पुं०) हस्तिराज (जयो० २/७५)

इभ्य (वि०) १. अर्थवान्, धनी, धनाढ्य। २. विज्ञ, बुद्धिमन्। (जयो० ४/२३)

इभ्यः (पुं०) १. नृप, राजा, अधिपति। २. महावत, हस्ति पालक।

इभ्यक (वि०) [इभं गजमर्हति-यत्] धनी, अर्थवान्।

इय् (अक०) प्राप्त होना, उपलब्ध होना। 'नहि विषादमिया-दशुभोदये' (जयो० २५/६४)

इयत् (वि०) [इदम्+वतुप्] इधर, इतने विस्तार का, यहां तक, इतना अधिक। 'किं मुदंतोऽस्ति भवानियद्धृतः' (समु० २/२१)

इयती (वि०) इतनी, यहां तक। 'कियती जगतीयती गतिः' (जयो० १३/२४)

इयत्ता (वि०) [इयत्+तल्+टाप्] इतना, परिणाम विशेष।

इयात् (वि०) इतना। 'इयान् रसति किमपि स्वयम्' (जयो० २५/६२)

इरणं (नपुं०) [ऋ+अण्] १. मरुधरा, मरुस्थल, मरुभूमि। २. ऊसर भूमि, बंजर भू-भाग।

इरम्मदः (पुं०) [इरया जलेन माद्यति वर्धते इति-इरा-मद्+खश्] विद्युत प्रभा, बिजली की चमक।

इरा (स्त्री०) [इ+रन्+टाप्] १. पृथ्वी, भूमि, धरा। २. मदिरा, शराब। (जयो० २८/६) ३. जल, ४. आहार। हरैर्वैरया व्याप्तं भोगिनामधिनायकः।

इरावत् (पुं०) [इरा+मतुप्] समुद्र, सागर।

इर्वारु (वि०) [उर्व+आरु] नाशक, हिंसक।

इल् (अक०) जाना, चलना-फिरना।

इल् (अक०) सोना, फेंकना, भेजना, डालना।

इला (स्त्री०) [इल्+क+टाप्] १. भू, भूमि, पृथ्वी, २. गाय, ३.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वक्तृता। 'इलां क्षालयितुं रेजेऽवतरन्तीव स्वर्णदी' 'इलां भुवं क्षालयितुम्' (जयो० वृ० ३/११२)

इलापतिः (पुं०) भूपति, राजा। 'उचितं चक्रुरिलापतिमितरं' (जयो० ६/३१)

इलालङ्कारः (पुं०) पृथ्वी का अलंकार, भू शोभा। (सुद० पृ० ११५)

इलिका (स्त्री०) [इला+कन्, इत्वम्] पृथ्वी, धरती, भूमि।

इव (अव्य०) [इ+क्वन्] तरह, जैसा कि, समान। (मुनि० ८, सुद० २/९) 'इव शब्दः पादपूर्तो एव शब्दश्चापि शब्दार्थकः' (जयो० पृ० १९/५१) 'श्रीश्रेष्ठिनो मानसराजहंसीव' (सुद० २/९) 'लक्ष्मीरिवासौ तु निशावसाने' (सुद० २/११)

इव किल (अव्य०) जिस प्रकार की, जैसा कि। 'जरद्गवो वृद्धबलीवर्द इव किल' (जयो० २३/६७)

इवाथ (अव्य०) इस तरह का। 'साधुः सरोषः स इवाथ दीनः' (समु० १/३४)

इवाधुना (अव्य०) अब इस, प्रकार, ऐसा मानो कि–'भवान्तरं, प्राप्त इवाधुना नवम्' (समु० २३/३३)

इष् (अक०) निकलना, कामना करना, चाहना। 'किमिष्यते कुड्मल बन्धलोपी' (जयो० १/७१) 'ईय एषौऽद्भुत इष्यते न कैः' (समु० २/२३) उक्त पंक्ति में 'इष्' धातु का अर्थ मानना है। 'त्वमीष्यते सत्प्रतिपद्धरातरे' (जयो० ५/१०६)

इषः (पुं०) [इष्+अच्] १. शक्ति सम्पन्न, २. आश्विनमास।

इषि (स्त्री०) अस्त्र विशेष।

इषिका देखो ऊपर।

इषिरः (पुं०) अग्नि, आग।

इषुः (पुं०) [इष्+उ] १. बाण, शर। २. सीधी, सरल।

इषुकारः (वि०) बाण बनाने वाला।

इषुकृत् (वि०) बाण बनाने वाला।

इषुगति (स्त्री०) सीधी गति, मोड़ा रहित गति।

इषुधरः (वि०) धनुर्धर।

इषुपथः (पुं०) बाणमार्ग, तीर आने का रास्ता या स्थान।

इषुप्रकार (वि०) बाण के आकार। 'चरन्ति चाचारमिषुप्रकारम्' (भक्ति० सं०१०), दर्शनाचार, ज्ञानाचार, चरित्र। चार, तपाचार और वीर्याचार ये पांच इषु प्रकार हैं जिन्हें साधु पालन करते हैं।

इषुप्रयोगः (पुं०) बाण प्रयोग।

इषुभृत (वि०) धनुर्धर।

इषुधिः (पुं०) [इषु+धा+कि] तरकस, बाण रखने का साधन।

इषूक्तशैलः (पुं०) इष्वाकार पर्वत। (भक्ति ३६)

इषूर्वीधरः (पुं०) इष्वाकार पर्वत। (जयो० २४/१४)

इष्टः (भू० क० कृ०) [इष्+क्त] १. इच्छित, वाञ्छित, अभिलषित, चाहा गया, माना गया, स्वीकृत किया गया। १. प्रतिष्ठित, सम्मानित, 'शालेन बद्धं च विशालमिष्ट' (सुद० १/२५) २. योग्य, उचित। 'फलतीष्टं सतां रुचिः।' (सुद० ३/४३) ४. चाह, इच्छा। ५. वक्ता का अभीष्ट भाव।

इष्ट-खलक्षणं (नपुं०) उचित आकाश स्वरूप। (सुद० १/२५)

इष्टखेलः (पुं०) भोग। (सम्य० ५१)

इट-गन्धः (पुं०) सुगन्धित पदार्थ, सुगन्ध, उत्तम गन्ध, उचित/समुचित सुगन्ध।

इष्टदेवः (पुं०) अनुकुल देव, कुलदेवता।

इष्टदेशार्चनं (नपुं०) कुलदेवार्चन, कुलपूजा।

इष्टदेशः (पुं०) वाञ्छित स्थान। 'पथाप्ययादीयते इष्टदेशः।' (जयो० ५/१०३)

इष्टपरिपूरणं (नपुं०) समुचित रूप से प्राप्त। (जयो० २/२)

इष्टभावः (पुं०) इष्टभाव, इष्टभावना, सम्यक् चिंतन, श्रेष्ठ विचार॥

इष्टवियोगः (पुं०) इष्ट पदार्थों का वियोग। 'इष्टवियोगानिष्ट-संयोगतया' (जयो० वृ० १/१०९)

इष्टसंयोग-जनित (वि०) उचित योग से युक्त। (जयो० १/२२)

इष्टसत्ता (स्त्री०) अच्छा भाव।

इष्टसत्त्व (वि०) अच्छाई युक्त भाव।

इष्टसिद्धि (वि०) ०मनोरथ साधक ०मनोरथ साकल्य ०सिद्धिजनक। (जयो० २/३६) 'इष्टसिद्धिमभिवाञ्छितोऽ-र्हतां' (जयो० २/३७)

इष्ट-हतिः (स्त्री०) निर्विघ्नता, सफलता। 'आत्रिकेष्ट हतिहापनोद्यतः' (जयो० २/३९)

इष्टानिष्टविकल्पः (पुं०) इष्ट-अनिष्ट भाव, शुभ-अशुभ भाव। (मुनि० ४)

इष्टिः (स्त्री०) प्रार्थना, कामना, वाञ्छा, इच्छा, चाह, अभिलाषा, पूजा। 'सर्वतः प्रथममिष्टिरर्हतां' (जयो० २/२७)

इष्टिमान् (वि०) यज्ञकर्ता, इष्ट समागम कर्ता, अभिलाषाजन्य। 'इष्टिमान् सुकृतवत्पुरोहितः' (जयो० ३/१४)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इष्टोपदेश: (पुं०) आचार्य समंतभद्र द्वारा रचित रचना।

इष्टोपयोग: (पुं०) इष्ट उपयोग, शुभ उपयोग। 'इष्टोपयोगाय वियुक्तयेऽतोनिष्टस्य पीडासु निदानहेतो:।' (समु० ८/३५) आर्तध्यान के चार भेदों में इसका प्रथम स्थान है। (समु० ८/३५)

इष्म: (पुं०) १. कामदेव, मदन। २. वसन्त ऋतु।

इष्य: (पुं०) बसन्त ऋतु।

इष्वाकार: (पुं०) पर्वत का नाम। (जयो० वृ० २४/१४)

इस् (अव्य०) [इं कामं स्यति-सो क्विप्] क्रोध, कोप, पीड़ा, शोक।

इह (अव्य०) [इदम्+ह इशादेश:] यहां, इधर, इस ओर, इस दिशा में (जयो० वृ० १/४) इस स्थान पर, अब, अभी। (जयो० १/१४) 'इह पश्याङ्ग सिद्धशिला भाति' (सुद० १२२) 'केशान्धकारीह शिर:' (सुद० २/२५) 'कर-पल्लवयो: प्रसूनता-समधारीह सता वपुष्मता।' (सुद० ३/२१) उक्त पंक्ति में 'इह' का अर्थ मानो कि है भवन्ति तस्मादिह तीव्रमन्द-(समु० ८/१५) 'विघ्नश्च निघ्न इह भाति पुनर्विमोह:' (जयो० १०/९५) इह भाति-इस पृथ्वी पर या इस स्थान पर सुशोभित होता है।

इहापि (अव्य०) यहां भी, इस समय भी इस स्थान पर भी। (सुद० १२०, जयो० १६/६९)

ई

ई: (पुं०) यह वर्णमाला का चतुर्थ स्वर है, इसका उच्चारण स्थान 'तालु' माना गया है तथा इसको दीर्घ स्वर के अन्तर्गत रखा जाता है।

ई (अव्य०) यह दु:ख को प्रकट करने वाला अव्यय है। इससे विषाद, शोक, दु:ख, पीड़ा, खिन्नता, अनुकम्पा आदि का भाव स्पष्ट होता है।

ई: (पुं०) [इं+क्विप्] कामदेव, मदन।

ई (सक०) ०जाना, ०गति करना, ०चलना, ०चाहना, ०इच्छा करना, ०प्रार्थना करना, ०मानना।

ईक्ष् (सक०) ०अवलोकन करना, ०देखना, ०निरीक्षण करना, ०ताकना, ०विचारना। 'अमानवचरित्रस्य महादर्शं किलेक्षि-तुम्' (जयो० ३/१०१) 'प्रायमुदीक्ष्यतेऽत:' (सुद० २/१९)

ईक्षक: (पुं०) दर्शक, देखने वाला।

ईक्षणं (नपुं०) [ईक्ष्+ल्युट्] १. अवलोकन, परिदर्शन, दृश्य। २. दृष्टि, चक्षु, नेत्र। (जयो० १/५३) 'एतयो: खलु परस्परेक्षणं सम्भवेत्' (जयो० २/६)

ईक्षण-क्षणं (नपुं०) निरीक्षण मात्र, अवलोकन मात्र। (दयो० ६७)

ईक्षण-लक्षणं (नपुं०) चक्षु जन्य कारण, चक्षुचिह्न। ईक्षणयौ-नेत्रयो: लक्षणं चिह्नम्' (जयो० १/५३)

ईक्षणिक: (पुं०) ज्योतिषी, (निमित्त ज्ञानी)।

ईक्षति (स्त्री०) दृष्टि, अक्षि, आंख, नयन, नेत्र। चक्षु।

ईक्षमाण (वर्त-कृ०) देखता हुआ, अवलोकन करता हुआ। 'मृत्युं पुनर्जीवन मीक्षमाण:' (सुद० ११७)

ईक्षमाणक: (पुं०) गृही, गृहस्थ। 'अन्यदप्युचितमीक्षमाणक:' (जयो० २/६२)

ईक्षा (स्त्री०) अक्षि, दृश्य, दृष्टि विशेष।

ईक्षिका (स्त्री०) [ईक्षा+कन्+टाप्] अक्षि, नेत्र, आंख, नयन, दृश्य, झलक।

ईक्षित (वि०) अवलोकित, देखा गया।

ईक्षित (भू० क० कृ०) अवलोकन किया गया, देखा गया, परिदृश्यजन्य।

ईक्षितवती (वि०) ०पश्यंती, ०देखती हुई, ०निरीक्षण करती हुई अवलोकन करती हुई। 'मुहुर्वक्त्रं पत्यु: शिथिल-सकलाङ्गीक्षितवती' (जयो० १७/१३०)

ईक्ष्यताम् (वि०) दृश्यता, अवलोकिता। 'प्रमुदितो रुदितं पुनरीक्ष्यताम्' (जयो० २५/६)

ईख् (अक०) झूलना, घूमना, हिलना।

ईख् (अक०) जाना, पहुंचना।

ईज् (अक०) १. जाना, २. कलंक लगाना, निंदा करना।

ईड् (अक०) स्तुति करना, अर्चना करना।

ईडा (स्त्री०) पूजा, अर्चना, स्तुति।

ईड्य (सं०कृ०) [ईड्+ण्यत्] प्रशंसनीय, समादरणीय, पूजनीय, स्तुति योग्य।

ईति (स्त्री०) [ई+क्तिच्] व्याधि, कष्ट, पीड़ा, महामारी। (जयो० १/१) दु:ख, व्यथा। (जयो० १/२१)

ईतिमुक्ति: (स्त्री०) व्याधि मुक्ति, दु:खनिर्वृत्ति, 'अखिलमीशान-मपीतिमुक्त्या' (जयो० १/१)

ईतिरहित (वि०) व्याधिमुक्त, पीड़ा रहित, दु:ख रहित। (जयो० वृ० १/११)

ईतिहृत्कथा (स्त्री०) उपद्रवहर कथा (जयो० २/११८)

ईदृक् (वि०) ऐसा, इस तरह का। (सुद० २/२०) 'नश्यंदितीदृङ् न परोऽस्त्युपाय:' (भक्ति० २५)

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ईदृक्ता (वि०) ऐसा गुण।

ईदृश (वि०) ऐसा, इस तरह का।

ईदृश (वि०) ऐसा, इस तरह का। 'ईदृशेऽभिनन्कं प्रतियाति' (जयो० ४/१३) 'ईदृशामि महीर्महितानाम्' (जयो० ५/५३)

ईदृशमेव (अव्य०) ऐसा भी। (वीरो० २०/१४)

ईदृशी (वि०) ऐसी। (समु० २/१०)

ईनकेतुः (पुं०) कामदेव। 'नमामि तं निर्जितमीनकेतुम्' (समु० १/२)

ईप्सा (स्त्री०) ०कामना, ०वाञ्छा, ०चाह, ०इच्छा, ०अभिलाषा।

ईप्सित (वि०) [आप्+सन्+क्त] ०यथोचित, ०इच्छित, ०मनोवाञ्छित, ०अभिलषित। 'भूपतेरीप्सितं सर्वं प्रक्रमते'। (जयो० १/७०) 'शृणु मन्त्रिन्ममेप्सितम्' (समु० ३/४०)

ईप्सु (वि०) [आप्+सन्+उ] १. इच्छावान्, चाहयुक्त, वाञ्छाशील, प्राप्त करने की भावना वाला। २. कहना, उच्चारण करना, दुहराना, बोलना। ३. प्रेरित करना, चलाना, उकसाना।

ईर् (सक०) १. कहना, बोलना, उच्चारण करना, भरना। (जयो० ५/२६) अनुकूल होना। (जयो० २७/९) २. प्रकाशित करना, प्रेरित करना। 'इतीरितोऽभ्येत्य स जन्मदात्री' (समु० ३/१२) 'पीयूषमीयुर्विबुधा बुधा वा' (वीरो० १/२२) 'पीयूषं नामामृतमीयुर्गच्छेयुः' (वीरो० वृ० १/२२) 'हर्षमीरयति प्रेरयतीति' (जयो० वृ० २७/९)

ईरणः (पुं०) [ईर्+ल्युट्] वायु, पवन, हवा। 'सर्वतोऽपि पवमान ईरणः' (जयो० २/८३) 'ईरणो वायु सर्वतो वाति-वहति' (जयो० वृ० २/८३)

ईरयंस्ताम्- अतिशयेन मुहुर्मुहुः कथयन जगाम। (जयो० वृ० २/१३९) बारंबार कथन।

ईरिण (वि०) [ईर्+इनन्] मरुस्थल, बंजर, उत्पत्ति रहित भूमि, ऊसर।

ईरित (वि०) ०जनित-'तमुदीक्ष्यमुदीरिते जने' प्रमोदेनेरिते प्रेर्यमाणे सति' (जयो० १२/६६) ०कथित, प्रतिपादितइतीरितोऽभ्येत्य स' (समु० ३/१२)

ईर्मम् (नपुं०) [ईर्+मक्] घाव, व्याधि।

ईर्या (स्त्री०) [ईर्+ण्यत्+टाप्] १. योग, योगगति, परिभ्रमण 'ईरणमीर्या योगगतिरिति यावत्' (ल०वा०६/४) ईर्या योगः (धव० १३/४७)

ईर्यापथं (नपुं०) योग पथ। 'ईरणमीर्या योगो गतिरित्यर्थः तद्वारकं कर्म ईर्यापथम्' (स० सि० ६/४)

ईर्यापथक्रिया (स्त्री०) ईर्यापथ का कारण रूप क्रिया. ईर्यापथनिमित्त' (स० सि० ६/५)। ईर्यापथनिमित्ता या सा प्रोक्तेर्यापथक्रिया' (हरिवंश प्र०५८/६५)

ईर्यापथशुद्धिः (स्त्री०) केवली की शुद्धि।

ईर्यासमितिः (स्त्री०) शुद्धि पूर्वक गमन। सम्यगवलोकन सहित गति। 'चर्यायां जीवबाधापरिहारः ईर्यासमितिः' (त०श्लोक ९/५) संलापादिविवर्जितेन शमिनामीशेन संपश्यता, भूयाग्रं खलु कंटकादिकमितः प्राप्तं व्यपाकुर्वता। हस्त्यश्वादि विगाहितेन च पथा नातिद्रुतं धीमता वृत्त्यर्थं गमनीयमप्यनुदिनं रात्रौ तु नेतिव्रतात्। (मुनि० ६) पंच समितियों में इस समिति का उल्लेख है। प्रथम महाव्रती साधक गमनागमनादि में इसी समिति का पालन करना है। (मुनि० २)

ईर्ष्य् (अक०) डाह करना, असहिष्णु होना। (जयो० ५/९६)

ईर्ष्य (वि०) [ईर्ष्य्+अच्] ०ईर्ष्यालु, ०द्वेष करने वाला, ०बुरा चाहने वाला।

ईर्ष्यारीति (स्त्री०) ईर्ष्याविधि। (जयो० ५/९६)

ईर्ष्या (स्त्री०) जलन, डाह।

ईर्ष्याकरणं (वि०) स्पर्द्धन। (जयो० वृ० १४/१३) स्पर्धा, डाह, जलन।

इर्ष्यालु (वि०) जलने वाला। (समु० ९/५)

ईर्ष्याविधिः (स्त्री०) ईर्ष्यारीति, डाह पद्धति।

ईलिः (स्त्री०) [ईड्+क्रिं डस्य लः] १. छोटी असि, लघु खंग, छोटी तलवार। २. डण्डा। ३. एक अस्त्र विशेष।

ईश् (अक०) राज्य करना, स्वामित्व होना, अधिकार होना, आदेश देना, आज्ञा करना, शासन करना। 'ईशिता तु जगतां पुरुदेवः' (जयो० ४/४९)

ईश (वि०) [ईश्+क] १. स्वामी, नायक, (जयो० १/२) चरित्रनायक। (जयो० ४/४३, वीरो० १/२०) 'कस्त्वदीशदुहितुर्भुवि योग्यः' (जयो० ४/४३) २. पति, ३. शक्तिशाली, सर्वोपरि, नरेश (जयो० वृ० १/२) ऐश्वर्यशाली। ४. ईश्वर, अर्हत, भगवन् (जयो० ८/८६) (४/६८) ईशे भगवति स्वमिति।

ईशतुजः (पुं०) स्वामी का पुत्र, भगवान् का पुत्र। 'आदिपुरुषस्य तुग् भरतः' (जयो० ९/५०)

ईशदिक् (स्त्री०) शुभसूचक दिशा, 'भवतीशदिक्- सदिष्ट-शकुनैश्च गुणीशः।'

ईशदुहितृ (स्त्री०) राजपुत्री। (जयो० ४/४३)

ईशा (स्त्री०) समर्थ स्त्री, ऐश्वर्य शालिनी। (जयो० २२/३०)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ईशानः (पुं०) [ईश् ताच्छील्ये चानश्] १. स्वामी, (जयो० १/१) मालिक, शासक, राजा। (जयो० १/८७) २. उत्तर-पूर्वी दिशा। ३. ईशान देव विशेष।

ईशानकोणः (पुं०) ईशानकोण, उत्तर-पूर्वी दिशा का कोण 'स्वस्य श्रीशानदिशः ईशानकोणतः' (जयो० वृ० ३/७१)

ईशानदिक् (स्त्री०) ईशानदिशा (जयो० वृ० ३/११)

ईशान्तिक (वि०) पति के समीप, स्वामी के पास। 'ईशस्यान्तिकं स्वामिनः समीपम्' (जयो० वृ० १४/६३)

ईशायित (वि०) शुभ संवाहक।

ईशायिता (वि०) ईश के शुभ संवाहक, ईशस्य भगवतोऽयः शुभावहो विधिः। भगवत् विषयक विधि, क्रिश्चियन वृत्ति। (जयो० २८/२५) ईशाईवृत्ति (वीरो० १९/१०)

ईशिता (वि०) [ईशिनो भावः-ईशिन्+तल्+टाप्] सर्वोच्चता, अतिमहत्त्वपूर्ण, स्वामित्वपना। (जयो० ४/४९)

ईशितु (वि०) [ईशिनो भावः-ईशिन् तु] स्वामित्वपना। (जयो० २२/५१)

ईशित्वं (नपुं०) ईशित्व नामक ऋद्धि।

ईश्वरः (पुं०) स्वामी, नायक, भगवन्। (सुद० १/२२)

ईश्वर (वि०) सामर्थ्यवान्, शक्तिमान्, योग्य, समर्थ-'भवेद्भुवि भावि यदीश्वरः' (जयो० ९/२९) 'ईश्वरः समर्थः' (जयो० वृ० ९/२९) 'ईश्वरः सामर्थ्यवान्' (जयो० वृ० ९/२९) 'भुवि नान्वभिधातुमीश्वरः' (जयो० १०/७४) 'ईश्वरो युवराजा माण्डलिकोऽमात्यश्च। अन्ये च व्याचक्षते अणिमाद्यष्ट-विधैश्वर्ययुक्त ईश्वरः। (जैन०ल० १४०) 'येनाप्तं परमैश्वर्यं परमानन्दसुखास्पदम्' (सम्मु० २४०)

ईश्वरवादः (पुं०) ईश्वराधीन कथन।

ईश्वरि (वि०) ईश्वर संबंधित। (जयो० वृ० १/१)

ईश्वरोज्झनदिक् (स्त्री०) स्वामियों के विरह से उत्पीड़ित दिशा। 'ईश्वराणामुज्झनं परित्यजनं दिशन्तीति किलेश्वरोज्झनदिशः प्राणेश्वरविरहंवदा दिशो दशापि' (जयो० वृ० ५/८)

ईष् (अक०) ०उड़ जाना, ०भागना, ०देखना, ०अवलोकन करना।

ईषः (पुं०) [ईष्+क] आश्विन मास।

ईषणाशील (वि०) ईर्ष्यास्थान। (वीरो० २२/२०)

ईषत् (अव्य०) [ईष्+अति] कुछ, किञ्चित्, थोड़ा सा, अल्प।

ईषत्कर (त्रि०) कुछ करने वाला।

ईषत्पाण्डु (वि०) कुछ पीला, हल्का पीला।

ईषत्पुरुषः (पुं०) निन्दक जन, घृणायुक्त पुरुष।

ईषत्प्राग्भार (पुं०) पृथिवी का एक नाम, जो पूर्व-पश्चिम में रूप से कम एक राजू चौड़ी, उत्तर-दक्षिण में कुछ कम सात राजू लम्बी और आठ योजन मोटी है। जो बेंत के समान है। (जैन०ल० २४०)

ईषत्-भावः (पुं०) थोड़ा परिणाम, अल्प परिणाम।

ईषत्माणं (नपुं०) किञ्चित् मान, कुछ अहंकार।

ईषत्-यमं (नपुं०) अल्प यम।

ईषत्-रक्तं (नपुं०) थोड़ा लाल।

ईषत्-हासं (नपुं०) थोड़ी हंसी, कुछ मुस्कराहट, अल्प परिहसन।

ईषा (स्त्री०) [ईष्+क+टाप्] गाड़ी का फड़, हलस।

ईषिका (स्त्री०) [ईषा+कन्+इत्वम्] १. कूची, २. अस्त्र विशेष।

ईषीका देखें ईषिका।

ईह् (सक०) १. चाहना, कामना करना, (ईहते०सम्० ७/२) इच्छा करना। (जयो० ३/६७) २. प्रयास करना, लक्ष्य बनाना, कोशिश करना। 'कस्य करक्रीडनकं निश्चेतुमितीहमानः' (जयो० ३/६९) 'विसर्गमात्मश्रित्य ईहमानः' (सु० १/२३) उक्त पंक्ति में 'ईह्' धातु समझने अर्थ में प्रयुक्त हुई है। 'उक्तं पर्वोपवासाय समस्तीहार्हता स्वयम्' (सुद० ९६) उक्त पंक्ति में में 'ईह्' धातु का अर्थ मानना है 'राज्ञीहाऽ हं द्वारि खलु नामीहं गार्मधिपस्य' (सुद० ९४) स्वामी का आज्ञा मानना।

ईहा (स्त्री०) मतिज्ञान का एक भेद, विशेष आलोचन, जिज्ञासा, चेष्टा कामना, वाञ्छा, इच्छा, चाह। (सम्य० १३५) 'अवग्रहीतस्यार्थस्य विशेषकांक्षणमीहा' (धव० १/३३४) 'ईहते चेष्टते अनया बुद्ध्या इति ईहा' (धव० १३/२४२)

उ

उः (पुं०) यह वर्णमाला का पंचम स्वर है। इसे ह्रस्व माना गया है, इसका उच्चारण स्थान ओष्ठ है।

उ (अव्य०) १. सम्बोधन, आमन्त्रण, निमन्त्रण, अनुकम्पा, दया, करुण, आश्चर्य, विस्मय, स्वीकार, प्रश्न, इच्छा आदि के अर्थ में इस अव्यय का प्रयोग होता है। २. नु किन्तु, परन्तु, विशेषण हेतु आदि के लिए भी इसका प्रयोग किया जाता है। ३. पादपूर्ति के लिए भी इसका प्रयोग होता है।

उक्त (भू० क० कृ०) [वच्+क्त] कथित उक्तं प्रतीतम् -शब्दे

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उच्चारिते सति यदवग्रहादिज्ञानं जायते। (त० वा० १/६) ०कहा गया, ०प्रतिपादित, ०प्रयुक्त, ०संज्ञात, ०भाषित, ०कथित, ०विवेचित। (सम्य० ७८२, जयो० वृ० १/९) 'धरति श्रियमेष एवमुक्तः' (जयो० १२/५४) 'इत्येवमुक्तः संज्ञातो' (जयो० वृ० १२/५४) 'इत्युक्ताऽथगता चेटी' (सुद० ७७)

उक्तकेतुः (पुं०) नाम विशेष। (सुद० ११०) 'राज्ञी गाता महामस्तूक्तकेतुः रुष्टः। (सुद० ११०)

उक्ततन्तु (वि०) क्लेद से व्याप्त। 'विलोपमं तत्कलिलोक्ततन्तु' (सुद० १०२)

उक्तपत्ररसनः (पुं०) उपर्युक्त बात, उक्त कथन। 'उक्तं पत्रं शब्द समूहं रसति स्वकरोतीत्युक्तपत्ररसनो' (जयो० वृ० ४/५)

उक्तप्रकार (पुं०) उपर्युक्त, कथनानुसार। (सुद० ९०)

रक्तरीति (वि०) उपयुक्त विधि (सुद० १/८)

उक्तवती (वि०) ०कहती हुई, ०बोलती हुई, ०भाषिता ०इत्थमुक्तवति काशिनरेशे' (जयो० ४/२०) 'उक्तवती-जगाद यद्' (जयो० वृ० ६/३४)

उक्ता (वि०) कथिता, भाषिता। (सुद० ७७)

उक्तावग्रहः (पुं०) गुणाविशिष्ट का ग्रहण। नियमित गुण-विशिष्टार्थग्रहणमुक्तावग्रहः। (मूला०वृ० १२/८७) 'अनुक्तस्य अवग्रहः' (त०वृ० १/१६)

उक्तिः (स्त्री०) [वच्+क्तिन्] ०अभिव्यक्ति, ०कथन, ०भाषण, ०वक्तव्य, ०विचार, ०अभिप्राय, ०सुझाव। (सम्य० ७१) 'उचितामुक्तिमप्याप्तवा' (सुद० ९०) 'मदुक्तिरेषा भवतां सुत्रस्तु' (सुद० २/२९)

उक्तिपूर्वक (नपुं०) कथनपूर्वक, विचारपूर्वक। 'भगवन्नमनोक्तिपूर्वकम्' (समु० २/२५)

उक्तिविचक्षणं (नपुं०) अनुरूप वचन बोलने में प्रवीण। (सुद० ११९) 'कामानुरूपोक्तिविचक्षणाऽदः।' (सुद० ११९)

उक्थं (नपुं०) [वच्+थक्] ०वाक्य, ०कथन, ०विचार, ०स्तोत्र, ०स्तुति, ०प्रशंसा।

उक्ष् (अक०) ०छिड़कना, ०गीला करना, ०सींचना, ०तर करना, ०विकीर्ण करना, ०फैलाना, ०बरसाना।

उक्षणं (नपुं०) [उक्ष्+ल्युट्] मंत्रित करना, प्रभावित करना, आधीन।

उक्षन् (पुं०) सांड, बैल, बलिवर्द, वृषभ।

उख् (अक०) हिलना, कांपना, डोलना।

उखा (स्त्री०) [उख+क+टाप्] पतीली, डेगची, बटोही।

उख्य (वि०) डेगली में तपाया, उबाला गया।

उगिति (वि०) मन लगाने वाला। (मुनि० २३)

उग्र (वि०) [उच्+रन् गश्चान्तादेशः] ०कठिन, ०कठोर, ०भीषण, ०तीव्र, ०क्रूर, ०भयंकर, ०भीम, ०प्रबल, ०हिंसक, ०शक्तिशाली, ०तीक्ष्ण, ०उच्च, ०भद्र। 'सद्धारगङ्गाधर-मुग्ररूपं' (जयो० १६/१४) (वीरो० १७/३४) उक्त पंक्ति में 'उग्र' का अर्थ 'महादेव' एवं उन्नत दोनों हैं। 'उग्ररूपं महादेव-स्वभावमुन्नतस्वभावं वा' (जयो० वृ० १६/१४)

उग्रमहीपसूनुः (पुं०) उग्रसेन का पुत्र, कंस पुत्र। (वीरो० १७/३४)

उग्रगंध (वि०) तीव्र गन्ध, अधिक गन्ध।

उग्रचारिणी (वि०) उग्र स्वभावी।

उग्रचण्डा (वि०) अत्यधिक क्रोध वाला।

उग्रघटा (स्त्री०) घनघोर घटा।

उग्रजंतु (पुं०) क्रूर प्राणी।

उग्र-तप (पुं०) कठोर तप। 'इत्येवमत्युग्रतपस्तपस्यन्' (सुद० ११९)

उग्र-दार-कान्ति (स्त्री०) धूर्जटि स्त्री, पार्वती, कान्तियुक्त परमसुन्दरी। 'उग्रदाराणां धूर्जटिस्त्रियाः पार्वत्याः कान्तिर्यया तां परमसुन्दरीं तां बालां भूयः' (जयो० ६/७८) श्रीदेवकी यत्तजुजापिदूने कंसे भवत्युग्रमहीपसूनुः।

उग्रविधिः (स्त्री०) कठिन चर्या।

उग्रसेनः (पुं०) नाम विशेष, मथुरा राजा और कंस का जनक उग्रसेन। (दयो० पृ० १००)

उग्रोग्रतपः (पुं०) कठिन तप, तीव्र तप। एक ऋद्धि विशेष। (तिलोयपण्णत्ति १०५१)

उच् (सक०) ०चयन करना, ०इकट्ठा करना, ०संचय करना, ०जुटाना।

उचित (भू० क० कृ०) १. योग्य, ठीक, अच्छा। २. प्रचलित, उपयुक्त। ३. अभ्यस्त, 'उचितमभ्यस्तमित्युपमा' (जयो० वृ० २१/२४) 'हृदि प्रवेशोचिता विशेषात्' (सुद० १/४२) 'तुगहो गुण-संग्रहोचिते' (सुद० ३/२२) उक्तं पंक्ति में 'उचित' का अर्थ परिपूर्ण, भरा हुआ है। 'समये पुण्यमये खलूचिते' (सुद० ३/१)

उचितज्ञ (वि०) उचित बात को जानने वाली 'उचितज्ञताधिपन्न-- (जयो० १५/७८)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उचित्तवृत्तं (नपुं०) उत्तम छन्द रूप, स्पष्ट गोलाकार, श्रेष्ठ वृत्त भाव। (सुद० २/३०)

उचितविधिः (स्त्री०) योग्य विधि, उचित कर्तव्य। 'क्षन्तव्योऽस्मि तवोचितोचितविधौ सद्भावनामण्डिते' (सुद० पृ० ९५)

उचित-संस्थानं (नपुं०) उत्तम स्थान। (सुद० पृ० ८३) 'पुन्नागोचित-संस्थानं'

उचितस्थलं (नपुं०) उत्तम स्थान। (सुद० वृ० ७६) 'नातःस्थातुं शशाकेदं मनागप्युचितस्थले' (सुद० ७६)

उचितात्मरीतिः (स्त्री०) स्वकुलाचार नियम (जयो० २/४९) ०योग्य रीति, अनुकूल एवं प्रचलित परम्परा।

उचितोचित (वि०) [उद्+चित्+ड] उन्नत, उत्कृष्ट, (सुद० १/१३) ऊपर, ऊँचा (जयो० वृ० १/५)

उच्चकैः (अव्य०) उन्नत, ऊँचा, उच्च।

उच्चखान (भू०) उखाड़ना, निकालना, खोदना। (समु० ९/४) (जयो० २८/७)

उच्चगोत्रं (नपुं०) उच्चकुल।

उच्चक्षुस् (वि०) ऊपर नेत्र करने वाला, निकाली गए नेत्रों वाला।

उच्चण्ड (वि०) भीषण, उग्र, कठिन, तीव्र, प्रचण्ड, भयंकर, भयावह।

उच्चपदं (नपुं०) उच्चस्थान। (वीरो० १८/४२)

उच्चन्द्रः (पुं०) रात्रि का अंतिम प्रहर।

उच्चतर (वि०) उच्चैस्तन। (जयो० १५/१३)

उच्चयः (पुं०) [उद्+चि+अच्] १. समुदाय, समूह, संग्रह, राशि। २. स्कन्धच्युत। 'श्री गैरिकस्योच्चय एव भानोः' (जयो० १५/१३) उच्यते-कहना (सम्य० ११५)

उच्चर् (सक०) उच्चारण करना, बोलना, प्रतिभाषित करना। उच्चरतु सुद० ९९, वचसोच्चरतामिदम् (हित०२) 'देवध्वनिं नित्यमनूच्चरन्ति' (जयो० १/८७) 'महर्षि-पठितमनुवदन्तीत्यर्थः' (जयो० वृ० १/८७)

उच्चरथः (पुं०) उत्तमरथ, सुरथ, श्रेष्ठ यान। (जयो० वृ० १३/७)

उच्चरणं (नपुं०) उच्चारण। (जयो० २/३५)

उच्चल् (अक०) चलना, हटना, अलग होना, दूर होना (जयो० २/४६) 'पान्थ उच्चलति किं कदा पथः' (जयो० ७/५५) चंचल होना-उच्चलेत् (जयो० २/१५२)

उच्चारणपूर्वकं (नपुं०) कथन पूर्वक, विवेचन पूर्वक। (सुद० ४/४६)

उच्चलनं (नपुं०) [उद्+चल+ल्युट्] चलना, कूच करना, उत्पथगामी। (दयो० ४०)

उच्चलित (भू० क० कृ०) [उद्+चल्+क्त] प्रस्थान करने वाला, चलने में तत्पर।

उच्चवर्णः (पुं०) श्रेष्ठवर्ण, सुवर्णभाव। (जयो० वृ० ११/८८)

उच्चाटनं (नपुं०) [उद्+चट्+णिच्+ल्युट्] मन्त्र विशेष, उन्मूलन, निस्सरण, जादू चलाना। 'णमो विज्जाहराणं' (जयो० वृ० १९/६९)

उच्चालकं (वि०) उच्च स्थान वाला। (दयो० ४८)

उच्चालन (वि०) चलायमान करने वाला। (सुद० ११६) डिगाने वाला।

उच्चारणं (नपुं०) कथन, प्रतिपादन, भाषण। 'यावच्छ्रीजिन-नामोच्चारणात्' (सुद० ९६)

उच्चारः (पुं०) [उद्+चर्+णिच्+घञ्] १. मल-मूत्र विष्ठा, गोबर। २. उच्चारण, कथन, अभिभाषण। ३. विसर्जन, छोड़ना।

उच्चारणपूर्वक (नपुं०) कथनपूर्वक, विवेचनपूर्वक।

उच्चारणं (नपुं०) कथन, प्रतिपाद, प्ररूपणा। * भाषण।

उच्चार-प्रस्रवणं (नपुं०) मल मूत्रादि का विसर्जन। (मूला०५/१२४)

उच्चावच (वि०) [उदक् च अवाक् च] अनियमित, ऊँचा-नीचा, ऊबड़-खाबड़।

उच्चूडः (वि०) [उद्गता चूडा यस्य] ध्वज, ऊपर फहराने वाला ध्वज/झण्डा।

उच्चैः (अव्य०) [उद्+चि+डैस्] उन्नत, ऊपरीगत, ऊपरी, उत्तुंग, ऊँचा। (सुद० १/१३)

उच्चैःकुलं (नपुं०) उत्तम कुल।

उच्चैः स्तनं (नपुं०) १. पृथुलस्तन, पीनतम पयोधर। (जयो० ३/७२, सुद० १२२) 'उच्चैस्तनफलोदयप्राय' (जयो० ११/९५) (जयो० ११/३) ''उच्चैःस्तनानां पृथुलानां फलाना-मुदयप्रायो यस्याः'' या उच्चैस्तन-उपरिप्रदेशे' (जयो० वृ० ११/९५)

उच्चैर्लम्बमान (व०कृ०) ऊर्ध्वायित, उच्चता प्राप्त। (जयो० वृ० १३/३६)

उच्चैःवादः (पुं०) उत्तम वचन, मधुरालाप।

उच्चैःशिरस् (वि०) हे महाभाग, महानुभाव, सज्जन।

उच्छ् (सक०) १. बांचना, पढ़ना। २. त्यागना, छोड़ना। (जयो० वृ० ११/४३)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उच्छन्न (वि०) [उद्+छद्+क्त] उखाड़ा गया, हिलाया गया, लुप्त, समाप्त, नष्ट।

उच्छल (वि०) उछलना। (सुद० १/७)

उच्छलत् (वि०) [उद्+शल+शतृ] १. चमकता हुआ, देदीप्यमान होता हुआ। २. उच्चगत, ऊँचाई पर जाता हुआ। (सुद० १/२७)

उच्छलनं (नपुं०) [उद्+शल्+ल्युट्] उड़ना, ऊपर जाना।

उच्छादनं (नपुं०) [उद्+छद्+णिच्+ल्युट्] १. ढाकना, आच्छादित करना। २. मलना, मसलना, लेप करना।

उच्छालित (वि०) फेंकी गई, ऊपर की गई। (वीरो० १६/५)

उच्छासन (वि०) [उत्क्रान्त शासनम्] निरंकुश, अनियंत्रित।

उच्छिख (वि०) [उद्गता शिखा यस्य] १. शिखा युक्त, २. ज्योति युक्त। ३. दीप्तिवान्।

उच्छि-खन्व (वि०) ऊपर। (सुद० १/१६)

उच्छित्तिः (स्त्री०) [उद्+छि+क्तिन्] नाश, विनाश, उखाड़ना, समूल नष्ट करना।

उच्छिन्न (भू० क० कृ०) [उद्+छिद्+क्त] विनष्ट, नाश, समाप्त, उखाड़ा गया।

उच्छिरस् (वि०) [उन्नतं शिरोऽस्य] १.विनम्र, विनीत, २. कुलीन, उन्नत। ३. सज्जन, महानुभाव, आदरणीय, पूज्य।

उच्छिलीन्ध्र (वि०) कुकुरमुत्ता, सांप की छतरी।

उच्छिष्ट (भू० क० कृ०) [उत्+शिष्+क्त] १. अवशेष, शेष, बचा हुआ, त्यक्त, विसर्जित, छोड़ा गया। (दयो० ७, सम्० ४/२) २. निःसार, जूठन-'यदुच्छिष्टमहो विधात्रा' (सम्० ४/२) (जयो० ११/७५)

उच्छिष्टांश (वि०) समुत्कर, निःसृत भाग, प्रवाहित भाग। (जयो० वृ० ११/४३)

उच्छीर्षकं (नपुं०) उपधान, तकिया।

उच्छुतिः (स्त्री०) सद्भाव वृद्धि। (जयो० २/१०५)

उच्छुष्क (वि०) [उत्+शुष्+क्त तस्य कः] मुरझाया, शुष्क, सूखा।

उच्छून (वि०) [उद्+श्वि+क्त] मोटा, बलशाली, सशक्त, दृढ़, फूला हुआ। (जयो० ११/४०)

उच्छूनता (वि०) प्रफुल्लता, फूला हुआ, उत्तुंग। (जयो० ११/६०)

उच्छृङ्खल (वि०) [उद्गत शृङ्खलातः] निरंकुश, अनियन्त्रित, वशरहित। (जयो० ११/४१) उदवेल युक्त। (जयो० ३/९२)

उच्छृङ्खलभाषिन् (वि०) निरंकुश कथन, मुखरीवादक, व्यर्थालापी। (जयो० ११/४१)

उच्छादनं (नपुं०) अनाविर्भाव।

उच्छेदः (पुं०) [उद्+शिष्+घञ्] उखाड़ना, उद्भिद।

उच्छेदक (वि०) अन्तर, विरह, विरोध, व्यधान। (जयो० २४/१९) काटना, मूलोच्छेन, उच्चाटन।

उच्छेदनं (नपुं०) उखाड़ना, काटना। (जयो० वृ० २४/७३)

उच्छेदी (वि०) विनाशगत, नष्ट हुआ, विध्वंस को जात। (वीरो० ६/७)

उच्छेषः (पुं०) [उद्+शिष्+घञ्] शेष, अवशेष, अवशिष्ट, बचा हुआ।

उच्छोषण (वि०) सुखाने वाला, मुर्झा देने वाला।

उच्छोषणं (नपुं०) सुखाना, मुर्झाना।

उच्छ्र (अक०) [उद्+श्रि+अच्] उदय होना, निकलना।

उच्छ्रयः (पुं०) वृद्धि, विकास।

उच्छ्रयणं (नपुं०) [उद्+श्रि+ल्युट्] उन्नयन, विकास, विस्तार, फैलाव, प्रसार।

उच्छ्रितः (भू० क० कृ०) [उद्+श्रि+क्त] १. उत्थापित, उठाया गया, ऊँचा किया। २. वर्धमान, बढ़ाया गया, वृद्धि गतंगत, ३. समृद्ध, वृद्धि प्राप्त।

उच्छ्वसनं (नपुं०) [उद्+श्वस्+ल्युट्] सांस लेना, निःश्वास, आश्वास, आह भरना।

उच्छ्वसित (भू० क० कृ०) [उद्+श्वस्+क्त] उच्छ्वास, निःश्वास, आश्वास, गहरी सांस लेना।

उच्छ्वासः (पुं०) [उद्+श्वस्+घञ्] १. सांस, निःश्वास, ऊसार, उर्ध्ववातोद्गम। २. एक अंग, भाग, हिस्सा, आश्वास। ३. प्रोत्साहन, आश्वासन। 'उर्ध्वगमनस्वभावः परिकीर्तितः' उर्ध्व वातोद्गम य स उच्छ्वासः। (जैन०ल० २४५)

उच्छ्वास-नामकर्म (नपुं०) ०उच्छ्वसन, ०आश्वास, प्राणापान ग्रहण, निःश्वास सामर्थ्य। 'उच्छ्वसनमुच्छ्वासस्तस्य नाम उच्छ्वास नाम' (जैन०ल० २४५)

उच्छ्वास-पर्याप्तिः (स्त्री०) आन-प्राणपर्याप्ति।

उच्छ्वास-निःश्वास-पर्याप्तिः (स्त्री०) सांस लेने, छोड़ने की शक्ति।

उज्जगज (वि०) विशेष गर्जना। (सुद० २/३६)

उज्जयिनी (स्त्री०) अवन्ति नगरी, मालवा का प्रसिद्ध नगर। (दयो० १०/१०)

उज्जासनं (नपुं०) [उद्+जस्+णिच्+ल्युट्] हनन, घात, विच्छेद, विनाश।

उज्जिहानं (वि०) [उद्+हा+शानच्] उदित, ऊपर जाता हुआ। बहिर्गत।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उज्जीवय् (सक०) जीवित करना, प्राण देना। (जयो० १/७६)

उज्जृम्भ (वि०) १. जम्भाई लेना, मुंह खोलना। २. फुत्कारित, फुलाया हुआ।

उज्जृम्भाषणं (नपुं०) [उद्+जृम्भ+अ+ल्युट्] जम्भाई लेना, उवासी, मुंह खोलना।

उज्ज्य (वि०) [उद्गता ज्या यस्य] धनुर्धर, धनुष पर डोरी खुली रखने वाला।

उज्ज्वल (वि०) [उद्+ज्वल्+अच्] धवल (जयो० १३/३९) दीप्ति, कान्तियुत, चमकयुक्त, प्रभावान्, स्वच्छ। (वीरो० २/४) 'उज्ज्वलो वाच्यवद्दीप्ते परिव्यक्तविकाशिषु' इति विश्वलोचन:' (जयो० ४/४९) 'मुक्तोपम-तन्दुल-दलमुज्ज्वलमादाय श्रद्धाया:' 'दुग्धाब्धिवदुज्ज्वले' (सुद० ९०) यहां 'उज्ज्वल' का अर्थ पवित्र (जयो०)

उज्ज्वल-कुम्भ: (पुं०) मङ्गलकलश, इष्टकुम्भ। (जयो० १६/१०) पीयूष-पादोज्ज्वल-कुम्भदृष्टया' (जयो० १६/१)

उज्ज्वलजलं (नपुं०) निर्मलजल, शीतल जल। 'नीरमुज्ज्ल-जलोद्भवनिष्ठ' (जयो० ४/५९)

उक्त पंक्ति में 'उज्ज्वल' का अर्थ विनाश भी किया है। 'शरदि उज्ज्वलैर्विकाशिभि: जलोदभवै: कमलै र्निष्ठम्' (जयो० वृ० ४/५९)

उज्ज्वल-ज्वाला (स्त्री०) प्रकाशमान ज्वाला, देदीप्यमान ज्वाला। (सुद० २/१७) नयन्तमन्तं निखिलोन्किरंतं समुज्ज्वलज्ज्-वालतय। लसन्तम्।' (सुद० २/१७)

उज्ज्वलवर्ण: (पुं०) निर्मल अक्षर, स्वच्छवर्ण, पवित्र वर्ण। 'उज्ज्वल: पवित्रो वर्ण: उज्ज्वलैर्निर्मलैर्वर्णरक्षरै:। (जयो०

उज्झ् (सक०) त्यागना, छोड़ना, लताना, टालना, बचना, विसर्जन करना। उज्झेत्-कथंकारं त्यजेदिति (जयो० वृ० २५/७५) 'परं समस्तोपधिमुज्झिहाना' (सुद० ११५) 'समस्तमप्युज्झतु सम्व्यवायं' (सुद० १३१) उज्झितुं- (सुद० ११३)

उज्झक: (पुं०) [उज्झ्+ण्वुल्] १. बादल, मेघ, घनघोर घटा। २. भक्त, श्रद्धाशील।

उज्झनं (नपुं०) त्यागना, छोड़ना, परिमुंचन, विसर्जन, प्रस्रवण। (मुनि० १४)

उज्झित (भू० क० कृ०) छोड़ा गया, त्यक्त, परित्यक्त (जयो० १२/७१) विसर्जित किया गया। (जयो० ११/३५) उज्झितु-त्यजतु (वीरो० २/१०) उज्झिता (सुद० ३/३५) उज्झितो (सुद० २/२) नित्यं पादप-कोटरादिषु वशेदन्यानपेक्षिप्वथा प्युदिभन्नादितयोज्झितेषु च चुरादूरे चर: सर्वथा। (मुनि० ८) उक्त पंक्ति में 'उज्झित का निर्जन, एकान्त, शून्यगृह आदि भी अर्थ निकलता है अर्थात् मुनि उजड़े आवासों में रहे। 'यद्वा पदोरेव मदोज्झितासाऽमुष्या:' (जयो० ११/७२) मदोज्झिन्ता-निरभिमाना-रहित अर्थ है। एषणा दोष विशेष।

उञ्छ् (सक०) एकत्रित करना, बीनना, संग्रह करना, जुटाना।

उञ्छ: (पुं०) [उञ्छ्-घञ्] एकत्रित करना, संग्रहण।

उञ्छनं (नपुं०) [उञ्छ्+ल्युट्] इकट्ठा करना, बटोरना, खलिहान से बीनना।

उटम् (नपुं०) [उ+टक्] पत्ता, घास।

उट्टङ्क: (पुं०) प्रहार, आघात। (जयो० ६/६०)

उट्टङ्कित (वि०) प्रहारित, उत्कीर्ण किया गया। (जयो० ६/६०) (दयो० ४२)

उडु: (स्त्री०) १. नक्षत्र, तारा। २. वारि, जल।

उडुगण: (पुं०) तारासमूह। (समु० ६/७)

उडुचक्रं (नपुं०) राशिचक्र।

उडुप: (पुं०) नक्षत्रपति, चन्द्र। (जयो० १५/२१) 'उडुपश्चन्द्रमा' (जयो० वृ० १५/२१)

उडुपं (नपुं०) बाड़, बेड़ा, घेरा।

उडुपरम्परा (स्त्री०) नक्षत्र परम्परा। (जयो० २४)

उडुपति: (पुं०) चन्द्र, चन्द्रमा।

उडुपांशु: (नपुं०) चन्द्रकिरण। 'उडुपस्य चन्द्रमसोऽशुवत्किरण-समूह' (जयो० २१/५)

उडुपथ: (पुं) आकाश, खे, नभ, अन्तरिक्ष।

उडुवर्ग: (पुं०) पक्षी वर्ग। (वीरो० ४/२०)

उडुरत्नं (पुं०) चन्द्रमा। (जयो० ११/६४)

उड्डयनं (नपुं०) [उद्+डी+ल्युट्] ऊपर उड़ना, उड़ान भरना। (जयो० ३/७)

उड्डयनसाधनं (नपुं०) ०यान, ०उड़ने का साधन, ०वाहन, ०विमान। (जयो० ३/७)

उड्डायनं (नपुं०) उड़ाना, उड़ान भरना। चिन्तार्याणं शिपत्येष काकोड्डायनहेतवे। (सुद० १२८)

उड्डीन (भू० क० कृ०) [उ+डी+क्त] उड़ाया गया, भगाया गया, ऊपर की ओर किया गया।

उड्डीयनं (नपुं०) [उड्ड: स एव आचरति-क्यङ् उड्डीय+ल्युट्] उड़ान भरना, उड़ना, उड़ान, ऊपर की ओर जाना।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उड्डीशः (पुं०) [उद्+डी+क्विप्] (उड्डी तस्य ईशः) शिव।

उड्डः (पुं०) देश नाम, उड़ीसा।

उत् (अव्य०) [उ+क्त] यह अव्यय १. संभावना, संदेह, अनिश्चतता, अनुमान, संयोग, साहचर्य, प्रति, लेकिन आदि के अर्थ में होता है। २. कहीं-कहीं पर शब्द से पूर्व उत् के प्रयोग होने पर 'विपरीत' अर्थ भी व्यक्त होता है। उत्पथगामी अपथ। (जयो० वृ० २/१३२) ३. 'उत्' का अर्थ ऊपर भी है-'रक्तमस्म्युत्थमेतीति तदेकभक्तः' (सुद० १२१)। ४. 'उत्'-सहित, प्रत्युद्भूत-'रसातलं तूत्तलसातलं' (जयो० ५/९०) उत्तलं-प्रत्युद्भूतलम्' (जयो० वृ० ५/९०) ५. 'उत्'-अव, तो, लेकिन, बल्कि- (वीरो० ४/१७) 'निगेयं मया किं विधेयं करोतूत सा' (सुद० ९५) 'क्षणभङ्गस्तां न स्वप्नेऽप्युत' (सुद० ९९) ६. 'उत्' ऊपर, उठा हुआ। 'शान्तिर्भवातापत उत्थिताय' (भक्ति० २४)

उतथ्यः (वि०) तथ्यपूर्ण, रहस्य युक्त।

उताङ्गिन् (पुं०) प्राणी, सत्त्व, जीव। 'प्रभुर्भक्तिरुताङ्गिनां भवेत्फलदा' (सुद० ३/५)

उताश्नुवान् (वि०) उपवास करने वाला, 'नाऽऽमासमासमापक्षमुताश्नुवानः' (सुद० ११८)

उतास्थित (वि०) उचित रूप से रहना, अच्छी तरह स्थित होना। 'कर्तुमुतास्थितो रसात्' (समु० २/११)

उत्क (वि०) [उद्+स्वार्थे कन्] उत्कण्ठित, वाञ्छा युक्त, चाहने वाला, उत्साही, 'रोमाणि बालभावाद्धरश्रियं दृष्टुमुत्कानि' (जयो० ६/१२४) उत्कान्-उत्कण्ठितान् (जयो० वृ० ३/७४)

उत्कञ्चनं (नपुं०) काष्ठ-विशेषों का बंधन, ऊपरि बन्धन।

उत्कञ्चुक (वि०) कवच रहित।

उत्कट (वि०) [उद्+कटच्] १. उच्च, प्रचुर, महत्, बड़ा, प्रशस्त, उन्नत, शक्तिसम्पन्न, भयानक, भीषण। 'स्फटयोत्कटया समुच्छ्वसन्नपि (जयो० १३/४१) २. श्रेष्ठ, उत्तम। ३. विषम।

उत्कण्ठ (वि०) [उन्नतः कण्ठो यस्य] १. तत्पर, उद्यत, तैयार। २. उत्साहित, इच्छुक।

उत्कण्ठा (स्त्री०) [उद्+कण्ठ+अ+टाप] १. चिन्ता, आतुरता, बैचेनी। (दया० ६५) २. खिन्न, खेद, शोक, दुःख। (जयो० वृ० १२/१३०)

उत्कण्ठित (भू० क० कृ०) [उद्+कण्ठ+क्त] १. उत्साहित, इच्छुक, उत्साही। (जयो० वृ० १२/१३०)

उत्कन्धर (वि०) [उन्नतः कन्धरोऽस्य] उद्ग्रीव, गर्दन ऊपर किए हुए।

उत्कम्प (वि०) कम्पित, चलायमान, विचलित, हिलता हुआ।

उत्कर (वि०) [उद्+कृ+अप्] १. समुदाय, अवयव, समूह। 'नयन्तमन्त निखिलतोत्करं तं' (सुद० २/१७) २. कणिका-(वीरो० १/१५) 'करादुत्कर संविधा तु' ३. कुठारादि भेदन।

उत्कर्करः (पुं०) वाद्य विशेष।

उत्कर्तनं (नपुं०) [उद्+कृत्+ल्युट्] काटना, मूलोच्छेदन करना, जड़ से निकालना, कतरना, उखाड़ना।

उत्कर्षः (पुं०) [उद्+कृष्+घञ्] वृद्धि। (जयो० १/९५) (३/८३) उन्नति, उदय, अभ्युदय, विकास, समृद्धि, बहुलता। २. उत्कृष्टता, सर्वोपरिगुण, विशेष यश। परोत्कर्ष-सहिष्णुत्वं जह्यद्वाञ्छन्निजोन्नतिम्' (सुद० ४/४२)

उत्कर्षणं (नपुं०) [उद्+कृष्+ल्युट्] १. उन्नत, उदय, विकास। २. ऊपर खींचना, ऊपर लेना, बढ़ा देना। ३. कर्म को वृद्धि करने वाला कारण। 'सत्तागमे कर्मणि बुद्धिनावाऽपकर्षणोत्कर्षणसंक्रमा वा।' (सुद० ८/१५) 'उक्कड्डणं हवे वड्ढी' (गो०क०४३९)

उत्कर्षप्रदायक (वि०) उदय को प्राप्त होने वाला, उन्नति दायक। (जयो० वृ० ६/५६)

उत्कलः (पुं०) [उद्+कल्+अच्] १. उड़ीसा का अपर नाम। २. चिड़िमार, बहेलिया।

उत्कल (वि०) व्याकुल, संतप्त। 'उत्कला व्याकुला भवन्त इति' (जयो० वृ० २१/९)

उत्कलाप (वि०) क्रीड़ा करते हुए, पूंछ फैलाए हुए।

उत्कलित (भू० क० कृ०) [उद्+कल्+क्त] संक्षिप्त कल्पित। (वीरो० २२/१७) परिरक्षित, रखते हुए। (जयो० ४/७) 'श्रीचतुष्पथक उत्कलिकाय' (जयो० ४/७)

उत्कलिका (स्त्री०) १. लालसा, वाञ्छा, इच्छा, चाह, आतुरता, काम क्रीड़ा। २. कली, पुष्प-कलिका। ३. उत्कण्ठा, उत्साह। (जयो० १७/१२५)

उत्कलिकावती (वि०) समुत्कण्ठावती, उत्साहजन्या। 'सुरत-तरङ्गिणि उत्कलिकावती' (जयो० १७/१२६)

उत्कल्प् (सक०) निर्माण करना, बनाना। (जयो० ९/२९) उत्कल्पयितुम्।

उत्केषणं (नपुं०) [उद्+कष्+ल्युट्] जोतना, खींचना, हल से बखरना, फाड़ना, चढ़ाना। (जयो० १०/२८)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उत्का (स्त्री०) अभिलाष वती, उत्कण्ठ शीला स्त्री। 'तपोधनं भानुमिवानुमातुमुत्का' (जयो० १/७८) 'उद्गतंसुखं प्रसन्नभावो यस्याः सेति' (जयो० वृ० १/७८)

उत्कारः (पुं०) [उद्+कृ+घञ्] १. फटकना, साफ करना। २. उत्कीर्ण करना, बीज बौना।

उत्कालित (भू० क० कृ०) अनियत काल, काल/समय का नहीं होना।

उत्कासः (पुं०) [उत्क+आस्+अण्] खखारना, गला साफ करना।

उत्किर (वि०) [उद्+कृ+श] ऊपर बिखेरता हुआ, फैलाता हुआ, उड़ाता हुआ।

उत्कीर्णय् (सक०) बनाना, निर्माण करना, रचना, घटित करना। 'उत्कीर्णानि चित्राणि' (जयो० वृ० ५/१६)

उत्कीर्तनं (नपुं०) [उद्+कृ+ल्युट्] ०गुणगान, ०प्रशंसा, ०यशोगान, ०संकीर्तन, ०उत्तम रीति से प्रशंसा करना।

उत्कीर्तना (स्त्री०) उच्चारण, ग्रन्थपाठ।

उत्कुटं (नपुं०) [उन्नतः कुटी यत्र] शान्त पूर्ण शयन, ऊपर की ओर मुंह करके लेटना।

उत्कुटिकासनं (नपुं०) उत्कडु आसन।

उत्कुणः (पुं०) [उत्+कुण्+क] मत्कुण, खटमल।

उत्कुल (वि०) [उत्क्रान्त कुलात्] कुल अपयश करने वाला, अपमानित करने वाला।

उत्कूजः (पुं०) कूक, कुहु कुहु शब्द, कोयल का शब्द।

उत्कूटः (पुं०) [उन्नतं कूटस्य] छतरी, छाता, छत्र।

उत्कूर्दनं (नपुं०) [उद्+कूर्द+ल्युट्] कूदना, उछलना, ऊपर छलांग लगाना।

उत्कूल (वि०) [उत्क्रान्तः कूलात्] नदी तट पर, किनारे पर।

उत्कूलित (वि०) नदी तट पर लगने वाले।

उत्कृष्ट (भू० क० कृ०) [उद्+कृष्+क्त] १. उन्नत, श्रेष्ठ, उत्तम, ०प्रधान, ०प्रमुख, ०अग्रणी, ०तीव्र, ०आकर्षण, सराहनीय, प्रशंसनीय। २. उखाड़ा गया, चलाया गया।

उत्कृष्ट-अन्तरात्मन् (पुं०) शुक्लध्यान युक्त आत्मा, प्रमादरहित आत्मा।

उत्कृष्टज्ञानं (नपुं०) उत्तम ज्ञान, मुक्ति का साधन भूत ज्ञान।

उत्कृष्ट-तपः (पुं०) उत्तम तप, श्रेष्ठ तप।

उत्कृष्ट-तापस् (वि०) घोर तपस्वी।

उत्कृष्ट-दाहः (पुं०) संक्लेश परिणाम, अति तीव्र वेदना, कर्मजनित तीव्र दाह।

उत्कृष्ट-निक्षेपः (पुं०) कर्मस्थिति का उत्तम न्यास।

उत्कृष्टपदः (पुं०) आश्रयभूत पद।

उत्कृष्टमतिः (स्त्री०) उत्तमबुद्धि, श्रेष्ठ धी।

उत्कृष्ट-मंगलं (नपुं०) उत्तम मंगल।

उत्कृष्टं श्रावकः (पुं०) उत्तमश्रावक। ग्यारहवीं प्रतिमा धारक श्रावक।

उत्कोचः (पुं०) [उत्कुच्+घञ्] गुप्त ग्रहण, रहस्य रूप में ग्रहण, छिपाकर लेना, रिश्वत, घूंस।

उत्कोचकः (पुं०) [उत्कोच्+कन्] रिश्वत, घूंस।

उत्कोचभागः (पुं०) गुप्त हिस्सा, गुप्त अंश, रिश्वत। (जयो० वृ० ३/१५)

उत्क्रमः (पुं०) [उद्+क्रम्+घञ्] १. बाहर आना, ऊपर जाना, प्रस्थान, उन्नति, विकास। २. उल्लंघन, विचलन।

उत्क्रमणं (नपुं०) [उद्+क्रम्+ल्युट्] प्रस्थान, जाना, गमन, ऊपर गमन।

उत्क्रान्तता (वि०) अतिक्रमणता। (सम्य० १६)

उत्क्रान्तवती (वि०) लंघितवती, भर्त्सितवती, जाती हुई, उल्लंघन करती हुई। (जयो० ३/४२)

उत्क्रान्तिः (स्त्री०) [उद्+क्रम्+क्तिन्] १. कूच करना, निकलना, जाना, आगे बढ़ना। २. उल्लंघन, अतिक्रमण।

उत्क्रोशः (पुं०) [उद्+क्रुश्+अच्] १. तीव्र क्रोध, अधिक क्रोध। २. उद्घोष, कुररी, विशेष गर्जना।

उत्क्लेदः (पुं०) [उद्+क्लिद्+घञ्] तर होना, भींग जाना, आर्द्र होना।

उत्क्लेशः (पुं०) [उद्+क्लिश्+घञ्] १. उत्तेजना, अशान्ति, व्याकुलता। २. व्याधि, दुःख, रोग, सामुद्रिकव्याधि।

उच्छिद्यण (वि०) मूलोच्छेदन। (सम्य० ९३)

उत्क्षिप्त (भू०क०कृ०) [उद्+क्षिप्+क्त] १. फेंका गया, उठाया हुआ, उछाला गया। २. अभिग्रह दोष। ३. ग्रस्त, अभिभूत, तिरस्कृत, ध्वस्त।

उत्क्षिप्तिका (स्त्री०) [उत्क्षिप्त+कन्+टाप्] कर्णाभूषण।

उत्क्षेपः (पुं०) [उद्+क्षिप्+घञ्] १. उछालना, फेंकने वाला, उठाने वाला, ऊपर करने वाला।

उत्क्षेपणं (नपुं०) [उद्+क्षिप्+ल्युट्] उछालना, उठाना, भेजना। (सम्य० ३२)

उत्खचित (वि०) [उद्+खच्+क्त] गूंथा हुआ, ग्रथित, गुंफित, रचित, बनाया गया, खचित, जड़ा हुआ।

उत्खला (स्त्री०) [उद्+खल्+अच्+टाप्] सुगन्ध विशेष।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उत्खात (भू० क० कृ०) [उद्+खन्+क्त] १. उखाड़ा गया, खोदा हुआ, निकाला गया। 'उत्खातार्धिप्रवद्धि निष्फलमितः' (सुद० १०३)। २. उन्मूलित, उद्धत। ३. पदच्युत, वंचित किया।

उत्खातिन् (वि०) [उत्खात+इनि] विषम, उखड़ी हुई, ऊँची-नीची, ऊबड़-खाबड़।

उच्चल् (सक०) ऊपर जाना, चलना, गतिवान् होना।

उच्चाल (वि०) चलायमान, उछाली गई।

उच्चालित (भू० क० कृ०) उछाली गई। 'सूर्यायोच्चालितं रजः' (सुद० १२५)

उज्जह् (सक०) छोड़ना, त्यागना। निंदापूर्वकमुज्जहामि सुपथे वर्वर्तिपुः साम्प्रतम्' (मुनि० १९)

उज्झ् (सक०) उगलना, वमन करना।

उज्झित्य (सं०कृ०) उगलकर, वमनकर। (जयो० वृ० ६/७९) *विसर्जित करके, त्याग करके, छोड़कर (सम्य० १०)

उत्त (वि०) [उन्द्+क्त] आर्द्र, गीला।

उत्तंसः (पुं०) [उद्+तंस+अच्] १. आभूषण, २. सिरमोर, मुकुट। ३. कर्णाभूषण।

उत्तंसित (वि०) [उत्तंस+इतच्] कानों में पहनने वाला आभूषण, कर्णकुण्डल।

उत्तट (वि०) [उत्क्रान्तः तटम्] किनारे समागत।

उत्तपुरुषः (पुं०) सज्जन, सत्पुरुष। (जयो० ५/३४)

उत्तप्त (वि०) तपा हुआ, गरम किया गया, संतप्त, उष्णता युक्त।

उत्तम (वि०) [उद्+तमप्] १. सर्वश्रेष्ठ, उत्कृष्ट समीचीन, सम्यक्। २. प्रमुख, उच्चतम, सर्वोच्च, उच्च। 'अथोत्तमो वैश्यकुलावतंसः' (सुद२/१) 'पर्यन्त-सम्पत्तगुणोत्तमेन' (सुद० १/१८) ३. प्रशंसनीय, (जयो० १/८७)

उत्तमगृहं (नपुं०) श्रेष्ठगृहं, अच्छा घर।

उत्तमचारित्रं (नपुं०) सम्यक् चारित्र, सत् चारित्र, सदाचरण।

उत्तमजलं (नपुं०) पवित्र नीर, स्वच्छजल।

उत्तमत्तम (वि०) सर्वोत्तम, अच्छे से अच्छा। 'भाग उत्तमत्तमो भुवि' (जयो० ५/१६)

उत्तमत्व (वि०) प्रधानत्व। (वीरो० २/९) ०सर्वोत्तम।

उत्तमध्वजः (पुं०) लहराती ध्वजा, देदीप्य ध्वज।

उत्तम-नरः (पुं०) सज्जन, श्रेष्ठ मनुष्य।

उत्तमपदं (नपुं०) श्रेष्ठ स्थान, योग्य स्थान, उचितपद, यथोचित सम्मान।

उत्तम पद-सम्प्राप्तिमितीदं (सुद० ७०)

उत्तम-पादपः (पुं०) उन्नतवृक्ष, हरा भरा वृक्ष, पत्र, पुष्प-फलादियुक्त पेड़।

उत्तमपुष्पदात्री (वि०) १. श्रेष्ठ पुष्प देने वाली। (समु० ३/१२)

उत्तम-पुरुषः (पुं०) १. सज्जन, श्रेष्ठ पुरुष। २. परमपुरुष। ३. वचन विशेष, क्रियात्मक प्रयोग में निजात्मकभाव युक्त प्रयोग-मैं, हम, हम सब। (जयो० वृ० १२/१४५)

उत्तमभावः (पुं०) विशुद्धभाव, स्वभावगत परिणाम। पिण्डस्थितस्यास्तु मम प्रसिद्धिर्नानापादेपूत्तम-भाववृद्धिः। (भक्ति० २८)

उत्तममनुजः (पुं०) सज्जन, श्रेष्ठ पुरुष।

उत्तम-यत्नं (नपुं०) यथेष्ठ प्रयत्न, ०समुचित प्रयास।

उत्तम-रत्नं (नपुं०) अच्छा रत्न, मंगलकारी रत्न।

उत्तमराशिः (स्त्री०) योग्यराशि, श्रेष्ठ राशि।

उत्तमवाणी (स्त्री०) सुवाच, अच्छे वचन। (भक्ति० १२) मनोज्ञ वचन, प्रिय बोल।

उत्तमश्लोक (वि०) प्रसिद्धि प्राप्त, ख्यात।

उत्तम-संग्रहः (पुं०) समुचित संकलन।

उत्तमसद-भावना (स्त्री०) उचित भावना।

उत्तम-साधुः (पुं०) महाव्रती साधु, मूल एवं उत्तरगुणधारी मुनि।

उत्तम-साहसः (पुं०) दृढ़ इच्छाशक्ति, प्रबल भावना।

उत्तम-सौख्य (वि०) उत्कृष्ट सुख युक्त। (वीरो० २०/१)

उत्तमा (वि०) तिमिरपूर्णा, अन्धकारजन्य। (जयो० २०/१२)

उत्तमाचरणशालिन् (वि०) उत्तम/श्रेष्ठ/सम्यक् आचरण युक्त। (जयो० वृ० ५/३२)

उत्तमाङ्ग (वि०) अंगों में उत्तम शिर, मस्तक। 'उत्तमाङ्गतिमि सुदेवपदयो' (सुद० ६/७०) 'उत्तमाङ्ग सुवंशस्य' (सुद० ४/३)

उत्तमांश (वि०) उत्तम अंश। (जयो० ६/४६)

उत्तमार्थक (वि०) श्रेष्ठार्थक, उचित अर्थ वाला। (जयो० २/२५) उत्तमोऽर्थो यस्य स तं श्रेष्ठार्थकं (जयो० वृ० २/२५)

उत्तमीय (वि०) उत्तमतम, सर्वोच्च, श्रेष्ठतम्।

उत्तम्भः (पुं०) [उद्+स्तम्भ्+घञ्] सहारा, आधार, आश्रय, टेक।

उत्तर (वि०) [उद्+तरप्] १. समाधान विधि, पक्ष प्रस्तुतीकरण, निधि। (जयो० वृ० १/३९) २. उच्चतर, उच्च, ऊँचा। ३. अनुवर्ती, पश्चात्वर्ती। (सम्य० १३६) ४. दिशा विशेष, चार दिशाओं में तृतीय उत्तर-दिशा।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उत्तरङ्ग (वि०) १. उछलती तरंगे, २. क्षुब्ध, व्याकुल, दुःखी। ३. जलप्लावित तरंग।

उत्तरच्छदः (पुं०) दुपट्टा, उत्तरीय। उत्तरीयेण वस्त्रेण (जयो० वृ० २४/६२)

उत्तरकरणं (नपुं०) आलोचना करना, साधु की क्रिया में दोष लगने पर किया जाने वाला प्रतिक्रमणात्मक भाव।

उत्तरकुरुः (पुं०) क्षेत्रनाम।

उत्तरगुणं (नपुं०) पिण्डशुद्धि/आहारशुद्धि का गुण।

उत्तर-गुण-निर्वर्तना (स्त्री०) काष्ट, पुस्तक, या चित्रकर्म आदि का चित्रण।

उत्तरत्र (वि०) उत्तरकाल में। (सम्य० ११०)

उत्तरप्रकृतिः (स्त्री०) पृथक्-पृथक् भेद रूप प्रकृति।

उत्तरल (वि०) सुचपल, अधिक चपल, चञ्चलता युक्त। 'तत्राऽनमस्तु झरदुत्तरलाक्षिमत्त्वात्' (जयो० २६/६९)

उत्तर-लक्षणं (नपुं०) वास्तविक लक्षण विशेष लक्षण।

उत्तर-लोकहितङ्कर (वि०) धर्मपथगामी। (जयो० ५/४७)

उत्तर-वस्त्रं (नपुं०) दुपट्टा, उत्तरीय।

उत्तरवादः (पुं०) प्रतिपक्ष कथन।

उत्तरवादिन् (वि०) प्रतिवादी, पक्ष का खण्डन करने वाला।

उत्तर-वीर्य-संज्ञित (वि०) अनन्तवीर्यशाली, शक्तिशाली। 'संजातोऽनन्तात्पदादुत्तरं यद्वीर्यपदं तेन संज्ञितोऽनन्तवीर्यमा।' (जयो० वृ० २६/२)

उत्तरश्रेणिगत (वि०) उत्तरश्रेणी को प्राप्त। (वीरो० ११/२५)

उत्तर-सुखात्मिका (वि०) परलौकिक कल्याणकर्त्री आत्रिक स्थिति महीरमारतो मुक्ति-रुत्तर-सुखात्मिका धृतिः। (जयो० २/१०) 'उत्तरसुखमात्मा यस्या सा' (जयो० वृ० २/१०)

उत्तरसत्त्व (वि०) उत्तराधिकार। 'भुक्तवान् स्वजनकोत्तरसत्त्वम्' (समु० ५/२६)

उत्तराधिकारी (वि०) मालिक स्वामी, नायक, अधिकारी। (दयो० ७, जयो० २१/८०)

उत्तरायणं (नपुं०) उत्तर की ओर। (जयो० ४२)

उत्तरायणः (पुं०) सूर्य। (वीरो० २१/३) उत्तर की ओर सूर्य होना।

उत्तरायी (वि०) पश्चात्वर्ती। (वीरो० २२/६)

उत्तमार्थक (वि०) श्रेष्ठार्थक, उचित अर्थ वाला। (जयो० २/२५) उत्तमोऽर्थो यस्य स तं श्रेष्टार्थकं (जयो० वृ० २/२५)

उत्तराषाढः (पुं०) नक्षत्र विशेष।

उत्तराहि (अव्य०) [उत्तर+आहि] उत्तर दिशा की ओर।

उत्तरीतुम् (हेत्वर्थ कृ०) उल्लंघितुम्, उल्लंघन करने के लिए। (जयो० ३/९०)

उत्तरीयं (नपुं०) दुपट्टा, चादर (सुद० ३/३८) ऊपर डाला जाने वाला वस्त्र।

उत्तरेण (अव्य०) [उत्तर+एनप्] उत्तर की ओर, उत्तर दिशा की ओर।

उत्तरेद्युः (अव्य०) आगामी दिन, कल, अगला दिन।

उत्तरार्जनं (नपुं०) उलाहना, झिड़कना।

उत्तरोत्तर (वि०) अधिकाधिक, यथोत्तर। (जयो० वृ० २१/८२)

उत्तरोत्तरगुणधिप (वि०) अधिकाधिक गुण सम्पन्न। 'उत्तरोत्तर मग्रेऽग्रे गुणाधिकस्य सहिष्णुतादीनामाधिक्यस्य।' (जयो० वृ० ५/३०)

उत्तल (वि०) १. प्रत्युद, भूततल, आनन्दयुक्त। २. तलसहित। रसातलं तूत्तलसातकम्। (जयो० ५/९०)

उत्तस्थ (वि०) विस्तार युक्त। (सुद० ३/४४)

उत्तान (वि०) [उद् गतस्तानो विस्तारो यस्मात्] १. फैलाया गया, विस्तारजन्य, प्रसृत किया गया। २. स्पष्ट, निष्कपट, खरा। 'तटी स्मरोत्तानगिरेरियं वा' (सुद० २/५)

उत्तानता (वि०) उन्नति युक्त। (वीरो० ४/१०)

उत्तानपादः (पुं०) एक नृप, ध्रुव का पिता।

उत्तानशय (वि०) उर्ध्वमुख युक्त शयन, छोटे बच्चे सहित। (जयो० २०/४)

उत्तापः (पुं०) [उद्+तप्+घञ्] १. संताप, पीड़ा, कष्ट, अत्यधिक गर्म, उष्णता जन्य। २. उत्तेजना, विशेष आवेश, शक्ति स्फूरणा।

उत्तापक (वि०) ०तपन, ०गर्मी देने वाला ०संतापकर संताप देने वाला। 'रविः कुतो नावपतेदिदानीमुत्तापकोऽसौ जगतोऽभिरामो' (जयो० १५/१५)

उत्तारः (पुं०) [उद्+तृ+घञ्] १. वाहन, यान, परिवहन। २. उतारना, किनारे करना। ३. छुटकारा दिलाना, मुक्त करना। ४. वमन करना।

उत्तारक (वि०) [उद्+तृ+णिच्+ण्वुल्] उद्धारक, पारक, तारक, बचाने वाला।

उत्तारणं (नपुं०) [उद्+तृ+णिच्+ल्युट्] उतारना, पार करना, बचाना।

उत्तारित (वि०) उतारा गया, उपरिष्ठादधः। (जयो० १२/१०८)

उत्ताल (वि०) दृढ़, शक्तिशाली, ठोस, प्रबल, बलिष्ट, भीषण, तेज, गतिमान, उन्नत।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उत्तुङ्ग (वि०) उन्नत, उच्च, ऊँचा, उभरे हुए, उठे हुए, निकले हुए। (जयो० १३/९६) 'बलात्क्षतोत्तुङ्ग-नितम्बबिम्बः' (जयो० ३/९६)

उत्तुङ्गनितम्बं (नपुं०) उभरे हुए नितम्ब। (जयो० १३/९६)

उत्तुषः (पु०) [उद्गता तुषोऽस्मात्] भूषी से पृथक् किया गया, निकाला गया।

उत्तेजक (वि०) [उद्+तिज्+णिच्+ण्वुल्] उद्दीपक, तेज सहित, भड़काने वाला।

उत्तेजनं (नपुं०) [उद्+तिज्+णिच्] १. तैक्ष्ण्यकर, तीव्रता, युक्त, अधिक, व्याकुल, उकसाना, भड़काना। २. भेजना, प्रेषित करना, तेज करना। ३. चमकना, प्रकाशमान होना। 'प्रशस्तामुत्तेजनां तैक्ष्ण्यकरणवृत्तिं' (जयो० १५/५२)

उत्तेजना (स्त्री०) तैक्ष्ण्यकरणवृत्ति, तीव्रता, अधिक निपुणता। 'धियोऽसिपुत्र्या दुरितच्छिदर्थमुत्तेजनायातितगं समर्थः। (समु० १/१)

उत्तोरणं (नपुं०) उन्नत तोरण, विभूषण, सज्ज क्रिया युक्त।

उत्तोलनं (नपुं०) [उद्+तुल्+णिच्+ल्युट्] तोलना, ऊपर उठाना, उभारना।

उत्तोष (वि०) संतर्पणशाली (जयो० ८/६१)

उत्त्यागः (पुं०) [उद्+त्यज्+घञ्] १. छोड़ना, फेंकना, हटाना। २. तिलांजली देना।

उत्त्रासः (पुं०) [उद्+त्रस्+घञ्] आतंक, भय, पीड़ा।

उत्थ (वि०) [उद्+स्था+क] जनित, १. घटित, उद्भूत, उत्पन्न हुआ। (सम्य० ९४) २. ऊपर उठा हुआ। 'न ज्ञातमज्ञातरणोत्थशर्म' (जयो० ८/१३)

उत्थशर्मन् (नपुं०) जनित सुख, प्रसन्नता जनक सुख। (जयो० ८/१३)

उत्थानं (नपुं०) [उद्+स्था+ल्युट्] प्रयत्न, (जयो० १/७९) जागृति, उठना, सचेत होना। (जयो० वृ० ५/७०) जागृतिमुत्थानं सावधानता वा। (जयो० १९/१

उत्थापनं (नपुं०) [उद्+स्था+णिच्+ल्युट्] जागृत करना, उठाना, सचेत करना, सावधान करना।

उत्थापय् (सक०) ऊँचा चढ़ाना, ऊपर उठाना। (दयो० ६०)

उत्थाय (सं०कृ०) उठकर, 'आसानादुद्भूय' (जयो० १/७९)

उत्थित (भू० क० कृ०) [उद्+स्था+क्त] खड़ी हुई, (जयो० १/५) उदित, जात, विस्तृत, विस्तारजन्य। 'स्यादुत्थिताऽतिविकटैव समस्या' (जयो० ४/३१) 'वामस्कन्धोत्थतेजसा' (समु० २/३२) विधृताङ्गनि उत्थितः' (सुद० ३/२४)

उत्थित (वि०) [उद्+स्था+क्त] उदित, निस्सृत, निकला हुआ, उत्पन्न, उद्गत।

उत्थितिः (स्त्री०) [उद्+स्था+क्तिन्] उन्नति, प्रगति, जागृति, उद्गति।

उत्थितोत्थित (वि०) उत्थान का प्रकर्ष, धर्म एवं शुक्लध्यान कायोत्सर्ग जन्य का उत्कर्ष।

उत्पक्ष्मन् (वि०) उलटी पलकों वाला।

उत्पत् (अक०) [उद्+पत्] उत्पन्न होना, निकलना, पैदा होना। 'को नु नागमणिमाप्तुमुत्पतेत्' (जयो० २/१६) 'कः पुरुषः उत्पतेत् उद्यतो भवेत्' (जयो० वृ० २/१६)

उत्पतः (पुं०) [उद्+पत्+अच्] पक्षी, खग।

उत्पतनं (नपुं०) उड़ना, ऊपर जाना। (दयो० ८) उछालना।

उत्पथः (पुं०) अपथ, उन्मार्ग, उल्लंघन, कुमार्ग। (भक्ति० ११) (जयो० २०/३४)

उत्पथगामी (वि०) अपथगामी, उन्मार्गगामी। (जयो० २/१३२)

उत्पत्तिः (स्त्री०) [उद्+पद्+क्तिन्] १. जन्म, निःसरण, पैदा होना। २. अपूर्वाकारसम्प्राप्ति, वस्तु स्वरूप का लाभ। 'आत्मलाभलक्षणा उत्पत्तिः' (सिद्धि०वि०टी०पृ० २५०) सम्प्राप्ति, प्रादुर्भाव 'कलशोत्पति तादात्म्य' (जयो० १/१०३)

उत्पन्न (भू० क० कृ०) [उद्+पद्+क्त] जात, निःसृत, सम्प्राप्त, प्रादुर्भूत, संजात, उदित, उठा हुआ। 'महामन्त्रप्रभावेणोत्पन्नोऽसि' (सुद० २१/२७)

उत्पल (वि०) [उद्+पल्+अच्] 'उत्क्रान्तः पलं मांसम्' क्षीणकाय, दुर्बल, शक्तिहीन, मांसहीन।

उत्पलं (नपुं०) कुमुद, नीलकमल, कुवलय। (जयो० १६/

उत्पलकद्वयी (वि०) कुवलय युग्म, कुवलय युगल, उभय कुमुद। 'व्रजतः स्मोत्पलद्वयीं सतीम्' (जयो० १०/३८)

उत्पलमृलाणं (नपुं०) कमल नाल, कमल दण्ड। उत्पलस्य कमलस्य मृणालवत् पेशलो मृदुर्भवति। (जयो० ७/७५)

उत्पलिन् (वि०) [उत्पल+इनि] कुमुदों से परिपूर्ण।

उत्पवनं (नपुं०) [उद्+पू+ल्युट्] प्रमार्जन, स्वच्छीकरण।

उत्पाटः (नपुं०) [उद्+पट्+णिच्+घञ्] उन्मूलन, मूलोच्छेदन, जड़ से उखाड़ना।

उत्पाटनं (नपुं०) मूलोच्छेदन, उन्मूलन, उखाड़ना।

उत्पाटिन् देखें उत्पाटी।

उत्पाटी (वि०) [उद्+पट्+णिच्+णिनि] मूलोच्छेदक, उन्मूलक। (दयो० २/१३)

उत्पातः (पुं०) [उद्+पत्+घञ्] उछाल, उड़ान, ऊपर जाना, कूदना।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उत्पादः (पुं०) १. प्रादुर्भाव, जन्म, उत्पत्ति, संजात, उदित।

उत्पाद् (सक०) ०उत्पन्न करना, ०बनाना। ०बचाना। (जयो० वृ० ३/६८)

उत्पाद (वि०) उठे हुए, ऊपर पैरों वाला।

उत्पादः (पुं०) उत्पत्ति वर्णन, दार्शनिक दृष्टि से वस्तु की भवान्तर प्राप्ति। वस्तु का आविर्भाव होना। 'आविब्भावो उप्पादो' (धव० १५/पृ० १९) 'अभूत्वा भाव उत्पादः' (म०पु०२४/११०) 'स्वजात्यपरित्यागेन भवान्तरावाप्तिरुत्पादः' (त०श्लो ५/३०) अवस्थान्तर प्राप्त होना।

उत्पादक (वि०) [उद्+पद्+णिच्+ण्वुल्] उपजाऊ, पैदा करने वाला, जनक।

उत्पादनं (नपुं०) [उद्+पद्+णिच्+ल्युट्] जन्म देना, प्रादुर्भाव करना।

उत्पाद-पूर्वं (नपुं०) प्रथम पूर्व ग्रन्थ का नाम, जिसमें जीव, पुद्गलादि की उत्पत्ति का वर्णन होता है। वस्तुओं के उत्पाद, व्यय एवं ध्रौव्य स्वभाव का प्रामाणिक वर्णन।

उत्पादानुच्छेदः (पुं०) उत्पत्ति-विनाश। 'उत्पादः सत्त्वम्, अनुच्छेदो विनाशः अभावः नीरूपिता इति यावत्।' उत्पाद् एव अनुच्छेदः उत्पादानुच्छेदः।' (धव० ८/पृ० ५)

उत्पादिका (स्त्री०) [उद्+पद+णिच्+ण्वुल्+टाप्] १. उत्पन्न करने वाली माता। २. एक कृमि विशेष, कीड़ा।

उत्पादित (वि०) प्रसृत, उत्पन्न हुआ, जनित, समुच्चारित। (जयो० १७/२१) (जयो० वृ० ३/८६)

उत्पाली (स्त्री०) [उद्+पल्+घञ्+ङीप्] निरोग।

उत्पीडः (पुं०) [उद्+पीड्+घञ्] उत्पीड़न, पीड़न, दबाव।

उत्पीडनं (नपुं०) [उद्+पीड्+णिच्+ल्युट्] आघात, दबाव।

उत्पुच्छ (वि०) ऊपर उठी हुई पूंछ वाला।

उत्पुलक (वि०) हर्षित, रोमांचित, प्रसन्न।

उत्प्रभ (वि०) प्रभावान्, कान्तियुक्त।

उत्प्रभः (पुं०) अग्नि, आग।

उत्प्रभावः (पुं०) अप्रभावशील।

उत्प्रसवः (पुं०) [उद्+प्र+सू+अच्] गर्भपात, गर्भ गिरना।

उत्प्रासनं (नपुं०) [उद्+प्र+अस्+ल्युट्] फेंकना, पटकना, गिराना, उपहास करना।

उत्प्रेक्षणं (नपुं०) [उद्+प्र+ईक्ष्+ल्युट्] १. नेत्र विक्षेपण, दृष्टिपात। २. अनुमान करना।

उत्प्रेक्ष् (अक०) [उद्+प्र+ईक्ष्] उत्प्रेक्षा करना। (जयो० वृ० १/८)

उत्प्रेक्षा (स्त्री०) [उद्+प्र+ईक्ष्+अ] एक अलंकार विशेष, जिसमें उपमान एवं उपमेय को समान रखने का प्रयत्न किया जाता है। प्रस्तुत अर्थ के औचित्य में किसी अन्य अर्थ की कल्पना की जाती है। 'इव' अव्यय का प्रयोग इसकी पहचान है। शीतरश्मिरिह तां रुचिमाप यां पुरा नहि कदाचिदपावण्णतरतां च भुवि स्राक्। (जयो० ४/६० ३/७४, २६/४७, २६/२९, २६/१७, ३/८, ५/९, १४/९४, १८/२७, वीरो० १२/२८) जयोदय के आत्मभाध्याय में इस अलंकार का अधिक प्रयोग हुआ। (८/३०, ३७, ४०)

उत्प्रेक्षित (भू० क० कृ०) कथित, प्रतिपादित, निरूपित। (जयो० वृ० १/११)

उत्प्रेक्ष्यते- कथन किया जाता है। (जयो० १/११)

उत्प्लवः (पुं०) [उद्+प्लु+अप्] ऊँची कूद, उछलना, कूदना, ऊपर से कूदना।

उत्प्लावनं (नपुं०) [उद्+प्लु+ल्युट्] १. अतितरामुल्लास, अधिक हर्ष, (जयो० वृ० १३/९७) २. कूदना, उछलना।

उत्फलं (नपुं०) ०श्रेष्ठफल, ०उचित भाव, ०सम्यक् परिणाम उत्तम भाव।

उत्फालः (पुं०) [उद्+फल+घञ्] छलांग, कूद, द्रुतगति, अति तीव्रता से गिरना।

उत्फुल्ल (भू० क० कृ०) [उद्+फुल्+क्त] ०प्रफुल्लित, ०खुला हुआ, ०प्रसारित। (जयो० १४/४४) ०विस्फारित, ०फैला हुआ।

उत्फुल्लित (वि०) विकसित। (जयो० १४/८८) पुष्पित, हर्ष युक्त।

उत्सः (पुं०) [उन्द्+स-उनत्ति जलेन] झरना, फुव्वारा, जल प्रवाह, जल के गिरने का स्थान। 'यत्रागत्य जलं तिष्ठति तत्स्थानमुत्सः' (जयो० २६/१)

उत्सङ्गः (पुं०) [उद्+सञ्ज्+घञ्] १. गोद/अंकगत, आलिंगन गत। (जयो० वृ० ६/४५) वीरो० ८/८। २. संयोग, सम्पर्क। ३. शिखर, कूट, उच्चभाग। ४. भीतर, आभ्यन्तर, अंदर।

उत्सङ्ग-गत (वि०) अङ्क को प्राप्त, गोद लिया गया। 'शिशुनोत्सङ्गगतेन सा विशाम्' (सुद० ३/३)

उत्सङ्गज (वि०) अङ्क को प्राप्त हुई 'उत्सङ्गजं सूचयतीन्दुदेवं' (जयो० १५/४६) 'उत्सङ्गमङ्कागोपितं सूचयति' (जयो० वृ० १५/४६)

उत्सङ्गवर्ती (वि०) अङ्कशायी, गोद में लेटी हुई। (जयो० वृ० १२/७८)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उत्सङ्गित (वि०) [उत्सङ्ग+इतच्] सम्पर्कित, आलिंगित, अंकगत।

उत्सञ्जनं (नपुं०) [उद्+सञ्ज+ल्युट्] ऊपर फेंकना, ऊपर उठाना, ऊर्ध्व निक्षेपण।

उत्सन्न (भू० क० कृ०) [उद्+सद्+क्त] क्षीण, नष्ट, उन्मूलित, विच्छिन्न, सड़ा हुआ।

उत्सर्गः (पुं०) [उद्+सृज्+घञ्] १. स्थगित करना, छोड़ना, ०परित्यन, ०विमुञ्चन। २. प्रदान, ०दान, ०उपहार, ०भेंट, ०प्राभृत। ३. व्यय करना, आहुति, पूर्ति।

उत्सर्गसमिति (स्त्री०) उच्चारप्रस्रवणसमिति।

उत्सर्ग-स्वभावाधिपः (पुं०) अपने नगर का अधिप/राजा। 'उत्सर्ग-स्वभावस्याधिपोऽधिकारी' (जयो० वृ० ३/११६) काशीपुरी के स्वामी श्रीधर।

उत्सर्जनं (नपुं०) [उद्+सृज्+ल्युट्] १. विसर्जन, विमुंचन, परित्यन, त्याग,। २. फूलना, हांफना।

उत्सर्पिन् (वि०) [उद्+सृप्+णिनि] ०उठने वाला, ०खिसकने वाला, सरकने वाला, उड़ने वाला।

उत्सर्पिणी (स्त्री०) उत्तरोत्तर वृद्धि, जीवों की आयु, शरीर ऊँचाई आदि की उत्तरोत्तर वृद्धि। 'अनुभवादिभिरुत्सर्पणशीला उत्सर्पिणी। (स० सि० ३/२७)

उत्सर्पिणीकालः (पुं०) उत्तरोत्तर वृद्धि रूप समय।

उत्सवः (पुं०) [उद्+सू+अप्] १. हर्षावसर, आनन्द। पटत्सु बाला पितुरुत्सवेषु' (जयो० १/६५) २. आमोद, प्रमोद। ३. पर्व, अवसर, जयन्ती। ४. उच्च, उन्नत। 'जम्भृपदं बुद्धिमदुत्सवाय' (सुद० १/११)

उत्सवकारणं (नपुं०) आनन्द का कारण।

उत्सवक्षणं (नपुं०) हर्षावसर।

उत्सवजात (वि०) विभोर युक्त, हर्षयुक्त।

उत्सव-भावः (पुं०) आनन्द भाव, सुखद परिणाम।

उत्सव युत (वि०) आनन्दयुक्त, हर्षजन्य।

उत्सवहेतुः (पुं०) उत्सव का कारण। 'उत्सवस्य हेतवे कारणाय तु समुद्यतास्ति।' (जयो० वृ० १५/५०)

उत्सहः (पुं०) उत्सह नाम विशेष, महेन्द्र नामक कञ्चुकी। सन्निनाय स निजं मतिकेन्द्रमुत्सहे च महनीयमहेन्द्रम्' (जयो० ८/३५)

उत्सादः (पुं०) [उद्+सद्+णिच्+घञ्] विनाश, क्षय, क्षीण, नष्ट, हानि।

उत्सादनं (नपुं०) [उद्+सद्+णिच्+ल्युट्] १. विनाश, हानि, क्षय। २. उलटना, बाधा डालना, उठाना।

उत्सारकः (पुं०) [उद्+सृ+णिच्+ण्वुल्] १. आरक्षी, सैनिक, पहरेदार। २. कुली, भारवाहक। ३. ड्योढीवान।

उत्साहरणं (नपुं०) [उद्+सृ+णिच्+ल्युट्] १. हटाना, दूर रखना। २. स्वागत करना।

उत्साहः (पुं०) [उद्+सह+घञ्] १. साहस, प्रयास, प्रयत्न। (सम्य० ९५) २. शक्ति, ०बल, ०उमंग ०सोत्कण्ठ (वीरो० ५/१६) ३. इच्छा, ०कामना, ०शुभभावना। ४. धैर्य, ०तेज, ०ओजस्विता, ०वेग। 'सदुत्साहपूर्वकमगा-द्वचोऽमृदुः।' (जयो० ७/६६) 'वेगेन उत्साहेति' (जयो० वृ० ६/२२)

उत्साह-कृत् (वि०) उत्साह करने वाला।

उत्साहजन्य (वि०) साहसपूर्ण, बलशाली।

उत्साहपूर्वकं (नपुं०) साहसपूर्वक, उमंग युत। (जयो० २/६६)

उत्साह-भावः (पुं०) उमंग भाव।

उत्साहमय (वि०) कामना युक्त, इच्छा सहित। 'नवग्रहोत्साहम-योजयोऽपि' (जयो० १७/५५) 'संचार- प्रचार-परिज्ञायक इत्यर्थः' (जयो० वृ० १७/५५)

उत्साह-बर्धन् (वि०) आनंद बढ़ाने वाला।

उत्साहस (वि०) उत्साह दिलाने वाला, आनंदित करने वाला। (दयो० ४१)

उत्साह-सम्पन्न (वि०) उमंग युक्त, शक्ति सहित, बलशाली। 'उत्साह-सम्पन्नतया विशेषाद्' (समु० ३/१५)

उत्साह-सहित (वि०) उमंगपूर्वक, दर्पभृत। 'दर्पभृदुत्साहसहिता' (जयो० वृ० ८/१४)

उत्साहि (वि०) उमंगित, शक्ति सम्पन्न (सम्य० ४५)

उत्सिक्त (भू० क० कृ०) [उद्+सिच्+क्त] छिड़का हुआ, सिंचित।

उत्सीमगम (वि०) उत्पथगामिनी, मर्यादा उल्लंघन करने वाला। (जयो० २०/३४)

उत्सुक (वि०) [उद्+सू+क्विप्+कन्] उत्कण्ठित, आचलितचित, इच्छुक, (जयो० ४/६) उत्साह सहित, उमंगजन्य, आसक्त।

उत्सूत्र (वि०) [उत्क्रान्तः सूत्रम्] ढीला, बन्धन से मुक्त, अनियमित। २. कल्पनापूर्वक कथन, सिद्धान्तबहिर्भूत अभिप्राय।

उत्सूरः (पुं०) [उत्क्रान्तः सूरं] सन्ध्या समय, सन्ध्याकान्त, रात्रि से पूर्व का समय।

उत्सेकः (पुं०) [उद्+सिच्+घञ्] १. उड़ेलना, छिड़कना, फुहार छोड़ना, सींचना। 'ज्ञानादिभिराधिक्येऽभिमान आत्मन्'

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(जैन० ल० २५५) २. अहंकार, अभिमान, घमण्ड। अहंकारतोत्सेक: (स० सि० ५/२६)

उत्सेकिन् (वि०) [उत्सेक्+इनि] १. अत्यधिक, बहुत, पर्याप्त। २. अहंकारी, अभिमानी। ३. उमड़ने वाला।

उत्सेचनं (नपुं०) [उद्+सिच्+ल्युट्] सिंचन, ०अभिसिञ्चन, फुहार अभिषेक।

उत्सेधः (पुं०) [उद्+सिध्+घञ्] उन्नत, ऊँचाई, मोटाई।

उत्सेधाङ्गुलं (नपुं०) आठ यवमय विशेष, यवैरष्टभिरङ्गुलम्-उत्सेधाङ् गुलमेतत्' (हरि०पु०७/४०)

उत्स्मयः (पुं०) [उद्+स्मि+अच्] मुस्कराहट, हास, मंद मंद हसन।

उत्स्वन (वि०) ०उच्च स्वर युक्त ०उच्च स्वर करने वाला ऊँची ध्वनि, उच्च-रव।

उत्स्वेदः (पुं०) उर्ध्व से निःसृत/ऊँचाई से निकली। वाष्प युक्त स्वेद। 'उत् उर्ध्वं निर्गच्छता बाष्पेण यः स्वेदः स उत्स्वेदः। (जैन०ल० २५५)

उत्स्वेदिमः (पुं०) उर्ध्व से निकले हुए पसीने का वाष्प।

उद् (उपसर्ग) [उ+क्विप्, तुक्] इस 'उद्' उपसर्ग को संज्ञा शब्दों एवं क्रियाओं के पूर्व में लगाया जाता है। इसके प्रयुक्त होने पर शब्द की विशेषता प्रकट हो जाती है। यह विविध अर्थ को प्रतिपादित करने वाला उपसर्ग है। स्थान, पद, शक्ति, उच्चता, श्रेष्ठता वियोजन, पार्थक्य, अभिग्रहण प्रकाशन आदि।

उद् (सक०) कहना, बोलना, प्रतिपादित करना। उदेति (जयो० ४/२१) (सम्य० ७८) 'पुमांस्तत्र किमुच्यताम्' (सु०१२७) 'का प्रसक्तिरुदिता निरर्गले' (जयो० २/५)

उदक् (अव्य०) [उद्+अञ्च्+क्विन्] ऊपर की ओर, उर्ध्वमुखी, उत्तर की तरफ। (समु० २/२)

उदकं (नपुं०) वारि, जल, नीर, पानी। 'यन्मोदकञ्जभुवि सोदमुग्रकल्पम्' (सुद० ८६) 'मोदकं सगरोदकं सखि' (सुद० ९०)

उदक-कणं (नपुं०) जलकण, जल राशि।

उदककुम्भः (पुं०) जल का घट, जल भरने का घड़ा।

उदक-ग्रहणं (नपुं०) जल ग्रहण, नीर-पान।

उदक-दातृ (वि०) जल प्रदाता।

उदक-दायिन् (वि०) जल प्रदाता, जल देने वाला।

उदकधरः (पुं०) मेघ, बादल।

उदक-धारा (स्त्री०) जलधारा, जल प्रवाह, झरना।

उदक-भारः (पुं०) जल वाहक।

उदकलः (पुं०) जलाशय, तालाब।

उदक-शाक (नपुं०) जलीय वनस्पति शैवाल।

उदकस्पर्शः (नपुं०) जल स्पर्श।

उदकेचरः (पुं०) जलचर जीव, जलीय प्राणी।

उदक्त (वि०) [उद्+अञ्च्+क्त] उठाया हुआ, ऊपर उठा हुआ।

उदक्य (वि०) [उदकमर्हति] रजस्वला स्त्री।

उदग्र (वि०) [उद्गतमग्रं यस्य] उठा हुआ, उन्नत शिखर वाला, लम्बा, अत्युच्चैर्गत, ऊँचाई। (जयो० १४/२७)

उदग्र-शुम्बस्थ (वि०) अग्रकाण्ड। (जयो० १४/३७)

उदग्रशाखा (स्त्री०) नवपल्लव, कोमलाग्र भाग। 'उदग्रशाखा नवपल्लवानि' (जयो० १३/१११) 'उच्चैर्गतायां शाखायां' (जयो० १४/३८)

उदङ्कः (पुं०) [उद्+अञ्च्+घञ्] चर्मपात्र।

उदच्/उदञ्च् (वि०) [उद्+अञ्च्+क्विप्] ऊपर की ओर मुड़ा हुआ, ऊपर जाता हुआ।

उदञ्च् (अक०) फैलना, बढ़ना, प्रसारयुक्त होना। 'अञ्चति रजनिरुदञ्चति' (जयो० १६/६४) उदञ्चति-प्रसरति- (जयो० १६/६४)

उदञ्चनं (नपुं०) [उद्+अञ्च्+ल्युट्]

उदञ्चत् (वि०) रोमाञ्चित। (सुद० २/४१, सम्य० ६५)

उदञ्चलि (वि०) संपुट वाला।

उदण्डपालः (पुं०) १. मत्स्य, मछली, मीन। २. सर्प विशेष।

उदतुलं (नपुं०) तोलना, उबारना। (जयो० ६/३२)

उदधिः (पुं०) समुद्र, सागर। (जयो० ४/४३)

उदधिकुमारः (पुं०) देव नाम।

उदन् (नपुं०) [उन्द्+कनिन्] जल, वारि, नीर।

उदन्तः (पुं०) [उद्गतोऽन्तो यस्य] वृत्तान्त। (जयो० ६/१२८, जयो० २/१४१) वार्तामात्र, समाचार, विवरण, निरूपण, प्ररूपणा, कथन, इतिवृत। 'तदुदन्तत्वेनाहं नेदं तत्त्वेन' (जयो० १६/७२) 'उदन्तत्वेन वार्तारूपेणैव' (जयो० वृ० १६/७२) 'परपुष्टा विप्रवराः सन्तः सन्ति सपदि सूक्तमुदन्ताः।' (सुद० पृ० ८१)

उदन्तकः (पुं०) [उदन्त+कन्] समाचार, गुप्तवार्ता।

उदन्तिका (स्त्री०) [उद्+णिच्+ण्वुल्+टाप्] संतोष, तृप्ति।

उदन्य (वि०) [उदक+क्यच्] प्यास, पिपासा। पीने की इच्छा।

उदन्वत् (पुं०) [उदन्+मतुप्] समुद्र, उदधि, सागर।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उदन्नवान् (वि०) निकली हुई। (सुद० २/४३६)

उदपूर (वि०) आच्छादित। (सुद० २/११)

उद्भूत (वि०) समुच्छलत्तरङ्ग। (जयो० ५/३४) उत्पन्न हुई। २. फैलना, बढ़ना, उदय होना। २. ढकना, आवरण करना। ३. उछल कूद (जयो० २/५७)

उदयः (पुं०) [उद्+इ+अच्] १. उगना, वृद्धि (सुद० २/४४) निकलना, फैलना, निष्पन्न होना। (सुद० २/४४) 'या नाम पात्री सुकृतोदयानाम्' (सुद० २/१०) २. फलदेना कर्मों का परिपाक समयानुसार अपना फल देता है। (सम्य० १/१) जयोदय, वीरोदय, दयोदय। 'उदीर्य कर्मानुदय-प्रणाशात्तदग्रतोवन्धविधेः समासात्।' (समु० ८/१७) 'कर्मणो विपच्यमानस्य फलोपनिपात उदय' (त० वा० २/१) 'द्रव्यादि कर्मवशात् कर्मणः फल प्राप्तिरूदयः।' (त० वा० ६/१४)

उदय् (अक०) उत्पन्न होना, उदित होना, निकलना, फैलना। 'उदयन्ती समुदयं गच्छतीति' (जयो० ६/४३) उदयत् (सुद० ३/२)

उदयगिरिः (पुं०) भवनस्थान। (जयो० १०/८२)

उदयनः (पुं०) उदयन राजा, कौशाम्बी का शासक।

उदयनं (नपुं०) [उद्+इ+ल्युट्] उगना, निकलना, फैलना।

उदयाङ्कुरः (पुं०) उदय का प्रादुर्भाव, वृद्धिभाव। (जयो० २२)

उदयाद्रिः (पुं०) उदयाचल। (समु० ३/११) (सुद० ७८)

उदयि (वि०) उदय को प्राप्त, अभ्युदय को प्राप्त, उत्कर्षगत। 'उदयोऽस्यास्तीत्युदयि' (जयो० वृ० ५/१०)

उदयिनी (वि०) उदयप्राप्त।

उदरं (नपुं०) उदर, पेट। 'इहोदयोऽभूदुदरस्य यावत्' कुक्षि (सुद० २/४१) 'तस्याः कृशीयानुदरो जयाय' (सुद० २/४३) उदराम् (सुद० २/५०) उदरस्य (सुद० २/४०)

उदर-गह्वरं (नपुं०) गभीरतरनाभिकुहर। (जयो० वृ० १४/६८)

उदर-क्षणं (नपुं०) उदर प्रदेश। (सुद० ३/२)

उदरत्राणं (नपुं०) वक्षस्त्राण, चोली, कवच, अंगिया।

उदरचुम्बिचीरः (पुं०) स्वच्छ चादर। (सुद० २/११)

उदरपूर (नपुं०) भरपूर उदर, भरा हुआ पेट।

उदरपूर्तिः (स्त्री०) पेट पूर्ति। (दयो० ३/९)

उदरपोषणं (नपुं०) पालन पोषण, भरण-पोषण।

उदर-विकारः (पुं०) पेट रोग, उदर व्याधि।

उदररिन् (वि०) तोंद वाला, उभरे हुए पेट वाला।

उदराधःस्थित (वि०) रेखात्रय, त्रिबलि। (जयो० ३/६०

उदरिणी (वि०) गर्भिणी स्त्री। (सुद० २/४९) उदर सम्बन्धी 'मुक्तात्मभावोदरिणी जवेन' (सुद० २/४२)

उदरोद्भवः (पुं०) स्वतनय, पुत्र। (जयो० २/१५२)

उदर्कः (पुं०) [उद्+अर्क्+घञ्] १. जलाशय समासाद्य तत्पावनमिङ्गितज्ञ तयोरुदर्कं सुरभि समञ्चत्।' (सुद० २/२८) २. फल, परिणाम। ३. भविष्यकाल, उत्तरकाल, भाविफल। 'अर्कश्चक्रवर्तिसुतस्तु जयश्च' (जयो० ८/८३) 'अर्कश्चक्रवर्तिसुतस्तु उदर्कं भाविफलं किं स्यात्' (जयो० वृ० ८/८३) ४. प्रचण्ड सूर्य-संतापकर सूर्य 'उदर्कमुद्धतं सन्तापकरं सूर्यं भाविवृत्तान्तश्च अनुयाति' (जयो० ४/५८)

उदर्कवश (वि०) परिणाम वश, निमित्त से। मृत्वा ततः कुक्कुरतामुपेतः किञ्चिच्छुभोदर्कवशात्तथेतः।' (सुद० ४/१८)

उदर्काङ्कः (पुं०) गोद। (दयो० ४८)

उदर्चिस् (वि०) [ऊर्ध्वमर्चिः शिखाऽस्य] चमकने वाला, दीप्तिमान, प्रभायुक्त।

उदर्चिस् (पुं०) १. अग्नि, आग, वह्नि। २. कामदेव, शिव।

उदर्थित (वि०) व्यर्थीकृत। (जयो० ४/२०)

उदलवः (पुं०) जलांश, जलकण, जलराशि। 'आशासितेति वदनोदलवैश्च शस्यैः।' (जयो० १६/७५)

उदवमत्सा (वि०) उगल दिए, निकाल दिए। 'कुटुमत्वेत्युदवमत्सा रुग्णा' (सुद० ८९)

उदवसितं (नपुं०) [उद्+अव+सो+क्त] आवास, गृह, स्थान।

उदश्रु (वि०) [उद्गतान्यश्रूणि यस्य] फूट फूटकर रोने वाला, अश्रु गिराने वाला।

उदसनं (नपुं०) [उद्+अस्+ल्युट्] फेंकना, निकालना, उगलना, गिराना, छोड़ना।

उदात्त (वि०) [उद्+आ+दा+क्त] १. गम्भीर, उच्च, उन्नत, तीव्र। (जयो० १०/१८) २. प्रतिष्ठित, भद्र। ३. उदार प्रसिद्ध, विख्यात, महान्।

उदात्त-निनादः (पुं०) गम्भीर ध्वनि, उच्चस्वर, प्रचण्डध्वनि। 'तदुदात्तनिनादतो भयादपि' (जयो० १०/१८) 'आनक-प्रचण्डध्वानत' (जयो० वृ० १०/१८)

उदात्तवृत्तं (नपुं०) विख्यात चरित्र, श्रेष्ठ चरित्र। (समु० १/२९) 'श्रीपद्मखण्डे नगरे सुदत्त-नामा विशामीश-उदात्तवृत्तः।' (समु० १/९)

उदानः (पुं०) [उद्+अन+घञ्] १. श्वांस लेना, ऊपर की ओर श्वांस लेना। २. पंच प्राणों में से एक प्राण।

उदानवायु (पुं०) ऊपर की ओर जाने वाली वायु।

उदायुध (वि०) आयुध युक्त, शास्त्रधारक।

उदार (वि०) [उद्+आ+रा+क] १. विशाल, उन्नत, श्रेष्ठ,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उत्तम, योग्य, विस्तृत, महत्। (सम्य० २२) २. दानयुक्त, दयाभार, आभारी, भद्र, निष्कपट, निश्छल। ३. सुन्दर, रमणीय, प्रिय। 'वस्तुमेणाक्षीणां मनस्युदारं' (सुद० ८८) उक्त पंक्ति में सुन्दर, प्रिय एवं रमणीय अर्थ है। निर्मल 'समुल्लसन्मानसवत्युदारा' (सुद० १/८) निष्कपट-'नमोऽर्हत् इतीदमदादुदारः।' (सुद० ४/२) अक्षुद्रहृदय-'स्मर-वपुषं निस्तुलमुदारम्' (जयो० ६/२९) विशाल-'लसति काशि उदारतरङ्गिणी' (जयो० ९/६७) प्रसत्तिदायिनी-'स्फीतचन्द्रवदनीयमुदारा' (जयो० ४/५४) संस्कार जन्य-'ग्रहोदारमहोत्सवश्च भूः' (सुद० ३/४८) अलंकृत-'उदारां कवितां मुदाऽलम्' (सुद० १/७)

उदारगुणः (नपुं०) श्वेतपन, स्वच्छगुण। 'कपर्दकोदारगुणो बभार' (सुद० २/४८)

उदारचरितं (नपुं०) विशाल हृदय।

उदारचेष्टा (स्त्री०) उत्कृष्ट चेष्टा, उन्नत विचार। (सुद० ८३)

उदारतरङ्गिणी (स्त्री०) विशालनदी, गंगा नदी। (जयो० ९/६७)

उदारत्व (वि०) विशिष्टगुण सहित।

उदारदर्शनं (नपुं०) प्रशस्त श्रद्धा, प्रशस्तज्ञानी। 'कार्य-आर्यमपवर्गवर्त्मनः कारणं त्विदमुदारदर्शनं।' (जयो० २/१३६) ०श्रेष्ठ चिन्तन, ०उच्चविचार, ०भद्र श्रद्धा।

उदारदृक् (वि०) उदारदृष्टि, बुद्धिमान दृष्टि। 'तदपि हन्ति हवं किमुदारदृग् भवति' (जयो० ९/१३)

उदारधारणा (स्त्री०) सर्वोत्कृष्ट भावना, अतिविस्तीर्ण, स्मरणशक्ति। 'ते कुविन्दवदुदारधारणा' (जयो० ३/१७) 'उदाराऽतिविस्तीर्णा धारणा स्मरण शक्तिः' (जयो० ३/१७)

उदारधी (स्त्री०) प्रतिभाशाली, अतिबुद्धिमान्।

उदारध्वनिः (स्त्री०) स्पष्ट शब्द, सुन्दरशब्द, रमणीय स्वर। 'समुदारध्वनिमित्थमुच्चरन्' (जयो० १३/१६)

उदारबुद्धि (स्त्री०) तीव्र बुद्धि। (वीरो० ११/२२) (जयो० १३/१६)

उदारभावः (पुं०) औदार्यगुण, ओजस्वी परिणाम। (जयो० वृ० २/१४८) 'समर्पयंयमुदारभावतः' (सुद० पृ० ७२)

उदार-वक्त्रं (नपुं०) सुन्दर मुख, लावण्यमयी आनन। 'उदाराणि उत्कृष्टानि महान्ति वा वक्त्राणि मुखानि। (जयो० वृ० १६/२१)

उदारविचारः (पुं०) उन्नत विचार, यथेष्ट वचन। (वीरो० १/१०) 'वीरो० दयोदारविचारचिह्नम्' (वीरो० १/१०)

उदार-शृंगारः (पुं०) उत्तम शृंगार, श्रेष्ठ विभूषण। उदारः सर्वग्राह्यश्चासौशृंगारो नाम रसस्तस्य। (जयो० १६/०)

उदार-सन्तः (पुं०) उदारमुनि, प्रशस्त मुनि, ध्यानस्थमुनि। चर्यानिमित्तं पुरि सञ्चरन्तं विलोक्य दासी तमुदारसन्तम्' (सुद० ११९)

उदारसम्मतिः (स्त्री०) महापुरुषों का कथन 'उदाराणां सम्मतिर्यस्मिन्नत्' महापुरुषानुमतं पूजनं भवति' (जयो० २/३४) ०महापुरुषों का अभिमत।

उदराग्निप्रशमनं (नपुं०) उदर की अग्नि का शमन। उदराग्निं प्रशमयतीति उदराग्निशमनमिति' (त० वा० ९/६)

उदास (वि०) [उद्+अस्+घञ्] दूर, पृथक्, अलग, अनासक्त 'सः सुरक्षणेभ्यः सुतरामुदासः' (जयो० १/४५)

उदासः (पुं०) निःस्पृह। (वीरो० २१/११) इच्छा रहित।

उदासक (वि०) उदासीन, अनासक्त। 'पलितनामतया समुदासकौ' (समु० ७/३)

उदासी (वि०) विरक्ती। 'ततोऽत्र भोगाच्चभवादुदासी' (समु० ६/३६)

उदासीन (वि०) [उद्+आस्+शानच्] निष्क्रिय, अनासक्त। 'भवेदुदासीनगुणोऽयमंत्र' (समु० ८/१८)

उदासीनगुणः (पुं०) अनासक्तगुण। (समु० ८/१८)

उदासीनता (वि०) निष्क्रियता, निःस्पृहता। (दयो० ४५)

उदासीन्य (वि०) उदासीनता, निःस्पृहता। (जयो० २३/७६)

उदास्थितः (पुं०) [उद्+आ+स्था+क्त] अधीक्षक, द्वारपाल, गुप्तचर।

उदाहरण (नपुं०) [उद्+आ+हृ+ल्युट्] उदाह्रियते प्राबल्येन गृह्यतेऽनेनदार्ष्टान्तिकोऽर्थः। वर्णन, कथन, दृष्टान्त, समारंभ निदर्शन, स्तुतिगान। दृष्टान्तवचन। (प्रमाण मी०२/१)

उदाहारः (पुं०) [उद्+आ+हृ+घञ्] वर्णन, कथन, दृष्टान्त, उदाहरण।

उदिङ्क्ति (वि०) ज्वलन्त, संतप्त। (जयो० १३/६२)

उदित (भू० क० कृ०) [उद्+इ+क्त] १. उत्पन्न, प्राप्त, प्रतिपादित, कथित, उदयगत। (जयो० ५/५२) २. बढ़ा हुआ, विस्तृत, उच्च, ऊँचा। (सम्य० ८९) ३. ठगा हुआ। ४. निर्मित-'दारूदितप्रतिकृति' (सुद० १२३) 'उदितं सूदिते प्राप्ते' इति विश्वलोचनः' (जयो० ७/९१) 'चाण्डालचेत-स्युदिता किलोता' (सुद० १०७) ५. विकीर्ण-(जयो० १३/१७)

उदित-तारकः (पुं०) तारकर्माण। 'उदितं प्रतिपादितमुदयमाप्तञ्च तारकनाममध्यमणेः। (जयो० वृ० ५/५२)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उदितपिच्छगण: (पुं०) दिगम्बर, मयूरपिच्छधारी। (जयो० १८/६०) 'स्याद्वाद-भागुदितपिच्छगणस्य वृत्ति: उदितपिच्छानाभृत्थापितपिच्छानां ताम्रचूडानां गण: समूहस्तस्य' 'उदितपिच्छानां मयूरपिच्छ धारिणां दिगम्बराणां गण: समूहस्तस्य वृत्ति:।' (जयो० वृ० १८/६०)

उदित-प्रताप (वि०) फैले हुए प्रताप वाला, विस्तीर्ण प्रताप युक्त। 'राजापुरेऽस्मिन्नुदितप्रतापो' (समु० ६/९)

उदिता (वि०) पहनाना, धारण करना। 'अरुण-माणिक्य-सुकुण्डलोदिता' (सुद० ३/१९)

उदिताम्बुद: (पुं०) प्रकट हुए मेघ। (सुद० ९९)

उदितालकालि (वि०) बिखरे हुए बाल वाली। 'उदिता प्रतिबिम्बिता अलकानां केशानामालि:' 'उदिता विकीर्णाऽलकानामालिर्यासाम्' (जयो० वृ० १३/७१)

उदितोकं (नपुं०) जल प्रक्षेपण, जलधारा। (जयो० १२/५४)

उदिय (वि०) बिखरे हुए, फैले हुए। (वीरो० ५/२७)

उदीक्षणं (नपुं०) [उद्+ईक्ष्+ल्युट्] देखना, दृष्टिपात करना, उर्ध्वावलोकन।

उदीक्ष्य (सं०कृ०) देखकर, अवलोकनकर। 'गुणिवर्गमुदीक्ष्याऽगान्मध्यस्थ्यं च' (सुद० ४/३५) 'मुनिमुदीक्ष्य मुमुदे सुदर्शन' (सुद० पृ० ११५)

उदीची (स्त्री०) [उद्+अञ्च्+क्विन्+ङीप्] उत्तरदिशा।

उदीचीनं (वि०) [उदीची+ख] उत्तर दिशा की ओर, उत्तर दिशा से सम्बंधित।

उदीच्य (वि०) [उदीची+यत्] उत्तर दिशा में स्थित/रहने वाला।

उदीच्य: (पुं०) पश्चिमोत्तर देश।

उदीप: (पुं०) [उद्गता आपो यत्र उद्+अप्+ईप] गहीर जल, जलप्लावन।

उदीयमान (वि०) विकास शील। (सम्य० १०८)

उदीरणं (नपुं०) [उद्+ईर्+ल्युट्] १. उच्चारण, अभिव्यक्ति। २. फेंकना, चलाना, कहना।

उदीरणा (स्त्री०) फेंकना, चलाना, हीन करना। कर्म को उदय में लाकर फल भोगना। 'अनुभूयमाने कर्मणि प्रक्षिप्याऽनुदयप्राप्तं प्रयोगेणानुभूयते यत्सा उदीरणा' (पं०सं०पृ० १९१) 'सकाशात् पतति सोदीरणोच्यते' (पं०सं०१६२)

उदीरय् (सक०) उदीरणा करना, क्षय करना, हीन करना। 'क्षणादुदीरयन्नेवं करव्यापारमादरात्' (सुद० ७८)

उदीरित (भू० क० कृ०) कहा, कथन किया। 'प्रत्युक्तया शनैराश्यं सनैराश्यमुदीरितम्' (सुद० ८४)

उदीरित (वि०) प्रेरित, (जयो० १२/१२०)

उदीर्ण (भू० क० कृ०) [उद्+ईर्+क्त] १. जगा हुआ, बढ़ा हुआ, फैला हुआ। (जयो० १३/३२) २. फल देने रूप अवस्था में परिणत कर्म पुद्गल-स्कन्ध। 'फलदातृत्वेन परिणत: कर्मपुद्गलस्कन्ध:' (धव० १२/३०३)

उदीर्णबादर: (पुं०) फैल जाने वाले बादर। (जयो० १३/३२)

उदीर्य (भू० क० कृ०) [उद्+ईर्+क्त] फल देना, परिणत हुआ।

उदुम्बर: (पुं०) फल विशेष, अभक्ष्य फल, गूलर। (हित०४७)

उदूखल: (पुं०) ऊखल, ओखली, धान्य कूटने का यन्त्र। (जयो० २/८०)

उदूढ (वि०) उपगूढ। (वीरो० २१/८)

उदेजय (वि०) [उद्+एज्+णिच्+खश्] हिलाने वाला, कपाने वाला।

उदेक्षत (भू०क०) सुरक्षित रखना। (सुद० २/४९)

उद्गत (वि०) प्राप्त, बाहर जाना, उत्पन्न हुआ। 'श्रीपादपादहंत उद्गतानाम्' (भक्ति० १३)

उद्गति: (स्त्री०) [उद्+गम्+क्तिन्] १. आरुढ़ होना, चढ़ना, ऊपर बैठना, आरोहण। २. आविर्भाव, जन्मस्थान नमन।

उद्गन्धि (वि०) [उद्गतो गन्धोऽस्य] सुगन्ध युक्त, सुरभि सहित।

उद्गम: (पुं०) [उद्+गम्+घञ्] उदय। (सुद० १३५) १. ऊपर जाना, उगना, चढ़ना। २. उत्पन्न होना, जन्म लेना, उत्पत्ति, रचना, निर्माण। (सम्य० ४२)

उद्गमनं (नपुं०) [उद्+गम्+ल्युट्] १. अधो गमन, विनिपात। २. उगना, निकलना, फैलना। (जयो० वृ० १८/३२)

उद्गमनीय (सं०कृ०) [उद्+गम्+अनीयर्] ऊपर जाने योग्य, चलने योग्य, आरोहण करने योग्य।

उद्गमविधि: (स्त्री०) खनन विधि। (जयो० ४/६८)

उद्गर् (सक०) कहना, बोलना, प्रतिपादित करना। 'यद्यस्मिन्समये प्रकर्तुमुदितं तत्रोदगरेत्तन्मुनि:।' (मुनि० २९)

उद्गाढ (वि०) [उद्+गाह्+क्त] गंभीर, गहरा, गहन, तीव्र, बहुत, अत्यधिक।

उद्गातृ (पुं०) [उद्+गै+तृच्] गान करना, उच्चारण करना गीत गाना।

उद्गार: (पुं०) [उद्+गृ+घञ्] कथन, उगाल, उत्सर्जन, वमन। 'उद्गारै: परिवेष्टितोऽवनिरूहेपूर्णायुवत्स्वावशे' (मुनि० २०)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उद्गारिन् (वि०) [उद्+गृ+णिनि] उत्सर्जन करने वाला, उगलने वाला।

उद्गिर् (सक०) उगलना, गिराना, वमन करना, उत्सर्जन करना। 'पापानि वापाय भियोद्गिरन्तः' (जयो० २१/१०) 'उद्गिरन्तो वमितवन्तः' (जयो० वृ० १/२२)

उद्गिरणं (नपुं०) [उद्+गृ+ल्युट्] वमन, उत्सर्जन, उगलना।

उद्गिलन (वि०) उगलता हुआ। (सुद० ३/१८)

उद्गीतिः (स्त्री०) [उद्+गै+क्तिन्] १. उच्चगान, गुणानुवाद। २. उद्गीति छन्द, आर्या छन्द का भेद। ३. अपहरण (सुद० १०२)

उद्गीथः (पुं०) [उद्+गै+थक्] उच्चगायन, उच्चारण।

उद्गीण (वि०) [उद्+गृ+क्त] उगला हुआ, उत्सर्जन किया, वांमित, उत्सर्जित।

उद्गीर्ण (वि०) उत्सर्जित, वान्त, वमित। (जयो० ८/३०)

उद्गीय (सक०) कहना, बोलना-उद्गीयते (जयो० ८/४०)

उद्गूर्ण (वि०) [उद्+गूर+क्त] उन्नत किया गया, उर्ध्वगत।

उद्ग्रहः (पुं०) [उद्+ग्रह्+अच्] लेना, ग्रहण करना, उठाना, सम्पन्न करना।

उद्ग्राहः (पुं०) [उद्+ग्रह+घञ्] १. लेना, ग्रहण करना, उठाना। २. प्रतिवाद, समाधान देना।

उद्ग्राहणिका (स्त्री०) समाधान देना, प्रश्न का उत्तर देना, प्रतिवाद, निराकरण।

उद्ग्राहित (भू० क० कृ०) [उद्+ग्रह्+णिच्+क्त] १. ग्रहीत, पकड़ा गया, ऊपर लिया गया। २. न्यस्त, मुक्त किया गया। ३. स्मरित।

उद्ग्रीव (वि०) [उन्नता ग्रीवा यस्य] उन्नत ग्रीवा, उठी हुई गर्दन वाला।

उद्घनः (पुं०) [उद्+हन्+अप्] आगडी बढ़ई की लकड़ी का तख्ता, जिस पर लकड़ी तैयार करता है।

उद्घट्टनं (नपुं०) [उद्+घट्ट+ल्युट्] संघर्षण, रगड़।

उद्घर्षणं (नपुं०) [उद्+घृष्+ल्युट्] संघर्षण, रगड़ना, घोटना।

उद्घाटः (पुं०) [उद्+घट्+घञ्] चौकीदार, पड़ाव, छावनी।

उद्घाटकः (पुं०) [उद्+घट्+णिच्+ण्वुल्] १. कुंजी, २. चर्खी, रहट की चर्खी।

उद्घाटनं (नपुं०) [उद्+घट्+णिच्+ल्युट्] खोलना, उघाड़ना, विधिवत्, ऊपर उठाना, समारम्भ करना।

उद्घाटय् (सक०) कहना, बोलना, समारम्भ करना। सद्यो लिप्ततयार्द्रवेश्म न विशेन्नोद्घाटयेदावृतः (मुनि० १०)

उद्घातः (पुं०) [उद्+हन्+घञ्] १. आरम्भ, उपक्रम, उल्लेख, संकेत। २. प्रहार, आघात, हप्पड़। ३. पुस्तक अंश, अध्याय, अनुभाग, परिच्छेद।

उद्घोषः (पुं०) [उद्+घुष्+घञ्] उच्चारण, स्पष्ट कथन, उच्च घोषणा। 'सूक्तोद्घोषवर-प्रयोजनतयैकान्ते वसेद् बुद्धिभृत्।' (मुनि० ३०)

उद्दंशः (पुं०) [उद्+दंश्+अच्] खटमल, जूं, मच्छर।

उद्दण्ड (वि०) १. असती, दुष्ट, भयानक। (जयो० वृ० २/११९), १२. दण्ड देने वाला ३. उठे हुए डंडे वाला।

उद्दधार (भू०क०) गृहीतवान्। (जयो० ८/५४)

उद्दण्डभावः (पुं०) दुष्ट भाव। (जयो० वृ० ११/२७)

उद्दन्तुर (वि०) बाहर निकले हुए दांत वाला।

उद्दानं (नपुं०) [उद्+दो+ल्युट्] कैद, बन्धन, वश में करना।

उद्दान्त (वि०) [उद्+दम्+क्त] १. तेजस्वी, ऊर्जावान्, शक्तिशाली। २. विनीत।

उद्दाम (वि०) १. प्रशसंनीय। 'यत्रोद्दाम-सुधाकरोद्गमविधिः' (जयो० ४/६८) २. निर्बन्ध, अनियन्त्रित, निरंकुश, मुक्त। ३. सबल, शक्ति सम्पन्न। ४. भयानक, भयावह, तीव्रतट। ५. विशाल, अतिव्यापक।

उद्दायनः (पुं०) राजा, वीतभयपुराधीश उद्दायमहीपतिः। (वीरो० १३/२१)

उद्दालकं (नपुं०) [उद्+दल्+णिच्+अच्+कन्] शहद विशेष, लसोड़े का फल।

उद्दित (वि०) [उद्+दो+क्त] बद्ध, संनद्ध, जुड़ा हुआ, बन्ध युक्त।

उद्दिष्ट (भू० क० कृ०) [उद्+दिश्+क्त] विशिष्ट, प्रधान, प्रमुख, इच्छित, वाञ्छित। 'भिक्षैव वृत्तिः करमेव पात्रं नोद्दिष्टमन्नं कुलमात्मगात्रम्' (सुद० ११७)

उद्दिष्टत्याग-प्रतिमा (स्त्री०) उद्दिष्ट/इच्छित आहार का परित्याग। श्रावक की एक प्रतिमा, जो स्वाध्याय, ध्यान आदि में रत श्रावक को आहार की मर्यादा करने के लिए प्रेरित करती है।

उद्दीपः (पुं०) [उद्+दीप्+घञ्] प्रज्ज्वलित, प्रकाश युक्त, देदीप्यमान।

उद्दीपनं (नपुं०) [उद्+दीप्+णिच्+ल्युट्] उत्तेजित करने वाला, उभारने वाला, प्रेरित करने वाला, उभारने वाला, रस की ओर खींचने वाला। 'रस' का आलम्बन।

उद्दीप्र (वि०) [उद्+दीप्+रन्] प्रज्ज्वलित, चमकीला, अधिक, दाहक, ज्वलनशील।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उद्दृप्त (वि०) [उद्+दृप्+क्त] अहंकारी, गर्विष्ठ, अभिमानी, घमण्डी।

उद्दिश् (सक०) ०संकेत करना, ०लक्ष्य करना, ०निर्देश करना, ०वर्णन करना, ०व्याख्यान करना, ०निरूपण करना, ०समन्वेषण करना। ०अनुबन्ध करना। (जयो० ६/९१)

उद्दिश्य (सं०कृ०) लक्ष्य करके, उद्देश बनाकर। (जयो० ६/९१) 'उद्दिश्यापरमूचे'।

उद्देशः (पुं०) [उद्+दिश्+घञ्] लक्ष्य, वर्णन, कथन, निदर्शन, ध्यान, अनुबन्ध, अभीष्ट। (दयो० ५०)

उद्देशपथः (पुं०) अभीष्टमार्ग, इष्टपथ।

उद्देशमार्गः (पुं०) अभीष्टपथ, लक्षित पथ। (दयो० ५०)

उद्देशकं (पुं०) [उद्+दिश्+ण्वुल्] निदर्शन, दृष्टान्त, पृथक्-पृथक् अभिप्राय, विवेचन, संक्षिप्त वक्तव्य।

उद्देशित (वि०) लक्षित, निर्दिष्ट। (जयो० वृ० ३/४९)

उद्देश्य (सं०कृ०) [उद्+दिश्+ण्यत्] लक्ष्य, अभिप्रेत, अभीष्ट।

उद्द्योतः (पुं०) [उद्+द्युत+घञ्] १. प्रभा, प्रकाश, आभा, कान्ति, दीप्ति। २. पुस्तक का अध्याय, अंश, भाग, हिस्सा, अनुच्छेद, अनुभाग, परिच्छेद।

उद्द्रावः (पुं०) [उद्+द्रु+घञ्] भागना, पलायन करना, पीछे हटना।

उद्धत (भू० क० कृ०) [उद्+हन्+क्त] नीचे-(सुद० २/४) तत्पर, तैयार, प्रयत्नशील, कटिबद्ध, सन्नद्ध। 'कुमार जनमारणोद्यतः' (जयो० ७/५८) 'वारितुं तु परचक्रमुद्यतः' (जयो० २/१२१) 'उद्यतः सन्नद्धः सन्' (सुद० वृ० २/१२१)

उद्धतता (वि०) तत्परता। (वीरो० ४/२४)

उद्धतिः (स्त्री०) [उद्+हन्+क्तिन्] १. उन्नयन, तत्पर, कटि... २. अभिमान, अहंकार।

उद्धमः (पुं०) [उद्+ध्मा+श] १. ध्वनि करना, प्रतिध्वनि करना, आवाज करना। ३. हांफना, श्वांस लेना।

उद्धर् (सक०) १. शोधना, माफ करना। 'उद्धरन्नपि पदानि सन्मनः' (जयो० २/५२) उद्धरन् शोधयन् (जयो० वृ० २/५२) २. शान्त करना-'करतलकण्डूतिमुद्धरति' (जयो० ६/६१) 'उद्धरामः-सिरसा वहामः' (जयो० वृ० ३/३८) 'उद्धरति- शमयतीत्यर्थः' (जयो० वृ० /६१) उद्धरिष्यामि-(दयो० ६२) उद्धरेत् (मुनि० ३)

उद्धरणं (नपुं०) [उद्+हृ+ल्युट्] १. उद्धार करना, मुक्त करना, दया करना। २. बनाना-'समस्तिकाव्योद्धरणा यमेतु' (समु० १/६) ३. ध्वंस, विनाश, च्युत, उन्मूलन। ४. उतारना, निकालना, निस्सारण, निचोड़ना, उखाड़ना। बिताना-'प्राङ् निशि यस्योद्धरणां' (सुद० ९६)

उद्धरता (वि०) गुप्ति त्रयात्मक हित, लोकत्रय हित कारक। (जयो० १/९७)

उद्धरय् (सक०) दूर करना। (वीरो० ५/२२)

उद्धारक (वि०) समुचित समाधान करने वाला, ऊपर उठाने वाला, आगे ले जाने वाला, हितैषी, शुभेच्छु। 'स्वयंवरोद्धाकरत्वमिच्छति' (जयो० ३/६६)

उद्धारकार (वि०) [उद्+हृ+ण्वुल्] उद्धार करने वाला, समुचित समाधान देने वाला। (सुद० १/४४)

उद्धारकरत्व (वि०) समुचित समाधान करने वाला, हितैषी, शुभेच्छुक। (जयो० ३/६६)

उद्धरित (वि०) १. अवशिष्ट, निचोड़ (जयो० ३/६६) २. उठाने वाला, ऊपर ले जाने वाला।

उद्धर्ष (वि०) [उद्+हृष्+घञ्] प्रसन्न, खुश, हर्ष, आनन्दित।

उद्धर्षणं (नपुं०) [उद्+हृष्+ल्युट्] १. रोमांच, हर्ष, आनन्द। २. प्राणयुक्त।

उद्धवः (पुं०) [उद्+हु+अच्] उत्सव, पर्व। १. उद्धव एक संदेश वाहक, कृष्ण का संदेश वाहक।

उद्धस्त (वि०) उठाए हुए, फैलाए हुए।

उद्धानं (नपुं०) [उद्+धा+ल्युट्] चूल्हा, अंगीठी, अग्निस्थान।

उद्धान्त (वि०) [उद्+हा+झ] वमित, उगला हुआ, विसर्जित।

उद्धारः (पुं०) [उद्+हृ+घञ्] १. निस्सारण, निकालना, विमुंचन, छोड़ना। (जयो० वृ० ३/१२) उद्धृति (जयो० ३/२) २. मुक्त करना, शुभ करना, अच्छा करना।

उद्धारणं (नपुं०) [उद्+हृ+णिच्+ल्युट्] मुक्त करना, बचाना, उठाना, ऊँचा करना।

उद्धार पल्यं (नपुं०) समय विशेष, रोमच्छेद से असंख्यात कोटि वर्ष तक गर्त भरना, उद्धार पल्य है। (सम्य० ४७)

उद्धारपल्यकालः (पुं०) समय विशेष।

उद्धुर (वि०) [उद्+धुर्+क] १. निरंकुश, अनियन्त्रित, मुक्त, परिमुंचित, २. स्थूल, मोटा, भारी।

उद्धूत (भू० क० कृ०) [उद्+धू+क्त] समुत्थित (जयो० ८/८) उठाया हुआ, ऊपर किया गया, गिराया गया, हिलाया गया।

उद्धूननं (नपुं०) [उद्+धू+ल्युट्] उठाना, ऊपर करना, हिलाना।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उद्धूपनं (नपुं०) [उद्+धूप्+ल्युट्] धूनी देना, छुपाना।

उद्धूलनं (नपुं०) [उद्+धूल+णिच्+ल्युट्] पीसना, चूर्ण करना, धूल करना।

उद्धूषणं (नपुं०) [उद्+धूष्+ल्युट्] रोमांचित होना, हर्षित होना, भाव-विभोर होना, पुलकित होना।

उद्धृत (भू० क० कृ०) [उद्+हृ+क्त] ऊँचा किया, उन्नत किया, उठाया। (जयो० १२/८८) बढ़ाया, उद्धार किया, बचाया, संरक्षित किया।

उद्धृतिः (स्त्री०) [उद्+हृ+क्तिन्] १. ऊँचा करना, उठाना, निचोड़ना, निकालना, खींचना, रचना, जुटाना। (जयो० २/१६५) (सुद० ३/११) बाहर करना। २. उद्धार करना, मुक्ति। 'बलोद्धृतिसमाश्रयत्वतः' (जयो० ३/१२) ३. रक्षा करना, बचाना-'निर्बलोद्धृतिपरस्तु कर्मणा' (जयो० ३/२)

उद्ध्माननं (नपुं०) [उद्+ध्मा+ल्युट्] अंगीठी, चूल्हा।

उद्ध्यः (पुं०) [उज्झत्युदकमिति उद्+उज्झ्+क्यप्] एक नदी का नाम।

उद्बन्ध (वि०) १. ढीला किया गया, खोला गया। २. लटकना, भेंदना. ऊपर लटकाना।

उद्बन्धकः (पुं०) [उद्+बन्ध्+ण्वुल्] बन्धक सहित, कार्यशील बन्धक।

उद्बल (वि०) सशक्त, शक्तिशाली।

उद्बाष्प (वि०) अश्रुपूरित, अश्रु से परिपूर्ण।

उद्बाहु (वि०) प्रसारित बाहु वाला, उर्ध्व भुज युक्त।

उद्बुद्ध (भू० क० कृ०) [उद्+बुध्+क्त] जागृत, जगाया गया, हर्षित, प्रसन्नचित्त।

उद्बोधः (पुं०) [उद्+बुध्+णिच्+घञ्] स्मरण दिलाना, बोध कराना, जगाना, उठाना, ध्यान दिलाना।

उद्बोधक (वि०) [उद्+बुध+णिच्+ण्वुल्] उपदेष्टा, जागृत करने वाला, समझाने वाला, ध्यान केन्द्रित करने वाला।

उद्भट (वि०) [उद्+भट्+अप्] प्रगल्भ, श्रेष्ठ, प्रमुख, उत्कृष्ट 'वाचा समाचारविदोद्भरस्य' (जयो० १/७८)

उद्भवः (पुं०) [उद्+भू+अप्] उत्पन्न, समुच्चल, स्रोत, रचना, आधार, उद्गमस्थान। 'शुद्धिरस्ति बहुश क्षणोद्भवा' (जयो० २/७९) 'श्रीमत्पुत्रायास्मदङ्गोभवा' (सुद० ३/४५)

उद्भवनशील (वि०) उत्पन्नशील। (जयो० वृ० १७/१५)

उद्भावः (पुं०) [उद्+भू+घञ्] उत्पत्ति, संतति, उद्गमस्थान।

उद्भावनं (नपुं०) [उद्+भू+णिच्+ल्युट्] १. चिन्तन, कल्पना, २. उत्पत्ति, संतति, उत्पादन, सृष्टि। 'प्रतिबन्धकाभावे प्रकाशवृत्तिता उद्भावनम्' (स० सि० ६/२५) प्रतिबन्धक का अभाव होने पर प्रकाश में आना।

उद्भावयितृ (वि०) [उद्+भू+णिच्+तृच्] ऊपर उठाने वाला, उन्नत बनाने वाला।

उद्भासः (पुं०) [उद्+भास्+घञ्] प्रभा, कान्ति, चमक।

उद्भासिन् (वि०) [उद्भास्+इनि] प्रकाशमान्, प्रभा युक्त, कान्तिमयी, उज्ज्वल, स्वच्छ।

उद्भिज्जः (पुं०) पौधा, पादप।

उद्भिद् (वि०) फूटने वाला, निकलने वाला, उगने वाला, उच्छेदक। (जयो० २४/१९)

उद्भिन्न (वि०) निरस्त, समाप्त। 'श्रीमतो मुनिनाथस्याऽप्युद्भिन्ना मुखमुद्रणा।' (जयो० १/११) दोष विशेष-चमड़े आदि से आच्छादित वस्तु।

उद्भूत् (भू० क० कृ०) [उद्+भू+क्त] जात, उत्पन्न, प्रसृत, निःसृत, निकला हुआ।

उद्भूतिः (स्त्री०) [उद्+भू+क्तिन्] उत्पादन, निस्सरण, उन्नयन, उत्कर्षण, समृद्धि, प्रजनन।

उद्भूय् (अक०) उठना, जागृत। उद्भूयते-(जयो० ११/९) 'उत्थाय आसनादुद्भूय तस्यां' (जयो० वृ० १/७९)

उद्भेदः (पुं०) [उद्+भिद्+घञ्] १. आविर्भाव, प्रकटीकरण, उदीयमान, उदयजन्य प्रस्फुटित, उगना, निकलना। २. निर्झर, प्रवाह, धारा, फुहार।

उद्भेदिमः (पुं०) काष्ठादि में उत्पन्न जीव।

उद्भ्रमः (पुं०) [उद्+भ्रम्+घञ्] घूमना, परिहिंडन, परिभ्रमण, परावर्तन।

उद्भ्रमणं (नपुं०) [उद्+भ्रम्+ल्युट्] परिहिंडन, परावर्तन, अत्र तत्र परिभ्रमण।

उद्यत (भू० क० कृ०) [उद्+यम्+क्त] तत्पर, तैयार, प्रयत्नशील, उठाया हुआ, उन्नत किया गया, उत्सुक। (वीरो० ६/३९) 'प्रवर्त्तनायोद्यत चित्तलेशाः' (भक्ति० सं०पृ० ११)

उद्यतचित्त लेश (वि०) तत्पर चित्त वाला। (भक्ति० ११) **उद्यतते** स्मेति-लगता है, तत्पर होता है 'कुरक्षणे स्मोद्यतते मुदा सः' (जयो० १/४५)

उद्यमः (पुं०) [उद्+यम्+घञ्] प्रयत्न, उद्योग, परिश्रम, चेष्टा, धैर्य, तत्परता, प्रयत्नशीलता, उत्सुकता, दृढ़ संकल्प। 'यथोद्यमं तदुपायकरेण' (दयो० ३६) 'कर्मनिर्हरण-कारणोद्यमः' (जयो० २/२२)

उद्यमनं (नपुं०) [उद्+यम्+ल्युट्] उन्नयन, उठाना, उत्पादन।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उद्यमिन् (वि०) [उद्+यम्+णिनि] परिश्रमी, उद्योगी, प्रयत्नशील, निरन्तर कार्यरत, कार्यकर। (भक्ति० ७) 'शक्रादयोऽप्युद्यमिनो भवन्ति'

उद्यमी (वि०) [उद्+यम्+णिनि] परिश्रमी, उद्योगी, कार्यरत। (जयो० १७/४३)

उद्यानं (नपुं०) [उद्+या+ल्युट्] १. आराम, बगीचा, बाग, नन्दनवन। (सुद० ३/३३) २. भ्रमण, परिभ्रमण, हिंडन। ३. आक्रीडक-(जयो० वृ० १५/२०) 'नवविद्रुमभूयिष्ठमुद्यानमिव' (जयो० ३/७५)

उद्यानकं (नपुं०) [उद्+या+ल्युट्+कन्] आराम, बगीचा, बाग।

उद्यान-यानजः (पुं०) उद्यान विहार, आरामपरिभ्रमण, उपवन परिभ्रमण। 'उद्यानयानजं वृत्तं किन्न स्मरसि पण्डिते।' (सुद० ८६)

उद्यान-सम्पालकः (पुं०) माली, उपवन संरक्षक। 'उद्यानसम्पालक-कुक्कुटेन' (समु० ६/३४)

उद्यापनं (नपुं०) [उद्+या+णिच्+ल्युट्] व्रत समाप्ति, व्रतोद्यापन, व्रतपूर्णता, पारणा दिवस।

उद्योगः (पुं०) [उद्+युज्+घञ्] उद्यम, प्रयत्न, परिश्रम, चेष्टा। (मुनि० १५)

उद्योगिन् (त्रि०) [उद्+युज्+घिनुण्] उद्यमी, परिश्रमी, कार्यतत्परता, उद्योगशाली। उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मी दैवेन देयमिति का पुरुषा वदन्ति। (दयो० वृ० ९२)

उद्योत (वि०) प्रकाशवान्, प्रभायुक्त। 'उद्योतयन्तोऽपि परार्थमन्तः' (सुद० १/२२)

उद्योतकारिन् (वि०) ०प्रकाशवान्, ०प्रभायुक्त, ०कान्ति फैलाने वाला। (दयो० १२४)

उद्योतन (वि०) प्रकाशन। (जयो० २२/४१) 'जगदुद्योतन हेतोर्वशान्' (जयो० २०/३६)

उद्योतय् (सक०) प्रकाश करना-उद्योतयति-(वीरो० ४/३३)

उद्योतिन् (वि०) प्रकाश करने वाला, कान्ति फैलाने वाला। (वीरो० ६/९)

उद्रः (पुं०) [उन्द्+रक्] जलीय प्राणी, जल का जीव।

उद्रवः (पुं०) [उद्गतो रथो यस्मात्] १. रथ के धुरी की कील, सकेल। २. मुर्गा।

उद्रवः (पुं०) [उद्+रु+घञ्] कोलाहल, शोरगुल।

उद्रिक्त (वि०) [उद्+रिच्+क्त] विशद, महत्, बड़ा, अत्यधिक, अतिशय।

उद्रुज (वि०) [उद्+रुज्+क] जड़ खोदने वाला, नाश करने वाला, विध्वंसक।

उद्रुत (वि०) चाहने वाले, हितेच्छुक। 'जगद्धितेच्छो द्रुतमग्रतस्तौ' (सुद० २/२६)

उद्रेकः (पुं०) [उद्+रिच्+घञ्] आधिक्य, बाहुल्य, वृद्धि, प्राचुर्य, अधिकता।

उद्वत्सरः (पुं०) [उद्+वस्+सरन्] वर्ष, साल, संवत्सर।

उद्वपनं (नपुं०) [उद्+वप्+ल्युट्] १. उखाड़ना, उड़ेलना, निकालना। २. उपहार, भेंट, दान।

उद्वमनं (नपुं०) [उद्+वम्+ल्युट्] ०उगलना, ०निकालना, वमन करना।

उद्वमन्त (पुं०) निकालने वाला, फैलाने वाला। 'तत्स्फुलिङ्गजालं मुहुरुद्वमन्तम्' (सुद० २/१७)

उद्वर्तः (पुं०) [उद्+वृत्+घञ्] १. आधिक्य, बाहुल्य, अतिशयता। २. शेष, बचा। ३. लेप, मालिश।

उद्वर्तनं (नपुं०) [उद्+वृत्+ल्युट्] १. लेप, मालिश। (जयो१०/२४) २. बदलना, करवट लेना, उलटना, इधर-उधर करना, उन्नयन, अभ्युदय। 'अस्मादन्यत्रोत्पत्तिः' (मूला०२२/३) ३. समृद्धि।

उद्वर्तनाकरण (वि०) वृद्धिगति स्थिति।

उद्वर्धनं (नपुं०) [उद्+वृध्+ल्युट्] वृद्धि, समृद्धि।

उद्वलितुं (ह०कृ०) मुड़ना, उलटना। (सम्य० ७३)

उद्वह (वि०) [उद्+वह्+अच्] आगे ले जाना, निरन्तर गतिशील रहना, अग्रणी।

उद्वहः (पुं०) पुत्र, सुत, तनय।

उदवहनं (नपुं०) [उद्+वह्+ल्युट्] १. उठाना, आश्रय देना, सम्भालना, रख-रखाव करना। २. ले जाना, आरूढ़ होना, वाहन पर चढ़ना।

उद्वान (वि०) [उद्+वन्+घञ्] वमित, निःसरित, उगला हुआ।

उद्वानं (नपुं०) अंगीठी, चूल्हा।

उदवान्त (वि०) [उद्+वम्+क्त] वमन किया गया, उगला गया।

उद्वापः (पुं०) [उद्+वप्+घञ्] उगलना, बाहर फेंकना।

उद्वासः (पुं०) [उद्+वस्+घञ्] तिलाञ्जलि देना, निर्वासन।

उद्वासनं (नपुं०) [उद्+वस्+णिच्+ल्युट्] निर्वासन, तिलाञ्जलि देना, निकालना, बाहर करना।

उद्वाहः (पुं०) [उद्+वह्+घञ्] १. सम्भालना, आश्रय देना। २. विवाह, पाणिग्रहण।

उद्वाहनं (नपुं०) [उद्+वह्+णिच्+ल्युट्] १. उठाना, जगाना, सचेत करना। २. विवाह, पाणिग्रहण।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उद्वाहिक (वि०) [उद्+वाह्+ठन्] विवाह विषयक, पाणिग्रहण सम्बन्धी।

उद्वाहिन् (वि०) [उद्+वह्+णिनि] १. उठाने वाला, खींचने वाला, ले जाने वाला। २. विवाह करने वाला।

उद्विग्न (भू० क० कृ०) [उद्+विज्+क्त] दुःखित, पीड़ित, व्याकुल, संतप्त, चिंतित, शोकाकुल। (जयो० वृ० १५/२) उदेति सविता ताम्रस्ताम्र एवास्तमेति च। सम्पत्तौ च विपत्तौ च महतामेकरूपता।।

उद्विग्नमन (वि०) खिन्न मन वाला, दुःखित मन वाला, शोकाकुल। (दयो० ८७)

उद्वीक्षणं (नपुं०) [उद्+वि+ईक्ष्+ल्युट्] १. ऊपरी दृष्टि, ऊर्ध्वावलोकन। २. अक्षि, दृष्टि, नेत्र।

उद्वीजनं (नपुं०) [उद्+वीज्+ल्युट्] पंखा करना, हवा देना, पंखा झलना।

उद्वृंहणं (नपुं०) [उद्+वृंह्+ल्युट्] वृद्धि, वर्धन, विकास।

उद्वृत्त (भू० क० कृ०) [उद्+वृत्+क्त] ऊर्ध्वगत, ऊँचा किया गया, उठाया हुआ, उमड़ा हुआ।

उद्वेगः (पुं०) [उद्+विज्+घञ्] १. उत्तेजना, क्षोभ, व्याकुलता। २. कांपना, हिलना, लहराना। ३. आतंक, शोक, चिन्ता, खेद, विस्मय, आश्चर्य भय।

उद्वेगकारक (वि०) क्षोभजनक। (जयो० वृ० १/१०७)

उद्वेजनं (नपुं०) [उद्+विज्+ल्युट्] उत्तेजना, क्षोभ, व्याकुलता, शोक, चिन्ता, खेद, विस्मय। २. पीड़ा, कष्ट देना।

उद्वेदि (वि०) [उन्नता वेदिर्यत्र] उन्नत आसन, उच्चासन, ऊपर गद्दी।

उद्वेपः (पुं०) [उद्+वेप्+अच्] कांपना, हिलना।

उद्वेल (वि०) [उत्क्रान्तो वेलाम्] १. सीमा उल्लंघन। २. तट से बाहर सीमा पार।

उद्वेल्लित (भू० क० कृ०) [उद्+वेल्ल+क्त] हिलाया हुआ, कंपित किया, उछाला हुआ।

उद्वेल्लिम (वि०) उकेलने की अवस्था।

उद्वेष्टनं (वि०) १. वेष्टन रहित, बन्धन रहित, खुला हुआ, लपेटहीन, ढीला किया गया।

उद् [illegible] (नपुं०) घेरा, बाड़, बाड़ा, कांटों से बना घेरा।

उद्वोढः (पुं०) [उद्+वह्+तृच] पति।

उधस् (नपुं०) [उन्द्+असुन्] ऐन, ओडी।

उन्द (सक०) आर्द्र करना, गीला करना, स्नान करना, तर करना।

उन्दुर (पुं०) [उन्द्+उरु] चूहा, मूषक।

उन्दुरुः (पुं०) [उन्द्+उरु] मूषक, चूहा।

उन्दुर-संग्रह (वि०) चूहों का समूह। (सम्० ९/२३)

उन्नत (भू० क० कृ०) [उद्+नम्+क्त] १. प्रमुख, श्रेष्ठ, अच्छा। (सुद० ३/४६) २. उन्नयन, उत्थान। ३. बृहद् ०बड़ा, ०विस्तृत, ०फैला हुआ, ०उत्तुंग, ऊँचा। (सुद० ७८) ४. उन्नत किया, उठाया।

उन्नतगुणः (पुं०) उत्तमगुण, श्रेष्ठगुण। 'भूमण्डलोन्नतगुणादिव' (सुद० ३/४६)

उन्नतगृहं (नपुं०) उत्तम घर, राज प्रासाद, महल।

उन्नत् चरणं (नपुं०) काव्य का सुन्दर पाद।

उन्नतध्वजः (पुं०) उच्च ध्वज, उठा हुआ ध्वज, फहराता हुआ ध्वज।

उन्नतनदी (स्त्री०) फैली हुई नदी प्रवाहशील।

उन्नतफलं (नपुं०) उत्तम फल, अच्छे फल।

उन्नतभावः (पुं०) श्रेष्ठभाव, शुभ भाव।

उन्नत-मेघः (पुं०) उमड़े हुए मेघ।

उन्नतयतिः (पुं०) उत्तम यति।

उन्नत-रजनी (स्त्री०) श्रेष्ठ रात्रि।

उन्नतवंशः (पुं०) उच्चकुलोत्पन्न। (सुद० ३/६) उत्तम वंश। (जयो० ६/५४)

उन्नतवंशालिन् (वि०) उत्तम कुलोत्पन्न। (वीरो० ७/१६)

उन्नतशिरस् (वि०) अति अभिमानी।

उन्नतावत (वि०) उठा एवं गिरा हुआ। (जयो० वृ० ३/६)

उन्नतिः (स्त्री०) [उद्+नम्+क्तिन्] उन्नयन, उत्कर्ष, अभ्युदय, विकसित, उच्च, विशाल, ऊँचाई। (सुद० ४/

उन्नतिमत् (वि०) उन्नत, उत्थानयुत, प्रगतिशील।

उन्नतिविधायक (वि०) सुधारिन्, प्रजाहित। उन्नति में तत्पर। (जयो० वृ० ९/६५)

उन्नतिशाली (वि०) प्रगतिशाली, गतिशील। (जयो० वृ० १/७९)

उन्नमनं (नपुं०) [उद्+नम्+ल्युट्] उन्नयन, उन्नत, ऊँचा, उठाना, ऊपर करना।

उन्नम् (वि०) [उद्+नम्+रन्] उन्नत, उत्तुंग, ऊँचा, सीधा, एक सा स्थित। (जयो० १३/११) 'उन्नम्रमूर्ध्वगतं' (जयो० वृ० १३/११)

उन्नम्रवक्त्रः (पुं०) उर्ध्व मुख, मुख को ऊपर उठाए हुए। 'उन्नम्र मूर्ध्वगतं वक्त्रमाननं यस्य स ऊर्ध्वमुखः' (जयो० वृ० १३/११)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उन्नय् (सक०) चिन्तन करना, स्मरण करना। (जयो० २/३०)

उन्नयः (पुं०) [उद्+नी+अच्+घञ्] १. उन्नत, उठाना, ऊँचा करना। २. सादृश्य, एक सा, सीधा सरल।

उन्नयनं (नपुं०) १. ऊपर उठाना, ऊँचा करना। २. पर्यालोचन, विचार विमर्श।

'उन्नयनम् 'उन्नतिं प्रापयन्' (जयो० वृ० ३/६)

उन्नस (वि०) [उन्नता नासिका यस्य] ऊँची नाक वाला, उठी हुई नासिका वाला।

उन्नादः (पुं०) [उद्+नद्+घञ्] गूंज, चिंघाड़, उग्रनाद, उच्चशब्द, दहाड़, चिल्लाहट।

उन्नाभ (वि०) ०उभरी/उठी हुई नाभी वाला ०तोंद वाला, ०तुंदिल।

उन्नाहः (पुं०) [उद्+नह्+घञ्] उभार, उठाव।

उन्निद्र (वि०) [उद्गता निन्द्रा यस्य सः] जागृत, निन्द्रा रहित, सचेत, जागा हुआ।

उन्नेतृ (वि०) [उद्+नी+तृच्] उठाने वाला, सहारा देने वाला।

उन्मज्जनं (नपुं०) [उद्+मस्ज्+ल्युट्] बाहर निकालना, उगलना, पानी के कुल्ले करना।

उन्मत्त (भू० क० कृ०) [उद्+मद्+क्त] पागल, विक्षिप्त, मदहोश, उन्मादित हुआ। समुन्मत्ते किमेतावत् समुन्मत्तेदृशीहि न।' (सुद० ८४)

उन्मत्तग (वि०) मदकृति, उन्मत्त हुआ। (जयो० २/

उन्मत्तकल्प (वि०) ०प्रमत्तान्यधीर, ०भ्रमित-जन, ०विक्षिप्त लोग। (वीरो० १२/३२)

उन्मत्तकीर्तिः (स्त्री०) कीर्ति से उन्मत्त होने वाला।

उन्मत्त-दर्शन (वि०) देखने में प्रमादी।

उन्मत्त-दोषः (वि०) भ्रान्तचित्त, कायोत्सर्ग का एक दोष।

उन्मत्तभावः (पुं०) ०मदकारक भाव, ०मदानुभाव ०क्षीणत्वभाव। (जयो० वृ० १५/१४)

उन्मथनं (नपुं०) [उद्+मथ्+ल्युट्] १. झाड़ना, फेंक देना। २. वध करना।

उन्मद (वि०) [उद्गतो मदो यस्य] शराबी, उन्मादी, प्रमादी, पागल, विक्षिप्त।

उन्मदन (वि०) [उद्गतो मदनोऽस्य] काम पीड़ित, प्रेमवशीभूत।

उन्मदिष्णु (वि०) [उद्+मद्+इष्णुच्] विक्षिप्त, पागल, उन्मादी, प्रमादी।

उन्मनस्क (वि०) [उद्भ्रान्त मनो यस्य] १. उत्तेजित, विक्षुब्ध, संक्षुब्ध। २. अनादर, सम्मान रहित, उदासीन, दु:खित, पीड़ित, व्याकुल।

उन्मनस्कप्रकार (वि०) अनादर भाव, उत्तेजना। (जयो० १७/२३)

उन्मनस्कता (वि०) उदासीनता, क्षुब्धत, अनमनापन। 'जाता भवतामुन्मनस्कता' (सुद० ३/३६)

उन्मनीभावः (पुं०) विभ्रम भाव, उदासीनता, भाव, विक्षिप्तताभाव। (जयो० वृ० ६/३५)

उन्मन्थः (पुं०) [उद्+मन्थ्+घञ्] क्षोभ, व्याकुलता, पीड़ा, राग-द्वेष भाव।

उन्मन्थनं (नपुं०) [उद्+मन्थ्+ल्युट्] क्षोभ/दु:ख/पीड़ा/करना, व्याकुल करना।

उन्मयूख (नपुं०) ०प्रकाशमान् ०दीप्ति युक्त।

उन्मर्दनं (नपुं०) [उद्+मृद्+ल्युट्] मलना, मालिश करना, लेप लगाना।

उन्माथः (पुं०) [उद्+मथ्+घञ्] ०यातना, ०पीड़ा, ०कष्ट, ०क्षुब्ध करना।

उन्माद (वि०) [उद्+मद्+घञ्] विक्षिप्त, पागल, असंतुलित।

उन्मादनं (नपुं०) [उद्+मद्+णिच्+ल्युट्] मादक, मोहक।

उन्मानं (नपुं०) [उद्+मा+ल्युट्] मापना, तोलना, माप करना। जिससे तोला जाता है, तराजू, तुला। 'उन्मीयतेऽनेनोन्मीयत इति रोन्मानं'

उन्मार्ग (वि०) [उत्क्रान्तः मार्गात्] १. कुमार्ग, कुपथ। २. अनुचित आचरण।

उन्मार्गः (पुं०) कुआचरण, ०कु-पथ, ०अनाचार।

उन्मार्गगामिन् (वि०) कुआचरण को अपनाने वाला, कुपथगामी। (वीरो० १८/४२) (जयो० वृ० १/३१)

उन्मार्गदेशक (वि०) मिथ्यामार्ग का उपदेष्टा।

उन्मार्ग-पंथिन् (वि०) मिथ्यामार्ग का विध्वंसक।

उन्मार्जनं (नपुं०) [उद्+मृज्+णिच्+ल्युट्] प्रमार्जन, प्रक्षालन, पोंछना, साफ करना, रगड़ना।

उन्मार्जित (वि०) प्रमार्जित, प्रक्षालित।

उन्मितिः (स्त्री०) माप, तोल, मूल्य।

उन्मिश्र (वि०) मिश्रित, नाना प्रकार का।

उन्मिषित (भू० क० कृ०) [उद्+मिष्+क्त] उन्मीलन रहित, जागृत, नेत्र उद्घाटित, खुला हुआ।

उन्मीलित (वि०) जागृत, सचेष्ट, खुली हुई आंखों वाला।

उन्मुख (वि०) सम्मुख, सामने, निकटस्थ, समीपवर्ती।

उन्मूलय् (सक०) उखाड़ना, निकालना, मूलोच्छेद करना। सोऽयं जन्म-जरान्तकत्रयभवं सन्तापमुन्मूलयन्' (मुनि० ७) 'उन्मूलयन्ति स्वतरुरुहाणि' (वीरो० २१/११)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उन्मूल्य (वि०) 'उन्मूलन कर, मूलोच्छेदकर। (सम्य० १४७) 'भूयो विरराम करः प्रियोन्मुखः' (जयो० ६/११९)

उन्मुद्र (वि०) [उद्गता मुद्रा यस्मात्] खिला हुआ।

उन्मुद्रय् (सक०) छोड़ना, त्यागना। 'सुकेशि! उन्मुद्रय मुद्रणां गिरां' (जयो० २४/४२)

उन्मूलनं (नपुं०) [उद्+मूल्+ल्युट्] उखाड़ना, सामूल नाश, मूलोच्छेदन।

उन्मेदा (स्त्री०) स्थूलता, मुटापा।

उन्मेषः (पुं०) [उद्+मिष्+घञ्] १. नेत्रोदघाटन, आँख खोलना, पलक मारना। २. खिलना, खुलना, फूलना, विकसित होना। ३. प्रकाश, प्रभा, चमक, दीप्ति। ४. प्रकट होना, दिखाई देना।

उन्मोचनं (नपुं०) [उद्+मुच्+ल्युट्] खोलना, उघाड़ना।

उप (उपसर्ग) यह उपसर्ग संज्ञाओं और क्रियाओं दोनों में लगता है, इसके लगने से कई अर्थ उपस्थित हो जाते हैं-१. निकटता, समीपता। (जयो० १३/१७) (उपकण्ठ) संसक्ति-उपगच्छति, उपस्थित। २. शक्ति, बल, योग्यता-उपकरोति। ३. व्याप्त, विस्तार, विस्तीर्ण-उपकीर्ण। ४. परामर्श, शिक्षण-उपदिशति। ५. मृत्यु-उपरति। ६. दोष, अपराध-उपघात। ७. देना, प्रदान करना-उपनयति। उपादान (सम्य० १४) ८. चेष्टा, प्रत्न।- ९. उपक्रम, आरम्भ-उपक्रमते। १०. अभ्यास, अध्ययन-उपाध्याय। ११. आदर, पूजा, सम्मान-उपस्थान। १२. प्राप्त, उपलब्ध-उपेतः (सुद० ४/१७) उपैति-(वीरो० २/३२)

उपकण्ठः (पुं०) [उपगतः कण्ठम्] सामीप्य, सानिध्य, निकटता। (सुद० ३/२९) 'स्तवकगुच्छोपकण्ठ-स्थले' (समु० २/२८)

उपकण्ठः (पुं०) मधुर कण्ठ। (जयो० १७/१८)

उपकण्ठ (अव्य०) समीप, निकट, ग्रीवा सन्निकट। 'उपकण्ठमकम्पनादयः' (जयो० १३/१७)

उपकण्ठी (वि०) मधुरकण्ठ वाली। 'नापोपकण्ठं सहसोकण्ठीकृतापि यूना पिकमञ्जुकण्ठी' (जयो० १७/१८)

उपकथा (स्त्री०) लघु कथा, किस्सा-कहानी।

उपनिष्ठिका (स्त्री०) कन्नी अंगुली के पास वाली अंगुली।

उपकरणं (नपुं०) [उप+कृ+ल्युट्] १. साधन, सामग्री, वस्तु, द्रव्य, पात्र। २. उपस्कर। (जयो० वृ० २२/३६) 'येन निर्वृत्तेरुपकारः क्रियते तदुपकरणम्' (स० सि० २/१७) 'उपक्रियतेऽनेनेति उपकरणम्' (त० वा० २/१७) 'उपक्रियतेऽनुगृह्यते ज्ञानसाधनमिन्द्रियमनेनेन्युपकरणम्' (भ० आ० टी० ११५) अनुग्रह सेवा।

उपकरण-बकुशः (पुं०) उपकरण का इच्छुक साधक- 'उपकरणबकुशो बहुविशेषयुक्तोपकरणाकांक्षी' (स० सि० ९/४७)

उपकरण-संयमः (पुं०) पुस्तकादि संयम।

उपकरण-संयोजनं (नपुं०) पुस्तकादि का प्रजार्जन। (भ० आ० टी० ८१५)

उपकरणेन्द्रियं (नपुं०) इन्द्रिय विषय का ग्रहण नहीं होना।

उपकर्णनं (नपुं०) [उप+कर्ण्+ल्युट्] श्रवण, सुनना।

उपकर्णिका (स्त्री०) [उपकर्ण+कन्+टाप्] जनश्रुति, अफवाह, व्यर्थ का कथन, सुनना/फैलाना।

उपकर्तृ (वि०) [उप+कृ+तृच्] अनुग्रहकर्ता, आभारी, उपयोगी, उपकारक।

उपकल्प (वि०) तैयार, सचेष्ट।

उपकल्पधर (वि०) सहायकर, सहायक, उपकारक। (जयो० ९/४३)

उपकल्पनं (नपुं०) [उप+कृप्+णिच्+ल्युट्] कथन, विकार, सृजन। (जयो० ९/४३) 'तदनुतापि न मेऽप्युपकल्पनम्' (जयो० ९/४३)

उपकल्पित (वि०) सृजित करता हुआ, बनाता हुआ, रचता हुआ। 'रात्रं तदग्र-उपकल्पितवह्निभावः। (सुद० ४/२४)

उपकाननं (नपुं०) उपवन, आराम, उद्यान, बगीचा। 'सुरभितारिवलदिश्युपकानने' (जयो० ९/६१)

उपकारः (पुं०) [उप+कृ+घञ्] सहायता, सहयोग, सहकारिता, सेवा, अनुग्रह, आभार। 'प्रजानां हिताय' (जयो० १२/६६) (सुद० ४/४५) १. तैयारी, उपकृत। (जयो० वृ० १/४०) २. अलंकरण, आभूषण, शृंगार साधन।

उपकारिन् (वि०) उपकारक, सेवक, सहभागी।

उपकारी (स्त्री०) धर्मशाला, उपाश्रय, एकान्त ठहरने का स्थान।

उपकार्य (वि०) [उप+कृ+ण्यत्] सहायता करने के लिए उपयुक्त/समीचीन। 'मयोऽप्यविनिविधिरेष मयोपकार्यः' (सुद० ४/२४)

उपकुञ्चि (स्त्री०) [उप+कुञ्च्+कि] छोटी एला, इलायची।

उपकुम्भ (वि०) १. समीपस्थ, निकटस्थ, संसक्त। २. अकेला, एकाकी, निवृत्त।

उपकुल्या (स्त्री०) [उप+कुल+यत्+टाप्] नहर, खाई।

उपकूपम् (अव्य०) कुएं के निकट बना गाद, पानी का पात्र।

उपकृ (सक०) अर्पण करना, उपकार करना, डालना, समर्पण

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करना, अभिषेक करना। शिरसि स्फुटमक्षतान् ददौ। ह्यपकुर्वन्नपयोदकैः पदौ' (जयो० १३/२) उपकुर्वन्-अभिषिञ्चन्।

उपकृत (वि०) उपकार करने वाला, आभार व्यक्त कर्ता, अनुग्रहार्थी। 'इतः परस्योपकृतावतश्च' (जयो० १/४०) [उप+कृ+क्तिन्]

उपकृतिः (स्त्री०) उपक्रिया, अनुग्रह, आभार।

उपक्रमः (पुं०) [उप+क्रम+घञ्] ०अपवर्तन, ०परिणमन ०प्रारम्भ, ०समारम्भ, ०उपाय, ०योजना। अर्थमात्मन उप समीपं क्राम्यति करोत्युपक्रम, युक्ति, उपचार। (धव० १/७२) 'वैद्योपक्रमसहितांस्तत्र' (जयो० ६/१०)

उपक्रमणं (नपुं०) [उप+क्रम+ल्युट्] १. उपगमन, आरम्भ। २. व्याधि निदान।

उपक्रम-कालः (पुं०) अभीष्ट अर्थ को समीप लाने का समय। 'उपक्रमस्य काला भुयिन्द्रक्रियापरिणाम्' (जैन०ल० २६६)

उपक्रीडा (स्त्री०) क्रीड़ा स्थल, खेल का मैदान।

उपक्रोशः (पुं०) [उप+क्रुश+घञ्] निन्दा, गर्हा, अप्रशंसा, अपवाद, अपकर्ष।

उपक्रोष्ट (पुं०) [उप+क्रुश्+तृच्] गधा, गर्दभ।

उपक्लृप्तिः (स्त्री) सम्पत्ति, धन, वैभव, ऐश्वर्य। (जयो० २८/५५)

उपक्वः (पुं०) [उप+क्वण+अप्+घञ्] वीणा की झंकार।

उपक्षत (वि०) विनष्ट, ह्रासगत।

उपक्षय (वि०) हानि, नाश, विनाश, ह्रास, व्यय।

उपक्षेपः (पुं०) [उप+क्षिप्+घञ्] १. उछालना, फेंकना। २. उल्लेख, इंगित, संकेत।

उपक्षेपणं (नपुं०) [उप+क्षिप्+ल्युट्] फेंकना, उछालना, डालना। दोषारोपण करना।

उपग (वि०) [उप+गम्+ट] पीछे चलने वाला, सम्मिलित होने वाला, प्राप्त करने वाला, अनुगमन करने वाला।

उपगणः (पुं०) श्रेणी की अप्रधानता, भिन्न श्रेणी, अन्य कक्षा।

उपगत (भू० क० कृ०) [उप+गम्+क्त] १. गया हुआ, पहुंचा हुआ, प्राप्त, 'प्रौढतामुपगतानि बिभूनां मानसानि' (जयो० ५/७०) 'उपगतानि प्राप्तानि-जयो० ५/७०)

उपगतिः (स्त्री०) [उ+गम+क्तिन्] निकट जाना, उपागमन, समीपस्थ आना, उपलब्धि, प्राप्ति, ज्ञान।

उपगमः (पुं०) [उप+गम्+अप्] जाना, १. पहुंचना, निकट होना, समीप होना। २. उपलब्धि, प्राप्ति। ३. अनुभव, जानकारी, स्वीकृति।

उपगामी (वि०) समीप जाने वाला। (जयो० १/२१)

उपगम्य (सं०कृ०) पास जाकर, निकट पहुंचकर। (जयो० ४/१) अनुप्रेक्षार्थचिन्ता वा तज्जैरभ्युपगम्यते' (सम्य० ११६) उपगम्यते-वर्तमानकालिक क्रिया।

उपगिरिः (पुं०) पर्वत के समीप।

उपगिरि (अव्य०) पहाड़/पर्वत के निकट।

उपगु (अव्य०) गौ समीप, गौ के निकट।

उपगुप्त (वि०) समावृत, धारण करने वाली, ढके रखने वाली। (सुद० १/१७) 'देहमेषोपगुप्ता गुणसम्पदेह' (वीरो० ६/३)

उपगुरुः (पुं०) सहायक अध्यापक, सहायक शिक्षक, शिक्षक के सन्निकट।

उपगूढ (भू० क० कृ०) [उप+गूह+क्त] गुप्त, प्रच्छन्न, ढंका हुआ, आच्छादित, आलिंगित।

उपगूहनं (नपुं०) [उप+गूह्+ल्युट्] १. गुप्त, छिपाना, प्रच्छन्न, ढका, आवृत। २. सम्यक्त्व का एक अंग 'उपगूहनं चातुर्वर्ण्यश्रमणसंघ-दोषापहरणं प्रमादाचरितस्य च संवरणम्' (मूलाचार वृ० ४/४) 'प्रच्छादनं विनाशनं गोपनं झम्पनं तदेवोपगूहनम्' (भ० आ० टी० ४५)

उपग्रहः (पुं०) [उप+ग्रह्+अप्] प्रतिज्ञा, अनुग्रह, प्रोत्साहन, पकड़। (दयो० २३ 'उपग्रहोऽनुग्रहः' (त० वा० ५/१७)

उपग्रहणं (नपुं०) [उप+ग्रह्+ल्युट्] ग्रहण करना, पकड़ना, सहारा देना, आधार बनना।

उपग्राहः (पुं०) [उप+ग्रह्+घञ्] उपहार देना, प्राभृत देना, भेंट देना, वस्तु प्रदान करना।

उपग्राहक (वि०) खरीददार, ग्राहक, क्रय कर्ता। 'गुडमिव वणिजामुपग्राहकैः' (दयो० ५०)

उपग्राह्यः (पुं०) [उप+ग्रह्+ण्यत्] उपहार, प्राभृत, भेंट।

उपगृहं (नपुं०) एकान्त स्थान, ठहरने का स्थान।

उपघातः (पुं०) [उप+हन्+घञ्] १. प्रहार, ०चोट, ०आघात, ०विनाश। 'उपघातमहो करस्य सोढुम्' (जयो० ११/६०) २. प्रशस्त ज्ञान दूषण 'प्रशस्तज्ञानदूषणमुपघातः' (स० सि० ६/१०) 'दोषोदभावनं दूषणमुपघात इति' (त० वा० ६/१०) प्रशस्तस्यापि ज्ञानस्य दर्शनस्य वा दूषणमुपघातः' (त० श्लोक० ६/१०)

उपघातक (वि०) प्रहारक, विध्वसंक।

उपघातनामकर्मः (पुं०) उपघातनामकर्म स्वयंकृत कारणों से घात। 'यस्योदयात् स्वयं कृतोदबन्धनप्राणापान-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

निरोधादिनिमित्त उपघातो भवति तदुपघातनाम।' (भ० आ० टी० २/२४)

उपघोषणं (नपुं०) [उप+घुष्+ल्युट्] घोषणा, ढिंढोरा, विज्ञापन, प्रकाशित करना।

उपघ्न (पु०) [उप+हत्+क] शरण, आश्रय, संरक्षा।

उपचक्रः (पुं०) एक हंस विशेष।

उपचक्षुष (नपुं०) चक्षुताल, चश्मा, उपनेत्र।

उपचयः (पुं०) १. आधिक्य, वृद्धि, महत्, २. इकत्र, इकट्ठा, संयोग, युग्म। ३. परिमाप, माप। ४. समृद्धि, उत्थान, अभ्युदय। ५. निसिञ्चन करना, क्षेपण करना, गृहीत कर्म पुद्गलों के अधिकाल को छोड़कर आगे ज्ञानावरणादि स्वरूप में निषिञ्चन करना।

उपचयपदं (नपुं०) विशिष्ट अवयव, शरीर के अवयवों में वृद्धि होने से जो विशिष्ट अवयव हों। 'तत्रोपचितावयवनिबन्धनानि' (धव० १/७७)

उपचरः (पुं०) [उप+चर्+अच्] उपचार, निदान, व्याधि निरोध, चिकित्सा।

उपचरणं (नपुं०) [उप+चर्+ल्युट्] निकट जाना, समीप गमन करना।

उपचरित-भावः (पुं०) उपचार भाव 'एकत्र निश्चितो भावः परत्र चोपचर्यते'

उपचरित-सद्भूत व्यवहारनयः (पुं०) उपाधि सहित गुण और गुणी में भेद को जो विषय करता है। जीव के मतिज्ञान आदि गुण।

उपचर्या (स्त्री०) संग्रहण, उपचार, सेवा।

उपचारः (पुं०) [उप+चर्+घञ्] ०सेवा, ०चिकित्सा, ०सुश्रूषा, ०सम्मान, ०अभयदान, ०शिष्टिता, ०नम्रता, ०सत्कार, ०सङ्क्रम, पूंछना। (सुद० २७७) 'किं विधोः शरदि नाप्युपचारः' (जयो० ४/९)

उपचारछलं (नपुं०) सत्य धर्म के सद्भाव का निषेध 'धर्माध्यारोपनिर्देशे सत्यार्थ प्रतिषेधनम्' (त०श्लोक १/२९९)

उपचार विनयः (पुं०) आचार्य आदि के सम्मुख खड़ा होना। 'अञ्जलीकरणादिरूपचारविनयः'

उपचितिः (स्त्री०) [उप+चि+क्तिन्] ०इकट्ठा करना, ०संग्रह करना, ०जोड़ना, ०संचय करना, ०चयन करना, ०जुटाना।

उपचूलनं (नपुं०) [उप+चूल्+ल्युट्] जलाना, उष्ण करना, तपाना।

उपच्छदः (पुं०) [उप+छद्+णिच्+घ] आवरण, ढक्कन, चादर।

उपछन्दनं (नपुं०) [उप+छन्द्+णिच्+ल्युट्] उकसाना, प्रलोभन देना, आमंत्रण देना।

उपजनः (पुं०) [उप+जन्+अच्] वृद्धि, समायोग, जोड़, उपगमनस्थान।

उपजल्पनं (नपुं०) [उप+जल्प्+ल्युट्] वार्तालाप, बातचीत, आलाप।

उपजातः (पुं०) [उप+जप्+घञ्] समीपस्थ कथन, गुप्त कथन, कर्ण में कहना।

उपजायमान (वि०) उत्पन्न होने वाला। (वीरो० २०/२१)

उपजीवक (वि०) [उप+जीव+ण्वुल] आश्रित रहने वाला, आधारभूत, दूसरे के सहारे जीविका करने वाला।

उपजीवनं (नपुं०) [उप+जीव्+ल्युट्] आजीविका, जीने का आश्रय, जीविकोपार्जन का साधन।

उपजीव्य (वि०) [उप+जीव्+ण्यत्] जीविका देने वाला, आश्रयदाता, संरक्षक।

उपज्ञं (वि०) कथित, परिभाषित, विवेचित। 'आप्तोपज्ञमनुल्लंघ्यमदृष्टेष्ट विरुद्धवाक्।' (सम्य० २३)

उपज्ञा (स्त्री०) [उप+ज्ञा+अङ्] उपजा ज्ञान, आगत ज्ञान, समायोजित ज्ञान।

उपढौकनं (नपुं०) [उप+ढौक्+ल्युट्] ससम्मान उपहार, भेंट।

उपढौकित (वि०) आरोहित, आरोहित, चढ़ा हुआ। 'रथमेवमथोपढौकितः किम्' (जयो० १०/५१)

उपतस्थुर (वि०) उपस्थित हुए (वीरो० ७/१२)

उपतापः (पुं०) [उप+तप्+घञ्] १. उष्ण, तेज, गर्मी, संताप। २. दुःख, वेदना, कष्ट।

उपतापक (वि०) बाह्य संतापक, संतप्त होने वाला। (जयो० २६/२५) 'बहिरूपद्रवकारक अरिमिनिभिनोपतापकं जलवत् तृद्दलनाश्रयः स्वकम्' (जयो० २६/२५)

उपतापी (वि०) संतप्ती, पश्चात्तापशील। (जयो० १५/५८)

उपतापनं (नपुं०) [उप+तप्+णिच्+ल्युट्] १. गरम करना, तपाना। २. कष्ट देना, सताना आकुलित करना।

उपताधिन् (वि०) [उप+तप्+णिनि] १. गरम करने वाला, जलाने वाला, संतप्त करने वाला। २. व्याधि जनित, रोग युक्त।

उपतिष्यम् (नपुं०) अश्लेषा नक्षत्र, पुनर्वसु नक्षत्र।

उपत्यका (स्त्री०) [उप+त्यकन्-पर्वतस्यासन्नं स्थलमुपत्यका] पर्वत की तलहटी, नीचे का भाग।

उपदंशः (पुं०) [उप+दंश्+घञ्] १. काटना, डङ्क मारना, डसना। २. रोग (आतशक)। ३. भूख-प्यास वाली वस्तु।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उपदर्शक: (पुं०) [उप+दृश्+णिच्+ण्वुल्] १. मार्गदर्शक, निर्देशक। २. द्वारपाल, साक्षी।

उपदश (वि०) दश तक।

उपदा (स्त्री०) [उप+दा+अङ्] उपहार, भेंट, प्राभृत। (सुद० ७१)

उपदानं (नपुं०) [उप+दा+ल्युट्] १. उपहार, प्राभृत, भेंट। २. सुरक्षा, संरक्षण, अनुग्रह, कृपा।

उपदिश् (अक०) उपदेश करना, सिखाना, पढ़ाना, अभ्यास करना, समझाना।

उपदिश् (स्त्री०) मध्यम दिशा, ईशानदिशा, आग्नेय दिशा, नैऋत्य दिशा आदि।

उपदेव: (पुं०) कुदेव, मिथ्यादेव।

उपदेश: (पुं०) [उप+दिश्+घञ्] परिषेक (जयो० वृ० २/१३८) १. शिक्षण, निर्देशन, अध्ययन, ज्ञान, देशना, तत्त्वज्ञानाभ्यास, संदेश। २. प्रवचनप्रतिपादन, निरूपण, प्ररूपणा। 'तत्त्वोप - पशकृत्सार्वशास्त्रं कापथघट्टनम्' (सम्य० ९३) 'येषांसु वाच: सहजोपदेशा:' (भक्ति० १२) 'उपदेशो मौनीन्द्र प्रवचनप्रतिपादनरूप:।'

उपदेशक (वि०) [उप+दिश्+ण्वुल्] प्रवचनकार, व्याख्याकार, शिक्षादायी अध्ययन कराने वाला।

उपदेशकरणं (नपुं०) प्रवचनकार। (सुद० ९२)

उपदेशकर्ता (वि०) प्रवचनकार, व्याख्याकार।

उपदेशनं (नपुं०) शिक्षण, अध्ययन।

उपदेश-प्रदायक (वि०) अध्ययन कराने वाला, प्रवचनदाता।

उपदेशभाव: (पुं०) निरूपण भाव, अध्ययन भाव, ज्ञानाभ्यास भाव।

उपदेश-रुचि: (स्त्री०) तत्त्वश्रद्धा, उत्तम रुचि, ज्ञानरुचि।

उपदेशविधानं (नपुं०) तत्त्वचिंतन विधि। (सुद० ९४)

उपदेश-सम्यक्त्व: (पुं०) आत्म तत्त्व श्रद्धान के प्रति सम्यक् श्रद्धा, पुराण पुरुषों के प्रति श्रद्धा।

उपतर्प् (सक०) पिलाना, देना। 'प्राणहारिणमहो स्फुरन्नय: कोऽत्र सर्पमुतर्पयेत् स्वयम्' (जयो० २/१०२)

उपतर्पणं (नपुं०) दान देना, अर्पण करना। 'पात्राणामुपतर्पणं प्रतिदिनम्' (सुद० ४/४७)

उपदेशिनी (वि०) निकलने वाली, नि:सृत होने वाली, प्रसूत होने वाली। 'या मलापहरणोपदेशिनी' (जयो० ३/१०) 'उप समीपे देशिनी' (जयो० वृ० ३/१०)

उपदेष्टृ (वि०) [उप+दिश्+तृच्] प्रवचनकार, व्याख्याकार, शिक्षणदाता, अध्ययन कराने वाला।

उपदेह: (पुं०) [उप+दिह्+घञ्] १. विलेपन,शृंगार, प्रसाधन, लेप। २. चादर, आवरण, ढक्कन।

उपदोह: (पुं०) [उप+दुह्+घञ्] पात्र में दूध दुहना, स्तन के आग्र भाग से दूध दुहना।

उपद्रव: (पुं०) [उप+द्रु+अप्] १. कष्ट, संकट, बाधा, पीड़ा, आपत्ति, विपत्ति। २. हानि, उत्पीड़न, राष्ट्र सकट, विद्रोह, अशान्ति। 'न जातुचिदभूल्लक्ष्यस्तत्कृतोपद्रवे पुन:' (सुद० १३५)

उपद्रवकर (वि०) उत्पीड़न करने वाला, अशान्ति उत्पन्न करने वाला। इत्यात्मीयमलोत्करं च भवतैकान्ते तथा त्यज्यताम्' (मुनि० १३)

उपद्रवहर (वि०) ईतिहृत, व्याधि हरण करने वाला। ईति भीति दूर करने वाला। (जयो० वृ० २/११८)

उपद्रावणं (नपुं०) १. प्राणियों का कष्ट, पीड़ा, उत्पीड़न। २. आधाकर्म विशेष। 'जीवस्य उपद्रवणं ओद्दावणं णाम' (धव० १३/४६)

उपद्रुत: (पुं०) ०उपद्रव, ०उत्पीड़न, ०कष्ट, ०बाधा, हानि, ०उपहत। (वीरो० १/१२) 'उपद्रुतोऽशुस्तिमिरै:' (जयो० १५/२२) 'उपद्रत उपद्रवं गत: सन भयेऽपि संकटसमयेऽपि' (जयो० वृ० १५/२२) 'उपद्रुत: स्वात्स्वयमित्ययुक्तिर्यस्य प्रभावान्निरूपद्रवा पू:।' (वीरो० १२/४७)

उपधर्म: (पुं०) [उप+धृ+मन्] उपविधि, धर्म के विरुद्ध नियम, अतिचार युक्त धर्म।

उपधा (स्त्री०) [उप+धा+अङ्] १. उपाय, नियम, विधि, परीक्षण। २. छल, धोका। 'पर-वञ्चनेच्छा उपधा' (जैन ल०२७०) ३. पीड़ा (जयो० ९/४)

उपधातु: (स्त्री०) ०मिश्रित धातु, ०स्वर्ण, ०रजत, ०तुत्थ, ०कांस, ०राति, ०सिंदूर और शिलाजीत। शरीरधातु दुग्ध, ०रज, ०चर्बी, स्वेद् दन्त, ०बाल और ओज।

उपधानं (नपुं०) [उप+धा+ल्युट्] तकिया, आसंदी, मसनद, दीवान पर ०रखा जाने वाला गोल तकिया, ०उपधान तप 'उपदधातीत्युपधानं तप:' (जैन० ल० २७०) टिकने का आसन, गद्देदार आसन, आराम करना। (दयो० २/१०, शय्येयमुर्वी गगनं वितानं, दीपो विधुर्मञ्जुभुजोपधानम्'। (सुद० ९/१)

उपधानाचार: (पुं०) उपधान का आचरण, भुज रूप उपधान का आधार, ज्ञानाचार के आठ भेदों में पंचम 'उपधानाचार' है।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उपधानीयं (नपुं०) [उप+धा+अनीयर्] तकिया, आराम करना।

उपधारणं (नपुं०) [उप+धृ+णिच्+ल्युट्] १. विचार, विमर्श, विशेष चिन्तन, अनुचिन्तन। २. खींचना।

उपधिः (स्त्री०) [उप+धा+कि] ०कपट परिणाम, ०अनुचित विचार, ०मिथ्याभाव, ०अन्यथा परिणाम, ०छल। 'उपेत्य क्रोधादयो धीयन्तेऽस्मिन्नित्युपधिः, क्रोधाद्युत्पत्ति-निबन्धनो बाह्यार्थ उपधिः।' (धव० १२/२८५) 'परं समस्तोपधि-मुज्झिहाना' (सुद० ११५) उक्त पंक्ति में 'उपधि' का अर्थ परिग्रह है, समस्त परिग्रह का त्यागकर एकमात्र श्वेत वस्त्र धारण किया। 'उपधाति तीर्थं उपधिः' (जैन०ल० २७०)

उपधिक (वि०) [उपधि+ठन्] प्रवञ्चक, छली, कपटी, धूर्तता करने वाला, ठगने वाला।

उपधिवाक् (नपुं०) परिग्रह के संचय युक्त वचन। 'परिग्रहार्जन-रक्षणादिष्वासज्यते सोपधिवाक्' (धव० १/११७)

उपधिविवेकः (पुं०) उपकरणादि का विवेक। 'परित्यक्तानीमानि ज्ञानोपकरणादीनीति वचनं वाचा उपधिविवेकः' (भ० आ० टी० १६०)

उपधूपित (वि०) [उप+धूप+क्त] १. धूप लिया गया, उष्णता युक्त। २. मरणासन्न, पीड़ित।

उपधृतिः (स्त्री०) [उप+ध्मा+ल्युट्] ओष्ठ, ओंठ।

उपध्मानीयः (पुं०) [उप+ध्मा+अनीयर्] ०महाप्राण विसर्ग, ०प् एवं फ् से पूर्व रहने वाला विसर्ग।

उपनक्षत्रं (नपुं०) गौण नक्षत्र, अप्रधान तारे।

उपनगरं (नपुं०) नगर के छोटे बिहार, छोटे छोटे उपनगर, कालोनी, आवास।

उपनत (भू० क० कृ०) १. पहुंचा, आया, प्राप्त हुआ। २. झुका हुआ, नम्रीभूत।

उपनतिः (स्त्री०) [उप+नम्+क्तिन्] १. समीप जाना, २. झुकना, नम्र होना, प्रयास करना।

उपनयः (पुं०) [उप+नी+अच्] १. समीप लाना, ले जाना। २. उपलब्धि, संप्राप्ति। ३. उपनयन संस्कार। ४. नय की शाखा-प्रशाखा, हेतु का उपसंहार, हेतु के साध्यधर्मी का उपसंहार। 'नयानां विषयः उपनयः' (धव० ९/१८२) 'हेतोरूपसंहार उपनयः' (परीक्षामुख ३/४५)

उपनयनं (नपुं०) १. संस्कार विशेष, गुरु आज्ञापूर्वक दीक्षादान। २. उपहार, भेंट, प्राभृत। २. जनेऊ संस्कार। ३. चश्मा, उपनेत्र। (जयो० वृ० २८/९८)

उपनयाभासः (पुं०) साध्य साधनधर्मी का दृष्टान्तधर्मी में उपसंहार।

उपनागरिका (स्त्री०) वृत्त्यानुप्रासालंकार का भेद।

उपनायकः (पुं०) [उप+नी+ण्वुल्] नायक का प्रमुख सहायक।

उपनायिका (स्त्री०) नायिका की प्रमुख सखी।

उपनाहः (पुं०) [उप+नह्+घञ्] १. गठरी, पोटली, गट्ठर। २. लेप, घाव का लेप, मल्हम।

उपनाहनं (नपुं०) [उप+नह्+णिच्+ल्युट्] लेप करना, मालिश करना, उपटन लगाना।

उपनिक्षेपः (पुं०) [उप+नि+क्षिप्+घञ्] न्यास, धरोहर।

उपनिधानं (नपुं०) [उप+नि+धा+ल्युट्] निकट रखना, धरोहर न्यास करना, जमा करना।

उपनिधिः (स्त्री०) [उप+नि+धा+कि] धरोहर, न्यास, वस्तु रखना, गिरवी।

उपनिपातः (पुं०) [उप+नि+पत्+घञ्] सन्निकट जाना, समीप पहुंचना, आकस्मिक आक्रमण करना।

उपनिपातिन् (वि०) [उप+नि+पत्+णिनि] आकस्मिक आगमन।

उपनिबन्धनं (नपुं०) [उप+नि+बन्ध्+ल्युट्] सम्पादित करना, सम्पन्न करना, बांधना, निपटाना, समाप्त करना।

उपनिमन्त्रणं (नपुं०) [उप+नि+मंत्र+णिच्+ल्युट्] निमंत्रण, आमन्त्रण, आज्ञापत्र, प्रतिष्ठापन, उद्घाटन, विमोचन।

उननियमः (पुं०) उपनियम, नियम से रहने के लिए विशेष नियम, आश्रम नियम। 'तद्गतोपनियमान् सुधारयन्' (जयो० २/११८)

उपनिवेशः (पुं०) [उप+नि+विश्+घञ्] सन्निवेश, परिवेश, समीप स्थान, निकट स्थान देना।

उपनिवेशित (वि०) [उप+नि+विश्+णिच्+क्त] स्थापित, बसाया गया, स्थान दिया गया।

उपनिषद् (स्त्री०) [उप+नि+सद्+क्विप्] रहस्यात्मक विवेचन, ०सिद्धान्त रहस्य का सूत्र, ०पवित्र ज्ञान, ०आत्मज्ञान की समीपता। (दयो० २४) ०आत्मशिक्षा का उपदेश।

उपनिष्करः (पुं०) [उप+निस्+कृ+च] राजमार्ग, प्रमुखमार्ग।

उपनिष्क्रमणं (नपुं०) [उप+निस्+क्रम्+ल्युट्] १. निकलना, अभिगमन, अहिर्गमन। २. धार्मिक, अनुष्ठान रूप अहंकार।

उपनीत (वि०) १. लाई गई, लाई जाती। १. उपनय के उपसंहार से युक्त, अनुमानावयव वाक्य। (जैन०ल० २७१) 'उपनीत पुनर्भव्यो गुरुस्थानमिवालिभिः' (जयो० १०/८५)

उपनीतवती (वि०) रोमांचित होती हुई, 'उपनीतवति प्रसादमेषा' (जयो० १२/१२)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उपनीतरागत्व (वि०) आदरभाव से उत्पन्न रागता, श्रोताजनों में रागता।

उपनृत्यं (नपुं०) ०नृत्यशाला, ०नृत्यभवन, ०नाट्यगृह, ०नर्तन स्थान।

उपनेतृ (वि०) [उप+नी+तृच्] ले जाने वाला, नेतृत्व प्रदान करने वाला।

उपनेत्रं (नपुं०) उपनयन, चश्मा। 'अवलोक्यते भुव्युपनेत्र युक्त्या' (जयो० २६/९८) 'किलाशक्त्या नयनयो: शक्त्यभावे सत्युपनयन युक्त्याऽवलोक्यते' जिसके नेत्रों में स्वयं देखने की शक्ति नहीं है, वहीं उपनेत्र/उपनयन है।

उपन्यासः (पुं०) [उप+नि+अस्+घञ्] १. शिक्षा, अध्ययन, विधि, नियम। २. धरोहर, न्यास, अमानत। ३. प्रस्तावना, ४. भूमिका. ५. विचार, पुरोवाक। ६. वक्तव्य, कथन, प्रस्ताव।

उपपतिः (स्त्री०) यार, प्रेमी। (जयो० १६/७३) 'पति' और 'उपपति' दो शब्द हैं, इनमें 'उपपति' शब्द की 'घु' संज्ञा होती है। उपपति शब्द में ङित् विभक्ति पड़े रहते गुण होकर 'उपपतये' रूप बनता है तथा 'उपपति' शब्द की तृतीया एकवचन में ना आदेश होकर 'उपपतिना' रूप बनता है। ऐसे उपपति शब्द के चिन्तन में मेरा मन लग रहा है, पति शब्द के चिन्तन में नहीं। 'पतिरपि प्राणवल्लभोऽपि शस्त: प्रशंसनीयोऽस्ति उपपतिर्जार: सोऽपि अतिसखिवत्' (जयो० वृ० १६/७४)

उपपत्तिः (स्त्री०) [उप+पद्+क्तिन्] १. आविर्भाव, उत्पन्न, जन्म, प्रसूति। २. सम्पन्न, प्राप्त करना, उपाय। 'पृथग्जनानामुपपत्तिवीर्य:' (सम्य० ९२) ४. कारण, हेतु, आधार। ५. योग्यता, औचित्य, प्रदर्शन, उपसंहार।

उपपत्तिवीर्यः (पुं०) लब्धिवीर्य, परिपक्व बोध शक्ति।

उपपदं (नपुं०) १. शब्द से पूर्व लगाया गया पद या शब्द से पूर्व बोला गया पद। २. उपाधि, अलंकरण, सम्मानसूचक शब्द। ३. हर्षजन्य (सुद० ३/८७ मुनि० २९) 'वृषभोपपदो दासो'

उपपन्न (भू० क० कृ०) [उप+पद+क्त] १. प्राप्त, समागत, आगत, युक्त, सहित। २. योग्य, उचित, उपयुक्त, समीचीन।

उपपरीक्षणं (नपुं०) [उप+परि+ईक्ष्+अङ्ग+ल्युट्] अनुसंधान, खोज, शोध।

उपपातः (पुं०) [उप+पत्+घञ्] १. उपद्रव, घटना, दुर्घटना, २. संकट, कष्ट, विपत्ति, प्रादुर्भाव। ३. उपपतन, उत्पत्ति, ४. जन्म, जन्मान्तर प्राप्ति। 'उपपतनमुपपातो देवनारकाणाम्' (आ०वृ० १/१३)

उपपातकं (नपुं०) पाप जन्य, घृणित, निन्दित, तुच्छ।

उपपादः (पुं०) [उप+पद्+णिच्+घञ्] १. जन्मान्तर, जन्म से दूसरे जन्म को प्राप्त होना, जन्मस्थान। उपेत्य पद्यतेऽस्मिन्निति उपपाद:' (स० सि० २/३१, त० श्लोक २/३१) 'परित्यक्तपूर्वभवस्य उत्तरभवप्रथमसमये प्रवर्तनमुपपाद:' (गो०जी०गा०५४३)

उपपादनं (नपुं०) [उप+पद्+णिच्+ल्युट्] १. सम्पन्न करना, निष्पादन, २. कार्यान्वित करना, ३. देना, सौंपना। ४. प्रमाणित करना, ५. तर्क स्थापना। ६. परीक्षा, प्रमाणीकरण, निश्चयीकरण।

उपपादस्थानं (नपुं०) उत्पत्तिस्थान। (जयो० ६६)

उपपापं (नपुं०) अशुभ की ओर, पाप के समीप।

उपपार्श्वः (पुं०) स्कन्ध, कंधा, पार्श्वभाग।

उपपीडनं (नपुं०) [उप+पीड्+णिच्+ल्युट्] १. पेलना, निचोड़ना, उखाड़ना, उत्पीड़न। आलिंगन-सजोषमालिंगतं-(जयो० १२/१२७) २. पीड़ित करना, दु:खित करना, प्रताड़ित करना। ३. दु:ख, व्याधि, कष्ट, वेदना।

उपपुरं (नपुं०) पुर का समीप भाग, नगर का सन्निकटस्थान। (जयो० ३/७१) 'तंनैवोपुरे सुरेण रचितं' (जयो० ३/७१)

उपपुराणं (नपुं०) लघु पुराण, लघु इतिवृत्त, पुरातन चरित्र का संक्षिप्त विवेचन।

उपपुष्पिका (स्त्री०) हांफना, श्वांस लेना।

उपप्रदर्शनं (नपुं०) निदर्शन, संकेत, इंगितीकरण।

उपप्रदानं (नपुं०) १. उपहार, भेंट, उपायन। २. अभीष्ट दान, इष्टदान। 'उपप्रदानं अभिमतार्थदानम्' (जैन०ल० २७२)

उपप्रलोभनं (नपुं०) उपहार, भेंट, रिश्वत, घूंस, लालच, प्रलोभन।

उपप्रेक्षणं (नपुं०) उपेक्षा करना, अवहेलना करना।

उपप्रैषः (पुं०) आमन्त्रण, निमंत्रण, आह्वान।

उपप्लवः (पुं०) [उप+प्लु+अप्] विपत्ति, दुष्कृत्य, आपदा, ३. दुर्घटना, उत्पीड़न। ४. भय, डर, ५. अपशकुन, उपद्रव, ६. उपनय।

उपप्लुतस्थानं (नपुं०) अशान्त स्थान।

उपप्लविन् (वि०) [उपप्लव+इनि] उपद्रवी, दु:खित, पीड़ित, दुर्घटना युक्त, विपत्ति वाला,

उपबन्धः (पुं०) [उप+बन्ध्+घञ्] सम्बन्ध, आसक्ति, उपसर्ग।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उपबृंहणं (नपुं०) ०उपगूहन, ०छिपाना, ०समीचीन गुणों की प्रशंसा, ०श्रद्धावर्धन, ०धर्मपरिवृद्धिकर 'उत्तमक्षमादिभावनयाऽत्मनो धर्मपरिवृद्धिकरणमुपबृंहणम्' (त० वा० ६/२४) 'आत्मनि श्रद्धास्थिरीकरणम्' (भ०मा०टी० ४५) 'परदोषनिगूहनमपि विधेयमुपबृंहणगुणार्थम्' (पुरुषार्थ सिध्युपाय)।

उपबर्हः (पुं०) [उपबर्ह+घञ्] तकिया, उपधान।

उपबहु (वि०) बहुत कम, स्वल्प।

उपबाहुः (पुं०) कोहनी के नीचे का भाग।

उपभङ्ग (पुं०) [उप+भंज्+घञ्] १. पश्चगमन, २. काव्य का एक चरण, पाद।

उपभा (अक०) ०शोभित होना, सुन्दर लगना। उपभाति-लसति (जयो० ३७)

उपभाषा (स्त्री०) जनसाधारण की भाषा, व्यवहार की भाषा।

उपभृत् (स्त्री०) [उप+भृ+क्विप्] उपभोक्तृ, भरण पात्र।

उपभोक्ता (वि०) उपभोग करने वाला। (वीरो० १८/२६) (जयो० ११/३)

उपभोगः (पुं०) [उप+भुंज्+घञ्] १. भोजन करना, आहार ग्रहण करना, खाना, भोग लगाना। २. उपयोग, प्रयोग, उपलब्धि। ३. रति इच्छा। ४. आनन्द, सुख, संतृप्ति। ५. जो वस्तु बार-बार भोगी जा सके-'उपभुज्यत इत्युपभोगः, अशनादिः, उपशब्दस्य सकृदर्थस्याद्, सकृत्, भुज्यत इत्यर्थः।' (श्रावक प्रज्ञप्ति०२६) 'इन्द्रियनिमित्त-शब्दाद्युपलब्धि-रूपभोगः' (त० वा० २/४४)

उपभोगकालः (पुं०) विषयों का भोग समय। 'एकान्ततोऽसावुपभोगकालः' (सुद० १२०)

उपभोग-परिभोगपरिमाणव्रतं (नपुं०) उपभोग और परिभोग की वस्तुओं का परिमाण करना। (त० वा० ७/२१) 'उपेत्य भुज्यते इत्युपभोगः' परित्यज्य भुज्यत इति परिभोगः' उपभोगश्च परिभोगश्च उपभोग-परिभोगो, उपभोग-परिभोगयोः परिमाणं: उपभोग परिभोग परिमाणम्' (त० वा० ७/२१, ९/१०) 'परिमाणं तयोर्यत्र यथाशक्ति यथाविधम्' (हरिवंश पुराण ५८/१५५)

उपभोग-परिभोगव्रतं (नपुं०) उपभोग और परिभोग सम्बंधी वस्तुओं का प्रमाण करना।

उपभोग-परिभोगानर्थक्यः (वि०) उपभोग और परिभोग के व्यर्थ संग्रहण। 'न विद्यतेऽर्थः प्रयोजनं ययोस्तौ अनर्थकौ, अनर्थकयोर्भावः कर्म वा आनर्थक्यम्' उपभोग-परिभोगयोरानर्थक्यम्' (त०वृ० ७/३२)

उपभोगपात्री (वि०) अनुभवन योग्य। (जयो० १७/५)

उपभोगाधिकत्व (वि०) उपभोग-परिभोग की वस्तुओं का निष्प्रयोजन संग्रह।

उपभोगान्तरायः (पुं०) उपभोग सामग्री में विघ्न/बाधा-'उपभोगविग्घयरं उपभोगंतराइयं' (धव० १५/१४)

उपभोग्यः (पुं०) उपभोग के योग्य। 'केन सम्मणिरसावुपभोग्यः।' (जयो० ४/४३)

उपभुज्य (सं०कृ०) उपभोगकर, भोजनकर। 'मदन्नमातृप्ति तथोपभुज्य' (सुद० १३०)

उपमन्त्रणं (नपुं०) [उप+मन्त्र्+ल्युट्] आमंत्रण, आह्वान, बुलाना।

उपमर्दः (पुं०) १. लेप, मालिश, घर्षण, २. आघात, विनाश, नाश, हानि। ३. रतिमुख।

उपमर्दनं (नपुं०) उत्पीडन, आलिंगन।

उपमत्व (वि०) प्रशंसत्व (जयो० वृ० ३/६२) (जयो० वृ० १२/१२७)

उपमा (स्त्री०) [उप+मा+अङ्+टाप्] समानता, सादृश्यता, एकरूपता, तुलना समरूपता। 'यदिव कोकरुतेन दिनश्रियः समदुयः कृतनक्तलयक्रियः' (जयो० ९/२०) २. प्रशंसा (जयो० वृ० ३/६२) 'प्रयोगार्थ सुन्दर्युपमा यस्य' ३. तुल्यस्वभावः -'सुंदरं-तुल्यस्वभावेन सुन्दरंणोपमीयते' (जयो० वृ० ३/४०) 'अङ्गान्यनङ्गरम्याणि क्वास्य यान्तूपमां ततः।' (जयो० ३/४०) ४. उपमालङ्कार- उपमानेन सादृश्यमुपमेयस्य यत्र सा। प्रत्ययाव्यय-तुल्यार्थ समासैरुपमा मता।। (वागभटालङ्कार ४/५०) जहां 'वति', इव, तुल्य आदि अव्यय तथा कर्मधारय समास के प्रयोग से अप्रस्तुत (उपमान) के साथ प्रस्तुत (उपमेय) में सादृश्य दिखाया जाता है वहां उपमालङ्कार होता है-यह पूर्णोपमा, लुप्तोपमा के भेद से दो प्रकार भी है। अथासौ चन्द्रलेखेव, जगदाह्लाद कारिणी। नित्यनृत्यां श्रियं भाति निभाणा स्मरसारिणी।। (जयो० ३/४१) (जयो० ८/३८, ७/१०३, १०४, सुद० २/८) उपमीयते-उपमा की जाती है। (जयो० ३/४१)

उपमातृ (स्त्री०) धाई मां, दूसरी मां, निकटवर्ती स्त्री।

उपमानं (नपुं०) [उप+मान+ल्युट्] १. समरूपता, सादृश्यता, तुलना, एकरूपता। २. समानता का पक्ष, यथार्थ ज्ञान का आभासक। प्रसिद्ध अर्थ की समानता। ३. साध्य धर्म से साधन की सिद्धि। 'उपमानं प्रसिद्धार्थ-साधर्म्यात्साध्य साधनम्' (न्यायविनिश्चिक ३/८५) 'उपमीयतेऽनेन दार्ष्टान्तिकोऽर्थ स्मादर्गहनः इत्युपमानम्' (जैन०ल० २७४)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उपमानुप्रासालंकारः (पुं०) उपमा और अनुप्रास अलंकार (जयो० २८/८०)

उपमा संविलितोऽर्थान्तरन्यासः (पुं०) उपमा से युक्त अर्थान्तर न्यास 'संश्रयेत् कथमेकं साऽवस्थातुं स्थानभूषणा' निराश्रया न शोभन्ते वनिता हि लता इव। अर्थात् जिसका अनुकूल पति भूषण है वह सुलोचना अपने आश्रय रूप में किस अद्वितीय पति का सहारा ले? कारण स्त्रियां लताओं की तरह आश्रय विहीन होकर कभी सुशोभित नहीं हुआ करती है। 'वनिता हि लता इव' में उपमा के साथ अन्य अर्थ भी है।

उपमाश्लेषः (पुं०) उपमालङ्कार और श्लेष दोनों ही एक साथ। इक्षुर्यष्टिरियंपाऽस्ति प्रतिपर्वरसोदरा। अङ्गान्यनङ्गरम्याणि क्वास्या यान्तूपमां ततः।। (जयो० ३/४०)

उपमिति (स्त्री०) [उप+मा+क्तिन्] सादृश्यता, समानता, एकरूपता, तुल्यता। उपमान के द्वारा निगमित उपसंहार उपमालङ्कार।

उपमेय (सं०कृ०) [उप+मा+यत्] समानता करने योग्य, सादृश्यता योग्य, तुल्यता योग्य, तुलनीय। मुक्तैकपयोरशेराशेव सुरमा तया। पयोऽपि येजितः पदभ्यां पल्लवे पत्रता कृतः। (जयो० ३/४४) इसमें सुलोचना उपमेय है, वह सुरम्य है इसलिए पुण्य रूप समुद्र की वेला की तरह सुन्दर है। उपमान समुद्र है।

उपयन् (भूतकालिक प्रयोग) होना, प्राप्त होना। 'सोऽप्येवं वचनेन कम्पमुपयन्' (सुद० ७/६७)

उपयन्तृ (पुं०) [उप+यम्+तृच्] पति।

उपयन्त्रं (नपुं०) छोटा यन्त्र, उपकरण।

उपयमः (पुं०) [उप+यम्+अप्] विवाह, पाणिग्रहण।

उपयमनं (नपुं०) [उप+यम्+ल्युट्] १. पाणिग्रहण, विवाह। २. प्रतिबन्ध, रोक, अनुशासन।

उपया (अक०) प्राप्त होना, हो जाना, उपलब्ध होना। 'यो मदित्वमुपयाति स धन्यो नास्ति' (जयो० २/१२९) 'भूत्वा सन्तापमुपयान्त्यमी' (सुद० पृ० १२७) 'मांसमुपयन्मृत्युं समापद्यते' (सुद० १२७)

उपयाचक (वि०) [उप+याच्+ण्वुल्] प्रार्थी, भिक्षुक, आशार्थी, याचक, मांगने वाला।

उपयाचनं (नपुं०) [उप+याच्+ल्युट्] निवेदन, प्रतिवेदन, प्रार्थना, मांगना।

उपयाचित (वि०) [उप+याच्+क्त] प्रार्थित, निवेदक, प्रार्थना करने वाला, अभीष्ट सिद्धि का इच्छुक।

उपयाचितक (वि०) निवेदन करने वाला, निवेदक, याचकः

उपयाजः (पुं०) [उप+यज्+घञ्] यज्ञ शब्द, यज्ञमंत्र, यज्ञतन्त्र।

उपयानं (नपुं०) [उप+या+ल्युट्] पहुंचना, समीप जाना, निकटस्थ होना।

उपयुक्त (भू० क० कृ०) १. उचित, योग्य, सही, समीचीन, श्रेष्ठ, उत्तम। उपयोगी (जयो० २/४४) 'कमेक-उपयुक्तपति संश्रयेत्' (जयो० वृ० ३/६५)

उपयुक्तकारिन् (वि०) विचारशील वाला, उचित कार्य करने वाला। (जयो० वृ० १२/१७)

उपयुक्तपतिः (पुं०) उत्तमपति, मनोनुकूल पति। (जयो० वृ० ३/६५)

उपयुक्तिन् (वि०) ०मनोनुकूल, ०समीचीनता से युक्त। (सुद० २/४२) कः सौम्यमूर्तिति जयेति सूक्ती शुक्ती शुभे त्वत्कवलोपयुक्ती (जयो० ५/१०२)

उपयोक्त्री (वि०) उपयोग वाली, स्थित होने वाली। 'ऋषयोऽस्मि शयोभयोपयोक्त्री' (जयो० १२/३)

उपयुज् (सक०) १. सुनना, श्रवण करना। २. बोलना, कहना। 'सत्यमेवोपयुज्जाना सन्तोषामृतधारिणी। (सुद० ४/३३)

उपयुज्य (सं०वृ०) सुनकर, श्रवणकर। 'एतदुक्तमुपयुज्य तदाथ' (जयो० ४/४१)

उपयोगः (पुं०) [उप+युज्+घञ्] १. सेवन करना, प्रयोग करना, काम लेना। २. सम्पर्क, ३. आसन्नता, ४. संयोग-(सुद० १०२) 'यतो यत्रोपयोगस्तत्रैव दातव्यम्' (जयो० १२/१७) 'किन्तुउपयोगो नहि शुद्ध एव (सम्य० १०९) 'उपयोगस्तथाशुद्धः स तत्रैवास्तु वस्तुतः।' (सम्य० १४२) ५. परिणाम विशेष, भावविशेषः, आत्मपरिणाम। रूपादि ६. विषयग्रहण-व्यापार। ७. आत्मा का चैतन्यानुवर्ती परिणाम। 'प्रतीत्योत्पद्यमानः आत्मनः परिणाम उपयोगः। (धव० १/२३६) 'युज्यन्त इति योगाः, योजनानि वा जीव व्यापार रूपाणि योगा अभिधीयन्ते' उपयुज्यन्त इति उपयोगाः जीव-विज्ञानरूपाः' (पं०सं०१/३)

उपयोग-भेदः (पुं०) उपयोग के भेद 'उवओगो णाण-दंसणं भणिदो। (प्रव०सं०२/६२)

उपयोग-वर्गणा (स्त्री०) उपयोग/सम्प्रयोग का विकल्प, उपयोग के स्थान।

उपयोगशुद्धिः (स्त्री०) चित्त की सावधानी। 'प्राणिपरिहरण-प्रणिधान-परायणत्वम्' (भ० आ० टी० ११९)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उपयोगिन् (वि०) [उप+युज्+घिनुण्] १. योग्य, उचित, समीचीन, २. कार्ययोग्य, ०करने योग्य, ०तथ्यपूर्ण, सेवार्थ, 'समं समन्तादुपयोगि' (सम्य० पृ० ४) ३. मनोविचारी, 'पदयोः सदयोपयोगिनः' (जयो० २६/३७)

उपयोगिनी (वि०) उपयोग करने वाली, उपयोगी, उचित, समीचीनता युक्त। न त्रिवर्गविषये नियोगिनी नापवर्गपथि चोपयोगिनी। (जयो० २/८८)

उपयोजनं (नपुं०) स्वीकरण, इष्ट प्रयोजन। 'लसन्ति सन्तोऽप्युपयोजनाय' (वीरो० १/११) 'उपयोजनाय स्वीकरणाय' (वीरो० वृ० १/११)

उपरक्त (भू० क० कृ०) [उप+रञ्ज्+क्त] कष्टजन्य, दुःख युक्त, पीड़ित, संकट से घिरा हुआ, भयग्रस्थ।

उपरक्षः (पुं०) [उप+रक्ष्+अच्] अंगरक्षण, सुरक्षाकर्मी, संरक्षक।

उपरक्षणं (नपुं०) [उप+रक्ष्+ल्युट्] १. निक्षेपण, रखना- 'आदानेऽप्युपरक्षणेऽपि कुरूताद् ग्रन्थादिकानां तथा।' (मुनि० १२) २. संरक्षक, अंग रक्षण, रक्षा करने वाला। 'उपरक्षकस्तु प्रवासिनं बहुधनं' (दयो० पृ० ८९) ३. सुरक्षाकर्मी, चौकीदार, पहरेदार।

उपरत [भू० क० कृ०] निवृत्त, विरक्त, रहित, अभाव। 'कुम्भकृत्युपरते क्व वा: स्थितिः' (जयो० २/९८) २. उदासीन, आसक्ति से रहित।

उपरत-कर्मन् (नपुं०) कर्म से रहित।

उपरत-लोकः (पुं०) संसार से विरक्त।

उपरत-स्नेहः (पुं०) आसक्ति से शून्य, प्रेमविहीन।

उपरत-हास्य (वि०) हास्य से विहीन।

उपरतिः (स्त्री०) [उप+रम्+क्तिन्] १. विरक्ति, निवृत्ति, निरोग। २. विषयासक्ति से रहित।

उपरत्नं (नपुं०) तुच्छ रत्न, अशुद्ध रत्न।

उपरमः (पुं०) [उप+रम्+घञ्] विरक्त, निवृत्त, उदासीन, त्याग परिवर्जन।

उपरमणं (नपुं०) [उप+रम्+ल्युट्] १. ०विरक्ति, ०निवृत्ति, ०उसीनता, २. त्याग, ०विसर्जन, ३. अभाव, ४. रति रहित, आसक्ति से विरत।

उपरसः (पुं०) अशुद्ध रस, अशुद्ध धातु खनिज की अशुद्धता।

उपरागः (पुं०) [उप+रञ्ज्+घञ्] १. लालिमा, लाल रंग, पखालना। २. कष्ट, दुःख, संकट। ३. घृणा, निन्दा, दुर्व्यवहार, दुर्वचन।

उपराजः (पुं०) उपशासक, उपराज प्रतिनिधि।

उपरि (अव्य०) [उर्ध्व+रिल्, उप आदेशः] पृथक् रूप से होने वाला अव्यय। जिसके कई अर्थ हैं-ऊपर, पर, अधिक, बहुत की ओर ओर आदि। (सम्य० पृ० ४०) 'प्रसादोपरि-सुप्तमवेहि तम्' (सुद० ७८) 'अंता भोगभृगुपरि तु योगो' (सुद० १०५) 'अन्तरंग में भोग भोगने की प्रबल लालसा' उक्त पंक्ति में 'उपरि' का अर्थ 'प्रबल' भी है।

उपरिकरं (नपुं०) ऊपर की ओर हाथ।

उपरिगेहं (नपुं०) ऊपर का गृह, उन्नत गृह।

उपरिचर (वि०) ऊपर की ओर विचरण करने वाला।

उपरिजात (वि०) उच्च जन्म वाला।

उपरितनं (नपुं०) ऊपरी भाग।

उपरिदंतं (नपुं०) ऊपरी दांत।

उपरिभागः (पुं०) ऊपरी अंग, ऊपरी भाग।

उपरिभू (पुं०) उच्च भूमि।

उपरिभूमि देखो ऊपर।

उपरिप्रतिष्ठ (वि०) ऊपर स्थित, ऊपर प्रतिष्ठित। 'द्वीपान्तराणामुपरिप्रतिष्ठः' (वीरो० २/१)

उपरिष्ठात् (अव्य०) ऊपर, उर्ध्व पर, ऊँचे भाग पर। 'वाता इवासङ्गतयोपरिष्ठात्' (भक्ति० १६) उपरिष्टात्-शिखरतः। (जयो० वृ० १/९३) 'चर्मावृतं वस्तुतयोपरिष्टाद्नतः' (सुद० पृ० १२०)

उपरिस्थ (वि०) ऊपर स्थित, ऊपर प्रतिष्ठित। 'उपरिस्थं खलु भाविनः प्रमाणे' (जयो० १२/५८)

उपरोधः (पुं०) १. रोक, निरोध, विराम, रुकावट। 'किन्तु परोपरोधकरणेन कर्त्तव्या' (सुद० ९२) आच्छादन। २. आश्रय, आधार, सहायक।

उपरोधकं (नपुं०) १. निरोधक, आच्छादक। २. आधारभूत, आश्रय।

उपरोधक (वि०) रोकने वाला, निरोध करने वाला।

उपरोप (पुं०) धारण, रोपना।

उपरोपिणी (वि०) प्रवर्तिनी। (जयो० २/१२६)

उपरोपित (भू० क० कृ०) परिधारित, (जयो० १५/७६)

उपर्युपात्त (वि०) ऊपर से प्रभावान्। (सुद० १०१)

उपर्य्युपरि (अव्य०) ऊपर-ऊपर, ऊँचे-ऊँचे, उर्ध्व उर्ध्व, पास।

उपर्यथो (अव्य०) ऊपर से। (वीरो० ९/२४) 'उपर्यथो तूलकुथोऽनपायिनः'

उपल (पुं०) १. पाषाण, प्रस्तर, पत्थर। (दयो० पृ० ६०) २. रत्न विशेष।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उपलपनं (नपुं०) स्मरण, याद। (जयो० ४/६५)

उपलब्धः (पुं०) प्राप्त, गृहीत, ग्रहण। 'कलितामुपलब्धाम्' (जयो० वृ० ४/५६)

उपलब्ध-पाशी (वि०) पाश लिए हुए, पाशधारी भवँश्च भूयादुपलब्ध-पाशी। (वीरो० १४/२२)

उपलब्धरोक (वि०) १. प्राप्त का निरोध।

उपलब्धरोकः (पुं०) पहरेदार, द्वारपाल। निष्काशितोऽतः प्रवितताङ्यलौकैर्विक्षिप्त एवेत्युपलब्धरोकैः। (समु० ३/३२)

उपलब्धिः (स्त्री०) १. प्राप्ति, २. बुद्धि, ज्ञान।

उपलभ् (सक०) प्राप्त करना, ग्रहण करना। (दयो० ८) 'नैष्प्रतीच्छयमिति चोपलभ्यताम्' (जयो० २/७४) 'उपलभ्यतां प्राप्यतामित्यर्थः' (जयो० वृ० ७/७४)

उपलम्भः (पुं०) प्राप्त, निरूपित। 'यः स्वरूपोपलम्भः स्यात्' (सम्य० ११५)

उपलस्वभावा (वि०) हीरकादि रूप सरस्वती। (जयो० ११/३४)

उपलालिका (स्त्री०) घास, ग्रास, तृण।

उपलालित (वि०) ०तरलित, ०उमड़ पड़ा, (सुद० ३/२३) ०उपायों से लक्षित (जयो० वृ१/६) ०तरंगित, ०उद्वेलित। (जयो० ९/६६) ०पालित (वीरो० १/६१) 'हृदराशिरम्बुरभूदुपलालित इति'

उपलिख् (सक०) लिखना, आधार से अंकित करना। 'परस्य करेण उपलिखतीति' (जयो० २/१३)

उपलेखः (पुं०) आश्रित लेख, आधार युक्त, अंकन, प्रतिलिपि, प्रतिलेख।

उपलेखकः (पुं०) १. प्रतिलिपिकार। २. परकर गृहीत लेखक। 'बालकः परकरोपलेखकः।' (जयो० २/१३) 'अपरपुरुषस्य साहाय्येन लिखति।' (जयो० वृ० २/१३)

उपलेपः (पुं०) लेप पर लेप, प्लास्टर लगाना, एक आवरण पर दूसरा आवरण लगाना।

उपलोचनं (नपुं०) चश्मा, नेत्राभूषण।

उपवनं (नपुं०) आराम, बगीचा, उद्यान। (सुद० ४/१) 'या किलोपवन-रक्षणतातिर्मालि' (जयो० ४/४२)

उपवनप्रधानः (पुं०) प्रसिद्ध आराम, मुख्य बगीचा, प्रसिद्ध उद्यान। (जयो० १/८०) 'अङ्गीचकारोपवनप्रधानः'

उपबर्हः (पुं०) उपधान, तकिया।

उपवासः (पुं०) अनशनव्रत, बाह्यव्रत में प्रथम व्रत, आहार का परित्याग। 'उपवासः उपवसनम्' 'उक्तं पर्वोपवासाय' (सुद० ९६) 'उपेत्यात्मा न वसन्ति इन्द्रियाणि यस्मिन् स उपवासः' (हित सम्पादक पृ० ५९)

उपवासक्रिया (स्त्री०) उपवास विधि।

उपवासचिन्ता (स्त्री०) उपवास के प्रति चिंतन।

उपवासविधिः (स्त्री०) उपवास क्रिया। मनोऽक्षनिग्रहं कर्तुमुपवास-विधायिनः। त्यक्त्वाऽखिलं गृहारम्भमेकास्ते स्थीयताम्मिति।। (हित० सू० ५९) अवश्यमेव सप्ताहादुपवासो विधीयताम्।' (हित० सं० ६०)

उपवासिन् (वि०) लंघनमयी, अनशनकारी। (जयो० १६/१८)

उपविश् (अक०) प्रविष्ट होना, घुसना। (जयो० ६/५५)

उपविष्ट (वि०) अवस्थित, स्थित, उपस्थित, प्रवेशित, रहने वाला। (समु० ९/१४) 'सा गोचराधारतयोपविष्टा' (सुद० १/२१) 'सत्परिखोपविष्टम्' (सुद० १/२५)

उपवीतं (नपुं०) जनेऊ, यज्ञोपवीत।

उपवेग (पुं०) प्रवाह, धारा।

उपवेश (सक०) बिठाना, स्थित करना, आश्रय देना। उपवेशयति-जयो० वृ० १३/७३)

उपव्रज् (सक०) लेना, ग्रहण करना। (समु० २/३०)

उपशम् (सक०) उपशान्त होना, रोकना, निरोध करना, निग्रह करना।

तस्योपयोगतो वाञ्छा मोदकस्योपशाम्यति।' (सुद० १२६)

उपशमः (पुं०) १. उदय अभाव, उपशान्ति, अनुदय-'आत्मनि कर्मणः स्वशक्तेः कारणवशादनुभूतिरूपशमः।' (स० सि० २/१) आधाराधना सार पृ० १२१ 'उदयअभावो उपसमो' (जैन ल०२७६) २. नाश, विनाश, निरोध। ३. मोहकर्म का ह्रास। ४. आराम, स्वस्थ, उचित 'सम्यक्त्वमस्तूपशमाच्च नाशात्' (सम्य० ५९)

उपशमक (वि०) उपशम करने वाला, अपूर्वकरण, अनिवृत्तिकरण और सूक्ष्मसाम्पराय ये तीन गुणास्थानवर्ती जीव उपशमक हैं। (त० वा० ९/१)

उपशमकश्रेणी (स्त्री०) उपशान्त पर आरोहण।

उपशमचरणं (नपुं०) चारित्रमोहनीय के उपशम से उत्पन्न चरित्र।

उपशम-सम्यक्त्वं (नपुं०) उपशम से उत्पन्न होने वाला, तत्त्वार्थश्रद्धान को प्राप्त।

उपशम-सम्यग्दृष्टिः (स्त्री०) कषाय और दर्शनमोहनीय के उपशम से उपशमसम्यग्दृष्टि होता है। 'समीची दृष्टिः श्रद्धा यस्यासौ सम्यग्दृष्टिः। (धव० १/७१)

उपशयः (पुं०) निदान, निराकरण।

उपशान्तः (पुं०) रोकना, उपशम करना, अनुदय।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उपशान्त-कषायः (पुं०) मोहकर्म का उपशम, ग्यारहवें गुणस्थानवर्ती जीव। उपशान्तकषाय: क्षीणकषाश्यच। (त० वा० ९/१)
सर्वस्य मोहस्य उपशमात् क्षणाच्च 'क्षयोपशान्तिर्यत प्राप्य तादृक्।' (सम्य० ४२, ७३)

उपशान्त-मोहः (पुं०) मोह का उपशमन।

उपशान्ति (स्त्री०) उपशम, शमन, क्षीण, दबना।

उपशामं (नपुं०) उपशम, शान्त, सम्यग्दृष्टि। 'सम्यक्त्वमेतत् प्रथमोपशामम्। (सम्य० ५४)

उपशामना (स्त्री०) उपशान्त स्वरूप में स्थित रहना। (धव० ८५६)

उपशायः (पुं०) पहरेदार का क्रमबद्धता से शयन।

उपश्लोकित (वि०) प्रशंसा योग्य। (दयो० ११०)

उपश्लिष्ट (वि०) छूते हुए, स्पर्शित। 'विटपैरूपश्लिष्टपयोधराम्' (जयो० ३/११३)

उपश्रुतिः (स्त्री०) स्वीकार, प्रतिज्ञा, प्रण, अंगीकार।

उपसंक्रमः (पुं०) ०प्रकम्प, ०कम्पन। 'कः सदोष उपसंक्रमोऽनयः' (जयो० २/६०)

उपसंग्रह (पुं०) चरणवंदन, चरण स्पर्श।

उपसंख्यानकं (नपुं०) उत्तरीय वस्त्र, दुपट्टा, धोती, चादर। (जयो० २१/६४)

उपसंयोगः (पुं०) [उप+सम्+युज्+घञ्] यमन, बंधन, बांधना। दमन करना।

उपसंरोहः (पुं०) [उप+सम्+रुह्+घञ्] ऊपर उगना, ऊपर लगना, लटकना।

उपसंवादः (पुं०) [उप+सम्+वद्+घञ्] वार्तालाप, बातचीत, करार, संवाद।

उपसंहृ (सक०) त्यागना, छोड़ना। (सुद० ९६)

उपसंहृत्य (सं०कृ०) त्यागकर, छोड़कर। 'उपसंहृत्य च करणग्रामम्' (सुद० ९६)

उपसंहरणं (नपुं०) [उप+सम्+हृ+ल्युट्] रोकना, निरोध।

उपसंहारः (पुं०) सम्मेलन, मिलन, 'सहसा दयितोपसङ्गतात्' (जयो० १०/६०)

उपसत्तिः (स्त्री०) १. सेवा, सुश्रूषा, २. दान, ३. मिलन।

उपसद (त्रि०लि०) समीप, निकट, पास।

उपसदः (पुं०) दान।

उपसदनं (नपुं०) १. समीपवर्ती स्थान, पड़ौस। २. निकट जाना, गुरु के समीप स्थित होना, शिष्य बनाना। ३. सेवा, वैयावृत्य।

उपसंतानः (पुं०) [उप+सम्+तनु+घञ्] संतति, परम्परा, संयोग।

उपसंन्यासः (पुं०) [उप+सम्+नि+अस+घञ्] डाल देना, छोड़ना, त्यागना।

उपसमाधानं (नपुं०) [उप+सम्+आ+धा+ल्युट्] एकत्र करना, संग्रह करना, ढेर लगाना।

उपसंपत्तिः (स्त्री०) [उप+सम्+पद+क्तिन्] पहुंचना, जाना, समीप जाना, निकटस्थ होना, प्रविष्ट होना। (सुद० १२६)

उपसम्पदः (पुं०) प्रविष्ट होना, पहुंचना। (समु० ४/२७)

उपसंभाषः (नपुं०) [उप+सम्+भाष्+घञ्] वार्तालाप, चर्चा, अनुरोध, विचार।

उपसम्मतिः (स्त्री०) आज्ञा आदेश। (जयो० १५८)

उपसरः (पु०) [उप+सृ+अप्] अभिगमन, उन्मुख, अनुचरण।

उपसरणं (नपुं०) [उप+सृ+ल्युट्] अभिगमन, अनुसरण, सरणयुक्त होना।

उपसर्गः (पुं०) [उप+सृज्+घञ्] १. धातु के पूर्व लगने वाले, उपपद, वि, प्र, पर, अनु आदि। (जयो० १९/९३) 'व्याकरण-निर्दिष्टानुपसर्गान् धातूपपदानजानानोऽननकुर्वाणोऽपि' (जयो० १९/९३) २. उपद्रव, संकट, कष्ट, बाधा, हानि, आघात, व्याघात, प्रहार। (सुद० १३२) 'उपसर्गानुपद्रव'। (जयो० वृ० १९/९३) 'उपसर्गमुपारब्धवती कुर्तामहासती' (सुद० १३३) ३. परीषह-क्षुधा, पिपासा, शीत, उष्ण, दंशमशक, नाग्न, अरति, स्त्रीचर्या, निषद्या, शय्या, आक्रोश, वध, याञ्चना, अलाभ, रोग, तृणस्पर्श, मल, सत्कार, पुरस्कार, प्रज्ञा, अज्ञान, अदर्शन आदि।

उपसर्गपदं (नपुं०) प्र, परा, अनु, अव, निस्, निर्, दुस्, दुर्, वि-आङ्, नि, अधि, अपि उत् आदि उपसर्गपद। यथा धातुगतोऽर्थो वाच्यादि (वीरो० ४/२७) 'स उपसर्गपदेन प्रादिना प्रव्यक्ततामाप्नोति' (जयो० वृ० १६/४२)

उपसर्गहृत् (वि०) उपसर्ग को हरण करने वाला। ओं सव्वोसहिपत्ताणं णमो स्यादुपसर्गहृत्। (जयो० १९/७८)

उपसर्जनं (नपुं०) [उप+सृज्+ल्युट्] १. ग्रहण लगना, दोष लगना, दोषारोपण, २. वस्तु का स्वरूप नष्ट होना, समाप्त होना। ३. बाधा उपस्थित होना।

उपसर्पः (पुं०) [उप+सृप्+घञ्] निकट/समीप जाना, पहुंचना।

उपसर्पणं (नपुं०) [उप+सृप्+ल्युट्] निकट जाना, समीप जाना, प्रत्यागमन, अग्रसरण।

उपसर्या (स्त्री०) [उप+सृ+यत्+टाप्] गर्भजन्या, सांड के उपयुक्त गाय ऋतुमती गाय।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उपसाद्रं (नपुं०) गृहोद्यान। (वीरो० ५/३७)

उपसुन्दः (पुं०) एक राक्षस, निकुम्भ का पुत्र।

उपसुप्त (वि०) [उप+सुप्+क्त] सोया हुआ। 'सुखोपसुप्ता निशि पश्चिमायाम'

उपसूर्यकं (नपुं०) [उप+सूर्य+कन] सूर्यमण्डल, सूर्यपरिवेश।

उपसृष्ट (भू० क० कृ०) [उप+सृज्+क्त] १. संयुक्त, सम्मिश्रित, संयोग, मिश्रित किया। २. कष्टग्रस्त, अभिभूत, तिरस्कृत, क्षतिग्रस्त। ३. उपद्रव युक्त, उपसर्ग सहित।

उपसृष्टः (पुं०) ग्रहण युक्त सूर्य या चन्द्र।

उपसेकः (पुं०) [उप+सिच्+घञ्] सींचना, अभिषेक करना, सिंचन करना, छिड़कना, भींगना।

उपसेचनं (नपुं०) अभिसिंचन, छिड़कना, भीगना।

उपसेवनं (नपुं०) [उप+सेव्+ल्युट्] १. उपासना, आराधना, सम्मान, पूजा, सेवा। २. आसिक्त होना, लिप्त होना। ३. उपयोग करना, काम लेना।

उपस्करः (पुं०) [उप+कृ+अप्+सुट्] १. अवयव, संघटक। २. सामान, वस्तु, उपकरण, (जयो० २२/३६) उपबन्ध, आवश्यक वस्तु। ३. अलंकरण, आभूषण।

उपस्करणं (नपुं०) [उप+कृ+ल्युट्] १. अवयव संचय, संग्रह। २. वध करना, क्षत-विक्षत करना। ३. परिवर्तन, सुधार।

उपस्कारः (पुं०) [उप+कृ+घञ्] १. परिशिष्ट, अध्याहार। २ सुशोभित करना, अलंकृत करना, रमणीय बनाना। ३. अलंकरण, आभूषण। ४. आघात, प्रहार।

उपस्कृत (भू० क० कृ०) [उप+कृ+क्त] १. तैयार किया हुआ, बनाया गया, निर्मित किया। २. संचित, संग्रहीत। ३. अलंकृत, विभूषित। ४. आभूषण, अलंकरण, ५. अध्याहृत परिमार्जित।

उपस्कृतिः (स्त्री०) [उप+कृ+क्तिन्] परिशिष्ट, अध्याहार, समावेश।

उपस्तम्भः (पुं०) [उप+स्तम्भ+घञ्] १. आश्रय, आधार, सहायक प्रयोजन। २. प्रोत्साहन, अग्रणीकरण।

उपस्तरणं (नपुं०) [उप+स्तृ+ल्युट्] १. संस्तरण, बिछाना, फैलाना। २. चादर, विस्तार।

उपस्त्री (स्त्री०) विवाहित के अतिरिक्त रखी गई स्त्री, रखैल।

उपस्थः (पुं०) [उप+स्था+क] १. अंक, गोद। २. मध्यभाग, पेट्। ३. जननेन्द्रिय, योनि, कामेन्द्रिय (मुनि.३०) ४. गुदा। ५. कूल्हा।

उप+स्था (अक०) उपस्थित होना, सम्मुख आना। 'उपतिष्ठामि द्वारि पश्य।' (मुद० १.४) उपतिष्ठतं (जयो० २/८)

उपस्थानं (नपुं०) [उप+स्था+ल्युट्] ०आराधना, ०पूजा, ०देवालय, ०मन्दिर।

उपस्थापनं (नपुं०) [उप+स्था+णिच्+ल्युट्] १. पहुंचना, आना, दर्शन देना। २. पूजन, अर्चन, प्रार्थना, आराधना, उपासना। ३. प्रणम्यभाव, नमस्करण, प्रणाम, नमन। ४. स्मरण, स्मृति। ५. उपस्थिति, समीप्यता।

उपस्थापय (अक०) उपस्थित होना, सन्निकट पहुंचना, दर्शन देना। उपस्थापयति (दयो० ६०)

उपस्थापित (भू० क० कृ०) [उप+स्था+णिच्+क्त] उपस्थित हुआ, सन्निकट पहुंचा।

उपस्थायकः (पुं०) [उप+स्था+ण्वुल्] सेवक, नौकर।

उपस्थित (भू० क० कृ०) [उप+स्था+क्त] ०सन्निविष्ट, ०जात, सम्मुख आया। (जयो० वृ० ५/१७) (दयो० ५६) पुलिने चलनेन केवलं वलितग्रीवमुपस्थितो बकः।' (जयो० १३/६३) 'उपस्थितः सन्निष्टो बकः' (जयो० वृ० १३/६३)

उपस्थितिः (स्त्री०) [उप+स्था+क्तिन्] १. विद्यमानता, ०समागमन, ०अवाप्ति ०प्राप्ति, ०रहना, ०निवास करना। (जयो० २/५७) २. स्मरण, ०स्मृति, प्रत्यास्मरण। ३. सेवा, ०परिचर्या। ४. सन्निकट जाना, ०पहुंचना, ०उपस्थित रहना, सम्मुख होना।

उपस्नेहः (पुं०) [उप+स्निह्+घञ्] आर्द्र होना, गीला होना, सरलता प्रकट करना।

उपस्पर्शः (पुं०) [उप+स्पृश्+घञ्] १. सम्पर्क, साथ होना। २. स्पर्श करना, छूना, आलिंगन करना। ३. मार्जन करना, आचमन करना, कुल्ला करना। ४. प्रक्षालन, स्नान,संक्षालन।

उपस्मृतिः (स्त्री०) स्मृति से लघु शास्त्र, लघु स्मृतिग्रन्थ/सिद्धान्त ग्रन्थ, संक्षिप्त आत्म-विशेषणात्मक ग्रन्थ।

उपस्रवणं (नपुं०) [उप+स्रु+ल्युट्] मासिकस्राव।

उपस्वत्वं (नपुं०) राजस्व, भू-सम्पदा से प्राप्त सम्पत्ति।

उपस्वेदः (पुं०) [उप+स्विद्+घञ्] पसीना, शरीर।

उपहत (भू० क० कृ०) [उप+हन्+क्त] १. व्यापन्न, पीड़ित, चोट ग्रस्थ हुआ, घायल, आघात युक्त। (जयो० १८/३०) २. आबद्ध, पराभूत, अभिभूत, घिरा हुआ। ३. उपेक्षित, निन्दनीय, प्रदूषित, अपवित्रता युक्त, कलुषित।

उपहतक (वि०) [उपहत+कन्] भाग्यहीन, दुर्भाग्यशाली, हीन।

उपहतिः (स्त्री०) [उप+हन्+क्तिन्] आघात, प्रहार, वध, हत्या।

उपहरणं (नपुं०) [उप+हृ+ल्युट्] १. ग्रहण करना, लेना,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पकड़ना, दबोचना। २. निकट आना। ३. बांटना, वितरित करना, भोजन देना।

उपहस् (अक०) उपहास करना, व्यंग करना, निन्दा करना।

उपहसित (भू० क० कृ०) [उप+हस्+क्त] उपहास करना, भर्त्सना किया गया, निन्दित किया गया।

उपहस्तिका (स्त्री०) [उपहस्त+कन्+टाप्] पान-दान, एक पात्र, जिसमें ताम्बूल रखा जाता है।

उपहारः (पुं०) [उप+हृ+घञ्] १. भेंट, प्राभृत, आहूति। (वीरो० २/३६) २. परितोषिक-'**मनो ममैकस्य किलोपहारो**' (जयो० ३/९७) '**किलोपहारं पारितोषिकं भविष्यति।**' (जयो० ५/९७) उपहार को 'उपायनी' भी कहते हैं। (जयो० ११/६५) ३. कर, क्रय-विक्रय कर। 'करत्वे उपहाररूपेण कलितं' (जयो० वृ० ५/७६)

उपहारलेशः (पुं०) परितोषकोश, उपहार भाग। सुमस्थवार्बिन्दुदला-पदेशं मुक्तामयन्तेऽप्युपहारलेशम्।' (वीरो० ४/१८)

उपहारिन् (वि०) [उपहार+णिनि] भेंट प्रस्तुत करने वाला, वस्तु प्रदाता, प्राभृतदाता, पारितोषिक प्रस्तुतकर्ता। 'पुनरपरं, रूपबलोपहारिणं' (जयो० २/१५५)

उपहारीकृत (वि०) उपहार देने वाला, भेंटदाता। (जयो० ३/९४)

उपहारीकृत्य (सं०कृ०) उपहार देकर, पारितोषिक प्रदान करके। (जयो० वृ० ३/३६)

उपहासः (पुं०) [उप+हस्+घञ्] अट्टहास, परिहास, व्यंगपूर्ण हास।

उपहासक (वि०) [उप+हस्+ण्वुल्] हास्य करने वाला।

उपहासकः (पुं०) विदूषक, जोकर।

उपहास्य (सं०कृ०) हंसी उड़ाने वाला।

उपहित (वि०) [उप+धा+क्त] १. रखा गया, निक्षिप्त, प्रस्तुत किया, युक्त। 'चपलतोपहितचेता' (सुद० १/४३) २. तिरोभूत, अभिभूत, आच्छादित, तिरोहित। 'ध्रुवाव्युपहितान्यपि भोगभुवा तु वा' (जयो० ९/९८)

उपहितचेता (वि०) आच्छादित चित्त वाला। (सुद० १/४८)

उपहूतिः (स्त्री०) [उप+ह्वे+क्तिन्] आह्वान, निमंत्रण, आमन्त्रण, बुलावा।

उपह्वरः (पुं०) [उप+ह्वृ+घ] एकाकी स्थान, शून्यस्थान।

उपहृ (सक०) [उप+हृ] धारण करना, रखना, ग्रहण करना। 'मुक्तादंतौ च ता उपजहार नृपाययुक्ताः' (समु० ४/३८)

उपांशु (अव्य०) [उपगता अंशवो यत्र] (जयो० ३/१११)

उपांशु-पांसुल (वि०) अतिशयरेण व्याप्त। (जयो० वृ० ३/१११)

उपाकरणं (नपुं०) [उप+आ+कृ+ल्युट्] सन्निकट लाना, आरम्भ के लिए निमन्त्रण। १. उद्यत, आरम्भ, उपक्रम।

उपाकर्मन् (नपुं०) [उप+आ+कृ+मनिन्] उपक्रम, अनुष्ठान।

उपाकृत (भू० क० कृ०) [उप+आ+कृ+क्त] आरम्भ, कार्य किया गया, प्रयत्नशील।

उपाक्षम् (अव्य०) नेत्राभिमुख, नयन सम्मुख, निज सम्मुख।

उपाख्यानं (नपुं०) [उप+आ+ख्या+ल्युट्] लघुकथ, गल्प, कथा, आख्यायिका।

उपागमः (पुं०) [उप+आ+गम्+अप्] पहुंचना, आना, निकटता को प्राप्त होना, घटित होना। २. प्रतिज्ञा, स्वीकृति।

उपाग्रं (नपुं०) निकट, पास, समीप।

उपाग्रहणं (नपुं०) [उप+आ+ग्रह्+ल्युट्] ज्ञानोपर्जन, अभ्यास, विशेष ग्रहण।

उपाङ्गं (नपुं०) उपभाग, उपशीर्षक, अवयव, शरीर के हस्त पैरादि अंग।

उपाङ्गिन् (वि०) अंगवाली। (जयो० ५/७)

उपाचारः (पुं०) [उप+आ+चर्+घञ्] १. रोग निदान, कार्यविधि।

उपाजगाम (भूतकालिक प्रयोग) समागत, प्राप्त हुआ। 'कश्चिदुपाजगाम' (जयो० १/७७)

उपाजे (अव्य०) आश्रय, सहारा, यह 'कृ' धातु के साथ ही।

उपाञ्चित (वि०) समागत, प्राप्त (समु० ७/२)

उपाञ्जनं (नपुं०) [उप+अञ्ज्+ल्युट्] लीपना, मलना, पोतना, सफेदी करना।

उपात् (भू०) पड़े हुए, रखे हुए, गिरे हुए। (सुद० २/४७)

उपात्तः (वि०) १. पूर्वोपार्जित, 'उपात्तपापोच्चयसम्विलोपी' (समु० ६/३२) २. आरोपित 'शृङ्गोपात्त पताकाभिराह्वयन्' (जयो० ३/७४) उपात्ता-आरोपिता-'उपात्त सम्यक्त्वगुणो-रुपूर्तीन्'। (सम्य० ५८)

उपात्तजातिः (स्त्री०) उपलब्ध जाति। (वीरो० ११/२३)

उपात्तजातिस्मृतिः (स्त्री०) प्राप्त जाति का स्मरण।

उपात्तढंग (वि०) समीचीन विधि। (सम्य० २९) (वीरो० ११/२३)

उपात्त-तामस (वि०) तामसता रखने वाला, तमोगुणयुक्त (जयो० २/१०९) 'राक्षसाशनमुपात्त-तामसं

उदात्ततोरणः (पुं०) तोरण वृक्ष को प्राप्त। (जयो० २४/५०)

उपात्तप्रतिपत्तिः (स्त्री०) अन्यथानुपत्तिरूप अवयव, 'अनुमानाङ्ग रूप प्रतिपत्ति' 'उपात्ता संलब्धा प्रतिपत्तिः प्रगल्भता येन सः'

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उपात्तवती (वि०) उत्कण्ठिता (वीरो० १२/२६) (जयो० वृ० ८/४६)

उपात्तविधिः (स्त्री०) उपलब्धविधि। 'यत्सूक्तिपूर्वकमुपात्त विधेयवादः' (सुद० ४/२५)

उपात्तसातः (पुं०) सुख सम्पन्न, साता को प्राप्त। 'अनन्तनामानुपात्तसातं' (भक्ति० १९)

उपात्ययः (पुं०) [उप+अति+इ+अच्] उल्लंघन करना, विचलित होना, दोष युक्त होना।

उपादानं (नपुं०) [उप+आ+दा+ल्युट्] १. प्राप्त करना, लेना, अभिग्रहण करना, ग्रहण करना। २. भौतिक कारण, बाह्य साधन। ३. न्यूनपद का समाहार। जो स्वयं कार्यरूप परिणत होता है वह उपादान कहलाता है। प्रत्येक कार्य अपने उपादान के द्वारा उपादेय अर्थात् अभिन्न रूप से परिणमनीय होता है। "किलाभिन्नत्वेनऽऽदानंधारणमधिकरणं तदुपानम्" "उप' यह उपसर्ग है जिसका अर्थ अभिन्न रूप में एकमेक रूप में जैसा कि उपयोग शब्द में होता है। उपयोग-ज्ञान-दर्शन-ये आत्मा के साथ एकमेक होकर रहते हैं। 'आदान' का अर्थ धारण करना है। अर्थात् अधिकरण या आधार एवं अभिन्न रूप से एकमेक होते हुए जो प्राप्त करने वाला हो, वह उपादान होता है। (सम्य० पृ० १४ १५)

चेतन-अचेतन पदार्थों की उत्पत्ति अपने अपने उपादान से होती है, ब्रह्म वादियों का कथन। भो गोमयादाविह वृश्चिकादिच्छिकित्ति रायाति विभो अनादि। जनोऽप्युपादान-विहीनवादी, वह्निं च पश्यन्नरणे प्रमादी। (जयो० २६/९४) हे प्रभो! गोबर आदि अचेतन पदार्थों से बिच्छू आदि चेतन शक्ति की उत्पत्ति होती है, ऐसा जो कहते हैं उनका कहना यह ठीक नहीं है, क्योंकि चेतन शक्ति तो अनादि है, गोबर आदि मात्र से शरीर उत्पन्न होता है। इसी तरह अरणि नामक लकड़ी से अग्नि की उत्पत्ति देखकर जो यह कहना है कि उपादान के बिना भी कार्य की उत्पत्ति होती है, वह प्रमादी है, यथार्थवादी नहीं है, क्योंकि अरणि आदि लकड़ी रूपादिमान् होने में पुद्गल है।

उपादानकारणं (नपुं०) भौतिक कारण, प्रकृतिजन्य साधन।

उपादानकारणत्व (वि०) कार्य के साथ तादात्म्य। 'उपादानं उत्तरस्य कार्यस्य सजातीयं कारणम्' (न्याय० वि०१/१३२) 'अवच्छिन्नकारणताशालित्वं तदिति उपादानकारणत्वम्' (अष्ट सहस्त्री १५/१३५)

उपादानत्व (वि०) कार्य के साथ तादात्म्य, कार्य में समस्त विशेषताओं का समर्पण।

उपादानविहीन (वि०) भौतिक कारणों से रहित, ग्रहण रहित, उत्पत्ति रहित।

उपादिमन्मठ (वि०) १. गृहस्थाश्रम में स्थित, द्वितीयाश्रम में स्थित। 'पठेद्य-द्युपस्थितिरूपादिमन्मठे' (जयो० २/५७)

उपादेयः (पुं०) अभिन्न परिणमनीय कारण। (सम्य० १४)

उपाधिः (स्त्री०) [उप+आ+धा+कि] १. विशेषता, गुण, विशेषण, विवेचक। २. प्रयोजन, संयोग, अभिप्राय। ३. पद, नाम, संज्ञा, उपनाम।

उपाधिजन्य (वि०) विशेषता रहित।

उपाधि-धारक (वि०) विशेषण/गुण धारण करने वाला।

उपाधि-पात्रः (वि०) उपाधि का अधिकारी। गुण का अधिकारी।

उपाधि-वचनं (नपुं०) आसक्ति जन्य वचन।

उपाध्यायः (पुं०) १. अध्यापक, गुरु। रयणत्तय-संजुत्ता, जिणकहिय-पयत्थदेसया सूरा। णिक्कंख-भाव-सहिया, उवज्झाया एरिसा होंति।। (नि०सा०७४) 'उपेत्य तस्मादधीयते इत्युपाध्यायः' (त०श्लोक ९/२४) उपाध्यायः अध्यापकः। (जैन०ल० २८०) 'मोक्षार्थं उपेत्याधीयते शास्त्रं तस्मादित्युपाध्यायः' (कार्ति९४५७) 'यदध्येति स्वयं चापि शिष्यानध्यापयेद् गुरुः।'

उपानयः (पुं०) उपहार, पारितोषिक, भेंट। (जयो० ९/२१)

उपानह् (स्त्री०) [उप+नह्+क्विप्] पादुका, पादरक्षक (जयो० २१/६४) जूता, पादत्राण, चप्पल। (जयो० ३/१००)

उपान्तः (पुं०) १. सिरा, पल्लू का अग्रभाग, गांट, किनारी। (वीरो० २१/१०१) २. पार्श्वभाग, समीपस्थ स्थान।

उपान्तभृत (वि०) रखाने वाली, रक्षा करने वाली। (वीरो० २१/१०)

उपान्तिक (वि०) निकटस्थ, समीपस्थ, पड़ौसी।

उपान्त्य (वि०) [उपान्त+यत्] अन्तिम से पूर्व का।

उपान्त्यः (वि०) अक्षि कोर।

उपान्त्यजिनः (पुं०) पार्श्वनाथ, तेवीसवें तीर्थंकर। 'उपान्त्योऽपि जिनो बाल-ब्रह्मचारी जगन्मतः।' (वीरो० ८/४०)

उपायः (पुं०) [उप+इ+घञ्] १. युक्ति, विचार, उचित चिन्तन, समीचीन कथन। (सुद० १०१) 'अभीष्टसिद्धे सुतरामुपाय' २. पद्धति, रीति, परम्परा, प्रयत्न, चेष्टा। 'स्याद्यदीदमह-मस्मदुपायाद्' (जयो० ४/३१) 'उपायात् प्रयत्नाद् अयाद् भाग्यात् स्यात्।' (जयो० व० ३१) 'नम्येतितीत्क न

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

परोऽस्त्युपायः' (भक्ति० पृ० २५) उपायतः-प्रधान/साधन से-(सम्य० १५/१) में 'उपाय' का अर्थ साधक भी है।

उपायकर्तृ (वि०) प्रयत्नशील, उपाय करने वाले। 'अनेक धान्यार्थमुपायकर्त्रोर्महत्सु' (सुद० २/२९)

उपायनं (नपुं०) [उप+अय्+ल्युट्] १. उपहार, भेंट, प्राभृत, पारितोषिक, पुरस्कार। 'उचितोपायनपावनोत्सव' (जयो० २०/३३) २. अपहारक, निकटस्थ स्थान बनाना। 'जगतां तृड्डुपायनोऽपि कूपः' 'किमु नो वारिदवारि दक्षरूपः' (जयो० १२/८६)

उपायनी (वि०) उपहार देने योग्य। (जयो० ११/६५)

उपायनीकृत्य (सं०कृ०) उपहार देकर, भेंट देकर। जगन्ति जिह्वात्रिभिरवशेषात्तुपायनीकृत्य पुनर्विशेषात्' (जयो० ११/६५)

उपायपदं (नपुं०) योग्यस्थान, समुचित पद। 'वञ्चिताः स्म किमुपायपदं तं' (जयो० ४/१०)

उपायपरः (पुं०) उपाय/प्रयत्न में तत्पर। 'तत्कृत्यमित्थं च तदित्युपायपदो नरोऽयं भविता सुखाय।' (जयो० २७/५५)

उपाय-सञ्जात (वि०) प्रयत्न को प्राप्त हुआ। (जयो० वृ० ३/१०)

उपायान्तर (वि०) प्रयत्न बिना भी। (हित०१४)

उपारब्ध (वि०) प्रारम्भ करने वाली। (सुद० १३३)

उपारब्धवती (वि०) प्रारम्भ करती हुई।

उपारम्भः (पुं०) [उप+आ+रभ्+घञ्] प्रारम्भ, समारम्भ, उपक्रम, शुरू।

उपार्जनं (नपुं०) [उप+अर्ज्+ल्युट्] कमाना, लाभ उठाना। (जयो० ३/१)

उपार्जित (वि०) कमाया गया, संचित किया गया, लाभ लिया गया। श्मसानमासाद्य कुतोऽपिसिद्धिरुपार्जिताऽनेन सुमित्र विद्धि।'' (सुद० १०७)

उपार्थ (वि०) अल्प मूल्य वाला।

उपालम्भः (वि०) [उप+आ+लभ्+घञ्] उलाहना, निन्दा, गर्हा, द्वेष, दुर्वचन, व्यापाय। (जयो० वृ० ८/२४) उपालम्भः सपिपास-वचनैः शिक्षा (जैन०ल० २८)

उपालम्भिन् (वि०) मारपीट, बन्धन, दुर्वचन वाला। बन्धस्य हेतुत्वमुपैत्यसो योपालम्भिनश्चौर्यमिवात्र दस्योः। (सम्य० २७)

उपावर्तनं (नपुं०) [उप+आ+वृत्+ल्युट्] १. लौटना, मुड़ना, वापिस होना। २. परावर्तन, परिभ्रमण, घूमना, हिंडन, परिहिंडन।

उपाद्रिय् (सक०) स्वीकार करना, अंगीकार करना। 'शालिकालिभिरूपाद्रियते वा' (जयो० ४/५७)

उपाश्रमं (नपुं०) स्थान, आश्रय, आधार। (जयो० १३/६०)

उपाश्रयः (पुं०) [उप+आ+श्रि+अच्] १. आश्रय, आधार, अवलम्बन। २. पात्र पाने योग्य, ३. निर्भर रहना, आधीन होना। ४. समवसरण 'नाभेयस्योपाश्रय समवसरण नाम' (जयो० वृ० २६/४२)

उपाश्रय् (सक०) आश्रय लेना, आधार बनाना, अवलम्बन करना (उपाश्रयन्- मुनि० ८) उपाश्रयन्त (सुद० ११८) उपाश्रयति (जयो० २/९) ज्ञानेन नानन्दमुपाश्रयन्तश्चरन्ति ये ब्रह्मपथे सजन्तः।' (वीरो० १/६)

उपाश (वि०) अभिलाष युक्त, प्राप्ताभिलाषी। 'पुरा सरोजेषु मयेत्युपाशः' (जयो० ११/४५)

उपासकः (पुं०) [उप+आस्+ण्वुल्] १. श्रावक, व्रत ग्रहण करने वाला, ग्रहस्थ। (जयो० १/११३)

उपाशकदशा (स्त्री०) श्रावक अवस्था। उपासकाः श्रावकाः, तद्गतक्रियाकलापनिबद्धदशाः, दशाध्ययनोपलक्षिताः उपासकदशा। (जैन०ल० २८१)

उपासक-सूत्रं (नपुं०) उपासकाध्ययन। (हि०सं०२५)

उपासकाचारः (पुं०) श्रावकों के आचार-विचार। नोपासकाचार-विचारलोपी' (वीरो० ११/२९)

उपासका नामर्धातिः (स्त्री०) उपासकाध्ययन। (जयो० २/४५)

उपासकाध्ययनं (नपुं०) उपासकाचार, श्रावकाचार के गुणों का चिन्तन। 'उपासकाध्ययने श्रावकधर्मलक्षणम्' (स०श्रा०१/२०)

उपासद् (सक०) मिटा लेना, शान्त कर लेना। 'जातुवृत्तिमुपासदत्' (समु० २/११)

उसासनं (नपुं०) [उप+आस्+ल्युट्] १. सद्भाव, दया, करुणा। २. अर्चन, पूजन, आदर, आराधना मनन-चिन्तन।

उपासा (स्त्री०) [उप+आस्+अ+टाप्] आराधना, सेवा, आदर, सम्मान। * पूजा।

उपासना (स्त्री०) [उप+आस्+युच्] १. आराधना, अर्चना, पूजा, १. सद्भाव, समादर, धार्मिक मनन-चिन्तन। (जयो० १५/६९)

उपासनाविधिः (स्त्री०) पूजन सामग्री। (दयो० ८३)

उपास्तमनं (नपुं०) रवि का अस्त होना।

उपास्तिः (स्त्री०) [उप+आस्+क्तिन्] आराधना, उपासना, सेवा, पूजा, अर्चना।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उपास्त्रं (नपुं०) लघुशस्त्र, छोटा आयुध।

उपासिका (स्त्री०) श्राविका, श्रावक व्रतधारी स्त्री। 'अहं प्रभोरेवमुपासिका वा' (वीरो० ५/२१) या पत्नी-कदम्बराज-कीर्तिदेवस्समालला। (वीरो० १५/४२)

उपाहारः (पुं०) उपहार, स्वल्पाहार, नाश्ता।

उपाहित (भू० क० कृ०) [उप+आ+धा+क्त] १. संधारित, धारण किया गया, समायोजित, जमा किया गया। २. सम्बद्ध, सम्मिलित।

उपूर्तिन् (वि०) पूर्ति करने वाला। (सम्य० ५८)

उपेक्ष् (सक०) उपेक्षा करना, अवहेलना करना, उदासीनता रखना। 'कृषके च रसकोऽप्युपेक्षते' (जयो० २/१६)

उपेक्षणं (नपुं०) [उप+ईक्ष्+अ+ल्युट्] उपेक्षा, अवहेलना, उदासीनता। 'उपेक्षणं तु चारित्तं तत्त्वार्थानां सुनिश्चितम्।' (सम्य० ८२)

उपेक्षणीय (वि०) उपेक्षा करने योग्य, अवहेलनीय, त्यजनीय। (हित१७)

उपेक्षा (स्त्री०) [उप+ईक्ष्+अ+टाप्] उदासीनता, अवहेलना, घृणा। राग-द्वेषयोरप्रणिधानमुपेक्षा। (स०ति०१/१०) 'श्रद्दस्यत्वात्मनो हि या:।' (सम्य० ८३)

उपेक्षित (भू० क० कृ०) [उप+ईक्ष्+अ+क्त] उपेक्षणीय, अवहेलित, घृणित, निन्दनीय। (सुद० वृ० ११२)

उपेक्षित-संसारः (वि०) संसार से उदासीन हुआ। इत्युपेक्षित-संसारो विनिवेद्य महीपतिम्' (सुद० वृ० ११२)

उपेक्ष्य (सं०कृ०) उपेक्षा करके।

उपेत (भू० क० कृ०) [उप+इ+क्त] सन्निकट आया, पहुंचा, उपस्थित, समागत, प्राप्त। 'निम्नगे सरसत्वमुपेता' (सुद० १/४३)

उपेत्य (सं०कृ०) प्राप्त करके, उपस्थित होकर, आकर। 'स्वर्यामिति यावदुपेत्य महीशः।' (सुद० १०८)

उपेन्द्रः (पुं०) [उपगत इन्द्रम्] उपेन्द्र, देव का भेद।

उपेय (सं०कृ०) [उप+इ+यत्] पहुंचने योग्य, प्राप्त करने योग्य।

उपोढ (भू० क० कृ०) [उप+वह्+क्त] १. संचित, एकत्रित, २. निकटस्थ।

उपोत्तम (वि०) अन्तिम से पूर्व।

उपोद्घातः (पुं०) [उप+उद्+हन+घञ्] १. प्रस्तावना, भूमिका, पुरोवाक्। २. उदाहरण, दृष्टान्त। ३. उद्दिष्ट वस्तु का बोध कराना। 'उपोद्घातस्तु प्रायेण तदुद्दिष्ट' (जैन०ल० २८३)

उपोद्बलक (वि०) [उप+उद्+बल्+ण्वुल्] पुष्ट करने वाला, शक्तिशाली बनाने वाला।

उपोद्बलनं (नपुं०) [उप+उद्+बल+ल्युट्] पुष्ट करना, शक्तिसम्पन्न बनाना।

उपोस्य (सं०कृ०) उपवास करके। (भक्ति० १०)

उपोषणं (नपुं०) [उप+वस्+ल्युट्] अनशन व्रत रखना, उपवास करना।

उपोषित (वि०) [उप+वस्+क्त] उपवास करने वाला। 'सा क्वचिदपि उपोषितस्य' (सुद० ९१)

उप्तिः (स्त्री०) [वप्+क्तिन्] बीज बोना।

उब्ज् (सक०) १. भींचना, दबाना, मसलना। २. सीधा करना।

उभ् (सक०) १. सीमित करना, कम करना, २. आच्छादित करना, ऊचा बिछाना।

उभ (सर्वनाम, विशेषण) [उभ+यक्] उभय, दोनों।

उभय (सर्व०वि०) [उभ्+अयट्] (जयो० ३/५६) दोनों एक साथ दो, दो वस्तुएं। 'दम्पत्योरुभयोर्व्यतीतिमुदगाद्' (सुद० ११६)

उभयचर (वि०) जल-स्थल में विचरण करने वाले।

उभयक्षेत्रं (नपुं०) दोनों क्षेत्र। 'उभयमुभय-जल-निष्पाद्यशस्यम्'

उभयतः (अव्य०) [उभय+तसिल्] दोनों ओर से, दोनों ओर। दोनों पद्धतियों से, दोनों दृष्टियों से।

उभयत्र (अव्य०) [उभय+त्रल्] दोनों स्थानों पर, दोनों ओर, दोनों आधारों पर।

उभयथा (अव्य०) [उभय+थाल्] दोनों पद्धतियों से, दोनों विचार धाराओं से।

उभयद्युः (अव्य०) [उभय+द्युस्] दोनों दिन, आगमी दिन।

उभयपक्षः (पुं०) दोनों पक्ष (जयो० ३/५६) (जैन ल०२८३)

उभयपद (नपुं०) दोनों चरण।

उभयपदानुसारिबुद्धिः (स्त्री०) अतिशय बुद्धि धारक।

उभयप्रायश्चित्तं (नपुं०) आलोचन एवं प्रतिक्रमण रूप प्रायश्चित्त। सगावराहं गुरूणमालोचिय गुरुसक्खिया अवराहादो पडिणियत्ती उभयं णाम पायच्छित्तं (धव० १३/६०)

उभयबन्धः (पुं०) विशिष्ट बन्ध, परस्परबन्ध, इतरेतरबन्ध। 'यः पुनः जीव कर्मपुद्गलोः परस्पर परिणाम-निमित्त-मात्रत्वेन विशिष्टतरः परस्परमवगाहः स तदुभय-बन्धः' (प्रव० सा० अमृत वृ० ३/८३)

उभयबन्धिनी (वि०) उदय-अनुदय रूप बन्ध वाली।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

'उभयऽस्मिन्नुदये वा बन्धोऽस्ति यासां तां उभयबन्धिन्यः' (जैन०ल० २८३)

उभयमनोयोगः (पुं०) सत्यासत्य मनोयाग, उभयशक्ति रूप मनोयोग।

उभय-वचनयोगः (पुं०) धर्म विवक्षित सत्यासत्य वचनयोग। 'जाणुभयं सच्चमोसोत्ति' (धव० १/२८६)

उभयवधः (पुं०) संकल्पित जीवघात। 'संकल्पितस्य जीवस्य वध उभयवध इति' (पंच सं०पृ० १६)

उभयविद्या (स्त्री०) दो प्रकार की विद्याएं, परा विद्या-अपरा विद्या।

उभयश्रुतं (नपुं०) श्रुत-मति सहित।

उभयसारी (वि०) नियम-अनियम रूप पद वाली।

उभयस्थितः (पुं०) दोनों रूप में स्थित।

उभयाक्षरं (नपुं०) उभय पदार्थों से सम्बन्धित अक्षर।

उभयाचारः (पुं०) दोनों प्रकार का आचरण। (भक्ति० ८)

उभयाननुगामी (वि०) क्षेत्र एवं भव में नहीं जाने वाला। 'यत्क्षेत्रान्तरं भवान्तरं च न गच्छति स्वोत्पन्न-क्षेत्र-भवयोरेव विनश्यति तदुभयाननुगामी।' (गो०जी०वृ० ३७२)

उभयानन्तः (पुं०) दोनों तरह से अन्त रहित।

उभयानुगामी (वि०) भव-भवान्तर गामी।

उभयासंख्यातः (पुं०) दोनों ओर से नहीं गिनी जाने वाली संख्या।

उम् (अव्य०) विस्मय-बोधक अव्यय, प्रश्नात्मक शब्द, क्रोध, सान्त्वना।

उमा (स्त्री०) १. कान्ति, प्रभा, चमक। 'वक्तुरप्य-परवक्तुरूमाङ्गैः' (जयो० ५/४८) 'उकारेण चिता सहिता उमा नाम' (जयो० वृ० ११/९१) २. पार्वती-'उमामवाप्य महादेवोऽपि' (सुद० ११२) ३. रति-(सुद० ७९)

उमाधवः (पुं०) महादेव, शिव, शंकर। 'भालानलप्लुष्टमुमाधवस्य' (जयो० १/७६) उमाधवस्य-महादेवस्य' (जयो० वृ० १/७६)

उमापतिः (पुं०) शिव, महादेव, शंकर।

उम्बरः (पुं०) द्वार के ऊपर की लकड़ी, तरंगा।

उरः (पुं०) [उर+क] १. भेड़, मेष। हृदया 'यस्य काम परिवादसादुरो' (जयो० २/६८) यस्य उरो हृदयं' (जयो० वृ० २/६८)

उरगः (पुं०) [उरसा गच्छति] सर्प, सांप, अहि, भुजंग, नाग।

उरङ्गः (पुं०) सर्प, सांप।

उरणः (पुं०) [ऋ+क्यु-उत्व-रपरश्च] भेड़, मेष।

उरणकः (पुं०) मेष, भेड़।

उरभ्रः (पुं०) [उरु उत्कटं भ्रमति इति उक+भ्रम्+ड] भेड़, मेष।

उररी (अव्य०) [उर्+अरीक्] सहमति, स्वीकृति।

उररीकार्य (पुं०) स्वीकार्य, सहमत जन्य कार्य। 'युवाभ्यामुररीकार्यः' (सुद० ४/४५) 'धरा पुरान्यैरुररीकृता वा' (सुद० ९११)

उरस् (नपुं०) [ऋ+असुन्] वक्षस्थल, छाती। (सुद० २/४६)

उरश्छदः (वि०) वक्षःस्थलावरण, कवच। (जयो० ७/९४)

उरःस्थल (नपुं०) वक्षःस्थल, छाती। 'यथोत्तरं पीवर सत्कुचोरःस्थलं' (सुद० २/४६)

उरसिल (वि०) [उरस्+इलच्] विस्तीर्ण वक्षःस्थल वाला।

उरस्य (वि०) [उरस्+यत्] औरस सन्तान।

उरस्वत् (वि०) [उरस्+मतुप्] विस्तीर्ण वक्षःस्थल, उन्नत छाती, उभरी हुई छाती।

उरी (अव्य०) स्वीकृति बोधक अव्यय। उरीकृ-आज्ञा देना, अनुमति देना, स्वीकृति देना। उरीकरोति-(समु० ४/२४, राज्य करता है। उरीचकार-(जयो० ११/२) स्वीकृति प्रदान की। उरी कार्य-बहिष्कारउरीकार्यः सत्याग्रहमुपेयुषा-(वीरो० ११/४२) उरीकुरु-(जयो० २/९०) स्वीकृति दें। उरीकृत-स्वीकृत (जयो० २२/६७)

उरु (वि०) १. दीर्घ, उन्नत, विशाल, विस्तीर्ण, उभरा हुआ। २. प्रशस्त, अतिशय जन्य, श्रेष्ठ, प्रचुर।

उरुका (वि०) सुदीर्घा, अतिविस्तृता। (जयो० १०/९३)

उरुकीर्तिः (स्त्री०) प्रख्यात कीर्ति, सुविख्यात, प्रसिद्ध।

उरुचारु (स्त्री०) अत्यन्त सुन्दर, रमणीय (जयो० ११/२०) 'मोचोरुचारुर्भवितुं तु यस्याः' (जयो० ११/२०) 'उरुश्चारु भवितुं जंघासदृशी सम्भवितुम्' (जयो० वृ० ११/२०)

उरुधाम्न (वि०) विस्तृत प्रकाश वाले। (सम्य० ७९)

उरुमार्गः (पुं०) चौड़ी सड़क, लम्बी सड़क।

उरुविक्रम (वि०) पराक्रमी, बलशाली, शक्तियुक्त।

उरुरी (अव्य०) स्वीकृति सूचक अव्यय।

उरोज (नपुं०) स्तन, थन। (जयो० ११/४)

उरोजतीरः (पुं०) स्तन, तट। (वीरो० १२/१५)

उरोजदुर्गः (पुं०) स्तनदुर्ग, स्तनरूपी किला। (जयो० १६/४७) * विस्तृत दुर्ग, फैला हुआ किला। * दृढ़ घेरा।

उरोजबिम्बं (नपुं०) स्थूल स्तन, उन्नत स्तन, उभरे हुए स्तन। 'गुरुर्नितम्बः स्विदुरोजबिम्बः' (जयो० ११/२४)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उरोजयुगलं (नपुं०) स्तन द्वय। (जयो० १४/६८)

उरोजराजिः (स्त्री०) कच युगल, स्तन युगल। (वीरो० ५/४०) (जयो० १३/८४)

उरोजसम्भूतिः (स्त्री०) स्तनागत। 'उरोजसम्भूतिमगान्मुहुर्वा' (जयो० ११/४)

उर्णनाभ (पुं०) [उर्णेव सूत्रं नाभौ गर्भेऽस्य] मकड़ी।

उर्णा (स्त्री०) [ऊर्णा। इ ह्रस्व] ऊन।

उर्वटः (पुं०) [उरु+अट्+अच्] १. बछड़ा, २. संवत्सर।

उर्वरा (स्त्री०) [उरुशस्यादिकमृच्छति] उपजाऊ भूमि, उन्नतकृषि भूमि।

उर्वशी (स्त्री०) [उरुन् महतोऽपि अश्नुते वशीकरोति-उरू+अश्+क] अप्सरा, पुरुरवा की पत्नी। (दयो० २७/२४)

उर्वारुः (पुं०) [उरु+ऋ+उण्] लकड़ी विशेष।

उर्वी (स्त्री०) विशाल भूमि, उन्नत धरा, पृथ्वी, धरती, भू-भाग। विस्तृत मैदान। 'समीक्ष्यते श्रीपदसम्पदुर्वी' (जयो० ११/८४) 'आदित्य उर्व्यां रसभुक् समस्ति' (समु० ३/५)

उर्वीधपतिः (पुं०) पर्वतराज, गिरीश्वर। (जयो० २४/१८)

उर्वीभृत् (पुं०) १. नृप, अधिपति। २. पर्वत, पहाड़।

उर्वीरुहः (पुं०) वृक्ष, पादप।

उलपः (पुं०) लता, बेल, गुल्म, कोमल तृण, 'तलाग्रं गुल्मिन्यामुलपं यं मतंमिति' विश्वलोचनः (जयो० १४/२६)

उलूकः (पुं०) उल्लू, कौशिक। कौशिकात्-उलूकात् (जयो० वृ० ८/१०) 'उलूकः स्तेनवन्मोदमादधाति' (दयो० २/६)

उलूकजातिः (स्त्री०) उल्लू की जाति। (वीरो० २०/२०)

उलूकतनयः (पुं०) निशाचरवर्ग, उलूक सजाति- निशाचर, राक्षस। गुप्तोऽप्युलूकतनयस्य तथा सजातिः। (जयो० २८/५०) २. सांख्याचार्यः, सांख्यों के आचार्य-कणादमुनि।

उलूकपुत्रः (पुं०) निशाचर, राक्षस।

उलूकसजातिः (स्त्री०) राक्षस जाति।

उलूखलं (नपुं०) [ऊर्ध्वं खम् उलूखम्] ओखली, धान्यकुटक, खरल।

उलूखलकं (नपुं०) [उलूखल+कन्] ओखली, खरल, कुटक।

उलूखलिक (वि०) [उलूखल+कन्] खरल किया गया, ओखली में पीसा गया।

उलूतः (पुं०) [उल्+ऊतच्] अजगर, विषहीन सर्प।

उलूपी (स्त्री०) मत्स्य, मछली।

उल्का (स्त्री०) [उष्+कक्+टाप्, षस्य लः] १. अग्नि पिण्ड, आकाश का अग्नि पिण्ड, २. मसाल, ज्वाला, अग्नि।

उल्कापातः (पुं०) अग्निपतन, ज्वाला गिरना।

उल्कापिण्डः (पुं०) अग्नि पिण्ड।

उल्कामुखः (पुं०) बैताल।

उल्कुषी (स्त्री०) [उल+कुष्+क+ङीष्] केतु, उल्का, ज्वाला, अग्निपिण्ड।

उल्बं (नपुं०) भ्रूण, गर्भाशय।

उल्बण (वि०) १. अतिशय, अधिक, पर्याप्त, प्रचुर, तीव्र, बहुत। २. दृढ़, शक्तिशाली। ३. स्पष्ट, स्वच्छ, साफ, शुभ्र।

उल्मुकः (पुं०) [उष्+मुक्+षस्य लः] ज्वलित काष्ठ, ज्वाला, मशाल, उल्का। 'उल्मुकं शिशुवदात्मनोऽशुभम्' (जयो० ७/७९)

उल्लङ्घ् (अक०) लांघना, अतिक्रमण करना, छलांग लगाना, तोड़ना। सद्यो लिप्ततयार्द्रवेश्म न विशेन्नोद्घाटयेदावृतं द्वारं तत्र च मण्डलुकादिकमथो नोल्लंघयेदास्थितम्' (मुनि० १०)

उल्लङ्घनं (नपुं०) [उद्+लङ्घ्+ल्युट्] ०अतिक्रमण, ०छलांग, लांघना। (जयो० वृ० ३/९०)

उल्लङ्घ्य (सं०कृ०) छलांग लगाकर, पार करके, लांघकर। (मुनि० १०)

उल्लल (वि०) [उद्+लल्+अच्] १. कंपनयुक्त, हिलने वाला। २. घने केशराशिवाला, लोमश।

उल्लस् (अक०) [उद्+लस्] आनन्द होना, हर्ष होना, रोमांच होना, खुश होना। 'समुल्लसन्मानसवत्युदारा' (सुद० १/८)

उल्लसदङ्ग (नपुं०) मनोज्ञशरीर, सुन्दर अंग। उल्लसदङ्गम-स्यास्तीत्युल्लसदङ्गवान् मनोज्ञशरीरधारी। (जयो० वृ० १०/७९)

उल्लसित (भू० क० कृ०) १. रोमांचित, हर्षित, प्रसन्नचित्त। २. प्रभावान, कान्तियुक्त आभाशील। उल्लसितोऽभूत्-प्रसन्नो जातः। (जयो० वृ० ४/२५) (सुद० ३/४६)

उल्लाघ (वि०) [उद्+लाघ्+क्त] १. स्वस्थ, रोग रहित। २. प्रवीण, चतुर, दक्ष, निपुण। ३. पवित्र, उत्तम, अच्छा।

उल्लापः (पुं०) [उद्+लप्+घञ्] वार्तालाप, बातचीत, शब्द, भाषण, संवेगशील शब्द, तीव्र-वचन।

उल्लापक (वि०) मुखरी वचन वाला, वार्तालापी।

उल्लाप्यं (नपुं०) अभिनयजन्य नाटक, संवाद युक्त नाटक।

उल्लासः (पुं०) [उद्+लस्+घञ्] १. प्रसन्न, आनंद, हर्ष, खुशी, उमंग। २. कान्ति, प्रभा, आभा। ३. उत्सव-'समागतास्ते उत्सवायउल्लसाय (जयो० वृ० १८/११)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उल्लास-शालिनी (वि०) उमंग/हर्षयुक्ता। (सुद० ७८)

उल्लिङ्गित (वि०) [उद्+लिंग्+क्त] प्रसिद्ध, विख्यात।

उल्लिख् (सक०) उत्कीर्ण करना, बनाना, चित्रित करना।

उल्लिखित (भू० क० कृ०) उत्कीरित, चित्रित। (जयो० २३/३३) उत्कीर्ण। 'भीतोऽथ तत्रोल्लिखितान् मृगेन्द्रादि' (वीरो० २/३४)

उल्लीढ (वि०) [उद्+लिह्+क्त] घर्षित, रगड़ा हुआ, मसला गया।

उल्लुञ्चनं (नपुं०) [उद्+लुञ्च्+ल्युट्] १. लुञ्चन, लोंचना, उखाड़ना, बाल उखाड़ना। २. काटना।

उल्लुण्ठनं (नपुं०) [उद्+लुण्ठ्+ल्युट्] व्यंगात्मककथन, व्यंग-वचन।

उल्लू (पुं०) १. पक्षी विशेष। २. मूर्ख।

उल्लूसत् चमकती हुई, देदीप्यमान। (दयो० ४२) 'उद्दुल्लूसत्कीकशदाम शस्ता' (दयो० ४२)

उल्लेखः (पुं०) [उद्+लिख्+घञ्] १. संकेत, वर्णन, सूक्ति चिह्न, खनन।

उल्लेखः (पुं०) उल्लेख अलंकार-जिसमें किसी वस्तु का अनेक प्रकार से वर्णन हो। (जयो० १६/७, ८, ९) 'एकस्य अनेकधा उल्लेखाद-उल्लेखालंकारः' (जयो० वृ० ७/१०१) स्वर्णदीपयसि पङ्कपतश्चन्द्रमस्यपि कलङ्करूपतः।

गीयते मद इतीन्द्र सद् गजमस्तके जयबलोद्धतं रजः॥ (जयो० ७/१०१)

उल्लेखकरी (वि०) उल्लेख करने वाला, चिह्नाभिधाम्। वर्णन करने वाला। (वीरो० ३/) 'कुर्वंस्तदुल्लेखकरीं चकार स तत्र लेखामिति तामुदारः' (वीरो० ३/९)

उल्लेखनं (नपुं०) [उद्+लिख्+ल्युट्] १. चित्रित करना, वर्णन करना, चिह्नित करना, खोदना। २. रगड़ना, छीलना, खुरचना। ३. वमन, ४. लेख, अभिलेख, प्रतिलिपि।

उल्लेखनीय (सं०कृ०) वर्णनीय, विवेचनीय। (जयो० वृ० २४/८७)

उल्लेखनीय-प्रसंगः (पुं०) वर्णन करने योग्य प्रसंग।

उल्लोचः (पुं०) [उद्+लोच्+घञ्] तम्बू, डेरा, मण्डप, वितान, शमियाना, चंदोवा, तिरपाल।

उल्लोल (वि०) [उद्+लोड्+घञ् डस्य लत्वम्] चपल, चंचल, कंपनशील, चलायमान, स्थिरता रहित।

उल्वं (नपुं०) भ्रूण, गर्भाशय।

उवगवाक्षः (पुं०) जालक, झरोखा, खिड़की। (जयो० १५/५३)

उवास-त्याग करे 'चिन्तापि चित्ते न कदाप्युवासः' (जयो० १/२२)

उवाह्- कम, (सुद० २/४५) रखना, धारण करना।

उशनस् (पुं०) [वश्+कनसि] देव विशेष। उशन्ति वर्तमानकाल लट्लकार प्रथम पुरुष बहुवचन प्रवेश करते हैं। 'यस्य प्रतिद्वारमुशन्ति सवाम्' (वीरो० १३/१२) शीलानि पत्रत्वमुशन्ति यस्य' (सुद० पृ० १३२)

उशी (स्त्री०) इच्छा, वाञ्छा, चाह, कामना, अभिलाषा।

उशीरः (पुं०) [वश्+ईरन् किल्, उष्+कीरच्] खस, सुगन्धित जड़ विशेष, जो गर्मी में शीतलता प्रदान करती है। (वीरो० १२/१४)

उष् (सक०) १. जलाना, प्रज्वलित करना, २. दण्ड देना, पीटना, चोट पहुंचना। ३. उपभोग करना।

उषः (पुं०) [उष्+क] १. प्रातः, प्रभात, सुबह। २. लम्पट, ३. ऊसर भूमि।

उषणं (नपुं०) [उष्+ल्युट्] १. काली मिर्च, २. अदरक, सौंठ।

उषपः (उष+कपन्) १. अग्नि, तेज। २. सूर्य, रवि।

उषस् (स्त्री०) [उष्+असि] प्रातः, प्रभात, प्रातःकाल, सुप्रभात, पौ फटना। उषसि दिगनुरागिणीति पूर्वा' (जयो० १०/११६) उषसि-प्रातःकाले (जयो० वृ० १०/११६) २. सन्ध्यासमय 'तरुणिमायमुषो ऽरुणिमान्विति' (जयो० २५/५) 'उषसः-सन्ध्याकालसमस्य' (जयो० वृ० २५/५)

उषा (स्त्री०) प्रातः, प्रभातकाल, प्रभातवेला। 'उषा बाणसुतायां स्यात्प्रभातेऽपि विभावरी' इति विश्वलोचनः' (जयो० २२/२५)

उषित (वि०) निवासित, स्थित, रहता हुआ। * प्रकाशित।

उषीरः (पुं०) खस, एक सुगन्धित जड़।

उष्ट्रः (पुं०) [उष्+ष्ट्रन् किन्] ऊँट, मयवर्ग 'मापनापुष्ट्राणां वर्गः समूहो वेगतो व्रजति' २. भैंसा, ३. सांड। (जयो० १३/३३।

उष्ट्रदेशः (पुं०) उष्ट्र नाम का देश।

उष्ट्रदेशधिपाः (पुं०) उष्ट्रदेश का राजा। (वीरो० १५/२९) राजा यम, यम। सुधर्म स्वामिन् पार्श्वे उष्ट्रदेशाधिपो यमः। (वीरो० १५/२९)

उष्ट्रपिष्टः (पुं०) ऊँट की पीठ।

उष्ट्र-समूहः (पुं०) ऊँट वर्ग, मय वर्ग। (जयो० १३/३३)

उष्ट्रारोहिन् (वि०) सादिवर, उष्ट्रसवार। (जयो० १८/७३)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उष्ट्रिका (स्त्री०) १. ऊँटनी, २. मृणमयपात्र, सुराही।

उष्ट्री (स्त्री०) ऊँटनी।

उष्ण (वि०) १. तेज, अग्नि, ताप, गर्म। (जयो० ६/२९) 'उषति दहति जन्तुमिति उष्णम्' (जैन०ल० २८४) 'मार्तण्डपाककृदुष्णः' (जैन०ल० २८४)

उष्ण-कलित (वि०) तेजस्वता युक्त, प्रभावान्। 'उष्णकलिते वह्नितल्पे' (जयो० वृ० ७/६१)

उष्णकरः (पुं०) सूर्य, रवि।

उष्णगुः (पुं०) सूर्य, दिनकर, रवि, आदित्य।

उष्णनामः (पुं०) उष्ण नाम कर्म, जिस कर्म के उदय से शरीर गत पुद्गलस्कन्धों में उष्णता होती है।

उष्ण-परिषहः (पुं०) उष्णपरिताप। 'उष्णं निदाघादितापातकम्' (जैन०ल० २८५)

उष्ण परिषह सहनं (नपुं०) उष्णता का कष्ट सहना, दाहकता का प्रतिकार।

उष्णयोनिः (स्त्री०) उष्ण उत्पत्ति स्थान। 'उष्णः संताप-पुद्गल प्रचय प्रदेशो वा' (मूला०वृ० १२/५८)

उष्णरश्मिः (पुं०) सूर्य, दिनकर। (वीरो० १२/२)

उष्णसच्छविः (स्त्री०) उष्णता युक्त छवि। 'ऐरावण उष्णसच्छविम्' (वीरो० ७/१०)

उष्णस्पर्शः (पुं०) तेज स्पर्श, वह्नि स्पर्श।

उष्णालु (वि०) (उष्ण+आलुच्) संतप्त, तेज युक्त, अधिक गर्मी।

उष्णिका (स्त्री०) मांद, चावल का मांद।

उष्णिमन् (पुं०) [उष्ण+इमनिच्] गर्मी तेज, वह्नि।

उष्णीषः (पुं०) पगड़ी, साफा, शिरोवेष्टन। 'उष्णमीषते हिनस्ति'

उष्णीषिन् (वि०) [उष्णीष इनि] पगड़ी वाला, शिरोवेष्टन युक्त।

उष्मः (पुं०) १. तेज, गर्मी, वह्नि, अग्नि। २. क्रोध, कोप। ३. उत्कण्ठा, उल्लास।

उष्मन् (पुं०) [उष्+मनिन्] १. गर्मी, ताप, ज्वलन, तेज। २. वाष्प, भाप, ३. ग्रीष्म ऋतु। ४. उत्सुकता।

उष्मभासः (पुं०) सूर्य, रवि, दिनकर।

उस्रः (पुं०) [वस्+रक्] प्रकाश, किरण, प्रभा, आभा, रश्मि।

उह् (अक०) चोट करना, पीड़ित करना, घायल करना, नष्ट करना।

उह् उहह (अव्य०) विस्मयादि बोधक अव्यय।

उह्रः (पुं०) [वह्+रक्] सांड, बलिवर्द।

ऊ

ऊ (पुं०) संस्कृत वर्णमाला का छठा स्वर, जिसका उच्चारण स्थान ओष्ठ है।

ऊः (पुं०) [अवतीति-अव्+क्विप्-ऊठ्] १. शिव, शंकर, महादेव। २. चन्द्र।

ऊ (अव्य०) विस्मयादि बोधक अव्यय, जिसमें करुणा का भाव रहता है। आह्वान की प्रतीति भी होती है।

ऊँ (पुं०) श्रुतविहित मन्त्रा ऊँ पुण्याहमित्यादि सूक्तैश्च (जयो० वृ० १२/६५)

ऊढ (वि०) [वह्+क्त] १. ढोया गया, ले जाया गया। २. विवाहित, पाणिग्रहीत। 'न करोत्यनूढा स्मयकौ तु कं न' (सुद० २/२१)

ऊढा (स्त्री०) विवाहित स्त्री।

ऊढिः (स्त्री०) [वह्+क्तिन्] विवाह, पाणिग्रहण।

ऊतिः (स्त्री०) (अव+क्तिन्) १. बुनना, सीना। २. सुरक्षा। ३. उपभोग। ४. खेल, क्रीड़ा।

ऊधस् (नपुं०) [उन्द्+असुन्] ऐन, औहुरी।

ऊधन्यं (नपुं०) दूध।

ऊन (वि०) [ऊन्+अच्] कम, अपूर्ण, अपर्याप्त, अपेक्षाकृत, हीन। 'ऊनस्य नूनं भरणाय सन्ति' (जयो० ५/८२) ऊनस्य-हीनस्य (जयो० वृ० ६/८२)

ऊनुः (स्त्री०) जुंआ। (जयो० २७)

ऊनोदरः (पुं०) एकासन व्रत, बाह्य तप का द्वितीय भेद। अवमौदर्य (जयो० २८/११)

ऊनोदरता (वि०) स्वल्प भोजन ग्राहकता। (जयो० वृ० २८/११)

ऊनोदलता (वि०) स्वल्प भोजन ग्राहकता। ऊनोदलतां रलयोरभेदा दूनोदरताम्।

ऊनोदलताश्रित (वि०) १. जल की कमी से युक्त। २. स मारवाडेण नाम देशेन अभ्यतीतः सन्नपि उदलतां जल युक्ततां न श्रितः। (जयो० वृ० २८/११)

ऊभ् (अव्य०) [ऊय्+मुक्] विस्मयादि बोधक अव्यय। इस शब्द से प्रश्न, क्रोध, भर्त्सना, दुर्वचन आदि का बोध होता है।

ऊयु (सक०) बुनना, सीना, सिलाई करना।

ऊररी (अव्य०) सहमति या स्वीकृति सूचक अव्यय।

ऊरीकृत (वि०) अंगीकृत, स्वीकृत। (जयो० वृ० १/८०)

ऊरव्यः (पुं०) [ऊरु+यत्] वैश्य, वर्ण का तृतीय वर्ग।

ऊरुः (पुं०) [ऊर्णु+कु] १. जंघा, जांघ। (जयो० १/१९) २.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुष्ट, परिपुष्ट, दीर्घ, बृहत्, (जयो० वृ० १/१९) कलत्रं हि सुवर्णोरुस्तम्भं कामिजनाश्रयम् (जयो० ३/७२) 'ऊरवो दीर्घा स्तम्भा यस्य तत् ऊरू एव स्तम्भो यस्य तत्' (जयो० वृ० ३/७२) 'हंसा स्ववंशोक्तसरोवरस्य' (जयो० ७/४३)

ऊरुपर्वन् (पुं०) घुटना।

ऊरुफलकं (नपुं०) जांघ की हड्डी।

ऊरुयुगं (नपुं०) जङ्घायुगल, दोनों जङ्घा।

ऊरुयुग्म् (नपुं०) 'सुवृत्त- भावादिवलेन चोरुयुगेन (जयो० ५/८१) ऊरुयुगे-जङ्घायुगले। (जयो० वृ० ५/८१) जघन युगल (जयो० ५/४६)

ऊर्जः (पुं०) [ऊर्ज्+णिच्+अच्] १. शक्ति, बल, स्फूर्ति, सामर्थ्य, जीवन, प्राण। २. सत्त्व। ३. कार्तिकमास (मुनि० ७)

ऊर्जस् (नपुं०) [ऊर्ज्+असुन्] बल, शक्ति, सामर्थ्य, प्राण।

ऊर्जस्वत् (वि०) [ऊर्जस्+मतुप्] १. शक्तिशाली, शक्तिमान। २. भोज्य युक्त, आहार युक्त।

ऊर्जस्वल (वि०) [ऊर्जस्+वलच्] महत्, बड़ा, शक्तिशाली, दृढ़।

ऊर्जस्विन् (वि०) [ऊर्जस्+विन्] महत्, बड़ा, शक्तिधारक, बलिष्ट।

ऊर्जस्विनी (स्त्री०) कार्तिक मास। पञ्चम्या नभसः प्रकृत्यभवतादूर्जस्विनी या ह्यमा (मुनि० पृ० ७)

ऊर्जित (वि०) [ऊर्ज्+क्त] शक्तिशाली, दृढ़, तेजस्वी, स्फूर्ति।

ऊर्ण (नपुं०) [ऊर्णु+ड] ऊन, ऊनी वस्त्र।

ऊर्णनमिः (पुं०) मकड़ी, वयनकीट। 'वयनकीटवद् ऊर्णनाभ इवायं' (जयो० वृ० २५/७३)

ऊर्णा (स्त्री०) [ऊर्ण्+टाप्] १. ऊन, २. भौंह का मध्यवर्ती भाग।

ऊर्णायु (वि०) [ऊर्णा+यु] ऊनी।

ऊर्णायुः (पुं०) १. भेड़, मेंढा, मेष। २. मकड़ी।

ऊर्णु (सक०) ढकना, घेरना, आच्छादित करना, छिपाना।

ऊर्ध्व (वि०) [उद्+हा] ऊपर का, उन्नत, उठाया गया, खड़ा हुआ। 'तदनन्तरमूर्ध्वं गच्छत्यलोकान्तात्' (सम्य० १९)

ऊर्ध्व (नपुं०) उन्नत, ऊँचा, बड़ा, उठा हुआ।

ऊर्ध्वकच (वि०) खड़े केशों वाला।

ऊर्ध्वकर (वि०) ऊँचे हाथ करने वाला।

ऊर्ध्वकपाट (वि०) उपरिम कपाट, लोक की स्थिति विशेष 'ऊर्ध्वं च तत् कपाटं च ऊर्ध्वकपाटम्' ऊर्ध्वं कपाटमिव लोकः (धव० १३/३७१)

ऊर्ध्वकाय (वि०) उठी हुई काया।

ऊर्ध्वकेश (वि०) ऊर्ध्व केश युक्त।

ऊर्ध्वक्रिया (स्त्री०) उन्नत क्रिया, ऊपर की गति।

ऊर्ध्वगतिः (स्त्री०) श्रेष्ठ गति, सिद्धगति।

ऊर्ध्वगामिन् (वि०) ऊँची ओर जाने वाला।

ऊर्ध्वचरणं (नपुं०) उच्च चरण, उन्नत पाद।

ऊर्ध्वजानु (वि०) उठे हुए घुटनों वाला।

ऊर्ध्वजानुज्ञ (वि०) उठे हुए घुटनों वाला।

ऊर्ध्वतासामान्य (वि०) पूर्वापर काल भावी पर्यायों में व्याप्त।

ऊर्ध्व-दृष्टिः (स्त्री०) दीर्घ दृष्टि, उन्नत दृष्टि, उच्चदृष्टि।

ऊर्ध्वदिग्व्रतः (पुं०) उर्ध्वदिशा सम्बंधी प्रमाण। ऊर्ध्वा दिग् ऊर्ध्वदिग, तत्सम्बन्धि तस्याँ वा व्रतं उर्ध्वदिग्व्रतम्।

ऊर्ध्वदेहः (पुं०) १. विशाल काय, २. अन्त्येष्टि संस्कार।

ऊर्ध्वपातनं (नपुं०) ऊपर आरोहरण कराना, परिष्करण, थर्मामीटर का पारा चढ़ाना।

ऊर्ध्वपात्रं (नपुं०) उच्च पात्र, सुपात्र।

ऊर्ध्वमुख (वि०) ऊपर मुख करने वाला। (वीरो० ५/२)

ऊर्ध्वमौहूर्तिक (वि०) थोड़ी देर होने के पश्चात पश्चात्वर्ती।

ऊर्ध्वरेणुः (वि०) आठ श्लक्ष्णश्लक्ष्णिकाओं का समुदाय।

ऊर्ध्वरेतस् (वि०) ब्रह्मचर्य में स्थित रहने वाला।

ऊर्ध्वलोकः (पुं०) उपरिम लोक, मृदङ्गाकार लोक। उवरिमलोयायारो उब्भियमुरवेण होइ सरिसत्तो। (ति०प० १/१३८) ऊर्ध्वलोकस्त मृदङ्गाकारः' (जैन०ल० २८६)

ऊर्ध्ववातः (पुं०) ऊपर स्थित वायु।

ऊर्ध्ववायुः (पुं०) शरीर जन्य वायु।

ऊर्ध्वव्यतिक्रमः (पुं०) ऊँचे पर्वत आदि का उल्लंघन। 'शैलाद्यारोहणमूर्ध्वव्यतिक्रम' (त०वृ० ७/३०) 'वृक्ष-पर्वताद्यारोहणमूर्ध्वव्यतिक्रमः' (कार्तिकेयानुप्रेक्षा ३४१)

ऊर्ध्वशायिन् (वि०) १. ऊपर की ओर मुख करके सोने वाला। २. खड़े होकर शयन करने वाला। 'स्थित्वा शयनं चोर्ध्वशायी उद्भीभूय शयनमूर्ध्वशायी-(भ०आ० वृ० /२२५)

ऊर्ध्वसामान्यं (नपुं०) जो वस्तु को व्याप्त करें अपनी पर्यायों के स्वभाव को व्याप्त करें। सद्भिः परिणामितं स्वभावं स्वव्यापिनं नाम दधाति तावत्।

ऊर्ध्वसूर्यगमनं (नपुं०) सूर्य के ऊपर गमन। 'उद्गमगो य ऊर्ध्वं गते सूर्ये गमनम्' (भ०आ०२२२)

ऊर्ध्वातिक्रमः (पुं०) ऊर्ध्व ग्रहण की गई मर्यादा का अतिक्रमण। 'तत्र पर्वताद्यारोहणादूर्ध्वातिक्रमः' (त० वा० ७/३०)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ऊर्ध्वायित (वि०) ऊपर की ओर, उच्चैर्लम्बमान। दधतां सुसृणिं त्वरावता शिर ऊर्ध्वायितदन्तमण्डलम्' (जयो० १३/३६)

ऊर्ध्वी (वि०) ऊर्ध्वमुख, ऊँचे की ओर।

ऊर्मिः (स्त्री०, पुं०) [ऋ+मि-अर्तेरूच्च] १. लहर, तरंग, भाग। (जयो० १०/८७) २. धारा, प्रवाह, गति, वेग। (जयो० ४/१९)। ३. पंक्ति, रेखा राजि। ४. चिन्ता, कष्ट।

ऊर्मिका (स्त्री०) लहर, तरंग, रेखा, पंक्ति।

ऊर्मिकाङ्कित (वि०) १. शाखा प्रशाखा युक्त। २. लहरों से अंकित, रेखांकित। ऊर्मिकाङ्कित सन्तानां मत्तवारणराजिका।' (जयो० १०/८७)

ऊर्व (वि०) [ऊरु+अ] विस्तृत, बड़ा।

ऊर्वरा (स्त्री०) उपजाऊ भूमि, कृषि योग्य भाग।

ऊलुपिन् (पुं०) सूंस, शिंशुक।

ऊलूकः (पुं०) उल्लू।

ऊष् (अक०) रुग्ण होना, बीमार होना, अस्वस्थ्य होना।

ऊषः (पुं०) [ऊष्+क] १. प्रभात, प्रातः, २. उपज विहीन भूमि। ३. अम्ल, दरार।

ऊषकं (नपुं०) [ऊष्+कन्] प्रभात, प्रातः।

ऊषणं (नपुं०) [ऊष्+ल्युट्] काली मिर्च, अदरक।

ऊषरः (पुं०) उपज रहित भू-भाग, रिहाली भूमि, मरुधरा, सिकतिल प्रदेश। 'तत्परिणतिं प्राप्योषरे बीजवत्।' (जयो० २४/१३६) 'ऊषरं नाम यत्र तृणादेरसम्भवः'। (श्रावक प्रज्ञप्तिः ४७)

ऊषरटकः (पुं०) ०ऊषर भूमि, ०सिकतिल प्रदेश। मरुधारा। (जयो० २/५) 'तवदूषरटके किलाफले का प्रसक्तिः'

ऊषवत् (वि०) ऊषर भूमि, मरुधरा।

ऊष्मन् (पुं०) [ऊष्+मनिन्] १. गर्मी, ताप, अग्नि, ग्रीष्म ऋतु, भाप, वाष्प। २. प्रचण्डता, तीव्रता। ३. ऊष्म ध्वनि विशेष-श, ष, स और ह ध्वनियां।

ऊष्मवर्णः (पुं०) ऊष्मवर्ण की ध्वनियां श, ष, स और ह। ऊष्माणो नाम वर्णाः श-ष-स-हा (जयो० वृ० ११/७८)

ऊष्मा (स्त्री०) १. ऊष्मवर्ण -श-ष-स-ह। २. सन्ताप, उष्णता। यदेव भूयोऽपि पयोनिपीतमन्तः स्थितोष्मातिशयेन हीतः। (जयो० १३/१००)

ऊह् (सक०) १. अंकित करना, टांकना, चिह्नित करना। २. अनुमान लगना, समझना, सोचना, चिन्तन करना। ३. तर्क करना, विचार करना।

ऊहः (पुं०) [ऊह्+घञ्] ०वितर्क, ०तर्कणा, ०अनुमान, ०चिन्तन, ०मुक्ति देना। (जयो० वृ० १८/२) 'ऊहो वितर्को येषु तस्य भावः' (जयो० वृ० ६/४) 'अवगृहीतार्थस्यानधिगतविशेष उह्यते तर्क्यते अनया इति' (धव० १३/२४२) अवग्रह गृहीत पदार्थ का विशेष अंश नहीं जाना गया, उस पर विचार करना। 'विज्ञातमर्थमवलम्ब्यान्येषु व्याप्त्या तथाविध- वितर्कणमूहः' (नीतिवाक्यामृत ५/५०)

ऊहक्रमः (पुं०) कल्पना परिपाटी (जयो० वृ० २८/४४)

ऊहनं (नपुं०) अनुमान बना।

ऊहसत्ता (स्त्री०) तर्क-वितर्कभाव। (वीरो० २/३९)

ऊहपना (वि०) तर्क-वितर्कपना। (वीरो० २/३९)

ऊहपात्री (वि०) तर्क-वितर्कभाव वाला। (वीरो० ३/१८)

ऊहा (स्त्री०) तर्क-वितर्क, अनुमान, विचार, चिन्तन, व्याप्तिज्ञान। 'उह्यते तर्क्यते अनया इति ऊहा' (धव० १३/२४४)

ऊहापोहः (पुं०) तर्क-वितर्क। (वीरो० ३/१८)

ऊहिन् (वि०) तर्क, करने वाला।

ऊहोचित स्थानं (नपुं०) तर्कणा का कारण। 'बहुलोहीचित-स्थानोऽपि' (दयो० पृ० ६८)

ऋ

ऋः (पुं०) संस्कृत वर्णमाला का सप्तम स्वर। इसका उच्चारण स्थान मूर्द्धा है।

ऋ (अव्य०) विस्मयादिबोधक अव्यय। इसका प्रयोग निन्दा, गर्हा, परिहास आदि में किया जाता है।

ऋ (सक०) १. जाना, कांपना, उठाना। (अर्पयति, अरिरिपति) २. आक्रमण करना, घायल करना, चोट पहुंचाना। ३. रखना, स्थापित करना, निर्देश देना।

ऋ (स्त्री०) १. अदिति, देवमाता। २. निन्दा, गर्हा, ग्लानि।

ऋक् (स्त्री०) १. ऋचा, सूत्र, मन्त्र। २. स्तुति, पूजा, अर्चना।

ऋकण (वि०) घायल, आहत, चोट ग्रस्त।

ऋकथं (नपुं०) [ऋच्+थक्] धन, वैभव, सम्पत्ति, सामग्री।

ऋक्सुधा (स्त्री०) ऋग्वेद मंत्र का अमृत। नीतिवाक्यमृत। (जयो० ७)

ऋक्षः (पुं०) [ऋष्+स+किच्च] १. रीछ, भालू, भल्लू। २. नक्षत्र, तारा। ३. राशि, चिह्न।

ऋक्षचक्रं (नपुं०) तारा मण्डल, नक्षत्रसमूह।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ऋक्षनाथः (पुं०) नक्षत्र स्वामी।

ऋक्षनेमिः (पुं०) विष्णु।

ऋक्षरः (पुं०) [रुप्+क्सरन्] १. ऋत्विज, २. कंटक, कांटा, शल्य।

ऋक्षवत् (वि०) पर्वत तुल्य।

ऋग्वेदः (पुं०) ऋग्वेद, वेद ऋचा का एक नाम। (दयो० २६)

ऋग्वेद-मण्डलः (पुं०) ऋग्वेद के अध्याय। (दयो० २७)

ऋच् (अक०) १. प्रशंसा करना, स्तुति करना, २. चमकना, ढकना।

ऋच् (स्त्री०) [ऋच्+क्विप्] सूक्त, ऋचा, मंत्र। २. दीप्ति, प्रभ कान्ति।

ऋच्विधानं (नपुं०) ०मन्त्र अनुष्ठान, ०मन्त्रपाठ, ०सूक्त विधि, ०वेदमंत्र पाठ।

ऋचीषः (पुं०) [ऋच्+ईषन्] घण्टी।

ऋच्छ् (अक०) १. कठोर होना, दृढ़ होना। २. जाना।

ऋच्छका (स्त्री०) [ऋच्छ+कन्+टाप्] वाञ्छा, अभिलाषा, इच्छा, चाह।

ऋज् (सक०) १. गमन करना, २. प्राप्त करना, ग्रहण करना। ३. स्थिर होना। ४. उपार्जन करना।

ऋजु (वि०) [अर्जयति गुणान्, अर्ज्+उ] ०सरल, ०सीधा, स्पष्ट, ०उत्तम, ०योग्य, ०अनुकूल। अपि त्वयि महावीर, स्फीतां कुरुमर्जु मयि। (वीरो० २२/४०)

ऋजुक (वि०) सीधा, सरल, अनुकूल, स्पष्ट। 'जो जधा अत्थो दिट्ठो तं तधा चिंत यंतो भणो उज्जुगो' (धव० १३/३३०) जो जैसा अर्थ/पदार्थ दृष्ट है, वह वैसा चिंतनीय मन ऋजुक है।

ऋजुता (वि०) सरलता, सीधापन, सरलभाव वाली, स्पष्टता, मायाचार रहित प्रवृत्ति। (जयो० ८/१२४)

ऋजुमतिः (स्त्री०) सामान्य ग्राहक बुद्धि, सरलग्राहक बुद्धि। ज्ञान का भेद, मनःपर्यय ज्ञान का भेद। ऋज्वी मतिर्यस्य सोऽयं ऋजुमतिः (स० सि० १/२३) वर्तमान समय में जो बात किसी के मन में हो, उसके जानने वाले ज्ञान को ऋजुमति कहते हैं। यह उपशम श्रेणी वाले को होती है। 'णमो उजुमदीणं च' (जयो० १९/६५)

ऋजुसूत्रं (नपुं०) वर्तमान काल ग्राहक, वर्तमान का एक समय मात्र। यह नय-तीनों कालों के पूर्वा पर विषयों को छोड़कर वर्तमान का ग्राहक है। 'ऋजु प्रगुणं सूत्रयति तन्त्रयतीति ऋजुसूत्रं (स० सि० १/३३) पच्चप्पण्णगाही उज्जुसुओ' (जैन०ल० २८८) ऋजुसूत्रस्य पर्यायः प्रधानम्। (लघीयस्त्रय ४३)

ऋज्वी (स्त्री०) [ऋजु+ङीप्] १.गोचर भूमि, सगश्रेणी में अवस्थित भूमि। २. सरलमनस्विनी।

ऋणं (नपुं०) १ ऋण, कर्ज, उधार लेना। २. दायित्व, कर्त्तव्य।

ऋणग्रहः (पुं०) रुपया उधार लेना।

ऋणदायिन् (वि०) ऋण देने वाला, उधार देने वाला।

ऋणदासः (पुं०) क्रीत दास।

ऋणभार्गणः (पुं०) प्रतिभूति, जमानत।

ऋणमुक्त (वि०) उधारी से रहित।

ऋणरहित (वि०) अनृणत्व, उधारी से रहित। (जयो० वृ० २०/७०)

ऋणिकः (पुं०) [ऋण+ष्ठन्] कर्जदार, ऋणाभृत।

ऋणिन् (वि०) [ऋण+इनि] १. ऋणग्रस्त, कर्जदार, २. अनुगृहीत, आभारी। 'चक्रभरेषु सतामृणी' (जयो० ९/८२)

ऋणीकृत् (वि०) ऋणी/अनुगृहीत की गई। 'ऋणीकृताहं च कदानृणत्वं' (जयो० २०/७०)

ऋणीत्थ (वि०) कृतज्ञ, अनुगृहीतार्थ। 'गुरोर्ऋणीत्थं विचरेदपि ज्ञः' (वीरो० १७/३१)

ऋत (वि०) [ऋ+क्त] सत्य, हितकर, समीचीन, उचित। 'ऋतं प्राणिहितं वचः' (हरिवंश पुराण ५८/१३०)

ऋतं (अव्य०) निषेध वाचक अव्यय। बिना, नहीं, उचित रीति से, सही ढंग से। 'ऋते तमः स्पलक्वरतेः प्रभावः' (वीरो० १/१८)

ऋतधामः (वि०) उचित स्वभाव वाला।

ऋतिः (स्त्री०) अमंगल, अशुभ, निन्दा, गर्हा। 'ऋतिर्गतौ जुगुप्सायां स्पर्धायामप्यमङ्गले' 'इति विश्वलोचन' (जयो० १०/११०)

ऋतीया (स्त्री०) [ऋत्+ईयङ्+टाप्] निन्दा, गर्हा, अमंगलकामना।

ऋतुः (स्त्री०) [ऋ+तु+कित] मौसम, दो मास की एक ऋतु, वसंतादि ऋतु। 'मेघमानित ऋतौ विनश्यता' (जयो० ७/६९) 'वे मासे उडू' (धव० १३/३००) द्वाभ्यां मासाभ्यामृतुः' (नियमासार वृ० ३/३१) २. बुद्धि विभव 'वरः तीक्ष्णः ऋतुर्बुद्धि विभवो यस्याः सत्यपि सुलोचना। ३. उपयुक्त समय, उचित समय। ३. ऋतुकाल-मासिक धर्म (स्त्री का मासिक धर्म)

ऋतुकालः (पुं०) १. ऋतु काल, (जयो० २/१२४) 'ऋतुकालोऽस्ति निवृते' (सुद० ११३) २. आर्तव, रक्तस्राव, मासिक धर्म, (मुनि० २८)

ऋतुकौतुकी (स्त्री०) वसन्त ऋतु, कौतुक/आनन्द को उत्पन्न

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करने वाली ऋतु, 'नर्मश्री ऋतुकौतुकीव सकलो बन्धुः' (वीरो० ६/३७)

ऋतुदानं (नपुं०) स्नेहदान, प्रिया के ऋतुकाल में स्नेहदान।

ऋतुता (वि०) ऋतु युक्त, ऋतुकाल वाली।

ऋतुपर्यायः (पुं०) ऋतुओं का परावर्तन।

ऋतुप्रदानं (नपुं०) ऋतुदान। (जयो० २/१२३)

ऋतुमासः (पुं०) तीस दिन रात का महिना, कर्ममास, सावनमास। 'ऋतुरेवाथांतु परिपूर्णत्रिंशदहो रात्रप्रमाणः, एप एव ऋतुमासः कर्ममास इति वा सावनमास इति वा व्यवह्रियते' (जैन०ल० पृ० २९१)

ऋतुराड (पुं०) ऋतुराज, वसन्तु ऋतु। (जयो० वृ० १/७७)

ऋतुसंवत्सरः (पुं०) तीन सो साठ दिन, ऋतुवर्ष- 'ऋतवो लोकप्रसिद्धाः वसन्तादयः तत्प्रधानः संवत्सरः ऋतुसंवत्सरः' (जैन०ल० पृ० २९)

ऋतूत्तम (वि०) ऋतुओं में उत्तम। 'ऋतूत्तमेनेव धरातलेऽस्य' वसन्तनाम्ना सुमनोहरण' (सम्मु० ६/३१)

ऋते (अव्य०) बिना, अतिरिक्त, सिवाय। 'न वस्तुसत्त्व तमृते समस्तु' (सम्य० ७१) 'रुच्या न जातु तमृते सकला समस्या' (सुद० ८६)

ऋद्ध (भू० क० कृ०) [ऋध्+क्त] समृद्ध, वृद्धिगत, वर्धमान। (जयो० १/१७)

ऋद्धः (पुं०) विष्णु।

ऋद्धदेशः (पुं०) समृद्धदेश, 'ऋद्धो देशो यस्य तं' (जयो० वृ० १/१७)

ऋद्धिः (स्त्री०) [ऋध्+क्तिन्] १. वृद्धि, समृद्धि, वैभव सम्पन्नता। २. विस्तार, विभूति। (जयो० वृ० ५/१४) ऋद्धि वारजनीव गच्छति, वनी सैषान्वहं श्रीभुवम्' (वीरो० ६/३७) 'यदीयापदरीतिरृद्धिम्' (जयो० १/३१) ३. भोग-उपभोग के साधन, सम्पदाएं ४. शक्ति विशेष-अणिमा, महिमा, प्राप्ति (मुनि० १५) प्राकम्य। ईसत्व, वशित्व, काम और रूप। अणिमा महिमा लहिमा पत्ति-पागम्मं ईसित्तं वसित्तं काम रूवमिच्चेवमादियाओ अणेगविहाओ इड्ढीओ णाम' (धव० १४/३२५) ऋद्धे श्रीतपसश्च सम्पदसको नामोपयोगाय वै भ्राता बाहुबलेर्बभूव भरतः कीदृङ्महानुत्सवैः स्वस्या एव समर्द्धितो न नरकं द्वीपायनः किं गत स्वस्मात् वाञ्छसि चेद् हितं स्वविभवे साम्येन भूयास्तः। (मुनि० १५)

ऋद्धिगारवः (पुं०) बड़प्पन प्रकट करना।

ऋद्धिगौरवः (पुं०) ऋद्धि की सम्पन्नता, गुणता। ऋद्धि-प्राप्त्यागासहता ऋद्धिगौरवं परिवारे कृतादरः' (भ० आ० टी० ६१३)

ऋध् (सक०) १. सम्पन्न होना, समृद्ध होना, सफल होना। २. बढ़ना, वृद्धि होना। ३. संतुष्ट होना, तृप्त होना।

ऋभुः (पुं०) देव, दिव्यता, देवता।

ऋभुक्षः (पुं०) (ऋभवो देवा क्षिपन्ति वसन्ति अत्रेति-ऋभु+क्षि+ड) इन्द्रलोक। इन्द्र।

ऋभुदिन् (पुं०) इन्द, शक्र, पुरन्दर, देवाधिपति।

ऋल्लकः (पुं०) यन्त्र, वाद्य यन्त्र।

ऋश्यः (पुं०) [ऋष्+क्याप्] बारहसिंघ, हिरण।

ऋष् (सक०) १. पहुंचना, जाना, प्राप्त होना। २. मारना, चोट पहुंचाना, प्रहार करना।

ऋषदा (वि०) पाषाण, पत्थर। (सुद० ४/३०)

ऋषभः (पुं०) [ऋष्+अभक्] १. प्रधान, ०प्रमुख, ०श्रेष्ठ, ०उत्तम। जगति भास्कर एष नरर्षभो। (जयो० १/९६) नरर्षभो-नरोत्तमो (जयो० वृ० १/९६) २. संगीत के सात स्वरों में द्वितीय स्वर 'मिषाग्विादर्षभमात्रगम्या' (जयो० ११/४७) 'षड्जर्षभ गान्धार-मध्यम पञ्चमधैवत निषादनामकेषु सप्तस्वरेषु' (जयो० वृ० ११/४७) ३. बैल, ०बलीवर्द-'तवर्षभस्य नरोत्तमस्य' (जयो० १९/१८) ४. ऋषभ, ०ऋषभदेव, ०आदिनाथ का नाम, ०अन्तिम कुलकर नाभिराय के पुत्र का नाम। जो प्रथम तीर्थंकर के नाम से प्रसिद्ध हैं, जिनके ऋषभ-बैल चिह्न है। (दयो० ३१) ऋषभस्य- नाभेयस्य (जयो० वृ० २४/१२) नाभेरसा वृषभ आस सुदेवसुनू' (भागवत ३/२०)

ऋषभनाथः (पुं०) प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव, जिन्हें आदिनाथ, आदिब्रह्मा भी कहते हैं। युगादिभर्ता भी कहा गया। युगादिभर्तुः श्री ऋषभनाथ-तीर्थंकरस्य। (जयो० १/४३)

ऋषभनाराचं (नपुं०) कीलिका रहित संहनन, संहनन विशेष। ('यत्र तु कीलिका नास्ति तदृषभनाराचम्' (जै०ल०२९१)

ऋषभदेवः (पुं०) आदिनाथ, आदिदेव। (दयो० ३०, ३१)

ऋषभदेववरः (पुं०) पुरुवर, आदिदेव, वृषभदेव, आदिब्रह्मा, महादेव, वृषभस्वामी, वृषभप्रभु, आदिप्रभु। (जयो० वृ० १२/१०९)

ऋषभप्रभुः (पुं०) ऋषभदेव, आदि तीर्थंकर आदि प्रभु। (जयो० वृ० ७/३३)

ऋषभावतारः (पुं०) ऋषभदेव का जन्म, प्रथम तीर्थंकर का

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जन्म। (दयो० ३१) 'अस्यर्षभावतारस्य प्रशंसा मार्कण्डेय-पुराणकूर्मपुराणाग्पुिराण-वायु-शिवपुराणादिषु च वर्तते किल यस्यानुयायिन आर्हता भवन्ति। (दयो० पृ० ३१) सप्त-द्वयोदार-कुलङ्कराणामन्त्यस्य नाभेर्मरुदेवि आणात्। सीमन्तनी तत्र हृदेकहारस्तत्कुक्षितोऽभूद्, ऋषभावतारः।। (वीरो० ११/५)

ऋषभेश्वरः (पुं०) ऋषभदेव, आदिनाथ, तीर्थंकर वृषभदेव। (हित० सं० ८)

ऋषिः (पुं०) [ऋष्+इन्] मुनि, योगी, तपस्वी, ध्यानी, विरक्त। (मुनि० ३१) 'ऋषिभिः-कुन्दकुन्दादिभिः' (जयो० वृ० २७/२०)

ऋषिपंचमी (स्त्री०) एक तिथि विशेष, भाद्रपदकृष्णा पंचमी को होने वाला एक पर्व।

ऋषिपादः (पुं०) ऋषि चरण। 'उत्तमाङ्गं सुवंशस्य यदासीद् ऋषिपादयोः' (सुद० ४/४)

ऋषिराजन् (पुं०) ऋषिराज। (दयो० ११९)

ऋषिवरः (पुं०) तपस्विराज, संयतमुनि। 'भवानृषिवरः सुमनः समुदायवान्' (सुद० ४/१)

ऋषिस्तुतिः (स्त्री०) ऋषि गुणगान।

ऋषिस्तोत्रं (नपुं०) मुनि स्तुति काव्य।

ऋष्टिः (पुं०/स्त्री०) [ऋष्+क्तिन्] असि, खड्ग, तलवार, अत्यंत तेजधार वाली तलवार।

ऋष्यः (पुं०) बारहसिंघा, सफेद बारहसिंघा।

ऋष्यकः (पुं०) चित्तीदार हिरण, बारहसिंघा।

ॠ

ॠ (अव्य०) विस्मयादिबोधक अव्यय, जिसमें निन्दा, घृणा, त्रास आदि का भाव रहता है।

ॠः (पुं०) भैरव, एक राक्षस।

ॠ (सक०) जाना, पहुंचना, प्राप्त होना, हिलना।

ए

एः (पुं०) संस्कृत वर्णमाला का ग्यारहवां अक्षर, इसका उच्चारण स्थान कंठ एवं तालु है। यह 'अ+इ-ए' के योग से बनता है।

ए (सक०) प्राप्त होना, जाना-एति-(सुद० ८५)

एः (पुं०) [इ+विच्] विष्णु।

ए (अव्य०) विस्मयादिबोधक अव्यय, जिससे निन्दा, घृणा, भर्त्सना, करुणा, आमन्त्रण, स्मरण आदि का बोध होता है।

एक (सर्वनाम) १. अकेला, एकाकी, एकमात्र। (सम्य० ३१) कौमारमेवे गृहितांच केऽपि। (जयो० १/१०) 'लोकाग्रगा-न्विश्व-विदेकभावानहं' (सम्य० ५८) एकदेश (जयो० १/८) २. अद्वितीय, अनुपम-'एकमभवत् शर्मणाम', अनन्य (वीरो० १/५) (जयो० ३/३) ३. कोई, एक दूसरा, अन्य, अपर, प्रधानभूत (जयो० १२/११) 'एकोऽस्ति चारुस्तु भवेदभिज्ञः' (सुद० पृ० १२१) 'पवित्रमेकं प्रतिभाति तत्र' (सुद० १/१४)

एकक (वि०) अकेला, एकाकी, एकमात्र। 'संलिखत्यथ कुमार एककः' (जयो० २/१३) एककः-केवलोलिखति (जयो० वृ० २/१३) 'एककं एकमेव पुरुषं' (जयो० वृ० २/१५३)

एककन्था (स्त्री०) एकमात्र गुदड़ी। (वीरो० वृ० २२/२)

एककर (वि०) एक ही कार्य करने वाला।

एककान्ता (वि०) अद्वितीय सुन्दर। (वीरो० २१/१)

एककार्य (वि०) एक ही कार्य करने वाला।

एकगिह (नपुं०) एक गृह, एक घर।

एकगुरु (वि०) एक गुरु वाला।

एकगुरुक देखो ऊपर।

एकाग्रता (वि०) तल्लीनता, विचार निमग्न। 'तस्मिन् संप्रवृत्तस्य मानसमगादेकाग्रतां चेतदा' (मुनि० २१)

एकचक्र (वि०) एक पहिए वाला, सुदर्शन चक्र। एकं चक्रं सुदर्शनाख्यं यस्य स एकचक्रः' (जयो० वृ० ८/५) 'एवैकं चक्रं रथाङ्गं यस्येति' (जयो० ११/२२)

एकचत्वारिंशत् (स्त्री०) इकतालीस।

एकचर (वि०) एकाकी विचरण करने वाला।

एकचारिन् (वि०) अकेला विचरणशील।

एकचेतस् (वि०) एक मत, एक विचार धारा वाले।

एकजन्मन् (पुं०) नृप, नराधिप।

एकजात (वि०) एक माता-पिता से उत्पन्न।

एकजातिः (स्त्री०) एक ही परिवार/कुल। (जयो० १३/४२) सहोदर।

एकजातीय (वि०) एक ही परिवार वाले।

एकतः (अव्य०) [एक+तसिल्] एक ओर से, एक एक करके, एक पार्श्व। किमु वर्त्मविरोधिनो जना अधुना चापसरेत चैकतः। (जयो० १३/१३१) अधुना चैकतोऽ-पसरेत-एकपार्श्वे स्थितो भवेत्।' (जयो० वृ० १३/१३)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

एकतल (अव्य०) एकमात्र, अकेला, एकाकी। 'मित्रैः पवित्रैकतलऽभिलाप्यम्' (जयो० २७/१७)

एकतमा (स्त्री०) एक विपत्ति, एक संकट। 'परिणता विपदेकतमा यदि' (जयो० ९/२)

एकतान (वि०) एक करवट, नितान्त ध्यानमग्न, एकाग्र चित्त, एक ओर केन्द्रित। 'किलैकपार्श्वेन चिदेकतानः' (जयो० २७/८९) एकतानो अनन्यवृत्तिः-एकचर। (जयो० वृ० २७/८९) 'पूज्यो महात्माऽत-पदेकतानः' (सुद० ११८)

एकतत्त्वं (नपुं०) एक मात्र तत्त्व। स्मृति पराभूतिरिव ध्रुवत्वं पर्यायस्तस्य यदेकतत्त्वम्' नोत्पद्यते नश्यति नापि वस्तु सत्त्वं सदैतद्विदधत्समस्तु।। (वीरो० १९/१६) जैसे पर्याय की अपेक्षा वस्तु में 'स्मृति' (उत्पत्ति) और 'पराभूति' (विपत्ति/विनाश) पाया जाता है, उसी प्रकार द्रव्य की अपेक्षा ध्रुवपना भी उसका एक तत्त्व है, जो कि उत्पत्ति और विनाश में बराबर अनुस्यूत रहता है। इस प्रकार उत्पाद, व्यय और ध्रुव इन तीनों रूपों को धारण करने वाली वस्तु को भी यथार्थ मानना चाहिए। (वीरो० हि०१९/१६)

एकता (स्त्री०) एक निष्ठता, एक रूपता। (जयो० २६/२५१) तन्मयता (भक्ति० २९) 'या बिभर्ति परमेकताकिणम्' (जयो० २/१५५)

एकतालः (पुं०) संगीत, स्वर, नृत्य, वाद्य आदि।

एकतिलकर (वि०) अद्वितीय तिलक। (वीरो० ४/४०)

एकतीर्थिन् (वि०) एक ही धर्म परम्परा वाले।

एकत्व (वि०) एक रूपता, सामञ्जस्य, समत्वभाव। (जयो० २६/८६)

एकत्वप्रत्यभिज्ञानं (नपुं०) प्रत्यक्ष और स्मृति से युक्त ज्ञान, एकत्व को विषय करने वाला ज्ञान। 'पूर्वोत्तर दशाद्वय-व्यापकमेकत्वं प्रत्यभिज्ञानस्य विषयः। तदिदमेकं प्रत्यभिज्ञानम्' (न्यायदीपिका ३/५६)

एकत्वभावना (स्त्री०) अकेला ही विचार, एकाकी विचार। बारह भावना या अनुप्रेक्षा में चतुर्थ भावना मैं ही मेरा हूं इस प्रकार का विचार करना (तत्त्वार्थ० पृ० १४४) 'एकाक्येव जीव उत्पद्यते, कर्माणि उपार्जयति, भुङ्क्ते चेत्यादि चिन्तनमेकत्वभावना।' (जैन०ल० २९२)

एकत्वमनेकता (वि०) एकत्व और अनेकत्व की प्रतीति।
सेना वनादीन् गदतो निरापद्,
दारान् स्त्रियां किञ्च जलं किं लापः।
एकत्र चैकत्वमनेकताऽऽपि,
किमङ्गभर्तुर्न धियाऽभ्यवापि।। (वीरो० १९/२३)

'सेना' यह एक नाम है, उसमें अनेक हाथी, घोड़े, पयादे आदि होते हैं। जिसे 'वन' कहते हैं, वह एक है, उसमें नाना जाति के वृक्ष पाए जाते हैं। एक स्त्री को 'दारा' बहुवचन से और जल को 'अप्' बहुवचन से कहा जाता है। इस प्रकार एक ही वस्तु में एकत्व और अनेकत्व की प्रतीति होती है।

एकत्वविक्रिया (स्त्री०) अभिन्नविक्रिया।

एकत्ववितर्कः (पुं०) क्षीण गुणस्थानवर्ती का ध्यान। शुक्लाग्नि-नैकत्ववितर्कनाम्ना ध्यानेन सम्पूरितधन्यधाम्ना। (भक्ति० पृ० ३२)

एकत्ववितर्कावीचारः (पुं०) शुक्लध्यान युक्त चिन्तन। 'एकस्य भावः एकत्वम्, वितर्को द्वादशाङ्गम्, असङ्क्रान्तिरवीचारः एकत्वेन वितर्कस्य अर्थ व्यञ्जन-योगानामवीचारः। असंक्रातिर्यस्मिन् ध्याने तदेकत्व वितर्कावीचारं ध्यानम्।' (धव० १३/७९)

एकत्वानुप्रेक्षा (स्त्री०) एकत्वभावना, बारह भावनाओं/अनुप्रेक्षाओं में चतुर्थ भावना, इसमें यह चिन्तन करना कि जीव अकेला उत्पन्न होता है, अकेला ही कर्म उपार्जित करता है और अकेला ही उनका उपभोग करता है।

एकत्र (अव्य०) [एक+त्रल्] एक स्थान पर, सामूहिक, एक साथ, इकट्ठे। 'एकत्र गत्वा भवेत्' (मुनि० वृ० २८) दार्शनिक दृष्टि से-एक ही वस्तु में 'सत्' और 'असत्' की प्रतिष्ठा, एकत्र तस्मात्सदसत्प्रतिष्ठामङ्गीकरोत्येव जनस्य निष्ठा। (वीरो० १९/४)

एकत्रिंशत् (स्त्री०) इकतीस।

एकत्राङ्कित (वि०/) एक ही अंकन पत्र वाला। 'एकत्र-एकस्थाने-एकस्मिनेवाङ्कनपत्रे' (जयो० वृ० १५/८१)

एकदा (अव्य०) एक बार, एक समय। (वीरो० २/१४०) (सुद० ४/१७) एकदा स्तवक-गुच्छ नगरादवहिरास्थितः। (समु० २/३१)

एकदासी (स्त्री०) सेवा करने वाली गृहिणी, एकमात्र गृहिणी। त्वमेकदा विन्ध्यागिरेनिवासी भिल्लस्त्वदीयांघ्रियुगेकदासी। (सुद० ४/१७)

एकदंतः (पुं०) एक दांत वाला, गणेश।

एकदंष्ट्रः (पुं०) एक दांत वाला गणपति।

एकदंडिन् (वि०) एक दण्डधारी।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

एक दीपकः (पुं०) एकमात्र दीपक। (सुद० १३५)

एकदृष्टि (वि०) १. एक अक्षिवाला, २. एकाग्र दृष्टि वाला।

एकदेवः (पुं०) परमब्रह्म।

एकदेशः (पुं०) एक स्थान, एक प्रदेश, (जयो० १/३) एक भाग, आंशिक, एक अंश। 'पादैकदेशच्छविभाक प्रसक्तिभृतः'

एकदेशकारिणी (पुं०) एक अंश को नष्ट करने वाली। (जयो० ११/१३)

एकदेशसरिणी (स्त्री०) एक अंश को नष्ट करने वाली। (जयो० ११/१३)

एकदेशच्छेदः (पुं०) एक अंश का विनाश, 'निर्विकल्प-समाधिरूप-सामायिक-स्यैदकेर्शन च्युतिरेकदेशच्छेदः। (प्रवृ० उद०३/१०)

एकदेशपरित्यागः (पुं०) एकदेश/एक अंश का परित्याग। 'एकदेशपरित्यागात् सुगतिं श्रयते पुमान्' (दयो० पृ० १२१) प्रत्येक समय संतोष धारणकर तृष्णादि से दूर रहना।

एकदेशच्छेदः (वि०) १. एक अक्षिवाला, २. एकाग्र दृष्टि वाला।

एकधर्मन् (वि०) एक ही धर्म वाला, एक ही प्रकार के गुणों का धारक।

एकधर्मिन् (वि०) एकधर्म धारक।

एकधा (अव्य०) १. एक तरह से, एक प्रकार से। २. अकेले।

एकधारा (स्त्री०) एक ही विचार पद्धति। (वीरो० १९/१०)

एकनवतिः (स्त्री०) इक्यानवें।

एकनावः (पुं०) एकमात्र नाव/नौका। 'क्षमाब्रह्मगुणैकनावे' (सुद० पृ० १०३)

एकपक्षः (पुं०) एक दल, एक आधार, एक सम्मति, एक विचाराधारा।

एकपत्नी (स्त्री०) सपत्नी, एकपत्नी, पतिव्रता नारी।

एकपदी (स्त्री०) पगडंडी, छोटा रास्ता।

एकपदे (स्त्री०) अकस्मात्, एकदम, अचानक।

एकपादः (पुं०) १. एक चरण, काव्य का अंश।
२. एक पैर।
३. तपश्चरण का एक आधार।

एकपादस्थानं (नपुं०) एक पैर पर स्थित होकर तपश्चरण। 'एगपाद-एगेन पादेनावस्थानम्' (भ०आ०वि०२२३)

एकपोषः (पुं०) एकमात्र आशीर्वाद। 'रोषो न तोषो जगदेकपोष' (जयो० २७/२१)

एकप्रत्ययः (पुं०) एक नाम का कारण, एक व्यवहार का कारण। एकभिधान-व्यवहारिभिबन्धन प्रत्यय एकः। (धव० ९/१५१) एकार्थविषय प्रत्ययः एकः (अवग्रहः) (धव० १३/२३६)

एकभक्त (वि०) एक ही बार भोजन करना। एकस्यां भक्तवेलायां आहारग्रणमेकभक्तमिति। (मूला०वृ० १/३५)

एकबन्धु (नपुं०) एकमात्र मित्र, एक सखा। 'भवान्धु-सम्पादितनैकबन्धुः' (सुद० १/३)

एकभागः (पुं०) एक मात्र हिस्सा, एक अंश। (दयो० १८)

एकभावः (पुं०) एक अभिप्राय, एक विचार। 'तान्येकभावेन जना श्रयन्तु' (वीरो० १९/११)

एकभिक्षानियमः (पुं०) एक ही घर पर भिक्षा/आहार का नियम, क्षुल्लक का आहार नियम, आहार प्रतिमा। 'एकस्यां एकगृहसम्बन्धिन्यां भिक्षायां नियमः प्रतिज्ञा यस्य स एकभिक्षानियमः। (सा०ध० ७/४६)

एक-भेद (पुं०) एकमात्र अन्तर, एक लक्षण।

एकमतिः (स्त्री०) आत्माधीन बुद्धि। (जयो० २७/५३)

एकमात्रं (नपुं०) एक ही, अकेला, एकाकी। (जयो० वृ० २७/२१)

एकमेक (वि०) वीप्सात्मक प्रयोग, परस्पर, एक-दूसरे में समाहित। (सम्० ८/४४)

एकमेव (अव्य०) एकमात्र ही, अकेला ही। (जयो० ८१/१९)

एकयत्नः (पुं०) एक ही प्रयत्न।

एकयष्टिः (स्त्री०) एक लड़ी, मोतियों की एक लड़ी।

एकयोनिः (स्त्री०) एक जन्म, एक उत्पत्ति स्थान।

एकयोनि (वि०) १. एक ही जाति वाला। २. आनन्द भाव।

एक-रागः (पुं०) अकेला राग भाव।

एकराजन् (पुं०) एकाकी नृप, निरंकुश नृप।

एकरात्रिकी (वि०) रात्रि में एकाकी उपसर्ग सहन करने वाला, भिक्षुप्रतिमा धारी। निर्ममत्व रात्रि में ध्यान करने वाला।

एकरूप (वि०) एक समान, एक जैसा, सादृश्य ही।

एकल (वि०) [एक+ला+क] एकाकी, अकेला, एकमात्र।

एकलापी (वि०) १. एक स्थान वाला, एक विचार वाला। २. समानार्थक-द्राक्षा गुडः खण्डमशो सिताऽपि माधुर्यमायाति तदेकलापी। (वीरो० १९/९)

एकलिंगः (पुं०) एक लिंग, एक चिह्न।

एकलोकः (पुं०) एक विश्व, एक जगत्।

एकवचनं (नपुं०) १. एक संख्या वाला शब्द, धातु एवं शब्द

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

का एक वचन। २. एककथनं, एक निरूपण, एक विचार, एक पद्धति, एक परम्परा।

एकवर्गः (पुं०) एक समूह, एक भेद।

एकवर्णः (पुं०) १. एक जाति। २. एकाक्षर।

एकवस्तु (नपुं०) एक पदार्थ। (सुद० ११७) 'ज्ञानामृतं भोजनमेकवस्तु' (सुद० ११७)

एकवाक्य (वि०) एक वाक्य, एक मात्र वचन।

एकवाणी (स्त्री०) एक विचार, एक कथन।

एकवारं (अव्य०) केवल एक बार ही, तुरंत ही, उसी समय।

एकवारे (अव्य०) तुरन्त ही, उसी समय, तत्काल।

एकविंशति (स्त्री०) इक्कीस।

एकवित्त (नपुं०) एकमात्रधन। (सुद० ११८)

एकविध (वि०) एक ही प्रकार का।

एकविधप्रत्ययः (पुं०) एक ही जाति का ग्राहक प्रत्यय, 'एकजातिविषयः प्रत्ययः एकविधः। (धव० १३/२३७) 'एकजातिविषयत्वादेतत् प्रतिपक्षः प्रत्ययः एकविधः।' (धव० ९/१५२)

एकविध-बन्धः (पुं०) एक मात्र बन्ध, सातावेदनीय बन्ध/

एकविधावग्रहः (पुं०) एक प्रकार के पदार्थ को जानना, एक जाति का वाञ्छा। 'एगजाईए ट्ठिदएयस्स बहूण वा गहणमेयविहावग्गहो' (धव० ६/२०) 'एकजातिग्रहणमेकाविधावग्रहः' (मूला०वृ० १२/१८७)

एक-विहारी (वि०) एकाकी विचरण करने वाला।

एकवृत्तं (नपुं०) ०एक बात, ०एक भाव, ०एक विचारधारा, एकमात्र प्रवृत्ति। 'भव्यव्रजं भव्यतमैकवृत्तः' (सुद० २/३१) 'एकवृत्तमिति स्वामिन्न विक्षिप्त इतीष्यते' (समु० ३/३८)

एकशः (अव्य०) ०एक एक करके, ०एक प्रकार का, ०केवल, मात्र, एकाकी। 'स्नपनभावमितः प्रभुरेकशः' (जयो० ९/५४)

एकशेष (वि०) एक शब्द शेष, समास में एक शेष। एकशेषो नाम समासो-रामश्च, रामश्च रामश्चेति रामाः' (जः वृ० २६/८५)

एकसंघः (पुं०) एक समुदाय, एक समूह।

एकसद्मन् (नपुं०) एक स्थान। (जयो० ९/५)

एकसदनं (नपुं०) एक भवन।

एकसप्तति (स्त्री०) इकहत्तर।

एकसिद्धः (पुं०) एक समय में मुक्त। 'एकस्मिन् समये एक एव सिद्ध' (जैन०ल० २९६)

एकसिद्धकेवलज्ञानं (नपुं०) एक जीव के सिद्ध होने पर एक केवलज्ञान।

एकसूत्रं (नपुं०) एक उत्पत्ति, एक जन्म। 'किलार्कदेवः स मुदेकसूत्रः' (समु० ६/२४)

एकस्थल (नपुं०) एकतल, एकस्थान। (जयो० २७/१९)

एकस्थानं (नपुं०) एकमात्र स्थान, एकमात्र आश्रय, एकमात्र आधार, एकमात्र निवास।

एकस्थितिः (स्त्री०) कर्म की एक स्थिति। 'एया कम्मस्सा ट्ठिदी एयट्ठिदी णामं। (जप०धव० ३/१९१)

एक-स्वभावः (पुं०) भेद कल्पना रहित स्वभाव, शुद्ध द्रव्यार्थिकनय का स्वभाव। 'भेद संकल्पनामुक्त एक स्वभाव आहितः' (जैन०ल० २९६)

एक-हस्तः (पुं०) एकमात्र हाथ।

एकहस्तावलम्बिन् (वि०) एकमात्र आधारभूत, एकमात्र आश्रय। 'गतिर्ममैतस्मरणैकहस्तावलम्बिनः' (सुद० १/३)

एकरा (स्त्री०) एकमात्र, एकाकी, अकेला। (जयो० १/१०) एक भी। (जयो०) 'तस्यैका तनया राज्ञो राजते कौमुदाश्रया' (जयो० ५/३७)

एकाकि (वि०) [एक+आकिनच्] एकान्त, शून्य स्थान वाला, अकेला, निर्जन। (दयो० ४२, ६२) 'एकाकि एवाङ्गज! मे कुलायः' (समु० ३/६) एकाकिने धूमसमं तमस्तु वाष्पाम्बुपूरोदयकारि वस्तु। (जयो० १६/६) उक्त पंक्ति में 'एकाकिन' का अर्थ विरही, विरह से युक्त भी लिया है, 'एकाकिने विरहणे जनाय' (जयो० वृ० १६/६)

एकाकिन् देखो ऊपर।

एकाकिता (वि०) एकाकी पर, अकेलापन। 'तयोरथैककिताऽन्वये तु' (सम्य० २३) 'भेकाः किलैकाकितया लपन्तः' (वीरो० ४/१७)

एकाकित्व (वि०) एकाकीपन। एकाकित्वमिदं ससख्यमशनाभावं समिष्ठाशनम्। (मुनि० २५)

एकाकिनी (वि०) अकेली रहनी वाली, (दयो० १११) एकाकिनीनामधुना वधूनामास्वाद्य मांसानि मृदूनि तासाम्' (वीरो० ४/१४)

एकाकी (वि०) स्वयमन्वयसहाय एव, एकान्त, अकेला ही, अपने आप से युक्त। (जयो० १९) 'मयैकाकी किलैकदा' (सुद० ८३) मैं एक बार एकान्त में था।

एकाकीह (वि०) अकेला ही, एकमात्र ही। 'एकाकीह जरत्कुमारशरतो वृत्तं प्रकृत्या हि तत्' (मुनि० २४)

एकाग्र (वि०) दत्तचित्त, लीन, संयमित। (जयो० २७/५८) अग्रं मुखं, एकमग्रस्येत्येकाग्रः।

एकाग्रत्व (वि०) वृत्तचित्तपना, संयमितता। (जयो० २७/५८)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

एकाग्रचिन्तानिरोधः (पुं०) अनेक चिन्ताओं से रहित, ध्यान-शील। 'एकाग्रे चिन्तानिरोधः एकाग्रचिन्तानिरोधः' (त० वा० ९/२७)

एकाग्रमनं (नपुं०) कर्म रहित मन, ध्यानशील मन।

एकाक्षः (पुं०) एकेन्द्रिय। 'एकाक्षित्रद्वयब्धिहृषीकभाजा' (भक्ति० ३९)

एकाक्षर (वि०) ग्यारवां।

एकादश-अंग (पुं०) ग्यारह अंग ग्रन्थ विशेष।

एकादश-द्वारं (नपुं०) शरीर के ग्यारह द्वार/छिद्र।

एकादशप्रतिमा (स्त्री०) ग्यारह प्रतिमा।

एकादशसर्गः (पुं०) ग्यारह सर्ग।

एकादशाङ्गवेत्ता (वि०) ग्यारह अंग सूत्रों का ज्ञाता। (जयो० वृ० १२३/८७)

एकादशी (वि०) ग्यारस। (दयो० १११)

एकादशीप्रतिमा (स्त्री०) ग्यारहवीं प्रतिमा।

एकादशोपासक संश्रय (वि०) श्रावक की ग्यारह प्रतिमा का आश्रय। (भक्ति० ४२) एकादशोपासकसंश्रयेषु, भिक्षोरथ द्वादशसु स्थलेषु' (भक्ति० ४२)

एकाधृत (वि०) एक आधार वाला। (समु० ८/४८) 'एकाधृता-नीतिरभक्ष्यवृत्तिः' (समु० ८/४८)

एकानेकात्मक (वि०) एकात्म और अनेकात्म रूप। एकत्व और अनेकत्व रूप। (वीरो० १९/२३)

एकान्त (वि०) एकान्त दृष्टि, (सुद० ९१) उपस्थिते वस्तुनि विन्निरस्तु नैकान्ततो वाक्यमिदं सुवस्तु। (वीरो० २०/१५) १. अंत की संभवतः। जं तं एयाणंतं तं लोगमज्झादो एगसेढि पेक्खमाणे अंताभावादो एयाणंतं (धव० ३/१६) २. एकाग्र-त्यक्त्वा देहगतस्नेह मात्मन्येकान्ततो रतः। (सुद० १३५) ३. निश्चित रूप, नियमा श्यामं मुखं मे विरहैकवस्तु होकान्ततो रक्तमहो मनस्तु। (जयो० १६/१२)

एकान्त-असात (वि०) असाता रूप मात्र ही।

एकान्ततः नियम से, निश्चित रूप से। (सम्य० ८/४२) 'एकान्ततोऽसावुपभोगकालः' (सुद० १२०)

एकान्ततयानुरागः (पुं०) एक मात्र अनुराग। (वीरो० २१/१९)

एकान्तनिष्ठ (वि०) एकान्त युक्त। (जयो० १०/१००)

एकान्तप्रचण्ड (वि०) एक मात्र तेजस्विता। (जयो० वृ० २६/२३)

एकान्त-मिथ्यात्वं (नपुं०) एक ही धर्म का अभिनिवेश/आग्रह।

एकान्तवादः (पुं०) एक ही है ऐसा पक्ष। (जयो० १८/४५)

एकान्तवासः (पुं०) एकाकी निवास, एकाग्रता में स्थित। (जयो० वृ० १८/४५)

एकान्तसात (वि०) एकमात्र दाता को प्राप्त।

एकान्त स्थान (नपुं०) निर्जन स्थान, शून्य आवास।

एकान्तस्थिति (स्त्री०) निर्जनस्थान में वास। 'एकान्ते-निर्जने देशे स्थितिमभ्यगाद्' (जयो० वृ० २८/१२)

एकायित (वि०) एकता युक्त, समन्वय युक्त, साहचर्य पूर्ण। (जयो० २८/४०) 'स्वात्मनैकायितोऽप्यभृत्'

एकावग्रहः (पुं०) एक ही वस्तु में जानने का भाव। 'एकस्सेव वत्थुवलंभो एयावग्गहो' (धव० ६/१९)

एकाशनं—देखो नीचे।

एकासनं (नपुं०) ऊनोदरव्रत, तप का द्वितीय भेद। एक बार भोजन ग्रहण, नियमपूर्वक एक बार आहार ग्रहण। 'नैकासनैकासनिताप्यमुप्ता' (जयो० १७/१८) एकाशनत्वमभ्यस्येद् द्व्यशनाऽह्नि सदा भवन। (सुद० १३१)

एकाशनक (वि०) एक अशन वाला। (जयो० ६/१००)

एकिका (वि०) एकीभाव, एकात्मकता। रेखैकिका नैव लघुर्न गुर्वी लब्ध्याः परस्यां भवति स्विदुर्वी। (वीरो० १९/५) अपेक्षा विशेष से वस्तु में छोटा एवं बड़ापन होता है। न कोई रेखा छोटी होती है और न कोई बड़ा होती है।

एकीभावः (पुं०) १. साहचर्य, संहति। २. सामान्य स्वभाव, सामान्य गुण।

एकीभावस्तोत्रं (नपुं०) स्तोत्र नाम, आचार्य वादिराज द्वारा रचित स्तोत्र (ई०१०१० १०६५) २६ संस्कृत श्लोक में भक्तिपूर्ण आध्यात्मिक वर्णन है।

एकीभू (अक०) एक होना, साहचर्य होना, समन्वय होना। (भक्ति० ३०) 'एकीभवन्त्यत्र सदात्मवत्ता'।

एकीय (वि०) १. साहचर्य युक्त, सहकारी। २. एक या एक से।

एकेन्द्रियः (पुं०) एक स्पर्शनेन्द्रिय। एदेण एक्केण इंदिएण जो जाणदि पस्सदि सेवदि जीवो सो एइंदिओ णाम। (धव० ७/६२)

एकेन्द्रियजाति (स्त्री०) एकेन्द्रिय में जन्म। 'यदुदयादात्मा एकेन्द्रिय इति शब्द्यते तदेकेन्द्रियजातिनाम।' (स० सि० ८/११)

एकेन्द्रियजीवः (पुं०) पृथ्वी आदि एक इन्द्रिय वाले जीव। जिसकी एक ही इन्द्रिय हो। (वीरो० १९/८)

एकेन्द्रियभेदः (पुं०) एकेन्द्रियों के भेद।

एकेन्द्रियलब्धिः (स्त्री०) एकेन्द्रिय की शक्ति प्राप्त जीव/लब्धि प्राप्त जीव।

एकैक (वि०) वीप्सात्मक प्रयोग, एक से एक, एक एक।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(वीरो० १९/३५७) (सुद० १२७) (जयो० ८/८४) 'एकैकया कपर्दिकया खलु वित्तं बहु निचितम्' (जयो० २३/५९)

एकैकश (वि०) एक साथ एक। 'एकैशशो मुक्त इयान्न रोध:' (वीरो० २०/१२)

एकोनविंशति (स्त्री०) उन्नीस। (दयो० २४)

एकोनविंशसर्ग: (पुं०) उन्नीसवां सर्ग।

एकोन्यत (वि०) एक दूसरे से युक्त। (सम्य० २३)

एक्य (वि०) एकमात्र। 'पुनरञ्चति चैक्यं स्वम्य' (सुद० ७०)

एज् (अक०) १. कांपना, हिलना। २. चमकना।

एजक (वि०) कांपने वाला, हिलता हुआ।

एजनं (नपुं०) [एज्+ल्युट्] कांपना, हिलना, चलायमान होना।

एठ् (सक०) छेदना, रोकना, विरोध करना।

एड (वि०) [इल+अच् डलयोरभेद:] बहरा, नहीं सुनने वाला।

एड: (पुं०) भेड, मेष, एक विशेष भेड।

एडक: (पुं०) भेड़ मेष।

एडका (स्त्री०) भेड़ी, मेषी।

एण: (पुं०) [एति द्रुतं गच्छति इति, इ+ण] हरिण, बारासिंघा, मृग। (दयो० ९६) 'छायासु एण: खलु यत्र जिह्वानिलीढ-कान्तामुख एष शेते।' (वीरो० १२/९, ९/४९) 'विपद्य वह्नै चमरेणदीक्षितमिवाप' (समु० ४/१४) समीप के वन में पाप के कारण चमर मृग हुआ।

एणक: (पुं०) [इ+ण+कन्] मृग, हिरण।

एणगण: (पुं०) हिरण समूह, मृग समुदाय। (वीरो० २१/१०)

एणतिकल: (पुं०) चन्द्र।

एणनाथ: (पुं०) मृगराज। (सुद० १/३१) 'समग्रं भू-सम्भवदेणनाथ:' (सुद० १/३१)

एणमद: (पुं०) कस्तूरी। (जयो० ५/६१) 'दृशि चैणमद: कपोलमं' (जयो० १०/५९)

एणमदक: (पुं०) हिरण, एणस्य मदक। (जयो० २/८२)

एणशाव: (पुं०) १. मृग पुत्र, २. चन्द्रमृग। 'जीवति किलैणशावोऽसावांजस्के तदङ्कगत:' (जयो० ६/४५)

एणशावदृक् (वि०) मृगलोचन, मृगाक्षी। (जयो० ११/५)

एणा (स्त्री०) मृगी, हिरणी। (सुद० ८८)

एणाक्षी (वि०) मृगनयनी, मृग के नेत्रों वाली। 'वस्तु मेणाक्षीणां मनस्युदारे' (सुद० ८८)

एणी (स्त्री०) काली हिरणी, कृष्ण हिरणी।

एणीदृक् (वि०) मृगाक्षी, मृगीनेत्र वाली, मृगनयना। (जयो० ३/५५) 'वेणीयमेणीदृश एव भायात्कृशी' (जयो० ११/७०)

एणीहक् (पुं०) मकरराशि।

एत् (अक०) प्राप्त होना-एतु: (सुद० ४/३४) एति (सुद० १/४६)

एत (वि०) कान्तिमान, रंगों से युक्त।

एतद् (वि०) यह, यहां। १. पूर्वकथन के रूप में प्रयोग। २. समास में प्रयुक्त। ३. सम्बोधन के बाद प्रयुक्त होने वाला। (पुं०) एष:, (स्त्री) एषा, (नपुं०) एतद्। (सम्य० ९४) 'इक्षुयष्टिरिवैषाऽस्ति' (जयो० ३/४०) 'एषा बाला सुलोचना' (जयो० वृ० ३/४०) एषा बाला, चञ्चले' (जयो० वृ० ३/४२) ये दोनों प्रयोग पूर्वकथन के रूप में हैं। 'स्म न शेते पुनरेष शायित:' (सुद० ३/२६) एतस्य-(सुद० ३/३३) षष्ठी एकवचन, तनये मन एतस्मिन् (जयो० ६/७७) सप्तमी एकवचन। एतन्नगरं समन्तात् (सुद० १/२९) (नपुं० एकवचन) तमेनं विधुमालोक्य। (सुद० ३/४४)

एतक (वि०) पूर्वोक्त। (जयो० २/५०)

एतदीय (वि०) [एतद्+छ] इसका, इसकी। (समु० ८/४) ऐसा, ऐसी। एतदीय चरितं खलु शिक्षा वा। (जयो० ५/४०) 'एतदीयकबरीति नाम दिक्' (जयो० ११/९६) विशेष प्रकार की केश रचना। 'एतदीय-रदनच्छदसारौ' (जयो० ५/४८) उसके दोनों औंठ।

एतदीयत् (वि०) ऐसा, ऐसी। 'भुजङ्गतो भीषण एतदीयद्विष' (जयो० ८/५८)

एतन: (पुं०) [आ+इ+तम्] श्वास, सांस, उच्छ्वास।

एतल्लोक (पुं०) यह संसार। (जयो० २७/६४)

एतर्हि (अव्य०) अब, इस समय।

एदृशी (वि०) ऐसी। (सुद० पृ० ८४)

एतादृक् (वि०) ऐसा, इस प्रकार का। (जयो० १/५, सम्य० ४५) इतना, इससे अधिक, इतनी दूर। (सुद० ९६) (जयो० २३/८४) इस समय ऐसा प्रयत्न होना चाहिए।

एतादृशी (वि०) ऐसी, इस तरह की, इतनी। (जयो० ५/१०१ 'नामैतदृशी पुण्यपाकत:' (जयो० ३/५६)

एतादृक्षी (वि०) ऐसी, इस तरह की, इतनी।

एतावत् (वि०) [एतद्+वतुप्] ऐसा, इतना, इससे अधिक, इतनी दूर। 'समुन्मत्ते किमेतावत्' (सुद० वृ० ८४)

एतावती (वि०) इतनी, ऐसी, इससे अधिक। (जयो० २७/४५)

एतावन्तक (वि०) इतना मात्र ही, ऐसा ही, इस तरह का ही। 'एतावन्तकदे शिलाविव गतौ' (जयो० २३/५५) एतौ कपोतजम्पती किलान्तकेनयमेन देशितो-संकेतिताविव' (जयो० २३/५५)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

एतावन्मात्र (वि०) इतना ही, ऐसा ही। एतु-प्राप्त हो। (जयो० २७/४२) (जयो० वृ० २२/४)

एत्थं (अव्य०) इस प्रकार, ऐसा। (सम्य० ४३)

एत्य (सं०कृ०) प्राप्त होकर, जाकर। 'येन कर्णपथतो हृदुदारमेत्य' (जयो० ४/५३) एत्य गत्वा। (जयो० वृ० ४/५३)

एदृगमयि (अव्य०) ऐसा भी, इस तरह का भी। (सुद० १०५)

एध् (अक०) १. उगना, बढ़ना, फलना-फूलना। एधयन् वर्धयन् (जयो० वृ० १०/८२) २. नमन करना, आदर देना, सम्मान करना।

एधः (पुं०) ईंधन, अग्नि में जलाने की लकड़ी।

एधतुः (पुं०) [एध्+चतु] १. वह्नि, अग्नि। २. नर, मानव।

एधस् (नपुं०) ईंधन।

एधा (स्त्री०) [एध्+अ+टाप्] आनन्द, प्रसन्नता।

एधित (भू० क० कृ०) आनन्दित, प्रफुल्लित, हर्षित, विकसित।

एनस् (नपुं०) [इ+असुन्] पाप, अशुभ प्रवृत्ति, दोष, अपराध, कलुष। स्वयं प्रवर्तन्त इतः किमेनः (भक्ति० २७) एनोऽपराधे कलुषे इति विश्वलोकनः 'गणिकाऽऽगणिका किलैनसां' (जयो० २/१३३) एनां (जयो० १/२१), एनाः (जयो० १/३)

एनपरिहर्ता (वि०) पापहर्ता, पापपरिवर्जक (जयो० २३/४५)

एनस्वत् (वि०) पापी, अपराधी, दुष्ट प्रवृत्ति वाला।

एनस्विन् (वि०) पापी, अपराधी।

एन्द्री (वि०) प्रकाशवान्। (सुद० ३/१)

एरः (पुं०) राम के गुरु, विद्या गुरु। (प०पु०२५/५५)

एरण्डः (पुं०) [आ+ईर्+अण्डच्] अरंडी का पौधा।

एरित (वि०) प्रेरित, प्रेरणा प्राप्त। (जयो० वृ० ६/२)

एलकः (पुं०) भेड़, मेष।

एलमूकः (पुं०) जड़, भाषाजड़, अव्यक्तशब्दभाषी।

एला (स्त्री०) इलायची।

एलाचार्यः (पुं०) कुन्दकुन्द का अपर नाम, कुरलकाव्य के रचनाकार।

एलीका (स्त्री०) छोटी इलायची।

एलेयः (पुं०) राजा दक्षका पुत्र।

एव (अव्य०) [इ+वन्] किसी द्वारा कथित वचन को बल देने के लिए इस अव्यय का प्रयोग होता है। जिसका अर्थ-ही, ऐसा, ठीक है, उचित है, वही, इतना ही, ऐसा ही। 'दो... दुर्जन एव भाति' (समु० १/२४) दुर्जन दोष ही ग्रहण करता ...। स्वयं पुना रौरवमेव याति' (समु० १/३४) 'समञ्चतोऽस्त्येव हि सम्यगस्ति' (सम्य० वृ० ४) सम्यक्त्वमेवानुवदामि' (सम्य० पृ० ४) एव-जहां, जिस जगह 'मुक्तामया एव जनाश्च' (सुद० १/२८) एव तो, तु, फिर, ही। (जयो० वृ० १/३) श्रोणी महती सैव मोदकौ संकुच रूपौ। (जयो० ३/६०)

एव तु (अव्य०) फिर भी, जहां पर। (सुद० १/३३)

एवमेव च (अव्य०) और इसी तरह की। (जयो० २/५१)

एवमेवेति (अव्य०) इसी तरह का ही। (जयो० वृ० २/१०)

एवयत्र (अव्य०) जहां पर तो। पलाशित किंशुक एव यत्र द्विरेफवर्गो मधुगल्यमत्र। (सुद० १.३३)

एवं (अव्य०) [इ+वम्] अतः, इसलिए, इस रीति से इस प्रकार से। (जयो० वृ० १/१) एवं मुपंत्र वचसा भवि भोगवत्या (सुद० पृ० ८०)

एवं च (अव्य०) ऐसा भी, इस तरह का भी, और इसी रीति से। (सुद० ८/८)

एवमस्तु (अव्य०) ऐसा ही हो, इस प्रकार का हो।

एवं आदि (अव्य०) इस प्रकार का ही।

एवं गुण (वि०) इस तरह (सुद० २/३६) 'एवं प्रकारेण समुज्जगर्ज' (सुद० २/३६)

एवंभूत (वि०) इस प्रकार के गुणों का।

एवंभूतः (पुं०) एवं भूतनय, जो द्रव्य जिस प्रकार की क्रिया में परिणत हो, उसी प्रकार का निश्चय कराने वाला नय। 'येनात्मना भूतस्तेनैवाध्यवसाययतीति एवं भूतः' (स० सि० १/३३, त० वा० १/३३) 'पदगतवर्णभेदाद् वाच्यभेदस्याध्यवसायकोऽप्येवम्भूतः' (धव० १/९०) उसी रूप परिणत हुए पदार्थ को उस शब्द द्वारा ग्रहण। (नय०२०, १/३३)

एवकार (वि०) ऐसा ही है, निपात, व्यतिरेचक/निवर्तक या नियामक। एवकार तीन अर्थों में प्रयुक्त होता है। अयोगव्यच्छेदक, अन्ययोगव्यच्छेदक और अत्यन्त योग व्यच्छेदक।

एवावृति (स्त्री०) इस प्रकार की आवृत्ति। (समु० ९/२९)

एशित (वि०) विजयी। (मुनि० ११, सुद० २/४१) एषि खोगें।

एष् (सक०) जाना, गमन करना, पहुंचना।

एषणं (नपुं०) [एष्+ल्युट्] लोह बाण।

एषणं (नपुं०) खोजना, अन्वेषण करना।

एषणा (स्त्री०) १. आहारादि अन्वेषण। २. अन्वेषिणी। (जयो० १३/४३)

एषणाशुद्धिः (स्त्री०) आहारादि शुद्धि।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

एषणासमितिः (स्त्री०) मुनि आहारचर्या की समिति। उद्गमदोष वर्जन विधि। 'अन्नादावुद् गमादि दोष-वर्जन-मेषणासमितिः।' (त० वा० ९/५) दोष रहित अन्नपान का ग्रहण। (त०९/५)

एषणिका (स्त्री०) स्वर्णकार की तराजू।

एषिणी (वि०) अभिलाषिणी। (जयो० ६/१९६)

एषा (स्त्री०) इच्छा, वाञ्छा, चाह, कामना।

एषित (वि०) प्रशस्त हुआ। (जयो० २८/६९)

एषिन् (वि०) [इष्+णिनि] कामना करते हुए, इच्छा करते हुए।

एषूर्णा (स्त्री०) रेशम का कीड़ा। (मुनि० २०)

एह-दिखना-(सुद० १०२)

एहिक (वि०) इस लोक संबंधी (मुनि० १/)

ऐ

ऐः (पुं०) संस्कृत वर्णमाला का बारहवां स्वर, इसका उच्चारण स्थान कण्ठ और तालु है।

ऐ (अव्य०) यह विस्मयादि बोधक अव्यय है, इसका प्रयोग स्मरण, आमंत्रण, आह्वान आदि के लिए होता है।

ऐ (पुं०) १. कल्याण। २. महादेव, शिव।

ऐकद्यं (अव्य०) शीघ्र, त्वरित, जल्दी।

ऐकध्यं (नपुं०) [एकधा+ष्यमुञ्] ऐकान्तिकता, समय की एकाग्रता, समय का ध्यान।

ऐकपत्यं (नपुं०) [एकपति+ष्यञ्] परम-उत्कर्ष, सर्वोपरिशक्ति अत्यधिक बल, संप्रभुत्ता।

ऐकपादिक (वि०) [एकपद+ठञ्] एक पद से सम्बन्धित, वाक्य रचना के एक चरण सम्बन्धी।

ऐकपद्यं (नपुं०) शब्दों की एक रूपता, पद्य का ऐक्य रूप।

ऐकमत्यं (नपुं०) [एकमत+ष्यञ्] सहमति, एकरूपता, एक विचारधारा।

ऐकान्तिक (वि०) एकान्त विचार वाला। १. पूरा, सम्पूर्ण, समग्र। २. विश्वास।

ऐकान्तिकमिथ्यात्व (वि०) एक ही धर्म का अभिनिवेश/आग्रह। जीवादि वस्तु सर्वथा सत् ही है या असत् ही है, एक ही है या अनेक ही है, प्रतिपक्ष का निरपेक्ष अभिप्राय ऐकान्तमिथ्यात्व है। 'अत्थिचेव, णत्थिचेव, एगमेव अणेगमेव, सावयवं चेव निरयव चेव, णिच्चमेव अणिच्चमेव, इच्चाइओ एयंताहिणिवेसो एयंतमिच्छत्तं' (धव० ८/२०)

ऐकागारिकः (पुं०) [एकागार+ठञ्] १. चोर, २. एक घर का गृहस्थ।

ऐकाग्रयमात्मन् (वि०) एकाग्र युक्त आत्मा। 'ऐकाग्रयमात्म-प्रकृतोपयोगे' (समु० ८/३४)

ऐकाग्रयं (नपुं०) एक रूपता, एकाग्रता।

ऐकाङ्गः (पुं०) [एकाङ्ग+अण्] सिपाही, एक ही समुदाय का आरक्षी, सुरक्षाकर्मी।

ऐकात्म्यं (नपुं०) [एकात्मन्+ष्यञ्] एकता, समानता, समरूपता, समत्वभाव।

ऐकाधिकरण्य (नपुं०) एक रूपता, समानता, सादृशता, तुल्यता।

ऐकाधिकरणं (नपुं०) [एकाधिकरण+ष्यञ्] एक ही विषय की व्याप्ति।

ऐकार्थ्यं (नपुं०) [एकार्थ+ष्यञ्] एक ही अर्थ/प्रयोजन वाला, एक ही उद्देश्य वाला।

ऐकाहिक (वि०) [एकाह+ठक्] एक दिन सम्बंधी, दैनिक, दिन का।

ऐकाहिकः (पुं०) हिक्का-हिचकी, एक व्याधि विशेष। 'णमो सप्पिसवीणं चैकाहिकारुगक्षणम्' (जयो० १९/८०)

ऐकीभूय (वि०) एकत्रित। (जयो० २६/८१)

ऐक्यं (नपुं०) १. एकरूपता, समानता, समभाव। २. भेद रहित, ०भिन्नता रहित, ०पृथक्ता रत्ति, ०एक दूसरे में समाहितं तादाम्य। अङ्गाङ्गिनोनैक्यमिती हरीतिर्न भोः प्रभो भाति यथाप्रतीतिः सत्या त्वदुक्तिः शतपत्रनीतिर्गुणेषु नष्टेषु परेऽपि हीतिः।। (जयो० २६/८१) अङ्ग और अङ्गी-अवयव और अवयवी में ऐक्य-अभेद नहीं है, पृथक्ता ही है, ऐसा कहना ठीक नहीं जान पड़ता है, परन्तु आपका ऐक्य/अभेद कथन शतपत्र के समान सत्य है। जैसे कि सौ पत्रों-कलिकाओं का समूह शतपत्र और कमल में भेद नहीं है-अभेद है।

ऐक्यभावना (स्त्री०) एकात्मकता का भाव। (जयो० वृ० ९/४७)

ऐक्ययुग् (वि०) ऐक्यभावना युक्त। त्वमपरोऽप्यपरोऽहमियं भिदा व्रजतु बुद्धिभृदैक्ययुजा विदा। भवति सम्मिलने बहुसम्पदा विरहिता जगतामपि कम्पदा।। (जयो० ९/४७)

ऐक्ययुज् देखो ऊपर।

ऐक्यवस्तु (वि०) मेल, मिलाप युक्त। (वीरो० २२/१५)

ऐक्षव (वि०) [इक्षु+ण्यत्] गन्ने से बनी वस्तु।

ऐक्षुक (वि०) [इक्षु+ठञ्] इक्षु वाला, गन्ने वाला, ईख युक्त।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ऐक्षुभारिक (वि०) [इक्षुभार+ठक्] ईख का भारवाहक, गन्ने का ढोने वाला।

ऐक्ष्वाक (वि०) [इक्ष्वाकु+अ] इक्ष्वाकु कुल से सम्बन्धित।

ऐक्ष्वाकुः (पुं०) इक्ष्वाकु संतति, इक्ष्वाकुपुत्र।

ऐक्ष्वाकुशासित (वि०) इक्ष्वाकु कुल द्वारा शासित।

ऐङ्गुद (वि०) इंगुदी तरु से प्राप्त।

ऐङ्गुदं (नपुं०) इंगुदी पादप का फल।

ऐच्छिक (वि०) १. इच्छा जन्य, कामना युक्त। २. अपनी रुचि के अनुसार, मनोनुकूल, मन के योग्य, इच्छापरक।

ऐडक (वि०) भेड़ युक्त।

ऐडकः (पुं०) मेष, भेड़।

ऐडलः (पुं०) कुबेर।

ऐण (वि०) मृग के उत्पन्न त्वचा, ऊन।

ऐणेय (वि०) हिरणी से उत्पन्न पदार्थ।

ऐता (सक०) उत्पन्न करना। (सुद० १२३)

ऐत-तादात्म्य (नपुं०) [एतदात्मन्+ष्यञ्] विशेष गुण, समीचीन अवस्था।

ऐतिहासिक (वि०) [इतिहास+ठक्] इतिवृत्त सम्बंधी, इतिहास सम्बंधी परम्परा गत।

ऐतिहासिकः (पुं०) इतिहासकार, पौराणिक आख्यानकार।

ऐतिह्यं (नपुं०) परम्परागत शिक्षा, ऐतिहासिक शिक्षा।

ऐतीश्वरीत्वरी (वि०) दुराचारिणी। (सुद० १०३)

ऐधितुम्-शिथिलता युक्त, शिथिलाचार। मन्दत्वमेवमभवत्तु यतीश्वरेषु तद्वच्छनैश्च गृहमेधिनुमाधरेषु।

ऐनसं (नपुं०) **पाप, अपराध।** (सु०११९) (वीरो० २२/१०)

ऐन्द्रि (वि०) **इन्द्र सम्बन्धी।**

ऐन्द्रिजालं (नपुं०) जादू, इन्द्रजाल, मायावी दृष्टि।

ऐन्द्रजालिक (वि०) [इन्द्र+जाल+ठक्] जादू से सम्बन्धित, मायाचार युक्त, भ्रामकता जनक।

ऐन्द्रजालिकः (पुं०) जादूगर, बाजीगर।

ऐन्द्रध्वजः (पुं०) इन्द्र सम्बन्धी पूजा।

ऐन्द्रलुप्तिक (वि०) [इन्द्रलुप्त+ठक्] १. इन्द्रिय शून्यता युक्त। २. गंजापन।

ऐन्द्रशिरः (पुं०) [इन्द्रशिर+अण्] हस्ति जाति, हाथियों की जाति।

ऐन्द्रिः (पुं०) [इन्द्रस्यापत्यम् इन्द्र+इञ्] १. अर्जुन, जयन्त, बाली। २. काक, कौआ।

ऐन्द्रिय (वि०) [इन्द्रिय+अण्] इन्द्रिय सम्बंधी, इन्द्रिय गोचरता इन्द्रिय विषय युक्त।

ऐंधन (वि०) ईंधन युक्त।

ऐंधनं (पुं०) रवि, सूर्य, दिनकर, तेज।

ऐयत्यं (नपुं०) [इयत्+ष्यञ्] परिमाण, संख्या।

ऐरावणः (पुं०) १. इन्द्र हस्ति, सद्गज ऐरावत। (वीरो० ७/१०) 'गीयते मद इतीन्द्रसद्गजमस्तके' (जयो० १७/१०१) सद्गज ऐरावण (जयो० वृ० ७/१०१) २. स्तवक गुच्छनगर के राजा का नाम। यत्कृतान विधान कारकक स्फुटमै- रावणनामधारकः। (समु० २/१६)

ऐरावणभूपतिः (पुं०) ऐरावण राजा, स्तवक गुच्छ नगर का राजा। (समु० २/२१)

ऐरावतः (पुं०) १. ऐरावत क्षेत्र, अयोध्या नगरी के राजा ऐरावत के नाम से इस क्षेत्र का नाम ऐरावत पड़ा। (रा०वा०३/१०) २. हस्थि, इन्द्रहस्ति, गजराज। (वीरो० वृ० ४/४१) सुरहस्ति-(जयो० वृ० १/२५) (इरा आपः तद्वान इरावान् समुद्रः, तस्मादुत्पन्न अण्) ऐरावत हाथी। विस्तृत वर्णन के लिए देखें-जैनेन्द्र सिद्धान्त कोश भाग एक (पृ० ४६८) ३. ऐरावतो नारङ्गनाम वृक्ष (जयो० वृ० २४/१०६) नारङ्गी के वृक्ष। प्रसिद्ध ऐरावत एव किं वा कुबेरको नन्दनवत्ततो यत्। (जयो० २४/१०८)

ऐरावत-गजः (पुं०) ऐरावत हाथी।

ऐरावत क्षेत्रं (नपुं०) ऐरावत क्षेत्र।

ऐरावत-नगरं (नपुं०) ऐरावत नामक नगर, अयोध्या का अपर नाम।

ऐरावत हस्तिः (पुं०) ऐरावत हाथी। (जयो० १२/६४)

ऐलः (पुं०) मंगलग्रह।

ऐलकः (पुं०) ग्यारहवें प्रतिमा युक्त उत्कृष्ट श्रावक। (वसु०श्रा०३०१)

ऐलेयः (पुं०) [इला+ढक्] १. सुगन्धित द्रव्य। २. मंगलग्रह।

ऐश (वि०) [ईश+अण्] १. ईश्वर से सम्बंधि। २. परम प्रिय, सर्वोपरि।

ऐशान (वि०) ईश्वर से सम्बन्ध रखने वाला।

ऐशानः (पुं०) देवों में एक देव ऐशान/ईशान-देव।

ऐश्वर (वि०) ईश्वरी, पूजनीय, सामर्थ्यवान्, वैभव सम्पन्न।

ऐश्वर्य (नपुं०) [ईश्वर+ष्यञ्] १. सर्वोपरि, सर्वोत्तम, शक्तिशाली, वैभव युक्त। २. शक्ति, बल, आधिपत्य। ३. दिव्यशक्ति विशेष। 'ऐश्वर्यस्य समग्रस्य धर्मस्य यशसः श्रियः' (जयो० वृ० ६/८८)

ऐश्वर्यमदं (नपुं०) धन सम्पत्ति का मद।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ऐश्वर्यशाली (वि०) समृद्धियुक्त। (जयो० वृ० १/७१)

ऐषमस् (अव्य०) इस समय में इस वर्ष में, आधुनिक/व्युत्पन्नकाल में।

ऐषमस्तन (वि०) इसी वर्ष से सम्बंधित।

ऐष्टिक (वि०) इष्टकार्य से सम्बंधित।

ऐहलौकिक (वि०) [इहलोक+ठञ्] इस संसार से सम्बंध रखने वाली, इस लोक में घटित होने वाली।

ऐहिक (वि०) सांसारिक, लौकिक। (जयो० २७/४८) द्वौ हि धर्मौ गृहस्थानामैहिक: पारमार्थिक:। (हित स०३)

ऐहिकफलं (नपुं०) सांसारिक परिणाम, लौकिक भाव।

ऐहिक-व्यवहृत (वि०) लौकिक व्यवहार सम्बन्धी। (जयो० २/७६)

ऐहिकसुखं (नपुं०) सांसारिक सुख। नीतिरैहिकसुखाप्तये नृणामार्षगीर्लसत कर्मणे घृणा। (जयो० २/४)

ऐहिकागम (वि०) इस संसार में आगत। 'स्मृतिरैहिकागमोऽपि द्विजान्' (जयो० वृ० २७/८८)

ओ

ओ (पुं०) यह संस्कृत वर्णमाला का तेरहवां स्वर है। इसका उच्चारण स्थान ओष्ठ एवं कण्ठ है। अ+उ=ओ।

ओ (अव्य०) यह सम्बोधनात्मक अव्यय है, इससे हाँ! अच्छा! उचित आदि का बोध होता है। किसी के बुलाने, स्मरण करने या करुणा प्रकट करने के लिए इसका प्रयोग होता है।

ओ (पुं०) ब्रह्मा, परमब्रह्म।

ओकः (पुं०) [उच्+क] १. निवास स्थान, गृह, घर, आश्रय, शरण, आधार। (जयो० ४/२०, ३/२) २. अञ्जली। ३. मछली, मत्स्य। ४. पक्षी विशेष। 'माधवीप्रकृतिपूर्णमिवौकः' (जयो० ४/३७) इसमें 'ओक' का अर्थ स्थान है।

ओकणः (पुं०) [ओ+कण+अच्] खटमल, एक क्षुद्र जन्तु।

ओकस् (नपुं०) स्थान, आश्रय, निवास, गृह।

ओख् (अक०) १. सूख जाना, शुष्क होना। २. सुशोभित करना, अलंकृत करना। ३. अस्वीकृत करना, रोकना।

ओघः (पुं०) [उच्+घञ्] १. राशि, समूह, समुदाय। (जयो० ३/२३) २. समग्र, पूर्ण। ३. परम्परा। ४. धारा, जलप्रवाह। ५. आगमिक अर्थ-अध्ययन, कथन भी है 'संहिवत्त-वयण-कलावो दव्वट्ठिय-णिबंधणो ओघो णाम' (धव० ५/२४३) ओघ-ओघं वृंदं समूह: संपात: समुदय: पिण्ड: अवशेष, अभिन्न: सामान्यमिति पर्यायशब्द:' (धव० ३/९) ओघ, वृन्द, समूह, संपात, समुदय, पिण्ड, अवशेष, अभिन्न, सामान्य इत्यादि। श्रुत की अपेक्षा-अध्ययन, अक्षीण आय और क्षपणा भी अर्थ है। 'दव्वट्ठिय-णय-पदुप्पायणो, संगहिदत्थादो' (धव० ४/३२२)

ओघनिर्देशः (पुं०) मार्गणा स्थान का निरूपण, गुणस्थान विवेचना। (जैनेन्द्र सि०पृ० ४६९)

ओघप्ररूपणा (स्त्री०) गुणस्थान के प्रमाण का कथन।

ओघभवः (पुं०) कर्मों से उत्पन्न। 'ओघभवो णाम अट्ठकम्माणि अट्ठकम्मजणिदजीवपरिणामो वा' (धव० १६/५१२)

ओघमरणं (नपुं०) आयुक्षय पर मृत्यु, सामान्य मरण।

ओघसंज्ञा (स्त्री०) अव्यक्त ज्ञानोपयोग रूप संज्ञा।

ओघालोचना (स्त्री०) पिण्ड की आलोचना।

ओघोद्देशिकः (पुं०) उद्देश से युक्त क्रिया।

ओंकारः (पुं०) [ओम्+कार:] मांगलिक अभिव्यक्ति, हर्षातिरेक। नम: स्तुतोऽयमोंकारो विसर्गान्त स्वरूपत:। तेनानन्दमयेनापि रूपापभ्रंशवेदिना।। (जयो० २८/२७)

ओज (वि०) विषम, असम, संख्या विशेष। जिस राशि में ४ (चार) का भाग देने पर ३ या १ शेष रहता है। समान अंक का अभाव।

ओज-आहारः (पुं०) इन्द्रिय पूर्णता। (धव० ३/२४९)

ओजस् (नपुं०) [उब्ज+असुन्] ०तेज, ०शक्ति, ०तेजस् शरीर ०आरोह/ऊँचाई, परिणाह/विस्तार युक्त। ०बल, ०वीर्य, ०आभा, ०क्रान्ति, ०प्रभा। 'रोद्धुञ्च योद्धुं जय ओजसो भू:' (जयो० ८/४३)

ओजस्क (वि०) तेजस्वी, प्रतापी, शक्तिशाली। (जयो० ६/४५)

ओजस्किन् (वि०) तेजस्वी, प्रतापी, शक्तिशाली। (जयो० ६/४५)

ओजस्वत् (वि०) दृढ़, शक्तिसम्पन्न, वीर्यवान्, प्रतापी, बलिष्ठी।

ओजस्विन् देखो ऊपर।

ओजस्विता परिणामः (पुं०) वीर्यपात, बलिष्ठाभाव। (जयो० वृ० ३/१७)

ओड्रः (पुं०) ओड़ देश।

ओड्रं (नपुं०) जबत्कुसुम, जबापुष्प। * जपा कुसुम।

ओत (वि०) [आ+वे+क्त] बुना हुआ, एक दूसरे सिरे से मिला हुआ।

ओतुः (पुं०) [अव्+तुन्] बिलाव, जंगली बिल्ली, विडाल। (जयो० २३/७५) (जयो० ७/१११)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ओतुकः (पुं०) विलाव, बिल्ली।

ओदनः (नपुं०) [उन्द्+युच्] भक्त, भात, भोजन। (सम्० ८/१९) (जयो० १२/१११) 'समोदनस्यात्र भवादृशस्य' (जयो० ३/६२) 'ओदनस्य भक्तस्य वा प्रयुक्तये' (जयो० वृ० ३/६२)

ओदनाधिकारः (पुं०) भोजन का अधिकार 'सकलव्यञ्जन-मोदनाधिकारम्' (जयो० १२/११५)

ओदित (वि०) कथित, निरूपित, भाषित। 'मृदुपल्यङ्क इवार्हतोदिते' (सुद० ३/२२)

ओदिय (वि०) उदयगत, सम्मुख स्थित, समागत। (सुद० २/४३) 'वलित्रयस्यापि तदोदियाय' (सुद० २/४३)

ओपत्तिक (वि०) उत्पत्ति मूलक।

ओपनिषत् (वि०) उपनिषद काल सम्बंधी। (वीरो० १८/५६)

ओपनिषत्-समर्थ (वि०) उपनिषत्काल सम्बन्धी रचना में समर्थ। (वीरो० १८/५६)

ओम् (अव्य०) १. कल्याण सूचक अक्षर। २. पञ्च परमेष्ठि-वाचक मंगलपद। इसका आदि अक्षर 'अ',-अशरीरी वाचक है, जिसे सिद्ध कहते हैं। अ अरहंत परमेष्टि-वाचक आ-आचार्य मुनि। 'उ' उपाध्याय और अन्तिम 'म्' साधु परमेष्ठि वाचक है। अ+अ+आ= आ+उ=ओ+म्=ओम्' वैदिक संस्कृति में 'अ' ब्रह्मवाचक, 'उ' विष्णुवाचक और 'म्' महेश-वाचक है। 'ॐ' यह बीजाक्षर भी परमेष्ठि वाचक है। 'प्रकृष्टो नवः प्रणवः' की व्युत्पत्ति से भी इसकी श्रेष्ठता प्रतीत होती है। 'प्रणवो नाम मंगलशब्दः संस्तुतः स्तुतिपथम्' (जयो० वृ० १९/५०) 'ओं ह्रीं णमो जिणाणं' (जयो० १९/५८) 'ओं णमो दसपुव्वीणं' (जयो० १९/५७) **ओम्**-ओं 'शिव/कल्याण-वाचक/मंगल वाचक है। शिवमों शिवमों नमोऽर्हमद्य शिवमों ह्रीमृषिवन्दितं तु सद्यः। वशिवं शिवरैः श्रितं हितं च वृषिबोध्यञ्च सुधाशिवोध्यमञ्चत्।। 'रुचिरोमित्युदपादि किन्न तेन। (जयो० १२/४१) यह एक पवित्र ध्वनि है, जो ऋषियों के द्वारा उच्चरणीय है। अरिहंता असरीरा आयरिया तह उवज्झाया मुणिणा। पढमक्खरणिप्पणो ॐकारो पंचपरमेट्ठी। (द्र०सं०४९) (जैनेन्द्र सि०वृ० ४७०)

ओल (वि०) [आ+उन्द्+क] गीला, आर्द्र, ओला, हिम, तुषार।

ओलिकः (पुं०) मध्य-आर्य खण्ड का देश।

ओल्लड् (सक०) फेंकना, उछालना।

ओल्ल (वि०) गीला, आर्द्र, ओला, हिम, तुषार।

ओवेल्लिम (नपुं०) वेष्टन।

ओषः (पुं०) [उष्+घञ्] संताप, जलन।

ओषणः (पुं०) [उष्+ल्युट्] तीखापन, तिक्त, तीक्ष्ण।

ओषधः (पुं०) दवा, रोगनिदान का पदार्थ।

ओषधदानं (नपुं०) चार दानों में एक दान ओषधदान, चिकित्सा करना, रोग निदान। रोगिभ्यो भैषजं देयं रोगा देहविनाशकृत्। (उपा०६५)

ओषधिपतिः (पुं०) चन्द्र। ओषधीनां पतिश्चन्द्रः 'दोषं किलौषधिपतौ प्रतियातिदूरे।' (जयो० १८/१८)

ओषधिप्राप्त (वि०) ओषधि ऋद्धि से युक्त, शरीर के सुगन्धित अवयवों से युक्त।

ओषधिव्रजः (पुं०) ओषधि समूह। (जयो० २४/२९)

ओषधिसमूहः (पुं०) ओषधि पुञ्ज, ओषधि की व्यापकता।

ओहाक् - त्याग दिया ओहाक् त्याग दिए।

ओष्ठः (पुं०) [उष्+थन्] होठ, अधर। (जयो० ५/८४) (जयो० ३/५२) * रदनवास।

ओष्ठज (वि०) ओष्ठवान् वाले।

ओष्ठजाहः (पुं०) ओठ की जड़।

ओष्ठ-पल्लवः (पुं०) ओठ/होंठ रूप, पल्लव रूप ओंठ।

ओष्ठपुटं (नपुं०) ओठ/होंठ भाग, दोनों अधरों के खोलने पर बना गर्त रूप स्थान।

ओष्ठमण्डलं (नपुं०) अधरबिम्ब। (जयो० वृ० ३/९२)

ओष्ठ्य (वि०) [ओष्ठ+यत्] होंठों पर रहने वाली ध्वनि, उच्चरणीय शब्द।

ओष्ठ्यगत् (वि०) अधर गत ध्वनि।

ओष्ण (वि०) [ईषद्+उष्ण] अल्प गरम, कुनकुना।

औ

औ -संस्कृत वर्णमाला का चौदहवां स्वर। इसका उच्चारण स्थान औष्ठ है। अ+ओ=औ।

औ (अव्य०) यह अव्यय आमन्त्रण या सम्बोधन अर्थ में होता है, संकल्प तथा शपथ अर्थ के लिए भी इसका प्रयोग किया जाता है।

औंड्रः (पुं०) भरत क्षेत्र आर्यखण्ड का एकदेश।

औकः (पुं०) स्थान, निवास, आश्रय। (जयो० २७/२१)

औक्थिक्यं (नपुं०) [उक्थ+ठक्+ष्यञ्] उक्थ का पाठ, सामवेद का पाठ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

औष्ठ्यं (नपुं०) पाठ पद्धति, पाठरीति।

औक्षकं (नपुं०) बलिवर्द समूह, बैलों का झुण्ड, उक्ष्णां समूहः इत्यर्थे उक्षन्+अण् टिलोपः कुञ् वा।

औग्रयं (नपुं०) [उग्र+ष्यञ्] दृढ़ता, भीषणता, अत्यधिकता, भयंकरता, क्रूरता।

औघः (पुं०) बाढ़, जलप्लावन।

औचित्यं (नपुं०) [उचित+ष्यञ्] ०उपयुक्तता, ०उचितपना, ०संगति, ०योग्यता। यथार्थता। 'कथमपौचित्यस्य हतिः सम्भवति' (दयो० १०६) ०सार्थकता, ०वास्तविकता।

औजसिक (वि०) [ओजस्+ठक्] शक्ति सम्पन्नता, दृढ़ता, धैर्यपना, तेजस्विता।

औजसिकः (पुं०) बलवान् पुरुष, शूरवीर, योद्धा।

औजस्य (वि०) [ओजस्+ष्यञ्] कान्ति, प्रभा, आभा।

औज्ज्वल्यं (नपुं०) [उज्ज्वल+ष्यञ्] प्रभा, कान्ति, चमक, भव्यता।

औडुपिकः (वि०) [उडुप+ठक्] नाव से पार करने वाला।

औडुम्बरः (पुं०) उदुम्बर फल।

औतुकी (स्त्री०) बिडाली, बिल्ली। 'निशौतुकी तन्मय-कौतुकित्वात्' (जयो० १५/४५) रात्रि रूपी बिल्ली पकड़ने में तत्पर।

औतुनः (पुं०) बिडाल, बिलाव। 'प्राग्जन्मप्रतिवैरिणा मृतमितौ। तत्रागतेनौतुना' (जयो० २३/५५)

औतुपात (वि०) बिडालजात, बिडालपुत्र। (जयो० २०/३०)

औत्कण्ठ्य (नपुं०) [उत्कण्ठा+ष्यञ्] वाञ्छा, चाह, अभिलाषा, लालसा, इच्छा, कामना, भावुकता।

औत्कर्ष्य (वि०) [उत्कर्ष+ष्यञ्] ०उत्तमता, ०श्रेष्ठता, ०उच्चता, ०आधिक्य, ०प्रबलता, ०उत्कर्ष को प्राप्त हुआ।

औत्तमिः (पुं०) [उत्तम+इञ्] उत्तमता युक्त।

औत्तर (वि०) १. उत्तरदिशा सम्बन्धी। २. उत्तर/समाधान सम्बन्धी।

औत्तरेयः (पुं०) [उत्तरा+ढक्] उत्तरा का पुत्र, अभिमन्यु।

औत्तानपादः (पुं०) ध्रुव, उत्तरदिशा का तारा।

औत्पत्तिक (वि०) एक ही समय में उत्पन्न सहजता से प्राप्त।

औत्पत्तिकी (स्त्री०) १. सहज स्वभाव से उत्पन्न प्रज्ञा, सहजबुद्धि, स्वाभाविकमति। २. पूर्व संस्कारों से उत्पन्न।

औत्पत्तिकी बुद्धिः (स्त्री०) सहज स्वभाव से उत्पन्न प्रज्ञा। 'उत्पत्तिरेव प्रयोजनं यस्याः सा औत्पत्तिकी बुद्धिः' (जैन०ल० ३०३)

औत्पात (वि०) [उत्पात+अण्] अपशकुन विश्लेषक, उपद्रव प्रस्तुतकर्ता।

औत्पातिक (वि०) [उत्पात+ठक्] अशुभकारी, अमंगलसूचक, अनिष्टकारी।

औत्संगिक (वि०) [उत्संग+ठक्] कूल्हे पर रखने वाला।

औत्सर्गिक लिंगः (पुं०) यथाजात परिवेश, त्यागपूर्वक, ग्रहण किया गया स्वाभाविक वेश। 'उत्कर्षेण सर्जनं त्यागः सकल-परिग्रहस्योत्सर्गः, उत्सर्गे त्यागे सकलग्रन्थपरित्यागे भवं लिंगमौत्सर्गिकम्' (भ० आ० टी० ७७)

औत्सुक्य (वि०) [उत्सुक+ष्यञ्] १. उत्सुकता, लालसा, इच्छा, उत्साह। २. चिन्ता, व्याकुलता।

औदक (वि०) [उदक+अण्] वारि सम्बंधी, जल से सम्बन्धित।

औदञ्चन (वि०) [उदञ्चन+अण्] घट में स्थापित।

औदनिक (वि०) [ओदन+ठञ्] पाचक, पकाने वाला, रसोईया।

औदयिक (वि०) १. उदयगत भाव, २. पदार्थों का अवबोध।

औदयिक-अज्ञानं (नपुं०) पदार्थों का अवबोध। 'ज्ञानावरणकर्मण उदयात् पदार्थानबोधो भवति तदज्ञानमौदयिकम्' (स० सि० २/६) 'ज्ञानावरणोदयादज्ञानम्' (त० वा० २/६)

औदयिक-असंयतः (पुं०) चरित्रघाती कारण। 'चारित्रमोहोदया-दनिवृत्तिपरिणामोऽसंयतः' (त० वा०२/६)

औदयिक-असिद्धः (पुं०) असिद्धत्व अवस्था का भाव। 'कर्मोदय सामान्यापेक्षोऽसिद्ध-औदयिकः' (स० सि० २/६)

औदयिक-गुणं (नपुं०) उदय से उत्पन्न गुण। 'कर्मणामु-दयादुत्पन्नो गुणः' (धव० १/१६१)

औदयिकभावः (पुं०) कर्मोदय से उत्पन्न भाव। 'कम्मोदय-जणिदो भावो' (धव० ५/१८५)

औदयिकी (वि०) कर्मोदय से अनुरंजित प्रवृत्ति। 'कषायोदय-रञ्जिता योग-प्रवृत्तिरिति कृत्वा औदयिकी' (स० सि० २/६)

औदयिकी-वेदना (स्त्री०) कर्मोदय से उत्पन्न वेदना।

औदरिक (वि०) उदर सम्बन्धी, अत्यधिक भोजन करने वाला।

औदर्य (वि०) [उदरे भवः यत्] १. गर्भस्थ, गर्भ में प्रविष्ट। २. उदारता।

औदश्वित (वि०) छांछ, मट्ठा, तक्र।

औदास्य (वि०) उदासीनता, उन्मनस्कता। 'उदासस्य भाव औदास्यम् तत् उन्मनस्कता।'

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

औदारिकः (पुं०) औदारिकशरीर विशेष, जीव प्रदेश के परिस्पन्दन का कारणभूत प्रयत्न। 'उदारं प्रधानं, उदारमेवौदारिकम्'

औदारिककायः (पुं०) औदारिक शरीर। उदारैः शेषपुद्गलापेक्षया स्थूलैः पुद्गलैर्निर्वृत्तमौदारिकम् तच्च तच्छरीरं'।

औदारिक-काय-योगः (पुं०) औदारिक शरीर के आश्रय रूप शक्ति। (धव० १/२९१)

औदारिकनामः (पुं०) औदारिक शरीर की उत्पत्ति।

औदारिकमिश्रः (पुं०) कार्मण शरीर के साथ मिश्रित।

औदारिक-शरीरः (पुं०) स्थूल रूप शरीर। उदारं स्थूलम्, उदारे भवमौदारिकम्, उदारं प्रयोजनमस्येति वा औदारिकम्। (स० सि० २/३६) उदारात्-स्थूल-वाचिनो भवे प्रयोजने वा ठञ्। (त० वा० २/३६)

औदारिक-संघातः (पुं०) औदारिक शरीर की पुष्टता।

औदार्य [उदार+ष्यञ्] १. उदारता, महानता, उच्चता, श्रेष्ठता, नदीनभाव। (वीरो० २/३७) २. यथोचित् व्यवहार-कारुण्य-मौदार्यमियद् हृदा चानुकूल्य सम्वादविधिश्च वाचा। (समु० ८/२९) औदार्य रूपमारोग्यं दृढत्वं पटुवाक्यता। (दयो० ७०)

औदासीन (वि०) उदासीनता, उन्मनस्कता।

औदासीन्य (वि०) उन्मनस्कता, उदासीनता। १. उपेक्षा, निःस्पृहता, एकान्तता, एकाकी, उदासीनता युक्त। (जयो० २४/४२)

औदासीन-वचः (पुं०) उदासीनता युक्त वचन। 'औदासीन-वचोऽवचाय' (जयो० २४/१४२)

औदुंबर (वि०) [उदुम्बर+अञ्] गूलर वृक्ष से निर्मित।

औद्गात्रं (नपुं०) उदगाता पद।

औद्दालकं (नपुं०) [उद्दाल+अण्] कडुवा/तिक्तपदार्थ।

औद्देशिक (वि०) [उद्देश+ठञ्] उद्देश से किया गया, निमित्त से बनाया गया आहार। २. प्रकट करने वाला, संकेतक, निर्देशक। 'देवतार्थं पाखण्डार्थं कृपणार्थं चोद्दिश्य यत्कृतमन्नं तन्निमित्तं निष्पन्नं भोजन तदौद्देशिकम्। (मूला०वृ० ६/६) 'उद्देशिकं श्रमणानुद्दिश्य कृतं भक्त्यादिकम्' (भ०आ०४२१)

औद्धत्यं (नपुं०) [उद्धत+ष्यञ्] उद्दण्ड भाव, हठवादी। मद युक्त अबौद्धत्य युक् चापि कुतो जघन्यः (जयो० ११/२७)

औद्धारिक (वि०) [उद्धार+ठञ्] विभक्त करने योग्य, उद्धार करने योग्य।

औद्भिदं (नपुं०) [उद्भिद्+अण्] निर्झर जल, धारितजल।

औद्वाहिक (वि०) [उद्वाह्+ठञ्] वैवाहिक सम्बंध रखने वाला।

औधस्यं (नपुं०) [ऊधस्+ष्यञ्] दुग्ध, क्षीर।

औनोदर्य (नपुं०) अवमौदर्य, ऊनोदर अल्पाहार।

औन्नत्यं (नपुं०) [उन्नत+ष्यञ्] उन्नत, ऊँचा उठा हुआ।

औपकर्णिक (वि०) [उपकर्ण+ठञ्] कर्ण की सन्निकटता वाला।

औपकार्य (नपुं०) [उपकार्य+अण्] १. उपकारक कार्य। २. अस्थाई वास, डेरा, तम्बू।

औपक्रमिकी (स्त्री०) [उपक्रम+किणि] उपक्रम से होने वाली वेदना। 'उपक्रमणमुपक्रमः, स्वयमेव समीपे भवनमुदीरणाकरणेन वा समीपानयनम्। तेन निर्वृत्ता औपक्रमिणी। (जैन०ल० ३०९)

औपग्रस्तिकः (पुं०) [उपग्रस्त+ठञ्] ग्रहण लगना, सूर्य या चन्द्र पर आवरण पड़ना।

औपचारिक (वि०) [उपचार+ठञ्] गौण, लाक्षणिक, प्रमुख से अतिरिक्त।

औपचारिक विनयः (नपुं०) उपचार रूप विनय, श्रद्धानपूर्वक कृत विनय। 'उपचरणं उपचारः,-श्रद्धानपूर्वकः क्रिया विशेषलक्षणो व्यवहारः, स प्रयोजनमस्येत्यौपचारिकः'।

औपजानुक (वि०) [उपजानु+ठक्] घुटने के समीप होने वाला।

औपदेशिक (वि०) [उपदेश+ठक्] उपदेश/व्याख्यान से जीविकोपार्जन करने वाला। शिक्षण से धन कमाने वाला।

औपधर्म्य (नपुं०) [उपधर्म+ष्यञ्] मिथ्यामत, मिथ्यासिद्धान्त।

औपधिक (वि०) [उपाधि+ठञ्] १. उपाधि को प्राप्त। २. धूर्त, छल-कपटी।

औपधेयं (नपुं०) [उपाधि+ठञ्] रथचक्र।

औपनायनिक (वि०) [उपनयन+ठक्] उपनयन संस्कार सम्बंधी। यज्ञोपवीत संस्कार से युक्त।

औपनिधिक (वि०) [उपनिधि+ठक्] न्यास रखने वाला, धरोहर से सम्बन्ध रखने वाला। न्यासी।

औपनिषद् (वि०) [उपनिषद्+अण्] उपनिषद् में कथित/निरूपित आध्यात्मिक शिक्षा, ज्ञान।

औपनीविक (वि०) [उपनीवि+ठक्] नाड़े की गांठ रखता हुआ, गांठ करने वाला।

औपपत्तिक (वि०) [उपपत्ति+ठक्] १. सन्निकट, समीप। २. उचित।

औपमिक (वि०) [उपमा+ठक्] उपमा से निर्मित, उपमान जन्य। 'उपमया निर्वृत्तमौपमिकम्' उपमामन्तरेण यत्काल-प्रमाणमनतिशयिना गृहीतुं न शक्यते तदौपमिक- मिति।' (जैन०ल० ३१०)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

औपम्यं (नपुं०) [उपमा+ष्यञ्+उपलब्धिः] उपमा के बल से ज्ञात। पूर्व में कभी नहीं जाना गया कोई पदार्थ उपमा के बल से जो जाना जाता है, उसे औपम्योपलब्धि कहा जाता है। जैसे 'गवय गौ के समान होता है, इस उपमान के आश्रय से पूर्व में अज्ञात गवय का 'यह गवय है' इस प्रकार जो अक्षरज्ञान हुआ करता है, इसी का नाम औपम्योपलब्धि है। (जैन०ल० ३१०)

औपयिक (वि०) [उपाय+ठक्] १. प्रयत्नपूर्वक, प्राप्त। २. योग्य, उचित।

औपरिष्ट (वि०) [उपरिष्ट+अण्] ऊपर से होने वाला, ऊपरी।

औपरोधिक (वि०) [उपरोध+ठक्] अनुग्रह स्वरूप, कृपात्मक।

औपल (वि०) [उपल+अण्] पाषाण तुल्य, प्रस्तरमय।

औपवस्तं (नपुं०) [उपवस्त+अण्] उपवास, अनशन।

औपवस्त्रं (नपुं०) [उपवस्त्र+अण्] उपवास, अनशन।

औपवास्यं (नपुं०) [उपवास+ष्यञ्] उपवास रखना, उपवास करना।

औपवाह्य (वि०) [उपवाह्य+अण्] वाहन से सम्बन्धित।

औपवाह्यः (पुं०) राज्य-वाहन, राजा की सवारी।

औपवेशिक (वि०) [उपवेश+ठञ्] आजीविका में तत्पर रहने वाला।

औपसर्गिक (वि०) [उपसर्ग+ठञ्] उपद्रव/आपदा/संकट का सहने वाला।

औपस्थिक (वि०) [उपस्थ+ठक्] व्यभिचार जन्य जीविका।

औपशमिकः (पुं०) [उपशम+ठक्] उपशम से उत्पन्न भाव। 'उपशमः प्रयोजनमस्येत्यौपशमिकः' (स० सि० २/१) 'कम्माणमुवसमेण उप्पण्णो भावो ओवसमिओ' (धव० ५/२०५)

औपशमिकभावः (पुं०) उपशम से उत्पन्न भाव।

औपशमिक सम्यक्त्व (नपुं०) प्रकृतियों के उपशम से उत्पन्न होने वाला सम्यक्त्व। 'सत्तण्हं उवसमदो उवसमसम्मो' (गो०जी०२६) 'तत्त्वार्थ- श्रद्धानमौपशमिकम्' (भ०आ०१/३१)

औपाधिक (वि०) [उपाधि+ठञ्] उपाधि जनित।

औपाध्यायक (वि०) [उपाध्याय+वुञ्] उपाध्याय/अध्यापक से प्राप्त।

औपसन (वि०) [उपासन+अण्] उपासन जन्य।

औरभ्र (वि०) मेष से सम्बन्धित।

औरसः (पुं०) [उरसा निमित्ता अण्] उदर से उत्पन्न पुत्र, विवाहित स्त्री से उत्पन्न पुत्र, निज सुत। (दयो० ५४)

औरसी (स्त्री०) निज पुत्री, आत्मसुता।

और्ण (वि०) [ऊर्णा+अञ्] ऊन से निर्मित। (जयो० २/८९)

और्णवस्त्रं (नपुं०) ऊनी वस्त्र। 'चौर्णवस्त्रमथवा सुकर्मणे' (जयो० २/८९)

और्ध्वदेहं (नपुं०) प्रेतकर्म, अन्त्येष्टि संस्कार।

और्व (वि०) [ऊरु+अण्] पृथ्वी सम्बंधित।

औलूकं (नपुं०) [उलूकानां समूहः ऊञ्] उल्लुओं का झुण्ड।

औलुक्यः (पुं०) कणाद मुनि।

औशीरं (नपुं०) आसन, तकिया।

औषणं (नपुं०) [उषण+अण्] १. तेजस्विता, तीक्ष्णता। २. काली मिर्च।

औषध (नपुं०) दवा, जड़ी-बूटी, खनिज। (जयो० २/४) जयोदय में औषध को भेषज भी कहा है। (जयो० २/१७) 'सर्वमेव सकलस्य नौषधम्'

औषधिः (स्त्री०) दवा, वनस्पति, जड़ी-बूटी। (वीरो० ४/४)

औषधीय (वि०) रोग नाशक औषध।

औषरं (नपुं०) सेंधा नमक।

औषस (वि०) प्रभात सम्बंधी।

औष्ट्र (वि०) उष्ट्र सम्बंधी।

औष्ट्रकं (वि०) ऊँटों का समु दाय।

औष्ठः (पुं०) रदनच्छद, रदनवास। (जयो० ५/४८)

औष्ठ्य (वि०) ओंठ से सम्बन्धित।

क

कः (पुं०) कवर्ग का प्रथम व्यञ्जन, इसका उच्चारण स्थान कंठ है। यह स्पर्शवर्ण भी कहलाता है।

कः (पुं०) इसके कई अर्थ है-ब्रह्मा, विष्णु, कामदेव, वायु, अग्नि, यम, सूर्य, राजा, गांठ, मोर, पक्षी, मेघ, शब्द, हर्ष, ध्वनि आदि क-कल्याण-(जयो० वृ० १९/३६)

क-मुख (जयो० ६/४२)

आत्मा-कस्यात्मन आशी (जयो० ३/३०, जयो० १४/६६)

पृथ्वी-(सुद ०२/२१)

सूर्य-(जयो० १५/३८,३९) को ब्रह्मानिलसूर्याग्नियममात्मद-योति बर्हिषु इति विवश्लोचनः। (जयो० १४/६६, १७/३)

जल-जलं कमन्ते पार्श्वे तस्य तस्य कान्तस्य' कमिति जलं तदेव सुख चेति'

कान्तकर-कमिति च कान्तकर (जयो० १४/७५)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कं (नपुं०) प्रसन्नता, हर्ष, आनन्द, (जयो० १८/२) खुशी, आमोद। १. पयस, जल (जयो० १७/९४)
जल कं जलं लातील्येव रूपा कलान्वया जलजीवनाभूत जलाशय' (जयो० वृ० १७/१०४) पंङ्क्प्लुता के कल-यकत्युदाहृतम्' (वीरो० ४/१७)
शीर्ष कं शीर्षमिति (जयो० ५/१०१)
कोमल 'दुग्धाब्धिवदुज्ज्वले तथा कं' (सुद० ९८)

कंका (स्त्री०) ज्ञान। 'नाप्त्वा प्रजा पातुमुपैति कंका। (वीरो० २०/७)

कं-कणं (नपुं०) आत्म निर्णय-कं आत्मानं कस्यात्मनः णः निर्णयो (जयो० २८/२८)

कंकरः (पुं०) शर्करिल, कंकड। (जयो० वृ० २७/४९)

कं दर्प (नपुं०) अभिमान, कं दर्पं अभिमानं (जयो० ८/१०)

कंसः (पुं०) राजा कंस, मथुरा के राजा, राजा उग्रसेन का पुत्र। (वीरो० १७/३४)

कंसः (पुं०) १. पात्र विशेष, जलपात्र, प्याला, कटोरा। २. कांसा, धातु विशेष।

कंस (वि०) भयकारण (जयो० वृ० १/३३)

कंसकं (नपुं०) [कंस+कन्] १. कांसा, २. कसीस पुत्र।

कक् (अक०) कामना करना, अभिमान करना, अस्थिर होना।

ककारः (पुं०) क, कवर्ग का प्रथम व्यञ्जन (जयो० वृ० ६/२४, वीरो० १/२७)

ककुंजलः (पुं०) चातक, पपीहा पक्षी। कं जलं कूजयति याचते क-कूज्+जलच्।

ककुद (स्त्री०) १. शिखर, कूट, चोटी। २. मुख्य, प्रधान, प्रमुख, विशिष्ट। ३. सांड के कंधे का उभरा हुआ हिस्सा, कूबड़ा।

ककुदं (नपुं०) कूबड़, उठा हुआ भाग।

ककुदमत् (वि०) [ककुद+मतुप्] भैंसा, कूबड़धारी भैंसा।

ककुद्वत (पुं०) [ककुद+मतुप व त्वम्] भैंसा।

ककुंदरं (नपुं०) नितम्ब गर्त। कस्य शरीरस्य कुम् अवयवं दृणाति-कक्कु+ह+खच्, मुम।

ककुल्प (वि०) भोगोपभोग से खुशी (वीरो० ११/२)

ककुभ् (स्त्री०) [क+स्कुभ्+क्विप्] १. दिशा, भूपरिधि का चतुर्थ भाग। (जयो० १२/६८) २. प्रभा, आभा, कान्ति।

ककुभः (पुं०) वीणा की मुड़ी हुई लकड़ी। २. अर्जुनवृक्ष। कस्य वायोः कुःस्थानं भाति अस्मात् कक्कु+भा+क या कं वातं स्कुभ्नाति विस्तारयति-क+स्कुभ्+क)

ककुबः (पुं०) पूर्वदिशा। (वीरो० ६/३९)

कक्कोलः (पुं०) [कक्क्+उलच्] बकुल वृक्ष।

कक्कोलः (पुं०) [कक्+क्विप] फलदार वृक्ष।

क-क्लृप्तिः (स्त्री०) जलराशि, कराभिषेकाय कक्लृप्तिमपि (वीरो० ५/१०)

कक्खट (वि०) [कक्ख्+अटन्], ०कठोर, ०कठिन, ०ठोस, ०दृढ़, शक्तिशाली।

कक्खटी (स्त्री०) [कक्खट+ङीप्] खड़िया।

कक्षः (पुं०) १. कमरा, अन्तःपुर का एक भाग, (सुद० १०३) २. बेल, लता, घास। ३. वन, सूखी लकड़ी का स्थान। (जयो० २१/२७) ४. पार्श्वभाग।

कक्षबन्धः (पुं०) वनप्रदेश, अरण्य भाग। (जयो० २६/२७)

कक्षा (स्त्री०) कांख। (दयो० २५)

कक्षा (स्त्री०) १. कटिबन्ध, करधनी, कंदौरा। (जयो० १७/८५) २. कमर, कमरबन्ध। (जयो० वृ० १७/८९) ३. बाड़ा, भीतरी कमरा, सामान्य कक्ष।

कक्षाकला (स्त्री०) करधनी, कंदौरा। (जयो० १७/८९)

कक्षाधर (वि०) लंगोटधारी।

कक्षाभागः (पुं०) कमरे का हिस्सा, आंगन का हिस्सा।

कक्षाशायः (पुं०) कुत्ता, श्वान।

कक्ष्या (स्त्री०) [कक्ष+यत्+टाप्] १. घोड़े की तंग, २. करधनी, कंदौरा।

कख्या (स्त्री०) [कख+यत्+टाप्] घेरा, परिधि, बाड़ा।

कङ्कः (पुं०) १. बक, बगुला। (जयो० वृ० १३/६३) २. यम, ३. क्षत्रिय, ४. वेषधारी विप्र। ५. नाम विशेष, युधिष्ठिर का नाम। ६. हाथ के सम्पुट, हस्त सम्पुट। (सम्य० ७३)

कङ्कटः (पुं०) [कङ्क्+अटन्] कवच, रक्षायुध, २. सैनिक।

कङ्कणं (नपुं०) कंगन, कड़ा, वलय। विवाह सूत्र-कंगना कलाई पर बांधा गया सूत्र, आभूषण विशेष। (जयो० १२/१०६, ५/६१)

कङ्कणचालन (वि०) १. स्त्री जाति का स्वभाव, कंगन को चलायमान करने वाली स्त्री। (जयो० ६/३२) २. स्थानान्तर गमन, इधर उधर जाना। (जयो० ६/३२)

कङ्कणशब्दः (पुं०) वलय स्वर। (जयो० २४/२५)

कङ्कतः (पुं०) कंघी, कंघा। बाल संवारने का साधन।

कङ्कपत्रं (नपुं०) बगुला के पंख।

कङ्कपत्रिन् (वि०) कंकपत्र वाला।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कङ्करं (नपुं०) मट्ठा, छांछ। [कं सुखं किरति क्षिपति]

कङ्कालः (पुं०) अस्थिपञ्जर, शरीर का ढांचा, हड्डियों का समूह।

कङ्कालयः (पुं०) [कंकाल+य+क] देह, शरीर।

कङ्कुः (स्त्री०) कंकू, सिंदूर, सेंदुर, विवाहित स्त्रियों की माँग में भरने का सेंदुर।

कङ्केलः (पुं०) [कंक+एल्ल] अशोक वृक्ष।

कङ्केलः (पुं०) घोरड्, नहीं सीझने वाला मूंग। (वीरो० १७/३३)

कङ्केली (स्त्री०) अशोक वृक्ष।

कङ्कोली (स्त्री०) नाम विशेष।

कङ्कृत-कङ्कण (नपुं०) अलंकृत कंगन। (वीरो० ६/२९)

कङ्गुलः [कंङ्गु+ला+क] हाथ, कर।

कचच्छलं (नपुं०) केशों के कारण, कज्जल समूह। कचानां केशानां छलाद् बभूव। (जयो० वृ० १/६३)

कचपाली (स्त्री०) केश समूह, केशराशि। कचानां केशानां पाली परम्परा। (जयो० १४/१०)

कचसंचयः (पुं०) केशबन्धन, केशपाश। कचानां सञ्चयः केशपाशः।

कचसन्निचयः (पुं०) केशराशि, केशसमूह। कचानां केशानां सन्निचयः समूहो। (जयो० २६/७)

कचः (पुं०) [कच+अच्] १. बाल, केश। २. बंधन, आवरण, पट्टी।

कचङ्गनं (नपुं०) कर रहित बाजार, मण्डी।

कचङ्गलः (पुं०) समु द्र, सागर, उदधि।

कचवृन्द (वि०) केशराशि (वीरो० २/२०)

कचाकचिः (अव्य०) एक दूसरे को पकड़ना, आपस में बाल पकड़ना।

कचाटुरः (पुं०) जल कुक्कुट।

कचोपचारः (पुं०) केशों के उपचार। (सुद० २/७)

कच्चर (वि०) बुरा, अभद्रकारी, दुष्टतापूर्ण। मलिन, कलंकित।

कच्चित् (वि०) [कं+चित्] प्रश्नवाचकता, प्रायः, ऐसा।

कच्चिदपि (अव्य०) कोई भी, कितना भी। (वीरो० १/१६)

कच्छः (पुं०) १. तट, किनारा, क्षेत्रवर्ती, समीपवर्ती प्रदेश। (जयो० ५) २. कर्मदभाग, कीचड़ प्रदेश, पंकभूमि।

कच्छपः (पुं०) कछुआ, कूर्म।

कच्छपपृष्ठवत् (पुं०) कछुए की पीठ की तरह। (जयो० वृ० १/५)

कच्छप-रिंगत-दोषः (पुं०) आचार्य वन्दना का दोष, पीछे चलते हुए वन्दना करना।

कच्छपी (स्त्री०) कछवी।

कच्छा (स्त्री०) झींगुर।

कच्छुः (स्त्री०) [कष्+ऊ, छ आदेशः] कंडू, खाज, खुजली।

कच्छुर (वि०) [कच्छू+र] कंडूयुक्त, खुजली युक्त। २. लालची, लम्पट।

कज्जलं (नपुं०) काजल, कालिमा, अगुरु, अंजन। (जयो० वृ० १४/९२) (जयो० ३/५४) [कुत्सितं जलमस्मात् प्रभवति को कदादेशः] 'स्नेहवर्तिकथा निःसृतेन कज्जलेन शरावादयो मलिना भवन्ति' (जयो० वृ० ६/२३६) प्रसादोत्पन्न- नयनजलविन्दवस्तन्निभानाम्-मुदश्रवोऽपि सकज्जला भवन्ति। (जयो० वृ० ६/१३०)

कज्जलधूमः (पुं०) कज्जल की बहुलता। (जयो० १/६३)

कज्जलरागः (पुं०) कालिमा वाला राग।

कज्जलरोचकः (पुं०) दीवट, दीपस्टैंड।

कज्जलस्थित (वि०) कज्जल की बहुलता। (जयो० १/६३)

कज्जलितः (वि०) कालिमा युक्त।

कञ्च् (सक०) १. बांधना, जकड़ना, २. स्फुरित करना।

कञ्चनं (नपुं०) स्वर्ण, सोना। (सुद० ७१)

कञ्चन-कलशः (पुं०) स्वर्ण कलश। (सुद० ७१)

कञ्चारः (पुं०) [कम्+चर्+णिच्+अच्] १. सूर्य, रवि, २. मदार लता।

कञ्चिद् (अव्य०) कोई भी। (जयो० १/२)

कञ्चुकः (पुं०) [कञ्च+उनच्] १. कवच निर्माण-जयो० ६/१०६ (जयो० १२/) २. सर्प केंचुली, ३. परिधान, वस्त्र। ४. अंगरखा, चोगा, चोली, अंगिया।

कञ्चुकमुञ्चनं (नपुं०) केंचुली छोड़ना। (जयो० २५/५३)

कञ्चुकहृदयः (पुं०) कुच वस्त्र हरण करने वाला। (जयो० १६/६३) कञ्चुकं कुचवस्त्रं हरतीति।

कञ्चुकालुः (पुं०) सर्प, सांप।

कञ्चकित (वि०) [कञ्चुक+इतच्] कवचधारी।

कञ्चुकिन् (वि०) [कञ्चुक+इनि] १. कवच, (वीरो० ५/६, जयो० १/१) २. द्वारपालनी, अंतपुर की सेविका, वृद्ध सेवक। सौविद (जयो० १३/३८)

कञ्चुकिवरः (पुं०) बुद्धिशाली सेवक। (जयो० ४/४१)

कञ्चुलिका (स्त्री०) अंगरखा, चोगा चोली।

कञ्चुकिराजः (पुं०) खोजा, सेवक, (जयो० ४/५५)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कञ्ज: (पुं०) [कम्+जन्+ड] १. केश, बाल।

कञ्जं (नपुं०) १. कमल, सरोज, २. पीयूष, अमृत, सुधा। (जयो० १३/५९, २/१४०)

कञ्जक: (पुं०) एक पक्षी विशेष। [कञ्ज केश इव कायति]

कञ्जगति (स्त्री०) कमलगति। (जयो० १३/५९)

कञ्जन: (पुं०) १. सूर्य, रवि। २. हस्ति, करि। ३. उदर, पेट।

कञ्जमुख (नपुं०) कमलमुख। (जयो० १७/११७)

कञ्जल: (पुं०) एक पक्षी विशेष। [कञ्ज्+कलच्]

कञ्जोच्चय: (पुं०) कमल समूह का विकास (जयो० १८/४६)

कट् (सक०) जाना, आवृत करना, ढकना, प्रकट होना, चमकना।

कट: (पुं०) अद्भुत, आश्चर्यकारी। 'कटाद्भुता: कटाशब्दोऽव्ययोऽद्भुत वाचक:' (जयो० वृ० २४/१८) 'अद्भुतोऽपि कटाव्ययम्' इति वि' २. कलिंजर वृक्ष (जयो० वृ० २१/३०) कट-श्रोणौ शयेऽत्यल्पे किलिञ्जगजगण्डयो' इति विश्वलोचन। (जयो० वृ० २१/३०) ३. कटाक्ष, तिरछी चितवन। (जयो० सुद० १/८) ४. चढ़ाई, ५. कूल्हा, कटिभाग। ६. हस्ति गण्डस्थल। ७. बाण, मसालभूमि। ८. प्रथा, पद्धति।

कटक: (पुं०) १. सेना, जनसमु दाय (जयो० ७/८५, (जयो० १२/१२४) 'वटकं घटकल्पसुस्तनीत: कटकं' (जयो० १२/१२४) ३. टटिया, जाली, जो बांस की बनाई जाती। 'बंसकंबीहि अण्णोण्णजणणाए जे किज्जंति घरावणादिवाराणं ढंकणट्ठं ते कडया णाम' (धव० १४/४०) ४. मेखला, करधनी, रस्सी, ५. वृत्त, घेरा, आवरण।

कटकरणं (नपुं०) चटाई बनाना। 'कटकरणं कटनिर्वर्तकं चित्राकार मयोमयं पाइल्लगादि' (जैन०ल०वृ०३१३)

कटकिन् (पुं०) [कटक+इनि] पर्वत, गिरि।

कटङ्कट: (पुं०) [कटकट्+लच्] १. अग्नि, आग, २. स्वर्ण, ३. गणेश।

कटजलं (नपुं०) [कट्+ल्युट्] छप्पर, छत।

कटाक्ष: (पुं०) १. तिरछी दृष्टि, तिर्यग् नेत्र, नयनोपान्त, अपाङ्ग। (जयो० वृ० ३/१०३) २. तीक्ष्ण, कठोर, तेज (सुद० १/४०) 'स्मरस्येव यत्कराक्ष: शर:' (सुद० १/४०)

कटाक्ष बाण: (पुं०) तिर्यग् बाण, तिरछे तीर। (सुद० वृ०१२३)

कटाक्ष-शर: (पुं०) तिर्यग् बाण।

कटाह: (पुं०) १. कढ़ाई, २. टीला, ३. गर्त।

कटि: (स्त्री०) [कर+इन] कमर।

कटित्रं (नपुं०) अधोवस्त्र, धोती। 'रसालताऽभूत्कुचयो: कटित्रे' (वीरो० ३/२८)

कटि-प्रदेश: (पुं०) मध्यक, कमर। (जयो० १३/६)

कटिबद्धता (वि०) गमनायोद्यत, तत्परता, उद्यमशीलता। 'सर्व एव कटिबद्धतामित' (जयो० २१/३)

कटिबद्धभाव: (पुं०) तत्परता युक्त भाव (वीरो० ९/१८)

कटि-बन्धनग्रन्थि: (स्त्री०) नाड़ा, नीवि। (जयो० १२/११२)

कटिभाग: (पुं०) अवलग्नक, कमर भाग। (जयो० १०/५९)

कटिमण्डल: (नपुं०) कटि समूह। (जयो० ६/९)

कटि-मालिका (स्त्री०) करधनी, कंदोरा।

कटिमेखला (स्त्री०) करधनी, काञ्ची, कंदोरा।

कटिरोहक: (पुं०) महावत।

कटि-वस्त्रं (नपुं०) नाड़ा, नीवि।

कटिशीर्षक: (पुं०) कूल्हा।

कटिश्रृंखला (स्त्री०) करधनी, किंकणी युक्त कंदोरा।

कटिसूत्रं (नपुं०) करधनी, मेखला, काञ्ची, कमरबन्ध।

कटी (स्त्री०) कमर। (सम्० ७/४) कटी स्यात्कटिभागयो: इति वि० (जयो० २१/३०)

कटीर: (पुं०) [कट्+ईरन] कूल्हों का गर्त।

कटीरकं (नपुं०) [कटीर+कन] कूल्हा, कमर।

कटीसूत्रं (नपुं०) ०करधनी, ०कन्दौरा, ०मेखला, ०काञ्ची, ०कमरबंध। (दयो० २४)

कटु (वि०) [कट्+उ] ०तिक्त, ०कड़ुवा, ०चरपरा, ०कषैला। 'कटु मत्वेत्युदबगतरा' (सुद० वृ०८९)

कटु: (पुं०) तीखापन, तीक्ष्णता।

कटुं (नपुं०) दुर्वचन, निन्दा।

कटुक (वि०) [कटु+कन] तीक्ष्ण, कड़ुवा। (जयो० ६/२८, ९/८४) २. प्रचंड, प्रचुर, तीव्र, चरम। ३. अप्रियकर, अरुचिकर।

कटुक: (पुं०) तीक्ष्णपन, प्रचण्डता। (भक्ति०४६)

कटुकता (वि०) कड़वाहट, अक्खड़पन, अशिष्ट व्यवहार।

कटुकीट: (पुं०) मच्छर।

कटुरं (नपुं०) [कट+उरन्] छांछ, मट्ठा, तक्र।

कटोरं (नपुं०) मिट्टी का पात्र, सकोरा।

कटुक्ति: (स्त्री०) कटुवचन, कर्कश वचन, मृदुतारहित (वीरो० २२/३२)

कटोल: (पुं०) [कट्+ओलच्] १. चरपरा, कटुक। २. नीच पुरुष।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कठ् (अक०) कठिनता से रहना।

कठः [कठ्+अच्] कठमत।

कठर (वि०) [कठ्+अच्] कठमत।

कठर (वि०) [कठ्+अरन्] कड़ा, सख्त।

कठिका (स्त्री०) खड़िया, सफेद मिट्टी।

कठिन (वि०) [कठ्+इनच्] सुदृढ़, अनमनात्मक कठिन। कठिन, कठोर, दृढ़। (जयो० १७/४८) 'पद्मानि यस्मात्कठिना समस्या' (वीरो० २/३१) 'कुण्ठात्मकोरः कठिनेन' (जयो० १७/४८)

कठिन-कठोर (वि०) अतिशय कठोर, अधिक दृढ़, अत्यधिक सख्त। (जयो० ६/६१)

कठिनता (वि०) कठनाई युक्त, मृदुढ़ता युक्त। (सुद० १२१)

कठिना (वि०) १. कठोर, दृढ़। (सुद० २/४४) 'स्वभावतो य कठिना सहेरं' (सुद० २/४४) २. मिष्ठान्न।

कठिनी (स्त्री०) खटिका, खड़िया। 'क्षणोति कठिनीञ्च कीर्तिमरे' (जयो० ६/१०५)

कठोर (वि०) १. दृढ़, ताकतवर, शक्तिशाली, २. क्रूर, निर्दय। (सम्० १/२३) ३. तीक्ष्ण, शल्यमय।

कड (वि०) [कड्+अच्] १. गूंगा, मूक। २. मूर्ख, अनभिज्ञ। ३. शब्द विशेष।

कड-कडाशब्दं (नपुं०) सन्निनाद, कड-कड शब्द, मेघों की गड गडाहट। (जयो० वृ० ८/१२)

कडङ्गरः (पुं०) तृण, तिनका।

कडंगरीय (वि०) तृण उपयोग करने वाला।

कडत्रं (नपुं०) पात्र, भाजन, वर्तन विशेष। (गडयते सिच्यते जलादिकं अत्र-गड+अत्रन्-गकारस्य ककार)

कडन्दिका (स्त्री०) शास्त्र, ग्रन्थ, पोथी।

कडम्बः (पुं०) डंठल।

कडार (वि०) अहंशील, अभिमानी, ०ढीठ, घमंडी।

कडितुलः (पुं०) असि, खड्ग, तलवार। [कट्यां तोलनं ग्रहणं यस्य]

कण् (अक०) शब्द करना, चीत्कार करना, कराहना।

कणः (पुं०) [कण+अच्] १. अंश, भाग हिस्सा। (जयो० १८/६२) हक्कोणकर्णेर्गम्यः कीटादीव सचेतनं जिनगिरा रेणोः कणादील्यतः। (मुनि० २२) २. दाना, अनाज का अंश, टुकड़ा।

कणक (वि०) धान्य कणार्थ। (जयो० १८/९५)

कण-जीरकं (नपुं०) सफेद जीरा।

कणत्कृत (वि०) परिकूजन, कुहु कुहु शब्द, कण-कण शब्द करने वाला। 'मञ्जीर-कोदार-कणत्कृत' (जयो० १६/४६)

कण-भक्षकः (पुं०) एक पक्षी विशेष।

कणपः (पुं०) अयस्क छड़, भाला।

कणलाभः (पुं०) जलावर्त, भंवर।

कणशः (अव्य०) अल्प भाग में, लघु हिस्से में, दाने-दाने पर, छोटा-छोटा।

कणि (स्त्री०) कणिका (जयो० २६/४८)

कणिकः (पुं०) [कण+कन्] धान्य कण, धान्य का छोटा अंश।

कणिका (स्त्री०) लेशमात्र, किंचित् भी, छोटा सा, अल्प। 'कणिकाऽपि न शर्मणः' (जयो० २/१३३) 'कणिकाऽपि लेशमात्रमपि न' (जयो० वृ० २/१३३)

कणिशः (पुं०) धान्य बाल, धान्य के ऊपर अंश, दानों वाला हिस्सा।

कणीक (वि०) [कण्+ईकन्] अल्प, लघु, छोटा।

कणीचिः (स्त्री०) पुष्पलता (जयो० ११/९०)

कणे (अव्य०) [कण+ए] भावनात्मक अव्यय, इच्छाशक्ति, प्रधान अव्यय।

कणोऽपि-कण-कण तक भी। (जयो० ५/४)

कणेरा (स्त्री०) १. हथिनी, २. वेश्या।

कणोपजल्प (वि०) कणों से व्याप्त। 'सत्पुण्यतल्पमपि वह्निकणोप जल्प' (सुद० ८६)

कण्टकः (पुं०) १. कांटा, शल्य, क्लेश, कष्ट, उत्पात। (मुनि० ३) 'कण्टकेन न विद्धेयं जातिः' (सुद० १०४) २. रोमांच, हर्ष। (जयो० १०/५५)

कण्टक-वण्टकः (पुं०) कांटे-बांटे-जयो० १३/११।

कण्टकित (वि०) [कण्टक+इतप्] शङ्कायुक्त (जयो० १/८९) रोमांचित (जयो० २२/५९) कांटेदार, शल्य युक्त, रोमांचित। (जयो० १४/११) वीरो० ४/६२)

कण्टकिताङ्गक (वि०) रोमाञ्चित अंग वाला, रोमराजि से प्रफुल्लित।

कण्टकिताङ्ग धारक (वि०) रोमाञ्च से परिपूर्ण शरीर वाले। गुणकृष्ट इवाधिकारकः सुदृशः कण्टकिताङ्गधारकः। (जयो० १०/५६)

कण्टकिन् (वि०) [कण्टक+इनि] कांटेदार, कंटीला।

कण्टकिलः (पुं०) [कण्टक+इलच्] कांटेदार बांस।

कण्ठ् (अक०) विलाप करना, शोक करना, आतुर होना, उत्कण्ठित होना।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कण्ठः (पुं०) गला, गर्दन। (सुद० १/३४)
कण्ठकंदलः (पुं०) सद् गलनाल (जयो० ५/५२)
कण्ठ-कम्बु (वि०) कण्ठ सुशोभित हुआ। (जयो० १२/१४)
कण्ठ-कूणिका (स्त्री०) बीणा।
कण्ठगत (वि०) गले में स्थित, गले में आने वाला।
कण्ठतः (अव्य०) [कण्ठ+तसिल्] गले से, कण्ठ से, स्पष्टता।
कण्ठतटः (पुं०) गले का भाग।
कण्ठतटं (नपुं०) गले तक, गले का पार्श्व।
कण्ठतटी (स्त्री०) गर्दन तक की।
कण्ठदघ्न (स्त्री०) गले तक पहुंचने वाला।
कण्ठनाल (पुं०) गलकन्दन, हार। (जयो० ११/४७)
कण्ठनीडकः (पुं०) गृद्ध, चील पक्षी।
कण्ठनीलकः (पुं०) मशाल, बड़ा दीपक।
कण्ठपथं (नपुं०) कण्ठमार्ग।
कण्ठपाशकः (पुं०) हस्ति पाश, हस्ति के कण्ठ की रज्जू।
कण्ठपार्श्वः (पुं०) गले का भाग, कण्ठभाग।
कण्ठभूषा (स्त्री०) कंठी, गले का छोटा हार।
कण्ठमणिः (स्त्री०) गल कंठी, मलि युक्त कंठी।
कण्ठलता (स्त्री०) १. पट्टा, गले का पट्टा। २. लगाम, अश्वारोधक पट्टा।
कण्ठवर्तिन् (वि०) कण्ठगत, गले से सम्बन्धित।
कण्ठशोषः (पुं०) गले का सूखना।
कण्ठसूत्रं (नपुं०) १. गले का धारा। २. आलिंगन।
कण्ठस्थ (वि०) १. याद होना, रट जाना। २. कण्ठ में होने वाला।
कण्ठाभरणं (नपुं०) गले का आभूषण, कण्ठाभूषण, हार। (जयो० वृ० ३/१०४)
कण्ठालः (पुं०) [कण्ठ्+आलच्] १. फावड़ा, कुदाली। २. ऊँट, ३. युद्ध।
कण्ठाला (स्त्री०) दही बिलोने का पात्र।
कण्ठिका (स्त्री०) [कण्ठ्+ठन्+टाप्] कंठी, माला, एक लड़ी का हार।
कण्ठी (स्त्री०) [कण्ठ+ङीष्] १. माला, एक लड़ी का हार। २. गलापट्ट।
कण्ठीकृत (वि०) कण्ठस्थान में धारण की जाने वाली (वीरो० १/२४)
कण्ठीरवः (पुं०) १. उन्मत्त हस्ति। २. कबूतर।
कण्ठीलः (पुं०) ऊँट।
कण्ठेकालः (पुं०) शिव, महादेव, शंकर।
कण्ठ्य (वि०) [कण्ठ+यत्] गले के लिए उचित, गले से सम्बन्धित।
कण्ठ्य-वर्णः (पुं०) कण्ठ स्थान वाले अक्षर-अ, आ, क, ख, ग्, घ्, ङ् और ह्।
कण्ठ्यस्वरः (पुं०) गले से सम्बन्धित स्वर।
कण्ड् (अक०) १. प्रसन्न होना, हर्षित होना, संतुष्ट होना, अहंकारी होना।
कण्ड् (सक०) निकालना, बाहर करना, साफ करना, रक्षा करना, बचाना।
कण्डकः (पुं०) समु दाय, उत्तरोत्तर अनन्त के भाग।
कण्डनं (नपुं०) [कण्ड्+ल्युट्] फटकना, साफ करना। 'तुषानां कण्डनं' कण्डनं-दूरीकरणं (जयो० वृ० २३/५४)
कण्डनी (स्त्री०) ओखली।
कण्डरा (स्त्री०) [कण्ड+अरन्] नस।
कण्डिका (स्त्री०) अनुच्छेद, छोटा गद्यांश।
कण्डू (पुं०) १. खाल, खुजली, खर्जन। (जयो० ६/६१)
कण्डू (स्त्री०) खुजलाना।
कण्डूतिः (स्त्री०) [कण्डू+यक्+क्तिन्] खर्जन, खाज, खुजली। 'करतल-कण्डूति मुद्धरति' (जयो० ६/६१)
कण्डूय (सक०) खुजलाना, मसलना। कण्डूयन्ते (समु० ९/२२) 'कण्डूयन्ते यतः स्मैते' शरीरं हिरणादयः। (समु० ९/२२)
कण्डूयनं (नपुं०) खर्जन, खुजली, खाज, दद्रू। 'दद्रो खर्जन। दद्रूकण्डयनं' (जयो० वृ० २/४)
कण्डूयनक (वि०) खर्जनोदपाक।
कण्डूया (स्त्री०) [कण्डू+यक्+अ+टाप्] ०खुजलाना, ०खर्जन खाज।
कण्डूल (वि०) दद्रू वाला, खर्जनशील।
कण्डोलः (पुं०) [कण्ड्+ओलच्] टोकरी, धान्यपात्र।
कण्डोषः (पुं०) [कण्ड+ओषन्] वाद्य विशेष, झां झा।
कण्वः (पुं०) कण्वऋषि।
कतः (पुं०) [कं जलं शुद्धं तनोति] निर्मली का पौधा, रीठा।
कतकः (पुं०) निर्मली, रीठा।
कतम (सर्व) कौन, कौन सा।
'सुमुख कार्यचणः कतमो नरः' (जयो० १०/५९)
कतर (सर्व०) कौन, दो में से कौन सा।
कतमालः (पुं०) वह्नि, अग्नि, आग। 'कस्य जलस्य तमाय शोषणाय अलति पर्याप्नोति-जल+अच्।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कति (सर्व०) कितने।

कतिकृत्वः (अव्य०) [कति+कृत्वसुच्] कितनी बार।

कतिचिद् (अव्य०) कितने समय 'सुखेन कालं कतिचिद् व्यतीतवान्' (सम्यु० ४/१७)

कतिधा (अव्य०) [कति+धा] कई बार, कितने स्थानों पर, कितने भागों में।

कतिपय (वि०) [कति+अयच्] कुछ, कई, कई एक, कुछ दिन व्यतीत होने पर। (जयो० ५/२)

कतिविध (वि०) कितने तरह का, कितने प्रकार का।

कतिशः (अव्य०) [कति+शस्] एक बार में कितना।

कत्थ् (अक०) निन्दा करना, दुर्वचन बोलना, उपेक्षित करना।

कत्थनं (नपुं०) प्रशंसा करना, आत्मभाव व्यक्त करना, डींग मारना।

कत्सवरं (नपुं०) [कत्स+वृ+अप] कंधा।

कथ् (सक०) १. ०कहना, बोलना। (अक०१२२) २. प्रतिपादन करना, उल्लेख करना, ३. संकेत करना, ४. परस्पर वार्तालाप करना। 'कथय-प्रतिपादय' 'कथ्' इति भौवादिको धातुर्यस्य लुङ्ण्यन्ते। अचीकथत् इति रूपं जैनकाव्येषु प्रचलितम्' अचीकथच्च मन्त्रिभ्यो इति वादीभसिंहेन क्षत्रचूडामणौ प्रयुक्तम्। (जयो० २३/७९) 'कथोच्यताम्-कहिए कुशलक्षेमकथोच्यताम्' (दयो० १०७) कथ्यते-(जयो० २/३३)

कथक (वि०) [कथ्+ण्वुल्] ०कथाकार, वार्ताकार, प्रवाचक। कहानी कहने वाला।

कथकः (पुं०) १. नायक, अभिनेता। २. कथा प्रस्तुतकर्ता।

कथनं (नपुं०) [कथ्+ल्युट्] कहना, प्रतिपादन, प्ररूपण, कथामुख। 'नयामि कथनं प्रणवमुत च नः' (जयो० २२/९१) कथनं-कथामुखं (जयो० वृ० २२/९१)

कथम् (अव्य०) कैसे, किस प्रकार, किस तरह, किस रीति से, कहां से, कब। (दयो० ९०) 'मनोरमायां तु कथं सरस्याम्' (सुद० ४/१५)

कथमपि (अव्य०) किसी तरह से भी, किस विधि से भी, कभी भी। (जयो० १/१७) 'कथमपि तथा सुयात्री' (सुद० वृ० ९७)

कथञ्चिन् (अव्य०) किसी प्रकार से, किसी तरह का। 'जिनधर्मो हि कथञ्चिदिन्मतः' (सुद० ३/१२)

कथित (वि०) प्रतिपादित। (जयो० १/९)

कथा (स्त्री०) [कथ्+अङ्+टाप्] १. वार्ता संलाप 'श्रीत्रिवर्ग परिणायके तथा तिष्ठतीष्टकृदसावभूत्कथा। २. कथन पद्धति (जयो० १/६) (जयो० ३/२०) ३. प्रसंग, वर्णन-गगनाङ्गनां कोटिर्ह्येषा येषां पृथक्कथा मोटी (जयो० ६/७) ४. हितकरचरित्र निरूपण पुरुषार्थोपयोगित्वात् त्रिवर्ग कथनं कथा। (महा० पु० १/११८) 'प्रभवति कथा परेण पथा रे।' (सुद० ८८)

कथाकर (वि०) कथा/कहानी कहने वाला।

कथाकार (वि०) कहानीकार, वार्ताकार।

कथाकुंजः (पुं०) कथा समूह।

कथाचारः (पुं०) कथानुकरण। (जयो० १/६)

कथाछलं (नपुं०) कहाने का कारण, कथा के बहाने।

कथाधारः (पुं०) प्रशंसाधार। 'कथायाः प्रशंसाया आधारः स्थानमस्ति' (जयो० वृ० ६/२४)

कथानकं (नपुं०) कथा सार, संक्षिप्त कथा।

कथानायकः (पुं०) कहानी का प्रमुख पात्र।

कथापुरुषः (पुं०) नायक, प्रमुख पात्र।

कथापीठं (नपुं०) कथाकर रस्य भाग कथांश।

कथा-प्रबंध (पुं०) कल्पित कथा। बृहतकथा।

कथा-प्रवेशः (पुं०) कथा मुख, कथानक का प्रारम्भ।

कथा प्रसङ्गः (पुं०) वार्तालाप, बातचीत से प्रसंग प्रस्तुतीकरण।

कथाप्राणः (पुं०) कथा का मूल पात्र, नायक।

कथामुखं (नपुं०) कथानक का परिचयात्मक अंश।

कथायोगः (पुं०) कथासंयोग, कथा का माध्यम, कथाधार।

कथाविपर्यासः (पुं०) कथा का बदलाव, कथा का परावर्तन।

कथाशेषः (वि०) वृत्तान्त का अवशेष, वार्ता का अवशेष भाग।

कथित (भू०क०कृ०) कहा गया। (सुद० १/९५)

कथोदयः (पुं०) कथा का प्रारम्भ।

कथोद्घातः (पुं०) कथा की पुनरावृत्ति।

कथोपगामिन् (वि०) कथन को प्राप्त होने वाला। (जयो० १/२९)

कद् (अक०) घबराना, हत होना, खिन्न होना, शोक करना।

कद् (अव्य०) [कद्+क्विप्] यह अव्यय ह्रास, अल्पता, निरर्थकता, एवं दोषादि को व्यक्त करता है। कदक्षरं-बुरा अक्षर, अपसूचक अक्षर। कदान्नं-दूषित अन्न।

कदकं (नपुं०) [कदः मेघः इव कायति प्रकाशते-कद+कै+क] पंडाल, चंदोआ, शामियाना।

कदनं (नपुं०) [कद्+ल्युट्] विनाश, हनन, प्रताड़न।

कदन्नकः (पुं०) अभक्ष्य भक्षण। (जयो० २७/३१)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कदम्बः (पुं०) १. कदम्ब वृक्ष, २. हलदी, ३. घास विशेष। जिसके पुष्प मेघ-गर्जना से पुष्पित होते हैं।

कदम्बराज (पुं०) कदम्ब नाम राज्य। (वीरो० १५/४२)

कदम्बकं (नपुं०) समु दाय, समूह, ओघ। २. कदम्ब फूल।

कदय (वि०) कुत्सित, दया रहित। (जयो० ६/१५)

कदरः (पुं०) [कं जलं दारयति नाशयति-क+दृ+अच्] आरा, लकड़ी चीरने की मशीन। १. अंकुश।

कदर्थिभावः (पुं०) खोटा भाव। (वीरो० १८/३४)

कदर्थित (वि०) दुश्चिन्तित, बुरा चिन्तन। (समु० ७/२५) 'स्विदहमस्म्यनयेन कदर्थितः' (जयो० ९/३२)

कदर्य (वि०) दया रहित धनोपार्जन, कष्टजनित धन संचय। यो भृत्यात्म पीडाभ्यामर्थं संचिनोति स कदर्यः। (जैन०ल०३१४)

कदलः (पुं०) [कद्+कलच्, कन् च] कदली वृक्ष, केले का पादप।

कदलकः (पुं०) कदली तरु, केले का वृक्ष।

कदली (स्त्री०) १. केला, कदल-पादप। २. रम्भा-जन्मदात्री रम्भा कदल्यपि जिता।' (जयो० ५/८१) ३. 'मोचा नाम कदली' (जयो० वृ० ११/२०) कदली का एक नाम 'मोचा' भी है। ३. मृग, ४. हस्ति पर शोभित ध्वजा।

कदलीघातः (पुं०) सहसा आयु का घात, विस-वेयण-रत्तक्खय-भय-सत्थग्गहण-संकिलेसेहिं। आहारस्सोस्सासाणं णिरोहदो छिज्जदे आऊ।। (धव० १/२३)

कदा (अव्य०) [किम्+दा] कब, किस समय, कस्मिन् काले-जयो० ११/८५) नाहं भवेयं कदा। (सुद० ९६) 'कदा समय स समायादिह' (सुद० ७१) कदाचनान्यं (वीरो० १७/८) किसी समय।

कदाचरण (वि०) कुत्सित आचरण (जयो० २/९)

कदाचारक (वि०) कुत्सिताचरण, भ्रष्टाचारी, पतित आचरण वाला। 'नरं तञ्च रङ्क कदाचारकम्' (जयो० २/१३१)

कदाचित् (अव्य०) कभी-कभी, एक बार, अब। (हित सं०१३, सम०६/८, जयो० १/७७)

कदाञ्छी (स्त्री०) पल्लव देश के नरेश की पुत्री, राजा मरूवर्मा की रानी। (वीरो० १५/३५)

कदाचिदपि (अव्य०) कभी भी। (जयो० ४/६०)

कदाचिद्यदि (अव्य०) फिर भी, कभी तो। (वीरो० ३/१०)

कदात्मन् (वि०) कृतघ्न आत्मा वाला, कुत्सित आत्मा-सहित (जयो० २/१०२)

कदादरि (वि०) निरादरकारी, निरादर करने वाला। (जयो० ९/१०) 'नहि कदापि कदादरि मे मनः'

कदानृणत्व (वि०) सभी ऋण रहित। (जयो० २०/७०)

कदापि (अव्य०) कभी भी, किसी भी समय। क्वापि (जयो० वृ० २३/३२) 'चित्तं न कदाप्युपवासः' (जयो० १/२२) अथान्यदा (जयो० २३/७१) 'जीवो मृति न हि कदाप्युपयाति तत्त्वात्' (सुद० १२९)

कदाश्रवः (पुं०) अशुभ समागम।

कद्रु (वि०) [कद्+रु] भूरे रंग का।

कथिक (वि०) कथन (वीरो० २२/९)

कनकः (पुं०) मंगलावती देश के कनकपुर का राजा। (वीरो० ११/२६)

कनकं (नपुं०) १. धत्तूर, धतूरा, ढाक का वृक्ष। (जयो० वृ० २५/१४) २. स्वर्ण, सोना, ३. वज्रायुध 'कन्यका-कनक-कम्बलान्विति' (जयो० २/१००) काच-कनक-मणि-मुक्ता (जयो० ३/७९)

कनक-कम्बलं (नपुं०) स्वर्णमयी कम्बल। (जयो० २/१००)

कनक कुम्भः (पुं०) स्वर्णघट। 'कनकस्य-स्वर्णस्य कुम्भयोः कलशयोर्युगमेव राजते' (जयो० वृ० ५/४५)

कनकगिरिः (पुं०) स्वर्णगिरि, सुमेरु।

कनकटङ्कः (पुं०) स्वर्णमयी कुठार।

कनकदण्डं (नपुं०) स्वर्णदण्ड, छत्र, राजच्छत्र।

कनकपत्रं (नपुं०) स्वर्ण निर्मित कर्णाभूषण।

कनकपरागः (पुं०) स्वर्णमयी रज, पीली धूल।

कनकपुरः (पुं०) मंगलावती देश का एक नगर। (वीरो० ११/२१)

कनकमाला (स्त्री०) नाम विशेष, एक मंगलावती के राजा कनक की रानी (वीरो० ११/२२६) राज पुत्री का नाम।

कनकमेरुः (पुं०) सुमेरु पर्वत।

कनकरसः (पुं०) हरताल, एक धातु विशेष, स्वर्ण भस्म।

कनकस्थली (स्त्री०) स्वर्णमयी भूमि, स्वर्णाकार, सोने की खदान।

कनकाद्रीन्द्रः (पुं०) सुमेरु पर्वत। (जयो० १२/७४)

कनखलं (नपुं०) तीर्थस्थान विशेष।

कनङ्करा (स्त्री०) नौका को स्थिर करने वाली सांकल, लंगर, बेड़ा, नाव-पत्थर।

कनयति-कम करना, घटाना, न्यून करना।

कनाशक (वि०) पाप घातक (सुद० १३६)

कनिष्ट (वि०) [इष्टं इच्छा विषयीकृतं कं] अभीष्ट (जयो० वृ० ३/२३) यशोविशिष्ट।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कनिष्ठ (त्रि०) [अतिशयेन युवा अल्पो वा-कनादेशः+ कन्+इष्ठन्] अल्पतर, छोटे से छोटा, न्यून।

कनिष्ठा (स्त्री०) छोटी अंगुली। 'शौर्यप्रशस्तौ लभते कनिष्ठां' (जयो० १/१६)

कनिष्ठिका (स्त्री०) [कनिष्ठ+कम्+टाप्] छोटी अंगुली।

कनीनिका (स्त्री०) १. छोटी अंगुली। २. आंख की पुतली। (जयो० वृ० २/१०)

कनीनी (स्त्री०) १. छोटी अंगुली। २. नेत्र की पुतली। (जयो० वृ० २/१०)

कनीनीक देखो कनीनी।

कनीयस् (त्रि०) अपेक्षाकृत लघु, दो में एक कम।

कनेरा (स्त्री०) [कन्+एरन्+टाप्] वेश्या, गणिका।

कन्तुः (पुं०) [कन्+तु] कामदेव, मदन। २. हृदय।

कन्था (स्त्री०) गुदड़ी, जीर्णवस्त्र की थैली। 'सग्रन्थि कन्थाविवरात्तमारुतैः' (वीरो० ९/२५)

कन्दः (पुं०) जमीकंद, गांठदार लहसुन, प्याज आदि। २. अंकुर (जयो० ११/४३) १. ग्रन्थि, २. कपूर, ३. बादल।

कन्दकः (पुं०) गर्त, गड्डा-हाथी पकड़ने के लिए बनाया गया गर्त।

कन्दट्ट (नपुं०) श्वेत कमल, शुभ पद्म।

कन्दप्रकारः (पुं०) अंकुरमात्रक। (जयो० ११/४३)

कन्दरः (पुं०) [कम्+दृ+अच्] गुफा, खोह, पर्वत के अन्दर का गुह्य स्थान। (जयो० १४/६८)

कन्दरा (स्त्री०) गुफा।

कन्दर्पः (पुं०) १. कामदेव, २. रागात्मक शब्द वाला। 'कन्दर्पः कामस्तद्हेतुस्तत्प्रधाने वाक्प्रयोगोऽपि कन्दर्पो' (सा०ध०टी० ५/१२) 'रागोद्रेकात् प्रहासमिश्रोऽशिष्टवाक्यप्रयोगः कन्दर्पः।' (त० वा० ७/३२) राग की अधिकता से हास्य मिश्रित अशिष्ट वचन वाला।

कन्दर्पकूपः (पुं०) योनि, जन्मस्थान।

कन्दर्पज्वरः (पुं०) आवेश, प्रबल इच्छा, कामोद्दीपन।

कन्दर्पधर (वि०) अहंकारी, कामी।

कन्दर्पभावना (स्त्री०) कुचेष्टा युक्त भावना, द्रवशीलता जन्य भावना/इच्छा। हास्योत्पादक भावना। 'कामयोगः परविस्मयकारी वा कन्दर्पभावनेत्युच्यते' (भ०अ०टी० १८०)

कन्दर्पभूपः (पुं०) कामरूपी राजा। 'कन्दर्पभूपो विजयाय याति' (वीरो० ६/१९)

कन्दलः (पुं०) १. कलह, निन्दा, गर्हा। (जयो० १३/७०) २. नया अंकुर, ३. गाल, कनपटी। ४. युद्ध।

कन्दली (स्त्री०) [कन्दल्+ङीष्] कदली वृक्ष। २. कमलगट्टा

कन्दुः (पुं०स्त्री०) १. तंदूर, पतीली। २. गेंद। कन्दुकुचाकारधरो युवत्या। (वीरो० ९/३६)

कन्दुकः (पुं०) [कम्+दा+डु+कन्] गेंद, गेन्दुक-रबड़ या कपड़े से निर्मित पूर्ण लोकाकार गेंद जिससे खेला जाता है।

कन्दुकत्व (वि०) गोलाकार गेंद की तरह। (जयो० १/१०)

कन्दुकभावः (पुं०) डुलमुल भाव। (जयो० १/१०)

कन्दोटः (पुं०) श्वेतकमल, शुभ्रकमल।

कन्दोद्दः (पुं०) श्वेतकमल, धवलपद्म।

कन्दोपमा (स्त्री०) जड़ की उपमा (जयो० ११/४४)

कन्धः (पुं०) कन्धा, ग्रीवा (जयो० ७/२३)

कन्धरः (पुं०) [कं शिरो जलं वा धारयति-कम्+धृ+अच्] १. ग्रीवा, कन्धा, बाहुमूल (वीरो० ३/३५)

कन्धरा (स्त्री०) ग्रीवा, गर्दन।

कन्धा (स्त्री०) ग्रीवा, गर्दन।

कन्धिः (स्त्री०) [कं शिरो जलं वा धीयते कम्+धा+कि] १. सागर, समुद्र। २. ग्रीवा, गर्दन।

कन्नं (नपुं०) [कद्+क्त] पाप, अशुभभाव।

कन्यका (स्त्री०) कन्या, लड़की, कुमारी, तरुणी, अविवाहित पुत्री। 'कन्यका-कनक-कम्बलान्विता' (जयो० २/१००) सौन्दर्यसारसंसृष्टिं भूभृणां कन्यकामिमाम्' (जयो० ७/११)

कन्यकाजनः (वि०) कुमारियां, लड़कियां।

कन्यकाजातः (वि०) कन्या से उत्पन्न पुत्र, अविवाहित कन्या का पुत्र।

कन्यसः (पुं०) [कन्य+सो+क] छोटा भाई।

कन्यसी (स्त्री०) छोटी बहिन।

कन्या (स्त्री०) १. लड़की, ०कुमारी, ०कुंआरी, ०पुत्री, ०सुता। (जयो० ४/६२) कन्याऽसौ विदुषी धन्या गुणेक्षण-विचक्षणा। (जयो० ७/१३) २. छठी राशि-कन्या राशि। ३. दुर्गा। ४. इलायची।

कन्याका (स्त्री०) तरुणी बाला, कुमारी।

कन्यागत (वि०) कन्या राशि में गया हुआ।

कन्याग्रहणं (नपुं०) विवाह में कन्या स्वीकरण।

कन्यादानं (नपुं०) कन्यादान, विवाह में कन्या का वर एवं कुटुम्बिजनों के सामने ग्रहण करने का कथन। (जयो० वृ० १२/५६) 'सूत्रमिव भाविकन्यादान' (जयो० ६/१२५)

कन्यादानार्थ (वि०) विवाह सम्बंधी विधि में कन्या की प्रवृत्ति हेतु कन्या दान के लिए। (जयो० १२/५३)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कन्यादूषणं (नपुं०) कौमार्य भंग।

कन्यादोषः (पुं०) कन्या की बदनामी।

कन्याधनं (नपुं०) दहेज, कन्या के लिए सम्पत्ति।

कन्यानृतः (पुं०) कन्या विषयक असत्य।

कन्यानुरक्त (वि०) कन्या में अनुरक्त। (समु० २/२८) अविवाहित पुत्री में आसक्ति। मानेतुं प्रचकार तत्र पथि, तत्कन्यानुरक्तोक्तियम्' (समु० २/२८)

कन्यापक्षिकलोकः (पुं०) माङपिक जन। (जयो० १२।१३३)

कन्यापतिः (पुं०) दामाद, जामाता, पति।

कन्यापुत्रः (पुं०) कन्या/लड़की का पुत्र, आत्मजा का बेटा।

कन्यापुरं (नपुं०) अन्तःपुर, रनवास, कन्याओं का आवास स्थान।

कन्याप्रदानार्थ (वि०) कन्यादान हेतु। (जयो० १२/५६)

कन्याप्रसूतः (पुं०) कन्या उत्पत्ति। (वीरो० ९/१९)

कन्यारत्नं (नपुं०) श्रेष्ठ कन्या, रूपवती बाला, अत्यन्त मनोरम पुत्री। यस्मै दत्त्वा यमाशंसी कन्यारत्नमकम्पनः। (जयो० ७/१२)

कन्यालीकः (पुं०) कन्या विषयक झूठ।

कन्याराशिः (स्त्री०) कन्याराशि, छठी राशि। (वीरो० २१/१३)

कन्यावेदिन् (पुं०) दामाद, जमाता।

कन्यासः (पुं०) जल सिंचन। (वीरो० ८/२२)

कन्यास्वयम्बरः (पुं०) पति चयन की पद्धति, विविध कुमारों में से पति चयन की पद्धति।

कन्यासमितिः (स्त्री०) कन्या समूह। (वीरो० ८/२२)

कन्याहरणं (नपुं०) कन्या का अपहरण।

कपटः (पुं०) प्रवंचना, छल, धोखा, चालाकी, बनावटी, कृत्रिम। 'गजस्येव कपटाभ्रमुकायाम्' (जयो० २३/६६)

कपट-कृत (वि०) छलिया, प्रवंचका, कपट करने वाला।

कपटगत (वि०) कपट को प्राप्त, छल युक्त।

कपटतापसः (पुं०) पाखंडी तपस्वी, बनावटी साधु।

कपटदेहं (नपुं०) कृत्रिम देह, तदाकार शरीर।

कपटपटु (वि०) छल में निपुण।

कपट-प्रबन्धः (पुं०) छलपूर्ण व्यवहार।

कपटप्रेमः (पुं०) बनावटी प्रेम, कृत्रिम स्नेह। (दयो० १६)

कपटभावः (पुं०) छलभाव।

कपटलेख्यं (नपुं०) असत्य अभिलेख, कुत्सित लेख।

कपट-वचनं (नपुं०) छल युक्त वाणी, छलपूर्ण वार्ता।

कपट-वेशः (वि०) कृत्रिम आकार, बनावटी वेश।

कपटशील (वि०) छल युक्त।

कपटाभ्रमुका (स्त्री०) कृत्रिम हथिनी। 'कपटेन कृता याऽऽभ्रमुका हस्तिनी' (जयो० वृ० २३/६६) गजस्येव कपटाभ्रमुकायां मनसो बहुलापाया। (जयो० २८/६६)

कपटिकः (पुं०) [कपट+कन्] कपटी, छली।

कपर्दः (पुं०) [क+पर्+दैप्-क] १. कौड़ी। २. जटा।

कपर्दकः (पुं०) कौड़ी। [कर्द्-क्विप्], वलोपः, पर कस्य गंगाजलस्य परा पूरणेन दापयति शुध्यति-कपर्द+कन्] (सुद० २/४८) दशोरमुष्या द्वितयेऽवतारं, कपर्दकोदारगुणं बभार। (सुद० २/४८)

कपर्दिका (स्त्री०) [कपर्दक+टाप्] कौड़ी, कार्षापण। (जयो० २३/५९) मधुरसा करटस्य हि निम्बिका धनमहो दुरितस्य कपर्दिका। (जयो० २५/२१)

कपर्दिन् (पुं०) [कपर्द+इनि] शिव का पर्यायवाची शंकर।

कपाटः (पुं०) किवाड़, अरर। (जयो० २५/२८) १. मुख, द्वार। 'तावद्विचार-चतुरापि सुवाक् कपाटं' (जयो० १०/९४) कस्यात्मनो वाटं कवाटं मुखमुद्घाटयति स्म। (जयो० वृ० १०/९४)

कपाट-मुद्रा (स्त्री०) अभयमुद्रा।

कपाट-सन्धिः (स्त्री०) कपाट के दोनों पल्लड़े। द्वार के दोनों भाग।

कपाट-समु घातः (पुं०) आत्म प्रदेश का विस्तार।

कपाटोद्घाटनं (नपुं०) द्वारोद्घाटन, द्वार खोलना, कपाट खोलना।

कपालः (पुं०) [क+पाल-अण्] [कं शिरो जलं वा पालयति] १. खप्पर, ठीकरे, (दयो० ८२) २. खोपड़ी १. कपाल, चूड़ापीड। २. संचय, समूह। ३. प्याला, मकोरा, कटोरा, पात्र।

कपालक्रिया (स्त्री०) शिरच्छेदन।

कपालपाणि (पुं०) महादेव का नाम।

कपालमालिनी (स्त्री०) दुर्गादेवी।

कपालिका (स्त्री०) [कपाल+कन्+टाप्] ठीकरा, खप्पर, मिट्टी के घड़े के टूटे टुकड़े।

कपालिन् (वि०) [कपाल+इनि] खप्पर हर्ता, खोपड़ी धारक।

कपिः (पुं०) [कम्प्+इ] बन्दर, लंगूर, वानर। (सुद० ३/३९) (समु० ४/३७)

कपिञ्जलः (पुं०) [क+पिज्+कलच्] पपीहा, टिटिहिरी।

कपिकच्छुः (स्त्री०) एक लता विशेष।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कपिकेतन: (पुं०) अर्जुन का नाम।

कपिज: (पुं०) शिलाजीत।

कपितैलं (नपुं०) शिलाजीत।

कपिध्वज: (पुं०) अर्जुन का नाम।

कपित्थ: (पुं०) [कपि+स्था-क] कैंथ, कवीट, कैंथा, दधिफल। 'कपित्थं दधिफलं' (जयो० वृ० २५/११) मन्मथः कामचिन्तायां कामदेव कपित्थयो:' (जयो० वृ० २१/२७) कपित्थ को मन्मथसार भी कहा जाता है।

कपित्थदोष: (पुं०) साधु के कायोत्सर्ग में दोष। 'य: कपित्थफलमन्मुष्टिं कृत्वा, कायोत्सर्गेण तिष्ठति तस्य कपित्थदोष:' (मूला० वृ० ७/१७)

कपिल (वि०) [कम्+इलच्, पादेश:] भूरे रंग का।

कपिल: (पुं०) कपिल नामक मुनि।

कपिल ब्राह्मन् (पुं०) कपिल नामक विप्र। (सुद० ७६) सुदर्शन सेठ मित्र।

कपिलक्षण (नपुं०) बन्दर के लक्षण, चपलता युक्त, चंचलता सहित। (वीरो० ११/८) समाह सद्य: कपि-लक्षणेन, समाह सद्य: कपिल: क्षणेन।' (सुद० ३/३९)

कपि-लक्षणा (वि०) चंचल स्वभाव वाली, बन्दर जैसे लक्षणों वाली।

कपिला (स्त्री०) कपिल विप्र की पत्नी कपिला ब्राह्मणी। चम्पानगरी के विप्र कपिल की भार्या। कपिल विप्र सुदर्शन सेठ का मित्र था, जो रूप-सौन्दर्य में अनुपम था। उसी पर वह कपिला मुग्ध हुई, पर सुदर्शन ब्रह्म में लीन विरक्ति की ओर बढ़ता रहा। (सुदर्शनोदय)

कपिलाख्या (वि०) कपिला नाम वाली, कपिला ब्राह्मणी, कपिलविप्र की पत्नी। सुदर्शनान्वयायाङ्का

कपिलाङ्गना (स्त्री०) कपिल ब्राह्मण की स्थापिता कपिलाख्यया। अंगना। भार्या-कपिला।

कपिश (वि०) [कपि+श] सुनहरी, स्वर्ण सदृश।

कपिश: (पुं०) १. शिलाजीत, २. लोभान, ३. भूरा रंग।

कपिशा (स्त्री०) माधवी लता।

कपिशित (वि०) [कपिश+इतच्] स्वर्ण सदृशता, सुनहरे रंग वाला।

कपुच्छलं (नपुं०) मुण्डन संस्कार। कस्य शिरस्य पुच्छं लाति-क+पुच्छ+ला+क-कस्य शिरस: पुष्ट्यै पोषणाय कायति। क+पुष्टि+कै+क टाप्।

कपूय (वि०) अधम, नीच, निम्न स्वभाव वाला। (कुत्सितं पूयते कु+पूय+अच्)

कपोत: (पुं०) कबूतर, पारावत।

कपोतक: (पुं०) शिशु कबूतर। (जयो० १५/४५)

कपोत-चरणं (नपुं०) सुगन्धित द्रव्य।

कपोत-पाली (स्त्री०) चिड़ियाघर, जन्तु-आलय।

कपोत-राज: (पुं०) कबूतरों का राजा।

कपोतलेश्या (स्त्री०) मत्सर भाव युक्त लेश्या। छह लेश्याओं में तृतीय लेश्या।

कपोतहस्त: (पुं०) अंजली बद्धता।

कपोताञ्जनं (नपुं०) सुरमा, अंजन।

कपोतारि: (पुं०) बाज।

कपोल: (पुं०) १. गाल, गण्डस्थल, गण्डमण्डल। 'कपौलौ घृतवरभूपौ' २. मिथ्या, झूठ, अलीक कल्पना। (जयो० ३/६०)

कपोलक: (पुं०) कपोल, गाल, गण्डस्थल। 'दृशि चैणमद: कपोलकेऽञ्जनकं' (जयो० १०/५९)

कपोल-कलित (वि०) मिथ्याजनित, अलीकता युक्त, कल्पना जन्य। 'कुत्सितेषु सुगतादिषु क्रमाद्धा कपोल-कलितेषु च भ्रमात्।' (जयो० २/२६) कपोलकलितेषु-मिथ्याकल्पितेषु। (जयो० वृ० २/२६)

कपोलपालि: (वि०) गण्डस्थलाग्रभाग, कपोल भाग। (जयो० १३/७१)

कपोलभित्ति (स्त्री०) कनपटी, चौड़ा फैला हुआ गण्डस्थल।

कपोलमूलं (नपुं०) गण्डस्थल भाग। (दयो० ८६)

कपोलराग: (पुं०) गालों की लालिमा, गण्डस्थल रागिमा।

कफ: (पुं०) बलगम, श्लेष्मा।

कफचूर्णिका (स्त्री०) लार, थूक।

कफक्षय: (पुं०) कफ रोग, श्वांस रोग फेंफड़े का रोग।

कफणि: (स्त्री०) कोहनी [केन सुखेन फणति-स्फुरति-क+फण्+इन्, क+फण्+इन]

कफघ्न (वि०) कफ नाशक।

कफज्वर: (पुं०) बलगम से उत्पन्न होने वाला ज्वार/बुखार।

कफल (वि०) [कफ+लच्] कफ प्रवाह, कफप्रवृत्ति।

कफारि: (स्त्री०) सोंठ, अदरक।

कफिन् (वि०) [कफ+इनि] कफ पीड़ित, कफग्रस्त।

कफोणि (स्त्री०) कोहनी, केहुनाठ। कुक्षि-रोपित-कफोणितयाऽरं प्राप्य सा दधिशरावमुदारम्' (जयो० १०/१०५)

कबन्ध: (पुं०) १. बिना शिर का धड़। [कं मुखं बध्नाति-क+बन्ध्:अण्] २. पेट, उदर। ३. मेघ। ४. धूमकेतु, ५. राहु, ६. जल, ७. कबन्ध, शिरोहीन नामक राक्षस।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कबरी (स्त्री०) केश, बाल। (वीरो० ५/१२, ७/९) (जयो० ११२/११)

कबित्थः (पुं०) कैंथ तरु।

कम् (अक०) प्रेम करना, अनुरक्त होना, कामना करना, इच्छा करना।

कमठः (पुं०) [कम्+अठन्] कूर्म, कच्छप, कछुआ। (जयो० वृ० २४/१६) २. बांस, ३. जलघट। ४. पार्श्वनाथ पर उपसर्ग करने वाला देव।

कमठ-पिष्ठः (पुं०) कछुएं की पीठ।

कमठी (स्त्री०) कच्छपी, कूर्मी।

कमठोपसर्गः (पुं०) कमठ का उपसर्ग।

कमण्डलुः (पुं०) जलपात्र, साधु नारियल से बने हुए पात्र में शुद्धि हेतु जल रखता है। लकड़ी का भी यह बनाया जाता है। (कस्य जलस्य मण्डं लाति-क+मण्ड+ला+कु)

कमण्डलुधर (वि०) कमण्डलु को धारण करने वाला।

कमण्डलुमुद्रा (स्त्री०) अञ्जलीबद्ध मुद्रा, दोनों हथेलियों के मिलाने पर कनिष्ठिकाओं को बाहर निकालने की प्रक्रिया।

कमपि (अव्य०) कुछ भी। (जयो० वृ० १/१४)

कमन (वि०) [कम्+ल्युट्] कामुक, लम्पट, विषयाभिलाषी, मनोरम, अभिरूप, सुन्दर।

कमनः (पुं०) कामदेव, मदन। १. अशोक वृक्ष। २. ब्रह्मा। कमनः कामुके चाभिरूपे चाशोक-कामयोः 'इति वि' (जयो० २६/४७)

कमनीय (वि०) रमणीय, सुन्दर, मनोरम। (दयो० ६६)

कमर (वि०) [कम्+अरच्] विषयाभिलाषी, लालची, कामुक।

कमलं (नपुं०) १. कमल, सरोज, नीरज, पद्म, अरविंद, अम्भोज, वारिज, शतच्छदं, कुड्मल, जलज। (सम्० ७१, सुद० ३/२३) २. चडसीदीलक्खेहि कमलं णामेण णिद्दिट्ठं' (ति०प० ४/२९८) ३. तोष-सन्तोष-विशदाम्बरा च मञ्जुजलतारा कमलान्वयिभ्रमर-विस्तारा। (जयो० २२/१९) कमलेन-संतोषण-'कमलं जलजे तीरे क्लोम्नि तोषे च भेषजे' इति वि' (जयो० वृ० २२/१९) कमलानां वारिजानाम्।

कमल-सारस पक्षी (जयो० वृ० २२/१, ६/८२)-शतच्छद-जयो० १७/७१।

जल-तांबा, दवा, औषधि, मूत्राशय।

आत्ममल-कमलं कस्यात्मनो मलं रागद्वेषादिरूपं (जयो० वृ० २८/३)।

कमलः (पुं०) सारसपक्षी।

कमलकं (नपुं०) [कमल+कन्] लघु पद्म, छोटा वारिज।

कमलंकरिष्णु (वि०) एक को अलंकृत करने वाली।

कमलकन्दः (पुं०) शल्यद्रुम, करहाट। करहाटोऽब्जकन्देऽपि शल्यद्रौ कुसुमान्तरे। इति वि० (जयो० वृ० २१/२६)

कमलकोमलता (वि०) कमल की सुकुमारता। (जयो० ३/२७)

कमलखण्ड (नपुं०) पद्म समूह, कमल समु दाय।

कमलजः (पुं०) नक्षत्र विशेष।

कमलजन्मन् (पुं०) पद्मयोनि।

कमलजात (वि०) पद्म उत्पत्ति।

कमल-नयनं (नपुं०) अम्बुज लोचना, पद्म नेत्र। (जयो० वृ० १७/१७)

कमलनालकुलबाहु (पुं०) मृणालतुल्य कोमल भुजा, अत्यन्त सुकुमार भुजदण्ड। (जयो० १४/१८)

कमलमालिका (स्त्री०) पद्ममाला, कमलमाला। (जयो० ७/६४)

कमलमुखी (वि०) कमलं-पद्मं तद्वत्मुखं वदनं (जयो० १०/११९)

कमलवासिनी (वि०) १. पद्म में निवास करने वाली। (सुद० ११२) २. आत्म-बल में वास करने वाली। (सुद० ११२)

कमलश्री (स्त्री०) पद्म श्री, पद्म के सदृश शोभा। 'दृष्ट्वा मुनीन्दुं कमलश्रियो भूः। (सुद० २/२५)

कमल-सङ्कोचः (पुं०) कुड्मलबन्ध। (जयो० वृ० १/७१)

कमलसमूहः (पुं०) सरोजवृन्द, पद्म समूह। (जयो० १२/१४०)

कमला (स्त्री०) [कमल+अच्+टाप्] (जयो० ५/१०७, ६/६३) १. लक्ष्मी, श्री के-आत्मनिमलं यस्या सा कमला। आत्म के मल को जो प्राप्त हुई।

कमलाङ्गः (पुं०) प्रमाण विशेष।

कमलाकरः (स्त्री०) अम्भोज दृक्, कमलनेत्र वाली। (जयो० वृ० १६/४०)

कमलात्मन् (स्त्री०) कमला, लक्ष्मी, श्री। 'कमलात्मन् इव विमलो गजैः' (वीरो० ४/४४)

कमलानुरूपा (वि०) लक्ष्मी सदृशा। कमलानि अरविंदानि अनु-पश्चात् रूपं शरीरं यस्याः सा' (जयो० वृ० १/७४)

कमलानुसारिन् (वि०) शोभा का अनुसरण करने वाली। (जयो० वृ०)

कमलानुसारिणी (वि०) कमल का अनुसरण करने वाली। (जयो० वृ० १४/५४)

कमलान्वयि (वि०) कमलों पर मण्डराने वाले। कमलेन सन्तोषान्वयी संयुक्तो, कमलानां वारिजानामन्वयी अनुयायी' (जयो० वृ० २२/१९)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कमलामुखी (वि०) लक्ष्मी सदृश।

कमलावकीर्ण (वि०) कमलों से व्याप्त, पद्मों से घिरे हुए। (जयो० ८/८१)

कमलेक्षणा (वि०) कमलनयना, पद्मनेत्रा। (जयो० १३/८६) 'अधः स्थिताया कमलेक्षणाया'

कमलिनी (स्त्री०) [कमल+इनि+ङीप्] सरोजनी, नलिनी। (जयो० १२/९८) सरसः सुत तामृतं कृतः श्री कमलिन्यै किल यत्पुन सदस्त्रि (जयो० १२/९८)

कमा (स्त्री०) [कम्+णिङ्+अ+टाप्] लावण्य, सौन्दर्य, रमणीयता।

कमितृ (वि०) [कम्+तृच्] लालची, लम्पट, लोभी।

कमोदिनी (स्त्री०) के जले मोदत इत्येव शोला, कैरविणी, 'कुमुदिनी'।

कम्प् (अक०) हिलना, कांपना, जाना। (जयो० वृ० ६/२४) (कम्पते, कम्पंते) चकम्प। (जयो० १२/१२०)

कम्पः (पुं०) [कम्प्+घञ्] चलायमान, हिलना, डुलना, इधर-उधर होना, घबराहट। (जयो० ६/२४)

कम्पकारण (नपुं०) वेपथुनिमित्त, कम्पित (जयो० ७/२०)

कम्पदा (वि०) कांपने वाली, भयाक्रांत होने वाली, घबड़ाने वाली। भवति सम्मिलने बहुसम्पदा विरहिता जगतामपि कम्पदा। (जयो० ९/४७)

कम्पन (वि०) [कम्प्+युच्] हिलने वाला, चलायमान होने वाला, घबड़ाने वाला।

कम्पनः (पुं०) शिशिर ऋतु, सर्दी का समय। कम्पनोऽयं जगधीनां भजते दण्डनीयताम्।

कम्पनकारिन् (वि०) कांपने वाली। (सुद० १३४) (जयो० ७/२६)

कम्पमान कांपता हुआ, थरथराता हुआ, घबड़ाता हुआ। (जयो० वृ० ६/१२३)

कम्पमानकरः (वि०) कांपते हुए हाथ। (जयो० वृ० ६/१२३)

कम्पवती (वि०) कांपती हुई। (जयो० १७/१०)

कम्पाकः (पुं०) [कम्पया चलनेन कायति-कम्पा+कै+क] हवा, पवन, वायु।

कम्पित (वि०) कांपते हुए, हिलते हुए। (जयो० ६/१२३)

कम्पित-हस्तः (पुं०) कम्पितकर, कांपते हुए हाथ। (जयो० वृ० ६/१२३)

कम्प्र (वि०) [कम्प्+र] कम्पायमान, हिलने वाला, थरथराने वाला। (जयो० ६/१२३)

कम्प्रकरः (वि०) कांपते हुए हाथ। तस्योरसि कम्प्रकरा मालां बाला लिलेख नतवदना। (जयो० ६/१२३) 'कम्प्रो वेपमानः करो यस्याः सा कम्पितहस्ता' (जयो० वृ० ६/१२३)

कम्ब् (सक०) जाना, चलना, गमन करना।

कम्बरः (पुं०) चित्र-विचित्र रंग, नाना प्रकार के रंग।

कम्बल (वि०) [कम्ब्+अरन्] रंग-बिरंगा, विविध वर्ण वाला।

कम्बलः (पुं०) [कम्+कल्] ऊनी कम्बल। (जयो० २/१००) 'कन्यका-कनककम्बलान्विति' एषाऽधुना झगिति कम्बलमेति तावत्। (जयो० १८/७०)

कम्बलः (पुं०) सास्ना, बैल की गर्दन के नीचे लटकने वाला चर्म।

कम्बलः (पुं०) मृग विशेष।

कम्बलं (नपुं०) जल, वारि, नीर।

कम्बलिका (स्त्री०) [कम्बल+ई+कन्+टाप्] छोटा कम्बल, शाल, ऊपर ओढ़ने का ऊनी वस्त्र।

कम्बलिन् (वि०) कम्बल से आच्छादित।

कम्बी (स्त्री०) [कम्+बिन्+ङीप्] चम्मच, कलछी।

कम्बु (वि०) विविध रंगों वाला।

कम्बुः (पुं०) १. शंख, सीपी। २. हस्ति, ३. ग्रीवा, ४. शिरा, नस, हड्डी।

कम्बुकंडी (स्त्री०) ग्रीवा, सुराही सदृश ग्रीवा वाली नारी।

कम्बुकः (पुं०) शंख, सीपी। (जयो० १०/४७) 'करद्वयी प्रापित चक्र-कम्बुकः' (जयो० २४/५)

कम्बोजः (पुं०) [कम्ब्+ओज] शंख।

कम्र (वि०) [कम्+र] रमणीय, सुन्दर, मनोरम, २. चाप, धनुकाण्ड (जयो० ६/१०४)

कम्रता (वि०) सरसता।

करः (पुं०) १. हस्त, हाथ। 'करौ समायुज्य तमानमन्त्यम्' (सुद० २/२०) (जयो० १/२१) २. शुल्क, टैक्स चुंगी- 'करस्य बाधापि पयोधरेषु' (समु० ६/६) 'करं परं दास्यति मादृशोऽपि योखिल-लक्ष्मीपतिदर्पलोपी' (जयो० ११/३८) 'क एव रा द्रव्यं ययोस्तौ आत्ममात्रसाधनौ तस्माद्वारौ साधनान्तरहीनतया स्वत एव निर्बलौ स्तः।' (जयो० ११/८५) कर-कल-(सुद० ७९) कर-शान्ति-(सुद० ७९) कर-किरण-(सुद० ७९) कर-शाखा-'इत्यत्र कुमुदवल्याःकरः' (जयो० ६/१२२) 'करः शाखारूपः' कर-उपहार, भेंट 'करत्वे-उपहाररूपेण कलितं' (जयो० वृ० ५/७६) कर-नक्षत्र विशेष।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कर-हस्ति-सुंड।

कर-ओला, हिमकण।

कर-माप विशेष।

करकः (पुं०) [किरति करोति वा जलमत्र कृ+वुन्] १. जलपात्र। भृंगारक (जयो० ४/१३) २. अनार का वृक्ष, दाडिम तरु। 'यदर्क-बिम्बं करकं त्वयापि (जयो० १५/४४) करकोऽस्त्री करङ्के स्यात्कुण्डया चाथ पुमान्खगे। कुसुम्भे दाडिमे हस्ते करका तु घनोपलते।। इति वि (जयो० वृ० १५/४४) ३. जलोपल, कंडक-जलतत्व (वीरो० २०/६) किलात्मसाक्षिन्, करकप्रकाशात् (वीरो० ४/१४)

करकञ्जः (पुं०) हस्तकमल। 'करकञ्जानां हस्तकमलानां राजे।

करकञ्जयुगः (पुं०) करकमल युगल। (जयो० वृ० १२/१२४)

करक-फलं (नपुं०) दाडिम (जयो० वृ० १४/१८)

करकफलकं (नपुं०) दाडिमफल, अनार। (जयो० वृ० १८)

करकमलद्वितयः (पुं०) कलाब्जयुग्म, उभय कर कमल। (जयो० २०/८६)

करकस्वभावः (पुं०) जलधारण रूप स्वभाव मधुर स्वभाव। (जयो० १५/१३)

कर-कंटकः (पुं०) नख, नाखून।

करकण्डकः (पुं०) टोकरी, डिब्बी (वीरो० २०/१२)

कर-कमलं (नपुं०) हस्त कमल।

कर-कलशः (पुं०) अञ्जलि।

कर किसलयः (पुं०) कोपल समान हस्त।

करक्रीडनकः (पुं०) हस्तगत खिलौना, हाथ का खिलौना, झुनझुना। (जयो० ३/६९)

कर-कुड्मलं (नपुं०) कर युगल, हस्त युग्म। 'भूम-कर. कुड्मलं व्रजति बाले' (जयो० ६/३०) 'करयो र्हस्तयोः कुड्मलं यस्य' (जयो० वृ० ६/३०) 'कर-कुड्मले-मुकुलिते करयुगले (जयो० वृ० १२/१०१)

करकोपनिपातः (पुं०) हिमपात, ओला. वृष्टि। (दयो० ८६)

कर-कौशलः (पुं०) हस्त कला प्रवीण। 'करस्य कौशलं चातुर्यम्' (जयो० वृ० २/११४)

करकृत (वि०) किरणक्षेपक, करप्रक्षेप। (जयो० १८/३८)

करग्रहः (पुं०) कर/शुल्क ग्रहण।

करग्रहणं (नपुं०) १. शुल्क ग्रहण, कर लगाना, कर लेना। (दयो० ११०) २. हथलेवा-विवाह में वर वधू का एक दूसरे के हाथ में हाथ लेना। पाणिग्रहण (जयो० १२/५८)

करग्रहोदारः (पुं०) पाणिग्रहण (सुद० ३/४८)

करग्राहः (पुं०) कर/हाथ के ग्रहण करने वाला पति।

करङ्कः (पुं०) १. अस्थिपंजर, हाड़ पींजरा। २. पात्र विशेष, नारियलपात्र।

करचारः (पुं०) हस्त संचालन (जयो० २६/५५) करस्य हस्तस्य चार-आलिगंन विशेष। (जयो० वृ० ८/

करजः (पुं०) नख, नाखून। (जयो० १४/१९)

करजकिरणं (नपुं०) नख किरण, नख प्रभा। स्वकीय नखानां किरण (जयो० १४/१९)

करजक्षत (वि०) नखक्षत्त (जयो० १६/५९)

करजालं (नपुं०) प्रकाश समूह, किरण प्रभा।

करजित (वि०) हस्तजित, अपने हाथ को जीतने वाला।

करञ्जः (पुं०) [कं शिरो जलं वा रञ्जयति] करञ्जवृक्ष।

करञ्जिका (स्त्री०) खरी वृक्ष, करञ्जतरु। (जयो० वृ० १७/५४)

करटः (पुं०) १. गण्डस्थल, हस्तिगण्ड। २. काक-'मधुरसा करटस्य हि निम्बिका' (जयो० २५/२१) करटस्य काकस्य (जयो० वृ० २५/२१) ३. कुसुम्भ पुष्प। ४० नास्तिक-ईश्वर को मान्य न करने वाला।

करटकः (पुं०) १. काक, कौवा, २. गीदड़।

करटुः (पुं०) पक्षी विशेष।

करत्राणं (नपुं०) पुरुषार्थ हीन, नपुंसक, असमर्थ। हे सुबुद्धे न नाऽहं तु करत्राणां विनामवाक्। (सुद० ७९)

करणं (नपुं०) परिणाम, व्यसाय, प्रवृत्ति, कार्यान्विति, करना अनुष्ठान करना। (जयो० ६/८३) 'करणा परिणामाः' (धव० १/१८०)

अधःकरण, अपूर्वकरण और अनिवृत्तिकरण (सम्य० ४९)

२. कारक विशेष-'साधकतमंकरणं (जैनेन्द्र व्याकरण १/२१३८) अतिशय साधक कारक को करण कहते हैं। करणानुयोग (जयो० वृ० १/६) ३. कृत्य कार्य, धार्मिक, अनुष्टान। ४. इन्द्रिय-पञ्चेन्द्रिय करण। 'करणानां स्पर्श-रसनादीनामिन्द्रियाणाम्' (जयो० वृ० १/३४)

करणग्रामः (पुं०) इन्द्रिय समुच्चय, इन्द्रिय विषय। उपसंहृत्य च करणग्रामं कार्या स्वात्मविचारणा (सुद० ९६)

करणजन्य (वि०) इन्द्रिय विषयक।

करणत्राणं (नपुं०) सिर, मस्तक, शरीर का प्रमुख हिस्सा।

करणपरिणामः (पुं०) अधः प्रवृत्ति आदि परिणाम/विषय। (जयो० वृ० ६/८३)

करणश्रुतं (नपुं०) करणानुयोगशास्त्र।

सुस्थिति समय-रीतिमात्मनः,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सद्गतिं परिणतिं तथा जनः।
द्रष्टुमाशु करणश्रुतं श्रयेत्
स्वर्णकं हि निकषे परीक्ष्यते।। (जयो० २/४७)

करणसत्यं (नपुं०) आगमानुसार सम्यक् उपयोग, सम्यक् प्रतिलेखन।

करणाख्यता (वि०) करणलब्धि युक्त। 'सम्यक्त्वतः प्रक्करणाख्यतोऽतः' (सम्य० ४९)

करणानुयोगः (पुं०) चतुर्गति सूचक अनुयोग, 'करणानां स्पर्शन-रसनादीनामिन्द्रियाणामनुयोगः' (जयो० वृ० १/३४) जिनवाणी का द्वितीय अनुयोग करणानुयोग है। इसमें अर्थाक्तिगम्य सिद्धान्त तथा लोक अलोक आदि का वर्णन गुम्फित है। इस अनुयोग का प्रतीक पुस्तक है। अतः सरस्वती विशिष्ट अध्ययन के लिए अपने द्वितीय हाथ में पुस्तक धारण करता है। (जयो० हि०१९/२६) 'करे द्वितीयेऽञ्चति पुस्तकम्' द्वितीयः करणादिः स्यादनुयोगः स पत्र वै। त्रैलोक्य-क्षेत्र-संख्यानं कुलपत्रेऽधिरोपितम्। (महापु०२/९९)

करणापर्याप्तकः (पुं०) इन्द्रिय/शरीर की रचना में कमी।

करणीय (वि०) करने योग्य। (दयो० ६०)

करणोपशामना (स्त्री०) क्रिया विशेष से उपासना, यथाप्रवृत्ति रूप उपासना।

करण्डः (पुं०) [कृ+अण्डन्] डिब्बी, टोकरी, पिटारा। चिदेकपिण्डः सुतरामखण्डः चण्डो गुणानां परमः काण्डः। (भक्ति ३१) 'भो तिष्ठेत्करण्डं गतः' (सुद० १२७)

करण्डिका (स्त्री०) संदूक, पिटारा, बांस निर्मित टोकरी।

करतलं (नपुं०) हथेली, हस्त सुकुमार भाग। (दयो० ८७)

करतल-कण्डूति (स्त्री०) हाथों की खुजली 'करतलयोः कण्डूतिं मर्जनमुद्धरति' (जयो० वृ० ६/६१)

करतलाहत (वि०) हस्ताहत, प्रताडित। 'करतलेनाहतं ताडितं सत्कन्दुकम्' (जयो० वृ० २५/१०)

करता (वि०) मधुरता। (जयो० २०/७४)

करतालः (पुं०) हस्तताल, खरताल, एक छोटा हाथ में लेकर बजाने वाला खर खर शब्द करने वाला वाद्य। तालियां बजाना।

करद्वयः (पुं०) हस्त युगल, दोनों हाथ। 'करद्वय-कुड्मलताम्' (सुद० २/२५)

करद्वयी (वि०) दोनों हाथ वाली। (वीरो० ५/२५) 'स्फुटमाह करद्वयीसमस्यामिह' (जयो० १२/१२१)

करधनी (स्त्री०) सप्तकी, मेखला। (जयो० वृ० १५/७६)

कर-निगालनं (नपुं०) हस्तधावन, हस्तप्रक्षालन, हाथ का धोना। 'करयोर्निगालनं धावनं तस्मिन्' (जयो० वृ० १२/१३२)

करन्धयः (वि०) हस्त चुम्बन वाला।

करपत्रं (नपुं०) आरा, करोंत, क्रकच। 'विभो करपत्रमिवेन्धनम्' (जयो० ९/३३)

करपत्रिका (स्त्री०) कर/हाथ से उछालना।

कर-पल्लवः (पुं०) १. सुकुमार हाथ, कोमल कर, २. अंगुली। कर-पल्लवयोः प्रसूनता समधारीह सता वपुष्मता। (सुद० ३/२१)

कर-पल्लव-लालित (वि०) उत्तम पल्लव/पत्र वाली लतिका। (सुद० ३/१७)

करपट्टिकाततिः (स्त्री०) रोटी, चपाती। (दयो० १८)

करपातः (पुं०) १. शुल्क समादान, कर देना, चुंगी देना। (जयो० १३/२७) २. किरणक्षेप, किरणप्रसार।

करपालः (पुं०) १. असि, तलवार, २. कुदाली।

करपालिका (स्त्री०) कुदाली, फावड़ा।

करपीडनं (नपुं०) पाणि पीडन, हस्त-मर्दन। 'करपीडनमेष बलिकायाः' (जयो० १२/८८)

करपुटः (पुं०) सम्पुट, हस्त सम्पुट, अंजलीबद्धता।

करपृष्ठं (नपुं०) हथेली का ऊपरी भाग। हस्तपीठ।

करप्रवालः (पुं०) करपल्लव, हस्त पल्लव, सुकुमार हस्त, प्रवाल युक्त/लालिमा सहित हस्त।

कर-प्रसारः (पुं०) १. हस्त प्रसार, हस्त-विकास, फैले हुए हाथ। २. राजस्वविस्तार, राज्य विस्तार के लिए कर/चुंगी/अधिभार।

करभः (पुं०) [कृ+अभच्] १. उष्ट्र (जयो० २१/२७) ऊँट, २. हस्ति शावक, ३. सुगन्धित, ४० हस्तोपरितल।

करभकः (पुं०) [करभ+कन्] ऊष्ट्र, ऊँट।

करभिन् (पुं०) हस्ति, करि, हाथी।

कर-भूषणं (नपुं०) कंगन, कड़ा।

करम्ब (वि०) [कृ+अम्बच्] मिश्रित, मिला हुआ, विचित्र, रंग-बिरंगा।

करम्भः (पुं०) [कर+रम्भ+घञ्] मोइन युक्त भोज्यपदार्थ, दही मिश्रित आटा।

करयुग-संयोगः (पुं०) अञ्जली, हस्त सम्पुट। (जयो० १०/१०१)

करयुग-सम्पुटः (पुं०) करकमलयुगल कलाब्जयुग्म, अञ्जलीङ्कित। (जयो० २०/८५)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करऋहः (नपुं०) नख, नाखून।

करवारः (पुं०) १. तलवार, आस, खड्ग। 'कुरुते करवार एतस्य' (जयो० ६/६८) २. कर एव वारो-बालकः (जयो० वृ० ६/६८)

कर-वारिरुह (पुं०) हस्त-कमल, पद्म सदृश कर/हस्त। 'कर एव वारिरुह तस्मिन् करकमले((जयो० वृ० १२/५५)

करवालः (पुं०) तलवार, असि (जयो० ६/८०) 'कर वालवारिधारा यमुनास्य' (जयो० ६/१०७)

करवालजालः (पुं०) १. असिवर, २. किरण समूह। (जयो० १५/६६)

करवीरः (पुं०) असि, तलवार।

कर-व्यापारः (पुं०) १. कृत कर्म, २. हस्त-व्यापार, हाथ बढ़ाना। क्षणादुदीरयन्नेवं करव्यापारमादरात् (सुद० ७८)

करशाखा (स्त्री०) अंगुली, करशिखा। (जयो० १८/९४)

करशिखः (पुं०) कर शिखा, अंगुली। (जयो० १८/९४)

करशीकरः (पुं०) १. जलबिन्दु, २. हस्तिसुंड पर प्रवाहित जलकण।

करशूकः (पुं०) नख, नाखून।

कर-सन्निपातः (पुं०) १. हस्तप्रयोग, हाथ का स्पर्श, २. रश्मिसंसर्ग। (जयो० १७/८९) ३. कर-निर्धारण, राजस्व निर्धारण। 'बभूव राज्ञा कर-सन्निपातः' (जयो० १७/८९)

कर-संयोजनं (पुं०) १. पाणिग्रहण, विवाह। समयात् स महायशाः स्थितिं करसंयोजन-कालिकीमिति। (जयो० १०/५) २. कर निर्धारण।

कर-संयोजन-कालिकी (स्त्री०) पाणिग्रहण समयोचिता, विवाहकालिक। (जयो० १०/५)

कर सम्पर्कः (पुं०) १. हस्तग्रहण, हथलेवा, २. किरण संसर्ग। (जयो० १२/६२)

करसादः (पुं०) क्षीणप्रभा, हतकिरण, क्षतकान्ति।

करसूत्रं (नपुं०) कंगन, विवाह सूत्र।

करस्थ (वि०) हाथ में स्थित। (जयो० २/१४०)

करस्थ-कञ्जं (नपुं०) हस्तस्थित क्रीडा कमल। 'करस्थं यत्कञ्जं' (जयो० वृ० २/१४०)

करस्वामिन् (पुं०) १. किरण/तेज युक्त शिव।

करस्वनः (पुं०) तालियां, करताल शब्द, करतलध्वनि।

करहाटः (पुं०) [कर+हट्+णिच्+आ] शल्यद्रुम, कमलकन्द करहाटोऽब्जकन्देऽपि शल्यद्रौ कुसुमान्तरं' इति वि०

कराग्र (वि०) कर में अग्रभाग। (जयो० २१/२६) (वीरो० ८/६)

कराधिकत्व (वि०) १. प्रबल रूपत्व, रूप की अधिकता। २. रश्मिरूप, किरण प्रभालता। ३. हस्त प्रबलता। 'कराधिकत्वेन यथोत्तरं तराम्' (जयो० ३/९३) 'कराणां रश्मीनां हस्तानां चाधिकत्वेन प्रबलरूपत्वेन' (जयो० वृ० ५/९३)

कराधराङ्घ्रिः (स्त्री०) कर, अधर एवं चरण। (जयो० ५/८८) 'करौ चाधरौ च अङ्घ्री च' (जयो० वृ० ५/८८)

कराम्बुरुहः (पुं०) हस्त कमल, पद्म सदृश हाथ। 'मुकुलितात्मक-राम्बुरुहद्वयः'

कराल (वि०) [कर+आ+ला+क] भीषण, भयावह, भयंकर, भयदायक, सुभैरवैः सैन्यरवैः, २. उत्तुंग, उन्नत, ऊँचा। कराल-वाचाल-वक्त्रैरिव पृच्चकार' (जयो० ८/६)

कराल-वाचालः (पुं०) भयंकर आक्रमण।

करालम्बः (पुं०) हस्ताधार, हाथ का सहारा। (वीरो० ५/३७) 'करालानि भयदायकानि च वाचालानि वाग्बहुलानि' (जयो० वृ० ८/६)

करालिकः (पुं०) १. वृक्ष, तरु, २. असि। 'कराणां करसदृश-शाखानां आलिः श्रेणी यत्र'

करावलम्बार्थ (वि०) हस्तावलम्बन देने के लिए, हाथ के आधारभूत बनने के लिए। (जयो० १४/५७) 'करावलम्बार्थ-मिहायातां'

कराशी (स्त्री०) अधिभार की आशा, अंश भाग की अभिलाषा। 'करस्य नाम पृथिव्याः षष्ठांशस्या शीर्षस्य स कराशी' (जयो० २२/९०)

करिका (स्त्री०) [कर+अच्+ङीप् कन्+टाप्] खरोंच।

करिणी (स्त्री०) [कर+इनि+ङीप्] हथिनी।

करिणी (वि०) करने वाली। (सुद०)

करिन् (पुं०) [कर+इनि] हस्ति, गज, हाथी। (जयो० ६/२४)

करिकुंभः (पुं०) हस्ति, मस्तक, हस्तिकुम्भ।

करिकुलं (नपुं०) हस्ति समूह, गजकुल।

करिकुल-परिहरणं (नपुं०) गजकुल को पराजित करना। 'कारिकुलं हस्तिसमूहस्तस्य परिहरणं' (जयो० १२/१०७)

करि-वार्जनं (नपुं०) हस्ति गर्जन, गज चिंघाड़।

करि दंतः (पुं०) हाथी दांत।

करिदंष्ट्रः (पुं०) हस्ति दंत।

करिपः (पुं०) महावत, हस्ति संचालक।

करिपुरं (नपुं०) हस्तिनापुर नगर विशेष। करिपुर के राजा जयकुमार। (जयो० ९/४९)

करिपोतः (पुं०) हस्तिशाव, हस्तिशावक, छोटा हाथी।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करिबन्धः (पुं०) हस्तिबन्ध, हाथी के बांधने का साधन।

करिमत्तः (पुं०) हस्ति उन्माद।

करिमाचलः (पुं०) सिंह।

करिमुखः (पुं०) गजमुख, गणपति, गणेश।

करिराट् (पुं०) हस्तिराज, एरावत, हाथी।

करिराज (पुं०) हस्तिराज, उत्तम हाथी, करिवर, श्रेष्ठगज। 'करिराडिव पूरयन्महीमपि' (सुद० ३/६)

करिवरः (पुं०) उत्तम हाथी, ऐरावत इन्द्र, हस्ति।

करिवरेन्द्रः (नपुं०) ऐरावत हाथी।

करिवाहनं (नपुं०) १. हस्ति वाहन। हाथी पर सवार। २. सूर्य। 'करिवाहनं नाम सूर्यमेव' (जयो० वृ० २०/४८)

करि-वैजयन्ती (स्त्री०) हस्ति ध्वज, हस्ति पर लगा ध्वज।

करिस्कंधः (पुं०) हस्ति यूथ, हाथियों का झुण्ड, करि-समूह।

करिष्णु (वि०) सम्पादयत्री, करने वाली, (जयो० ३/१०१)

करीन्द्रः (पुं०) एरावत, गजराज।

करीरः (पुं०) [कृ+ईरन्] कैर वृक्ष, कांटेदार वृक्ष, १. अंकुर।

करीशः (पुं०) हस्ति, गजराज, एरावत। (जयो० ८/४१)

करीश्वरः (पुं०) गजराज, एरावत हस्ति।

करीषः (पुं०) [कृ+ईषन्] कंडा, सूखा गोबर, उपले।

करीषङ्कषा (स्त्री०) [करीष+कष्+खच्] तेज वायु, प्रचण्ड पवन, तीव्र हवा।

करीषिणी (स्त्री०) [करीष+इनि+ङीप्] लक्ष्मी, सम्पदाधिकारिणी देवी।

करुण (वि०) दयनीय, मार्मिक, चिन्तनीय, विचारणीय। 'करोति मनः आनुकूल्याय, कृ+उनन्=करुण।

करुणः (पुं०) १. दया, कृपा, अनुकम्पा। २. रसवृक्ष, वनखण्ड (जयो० वृ० २१/३२) 'करुणस्तु रसे वृक्षे' इति (जयो० वृ० २१/९२) ३. करुण शोक, रंज, विलाप।

करुणरसः (पुं०) नौ रसों में एक रस, जिसमें इष्ट-वियोग, बन्धन, वध, व्याधि, मरण और परावर्तन का भय रहता है, इसमें शोक, विलाप, म्लालना और रुदन का समावेश होता है।

करुणा (स्त्री०) दया, अनुकम्पा, कृपा, कोमलभाव, मैत्रीभाव, सामञ्जस्य जिसमें दूसरे के दुःख-शान्त करने का भाव रहता है। (सम्य० ७७)

करुणाकर (वि०) अनुकम्पा करने वाला, दयाशील।

करुणाधर (वि०) दयादृष्टि धारक।

करुणानिधिः (स्त्री०) दया का सागर।

करुणान्वित (वि०) दया सहित। (जयो० २१/३२)

करुणामय (वि०) कृपाशील, दयालु।

करुणापरायणं (नपुं०) करुणाशील। (वीरो० १९/२३)

करुणाविमुख (वि०) कृपा रहित, दया रहित।

करुणापरत्व (वि०) करुणाशील (वीरो० २२/२५)

करुणासु-परायणः (पुं०) करुणा में तत्पर। (जयो० १३/४७)

करुणैकशाणः (नपुं०) ०दयापरक, ०दयायुक्त। पुनः प्रतिप्रातरिदं ब्रुवाणः, बभूव भद्रः करुणैकशाणः।' (समु० ३/३३)

करेटः (पुं०) [करे+अट्+अच्] नाखून, नख-अंगुली का नख।

करेणुः (पुं०) ०हस्ति, ०गज, ०हाथी, ०करि। ०कृ+एणु+करेणु-के-मस्तके रेणुं प्रक्षेपते।
'परः वरेणात्मनि रेणुभारं भूयः क्षिपन् सङ्कलितादरेण। निरुक्तवान् सम्यगिहेभराजः, करेणुरित्याह्वयमात्मनीनम्।' (जयो० १३/१०३)
'करेणस्तु बसायां स्त्री कर्णिकारेभयो, पुमान् इति विश्वलोचनं, (जयो० १३/१०३)

करेणुः (स्त्री०) हथिनी।

करेणुजानि (पुं०) हस्ति, हाथी। मन्दबिन्दुपदंन कारणानि द्विपतां दुर्यशसे करेणुजानिम्। (जयो० १२/८०)

करेणुभूः (पुं०) हस्ति विज्ञान प्रवर्तक।

करोटं (नपुं०) [क+रुट्+अच्] १. खोपड़ी, मस्तक, खप्पर। २. कपाल, कटोरा, पात्र।

करोटिः (स्त्री०) कपाल, खोपड़ी, कटोरा, पात्र, भिक्षापात्र।

करोपलब्धिः (स्त्री०) पाणिग्रहण, विवाह। (जयो० १२/५७)

करोपलब्धिकालः (पुं०) विवाह समय। 'करोपलब्धिकालो विवाहसमयः सम्यक् शोभनोऽभूत्' (जयो० वृ० १२/५७)

करोपलम्भनश्चक्रबन्धः (पुं०) विवाह-वर्णन करने वाला चक्रबन्ध/सर्ग/अध्याय। (जयो० वृ० १२/१४७)

कर्कः (पुं०) [कृ+क] १. केंकड़ा, २. अग्नि, ३. जलकुम्भ, ४. दर्पण, ५. श्वेत अश्व, ६. कर्कराशि विशेष। (जयो० १७/५६)

कर्कटः (पुं०) [कट+कट्+इन्] ककड़ी। १. केंकड़ा। (वीरो० ७/११)

कर्कटी (स्त्री०) [कर+कट्+ङीप्] ककड़ी।

कर्णन्दुः (स्त्री०) १. बन्धुवर्ग, २. कमल। 'कर्कन्दुः साक्षरे शके वारिजाते गुदामये।
कुमुदं कैरवे क्लीबं कृपणे कुमुदन्यवदिति कोषा। (जयो० वृ० ६/९६)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कर्कन्दुगणः (पुं०) १. बन्धुवर्ग, २. पद्यसमूह। १. कर्कन्दूनां साक्षराणं गणे, २. कर्कन्दूनां कमलानां गणः। कुमुदाशयः कैरववर्गो विकसति। (जयो० वृ० ६/९६)

कर्कन्धुः (पुं०) [कर्क-कण्टकं दधाति-धा+कू] उन्नाव वृक्ष।

कर्कर (वि०) [कर्क+रा+क] १. कठोर, दृढ़, शक्तिशाली, २. हथौड़ा, ३. दर्पण, ४. हड्डी, ५. खप्पर। ६. चमड़े का पट्टा।

कर्कराक्षः (वि०) हिलती पूंछ वाला पक्षी, खंजन पक्षी।

कर्करांगः (पुं०) खंजन पक्षी।

कर्करांधुकः (पुं०) अन्धक्कूप।

कर्कराटुः (पुं०) कटाक्ष, तिरछी दृष्टि। [कर्क हास रटति प्रकाशयति कर्क+रट्+कुञ्]

कर्करालः (पुं०) [कर्कर+अल्+अच्] चूर्ण कुंतल, घुंघराले केश।

कर्कराशिः (स्त्री०) कर्कराशिः। (जयो० वृ० १७/५६)

कर्करी (स्त्री०) छिद्रयुक्त पात्र।

कर्कश (वि०) [कर्क+श] कठोर, दृढ़, शक्तिशाली। (जयो० १२/५४) १. निष्ठुर, क्रूर, क्रोधी, निर्दय, दया रहित, २. प्रचण्ड, प्रबल (जयो० १३/८) 'रोमांच भरेण कर्कशौ'।

कर्कश (वि०) कठोरपरिणामी, निर्दय स्वभावी। (जयो० वृ० १७/३३)

कर्कशिवा (स्त्री०) [कर्कश+कन्+टाप्] अरण्य बेर, जंगलीबेर, झडबेर, ०चनबेर।

कर्किः (स्त्री०) [कर्क+इन्] कर्क राशि।

कर्कोटः (पुं०) [कर्क्+ओट] कर्कोट सर्प।

कर्चूरः (पुं०) [कर्ज्+ऊर] सुगन्धित तरु।

कर्ण् (अक०) १. छेद करना, सुराख करना, भेदना। २. सुनना।

कर्णः (पुं०) कान, [कर्ण्यते आकर्ण्यते अनेन-कर्ण्+अप्] श्रवण, श्रवणेन्द्रिय, कर्णेन्द्रिय, पांच इन्द्रियों में अन्तिम इन्द्रिय/करण। शरीर की पहचान का एक अवयव। 'कर्णौ सवर्णौ प्रतिदेशमेष' (जयो० १/६२)

कुत्सित ऋण, कुत्सित ऋण को दूर करने के लिए (जयो० वृ० २०/७४)

एक योद्धा विशेष। (कर्णरज, वीरो० ९/१९) 'स कर्ण-वत्कम्पकरं च योगिन्'

कर्णकञ्जं (नपुं०) कर्णपुष्प, कर्णभूषण। कमल रूपी कर्णभूषण। (जयो० १७/६६)

कर्ण-कण्डूति (स्त्री०) कर्णखर्जन, कान की खुजली। 'कर्णस्य कण्डूति खर्जनम्' (जयो० ६/८९)

कर्णक्ष्वेडः (पुं०) कर्ण में गूंजना, निरंतर कान में आवाज होना।

कर्णगोचर (वि०) कर्ण में सुनाई पड़ना, कर्ण श्रवण।

कर्णग्राहः (पुं०) कर्णाधार, कर्णधार।

कर्णजप (वि०) पिशुन, चुगलखोर।

कर्णजपः (पुं०) निन्दा करना, झूठी बात कहना।

कर्णजापः (पुं०) कलंक लगाना, निन्दा करना।

कर्णजित् (वि०) श्रवण विजेता, अर्जुन, पाण्डुपुत्र अर्जुन।

कर्णत्वर (वि०) दुत्सित ऋण। (जयो० २०/७४)

कर्णदेशः (पुं०) कर्णप्रान्त, कर्णभाग। 'स्वामि-कर्णदेशेऽप्यपूरयद्' (जयो० ९/९४)

कर्णधारः (पुं०) कर्णप्रान्त, कर्णभाग, कर्णदेश, २. कर्णतक खिंचे हुए। 'तरल-तरीपविशिष्टोऽनुकर्णधाराशुगेन सन्तरति।' (जयो० ६/६६) ३. नौकासञ्चालक (जयो० वृ० ६/६६) चालक, मल्लाह।

कर्णधारिणी (स्त्री०) १. हथिनी, २. सञ्चालिका।

कर्णपथः (पुं०) कर्णमार्ग, कर्णप्रान्त, कर्णदेश, कर्णभाग, श्रवणगत श्रवणपरास। (जयो० ४/५३) 'येन कर्णपथतो हृदुदारमेत्य' (जयो० ४/५३)

कर्णपरम्परा (स्त्री०) जनश्रुति, श्रवणश्रुति, लोक परम्परा।

कर्णपालिः (स्त्री०) कर्णफूल, कान की लौंग।

कर्णपाशः (पुं०) मनोरम कर्ण।

कर्णपुटः (पुं०) कर्णमार्ग, श्रवण पथ। 'स्तवीमि या कर्णपुटेन गत्वा' (जयो० ११/७६)

कर्णपूरः (पुं०) १. शिरीषवृक्ष, अशोक वृक्ष। (जयो० २१/३०)

कर्णपूर-परिणामः (पुं०) १. शिरीष वृक्ष के प्रकार। (जयो० वृ० २१/३०) २. कर्णपूराणां-शिरीषाणां 'कर्णपूराणां-कर्णभूषणानां (जयो० वृ० २१/३०)

कर्णपूरकः (पुं०) कर्णाभूषण, कर्ण के गोलाकार भूषण, बाली। २. अशोक वृक्ष, शिरीषवृक्ष। ३. नीलकमल।

कर्णप्रान्तः (पुं०) कर्णदेश, कर्णभाग, श्रवणपथ।

कर्णभूषणं (नपुं०) श्रवणशृंगार, कर्णालंकरण, अवतंसोत्पल। (जयो० वृ० १०/६५)

कर्णभूषा (स्त्री०) कर्णाभूषण।

कर्णमूलं (नपुं०) कर्ण प्रान्त, कान का मूल हिस्सा।

कर्णराज (पुं०) कर्ण राजा (वीरो० ९/१९)

कर्णरोगोपहार (वि०) कर्ण/श्रवण रोग का नाशक। 'ओं ह्रीं अर्हं अणंतोहि जिणाणं इत्यादिना मन्त्रेण कर्णरोगोपहारो भवति। (जयो० वृ० १९/६१)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कर्णवंशः (पुं०) मचान, बांसों का बना मंच।
कर्णवर्जित (वि०) श्रवण विहीन।
कर्णवर्जितः (पुं०) सर्प विशेष।
कर्णविवरं (नपुं०) कर्णप्रान्त, कर्णछिद्र, श्रवण मार्ग।
कर्णविष (स्त्री०) कान का मैल।
कर्णवेधः (पुं०) कर्णछेदन।
कर्णवेष्टः (पुं०) कर्णाभूषण, कर्ण के वृत्ताकार भूषण।
कर्णवेष्टनं (नपुं०) कर्णाभूषण।
कर्णशष्कुली (स्त्री०) कान का बहिर भाग, सम्पूर्ण कर्ण परिधि।
कर्णशूलः (पुं०) श्रवण रोग, कर्ण पीड़ा, कर्ण कष्ट।
कर्णश्रव (वि०) उच्च स्वर।
कर्णश्रावः (पुं०) कानों का बहना, कानों से मवाद निकलना।
कर्णहीन (वि०) कर्णरहित, श्रवणरहित, चतुरिन्द्रिय जन्तु।
कर्णहीनः (पुं०) सर्प।
कर्णाकर्णि (वि०) कानों कान, एक कर्ण से दूसरे कर्ण तक। 'कर्णे कर्णे गृहीत्वा प्रवृत्तं कथनम्'
कर्णाटः (पुं०) १. कर्णाट राजा 'कर्णावटन्ति गच्छन्ति कर्णाटा भवन्ति' (जयो० ६/८५) ३. कर्णाटक देश (जयो० वृ० ६/८५)
कर्णाटी (स्त्री०) कर्णाटकी स्त्री।
कर्णान्दूकः (पुं०) कर्णाभूषण। (जयो० १८/१०७)
कर्णोलङ्करणं (नपुं०) १. कर्णाभूषण। २. श्रवण रुचिपूर्वक।
कर्णिक (वि०) [कर्ण+इकन्] १. कानों वाला, २. पतवार धारक।
कर्णिकः (पुं०) केवट।
कर्णिकारः (पुं०) [कर्णि+कृ+अण्] कनेरवृक्ष, कनियार वृक्ष।
कर्णिकारं (नपुं०) अमलतास वृक्ष, कनेर वृक्ष।
कर्णिन् (वि०) [कर्ण+इनि] कानों वाला, कर्ण युक्त।
कर्णी (स्त्री०) [कर्ण+ङीप्] पंख युक्त बाण।
कर्णीरथः (पुं०) डोली, स्त्रियों को ले जाने वाला वाहन।
कर्णेजपः (पुं०) पिशुन, चुगलखोर। (वीरो० १/१८) 'कर्णेजपं यत्कृतवानभूस्त्वम्' (वीरो० १/१८)
कर्णोत्पलः (पुं०) कर्णफूल। (वीरो० ९/३७)
कर्तनं (नपुं०) [कृत्+ल्युट्] काटना, कतरना, व्यत्ययन (जयो० २१/१३)
कर्तनी (स्त्री०) [कर्तन+ङीप्] कैंची।
कर्तरिका (स्त्री०) १. कैंची, २. चाकू, ३. कटार, छोटी तलवार। (मुनि० ८)
कर्त्तरी (स्त्री०) कैंची। (वीरो० १७/४)
कर्त्तव्य (सं०कृ०) [कृ+तव्यत्] १. कार्य का सम्पादन, उचित होना। (जयो० १/१०९) २. कतरने योग्य।
कर्त्तव्य (सं०कृ०) [कृ+तव्यत्] आवश्यक करणीय कार्य, किन्तु परोपरोधकरणेन कर्त्तव्याध्वनि किमु न सरामि।' (सुद० ९२) 'कर्तव्यता भव्यताकामी' (सुद० ७३)
कर्त्तव्यकार्यः (पुं०) करणीय कार्य। (जयो० १६/४)
कर्त्तव्यपथं (नपुं०) कार्य योग्य मार्ग (दयो० १८) 'तथापि कर्तव्यपथाधिरोह' (समु० ३/७)
कर्त्तव्यपूर्तिः (स्त्री०) पूर्णता, कर्त्तव्यसंहति। (दयो० १/१६)
कर्त्तव्यविमूढ (पुं०) कार्य में आसक्त होना। (सुद० ९३)
कर्त्तव्यशास्त्रं (नपुं०) हित संहिता शास्त्र (जयो० २/१)
कर्त्तव्यशीलता (वि०) कर्मवर भाव, किंकरता। (जयो० वृ० २०/७४)
कर्त्तव्यसंहति (स्त्री०) कर्तव्यपूर्ति, कार्य की सम्पूर्णता। (दयो० १०६)
कर्त्तव्यहानि (स्त्री०) कर्तव्यनाश (वीरो० १६/१५)
कर्तृ (वि०) [कृ+तृच्] कर्ता, निर्माता, करने वाला, सम्पादक, रचनाकार, तत्कर्ता स्यात्किमु नात:। (जयो० सुद० ११४)
कर्ता (वि०) करने वाला, जगत् का कोई ईश्वरादि कर्ता धर्ता होता तो फिर जौ के लिए जौ बौना व्यर्थ हो जाता, क्योंकि वही ईश्वर के बिना ही बीज के जिस किसी भी प्रकार से जौ को उत्पन्न कर देता। फिर कार्य को उत्पन्न करने के लिए उसके कारण-कलापों के अन्वेषण की क्या आवश्यकता रहती? (वीरो० १९/४२)
यथार्थ में इस संसार का कोई कर्ता या नियन्ता ईश्वर नहीं है। एक मात्र समय की ही ऐसी जाति है कि जिसकी सहायता से प्रत्येक वस्तु में प्रतिक्षण नवीन नवीन पर्याय उत्पन्न होती रहती हैं और पूर्व पर्याय विनष्ट होती रहती है। इसके सिवाय संसार में कोई कार्यदूत अर्थात् कार्य कराने वाला नहीं है। न कोऽपि लोके बलवान् विभाति समस्ति चैका समस्य जातिः। यतः सहायाद्भवतादभूतः परो न कश्चिद्भुवि कार्यदूतः।। (वीरो० १८/२)
कर्त्री (स्त्री०) [कर्तृ+ङीप्] चाकू, कैंची, कर्तुं-तुमन्-करने के लिए (सम्य० ४१)
कर्दः [कर्द्+अच्] कीचड़, मिलान, पङ्क।
कर्दम (पुं०) [कर्द्+अम्] पङ्क, कीचड़, मलिन, मल, पाप। 'कर्दमे हि गृहिणोऽखिलाञ्जलाः' (जयो० २/१९)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कर्दम-बाहुल्य (वि०) कीचड़ की बहुलता, पङ्किलत्व, फिसलन की बहुलता। (जयो० ११/४)

कर्दमयुक्त भूमि: (स्त्री०) कर्दमित धरा, पंक से युक्त धरा। (जयो० वृ० २३/६३)

कर्दमिधरा (स्त्री०) कर्दम सहित भू-भाग, पंक बहुल भू। (जयो० २३/६७)

कर्पट: (पुं०) १. जीर्ण, पुराना वस्त्र। २. कपड़े का टुकड़ा, धजी, धज्जी, चिंदी।

कर्पटिक (वि०) [कर्पट+ठन्] पुराने कपड़ों से आच्छादित।

कर्पणं (नपुं०) [कृप्+ल्युट्] आयुध विशेष, अस्त्र विशेष।

कर्पर: (पुं०) [कृप्+अरन्] कड़ाही, पात्र, ठप्पर, ठीकरा।

कर्पास: (पुं०) कपास वृक्ष।

कर्पासत्वच: (पुं०) तूल, रुई। (जयो० वृ० ३/३)

कर्पूर: (पुं०) [कृप्+ऊर्] कपूर, हिमसार, घनसार। (जयो० वृ० ११/२१) 'कृष्णागुरुचन्दन-कर्पूरादिकमय' (सुद० ७२)

कर्पूर-गंध: (पुं०) घनसार सुरभि।

कर्पूरतैलं (नपुं०) कपूर तैल।

कर्पूरवास: (पुं०) कपूर गन्ध।

कर्पूर-सुरभि: (स्त्री०) कपूर गन्ध।

कर्पर: (पुं०) [कृ+विच्-कर्-फल+अच्] दर्पण, शीशा-कीर्यमाण: फल: प्रतिबिम्बो यत्र।

कर्बुर (वि०) चितकबरा, रंग-बिरंगा।

कर्बुर: (वि०) चितकबरा, रंग-बिरंगा।

कर्बुरं (नपुं०) कृष्णवृन्तवृक्ष, औषधिलता। कर्बुरा कृष्णवृन्ताणां जले हेम्नि च कर्बुरम्' इति वि (जयो० २१/३३)

कर्बुरासा: (पुं०) १. सुवर्ण, २. जल समूह। (जयो० ३/७६)

कर्बुर: (पुं०) १. धतुरा, २. अशुभपरिणति, ३. पिशाच, ४. स्वर्ण, ५. जल।

कर्बुरित (वि०) [कर्बुर+इतच्] रंग-विरंगा।

कर्मठ (वि०) [कर्मन्+अठच्] प्रवीण, चतुर, निपुण, परिश्रमी। संलग्नशील।

कर्मठ: (पुं०) धार्मिक विधि विशेषज्ञ, निदेशक।

कर्मन् (नपुं०) [कृ+मनिन] कर्तुरीरिसततमे वर्तते, ०कर्म, ०कार्य, ०व्यवसाय, ०पद, ०कर्त्तव्य ०धार्मिक कृत्य। क्वचित् पुण्यापुण्यवचन: कुशलाकुशलं कर्म (आप्त मीमांसा ८) नृराडास्तां विलम्बेन भुवि लम्बेन कर्मणा। (सुद० ७८) उक्त पंक्ति में 'कर्म' का अर्थ कार्य, काम है।

धार्मिक कृत्य-सम्पठन्ति मृगचर्म शर्मणे चौर्णवस्त्रमथवा सुकर्मणे। (जयो० २/८९)

कर्मफल-'को दोषस्तव कर्मणो मम स वै सर्वे जना यदवशे' (सुद० ११०) फलं सम्पद्यते जन्तोर्निजो- पार्जित- कर्मण: (सुद० १२५) 'कर्माख्ययापुद्‌गलमङ्गिनात्तमङ्गी तिजीवंतदिराभ्युपात्तम्' (समु० ८/७) कर्मो से युक्त जीव का नाम अङ्गी और उस अङ्गी के द्वारा प्राप्त किए हुए पुद्‌गल का नाम कर्म है। वे घाति और अघाति हैं। भाग्य, गति, सक्रियता, अनुष्ठान आदि कर्म के नाम हैं।

आत्म परिणाम, योग लक्षण भी कर्म है-'आत्म-परिणामन योग भावलक्षणेन क्रियते इति कर्म:' (त० वा० ५/२४) कर्म क्रिया का भी नाम है, 'देशात् देशान्तर प्राप्तिहेतु: परिस्पन्दात्मक: परिणामोऽर्थस्य कर्म' (न्याय०वृ०७/२८१) कर्म-आजीविका के रूप में भी प्रचलित है।

क्षत्रियाणां प्रवर्त्थमेतद्वितयमर्माङ्कितम्। कृषिकर्म च वाणिज्यं, वैश्यानां भूतवृनये।। (हित०सं०वृ०९) प्रत्येक वर्ग के अलग-अलग कर्म हैं-

१. क्षत्रिय कर्म-रक्षा भाव।

२. वैश्यकर्म-वाणिज्य।

३. शूद्रकर्म-हस्त-शिल्प-कौशल।

४. ब्राह्मण-कर्म-ज्ञानदान।

कर्मक: (पुं०) सेवक, भृत्य, कार्मिक। (जयो० २१/२५९) 'कामस्यादेश कारकेण' (जयो० ११/१२)

कर्मकरभाव: (पुं०) कर्तव्य परायण। (जयो० २०/७४)

कर्मकर्तु (पुं०) १. कर्म कर्ता, २. कर्ता कर्म से युक्त पद।

कर्म-करी (स्त्री०) भृत्या, सेविका। किंकरणी, कर्मकारिणी, कर्मचारिणी, नौकरानी। (जयो० ११/३९)

कर्म-कलङ्क: (पुं०) कार्य दोष, भाग की प्रतिकूलता- 'प्रधृतकर्मकलङ्कहराध्वने' (समु० ७/१७) 'वागुत्तमा कर्मकलङ्कजेतु:' (सुद० १/२)

कर्मकाण्ड: (पुं०) श्रोत्रिय, वैदिकब्राह्मण, वैदिक क्रिया करने वाले। (जयो० ३/१६)

कर्मकाण्डप्रतिपादकशास्त्रं (नपुं०) वैदिकशास्त्र, अनुष्ठानविधि शास्त्र। (जयो० वृ० ३/१६)

कर्मकार: (पुं०) शिल्पकार, कारीगर, वास्तुविद।

कर्मकारिन् (वि०) काम को करने वाला।

कर्मकारिणी (स्त्री०) सेविका, भृत्या (जयो० ११/९९)

कर्मकार्मुक: (पुं०) धनुप विशेष।

कर्मक्रिया (स्त्री०) निम्नकार्यकारक।

कर्म-कीलक: (पुं०) रजक, धोबी।

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कर्मक्रीडकः (पुं०) कामी पुरुष।

कर्मकृत् (वि०) आजीविका करने वाला।

कर्मकृतिः (स्त्री०) पाप कर्मों की त्वचा। 'कर्माणां दुरितानां कृत्तिस्त्वचा'।

कर्मक्षपका (वि०) कर्मक्षपक। (जयो० वृ० २७/५)

कर्मक्षम (वि०) कार्य में योग्य, कर्तव्यनिष्ठ।

कर्मक्षयः (पुं०) कर्म/अष्ठकर्म नाशक सिद्ध। (सुद० ९६)

कर्मक्षयकारणं (नपुं०) कर्म नाश का कारण। (सुद० ९५)

कर्मक्षयसिद्धः (पुं०) कर्म का क्षय करके सिद्ध होने वाला, कर्मविमुक्त सिद्धात्मा।

कर्मक्षेत्रं (नपुं०) कर्मप्रधान स्थान, कर्मभूमि।

कर्मगृहीत (वि०) कार्य को ग्रहण करने वाला।

कर्मघातः (पुं०) १. कर्म को छोड़ना, कार्य से विमुख, २. अष्ठकर्म का नाश।

कर्मचारिणी (स्त्री०) सेविका। (जयो० वृ० ११/९९)

कर्मचेतना (स्त्री०) अन्य का अनुभव करना। 'तत्र ज्ञानादन्यत्रेदमहं करोमीति चेतनं कर्मचेतना' (समयसार अमृत टी० ४/८)

कर्मचेष्टा (स्त्री०) कार्य की गति, कर्त्तव्यभाव।

कर्मज्ञ (वि०) कर्म कर्ता, धार्मिक अनुष्ठान कर्ता।

कर्मजा (स्त्री०) कर्म से उत्पन्न, गुरु बिना उत्पन्न बुद्धि। 'उवदेसेण विणा तवविसेसलाहेण कम्मजा तुरिमा। (ति०प०४/१०२१)

कर्मजाबुद्धिः (स्त्री०) कर्मज बुद्धि। औषधि सेवन के बल से जो प्रज्ञा उत्पन्न होती है। 'ओसह-सेवा बलेणुप्पण्ण-पण्णा वा' (धव० ९/८२) कर्मजाप्रज्ञा (स्त्री०) कार्मज बुद्धि।

कर्म-जातिः (स्त्री०) कार्य का उत्पत्ति।

कर्मज्योतिः (स्त्री०) कार्य का प्रकाश।

कर्मठः (पुं०) शूरवीर, शक्ति सम्पन्न, बलिष्ठ। 'कर्मठ कर्मशूरः कर्माणि घटते' (जैन०ल०३२०)

कर्मत्यागः (पुं०) कर्तव्य त्याग, कर्म छोड़ना।

कर्मत्यागिन् (पुं०) कर्म/अशुभ कर्म का त्याग करने वाला।

कर्मत्व (वि०) कर्म में रहने वाला धर्म।

कर्मदलिक (वि०) कर्म का विघातक, कर्म विदीर्णक।

कर्मद्रव्यं (नपुं०) कर्म रूपता युक्त द्रव्य, पुद्गलद्रव्य को प्राप्त कर्म।

कर्मद्रव्य पुद्गलपरावर्तनं (नपुं०) कर्म रूप, पुद्गल द्रव्यों का परावर्तन।

कर्मद्रव्यभावः (पुं०) अज्ञानादि भाव, ज्ञानावरणादि द्रव्य कर्म में अज्ञानादि उत्पन्न करने की शक्ति।

कर्मद्रव्यसंसारः (पुं०) अष्ठकर्म रूप पुद्गलों का संसरण।

कर्मदुष्ट (वि०) दुराचारी, पापी, अधम।

कर्मदोषः (पुं०) दुर्व्यसन, पाप, अशुभ परिणाम।

कर्मधर (वि०) कर्म का धारक, कार्य करने वाला।

कर्मधारयः (पुं०) १. समास, विशेष। 'परस्पर विशेष-विशेष्यतया कर्मधारय-समासः' (जयो० वृ० ५/४७)

कर्मध्यानं (नपुं०) १. कार्य के प्रति दृष्टि। २. अशुभ प्रवृत्ति का ध्यान, आर्तरौद्र प्रवृत्ति की ओर दृष्टि।

कर्मध्वंसः (पुं०) १. आठ कर्मों का नाश। २. कार्य में बाधा, निराश, नाश।

कर्मनामन् (नपुं०) कृदन्त संज्ञा।

कर्मनारकः (पुं०) नरक गति के कर्म का आना। कम्मणेरइओ णाम णिरय-गदि-सहगद-कम्म-दव्व-समूहो' (धव० ७/३०)

कर्मनिष्ठ (वि०) कर्त्तव्यनिष्ट।

कर्मनिर्हरणं (नपुं०) कर्माभाव। कर्माणां निर्हरणं (जयो० वृ० २/२२)

कर्मनिषेकः (पुं०) आबाधा काल से रहित कर्मों की स्थिति। 'आबाहूणिया कम्मट्ठिती कम्मणिसेगो' (षटखंडागम)

कर्मपथः (पुं०) कार्य दिशा।

कर्मपाकः (पुं०) कर्म की परिपक्वता।

कर्मपुरुषः (पुं०) कर्मयोगी, क्रियाशील व्यक्ति। 'कर्म अनुष्ठानं, तत्प्रधान पुरुषः कर्मपुरुषः कर्मकरादिक' (जैन ल०३२१)

कर्मप्रकृतिः (स्त्री०) कर्म की प्रकृति। अभयनंदी की रचना।

कर्मप्रवादः (पुं०) एक पूर्वश्रुत, जिसमें श्रुतज्ञान सातवा पर्व। बन्ध, उदय, उपशम एवं निर्जरा रूप अवस्थाओं का निर्देश किया जाता है, जिसमें अनुभव एवं प्रदेशों के आधारों तथा जघन्य, मध्यम और उत्कृष्ट स्थिति का निर्देश हो।

कर्मफलं (नपुं०) कृतकर्मों का परिणाम। (सम्य० ४१)

कर्मफलचेतना (स्त्री०) कर्म फल का अनुभव। 'वेदंतो कम्मफलं सुहिदो दुहिदो हवदि जो चेदा' (समयसार ४/९) 'उदयागतं कर्मफलं वेदयन्' (सम०४१९)

कर्मबन्धः (पुं०) शुभाशुभ कर्मों का बन्ध।

कर्मबन्धनं (नपुं०) जन्म-मरण रूप बन्धन, अशुभ-भावों की तल्लीनता।

कर्मभावः (पुं०) अशुभ कर्म का अनुभवन।

कर्मभूमिः (स्त्री०) शुभ-कर्म रूप उपार्जन युक्त भूमि। (जयो० २/७९) 'षट्कर्मदर्शनाच्च' षण्णां कर्मणां असि-मसि-कृषि-

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विद्या-वणिक्-शिल्पानामत्रैव दर्शनाच्च कर्मभूमिव्यपदेशः।' (त० वा० ३/३७)

कर्ममङ्गलं (नपुं०) विशुद्धि रूप कारण मांगलिक कारण, दर्शनविशुद्धि आदि कारण।

कर्ममलीयसत्व (वि०) कर्म से मलिन (भक्ति०५)

कर्ममास: (पुं०) तीस दिन-रात का महिना।

कर्ममीमांसा (स्त्री०) कर्म विवेचन का सूत्र।

कर्ममुक्त (वि०) कर्म रहित। (भक्ति० ९)

कर्ममूल (नपुं०) कर्म का आधार।

कर्मयुग: (पुं०) कर्मभूमि का युग।

कर्मयोग: (पुं०) आत्मपरिष्पन्दन का योग, सक्रिय चेष्टा, उद्यम, प्रयत्नशीलता 'कर्मणोकृतो योग: कर्मयोग: (स०सि०२/२५) 'योग: आत्मप्रदेशपरिष्पन्द:' (त० वा० २/२५) 'कर्म' कार्मणं शरीरं, कर्मैव योग: कर्मयोग:। (त०श्लो०२/२५) 'सुखं च दु:खं जगती जन्तो: स्वकर्मयोगाद् दुरितार्थमन्तो' (सुद० १११)

कर्मरङ्गतरु: (पुं०) १. कर्म रंग वृक्ष, २. कर्मरङ्गतरौ भव्य: इति वि० ३. भव्यतरु। (दयो० वृ०२१/२८)

कर्मराशि (स्त्री०) कर्मसमूह। (भक्ति०३३)

कर्मवर्गणा (स्त्री०) कर्मबन्ध की भेदरूप वर्गणा। कर्मरूप आकर (सम्य० ३४) अट्ठकम्मक्खंधवियप्पा' (धव० १४/५२)

कर्मविपाक: (पुं०) कर्म परिपाक, कर्मोदय। 'व्योम्नो यथा कर्मविपाकजात:'।

कर्मशत्रु (पुं०) कर्मारि। (जयो० १) (भक्ति०२७)

कर्मशाला (स्त्री०) कारखाना।

कर्मशील (वि०) कर्मवीर, शूरवीर, उद्यमी, परिश्रमी, क्रियाशील।

कर्मशूर (वि०) परिश्रमी, उद्यमी।

कर्मसंग (वि०) कर्म की संगति, आसक्ति की ओर प्रवृत्ति।

कर्मसचिव: (पुं०) सचिव, मन्त्री, कार्मिक।

कर्मसाक्षिन् (वि०) प्रत्यक्षदर्शी, साक्षात् देखने वाला, गवाही देने वाला।

कर्मसिद्ध: (पुं०) कर्मकुशल।

कर्मस्थानं (नपुं०) कर्मक्षेत्र, कार्यालय।

कर्मस्थिति: (स्त्री०) कर्मों की स्थिति, एक कर्म स्थिति।

कर्महानि (स्त्री०) कर्मों का उपशम।

कर्महीन (वि०) कर्मक्षीण, कर्मरहित।

कर्माचरणं (नपुं०) लौकिक सुखप्राप्ति का आचरण। (जयो० वृ० २/४)

कर्माधार: (पुं०) कर्म का आश्रय।

कर्माधिकार: (पुं०) कृतकर्मों का अधिकार।

कर्मानुदय: (पुं०) कर्म का उदय। (समु० ८/१७)

कर्मानुग् (वि०) कर्मानुगामी। (जयो० ७/४)

कर्मानुगत्व (वि०) कर्म के अनुसार गमन करने वाला। (सुद० १२१)

कर्मानुगामी (वि०) कर्म के अनुसार विचरण करने वाला।

कर्मानुरूप (वि०) कार्य के अनुरूप, कार्यानुसार।

कर्मानुसार: (पुं०) कार्य के अनुसार। (वीरो० १४/३०)

कर्मान्त: (पुं०) १. कर्म/कार्य की समाप्ति। २. काष्ठागार, धान्यागार, व्यवसाय।

कर्मान्तक (वि०) कार्य को समाप्त करने वाला।

कर्मान्तर (वि०) १. कर्म के अनुसार विचरण करने वाला। २. प्रायश्चित्त, विरोध, ३. कार्य में भिन्नता।

कर्मान्तिक (वि०) अन्तिम कर्म वाला।

कर्मान्तिक: (पुं०) भृत्य, सेवक।

कर्मात्यन् (वि०) सक्रिय, क्रियाशील।

कर्माय: (पुं०) सावद्यकर्म युक्त आर्य। कर्मों से आजीविका करने वाला।

कर्मासक्ति: (स्त्री०) कर्मों/विषयों/इन्द्रियों में तल्लीनता।

कर्मिष्ठ (वि०) परिश्रमी, उद्यमी।

कर्मेन्द्रिय: (पुं०) वचनादिक्रिया रूप कारण। कर्मेन्द्रियाणि वागादीनि वचनादि क्रियानिमित्तानि (ता०वा०२/१९)

कर्मेन्धनं (नपुं०) कर्म रूप ईंधन, अष्टकर्म के कारण रूप लकड़ियां। 'स्वकीय-कर्मेन्धन-भस्मवस्तु' (सुद० २/४०)

कर्मोदय: (पुं०) कर्म का उदय। अप्रशस्तोदय, प्रशस्तोदकर्म (सम्य० ३७) कर्म विपाक का उदय। (भक्ति०२७)

कर्मोदारं (नपुं०) साहसिक कर्म, उदारभाव युक्त कार्य।

कर्मोद्यम: (पुं०) क्रियाशील, उद्यमशील।

कर्मोद्युक्त (वि०) सक्रिय, संलग्न, तत्पर।

कर्वट: (पुं०) [कर्व्+अटन्] १. मंडी, बाजार, विपणयकेंद्र, विक्रय केन्द्र। २. सभी ओर घिरा नगर, कुत्सित नगर। 'पर्वतावरुद्धं कव्वडंणाम' (धव० १२/३३५)

कर्वटक: (पुं०) देखो ऊपर।

कर्वटकथा (स्त्री०) कुत्सित नगर सम्बन्धी कथा।

कर्ष् (अक०) सींचना, जोतना, रेखा बनाना।

कर्ष: (पुं०) सोने के तोलने का १६ मासा वजन। अड्ढाइज्जा धारणा य सुवण्णो।

कर्षक (वि०) [कृष्+ण्वुल्] खींचने वाला, जोतने वाला।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कर्षकः (पुं०) किसान, कृषक, क्षेत्र पालक। 'कर्षकः कर्षणा-सक्ता' जो खेत जोतता है। (पद्मचरित० ६/२०९)

कर्षणं (नपुं०) [कृष्+ल्युट्] खींचना, घसीटना, झुकाना, जोतना, कर्षक या कर्षण। सम्बन्धन (जयो० वृ० १३/६७) २. खेती-(दयो० ३६) 'कर्षणे खात-सम्पात-करणे सिञ्चने पुनः। (दयो० ३६)

कर्षिणी (स्त्री०) [कृष्+णिनि+ङीप्] लगाम लगाना।

कर्षूः (स्त्री०) [कृष्+ऊ] १. हल रेखा, हुड, २. नदी, ३. नगर, ४. कंडे की राख, कृषि, खेती।

कर्हिचित् (अव्य०) [किम्+र्हिल्] किसी समय, कभी भी।

कल् (सक०) १. गिनना, गणना करना, २. शब्द करना, समझना, जानना, ध्यान देना। ३. सम्पादन करना, आदर करना। 'स्वणमेव कलित-दत्तं' (जयो० वृ० २/१०) ४. स्वीकार करना-'कलितं संदधती तदा प्रशस्तम्' (जयो० १०/११३) ५. युक्त होना। 'यत्सुवर्णकलितं ललितं स्याद्' (जयो० ५/४६) ६. अनुष्ठान करना ०कल्पना करना 'कपोल-कलितेषु च भ्रमात्। (जयो० २/२६) ७. बांधना, जकड़ना, बन्धक बनाना। ८. विकलांग करना, विकृत करना।

कल (वि०) [कल्+घञ्] १. मनोहर, मधुर, स्पष्ट, उत्तम, श्रेष्ठ। 'कलं वनेऽसावरिलम्बलेन' (जयो० २४/५५) कलो-मनोहरो-(जयो० वृ० २२/७२) २. कला-(सुद० १/४४)

कलः (पुं०) कल कल शब्द, अस्पष्ट शब्द, मृदुशब्द। 'कल इति कल एवाऽऽगतो वा' (सुद० वृ०७२)

कल-कण्ठ (वि०) मधुर कण्ठ वाला।

कलकण्ठी (स्त्री०) कोयल, हंस।

कल-कलः (पुं०) १. क्षुब्ध युक्त ध्वनि, कोलाहल। 'कलकलेन कृत्वा दुष्टं वदन्तीति' (जयो० १५/१२) २. सुभाषित-वचन-'कलकलप्रायामुक्तिं प्रकुर्वति' (जयो० वृ० १८/३)

कल-कलमिषः (पुं०) कोलाहल के कारण। (दयो० १८)

कल-कलित (वि०) कलायुक्त। (सुद० १/४४)

कलकस्वभावः (पुं०) मधुर स्वभाव। (जयो० १५/१३)

कल-कान्तिकलः (पुं०) मनोहर प्रवाह, कान्ति का सुन्दर प्रवाह। 'उच्चलद-विरद-कल कान्तिकले' (जयो० २२/७२) 'कलो मनोहरो कान्तेः कलः प्रवाहो यत्र यस्मिन्। (जयो० वृ० २२/७२)

कलकूजिका (स्त्री०) छिनार, अपशब्द बोलने वाली स्त्री।

कलकूणिका (स्त्री०) अपवादी स्त्री।

कल-कोकः (पुं०) मधुर शब्द वाली कोयल, कलकण्ठी कोयल। (वीरो० ६/२९)

कलकृत (वि०) मधुर गान।

कलख (वि०) शब्द युक्त।

कलग्रहं (नपुं०) करग्रहण, पाणिग्रहण (जयो० ७/५४)

कलघोषः (पुं०) करग्रहण, पाणिग्रहण। (जयो० ७/५४)

कलघोषः (पुं०) काक, कोयल, कलकण्ठी।

कलघोषिक (वि०) मधुर शब्द करने वाली।

कलङ्कः (पुं०) [कल्+क्विप् कल् चासौ अङ्कश्च] १. दूषण, ०दोष, ०मलिन, ०मैल, ०पाप, ०अपराध, ०कालाक्षर। (जयो० ६/१४) सकलङ्क पृषदङ्कः स क्षयसहितः सहजेन। (सुद० ८७) २. कालिमा, धब्बा, दाग। ३. लोहे की जंग। कलङ्ककला (सुद० ७१)

कलङ्क रूपा (स्त्री०) कुत्सित रेखा, तिरछी रेखा।

कलङ्करेखा (स्त्री०) दूषण रेखा। तस्यैव कलङ्करेखा। (जयो० १५/७०)

कलङ्कलेशः (वि०) दोषवर्जित, दोषरहित, राग-द्वेषादि विहीन। 'भूमावहो वीतकलङ्कलेशः' (वीरो० ३/४) 'कलङ्कस्य दूषणस्य लेशो यस्मात्स दोषवर्जितः। (वीरो० वृ०३/४)

कलङ्कषः (पुं०) [कल+कष्+खच्] सिंह, शेर मृगराज। करेण कषति हिनस्ति।

कलङ्कित (वि०) [कलङ्क+इतच्] लांछित, चिह्नित, दोष युक्त।

कलङ्किन् (वि०) १. कलंक वाले १. के सूर्ये विषये बलकारि मात्रा सा न विद्यते। (जयो० वृ० १५/४१) २. के जले पर्यन्तता सम् द्रसद्भावात् लङ्का नाम नगरी। (जयो० वृ० १५/४१) ३. सदोषी-कलिरूपायामागमाज्ञया कृत्वा कलङ्किनः' (जयो० वृ० १५/४२)

कलङ्की (वि०) सद् विवेक रहित 'क' जल से वेष्टित लंका तुल्य ब्रिटेन शासन।

कलङ्की (स्त्री०) चन्द्रमा।

कलङ्की (पुं०) कल्कि राजा। (जयो० वृ० १५/४१)

कलङ्कुरः (पुं०) जलावर्ण, भंवर। कं जलं लङ्घयति भ्रामयति क+लङ्क+णिच्+उरच्।

कलङ्किन् (पुं०) चन्द्र। (जयो० ३/८९)

कलञ्जः (पुं०) पक्षी विशेष।

कलत्रं (नपुं०) १. चंद्रिका (सुद० ३/१०) २. दुर्गस्थान-श्रोणि-कलत्रं भूभुजां दुर्गस्थानेऽपि श्रोणिभार्ययोः इति विश्वलोचनः

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(जयो० वृ० ११/३) ३. स्त्री, भार्या, नारीदल (जयो० १४/९६) 'विनिर्वहत्यात्तकलत्र-कल्पम्' (जयो० २७/६०) ४. कूल्हा, नितम्ब। (जयो० वृ० ११/७)

कलत्रकल्पः (पुं०) नारी विधि। (जयो० २७/६०)

कलत्रचक्र (नपुं०) श्रोणिबिम्ब, नितम्बचक्र। (जयो० ११/७) कलत्रमेव चक्रं तस्मिन् श्रोणिबिम्बे((जयो० वृ० ११/७)

कलत्रतुण्डं (नपुं०) वनितावदन, नारीमुख। शरीरमात्रं मलमूत्र-कुण्डं किमेकमेतद्धि कलत्रतुण्डम् (जयो० २७/३६)

कलत्र-दोषः (पुं०) स्त्रीदोष, नारी दोष।

कलत्र-प्रीतिः (स्त्री०) स्त्री का प्रेमभाव।

कलत्र-कल्पः (पुं०) पत्नी का सम्बन्ध। 'द्वयोरवस्थानृकलत्र-कल्पा' (सम्य० ३३)

कलत्रमाला (स्त्री०) स्त्री माला।

कलत्रसन्निधिः (स्त्री०) चन्द्रिका से आलोकित, चन्द्र प्रकाश युक्त। 'शिशुमाखाद्य कलत्रसन्निधेः' (सुद० ३/१०)

अलुत्रहारः (पुं०) नारी का हार।

कलता (स्त्री०) मनोहरता, रमणीयता, मधुर (जयो० २०/७४) (जयो० १३/६०)

कलताभृत (वि०) वाचाल नारी, अधिक बोलने वाली स्त्री, निन्दकनारी।

कल-दोषः (पुं०) शब्द दोष, स्थान दोष।

कलधौतं (नपुं०) रजत, चांदी।

कलध्वनि (स्त्री०) ०मधुर स्वर, ०मृदु-वाणी, ०मीठीध्वनि, ०कोयल, ०मयूर, ०हंस ध्वनि 'कलध्वनीना भृशमध्वनीनान्'।

कलनं (नपुं०) दूषण, दोष। (सुद० १/१७)

कलना (स्त्री०) १. प्ररूपणा, निरूपणा, शब्द सम्भावना। (जयो० १/३९) त्रिवर्गसम्पत्तिमतोऽत्र मन्तुमदक्षराणां कलनाः क्व सन्तु' (जयो० १/३९) २. खोटों भावों का कारण-अक्षाधीनधिया कुकर्म-कलना मा कुर्वतो मूढ! ते (मुनि० १९)

कलनादः (पुं०) स्पष्ट स्वर, मधुर स्वर।

कलन्दिका (स्त्री०) [कल+दा+क+कन्+टाप्] प्रज्ञा, बुद्धि।

कलप्रवालः (पुं०) कर पल्लव। (जयो० १७/५०)

कलभः (पुं०) [कल+अभच्] हस्तिशावक, हाथी का बच्चा। मन्दगामिनि! तवालसां गति,
शिक्षतेऽथ कलभोऽसकावितः।

कलभावः (पुं०) मधुरभाव। (सुद० (जयो० २१/४)

कल-भाषणं (नपुं०) अस्पष्ट कथन, तुतलाना।

कल-भाषा (स्त्री०) मधुर भाषा, मीठी बोली।

कलमः (पुं०) [कल्+अम्] धान्य विशेष, गर्मी का धान्य। कलमाय जलाद्बहिर्भिषजो रोगिणे गरम्। (दयो० वृ०६४)

कलम्बः (पुं०) [कल्+अम्बच्] कदम्ब तरु, लता विशेष, २. तीर, चाधरश्रिया नाधिकलम्बवाचा' (जयो० ११/८९)

कलम्बुरं (नपुं०) [क+लम्ब्+डटन्] नवनीत, मक्खन, नैनू।

कलय् (अक०) खेलना, संकल्प करना। भवता कलयिष्यामि, तदद्य गुणशालिना। (समु० ३/४१) छलेन लोम्नां कलयन् शलाका। (जयो० २/५९)

कलरवः (पुं०) मधुर ध्वनि, सुन्दर आवाज। (जयो० वृ० ३/११५)

कललः (पुं०) भ्रूण, गर्भाशय।

कलविङ्कः (पुं०) १. चटिका, चिड़िया। (जयो० १८/९३)

कलविङ्कनिस्वनः (पुं०) चटिका स्वर, चिड़ियाओं की ध्वनि। (जयो० वृ० १८/९३)

कलश् (अक०) सुशोभित होना,शृङ्गे तु सोमः कलशायतेऽलम्। (जयो० १५/४७) 'कलश इवाचरतीति' (जयो० वृ० १५/४७)

कलशः (पुं०) [कलं च तत् शं सुखं धर्मो वा] ०कुम्भ, ०घट, ०घड़ा, ०जलपात्र, ०करवा, ०ताम्बगी, ०मांगलिक कलश। 'कलशोत्पत्तितादाम्य' (जयो० १/१०३)

कलशद्विक् (वि०) युगल कलश, दो जलकुम्भ कलशद्विक इव विमलो मङ्गलकारीह भव्यजीवानाम्। (वीरो० ४/४८)

कलशर्मवाङ् (स्त्री०) मङ्गलोपपद् 'सकलं मनोहरं शं शर्म यस्मादिति (जयो० वृ० १२/५)

कलशं (नपुं०) जलघट।

कलशा (स्त्री०) कलशी, घड़ा, करवा। (जयो० १२/११९) 'कलशीं समु पहिरतु'

कलशाली (स्त्री०) कलशावली। (वीरो० ७/३१)

कलशी (स्त्री०) घड़ा, करवा।

कलशी-कलशी-कलाम्भस् (नपुं०) शीतोष्ण कलश-जल, शीतोष्ण जल वाले कलश। (जयो० १०/२५)

कलसन्निधि (स्त्री०) जल समूह से सुशोभित। 'केन जलेन कस्य वा लसन शोभनोनिधि' (जयो० वृ० २२/६८)

कलहः (पुं०) [कलं कामं हन्ति] 'परसन्ताप-जननं कलह' (आव० १२/२८५) झगड़ा, लड़ाई, धोखा, निन्दा,

कलहकर (वि०) वाचनिक लड़ाई। (वीरो० २२/२०)

कलहकारिता (वि०) बुराई, मारपीट, हिंसा।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कलहप्राभृत (नपुं०) कलह उपचार। (जय०का० १/२३५)

कलहंसः (पुं०) राजहंस, हंस। (जयो० १३/५७)

कहहंसततिः (स्त्री०) राजहंस परम्परा। 'कलहंसानां वर्तकानां राजहंसानां वा ततिः परम्परा' (जयो० वृ० १३/५७)

कलहंसोपमित (त्रि०) राहंस की तरह। शिविराणि बभुश्च दूरतः कलहंसोपमितानि पूरतः।

कलहैकवस्तु (नपुं०) कलह स्थान। (वीरो० २२/१४) (जयो० १३/६४)

कला (स्त्री०) [कल्+अच्+टाप्] कला, १. रेखा, अंश, खण्ड, भाग, चतुरता। (जयो० वृ० १/१४) २. किरण, विकास-स्पृहयति न किं चंद्रकलाप्य विकलाशया (जयो० ३/६४) ३. दर्शक-यत्र मनाङ् न कलाऽऽकुलताया विकसति किन्तु कला कुलतायाः। (सुद० वृ०७६)
षोडसकला-'विधोः कला वा तिथिसत्कृतीद्धा' (सुद० २/६)
आनन्दविधा-कहा चानन्दविधा विधात्री (वीरो० ३/१८)
कलांश, नेत्रनिमेष-'त्रिंशत्काष्ठा कला' (धव० ४/६३)
पुरुष की बहत्तर कला और स्त्रियों की चौंसठ कलाएं तथा चन्द्रमा के सोलह कलाएं। चित्रकर्मादि-षोडशाभिः काष्ठाभिः कला। (नियम सा०वृ० ३१)

कलाङ्ग (वि०) कलाकलित, कला/चन्द्र की तरह विकास को प्राप्त अंग वाली। मधुरं रसतात् पयोधराङ्कमधुना हारमिमं न किं ललाङ्ग! (जयो० १२/१२६)

कलाकन्दः (पुं०) १. कलाकन्द-मिष्ठान्न भोज्यपदार्थ। २. चन्द्रकला युक्त। (वीरो० २२/३५) कलाकन्दमुखेन पूरिता सा। (जयो० वृ० १२/१२४)

कलाकलित (त्रि०) गुण समूह कला युक्त, कलापूर्ण शरीर वाली। (जयो० वृ० १२/१२६)

कलाकेलि (वि०) कामी, विलासी।

कलादः (पुं०) [कला+आ+दा+क] स्वर्णकार, सुनार। (जयो० ६/७४) 'कलादस्य सुवर्णकारस्य'।

कलादलं (नपुं०) गुण समूह (जयो० ९/६१) गुणमूल्य।

कलाद-वादः (पुं०) सुवर्णकार, सुनार। असकौ कलादवादः। (जयो० ६/७४) कलादस्य सुवर्णकारस्य वाद इव वादः प्रतिज्ञा, सुवर्णकारतुल्यचेष्टा। (जयो० वृ० ६/७४)

कलादेशः (पुं०) मण्डलपरिपूर्ति (जयो० २८/४४)

कलाधरः (पुं०) चंद्र, शशि (जयो० वृ० १०६)

कलाधर (वि०) कला धारक, कलाओं में निपुण। (वीरो० ४/४६) 'कलाधरश्चातुर्ययुक्तः' (जयो० वृ० ३/४) बुद्धिमान-जयो२२/७९)

कलानकः (पुं०) निर्देशानुसार, निर्दिष्ट। 'मनुवदन्निजगाद कलानकः' (समु० १/३६)

कलानिधिः (स्त्री०) चंद्र, शशि, निशाकर। 'कलानां धनुर्वेदादि-कौशलानामंशाना वा निधिः' (जयो० वृ० ९/३९)

कलानिलयः (नपुं०) कला भण्डार 'कलानां गीतवादित्रादीनां षोडशांशानाञ्च निलयः स्थानम्((जयो० वृ० ६/११२)

कलान्तरं (नपुं०) दूसरी रेखा।

कलान्वयः (नपुं०) १. जलाशय, समु द्र, कलायुक्त। (जयो० १७/१०४) चन्द्ररूप (जयो० वृ० १७/१०४) 'कं सुखं लातीति एवंरूपोऽन्वयः स्वभावो यस्याः सा' (जयो० वृ० १७/१०४) कं जलं लातीति एवंरूपा कलान्वया जलजीवनाभूत समु द्रः' जलाशय (जयो० वृ० १७/१०४)

कलापः (पुं०) १. समूह, ओघ, यूथ, समु दाय। 'तत्र भोगिपद योगिकलापः' (जयो० ५/१६) २. मुक्ताहार, ३. वस्तु संचय। ४. चन्द्र, ५. आभूषण, ६. बुद्धिमान, प्रज्ञावंत। छन्दोबद्ध कविता।

कलापकं (नपुं०) [कलाप+कन्] एक ही विषय पर लिए गए चार श्लोक, व्याकरण सम्बन्धी विचार। २. सहज आनन्द का आह्वानकर्ता। (जयो० २२/८६)

कलापिन् (पुं०) १. मयूर, मोर 'काशिकानृपतिचित्तकलापी' (जयो० ३/५५) 'मृदङ्गनिःस्वानजिता कलापी' (वीरो० ४/९) २. कोयल, ३. अंजीरतरु।

कलापिनी (स्त्री०) १. रजनी, २. चन्द्र।

कलापुरूः (पुं०) कला परिपूर्ण चन्द्र। कलासु य पुरवः परिपूर्णः सन्ति। ०कलाधर, ०चन्द्र, ०रजनीश, शशि। (जयो० ५/३२)

कलापूर्णः (पुं०) चन्द्र, शशि।

कलाबलं (नपुं०) कला सामर्थ्य। 'कलाया बलं सामर्थ्यं' (जयो० वृ० २/११४)

कलाब्जयुग्मं (नपुं०) करकमल-द्वितीय, दोनों हाथ रूपी कमल। (जयो० २०/८६)

कलाभृत् (पुं०) चन्द्र, शशि।

कलामय (वि०) कला युक्त, कलापरिपूर्ण, कलासहित। (सुद० १०४)

कलायः (पुं०) [कला+अय्+अण्] मटर।

कलावत् (वि०) कलाओं/षोडश कलाओं से युक्त (सुद० ३/४०)

कलावान् (वि०) १. कला को जानने वाला, कलाविज्ञ,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बहत्तर कला विशेषज्ञ, चित्र, संगतादि का ज्ञाता। २. द्वितीया तिथि से उत्पन्न चन्द्र। मान्यः कलावानिव शुक्लपक्षः द्वितीययोः सत्सु सुतः स दक्षः। (समु० १/३०)

कलावति (वि०) १. नाना कलाओं का धारण करने वाली कौमुदं तु परं तस्मिन् कलावति कलावति। (सुद० ९०)

कलाविकः (पुं०) [कलं आविकायति विशेषेण रीति-कल+आ+वि+कै+कन्] मुर्गा, कुक्कुट।

कलाहकः (पुं०) [कलं आहन्ति-कन+आ+हन्+ड +कन्] एक वाद्य विशेष।

कलिः (स्त्री०) [कल्+इनि] कलह, पाप। कलि काल- 'प्रवलेऽत्रकलेर्दले खलेन' 'कार्यः कलेरिति तमां समभूद्विलासः' (वीरो० २२/९) (जयो० वृ० १२/४) कले- कलहस्य' (जयो० वृ० १२/४) 'कलिं कलहं पापं वा गच्छन्ति' (जयो० वृ० ६/२५)

कलिका (स्त्री०) [कलि+कन्+टाप्] कली, मञ्जरी, पुष्प गुच्छ। (जयो० १२/३१)

कलिकामृद्धी (वि०) कुड्मलकोमलता। (वीरो० ३/८५)

कलिकाप्रः (पुं०) आम्रमञ्जरी, उररीक्रियते न किं पिकाय कलिकाम्रस्य शुचिस्तु सम्प्रदायः। (जयो० १२/३१)

कलिकालः (पुं०) कलिकाल, कलहकाल, पाप युक्त समय। 'यत्किल कलिकालस्यान्ते प्रलयो भविष्यतीति' (जयो० वृ० ७/५९)

कलिङ्गः (पुं०) १. चातक पक्षी। 'कलिङ्ग इव चातकपक्षी व, यथा चातको मेघानां वर्षणमपेक्षते' २. चतुरजन (जयो० ८/५७) (जयो० वृ० ६/२१)

कलिङ्गः (पुं०) एक देश विशेष। 'कलिङ्गे नाम देशे जातः' (जयो० वृ० ६/२२)

कलिङ्गजा (पुं०) गज, हस्ति, हाथी। 'कलिङ्गजानां गजानां हस्तिनाम्' (जयो० वृ० ६/२२)

कलिङ्गता (वि०) कलिङ्ग देश का शिरोमणि। कलिं कलहं पापं वा गच्छन्ति स्वीकुर्वन्ति ते कलिङ्गास्तेषां कलिङ्गानां कलिङ्गतानां राजानं शिरोमणिः' (जयो० वृ० ६/२५)

कलिङ्ग-राजन् (पुं०) चतुरों का राजा। कलिङ्ग-राजाभिधां कलिङ्गानां चतुराणां राजासावित्येवं' (जयो० वृ० ६/२३) 'नीवृद्वंदे कलिङ्गस्तु त्रिपु दग्ध-विदग्धयोरि' ति कोपात्। (जयो० वृ० ६/२३)

कलिङ्गशिरोमणिः (पुं०) कलिङ्ग राजा।

कलिङ्गा (स्त्री०) [कलि+गम्+ड] कलह करने वाला का प्रमुख। 'कलिं कलहं पापं वा गच्छन्ति स्वीकुर्वन्ति ते कलिङ्गाः' (जयो० वृ० ६/२५)

कलिञ्जः (पुं०) [क+लञ्ज्+अण्] परदा, चटाई।

कलित्र (वि०) कलह/पाप से रक्षा करने वाला। 'छेत्तुं जना जन्मनगं कलित्रम्' (भक्ति०७)

कलित (वि०) स्वीकृत, दत्त, प्रदत्त, प्रदेय, देना, दिया, पकड़ा अनुष्ठित, कल्पित। 'कपोलकलितेषु च भ्रमात्' (जयो० वृ० २/२६) 'तत्र तत्र कलितं जिनार्चनम्' (जयो० २/३३) उस उस अवसर पर अनुष्ठित जिनार्चन'।

कलित-प्रशंसा (वि०) प्रशंसा करती हुई। सा गीतिं जगाविति पुनः कलित प्रशंसा। (सुद० १२३)।

कलिता (वि०) सम्पादिता, सम्पादित की गई। (जयो० ५/५२)

कलिताङ्गी (वि०) समनुभावित अंग वाली। सदुदय-कलिताङ्गी जग्मुरिष्टं वराङ्गीन्। (वीरो० ४/६३)

कलिनोचितसत्ता (वि०) तारक युक्त सत्ता 'कलिता सम्पादिता उचिता सत्ता प्रशंसनीया' (जयो० वृ० ५/५२)

कलितोष्मः (पुं०) गर्मी के कारण, सन्तपन के बहाने, स्वीकृत ऊष्मा। 'कलितः स्वीकृत ऊष्मणो मिषः सन्तापनच्छलो येन स' (जयो० वृ० १२/१२२)

कलिर्नु (पुं०) काले बादल, कलिकाला। (वीरो० ४/५)

कलिन्दः (पुं०) [कलि+दा+खच्] १. यमुना नदी का उद्गम स्थल, २. रवि, सूर्य। ३. पर्वत, गिरि।

कलिन्दगिरिः (पुं०) कलिन्दपर्वत।

कलिन्दजा (स्त्री०) यमुना।

कलिन्दतनया (स्त्री०) यमुना।

कलिमलधवनं (नपुं०) कलिकाल सम्बंधी दोष का प्रक्षालन। (सुद० वृ०७०)

कलिरात्रि (स्त्री०) कलिकाल की रात (सुद० ९७)

कलिल (वि०) [कल+इलच्] १. पापकर्म, पापभाव, कलह। (जयो० २४/७३) २. आच्छादित, आवृत, ढका हुआ। भरा, आपूरित, प्रभावित।

कलिलावनं (नपुं०) पाप का संरक्षण, कलह उच्छेद। 'कलिलस्य पापभावस्यावनं संरक्षणं भवति' (जयो० वृ० २४/७३) 'कलेः कलहस्य लावनमुच्छेदनम्' (जयो० वृ० २४/७३)

कलुष (वि०) [कल+उषच्] १. मलिन, मैला, धुंधला, २. दुष्ट, पापजन्य, क्रूर, निर्दय, २. संकल्प-विकल्प युक्त (जयो० वृ० १/११)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कलुषः (पुं०) महिष, भैंसा।

कलुषपरिणामः (पुं०) संकल्प-विकल्प भाव, अशुभ परिणाम। (जयो० वृ० १/१११)

कलुषी-कृत (वि०) मलिनता, अन्धकारयुक्त। (जयो० १३/९६)

कलेवरः (पुं०) शरीर, देह। [कले शुक्रे वरं श्रेष्ठम्]

कलोदयः (पुं०) कला का उदय, चातुर्य से परिपूर्ण।

कलोदयकरी (वि०) चतुराई करने वाला। 'कलानां चातुरीणामुदयकरी उन्नतमनकारिणी' (जयो० वृ० २६/१२)

कलोदयवत्व (वि०) विकास को प्राप्त कराने वाला। 'अमृगुश्चकलोदयवत्वत' (समु० ७/२८)

कल्कः (पुं०) कीट, गंदगी।

कल्कनं (नपुं०) [कल्क्+णिच्+ल्युट्] मिथ्यापना, प्रतारणा, धोखा देना, छल।

कल्किन् (पुं०) नाम विशेष।

कल्प् (सक०) देना, प्रदान करना। (जयो० वृ० ७/२८)

कल्प (वि०) [कृप्+अच्] उचित, योग्य, सदृश, समान, श्रेष्ठ, सक्षम, समर्थ, परिणत आदि।
सदृश-'मुदिन्दिरामङ्गलदीपकल्पः' (सुद० १/१२)
परिणत-'मृणाणकल्पः सुतरामनल्पः' (सुद० १०८)
विधि 'विनिर्वहत्यात्त कलत्र-कल्पम्' (जयो० २७/६०)
मनोभाव-'मलापहेऽस्मिन् कविकल्पभोग्ये' (जयो० १९/९)
समूह-'कल्पस्समूहरतेन'

कल्पः (पुं०) १. कल्पवृक्ष, (सुद० १/१७) २. 'एक स्वर्ग-प्राग्ग्रैवेयकेभ्यः कल्पाः (त०सू०४/२४) ग्रैवेयिकों से पहले अर्थात् सौधर्म से लेकर अच्युत पर्यन्त। ३. कल्पना-इन्द्रादयः प्रकारा वक्ष्यमाणा दश एषु कल्प्यन्ते इति कल्पाः। (त० वा० ४/३) ४. विधि, अनुष्ठान- (जयो० २४/४९) कल्पो ब्रह्मदिने न्याये प्रलये विधिशान्तयोः इति त्रि (जयो० वृ० २४/४९) ५. बाह्य वस्तु का सेवन, ६. प्रलय, सृष्टि विनाश, कल्पयुग, कल्पकाल, नियम, अध्यादेश, विकल्प आदि।

कल्पकः (पुं०) [क्लृप्+ण्वुल्] १. संस्कार। २. नापित, नाई, क्षौरकर्मी।

कल्पकालः (पुं०) कल्पयुग का रचनाकार।

कल्पकालः (पुं०) दस कोटा कोटि सागर प्रमाण। ओसप्पिणि- 'उस्सप्पिणीओ दु वि मिलिदाओ कप्पो हवदि। (धव० ३/१३९)

कल्पतरुः (पुं०) कल्पवृक्ष। (सुद० १/१७)

कल्पतरुज्जयन्त (वि०) कल्पवृक्षों को जीतने वाले। 'फल-प्रदानाय समाह्वयन्तः श्रीपादपाः कल्पतरुज्जयन्तः। (सुद० १/१७)

कल्पद्रु (पुं०) कल्पतरु, कल्पवृक्ष (वीरो० २/१०) इच्छानुसार वस्तुओं को प्रदान करने वाला वृक्ष। (मुनि० १५) 'धर्माख्य कल्पद्रुवरोऽभ्युदारः' (सुद० १३२) किमिच्छकेन दानेन जगदाशाः प्रपूर्यः यः। चक्रिभिः क्रियते सोऽर्हद्यज्ञः कल्पद्रुमो मतः। (सागार धर्मामृत २/२८, श्री पञ्चशाखः सुमनः समूहेश्वरस्य कल्पद्रुरिवास्सदूहे' (जयो० १/५१)

कल्पद्रुमः (पुं०) देखो ऊपर।

कल्पद्रुवरः (पुं०) कल्पतरु। (सुद० १३२)

कल्पनं (नपुं०) [क्लृप्+ल्युट्] १. मिथ्या बनाना, २. क्रमबद्ध करना, ३. स्थिर करना, एक रूपता प्रदान करना, ४. सजाना, ५. कल्पना करना। (सुद० ३/४२) ६. विचार, उत्प्रेक्षा, ७. प्रतिमा, आविष्कार संरचना, ८. आभूषण, सुसज्जा। (वीरो० १/२३)

कल्पना (स्त्री०) ०विचार, ०सम्भावना, ०वाग्बुद्धिविकल्प, ०प्रतीति, ०अध्यारोप, ०संरचना, ०सुसज्जा, ०अभिव्यक्ति, ०प्रतिभासा, शब्द सम्बन्ध। 'बभूव नासां शुककल्पनासा' (जयो० १/६१)

कल्पनात्मिक् (वि०) वृद्धपरम्परात्मिक, पूर्व परम्परा से युक्त। (जयो० वृ० ३/११५)

कल्पनी (स्त्री०) [कल्पन्+ङीप्] कैंची, छुरिका।

कल्पपादपः (पुं०) कल्पतरु, स्वर्गकल्प वृक्ष। (दयो० ४)

कल्पकलिन् (वि०) कल्पवृक्ष की याचना। (जयो० १२/१४४)

कल्पय् (सक०) निकालना, बाहर करना। (दयो० वृ०११) आत्मनो न सहेच्छल्यमन्यस्मै कल्पयेदसिम्' (दयो० वृ०११)

कल्पलता (स्त्री०) कल्प वृक्ष, कल्पतरु, स्वर्ग के नन्दन वन की लता। 'कल्पं किं कार्यं किं न कार्यं वेति विकल्पं लातीति न कल्पलता। (जयो० वृ० १७/१०२) प्रभुभक्ति-रुताङ्गिनां भवेत्फलदा कल्पलतेव यद्भवे। (सुद० ३/५)

कल्पलतिका (स्त्री०) कल्पलता। (जयो० २०/१३)

कल्पवल्लिदलः (पुं०) कल्पलता समूह।

कल्पवासी (पुं०) कल्पवासी देव। (वीरो० ६/२, जयो० २०/१३)

कल्पवृक्षः (पुं०) कल्पतरू, कल्पलता। चक्रिभिः क्रियमाण या कल्पवृक्षा इतीरिता। (धर्मसंग्रह ९/३०)

कल्प-व्यवहारः (पुं०) प्रायश्चित्त निरूपक व्यवहार। * नियम, विधि, अध्यादेश।

कल्पाकल्पं (नपुं०) योग्य-अयोग्य निरूपण। 'कालमाश्रित्य

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यति-श्रावकाणां योग्यायोग्यनिरूपकं कल्पाकल्पम्' (त०वृ० १/२०)

कल्पातीतः (पुं०) १. कल्पना से रहित, आचार व्यवहार से रहित। कल्पनातीताः कल्पातीताः (स०सि०४/१७) २. देव विमान।

कल्पांघ्रिप (वि०) स्वर्ग सदृश, नाना प्रकार से प्रशंसनीय। ग्रामान् पवित्राप्सरसोऽप्यनेक कल्पांघ्रिपान्यत्र सतां विवेकः। (सुद० १/२०) २. भूलोक कल्पवृक्ष। (जयो० १२/१३७)

कल्पान्तः (पुं०) १. प्रलय, सृष्टि की समाप्ति। (जयो० ७/४३) २. कल्पयुग का अन्त।

कल्पेभ्यः अतिक्रान्ताः

कल्पान्तसंस्थितिः (स्त्री०) कल्पयुग के अन्त तक स्थाई। (जयो० ७/४३) 'अये तेऽप्यजयत्वेन त्वेनः कल्पान्तसंस्थितिः' (जयो० ७/४३)

कल्पित (वि०) [कृप्+णिच्+क्त] स्वीकृत, परिणत, तैयार किया गया, संरचित, निर्मित। किसी वस्तु को समझाने के लिए दृष्टान्त से कल्पना की गई हो। स्वबुद्धिकल्पना। 'सख्यास्य सूपकल्पितं तादृकम्' (जयो० ६/१२)

कल्पितबुद्धिः (स्त्री०) बनावटी चेष्टा। 'सञ्जायते कल्पितबुद्धिवारा' (समु० ८/५)

कल्पितभावः (पुं०) संरचितभाव, स्वनिर्मित भाव।

कल्पित-लेखः (पुं०) बुद्धि जनित आलेख, विधि-विधान, संरचना।

कल्पितवान् (वि०) कल्पना करता हुआ। 'सुचक्षुषः कल्पितवान् विधाता' (जयो० ११/३०)

कल्पोपन्नः (पुं०) देव विशेष, सोलहवें स्वर्ग में उत्पन्न देव।

कल्पोपगः (पुं०) कल्पोपन्न, इन्द्र-सामानिकादि में उत्पन्न। सोलह स्वर्गों में उत्पन्न। कल्पेषूपपन्नाः कल्पोपपन्नाः

कल्प्यता (वि०) रचता (जयो० २/१०५) (स०सि०४/७) बनाता, निर्मित।

कल्मष (वि०) पाप, मलिन, मैल, (वीरो० १०/२५) लाञ्छन, निन्दा, उच्छिष्ट। नो चेत्कल्मष एष भूरिभवभृत्स्वाधो चरं दुर्जयः। (मुक्ति०३०)

कल्माष (वि०) चितकबरा, धब्बेदार, रंगबिरंगा। कलयति, कल्+क्विप् तं माषयति अभिभवति, माष्+णिच्+अच्, कल् चासौ माषश्च।

कल्य (वि०) [कल्+यत्] १. स्वस्थ, नीरोग, २. तत्पर, उद्यत, प्रयत्नशील, ३. रूचिका, मंगलमय, चतुर।

कल्यं (नपुं०) १. प्रभात, प्रातः, सुबह। 'कल्याख्य एष समयो भवदीक्षणीयो' (जयो० १८/५८) कल्ये वाला चिकुरनिकुरं' (जयो० १८/९४) २. आने वाला कल।

कल्या (स्त्री०) [कल्+णिच्+यक्+टाप्] मदिरा, शराब, मद्य। कलयति मादयति, (जयो० ७/१७)

कल्याण (वि०) [कल्ये प्रातः अण्यते शब्द्यते अण+घञ्] आनन्द युक्त। कल्यं सुखमारोग्यं शोभनत्वं वा तदणतीति कल्याणम्। सुखदाई, इष्टकर, शुभग, सुन्दर, मनोरम, भाग्यशाली, सुखद, लाभदायक, मंगलप्रद, श्रेयस्कर। (मुनि० १५) दीक्षा कल्याणतः पूर्वं, पुरूणां परिकीर्तिता। (हित०सं०५)

कल्याणक (वि०) [कल्याण+कन्] शुभकार्य, आनन्ददाई कार्य, तीर्थंकर का गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान एवं मोक्षादि कल्याणक।

कल्याणकर (वि०) हितकर, गर्भ। (जयो० वृ० १/३०)

कल्याणकृत् (वि०) हितकर, सुखकर, आनन्ददायक, अभीष्ट, यथेष्ट, योग्यतम।

कल्याण-कर्त्री (वि०) श्रेयस्करी। (दया० वृ०३/५६)

कल्याण-गृहं (नपुं०) सुखदाई स्थान।

कल्याण-नामधेयपूर्वः (पुं०) एक पूर्व ग्रंथ का नाम, जिसमें त्रिषष्ठी शलाकापुरुषों के गर्भ, जन्मादि उत्सवों का कथन पाया जाता है।

कल्याणनिधिः (स्त्री०) श्रेये भण्डार। (जयो० १८/८८)

कल्याण-भागिनी (वि०) सौभाग्यशालिनी, (वीरो० ४/३४) श्रीजिनपदप्रसादादवनौ कल्याणभागिनी च सदा। (वीरो० ४/३४)

कल्याण युक्त (वि०) हितकर, सुखदाई।

कल्याणाभिषवः (पुं०) ०कल्याण रूप अभिषेक ०जन्माभिषेक (वीरो० ४/२)

कल्याणिन् (वि०) हितकारी, समृद्धिशाली, प्रसन्नचित्त, सौभाग्यशील, मंगलकारक।

कल्याणिनी (वि०) ०आनन्ददायिनि ०सुखकरी, ०प्रसन्नचित्त करने वाली। कल्याणिनीह शृणु मञ्जुतमं ममाऽऽस्यात्। (वीरो० ४/३८)

कल्ल (वि०) [कल्ल्+अच्] बहरा।

कल्लोलः (पुं०) [कल्ल्+ओलच्] १. ऊर्मि, लहर, २. हर्ष, आनन्द, प्रसन्नता।

कल्लोलाञ्चितः (पुं०) लहर क्रीड़ा, ऊर्मी वेग, लहर प्रवाह। 'कल्लोलेन विनोदेनोत्ततरङ्गेणाञ्चिता' (जयो० २०/७)

कल्लोलिता (वि०) तरङ्गिता, ऊर्मी, युक्तता।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कल्लोलितावर्त (नपुं०) लहर का गोलाकार। 'व्यक्तोऽतो वलिबद्धनाभिकुहरः कल्लोलितावर्तवत्' (जयो० २४/१३५)

कल्लोलिनी (वि०) [कल्लोल+इनि+ङीप्] सरिता, नदी।

कव् (अक०) स्तुति करना, प्रार्थना करना, वर्णन करना, रचना, चित्रण करना।

कवकः (पुं०) [कव्+अच्+कन्] मुट्ठीभर।

कवचः (पुं०) १. रक्षा कवच, वर्म, सन्नाह। (जयो० वृ० ३/१००)

कवचं (नपुं०) उरश्छद, वक्षस्थावरणक, सन्हक, 'दुःखनिवारण-सामान्यात् कवचशब्देनोच्यते' (भ०आ०टी०) कञ्चुकमावरणं। (जयो० वृ० ७/९३) २. हरीतकी वृक्ष, हर्ड। कवचो वारबाणे स्यात्पटहे, गर्दभाण्डके इति वि (जयो० वृ० २१/२९)

कवचधारणं (नपुं०) कवचस्थान। (जयो० वृ० ३/१००)

कवचपत्रं (नपुं०) भोजपत्र, पाकर तरु। पाकरवृक्ष।

कवचप्रसाधनं (नपुं०) बख्तर, वर्मयुक्त। कवचानां हरीतकी-वृक्षाणां वर्मणां प्रसाधने स' (जयो० वृ० २१/२९) गौरि। सज्ज-कवचप्रसाधनः प्रौढशूर इव राजतेऽप्ययम्' (जयो० २१/२९)

कवचसर (वि०) कवचधारी, वर्म युक्त।

कवचस्थानं (नपुं०) कवचधारण। (जयो० वृ० ३/१००)

कवचमुद्रा (स्त्री०) आसन की विधि, मुष्ठी बांधकर कनिष्ठा और अंगुष्ठ को फैलाना।

कवचित (वि०) वर्मित, कवच युक्त, बख्तरसहित। (जयो० वृ० २१/४)

कवर (वि०) खचित, जटित, मिश्रित, जड़ा हुआ, विचित्र, नाना प्रकार का। (वीरो० ९/१४)

कवरः (पुं०) १. नमक, २. अम्लता।

कवरस्थली (स्त्री०) खचित। (वीरो० ९/१४)

कवरी (स्त्री०) [कवर+ङीप्] चोटी, जूड़ा (जयो० वृ० २२/२५)

कवरीकृत (वि०) १. वेणीरूपता युक्त।

कवरीकृतान्धकारः (पुं०) ग्रासीभूत अन्धकार, आच्छादित अन्धकार। (जयो० वृ० २२/२५)

कवरीभरः (पुं०) गुथी हुई चोटी, जूड़ा।

कवलः (पुं०) मुट्ठीभर, कौर, हजार शालिधान्य प्रमाण। केन जलेन वलते चलति-वल+अच् नाऽधुनासौ कवले नियुक्तः' (वीरो० १२/४८)

कवलय् (सक०) भक्षण करना, भोजन करना। कवलयिष्यति। (दयो० ५०)

कवलित (वि०) ग्रासीकृत, खाया गया, चबाया गया, ग्रहीत, पकड़ा। 'कवलितं च शकृत्करिणा ततः' (जयो० २५/६८)

कवलीकृत (वि०) नष्ट करने वाला, नाशक, विध्वंसक, छेदक, ग्रसित। (जयो० वृ० २२/२५)

कवलोपयुक्ति (स्त्री०) १. आत्मबल युक्ति, २. मौक्तिक युक्ति। 'कवलस्य आत्मबलस्य मौक्तिकस्य चोपयुक्तो' (जयो० वृ० ५/१०२)

कवलोपसंहारकः (पुं०) शमनशक्तिनाशक, यमराज की शक्ति का नाश। २. ग्रासभक्षक। (जयो० वृ० ७/२१) 'गाढमुष्टिरसं खड्गः कवलोपसंहारकः। (जयो० ७/२१)

कवाटः (पुं०) [कलं शब्दं अरति कु+अप अट्+अच्] कपाट, द्वार के दो भाग। दृढं कवाटं दलितानुशायिन्। (वीरो० ५/२४)

कवि (वि०) [कु+इ] १. सर्वज्ञ, ज्ञानी, २. निपुण, चतुर, बुद्धिमान, विचारशील। ३. प्रशंसनीय, गुणी।

कविः (पुं०) काव्यपाठक, काव्यरचनाकार। कविनेदमुत्प्रेक्षितम्। (जयो० वृ० १/१९) **काव्यकार**-'कवेर्भवेदेव तमोधुनाना' (सुद० १/१०) २. **शुक्र**-देवसभायां कश्चनैव कविः **शुक्रः**। (जयो० वृ० ५/३२) कवयः काव्यकर्तारः शुक्रश्च' (जयो० ५/९१) ३. **यजनाचार्य**-हविषा कविसाक्षिणा' कविर्यजनाचार्यः गृहस्थाचार्य (जयो० १२/६८) ३. **ऋषि**, विचारक। राजकुमार (जयो० १/८) ४. सूर्य, ५. ब्रह्मा।

कवि-कल्पः (पुं०) काव्य कर्ता का मनोभाव, काव्यकार की मनोगत स्थिति।

क-विकल्पः (पुं०) पनडुब्बी, जलपक्षी। 'कस्य वयः कवयो जलपक्षिणस्तेषां कल्पस्समूहस्तेन' (जयो० वृ० १९/९)

कविका (स्त्री०) लगाम, खलीन। कविकामविकार-गामिनां लपने सम्प्रति वाजिनामपि' (जयो० १३/५)

कविकाचर्वणं (नपुं०) लगाम चबाना। तुरगो विरराम नामवान् कविकाचर्वणचारुहेपया' (जयो० १३/७२) कविकायाः खलीनस्य चर्वणेन चार्वी। (जयो० वृ० १३/७२)

कविकुलं (नपुं०) १. पक्षि समूह, जल पक्षिवृन्द। (जयो० वृ०२०/७) २. काव्यकर्ता समु दय, कविलोग (जयो० ६/४२)

कविकृतवाक् (नपुं०) कविधारण वाणी, कवियों द्वारा रचित वचन। आधुनिकेन काव्यकृता यासौ वाणी' (जयो० १८/९०)

कविकृष्णा (स्त्री०) द्राक्षा, दाख। तृष्णा तु द्रौपदी नीली हारद्रा सुपिप्पलौ' इति वि० (जयो० वृ० २५/१२)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कविजन: (पुं०) कविलोग। (जयो० वृ० ११/४१)

कविज्येष्ठ: (पुं०) आद्यकवि, वाल्मीकी।

कविता (स्त्री०) [कवि+तल्+टाप्] काव्य, रचना, भावपूर्ण श्रेयात्मक रचना। (सुद० १/७, २/६, वीरो१/२७) 'सुवर्णमूर्तिः कवितेयमार्या' (वीरो० १/२७) 'अलङ्कारपूर्णा कवितेन सिद्धा' (सुद० २/६)

कवितानुसारिणी (वि०) कविता का अनुसरण करने वाली। 'कवितामनुसरतीति कवितानुसारिणी कविता च सम्यग्रूपाणां सुप्तिङन्तानां पदानां शब्दानां सङ्ग्राहिणी' (जयो० वृ० ३/११) मञ्जुवृत्त-विभवाधिकारिणी कामिनीष कवितानुसारिणी (जयो० ३/११) कविता च मञ्जुनां निर्दोषाणां वृत्तानां छन्दसां विभवस्य आनन्दस्य अधिकारिणी भवत्येव' (जयो० वृ० ३/११)

कविताभर (वि०) काव्य रस से परिपूर्ण। (सुद० १/२)

कविताश्रय: (पुं०) १. काव्य का आधार, २. जलपक्षी का आधार।

कविताश्रयपद: (नपुं०) कविताश्रयपद, काव्य के आश्रयभूत पद। 'कस्य-पक्षी तस्य भावो कविता तस्याश्रयपदो कवितायाः आश्रयो दोहा नामच्छन्दसो' (जयो० वृ० २२/९०)

कवित्व (वि०) आत्मवेदित्व, आत्मज्ञता। 'पीलो! कवित्वं खलु लोकवित्वं' २. काव्य रूपता। (जयो० १९/४४)

कवित्वगावा (वि०) कवित्व शक्ति। 'वाग्यस्यास्ति नः शास्ति कवित्वगावा' (सुद० १/१)

कवित्ववृत्ति: (स्त्री०) काव्य दृष्टि, कविता का अभिप्राय- 'कवित्ववृत्येत्युदितो न जातु' (वीरो० ६/११)

कवित्वशक्ति: (स्त्री०) काव्यशक्ति, कविता करने का बल। तेषां गुरूणां सदनुग्रहोऽपि कवित्वशक्तौ मम विघ्नलोपी' (वीरो० १/६)

कवित्वशक्ति-मंत्रं (नपुं०) काव्य प्रतिभा का मन्त्र। 'ओं ह्रीं अर्हं णमो सयंबुद्धीणं।' (जयो० १९/६४) इत्यादिना मन्त्रेण कवित्वादि शक्तिर्भवतीति'

कवित्वोचित: (पुं०) कविता करने योग्य। समन्त-भद्रादि महानुभावा, युक्ताः कवित्वोचितसम्पदा वा। (समु० १/११)

कविभव: (पुं०) १. कवि द्वारा उत्पन्न। २. पक्षियों के मनमोहक शब्द। (जयो० वृ० ३/११५)

कविराज: (पुं०) १. महाकवि, २. वैद्य, भिषग।

कविवृत्तक: (पुं०) कविगुणगान, काव्यछन्द, कविता के वृत्त। कवेर्यशोगायकस्य वृत्तैव वृत्तकैश्छन्दोभि:' (जयो० वृ० १०/७२)

कविसाक्षिन् (पुं०) यजनाचार्य की साक्षी, गृहस्थाचार्य की साक्षी। (जयो० १२/६९)

कवीन्द्र: (पुं०) महाकवि, कविराज।

कवीन्द्रगीति (स्त्री०) कविराजों की प्रणीति, कवियों का कथन, कवि प्रगीत। (जयो० १२/७०)

कवीश्वर: (पुं०) महाकवि, कविराज।

कवीश्वरलोकाग्रह: (पुं०) कवियों का समूह, काव्य रचनाकार का समु दाय। कवीन्द्राणां लोकस्य वृन्दस्याऽऽग्रहतो (जयो० १०/११९)

कवोष्ण (वि०) कुनकुना, गुनगुना, थोड़ा उष्ण। कुत्सितं ईषत् उष्णम्।

कव्यं (नपुं०) आहूति।

कश् (अक०) बांधना, कसना, दृढ़ करना। 'विकसन्ति कशन्ति मध्यकं' (जयो० १३/६) २. अंगीकार करना। (वीरो० ४/२४) (वीरो० ४/२४) कशित्वा

कश्चन (अव्य०) किसी, कोई। 'अथ कश्चन नाथनामवंश-समयस्य' (जयो० १२/११०)

कश्चनापि (अव्य०) कोई भी। 'स्त्रीणां कश्चनापि न विद्यते' (जयो० २/१४७)

कश्चित् (अव्य०) कोई, किसी का। 'कश्चिदपरिचितः पुरुष' (जयो० वृ० ३/२१) 'बालोऽस्तु कश्चित्स्थविरोऽथवा' (सुद० १२१)

कश्चिदित्येवम् (अव्य०) इस प्रकार किसी का भी। 'कस्यापि प्रार्थनां कश्चिदित्येमवहेलयेत्' (सुद० १३४)

कश: (पुं०) [कश्+अच्] चाबुक, कोड़ा। (समु० ७/५) विमर्दना (जयो० २७/१३)

कशिताण्य: (पुं०) कशीदा। (जयो० २/५०)

कशिपु (पुं०/नपुं०) तकिया, चटाई, वस्त्र।

कशिम्ब: (पुं०) १. गुच्छक, छत्र। (जयो० ८/१४, १५/६२)

कशेरु (पुं०/नपुं०) १. रीढ़ की हड्डी, २. घास विशेष।

कश्मल (वि०) [कश्+अल, मुट] पाप (जयो० २१/९) स्मास्पृशन्त इति यान्ति कश्मलाद्भीतिमन्त इव तावदुत्कलाः (जयो० २१/९) कश्मलात्पापाद् भीतिमन्न। अकीर्तिकर, अयशयुक्त, निन्दित, घृणित।

कश्मलं (नपुं०) पाप, मन का खेद, दु:ख, उदासी, मूर्छा।

कश्मीर: (पुं०) कश्मीर देश।

कश्मीरज: (पुं०) केशर, जाफरान्।

कश्य (वि०) [कशामर्हति-कशा+य] चाबुक लगाने योग्य।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कश्यं (नपुं०) मद्य, मदिरा, शराब। 'कलङ्किना क्रान्तपदं च कश्यम' (जयो० १६/३६)

कश्यकुथः (पुं०) पलान, पृष्ठासन। (जयो० २१/२)

कश्यपः (पुं०) १. रवि, सूर्य, आदित्य। 'कश्यपस्य पुत्रो रविर्भर्त्तीति' (जयो० १८/७७) १. कच्छप, कछुवा, कूर्म, २. मरीची पुत्र कश्यप।

कष् (सक०) ०मसलना, ०कसना, ०विदीर्ण करना, ०जांच करना, ०घिसना, ०नष्ट करना, ०समाप्त करना।

कष (वि०) विधि-प्रतिषेध होना, कसना, रगड़ना, संसार कर्म।

कषणं (नपुं०) [कष्+ल्युट्] कसना, खुरचना, रगड़ना, चिह्नित करना, परखना।

कष-पट्टकः (पुं०) स्वर्णपरीक्षण पट्टिका, कष-वर्तिका, कसौटी।

कषशुद्धः (पुं०) विधि प्रतिषेध की प्रचुरता युक्त धर्म।

कषायः (पुं०) [कष्+आय] कषाय, आत्म विघात तत्त्व, सांसारिक कर्षण, कर्मोदय, सुख-दुःख की बहुलता वाला क्षेत्र। (सम्य० वृ०११५) आत्म परिणामों में उत्पन्न हुई मलिनता। (त०सू०१२०) 'कषत्यात्मावमिति कषायः' (त० वा० ६/४) 'कष गतौ' इति कषशब्देन कर्माभिधीयते भवो वा, कषस्य आया लाभाः प्राप्तयः कषायाः क्रोधादयः।' 'सुख दुःख-बहुशस्यं कर्मक्षेत्रं कृषन्तीति कषायाः' (धव० १/१४१, १३/३५९)

कषाय (वि०) ०कसैला, ०लाल, ०गहरा लाल ०वल्कलरस, ०गन्ध, ०गोंद। 'तरुणां वाल्करसः कषायः' (भ०आ०टी० ११५)

कषायक (वि०) कषाय करने वाला, चारित्र-परिणाम को कसने वाला।

कषायकर (वि०) संसार जन्य परिणाम करने वाला, आत्मभाव को कसने वाला।

कषाय-कुशीलः (पुं०) संज्वलन के वशीभूत। 'अन्य-कषायोदयः संज्वलनमात्रतंत्राः कषाय-कुशीलाः।' (स०सि०९/४६)

कषाय-प्रचयालम्बः (पुं०) कषाय समूह का आवलम्बन। लक्षाधिपस्यास्त्ययुतं शतं वा तथा कषायप्रचयावलम्बात्।' (सम्य० १००)

कषाय-भावः (पुं०) कषाय परिणाम, क्रोधादिभाव।

कषायरसः (पुं०) १. कसैला पदार्थ, २. शरीरगत पुद्गल रस।

कषाय-विवेकः (पुं०) पृथक्-पृथक् कषाय को समझना।

कषायवेदनीयं (नपुं०) कषाय का वेदन होना। 'जस्स कम्मस्स उदएण जीवो कसायं वेदयदि तं कम्मं कसायवेदणीयं' (धव० १३/३५९)

कषाय-समु द्घातः (पुं०) कषाय की तीव्रता। द्वितीय-प्रत्यय-प्रकर्षोत्पादित-क्रोधादिकृतः कषाय समु घातः। (त० वा० १/२०)

कषायसल्लेखना (स्त्री०) क्रोधादि कषाय का कृश करना। अध्यवसाय की विशुद्धि। 'अज्झवसाण-विसुद्धी कसाय-सल्लेहणा भणिदा' (भ०आ०२५९)

कषायहानिः (स्त्री०) कषाय क्षय, क्रोधादि का दूर होना, कषाय अभाव 'यथा द्वितीयाख्य-कषाय हानिः सुश्रायकत्वं लभते तदानीम्।' (सम्य० ९९)

कषायिक (वि०) आत्म घातक प्रवृत्ति वाला। [कषाय+इक्] ०घातक परिणाम वाला, चारित्र परिणाम को कसने वाला।

कषायित (वि०) [कषाय+इतच्] १. कषाय भाव वाला। २. कसैले रंग युक्त, रंग-बिरंगा।

कषि (वि०) [कषति हिनस्ति कष्+इ] कसने वाला, हानियुक्त अनिष्टकारी।

कषेरूका (स्त्री०) रीढ़ की हड्डी।

कष्ट (वि०) [कष्+क्त] दुःख, पीड़ा, व्याधि, हानि, चिन्ताजन्य, आतुरता सहित, व्याकुलता पूर्ण। १. कठिन, हानिकर, पीड़ाजनक। 'कष्टं सहन् सभ्यतयैतयासः' (सम्य० ७०/४३) अवेहि नित्यं विषयेषु कष्टं सुखं तदात्मीयगुणं सुद,ष्टकम्।' (सुद० १२१)

कष्टं (नपुं०) कष्ट, दुःख, वेदना, पीड़ा, व्यथा, संकट (सुद० १२१)

कष्टम् (अव्य०) हाय, धिक्।

कष्टकारिन् (वि०) सङ्कटकृत, संकट उत्पन्न करने वाला।

कष्टकृत् (वि०) दुःखदायी, दुःखजन्य। योग्यतामनुचरेन्महामतिः कष्टकृद्भवति सर्वतो द्युतिः। (जयो० २/५१)

कष्टचंद्रः (पुं०) चंद्र ग्रहण। (जयो० ८/६८)

कष्टजन्य (वि०) कष्टोपादक।

कष्टतपस् (वि०) कठोरतपस्वी।

कष्टप्रद (वि०) खेदकर, दुःखजन्य, दुःखद। (वीरो० ५/७) (जयो० वृ० १६/२६)

कष्टवर्जिता (वि०) सरल, अनक, सीधा। (जयो० वृ० १/१०९)

कष्टानुभवः (पुं०) कष्ट का अनुभवः। आतुर (जयो० वृ०

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१३/९) अकण्टकं सत्पथमातनोतु न कोऽपि कष्टानुभवं करोतु। (सम्य० ९४)

कष्टसाध्य (वि०) कठिनतम, कठिनाई से पूर्ण किया जाने वाला।

कष्टस्थानं (नपुं०) दुपथ, खोटा स्थान, निम्न स्थान।

कष्मलः (पुं०) पाप, अशुभ। (जयो० ४/६१)

कस् (सक०) १. जाना, पहुंचना, प्राप्त होना। २. निकालना, खींचना, बाहर करना।

कस्तूरिका (स्त्री०) [कसति गन्धोऽस्याः कस्+अर्+ङीप्] मृगमल, मुश्क, एक सुगन्धित मृगनाभि मल, एणमद। (जयो० वृ० ५/६१)

कस्तूरी देखो ऊपर।

कस्तूरीमृगः (पुं०) मृग। हिरण विशेष, जिसकी नाभि में कस्तूरी का स्थान होता है।

कस्यान्न (अव्य०) किससे नहीं। (जयो० ३/६८)

कस्याचित् (अव्य०) किसी से भी। (जयो० ३/७३)

कस्यापि (अव्य०) किसी का भी। (मुनि० ८)

कह्लारं (नपुं०) [के जले ह्लादते-क+ह्लाद् अच्] श्वेत कमल।

का (सर्व०स्त्री०) कौन, क्या। का कोमलाङ्गी। (जयो० ५/८६) संजतानां का क्षतिः का नाम पंचमी वि रूप। (मुनि० १८) (जयो० ११/९७)

कांसीयम् (नपुं०) [कंसाय पानपात्राय हितम्- कंस+छ+अण्] जस्ता, धातु विशेष।

कांस्य (वि०) कांस्य से निर्मित। कंसाय पानपात्राय हितं कंसीयं तस्य विकारः।

कांस्यं (नपुं०) कास्यपात्र, कांसे का बर्तन, कटोरा।

कांस्यकारः (नपुं०) कसेरा, ठठेरा, कांसे के बर्तन बनाने वाला।

कांस्यतालः (पुं०) झांझ, करताल।

कांस्यभाजनं (नपुं०) कांसे का पात्र, पीतल का बर्तन।

कांस्यमलं (नपुं०) ताम्रमल, तांबे का अंश। (जयो० वृ० ४/६६)

काकः (पुं०) १. कौवा, वायस। (दयो० वृ०१०१) २. घृणित, निन्दित, नीच।

काक-क (वि०) कौवों का समूह।

काक-चक्षुस् (नपुं०) वायस नेत्र, काक नयन। (जयो० २/१०)

काकचिंता (स्त्री०) गुंजा, घुंघची, जिससे स्वर्ण को तौला जाता था। रत्ती भर की एक घुंघची होती है।

काकछदः (पुं०) खंजनपक्षी।

काकछदिः (पुं०) खंजनपक्षी।

काकजातः (पुं०) कोयल।

काक-तालीय (वि०) जो बात अकस्मात् अप्रत्याशित रूप से घटित। न्याय/तर्क उपस्थित करने पर कभी क्रिया विशेषण के रूप में प्रयुक्त हो जाता है।

काकतालुकिन् (वि०) घृणित, निन्दनीय।

काकदन्तः (पुं०) १. कौवे का दांत। २. असंभव वस्तु की खोज।

काकध्वजः (पुं०) वडवानल।

काकनिन्द्रा (स्त्री०) शीघ्र खुलने वाली नींद, स्वल्प निद्रा।

काकपक्षः (पुं०) लम्बायमान बाल।

काकपदम् (नपुं०) हस्तलिखित ग्रन्थ का चिह्न। (^), पद या अक्षर, छूटने का स्थान सूचक।

काकपदः (पुं०) संभोग की रीति।

काकपुच्छः (पुं०) कोयल।

काकपुष्टः (पुं०) कोयल।

काकपेय (वि०) छिछला।

काकभीसः (पुं०) उल्लू, उलूक।

काकमद्गुः (पुं०) जलकुक्कुट।

काकप्रहारः (पुं०) कायरता युक्त घात। परस्य शोपाय कृतप्रयत्नं काकप्रहाराय यथैव रत्नम्। (वीरो० १८/)

काकरुक (वि०) १. कायर, भीरु, भय भी, २. निर्धन, गरीब।

काकयवः (पुं०) धान्यकण रहित बाल।

काकलः (पुं०) पर्वतीय वायस, पहाड़ी कौवा।

काकलि (पुं०) [कल्+इन्] मधुर स्वर, मन्द मंद मीठी आवाज।

काकलेश्या (स्त्री०) कौवे की तरह वर्णवाली लेश्या, तनुवातवल का स्थान। (धव० ११/१९)

काकादिपिण्डहरणं (नपुं०) काकादि के द्वारा पिण्ड/आहार हरण, आहार पद्धति का एक दोष/अन्तराय।

काकारिलोकः (पुं०) उलूकसमूह, उलूक समु दाय। दोषानुरक्तस्य खलस्य चेश काकारिलोकस्य च को विशेषः (वीरो० १/२०)

काकिणी (स्त्री०) कौडी, एक माप अंश।

काकिणिका (स्त्री०) कौड़ी।

काकिनी (स्त्री०) [कक्+णिनि+ङीप] कौड़ी।

काकु (स्त्री०) [काक्+उण्] भय, शोक, क्रोध, संवेगात्मक स्वर।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

काकुत्स्थः (पुं०) वंश विशेष।

काकुदं (नपुं०) तालु।

काकुपूर्वदृष्टान्तः (पुं०) विरुद्ध अर्थ को व्यक्त करने वाला दृष्टान्त।

अपि विर्तर्कितयैव वसेर्मन इह च किं वसतोऽपि विषत्पुनः।
किमुत गरुडिनो विलसन्मतेर्भुजग, भुक्तमपीति विषायते।।

स्पष्ट बुद्धि वाले विषवैद्य को सर्पदंश क्या विष रूप होता है? अर्थात् नहीं।

काकुभावः (पुं०) तर्क-वितर्क। किमेतदित्थं हृदि काकुभावं कुर्वन् जनानां प्रचलत्प्रभावः।

काकुलेशः (पुं०) तर्क युक्त। (वीरो० १४/२१) (वीरो० ५/१)

काकूत्थ (नपु०) प्रश्नवाचक चिह्न। किमसौ मम सौहृदाय भायादिति काकूत्थमनङ्गनङ्गमङ्ग लायाः। (जयो० १२/१५)

काकूरिक्तरलंकारः (पुं०) विरुद्ध अर्थ को प्रकट करने वाला दृष्टांत। निवारिता तापतया घनाघना, घना वनान्ते सुरतश्रमोद्भिदः। भिदरस्तु किं वा निशि संगतात्मनां मनागपि प्रेमवतामुताहि वा।। (जयो० २४/१९) सघन मेघों के विद्यमान रहने से जहां दिन की गर्मी प्रेमी मनुष्यों के उपभोग में बाधक है।

काकोलः (पुं०) [कक्+णिच्+ओल] कौवा उड़ाना।

काकोड्डायनं (नपुं०) काक उड़ाना। 'चिन्तामणिं क्षिपत्येष, काकोड्डियनहेतवे' पर्वतीय काक।

काक्षः (पुं०) तिर्यक् दृष्टि, तिरछी चितवन। 'कुत्सितं अक्षं यत्र'

काक्षं (नपुं०) भृकुटी चढ़ाना, त्योरी तानना।

कागः (पुं०) काक, वायस, कौवा। 'यवेषु कागस्य यथा कदापि। (समु० ३/२१)

काङ्ग्लेशः (पुं०) कांग्रेस (दयो० ५२)

काङ्क्ष् (सक०) चाहना, इच्छा करना, कामना करना, लालायित होना।

कांङ्क्षा (स्त्री०) [काङ्क्ष्+अ+टाप्] इच्छा, चाह, अभिलाषा, कामना, कंखा, आकांक्षा। (सम्य० ९१) इह लोक-परलोक विषयाकांक्षा।

काङ्क्षिन् (वि०) [काङ्क्षः+णिनि] इच्छुक, अभिलाषा करने वाला।

काचः (पुं०) [कच्+घञ्] शीशा, स्फटिक। (वीरो० ८/१२) (जयो० वृ० ९/७९) 'स्वतन्त्र्येण हि को रत्नं त्यक्त्वा काचं सयेष्यति। (जयो० ७/१)

काचनं (नपुं०) [कच्+णिच्+ल्युट्] धागा, डोरी।

काचनकिन् (पुं०) [काचनक+इनि] हस्तलिखित ग्रन्थ।

काचनापि (अव्य०) किसी का भी। (जयो० वृ० ३/६३)

काचांशा (पुं०) दर्पण खण्ड, दर्पण का टुकड़ा। 'नक्षत्र-काचांशततात्र एष' (जयो० १५/२६)

काचित् (अव्य०) कोई भी, कितनी ही (जयो० ५/५९) 'चेष्टा स्त्रियां काचिदचिन्तनीया' (सुद० १०७)

काचिदन्य (वि०) अन्य कोई भी, दूसरे कितने ही। 'तदर्थ मेवेयमिहास्ति दीक्षा, न काचिदन्या प्रतिभाति भिक्षा।'

काचिदपि (अव्य०) कुछ भी। (दयो० ७५) (वीरो० ५/४)

काचूकः (पुं०) [कच्+ऊकञ्] मुर्गा, चकवा।

काजलं (नपुं०) स्वल्प जल, थोड़ा पानी।

काञ्चन (वि०) सुनहरी, स्वर्णमयी, पीतिमा युक्त।

काञ्चनं (नपुं०) सुवर्ण, सोना। (जयो० २७/५४)

काञ्चनकं (नपुं०) सुवर्ण सोना। काञ्चनमिति कृत्वास्वार्थे कः प्रत्ययः'।

काञ्चनकलशाली (स्त्री०) स्वर्णमयी कलशः। (वीरो० ७/३४) (जयो० वृ० २७/५४)

काञ्चनकाञ्चनं (नपुं०) स्वर्ण स्तुति, संसारी व्यक्ति की स्तुति स्वर्ण की ओर होती है। 'मनः कञ्चनमेव काञ्चनमिति कृत्वा स्वार्थे कः प्रत्ययस्तस्य अञ्चनाय सुवर्णस्यैव स्तवनाय'

काञ्चनगिरिः (पुं०) कंचनापर्वत। (समु० ५/३१) 'किञ्च-काञ्चनगिरेः सुगुहायां'।

काञ्चनचित्तवृत्ति (स्त्री०) स्वर्णमय छवि। (सुद० ११८) (जयो० २७/५४)

काञ्चनछवि (स्त्री०) स्वर्णमय छवि, स्वर्णसदृशमूर्ति। (सुद० ३/१४)

काञ्चनस्थितिः (स्त्री०) स्वर्ण की स्थिति, स्वर्णरूपिणी, सुन्दर रूप वाली। 'काञ्चनस्थितिमतीं वसुन्धरां' (जयो० २१/४२)

काञ्चना (स्त्री०) रतिप्रभदेव की देवी/रानी। भार्यां निजस्य चतुरामिह काञ्चनाख्याम्। (जयो० २४/१०१)

काञ्चनारः (नपुं०) कचनार तरु।

काञ्ची (स्त्री०) १. मेखला, करधनी, कंदौरा। २.दक्षिण भारत का एक नगर, काञ्ची नगरी। (जयो० ५/३५)

काञ्चीगुणं (नपुं०) प्रकोष्ठ 'कक्षा तु गृहे काञ्चीप्रकोष्ठयोः' इति विश्वलोचनः' (जयो० १७/६७)

काञ्चीपति (पुं०) काञ्ची नगर का राजा। (जयो० ५/३५)

काञ्चीफलं (नपुं०) गुञ्जाफल, चिरमीफल। (जयो० ६/३५)

काञ्जिकं (नपुं०) कांजी, खट्टा पेय पदार्थ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

काटुकं (नपुं०) अम्लता, खट्टा, खटाई।

काठः (पुं०) [कट्+घञ्] पत्थर, चट्टान। प्रस्तर, शैल।

काठिनं (नपुं०) १. कठोरता, कठिनता। २. क्रूरता, कटुता, निर्दयता।

काठिन्य (वि०) कठोरता, क्रूरता। (वीरो० २/४८, सुद० १/३५)

काडुवेदः (पुं०) पल्लवप्रदेश राजा। (वीरो० १५/४३)

काण (वि०) [कण्+घञ्] १. करना, एक नयन युक्त। २. काना-छिद्र युक्त, खराब। हीन, व्यर्थ-(जयो० १९/५८)

काणकं (नपुं०) स्वर्ण/सोना निर्मित। कनकनिर्मित।

काणकक्रयी (वि०) कनकनिर्मित का खरीददार, स्वर्णनिर्मित आभूषणादि का क्रय करने वाला।

काणेली (स्त्री०) व्यभिचारिणी स्त्री।

काण्डः (पुं०) १. खण्ड, भाग, अंश, हिस्सा, अधिकार, सर्ग। २. पोर, गांठ, डंठल, तना, शाखा। ३. ग्रन्थांश, पुस्तक का अध्याय। ४. कृत्य, निम्नकार्य, नीचकार्य, पापजनक व्यवहार,।

काण्डकर (वि०) १. दुराचारी। २. अध्याय प्रस्तुत कर्ता।

काण्डकारः (पुं०) निर्माता, प्रस्तुत कर्ता।

काण्डगोचरः (पुं०) अयस्क बाण।

काण्डधरः (पुं०) कनात, परदा।

काण्डभंगः (पुं०) शरीरांश का टूटना, हड्डी भंग।

काण्डसन्धिः (स्त्री०) ग्रन्थि, जोड़।

काण्डस्वरः (पुं०) खिड़की, झरोखना। (जयो० १२/११३)

काण्डीरः (पुं०) धनुर्धारी।

कात् (अव्य०) तिरस्कार सूचक अव्यय, अपमान, तिरस्कार/

कातन्त्र्यं (नपुं०) प्रसिद्ध संस्कृत व्याकरण।

कातर (वि०) कायर, भयायुक्त, उत्साह विहीन, दुःखी, (वीरो० १६/६) व्याकुल, शोकजनित, विक्षुब्ध, 'निवहन्नुपयाति कातरः' (जयो० १३/५१) 'कातरो भीत इव' (जयो० वृ० १३/५१) १. असमर्थ-त्वदादेशविधिं कर्तुं कातरोऽस्मीति वस्तुतः।' (सुद० ७९)

कातरचित्तः (पुं०) कायर हृदय, भयभीत चित्त वाला। (दयो० ९२)

कातर्य (नपुं०) कायरता, भयाकुलता।

कार्तज्ञता (वि०) कृतज्ञता, प्रत्युपकार। (जयो० २९/६४)

कार्तिकेयः (पुं०) कार्तिकेयानुप्रेक्षा के रचनाकार।

कात्यायनः (पुं०) एक प्रसिद्ध वैयाकरण।

काथिक (वि०) [कथा+ठक्] कथा वाचक।

कादर्थ (वि०) कृपणत्व, कंजूसीपना। (जयो० २/११०)

कादम्बः (पुं०) १. कलहंस, राजहंस। २. इक्षु, ईख, गन्ना। ३. कदम्ब वृक्ष।

कादम्बरं (नपुं०) शराब, कदम्बतरु से निकाली गई सुरा।

कादम्बरी (स्त्री०) वाणी, वचन। (जयो० ११/७६)

कादम्बिनी (स्त्री०) मेघमाला, खे पंक्ति। 'कादम्बिनी पीनपयोधरा वा'। बादल समु दाय। (समु० २/५) मेघ समूह।

कादाचित्क (वि०) [कदाचित्+ठञ्] आकस्मिक, कभी कभी।

काद्रवेयः (पुं०) [कद्रो अपत्यम्-कद्रु+ठक्] सर्प, सांप, अहि। (जयो० ११/९६)

काननं (नपुं०) [कन्+णिच्+ल्युट्] अरण्य, जंगल, विपिन। (जयो० १३/५०) १. उपवन, बाग, बगीचा।

काननक्षेत्र (नपुं००) अरण्य भाग, वनक्षेत्र, वनांचल।

कानन-पादपः (पुं०) जंगली वृक्ष।

काननभू (स्त्री०) वनक्षेत्र, वन भू-भाग।

काननभूमिः (स्त्री०) अरण्यभूमि, वनावनि। (जयो० २३/११३)

कानन-सौन्दर्य (वि०) अरण्यशो भा।

कानिष्ठिकं (नपुं०) [कनिष्ठिका+अण्] कनिष्ठा अंगुली, छोटी अंगुली।

कानिष्ठिनेयः (पुं०) लघु पुत्री की सन्तान।

कानीनः (पुं०) १. कन्या। २. कन्यायाः जातः कन्या+अण्। अविवाहिता कन्या का पुत्र।

कानीनजनः (पुं०) माण्डपिक, विवाह के मण्डल में स्थित लोग। समभृत्क्रमभूमिरेकधा चाखिल-कानीनजनो-मनोज्ञवाचा। (जयो० १२/३३)

कान्त (वि०) [कन्+क्त] १. प्रिय, इष्ट, मनोज्ञ, अनुकूल। धव। (जयो० वृ० १४/२३) २. सुखकर, यथेष्ट, मनोहर, सुन्दर, रमण, रमणीय। (जयो० वृ० २/१४८) ३. पति, प्रेमी। (सुद० वृ०८३) 'कान्तमामेनिरेऽङ्गना' (सुद० ८३)

कान्तता (वि०) कान्ति युक्त। (जयो० २२/४६)

कान्त-समागमः (वि०) प्रिय संसर्ग। (जयो० १७/२०)

कान्ता (स्त्री०) १. वनिता, पत्नी, भार्या, प्रिया, प्रेमिका। कान्तालसन्निधानस्य फलतात् सुमनस्कता' (जयो० १/११२) २. सुहावनी, लावण्यमयी स्त्री। कान्तां रजनीं गत्वा। (सुद० ९९) ३. बड़ी इलायची, प्रियंगुलता। ४. भू, भूमि, पृथ्वी।

कान्तार (कान्त+वत+अण्) १. प्रिय, २. वन, अरण्य। (जयो० १६/२२)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कान्ताकुच शैलः (पुं०) उठे हुए कुच। (वीरो० ९/३३)

कान्तामुख-मण्डलः (पुं०) प्रिया का मुख समूह। (वीरो० १२/२३) 'कान्तार सद्विहारेऽस्मिन्' (सुद० ८४) २. ऊबड़ खाबड़ मार्ग, दूषित पथ। ३. लालरंग की ईख।

कान्तावलोकः (पुं०) प्रियावलोक।

कान्तिः (स्त्री०) [कम्+क्तिन्] प्रभा, चमक, आभा, सौन्दर्य, लावण्य, रमणीयता, दीप्ति। २. कामना, इच्छा, आशा। (जयो० ११०)

कान्तिकर (वि०) शोभा युक्त।

कान्तिगेहं (नपुं०) सुन्दर घर।

कान्तिचन्द्रः (पुं०) प्रभावान् चन्द्र।

कान्तिचयः (पुं०) कान्ति समूह, दीप्तिमान। 'कान्तीनां चयः समूहो यस्य सः'।

कान्तिझरतांत (वि०) कान्तिप्रवाह। (जयो० ६/९१) (जयो० वृ० ३/१०४)

कान्तिमतिः (स्त्री०) १. सरस्वती की उपाधि 'श्रीमतीं भगवतीं सरस्वतीं' (जयो० २/४१) 'श्रीमतीं कान्तिमतीं' (जयो० वृ० २/४१) २. प्रभासहित, भासपूर्ण, आभा युक्त।

कान्तिभत्व (वि०) कान्तियुक्त (जयो० ११/१५) (जयो० वृ० १/६९)

कान्तिहीन (वि०) १. लावण्यागतिगत। लवण रहित। (जयो० वृ० १२/१२५) २. प्रभा रहित, आभा शून्य।

कान्दवं (नपुं०) [कन्दु+अण्] अयस्क कढ़ाई, लोह कड़ाह।

कान्दविक (वि०) [कान्दव+ठक्] १. आपूपिक, पुआ। (जयो० वृ० ३/६१) २. हलवाई, मिठाई बनाने वाला। (समु० १/१५) 'कुर्यात्, कविः कान्दविकः कवित्वम्' (समु० १/१५)

कान्दिशीक (वि०) उड़ाने वाला, भगाने वाला, भयभीत, भययुक्त।

कान्यकुब्जः (पुं०) एक देश नाम।

कापटिक (वि०) [कपट्+ठक्] प्रगल्भ कपट करने वाला, कुटिल प्रवृत्तियुक्त। परमर्मज्ञः प्रगल्भश्छात्रः कापटिकः। बेईमान, धोखेबाज।

कापट्य (नपुं०) [कपट+ष्यञ्] दुष्टता, धोखेबाज, धोखा देने वाला।

कापथः (पुं०) दुर्मार्ग, कुपथ, कंटकाकीर्ण, विकृतमार्ग। (सम्य० ९३)

कापथघट्टनं (नपुं०) विकृतमार्ग का खण्डन। (सम्य० ९३) तत्त्वोपदेशकृत्सर्वशास्त्रं कापथघट्टनं।

कापर्दिकः (पुं०) कौड़ी। (वीरो० ६/४)

कापालः (पुं०) [कपाल+अण्] एक समु दाय।

कापि (अव्य०) कोई भी (सुद० ८५)

कापिल (वि०) कपिल सम्बन्धी। कापिलानां कृपिलानुयायिना सती प्रतीतिः।

कापिलसत्प्रतीतिः (पुं०) सांख्यमत।

कापुरुषः (पुं०) कायरपुरुष, कुपुरुष, निम्न व्यक्ति।

कापिष्टः (वि०) आठवां स्वर्ग। (समु० ५/३३, ६/२४)

कापेयं (नपुं०) वानर जाति का।

कापोत (वि०) [कपोत+अण्] १. कलुषता युक्त भाव। २. भूरे रंग का, कबूतर के रंग का।

कापोतलेश्या (स्त्री०) कलुषता युक्त भावों वालों को लेश्या, लेश्याओं में तीसरी लेश्या।

कापोतलेश्यावर्णः (पुं०) कपोतलेश्या का वर्ण-अलसी पुष्प या कबूतर के कण्ठ जैसा।

काफी होलिकारागः (पुं०) एक राग विशेष, जिसमें ज्ञेय तत्त्व की प्रधानता होती है। कदा समयः स समायादिह जिनपूजायां। कञ्चनकुलशे निर्मलजलमधिकृत्य मञ्जु गङ्गायां। (सुद० वृ०७१)

कामः (पुं०) [कम्+घञ्] कामना, इच्छा, अभिलाषा, लालसा, आसक्ति, विषयभाव, स्नेह, अनुराग, प्रेम, सर्वेन्द्रिय प्रीति, रुचि, दुष्ट अभिप्राय।

दर्पक-(जयो० वृ० ५/१२)

अन्तशय-कामदेव (जयो० वृ० ३/८६)

कामचेष्टा-'कामोऽपि नामास्तु यदिङ्गवश्यः' (सुद० ७/४)

रति-(जयो० १७/१३२)

कामपुरुषार्थ-(जयो० वृ० ५/४३)

कामशास्त्र- (जयो० वृ० २/५७)

वाञ्छा-(जयो० ११/९४)

इच्छापूर्ति-(जयो० ११/८६) 'कामस्य सुरम्या वाञ्छितकर्त्री' (जयो० ११/८६)

कार्य-जयो० ७/१ 'अथ दुर्मर्षणः स्वस्य नाम कामं समर्थयन्' (जयो० ७/१)

कामदेव-(जयो० १/३५)

एक पुरुषार्थ (जयो० १/३)

स्मृतिशास्त्र-कामवत्-मनोभूसदृशः।

काम-कथा (स्त्री०) कामिनी के रूप सौन्दर्य आदि से सम्बन्धित कथा। 'स्त्रीषु दुरभिसन्धिः कामः तत्कथा'।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कामकर्मन् (नपुं०) विवाहाकार्य, (जयो० ३/७३)

कामकला (स्त्री०) रति, कामदेव की पत्नी।

कामकलाश्रमः (पुं०) रतिकेलिखेद, संभोग से उत्पन्न थकान। (जयो० १७/१९२)

कामकेतु (स्त्री०) कामदेव की ध्वजा, 'कामकेतो रतिपतिध्वजा' (जयो० वृ० १२/४४.

कामकृत् (वि०) इच्छानुसार कार्य करने वाला, समय पर कार्य करने वाला।

कामक्रीड़ा (स्त्री०) रति क्रीड़ा, संभोग।

कामग (वि०) कामस्थान।

कामगति (वि०) काम स्थान पर जाने दो।

कामगविः (स्त्री०) कामधेनु, इच्छापूर्ति करने वाली गाय। (जयो० ३/२३)

कामगुणः (पुं०) स्नेह, प्रीति, प्रेमभाव, आमोद-प्रमोद, प्रणयभाव।

कामचर (वि०) इच्छानुसार गमन/विचरण करने वाला।

कामचार (वि०) काम-वासना का आचरण करने वाला।

कामचारिन् (वि०) आसक्ति पूर्ण आचरण करने वाला, विषयी, काम लालसा युक्त।

कामचारिन् (पुं०) गरुड़ पक्षी।

कामज (वि०) इच्छा युक्त।

कामजय (पुं०) काम पर विजय, सर्वेष्वपिजयेष्वपिगतः', विषयाभिलाषा पर नियन्त्रण, कामजयो गतः (वीरो० ८/४१)

कामजयी (वि०) इन्द्रिय विषय को जीतने वाला।

कामजित् (वि०) इन्द्रिय जयी, प्रेमजयी। (जयो० वृ० १९/३८)

कामतः (अव्य०) [काम+तसिल्] स्वेच्छा से, इच्छापूर्वक, अपनी इच्छा से, भावनावश।

कामतन्त्रं (नपुं०) १. कामोद्दीपक, २. कामपुरुषार्थ शिक्षक शास्त्र, कामशास्त्र। कामतन्त्रमुपयामि जघन्यं शून्यवादमुदरं खलु धन्यम्। (जयो० ५/४३) 'कामतन्त्रमति यत्नतः' पठेद्युपस्थितिं रूपादिमन्यते' (जयो० २/५७)

काम-तीव्रता (वि०) इच्छा की तीव्रता, आसक्ति की अधिकता।

कामदा (स्त्री०) १. कामधेनु, २. वाञ्छितदायिनी, इच्छित फलप्रदात्री। (जयो० ११/९४)

काम-दारता (स्त्री०) रति रूपता कामदेव की पत्नी स्वरूप वाली। 'कामस्य मदनस्य दारतां रतिरूप तामततु' (जयो० वृ० ११/९४)

कामदर्शन (वि०) सुंदर दिखने वाला, रूपवान दृष्टि वाला।

कामदुध (वि०) अभीष्ट पदार्थ प्रदाता।

कामदुधा (स्त्री०) कामधेनु।

कामदुह् (स्त्री०) कामधेनु।

कामदूती (स्त्री०) मादा कोयल।

कामदेवः (पुं०) सुमेषी-सुमेषीः कामदेवस्य (जयो० ११/३२)
विस्मापनदेवता-(जयो० ११/६२)
पुष्पशर-(जयो० ११/१२)
मकरध्वज-(जयो० ५/६०)
चित्तभू-(जयो० ३/४)
वाम-(जयो० ११/९)
सुमायुध-(जयो० २६/४५) सुद र्शनाख्यान्तिमकामदेव कथा पथायातरथा मुदे वः। (सुद० १/४)

कामधनं (नपुं०) काम पुरुषार्थ और अर्थ पुरुपार्थ। 'कामश्च धनं च' (जयो० वृ० २/१३)

कामधुरता (वि०) १. काम की प्रधानता। २. कौन सी उत्कृष्ट मधुरता, का मधुरता माधुर्यम्। (जयो० वृ० २२/४५)
कामधुरतां स्मरस्य प्रधानभाव तामारादवाप। (जयो० वृ० २२/४५)
वसन्तयुक्ता-'का नाम मधुरता वसन्तयुक्तता। मधुरतोदारा सती कामधुरता न कामधुरता बभावुदारात्र कामधुरतामत्राप साऽरात्। (जयो० २२/४५)

कामधेनुः (स्त्री०) इच्छादायिनी गाय, (जयो० ५/४) (वीरो० १/१७) इच्छाप्रदात्री गाय, कामदा, कामदुध, कामदुधा। कामस्य सुरम्या वाञ्छितकर्त्री। (जयो० ११/८६)

कामध्वंसिन् (वि०) काम को जीतने वाले जितेन्द्रिय।

कामन (वि०) [कम्+णिङ्+युच्] विषयाभिलाषी, कामासक्त।

कामना (स्त्री०) मनोभावना, इच्छा, वाञ्छा, चाह। 'उचितामिति कामनां प्रपन्नौ' (जयो० १२/१०३)

कामना रसः (पुं०) आम रस की इच्छा। सर्वमेतच्च भव्यात्मन् विद्धिधर्मतरोः फलम्। कामनारस यस्य स्यादर्थ- स्तत्समुच्चयः।। (सुद० ४/३९)

काम-निकारः (पुं०) रतिपति का पराभव, कामदेव को लज्जायुक्त करने वाला। 'देहदीप्तिकृतकाम-निकाराः' (जयो० ५/१) 'कामस्य रतिपतेर्निकारः पराभवो' (जयो० वृ० ५/१)

कामनीयं (वि०) [कमनीयस्य भावः] रमणीयता, रम्यता, रूप सौम्यता, सौन्दर्य, लावण्यता।

कामन्धमिन् (पुं०) [कामं यथेष्टं धमति काम+ध्मा+णिनि] कसेरा, ठठेरा।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कामपतिः (पुं०) रतिदेव, कामदेव।

कामपरिवादम् (नपुं०) काम वासना से दूर, विषयासक्ति से पृथक्। 'यस्य कामपरिवादसादृशे' (जयो० २/६८)

कामपालः (पुं०) बलराम।

काम-पावकः (पुं०) स्मर-वह्नि, कामाग्नि, विषयासक्ति की ज्वाला। 'हृदयस्ति कामपावकम्' (जयो० २१/७०)

कामप्रवेदनं (नपुं०) कामना का कथन, इच्छा निरूपण।

कामप्रश्नः (पुं०) मुक्त प्रश्न, इच्छित प्रश्न।

कामप्रसूः (स्त्री०) वाञ्छिकर्त्री, कामजिती, कामजन्मदात्री। (जयो० १९/३८) 'कामप्रसूः सम्प्रति लोकमातः' 'कामजितः कामहरणास्यार्हतो भगवता प्रियापि कामप्रसूः कामजन्मदात्रीति विरोधे त्वं कामप्रसूर्वाञ्छितकर्त्रीति परिहारः।' (जयो० वृ० ९/३८)

कामप्रिया (स्त्री०) रति, कामदेव। की भार्या। (जयो० ५/८७)

कामफलं (नपुं०) एक वृक्ष के फल की जाति, आम्र वृक्ष की जाति।

कामभावः (पुं०) वासनाभाव, आसक्ति परिणाम।

कामभावना (स्त्री०) इच्छा की भावना, भोग जन्य कार्यों के प्रति भाव।

कामभोगः (पुं०) विषयभोग, इन्द्रिय भोग, इन्द्रियासक्ति।

कामम् (अव्य) [कम्+णिङ्+अम्] इच्छा के अनुसार, सहमति पूर्वक। प्रसन्नता के साथ।

कामबाणः (पुं०) कामशर, (सुद० १०७)

काममखं (नपुं०) कामयज्ञ, स्मरयज्ञ, रतीशयज्ञ। (जयो० २/६) 'काममखं सा विदधे' (जयो० २४/१३३)

काम-मङ्गलविधिः (स्त्री०) भोग के सभी साधन। 'स्वस्थानाङ्कित-काममङ्गलविधौ' निर्जल्पतल्पं' (जयो० २/१२३)

काममहः (पुं०) कामोत्सव, चैत्रमास में मनाया जाने वाला उत्सव।

काम-माता (स्त्री०) कामदेव की माता, लक्ष्मी। रतिरिव रूपवती या जाता जगन्मोहिनीय काममाता' (सुद० १/१४१)

काममूढ (वि०) कामासक्त, विषयासक्त, इन्द्रियासक्ति जन्य।

काममोदनं *(नपुं०) कामोत्पादक हर्ष। (जयो० १२/१११)* कामस्य रतिपरिणामस्य मोदनं परिवर्द्धनञ्च प्रतियच्छन्तु (जयो० वृ० १२/१११)

काममोहः (पुं०) कामासक्त।

काममोहित (वि०) इन्द्रिय विषय में आसक्त हुआ।

कामरसः (पुं०) वासना राग, प्रेमभाव।

कामरसिक (वि०) कामासक्त हुआ।

कामरागः (पुं०) प्रिया के प्रति अनुराग। कामरागः प्रियप्रमदादि विषय-साधनवस्तुगोचरः (जैन०ल० ३३५)

कामरामा (स्त्री०) रतिदेवी। विमर्दयामास कुचाङ्कमस्याः स कामरामासुपुमैकमध्याः (जयो० १७/५९)

कामरूप (वि०) कामदेव के रूप वाला। रतिराहित्यमद्यासीत् कामरूपे सुद र्शने। (सुद० ३/३)

कामरूपः (पुं०) कामरूप ऋद्धि विशेष। नानारूपों को धारण करने वाली तेजोलेश्या विशेष। 'जुगवं बहुरूवाणि जं विरयदि कामरूवरिद्धी सा।' (ति०५०४/१०३) 'इच्छिरूवगहणसत्ती' (धव० ९/७६)। २. कामरूप नामक देश (जयो० वृ० ६/२८)। ३. कामरूप नामक राजा। (जयो० वृ० ६/२८)

कामरूपाधिपः (पुं०) कामरूप नामक एक अधिपति/राजा। स्मररूपाधिक एषोऽस्ति कामरूपाधिपोऽथ सुमनोज्ञा। (जयो० ६/२८)

कामरूपाधिप (वि०) कामदेव के रूप से भी अधिक रूपवान्।

कामरूपित्व (वि०) नाना रूपों का धारण करने वाली शक्ति, युगपद्/एक साथ अनेक रूपों का धारण करने वाली शक्ति। 'युगपदनेकरूपविकरणशक्तिः कामरूपित्वमिति' (त० वा० ३/३६)

कामरेखा (स्त्री०) वेश्या, गणिका।

कामलता (स्त्री०) लिंग, पुरुष की जननेन्द्रिय, कामरूपी लता। 'कामलतामिति गच्छत्यभितः' (सुद० १०४)

कामवरः (पुं०) इच्छानुसार चयनित, उपहार प्रदत्त।

काम-वल्लभः (पुं०) १. वसन्त ऋतु। २. आम्रतरु।

कामवश (वि०) प्रेमासक्त, प्रेमावद्ध, प्रेम के वशीभूत।

कामवशः (पुं०) कामाभिभूत।

कामवश्यः (वि०) प्रेमासक्ति।

कामवाद (वि०) इच्छित-कथत, स्वेच्छापूर्वक विचार व्यक्त करना।

काम-वासना (स्त्री०) विषयासक्ति, प्रेमाभिभाव। (वीरो० २१/१४)

***काम-वासनातुरः** (पुं०) कामपीड़ित, आश्रितकाम। (जयो०* २३/६२)

कामविधा (स्त्री०) काम-वासना। (जयो० १/७८)

कामविधा-विधातु (वि०) काम की वासना को स्वीकार करने वाला। 'कामो मनोऽभिलषितं रतिपतिश्च तस्य विधा प्रकार विशेषः। २. मैथुनान्ते सातिरेक चुम्बनादि चेष्टा।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कामविनयः (पुं०) इन्द्रिय जन्य प्रवृत्ति।
काम-विहतृ (वि०) इच्छाओं को विनष्ट करने वाला।
काम-वृत्त (वि०) कामासक्त, वासनागम विषयों के घेरों में पड़ा हुआ।
कामवृत्ति (वि०) कामासक्त, स्वेच्छाचारी।
कामवृद्धिः (स्त्री०) वासनाभिवृद्धि, तीव्र काम-वेदना।
कामवृन्तं (नपुं०) शृंगवल्ली पुष्प।
कामशरः (पुं०) काम बाण, प्रेम-बाण। 'कामशरैः यथेच्छमुन्मुक्तैः शरैः' (जयो० वृ० ६/४४)
कामशर-प्रतानं (नपुं०) काम बाण समूह (जयो० १/८०)
कामशास्त्रं (नपुं०) रतिशास्त्र, कामतन्त्र। (जयोवृ०५/४३)
काम-संयोगः (पुं०) इच्छित वस्तुओं की उपलब्धिः, यथेष्ट का संयोग/मिलन।
कामसखः (पुं०) वसन्तराज, वसन्त।
कामसत्कृतिः (स्त्री०) कामसेना। (वीरो० ९/६)
कामसुधारसः (पुं) इच्छित अमृत रस, कामवासना रूप पीयूष रस। (सुद० १००)
कामस् (वि०) काम की अभिलाषा करने वाला।
कामसूत्रं (नपुं०) रतिशास्त्र, कामतन्त्र।
कामहेतुकः (वि०) इच्छाभाव को उत्पन्न।
कामांकुशः (पुं०) १. नख। २. लिंग, जननेन्द्रिय।
कामातुरः (पुं०) विषयातुर, इन्द्रिय इच्छाओं की ओर अग्रसर। (जयो० १/३, ३/१०५, सुद० ११/५२)
कामातिशयः (पुं०) काम की प्रमुखता। (सम्मु० ४/३०) 'कामातिशयात्स एव ताम्'
कामाधिकारः (पुं०) काम का अधिकार, प्रेम प्रभाव, कामासक्ति भाव।
कामाधिष्ठित (वि०) कामासक्त युक्त, प्रेम के वशीभूत।
कामानुरूपः (पुं०) काम के अनुरूप। (सुद० ११९)
कामारण्यं (नपुं०) प्रेम-वन, आसक्ति का उपवन।
कामारिः (पुं०) शिव, हर, शंकर। (जयो० १६/१०) 'कामस्यारिर्हरस्तस्य नामापि ललाम' (जयो० वृ० १६/१०)
कामारित (वि०) काम नाशक। 'कामारिता कामितसिद्धये नः' (वीरो० १/२)
कामार्थिन् (वि०) कामेच्छुक, विषयी।
कामावतारः (पुं०) प्रद्युम्न कुमार।
कामावसायः (पुं०) कामशमन, आसक्ति हनन।
कामाशनं (नपुं०) इच्छानुसार भोजन।
कामात्मन् (वि०) कामुक, विषयी।
कामायुध (नपुं०) कामदेव शस्त्र।
कामायुः (पुं०) गिद्ध, गरुड़।
कामासक्त (वि०) विषयासक्त, इच्छाओं में लीन।
कामिकान्त (वि०) रतिकान्तवाली। 'कामिभ्यः कान्ता· कामिकान्ता' (जयो० ६/९१)
कामिकान्ता (स्त्री०) काम की इच्छुक स्त्री। 'कामिभ्यः कान्ता कामिकान्ता' (जयो० वृ० ६/५१)
कामिजन-मनोहरः (पुं०) कामीजनों के लिए अत्यन्त प्रिय सुन्दरी। (जयो० वृ६/५१)
कामिजनाश्रय (वि०) (जयो० ३/७२)
कामित-दायिनी (वि०) काम देने वाली, विषयाभिलाषा उत्पन्न करने वाली। (जयो० १२/२५)
कामित (वि०) वाञ्छित। (वीरो० १/२) पंञ्चमी विभक्ति युक्त (जयो० १९//३)
कामिता (स्त्री०) कामासक्त, वाञ्छायुक्त। (जयो० १९/३२)
कामित्व (वि०) काम-वासना युक्त। (सुद० १२३) कामभाव से जागृत 'कामित्वमापादयितुं रसादित' (सुद० १२३)
कामिन् (वि०) [कम+णिनि] प्रेमी, प्रेमासक्त, रति युक्त, कामुक। विलासी, यथेष्टार्थ अभिलाषी, अभिप्राय जन्य। 'कामिनोऽभिप्रायपुष्टिकरीति' (जयो० वृ० ३/३६) कामान्ध (जयो० वृ० २/१५६)
कामिनी (स्त्री०) प्रिया, प्रेमिका, स्नेही, प्रीतिकरा, प्रियंकरा, सुन्दरी। कविकृतेरनुकर्त्री कामिनी अलङ्कारमाश्रितवती। (जयो० ३/११) 'चौर्यालीक-कथाकृतोऽपि न भवेत् सा कामिनी कामिनः।' (मुनि० २)
कामी (वि०) कामाभिलाषिणी। (सुद० १०२)
कामुक (वि०) अभिसारी (जयो० वृ० १४/१९) इच्छुक, वाञ्छा युक्त, कामासक्त, प्रेमवशीभूत, कामातुर।
कामुकः (पुं०) प्रेमी, नायक, कामी पुरुष। (जयो० ४/५६)
कामुकी (स्त्री०) प्रेमासक्त, प्रेमी स्त्री, इच्छावती, वाञ्छाशीला। (हित०सं०१६)
कामेप्सु (वि०) अभीष्ट वस्तु का इच्छुक।
कामेश्वरः (पुं०) कुबेर।
कामोत्पत्तिकर (वि०) काम की उत्पत्ति करने वाला। (जयो० १६)
कामोदयः (पुं०) काम का उदय। (सुद० ९९) कामभाव को जागृत करना। इत्यादि कामोदयकृन्नयगादि कृत्वा। (सुद० ९९)
कामोदय-कारणं (नपुं०) कामभाव को जागृत करना। 'अभीष्ट-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सिद्ध: सुतरामुपायस्तथाऽस्य कामोदय-कारणाय' (सुद० १०१)

कामोद्रेक: (पुं०) कामवेग। (जयो० वृ० १६/५)

कामोल्लसित (वि०) काम से प्रमुदित, वासनाओं के हर्ष को प्राप्त होने वाला। (जयो० ४/६३)

काम्पिल्ल: (पुं०) एक वृक्ष विशेष।

काम्बल: (पुं०) कम्बल/ऊनी वस्त्र से आच्छादित।

काम्बविक: (पुं०) सीप का व्यापारी, शंखाभूषण का व्यापारी।

काम्बोज: (पुं०) [कम्बोज+अण्] कम्बोज देश का रहने वाला।

काम्य (वि०) [कम्+णिङ्+यत्] १. इच्छित, वाञ्छित, वाञ्छनीय। २. सुन्दर, मनोहर, रमणीय, सौम्य।

काम्रता (वि०) सरसता। (जयो० व१२/१२७)

काम्ल (वि०) ईषद्, अम्ल, कुछ खट्टा।

काय: (पुं०) शरीर, देह 'चीयतेऽस्मिन् अस्थ्यादिकमिति काय: चीयन्ते अस्मिन् जीवा इति व्युत्पत्तेर्वा काय:।' (धव० ७/६) जिससे अविनाभावी त्रस-स्थावर का उदय होता है। 'औदारिक-शरीरनामकर्मोदयवशात् पुद्गलैश्चीयते इति काय:'

कायकल्पकारिन् (पुं०) रसायन का आश्रय, भैषजाश्रय। (वीरो० वृ०१/२२)

कायक्लेश: (पुं०) १. शरीरगत पीड़ा, देहजन्य दु:ख। २. कायक्लेश एक स्थिर आसन विशेष भी है, जिसमें काय के अवग्रह से आगमानुसार शरीर को स्थिर करने के लिए विविध आसनों का प्रयोग किया जाता है। 'कायक्लेश: स्थान मौनातपनादिरनेकधा' (त० वा० ९/१९) कायक्लेश तप विशेष है--*अकायक्लेशकृतत्वेन कायक्लेशोपयोगवान्।'* (समु० ९/१३) *अपने* पूर्वकृत पापकर्म को नष्ट करने के लिए जो देह सम्बंधी तप किया जाता है। 'कायक्लेशं शरीरस्य कष्टं श्रयन्नपि कायक्लेशो न सम्भूतो' कायक्लेशनामकं तपश्च कृतवानित्यर्थ, (जयो० २८/१२)

कायगुप्ति: (स्त्री०) शरीर की प्रवृत्ति को नियमित रखना। प्राणिपीडाकारिण्या: कायक्रियाया निवृत्ति: कायगुप्ति:। (भ०अ०टी० ११५) हिंसादि णियत्ती वा सरीरगुत्ती हवदि एसा (मूला० ५/१३६)

काय-चिकित्सा (स्त्री०) शरीर उपचार, देहगत व्याधियों का उपशमन, रोगप्रतिक्रिया। 'कायस्य ज्वरादि-रोगग्रस्तशरीरस्य चिकित्सा' (जैन०ल० ३३८)

कायदु:प्रणिधानं (नपुं०) पापजनित प्रयोग, अन्यथा परिणति, शरीरगत दु:ख की परिणति, प्रमादजनित सामायिक की परिणति। 'दुष्टप्रणिधानं सावद्ये प्रवर्तनम्' तत्र हस्त-पादादीनामनिश्चयभूतत्वावस्थापनं वायदुष्प्रणिधानम्' (सा०ध०टी० ५/३३)

कायपरीत: (पुं०) प्रत्येक शरीर वाला जीव।

कायप्रवीचार: (पुं०) शरीर से मैथुन सेवन। 'कायेन प्रवीचारो मैथुनव्यवहार:'

कायबल: (पुं०) असाधारण शरीर बल, शरीर ऋद्धि विशेष।

कायबलिन् (वि०) कायबली, देह से बलिष्ठ, तपोपयोग से प्रवृत्त क्रिया।

कायबलप्राण: (पुं०) शरीरचेष्टागत शक्ति। 'देहोदये शरीर नामकर्मोदये कामचेष्टा जननशक्तिरूप: कायबल प्राण:। (गो०जी०टी० १३१)

कायमानं (नपुं०) शरीर का प्रमाण।

काय-मालिन्य (वि०) देहगतमलिनता।

कायमोहिन् (वि०) शरीर के प्रति मोह रखने वाला।

काय-योग: (पुं०) शरीर सम्बन्धी योग, योग के तीन भेदों में से एक योग काय योग है, जिसमें शरीर का स्थिर करने के लिए प्रयत्न किया जाता है।

कायात्मप्रदेशपरिणाम।

वीर्यपरिणति विशेष।

जीवप्रदेश परिस्पन्दन। 'सप्तानां कायानां सामान्यं काय:, तेन जनितेन वीर्येण जीवप्रदेशपरिस्पन्दन लक्षणेन योग: काययोग:' (धव० १/३०८)

कायवध: (पुं०) पृथ्वी आदिक का वध, एकेन्द्रिय स्थावर जीव को पीड़ा।

कायविनय: (पुं०) नम्रतापूर्ण व्यवहार, शरीर को नम्रीभूत बनाना।

कायव्युत्सर्ग: (पुं०) शरीर के ममत्व का त्याग, सर्वत्र संवृताचार।

कायशुद्धि: (स्त्री०) सरलता पूर्ण काय, शरीर के प्रति यत्नपूर्ण प्रवृत्ति। अहेरिव गृहस्थस्थ, कौटिल्यमधिगच्छत: स्यान्मु-नेर्गरुडस्येव, पार्श्वे सरलता तनौ।। (हित०सं०५१) संस्कार-संहति।

कायसंयम: (पुं०) शारीरिक संयम, इन्द्रिय सम्बन्धी संयम।

कायस्थ (वि०) १. शरीरस्थ, शरीर की ओर अग्रसर। २. जाति विशेष।

कायस्थित (वि०) शारीरिक क्रिया में स्थित।

कायस्थिति: (स्त्री०) जीवत्व रूप पर्याय, एक काय को न छोड़कर उसके रहने तक नाना भवों का ग्रहण करना।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कायस्वभावः (पुं०) शरीर परिणति, देह के अपवित्रतागत परिणाम, दुःखहेतु।

कायापरीतः (पुं०) अनन्त कायिक जीव।

कायिक (वि०) शारीरिक, देहगत, शरीर सम्बन्धी।

कायिक-अशुभ-योगः (पुं०) शारीरिक कुशील प्रवृत्ति आदि का सम्बन्ध।

कायिक-असमीक्ष्णाधिकरणं (नपुं०) प्रयोजन बिना छेदन-भेदन के कार्यों का करना।

कायिकत्यागः (पुं०) शरीर सम्बन्धी त्याग (दयो० १२२) तत्रापि कायिकत्यागः सुशक्तो भुवि वर्तते। (दयो० १२२)

काथिक-विनयः (पुं०) शारीरिक विनम्रता, भक्तिपूर्वक कायोत्सर्ग आदि करना, उपकरणों का प्रतिलेखन।

कायिकी (स्त्री०) शारीरिक हलन-चलन।

कायिकीक्रिया (स्त्री०) दुष्टतापूर्वक उद्यम करना। 'दुष्टस्य सतः कायेन वा चलनक्रिया कायिकी। (भ०आ०टी० ८०७) 'प्रदुष्टस्य सतोऽभ्युद्यमः कायिकी क्रिया। (स०सि०६/५)

कायोत्सर्गः (पुं०) शरीर के प्रति ममत्व त्याग। (मुनि० १८) (सुद० १३३) वाचाङ्गेन यथोज्झितानि भवता बाह्यानि वित्तादिकन्यन्तस्तोऽपि संस्मेरदिहतकान्येतादृशी ह्याशिका किं तेभ्यो वपुषापि नाम्नि भवतः सम्बन्ध एषा स्थितिर्वस्तुतृवेन ततोऽनुरागकरणं तत्रापिशर्माज्झिति (मुनि० १७) साधुओं के आवश्यक कर्मों में एक आवश्यक कर्म कायोत्सर्ग भी है। कायादिपरदव्वे थिरभावं परिहरत्तु अप्पाणं तस्स हवे तणुसग्गं जो झायदि णिव्विअप्पेण 'कायः शरीरं तस्योत्सर्गः कायोत्सर्गः' कायं शरीरं उत्सृजति ममत्वादिपरिणामेन त्यजतीति कायोत्सर्गः तपो भवेत् व्युत्सर्गाभिधानं तपोविधानं स्यात्। (कार्तिके०४५८)

कायोत्सर्ग-भक्तिः (स्त्री०) शरीर के प्रति ममत्व त्याग सम्बंधी भक्ति। (भक्ति०४९) किन्तु प्रणाशायिजवंजवेषु महेन्द्रजालोपमसम्भवेषु। जिनेशवाचः समु दादरेण कायोऽपि नायं मम किं परेण।। (भक्ति०४९)

कार (त्रि०) यत्न, प्रयत्न, प्रयास, कर्ता, रचयिता, सम्पादन करने वाला, बनाने वाला। 'कारश्च यतियत्नो' इति वि० (जयो० २१/५१)

कारः (पुं०) १. कृत्य, कार्य, चेष्टा। २. पति, स्वामी, मालिक।

कारकर (वि०) कार्य करने वाला।

कारक (वि०) [कृ+ण्वुल] कर्ता, करने वाला, सम्पादन करने वाला।

कारकं (नपुं०) संज्ञा और क्रिया के मध्य रहने वाला सम्बन्ध। २. क्रिया से युक्त द्रव्य। 'कुर्वत एव कारकत्वं, यदा न करोति तदा कर्तृत्वस्यायोगात्' (लघीय० ६३८) 'कारकाणां कर्त्रादीनाम्' (न्यायकु० ५/८४)

कारकहेतुः (पुं०) क्रियात्मक कारण।

कारणं (नपुं०) हेतु, निमित्त, तर्क, जिसके सद्भाव में कार्य होता है। आधार, उद्देश्य, प्रयोजन, उपकरण, साधन। 'यस्मिन् सत्येव च यद्भावः तत्कार्यमितरत् कारणम्' (सिद्धिविनश्चय० १९३) जिसके होने पर जो होता है, वह कार्य और इतर-जिसके सद्भाव में कार्य होता है।

कारणगुणः (पुं०) कारण का गुण।

कारणदोषः (पुं०) वेदनादि भाव, आहार में दोष।

कारणपरमाणु (स्त्री०) पृथिवी, जल आदि के कारणभूत परमाणु। 'धाउ-चउक्कस्स पुणो जं हेऊ ति तं णेयो' (निय०२५) पृथिव्यप्तेजोवायवो धातवश्चत्वारः तेषां यो हेतु स कारणपरमाणुः। (निय०वृ०२५)

कारण-परमात्मन् (पुं०) ज्ञान दर्शन युक्त आत्मा, निवारण आत्मा।

कारणभूत (त्रि०) जो कारण बना हो। (जयो० वृ० १७/५३)

कारणमाला (स्त्री०) एक पुष्प माला, अलंकृत माला।

कारणबन्दनक (त्रि०) अभिलाषा युक्त वन्दना करने वाला।

कारणवादिन् (पुं०) वादी, प्रतिपक्षी, अभियोक्ता।

कारणविहीनः (त्रि०) कारण रहित।

कारणशरीर (नपुं०) कारणों कर मूल रूप।

कारणा (स्त्री०) [कृ०+णिच्+युच्+टाप्] वेदना, कष्ट, व्याधि, पीड़ा।

कारणाभावः (पुं०) कारणों का अभाव।

कारणाभावदोषः (पुं०) संयम का परिपालन न करना, आशंका युक्त होना।

कारणिक (वि०) [कारण+ठक्] १. नैमित्तिक, २. निर्णायक, परीक्षक।

कारण्डवः (पुं०) एक पक्षी विशेष।

कारन्धमिन् (पुं०) [कर एव कारः, तं धमति, कार+ध्मा+इनि] कसेरा, ठठेरा, खनिज विद्या का ज्ञाता।

कारवः (पुं०) कौवा, वायस्।

कारस्करः (पुं०) [कारं करोति-कार+कृ+ट] किंपाकवृक्ष।

कारा (स्त्री०) १. बन्दीगृह, कारावास, बन्दीकरण। (जयो० वृ० ८/६) २. कारिका, गुणयुक्त शिक्षा, सूत्र शिक्षा।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

परोपकारैकविचारहारात्कारागिरादाध्य गुणाधिकारम्। (जयो० १/८६) ३. तुम्बी, गर्दन/ग्रीव का निम्न भाग। ४. पीड़ा, व्याधि, दुःख।

कारागारः (पुं०) कारावास, बन्दीगृह। 'अपराध-कारिजनरोधनार्थं' (जयो० १५/२६)

कारागृहं (नपुं०) बन्दीगृह, कारावास।

काराधिकार (पुं०) करने का अधिकार। (सम्य० २९०)

कारायणं (नपुं०) बन्दीगृह, कारावास। (दयो० ४२)

कारावेश्मन् (नपुं०) बन्दीगृह, कारावास।

कारिः (स्त्री०) [कृ+इञ्] कार्य, कर्म, कलाकार, शिल्पकार।

कारिका (स्त्री०) [कृ+ण्वुल्+टाप्] १. श्लोक व्याख्या, विवरण, व्याख्यानकरण। (जयो० वृ० ५/९५) २. सूत्र-(दयो० २५) ३. कारिका-कारागृह, कारावास, सूत्रशिक्षा। (जयो० वृ० १/८६)

कारित (वि०) दूसरे से कराया जाने वाला। (जयो० ११/११) 'कारिताभिधान परप्रयोगापेक्षम्' (त० वा० ६/८, स०सि०६/८) 'परस्य प्रयोगापेक्ष्य सिद्धिमापद्यमानं' कारितमिति कथ्यते।' (त० वा० ६/८)

कारिन् (वि०) करने वाला। (जयो० १/४)

कारीषं (नपुं०) करीष/कंडे का ढेर, सूखे गोबर का ढेर।

कारु (वि०) [कृ+अण्] कर्ता, अभिकर्ता, शिल्पी, कलाकार, निर्माता, क्रिया। (१) कला, विज्ञान, विधि। 'चारुर्विधो कारुरुतामृतात्मा' (जयो० ११/९२) कारु-क्रिया विभ्राजते (जयो० वृ० ११/९२) कारु-कुशीलन-कर्मणि रतेपु संस्कारधारा।' (जयो० २/१११)

कारुणिक (वि०) [करुणा+ठक्] कृपा युक्त, कृपालु, दयावान् दयालु।

कारुण्यं (नपुं०) [करुणा+ष्यञ्] दया, कृपा, करुणाभाव, अनुकम्पा। सहृदयता, आत्मीयता, अनुग्रहात्मक परिणाम, अनुग्रहमति। 'कारुण्यमौदार्यमियद् हृदा' (समु० ८/२९) सौहार्दमङ्गिमात्रे तु क्लिष्टे कारुण्यमुत्सवम्। (मुद० ४/३५) 'कारुण्यमनुकम्पा दीनानुग्रह इत्यनर्थान्तरम्' (त०भ०७/६) 'दीनानुग्रहभावः कारुण्यम्' (स०सि०७/११) अनुग्रहमतिः सेयं करुणेति प्रकीर्तिता। (ज्ञाना०२७)

कारुण्य-जनित (वि०) करुणा से भरा हुआ।

कारुण्यपूर्ण (वि०) अनुकम्पा युक्त, दयाभाव युक्त। 'कारुण्यपूर्णमिव पृत्कुरुते द्विजाली' (जयो० १८/६९)

कार्कश्यं (नपुं०) [कर्कश+ष्यञ्] कठोरता, कर्कशता, दृढ़ता।

कार्तज्ञता (वि०) कृतज्ञता, प्रत्युपकार (जयो० २०/६४)

कार्तवीर्यः (पुं०) [कृतवीर्य+अण्] कृतवीर्य का पुत्र।

कार्तस्वरं (नपुं०) [कृतस्वर+अण्] सोना, शयन।

कार्तान्तिकः (पुं०) [कृतान्त+ठक्] ज्योतिषी, नैमित्तिक, भविष्य-वक्ता।

कार्तिक (वि०) [कृत्तिका+अण्] कार्तिक मास से सम्बन्धित।

कार्तिकः (पुं०) कार्तिक मास।

कार्तिकाश्रितिः (स्त्री०) कार्तिक मास का आश्रय। (जयो० ४/६६) आश्विनोपलपनेन हि निष्ठा कार्तिकाश्रितिरितो-ऽवशिष्टा।

कार्तिककृष्णाब्धीन्दुः (स्त्री०) चतुर्दशी। (वीरो० २१/२०)

कार्तिकी (स्त्री०) कार्तिक की पूर्णिमा।

कार्तिकेयः (पुं०) १. अनुत्तरोपादिक देव, जो राजा क्रौंच के उपसर्ग द्वारा स्वर्ग प्राप्त हुआ। २. स्वामी कार्तिकेय, जिन्होंने कार्तिकेयानुप्रेक्षा नामक प्राकृत ग्रन्थ की रचना की। (वीरो० १७/२०) ३. शिव पुत्र, शिवनन्दन।

कार्तिकेयानुप्रेक्षा (स्त्री०) कुमार कार्तिकेय की रचना (ई०१००८) इसमें कुल ४९१ गाथाएं हैं, ये सभी शौरसेनी प्राकृत में अनुप्रेक्षा/भावना के विषय को प्रतिपादित करने वाली है, इसमें वैराग्य विषय का समावेश है। इस पर आचार्य शुभचन्द्र ने (१५१६-१५५) में संस्कृत टीका लिखी। इस पर जयचन्द छाबड़ा की भाषा वचनिका है।

कार्त्स्न्यं (नपुं०) [कृत्स्न+ष्यञ्] पूर्णता, समग्रता।

कार्दम (वि०) [कर्दम+अण्] कीचड़ से भरा हुआ, कर्दम युक्त।

कार्पट (वि०) [कर्पट+अण्] आवेदक, अभियोक्ता, अभ्यर्थी।

कार्पटः (पुं०) चिथड़ा, कंथा, लत्ता, चिन्दी।

कार्पटिकः (पुं०) [कर्पट+ठक्] तीर्थयात्री।

कार्पण्यं (नपुं०) [कृपण+ष्यञ्] १. दरिद्रता, निर्धनता, २. कंजूसी, ३. लघुता, हल्कापन।

कर्पासः (पुं०) कपास (जयो० ३/३९)

कर्पासतन्तु (स्त्री०) सूती धागा। (जयो० वृ० ३/३६)

कार्पास् (वि०) [कर्पास+अण्] कपास से निर्मित, रूई से बना। (समु० १/१७)

कार्पासव (वि०) कपास से बना हुआ।

कार्पासिक (वि०) [कर्पास+ठक्] कपास से बना हुआ, रूई से तैयार किया गया।

कार्मण (वि०) [कर्मन्+अण्] १. कार्य करने वाला, काम

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पूर्ण करने वाला। २. कर्म रूप शरीर, कर्म के विकार भूत देह। (सम्य० ३४) 'कर्मणो विकारः कार्मणम्' 'कर्म्मणां कार्यं कार्मणम्' (स०सि०२/३६) 'कर्मेति सर्वशरीरप्ररोहण समर्थं कार्मणम्' (त० वा० २/२५) 'कर्मणामिदं कर्मणां समूह इति वा कार्मणम्' (त० वा० २/३६) जो सब शरीरों की उत्पत्ति का बीजभूत शरीर या कारण है। कर्मों का कार्य कार्मण शरीर है।

कार्मण-काययोगः (पुं०) कार्मण शरीर के द्वारा कृत योग। 'कार्मणकायकृतो योगः' (भव० १/२९९)

कार्मण-बन्धनं (नपुं०) गृह्यमाण कर्म परमाणुओं का परस्पर सम्बन्ध।

कार्मण-वर्गणा (स्त्री०) कर्म परमाणुओं की वर्गणा।

कार्मण-शरीरः (पुं०) कार्मणशरीर की प्राप्ति।

कार्मिक (वि०) [कर्मन्+ठक्] हस्त निर्मित, हाथ से बना हुआ।

कार्मुक (वि०) [कर्मन्+उकञ्] कार्य करने योग्य, पूर्णतः कार्य सम्पादन करने वाला।

कार्य (सं०कृ०) [कृ+ण्यत्] जो किया जाना चाहिए, सम्पन्न होना, कार्यान्वित। २. दण्ड, विचार, अनुष्ठान, प्रयोजन, उद्देश्य, अभिप्राय, आवश्यकता आदि कार्य हैं। क्षेमप्रश्नानन्तरं ब्रूहि कार्यमित्यादिष्टः प्रोक्तवान् सागरार्थः। (सुद० ३/४५) यः क्रीणति समर्थमितीदं विक्रीणीतेऽवश्यम्। विपणौ सोऽपि महर्घं पश्यन् कार्यमिदं निगमस्य।। (सुद० ९१) 'युद्धादिकार्ये व्रजतोऽप्यमुष्य' (सम्य० १५) वहावशिष्टं समयं न कार्यं मनुष्यतामञ्ज कुलस्तु नार्य। (वीरो० १८/३७) 'यस्मिन् सत्येव यद्भाव एव विकारं च विकार तत् कार्यम्' (सिद्धि०वि०वृ०४८७) जिसके होने पर जो होता है, वह कार्य है। कार्य को कारण भी कहते हैं। 'कार्यमितरत् कार्यम्' (सिद्धि०वि०वृ०४८७)

कार्यकर (वि०) ०प्रभावकारी, ०प्रभावशील, ०गुणयुक्त, ०उद्देश्यपूर्ण, ०अभिप्रायजनक। कालं कार्यकरं समर्थयति यत्सर्वज्ञदेवो गुणी। (मुनि० २९) ०कार्यकारी, ०कर्मयुक्त कार्य करने के लिए--गोदोहनाम्भोभरणादि- कार्यकरं पुनर्गोपवरं स आर्य। (सुद० ४/२२)

कार्यकारणं (नपुं०) कार्य और कारण का सम्बंध। 'कारण सद्भावे कार्यसद्भाव विशेषात्' (जयो० वृ० १५/६३) चेत्कोऽपि कर्त्तेति पुनर्यवार्थं यवस्य भूयाद्वपनं व्यपार्थम्। प्रभावकोऽन्यस्य भवन् प्रभाव्यस्तेनार्थ इत्येवमतोऽस्तुभाव्यः।। (वीरो० १९/४२) यदि जगत् के प्रत्येक पदार्थों का कोई ईश्वरादि कर्ता-धर्ता होता तो फिर जौ के लिए जौ का बौना व्यर्थ हो जाता। क्योंकि वही ईश्वर बिना ही बीज के जिस किसी भी प्रकार से जौ को उत्पन्न कर देता। फिर विवक्षित कार्य को उत्पन्न करने के लिए उसके कारण-कलापों के अन्वेषण की क्या आवश्यकता रहती? अतएव यही मानना युक्तिसंगत है कि प्रत्येक पदार्थ स्वयं प्रभावक भी हैं और स्वयं प्रभाव्य भी है अर्थात् अपने ही कारण कलापों से उत्पन्न होता है और अपने कार्य विशेष को उत्पन्न करने में कारण भी बन जाता है। जैसे बीज के लिए वृक्ष कारण है और बीज कार्य है।

कार्य-कारण-भावः (पुं०) कार्य कारण भाव।
वंशे नष्टे कुतो वंश
बाह्यस्यास्तु समु द्भवः।
कार्य-कारण भावेन
स्थितिमेति जवंजवः।। (दयो० वृ०४८)

कार्य-कारिन् (वि०) सार्थकता, (जयो० ४/२३) सन्निमन्त्रणमिहान्य कृतिभ्यः कार्यकार्यपि तु मन्त्रमणिभ्यः। (जयो० ४/२३)

कार्यकारिन् (वि०) 'कर्मान्यदन्यत्र न कार्यकारि, किं वृत्तमोहास्तु दृशे किलारिः। इत्थं वचश्चेन्निगदाम्यतोऽहं ज्ञाने मृषात्वाय न दृष्टिमोहः।। (सम्य० १२०-१२१) सार्थकता, प्रयोजनभूत।

कार्य-कोविदः (पुं०) कर्तव्य ज्ञाता, कार्य का जानकर विज्ञ/विद्वान्। 'कार्ये कर्त्तव्ये कोविदा विद्वांसस्ते' (जयो० २६/३६)

कार्य-गौरवं (नपुं०) किसी कार्य की महानता।

कार्यचणं (नपुं०) ०कार्यसाधन, ०कार्यसम्पादन काम की ०निष्पत्ति, ०कार्यसाधन में चतुर। 'कार्यवित्तः कार्यचणः कार्यसाधने प्रसिद्धः' (जयो० वृ० ९/५९) भवितुमर्हति भूवलयेऽपरः सुमुख कार्यचणः कतमो नरः। (जयो० ९/५९)

कार्य-चिंतक (वि०) ०सतर्क, ०सावधान व्यक्ति, ०चिंतनशील, ०दूरदर्शी, ०सजग, ०जागृत, ०प्रबन्धक, ०अधिकारी।

कार्यच्युत (वि०) कार्यरहित, कर्त्तव्यविहीन, पदच्युत।

कार्यता (वि०) कराने वाली। 'जगतस्तु सबाधकार्यतां नितरां' (जयो० २६/३६) किमुच्यतामीदृशि एवमार्यता स्ववाञ्छितार्थं विदनार्थकार्यता। (वीरो० ९/५)

कार्य-तोष (वि०) कार्य के प्रति संतुष्ट रहने वाला।

कार्यदर्शनं (नपुं०) कर्त्तव्यशोधन, कर्त्तव्य निरीक्षण, कार्य का परीक्षण।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कार्यदूतः (पुं०) कार्य संवाहक, कार्य कराने वाला। 'न कश्चिद्भुवि कार्यदूतः' (वीरो० १८/२)

कार्यनिर्णयः (पुं०) कार्य का निर्णय, कार्य का अन्वेषण।

कार्यनीतिः (स्त्री०) कर्त्तव्य नीति।

कार्यपरमाण् (स्त्री०) अन्त रहित भाग।

कार्य-परायणः (पुं०) कर्त्तव्य परायण, कार्य के प्रति सजग, उद्यमशील, परोपकारी। (जयो० वृ० ३/३)

कार्यपात्रं (पुं०) भृत्यादि कार्य, नौकर-चाकर के कार्य, भृत्यादि की आवश्यकता। (जयो०)

कार्यपुटः (पुं०) निरर्थक व्यक्ति, विक्षिप्त मनुष्य। २. कार्य के प्रति संलग्न।

कार्यप्रद्वेषः (पुं०) कार्य के प्रति अरुचि, आलस, उदासीनता।

कार्यप्रेष्यः (पुं०) दूत, संदेशवाहक।

कार्य-लेशः (पुं०) कर्त्तव्यमात्र, कार्य के प्रति सजग। 'कोऽसीह ते कः खलु कार्यलेशः'

कार्यवशः (पुं०) कार्य के कारण। (दयो० १५) (वीरो० १४/३४)

कार्यवस्तु (नपुं०) कार्य का उद्देश्य, लक्ष्य, प्रयोजन।

कार्यविपत्तिः (स्त्री०) असफला, प्रतिकूलता, दुर्भाग्य।

कार्यशेषः (पुं०) कार्य से मुक्त, सही कार्य से शेष/अवशिष्ट।

कार्यसम्पत्तिः (स्त्री०) प्रयोजन सिद्धि।

कार्यसाधनं (नपुं०) प्रयोजन रूप साधक।

कार्यसिद्धिः (स्त्री०) कार्य की सफलता, उद्देश्यपूर्ति। (जयो० २/३९) कार्यसिद्धिमुपयात्त्वसौ गृही नो सदाचरणतो व्रजन् बहिः। (जयो० २/३५) कार्यसिद्धि--कर्मसाफल्यम्' (जयो० वृ० २/३५)

कार्यहेतु (स्त्री०) एक दूसरे का बाधक कार्य।

कार्यार्थी (वि०) प्रयोजन के लिए।

कार्यानपेक्षि (वि०) स्वाभाविक कार्य की उपेक्षा करने वाला। 'कार्यमनपेक्षत इति कार्यनपेक्षि'। (जयो० १६/४४)

कार्यानुबन्धिन् (वि०) कार्य सम्पादन करने वाला, दृढ़ संकल्पी, कार्यशील। (दयो० ९५) 'यथेच्छमनुतिष्ठन्ति स्व-स्वकार्यानुबन्धिनः। (दयो० ९५)

कार्याभिरत (वि०) कार्यपरायण, कार्य में तत्पर। यतः प्रातः कार्यमुताद्यैव कार्यमद्यापि शीघ्रतः। नगतेऽवसरे पश्चात् कुतश्च न भवेदतः।। (दयो० वृ०७०) पितुराज्ञा शिरोधार्या कार्याऽस्माभिरतो द्रुतम्। (दयो० ७०)

कार्यारम्भः (पुं०) प्रक्रम, प्रारम्भ, उद्यत। (जयो० २/३५, (जयो० ३/१४)।

कार्या रूचिः (स्त्री०) निसर्ग या अधिगम के कारण से उत्पन्न होने वाली श्रद्धा।

कार्यासनं (नपुं०) गद्दी, आसन, स्थान।

कार्येक्षणं (नपुं०) कार्यावलोकन, कार्य निरीक्षण।

कार्योत्पत्तिः (स्त्री०) कार्य की उत्पत्ति, पूर्व पर्याय के कार्य की उत्पत्ति। (जयो० वृ० २६/८७) कार्यस्य उत्पत्तिः कार्योत्पत्तिः।

कार्श्यं (नपुं०) [कृश्+ष्यञ्] दुर्बलता, अल्पता, कृशता।

कार्षः (पुं०) [कृषि+ण] कृषक, किसान, खेतीहर, कृषिकार।

कार्षापणिक (वि०) [कार्षापण+ट्ठन्] एक मूल्य विशेष वाला।

कार्ष्ण (वि०) [कृष्ण+अण्] कृष्णता युक्त, कृष्ण से सम्बंधित।

कार्ष्णायस (वि०) [कृष्णायस्+अण्] कृष्ण अयस्क से निर्मित।

कार्ष्णिः (पुं०) कामदेव।

कालः (पुं०) [कु ईषत् कृष्णत्वं लाति, ला+क, को, कादेशः] १. काल, समय, अवसर, अवधि, अंश, भाग। २. काला रंग का। ३. काल एवं भोग भूमि-कर्मभूमि। (जयो० २/७९) ४. वर्तमान काल-सुद० १/६।

श्यामल, कृष्णता-'काला हि बाला खलु कज्जलस्य' (जयो० ११/६९) ज्ञानाचार के आठ भेदों में एक भेद कालाचार। (भक्ति०८) 'कालः परावर्तन कृत्तकेभ्यः' (वीरो० ७/३८) काल वर्तना है-वट्टणालक्खणो कालो। कालस्स वट्टणा (प्रव०२१/४२)

कालद्रव्य विशेष-जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश और काल ये छह द्रव्य हैं। इनसे विश्व है। काल द्रव्य अन्तिम द्रव्य है, जो कल्पित होता है, फेंकता है या प्रेरित/परावर्तन करता है वह काल/कालद्रव्य है। 'कल्पते क्षिप्यते प्रेर्यते येन क्रियावद्रव्यं स कालः।' (त० वा० ५/२२) समय, अद्धासमय काल: समयः अद्धा इत्येकोऽर्थः। (धव० ४/३१७) 'कालः श्रीमान यं क्लृप्ति कला रसालः' (समु० ८/३) चेत्युद्गलार्द्धः परिवर्तकालोऽव शिष्यतेऽनादितयाशयालोः। (सम्य० ४७)

काल-अभिग्रहः (पुं०) काल सम्बंधी नियम, भिक्षा विषयक अभिग्रह/नियम।

कालंतकि (वि०) काल बिताने वाले, समय व्यर्थ करने वाले। (सुद० ४/४७)

कालकञ्जं (नपुं०) नीलकमल, अरविंद।

कालकुटः (पुं०) शिव।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कालकर्णं (नपुं०) समयावधि, नियत समय।

कालकटं (नपुं०) कल्याण, हित।

कालकष्ठः (पुं०) मयूर, मोर।

कालकर्णिका (स्त्री०) दुर्भाग्य, विपत्ति।

कालकर्णी (स्त्री०) विपत्ति, वज्रपात, दुःख।

कालकर्मन् (नपु०) मरण, मृत्यु, विनाश।

कालकलित (वि०) समय बाधित।

कालकालः (पुं०) किसी प्राणी का जो काल हो।

कालकीलः (पुं०) यमराज।

कालकूटः (पुं०) विष, हलाहल विष, मारक विष, तत्कालिक, प्रभावी विष।

कालकृत (वि०) समय पर किया गया।

कालकृतु (पुं०) मयूर, २. सूर्य।

कालक्रमः (पुं०) समय का क्रम।

कालक्रमोत्तरः (पुं०) काल के क्रम से।

कालक्रियाः (स्त्री०) नियत क्रिया, मृत्यु।

कालक्षेपः (पुं०) काल व्यतीत, विलम्ब, समय का क्षय। (सम्० २/२९) शेष समय। (दयो० ८३) (वीरो० ८/१३) 'सुखेन कालक्षेपं कर्तुमर्हामि' (दयो० ८३)

कालखञ्जनं (नपुं०) १. यकृत, जिगर, हृदय। २. गंगा यमुना नदी।

कालग्रन्थिः (नपुं०) समयचक्र, परिवर्तन, परावर्तन, वर्तना। जीवन की परिस्थितियां। (वीरो० १८/६)

कालचारः (पुं०) समय तक चर्या।

कालचिह्न (नपुं०) मृत्यु के सन्निकट।

कालचोदित (वि०) काल/यम द्वारा आहूत।

कालज्ञ (वि०) समय वेत्ता, काल को जानने वाला।

कालज्ञानाचारः (पुं०) पाठ-पठन का समय, स्वाध्यायादि का समय, ज्ञानाचार के भेदों में एक भेद।

कालत्रयं (नपुं०) तीन काल, तीन समय, तीन बार। 'पर्वण्युपोषिता कालत्रये सामायिकं श्रिता।' (सुद० ४/९३) १. भूत, भविष्यत् और वर्तमानकाल। २. प्रातः दोपहर और सायं इन तीन समय में तीन सन्ध्याएं। तीन सामायिक।

कालदर्शी (वि०) समयज्ञ ज्ञाता, मृत्यु।

कालदण्डः (पुं०) मृत्यु, मरण।

कालदोषः (पुं०) विपरीत काल का प्रयोग। 'कालदोषः अतीतकाल-व्यत्ययः।'

कालधर्मत् (पुं०) विशेष समय के लिए धर्माचरण, निर्दिष्टकाल।

कालधारणा (स्त्री०) समय वृद्धि।

कालनिधिः (स्त्री०) ज्योतिष सम्बन्धी ज्ञान। 'काल नामानि निधौ कालज्ञानम्' सकल ज्योतिः शास्त्रानुबन्धिज्ञानम्' (जैन०ल०३४८)

कालनियोगः (पुं०) भाग्य समावेश, नियति का निर्णय।

कालनिरूपणं (नपुं०) समय निर्धारण, समय की प्ररूपणा।

कालनेमिः (पुं०) समयचक्र, कालचक्र।

कालपक्व (वि०) समय पर पका हुआ, स्वतः स्फूर्त, स्वयमेव परिपक्वगत।

कालपरिवर्तनं (नपुं०) एक काल से दूसरे काल में जन्म।

कालपरिवासः (पुं०) अल्प परि पतन।

कालपाशः (पुं०) यमजाल, मरणजाल।

कालप्रत्यख्यानं (नपुं०) समय पर नहीं होने वाली क्रियाओं का परित्याग।

कालपाशिक (वि०) ०यम तक ले जाने वाला, ०यमलोक पहुंचाने वाला, ०मृत्यु लेने वाला, ०प्राणहर्ता, ०जल्लाद।

कालपुरुषः (पुं०) कर्म-वेदन शील पुरुष।

कालपूजा (स्त्री०) पर्वादि समय की पूजा।

कालपृष्ठ (पुं०) काला हिरण।

कालप्रतिक्रमणं (नपुं०) त्रैकालिक प्रतिक्रमण।

कालप्रभातः (पुं०) शरत्काल, शरद ऋतु।

कालप्रभावः (पुं०) ०समय गत प्रभाव, ०समय गति। आत्मा भवत्यात्म- विचारकेन्द्रः कर्तुं मनाङ् नान्यविधिं किलेन्द्रः। कालप्रभावस्य परिस्तवस्तु यदन्यतोऽन्यत्प्रतिभाति वस्तु।। (वीरो० १८/५) यद्यस्मिन्समये प्रकर्तुमुदितं तत्रोद्गतेतन्मुनिः कालं कार्यकरं समर्थयति यत्सर्वज्ञदेवो गुणी। तावाद्य प्रभवन्ति कल्पतरवः कालप्रभावोदहयं नात्रोत्पत्रजनोऽधुना प्रतिभवेच्छुद्धोप- योगाश्रयः।। (मुनि० २९)

कालबालः (पुं०) श्यामल केश कालानां श्यामतानां बालानां श्रेणी पंक्तिरहित' (जयो० ३/५५)

कालभक्षः (पुं०) काल ग्रस्त।

कालमंगलं (नपुं०) पाप विनाशक मंगल।

कालमानं (नपुं०) समय का प्रमाण।

कालमाश्रितवती (वि०) योग्य समय युक्त। (जयो० ३/११)

कालमासः (पुं०) मास की प्रधानता।

कालमुख (नपुं०) लंगूरों की विशेष जाति।

कालमेषी (स्त्री०) मंजठे की लता।

कालयवन् (पुं०) यवनों का काल।

कालयावनं (नपुं०) देर करना।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कालयुति (स्त्री०) काल सम्भालना।

कालयोगिन् (पुं०) मृत्युंजयी।

कालरजनी (स्त्री०) श्यामल रात।

कालरात्रिः (स्त्री०) अंधेरी रात।

कालरोगः (पुं०) विकराल व्याधि, मृत्यु।

काललब्धिः (स्त्री०) सम्यक्त्व के ग्रहण करने योग्य समय। काललब्धि तो छद्मस्थ ज्ञान से बाहर की चीज है। (सम्य० ७३)

काललोकः (पुं०) समय, आवलि आदि। 'काललोकः समयावलिकादिः'।

कालवर्गणा (स्त्री०) लोक प्रमाण विशेष, एक समय से लेकर असंख्यात लोक प्रमाण तक।

कालवादः (पुं०) काल को महत्व देने वाला विचार। 'सव्वं कालो जणयदि भूदं सव्वं विणासदे कालो।' (अंगपण्णत्ति०२७७)

कालविप्रकर्षः (पुं०) कालवृद्धि।

कालप्रकृष्टः (पुं०) काल का व्यधान, लाभ-अलाभ, सुख-दुःख आदि व्यधान, सूर्यग्रहण, चन्द्रग्रहण आदि।

कालविमोक्षः (पुं०) पर्वादि समय पर जीवघात का निषेध।

कालबेला (स्त्री०) दिन का विशेष समय।

कालवृद्धिः (स्त्री०) समय का विकास।

कालव्यतिरेकः (पुं०) प्रत्येक समय की पृथक् पृथक् व्यवस्था। 'अपि चैकस्मिन् समये यकाप्यवस्था भवेन्न साऽप्यन्या। भवति च सापि तदन्या द्वितीय समयेऽपि कालव्यतिरेकः।' (पंचाध्यायी १/१४९)

कालशत्रु (पुं०) यमाराति। (जयो० वृ० ७/३५) * यमराज।

कालशुद्ध (वि०) काल के शुद्ध, पात्र के लिए समयोचित शुद्धता।

कालशुद्धदानं (नपुं०) दान देने के लिए निश्चित समय। 'कालं शुद्धं तु यत्किंचित्काले पात्राय दीयते।' (जैन ल० ३५२)

कालशुद्धिः (स्त्री०) समय की शुद्धता, पर्व आदि पर व्यधान होने पर शुद्धता।

काल-संरोधः (पुं०) बहुत समय तक काम न करना।

कालसदृश (वि०) उपयुक्त, सामयिक।

कालसमवायः (पुं०) काल की समानता। 'कालदो समवाओ-समयो समएण मुहुत्तो मुहुत्तेण समो।' (धव० १/१०१)

कालसमाधिः (स्त्री०) काल की प्रधानता पूर्वक समाधि।

कालसर्पः (पुं०) विषैला सर्प।

कालसंक्रमः (पुं०) एक काल से अन्य काल को प्राप्त होना। 'कालस्य अपुव्वस्स पादुब्भाओ कालसंकमो। (धव० १६/१४०)

कालसंयोगः (पुं०) सुषमादिकाल का सम्बन्ध। 'कालसंयोगपदानि यथा शारदः वसन्तः इत्यादीनि' (धव० १/७८)

काल-संसारः (पुं०) समय चक्र, दिन, रात, घड़ी, घंटादि एवं गति चक्र परिभ्रमण, विविध पर्याय की प्राप्ति।

कालसंस्थानं (नपुं०) कालक्षेत्र, काललोक, संचरण रूप आकार।

कालसामायिकं (नपुं०) अनुकूल-प्रतिकूल समय में समभाव। सामायिक समय में स्थिति।

कालसूत्र (नपुं०) मृत्युकाल।

कालस्तवः (पुं०) पंच कल्याणकों का स्तवन।

कालस्पर्शनं (नपुं०) काल द्रव्य का अन्य द्रव्यों के साथ संयोग।

कालागुरु (पुं०) चंदन। (जयो० ११/४) 'कालागुरोर्लेपन पङ्किलत्वाद्' (जयो० ११/४)

कालाणु (पुं०) काल के अणु रत्न राशि की तरह हैं, जो एक-एक लोकाकाशप्रदेश के ऊपर स्थित हैं।

कालातिक्रमः (पुं०) काल/समय का उल्लंघन। 'अकाले भोजनं कालातिक्रमः' (त० वा० ७/३६)

कालात्ययापदिष्ट (त्रि०) हेतु के विषय प्रत्यक्षादि से बाधित।

कालानुगमः (पुं०) काल की प्ररूपणा। जम्हि जेण वा तत्तव्वं परूविज्जदि सो अणुगमो। (धव० ९/१४१)

कालानुपूर्वी (स्त्री०) समय रूप स्थिति।

कालानुयोग (पुं०) भेद-प्रभेद की प्ररूपणा।

कालान्तर-वर्तिनी (स्त्री०) काल के अनन्तर होने वाली उत्पत्ति।

कालापः (पुं०)[काल+आप्+घञ्] सिर के बाल, २. सर्प फन ३. राक्षस, पिशाच, भूत। ४. कपाल। कालोमृत्युः आप्यते यस्मात्।

कालापकः (पुं०) [कालाप+वुन्] कलाप शिक्षा।

कालावग्रहः (पुं०) अपनी आयु का प्रमाण।

कालिक (वि०) [काल+ठक्] काल सम्बन्धी, कालाश्रित।

कालिका (स्त्री०) कालापन, मसी, स्याही।

कालिकी (स्त्री०) समयोचित, समय के अनुकूल, समयोचित

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्थिति। समयात् स महायशाः स्थितिं करसंयोजन-कालिकीमिति। (जयो० १०/५)

कालिक्युपदेशजात (वि०) दीर्घकालिक उपदेश को प्राप्त।

कालिङ्ग (वि०) [कलिङ्ग+अण्] कलिंग देश में उत्पन्न।

कालिङ्गः (पुं०) कलिंग देश का राजा।

कालिङ्गम् (नपुं०) तरबूज।

कालिन्द (वि०) [कलिन्द+अण्] यमुना नदी में प्राप्त।

कालिन्दी (स्त्री०) यमुना नदी। द्विडकीर्तिः कालिन्दी, सुरसरिदस्याथ कीर्तिरुदयन्ती (जयो० ६/४३)

कालिन्दीजलं (नपुं०) यमुना जल। 'कालिन्दीजलमपि श्यामलमिति प्रसिद्धम्' (जयो० वृ० ६/१०७)

कालिमन् (पुं०) [काल+इमनिच्] कालापन, कालिमा।

कालिय (वि०) कालिका नाम।

काली (स्त्री०) [काल+ङीप्] कालिमा, मसी, स्याई।

कालीकः (पुं०) [के जले अलति पर्याप्नोति-क-अल्-इकन्] क्रौञ्चपक्षी।

कालीनः (पुं०) समयगत, समय से सम्बन्धित।

कालीयं (नपुं०) चन्दन लकड़ी।

कालुष्यं (नपुं०) [कलुष+ष्यञ्] १. कालिमा, मलिनता, पंक युक्तता। २. कषायों से उत्पन्न भाव, क्षुभित चित्त, चित्त की व्याकुलता। 'कषायैः क्षुभितं चित्तं कालुष्यम्' (निय०टी० ६६)

कालेय (वि०) [कलि+ढक] कलिकाल से सम्बन्धित।

कालेयकः (पुं०) १. श्वान, कुत्ता, कुक्कर। २. चन्दन।

कालोज्झित (वि०) वर्षादि ऋतु में त्यागने योग्य।

कालोत्तरः (पुं०) उत्तरोत्तर वृद्धि।

कालोपक्रमः (पुं०) काल का बोध।

कालोपयोगः (पुं०) काल का संयोग। कालोपयोगेन हि मांसवृद्धी (सुद० १०२)

कालोपयोग-वर्गणा (स्त्री०) उपयोग काल में निरन्तर अवस्थित।

काल्पनिक (वि०) [कल्पना+ठक्] कल्पना, युक्त, खोटा, विचार शून्य।

काल्याणकं (नपुं०) (कल्याण+वुञ्) मांगलिक कार्य, शुभ प्रसंग का उत्सव। गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान और मोक्ष रूप कल्याणक।

कावः (पुं०) कंकर, कण। (जयो० २/१७)

कावचिक (वि०) [कवच+ठञ्] कवचधारी, बख्तरबंद।

कावूकः (पुं०) १. मुर्गा, कुक्कुट। २. चक्रवाक पक्षी।

कावेरं (नपुं०) केसर, जाफरान।

कावेरी (स्त्री०) एक नदी, जो दक्षिण भारत में बहती है।

काविलः (पुं०) १. एक राजा का नाम। (जयो० ६/४१) २. सुख से धनीभूत।

काविलदेशः (पुं०) काविलदेश।

काविलराज (पुं०) काविलदेश का राजा। (जयो० ६/४२) पुनरनु काविल राजं जनीकया तर्जनीकया कृत्वा। (जयो० ६/४१) 'अयि काविलराजोऽयं' (जयो० ६/४२)

काव्य (वि०) [कवि।ण्यत्] कवि के गुणों से युक्त, छन्दोबद्ध, रचनाकर्म, बन्ध संग्रथित। 'विरोधिता पञ्जर एव भातु निरौष्ठ्यकाव्येष्वपवादिता तु।' (सुद० १/३३)

काव्यकृतिः (स्त्री०) काव्यरचना, छन्दोबद्ध रचना। (वीरो० २२/३४)

काव्य-खण्डः (पुं०) छन्दोबद्धता का अंश।

काव्यगतकला (स्त्री०) काव्य से प्राप्त कला। (वीरो० २२/३५)

काव्यचोरः (पुं०) कविकर्म का चोर।

काव्यतुला (स्त्री०) काव्यतुलना। (वीरो० २/२६)

काव्यपथः (पुं०) काव्य रचना, कविता मार्ग। (समु० १/१२) नाहं कविर्मर्त्यभवी तु अस्मि सरस्वती संग्रहणाय तस्मिन्। ममाप्यतः काव्यपथेऽधिकारः समस्तु पित्री ननु बालचारः। (समु० १/१२) गतिर्ममैतस्मरणैक हस्तावलम्बिनः काव्यपथे प्रशस्ता।' (सुद० १/३)

काव्यमीमांसा (स्त्री०) साहित्यशास्त्र, काव्यगत विशेषताओं को निरूपण करने वाला शास्त्र।

काव्यमीमांसावलम्बी (वि०) साहित्यशास्त्री।

काव्यरचना (स्त्री०) काव्यकृति, काव्यपथ काव्यमार्ग, छन्दोबद्धमार्ग। (वीरो२२/३४)

काव्यरसिक (वि०) काव्य-सौन्दर्य के इच्छुक, काव्यपथ रसज्ञ, छन्दोबद्ध रचना में तल्लीन होने वाले।

काव्यलिङ्ग (नपुं०) काव्यलिङ्गमलंकार हेतु वाक्य में पदार्थ का आभास। सदसि यदपि भूभुजां च मान्यः, सेवक इव खलु भुवो भवान्यः। आत्मानं पश्यतोऽपि तस्य नान्यः, कोऽपि बभूव दृशि ज्ञस्य।। (जयो० २२/२६) उस ज्ञानी राजा की दृष्टि में कोई दूसरा नहीं रहता, सबको समान देखता। 'काव्यलिङ्गं हेतुर्वाक्यपदार्थता'

काव्यशास्त्रं (नपुं०) १. वृद्धसमय। २. कविकृतशास्त्र/रचना। (जयो० वृ० २/५४)

काव्योद्धरणं (नपुं०) काव्य रचना, काव्य बनाना। (समु० १/६)

काश् (अक०) चमकना, रमणीय होना, दिखाई देना, आभास होना।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

काश् (सक०) प्रकाशित करना, मुद्रित करवाना, जलाना, प्रज्वलित करना।

काशः (पुं०) [काश्+अच्] घांस, (जयो० ९/३२) कांश विशेष का घांस, जो खेतों में अनावश्यक रूप से उत्पन्न हो जाता है, इसके ऊपरी भाग पर सफेद रुई की तरह गुच्छेदार पुष्प होते हैं, यह चटाई बनाने के काम आता है।

काशम् (नपुं०) काश पुष्प। (जयो० ९/३२)

काशयशः श्रियि (वि०) काश के पुष्प की तरह यश एवं लक्ष्मी वाले। अयि महाशय काशयशः श्रिया परिकृतोऽरि-कृतोऽसि मयाऽधिया। (जयो० ९/३२) 'कस्यात्मन आशाऽ-भिलाषा यत्र तस्य यशसः श्रिया' (जयो० वृ० ९/३२)

काशि (स्त्री०) [काश्+इक्] एक देश का नाम।

काशि (स्त्री०) [काश्+इन्, काश्+अच्+ङीप्] काशी नगरी, जिसे वाराणसी, बनारस भी कहते हैं, यह गंगा किनारे स्थित गोमुखी आकृति की रमणीय नगरी है। (जयो० ५/३५)

काशिका (स्त्री०) काशिका नामक वृत्ति, टीका, टिप्पणी। (जयो० ९१) आचार्य पूज्यपाद की वृत्ति पाणिनीय व्याकरण पर वृत्ति 'काशिकानामाष्टाध्याय्या उपरि कृतां वृत्तिं सर्वतोऽपि समन्तादपि धिषणाभिर्बुद्धीभिः ययु' (जयो० वृ० ४/१६) २. नगरी-अमी सर्वे अर्ककीर्त्यादय काशिकां नगरीं। (जयो० वृ० ४/१६)

काशिकाधिकरणः (पुं०) १. राजा अकम्पन। २. अतिवृद्ध। (जयो० वृ० ७/६३) काशिका नगरी अधिकरणं यस्य स काशिकाधिकरणोऽकम्पनः स महान् पूज्य एव, इतोऽस्मत्-पार्श्वे। अथवा कस्य यमस्य याशिकाऽभिलाषा साऽधिकरणं यस्य सः, अतिवृद्ध इयवज्ञा ध्वन्यते' (जयो० वृ० ७/६३)

काशिकानरपतिः (पुं०) काशिराज, राजा अकम्पन राजा। (जयो० ४/१)

काशिकानृपतिः (पुं०) काशिराज, राजा अकम्पन। (जयो० ५/५५) काशिकानृपति-चित्त-कलापी सम्मदेन सहसा समवापि। (जयो० ५/५५) काशिकाया नृपतेः श्री अकम्पनमहाराजस्य' (जयो० वृ० ५/५५)

काशिकापतिः (पुं०) काशिराज (जयो० ४/२१)

काशिन् (वि०) प्रभा, क्रान्ति।

काशिनरपतिः (पुं०) काशिराज अकम्पन।

काशिनरेश (पुं०) काशिराज। (जयो० ४/२८, ५/६)

काशिनृपतिः (पुं०) राजा, काशीराज।

काशिपतिः (पुं०) काशिराज। (जयो० ४/१७)

काशिप्रभुः (पुं०) काशिराज। (जयो० ७/२२)

काशिभूपतिः (पुं०) काशिराज, राजा अकम्पन। (जयो० ५/३५, ५/५६)

काशिभूमिपतिः देखो ऊपर।

काशिराज (पुं०) काशिपति, काशी का राजा। (जयो० वृ० ७/२२)

काशी (स्त्री०) [काश्+इन+ङीप्] काशी नगरी, प्राचीन नगर। 'विस्तृता व्यापन्नवर्त्मवती काशी' (जयो० वृ० ३/८४) २. शिवपूः, काशी मुक्तिश्च। (जयो० वृ० ३/११४) काशिमाशु सकलाः समवापू राजतेऽतिविमला खलु या पूः।' (जयो० ५/५) यस्या सा काशीः स्वर्गपुर्येव वर्तते।' (जयो० वृ० ३/३०) श्रीधरोऽधीश्वरो यस्याः सा काशी रूचिरा पुरी।

काशी (वि०) आत्माभिलाषिणी। 'क' अर्थात् आत्मा की आशा वाली आत्म स्वरूप प्राप्त करने वाली आत्माभिलाषिणी। (वीरो० १४/

काशीदेशः (पुं०) काशीक्षेत्र। (जयो० ९/३०)

काशीनरेशः (पुं०) काशी राजा, श्रीधर राजा का बड़ा भाई। (जयो० वृ० ३/९०)

काशीनगरी (स्त्री०) काशीपुरी। (जयो० ८/६७)

काशीपतिः (पुं०) काशिराज, अकम्पन, शान्तिवर्मा राजा। (जयो० ३/७१)

काशीराज (पुं०) काशिराज अकम्पन राजा।

काशीविशा (पुं०) काशपति।

काशीशसुतः (पुं०) काशिराज का पुत्र। काशीशसुता हेमाङ्ग वाद्या इतो जयकुमारपार्श्वतो (जयो० वृ० ८/५३)

काशीश्वर-तनु (पुं०) काशिराज का पुत्र।

काश्चन (अव्य०) किसी, कोई। स कमप्यद आह काश्चनारं। (जयो० २/१११)

काश्मरी (स्त्री०) एक लता, छोटा पादक विशेष, जो गंध युक्त होता है।

काश्मीर (वि०) काश्मीर देश का उत्पन्न। (जयो० ६/७३)

काश्मीरं (नपुं०) केशर।

काश्मीरज (वि०) काश्मीर में उत्पन्न। (जयो० ६/७६)

काश्मीरजन्मन् (नपुं०) केशर, जाफरान।

काश्मीरपतिः (पुं०) कश्मीर देश का राजा। अयमस्ति रतिप्रतिमे काश्मीर पतिः रतीशमतिः। (जयो० ६/७३)

काश्यं (नपुं०) मदिरा, मद्य, शराब। कुत्सितं अश्यं यस्मात्।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

काश्यपः (पुं०) [कश्यप+अण्] कणादऋषि।

काश्यपी (स्त्री०) [काश्यप+ङीष्] भूमि, भू, धरा, पृथ्वी।

काषः (पुं०) [कष्+घञ्] रगड़ना, खुरचना।

काषाय (वि०) [कषाय+अण्] गेरुआ, लाल रंग में रंगा हुआ।

काष्ठं (नपुं०) लकड़ी, ईंधन की लकड़ी। (जयो० ६/२९) १. लट्ठा, लट्ठ, २. माप विशेष। (वीरो० २/ ३. दिशा (जयो० ६/२९)

काष्ठ-कदली (स्त्री०) जंगली केला।

काष्ठकर्मः (पुं०) काष्ठ सम्बन्धी क्रियाएं, काष्ठ की प्रतिमा। आदिकर्म काष्ठे क्रियन्ते इति निष्पत्तेः' कट्ठेसु जाओ पडिमाओ घडिदाओ दुवय-चउप्पय-अपाद-पाद-संकुलाणं ताओ कट्ठकम्माणि णाम (धव० १३/२०२)

काष्ठकीटः (पुं०) घुग, एक क्षुद्र जन्तु, जो लकड़ी को घुण करता है।

काष्ठ-कूटः (पुं०) खुटबढ़ई, कटफोड़वा।

काष्ठ-कुट्टः (पुं०) कटफोड़वा एक पक्षी।

काष्ठ-कुदालः (पुं०) लकड़ी के कुदाल।

काष्ठतक्ष (पुं०) बढ़ई, सुथार, विश्वकर्मा।

काष्ठतक्षकः (पुं०) बढ़ई, सुनार, विश्वकर्मा।

काष्ठतन्तुः (पुं०) शहतूत का कीट।

काष्ठदारुः (पुं०) देवदारू।

काष्ठद्रुः (पुं०) ढाकवृक्ष, पलाश तरु।

काष्ठनिचयः (पुं०) दारुसम्भार, लकड़ी समूह। (जयो० ४/५१)

काष्ठपुत्तलिका (स्त्री०) कठपुतली।

काष्ठफलकः (पुं०) लकड़ी का तख्ता। (दयो० २/१३)

काष्ठभारिकः (पुं०) लकड़हारा।

काष्ठभारिका (स्त्री०) लकड़हारिन्।

काष्ठमठी (स्त्री०) चिता।

काष्ठमल्लः (पुं०) अर्थी।

काष्ठलेखकः (पुं०) घुण, लकड़ी का कीट।

काष्ठलोहिन् (पुं०) लोह युक्त दण्ड, बांस के दण्ड में जड़ा जाने वाला लोह।

काष्ठवारः (पुं०) लकड़ी की दीवार।

काष्ठसंघः (पुं०) दिगम्बर साधुओं का संघ। (सुद० ४/२६)

काष्ठा (स्त्री०) [काश्+कथन्+टाप्] १. दिशा, प्रदेश, भाग, हिस्सा, २. प्रमाण विशेष-'पञ्चदशाक्षिनिमेषा काष्ठा' (धव० ६/६३) 'पञ्चदशनिमिषैः काष्ठा' (पंचा०वृ०२५)

काष्ठागत (वि०) सम्पूर्ण दिशाओं स्थित। (जयो० ६/२९) काष्ठासु दिक्षु गतानां स्थितानाम् (जयो० वृ० ६/२९) काष्ठाद् इन्धनागत उपलब्धो य' (जयो० वृ० ६/२९)

काष्ठांगारः (पुं०) एक धूर्त मंत्री, जिसने जीवंधर कुमार के पिता का विनाश किया।

काष्ठागारः (पुं०) काष्ठनिर्मित गृह, लकड़ी का घर।

काष्ठाभ्यन्तरः (पुं०) काष्ठा का भीतरी भाग। (दयो० ३२)

काष्ठाम्बुवाहिनी (स्त्री०) लकड़ी का ढोल।

काष्ठासंघः (पुं०) दिगम्बर साधुओं की एक प्राचीन परम्परा का संघ।

काष्ठिकः (पुं०) [काष्ठ+ठन्] लकड़हारा।

काष्ठिका (स्त्री०) पाटा, लकड़ी का टुकड़ा।

काष्ठी (स्त्री०) एक ग्रह।

काष्ठीला (स्त्री०) [कुत्सिता ईषत् वा आष्ठीलेव] केल-तरु, कदली पादप।

काष्ठोलूखलः (पुं०) काष्ठ का ऊखल। (जयो० वृ० २/८०)

काष्ठोदयः (पुं०) समिधा समूह, काष्ठसंग्रह। (जयो० १५/६७)

कास् (अक०) १. चमकना, स्फुरित होना, खांसना।

कासः (पुं०) [कास्+घञ्] खांसी, जुकाम, कफ की प्रवृत्ति बढ़ना। (जयो० १०/६२) 'णमो कुट्ठबुद्धीणं मंत्र जाप से भी यह रोग शांत होता है।

कासकुष्ठ (वि०) कफ से पीड़ित, खांसी से व्याकुल।

कासहृत (वि०) खांसी दूर करने वाला।

कासरः (पुं०) [के जले आसरति- क+आ+सृ+अच्] भैंसा।

कासरी (स्त्री०) भैंसा।

कासारः (पुं०) [कास्+आरन् कस्य जलस्य आसारो यत्र] जोहड़, तालाब, सरोवर। (वीरो० १२/१००)

कासीर-तीरः (पुं०) सरोवर के निकट, सरोवर तट। (वीरो० १२/१)

कासू (स्त्री०) ०कुन्तल, ०भाला, ०एक नुकीला अस्त्र। ०शक्ति। (जयो० ८/३)

कासृतिः (स्त्री०) [कुत्सिता सरणिः] पगडंडी, गुप्तमार्ग।

काहल (वि०) [कुत्सितं हलं वाक्यं यत्र] शुष्क, मुरझाया, उदासीन, खिन्न।

काहलः (पुं०) बिडाल, बिलाव, मुर्गा, कौवा।

काहलं (नपुं०) वाचाल वचन, अस्पष्टवाणी, अव्यक्त वर्ण, असभ्य भाषण।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

काहलत्व (वि०) उच्चारण की स्पष्टता रहित, अव्यक्त वचन वाला।

काहली (स्त्री०) तरुणी, यौवना।

किं (सर्व०) कः (पुं०) कि (नपुं०) क्या।

का (स्त्री०) (अव्य०) (किं०) किं परयस्यपि (जयो० १२/१२८) (सुद० ३/४२) तत्त्वतः कः किं कस्य सिद्धिरने-कान्तस्य। (सुद० ९१) कः (प्रथमा) कः परलोक (सुद० ११) किं का तृतीया में केन, काभ्याम् कैः। केनोद्धृतः स्तम्भ इवापि देव। (सुद० २/१४) यस्या न केनापि रहस्य भावः। (सुद० २/२०)

कं द्वितीया एक वचन

कं लोक (जयो० १/११०) करोत्यनूढा स्मयकौ तु कं न। (सुद० २/२१)

कस्य-(६/१) सुद० ३/४७।

कस्मै: (४/१) सुद० १२५।

किं कर्त्तव्य विमूढः (पुं०) अवाक्। (सुद० ७९)

किंकरता (वि०) कर्तव्यशीलता, सेवकपना। (वीरो० ९/२८) (जयो० २०/७४)

किंकिरारातः (पुं०) [किंकर+अत्+अण्] कीर, तोता, शुक। १. कोमल, २. कामदेव, ३. अशोक तरु।

किं करुणी (वि०) कर्मकारिणी, कर्मचारिणी। (जयो० ११/९९)

किङ्करः (पुं०) भृत्य, नौकर। (जयो० ७/६३)

किङ्करी (स्त्री०) अनुचरी। (जयो० वृ० १०/११)

किङ्करिणी (स्त्री०) दासी, अनुचरी। (सुद० ७५)

किंपाकः (पुं०) किंपाकफल। (जयो० २७/८४)

किंवत् (वि०) निर्धन, तुच्छ, नगण्य।

किं शारूः (पुं०) धान्य बाल का अग्रभाव।

किंशुकः (पुं०) ढाक तरु, टेसू वृक्ष।

किंशुकं (नपुं०) टेसू का पुष्प, पलाश पुष्प। (समु० ६/६) पलाशिता किंशुक एव यत्र द्विरेफवर्गे मधुपत्वमत्र। (सुद० १/३३)

प्रियाल मुनिर्वाचियमे बुद्धे प्रियाला गास्त्यकिंशुके' इति वि० (जयो० २१)

किंशुलकः (पुं०) ढाकतरु।

किङ्कणी (स्त्री०) [किंचित् कणति-कण्+इन्+ङीप्] घुंघरु, आभूषण में लगने वाला क्वणित शब्दात्मक घुंघरू।

किङ्कणिका देखो ऊपर।

किङ्किणीका (स्त्री०) घुंघरु। (वीरो० २/३५)

किञ्च (अव्य०) कुछ, थोड़ा। (जयो० १/२३) किसी (समु० २/३०)

किञ्चित् (अव्य०) ०कुछ, ०थोड़ा सा, ०अल्प, ०बहुत कम। (सुद० १०३) भक्ति०२। 'किञ्चिच्छुभोदर्कवशात्तथैतः' (सुद० ४/१८)

किञ्चित्-कालः (पुं०) कुछ समय, अल्पकाल। किञ्चित्कालमतिक्रम्य द्विगुणत्वमथाञ्चति। (सुद० १२६)

किञ्चिदपरमपि (अव्य०) कुछ अन्य नहीं। (दयो० ९४)

किञ्चिदपि (अव्य०) ०कुछ भी, ०अल्प भी, ०थोड़ा सा भी। (दयो०)

किञ्चिद-वृत्तं (नपुं०) कुछ गोलाकार। (सुद० १२२)

किञ्जलः (पुं०) एक लघु पादप, पानी में खिलने वाला कमलाकार छोटा पुष्प।

किञ्च (अव्य०) कुछ भी। (जयो० वृ० १/२)

किटिः (स्त्री०) [किट्+इन्+किञ्च] सूकर, सुअर।

किटिभः (पुं०) जू, लीख, खटमल।

किट्टम् (नपुं०) कीट, मैल मल। (जयो० २/८१)

किट्टप्रतिपातिः (वि०) कीट विमुक्त। (वीरो० १७/७)

किणः (पुं०) १. अन्न, धान्य कण। २. यश, गुण-नृपतेस्तु मुदे नदी किण-स्थिरतेवाग्निमवर्षपत्रिणः' (जयो० १३/५४) ३. चिन्तन करना-समनुभवंत स्वात्मनः किणम्' (सुद० १२२) 'किणं गुणं विकीर्णधान्यञ्च धरति' स्वीकरोति' (जयो० वृ० ७/९०)

किण-धारिन् (वि०) गुणधारी (जयो० वृ० ७/९०) 'किण-धारिणः किल पुनीत-पक्षिणः।' (जयो० ७/९०)

किण्वं (नपुं०) [कण+क्वन्] पाप।

कित् (सक०) १. चाहना, इच्छा करना। २. चिकित्सा करना।

कितवः (पुं०) धूर्त, झूठा, कपटी, छली। (जयो० १६/७०) २. धतूरा पादप।

किन्तु (अव्य०) जो कि, परन्तु, तथापि (समु० ३/११, जयो० १/१५)

किन्धिन् (पुं०) [किं कुत्सिता धीर्बुद्धिरस्य किं धी+इनि] अश्व, घोटक।

किन्तु किं (अव्य०) किन्तु क्या (जयो० ४/४०)

किंतया (अव्य०) उसमें भी क्या। (सुद० ९८)

किमस्मदीय (वि०) क्या हमारे जैसे। (वीरो० ८/२९) 'किमस्मदीय-बाहुभ्यां प्रियाया गलमालभे।'

किमिति (अव्य०) क्या। 'गम्यतां किमिति सम्प्रति। (जयो० ४/५)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

किमिच्छदानं (नपुं०) इष्ट दान क्या है? (सुद० २/१५)

किमिदानीं (अव्य०) इस समय और क्या? 'किमिदानीं न दानिन् रसं यामि।' (सुद० ७३)

किमिह (अव्य०) और तो क्या? 'किमिह पुनर्न बभूव विषादी' (सुद० ११२)

किमु (अव्य०) क्या? कभी। किमु बीजव्यभिचारि-अङ्कुरः (सुद० ३/८) क्षौद्र किलाक्षुद्रमना मनुष्यः किमु सञ्चरेत्। (सुद० १३०) किमु मस्तकेन चरणं (जयो० २/११५)

किमु न (अव्य०) क्यों नहीं। (सुद० ९२)

किमुत (अव्य०) इधर क्या। (सुद० ८१) क्यों नहीं। (वीरो० १/१०)

किन्न (अव्य०) जैसे कि (सुद० ७८)

किन्नर्हि (अव्य०) क्यों नहीं। (सुद० ८१)

किन्नरः (पुं०) किन्नर नामक देव, गन्धर्वि। किन्नरनाम-कर्मोदयात् किन्नरा। (त० वा० ४/११) नहि किन्नर एष किन्नरो (जयो० १०/७९)

किन्नरी (स्त्री०) १. देवाङ्गना, गन्धर्वणी। (दयो० १०९) कुत्सितनरी किन्नरि (जयो० ११/१३) २. नीच स्त्री अतिमार्दवतो नभश्चरी स्ववभातोव गुणेन किन्नरी। (समु० २/८)

किन्नु (अव्य०) क्यों नहीं, क्या नहीं। सागसोऽप्याङ्गिनो रक्षेच्छक्त्या किन्नु निरागसः। (सुद० ४/४१)

किम्मुचित् (अव्य०) क्या कभी नहीं। (जयो० २/६५)

किन्नेति (अव्य०) क्यों नहीं क्या नहीं। 'किन्नेति चेतसि स भद्रतया विचार्य। (सुद० ४/२४)

कियत् (वि०) कितना बड़ा, कितना बृहद, किन गुणों का, किस गिनती का।

कियद्विधा (वि०) कतिपय प्रकारा, कितने प्रकार का। (जयो० २३/३०)

किरः (पुं०) [कृ+क] सूकर।

किरकः (पुं०) [कृ+ण्वुल्] १. लिपिक, लेखाकार, २. सूकर।

किरणः (पुं०) प्रभा, चमक, कान्ति, चन्द्र, सूर्य, प्रकाश। (जयो० १/१०५)

किरणक्षेपकं (वि०) करकृत, प्रकाश करने वाला। (जयो० वृ० १८/९४)

किरणमय (वि०) प्रकाश युक्त।

किरणमालिन् (पुं०) सूर्य, दिवाकर।

किरणसंसर्गः (पुं०) प्रभावलम्बन। (जयो० १/१०५)

किरातः (पुं०) [किरं पर्यन्तभूमिम अतति गच्छतीति किरातः] चिलात, पर्वतीय जाति के लोग, भील या आदिवासी।

किराती (स्त्री०) चिलाती, भीलनी।

किरिः (पुं०) [कृ+इ] सूकर, ग्रामसूकर , किरिरेव समस्तु हरिर्वस्य (जयो० २३/४९) २. मेघ, बादल उवराह।

किरीटः (पुं०) मुकुट, शिरोपधान। (जयो० १७/६६)

किरीदाच्छादनं (नपुं०) शिरोपधान, मुकुटधारक। (जयो० १७/६६)

किरीटिन् (वि०) [किरीट+इनि] मुकुटधारी।

किर्मीर (वि०) [कृ+ईरन्] चितकबरा, रंग बिरंगा।

क्रियमाण (वि०) किया जाने वाला। (जयो० १/११)

किल (अव्य०) निश्चय या निर्धारण सम्बन्धी अव्यय। निश्चय ही। (जयो० १/७) वीरो० १/५। अवश्य-

अतएव-(सुद० ९९)

अपूर्व-पूर्णाऽऽशास्तु किलाऽपरिघूर्णा (सुद० ९९)

अत्यन्त-एकाकिनं यथाजाते किलाऽऽनन्देन मण्डिता। (सुद० ९७)

जैसा कि 'भोगानात्मनाऽनुभवितुं किल रोगान्, (समु० ५/३)

एवं, प्रकार-किलेत्येव प्रकारा परिस्थितिः (वीरो० २/४१)

वास्तव में-'किलार्य खण्डोत्तम नामधेयम्' (सुद० १/१४)

ऐसा, इस प्रकार का-शयनीयोऽसि किलेति शापित (सुद० ३/२२)

किन्तु-तकाल्लतल्पन किलारि नार्गः (जयो० १/२६)

क्योंकि (जयो० १/२३)

यद्यपि-'प्रवादस्य किल प्रपूर्ति (सुद० १/३५)

परन्तु-किलानकोऽप्येष पुनः प्रवीणः। (सुद० २/२) 'नक्र पर्यन्त-दीर्घोऽहिनील: किल केशपाशः। (सुद० २/८) घृणा, कारण, हेतु, आशा, संभावना आदि में भी किल का प्रयोग होता है।

किलः (पुं०) [किल्+क] क्रीड, क्रीडा, खेल।

किलकिंचितं (नपुं०) उत्तेजना, प्रेम-मिलन पर हास-परिहास।

किल-किलः (पुं०) हर्ष, आनन्द, किलकारी, गुंजन, गुंज।

किलकिलाटः (पुं०) छोंक। किलकिलाटवदङ्गगतं न तु किमु न पश्यसि गोरस-सारिके। (जयो० २४/१३७)

किलकिलायते किलकारी करना, हर्षित करना।

किलाकं (अव्य०) निश्चय ही, वास्तव में। भाग्येन तेनास्तु समागमोऽपि साकं किलाकं यदि नोऽथलोपि। (सुद० २/२२)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

किलानकं (नपुं०) निरुपद्रव, शुभ्र, श्वेत। शशिबिम्बमिरातपत्रकं भवत: प्राभवत: किलानकम् (जयो० २६/१५)

किलायस: (पुं०) लोह परिणाम, कठोर भाव, लोहे से निर्मित। (जयो० वृ० ७/१०३)

किलालक: (पुं०) चूर्ण कुन्तल, केश समूह। कृत्वा करं मृदुनाशुकेन किलालकच्छविलाञ्छितम्। (जयो० १८/१०३)

किलिंजं (नपुं०) [किलि+जन्+ड] १. चटाई, आसन। २. फलक।

किल्विन् (पुं०) [किल्+क्विप्] अश्व, घोड़ा।

किलेत: (अव्य०) इस तरह की। चाण्डालचेतस्युदिता किलेत: सविस्मये दर्शक सञ्चयेऽत:। (सुद० ८/९)

किलैकदा (अव्य०) कभी-कभी, किसी तरह से भी। 'ममैकाकी किलैकदा' (सुद० ८५)

किलैक-लोक: (पुं०) भले-बुरे लोग। 'विरज्यतेऽतोऽपि किलैकलोक:' (सुद० १/१०)

किशलय: (पुं०) [किंचित् शलति-किम्+शल् न कयन्] कोंपल, अंकुर, पल्लव, कुपल (जयो० १२/१०६)

किशोर: (वि०) [किम्+शृ+ओरन] वत्स, बछड़ा, बच्चा, तरुण १६ से कम आयु का युवक। २. अनङ्कुरितकूर्चक, दाढ़ी, मूंछ रहित (जयो० वृ० २/१५३)

किशोरवयस् (पुं०) किशोर वय, युवा। (जयो० २/१५९)

किशोरी (स्त्री०) षोडशी, प्रौढवयस्का, तरुणंगिता, तरुणी। (जयो० वृ० १२/१११)

किष्किन्ध: (पुं०) गिरि, पर्वत विशेष।

किष्कु (वि०) दुष्ट, नीच। १. प्रमाण विशेष, दो हाथ प्रमाण। -'द्विहस्त: किष्कु:' (त० वा० ३/३)

किसलय: (पुं०) पल्लव, अंकुर, प्रवाल, कुपल युक्त कोंपल।

किसलयशकलोदित (वि०) पल्लव खण्ड। किसलायानां सद्योजातपल्लवानां शकलानि खण्डानि तेभ्यो उदितेन (जयो० १४/४२)

कीकट (वि०) दरिद्री, निर्धनता युक्त।

कीकश: (पुं०) अस्थि, हड्डी। (जयो० २५/२०)

कीकसा (वि०) [की-कुत्सितं यथा स्यात्तथा कसति] कठोर, दृढ़, शक्तिशाली।

कीकसं (वि०) अस्थि, हड्डी। (दयो० ४२)

कीकसदाम: (पुं०) हड्डियों की माला। (दयो० ४२)

कीचक: (पुं०) बांस, छिद्र युक्त बांस, खोखला बांस। २. एक जाति विशेष।

कीट: (पुं०) [कीट+अच्] ०कृमि, ०कीड़ा क्षुद्र जंतु।। कीटकादीनां च सा तथा (दयो० १/२३)

कीटक: (पुं०) [कीट+कन्] कृमि, कीड़ा। २. एक जाति विशेष।

कीटानुवेध रहित (वि०) कीट/कृमि के भेद से रहित।

कीदृक् (वि०) कैसा, किस तरह का। (मुनि० १५) किस प्रकार का, किस स्वभाव का। 'क: कीदृक् कार्यपरायण' (जयो० वृ० ३/३)

कीदृग् देखो ऊपर।

कीदृगनार्य: (पुं०) कैसा अनार्य। (जयो० वृ० ४/४८)

कीदृगिति (अव्य०) इस प्रकार का कैसे। ज्ञानवतो भोजनं कीदृगिति कथयति। (जयो० २७/४६)

कीदृगेतदिति (अव्य०) कहीं पर भी। 'कीदृगेतदिति केन वोच्यते' (जयो० २/८३)

कीदृश् (वि०) किस प्रकार का, किस प्रकृति का, कैसा। (जयो० १/९४)

कीदृशासन् (वि०) किस प्रकार का होता हुआ। (जयो० १/५)

कीदृशी (अव्य०) किस प्रकार की, किस स्वभाव की। (जयो० ११/७२)

कीनाश (वि०) ०निर्धन, ०दरिद्र, ०कृपण, ०तुच्छ, ०लघु, ०निम्न, ०नीच, ०पतित, ०अधर्म, ०गिरा हुआ।

कीनाश: (पुं०) यमराज, यम।

कीर: (पुं०) [की इति अव्यक्त शब्दं ईरयति की+ईर्+अच] शुक, तोता। (जयो० ११/६०, समु० ५/८)

कीरसमूह: (पुं०) शुकसन्निचय। (जयो० वृ० १३/४०)

कीरा (वि०) कश्मीर निवासी।

कीर्ण (वि०) [कृ+क्त] व्याप्त, विस्तृत।

कीर्तितन्तु (वि०) स्नेह प्रकट करने वाला। (वीरो० ९/२९)

कीर्तिदेव (पुं०) कदम्बराज। (वीरो० १५/४२)

कीर्तिपाक (पुं०) चौहानवंश का राजा। (वीरो० १५/५) फैला हुआ, फेंका हुआ, क्षिप्त। स्थानं संयमघातकं शठजनै: कीर्णं च दूरात्त्यजेत्। (मुनि० २९) 'यत्र गंधोदसंसिक्ता: कीर्णपुष्पाश्च वीथय:' (जयो० ३/८३) कीर्णानि इतस्तत: क्षिप्तानि (जयो० वृ० ९/८३)

कीर्णि: (स्त्री०) फैलाना, फेंकना, छिपाना, गुप्त करना, ढकना, आच्छादित करना।

कीर्तनं (नपुं०) [कृत्+ल्युट्] वर्णन, स्तुति, विवेचन, गुणगान। (जयो० २/६०)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कीर्तिः (स्त्री०) [कृत+क्तिन्] यश, प्रसिद्धि, ख्याति, प्रभा, कान्ति। (जयो० वृ० १/४५) (जयो० ६/८८) (वीरो० २/२०) नामविशेष (जयो० १/७१) 'कीर्तिः गुणोत्की 'र्तनरूपा' कीर्तन्ते जीवादयस्तत्त्वार्थां यया सा।

कीर्तिगानं (नपुं०) यशोगान। (जयो० २४/८०)

कीर्तिजयी (वि०) यशस्वी।

कीर्तित (वि०) उच्चारण संकेत।

कीर्तिधर (वि०) ख्याति प्राप्त, प्रसिद्धि युक्त।

कीर्तिबहुल (वि०) यशोमय। (जयो० वृ० १/५)

कीर्तिभाज् (वि०) यशस्वी।

कीर्तिमय (वि०) कीर्तियुक्त। (सुद० ८२)

कीर्तिलोदग्री (वि०) भृकुटी चढ़ी हुई। (जयो० १६/८०)

कीर्तिवार्ता (वि०) यशोगान युक्त, संकथा। (जयो० वृ० ३/३५)

कीर्तिवृक्षः (पुं०) यशोवृक्ष। (जयो० वृ० ६/८०)

कील् (सक०) बांधना, बंधन युक्त करना, आधीन करना।

कीलः (पुं०) [कील्+घञ्] कील, लोला, खूंटी। २. आयुध, नोंक युक्त शस्त्र।

कीलकः (पुं०) [कील+कन्] खूंटी, खंभा, स्तम्भ, खील। २. बाण। (वीरो० १७/४२)

कीलनं (नपुं०) बन्धन, बंधना। किमधुना न चरन्त्यसबश्चराः स्वगमिताः किमु कीलनमित्वराः। (जयो० ९/७)

कीलालः (पुं०) [कील+अल्+अण्] अमृत तुल्य पेय पदार्थ।

किलिकिंचितं (नपुं०) रोष, भयादि का मिश्रण।

किल्विषः (पुं०) पाप।

किल्विषकर्मा (वि०) घृणित कार्य करने वाले, पाप बंध युक्त कार्य करने वाले।

किल्विषिकः (पुं०) देव जाति का एक नाम। किल्विषं पापं येषामस्ति ते किल्विषिकाः (स०सि०४/४)

किल्विषिक-भावना (स्त्री०) दोष युक्त भावना।
तित्थयराणं पडिणीओ संघस्स य चेइयस्स सुत्तस्स।
अविणीदो णियडिल्लो, किब्विसियेसुदवज्जेइ।।(मूला ०२/३०)

क्रीड् (अक०) खेलना।

क्रीडनकः (पुं०) खिलौना। (जयो० वृ० १/१०)

कीलिका (स्त्री०) [कील+कन्+टाप्] धुरे की कील, कीला।

कीलिका संहननं (नपुं०) कीलों सहित होना। (त० वा० ४/११)

कीलित (वि०) कीलन, उखाड़ने वाला। सद्यो विनाशमायाति कीलोत्पाटीव वानरः। (दयो० २/१३)

कीश (वि०) नग्न। २. लंगूर, वानर, ३. सूर्य, ४. पक्षी।

कीशकुलोद्भव (वि०) कीश/वानर कुल में उत्पन्न होने वाले (वीरो० ९/२)

कु (अव्य०) त्रुटिपूर्ण कार्यों के संकेत में इसका प्रयोग होता है। ०पापजन्य, ०निन्दनीय, ०अनिष्ट, ०हानिकारक। ०अभावयुक्तनीय, निम्न, ह्रास युक्त। (सम्य० ९२)

कु (अक०) ध्वनि करना, शब्द करना।

कु (पुं०) कवर्ग क, ख, ग, घ, ङ। (जयो० वृ० १/३९)

कुकर (वि०) पाप करने वाला, नीचता करने वाला।

कुकर्मन् (नपुं०) निम्न कार्य, नीच कार्य, अधम प्रवृत्ति। (सम्य० ७५) अक्षाधीनधिया कुकर्म-कलना मा कुर्वतो मूढ! ते। (मुनि० १९)

कुकर्म-कथा (स्त्री०) निम्न कार्य सम्बंधी कथा, नीच/पाप जन्य कहानी। (सुद० ९०) छन्नमित्यविपन्नसमया खलु कुकर्मकथा तु। (सुद० ९०)

कुकर्मकलना (स्त्री०) खोटे कर्मों का बन्ध। (मुनि० १९)

कुकभं (नपुं०) [कुकेन आदानेन पानेन भाति कुक+भा+क] मदिरा, मद्य, सुरा।

कुकीलः (पुं०) पर्वत, पहाड़, गिरि।

कुकुदः (पुं०) अलंकार, विभूषण, आभूषण।

कुकुंदरः (पुं०) नितम्ब का ऊपरी भाग।

कुकुरा (स्त्री०) एक देश, दशार्ह नामक देश।

कुकूलः (पुं०) भूसी, तुष, चोकर।

कुकूलं (नपुं०) छिद्र, गर्त, खाई।

कुक्कुटः (पुं०) १. मुर्गा। २. चिनगारी, ताम्रचूड़। (जयो० १/७८)

कुक्कुटवाक् (नपुं०) मुर्गे की बांग। 'श्रुतकुक्कुटवाक् प्रगेतरां' (जयो० १०/८)

कुक्कुटी (स्त्री०) मुर्गी। ताम्रचूड़।

कुक्कुभः (पुं०) [कुक्कु शब्दं भासते कुक्कु+भास+ड] मुर्गा, कुक्कुट।

कुक्कुरः (पुं०) [कोकते आदत्ते-कुक्+क्विप्] कुक् किंचिदपि गृह्णतं जनं दृष्ट्वा कुरति शब्दायते-कुक्+कुर+क, कुत्ता, श्वान (सुद० ८९) 'श्वा कुक्कुरश्चुकूज शब्दं चकार' (सुद० ४/४२) 'मूला ततः कुक्कुरतामुपेतः' (सुद० ४/१८)

कुगत (वि०) कुगति करने वाला।

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कुगतिः (स्त्री०) पाप प्रवृत्ति, बुरा आचरण।

कुगुरु (पुं०) खोटे गुरु, पाखंडी, कुगुरु कुत्सिताचार।

कुगेहं (नपुं०) कुस्थान, पापस्थान।

कुग्रहः (पुं०) अमंगलकारी ग्रह, अनिष्ट ग्रह।

कुड्मलः (पुं०) कोरक भाग, स्तन अग्रभाग, स्तन का श्यामल प्रान्त। (जयो० १७/४३)

कुक्षः (पुं०) उदर, पेट।

कुक्षिः (पुं०) पेट, उदर, गर्भाशय। (जयो० ३/२७) गर्भ का भीतरी भाग। गर्त, गुफा। (जयो० १२/१०९) कुक्षिरमुक्ष्याः पततु पुनर्नाभः

कुक्षिम्भरि (वि०) [कुक्षि+भृ+इन्] पेटू, पेट भरने वाला।

कुच् (सक०) १. कठोर ध्वनि करना, चमकना, झुकाना। २. अंकित करना, चिह्नित करना। ३. टेढ़ा करना, घटाना।

कुचः (पुं०) [कुच्+क] स्तन, उरोज, चूचो। (सुद० १००) कालोपयोगेन हि मांसवृद्धि कुचच्छलात्तत्र समासगृद्धिः। स्त्री के शरीर में काल के संयोग से वक्षस्थल पर मांसवृद्धि होती है, वे कुच कहलाते हैं। 'काठिन्यमेवं कुचयोर्युवत्याः' (सुद० १/३४)

कुच-कुड्मलान्तः (पुं०) स्तनकोरक, स्तन भाग। 'कुचकुड्मलयो स्तनकोरकयोरन्तं प्रान्तं' (जयो० १७/४३)

कुच-कोरकः (पुं०) १. स्तनभाग। २. कमलिनी की कोरक/भाग। 'विकासमस्मिन् मे ऽतीव पद्मिन्याः कुचकोरकः' (सुद० ७९)

कुचगौरवः (पुं०) समुन्नतभाव, स्तन की छवि, स्तन उभार। ('अस्याः किमुचे कुचगौरवन्तु' (जयो० ११/३८)

कुच-मण्डलः (पुं०) कुच भाग। (वीरो० २/४८) 'काठिन्यं कुचमण्डलेऽथ सुमुखे दोषाकरत्वं परं' (वीरो० २/४८)

कुचवती (वि०) स्तनवती। (जयो० १४/९०)

कुचवस्त्रं (नपुं०) निचोल, कंचुकी। (जयो० वृ० १३/६४)

कुचाञ्चलं (नपुं०) निचोल। (वीरो० २१/१७)

कुचाञ्चिततनातटी (वि०) उत्तम शोभा युक्त स्तन वाली। (समु० २/३)

कुचाकारः (पुं०) कुच का आकार। 'कन्दुः कुचाकारधरो युवत्याः' (वीरो० ९/३७)

कुचिताङ्गक (वि०) संकुचित अंग वाला। (वीरो० ९/२५) 'कुटीरकोणे कुचिताङ्गको वत्।'

कुञ्चितदोषः (पुं०) वन्दनाविधि दोष।

कुज्ञान (वि०) कुबोध, खोटा ज्ञान, बोध की कमी, मिथ्याज्ञान। (सम्य० १३७)

कुज्ञानातिग (वि०) मिथ्याज्ञान से रहित, बोध रहित। (जयो० २७/६६) 'कुज्ञानात्पराधीनाद् बोधादतिगं दूरवर्ति। (जयो० वृ० २७/६६) 'कुज्ञानातिगमन्तिमं स मनसा तेनार्जितः सिद्धये' (जयो० २७/६६)

कुङ्कुमित-पत्रं (नपुं०) निमन्त्रण पत्र। (जयो० ११/२४)

कुचेल (वि०) फटे वस्त्रों युक्त।

कुचेलक (वि०) जीर्ण-शीर्ण वस्त्र वाला।

कुचेष्टा (स्त्री०) बुरी दृष्टि, अभद्र व्यवहार। 'इत्यादि सङ्गीति-परायणा च सा नाना कुचेष्टा दधती नरङ्कपा' (सुद० १२३)

कुच्छं (नपुं०) कुमुद।

कुजः (पुं०) [कु+जन+ड] १. वृक्ष, तरु, २. मंगल ग्रह, ३. राक्षस विशेष।

कुजन्मानन्तरं (नपुं०) कुयोनियों में जन्म-मरण। (नपु०३/३२)

कुजम्भल (वि०) चोरी करने वाला।

कुजातिः (स्त्री०) नीच कुल। (जयो० २४/४६) भूमिसम्भूति (वीरो० ६/१५)

कुञ्च् (पुं०) घटाना, सिकोड़ना।

कुञ्चनं (नपुं०) घटाना, सिकोड़ना।

कुञ्चिः (स्त्री०) माप विशेष, मुट्ठि से माप करना।

कुञ्चिका (स्त्री०) कुंजी, चाबी।

कुञ्चाञ्चलं (नपुं०) स्तनवस्त्र, कंचुकी, निचोल, कुचवस्त्र। (जयो० १४/३८)

कुञ्चित (वि०) अनुदार, झुका हुआ, टेढ़ा किया हुआ। (जयो० २/९)

कुञ्जरः (पुं०) [कुञ्जो हस्तिहनु, सोऽस्यास्ति-कुञ्जर+र] करी, हस्ति, हाथी, गज। १. पीपल वृक्ष, (जयो० ३/११०) २. हस्त नामक नक्षत्र। ३. शिरोमणि, अग्रणी। 'वीरकुञ्जरः' (जयो० १९/२७)

कुञ्जरराज (पुं०) हस्ति, हाथी। (जयो० १३/११०) गजराज -दानं ददौ कुञ्जरराज एकः' (जयो० १३/११०)

कुट् (अक०) वक्र होना, कुटिल होना, झुकना, टेढ़ा करना।

कुटः (पुं०) १. जलपात्र, करवा, कलश। २. उच्च स्थान, दुर्ग, किला, कूट, पर्वत।

कुटकं (नपुं०) [कुट+कन्] बिना हरथे का हल।

कुट-कुटी (स्त्री०) रहट, जलानयनदासी। (जयो० २५/९)

कुटङ्कः (पुं०) [कु+टङ्क+घञ्] छत, छप्पर।

कुटङ्ककः (पुं०) [कुटस्य अङ्कः] लता मण्डप, झोपड़ी, कुटिया।

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कुटजः (पुं०) वृक्ष विशेष। (वीरो० ४/१८) 'हृष्टास्ततः श्रीकुटजः श्रयन्तु'

कुटपः (पुं०) [कुट+पा+क] कुद्रव, कुडवा, धान्य मापने का साधन। २. वाटिका, बगीची।

कुटरः (पुं०) [कुट्+करन्] मथानी की रस्सी।

कुटलं (नपुं०) [कुट्+कलच्] छत, छप्पर।

कुटिः (स्त्री०) १. कुटिया, झोपड़ी। (जयो० २७/६०) २. मोड़, ३. देह, शरीर, ४. वृक्ष।

कुटिरं (नपुं०) कुटिया, झोपड़ी। (जयो० २७/६०)

कुटिलं (वि०) [कुट्+इलच्] टेढ़ा, मुड़ा हुआ, वक्र, घुमावदार। (दयो० ७४) विभिन्न भाव युक्त। (जयो० ८/५५) भुज भुङ्गतो भीषण एतदीयद्विषहृदे वा कुटिलोऽद्वितीयम्' घुंघराली। (जयो० हि०११/७०) विषम-'विषमान् कुटिलानपि' (जयो० वृ० १२/८२)

कुटिलतारहित (वि०) वक्रता रहित, सरल, शुद्ध, सीधी, निष्पाप, अपाप। (जयो० २/१४३)

कुटिलत्वसूक्त (वि०) शुद्धता युक्त, सूक्त। (सुद० १/२७) (जयो० वृ० ४/२२)

कुटिलिका (स्त्री०) धीरे चलना, दुबक के आना।

कुटी (स्त्री०) १. कुटिया, झोपड़ी। 'सेवकस्य कुटीं रमयन्तु' (जयो० ४/१८)

कुटीरः (पुं०) कुटिया, झोपड़ी। (जयो० २१/५२)

कुटीरकः देखो कुटीरः।

कुटीरकोणः (पुं०) कुटिया का कोना। (वीरो० ९/२५)

कुटुनी (स्त्री०) दूती, कुट्टिनी।

कुटुम्बं (नपुं०) [कुटुम्ब+अच्] परिवार, गृहस्थ, गृहयुक्त। (वीरो० १५/६९)

कुटुम्बिकः (पुं०) [कुटुम्ब+ठन्] पारिवारिक जन, कुल परिवार के लोग। (जयो० वृ० १२/३३)

कुटुम्बिनी (स्त्री०) गृहिणी, गृहस्वामिनी, पत्नी।

कुट्ट (सक०) कूटना, पीसना, बांटना, चूर्ण करना।

कुट्टक् प्रभावः (पुं०) कूटने का प्रभाव। (वीरो० ११/२१)

कुट्टकः (वि०) कूटने वाला।

कुट्टनं (नपुं०) कूटना, पीसना।

कुट्टिनी (स्त्री०) [कुट्टयति नाशयति स्त्रीणां कुलम्'-कुट्ट-णिच्+ल्युट्+ङीप्]। दूती।

कुट्टमितं (नपुं०) [कुट्ट+घञ्] दिखावटी तिरस्कार।

कुट्टाक (वि०) विभक्त किया गया।

कुट्टारः (पुं०) [कुट्ट+आरन्] मैथुन, ऊनी कम्बल।

कुट्टिमः (पुं०) झोंपड़ी, कुटिया।

कुट्टिहारिका (स्त्री०) [कुट्टि+हृ+ण्वुल्+टाप्] सेविका, दासी। कुट्टिं मत्स्यमांसादिकं हरति इति।

कुठः (पुं०) वृक्ष, तरु। [कुठ्यते छिद्यते-कुठ्+क]।

कुठारः (पुं०) कुल्हाड़, परशु, फरसा।

कुठारघातः (पुं०) वज्रपात। (दयो० ४३) (भक्ति०)

कुठारिकः (वि०) लकड़हारा, लकड़ी काटने वाला।

कुठारिका (स्त्री०) [कुठार+ङीप्+कन्+टाप्] फरसा, कुल्हाड़ा।

कुठारुः (पुं०) १. तरु, वृक्ष। २. वानर।

कुठिः (पुं०) १. वृक्ष, तरु। २. पर्वत।

कुडङ्गः (पुं०) कुंज, लतागृह।

कुडवः (पुं०) धान्य माप विशेष।

कुड्मल (वि०) [कुड्+कल, मुट्] मुकुल, खिलता हुआ, प्रस्फुटित होता हुआ। (जयो० वृ० ३/७५)

कुड्मलः (पुं०) कली, खिलना, विकसित होना।

कुड्मलकोमल (वि०) पुष्पकलिकावत्, कोमल। (वीरो० ५/२५)

कुड्मलकल्पः (पुं०) मुकुलविधि, पुष्प खिलने की प्रक्रिया। कुड्मलस्य मुकुलपरिणामस्य कल्पो विधि (जयो० ३/८८)

कुड्मलता (वि०) विकसित होती हुई। (सुद० २/२५)

कुड्-मल-बन्ध लोपी (वि०) १. कमल संकोच, २. पुष्प के बन्ध के लोलुपी कली के इच्छुक, भ्रमर समूह। 'कुड्मलबन्धं कमल-सङ्कोच रूपबन्धनं लोपायतीति।' (जयो० वृ० १/७१)

कुड्मललता (स्त्री०) मुकुलित लता, विकास को प्राप्त हुई, लतिका।

कुड्मलित (वि०) [कुड्मल+इतच्] १. कलियुक्त, २. प्रसन्न, हर्षयुक्त।

कुड्यं (नपुं०) भित्ति, दीवार। (जयो० १०/८९) अर्क संस्कृत-कुड्येषु संक्रांत प्रतिमा नरा। (जयो० १०/८९) 'जिणहरध-रायदणाणं ठविअ-ओलित्तीओ कुड्डा णाम' (धव० १४/४०)

कुड्यदोषः (पुं०) भित्ति का आश्रय लेकर कायोत्सर्ग करना। कुड्यमाश्रित्य कायोत्सर्गेण यस्तिष्ठति तस्य कुड्यदोषः। (मूला ०७/१७१)

कुण्ठ् (अक०) कुण्ठित होना, विकलांग होना, सुस्त होना, अपंग होना, मंदबुद्धि होना।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कुण्ठ (वि०) [कण्ठ्+अच्] ठूंठा, सुस्त, आलसी, उदासीन, मंद, मूर्ख, लंठ, दुर्बल।

कुण्ठकः (पुं) [कुण्ठ्+ण्वुल्] लंठ, मूर्ख, मूढ़।

कुण्ठक्रमः (वि०) कुण्ठितक्रम वाला। 'सिंहो हस्तिनमाक्रमेदपि पुरः प्राप्तं न कुण्ठक्रमः। (वीरो० ९/४५)

कुण्ठात्मक (वि०) सुदृढात्मक। (जयो० १७/४८)

कुण् (सक०) सहारा देना, आश्रय देना, सहायता करना।

कुणकः (पुं०) [कुण्+क+कन्] शावक, पशु शावक।

कुणप (वि०) दुर्गन्ध युक्त।

कुणपः (पुं०) शव, मुर्दा।

कुणपीप्राया (वि०) दुर्गन्ध दुराकाग्वती। (जयो० २४/१४२)

कुणिः (स्त्री०) [कुण्+इनि] खजा, लुंजा, हस्त से अपंग, शुष्क हस्त युक्त।

कुण्डगिरिः (पु०) कुण्डलगिरि। महावीर स्वामी का जन्मस्थान। (भक्ति०३७)

कुण्डनं (नपुं०) कुण्डनपुर। (वीरो० ७/७)

कुण्ठित (भू०क०कृ०) [कुण्ठ्+क्त] मूर्खतायुक्त, आलस्य सहित, विकलांग मोथलं। (जयो० १५/९२) 'जगन्नाडनकुण्ठितानाम्' (जयो० १५/५२)

कुण्डः (पुं०) कटोरा, कूंडा, चारों ओर से घिरा हुआ पानी का कुंड। १. अग्निकुण्ड। २. कुण्डग्राम, कुण्डलपुर।

कुण्डपुरः (पुं०) कुण्डग्राम-'कुण्डिनमित्येतत्पदं पूर्व विधत्ते यस्य तन्नाम पुरं कुण्डिनपुर मित्याहु। (वीरो० २/२१)

कुण्डलः (पुं०) [कुण्ड् मत्वर्थे ल] कर्णाभूषण (जयो० ३/१०१) (जयो० १७/२९) कान की बाली। २. गोलाकार कड़ा।

कुण्डलकः (पुं०) कर्णाभूषण।

कुण्डलकान्तशोचि (वि०) कुण्डल कान्ति युक्त। (वीरो० ४/३३)

कुण्डलना (स्त्री०) [कुण्डल्+णिच्+युच्+टाप्] घेरा डालना।

कुण्डलितप्रदेशः (पुं०) कुण्डलाभार प्रदेश। (१३/१५)

कुण्डलिन् (वि०) [कुण्डल+इनि] १. कुण्डलों में युक्त। २. गोलाकार, घुमावदार, कुण्डली युक्त। ३. मोर वरुण।

कुण्डिन् (वि०) घेरा। (वीरो० २/४)

कुण्डिनं (नपुं०) [कुण्ड्+इनच्] कुण्डली।

कुण्डिनपुरः (पुं०) कुण्डग्राम। (वीरो० २/२१) महावीर स्वामी का जन्मस्थान।

कुण्डीर (वि०) शक्तिमान्, बलिष्ट।

कुतः (अव्य०) यह अनिश्चयार्थ की दिशा में प्रयुक्त होने वाला अव्यय है, जिससे कई अर्थ व्यञ्जित होते हैं।

कहां से-'अवलोक्य कुतः किमागतः। (समु० २/२१) 'श्रियो निवासोऽयमहो कुतोऽन्यथा कुतश्च लोकैः कर एष गीयते (जयो० ५/७६)

कैसे-'कुतोऽर्तिरर्हच्छरणं गताय' (भक्ति०२४) (सुद० २/४४) (जयो० ११/२७)

किस(समु० २/२१) कारण से-'कुतः कारणतो जात। भवतामुन्मनस्कता' (सुद० ३/३६)

कुतर्कः (पुं०) भ्रान्तिजन्य प्रमाण।

कुतपः (पुं०) [कु+तप्+अच्] द्विज, ब्राह्मण, सूर्य, अग्नि, अतिथि, वृषभ, सांड, दोहता, भानजा।

कुतलं (नपुं०) कुत्सित भाग। (जयो० ३/३३)

कुतश्च (अव्य०) कहां से, किस कारण से। 'न सन्तु कुतश्चापायाः' (सुद० ७१) 'कुतश्चैष पतितोऽपि सहसैव' (दयो० ८)

कुतः (अव्य०) कहां से। (सम्य० ४५)

कुतोऽन्यथा (अव्य०) अन्यथा किसी भी। त्रैकालिकं चाक्षमतिश्च वेत्ति कुतोऽन्यथा वार्थ इतः क्रियेति। (वीरो० २०/७)

कुतस्यात् (अव्य०) कैसे है? 'कुतः स्यात्पारणा तस्याः' (सुद० ३५)

कुतुकं (नपुं०) [कुत्-उकञ्] उत्सुकता, उत्साह, उमंग, रुचि, आमोद, प्रमोद, हर्ष।

कुतुकोत्क (वि०) विनोद युक्त, आनंद युक्त। सहितः कुसुमश्रिया मधुः कुतुकोत्कैर्भ्रमरैरिवाध्वनिः। (जयो० २१/७२)

कुतुपः (पुं०) [कु+तन्+क] कुप्पी, तेल डालने का साधन।

कुतूहल (वि०) आश्चर्यजनक, आनन्द, उत्साह, उमंग, आकांक्षा प्राप्त, प्रशंसा युक्त, श्रेष्ठ, सर्वोत्तम।

कुतोऽपि (अव्य०) कहीं पर भी, किसी प्रकार का भी, कहीं से भी। 'विपिनेऽस्यकुतोऽपि कौतुकान्मिलिता' (समु० २/८) 'दृशो न वैषम्यगात्कुतोऽपि' (सुद० २/३)

कुत्र (अव्य०) [किम्+त्रल्] कहां, किस बात में, किस विषय में।

कुत्रचित् (अव्य०) एक स्थान पर, कहीं पर।

कुत्रत्य (वि०) [कुत्र+त्यप्] कहां का रहने वाला।

कुत्रापि (अव्य०) कहीं पर भी। (मुनि० ९) वीरो० १४/४३।

कुत्स् (अक०) गाली देना, निन्दा करना, कलंक लगाना।

कुत्सनं (नपुं०) [कुत्स्+ल्युट्] दुर्वचन, घृणा, गर्हा, निन्दा।

कुत्सा (स्त्री०) विघ्न डालना, दोष लगाना।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कुत्सित (वि०) [कुत्स्+क्त] ०घृणित, ०निन्दनीय, ०खोटी, ०अपवित्र, ०पापी। वाढं चेत्त्वमिहासि कुत्सितमतिर्युक्ता क्षतिस्ते तदा' (मुनि० २४) 'कुत्सितेषु सुगतादिषु क्रमाद्धा' (जयो० २/२६)

कुत्सित-तलं (नपुं०) कुतल, घृणित भाग। (जयो० वृ० ३/३३)

कुत्सितप्रज्ञ (वि०) कुधी, कुबुद्धिशाली, मतिहीन। (जयो० वृ० ७/४८)

कुत्सितमतिः (स्त्री०) कुमति, प्रज्ञाहीन। (मुनि० १४)

कुत्सितसंस्कारः (पुं०) कुवासना, कदाचरण। (जयो० १९/९५)

कुत्सिताचारणं (नपुं०) निन्दित व्यभिचारादिकार्य, कदाचरण, भ्रष्टाचारी, कदाचारक (जयो० वृ० २/१३१) 'कुत्सिताचरण- केष्वशङ्किताकारिता' (जयो० २/१२६)

कुथः (पुं०) [कु+थक्] कुथा नामक घास।

कुत्ती (स्त्री०) शुनी, कुतिया। (वीरो० १७/३२)

कुदेवः (पुं०) मुक्ति के कारण से रहित देव, राग-द्वेषादि से विभूषित देव।

कुनरेशः (पुं०) क्रूर राजा। (वीरो० २१/१२)

कुदृष्टिः (स्त्री०) १. स्वच्छन्द कथन, दर्पोक्त वचन। २. कुदर्शन (सम्य० १३६) सच्छंद बोलए जिणुत्तमिदि' (रयणसार०३)

कुधी (स्त्री०) कुत्सितप्रज्ञा। (जयो० ७/४८)

कुधर्मः (पुं०) कुत्सित धर्म, संसार परिभ्रमण कारक धर्म।

कुधर्मकांक्षा (स्त्री०) अन्य तीर्थियकों की इच्छा।
रत्तवड-चरग-तावस-परिहत्तादीण मण्णतित्थीणं।
धम्मम्हि य अहिलासो कुधम्मकंखा हवदि एसा।।
(मूला ०५/५४)

कुदेशः (पुं०) पृथ्वीतल। (जयो० ११/२७)

कुद्दारः (पुं०) कुदाली, खुर्पी।

कुद्रङ्गः (पुं०) ऊपर स्थित गृह, कूटस्थ घर।

कुनरुः (पुं०) बिम्बफल। (जयो० ११/९९)

कुन्तः (पुं०) १. भाला, बाण, २. बर्छी। ३. तुच्छजंतु, कृमि, कीड़ा।

कुन्तलः (पुं०) [कुन्त+ला+क] बाल, घुंघराले बाल, सिर के बाल। (जयो० ८/४१) श्रीकुन्तलैः शैवलसावतीर्णा (जयो० ८/४१)

कुन्तयः (पुं०) एक देश।

कुन्तिः (पुं०) एक नृपति विशेष।

कुन्ती (स्त्री०) १. कर्ण की माता।

कुन्दकः (पुं०) कुन्द पुष्प।

कुन्दकारकः (पुं०) कुन्दकलिका। (वीरो० १/४२)

कुन्थुः (स्त्री०) राशि विशेष, पृथिवी में स्थित। 'क पृथ्वी, तस्यां स्थितवानिति निसकात् कुन्थः। (जैन०ल०वृ०३५१)

कुबीजभृ (वि०) मिथ्या बीज युक्त। (वीरो० ११/३७)

कन्थु (सक०) कष्ट सहना।

कुन्थु (पुं०) कुन्थुनाथ, सत्तरहवें तीर्थंकर। (भक्ति०वृ०१९)

कुन्थु जिनः देखो ऊपर।

कुन्थुनाथः देखो ऊपर।

कुन्थुप्रभुः देखो ऊपर।

कुन्थुस्वामी देखो ऊपर।

कुन्दं (नपुं०) १. कुन्द नामक पुष्प। चमेली पुष्प। (दयो० ८६) 'कुन्दं च शीर्षे दरिणां हितन्वम्' (जयो० १/२९) 'कुं शब्दं ददतीति कुन्ददत्यः संलापकर्त्र्यः' (जयो० वृ० ६/९५) 'कमलानि च कुन्दस्य च जातेः' (सुद० वृ०७१) २. कुन्द नामक आयुध-(जयो० वृ० १/२९)

कुन्दकुन्दः (पुं०) आचार्य कुन्द कुन्द। (जयो० वृ० १२/१) समयसार, प्रवचनसार नियमसार आदि पाहुड ग्रन्थों के रचनाकार। मांगलिक स्मरण के रूप में भी आचार्य कुन्दकुन्द का नाम विशेष आदर के साथ लिया जाता है।

कुन्दकुसुमं (नपुं०) कुन्दपुष्प, कमल पुष्प। (जयो० वृ० १६/२९)

कुन्ददती (स्त्री०) चन्द्रमा, शशि, कुमुसबन्धु। (जयो० ६/९५)

कुन्दबन्धुं (नपुं०) कुन्दपुष्प। (जयो० वृ० ३/५१)

कुन्दमः (पुं०) [कुन्द+मा+क] बिल्ली।

कुन्दारविंदं (नपुं०) कुन्द कुसुम। कुन्दनामक कमल, सफेद कमल। (जयो० १६/२४)

कुन्दिनी (स्त्री०) [कुन्द्+इनि+ङीप्] कमल समूह।

कुन्दुः (स्त्री०) चूहा, मूसा। [कु+दट]

कुप् (अक०) क्रोधित होना, उत्तेजित होना।

कुपलः (पुं०) किसलय, कोपल, (जयो० ११/४१) (१२/१०६)

कुपलाख्य (वि०) कु-कुत्सित-पल उन्माद। (जयो० ११/४१) अनर्थ वचन, अनिष्ट शब्द।

कुपात्रं (नपुं०) मिथ्यात्व युक्त. जं रयणत्तय-रहियं मिच्छामय-कहियधम्मअणुलग्गं। जइवि हु तवइ सुघोरं तहावि तं कुच्छियं पत्तं।। कुपात्राय सम्यक्त्व रहित-व्रततपोयुक्ताय' (सा०ध०टी० २/६७) ०अधम/नीच पुरुष।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कुपित (त्रि०) क्रोधित। (सम्० २/३१)

कुपिनिन् (पुं०) [कुपिनी मत्स्यधानी अस्ति अस्य] मछुवा।

कुपिनी (स्त्री०) क्रोधित। (सम्० २/३१)

कुपिनी (स्त्री०) जाल, मछली पकड़ने का जाल।

कुपूय (वि०) [कु+पूय्+अच्] निम्न, पतित, गिरा हुआ, अधम, निन्दनीय, घृणित।

कुप्यं (नपुं०) अपधातु, लोह ताम्रादि धातु। (भक्ति०४०)

कुप्यं (नपुं०) अपधातु मिट्टी के बर्तन। कुप्यं क्षौम-कार्पास-कौशेय चन्दनादि-'कुप्यशब्दो घृताद्यर्थस्तद्भाण्ड भाजनानि वा' (नारद संहिता ६/२०७) सुवर्ण, चांदी के अतिरिक्त कांसा, लोहा, मिट्टी के बर्तन आदि कुप्य कहलाते हैं। ०उर्णिन्, ०काष्ठमंचक, ०मंचिका, ०मसूर आदि। ०रथ, गाड़ी, हल, भी द्रव्य कुप्य हैं।

कुपप्रमाणिक्रमः (पुं०) कुप्य सामग्री का अतिक्रमण, ०अपधातु का अतिक्रमण, ०मिट्टी आदि बर्तन की मर्यादा का उल्लंघन।

कुबुद्धिः (स्त्री०) दुर्बुद्धि, हीनबुद्धि। भक्ति०४० (समु० ८/१२)।

कुबेरः (पुं०) [कुत्सितं बेरं शरीर यस्य स] कोषाधिकारी, धन स्वामी, धनपति। २. वृक्ष, नन्दीवृक्ष। ३. उत्तरदिशा का दिक्पाल। (जयो० वृ० २४/१०६)

कुबेरकः (पुं०) नन्दीवृक्ष।

कुबेरक (वि०) धनद, धन देने वाला। (जयो० वृ० २४/१०६)

कुबेरप्रियः (पुं०) १. धन-धान्य सम्पन्न गृहस्थ। २. कुबेरप्रिय नाम, पुण्डरीक नगरी का एक धनिक। कुबेरस्य प्रियो नाम्ना धनी यतिदत्तिकृद् धाम्नाम्।। (जयो० २३/४४)

कुबेरकाष्ठा (स्त्री०) उत्तर दिशा। कुबेरकाष्ठाऽऽश्रयणे प्रयत्नं दधाति पौष्ये गगनं धुरत्नम्' (वीरो० ६/१६)

कुब्ज (वि०) [कु ईषत् उब्जमार्जनं यत्र] कुबड़ा, कुटिल, वक्र। (जयो० २/१४८)

कुब्जः (पुं०) १. कूब, पीठ का उभार, पीठ का उठा हुआ भाग। २. कुब्जक वृक्ष। (जयो० २४/१०६)

कुब्जकः (पुं०) कुब्जकवृक्ष, अर्जुनवृक्ष। कुब्जो वा अर्जुनो वृक्षो। (जयो० २४/१०६)

कुब्जा (स्त्री०) कुबड़ी स्त्री, एक स्त्री।

कुब्जिका (स्त्री०) [कुब्जक+टाप्] छोटी लड़की, आठ वर्ष की लड़की।

कुभृत् (पुं०) [कु+भृ+क्विप्] पर्वत, गिरि, पहाड़।

कुमारः (पुं०) [कम्+आरन् उपधाया उत्वम्] छह वर्ष के बाद का बालक। (जयो० २/१३) कुमार, बालक, पुत्र, युवराज।

कुमारः (पुं०) कुमार। बालकः परकरोपलेखकः संलिखत्यथ कुमार एककः। (जयो० २/१९) आत्मजः

कोपवानत्र भरतस्य क्षमापतेः।

समञ्जसि श्री कुमार दीपतुत्थकथां तथा।। (जयो० ७/३९)

कुमारकः (पुं०) [कुमार+कन्] युवा, युवक बच्चा।

कुमारकालः (पुं०) कुमार समय। कौमार समय।(जयो० वृ० १७/५८)

कुमारकार्तिकेयः (पुं०) कार्तिकेयानुप्रेक्षा नामक प्राकृत काव्य रचनाकार।

कुमारवयः (पुं०) कुमारावस्था, बालकपन। (दयो० ६५) कुमारयति-क्रीड़ा करना, खेलना।

कुमारश्रमणः (पुं०) तरुण श्रमण। (वीरो० ८/४१)

कुमारिक (वि०) कुमारी, लड़की। कुमार अवस्था को प्राप्त दस बारह वर्ष की पुत्री।

कुमारिन् देखो कुमारिक।

कुमारिका (स्त्री०) [कुमारी+ठन्+टाप्] तरुणी, कन्या, अविवाहित पुत्री, दस-बारह वर्ष की लड़की। (वीरो० ५/२६) 'कुमारिकाणामिति युक्तमेव विभाति'

कुमारी (स्त्री०) तरुणी, कन्या (जयो० वृ० ३/८६) 'विषा नाम कुमारी कुमारवयोऽतिक्रमणेन द्वितीयाश्रम सन्धारण' (जयो० ६५)

कुमाली (स्त्री०) कन्या, तरुणी। 'र-लयोर भेदात्' (जयो० १२/९६)

कुमुद (वि०) [कु+मुद+क्विप्] कुमुदा कृपणादीनामाशयः' अमित्र, दयाहीन। (जयो० वृ० ६/९६)

कुमदं (नपुं०) 'कौ मोदते इति कुमुदम्' सफेद कुमुदिनी, रात्रि में चन्द्रोदय होने पर खिलने वाली। कैरव-(जयो० वृ० ६/९६) ४/८३। 'कं निशासु कुमुदैः समवेतम्' (जयो० ४/६३) 'कं जलं प्रमुदितैः विकसितैः कुमुदैः कैरवैः समवेतमस्तु' (जयो० वृ० ४/६३) कौमुदं तु परं तस्मिन् कलावति कलावति। (सुद० ९०) हे कलापति! जैसे कलावान् चन्द्रमा को देखकर कुमुद प्रमोद को प्राप्त होता है, उसी प्रकार सुद र्शन को देखकर प्रमोद युक्त हूं। रक्त कमल को भी कुमुद कहा गया है।

कुमुदः (पुं०) १. कुमुद नामक दैत्य। कुमुद नाम-दैत्य-स्यावाग्भवनदशासौ शोच्या शोचनीयास्ति (जयो० १८/३०) १. विष्णु, २. कपूर, ३. वानर जाति, ४. नाग विशेष।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कुमुद-बन्धु (नपुं०) कुमुद का मित्र चन्द्र। 'कुमुदानां बन्धुः कैरवविकासकारकश्चन्द्रः' (जयो० वृ० ३/५)

कुमुदवती (स्त्री०) [कुमुद+मतुप्+ङीप्] कैरविणी, कुमुदिनी लता।

कुमुदिनी (स्त्री०) कैरविणी, कमलिनी।

कुमुद्वती (वि०) १. कुत्सित हर्ष युक्त। (जयो० वृ० १५/३९) २. कुमुदिनी सहित।

कुमुद्वती (स्त्री०) कुमुदिनि, कमोदनी। (दयो० ५२ (सुद० ८६) कुमुदलता (जयो० वृ० १५/७२)

कुमुदशिवः (पुं०) कमलिनियों का सौभाग्य। 'कुमुदानां शिवं विकास सौभाग्यं' (जयो० ६/१२)

कुमुदोदयः (पुं०) श्वेतकमल विकास। (वीरो० २१/२७)

कुमोदकः (पुं०) [कु+मुद्+णिच्] विष्णु।

कुंकुमं (नपुं०) रोली, अबीर। निशा सुधा कुंकमतां प्रयातः (समु० ८/५)

कुम्भः (पुं०) [कुं भूमिं कुत्सितं वा उम्भति पूरयति-उम्भ+अच्] १. घट, घड़ा, जलपात्र, कलश (जयो० ३/७२) २. कुम्भराशि, ३. कुम्भस्थल, हस्तिमस्तक।

कुम्भकः (पुं०) [कुम्भ+कन्] स्तम्भ का आधार, कलशसम, २. वक्षस्थल। (सुद० १००)

कुम्भक (वि०) कलश वाले।

कुम्भक कल्पः (पुं०) १. कुम्भकविद्या, २. कुम्भविधि दार्शनिक पद्धति। कुम्भ के सदृश पृथुल। 'सत्कुचो भवति कुम्भकल्पः' (जयो० ५/४२) कुम्भ एव कुम्भकस्तत्कल्पः कलश इव पृथुलाकारः' (जयो० वृ० ५/४२)

कुम्भकमञ्चवर (वि०) कुम्भ का अनुकरण करने वाले। (सुद० १००) सुदृढं हृदि कुम्भकमञ्चवरं किन्न यतस्त्वं प्रभवे शुचिराट्। (सुद० १००)

कुम्भकारः (पुं०) कुम्भं करोति-कुम्हार। (जयो० वृ० ११/३७) (जयो० वृ० ७/८)

कुम्भ-कारिणी (वि०) कुम्भ बनाने वाली, घर निर्मात्री।

कुम्भकृत (पुं०) कुम्भकार, कुम्हार। (वीरो० १९/४४) तान्यथेन्त्व परितोषयन् धृति कुम्भकृत्युपरते क्व वाः स्थितिः। (जयो० २/९८)

कुम्भनी (स्त्री०) पृथिवी, भू, भूमि। 'सुचिरं शुचिरद्य कुम्भनी' (जयो० २६/५४)

कुम्भ-बद्ध (वि०) भूंगड़ों का घट, चने से युक्त घट। (समु० ५/८) मुच्यमान इह साञ्चणकानां कुम्भबद्ध- कपिवच्च-निदानात्। (समु० ५/८)

कुम्भयुगः (पुं०) कुम्भराशि का योग। (जयो० १/३३)

कुम्भयुग्मः (पुं०) कुम्भराशि का युगल। (जयो० १/३३)

कुम्भयोनिः (स्त्री०) कुम्भ में जन्म।

कुम्भवासी (स्त्री०) कुट्टनी, दूती।

कुम्भलग्नं (नपुं०) कुम्भ राशि का योग।

कुम्भस्थलं (नपुं०) हस्ति मस्तक, गिर श्री। (जयो० वृ० ६/२२)

कुम्भा (स्त्री०) [कुत्सितं उम्भति पूरयति इति उम्भ्+अच्+टाप्] वेश्या, वारांगना।

कुम्भिका (स्त्री०) [कुम्भ+कन्+टाप्] १. वेश्या, २. लघु पात्र।

कुम्भिन (पुं०) [कुम्भ+इनि] हस्ति, करि, हाथी।

कुम्भिलः (पुं०) [कुम्भ+इलच्] सेंध लगाकर चोरी करने वाला, २. साला, ३. काव्य चोर।

कुम्भी (स्त्री०) [कुम्भ+ङीप्] लुटिया, छोटा पात्र।

कुम्भीपाकः (पुं०) ०कुम्भ में पकाया जाने वाला, ०घड में पकाया जाने वाला।

कुम्भीकः (पुं०) पुन्नाग वृक्ष।

कुम्भीरः (पुं०) [कुम्भिन्+ईर्+अण्] घड़ियाल, मगर।

कुम्भीरकः (पुं०) चोर।

कुम्भोपम-कुचवति (स्त्री०) घटकल्प-सुस्तनि (जयो० वृ० १२/१२४) उन्नत स्तन वाली स्त्री।

कुयुक्तिः (स्त्री०) खोटी उक्ति। (सम्य० ९२) ०मिथ्या कथन।

कुर् (अक०) शब्द करना, ध्वनि करना।

कुरंकरः (पुं०) [कुरं इति अव्यक्त शब्दं करोति-कुरं+कृ+क]। सारस पक्षी।

कुरङ्ग (पुं०) [कु+अङ्गच्] मृग, हिरण।

कुरङ्गनेत्रं (नपुं०) मृगाक्षी, कुरङ्गस्य नेत्रे इव नेत्रे यस्याः' (जयो० १७/१०)

कुरङ्गमः (पुं०) कुरङ्ग, मृग, हिरण।

कुरङ्गरङ्कः (पुं०) मृगाङ्क। (वीरो० २/१३) चित्तेऽध्वनीनस्य विलप्य-शङ्कामुत्पादयन्तीह कुरङ्गरङ्काः। (वीरो० २/१३)

कुरटः (पुं०) मोची।

कुरंटः (पुं०) [कुर्+अंटक+किन्] सदाबहार, कटसरैया।

कुरंडः (पुं०) [कुर्+अण्डक्] अण्डकोष का रोग।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कुरक्षण (नपुं०) १. दुर्व्यसनाजन्य। २. पृथ्वी रक्षक। (जयो० १/४५)

कुररः (पुं०) [कु-क्रूरच्] क्रौंच पक्षी।

कुररी (स्त्री०) क्रौंच पक्षी।

कुरलः (पुं०) कुल्ला, गण्डूष। (जयो० १/८१)

कुरवः (पुं०) सदाबहार, कटसरैया।

कुरीना (स्त्री०) शब्द समूह। 'कूनां शब्दानां रीना कुरीनाश्च' (जयो० ५/९५)

कुरानं (नपुं०) ग्रन्थ, मुसलिम शास्त्र। (वीरो० १९/१०)

कुरीरं (नपुं०) [कृ+ईरन्] ओढ़नी।

कुरुः (पुं०) १. कुरु क्षेत्र, कुरुभूमि, २. कुरुवंशी नरेश जयकुमार।

कुरुक्षेत्रं (नपुं०) कुरुभाग। (जयो० ३/२८)

कुरुदेशः (पुं०) कुरुक्षेत्र, कुरुभाग, कुरुप्रदेश। (जयो० ६/७८)

कुरुदेशाधिपः (पुं०) कुरुदेश का राजा। तनये मन एतस्मिन् कुरु कुरुदेशाधिपेऽन्वित वाक्।

कुरुनरेशः (पुं०) कुरुराजा, जयकुमार। (जयो० ३/२८)

कुरुभूमिः (स्त्री०) कुरुक्षेत्र। (जयो० ७/८२)

कुरुभूमिभुक्तिः (स्त्री०) कुरु भूमि का भोग करने वाला जयकुमार। संप्रयुक्तमृदुसूक्तमक्तया पद्ययेव कुरुभूमिभुक्तया। (जयो० ७/८२)

कुरुराट् (पुं०) १. कुरुराज, कुरुवंशी, जयकुमार। (जयो० २६/४२) २. दुर्योधन।

कुरुराज देखो कुरुराट्।

कुरुहः (पुं०) तरु, वृक्ष, पादप। 'कौ पृथिव्यां रोहंति समुद्भवन्तीति कुरुहा' (जयो० १३/६०)

कुरुवंशी (वि०) कुरुवंशवाला, जयकुमार।

कुर्कुटः (पुं०) [कुरु+कुट्+क] मुर्गा, कुक्कुट।

कुर्चिका (स्त्री०) कूची।

कुर्वत् (कृ+शतृ) करता हुआ।

कुलं (नपुं०) १. परिवार, कुटुम्ब, वंश, गच्छ, समु दाय। कुलस्य-वंशस्य। (जयो० वृ० १/१८) ३.समूह, समु दाय, दल, झुंड, संग्रह। कुलं गच्छसमु दायः, 'राजीवकुल-प्रसादकृद्‌द्यामा' (जयो० ६/१७) ३. आवास, स्थान घर, गृह। ४. आचार्य की शिष्य परम्परा।

कुलः (पुं०) निगम, संघ, अध्यक्ष।

कुलक (वि०) [कुल+कन्] अच्छे कुल का, कुल श्रेष्ठ 'कुलस्तु कुलश्रेष्ठो' इति विश्वलोचनः (जयो० वृ० ४/१६)

कुलकः (पुं०) श्रेणी, शिल्पियों का अग्रणी।

कुलकं (नपुं०) संग्रह, समूह, श्लोक समूह, पांच से पन्द्रह तक के श्लोक समूह।

कुलङ्कर (वि०) कुल निर्माता, कुलकर। (वीरो० ११/५) 'कुलानि कुर्वन्तीति कुलङ्कराः वंशनिर्माताः' (जयो० वृ० २/८) सन्निवेद्य च कुलङ्करैः कुलान्येतदाचरणमिङ्गितं बलात्। (जयो० २/८)

कुलकज्जलः (पुं०) कुलकलंक।

कुलकष्टकः (पुं०) कष्टदायक कुल।

कुलकथा (स्त्री०) कुलीन स्त्री संबंधी कथा।

कुलकन्यका (स्त्री०) उच्चकुलीन कन्या।

कुलकरः (पुं०) मनु, कुलों की व्यवस्था में कुशल। (जयो० वृ० १२/९) 'कुलकरणम्मि य कुसला कुलकरणामेण सुपसिद्धा' (ति०प०४/५०९) 'आर्याणां कुलसंस्त्यापकृतः कुलकरा' (म०वृ०३/२११)

कुलकान्ता (स्त्री०) कुलीन स्त्री, अच्छे घर की स्त्री। सुकृतांशुकृताशयेन वा कुलकान्ताकुलमाप्तसंत्वाम्।

कुलकोक्ति (स्त्री०) ०काशिकावृत्ति, ०श्रेष्ठोक्ति। कीदृशीं काशिका? पाणिना हस्तेन नीया प्रापणीया यासौ कुलकोक्ति श्रेष्ठोक्तिः इयमतिसन्निकटप्राप्तेति रूपाः तस्या। पाणिनीया पाणिनि सम्बंधिनी या कुलोकिः कुलकस्तु कुल श्रेष्ठे इति वि० (जयो० ४/१६)

कुलज (वि०) राजवंश में उत्पन्न राजपुत्र। कुले राजवंशे जाताः कुलजाः शोभनाः कुमारा नवयुवका (जयो० वृ० ५/१)

कुलक्षयः (पुं०) कुल नाश, वंश नाश, कुटुम्ब नाश।

कुलगिरिः (पुं०) कुलाचल, पर्वत।

कुलतिथिः (स्त्री०) महत्त्वपूर्ण तिथि, अष्टमी, चतुर्दशी आदि।

कुलटा (स्त्री०) [कुल+अट्+अच्+टाप्] स्वैरिणी, स्वेच्छाचारिणी, इत्वारिका, व्यभिचारिणी। (दयो ४०, जयो० २/१४३)

कुलटापतिः (पुं०) जारिणी स्त्री का पति, भ्रष्टपति।

कुलटाहृदयं (नपुं०) इत्वारिका हृदय, व्यभिचारिणी स्त्री का हृदय। 'कुलटाया इत्वरिकाया हृदयेऽवशिष्टमवस्थितम् या कुलटा रात्रौ निर्भयं व्यचरंताः सूर्योदये सति भीता जाता इति भावः। (जयो० वृ० १८/३१)

कुलतः (अव्य०) [कुक-तसिल्] जन्म से।

कुलता (वि०) कुलीनता। 'यत्र मनाङ् न कलाऽऽकुलताया विकसति किन्तु कला कुलतायाः'। (सुद० ७६)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कुलत्थः (पुं०) कुलथी, दाल विशेष।

कुलतिलकः (पुं०) वंश यश, कुल कीर्ति।

कुलदीपः (पुं०) श्रेष्ठिकुल के दीपक। 'कुलदीपयशः प्रकाशिते' (सुद० ३/११)

कुलदुहित् (स्त्री०) कुलीनकन्या, योग्य पुत्री।

कुलधर (वि०) कुलधारक, ०कुलकर।

कुलधरः (पुं०) कुलकर मनु। प्रतिश्रुत आदि।

कुलदेवता (पुं०) कुल परम्परा का देव, जिनदेव। (जयो० वृ० १२/१)

कुलन्धर (वि०) [कुल+धृ+खच्] कुल/परंपरा स्थापित करने वाला।

कुलधर्मः (पुं०) कुल परम्परा।

कुलधारक (वि०) कुल को धारण करने वाला।

कुलधारकः (पुं०) पुत्र।

कुलधूर्यः (पुं०) कुल का आधार, वयस्क पुत्र।

कुलनन्दनः (पुं०) पुत्र, सुपुत्र।

कुलनन्दन (वि०) कुल को आनन्दित करने वाला।

कुलनायिका (स्त्री०) कुलीन स्त्री।

कुलनारी (स्त्री०) कुलीन स्त्री।

कुलपरम्परा (स्त्री०) वंश परम्परा।

कुलपतिः (पुं०) कुल प्रमुख, प्रधान, कुल पालक, कुलरक्षक।

कुलपरिभाषा (स्त्री०) कुलरीति।

कुलपांसुका (स्त्री०) कुलटा स्त्री, व्यभिचारिणी।

कुलपादपः (पुं०) वंशमहीरुह, वेणुवृक्ष, बांस का वृक्ष। (जयो० २५/३०)

कुलपालनार्थ (वि०) कुल के पालन हेतु। (दयो० १०)

कुलपालिः (स्त्री०) सती स्त्री।

कुलपालिका (स्त्री०) कुलरीति पालक स्त्री, सती।

कुलपुत्रः (पुं०) कुलीन सुत, अच्छे कुल का पुत्र।

कुलपुत्री (स्त्री०) श्रेष्ठपुत्री, कुलीन पुत्री।

कुलपुरुषः (पुं०) कुलीन पुरुष, उत्तमजन। सम्माननीय व्यक्ति।

कुलपूर्वकः (पुं०) पूर्व पुरुष, पुराण पुरुष।

कुलप्रवर्तकः (पुं०) मनु, कुलकर। (जयो० वृ० १२/८४)

कुलबधू (स्त्री०) कुलीन स्त्री, कुलीन भार्या। (वीरो० २/२७)

कुलबाला (स्त्री०) कुलीन बालिका।

कुलभूषणः (पुं०) मुनि नाम (वीरो० १५/३०) (सुद० ८७) कुलभूषण नामक श्रमणी।

कुलभृत (वि०) कुल धारक, कुलीन को आनन्द देने वाला। 'कुलभृतां' 'कुलीनानां नन्दनमानन्ददायकः' (जयो० वृ० ९/५१)

कुलभृत्या (स्त्री०) गर्भिणी स्त्री की परिचर्या।

कुलमर्यादा (स्त्री०) कुल की प्रतिष्ठा, कुल का सम्मान।

कुलमार्गः (पुं०) कुल परम्परा, वंश रीति।

कुलमात्मगात्रं (नपुं०) कुल परिवार का हिस्सा। (सुद० ११७)

कुलयोषित् (स्त्री०) कुलीन स्त्री। (वीरो० १७/२)

कुलबधू (स्त्री०) कुलीन स्त्री, सदाचरणशीला नारी।

कुलविद्या (स्त्री०) परम्परागत ज्ञान, क्रमागत ज्ञान। शिष्य परम्परागत विद्या।

कुलविप्रः (पुं०) कुल पुरोहित।

कुलवृद्धः (पुं०) परिवार का अनुभवी व्यक्ति।

कुलव्रतः (पुं०) प्रतिज्ञा।

कुलश्रेष्ठिन् (पुं०) अग्रणी, प्रमुख, मुखिया, प्रधान, वंश का आदरपात्र।

कुलशाली (वि०) कुलीनता युक्त। (जयो० वृ० १/८१)

कुलसंख्या (स्त्री०) परम्परा की प्रतिष्ठा, कुल की परम्परा।

कुलसन्ततिः (स्त्री०) वंश परम्परा, वंशगत सन्तान।

कुलसंभवः (वि०) प्रतिष्ठित कुल में उत्पन्न।

कुलसेवकः (पुं०) परिचायक, उत्तम सेवक, अच्छा सेवक।

कुलस्त्री (स्त्री०) प्रतिष्ठित स्त्री, कुलगृहिणी कुल स्वामिनी, मालकिन, (दयो०

कुलस्थितिः (स्त्री०) कुल मर्यादा, वंश की विशषता।

कुलाकुल (वि०) कुल की व्याकुलता युक्त।

कुलाङ्गना (स्त्री०) कुलीन स्त्री। सदाचारिणी नारी।

कुलाङ्गारः (पुं०) कुलनाशक।

कुलाग्रणी (वि०) कुलीन, शिरोमणि, अग्रणी, वंश का सर्वोन्नत व्यक्ति। जयकुमार। कुलस्य कल्पानिव नाग् कुलानताप निष्पापतया कुलाग्रणी (जयो० २८/१२)

कुलाचलः (पुं०) पर्वत, गिरि। (जयो० २८/१२)

कुलाचारः (पुं०) कुल परम्परा, वंश विधान, परिवार की परम्परा। * रीति-रिवाज, कुल व्यवस्था।

कुलाचार्यः (पुं०) कुल का मुखिया, कुल का पुरोहित। * संघ का आचार्य, संघ शिरोमणि।

कुलानुकूलाचरणं (नपुं०) कुल के अनुसार आचरण, वंशानुगत आचार। (जयो० वृ० १/८०)

कुलानुसारिन् (वि०) कुल का अनुसारी, परम्परा का निर्वाहक। (समु० ६/८) कुलक्रम के अनुसार शीलान्वता सम्प्रति यत्र नारी, शीलं सुसन्तान कुलानुसारि (समु० ६/८)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कुलाय: (पुं०) [कुलं पक्षिसमूह: अयतेऽत्रकुल+अय्+घञ्] पक्षियों का घोंसला, नीड, २. स्थान, ३. शरीर। पात्र। (जयो० वृ० १५/१२)

कुलायस्थानं (नपुं०) नीडस्थान, घोंसलों की जगह। (जयो० १५/१२) ०शरीर स्थान, ०पात्र स्थान।

कुलायिका (स्त्री०) [कुलाय+ठन्+टाप्] पिंजरा, चिड़ियाघर।

कुलाल: (पुं०) [कुल+कालन्] कुम्हार, प्रजापति। (जयो० वृ० ११/३७)

कुलालशालाग्नि: (स्त्री०) कुम्हार की दीप्तशाला, जलती हुई कुम्हार की भट्टी। (दयो० २२) ०आवा।

कुलावतंस: (पुं०) कुल का आभूषण। 'अथोत्तमो वैश्यकुलावतंस' (सुद० २/१) * श्रेष्ठ अलंकार।

कुलि: (पुं०) [कुल+इन्] हस्त, कर, हाथ।

कुलिक (वि०) [कुल+ठन्] उत्तम कुल का।

कुलिक: (पुं०) स्वजन, अपने कुटुम्बी।

कुलिङ्ग: (पुं०) [कु+लिङ्ग+अच्] पक्षी, खग।

कुलिन् (वि०) [कुल+इनि] कुलीन, उच्चकुलोद्भव।

कुलिंद: (पुं०) [कुल+इन्द] एक देश विशेष।

कुलिर: (पुं०) [कुलि+इरन्] केंकड़ा, कर्कराशि।

कुलिश: (पुं०) [कुलि+शी] इन्द्र का वज्र, वज्रायुध।

कुली (स्त्री०) [कुलि+ङीप्] बड़ी साली, पत्नी की बड़ी बहिन।

कुलीन (वि०) उच्चकुल में उत्पन्न, श्रेष्ठ कुलजात, श्रेष्ठकुल। सद्वंशज। 'कुलकालमात्रपरायण: सन् (जयो० १७/१२३) कुलमित्यंकं भूतं नलतां लकार रहितां' (जयो० वृ० १७/१२३) १. भूस्थित श्रेष्ठकुल संभव (जयो० वृ० ५/८७) तत्र तेन कृता न स्यादविशेषात्कुलीनता। कुलीनस्य हि संस्कारश्चेदन्योन्यसमाश्रय:।। (हित०सं०२२) प्रशस्त संस्कार वाला। २ पृथ्वी में लीन (जयो० वृ० १/८१) ३. कुलशाली- (जयो० वृ० १/८१)।

कुलीनचरणं (नपुं०) १. उच्चकुल का चरित्र कुलीनमुच्च-कुलसम्भवं चरणं चरित्रम्। (जयो० वृ० ५/२१) २. पृथ्वी का मूल 'कौ पृथिव्यां लीनं चरणं मूलं येषां तेषु कुलीनचरणेषु' (जयो० वृ० ५/२१)

कुलीनता (वि०) उच्चकुल उत्पन्न हुआ। (हित०सं०२२)

कुलीनत्व (वि०) कुलशाली, उच्च कुलत्व गत। (सुद० १०६) अकारि निर्जरकृतया तया तु, नाहा कुलीनत्वमधारि जातु। (सुद० १०१)

कुलीननारी (स्त्री०) कुलीनाङ्गना, उच्चकुल की स्त्री। (जयो० १७/३३)

कुलीनवंशज (वि०) अच्छे कुलवाली। (सुद० ११३)

कुलीनस्थिति (स्त्री०) कुलीन वंश की स्थिति। (सुद० ११३)

कुलीना (स्त्री०) सत्कुलोत्पन्ना, अच्छे कुल में उत्पन्न हुई। ततोऽत्र सन्देशपदे प्रलीना बभूव तस्मै न पुन: कुलीना। (जयो० १/६७)

कुलीनाङ्गना (स्त्री०) कुलीननारी, सदाचरणयुक्त स्त्री। (मुनि० २०)

कुलीर: (पुं०) [कुल+ईरन्] केंकड़ा, कर्कराशि।

कुलेन्दु: (स्त्री०) कुलचन्द्र, भरतान्वयचन्द्र। (जयो० ७/१३)

कुलेश्वर: (पुं०) प्रधान, प्रमुख, मुखिया, अध्यक्ष।

कुलोत्कट (वि०) उच्चकुलोद्भव, उच्चकुल में उत्पन्न।

कुलोत्पन्न (वि०) उच्चकुल में उत्पन्न।

कुल्माषं (नपुं०) [कुल+क्विप्-कुल् माषोऽस्मिन्] कांजी।

कुल्माषक्षेत्रं (नपुं०) धान्य विशेष का स्थान, कुलश्री, मूंग, उड़द आदि का स्थान।

कुल्य (वि०) कुल, वंश, कुटुम्ब।

कुल्य् (अक०) नहर बहना। कुल्यायते (जयो० वृ० १०/२) विवाह-वर्णनात्मक-काव्यरसस्य कुलाययते। (जयो० वृ० १०/२)

कुल्यराट् (पुं०) ऋतु की शोभा। कुल्येषु कुलीनेषु राजत 'इति' (जयो० १३/६६)

कुल्या (स्त्री०) कृत्रिम नदी, नहर। (सुद० २/४७) 'कृत्रिमां नदीं' (जयो० वृ० ११/१) 'कुले सञ्जाता कुल्या सहोदरी ताम्'

कुल्यु: (वि०) युक्त, सहित। 'सधर्मिणं वीक्ष्य विवेकुल्य:' (सम्य० ३६)

कुवं (नपुं०) १. पुष्प, २. कमल।

कुवलं (नपुं०) कुमुद, कमल। १. मोती, २. जल, नीर। (वीरो० ८/१६) मौक्तिक-कुवलं तत्फले मुक्ताफलेऽपि बदरीफले 'इति विश्लोचन:'।

कुवलत्व (वि०)(जयो० १५/२८) विकसित, पुष्पित। (वीरो० ८/१६)

कुवलयं (नपुं०) नीलकमल, कुमुद, पृथ्वी। 'कौ पृथिव्यां वलयमिव' (दयो० १/२)

कु-वलयं (नपुं०) भू-मण्डल। (वीरो० २२/१४)

कुवलयानंद: (पुं०) कमल विकास, कुमुद का खिलना। कुर्त कुवलयानन्दं सम्बद्धुं च सुखंजनै:। (दयो० १/२)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कुवलयिनी (स्त्री०) [कुवलय+इनि+ङीप्] कुमुदिनी, नील कमलिनी।

कुवलाञ्चित (वि०) महाबलशाली। महाबलीत्थं कुवलाञ्चितोर-श्चोरोऽपिप्रियः सज्जनचित्तचोरः। (समु० ४/१०)

कुवलाली (स्त्री०) १. मौक्तिक माला 'स्वकुलक्रमेणेहिता वाञ्छिता मौक्तिकमाला' (जयो० २०/३७) २. कुमुद समूह।

कुवलोपहारः (पुं०) १. कुमुदों का उपहार, २. मौक्तिक भेंट। (जयो० २५/२८)

कुवाद (वि०) [कु+वद्+अण्] १. निन्दक वचन, मिथ्यावचन, २. अधम, निम्न वचन।

कुवासना (स्त्री०) विषयवासना, मिथ्यावासना, कुत्सित संस्कार। (जयो० १९/९५)

कुवादिन् (वि०) मिथ्यावचनी, निन्दक, कुआलोचक। २. सफेद झूठ बोलने वाला। 'दुरभिनिवेश-महोद्धुर-कुवादिनामेव दन्तिनामदयाम्।' (वीरो० ४/४३) कुवादिनः कुत्सितं वदन्तीति ये तेषाम' (वीरो० वृ० ४/४३) भवन्ति ते किन्तु यशोवृषादिविनाशनायास्ति कृतः कुवादी। (समु० ३/३३)

कुविकः (पुं०) कुविक नामक देश।

कुवित् (वि०) विचारहीन दुर्बुद्धि। (जयो० २/१२४)

कुविद् (वि०) ज्ञानहीन।

कु-विद् (वि०) भूमि विशेष, भूज्ञाता, पृथ्वी को जानकर। (जयो० २७/३७) कुवित् लो: पृथिव्या बुद्धिर्यस्य तदस्ति। (जयो० वृ० २७/३७)

कुविंदः (पुं०) तन्तुवाय, जुलाहा।

कुविधा (स्त्री०) कुत्सित पद्धति। (सम्य० ६३) (जयो० ३/१७)

कुवेणी (स्त्री०) [कु+वेणु+इन्+ङीप्] मत्स्य टोकरी, मछलियां रखने की टोकरी।

कुवेलं (नपुं०) [कुवेषु जलजपुष्पेषु ईं शोभां लाति-कुव+ई+ला+क] कमल, पद्म।

कुवृत्तः (पुं०) कदाचार, मिथ्या आचरण। (वीरो० ११/३२) (सम्य० १३७)

कुशः (पुं०) [कु+शी+ड] दर्भ, कुश। (जयो० ३/३४) २. कुश नामक बालक, राम का बड़ा पुत्र। (जयो० १३/५९) सहसा सलवाड् कुशाशया दधती कञ्जगति स्थिराशयम्। (जयो० १३/५९) ३. पापात्म, पापिष्ट, मत्त-कुशो मत्तेऽपि पापिष्ठे इति वि० (जयो० २७/३३)

कुशं (नपुं०) कमल पद्म, सरोज, अरविन्द।

कुशल (वि०) [कुशान् लातीति-कुश+ला+क] प्रवण, दत्तचित्त, 'कुशलं सुखनिमित्तं' तल्लीन, प्रवीण, (जयो० १६/६१) 'कुशलसद्भावनोऽम्वुभिवत्' (सुद० ३/३०) चतुर, कल्याण-(जयो० ३/३१, ३/३८) क्षेमपूर्ण। (जयो० ३/३४) प्रस्थितस्य कुशलं शिरस्यनुस्योपभाति पथि पादयोऽस्तु। (जयो० ३/३४) साम्प्रतं कुशलं तेऽवलोकनादञ्जः कुशलतेन चामनाक्। कुशलं मस्तके एवोपभाति लसति कुशांल्लाति गृह्णातीत्यन्वयात्। प्रसन्नचित्त। (जयो० वृ० १२) 'कुशलान् प्रसन्नचित्तान्' (जयो० वृ० ५/१२)

कुशलक्षेम (पुं०) कल्याण की कामना। (जयो० ३/३४)

कुशललक्षण (नपुं०) जल लक्षण। कुशस्य जलस्य लक्षणपरिणामेन। (जयो० २०/६)

कुशलं (नपुं०) कल्याण (जयो० ३/३१) प्रसन्न, दत्तचित्त, हर्ष, आनंद।

कुशलकाम (वि०) कुशलता की कामना।

कुशलता (वि०) क्षेमपूर्णता, चतुरता। (जयो० ९/३२) 'कुशलता कुशलतिरिव। यद्वा कुशलस्य भावः कुशलता क्षेमपूर्णताऽस्ति। (जयो० वृ० ३/३४)

कुश-लता (स्त्री०) कुशतति, दर्भ समूह, कुशस्य लता परम्परा तस्यातिशयेन समर्थितोऽपि (जयो० वृ० ९/३२)

कुशल-प्रतिकुशलं (नपुं०) अत्यंत कुशल, क्षेम परिपूर्ण। (जयो० १२/१३८)

कुशल-प्रश्नः (पुं०) मंगल कामना।

कुशलभावः (पुं०) ज्ञान रूप भाव।

कुशलाशयः (पुं०) जलाशय, सरोवर। (सुद० २/२६)

कुशलिन् (वि०) [कुशल+इनि] प्रसन्न, खुश, हर्ष।

कुशा (स्त्री०) [कुश+टाप्] रस्सी, रज्जु, लगाम।

कुशावती (स्त्री०) नगरी नाम विशेष।

कुशास्त्रं (नपुं०) खोटे शास्त्र, आचार विहीन शास्त्र। जातु नात्र हितकारि सन्मनो भ्रंशयेदपि तु तन्त्रवर्त्मनः। तत्कुशा-स्त्रमलमन्यर्तामति कः श्रेयदवहितं महामतिः। (जयो० २/६६)

कुशिक (वि०) [कुश+उन्] तिरछे नेत्र युक्त, भेंगे नेत्र वाला।

कुशिका (स्त्री०) कुदाली। (जयो० ३/८८)

कुशी (स्त्री०) [कुश+ङीप्] हल की फाली।

कुशील (वि०) शील रहित, कुत्सितशील, विवेकहीन। 'कुत्सितशीलः कुशीलः' (भ०आ०टी० १६५०)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कुशीलकर्मन् (वि०) खोटा कर्म करने वाला, विवेक विहीन कर्म वाला।

कुशीलवः (पुं०) [कुत्सितं शीलमस्य कुशील+व] नट, भाट, नर्तक। (जयो० २/११२)

कुशीलवकर्मन् (नपुं०) [कुशीलवो नटस्तस्य कर्म नर्तनम्' नर्तन] भाट, नट क्रिया। (जयो० वृ० २/१११)

कुशीलवा (वि०) यश-बढ़ाने वाले (वीरो० २/२६)

कुशुम्भः (पुं०) [कु+शुम्भ+अच्] कमण्डलु, जलपात्र।

कुशूलः (पुं०) [कुस+ऊलच्] कोठी, भण्डार। २. गर्त विशेष, जो प्रमाणांगुल से निष्पन्न एक योजन प्रमाण लम्बे एवं चौड़े गर्त स्थान।

कुशूला (स्त्री०) कुम्भ निर्माण का साधन। (जयो० वृ० २१/३७)

कुशेशयं (नपुं०) [कुशे+शी+अच्] १. कुमुद, कमल, पद्म। निलम्बिनीना मृदुपादपद्मैः प्रस्तारितानीति कुशेशयानि। (वीरो० ४/१५) दर्शन केलिकुशेशय तु स्वे' (जयो० १०/६३) २. दर्भशयन, दाभशय्या, दाभ की चटाई। 'कुशेशय त्रयि निशासु मौनम्' (जयो० २२/५०) ३. रुईदार गद्दा- 'कुशेशयाभ्यस्तशया शयाना या नाम पात्री सुकृतोदयानाम्। (सुद० २/१०)

कुशेशयः (पुं०) सारस पक्षी।

कुष (सक०) ०फाड़ना, ०निचोड़ना, ०खींचना, ०निकालना, ०बाहर करना, ०फेंकना, ०विदीर्ण करना, ०परीक्षा लेना, निरीक्षण करना।

कुषाकुः (पुं०) [कुष+काकु] १. सूर्य, वह्नि, २. बन्दर, लंगूर।

कुष्टात्मन् (वि०) कोढ़ वाला (राम० ६/३८)

कुष्ठः (पुं०) [कुष+कथन] कोढ़।

कुष्ठनिवारणं (नपुं०) कोढ़ मिटाना, कोढ़ दूर करना। णमो घोरगुण-परक्कमाणं कुष्ठादिनिवारणे प्रमाणम्। (जयो० १९/७५)

कुष्ठित (वि०) [कुष्ठ+इतच्] कुष्ठ से पीड़ित, कोढ़ ग्रस्त।

कुष्ठिन् (वि०) [कुष्ठ+इनि] कोढ़ी।

कुष्माण्डः (पुं०) कुम्हड़ा, कद्दू, लौकी, तुमड़ी। 'कु ईषत् उष्मा अण्डेषु बीजेषु यस्य।'

कुस् (सक०) आलिंगन करना, गले लगाना, घेरना।

कुसितः (पुं०) [कुस्+क्त] सम्पन्न देश।

कुसीदः (पुं०) साहूकार।

कुसीदा (स्त्री०) [कुसीद+टाप्] सूदखोरिनी, सूद लेने वाली स्त्री।

कुसीदायी (स्त्री०) सूद लेने वाली।

कुसुमं (नपुं०) [कुष्+उम] पुष्प, प्रसून, सुमन, फूल। (जयो० ३/५१) 'कामोऽदृश्यो वर्तते, अनङ्गात् अथवा कुसुमेषु, कौः पृथिव्या सुमा सोमा तस्या इषुः शल्य रूपोऽस्ति।' (जयो० ६/८७)

कुसुमगुणं (नपुं०) पुष्प पराग।

कुसुमगुणितदाम (स्त्री०) पुष्पमाला। 'कुसुमैर्गुणितं प्रारब्धं यद् दामं माल्यं। (जयो० वृ० १०/१३)

कुसुमचापः (पुं०) कामदेव, मदन।

कुसुमचित (वि०) पुष्पसमूह।

कुसुमतुल्यं (नपुं०) पुष्प सदृश। (जयो० वृ० ३/५३)

कुसुद ामं (नपुं०) पुष्प माल्य, सुमनमाल्य, कुसुममाला। (जयो० १२/१२)

कुसुमपरागं (नपुं०) पुष्प पराग।

कुसुमपुरं (नपुं०) पाटलीपुत्र का नाम।

कुसुमप्रेमी (वि०) पुष्प प्रेमी। (जयो० वृ० ११/९०)

कुसुम-बर्ध्द (नपुं०) पुष्प समूह।

कुसुमल (वि०) पुष्पावली, पुष्प पंक्तियां।

कुसुमलता (स्त्री०) पुष्प लता।

कुसुमवती (स्त्री०) रजस्वला स्त्री।

कुसुमवर्षी (स्त्री०) पुष्पवर्षी। (जयो० १४/२०)

कुसुमवासः (पुं०) पुष्प निवास, पुष्प गन्ध पुष्पशोभा।

कुसुमल-वासः (पुं०) पुष्पावली, पुष्पसमूह। कुसुमं लातीति कुसुमलः चासौ वासो निवासः-पुष्पावली विभूषितो। (जयो० वृ० २२/४३)

कुसुम-शयनं (पुं०) पुष्प शय्या।

कुसुम शय्या (स्त्री०) पुष्पासन, फूलों की सेज।

कुसुम-स्तवकः (पुं०) गुलदस्ता, पुष्पगुच्छक। (दयो० वृ०५५)

कुसुमस्रक् (पुं०) पुष्पमाला, कुसुममाला। (सुद० ७२)

कुसूमस्रज देखो ऊपर।

कुसुमप्रक्षेपणी (वि०) पुष्प बरसाने वाली। 'कुसुमानि तेषां स्रजं माला क्षिपतीति क्षेपणी क्षेपणकर्त्री।' (जयो० वृ० ३/८९)

कुसुमश्री (स्त्री०) पुष्प शोभा, प्रसून सुषमा। (समु० २/१४) नवयौवन-भूषिता यदा कुसमश्रीर्हि वसन्तसम्पदा। (समु० २/१४)

कुसुमाञ्जनं (नपुं०) भस्म से निर्मित अंजन, सुगंधित पुष्पों से बनाया गया अंजन/चूर्ण।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कुसमाञ्जलि (स्त्री०) पुष्पसमान अञ्जली, श्रद्धासुमन। हरिताङ्कुरतति समर्चनालक्षण। (जयो० १२/५७) मृदु पादभुवीष्टदेवतानां समभूत्सा कुसुमाञ्जलिः सुमाना। (जयो० १२/१०४)

कुसुमाधिषः (पुं०) चम्पक लता।

कुसुमायित (वि०) कुसुम से युक्त, काम युक्त। (वीरो० ८/२०)

कुसुमायुधः (पुं०) काम, मदन। 'प्रयाणवेलां कुसुमायुधस्याप्येहो' (जयो० १४/२)

कुसुमायुधसेना (स्त्री०) कामदेव की सेना। 'कुसुमायुधः कामस्तस्य सेना।' (जयो० वृ० ६/११५)

कुसुमावचयः (पुं०) ०पुष्प संचयन, ०पुष्पसंकलन ०पुष्पचयन, ०फूलों का चुनना। (दयो० ६३) 'कुसुमावचयं सरजस्कदृशः' (जयो० १४/१२) 'कुसुमानां पुष्पाणामवचयः' संकलनं (जयो० वृ० १४/१२)

कुसुमित (वि०) [कुसुम+इतच्] फूलों से युक्त, पुष्पों से सुशोभित, कौसुम्भराग संयुक्त। (जयो० १८/१४)

कुसुमेष्वरातिः (पुं०) महादेव, शिव। (जयो० १/३५)

कुसमोच्चिचीषा (वि०) कुसुम संचयन की इच्छा। 'कुसुमं पुष्पं तस्योच्चिचीषा गृहीतुमिच्छा' (जयो० वृ० १४/२७)

कुसुमोज्ज्वल (वि०) पुष्पों की उज्ज्वलता।

कुसुमोत्तमवाटी (स्त्री०) पुष्पों की सुन्दर कटिका। भामिनी गुणवृतेव सुशाटी याऽपि शील कुसुमोत्तमवाटी' (समु० ५/१८)

कुसूलः (पुं०) भण्डार, अन्नागार।

कुसृति (स्त्री०) [कुत्सिता सृतिः] ठगी, छल भाव।

कुस्तुभः (पुं०) [कु+स्तुंभ्+क] १. समु द्र, २. विष्णु।

कुश्रुत (वि०) १. कु श्रवण, २. कुशास्त्र।

कुश्रुतज्ञानं (नपुं०) मिथ्यादर्शन से युक्त ज्ञान। 'मिथ्यादर्शनोदय-सहचरितं श्रुतज्ञानमेन कुश्रुतज्ञानम्' (पं०चा०व०४१)

कुहः [कुह्+णिच्+अच्] कुबेर, धनपति।

कुहकः (पुं०) [कुह्+क्वुन्] ठक, चालाक।

कुहकं (नपुं०) चालाकी, ठगी।

कुहककार (वि०) कपटी, छल करने वाला।

कुहकचकित (वि०) भ्रमित, भयभीत युक्त।

कुहनः (पुं०) [कु-हन्+अच्] मृषा, शीशे का बर्तन। २. इन्द्रजालिक आश्चर्य, मिथ्या।

कुहना (स्त्री०) दंभ, मिथ्या, मृषा, झूठ।

कुहरं (नपुं०) गुफा, गह्वर, गर्त, (वीरो० १२/४१)

कुहरः (पुं०) प्रदेश, स्थान। (जयो० वृ० १४/६८) 'व्यक्तोऽतो त्रलिवद्धनाभिकुहरः' भंवर के समान त्रिवलियों से युक्त नाभि रूपी प्रदेश है। 'नाभिकुहरस्तुण्डिका प्रदेशः' (जयो० वृ० २४/१३५)

कुहरितं (नपुं०) १. कोयल शब्द। ध्वनि। कूक। २. संभोग कालीन शब्द। (जयो० वृ० २१/३१)

कुहू (स्त्री०) [कुह्+कु] १. कोयल का शब्द। पिक कूक। (जयो० १४/६३) 'कुहुः करोतीह पिकद्विजाति स एप संखध्वनिराविभाति' (वीरो० ६/१९) २. अमावस्या दिवस।

कुहुरवः (पुं०) कूक, शब्द ध्वनि विशेष।

कुहुशब्दः (पुं०) कुहु कुहु ध्वनि।

कू (सक०) ध्वनि करना, कलरव करना।

कूकः (वि०) ध्वनि, शब्द, कलरव। (सुद० ८१)

कूची (स्त्री०) ब्रुश, कूंची।

कूज् (अक०) गूंजना, शब्द होना, कूकना, बजना। 'अलाश्चकूजुः केकारवञ्चकुरित्यर्थः' (जयो० वृ० २/८) 'चुकूजाऽकूज-दित्यर्थः' (जयो० वृ० १०/२१)

कूजः (पुं०) कूजना, ध्वनि करना।

कूजनं (नपुं०) [कूज्+ल्युट्] कूजना, ध्वनि करना, कुहू कुहू करना।

कूजित (वि०) ध्वनित, शब्दायमान। (दयो०)

कूट (वि०) [कूट्+अच्] मिथ्या, अलीक, १. अचल, स्थिर।

कूटः (पुं०) १. भ्रम, धोखा, छल, २. कूटना, जलाना, कष्ट उत्पन्न करना। 'कूट्यते दह्यते अमुना परः परिणामान्तरंगोति कूटम्' (जैन०ल०३६३) २. चूहादानी, मृगक जाल। ३. शिखर गिरि का ऊपरी हिस्सा। 'मेरु कुलसेल विंझ-सज्झादि-पव्वया कूडाणि णाम' (धव० पु०९ ८/४९५) ४. ढेर, राशि, समूह।

कूटकं (नपुं०) चालाकी, धोखाधड़ी।

कूटकार (वि०) झूठा, आलीकवादी, मिथ्यावादी।

कूटकृत् (वि०) ठगी विद्या करने वाला। झूठे लेख लिखने वाला।

कूट-कार्षापणः (पुं०) झूठा कार्षापण।

कूट-खड्गः (पुं०) गुप्ती, छोटी तलवार।

कूटग्राहः (पुं०) पिंजरा, जीवों को पकड़ने का उपकरण। 'कूटेन जीवान् गृह्णातीति कूटग्राहः' (जैन०ल०वृ०३६३)

कूटछद्मन् (पुं०) ठग, धोखेबाज।

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कूटतुला (स्त्री०) पासंग युक्त तुला, तोलने के कांटे एवं नापने के साधनों को हीन या अधिक रखना।

कूटतुलामानं (नपुं०) कूट तुलामान, अचौर्यव्रत का अतिचार। कूटतुला कूटमानं-तुला प्रतीता, मानं कुडवादि, कूटत्वं न्यूनाधिकत्वं न्यूनया ददाति अधिकया गृह्णाति' (श्रावक प्रज्ञप्ति टी० २६८)

कूटधर्म (वि०) मिथ्याधर्म, झूठ युक्त धर्म।

कूटपालकः (पुं०) १. हस्तिवात ज्वर, पित्तदोष युक्त ज्वर। २. कुम्हार, कुम्हार का अबा।

कूटपाशः (पुं०) फंदा, जाल।

कूटपुरुषः (पुं०) कृत्रिम पुरुष, पुतला। (जयो० २/३१)

कूटबन्धः (पुं०) फंदा, जाल।

कूटमानं (नपुं०) झूठा माप, झूठा तोल।

कूटयन्त्रं (नपुं०) पक्षिजाल।

कूटयुद्धं (नपुं०) कपट युक्त लड़ाई। अन्याभिमुखं प्रमाणकमुपक्रम्योपघातकरणं कूट युद्धम्। (जैन०ल०३६३)

कूटलेखः (पुं०) बनावटी लेख, झूठा लेख।

कूटलेखकरणं (नपुं०) मिथ्या लेख लिखना, झूठा लेखन कार्य करना।

कूटलेखक्रिया (स्त्री०) सत्याणुव्रत का अतिचार, असद्भूतपदार्थ का मुद्रण करना, वंचनार्थ लिपि लिखना। 'वंचनानिमित्तं लेखनं कूटलेखक्रिया। (त०मू०७/२६)

कूटशः (अव्य०) [कूट+शस्] समूह में।

कूटशाल्मलिः (पुं०) सेमल वृक्ष की जाति।

कूटशासनं (नपुं०) मिथ्यापत्र, झूठापत्र, फर्जी दस्तावेज।

कूटसाक्षिन् (पुं०) झूठी गवाह।

कूटसाक्षिक (नपुं०) झूठी गवाह, मात्सर्यभाव से असत्य भाषण, द्रोह में युक्त झूठ कथन। सत्याणुव्रत का अतिचार। 'कूटसाक्षिकं उत्कोच-मत्सराभिभूत प्रमाणीकृतः सन् कूटं वक्तीति' (श्रा०पु०टी० २६०)

कूटसाक्ष्यं (नपुं०) असत्य भाषण।

कूटस्थ (वि०) शिखर पर स्थित, उच्च भाग पर खड़ा हुआ। (जयो० २४/३८) 'कूटं प्राक्पर्वतस्य शिखरे तिष्ठतीति' (जयो० १८/६०)

कूटस्थता (वि०) मायाचार, छलकपटता। कूटैः मायाचारैः सह तिष्ठतीति (जयो० वृ० २४/३८)

कूटस्थानं (नपुं०) उच्चस्थान, ऊँचा भाग, शिखर।

कूटस्वर्णं (नपुं०) खोटा सोना।

कूण् (सक०) बोलना, कहना, वार्तालाप करना।

कूणिका (स्त्री०) सींग।

कूणित (वि०) [कूण्+क्त] आच्छादित, आवृत, मंद हुआ।

कूद्दालः (पुं०) [कु+दल+अण्] पर्वतीय आवनूस।

कूपः (पुं०) [कुर्वन्ति मण्डूका अस्मिन् कु+एक] १. कूप, कुंआ। (दयो० ४७) 'कूपे निपत्य तेनात्मविनाशः' 'नितान्त-मानन्दसुधैककूपान्' (भक्ति०२) १. अन्धकार (जयो० ७/१०१) कूपोऽन्धुगर्तमृण्मान-कुपते' इति वि १. छिद्र, रन्ध्र, छेद, गर्त, २. कुप्पी।

कूपकः (पुं०) [कूप्+कन्] कुंआ, छिद्र। * नलकूप।

कूप-कच्छपः (पुं०) १. कुएं का मेंढक। २. अनुभवहीन, विचारशून्य।

कूपयन्त्रं (नपुं०) रहट, पानी निकालने का साधन।

कूपयन्त्रघटी (स्त्री०) रहट की घटिया।

कूपा (स्त्री०) छोटा कुंआ।

कूपारः (पुं०) सागर, समु द्र, उदधि।

कूपी (स्त्री०) [कूप+ङीष्] कुइया, छोटा कुंआ।

कूबर (वि०) १. सुन्दर, रुचिकर, २. कुबड़ी।

कूबरः (पुं०) गाड़ी का धुआं।

कूबरी (स्त्री०) १. कम्बल, २. कूबड़ी।

कूरः (पुं०) [कौ भूमौ उर्व वयनं लाति-ला-क] भोजन।

कूर्चः (पुं०) [कुर्+चट्] गुच्छा, समूह, गट्ठर, घास का पूरा मोरपंख।

कूर्चनं (नपुं०) खुरचना, क्षोदनत। (जयो० २/१५६)

कूर्चिका (स्त्री०) [कूर्चक+टाप्] कूंची, चित्र बनाने की कूची, प्रेंसिल, ब्रुश, कली, फूल।

कूर्द् (सक०) कूदना, उछलना, छलांग लगाना, खेलना। (सुद० ४/२६)

कूर्दनं (नपुं०) [कूर्द+ल्युट्] उछलना, कूदना, खेलना, क्रीड़ा करना।

कूर्दित (वि०) क्रीड़ा करने वाला (सुद० ४/२६)

कूर्पः (पुं०) भौंह के बीच का हिस्सा।

कूर्परः (पुं०) १. कच्छप, कूर्म। २. कुहनी, कोहिनी। ३. ककोणिदेश (जयो० १५/८३)

कूर्मः (पुं०) [को जल ऊर्मिः वेगोऽस्य] कच्छप, कछुवा।

कूर्मपुराणः (पुं०) अष्टादश पुराण में एक पुराण में एक पुराण (दयो० ३१)

कूर्मिक (वि०) कच्छपा, कर्मठा। (जयो० २४/१६)

कूर्मावतारः (पुं०) विष्णु अवतार।

कूर्मोन्नतः (पुं०) त्रिषष्टि शलाक। पुरुष योनि। कछुए के समान उन्नत।

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कूर्मवत् (वि०) कछुए की तरह। (जयो० वृ० १/६)

कूलं (नपुं०) [कूल+अच्] ०किनारा, ०तट, ०ढलान, ०उतार, ०छोर, ०कोर, ०तालाब तट। निदाघकालेऽप्यतिकूलमेव प्रसन्नरूपा वहतीह देव। (वीरो० २/१५)

कूलचर (वि०) किनारे घूमने वाला, नदी के तट पर भ्रमण करने वाला।

कूलङ्कष (वि०) [कूल+कष्+खच्] खोखला करने वाला, तट काटने वाला।

कूलङ्कषा (स्त्री०) नदी, सरिता।

कूलन्धय (वि०) [कूल+धे+खश्] चूमता हुआ।

कूलमुद्वह (वि०) [कूल+उद्+वह्+खश्] किनारे की ओर ले जाने वाला।

कुहण्डकः (पुं०) भंवर।

कूलानुसारिणी (स्त्री०) नदी, सरिता। (वीरो० ३/३३)

कूष्माण्डः (पुं०) [कु ईषत् ऊष्मा अण्डेषु बीजेषु यस्य] पेठा, कुम्हला, तुम्बी, भूरा कुम्हडा, भूरा कद्दू।

कूहा (स्त्री०) [कु ईषत ऊह्यतेऽत्र कु+उह्+क] कुहरा, हिमपात। धुंद।

कृ (सक०) १. ०करना, ०गढ़ना, २. ०तैयार करना, ३. ०बनाना, निर्माण करना, ४. उत्पन्न करना, रचना। (जयो० १/६) कुरुते (सम्य० ७८) क्रियते (सम्य० ७१) कुर्यात् (सम्य० ७२)

कर्तुं (सुद०) चकार (सुद० ७८) रदेषु कर्तुं मृदुमञ्जनंच। (वीरो० ५/११) कुर्वन् (वीरो० ५/१) 'कुर्वन् जनानां प्रचलात्प्रभाव:' (वीरो० ४/११) सुभगा हि-कृता (जयो० ३/५८) कुरु-सुद० २/४०। 'कृत्वाऽर्हदिज्याविधिं' (सुद० वृ०६८) 'सुरश्चिन्तां चक्रं मनसि' (जयो० २/१४३) चक्रे-अचिन्तयत् कौतुकं कौ तु कस्मान्न कृतवान् कृतवाञ्छनः' (जयो० ३/६८) 'कृतवान् उत्पादितवानेव' (जयो० ३/८५) कुर्वन् स विराम-(जयो० ३/९२) कायेन कुर्वतामेव-'हित०२।

कृकः (पुं०) [कृ+कक्] गला, कण्ठ।

कृकणः (पुं०) तीतर पक्षी।

कृकलासः (पुं०) छिपकली, गिरगिट।

कृकवाकुः (पुं०) [कृक+वच+अण्] मुर्गा, मोर, छिपकली।

कृकाटिका (स्त्री०) [कृक+अट्+अण्+टाप्] गर्दन का पिछला भाग।

कृच्छ (वि०) कष्ट देने वाला, पीड़ा कर, दुष्ट, पापी, कृतघ्नी।

कृच्छः (पुं०) कष्ट, दुःख, विपत्ति।

कृच्छं (नपुं०) कष्ट, दुःख, विपत्ति।

कृच्छ्रकार्य (नपुं०) सिद्धकार्य, समस्त कार्य। (सुद० ९२)

कृच्छप्राण (वि०) कष्टपूर्वक निश्वास लेने वाला।

कृच्छसाध्यः (वि०) कष्टसाध्य। (जयो० २/६१)

कृत् (सक०) काटना, कुतरना, विभक्त करना, नष्ट करना।

कृत् (वि०) [कृ+क्विप्] कर्ता, निर्माता, बनाने वाला, उत्पन्न करने वाला, रचित। (जयो० १/१७) 'कृतं धातुतः संज्ञाकरणार्थं प्रत्ययं भजन् जानन् सन् गुणिता सम्पादिता'

कृतं (नपुं०) उत्पन्न, तीनों कालों में उत्पन्न। आत्मना यत् क्रियते प्रक्रियते तत् कृतम्। (भ०आ०टी० ८११)

कृत (वि०) [कृ+क्त] किए गए, अनुष्ठित, निर्मित, निष्पन्न, उत्पादित। 'कृतान् प्रहारान् समु दीक्ष्य' (सुद० ८/५)

कृतक (वि०) [कृत+कन्] निर्मित, रचित, सम्पन्न, सज्जित, तैयार किया गया। (जयो० १/३५)

कृतकः (पुं०) १. झूठ, अलीक, असत्य। २. कंस 'कृतके सभयं सततमिङ्गित' (सुद० ११२)

कृतकर्म (वि०) करने योग्य कार्य।

कृतकार्य (वि०) कार्यकुशल, कृतकृत्य। शाणतो हि कृतकार्य आयुधी। (जयो० २/६१)

कृत-कौशल (वि०) सम्पादित कार्य, निष्पन्न कार्य। 'कृतं सम्पादितं कौशलं सामर्थ्यं दधत्' (जयो० २/८९)

कृतकृत्य (वि०) कृतार्थ, सन्तुष्ट, परितृप्त।

कृतकायः (पुं०) शरीरदार।

कृतक्षण (वि०) प्रतीक्षा करने वाला।

कृतघ्न (वि०) अकृतज्ञ, अपकारी। कृतघ्नोनेव देहाय, दातुं भुक्तिमपीत्यसौ।

कृतघ्नी (वि०) अपकारी। (वीरो० २/३२) (सम्० ९/९)

कृतचार (वि०) गमन क्रिया, गति करने वाला। कृतः प्रारब्धश्चारोपगमनं (जयो० १५/३)

कृतचूडः (वि०) किए गए चूडा/मुण्डन संस्कार वाला।

कृतज्ञ (वि०) आभारी, ऋणी। कृतं परोपकृतं जानाति। (वीरो० १७/३) उपकार मानने वाला। (सुद० ७९) कृतज्ञाऽहमतो भूयौ (सुद० ७९)

कृतज्ञता (वि०) उपकार भाव (वीरो० १८/३८) किसी का भला करने पर उपकार भाव वाला। प्रत्युपकार (जयो०वृ० २०/६४) 'त्यागिताऽनुभविता कृतज्ञता' (जयो० २/७४)

कृततीर्थ (वि०) तीर्थ दर्शन वाला।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कृततीर्थसेवः (पुं०) धर्मतीर्थ की सेवा। दिनादि अत्येति तटस्थ एव स्वर्गक्तितोऽसौ कृततीर्थ सेवः' (सुद० १११)

कृतदासः (पुं०) सेवक, भृत्य बनाना।

कृतधी (वि०) दूरदर्शी, शिक्षित, बुद्धिमान।

कृतनिश्चय (वि०) ०निश्चय किया गया, ०दृढ़ प्रतिज्ञ, ०संकल्पशील, बनाया गया, ०अच्छी तरह निश्चय किया गया।

कृतप्रचार (वि०) उत्पन्न करने वाला। 'अनेक धान्यार्थकृतप्रचारा।' (सुद० १/८)

कृतप्रभाव (वि०) प्रभाव युक्त। (जयो० १३/३५)

कृतप्रयत्नः (पुं०) प्रयत्न जन्य। (वीरो० १४/३२)

कृतप्रयाण (वि०) प्रयाण करने वाला। (वीरो० २१/९) 'सोमं शरत्सम्मुखमीक्षमाणा स्वयं वर्षा तु कृतप्रयाणा' (वीरो० २१/९)

कृतप्रतिकृतं (नपुं०) आक्रमण करना, बदला लेना।

कृतप्रतिज्ञ (वि०) प्रतिज्ञा युक्त, निदान वाला, संकल्प युक्त।

कृतबुद्धि (वि०) ज्ञानी, पंडित, विद्वान्।

कृतम् (अव्य०) पर्याप्त, इतना ही, मात्र, केवल।

कृतमङ्गला (स्त्री०) मांगलिक कार्य करने वाला। 'अथ प्रभाते कृतमङ्गला सा' (सुद० २/१२)

कृतमुख (वि०) विज्ञान, प्रज्ञ, बुद्धिमान।

कृतयुग (वि०) सुखोत्पादक युग। जेण य जुगं णिविट्ठं पुहईए सयलसत्त सुह-जणणं। तेण उ जगम्मि घुट्ठं तं कालं कयजुगं णाम।। (पउम०च०३/११८)

कृतयुग्म (वि०) एक राशि विशेष, चार का भाग देने पर जिस संख्या में चार अवस्थित रहे अर्थात् चार से जो अपहृत हो जाती है व शेष कुछ नहीं रहता है उसे कृतयुग्म राशि कहते हैं। चदुहि अवहिरिज्जमाणे जम्हि रासिम्हि चत्तारि ट्ठांति तं कदजुम्मं! (धव० ३/२४९)

कृतवर्मन् (पुं०) कृतवर्मन् राजा।

कृतवान् (वि०) किया गया, सम्पन्न, पूर्ण हुआ। (वीरो० २२/३४) उत्पन्नसमनस्कारैः प्रस्थानं कृतवानवात्! (जयो० ३/१०६)

कृतविद्य (वि०) विद्वान्, प्रज्ञ, यज्ञ, शिक्षक।

कृतवेतन (वि०) वेतन वाला, वैतनिक।

कृतवेदिन् (वि०) कृतज्ञ, आभारी।

कृतवेश (वि०) वेश युक्त, भूषण सहित, विभूषित।

कृतशंस (वि०) प्रशंसा कृत, प्रशंसा की जाने वाला। 'अहंतामुत सतां कृतशंसः' सद्मनि न्यवसदर्गिवतंस'।

कृतशर्मपूर्तिः (स्त्री०) सुख सम्पदा की पूर्ति। (समु० ५/११)

कृतशोभ (वि०) विभूषण सहित, शोभाशील।

कृतशौच (वि०) शुचिता युक्त, पवित्रता सहित, सुन्दर, उत्तम, श्रेष्ठ।

कृतश्रम (वि०) श्रम साध्य, परिश्रम करने वाला, अध्येता, अध्ययनशील।

कृतसंकल्प (वि०) दृढ़ संकल्प, निश्चय युक्त।

कृतसंकेत (वि०) नियत संकेत, निश्चित संकेत युक्त।

कृतसंज्ञ (वि०) चेतन प्राप्त।

कृतसंनाह (वि०) कवचधारी।

कृतसापत्निका (वि०) द्वितीय ब्याहस्युक्त, दूसरी पत्नी वाला।

कृतसूचिः (स्त्री०) संकेतपद्धतिः 'कृता सूची संकेतपद्धतिः' (जयो० ६/९१)

कृतहस्त (वि०) दक्ष, चतुर, योग्य, कुशल, पटु।

कृतहस्तक (वि०) प्रवीण, प्रज्ञ, श्रेष्ठ।

कृतहस्तता (वि०) दक्षता प्राप्त।

कृताकृत (वि०) पूरा नहीं किया गया।

कृताङ्क (वि०) चिह्नित, लाञ्छित।

कृताञ्जलिः (वि०) विनम्रभाव वाला। कृतोऽञ्जलौ हस्तसंयोग अत्यादरः (जयो० ६/७५) हस्तपुट युक्त, हाथ जोड़ने वाला।

कृतान्त (वि०) विध्वंसकारी। १. पापकर्म, अशुभकर्म, प्रारब्ध, २. उपसंहार।

कृतान्त (वि०) पक्वाहार, पचा हुआ भोजन।

कृतापराध (वि०) अपराध करने वाला, अपराधी, दोषी। (सुद० २/२६)

कृताभय (वि०) सुरक्षित, भय रहित।

कृताभिषेक (वि०) अभिषिक्त, राज्य अभिषेक युक्त।

कृताभ्यास (वि०) अभ्यास जन्य, अध्ययनशील।

कृतार्थ (वि०) प्रयोजन युक्त, उद्देश्य सिद्ध। 'कृतार्थतां सकलजीवनतां गता' (जयो० वृ० २३/८०) सफल, धन्य धन्य, प्रस्पष्टलक्षण, कृतकृत्य। 'नीताश्च कृतार्थतां भवद्भिः' (जयो० १२/१३९) 'पदेन हावादिगणः कृतार्थः' (जयो० १६/४२) 'कृतार्थ प्रस्पष्टलक्षणो बभूव' (जयो० वृ० १६/४२)

कृतार्थन् (वि०) की गई प्रार्थना वाला। (वीरो० १३/३९)

कृतार्थिन् (वि०) कृतार्थी, कृतज्ञता वाला। (वीरो० १८/१)

कृतावान (वि०) बना लिया (सुद० १३४) (जयो० २४/९४)

कृतिः (स्त्री०) [कृ+क्तिन्] उत्पादन, निर्माण, रचना, अनुष्ठान,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कार्य, कर्म, काम, स्वीकृत वचन। (सुद० ११३) सूक्तं समुक्तवानेवं तत्र निम्नोदितं कृति-(सुद० ११३)

कृतिकर (वि०) कृतिकार, रचनाकार।

कृतिकर्म (वि०) करणीय कार्य। 'तल्पं कल्पय केवलं संकल्पय कृतिकर्म' (जयो० १८/८९)

कृतिन् (वि०) विद्वान्, प्रज्ञ, बुद्धिमत। (जयो० वृ० १/४२) चतुर, योग्य, प्रवीण, सक्षम, विशेषज्ञ, आज्ञाकारी।

कृते कृतेन (अव्य०) के कारण, के लिए।

कृतेक्षण (वि०) दृष्टिपात। (जयो० १३/४)

कृतोऽपि (अव्य०) किसी से भी। 'भयाढ्यो न कृतोऽपि भीतिः' (सुद० १/२३)

कृतोचितानुचित (वि०) उचित अनुचित का विचार। (जयो० २३/५७)

कृत्तिः (स्त्री०) [कृत्+क्तिन्] १. त्वच, त्वचा, चमड़ा, खाल। 'दुष्टा प्रवृत्तिः खलु कर्मकृत्तिस्तत्त्वं' (जयो० २७/५) 'कर्मणां दुरितानां कृत्तिस्त्वचा' (जयो० वृ० २१/५) २. क्षुरिका, कतरनी। (वीरो० १/३६) परस्पर द्वेषमयी प्रवृत्तिरेकोऽन्य जीवाय समानकृत्तिः' (वीरो० १/३६) 'समात्ता समु त्थापिता कृत्तिश्छुरिका' (वीरो० वृ०१/३६) ३. भोजपत्र, ४. कृत्तिका नक्षत्र, कृत्तिका मण्डल।

कृत्तिका (स्त्री०) [कृत्+तिकन्] तृतीय नक्षत्र कृत्तिका नक्षत्र।

कृत्नुः (वि०) [कृ+क्त्नु] करने वाला, योग्यता प्राप्त।

कृत्नु (वि०) कलाकार, कारीगर।

कृत्य (वि०) [कृ+क्यप्] १. करने योग्य, किया जाना चाहिए। २. उचित, उपयुक्त, युक्तियुक्त, तर्कसंगत।

कृत्यं (नपुं०) कर्त्तव्य, कार्य, (वीरो० १६/१८) 'स्वमात्रामतिक्रम्य कृत्यं च कुर्यात्- १. व्यवसाय, व्यापार, २. कार्यभार। ३. उद्देश्य, प्रयोजन, लक्ष्य।

कृत्यकृत् (वि०) कर्त्तव्य स्मरणशील। (जयो० २/७२)

कृत्या (स्त्री०) कार्य, करनी।

कृत्याकृत्य (वि०) कृतकृत्य होने वाली। (जयो० वृ० २३/७९)

कृत्याकृत्यवेदिनी (वि०) कृत्यकृत्य का अनुभव करने वाली। (जयो० वृ० २३/७९)

कृत्रिम (वि०) [कृ+क्ति+मप्] काल्पनिक, बनावटी। 'कारणेन निर्वृत्तः कृत्रिमः' (जैन०ल० ३६६)

कृत्रिमपुत्रः (पुं०) गोद लिया गया पुत्र।

कृत्रिमभावः (पुं०) विकल्प भाव।

कृत्रिमभूमिः (स्त्री०) निर्मित स्थान।

कृत्रिममित्रं (नपुं०) आजीविका युक्त मित्र, १. बाह्य व्यवहार युक्त मित्र।

कृत्रिमवनं (नपुं०) उद्यान, आराम, बगीचा, वाटिका।

कृत्रिम-शत्रुः (पुं०) विरोध करने वाला व्यक्ति, विरोध युक्त मनुष्य। 'विरोधो विरोधयिता वा कृत्रिमः शत्रुः' (नीति० वा० २९/३४) 'कारणेन निर्वृत्तः कृत्रिमः। यः शत्रुर्विरोधो भवति तस्य विरोधो क्रियते स विराध उच्यते, शत्रुर्यः पुनर्विजीषोरुपेत्य विरोधं करोति सोऽप्यकृत्रिमः शत्रुः। (नीति० वा० ३२१)

कृत्वस् (अव्य०) संख्यावाचक शब्दों की गुणात्मकता को प्रकट करने वाला अव्यय। चार गुणा, पांच गुणा, दशगुणा आदि।

कृत्सं (नपुं०) [कृत्+स] १. जल, वारि। २. समूह, ओघ, समु दाय।

कृत्सः (पुं०) पाप, अघ, अशुभ प्रवृत्ति।

कृत्स्न (वि०) [कृत्+क्स्न] पूर्ण, सकल। 'कृत्स्नं स्यादुदरे जले' इति वि (जयो० १८/१६) 'कृत्स्नकर्मविप्रमोक्षो मोक्षः' (त०सू०१०/२)

कृदन्त (वि०) १. कृतप्रभाव, हितकारी प्रभाव। २. कृत्प्रत्यये च प्रभावो यस्यास्सा' (जयो० १५/३५) ३. धातुओं के अन्त में प्रत्यय जोड़कर संज्ञा, विशेष आदि शब्दों को बनाया जाता है, उन्हें कृत् प्रत्यय कहते हैं और उनके योग से बने शब्दों को कृदन्त कहते हैं। कृ धातु में तृच् प्रत्यय से कर्तृ। कृत् और तृच दोनों प्रत्यय हैं और 'कर्तृ' शब्द कृदन्त है। 'धातुभ्यः प्रत्ययकरणं च कृत् तद्धिते च कृत्प्रत्यये च प्रभावो यस्यास्सा' (जयो० वृ० १५/३५)

कृप् (अक०) कृपा करना, करुणा करना।

कृपः (पुं०) अश्वत्थामा का मातुल।

कृपण (वि०) [कृप्+क्युन् न स्यणत्वम्] ०खिन्न, उदासीन, ०दयनीय, निर्धन, कंजूस, अभागा, असहाय, विवेकशून्य, निम्न। यो गाढमुष्टिः कृपणो जयस्य (जयो० ८/५६) ०अधम। 'कृपण' अर्थात् किसी भी वैरी को प्राण दान देने वाला नहीं था।

कृपणं (नपुं०) उदासीनता, दुर्दशा।

कृपण-कर्म (पुं०) १. उदासीन मनुष्य, २. कंजूस।

कृपणता (वि०) १. उदासीनता, २. कंजूस भाव युक्त।

कृपणत्व (वि०) कादर्य, कंजूसी। (जयो० वृ० २/११०)

कृपणधीः (स्त्री०) विवेकशून्य, हृदयगत निम्नभाग, शून्य मन वाला, छोटे दिल का।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कृपण-बुद्धिः (स्त्री०) विवेकशून्य, अल्पज्ञ।

कृपणभावः (पुं०) कंजूसी का भाव, विवेक में अल्प भाव।

कृपणवत्सल (वि०) कृपालु, दयालु।

कृपा (स्त्री०) करुणा, दया, अनुकम्पा। (दयो० ५८) 'तिमांशुः कृपयाऽस्य तावदुदिता सम्वर्तते साधुता' (मुनि० १/१) 'यवनृपात्र कृपा त्रपमाणके भवतु' (जयो० ३/११) 'सा तु जीवानुकम्पनम्'। (क्षत्र चू०५/३५) कृपया (तृ०ए०) 'ते कृपया कान्तां रजनीं गत्वा' (सुद० वृ०९९)

कृपाङ्कुरः (पुं०) हरी घास, दया रूप दूर्वा। 'कृपाङ्कुराः सन्तुं सतां यथैव खलस्य लेशोऽपि मुदे सदैव।' (सुद० १/९) 'यत्कृपाङ्कुरमास्वाद्यगावो जीवन्ति नः स्फुटम्।' (दयो० १/४)

कृपाणः (पुं०) [कृपां नुदति-नुद्+ड संज्ञायां णत्वम्] खड्ग, असि, तलवार। (जयो० ८/५५) 'पाणौ कृपाणोऽस्य नु केशपाश' (जयो० ८/५६) 'कृपाणो जातो मध्यस्थमाकारं उदासीनरूवं वा जमाम' (जयो० वृ० ८/५६) 'कृपणं शब्द के मध्य के अकार को आकार रूप में प्राप्तकर 'कृपाण' शब्द बन गया।
'कण्ठे कृपाणं प्रकरोतु कोपी' (दयो० २/१२)

कृपाणकः (पुं०) असि, खड्ग, तलवार, यवनृपात्र कृपा त्रपमाणके भवतुमय्युप युक्तकृपाणके' (जयो० ९/११) कृपाण एव कृपाणको येन तस्मिन् (जयो० वृ० ९/११)

कृपाणपुत्री (स्त्री०) क्षुरी, क्षुरिका, छोटी गुप्ती। मूर्ध्नि मिलिन्दावलिच्छलेन कृपाणपुत्रीं क्षिपदिव तेन। (जयो० १५/५१) कृपाणपुत्रीं क्षुरिकां (जयो० वृ० १४/५१)

कृपाणमाला (स्त्री०) असि समूह, खड्ग समु दाय। 'रणाङ्गणे पाणिकृपाणमाला' (जयो० ८/८) कृपाणानां खड्गानां माला सैव' (जयो० वृ० ८/८)

कृपाणिका (स्त्री०) [कृपाण+कन् टाप्] छुरिका, बर्छी, गुप्ती, क्षुरी।

कृपाणी (स्त्री०) छुरी, क्षुरिका, असि पुत्री असिपुत्रिका। 'अतभिप्रेता कृपाणी क्षुरिका मम हृदे चित्तायापि भवत्यहो-' (जयो० ५/९७) 'वाणी कृपाणीव न कर्कशार्यास्मि' (जयो० १७/३३) 'वाणी या मर्मच्छेदकरी कृपाणी असिपुत्रिका' (जयो० वृ० १७/३३) 'वाणी कृपाणीव च मर्म भेत्तुम्' (वीरो० १/३८) समस्तु दुर्दैवभिदे कृपाणो- (समु० १/५)

कृपानुभावः (पुं०) कृपा दृष्टि, दयाभाव।

कृपान्वित (वि०) कृपालु (वीरो० १४/३७) (जयो० वृ० १२/४८)

कृपालता (स्त्री०) दयाभाव, दयादृष्टि, समभाव दृष्टि रूप लता। (सुद० १३६) 'कृपालतातः आरब्धं तस्येदं मम कौतुकम्' (सुद० १३६)

कृपालु (वि०) [कृपां लाति-कृपा+ला आदाने] करुणाजन्य, करुणा सहित, दया युक्त, सदय।

कृपालुता (वि०) जीवदया भाव युक्त, करुणापूर्ण। 'कृपालुतायां जीवदयायां' (जयो० १/२१)

कृपावती (वि०) दयालु (वीरो० १२/२७)

कृपावान् (वि०) दयावत, दयालु।

कृपाशनिः (पुं०) कृप रूप वज्र। कृपा सर्वसाधारणेषु उत्पद्यमाना दयैव अशनिर्वज्रस्तस्य' (जयो० वृ० ३/१९)

कृपाशील (वि०) प्रकृतप्रसाद, करुणाशील। (जयो० वृ० २४/१२२)

कृपी (स्त्री०) [कृप्+ङीष्] १. कृपा पात्री। २. कृप की भागिनी, द्रोण की भार्या।

कृपीटः (पुं०) प्याऊ (वीरो० १२/२७)

कृपीसुतः (पुं०) अश्वत्थामा।

कृपीपति (पुं०) द्रोण राजा।

कृपीटं (नपुं०) [कृप+कीटन्] जंगली लकड़ी, २. जल, ३. उदर।

कृमि (वि०) कीट समूह, कीट युक्त।

कृमि (स्त्री०) रोग विशेष, उदर जन्य कीट।

कृमिकुलं (नपुं०) कीट कुल, कीट समूह।

कृमिकोषः (पुं०) रेशम का कोया, रेशम का यूथ।

कृमिजं (नपुं०) अगर की लकड़ी।

कृमिजा (स्त्री०) लाल रंग, जो लाक्ष के कीड़ों से उत्पन्न होता है।

कृमिण (वि०) कीटयुक्त, कीड़ों से भरा हुआ।

कृमिपर्वत (पुं०) बांमी, कीटों द्वारा निर्मित मिट्टी का एक ढेर।

कृमिफलः (पुं०) गूलर वृक्ष।

कृमिरागः (पुं०) मल एवं लार की राग। १. कृमिच रंग, वस्त्र रंगना। कृमीणां रागो रञ्जकरसः कृमिरागः'

कृमिरागकम्बलः (पुं०) कीट तन्तुओं से निर्मित कम्बल। 'कृमिभुक्ताहारवर्णतन्तुभिरुतः कम्बलः कृमिराग कम्बलः' (भ०आ०टी० ५६७)

कृमिला (स्त्री०) अधिक सन्तान को उत्पन्न करने वाली (जयो०)

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कृमिखड्गः (पुं०) शंख में स्थित मछली।

कृमिशुक्तिः (स्त्री०) घोंघा, जो सीप में उत्पन्न होता है, एक कीट।

कृमिशैलः (पुं०) बांबी बामी, कीट निर्मित मिट्टी का एक पर्वताकार ढेर।

कृश (अक०) क्षीण होना, दुर्बल होना। (सुद० २/३२)

कृश् (वि०) [कृश्+क्त] १. दुर्बल, पतला, क्षीणकाय, बलहीन, निर्बल। २. छोटा, अल्प थोड़ा, सूक्ष्म। ३. दरिद्र, हीन, नगण्य।

कृशता (वि०) क्षीणता। वक्रत्वं मृदुकुन्तलेषु कृशता बालावलग्नेष्वरम्। (वीरो० २/४८)

कृशी (वि०) क्षीण शरीरी, कृश काय वाली। (वीरो० ६/७)

कृशाङ्गी (वि०) कृश शरीर वाली, क्षीणकाया। (सुद० २/३२) 'कृशाङ्ग्या दुरितैकशापी' (सुद० २/३२) 'कृशाङ्ग्या-तृतीया एकवचन स्त्रीलिंग।

कृशाला (स्त्री०) [कृश्+ला+क+टाप्] बाल।

कृशाक्षः (पुं०) मकड़ी।

कृशाङ्गः (वि०) दुर्बल शरीर वाला, क्षीणकाय युक्त।

कृशालुः (पुं०) शिव, शंकर।

कृशोदरढ़ (वि०) पतली कमर।

कृशोयान (वि०) जाति कृश रूप (जयो० ११/२४)

कृशोदरि (वि०) अनुदरि। (वीरो० ४/३८)

कृष् (सक०) खींचना, रेखा बनाना, चीरना, आकृष्ट करना। 'चकृषुर्जगत्प्रदीपात्ततश्च' (जयो० ६/५६) 'चकृषुराकृष्टवन्तः' (जयो० वृ० ६/५६) 'चकृषुः कृष्टवन्तः' (जयो० वृ० ६/१००)

कृषकः (पुं०) [कृष्+क्वन्] किसान, हाली, हलवाहा। (दयो० ३६) १. फाली, २. बैल। जयोदय काव्य की टीका में कृषक के लिए शालिक भी कहा है. 'यथा शालिन्यः कृषकः स्वक्षेत्रे' (जयो० वृ० २/३१) 'शालिकानां कृषकाणाम्' (जयो० वृ० ४/५७)

कृषाणः (पुं०) [कृष्+आनक] किसान, शालिक।

कृषि (स्त्री०) [कृष्+इक्] खेती, काश्तकारी। १. भूमि, भू, धरा। (जयो० ७/१००)

कृषिक (वि०) १. कृषि करने वाला, खेती करने वाला। २. कुशल-गुणविवेचना कृषिकः। (जयो० ६/६९) 'कृषि भूकर्षणे प्रोक्त'-(म०पुं०१६/८१) भूकर्षण/भू जोतना/खेती करना कृषिकर्म है।

कृषिकर्मार्यः (पुं०) कृषिकर्म जानने वाले आर्य, हल-कर्षण में निपुण व्यक्ति। 'हलेन भूमि 'कर्षण निपुणः कृषिकर्मार्यः' (त०वृ०३/३६) हल-कुलिदन्तालकादिकृष्युपकरण विधानविदः कृषीवलाः कृषिकर्मार्याः' (त० वा० ३/३६)

कृषिकृत् (वि०) कृषि करने वाला किसान। 'कृषिकृतां कृषकाणां परिपोषण-संरक्षणम्' (जयो० वृ० २/११३)

कृषिक्रिया (स्त्री०) भू-क्रिया, स्थलक्रिया। पुण्य प्रभावेण पूर्णा कृषिक्रिया अनायासेनैव जातेत्यर्थः' (जयो० वृ० ७/१००)

कृषिजीविन् (वि०) खेती करके आजीविका चलाने वाला कृषक।

कृषिफलं (नपुं०) खेती का फल/लाभ, धान्य उपज, धान्य पैदावार।

कृषियन्त्रं (नपुं०) भू यन्त्र, खेती के उपकरण।

कृषियोजना (स्त्री०) भू-योजना।

कृषि सेवा (स्त्री०) भू-सेवा, खेती की सेवा।

कृषीवलः (पुं०) [कृषि+वलच्] हल। (जयो० वृ० २६/९०) काश्तकार, खेती से आजीविका करने वाला, किसान (दयो० ३६) कृषक, किसान।

कृष्करः (पुं०) [कृष्+कृ+टक] शिव, शंकर, शंभु।

कृष्ट (वि०) [कृष्+क्त] खींचा हुआ, आकृष्ट, कर्षण युक्त। अपसारित (जयो० १७/६४) हल चलाया गया।

कृष्टिः (स्त्री०) [कृष्+क्तिन्] खींचना, कर्षण करना, हल चलाना। 'कर्शनं कृष्टिः, कर्मपरमाणुशक्तेस्तनूकरणमित्यर्थः। अथवा कृष्यते तनूक्रियते इति कृष्टिः (जैन०ल०३६७) 'किसं कम्मं कदं जम्हा तम्हा किट्टी' (कषाय० पा०वृ०८०८) 'योगमुपसंहृत्य सूक्ष्म-सूक्ष्माणि खण्डानि निवर्तयति ताओ किट्टीओ णाम वुच्चंति' (जय०प०१२४३)

कृष्टिकरणाद्धा (स्त्री०) क्रोधवेदनकाल का द्वितीय त्रिभाग।

कृष्टिवेदगद्धा (स्त्री०) कृष्टि वेदन का काल, क्रोधवेदन का जितना काल है, उसका तृतीय त्रिभाग अन्तिम भाग।

कृष्ण (वि०) [कृष्+नक] श्यामवर्ण, काला। १. दुष्ट, हानिकर। २. धूम, नीलवर्ण। (जयो० वृ० ११/६९)

कृष्णः (पुं०) कृष्ण, वासुदेव, (दयो० ५८) त्रिषष्टि शलाका पुरुषों में कृष्ण नाम विशेष। पीतपट (जयो० १/५) २. काला रंग, कौआ। ३. कृष्णपक्ष ४. कृष्ण लेश्या-सर्वदा कदनासक्तः। कृष्णलेश्यो मतः जनः' (पंच सं०१/२७८)

कृष्णाकन्दं (नपुं०) रक्त कमल।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कृष्णकर्मन् (वि०) दुष्ट चरित्र, दुराचारी।

कृष्णकारकः (पुं०) पर्वतीय कौआ।

कृष्णकायः (पुं०) भैंसा।

कृष्णकाष्टं (नपुं०) कालागुरु, कृष्ण चन्दन की लकड़ी।

कृष्णकोहलः (पुं०) जुआरी, द्यूतकार।

कृष्णगतिः (स्त्री०) अग्नि, वह्नि, आग।

कृष्णग्रीवः (पुं०) शिव, शंकर का नाम।

कृष्णचतुर्दशी (स्त्री०) कृष्ण पक्ष की चौदश। (सुद० ९६)

कृष्णत्व (वि०) नीलत्व, नीलकान्तियुक्त। 'कृष्णत्वं नीलत्वं वा तस्य नीलकान्तयश्चासन्' (जयो० वृ० ११/६९)

कृष्णदेहः (पुं०) मधुमक्खी।

कृष्णपक्षः (पुं०) चन्द्रमास, अंधेरी रात का पक्ष, बहुल पक्ष।

कृष्णपाक्षिक (वि०) १. कृष्णपक्ष सम्बंधी। २. दीर्घ काल तक संसरण करने जीव। अधिकतर-संसारभाजनस्तु कृष्णपाक्षिकाः' (जैन०ल०३६८)

कृष्णमुखः (पुं०) काले रंग का वानर।

कृष्णमुखं (नपुं०) कृष्ण/काला मुख।

कृष्णरूपः (पुं०) कृष्ण रंग। (जयो० वृ० १/२५)

कृष्णला (स्त्री०) गुञ्जा। (जयो० २१/४८, १/२५)

कृष्णलेश्या (स्त्री०) एक लेश्या/परिणाम जिसमें कृष्णत्व की अधिकता पाई जाती है 'खंजंजण-णयणणिभा किण्हलेस्सा' (जैन०ल०३६८)

कृष्णलेश्या भावः (पुं०) कृष्णलेश्या का भाव, जो तीव्रतम निर्दय भाव होता है, वह कृष्णलेश्याभाव है। 'जो तिव्वतमो सा किण्हलेस्सा' (धव० १६/४८८) निर्दयो निरनुक्रोशो मद्य-मांसादिलम्पटः। सर्वदा कदनासक्तः कृष्णलेश्यो मतो जनः। (पंच सं०१/२७३)

कृष्णलोहः (पुं०) चुम्बक पत्थर।

कृष्णवर्णः (पुं०) काला रंग। १. राहु। २. शूद्र।

कृष्णवर्णनामन् (पुं०) शरीरगत कृष्ण वर्ण नाम। जिस नामकर्म के उदय से शरीरगत पुद्गल परमाणुओं का वर्ण काला हो। 'जस्स कम्मस्स उदएण सरीरपोग्गलाणं किण्णवण्णो उप्पज्जदि तं किण्णवण्णणामं।' (धव० ६/७४) 'यस्य कर्मण उदयेन शरीरपुद्गलानां कृष्णवर्णता भवति तत्कृष्णवर्ण नाम' (मूला० वृ० १२/१९४)

कृष्णवर्त्मन् (पुं०) १. अग्नि, आग। २. कृष्णं वर्त्म मार्गो नीति लक्षणोऽथ' (वीरो० वृ०३/६)

कृष्णवर्त्मत्व (वि०) धूमपना, धूमत्व। २. कृप पथत्व। (वीरो० ३/६) 'यत्कृष्णवत्मत्त्वमृते प्रतापवह्नि'

कृष्णा (स्त्री०) द्रोपति नाम। नदी। (वीरो० ३/६)

कृष्णागुरु (नपुं०) एन चन्दन विशेष। (सुद० ७२) दशाङ्ग धूम को कृष्णागुरु चन्दन, कर्पूरादिक को मिश्रित करके बनाया जाता है। (जयो० २४/७९) कृष्णागुरुचन्दन-कर्पूरादिकमय धूपदशायाः। ज्वालनेन कृत्वा सुवासनाग्रे जिनमुद्रायाः। (सुद० वृ०७२)

कृष्णाचलः (पुं) रैवतक पर्वत का ऊपर नाम।

कृष्णाजिनं (नपुं०) कृष्ण मृग का चर्म।

कृष्णायस् (नपुं०) लोहा, अयष्क।

कृष्णाध्वन् (नपुं०) अग्नि, वह्नि।

कृष्णावर्त्मन् (नपुं०) नारायण पद्धति। (जयो० २४/७९)

कृष्णाष्टमी (वि०) कृष्ण जन्म का अष्टमी। भाद्रपद के कृष्णपक्ष की अष्टमी।

कृष्णिका (स्त्री०) [कृष्ण+ठन्+टाप्] काली सरसों, कृष्ण सरिसव।

कृष्णिमन् (पुं०) [कृष्ण+इमनिच्] कालिमा, कालापन।

कृष्णी (स्त्री०) [कृष्ण+ङीप्] कृष्णपक्ष की रात्रि।

क्लृप् (अक०) ०योग्य होना, ०अच्छा होना, ०उत्तम होना। कल्पते, कल्पसे।

क्लृप्त (भू०क०कृ०) [क्लृप्+क्त] तैयार किया गया, सुसज्जित, उत्पन्न किया हुआ, उपार्जित, आविष्कृत।

क्लृप्तवती (वि०) तैयार करती हुई। (जयो० १४/४९)

क्लृप्तिः (स्त्री०) [क्लृप्+क्तिन्] निष्पत्ति, उत्पत्ति, आविष्कार।

क्लृप्ति-कला रसाल्य (वि०) नाना चेष्टा वाला। (समु० ८/५)

क्लृप्तिक (वि०) [क्लृप्त+ठन्] क्रय किया गया, मूल्य में खरीदा गया।

केकयः (पुं०) एक देश विशेष, देश नाम।

केकर (वि०) भैंगी अक्षि वाला, भैंगी दृष्टि वाला।

केकरं (नपुं०) भैंगी आंख।

केकरी (स्त्री०) भैंगी आंख।

केका (स्त्री०) १. मयूर, २. मयूर शब्द। केकारवश्चक्रुरित्यर्थः' (जयो० वृ० ८/८)

केकारवः (पुं०) मयूर शब्द। (जयो० ८/८)

केकावलः (पुं०) [केका+वलच्] मोर, मयूर, शिखण्डि।

केकिकुलं (नपुं०) मयूर समूह। (सुद० ७४)

केकिन् (पुं०) मयूर, मोर, शिखण्डि। 'शिखिण्डना-केकिनाम' (जयो० ८/८)

केकिता (वि०) १. बह्निगत। (जयो० वृ० १०/११२)

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

केकितापन्न (वि०) मयूर रूपता को प्राप्त। 'चातकेन च वरेण केकितापन्नजन्यमनुना प्रतीक्षिता।' (जयो० १०/११२)

केकी (पुं०) भुजङ्गभुक्, मयूर, मोर। (जयो० वृ० १३/८६)

केचन (अव्य०) कोई कोई। (सम्य० १०७)

केणिका (स्त्री०) [कं मूर्ध्नि कुत्सित: अणक:+टाप्] तम्बू, प्रतिवारण।

केत: (पुं०) [कित्+घञ्] १. गृह, स्थान, आवास, निवास। २. ध्वज, ३. इच्छा।

केतक: (पुं०) [कित+ण्वुल्] एक पादप, पौधा। २. ध्वज।

केतकं (नपुं०) केतकी पुष्प।

केतकी (स्त्री०) केवड़ा। (जयो० वृ० २०/४०)

केतनं (नपुं०) [कित्+ल्युट्] १. गृह, घर, आवास, स्थान। २. ध्वज, ध्वजा, झण्डा, पताका। ३. चिह्न, प्रतीक।

केतनाञ्चलं (नपुं०) ध्वज वस्त्र (जयो० १३/२७) ध्वज प्रान्त। (जयो० ७/११८)

केतित (वि०) [केत+इतच्] आमन्त्रित, निमन्त्रित, आह्वान युक्त, बुलाया गया।

केतु: (पुं०) १. ध्वजा, पताका। (जयो० ८/२१) २. प्रधान, प्रमुख, मुख्य, विशिष्ट। ३. चिह्न, प्रतीक, अंक। (वीरो० २/३५) ४. प्रकाश, प्रभा। ५. एक नक्षत्र विशेष।

केतुक्षेत्रं (नपुं०) विशिष्ट क्षेत्र, जिस खेत में पानी से ही अन्न उगाया जाता है। 'केतु क्षेत्रमाकाशोदकपात निष्पाद्य-सस्यम्' (जैन०ल०३६८)

केतुपंक्ति: (स्त्री०) ध्वज श्रेणी। (जयो० ३/११२)

केदार: (पुं०) [के शिरसि दारोऽस्य] १. चरागाह, जल युक्त क्षेत्र/खेत। थावला, आलवाल, क्यारी। २. शिव का नाम, ३. पर्वत भाग।

केदारखण्डं (नपुं०) मिट्टी से बंधा बांध।

केदारनाथ: (पुं०) शिव नाम।

केन (सर्व०) तृ०ए०-किससे, किसके द्वारा। केयं केनान्विताऽनेन मौक्तिकेनेन शुक्तिका' (सुद० ८४)

केनचित् (अव्य०) उसमें से कोई, बहुत में एक। 'केनचिद् गदिगगस्मदधीश:' (जयो० ४/५१)

केनार: (पुं०) [के मूर्ध्नि नार:] १. सिर, कपाल, खोपड़ी। २. गाल।

केनापि (अव्य०) किसी के द्वारा भी। 'यस्या न केनापि रहस्यभाव:' (सुद० २/२१)

के-निपात: (पुं०) [के जले निपात्यतेऽसौ-के+नि+पत्+णिच्+अच्] पतवार, चम्पू, डांड, नाव चलाने के डांड, जो आगे से चौड़े हाथ की तरह दण्ड युक्त होते हैं।

केन्द्रं (नपुं०) १. मध्य बिन्दु, आधार आश्रय। २.जन्म कुण्डली का स्थान, चतुर्थ, सप्तम एवं दसम।

केयूर: (पुं०) एक आभूषण, जो हस्त के बाजू पर धारण किया जाता है। जिसे बाजूबन्द, बिजायठ, टाड कहते हैं। (जयो० वृ० १५/८४) 'कङ्कण-केयूर-नूपुरादिषु' (जयो० वृ० ५/६१)

केरल: (पुं०) दक्षिण भारत का प्रान्त।

केल् (सक०) हिलाना, खेलना। २. लोकप्रिय होना, परायण होना।

केलक: (पुं०) [केल्+ण्वुल्] नर्तक, नट, कलाबाज।

केला (स्त्री०) क्रीडा, खेल।

केलास: (पुं०) [केला विलास: सीदत्यस्मिन् केला+सद्+ड:] स्फटिक।

केलि: (पुं०/स्त्री०) क्रीड़ा, खेल, आमोद-प्रमोद। (जयो० २२/७१) स्वार्थे क प्रत्यय (वीरो० ४/२१) मनोविनोद। २. परिहास, हास।

केलिक: (पुं०) अशोक वृक्ष।

केलिकला (स्त्री०) कामक्रीड़ा।

केलिकुशेशय (नपुं०) क्रीड़ाकमल। मृदु-मालुदलभ्रमान्मुखे दधति केलिकुशेशयं तु खे।' (जयो० १०/६३)

केलिकूट: (पुं०) क्रीड़ा पर्वत। (वीरो० २/२०)

केलिकोष: (पुं०) नर्तक, नट, नाचने वाला।

केलिगृहं (नपुं०) क्रीडा भवन, आमोद भवन।

केलिनिकेतनं (नपुं०) क्रीडा भवन।

केलिमंदिरं (नपुं०) क्रीडा भवन।

केलिमुखं (नपुं०) परिहास, मनोरंजन।

केलिसदनं (नपुं०) क्रीडा भवन, आमोदगृह।

केलिरतर: (पुं०) क्रीडास्थल, केलि सरोवर। 'रर्णाश्रय: केलिसर: सवर्णा' (जयो० ८/४१)

केवल (वि०) [केव् सेवने वृषा कल] १. अकेला, एकमात्र,। 'स केवलं स्यात् परिफुल्लगण्ड:' (सुद० १/७) 'घृणास्पदं केवलमस्य तूलम्' (सुद० वृ०१०२) २. पूर्ण, सम्पूर्ण, ०समस्त, ०परम, ०उत्कृष्ट विशेष, ०असाधारण। (सुद० वृ०९७) 'सगलं संपुण्णं असवत्तं' (ष०खं०३४५) ३. विमल, ०निर्मल, ०पवित्र। ४. अतीन्द्रिय ज्ञान, ०परमज्ञान। (जयो० १८/५५) अखण्डज्ञान-'बाह्येनाभ्यन्तरेण च तपसा यदर्थमर्थिन: मार्गं केवन्ते सेवन्ते तत्केवलं, असहायमिति वा। (स०सि०१/९)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

केवलं (अव्य०) सिर्फ, मात्र, पूर्ण रूप से।

केवलज्ञानं (नपुं०) ज्ञान का एक भेद, पांच ज्ञानों में अन्तिम ज्ञान। (त०सू०१/९) 'साक्षात् परिच्छेदककेवलज्ञानम्' (धव० ९/३५८) १. पदार्थ परिच्छेदक ज्ञान, २. निरपेक्ष ज्ञान-'केवलमसहायमिन्द्रियालोकमनस्कारनिरपेक्षम्' (धव० १/१९१) ३. युगपत् सर्वार्थ विषयक ज्ञान 'सकल ज्ञानावरण परिक्षय विजृम्भितं केवलज्ञानं युगपत्सर्वार्थ विषयम्' (अष्ट०२/१०१ केवलणाणावरणक्खएण समु प्पण्णं णाणं केवलणाणं' (धव० १४/७) 'केवलणाणावरणक्खजायं केवलं' (स०१/५)

केलबज्ञानावरणं (नपुं०) अतिशय ज्ञान का आवरण-'जिससे लोक और अलोकगत सर्व तत्त्वों के प्रत्यक्ष दर्शक और अतिशय निर्मल केवलज्ञान का आवरण करता है।

केवलज्ञानावरणीयं (नपुं०) केवलज्ञान पर आवरण करने वाला। केवलणाणस्स आवरणं जं कम्मं तं केवलणाणावरणीयं णाम।' (धव० १३/२१३)

केवलतः (अव्य०) [केवल+तसिल्] मात्र, केवल, एकमात्र, निज स्वरूप का संवेदन। निज स्वरूप 'स्वावभासः केवलदर्शनम्' (धव० ६/३४) तिकाल-विसय-अणंत-पज्जय सहिद सगरूव-संवेयणं' (धव० १०/३१९) केवल दर्शनावरण के क्षय से उत्पन्न-'केवल दंसणावरणक्खएण संपुण्णं दसणं केवलदंसणं' (धव० १४/१७) युगपत् सामान्य विशेष प्रकाशक (परमात्म पु०टी० १६१।

केवलदर्शनावरणीयं (नपु०) केवल दर्शन को आच्छादित करने वाला। 'केवलदंसणस्स आवरणं केवलदंसणावरणीयं' (धव० १३/३५६) 'केवलमसपत्नं, केवलं सद्दर्शनं च केवलदर्शनं, तस्य आवरणं केवलदर्शनावरणीयम्' (धव० ६/३३)

केवलबोधनं (नपुं०) केवलज्ञान का बोध/अनुभव। (सुद ९७)

केवलबोधनपात्री (वि०) केवलज्ञान के बोध का अधिकारी। (सुद० ९७)

केवलबोधभृते (भू०क०कृ०) अतीन्द्रिय ज्ञान को प्राप्त हुआ। (जयो० १८/५५)

केवलभृत् (भू०क०कृ०) १. केवलज्ञान को धारण करता हुआ। (जयो० वृ० १८/५५) २. के-वल-भृत-सूर्य में दृढ़ता को धारण करता हुआ (जयो० हि०१८/५५)

केवलव्यतिरेकी (स्त्री०) केवलपक्ष में रहना, जो हेतु विपक्ष से व्यावृत होकर सपक्ष से रहित विपक्ष में नहीं रहता है, उसे केवल व्यतिरेकी कहते है। 'पक्षवृत्तिर्विपक्षव्यावृत्तः सपक्षरहितो हेतुः केवलव्यतिरेकी' (न्यायदीपिका ९०)

केवलान्वयी (वि०) विपक्ष रहित, जो हेतु पक्ष और सपक्ष में तो है, किन्तु विपक्ष में नहीं रहता है, वह केवलान्वयी कहलाता है। -'पक्ष-सपक्ष-वृत्तिर्विपक्षवृत्तिरहितः केवलान्वयी' (न्यायदीपिका ८९)

केवलालोकः (पुं०) केवलज्ञान का प्रकाश। सुमुहोऽभिक-लितलोको रविरिव वा केवलालोकः।' (वीरो० ४/४७)

केवलावरणं (नपुं०) केवलज्ञान पर आवरण।

केवलि-अवर्णवादः (पुं०) ज्ञान एवं दर्शन से भिन्न कथन करना। 'कवलाभ्यवहारजीविनः केवलिन इत्येवमादेवचनं केवलिनामवर्णवादः' (रा०सि०६/१३)

केवलिन् (वि०) [केवल+इनि] अकेला, एकमात्र, १. परम तत्त्व का पक्षपाती।

केवलिमरणं (नपुं०)केवली का निर्वाण। 'केवलिणं मरणं केवलिमरणम्' (जैन०ल०३७२)

केवलिमायी (वि०) केवलियों के प्रति अवर्णवाद की भावना। 'केवलिणं केवलिष्वादरवानिव यो वर्तते, तदर्चनायां तु मनसा तु न रोचते, स केवलिनां मायावान्' (भ०आ०टी० १८१)

केवलिसमु द्घातः (पुं०) केवलि के आत्मप्रदेश मूल शरीर से निकलना। 'आत्मप्रदेशानां बहिः समु द्घातनं केवलिसमु द्घातः' (त० वा० १/२०) दंड-कवाड-पदर-लोग-पूरणाणि केवलिसमु द्घादो णाम' (धव० ७/३००)

केवलिराट् (पुं०) केवलिराज। 'चक्रायुधः केवलिराट् स तेन' (समु० ५/३०)

केवली (वि०) केवलज्ञानी, सर्वज्ञ, सर्वदर्शी, जिन।
शेषकर्मफलापेक्षः शुद्धो बुद्धो निरामयः।
सर्वज्ञः सर्वदर्शी च जिनो भवति केवली।
घातिकर्मक्षयादाविर्भूतज्ञानाद्यतिशयः केवली' (त० वा० ६/१३) केवलमस्यातीति केवली, सम्पूर्ण ज्ञानवानित्यर्थ' 'सव्वं केवलकप्पं लोगं जाणंति तह य पस्संति। केवलणाण चरित्ता तम्हा ते केवली होति।। (मूला ०७/६७)

केशः (पुं०) [क्लिश्यते क्लिशनाति वा क्लिश्+अन्] केश, बाल-'मालिन्यमेतस्य हि केशवेशे, (वीरो० २/४०)

केश-कर्मन् (नपुं०) केश सज्जा, केश प्रसाधन।

केश-कलापः (पुं०) केश समूह, बालों का ढेर।

केशकीटः (पुं०) जूं।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

केशगर्भः (पुं०) केश जूं, बालों की मींढी।

केशग्रहः (पुं०) केश ग्रहण, बालों को पकड़ना।

केशग्रहणं (नपुं०) केश पकड़ना।

केशच्छिद् (पुं०) नाई, बाल बनाने वाला।

केशजाहः (पुं०) बालों की जड़।

केशटः (पुं०) [केश+अट्+अच्] बकरा, अज, १. विष्णु, २. खटमल।

केशततिः (स्त्री०) वेणी। (जयो० वृ० ३/५५)

केशपक्षः (पुं०) केशजाल, केशवेश। केश प्रसाधन, केश सज्जा।

केशपाशः (पुं०) केशसमूह, केशवेश 'अधः स्थितायाः कमलेक्षणाया निरीक्षमाणो मृदुकेशपाशम्' (जयो० १३/८६) 'दीर्घोऽहिनील: किल केशपाशः' (सुद० २/८)

केशपूरकः (पुं०) केशबन्ध, वेणीबंध। 'केशपूरकं कोमलकुटिलं चन्द्रमसः प्रततं व्रज रुचिरात्' (सुद० १००)

केशप्रसाधकः (पुं०) केश प्रसाधन की सामग्री। 'केशेषु तैलादि वस्तु केश प्रसाधकं बिभर्ति।' (जयो० वृ० २७/३९)

केशबन्धः (पुं०) वेणीबन्ध, केशपाश, जूड़ा, केशपूरक। (सुद० १००)

केशभूः (स्त्री०) केशोत्पत्ति स्थान।

केशभूमिः (स्त्री०) केशोत्पत्ति स्थान।

केशमार्जकं (नपुं०) कंघी, कंघा।

केशमार्जनं (नपुं०) कंघी।

केशरचना (स्त्री०) केश प्रसाधन, केश सज्जा, बाल संवारना।

केशरः (पुं०) केशर, कुङ्कुम। 'कुङ्कुमस्य केशरस्य एणमदस्य कस्तूरिकाख्यस्य' (जयो० वृ० ५/६१) 'केशरेण सार्धं विसृजेयं पदयोर्जिनं' (सुद० ७१)

केशरस्तवः (पुं०) केशरगुच्छक। (वीरो० ७/१८)

केशरिन् (पुं०) सिंह।

केशरी (पुं०) सिंह (दयो० ४६) (वीरो० ४/४३)

केशलुंचन (नपुं०) केशोत्पाटन। (मुनि० २०)

केशवाणिज्य (नपुं०) केश व्यापार। १. केश वाले द्विपद और चतुष्पद आदि जीवों को बेचने वाले। केशवाणिज्यं द्विपदादिविक्रयः' (सा०ध०५/२२)

केशवः (पुं०) केशव, विष्णु।

केशव (वि०) [केशाः प्रशस्ताः सन्त्यस्य, केश+व] प्रशस्त केश वाले।

केशवापः (पुं०) केश उतारने के बाद स्नान विधि। 'केशवापस्तु केशानां शुभेऽह्नि व्यपरोपणम्। क्षौरेण कर्मणा देवगुरुपूजा पुरस्सरं। (म० पु० ३९/९८)

केशवेशः (पुं०) केशपाश, कचपाश। (वीरो० २/४०, जयो० २/४१)

केशसंस्कारः (पुं०) केशसज्जा, केश प्रसाधन। 'केशसंस्कारो हस्तघर्षणेन मसृणतासम्पादनम्' (भ० आ० टी० ९३) 'हस्तघर्षणेन मसृणत्वकरणं' (मूला० ९३)

केशाकेशि (अव्य०) [केशेषु गृहीत्वा प्रवृत्तं युद्धम्] एक दूसरे के बाल खींचकर लड़ाई करना।

केशान्धकारी (वि०) केश रूप अंधकार वाली।

केशिक (वि०) [केश+ठन्] सुन्दर बालों वाला।

केशिन् (पुं०) [केश+इनि] १. सिंह, २. कृष्ण।

केशिनी (स्त्री०) [केशिन्+ङीप्] १. रावण की माता, २. सुन्दर कचों वाली स्त्री।

केषांचित् (अव्य०) कुछ लोग। (दयो० १/९)

केशोत्पाटनं (नपुं०) केशलुंचन। (मुनि० २०)

केसरः (पुं०) [के+सृ] पुष्प पराग।

केसरं (नपुं०) १. बकुल पुष्प। २. केशर, जाफरान।

केसरिन् (पुं०) [केसर+इनि] सिंह। २. श्रेष्ठ, उत्तम, प्रमुख। ३. अश्व, घोड़ा। ४. पुन्नाग वृक्ष।

कै (अक०) शब्द करना, ध्वनि करना।

कैंशुकं (नपुं०) [किंशुक+अण्] किंशुक पुष्प।

कैकयः (पुं०) [केकय+अण्] केकय देश का राजा।

कैकसः (पुं०) [कीकस+अण्] राक्षस, पिशाच।

कैकेयः (पुं०) [केकयानां राजा] केकय राज्य का अधिपति।

कैटभः (पुं०) [कीट+भ+उ-अण्] कैटभ नामक राक्षस।

कैतकं (नपुं०) [केतली+अण्] केवड़े का पुष्प।

कैतवं (नपुं०) [कितव+अण्] द्यूत क्रीड़ा करना, जुआं खेलना। २. झूठ, कपट। (जयो० ९/५४)

कैदारः (पुं०) [केदार+अण्] चावल, धान्य।

कैरवः (पुं०) [के जले रौति-करवः केरव+अण्] जालसाज, जुआरी। १. शत्रु-कैरवाणां शत्रूणां (जयो० ६/१७) २. कुमुदपुष्प (जयो० वृ० ६/१७) ३. कैरवेषु रात्रिविकासिकमलेषु' (जयो० वृ० १५/४६) ५. नक्तंकमल-रात्रि में विकसित होने वाली कुमुदिनी।

कैरव-कदम्बकः (पुं०) १. कुमुद समूह यद्दर्शनेन कैरवकदम्बको ग्लानिमानभवत्। (जयो० ६/१७) २. शत्रुसमूह (जयो० वृ० ६/१७)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कैरवपुष्पं (नपुं०) कुमुदिनी पुष्प।

कैरवराशि: (स्त्री०) कुमुद समूह। (जयो० १५/४६)

कैरव-संगत (वि०) कैरव पर गुनगुनाने वाले। 'कैरव-संगतषट्पद-स्वनमिषेणेति' (जयो० वृ० १५/४६)

कैरव-वक्त्रबिम्बं (नपुं०) कुमुद रूप मुख मण्डल। कैरवमेव वक्त्रबिम्बं मुखमण्डलम्। (जयो० वृ० १५/४८)

कैरवहार-मुद्रा (स्त्री०) श्वेत कमल के हार की आकृति वाली। (सुद० ३/४०) धवल क्रान्ति वाली। 'सोम सा कैरवहारमुद्रा' (सुद० ३/४०)

कैरवहर्षसेतु: (पुं०) कैरव के हर्ष का स्थान। 'कैरवाणां नक्तंकमलानां हर्षस्य प्रसन्न भावस्य सेतु:' (जयो० वृ० १५/५०)

कैरविन् (पुं०) [कैरव+इनि] चन्द्र, शशि।

कैरविणी (स्त्री०) [कैरविवन्+ङीप्] कुमुदलता, कुमुदिनी। 'चंद्र विनेव भुवि कैरविणी तथेत:' (सुद० ८६)

कैरविणीवनं (नपुं०) कुमुदिनी समूह। 'श्रीमान् शशी कैरविणीवनेषु' (जयो० १५/७३)

कैरवी (स्त्री०) [कैरवी+ङीप्] चांदनी, ज्योत्स्ना।

कैलाश: (पुं०) हिमालय पर्वत, हिमगिरि।

कैलास: (पुं०) [के जले लासो दीप्तिरस्य केलास+अण्] हिमालय पर्वत। (जयो० ६/२३) २. पुरुपर्वत (जयो० वृ० २४/१८)

कैलाशपर्वत: (पुं०) पुरुगिरि। (जयो० वृ० २४/१८)

कैवर्त: (पुं०) [के जले वर्तते-वृत्+अच्] मछवा।

कैवल्य (नपुं०) [केवल+ष्यञ्] 'केवलस्य कर्म विकलस्य आत्मनो भाव: कैवल्यम्' (सिद्धि०वि०टी० वृ०४९१) केवलज्ञान को प्राप्त हुआ। २. मुक्ति, मोक्ष।

कैवल्यशर्मन् (वि०) केवलज्ञान गत। (वीरो० २१/२४)

कैशिक (वि०) [केश+ठक्] बालों की तरह सुन्दर।

कैशिक: (पुं०)शृंगार रस, विलासिता।

कैशोरं (नपुं०) [किशोर+अञ्] किशोरावस्था, बाल्यकाल। कौमारकाल।

कैश्यं (नपुं०) [केश+ष्यञ्] बाल समूह, कचपाश, जूड़ा।

कोक: (पुं०) [कुक् आदाने अच्] १. भेड़िया, २. हंस विशेष। ३. चकवा पक्षी। (सुद० १/१०) ४. कोयल, ५. मेंढक।

कोककुटुम्बिनी (स्त्री०) चकवी। दूरं रजस्वलेवंशादपि कोककुटुम्बिनी' (दयो० २/६)

कोकजन: (पुं०) चातक पक्षी। परिपालितताम्रचूडवाग् रविणा कोकजन: प्रगे स वा। (सुद० ३/४)

कोकदेव: (पुं०) १. सूर्य, २. कबूतर, कापोत।

कोकनंद (नपुं०) लाल कमल, अरविन्द। [कोकान् चक्रवाकान् नदति नादयति नद+अच्] 'कोकनदस्यारविन्दर शोभां लोहितमानं दधत्' (जयो० वृ० १६/४१)

कोकपक्षी (स्त्री०) कोक/चक्रवापक्षी।

कोकयुगं (नपुं०) चकवा-चकवी का युगल, चक्रवाक मिथुन। 'कोकयोर्युगं मिथुनं' (जयो० वृ० १५/५१)

कोकरुत: (पुं०) चक्रवाक बिलपन, चकवा का विलाप। 'कोकस्य चक्रवाकस्य रुतेन' बिलपनशब्देन कृता' (जयो० वृ० ९/१०)

कोकलोक: (पुं०) चकवा-चकवी का वियोग (जयो० २/७१)

कोकवत् (वि०) चकवा की तरह। (सुद० १/१०) 'विरज्यतेऽतोऽपि किलैकलोक: स कोकवत्किन्त्वितरस्त्व शोक:। (सुद० १/१०)

कोकवयसि (पुं०) चकवापक्षी। 'कोकवयसि अभियुज्यते दूषणं जायते। (जयो० वृ० ९/३८)

कोकिल: (पुं०) कोयल।

कोकिलपित्सता (वि०) कोयल की कूक से युक्त। अभिसरन्ति तरां कुसुमक्षणे समु चिता: सहकारगणाश्च वै। रुचिरतामिति कोकिलपित्सतां सरसभावभृतां मधुरारवै:।। (वीरो० ६/३५)

कोकूयनं (नपुं०) चक्रवाक का विलाप। (वीरो० १२/१९)

कोकोक्ति: (स्त्री०) चक्रवाक की कहावत। 'कोकस्य चक्रवाकस्योक्ति:' (जयो० १४/११८)

कोकोपश्लोकित (वि०) कोक द्वारा प्रशंसित। (दयो० ११०)

कोङ्क: (पुं०) एक देश का नाम।

कोङ्कण: (पुं०) देखो ऊपर।

कोङ्कणा (स्त्री०) [कोङ्कण+टाप्] नाम विशेष, जामदग्नि की भार्या।

कोजागर: (पुं०) [कौ जागर्ति इति लक्ष्म्या उक्तिरत्र काले] उत्सव विशेष। आश्विन मास की पूर्णिमा का उत्सव।

कोट: (पुं०) [कुट्+घञ्] किला, दुर्ग १. छप्पर, वाड, २. कुटिलता।

कोटपाल: (पुं०) कोतबाल। (दयो० १८)

कोटर: (पुं०) वृक्ष की खोखर। (दयो० २२) [कोटं कौटिल्यं राति राक]

कोटरी (स्त्री०) कुटिया।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कोटि (स्त्री०) १. धनुष का सिरा, धनुष का मुड़ा हुआ हिस्सा। २. अग्रभाग-'परं गुञ्जां इवा भान्ति तुलाकोटिप्रयोजना:' (जयो० वृ० २/१४६) ३० पंक्ति-'गगनाङ्गानां कोटिर्हेपा' (जयो० ६/७)

कोटिक (वि०) सिरा वाला, अग्रभाग वाला।

कोटिश: (अव्य०) [कोटि+शस्] करोड़ों, असंख्य।

कोटीर: (पु०) [कोटिमीरयति ईर्+अण्] १. मुकुट, २. शिखा, चोटी।

कोट्ट: (पुं०) [कुट्ट+घञ्] किला, दुर्ग।

कोट्टवी (स्त्री०) दुर्गादेवी, [कोट्टं वाति वा+क]

कोट्टार: (पुं०) [कुट्ट+आरक्] किलेबंदी वाला नगर, परकोटे घेरे युक्त नगर। २. कुआं, तालाब।

कोण: (पुं०) [कुण् करणे घञ्] १. किनारा, कोना, बिन्दु, सिरा २. एकान्तवास-'रणाय कोणाय (जयो० वृ० १६/३०) 'रहस्यं लब्धमेकान्तवासायेत्यर्थ:' (जयो० १६/३०) 'रण: कोणे क्वणे युद्धे' इति वि ३. वृत्त का बिन्दु।

कोणकुण: (पुं०) खटमल।

कोणातिष्ठित (वि०) कोने में बैठा हुआ। (वीरो० ९/१४)

कोणाकोणि (अव्य०) एक कोने से दूसरे कोने तक। एक-दूसरे कोने तक।

कोणितत्त्वं (नपुं०) संचार, प्रवाह। लालाविलं शोणितकोणितत्त्वान्न जातु रुच्यर्थमिहैमि तत्त्वात्।

कोण्डिन्य: (पुं०) नाम विशेष। (हित०१४) (सुद० १०२)

कोदण्ड: (पुं०) [को: शब्दायमान दण्डो यस्य] धनुष, धनु: 'कोदण्डं धनुरुदेतु' (जयो० वृ० १६/१७) २. स्थान विशेष (जयो० वृ० १६/१७)

कोदण्डक: (पुं०) १. भू प्रदेश, २. धनुष-कोदण्डकं कर्णपथोभुवा न। (जयो० १७/७६) 'कोदण्ड: कार्मुके भुवि इति विश्वलोचन:' (जयो० १७/७६)

कोदण्डधर (वि०) धनुष पर बाण रखने वाली। 'कोदण्डं धनुर्धरन्तीति स्त्री पृषत्परकोदण्डधरा' (जयो० वृ० १०/६९)

कोदण्डभृत् (वि०) धनुर्धारी, धनुर्विद्या निपुण (जयो० ६/१०८)

कोद्रव: (पुं०) [कु+विच्=को, द्रु+अक्+द्रव] कोदों, एक धान्य विशेष।

को न (अव्य०) कौन नहीं। (सुद० ८५)

कोप: (कुप्+घञ्) क्रोध, कोप, गुस्सा, रोष। (समु० ९/२६)

कोप-कारक (वि०) क्रोध करने वाला। 'कोपमाशु पराभूय मनसा क‍ारक:' (समु० ९/२६)

कोपक्रम: (पुं०) रोष युक्त मनुष्य, रुष्टजन।

कोपदेश: (पुं०) रक्त प्रकोप, रक्तस्राव। 'प्रागुस्थितो वियति शोणितकोपदेश:' (जयो० १९/२२) 'कोऽरुणवर्णस्तस्यो-पदेश:' (जयो० वृ० १८/२२)

कोपन (वि०) [कुप्+ल्युट्] क्रोधी, प्रकोपी, रुष्ट, रोषयुक्त।

कोऽपि (अव्य०) कोई भी। (जयो० ४/५२) (सुद० १००)

कोपिन् (वि०) [कोप्+इनि] १. क्रोधी, रुष्ट, रोषयुक्त। (दयो० २/१२) 'स्मर: शरद्धास्ति जनेषु कोपी' (वीरो० २१/१३) २. चिड़चिड़ा, त्रिदोष विकार युक्त। 'कण्ठे कृपाणं प्रकरोतु कोपी' (दयो० २/१२)

कोपवती (वि०) रोगस्थली। (दयो० वृ०१७/१०३)

कोपविधि: (स्त्री०) हनन की प्रकृति (सुद० १०६) राज्ञ: श्रेष्ठितराय कोपविधिवाक् सर्ग: स्वर्ग सत्तम:।

कोपीनं (नपुं०) खण्डवस्त्र, लंगोटी। 'मुनि: कोपीनवासास्स्या-न्नग्नो' वा ध्यानतत्पर:। (दयो० २४

कोपीति (अव्य०) ऐसा कोई भी (जयो० वृ०१/२०)

कोऽप्यपूर्वो हि -कोई अपूर्व ही (सुद० १०८)

कोमल (वि०) [कु+कलच्] १. स्निग्ध, (जयो० ३/११३) 'पीत्वा स्तुतिं कोमलरूपकायाम्' २. मृदुस्पर्श (जयो० वृ० २२/७२) (जयो० ११/९) ३. निर्मल, ४. मृदु, ०सुकुमार, ०सरल, ऋजु। (सुद० १००)

कोमलकंभ (नपुं०) कमल रेशे।

कोमल-पल्लवती (वि०) सुकुमारता युक्त। कोमलाक्षरवती। (जयो० २२/४८) कोमला: श्रवणप्रिया: पदां सुवन्तानां लवा: ककारादयस्तद्वती (जयो० वृ० २२/४८) 'कोमलाश्च ते पल्लवा: पत्राणि तद्वतीति' (जयो० वृ० २२/४८)

कोमल-रूप: (पुं०) स्निग्ध रूप, रमणीय रूप।

कोमल-रूप-काय: (पुं०) रुचिरकाया स्वरूप। 'कोमलं स्निग्धं च तद्रूपं तदेव कायो यस्याम्तां' (जयो० वृ० ११/९)

कोमलाङ्ग (नपुं०) कोमल अंग, लावण्य युक्त शरीर। (जयो० वृ० १२/१२६)

कोमलाङ्गी (वि०) कोमल अंगों वाली, (वीरो० ३/११) सुकुमारता युक्त। 'का कोमलाङ्गी वलये धराया' (जयो० ५/८६)

कोयष्टि: (स्त्री०) [कं जलं यष्टिरिवास्य] टिटहरी, कुररी पक्षी।

कोरक: (पुं०) मोर, कुररी पक्षी।

कोरक: (पुं०) मोर, मञ्जरी, कली। अर्ध विकसित पुष्प। 'पिकोव रसालकोरकं' (दयो० ५३)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कोरकं (नपुं०) मञ्जरी, कली, अर्ध विकसित पुष्प।

कोरित (वि०) [कोर+इतच्] १. कली सहित, अंकुरित। २. चूर्ण युक्त।

कोलः (पुं०) [कुल+अच्] १. सूकर, वराह। २. गोद, अंक, ३. आलिंगन। ४. सन्तरण काष्ठ, पतवार, नदी पार होने का साधन-'स्मर सिन्धु-कोलः' (जयो० १७/३१)

कोलम्बकः (पुं०) [कुल+अम्बच्+कन्] वीणादण्ड, वीणा ढांचा। 'युवतिरुरसीति रागतः स तु कोलम्बकमेवमागतम्' (जयो० १०/२०)

कोला (स्त्री०) [कुल्+ण+टाप्] बदरी।

को वा (अव्य०) और कौन। (जयो० १/९

कोलाहलं (नपुं०) शोरगुल, (समु० २/२४) एक साथ बोलने वालों का स्वर।

कोल्लागकारी (वि०) नाम विशेष, गणधर नाम। (वीरो० १४/५)

कोविद (वि०) [कु+विच् तं वेत्ति विद्+क] विशारद, बुद्धिमान, (जयो० ९/३६, (जयो० १९/३०) विद्वान्, कुशल, प्रवीण, गुणी। 'न को विदानानुमतस्त्वदाशी (जयो० १९/३०)

कोविदारः (पुं०) एक वृक्ष विशेष, कचनार तरु।

कोविदग्रणी (वि०) विद्वानों में प्रवीण। (जयो० १९/८५)

कोशः (पुं०) [कुश+घञ्] १. भण्डार, समूह, ढेर। (सम्य० २४) २. तरल पदार्थों के रखने का पात्र। ३. म्यान, आवरण, म्यान, पात्र। ४. निधि, संग्रह शब्दार्थ संग्रह, शब्द संचय, शब्दावली।

कोशलिकं (नपुं०) [कुशल+ठन्] घूंस, रिश्वत।

कोशातकिन् (पुं०) [कोश+अत+क्वुन्] व्यापार, वाणिज्य, सौदागर।

कोशित् (पुं०) आम्रवृक्ष।

कोषः (पुं०) [कुष्+अच्] भण्डार, आगार समूह, संग्रह, निधि, स्थान, खजाना: (समु० ४/११, जयो० वृ० ६/२४) (जयो० ४/४६, द्रविणागारमपक्षतं स विश्वतोरोचनमृद्धदेश कोषं दधौ श्री धमनिवेशम्' (जयो० १/१७) 'विश्वतोरोचनं सर्वेषां रुचिकारकम्' (जयो० वृ० १/१७) 'विश्वरोचन' नाम कोषं दधाति' (जयो० वृ० १/१७) शब्दशास्त्र (वीरो० २/४४) २ निधान, खड्गावरण-वाजिनं भाति तु भजति मुञ्चति कोषं च मुञ्चति ह्यरातिः' (जयो० ६/१११) 'कोषं खड्गावरणं' (जयो० वृ० ६/१११) म्लान विशेष, जिसमें तलवार को रखा जाता है। ३. नाल, कली, अर्ध विकसित पुष्प। कमलदण्ड-'शिरीष-कोषादपि कोमले ते पदे' वदंति प्रघणं तदेते' (जयो० ३/२५) कोषादपि-नालकादपि (जयो० वृ० ३/२५)

कोषधर (वि०) धन संग्रह सहित।

कोषस्थलं (नपुं०) कोष स्थान, भण्डार गृह। (समु० ४/५)

कोषाध्यक्षः (पुं०) कोषाधिपति, कुबेर (वीरो० ८/२) द्रविणाधिप। (दयो० १/४४)

कोषान्तरुत्थालिकः (पुं०) अपने कोष से उड़ने वाले भ्रमर। (जयो० १/८२) 'कोषान्तरुत्थाः कुसुमनालमध्या-दुद्गतायेऽलय एवरलिका भ्रमराः' (जयो० वृ० १/८२)

कोषापेक्षी (वि०) १. अखण्ड कोषधारी। २. उदर पोषण करने वाला। 'कोषं द्रविणा गारपेक्षत इति कोषापेक्षी निधानोद्धारकर इत्यर्थः' (जयो० वृ० ६/२४) -कोषापेक्षी-स्वोदरपोषणमप्यपेक्षते' (जयो० वृ० ६/२४)

कोष्ठः (पुं०) [कुष्+थन्] हृदय फैंफड़ा। पेट, उदर, २. आभ्यन्तर भाग, ३. अन्नागार।

कोष्ठं (नपुं०) प्रकोष्ठ, परकोटा, चारदीवारी। २. भण्डार गृह।

कोष्ठकः (पुं०) [कोष्ठ+कन्] १. भण्डार गृह, २. प्रकोष्ट, परकोटा।

कोष्ठकं (नपुं०) प्रकोष्ट, स्थान। (वीरो० १३/६)

कोसलः (पुं०) कौशल देश।

कोसला (स्त्री०) अयोध्या।

कोहलः (पुं०) [कौ हलति स्पर्धते] वाद्ययन्त्र।

कोहलफलं (नपुं०) मधूक फलक, महुआ का फल। 'निर्जीर्ण-कोहलफलच्छविरेवमासीत्' (जयो० वृ० १८/२५)

कौ (स्त्री०) पृथिवी, भूमि, धरा, भू। 'चित्तेशयः कौ जयताद यन्तु' (वीरो० १४/१८) (जयो० १/७४)

कौक्कुटिकः (वि०) [कुक्कुट+ठक्] मुर्गे पालने वाला।

कौक्ष (वि०) [कुक्षि+अण्] कोख से बंधा हुआ।

कौक्षेय (वि०) [कुक्षि+ढञ्] उदरजनित, पेट से उत्पन्न होने वाला, क्षुक्षि से उत्पन्न होने वाला।

कौक्षेयकः (पुं०) [कुक्षौ बद्धोऽसिः ढकञ्] खड्ग, तलवार, असि।'

कौङ्कः (पुं०) [कुङ्क+अण्] एक देश विशेष।

कौट (वि०) [कूट+अञ्] निजगृहगत, अपने घर में रहने वाला।

कौटः (पुं०) असत्य, मिथ्या, छल।

कौटकिकः (पुं०) [कूट+क्तन्] बहेलिया।

कौटलिकः (पुं०) [कुटिलिकया हरति मृगान् अङ्गारान् वा] शिकारी, लुहार।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कौटिल्य (वि०) कुटलतापन, वक्रता, दुष्टता। (सुद० १/३४)

कौटिल्यः (पुं०) कौटिल्य नामक अर्थशास्त्र।

कौटिल्यक (वि०) वक्रता, कुटलतापन। 'मृषासाहस-मूर्खत्व-लौल्य-कौटिल्यकादिवत्' (जयो० २/१४५)

कौटुम्ब (वि०) [कुटुम्बं तद्भरणे भोजनमस्य कुटुम्ब+ठक्] पारिवारिक सम्बन्ध, गृहस्थ से सम्बन्धित।

कौटुम्बिक (वि०) [कुटुम्बं तद्भरणं प्रसूतः कुटुम्ब+ठक्] परिवार बनाने वाला, गृहस्थ गत कार्य वाला।

कौणपः (पुं०) [कुणप+अण्] पिशाच, राक्षस।

कौतुकं (नपुं०) इच्छा, कुतूहल, कामना, उत्सुकता, आवेश, आतुरता। (सुद० ३/३३, सुद० २१)

विनोद- 'कौतुकात् किल निरागसोऽङ्गिन्' (जयो० ४/३७) (जयो० २/१३४) 'कौतुकाद् विनोदवशात' (जयो० वृ० २/१३४)

फल, परिणाम-'कौतुकं को नु कस्मान्न' (जयो० वृ० ३/६८)

पुष्प कौतुकन्त्व भिलाषोऽपि कुसुमे नर्महर्षयोः इति विश्वलोचनः'

कौतुकगृहं (नपुं०) आमोद भवन। (भक्ति०१३)

कौतुकधृक (वि०) विनोदवान्, उत्सुकता वाला। (जयो० ११/९०) 'समन्ततः कौतुकधृक् सुमान्यम्' (जयो० ११/९०)

कौतुकपरिपूर्ण (वि०) १. कौतुकता से युक्त, २. पुष्पों से परिपूर्ण। 'कौतुकपरिपूर्णतया याऽसौ षट्पदमतगुञ्जाभिमता' (सुद० ८२)

कौतुकपूर्ण (वि०) कौतुकता से युक्त, विनोद युक्त। (सुद० २/७३)

कौतुकभाजि (वि०) कौतुक के भण्डार। 'स्वरूपतः कौतुकभाजि साऽरं नवे वयस्तत्र पदं दधार' (समु० ६/२७)

कौतुकभूमि (स्त्री०) हर्षदायक स्थान। कौतुकभूमिरमुष्या नयनानन्दाय विलसतु नः। (सुद० ८४)

कौतुकमङ्गलं (नपुं०) महान् उत्सव, विनोद क्रिया, हर्ष भाव।

कौतुकवती (वि०) विनोदवती। (सुद० ८२)

कौतुकसंग्रहः (पुं०) पुष्प समूह। कौतुकानां पुष्पाणां संग्रहः संप्राप्तिः (जयो० २४/७)

कौतुकसम्विधानं (नपुं०) विनोदछटा, हर्ष भाव की प्रमुखता। (समु० १/२३) 'पदे पदे कौतुकसम्विधाना' (समु० १/२३)

कौतुकसेवा (स्त्री०) १ आनन्दभाव, हर्ष भाव, विनोदपूर्ण सेवा। (जयो० ४/१५) २ पुष्प उपलब्धता-कौतुकानि पुष्पाणि च तेषां सेवया उपलब्ध्या सहिता' (जयो० वृ० ४/१५)

कौतुकाशुगः (पुं०) काम, कामदेव। २. पुष्पबाण कौतुकाशुगेन कामदेवेन पुष्पबाणेन' (जयो० वृ० २१/६) 'कौतुकस्य कुसुमस्य आशुगो बाणो यस्य' (जयो० वृ० ५/६०)

कौतुकिता (वि०) १. कौतुकता की व्याप्ति, पुष्पों की व्याप्ति। 'स्वयं कौतुकितस्वान्तं कान्तमार्गेनिरेऽङ्गना' (सुद० ८३) 'कौतुकानि पुष्पाणि विद्यन्ते यत्र स कौतुकी तस्य भावः कौतुकिता विनोदसहिता च' (जयो० वृ० ३४/४०)

कौतुकोत्पत्तिः (स्त्री०) हर्षोत्पत्ति, विनोदोत्पत्ति, आनन्दभाव, उत्पन्न होना। 'सत्कौतुकोत्पत्तिभुवोऽमुकस्य' (समु० ६/१८)

कौतूहलं (नपुं०) [कुतूहल+अण्] इच्छा, जिज्ञासा, कामना, उत्सुकता, उत्कण्ठा।

कौत्कुच्य (वि०) कुचेष्टा, अशुभ भावना।

कौन्तिक (वि०) [कुन्तः प्रहरणमस्य ठञ्] कुन्त/भाला चलाने वाला।

कौन्तेयः (पुं०) [कुन्त्याः अपत्यं ठक्] कुन्ती का पुत्र युधिष्ठिर भीम, अर्जुन भी।

कौप (वि०) [कूप+अण्] कुएं से सम्बन्धित, कुएं से निर्गत, कुएं से प्राप्त।

कोपाकुलः (पुं०) कोप समूह, क्रोध युक्त। (१२/६)

कौपीनं (नपुं०) [कूप+खञ्] १. योनि, उपस्थ, गुप्ताङ्ग, गुह्येन्द्रिय। २. लंगोट, खण्डवस्त्र। (जयो० १/३८)

कौपीनभावः (पुं०) लंगोटी, वस्त्र चिल्लिका। 'कौ पृथिव्यां पीनभावं प्रफुल्लावस्थामुत वनवासिनां वानप्रस्थानाम्' (जयो० वृ० १८/४७) 'कौपीनस्य वस्त्रचिल्लिकाया भावमयते शेषवस्त्रादिपरिग्रहं परित्यजति' (जयो० वृ० १८/४७)

कौब्ज्य (वि०) [कुब्ज+ष्यञ्] वक्रता, कुटिलता, कुबड़ापन।

कौमार (वि०) [कुमार+अण्] तरुण, (वीरो० ८/१७) (जयो० ३/४२) (सम्य० २१) (जयो० ८/१७) 'युवा, कुंवारापन, बाल्य। (जयो० २३/२८)

कौमारकं (नपुं०) तारुण्य। (समु० ६/१७)

कौमारकालः (पुं०) कुमारावस्था, तरुणकाल, लड़कपन। (दयो० ११२)

कौमारिकेयः (वि०) [कुमारिका+ढक्] अविवाहिता स्त्री का पुत्र।

कौमाल्यगुणं (नपुं०) कुमारता के गुण। (सुद० ३/२९)

कौमुदं (नपुं०) श्वेत कमल। (वीरो० १/३) 'कौमुदस्तोमम्-रीचकार' रात्रि में खिलने वाली कमलिनी। (सुद० ९१) कौमुदमंधयन्तम् (जयो० ११/

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कौमुद (वि०) पृथिवी को आनन्दित करने वाला। 'कौ पृथिव्यां मुदः प्रसन्नतायाः' (जयो० वृ० १/७४) 'कौ पृथिव्यां मुदं हर्षम्' (जयो० वृ० २८/३) 'स्फोटयितुं हि कमलं कौमुदं नान्वमन्स्त' (जयो० २८/३)

कौमुदाप्तिमय (वि०) पृथिवी पर प्रसन्नता वाला। 'कौ भुवि मुदाप्तिमयः प्रसादयुक्तः' (जयो० ६/११२) कुमुदसमूहस्य विकासकारस्य' (जयो० वृ० ६/११२)

कौमुदाश्रय (वि०) पृथिवी पर प्रसन्नता फैलाने वाला, पृथिवी का आश्रय। कुमुदानां समूहः कौमुद कैरवसमूहस्तस्याश्रयः विकासकारिणी' (जयो० वृ० ३/३७) कौ पृथिव्यां मुदाश्रयः प्रसत्तिकरः कौमुदानामाश्रयः' (जयो० ५/११)

कौमुदी (स्त्री०) [कौमुद+ङीप्] चांदनी, ज्योत्स्ना, चन्द्रिका। (सुद० ४/१३) कुमुदश्रामिय कौमुदीति चन्द्रस्येवं चन्द्रोतिपदे' (जयो० १५/६३)

कौमोदकी (स्त्री०) [कौ पृथिव्याः मोदक कुमोदक+अण्+ङीप् कुं पृथिवीं मोदयति कुमोद+अण्+ङीप्] विष्णु की गदा।

कौरव (वि०) [कुरु+अण्] १. कुरुओं से सम्बन्ध रखने वाला।

कौरवः (पुं०) कुरु की सन्तान, (सम्य० ६५) दुर्योधनादि, कौरवं नाम वीरं अनाय खलु सर्वसाधारणायेक्षते' (जयो० १८/५)

कौरवः (वि०) पृथिवी पर शब्द करने वाला। 'कौ भुवि रञ्जनाय प्रसक्त्यर्थ खलु स्वमीक्ष्यते शब्दं करोति।' (जयो० वृ० ८/५६)

कौरव्यः (पुं०) कुरु की सन्तान।

कौल (वि०) [कुल+अण्] कुल से सम्बन्धित, पैतृक, आनुवंशिक।

कौलः (पुं०) कुल सम्बंधी।

कौलकेयः (पुं०) [कुल+ढक्] वर्णसंकर, व्यभिचारिणी स्त्री का पुत्र।

कौलटिनेयः (पुं०) [कुलटा+ढक्] वर्णसंकर से उत्पन्न पुत्र।

कौलिक (वि०) [कुल+ठक्] कुल से सम्बन्धित, कुल में प्रचलित।

कौलिकः (पुं०) जुलाहा, तन्तुवाय।

कौलीन (वि०) [कुल+खञ्] कुलीन।

कौलीन्यं (नपुं०) [कुलीन+ष्यञ्] कुलीनता, वंश की शालीनता। यदि जन्म मन्यतामभ्यो कौलीन्यमिति कथ्यते। (हि०सं०२३)

कौलूतः (पुं०) [कुलूत+अण्] कुलूत देश का नृपति।

कौलेयक (पुं०) [कुल+ढकञ्] शिकारी कुत्ता, श्वान।

कौबेर (वि०) [कुबेर+अण्] कुबेर से सम्बन्ध रखने वाला।

कौश (वि०) [कुश+अण्] रेशमी। कुश का बना हुआ।

कौशरः (पुं०) कुशल भाव। (जयो० ५/९४) 'कौशरस्य कुशलभावस्य' (जयो० ४/६५)

कौशरः (पुं०) पृथिवी का जल। 'कौ पृथिव्यां शरस्य जलस्य' (जयो० ४/६५) पृथ्वी के बाण रूप। (जयो० व०५/९४)

कौशरधर (वि०) चातुर्यधारिका, कुशलता को धारण करने वाला। (जयो० ९/८७) 'इति कौशरधर-वाचमुत्तमां'

कौशलं (नपुं०) [कुशल+अण्] प्रसन्नता, कुशलता, समृद्धि, क्षेम, दक्षता, चतुराई। (वीरो० ५/३०) चातुर्य। (जयो० २/५९)

कौशलदेशः (पुं०) कौशल नामक देश (समु० ४/२०)

कौशलधर (वि०) कुशलता धारक, चातुर्य युक्त। (जयो० वृ० ९/८७)

कौशलापुरी (स्त्री०) कौशल नगरी। (वीरो० १४/१६)

कौशलिकं (नपुं०) [कुशल+ठक्] घूंस, रिश्वत।

कौशलिका (स्त्री०) [कौशलिक+टाप्] [कुशल+अण्+ङीप्] १. उपहार भेंट, प्राभृत, चढ़ावा। २. अभिवादन, नमन।

कौशलेयः (पुं०) [कौशल्या+ढक्] १. राम, दाशरथी, कौशल्या का पुत्र राम।

कौशल्या (स्त्री०) [कोशलदेशे भवा] दशरथ की रानी, ज्येष्ठ भार्या।

कौशम्बिका (स्त्री०) [कुशाम्ब+अण्] कौशाम्बी नगरी, वत्स देश की राजधानी। (दयो० ९)

कौशाम्बी (स्त्री०) [कुशाम्ब+अण्+ङीप्] कौशाम्बी नगरी।

कौशिक (वि०) [कोशिक+अण्] म्यान में स्थित।

कौशिक (पुं०) उलूक, उल्लू। 'सोऽस्तु कौशिकादिह विद्वेषो' (जयो० ८/९०) 'प्रकाशमान समये कौशिकात् उलूकात् परः अन्यः को नरो विद्वेषी' (जयो० वृ० ८/९०)

कौशिकी (स्त्री०) नदी, जो बिहार में बहती है।

कौशेयं (नपुं०) [कोशस्य विकारः-ढञ्] रेशम, रेशमी वस्त्र।

कौसीद्यम् (नपुं०) [कुशीद+ष्यञ्] १. ब्याज का व्यवसाय, २. आलस्य, आकर्मण्यता।

कौसुम (वि०) [कुसुम+अण्] सुमन युक्त, पुष्पता। (सुद० २/८)

कौसुम-संविकासः (पुं०) विकसित सुमन। 'सभ्या मुखो कौसुम-संविकास' (जयो० ८/२७)

कौसुम्भक (वि०) [कुसुम+अण्] सुमन युक्त, पुष्पता। (सुद० २/८)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कौसुम्भक-भाजनं (नपुं०) कुसुम्भ से भरे हुए पात्र। (जयो० ८/२७) 'निम्नानि गन्धर्वशकैः कृतानि यत्राथ कौसुम्भक-भाजनानि। (जयो० ८/२७)

कौसृतिकः (पुं०) [कुसृति+ठक्] ठग, छली, २. बाजीगर, बदमाश।

कौस्तुभः (पुं०) [कुस्तुभो जलधिस्तत्र भवः] एक रत्न, जो वक्षस्थल की शोभा बढ़ाने वाला होता है। (वीरो० ७/११)

क्नूय् (अक०) चूं चूं शब्द करना।

क्रकचः (पुं०) [क्र-इति कचति शब्दायते-क्र+कच्+अच्] आरा।

क्रकचच्छदः (पुं०) केतकी तरु।

क्रकचपनः (पुं०) सागौन वृक्ष।

क्रकचपादः (पुं०) छिपकली।

क्रकरः (पुं०) [क्र इति शब्दं कर्तुं शीलमस्य-क्र+कृ+अच्] आरा।

क्रतुः (पुं०) [कृ+क्तु] १. यज्ञ, शक्ति।

क्रतुराज् (पुं०) यज्ञ स्वामी।

क्रथ् (अक०) क्षति पहुंचाना, चोट करना, मार डालना।

क्रथनं (नपुं०) [क्रथ+ल्युट्] वध, हत्या।

क्रथनकः (पुं०) [क्रथ+कन्] उष्ट्र, ऊँट।

क्रन्द् (अक०) चिल्लाना, रोना।

क्रन्दनं (नपुं०) विलाप, रुदन।

क्रम् (सक०) जाना, पहुंचाना।

क्रमः (पुं०) [क्रम्+घञ्] अनुक्रम, गति, कदम, पग। 'भवतः सान्निध्यमस्मिन् क्रमे' (सुद० ११३) 'रागादयः क्रमात्' (सुद० १३५)

क्रमः (पुं०) शक्ति, बल। 'क्रमः शक्तौ परिपाट्याम्' इति वि०' (जयो० २३/३६) * परिपाटी, परम्परा।

क्रमकृत् (वि०) किलानुकर्त्री पंक्ति में चलते हुए। 'पिपीलिकाली-क्रमकृत्-प्रशस्तिः' (जयो० ११/३३)

क्रमणः (पुं०) [क्रम्+ल्युट्] १. पाद, पैर, पग, २. अश्व, घोड़ा।

क्रमणं (नपुं०) १. कदम। २. अतिक्रमण, उल्लंघन।

क्रमणान्वयः (पुं०) आक्रमण। 'प्रदोषसिंहक्रमणान्वयानां' (जयो० १५/२८) कृते आक्रमणेऽन्वयः क्षुब्धरूपतया' (जयो० वृ० १५/२८)

क्रमतः (अव्य०) [क्रम्+तसिल्] क्रमशः, उत्तरोत्तर, क्रमानुसार।

क्रमदित्स (वि०) पंक्तिशः क्रमशो दित्सा। (जयो० १२/११८)

क्रमरोधः (पुं०) सीमातिक्रमण का निषेध। (जयो० २१/७५)

क्रमशः (अव्य०) [क्रम्+शस्] क्रमानुसार, एक सा, एक मात्रा में। 'क्रमशः सकलै रथात्मनस्तकमारुह्यतया निपातनम्' (समु० २/२४)

क्रमयुगं (नपुं०) युगानुसार। (समु० ५/२)

क्रमविचारकरी (वि०) क्रमशः विचार करने वाला।

क्रमविक्रमं (पुं०) क्रम से पराक्रम को प्राप्त।

क्रमागत (वि०) क्रम से आया हुआ। 'क्रमशः आगतः क्रमागतः' (जयो० वृ० २१/७५) क्रमात् क्रम से-'कुत्सितेषु सुगतादिषु क्रमाद्धा' (जयो० २/२६)

क्रमिक (वि०) [क्रम्+ठन्] उत्तरोत्तर, क्रमानुसारी। २. परंपरागत, आनुवंशिक।

क्रमुः (पुं०) [क्रम्+उ] सुपारी तरु।

क्रमेलः (पुं०) [क्रम्+एल्+अच्] ऊँट। उपवेशयति स्म तद्गतः सहसा सादिवरः क्रमेलकम्' (जयो० वृ० १३/७३)

क्रमेलकः (पुं०) ऊँट।

क्रयः (पुं०) [क्री+अच्] खरीद।

क्रयणं (नपुं०) [क्री+ल्युट्] खरीदना, क्रय करना।

क्रयलेख्यं (नपुं०) दानपत्र, विक्रय पत्र।

क्रयविक्रयः (पुं०) व्यापार, व्यवसाय।

क्रयिक (वि०) व्यापारी, व्यवसायी।

क्रव्य (वि०) बिक्री योग्य, बिकाऊ।

क्रव्यं (नपुं०) कच्चा मांस।

क्रशिमन् (नपुं०) [कृश्+इमनिच्] कृश, दुर्बल, क्षीण।

क्राकचिकः (पुं०) [क्रकच+ठक्] आराशक।

क्रान्त (वि०) निस्सृत, निकला, गया हुआ।

क्रान्तः (पुं०) अश्व, घोड़ा। * आंदोलन।

क्रान्तिः (स्त्री०) १. गति, प्रगमन। २. अग्रभूत, पादगमन। ३. अभिभूत करने वाला।

क्रायक (वि०) क्रेता, खरीददार, व्यापारी, व्यवसायी।

क्रिमिः (स्त्री०) कीड़ा, कीट।

क्रिया (स्त्री०) १. ०कार्यपद्धति, ०प्रक्रिया, २. ०रचनाधर्मिता, ३. ०उपचार ४. ०क्रियागति-व्यवसाय, ५. कृत्य, चेष्टा, ६. श्रम ७. ०आचरण, ८. ०कर्म। ९. द्रव्य की पर्याय। पाणिग्रहणात्मिक क्रिया। (जयो० १/६७)

क्रिया-कलापः (पुं०) कार्यकलाप, रीति-रिवाज।

क्रियाकारः (पुं०) अभिकर्ता, कार्यकर्ता।

क्रियाकाण्डः (पुं०) विधि विधान, कार्य की विधि, बाह्य विधि।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

धर्माधिककर्तृत्वमपी दधाना बाह्यं क्रियाकाण्डमिताः स्वमानात्। (वीरो० १८/४९)

क्रियागुप्ति (स्त्री०) क्रियापद, कविरचना। (जयो० ७/२)

क्रियाद्वेषिन् (पुं०) पक्षपात।

क्रियानयः (पुं०) क्रिया की प्रधानता। 'यः उपदेशः क्रियाप्राधान्य'।

क्रियानिर्देशः (पुं०) साक्ष्य, गवाही।

क्रियापदं (नपुं०) ०कवि रचना पाटव ०क्रियावाचक, ०क्रिया-गुप्ति। (जयो० ७/२)

क्रियापारगमी (वि०) परिश्रमशील।

क्रियायोगः (पुं०) क्रिया के साथ सम्बन्ध।

क्रियारुचिः (स्त्री०) ज्ञान, दर्शन, चरित्र आदि के प्रति रुचि।

क्रियावशः (पुं०) क्रिया का प्रभाव।

क्रियावाचक (वि०) कर्म को प्रकट करने वाला।

क्रियावाचिन् (वि०) क्रिया से बना हुआ शब्द।

क्रियावादिन् (पुं०) क्रियावादी, कर्ता के बिना क्रिया सम्भव नहीं है, इसलिए उसका समवाय आत्मा में है, ऐसा कहने वाले। जैनदर्शन में ३६३ मत हैं, उनमें क्रियावादी मत भी है। 'क्रियां अस्तीत्यादिकां वदितुं शीलं येषां ते क्रियावादिनः।' (जैन०ल०३७८) 'क्रियां जीवादिपदार्थोऽस्तीत्यादिकां वदितुं शीलं येषां ते क्रियावादिनः' (जैन०ल०३७८)

क्रियाविधिः (स्त्री०) कर्म करने का नियम, कार्य पद्धति।

क्रियाविशाल (नपुं०) तेरहवें पूर्व का नाम. जहां लेखन विधि को व्याख्याएं हों। जहां संयम क्रिया, छन्दक्रिया और विधानादि का सभेद वर्णन हो। 'किरियाविसालो णइ-गय-लक्खण-छंदालंकार संढत्थो-पुरिस-लक्खण्णादीणं वण्णणं कुणइ' (जय०धृ०१/४८)

क्रियाविशेषणं (नपुं०) १. क्रिया की विशेषता प्रकट करने वाला शब्द। २. विधेय विशेषण।

क्रियासंक्रान्तिः (स्त्री०) अध्यापन, शिक्षण, दूसरों को शिक्षा देना।

क्री (सक०) खरीदना, क्रय करना, मोल लेना।

क्रीड् (सक०) खेलना, मनोरंजन करना, घूमना। 'क्रोडे मुहुर्वारिम्वारं वेल्लति क्रीडति' (जयो० वृ० १३/९०)

क्रीडः (पुं०) [क्रीड्+घञ्] खेल, किल्लोल, उमंग, आमोद, प्रमोद, उत्साह।

क्रीडकः (पुं०) [क्रीड्+घञ् स्वार्थे कन्] खेल, उत्साह, उमंग। (दयो० ८३)

क्रीडनं (नपुं०) [क्रीड्+ल्युट्] खेलना, मनोरंजन करना।

क्रीडनकः (पुं०) खेल साधन।

क्रीडनकतः (पुं०) खेल साधन, क्रीड़ास्कन, खिलौना। सत्यवस्तुपरिबोधने विशो भान्ति क्रीडनकतो यतः शिशोः। (जयो० २/३०) 'क्रीडनकान्येवेति क्रीडवकतः' (जयो० वृ० २/३०)

क्रीडनवकारक (वि०) क्रीड़ा को करने वाला मदारी, बाजीगर, नट। (जयो० वृ० २५/५)

क्रीडा (स्त्री०) [क्रीड्+अ+टाप्] खेल, आमोद, प्रमोद, उत्साह, उमंग, किलोल, हंसी।

क्रीडाकर (वि०) क्रीडा करने वाला। (जयो० वृ० १६/१५)

क्रीडागृहं (नपुं०) आमोदकक्ष, खेलस्थान।

क्रीडानुरक्त (वि०) क्रीडा में तत्पर। (दयो० ८३)

क्रीडापर (वि०) क्रीडा युक्त, क्रीडा में तत्पर, खेल में लगा हुआ। 'वयस्यवर्गेण समं कदापि क्रीडापरेणेदमुदन्तमापि' (समु० १/२१)

क्रीडारत्नं (नपुं०) मैथुन, कामकेलि।

क्रीण् (सक०) खरीदना, क्रय करना। 'यः क्रीणाति समर्घ मितीदं विक्रीणीतेऽवश्यम्' (सुद० ९१)

क्रुञ्चः (पुं०) जलकुक्कुटी, बगुला।

क्रुध् (अक०) ०क्रोध करना, ०कोप करना ०क्रोधित होना। 'दग्धं क्रुधा कामधनुर्हरेण' (जयो० ११/६७)

क्रुध् (अक०) ०चिल्लाना, ०रोना, ०चीखना, ०विलाप करना।

क्रुष्ट (वि०) [क्रुश्+क्त] चिल्लाया हुआ, पुकारा हुआ।

क्रूर (वि०) ०निर्दय, ०निष्ठुर, ०कठोर, ०दारुण, ०भयंकर, ०अनिष्टकारी।

क्रूरकर्मन् (नपुं०) रक्त रंजित।

क्रूरकृत् (वि०) निर्दय, निर्मम।

क्रूरकोष्ठ (वि०) मृदुता का अभाव।

क्रूरगंधः (पुं०) दुर्गन्ध।

क्रूरदृश (वि०) कुदृष्टि वाला।

क्रूरलोचनं (नपुं०) कुपित दृष्टि।

क्रेतृकुलं (नपुं०) ग्राहक। (जयो० १३/८७)

क्रेतु (पुं०) क्रेता, खरीददार।

क्रोञ्चः (पुं०) [कुञ्च्+अच्] १. एक पक्षी, २. पर्वत विशेष।

क्रोडः (पुं०) [क्रुड+घञ्] १. अङ्क, गोद, वक्षस्थल, छाती, सीना। २. गर्त, गड्ढा। 'पितरौ तु विषेदतुः सुतां न तथाऽऽ-जन्मनिजाङ्कवर्द्धिताम्' (जयो० १३/२२) 'अङ्के क्रोडे यशोविशिष्टं' (जयो० वृ० ३/२३)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

क्रोडपत्रं (नपुं०) प्रान्तवर्ती लेख, सम्पूरक।

क्रोडीकरणं (नपुं०) आलिंगन करना।

क्रोडीमुखः (पुं०) [क्रोड्या मुखमिव मुखमस्याः] गेंडा।

क्रोधः (पुं०) [क्रुध+घञ्] कोप, क्रोध, गुस्सा।

क्रोधन (वि०) [क्रुध+ल्युट्] क्रोध युक्त, कुपित।

क्रोधालु (वि०) [क्रुध्+आलुच्] क्रोध वाला, गुस्सैल, चिड़चिड़ा। क्रोध युक्त क्रोधाविष्ट।

क्रोशः (पुं०) [क्रुश्+घञ्] चीख, चीत्कार: चिल्लाहट, चिल्लाना।

क्रोष्टु (पुं०) [क्रुश+तुन्] गीदड़।

क्रौञ्चः (पुं०) [क्रुञ्च+अण्] १. कुररी, बगुला, जलकुक्कुटी। २. एक गिरि विशेष।

क्रौञ्चरिपुः (पुं०) कार्तिकेय, परशुराम।

क्रौञ्चसूदनः (पुं०) परशुराम, कार्तिकेय।

क्रौर्यं (नपुं०) [क्रूर+ष्यञ्] क्रूरता, कठोरता। (वीरो० ११/४)

क्लन्द् (सक०) ०चिल्लाना, ०पुकारना, ०रोना, ०विलाप करना।

क्लम् (अक०) थकना, अवसन्न होना, आलस्य होना।

क्लमः (पुं०) [क्लम्+घञ्] थकावट, अवसाद, क्लान्ति।

क्लममिषं (नपुं०) आलसताव्याज, आलस्य के बहाने। 'क्लममिषेण जिनभीप्सितमेया' प्राणपतिं प्रति तदा सुवेषा' (जयो० १४/३२)

क्लान्त (वि०) [क्लम्+क्त] १. थका हुआ, श्रम युक्त, उदासीन, 'भोगोपयोगो-चितविश्यारतः क्लान्तः' (दयो० ३९) आलस्य युक्त। २. मुर्झाया हुआ, म्लान।

क्लान्तिः (स्त्री०) [क्लम्+क्तिन्] थकावट, श्रम।

क्लिद् (अक०) गीला होना, आर्द्र होना, तर होना।

क्लिन्न (वि०) [क्लिद्+क्त] गीला, आर्द्र, तर।

क्लिश् (अक०) दुःखी होना, पीड़ित होना, दुःख देना, सताना, कष्ट होना।

क्लिशित (वि०) [क्लिश्+क्त] पीड़ित, दुःखित, कष्ट युक्त।

क्लृप्त (वि०) १. रचित, गुंफित।

क्लृप्तिः (स्त्री०) चमक, कान्ति (वीरो० २०/११) 'श्रुत्यैव स स्यादिति तूपक्लृप्तिः'

क्लिष्टिः (स्त्री०) [क्लिश्+क्तिन्] दुःख, वेदना, पीड़ा, सेवा।

क्लीव (वि०) [क्लीब्+क] नपुंसक। १. हिजड़ा, बधिता किया गया। २. पुरुषार्थहीन, भीरु, दुर्बल, कायर।

क्लेदः (पुं०) [क्लिद्+घञ्] १. आर्द्र, गीला तर, नमी। २. मवाद भेद, तनूत्पन्नभेद।

क्लेदभावः (पुं०) सड़ानभाव (वीरो० १६/२५) (जयो० २/१३०)

क्लेदसम्भार (वि०) मेद युक्त। 'क्लेदसम्भारः तनूत्पन्नभेदः समूहस्तस्य धाराभिरन्वितं माक्षिकम्' (जयो० वृ० २/१३०)

क्लेशः (पुं०) [क्लिश्+घञ्] पीड़ा, वेदना, कष्ट, दुःख।

क्लेशसंभृत (वि०) कष्टकारक। (जयो० वृ० २८/१२)

क्लैव्य (वि०) १. नपुंसकता, नामर्दी, पुरुषार्थहीनता। (सुद० ८४)

क्लैव्ययुत (वि०) नपुंसकता युक्त, 'कपिले त्वया स वंक्लैव्य युतः' (सुद० ८४)

क्लैव्यसम्पन्न (वि०) नपुंसकता से युक्त। (जयो० वृ० ११/५२)

क्लोमं (नपुं०) [क्लु+मनिन] फेफड़े।

क्व (अव्य०) [किम्+अत्, कु आदेशः] कहां, किधर, किसे, कभी नहीं, कहीं, किसी जगह। (जयो० १/३१) 'मतिं क्व कुर्यान्नरनाथपुत्री' (जयो० ३/८५) 'क्व कुशलं कुशलं कुरुताज्जिनः' (जयो० ९/३६)

क्वचन (अव्य०) अन्यत्र। 'क्वचनान्यत्रापरिचितस्थाने' (जयो० वृ० १८/३२) 'भास्वानसौ क्वचन यापितसर्वरात्रिः' (जयो० १८/३२)

क्वचित् (अव्य०) एक जगह, किसी स्थान पर कहीं-कहीं-'मणयोऽपि हि क्वचित्' (जयो० २/१२) 'क्वचिदाश्रमे समु चिते निरतोऽसा वात्मने रुचिते' (जयो० २/११६) 'क्वचित्कदाचिच्छुभयोगतोऽपि' (सम्० ८/३७)

क्वण् (अक०) अस्पष्ट शब्द करना, बजना। क्वणन्, क्वणन्त्यो' (वीरो० २/३५) ०क्वणान्कि्ङ्किणिकापदेशात्।

क्वणः (पुं०) [क्वण्+अप्+घञ्] शब्द, ध्वनि, झंकार।

क्वत्य (वि०) [क्व+त्यप्] किसी स्थान से सम्बन्ध रखने वाला।

क्वणित (वि०) ध्वनित। (वीरो० ६/२९)

क्वणितकिङ्किणी (स्त्री०) करधनी की किंकिणी। (वीरो० ६/२९)

क्वापि (अव्य०) कदापि, कभी भी, कहीं भी कोई भी। (जयो० वृ० २३/३२) 'जले स्थले क्वाप्युदले गुहानां चैत्यानि वन्दे जिनपुङ्गवानाम्' (भक्ति० ३४) 'कुत्रचिदपि-जयो० वृ० ५/३३, तिष्ठोत्क्वापि तदा तदङ्गण' (मुनि० १२)

क्ष

क्षः (पुं०) यह संयुक्त अक्षर है। इसमें क्+ष का संयोग है।

क्षः (पुं०) [क्षि+ड] विनाश, क्षय, हानि, अन्तर्धान। २. विद्युत, ३. क्षेत्र, खेत, ४. राक्षस। ५. विष्णु का नरसिंह अवतार।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

क्षण (सक०) चोट पहुंचाना, क्षति पहुंचाना, आघात करना।

क्षणः (पुं०) [क्षण+अच्] १. उत्सव, आनन्द, हर्ष। 'क्षणाः उत्सवा' (जयो० वृ० ८५) प्रसन्नता-शरदं भुवि वर्षणात् पुनः क्षणवल्लक्षणमेत्य यस्तुनः।' (सुद० वृ०५४) २. जन्म, उत्पत्ति 'क्षणा जन्मानि (जयो० वृ० ८५) ३. लक्षण, शरीर के विभ्रम विलास आदि लक्षण। 'क्षणो विलास- विभ्रमादिलक्षण' (जयो० वृ० ३/३) ४. अवसर, काल, समय, अवकाश, (जयो० ४/६८) (सम्य० १३५) अंश, भाग, केन्द्र, 'क्षण मात्र क्षणेन लाभ महता महीन्तु' (वीरो० १८/८) 'सति पश्यामि पश्यामि दुःखतो यान्ति मे क्षणाः। (सुद० ९०) बभूवायं महाराजो महावीरप्रणोः क्षणे' (सुद० १/४५) 'निश्माङ्गलि ओष्ठतः क्षणं समु पस्थाय पतन सुलक्षणाः।' (सुद० ३/२४) 'क्षणादुदीरयन्नेवं करं व्यापारमादरात्' (सुद० ७८)

नाशक 'णमो सव्विस्सवीणं चैकाहिकादिकरुगक्षणम्' (जयो० १९/२०)

क्षणं (नपुं०) समय, अवसर, किञ्चित्काल। 'क्षणं किञ्चित्कालं' (जयो० १०/६५) 'समु द्यता वारयितुं क्षणेन' (सुद० १२०) 'समाह सद्यः कपिलक्षणेन सद्यः कपिलः क्षणेन, (सुद० ३/३९)

क्षणः (पुं०) स्तोक नाम, प्रमाण विशेष। 'परिणामात्प्रदन्तर-व्यतिक्रमकालः क्षणः' (सिद्ध वि०टी० वृ०३८९) एक परमाणु का दूसरे परमाणु के अतिक्रमण का जो काल है। थोवो खणो णाम (धव० १३/२९९)

क्षणकरः (पुं०) चन्द्र, शशि।

क्षणचरः (पुं०) निशाचर, राक्षस।

क्षण-क्षीणं (नपुं०) क्षणमात्र की कमी। नो चेत्क्षणक्षीण-विचारवन्ति दिनानि दीर्घाणि कुतो भवन्ति।

क्षणत (त्रि०) क्षणभर भी (जयो० वृ० २५/४) (वीरो० १२/२०)

क्षणद (वि०) आनन्द प्रद, आनन्द प्रदान करने वाले। क्षणदं क्षणमाध्यानात् कर्णालङ्करणं कुरु' (जयो० ३/३४) 'क्षणदं आनन्दप्रदं-(जयो० वृ० ३/३८) ३. क्षणभर, मुहूर्तभर, किञ्चित्मात्र।

क्षणदः (पुं०) ज्योतिषी, निमित्तशास्त्री।

क्षणदा (स्त्री०) रात्रि, रात, निशा। (जयो० १८/३९) 'क्षणमुत्सवं ददातीति क्षणदा' क्षणमुत्सवं राति खण्डयतीति क्षणदा' 'क्षणं पल्किन ददातीति क्षणदा' (जयो० वृ० १५/३९)

क्षणदाप्रणीतिः (स्त्री०) रात्रि की प्रवृत्ति। क्षणदाया रात्रेः प्रणीतिः प्रवृत्तिर्यदा। (जयो० १५/३९)

क्षणदाप्रवृत्तिः (स्त्री०) १. रात्रि की प्रणीति, २. क्षणिकवादिता की प्रवृत्ति। (जयो० वृ० १८/६०) ३. मुनियों की वृत्ति-स्याद्वादवाणी युक्तः उदितपिच्छानां मयूरपिच्छधारिणां दिगम्बराणां समूहस्तस्य वृत्तिः प्रवृत्तिः स्याद्वाद भाक् स्याद्वादमनेकान्तवादं भजतीति' (जयो० वृ० १८/६०)

क्षणदेसः (पुं०) एक मात्र प्रदेश। (सुद० ३/२) क्षीणदेश, कमर का पतला हिस्सा। 'उदर-क्षणदेशसम्भुवा समयं। (सुद० ३/२)

क्षणद्युतिः (स्त्री०) प्रभा, विद्युत् प्रभा, चमक।

क्षणनं (नपुं०) [क्षण+ल्युट्] घात, आघात, नाश, हानि।

क्षणनिश्वासः (पुं०) शिंशुक।

क्षणभङ्गुर (वि०) चंचल, नश्वर, क्षणस्थाई।

क्षणभर (वि०) क्षणमात्र (जयो० २५/४३)

क्षणभूः (स्त्री०) क्षणमात्र।

क्षणभूरा (स्त्री०) क्षणमात्र। (सुद० ९९) क्षणभूराम्ता न स्वप्नेऽप्युत यत्र न यानि बतत्वाम्' (सुद० ९९)

क्षणमात्रं (अव्य०) क्षणभर के लिए।

क्षणरामिन् (पुं०) कबूतर, कपोत।

क्षणमेव (अव्य०) क्षणमात्र ही। (दयो० १/२)

क्षणरुचिः (स्त्री०) क्षणभर की रुचि/प्रीति। विद्युत्... 'क्षणेऽसोऽनन्तरक्षणे तत इति क्षणरुचिः शम्पेव भाति' (जयो० वृ० २५/३) 'क्षणरुचिः कमला प्रतिदिङ्मुखं'

क्षणलसत् (वि०) क्षणमात्र के लिए प्रकाशित। (जयो० २५/३)

क्षण-लाक्षणिक (वि०) थोड़ी देर भर भी। (दयो० ६६)

क्षणविध्वंसिन् (वि०) क्षणभर में नष्ट होने वाला।

क्षणविभङ्गदेशिनी (स्त्री०) जिनवाणी पवित्र लक्षण वाले सप्त भंगों के युक्त। 'क्षणस्य उत्सवस्य विभङ्गदेशिनी निषेधकर्त्री। जिन वाणी सज्जं पवित्रं लक्षण स्वरूपं येषां ते च ते विभङ्ग वितर्काः 'स्यादस्ति स्यान्नस्तीत्यादिरूपास्तद्देशिनी तेषां प्ररूपिका। (जयो० वृ० ३/१०)

क्षणसम्विधानं (नपुं०) क्षण सदृश। 'आयुः समु द्र- द्वितयो-पमानक्षणं' स्म जाने क्षण सम्विधानम्' (वीरो० ११/२४)

क्षणसाक्षिक (वि०) क्षण में नष्ट होने वाला। 'यदिह पौद्गलिकं क्षणसाक्षिकं तदनुकर्तुमपुष्य किलाक्षिकम्' (समु० ७/१९)

क्षणस्थितिः (स्त्री०) अनेक क्षण स्थायित्व। 'नित्यैकतायाः

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

परिहारकोऽब्द: क्षणास्थितेस्तद्विनिवेदिशब्द:। (जयो० २६/८९)

क्षणिक (वि०) [क्षण+ठन्] क्षणस्थायी, चिरकाल तक नहीं रहने वाला। (जयो० वृ० ६/७५)

क्षणिकनर्मन् (नपुं०) क्षणिक विनोद। क्षणिकनर्माणि निजयशोमणि मसुलभं च जहातु। (सुद० ८९)

क्षणिकवाद: (पुं०) सौगत दर्शन का एक वाद, एक विचारधारा, जिसमें वस्तु को प्रतिक्षण बदलने वाला माना जाता है। 'क्षणिकं नाम सुगतमतं' (जयो० ५/४२)

क्षणिकत्व (वि०) क्षण चमत्कारित्व, 'दृष्टिरेव लभते क्षणिकत्वम्' (जयो० ५/४२)

क्षणिन् (वि०) [क्षण+इनि] अवकाश रखने वाला। २. क्षणस्थायी।

क्षणोत्तर: (पुं०) क्षणानन्तर। (वीरो० ५/२)

क्षणोद्भव: (पुं०) क्षण में उत्पन्न, काल युक्त। (जयो० २/७९)

क्षत (वि०) [क्षण्+क्त] १. घायल, क्षति ग्रस्त, पतित। २. चोट ग्रस्त, काटा गया। ३. व्रण (जयो० ६/९३)

क्षतकास: (पुं०) खांसी, क्वास।

क्षतजं (नपुं०) रुधिर, रक्त, पीप। (जयो० ८/९)

क्षतयोनि: (स्त्री०) कौमार्यच्युत।

क्षप्त-विक्षत (वि०) घाव जन्य, क्षतिग्रस्त, चोट जन्य।

क्षतवृत्ति: (स्त्री०) दरिद्रता, जीविका से रहित।

क्षतव्रत (वि०) व्रत च्युत, व्रत में अतिचार लगाने वाला।

क्षतशून्य (वि०) प्रतिमा हानि। (जयो० ५/९३)

क्षतान्वित (वि०) व्रण युक्त। (जयो० ६/९३)

क्षति: (स्त्री०) [क्षण+क्तिन्] ०घाव, ०चोट, ०बाधा, ०हानि, ०ह्रास, ०न्यूनता। क्षय 'सम्यक्त्वमाद्यक्षतितो विभाति'। (सम्य० १३२)

क्षत्तृ (पुं०) [क्षद्+तृच्] १. मूर्तिकार द्वारपाल, सारथि। २. दासी पुत्र।

क्षत्र: (पुं०) [क्षण्+क्विप्] ०अग्रगण्य, ०अधिराज्य, ०शक्ति, प्रभुता, सामर्थ्य। २. नक्षत्र-(जयो० वृ० ५/२७) ३. क्षत्र-जो तीर्थंकर भगवान के ऊपर छाते के रूप में सुशोभित होते हैं। तीन क्षत्र युक्त सिंहासन।

क्षत्रत्राणक: (पुं०) ढाल, रक्षा कवच। (जयो० २७/२७)

क्षत्रत्राणकार: (पुं०) रक्षा कवच, ढाल, छाता।

क्षत्रप (वि०) क्षत्रियों का शिरोमणि। (जयो० २२/३३)

क्षत्रिय: (पुं०) [क्षत्रे राष्ट्रे साधु तस्यापत्यं जातौ वा] शास्त्रोपजीवि, कल्याणकारक प्रवृत्ति युक्त, शक्ति संपन्न। 'अस्तु सर्वजनशर्मकारणं जीविका भुजभुवोऽसिधारकम्। निर्बलस्य बलिना विदारणमन्यथा सहजकं सुधारणम्।। (जयो० २/११२) 'क्षतात् त्रायन्ते ते क्षत्त्रा: परित्राणकरा क्षत्रिया' (वीरो० १/३९) 'परित्राणाय बाहुभ्यां सम्मदाद्रणपरैर्हि निर्वृणै: प्रस्फुरिदिवगतसङ्करव्रणै:। सुप्टु शौर्य रसर्मम्पितैस्तदा रेजिरे परिधृता उरश्छदा:। (जयो० ७/९४)

यतमानान्द्वढाशयान्। क्षत्रिया इति संज्ञात: गिजगाद महाशय:।। (हित०सं०८) स्वीय-बाहुबलगर्विता भुजास्फोटनेन परिवर्तिस्वजा:। सम्प्रभूवुरथियो: सदोजसो बद्धसन्नहनका किलकैश:।। (जयो० ७/९१)

'शस्त्रोपजीविन: क्षत्रिया:। (जयो० २/१११)

क्षत्रिय-जीविका (स्त्री०) क्षत्रियों की आजीविका। 'क्षत्रियस्य असिधारणं जीविकाऽस्ति।' (जयो० वृ० २/११२)

क्षत्रियता (वि०) क्षत्रियपना। चतुष्पदेपूत खगेष्वगेषु वदन्तहो क्षत्रियतान्यमेषु। विकल्पनामेव दधत्तदादिमसौ निराधार वचोऽभिवादी।। (वीरो० १७/२७)

क्षत्रिय-बुद्धि: (स्त्री०) क्षत्रिय बुद्धि वाले, महावीर, अन्तिम तीर्थंकर। (वीरो० १४/४७)

क्षत्रियवर्ण: (पुं०) क्षत्रिय वर्ण।

'धवलो यशसेत्यनेकवर्ण: क्षत्रियवर्णे किलावतीर्ण:' (समु० ६/४१)

क्षत्रियाणी (स्त्री०) [क्षत्रिय+ङीष्] क्षत्रिय जाति की स्त्री।

क्षत्रियी (स्त्री०) [क्षत्रिय+ङीष्] क्षत्रियाणी, क्षत्रिय नारी।

क्षत्रियेश्वर-वर: (पुं०) क्षत्रिय राजा। 'य: क्षत्रियेश्वर-वरै परिधारणीय:। (वीरो० २२/२६) जैन धर्म प्रवर्तक तीर्थंकर क्षत्रिय थे। क्षत्रिय दूसरों की दु:ख से रक्षा करते थे। ऐसा क्षत्रिय धर्म व्यापारी वैश्यवर्ग के हाथों में आया। जैन धर्म प्राणिमात्र का हितैषीधर्म है, इसे लोकधर्म या राजधर्म होना चाहिए था, पर वह एक जाति या सम्प्रदाय वालों का धर्म माना जा रहा है, यह बड़े दु:ख की बात है।

क्षंतृ (वि०) प्रशान्त, सहिष्णु, विनम्र, विनीत, क्षमाशील।

क्षप् (अक०) १. उपासना करना, २. संयमी होना, आराधना करना। ३. (सक०) क्षय करना-'इत्येव मोहं क्षपयन्नशेष' (भक्ति० ३१)

क्षपक (वि०) चरित्र मोहनीय को क्षय करने वाले साधु। १.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तपस्वी 'मोहक्खयं कुणंतो उत्तो खवओ जिणिंदेहिं' (भाव सं० ६६०) चारित्रमोह क्षपणकरिण: क्षपका:। (धव० १/१८२)

क्षपकश्रेणी (स्त्री०) गुणस्थान की सीढ़ी। मोहनीय कर्म का क्षय करता हुआ आत्मा जिस श्रेणी पर आरुढ़ होता है। 'क्षयमुपगमयन्नुद्गच्छति सा' (त० वा० ९/१८)

क्षपणं (नपुं०) १. कर्म का पृथक्‌भाव। नाश, विनाश, क्षय। 'अट्ठण्हं कम्माण मूलुत्तर-भेय भिण्ण-पयडि-ट्ठिदि-अणुभाग-पदेसाणं जीवादी जो णिस्सेस-विणासो तं खवणं णाम।' (धव० १/२१५) 'मान-माया-मदामर्षक्ष-पणात्क्ष-पण: स्मृत:' (उपासका०८५९)

क्षपणक: (पुं०) [क्षपण+कन्] यति, साधु, श्रमण। (जयो० वृ० १/९७)

क्षपणकाधिपति: (पुं०) यतिवर। 'यतिवरेण क्षपणकाधिपतिना' (जयो० वृ० १/९७)

क्षपणत्वधारी (वि०) दिगम्बरत्वधारी, श्रमणत्वधारण करने वाला। 'समस्त-सत्त्वैकहितप्रकारि मनस्तयाऽन्ते क्षपणत्व-धारी।' उपैत्य वै तीर्थकरत्वनामाच्युतेन्द्र तामप्यगमं सुदामा।। (वीरो० ११/३६)

क्षपणी (स्त्री०) [क्षप्+ल्युट्+ङीप्] १. चप्पू, २. जाल।

क्षपच्यु (स्त्री०) अपराध।

क्षपंत (वर्त०कृ०) क्षय करने वाले। प्रत्यग्रहीत्सापि समात्मनीनं चैन:। क्षपन्तं सुतरामदीनम्। (सुद० ११९)

क्षपा (स्त्री०) [क्षप्+अच्+टाप्] रात्रि, रात, रजनी। 'यन्मीलितं सपदि कैरविणी भिराभि: क्षीणा क्षपास्तमितमस्युत तारकाभि:। (जयो० १८/२१)

क्षपाकर: (पुं०) चन्द्रमा, चंद्र, शशि। 'उदिते समु द्धतपदै: क्षपाकरे प्रगये ततोऽनुपदिभि: स्फुरत्तरे। (जयो० १५/९५)

क्षम् (सक०) १. क्षमा करना, शान्त करना, 'क्षन्तव्यं तदहो पुनीत भवता देयं च सूक्तामृतम्।' (सुद० १२४) 'क्षम्यतामिति विमुत्युपार्जितम्' (सुद० १००) २. आज्ञा देना, ३. प्रतीक्षा करना। ४. सक्षम होना, सहन करना।

क्षम (वि०) [क्षम्+अच्] १. समर्थ, सक्षम, योग्य, पर्याप्त। 'किन्त्वद्यापि न वेत्सि तां विकलतां तान्नासि मोक्तुंक्षम:' (मुनि० १९) निर्मातुं क्षम: समर्थ: स्यात्। (जयो० ९/२८)

क्षमणं (नपुं०) प्रायश्चित्त, अन्यकृत् अपराध क्षमा। 'चित्तेऽपराध-क्षमणादिवेद' (भक्ति०९) 'क्षमणं स्वस्यान्यभूतापराधक्षमा' (जैन०ल०३८२) 'खामणं स्वस्यान्यभूतापराधक्षमा' (भ०आ०टी० ७०)

क्षमता (स्त्री०) ०सामर्थ्य, ०शक्ति, ०बल, ०धैर्य, ०साहस, ०सहनशक्ति। (सम्य० ७०) 'क्षमता दातुमहो बलाय मे' (जयो० १३/३०) 'कस्यास्ति क्षमता परस्य स पुनस्त्वां पातयेदापदि।' (मुनि० २०)

क्षम्प (स्त्री०) [क्षम्+अङ्+टाप्] शान्ति विनत, सहिष्णुता धैर्य। (जयो० ७/३५) (जयो० वृ० ५/१११) 'क्षमा सहिष्णुता यस्यां सा' (जयो० वृ० ११/८८) 'परिवृत: क्षमयाप्यपरिग्रह:' (समु० ७/२९) 'राज्ञी क्षमा ब्रह्मगुणैकनाले' (सुद० १०३) ०क्षमा गुण विशेष, ०धर्म विशेष, ०दश धर्मों में एक धर्म उत्तम क्षमा। दुष्ट लोगों के द्वारा कहे गये गाली गलौच, हंसी मजाक आदि निरादर के वचन तथा ताड़न, मारण, शरीरच्छेदन सरीखी आपत्तियों के जाने पर भी मन में मैलापन न आने देना।' (तत्त्वार्थ सू०वृ०१४२, सू०९/६) क्षमा क्रोधनिग्रह: कालुष्यानुत्पत्ति: कालुष्याभाव, सहनभाव। 'क्रोधोत्पत्ति-निमित्ताविषह्याक्रोशादि-संभवे कालुष्योपरम: क्षमा' (त० वा० ९/६) २. पृथ्वी-'समु द्रेण तान्ता व्याप्ता कमधिकृत्य क्षमा पृथ्वी (जयो० वृ० ११/८८) ३. गुण विशेष-क्षमासन्तोषादयस्ते कीदृशा अचला निश्चला अपि' (जयो० वृ० १/९४) पञ्चम्या नभस: प्रकृत्य-भवतादूर्जस्विनी या ह्यमा, तावद्घस्त्रशतावधौ निवसतादेकत्र लब्ध्वा क्षमां' (मुनि० ७)

क्षमाक्षक (वि०) क्षमाधारक। 'क्षमाया: सहिष्णुताया अक्ष: शकट एव क आत्मा यस्य स:।' (जयो० वृ० १/१०८)

क्षमाकर (वि०) क्षमा करने वाला।

क्षमागुणं (नपुं०) क्षमा की विशेषता।

क्षमाधर (वि०) क्षमा धारक। 'गुरुमाप्य स वै क्षमाधरं सुदिशो मातुरथोदयन्नरम्' (सुद० ३/२०)

क्षमाधर्मन् (नपुं०) क्षमाधर्म, विनय धर्म।

क्षमापदं (नपुं०) क्षमामार्ग।

क्षमाप्रार्थना (स्त्री०) क्षमा याचना, क्षमा करना, क्षमा भावना। 'क्षमाप्रार्थनां करोमि' (जयो० वृ० १७/६०)

क्षमाप्रार्थिन् (वि०) क्षमा याचक, विनत, नम्रशील। 'तस्यै-विनतोऽस्मि क्षमाप्रार्थी भवामि।' (जयो० वृ० २६/३३)

क्षमाभाव: (पुं०) क्षमा परिणाम।

क्षमाभू: (स्त्री०) सहिष्णु स्वभाव। 'माभूत्क्षमाभूर्लभतेऽवलग्नं सैषा सुकाञ्चीगुणतो ह्यविघ्नम्। (जयो० ११/२४)

क्षमाभृत् (वि०) क्षमाशील। 'क्षमाभृतो मुनेर्वक्त्रात् प्रतिध्वनिरियान भूत्। (समु० ७/३४)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

क्षमायाचना (स्त्री०) क्षमाप्रार्थना, क्षमा भावना, नम्रभावना।

क्षमाशील (वि०) क्षमा युक्त, क्षमाधर, क्षमा भृत। (जयो०

क्षमितृ (वि०) क्षमाशील, सहनशील, धैर्यवान्, क्षमा स्वभावी।

क्षय (वि०) १. हानि, नाश, २. ह्रास, क्षीणता, न्यूनता, ३. अंत, समाप्ति, विनाश। (सम्य० ८२/) ४. आत्यन्तिकी निवृत्ति। 'क्षयो निवृत्तिरात्यन्तिकी' (त० वा० २/१) क्षयो नाम अभावो-'खओ णाम अभावो' (धव० ७/९०) 'कर्मणां आत्यन्तिकी हानिः क्षयः' (त०श्लो०२/१) 'अत्यन्तविश्लेपः क्षयः' (पंचास्तिकाय अमृत वृ०५६)

क्षयः (पुं०) [क्षि+अच्] गृह, निवास, आवास।

क्षयथु (स्त्री०) [क्षि+अथुच्] तपेदिक, खांसी।

क्षयिन् (वि०) [क्षय+इनि] क्षय होने वाला, ह्रास जन्य, विनाशक, हीनता।

क्षयिष्णु (वि०) [क्षि+इष्णुच्] क्षय करने वाला, विनाशक।

क्षयोपशमः (पुं०) अनन्तगुण हीनता, क्षय और उपशम का उदय। 'क्षयोपशम उद्गीतः क्षीणाक्षीणबलत्वतः' (त०श्लोक०२/३)

क्षयोपशमलब्धिः (स्त्री०) क्षयोपशम की प्राप्ति। आत्मा को अपने हित की ओर दृष्टिगत होना। विशुद्धि के कारण अनंतगुणे हीन होकर उदीरणा को प्राप्त होना।

क्षयोपशान्तिः (स्त्री०) क्षयोपशम की उपलब्धि। आत्मा को अपने हित की ओर दृष्टिगत होना। 'एकास्ति लब्धि-दुरितस्यतादृक् क्षयोपशान्तिर्यत प्राप्य तादृक्। (सम्य० ४२/

क्षर् (अक०) १. बहना, २. प्रवाहित होना, ३. खिसकना, सरकना, ४. निकलना, रिसना, टपकना, ५. घटना, मिटना।

क्षर् (सक०) देना, प्रदान करना। 'सुष्ठु न क्षरति न दुग्धं ददातीति' (जयो० १७/५४)

क्षर (वि०) [क्षर्+अच्] निस्सृत होने वाला, निकलने वाला, पिघलने वाला।

क्षरणं (नपुं०) [क्षर्+ल्युट्] बहना, टपकना, निकलना, रिसना, झरना।

क्षरद (वि०) झरते हुए। 'क्षरद-क्षर-सौध-सत्वरा' (जयो० वृ० २६/४) 'क्षरन्निर्व्रजच्च तदक्षर-सौधस्त्वं' (जयो० वृ० २६/४)

क्षर-सौधः (पुं०) स्वच्छतर चौक। 'सर्वतश्चत्वरस्य मङ्गल-मण्डलस्य पूरणे त्वरा' (जयो० २६/४)

क्षरिणी (स्त्री०) नदी, सरिता, बरसात। (जयो० १/३)

क्षरिन् (पुं०) [क्षर्+इनि] टपकने का मौसम, बरसात का समय।

क्षल् (सक०) धोना, साफ करना, पोंछना। क्षालयति वस्त्रं। 'वक्त्रं तथा क्षालयितुं जलं च। (वीरो० ५/९) वारा वस्त्राणि लोकानां क्षालयामास या पुरा। ज्ञानेनाद्याऽऽत्म-निश्चितमभूत् क्षालितुमुद्यता।' (सुद० ४/३६)

क्षात्र (वि०) [क्षत्र्+अण्] रक्षा से सम्बन्धित।

क्षात्रं (नपुं०) क्षत्रिय कुल, क्षत्रियत्व भाव।

क्षात्रकुलं (नपुं०) क्षत्रियकुल। सुताभुजः किञ्च नराशिनोऽपि न जन्म किं क्षात्रकुलेऽथ कोऽपि। भिल्लाङ्गजश्चेत् समभूत्कृतज्ञः गुरो ऋणीत्थं विचरेदपि ज्ञः।। (वीरो० १७/३१)

क्षात्रयशः (पुं०) क्षत्रिय यश, क्षत्रियत्व प्रकाशक। वाराशिवंशस्थितिराविभाति भोः पाठका, क्षात्रयशोऽनुपाती। (वीरो० २/७)

क्षान्त (भू०क०कृ०) [क्षम्+क्त] सहिष्णु, धैर्यवान्, सहनशील शान्तप्रिय।

क्षान्तिः (स्त्री०) [क्षम्+क्तिन्] क्षमा, क्रोधादिनिवृत्तिः क्षान्तिः' क्रोध निग्रह, शान्त भाव, धैर्य। 'दयेव धर्मस्य महानुभावा क्षान्तिस्तथाऽभूत्तपसः सदा ना। (वीरो० ३/१६) क्षान्ति सहनशीलता रखना 'भूतव्रत्यनुकम्पा दान सराग संयमादियोगः क्षान्तिः शौचमिति सद्वेद्यस्य' (त०सू०६/१२, वृ०८९) (सम्य० ८४)

क्षान्तु (वि०) [क्षम्+तुन्] सहनशील, धैर्यवान्, सहिष्णु।

क्षाम (वि०) [क्षै+क्त] १. क्षीण, हीन, निर्बल, कृश, २. दग्ध। ३. क्षुद्र, तुच्छ।

क्षार (वि०) [क्षर्+ण] संक्षरणशील, तिक्त, कटु, खारयुक्त।

क्षारः (पुं०) रस, अर्क, राव, शीरा।

क्षारकः (पुं०) [क्षार+कन्] १. खार, रस, २. अर्क, ३. शीरा। (जयो० ६/१०१) ४. मंजरी, कलिका, ५. पराग, ६. राख। (जयो० ६/१०१)

क्षारणं (नपुं०) [क्षार+णिच्+ल्युट्] दोषारोपण।

क्षारिका (स्त्री०) [क्षर्+ण्वुल+टाप्] भूख, बुभुक्षा।

क्षारित (वि०) रिसता हुआ, निकलता हुआ, प्रवाहित।

क्षालनं (नपुं०) [क्षल्+णिच्+ल्युट्] प्रक्षालन, धोना, साफ करना, छिड़कना। 'चान्द्रीचयैः क्षालन-नामगूढे' (वीरो० २१/८) 'अम्भसा समु चितेन चांशुकक्षालनादि परि-पठ्यतेऽनकम्। (जयो० २/८०) 'क्षालनेन वस्त्रस्य निर्मला भवति।' (जयो० १८/६६)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

क्षालयामास धोने या पोंछने स्वच्छ किया। 'वारा वस्त्राणि लोकानां क्षालयामास या पुरा। (सुद० ४/३६) 'स्वान्तं हि क्षालयामास' (समु० ९/१७) क्षालयितुं-प्रक्षालन करने के लिए। 'वक्त्रं तथा क्षालयितुं जलं च' (वीरो० ५/९)

क्षालित (वि०) [क्षल्+णिच्+क्त] स्वच्छ किया हुआ, प्रक्षालित, प्रमार्जित। 'रणरेण्वा धूसरितं क्षालितमरिदारदृगजलौघेन। (जयो० ६/३८) क्षालितं धौतं (जयो० वृ० ६/३८)

क्षायिक (वि०) कर्मों में अभाव से उत्पन्न होने वाला। (त०सू०२/१) 'क्षय: कर्मणोऽत्यन्तविनाश:।

क्षायिक-अनंत-उपभोग: (पुं०) कर्म के क्षय से विभूतियों की प्राप्ति।

क्षायिक-अनन्तभोग: (पुं०) भोगान्तराय के विनाश होने पर अनन्त भोग सामग्री की प्राप्ति। 'कृत्स्न-भोगान्तरायतिरो भावात् परमप्रकृष्टो भोग:। (त० वा० २/४)

क्षायिक-उपभोग: (पुं०) उपभोगान्तराय के शान्त होने पर यथेष्ट उपभोग के साधन उत्पन्न होना।

क्षायिकचारित्रं (नपुं०) चारित्र मोहनीय के क्षय से उत्पन्न होने वाले चारित्र, यथाख्यातचारित्र। 'षोडश-कषाय-नव-नोकषायक्षयात् क्षायिकं चारित्रम्' (त०वृ०२/४)

क्षायिकज्ञानं (नपुं०) ज्ञानावरण के क्षय से उत्पन्न होने वाला ज्ञान केवलज्ञान। 'ज्ञानावरणक्षयात् क्षायिकज्ञानं केवलम्' (त०श्लोक २/४)

क्षायिकदानं (नपुं०) दान देने में बाधा का अभाव।

क्षायिकभाव: (पुं०) कर्मस्कन्धों के विनाश से जो आत्मपरिणाम होता है, वह भाव क्षायिकभाव है, 'क्षय: प्रयोजनं यस्य भावस्य स क्षायिक:, क्षायिकस्य भावो क्षायिक भाव:।

क्षायिकलाभ: (पुं०) निर्विघ्नता पूर्वक साधनों की प्राप्ति।

क्षायिक-वीर्य: (पुं०) वीर्यान्तराय के क्षय से प्रादुर्भूत शक्ति।

क्षायिक-सम्यक्त्वं (नपुं०) सात प्रकृतियों के अत्यन्त क्षय से जो सम्यक्त्व प्रादुर्भूत होता है 'सत्त-पयडिक्खएणुप्पण्ण सम्मत्तं (धव० १/१९२) शुद्धात्मादिपदार्थविषये विपरीता-भिनिवेश रहित: परिणाम: क्षायिकसम्यक्त्वमिति भव्यते।' (परमात्म प्र०६१)

क्षायिकसम्यग्दृष्टि: (स्त्री०) मिथ्यात्व का निराकरण 'निराकृत-मिथ्यात्व: क्षायिकसम्यग्दृष्टिरित्याख्यायते' (त० वा० ९/४५)

क्षायिकी (स्त्री०) क्षय को उत्पन्न करने वाला। 'क्षय: प्रयोजनमस्या इति क्षायिकी' (अनगारधर्मामृत २/११४)

क्षायोपशमिक: (पुं०) कर्मों के क्षय और उपशम से उत्पन्न। 'कर्मण्णां क्षयादुपशमाच्चोत्पन्नो गुण: क्षायोशमिक:' (धव० १/१६१)

क्षारतंत्रं (नपुं०) क्षारद्रव्य घावों को शुद्ध करने वाली पद्धति, एक चिकित्सा पद्धति।

क्षिण् (सक०) छीलना। 'काष्ठं यदादाय सदा क्षिणोति' (जयो० २६/९०)

क्षिति: (स्त्री०) पृथ्वी, घर, स्थान।

क्षितिभृत (वि०) पृथ्वी धारक, पृथ्वी पालक नृप। (जयो० ९/३४, ९/३५)

क्षिप् (सक०) १. फेंकना, छोड़ना, डालना, २. भेजना, ३. दृष्टि डालना, देखना। आक्षिपत् (जयो० ७/३) क्षिपन्-इतस्ततोऽवलोकयन्। ४. दत्तं सूतिकया शवं च कमपि क्षिप्त्वाऽऽगतेनाऽथवा। (मुनि० ११) ५. व्यतीत करना-क्षिपेत् कालं चार्तवमेत्य गेहिसदनं तत्र क्षिपेदार्यिका। (मुनि० २८)

क्षिपणं (नपुं०) [क्षिप्+क्यून्] झिड़कना, फेंकना।

क्षिपणि: (स्त्री०) १. चम्पू। २. जाल।

क्षिपण्यु: (नपुं०) शरीर।

क्षिपा (स्त्री०) १. रात्रि, २. भेजना।

क्षिप्त (भू०क०कृ०) [क्षिप+क्त] फेंका हुआ, डाला हुआ। 'क्षिप्तोऽपि पङ्के न रुचिं जहाति' (सुद० १२०) 'क्षिप्ताऽसि विक्षिप्त इवाधुना तु' (सुद० ३/४०)

क्षिप्त-कुक्कर: (पुं०) पागल कुत्ता।

क्षिप्तचित्त (वि०) उदास मन, विक्षिप्त मन।

क्षिप्तदेह (वि०) आराम युक्त शरीर।

क्षिप्यमान (शानच् प्रत्यय) फेंकता हुआ। वह्नि: किं शान्तिमायाति क्षिप्यमानेन दारुणा। (सुद० १२६)

क्षिप्र (वि०) [क्षिप्र+रक्] आशुगामी।

क्षिप्रं (अव्य०) शीघ्र, तुरन्त, जल्दी।

क्षिप्रकारिन् (वि०) आशुकारी।

क्षिया (क्षि+अङ्ग+टाप्) विनाश।

क्षीजनं (नपुं०) सरसराहट, एक ध्वनि विशेष, जो छिद्र युक्त प्रदेशों से निकलती है।

क्षीण (वि०) [क्षि+क्त] १. कृश, निर्बल, पतला। २. घटा हुआ, कम हुआ, समाप्त। ३. सुकुमार, शक्तिहीन। हलकी-'क्षीणे रागादिसन्ताने' (सम्य० ११५) क्षीण शब्द

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

का अर्थ नष्ट हो जाना भी है। (सम्य० ११५) 'क्षीणा अभावनापन्ना:' (जैन०ल०३९२)

अस्तमित-'क्षीणा क्षापास्तमितमप्युततारकाभि:।' (जयो० १८/२१)

अशक्त-'क्षीणं वीक्ष्य विजेतुम्भुपगत: स्फीतो नरत्वं प्रति' (वीरो० २२/३३)

क्षीण-कषायः (पुं०) कषाय रहित, सभी प्रकार के मोह का व्यदेश। (सम्य० १४९) 'क्षीणा कषाया तेषां ते क्षीणकषाया:। द्रव्यकर्माणां कषाय-वेदनीयानां विनाशात्तन्मूला अपि भावकषाया: प्रलयमुपगता इति क्षीणकषाया, इति भण्यन्ते' (भ०आ०टी० २७) मोह का अत्यन्त क्षय-द्वादश गुणस्थानवर्ती-'उपशमश्रेणिविलक्षणेन क्षपकश्रेणिमार्गेण निष्कषाय-शुद्धात्म भावना बलेन क्षीणकषाया: द्वादश-गुणस्थानवर्तिनो भवन्ति।' (वृहद, द्रव्य०सं०७३)

क्षीणता (वि०) कृशता, शक्तिहीन। 'परोपकार: परस्मायनुग्रह-बुद्धि: सर्वं उत्तरोत्तरं क्षीणतामवाप्त:' (वीरो० १/३३)

क्षीणधन (वि०) निर्धन, गरीब, धन रहित, ०रंक।

क्षीणपाप (वि०) पाप से विमुक्त।

क्षीणपुण्य (वि०) पुण्य का अभाव।

क्षीणमोह (वि०) मोह क्षय को प्राप्त। पृथक्त्वाय वितर्कस्तु य: श्रेणावात्मरागयो:। क्षीणमोहपदे तस्मैएकत्वायाधुनात्म:।। (सम्य० १४८) मोहस्य तु क्षये जाते क्षीणमोहं प्रचक्षते। क्षीणमोह नामक गुणस्थान-'स मोहं पातयामास समोऽहं जिनपैरिति। अनुभूतात्म-सामर्थ्योऽप्यनु भूतदयाश्रय:।। आत्म-सामर्थ्यं येन स मोहं। (जयो० २८/१९) पातयामास क्षीणमोहनामक गुणस्थानं प्राप्तवानिति' (जयो० वृ० २८/१९)

क्षीबता (वि०) उन्मत्तता, पागलपन। (जयो० ७/१७)

क्षीरः (पुं०) [घस्यते अद्यसे घस्+ईरन्] दूध, दुग्ध (जयो० ३/७)

क्षीरं (नपुं०) दुग्ध, दूध।

क्षीरजः (पुं०) चन्द्र, शशि।

क्षीरजा (स्त्री०) लक्ष्मी।

क्षीरनीरं (नपुं०) गुण-दोष। पानी और दूध। 'क्षीर-नीर शब्दाभ्यामत्र गुण-दोषौ गृह्येते।' (जयो० वृ० ३/७)

क्षीरतनयः (पुं०) चन्द्र।

क्षीरतनया (स्त्री०) लक्ष्मी।

क्षीरद्रुमः (पुं०) अश्वत्थवृक्ष।

क्षीरधात्री (स्त्री०) ०धाय, ०दाई मां, ०दूध पिलाने वाली। 'क्षीरं धारयति दधाति या सा क्षीरधात्री-स्तनपायिनी-(नृला० वृ० ६/२८)

क्षीरधिः (पुं०) दुग्धसागर,

क्षीरनिधिः (पुं०) दुग्धसागर। ०सागर, ०नीरधि, ०समुद्र।

क्षीरनीरं (नपुं०) प्रगाढ़ता, एकरूपता, गाढालिंगन।

क्षीरपः (पुं०) शिशु, बच्चा, दूध पीने वाला बच्चा।

क्षीरभाति (वि०) दुग्ध से भरे हुए। 'वत्सेन क्षीरभरितस्तनता-मुद्यानमालेव वसन्तेन प्रफुल्लभावं' (दयो० ५४)

क्षीरवारिः (पुं०) दुग्ध समु द्र।

क्षीरविकृतिः (स्त्री०) जमा हुआ दूध।

क्षीरवृक्षः (पुं०) [पुं०] बड़, गूलर, ऊमर, कटूमर, पाकर मधूक वृक्ष।

क्षीरशरः (पुं०) मलाई, दूध की मलाई।

क्षीरसमुद्र (पुं०) क्षीर सागर। (जयो० १/८, ९)

क्षीरसारः (पुं०) मक्खन।

क्षीरस्रवी (स्त्री०) एक ऋद्धि विशेष, जिस ऋद्धि के प्रभाव से आहार दुग्ध परिणत हो जाते हैं। अथवा जिसके प्रभाव से मुनि वचन सुनते ही मनुष्य या तिर्यंच के दु:ख शान्त हो जाते हैं। सुखोत्पादक वचन। (जयो० व१०१९/८०) 'णमो खीरसवीणं तु गण्डमालादिदारणम्। (जयो० १९/७०)

क्षीरादः (पुं०) शिशु, दूध पीता बच्चा।

क्षीराब्धिः (पुं०) दुग्धसागर, क्षीरनिधि, ०उदधि।

क्षीरान्नं (नपुं०) खीर, दूध एवं चावल से बना तरल पदार्थ।

क्षीरान्नस्थाली (स्त्री०) खीर की थाली। 'तावतैकत्र स्थाने क्षीरान्नस्थाली सम्पन्ना सती दृष्टिपथमागता। (दयो० १७)

क्षीरिका (स्त्री०) [क्षीर+ठन्+टाप्] दूध से निर्मित पदार्थ।

क्षीरिन् (वि०) [क्षीर+इनि] दूध देने वाली।

क्षीरोदपूरः (पुं०) क्षीर सागर का पूर। (सुद० १२/११)

क्षीव् (अक०) मतवाला होना, उन्मत्त होना।

क्षीव (वि०) [क्षीव्+क्त] उत्तेजित, मदोन्मत्त।

क्षु (सक०) क्षींकना, खांसना। (क्षौति)

क्षुज्जय (वि०) भूख जीतने वाला।

क्षुण्ण (भू०क०कृ०) [क्षुद्+क्त] कूटा हुआ, कुचला हुआ।

क्षुत् (नपुं०) [क्षुद+क्विप्] १. छींक। २. छुधा, ०क्षुधा, भूख। (त०वा०९/९)

क्षुतं (नपुं०) [क्षु+क्त] छींक।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

क्षुता (स्त्री०) [क्षुत+टाप्] छींक।

क्षुद् (सक०) १. कुचलना, मसलना, रगड़ना, पीसना। २. उत्तेजित करना।

क्षुद् विजय (वि०) भूख जीतने वाला, क्षुधाजयी।

क्षुद्र (वि०) [क्षुद्+रक्] १. तुच्छ, नीच, अधम, २. दुष्ट, ३. क्रूर, ४. कृपण, निर्धण, ५. संकीर्ण। (जयो० २४/८७)

क्षुद्रकम्बुः (पुं०) छोटा शंख।

क्षुद्रकुष्ठं (नपुं०) निम्न कोढ़।

क्षुद्रकण्टिका (स्त्री०) घुंघरु।

क्षुद्रचंदनं (नपुं०) लाल चन्दन।

क्षुद्रजन्तुः (पुं०) छोटा जीव, लघु प्राणि।

क्षुद्रजन्मन्ः (नपुं०) तुच्छ जन्म। (वीरो० १०/३४)

क्षुद्रदंसिका (स्त्री०) गो मक्षिका।

क्षुद्रबुद्धिः (स्त्री०) निम्न मति, बुद्धिहीन। कम बुद्धि वाला।

क्षुद्ररसः (पुं०) शहद।

क्षुद्ररोगः (पुं०) सूक्ष्म रोग, छोटी बीमारी।

क्षुद्रलु (वि०) सूक्ष्म, छोटा।

क्षुद्रशंखः (पुं०) घोंघा, सीपी, छोटा शंख जीव।

क्षुध् (नपुं०) [क्षुध्+क्विप्] भूख, छुधा, ०क्षुधा।

क्षुधा (स्त्री०) [क्षुध्+टाप्] क्षुध, भूख। 'असातावेदनीय तीव्र-मन्द क्लेशकरी क्षुधा' (नि०प०सा०टी० ६)

क्षुधाजनित (वि०) क्षुधा पीड़ित, भूख से व्याकुल।

क्षुधा पिपासित (वि०) भूखा प्यासा।

क्षुधालु (वि०) भूखा।

क्षुधाशांत (वि०) भूख शांत वाला।

क्षुधित (वि०) भूखा, बुभुक्षित। (जयो० ६/१२१)

क्षुपः (पुं०) [क्षुप+क] झाड़ी, छोटी जड़ों का वृक्ष।

क्षुभ् (सक०) हिलाना, कंपित करना, क्षुब्ध करना, आंदोलित करना।

क्षुभित (वि०) आंदोलित, क्षुब्ध हुआ। जगतां त्रितयस्य सम्पदा क्षुभितोऽभूत्प्रमदाम्बुधिस्तदा।

क्षुब्ध (वि०) [क्षुभ्+क्त] आन्दोलित, अस्थिर, चंचल, कंपित, चलायमान।

क्षुमा [क्षु+मक्] अलसी, एक सन विशेष।

क्षुर् (सक०) काटना, खुरचना, कतरना।

क्षुरः (पुं०) [क्षुर्+क] क्षुरा, उस्तरा, कचापहारि। क्षुरेण कचापहारि शस्त्रेण (जयो० वृ० २७/४०)

क्षुरप्रमुदा (स्त्री०) एक प्रकार की आसन, कनिष्ठा अंगुली को अंगूठे से दबाकर शेष अंगुलियों के फैलाने पर क्षुरप्रमुद्रा होती है। 'कनिष्ठिकामङ्गुष्ठेन संपीड्य शेषाङ्गुली प्रसारयेदिति क्षुरप्रमुद्रा' (निर्वाणकाण्ड ५/वृ० ५१)

क्षुरिका (स्त्री०) [क्षर्+कन्+टाप्] छुरी, चाकू, उस्तरा।

क्षुरिणी (स्त्री०) [क्षुर्+इनि+ङीष्] नाई की पत्नी, नाइन।

क्षुरिन् (पुं०) [क्षुर्+इनि] नाई, क्षौरकर्मी।

क्षुरी (स्त्री०) [क्षुर्+ङीष्] छुरी, चाकू।

क्षुल्ल (वि०) [क्षुदं लाति गृह्णाति क्षुद्+ला+क] छोटा, लघु, स्वल्प।

क्षुल्लक (वि०) [क्षुल्ल+कन्] १. सूक्ष्म, लघु, छोटा, स्वल्प। २. निम्न, क्षुद्र, अधम, नीच। ३. दुष्ट, निर्धन। ४. जैन सिद्धान्त की दृष्टि में यह उत्कृष्ट श्रावक का एक रूप है। जो ग्यारह प्रतिमाधारी होता है, वह एक वस्त्र, एक लंगोटी, पीछी और कमण्डलु रखता है, वह कचोपहारी तथा एक बार भोजन करने वाला उत्कृष्ट श्रावक होता है। 'क्षुल्लकः कोमलाचारः शिखा सूत्राङ्कितो भवेत्। एकवस्त्रं सकौपीनं वस्त्र-पिच्छ-कमण्डलुम्।। (लाटी०सं० ७/६)

क्षुल्लिका (स्त्री०) उत्कृष्ट श्राविका, ग्यारह प्रतिमाधारी श्राविका।

क्षुल्लिकात्व (वि०) क्षुल्लिका पद वाली। तत्रास्याः पुण्य-योगेनाप्यार्यिकासंघसङ्गमात्। बभूव क्षुल्लिकात्वेन परिणामः सुखावहः।। (सुद० ४/२९) शाटकं चोत्तरीयं च वस्त्रयुग्ममुवाह सा। कमण्डलुं भुक्तिपात्रमित्येतद् द्वितयं पुनः।। (सुद० ४/३१) शाटीव समभूदेषा गुणानमाधिककारिणी। सदारम्भाद-नारम्भादघादप्यतिवर्तिनी।। (सुद० ४/३२) सत्यमेवोप युञ्जाना सन्तोषामृधारिणी। (सुद० ४/३३) पर्वण्युपोषिता कालत्रये सामायिक श्रिता।। सौहार्दमङ्गिमात्रे तु क्लिष्टे कारुण्य-मुत्सवम्। गुणिवर्गमुदीक्ष्याऽगान्माध्यस्थ्यं च विरोधिषु।। (सुद० ४/३५)

क्षेत्रं (नपुं०) [क्षि+ष्ट्रन्] १. स्थान, स्थल (जयो० वृ० ३/९३) २. आवास, भूमि, ३. निवास, गृह, भू-भाग। ४. खेत, भूमि, धान्य क्षेत्र। (वीरो० वृ० २/१३) 'शस्यपूर्णं क्षेत्रं दर्शितवान्।' (दयो० ९६) ५. कार्यस्थान, कार्यशाला, श्रेष्ठस्थान। ६. शरीर (जयो० वृ० ५/१३) 'क्षेत्रं निवासो वर्तमानकालविषयः' (स०सि० १/८) 'क्षेत्रं सस्याधिकरणं' (त० वा० ७/२९) ७. अवगाह-'यत्रावगाहस्तत् क्षेत्रम्' (जैन० ल० ३९५) ८. जनपदवाची-विषयवाची। ९. आधार-आधेय वाची-'क्षियत्सक्षैषीत् क्षेष्यत्यस्मिन् द्रव्यागमो भावागमो वेति त्रिविधमपि शरीरं क्षेत्रम्, आधारे आधेयोपचाराद्वा' (धव० ४/६) १०. आकाश-खेत्त खलु आगास। ११. षड्द्रव्यस्थान 'षड्द्रव्याणि क्षियन्ति निवसन्ति यस्मिन् तत्क्षेत्रम्।' (धव० ९/२२१) १२. त्रिभुवनस्थिति (महा० १/१२३) त्रैलोक्यविन्यास-महापु० २/२९)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

क्षेत्रकरः (पुं०) कृषक, किसान, खेतिहर।

क्षेत्र-कायोत्सर्गः (पुं०) कायोत्सर्ग सेवित क्षेत्र, दोषों से रहित क्षेत्र।

क्षेत्रकारक (वि०) क्षेत्र विशेष में करने वाला।

क्षेत्रकृत (वि०) क्षेत्र में करने योग्य, क्षेत्र में की जाने वाली।

क्षेत्रगणितं (नपुं०) रेखागणित, ज्यामिति।

क्षेत्रगत (वि०) क्षेत्र में जाने वाला।

क्षेत्रचतुर्विंशति (स्त्री०) भरतादि चौबीस क्षेत्र।

क्षेत्रचरणं (नपुं०) क्षेत्र का आचरण।

क्षेत्रचारः (पुं०) क्षेत्र गमन। 'क्षेत्रे चारः क्रियते यावद्वा क्षेत्रं चर्यते स क्षेत्राचारः।' (जैन०ल० ३९६)

क्षेत्रजात (वि०) क्षेत्र में उत्पन्न।

क्षेत्रज्ञ (वि०) क्षेत्र स्वरूप को जानने वाला, आत्म स्वरूप का ज्ञाता। 'क्षेत्रं स्वरूपं जानातीति क्षेत्रज्ञः।' (धव० १/१२०)

क्षेत्रज्ञानं (नपुं०) विवेक, प्रदेश/स्थान ज्ञान।

क्षेत्रत (वि०) प्रदेशों में अवगाहित।

क्षेत्रधर्मं (नपुं०) आकाश रूप क्षेत्र का आत्म स्वभाव।

क्षेत्रपतिः (पुं०) भू स्वामी, भूमिधर। (दयो० ४७)

क्षेत्रपदं (नपुं०) पवित्र स्थान, उचित पद, उत्तम मार्ग।

क्षेत्रपरावर्तः (पुं०) क्षेत्र परावर्तन, क्षेत्र परिवर्तन।

क्षेत्रपरावर्नं (नपुं०) क्षेत्र परावर्त, समस्त लोक को अपना क्षेत्र कर लेना।

क्षेत्रपल्योपमं (नपुं०) काल विशेष।

क्षेत्रपालः (पुं०) देवों की एक जाति प्रबन्धकर्ता।

क्षेत्रपुरुषः (पुं०) क्षेत्र का आश्रय लेने वाला व्यक्ति।

क्षेत्रपूजा (स्त्री०) पूजनीय स्थान, तीर्थंकर जन्म, दीक्षा, कैवल्यादि का स्थान/पवित्र स्थान की पूजा।

क्षेत्रप्रतिक्रमणं (नपुं०) जीव परिहार युक्त प्रदेश में प्रतिक्रमण। 'क्षेत्राश्रितातीचारान्निवर्तनं क्षेत्रप्रतिक्रमणम्' (मूला०वृ० ७७/११५)

क्षेत्रप्रतिसेवना (स्त्री०) निषिद्ध क्षेत्र में गमन। 'द्रोण्यादिगमनं क्षेत्रप्रतिसेवना' (भ०आ० ४५०)

क्षेत्रप्रतिसेवा (स्त्री०) निषिद्ध क्षेत्र में गमन। 'अननुज्ञातगृहभूमिगमनम्।' (भ०आ० ४५०)

क्षेत्रप्रत्याख्यानं (नपुं०) अयोग्य या अनिष्ट क्षेत्र का त्याग। 'अयोग्यानि वानिष्ट प्रयोजनानि संयमहानि संक्लेशं वा संपादयन्ति क्षेत्राणि तानि त्यक्ष्यामि इति क्षेत्रप्रत्याख्यानम्' (भ०आ०टी० ११६)

क्षेत्रप्रमाणं (नपुं०) अंगुलादि का अवगाहन। 'अंगुलादि ओगाहणाओ खेत्तपमाणं प्रमीयन्ते अवगाह्यन्ते अनेन शेषद्रव्याणि इति अस्य प्रमाणत्वसिद्धः।' (जय० ध० १/३९)

क्षेत्रफलं (नपुं०) गुणन फल, लम्बाई-चौड़ाई का प्रमाण। विवक्षित क्षेत्र की परिधि को उसके विस्तार के चतुर्थ भाग से गुणित करने पर जो प्रमाण आता है, वह क्षेत्रफल कहलाता है। 'वासो तिगुणो परिही वास-चउत्थाहदो दु खेत्तफलं। (त्रिलोकसार १७।

क्षेत्रभक्तिः (स्त्री०) क्षेत्र का विभाजन, खेत का सीमांकन।

क्षेत्रभूमिः (स्त्री०) धान्य उपज की भूमि, योग्य भूमि, उर्वर भूमि।

क्षेत्रमङ्गलं (नपुं०) उत्तमोत्तम गुणों का स्थान, केवलज्ञान, निर्वाणस्थान।

क्षेत्रमासः (पुं०) क्षेत्र की प्रधानता वाला मास।

क्षेत्ररक्षा (स्त्री०) खेत की रक्षा। (वीरो० २/१३)

क्षेत्रलोकः (पुं०) अनन्त प्रदेश का स्थान। उर्ध्व, अध् और तिर्यक् लोक का स्थान।

क्षेत्रवर्गणा (स्त्री०) क्षेत्र के विकल्प।

क्षेत्रविद् (वि०) खेत का विशेषज्ञ, कृषक, किसान। १. क्षेत्र मर्मज्ञ, विशेषज्ञ।

क्षेत्रविमोक्षः (पुं०) विमोक्ष युक्त स्थान। जिस क्षेत्र में मुक्ति को प्राप्त किया गया।

क्षेत्रवृद्धिः (स्त्री०) सीमातिक्रमण, अधिक क्षेत्र को स्थान बनाना। 'अभिगृहीताया दिशो लोभावेशादाधिक्याभिसम्बन्धः क्षेत्रवृद्धिः।' (तत्त्वार्थ श्लोकवार्तिक ७/३०)

क्षेत्रव्यतिरेकः (पुं०) व्याप्त क्षेत्र में स्थित नहीं होना। अन्य क्षेत्र में स्थित होना।

क्षेत्रशुद्धिः (स्त्री०) क्षेत्र की शुद्धता।

क्षेत्रसमवायः (पुं०) क्षेत्र की समानता। जंबूद्वीप, सर्वार्थसिद्धि, अप्रतिष्ठान नरक और नन्दीश्वरद्वीपस्थ प्रत्येक वापी का समान रूप से एक लाख योजन प्रमाण। 'सरिसाणि एसो खेत्तसमवाओ' (जय० ध० १/१२४)

क्षेत्रसमाधिः (स्त्री०) क्षेत्र प्राधान्य में समाधि।

क्षेत्रसंयोगः (पुं०) प्रसिद्ध क्षेत्रों का संयोग।

क्षेत्रसंसारः (पुं०) जीव और पुद्गलों का परिभ्रमण स्थान।

क्षेत्रसामायिकं (नपुं०) अपने स्थान पर राग-द्वेषादि न करना, क्षेत्र पर समभाव रखना।

क्षेत्रस्तवः (पुं०) तीर्थंकरों के जन्म, निर्वाण आदि के स्थान

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

का स्तवन। 'कैलाशसम्मेदोर्जजन्त-पावा-चम्पा-नगरादि-निर्वाण-क्षेत्राणां समवसृतिक्षेत्राणां च स्तवनं क्षेत्रस्तवन:।' (मूला०वृ० ७/४१)

क्षेत्रातिक्रम: (पुं०) क्षेत्र का अतिक्रमण। व्रती को लगने वाला दोष, जो व्रती क्षेत्र का अतिक्रमण करता है, वह क्षेत्रातिक्रम अतिचार जन्य होता है।

क्षेत्राधिपति: (पुं०) क्षेत्रपति। (दयो० ९७)

क्षेत्राधिदेवता (पुं०) क्षेत्रपाल।

क्षेत्रानुगामी (वि०) क्षेत्र में अनुगमन करने वाला। अवधिज्ञान अपनी उत्पत्ति के क्षेत्र से अन्य क्षेत्र में स्वामी के जाने पर उसके साथ रहता है, नष्ट नहीं होता है। 'स्वोत्पन्न-क्षेत्रादन्यस्मिन् क्षेत्रे विहरंतं जीवमनुगच्छति। (गो०जी०३७२)

क्षेत्राननुगामी (वि०) अपने क्षेत्र से अन्य क्षेत्र में स्वामी के साथ नहीं जाना, किन्तु वहीं पर नष्ट हो जाना। 'यत्क्षेत्रान्तरं न गच्छति स्वोत्पन्न क्षेत्रे एव विनश्यति, भवान्तरं गच्छतु मा वा तत्क्षेत्राननुगामि' (गो०जी० ३७२)

क्षेत्रानुपूर्वी (स्त्री०) परिचित क्षेत्र की अवगाहना।

क्षेत्रानुयोग: (पुं०) क्षेत्र विवरण, स्थान की व्याख्या।

क्षेत्राभिग्रह: (पुं०) क्षेत्र नियम, क्षेत्र परिधि।

क्षेत्रार्य: (पुं०) काशी, कौशल आदि देशों में उत्पन्न। 'क्षेत्रार्या: काशी-कौशलादिषु जाता:।' (त०वा० ३/३६) जो पन्द्रहकर्म भूमियों तथा भरतक्षेत्र के वर्तमान साढे पच्चीस देशों में उत्पन्न या क्षेत्रगत चक्रवर्तियों की उत्पत्ति स्थान।

क्षेत्रावग्रह: (पुं०) क्षेत्र आधिपत्य, प्रदेश पर विचार।

क्षेत्राहार: (पुं०) क्षेत्र में आहार का उपभोग।

क्षेत्रिक (वि०) खेत से सम्बंध रखने वाला।

क्षेत्रिक: (पुं०) कृषक, किसान, खेतहर।

क्षेत्रोज्झित (पुं०) क्षेत्र की वस्तुओं का परित्याग।

क्षेत्रोत्तर: (पुं०) उत्तरदिशादिगत क्षेत्र।

क्षेत्रोत्सर्ग: (पुं०) क्षेत्र में उत्सर्ग, क्षेत्र का त्याग।

क्षेत्रोपक्रम: (पुं०) क्षेत्र/खेत बनाने का क्रम, खेत का परिष्कार।

क्षेत्रोपसम्पत् (पुं०) क्षेत्रोचित नियम की वृद्धि। 'यस्मिन् क्षेत्रे संयम-तपोगुणशीलानि यमनियमादयश्च वर्द्धन्ते तस्मिन् वासो य: सा क्षेत्रोपसम्पत्।' (मूला०वृ० ४/१४१)

क्षेप: (पुं०) [क्षिप्+घञ्] डालना, पहनाना। 'चिक्षेप कण्ठे मृदु पुष्पहारम्।' (वीरो० ९५/१४) 'रजांसि चिक्षेप निधाय पङ्के' (जयो० १/५३) २. समय बिताना, व्यतीत होना, कालक्षेप। 'सानन्दमेष प्रचकार कालक्षेपं लयाऽऽमा खलु भूमिपाल:।' (सम्० २/२९) ३. अपमान, आक्षेप, दुर्वचन, दोष। ४. अहंकार, घृणा अनादर।

क्षेपक (वि०) [क्षिप्+ण्वुल्] डालने वाला, भेजने वाला, घुमाने वाला।

क्षेपणं (नपुं०) [क्षिप्+ल्युट्] ०फेंकना, ०पहनाना, ०डालाना, ०बिताना।

क्षेपणकर्ता (वि०) 'क्षेपणी, डालने वाला। (जयो० वृ० ३/८९)

क्षेपणि: (स्त्री०) चप्पू, नाव खेने की पतवार।

क्षेपणी देखो ऊपर।

क्षेपणी (वि०) बरसाने वाली, डालने वाली। 'स्रजं मालां क्षिपतीति क्षेपणी क्षेपणकर्ती। (जयो० वृ० ३/८९)

क्षेपणीय (वि०) अर्पणीय, समर्पणीय, डालने योग्य, पहनाने योग्य। 'कण्ठभागेऽर्पणीयं क्षेपणीयम्।' (जयो० वृ० ४/३२)

क्षेपात्मक (वि०) आरोहणात्मक, पहनाने योग्य। 'सदस्यद: शीलित-मेव माला क्षेपात्मकं ज्ञातवतीव बाला। (जयो० १७/१२)

क्षेम (त्रि०) १. कुशल, २. प्रसन्न, सुखी, ३. उदार, हर्ष युक्त, ४. शुभ। (जयो० ३/२६) ५. विधिपूर्वक रक्षण करना। ६. शान्ति, ७. रक्षा सुरक्षा। (वीरो० १८/१५) 'क्षेमं च लब्ध-पालन- लक्षणम्।' (जैन०ल० ४०३)

क्षेम: (पुं०) शान्ति, आराम, कल्याण।

क्षेमंकर (वि०) शान्ति स्वभाव वाला, रक्षक प्रवृत्ति वाला। मंगलकारक, उपकारक।

क्षेमंकर: (पुं०) क्षेमंकर नाम विशेष।

क्षेमकथा (स्त्री०) शान्तिकथा, कुशल समाचार। 'कोकोक्तिभि: कृतक्षेमकथा।' (जयो० १४/४८) क्षेमस्य कथा-क्षेमकथा। (जयो० वृ० १४/४८)

क्षेमकर्मी (वि०) मंगलकारी, इष्टकारक।

क्षेम-क्षेम (वि०) बाह्यलिंग युक्त साधु का मार्ग। * लज्जाजनक

क्षेमपूर्ण: (पुं०) शान्तिपूर्ण।

क्षेमपूर्णता (वि०) कुशलता। 'कुशलता क्षेमपूर्णतास्ति।' (जयो० ३/३४)

क्षेमपृच्छा (स्त्री०) कुशलता की जिज्ञासा। 'अथो पथापाततया तथापि न क्षेत्रपृच्छाऽनुचितास्तुतापि। (जयो० ३/२६) 'क्षेमस्य कुशलस्य नवेति जिज्ञासा' (जयो० वृ० ३/२६)

क्षेमप्रश्नं (नपुं०) कुशल क्षेम पूछना। 'क्षेमप्रश्नानन्तरं ब्रूहि कार्यामित्यादिष्ट: प्रोक्तवान् सागरार्य:।' (सुद० ३/४५)

क्षेमविधि: (स्त्री०) सुरक्षा विधि। 'योगास्य च क्षेमविधे: प्रमाता विचारमात्रात्समभूद्विधाता। (वीरो० १८/१५)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

क्षेमहेतुः (स्त्री०) शान्ति हेतु। भलाई के लिए। 'वक्तुः श्रोतुः हेमहेतवे सम्भूयात् पठितो जवंजवे। (समु० ९/३१)

क्षेमिका (स्त्री०) हल्दी।

क्षेमिन् (वि०) [क्षेम+इनि] सुरक्षित, प्रसन्न, आनंदित।

क्षै (अक०) क्षीण होना, नष्ट होना, कृश होना, हीन होना, ह्रास होना।

क्षैण्यं (नपुं०) [क्षीण+ष्यञ्] १. विनाश। २. सुकुमारता।

क्षैत्रं (नपुं०) [क्षेत्र+अण्] खेत, खेतों का समूह।

क्षैरेय (वि०) [क्षीर+ढञ्] दुग्ध सदृश, दूधिया, दूध से निर्मित, धवलता युक्त।

क्षोडः (पुं०) [क्षोड्+घञ्] हस्ति बंधन वाला स्तम्भ।

क्षोण (पुं०) स्थान, भू-भाग। हलन-चलन युक्त स्थान।

क्षोणिः (स्त्री०) [क्षै+डोनि] पृथ्वी, भूमि। २. गणितीय अंक।

क्षोणी देखो क्षोणिः।

क्षोत्तृ (पुं०) [क्षुद्+तृच्] मूसली, सिल बट्टा।

क्षोदः (पुं०) [क्षुद्+वञ्] पीसना, चूर्ण करना। २. धूल, कण, सूक्ष्मकण। (जयो० वृ० ४/६७)

क्षोदकर (वि०) विप्लवल, अर्जन करने वाले, निकालने वाले। (जयो० वृ० ४/६७)

क्षोदनं (नपुं०) कूर्चन, खुरचना, खोदना। (जयो० वृ० २/१५६)

क्षोदित (वि०) क्षुण्ण, खोदने वाला, खोदी गई। 'आजिषु तत्करवालैहर्य-क्षुर-क्षोदितास्तु संपतितम्। (जयो० ६/८०)

क्षोभः (पुं०) [क्षुभ्+घञ्] क्षुब्ध, उत्तेजना, संवेग, विनाशक वृत्ति। 'केन वा प्रलयजेन सिन्धुवत् क्षोभमाप। (जयो० ७/७४) २. डोलना, हिलना।

क्षोभणं (नपुं०) क्षुब्ध करना, व्याकुल करना, संवेग उत्पन्न करना।

क्षोभणः (पुं०) कामदेव का एक बाण।

क्षोमः (पुं०) [क्षु+मन्] ऊपर का कमरा, छत के ऊपर का कमरा।

क्षौत्रः (पुं०) छुरा, छुरिका।

क्षौणिः (स्त्री०) पृथ्वी, भू, धरा, अवनि।

क्षौणिप्राचीरः (पुं०) समुद्र, सागर, उदधि, रत्नाकर।

क्षौणिभुज् (पुं०) नृप, राजा।

क्षौणिभृत् (पुं०) पर्वत, पहाड़।

क्षौद्रः (पुं०) [क्षुद्र+अण्] चम्पक वृक्ष।

क्षौद्रं (नपुं०) क्षुद्रता, ओछापन। १. शहद। (जयो० ३/१३)

क्षौद्रकः (पुं०) मधु, शहद।

क्षौद्रलेशः (पुं०) १. क्षुद्रभावांश मधुबिन्दु। (जयो० ३/१३)

क्षौद्रातिग (वि०) शहदरहित, मधु रहित। (मुनि०)

क्षौद्रेयं (नपुं०) [क्षौद्र+ढञ्] मोम।

क्षौमः (पुं०) [क्षु+मन्+अण्] रेशमी वस्त्र, ऊनी वस्त्र।

क्षौम्म् (वि०) हजामत।

क्षौरिकः (पुं०) [क्षौर+ठन्] नाई।

क्ष्णु (सक०) पैना करना, तेज करना।

क्ष्मा (स्त्री०) पृथ्वी, भूमि।

क्ष्माजः (पुं०) मंगलग्रह।

क्ष्मापः (पुं०) नृपति, राजा।

क्ष्मापतिः (पुं०) नृपति।

क्ष्मालीकः (पुं०) भूमि सम्बंधी आसत्य।

क्ष्माय् (सक०) हिलाना, कांपना।

क्ष्माकलयं (नपुं०) भूमण्डल। (जयो० ६/१०५)

क्ष्विड् (अक०) गीला होना।

क्ष्वेडः (पुं०) शब्द। सिंह गर्जना

ख

खः (पुं०) कवर्ग का द्वितीय व्यञ्जन, इसका उच्चारण स्थान कण्ठ है।

खं (पुं०) १. आकाश, २. खाली स्थन, गगन (जयो० ८/४) ३. छिद्र, बिल, ४. शून्य, बिन्दु, ५. स्वर्ग ६. अभ्रक, ७. ब्रह्मा। 'खं न भवतीति नखमाहुर्जगुः। नभस्तु पुनर्भूशून्यतया निष्प्रभतया च खमिति ख्यातिमाख्यां श्रीपूज्यपादतो मुनिनयकाल्लेभे' (जयो० वृ० ३/४५)

खकारः (पुं०) ख वर्ण। (जयो० ११/७१)

खक्खट (वि०) कठोर, ठोस।

खगङ्गा (स्त्री०) आकाश गंगा।

खगः (पुं०) पक्षी।

गखकन्या (स्त्री०) विद्याधर कन्या। (समु० २/७)

खगकेतु (पुं०) गरुड़।

खगखानः (पुं०) वृक्ष कोटर।

खगचरः (पुं०) विद्याधर।

खगगणः (पुं०) पक्षी समूह (सुद० ५/२)

खगगतिः (स्त्री०) पक्षी का गमन।

खगति (स्त्री०) हवा की गति।

खगता (वि०) आकाशगामिता। (जयो० २२/४०)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

खगपति (पुं०) १. सूर्य, २. गरुड़।

खगमः (पुं०) पक्षी।

खगवती (स्त्री०) पृथ्वी, भूमि।

खगसत्त्वं (नपुं०) उत्तम ग्रह, उत्तम राशि।

खगसानुमति (पुं०) विद्याधर पर्वत। (जयो० २३/५१)

खगाग्रणी (स्त्री०) विद्याधर प्रमुख, खगानां विद्यावनां (जयो० ७/८९)

खगाधियः (पुं०) गरुड़।

खगावली (स्त्री०) बाण पंक्ति (जयो० ८/३३) 'खगानां बाणानामावली'

खगासनः (पुं०) विष्णु।

खगुण (वि०) गुण हीन।

खगेन्द्रः (पुं०) विद्याधर। (जयो० वृ० २३/७९)

खगेश्वरः (पुं०) विद्याधर। (समु० ६/२५) 'नाम्नाऽतिवेगस्य खगेश्वरस्य'।

खगोलः (पुं०) आकाशमण्डल। (जयो० ८/२२)

खगोलविद्या (स्त्री०) आकाश मण्डल के गृह-नक्षत्रादि का ज्ञान, ज्योतिष विद्या।

खग्रासः (पुं०) पूर्ण सूर्यग्रहण या चन्द्रग्रहण।

खड्गः (पुं०) तलवार, असि। (वीरो० १/३५, १/७)

खड्गधारण (वि०) तलवार धारण करने वाला। (जयो० १/७)

खड्गप्रहारः (पुं०) असि प्रहार। (वीरो० १/३५)

खड्गमुद्रा (स्त्री०) असिमुद्रा। दाहिने हस्त की मुट्ठिबांधकर तर्जनी अंगुली के फैलाने की मुद्रा। 'दक्षिणकरेण मुष्टिं बद्ध्वा तर्जनीं मध्ये प्रसारयेदिति खड्गमुद्रा। (निर्वाण काण्ड ३१)

खड्गिन (पुं०) गेंडा, प्रसिद्ध वन्यप्राणी। (जयो० २१/२४)

खड्गिन् (वि०) कृपाणधारी। (जयो० वृ० २१/२४)

खड्करः (पुं०) [ख+कृ+खच्] अलक, बालों की लट।

खच् (अक०) आगे आना, प्रकट होना, पुनर्जन्म होना।

खच् (सक०) १. बांधना, जकड़ना, जड़ना। २. मिलाना, पूर्ण होना, भरना। (जयो० ६/८१)

खचनं (नपुं०) अंकित करना।

खचमस् (पुं०) चन्द्र, शशि।

खचरः (पुं०) १. सूर्य, रवि, चन्द्र। २. ग्रह नक्षत्र, मेघ। ३. राक्षस।

खचरा (वि०) दुष्ट, दुर्जन।

खचारी (वि०) आकाशगामी।

खचित (वि०) [खच्+क्त] चित्रित, लिखित, जटित, भरा हुआ, मिश्रित, संयुक्त, परिपूरित। (जयो० १२/१३०) (जयो० ६/८१) लावण्य खचित देहो (जयो० ६/८१) लावण्येन-सौन्दर्येण खचितः परिपूर्णो देहो यस्य सः'

खच्चरः (पुं०) गधे या घोड़े के संयोग से उत्पन्न पशु।

खज् (सक०) मंथन करना, मथना, बिलोना, आंदोलित करना।

खजः (पुं०) मथानी, बिलौनी।

खजकः मथानी, बिलौनी।

खजपं (नपुं०) [खज्+कपन्] घृत, घी।

खजलः (पुं०) १. तुषार, पाला, ओसकण। २. मेघजल।

खजाकः (पुं०) [खज+आक] पक्षी।

खजालिका (स्त्री०) [खज्+अ+टाप] खजा, खजाज+ङीप्+कन्+टाप्] कड़छी, चम्मच।

खजित (वि०) बिलोचित, मथित।

खंज (अक०) लंगड़ाना, रुक रुककर चलना।

खंज (वि०) [खञ्ज्+अच्] विकलांग, लंगड़ा।

खंजक (वि०) लंगड़ाने वाला।

खंजकारि (वि०) लंगड़ाने वाला।

खञ्जनः (पुं०) [खञ्ज्+ल्युट्] चकोर पक्षी, शरद और शीतकाल में दिखाई देने वाला पक्षी। (सुद० ११५) श्री जिनेन्द्रो रूपाश्रयतु सखञ्जनम्। (मुनि० ३४) 'सुखञ्जनः संलभते प्रणश्यत्तमः' (वीरो० १/३)

खञ्जनरतिः (स्त्री०) गुप्त रति क्रिया।

खञ्जनासनं (नपुं०) एक गुप्त आसन।

खञ्जनिका (स्त्री०) चकोर के सदृश पक्षी चकोरी, ०खञ्जनपक्षी। (जयो० ११/२)

खंजरीटः (पुं०) [खञ्ज्+ऋ+कीटन्] चकोर पक्षी।

खञ्जलेखः (पुं०) [खञ्ज+लिख्+घञ्] खंजन पक्षी, चकोर।

खटः (पुं०) [खट्+अच्] १. कफ, २. हल, ३. कुल्हाड़ी।

खटकः (पुं०) [खट्+कन्] अर्द्धमुंद हस्त।

खटिका (स्त्री०) [खट्+अच्+कन्+टाप्] खड़िया। १. क्षीणा, कठिनी। (जयो० ६/१०५)

खटिकारेखा (स्त्री०) क्षीण रेखा। (जयो० ६/१०५)

खटक्किका (स्त्री०) खिड़की।

खटिनी (स्त्री०) [खट्+इनि+ङीप्] खड़िया।

खट्टन (वि०) [खट्ट+ल्युट्] ठिंगना, कद में छोटा।

खट्टनः (पुं०) ठिंगना व्यक्ति।

खट्टा (स्त्री०) [खट्ट+अच्+टाप्] खाट। (दयो० ८९)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

खट्टा देखो ऊपर।

खट्वापदं (नपुं०) खाट के पास। (समु० ४/३८)

खट्टिः (स्त्री०) [खट्ट+इन्] अर्थी।

खट्टिकः (पुं०) खटीक, कसाई। (दयो० ५७) (वीरो० १६/१६) (मुनि०१०) वैद्योभवेद्धुक्तिरुधेव धन्यः सम्पोषयन् खट्टिकको जघन्यः। (वीरो० १६/१६)

खट्टिककः देखो ऊपर।

खण्ड् (सक०) तोड़ना, काटना, टुकड़े करना, कुचलना, नष्ट करना, खण्डित करना, भग्न करना। २. छोड़ना, त्यागना। 'न खण्ड्यते सुखं यस्य सोऽखण्ड सुखस्सन्।' (जयो० २५/५३)

खण्डः (पुं०) [खण्ड्+घञ्] खाई, कटाव, भंग। २. टुकड़ा, डली, अंश। 'न जंगमायाति सुवर्णखण्डः' पंके पतित्वापि च लोहदण्डः। (सम्य० ६१) ३. अध्याय, अनुभाग, सर्ग। ४. शर्करा खण्ड, घटादि के टुकड़े। 'खण्डो घटादीनां कपालशर्करादिः' (स०सि० ५/२४)

खण्डं (नपुं०) ईख पोर, चीनी, शर्कर, खाण्ड। (जयो० ३/२२) खण्डभिक्षुविकार।

खण्डकः (पुं०) टुकड़ा, अंश।

खण्डकुटः (पुं०) खण्ड रूप में धारण।

खण्डकथा (स्त्री०) लघु कथा।

खण्डकाव्यं (नपुं०) लघु काव्य, जिसमें एक ही संक्षिप्त कथानक होता है जो चार से लेकर सात अध्याय से कम का भी हो सकता है, यह एकदेशानुसारि काव्य होता है।

खण्डजः (पुं०) खांड़।

खण्डधारा (स्त्री०) कैंची।

खण्डन (वि०) १. तोड़ने वाला, ०खण्ड खण्ड करने वाला, ०विघ्न डालने वाला, २. समाधान में आपत्ति उपस्थित करने वाला, ३. यथार्थ का भी विरोध करने वाला। ४. विद्रोह, विरोध।

खण्डपालः (पुं०) हलवाई।

खण्डमण्डलं (नपुं०) वृत्त का अंश।

खण्डमोदकः (पुं०) खांड के लड्डू।

खण्डलः (पुं०) टुकड़ा, अंश, भाग।

खण्डलवणं (नपुं०) लोढी नमक, सांभर झील का नमक।

खण्डवस्त्रं (नपुं०) कौपीन, लंगोटी। (जयो० १/३८)

खण्डविकारः (पुं०) शर्करा, शक्कर, चीनी।

खण्डशः (अव्य०) [खण्ड+शस्] अंश अंश में, टुकड़े टुकड़े में।

खण्डशर्करा (स्त्री०) मिसरी।

खण्डाभेदः (पुं०) खण्ड खण्ड हो जाने वाली वस्तु। रांगा, शीशा, दर्पण आदि।

खण्डित (भू०क०कृ०) [खण्ड्+क्त] विनष्ट, परित्यक्त, विध्वंस जन्य, विखण्डित। (सुद० १०३)

खण्डिता (स्त्री०) खण्डिता नायिका, जिसका पति अपनी पत्नी के प्रति अविश्वासी हो।

खण्डिनी (स्त्री०) [खण्ड्+इनि+ङीप्] पृथ्वी, भू, भूमि, धरा।

खण्डोत्तमः (स्त्री०) उत्तमखण्ड, आर्य खण्ड। (सुद० १/१४)

खतमाला (स्त्री०) धूम, धूमानां तमांसि। (जयो० १२/६८)

खदिकाः (स्त्री०) १. खील, लाजा, २. चांवल से बनने वाले लाजा। ३. सिका हुआ धान्य, जो फूल का रूप ले लेता है।

खदिरः (पुं०) [खद्+किरच्] खैर का पेड़। खैर, कत्था। (सुद० १२८) १. इन्द्र का गुण, २. चंद्र।

खदिरपत्री (स्त्री०) लाजवंती का बेल।

खदिरसारः (पुं०) खैर, कत्था, जो पान में लगाया जाता है, यह चूने की संगति से लालिमा धारण कर लेता है। 'खदिरस्य नाम वृक्षविशेषस्य सार इव सारो यस्मिन् स खदिरसारस्सुदृढानयवीत्यर्थः'। (जयो० वृ० २२/९४)

खद्योतः (पुं०) जुगनू, (वीरो० ४/२६) एक कीट जो वर्षा के समय रात्रि में विशेष रूप से चमकता है, यह छोटा उड़ने वाला कीट है। २. सूर्य।

खद्योतकः (पुं०) दिनकर, सूर्य।

खद्योतनः (पुं०) दिनकर, सूर्य।

खन् (सक०) खोदना, खनन करना, उन्मूलन करना, उखाड़ना। 'उच्चखान कचौघं स कल्मषोपममात्मनः।' (वीरो० १०/२५)

खनकः (पुं०) [खन्+ण्वुल्] १. भूगर्भीय तत्त्व, खनिज, खदान। २. मूषक, चूहा। ३. कर्ण, कान। ४. सेंध लगाने वाला चोर। ५. गर्त, गड्ढा (दयो० ९८) भुङ्क्ते कर्माणि कर्लैव खनको यात्यधः स्वयम्। (दयो० ९८)

खनक (वि०) खोदने वाला। समस्ति गर्ते खनकस्य पातः। (दयो० वृ० ३)

खननं (नपुं०) खनन क्षेत्र।

खनिः (स्त्री०) [खन्+इ, स्त्रियां ङीप्] खान, खदान, खनन क्षेत्र। (वीरो०) 'एषोऽपि सन्मणिरभूत् त्रिशलाखनीतः। (वीरो०)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

खनिज (वि०) खान, खदान से खोदकर निकाल गया पदार्थ।

खनिजसंपत् (पुं०) खनिज सम्पत्ति, भूगर्भीय संपदा।

खनित्रं (नपुं०) कुदाली, खुर्पा, गैंती, खंता।

खनिवसति (स्त्री०) खान खोदने का निर्णय।

खपदं (नपुं०) विमान, देव यान। देवतामनुबभूव मुदा वैडूर्यनाम्नि खपदं शुभभावैः। (समु० ५/१५)

खपुरं (नपुं०) विद्याधर नगर, गन्धर्व पुर।

खपुरः (पुं०) [खं पिपति उच्चतया ख+पृ+क] १. सुपारी का वृक्ष। २. भद्रमोथा, ३. बाघनखा।

खपुष्प (नपुं०) आकाश कुसुम, असम्भव या अनहोनी घटना। 'भूतं तथा भावि खपुष्पवद्वा निवेद्यमानोऽपि जनोऽस्त्वसद्वाक्। (वीरो० २०/६) जो कार्य हो चुका या आगे होने वाला है, वह आकाश कुसुम के समान असद् रूप है। 'खपुष्प-मथवाशृङ्गं खरस्यापि प्रतीयते' (सम्य० ११६) खपुष्पैः कुरुते मूढः स वन्ध्या सुतशेखरम्। (सम्य० ११६)

खर (वि०) [खं मुखनिलमतिशयेव अस्ति अस्य-ख+र अथवा खमिन्द्रियं राति-ख-रा+क] 'खरस्य दुष्ट लोकस्य कठोरवस्तुनश्चारिः संशोधकः' (जयो० १७/५२) १. कठोर, कर्कश, ठोस, सख्त, तेज, प्रखर। २. तिक्त, चरपरा। ३. हारिकारक, पीड़ाजनक। ४. क्रूर, निष्ठुर, दुष्ट (जयो० १७/५२) ५. ग्रीष्म, गर्मी। ६. तीव्र-'कम्पितास्तु खरदण्ड-भावतः। (जयो० ७/६०)

खरः (पुं०) गर्दभ, गधा। 'खपुष्पमथवाशृङ्गं खरस्यापि प्रतीयते' (सम्य० ११६)

खरकरः (पुं०) सूर्य, दिनकर।

खरकालः (पुं०) ग्रीष्मकाल, गर्मी का समय। 'वसुन्धरायास्तनयान् विपद्य निर्यान्तिमारात्खरकालमद्य।' (वीरो० ४/११)

खरकुटी (स्त्री०) १. गर्दभों का अस्तबल। २. नाई की दुकान, क्षौर कर्मशाला।

खर-कोणः (पुं०) १. चकोर पक्षी, २. तीतर।

खर-कोमलः (पुं०) ज्येष्ठ मास।

खरखुराधातः (पुं०) तीक्ष्ण शफाघात। (जयो० ३/११०)

खर-क्वाणः (पुं०) १. चकवा पक्षी।

खर-गृहं (नपुं०) गर्दभ शाला।

खर-गेहं (नपुं०) गर्दभ शाला।

खर-णस् (वि०) तीखी नाक।

खर-दण्डं (नपुं०) कमल, पद्म।

खर-दण्डभावः (पुं०) तीव्र ताडन भाव। सम्प्रसीद कुरु फुल्लतां यतः कम्पितास्तु खर-दण्ड-भावः। (जयो० ७/६०)

खरध्वंसिन् (वि०) कर्कशता को नष्ट करने वाला।

खरनादः (पुं०) गर्दभ नाद, खरध्वनि।

खरपात्रं (नपुं०) लोह पात्र।

खरप्रयुक्तिः (स्त्री०) तीक्ष्ण प्रयोग। (जयो० २४)

खरपालः (पुं०) काष्ठपात्र।

खरमञ्जरी (स्त्री०) अपामार्ग।

खरमरीचि (पुं०) सूर्य, प्रभाकिरण। (जयो० १८/६०)

खरयानं (नपुं०) गर्दभ यान, गधों के द्वारा खींची जाने वाली गाड़ी।

खर-रुचिः (स्त्री०) १. खल की प्रीति। २. सूर्य (जयो० १६/६८) (जयो० २२/३३) 'खलस्य रुचिः प्रीतिः'

खर-रुचिरः (पुं०) तीक्ष्ण किरण, सूर्य (सुद० १०४)

खरशब्दः (पुं०) गर्दभ शब्द, गधे की ध्वनि।

खरशाखा (स्त्री०) गर्दभशाला।

खरस्वरा (स्त्री०) अरण्य में उत्पन्न चमेली।

खरादी (स्त्री०) शस्त्रचिकित्सक, काष्ठरञ्जक। (जयो० २७/३७)

खरारिः (पुं०) दुष्ट, दुर्जन (जयो० १७/५२)

खरिका (स्त्री०) [खर्+कन्+टाप्] पिसी हुई कस्तूरी।

खरिन्ध (वि०) गधी का दुग्ध पीने वाली।

खरी (स्त्री०) [खर+ङीष्] गधी, गर्दभी। १. करञ्जिका (जयो० १७/६४)

खरु (वि०) १. श्वेत, २. मूर्ख, ३. अश्व घोड़ा, ४. दंत-खरुर्दशन ईशेऽश्वे' इति वि० (जयो० १६/५७) ५. गर्व, घमण्ड।

खर्ज् (सक०) पीड़ा देना, दुःख उत्पन्न करना। १. व्याकुल करना, २. खुजलाना। (जयो० २/४)

खर्जनं (नपुं०) [खर्ज्+ल्युट्] खरोचना, खुजलाना।

खर्जिका (स्त्री०) रोग विशेष।

खर्जुः (स्त्री०) [खर्ज्+उन्] खरोंच। १. खजूर का पादप। २. आकवृक्ष।

खर्जुरन् (नपुं०) [खर्ज्+उरच्] चांदी, रजत।

खर्जूः (स्त्री०) [खर्ज्+ऊ] खाज, खुजली।

खर्जूरः (पुं०) १. खजूर, २. वृश्चिक, बिच्छु। (जयो० वृ० २४/५०)

खर्जूरं (नपुं०) रजत, चांदी।

खर्जूरवेधः (पुं०) ज्योतिष का एक योग।

खर्जूरवृक्षः (पुं०) खजूर वृक्ष, निश्रेणि। (जयो० वृ० २४/५)

खर्जूरी (स्त्री०) खजूर वृक्ष।

खर्परः (पुं०) १. खप्पर, भिक्षा पात्र, खोपड़ी। २. चोर, ३. छाता।

खर्परिका (स्त्री०) [खर्पर+अच्+ङीष्+कन्+टाप्] अंजन।

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

खर्परी (स्त्री०) अंजन, सुरमा।

खर्व् (अक०) चलना, फिरना, घूमना।

खर्व (त्रि०) १. तुच्छ, लघु, छोटा, निम्न, अपंग, विकलांग। २. ठिगना, ओछा। ३. अपूर्ण।

खर्वः (पुं०) १. दस अरब की संख्या। २. कुबेर की नौ निधियों में एक निधि। ३. कूजा नामक वृक्ष। ४. उत्तरोत्तर- 'परोऽपकारेऽन्यजनस्य सर्व:' परोपकारः समभूत्तु खर्वः। (वीरो० १/३३)

खर्वटः (पुं०) चार सौ गांवों के मध्य का ग्राम। मंडी लगने वाला ग्राम। २. पर्वतीय स्थान पर बसा हुआ ग्राम।

खर्वित (त्रि०) १. हीन, २. कटा हुआ।

खर्ब्धिता (स्त्री०) अमावस्या और चतुर्दशी युक्त दिन।

खल् (सक०) १. संग्रह करना, एकत्र करना।

खलः (पुं०) [खल्+अच्] १. खलिहार, भू भाग, स्थान, २. भूमि, ३. रज राशि। ४. सूर्य, ५. तमाल वृक्ष, ६. तलछट, दवा घोटने का खल वहल। ७. मसाले या चटनी पीसने का अयस्क या पत्थर की शिला। ८. तिलविकार, खली तिलकक्कविकारः (जयो० १७/५४) 'पयस्विनी सा खलशीलनेन' (वीरो० १/१७)

खल (वि०) १. क्रूर, दुष्ट, नीच, अधम, दुर्जन, निर्लज्ज, विश्वासघाती। (वीरो० वृ० १/१७)

खलजनः (पुं०) दुर्जन। (जयो० ३/२)

खलकः (पुं०) [ख+ला+क+कन्] घट।

खल-क्षण (नपुं०) खाई। (सुद० १/२५) खलस्य भूर्तस्यैव क्षणोऽवसौ।

खलता (वि०) दुष्टता, मूर्खता, नीचता, दुर्जनता। (सुद० ९१) 'दुष्टमनुष्यता' (जयो० २२/६) 'समस्ति तावत् खलता जगन्मतः' सद्भावना विजयिनीं खलतां हसति' (वीरो० ९/११) २. आकाशप्रदेश पंक्ति। (जयो० वृ० १८/५२)

खलति (त्रि०) [स्खलन्तिकेशा अस्मात् रखल+अतच्] गंजा।

खलतिकः (पुं०) पर्वत, पहाड़।

खलत्व (वि०) दुष्टता, नीचता, मूर्खता युक्त।

खलधान्यं (नपुं०) खलिहान।

खलपूः (पुं०) झाड़ने वाला, साफ करने वाला।

खलमूर्तिः (स्त्री०) पारा।

खलयज्ञः (पुं०) खलियान की क्रिया।

खलशीलनं (नपुं०) १. दुर्जन संगति, २. खली का सम्पर्क। 'वाक्-कामधेनुः खलशीलनेनाऽमृतप्रदात्री सुतरामनेना।' (समु० १/२६)

खलसंसर्गः (पुं०) १. दुष्ट की संगति, २. खली का संसर्ग, खली का प्रयोग।

खलसम्पर्कः (पुं०) १. दुर्जन संगति, २. खली का प्रयोग। (समु० १/२६)

खलिः (स्त्री०) [खल्+इन्] खली तेल का मैल।

खलित (वि०) दुष्टता युक्त।

खखित्तोत्तमाङ्गः (नपुं०) गञ्जे सिर। 'खलितोत्तमाङ्ग एव करकोपनिपात सम्भाव्यते' (दयो० ८६)

खलिनः (पुं०) [खे अश्वमुखछिद्रे-लीनम्] लगाम, कविका, लगाम की रास।

खलिनी (स्त्री०) [खल्+इनि+ङीप्] खलिहान समूह, खलिहान स्थान।

खलीकृतिः (स्त्री०) [खल+च्चि+कृ+क्तिन्] दुर्व्यवहार, उत्पात।

खलीनः (पुं०) कविका, लगाम। (जयो० १३/७२) (जयो० वृ० १३/५)

खलीन-कर्षणं (नपुं०) लगाम खींचना, लगाम लगाना। 'हयानां गणः स्वामिन्यश्वारोहे खलीनस्य कविकायाः कर्षणं, कुर्वतीव हि निधर्षणम्' (जयो० वृ० २१/११)

खलीन-दोषः (पुं०) कायोत्सर्ग में स्खलन सम्बंधी दोष। 'यः खलीन पीडितोऽश्व इव दन्तकटकटं मस्तकं कृत्वा कायोत्सर्ग करोति तस्य खलीनदोषः' (मूला०वृ० ७/१७१)

खलु (अव्य०) [खल्+उन्] यह अव्यय विविध अर्थों में प्रयुक्त होता है। १. **वाक्यालङ्कार** वाक्य शोभा में-(जयो० १४/२४) नृप सूनवर्तीव राजते द्रुगमाला खलु विप्रलापिनी। (जयो० १३/५२) २. **क्योंकि**-'काले रुचिः शुचिः स्यात्खलु सत्तमाऽऽले।' (सुद० १/६) यतः खलु तीर्थकृद् वाक् (सम्य० ५) ३. **निश्चय ही**-'यावत् खलु क्षायिक भावजातिः' (सम्य० ५७) 'शक्तिः पुनः सा खलु मौनमेतु। (सम्य० २३) ४. पूछताछ, अनुरोध, प्रार्थना, विनय खल्विति निश्चार्थे (जयो० २/३८) खल्विति समुच्चये (जयो० वृ० ५/१५)-**और**-शुद्धभावा खलु वाचि यशि' (सुद० २/८८, २/१६) **जैसे**-वाबिन्दुरासि खलु शुक्तिषु-(सुद० ४/३०) 'सन्निमेषकदृशा खलु पातुम्' (जयो० ५/६९) वाक्यपूर्ण-तेऽञ्चिताः खलु रुषा सगराया। (जयो० ७/७) ५. **ही**-एतयोः खलु परस्परेक्षण सम्भवेत्।' (जयो० २/६) ६. **तो**-'मानसानि खलु यानि च यूनाम्। (जयो० ३/७०) ७. **भी**-परिणतिमेति यथा खलु धात्री' (जयो० ३/७४) निःसंदेह, अवश्य, सचमुच आदि में 'खलु' अव्यय का प्रयोग होता है।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

खलुच् (पुं०) [खं इन्द्रियं लुञ्चन्ति हन्ति इति-ख+लुञ्च्+क्विप्] अन्धकार, तम।

खलोपयोगः (पुं०) खल का उपयोग।

खल्या (स्त्री०) [खल+यत्+टाप्] खलिहानों का झुण्ड।

खल्लः (पुं०) [खल्+क्विप्] खरल। १. चकोर पक्षी, २. शक।

खल्लिका (स्त्री०) [खल्ल+कन्+टाप्] कढाई।

खल्लिट (वि०) गंजे सिर वाला।

खल्वाट (वि०) [खल्+वाट] गंजा।

खशः (पुं०) एक जाति विशेष, जलाशय। (जयो० २१/३४)

खशरः (पुं०) खश अधिपति।

खष्पः (पुं०) १. क्रोध, कोप, २. हिंसा, निष्ठुरता।

खसः (पुं०) १. खाज, खुजली। २. एक जाति विशेष।

खसूचिः (पुं०स्त्री०) गर्हित अभिव्यक्ति।

खसखलः (पुं०) पोस्ता।

खा खाना, भोजन करना। खादेत्तदेवासुमतेऽभिवादी। (वीरो० १९/३३) खादाञ्चक्रे (दयो० ५७)

खाजिकः (पुं०) [खाज+ठन्] भुना हुआ, तला हुआ धान्य।

खाट् (अव्य०) ध्वनि, खकार सम्बंधी ध्वनि।

खाटः (पुं०) [ख+अट्+घञ्] अर्थी।

खाण्डवः (पुं०) खांड, मिश्री।

खाण्डविकः (पुं०) [खाण्डव+ठन्] हलवाई।

खात (वि०) [खन्+क्त] खुदा हुआ, कुरेदा गया, फोड़ा गया।

खातं (नपुं०) खाई, परिखा, आयताकार सरोवर, बावड़ी। (दयो० वृ० ४०) १. भूगृह, तलघर। 'खातं भूमिगृहादि' (जैन०ल० ४०५)

खातकं (वि०) खोदने वाला।

खातकं (नपुं०) खाई, परिखा।

खात-सम्पात-करणं (नपुं०) खेती करना, भू जोतना। कर्षणे खातसम्पात-करणे सिञ्चने पुनः। (दयो० ३६)

खाता (स्त्री०) [खात+टाप्] बनाया हुआ तालाब।

खातिः (स्त्री०) [खन्+क्तिन्] खोदना, खनन, खुदाई।

खातिका (स्त्री०) खाई, परिखा। (वीरो० वृ० २/२४) (सुद० १/३६)

खातिकाम्भः (पुं०) खाई का विशद जल, परिखा जल, किले से पूर्व खोदी जाने वाली परिखा का जल। इतीव तं जेतुमहो प्रयाति तत्खातिकाम्भश्छविदम्भजातिः। (वीरो० २/२८)

खात्रं (नपुं०) [खन्+ष्ट्रन्] १. कुदाली, २. तालाब, ३. अरण्य।

खाद् (सक०) खाना, निकलना। खाद्यताम्-भक्ष्यता प्राप्ति योग्य समश्नातु खादतु ज्ञानी। (जयो० १०/१२) (जयो० २७/४६)

खादः (पुं०) खाद, भूमि को पुष्ट करने वाली गोबर की खाद। प्रस्तूयते सातिशयाख्यखादः चेदंकुरयात्मविदोऽप्रमादः। मृदन्तरा बीजवदीप्यतेऽदः पुनः किलास्पष्ट सदात्मवेदः। (सम्य० १०७)

खादक (वि०) [खाद्+ण्वुल्] खाने वाला, उपभोग कर्ता।

खादतुं-खाने के लिए (जयो० २७/४७)

खादनः (पुं०) दन्त, दांत।

खादनं (नपुं०) खाना, चबाना।

खादन्ती -खाती हुई, भोग करती हुई, (मुनि०११)

खादाञ्चक्रे-खाया गया, उपभोग किया गया। (दयो० ५७)

खादेत् खाना चाहिए। खादेत्त देवासमुतेऽभिवादी। (वीरो० ४/३३)

खादित (वि०) भुंजित (दयो० १९) खादितवान्-खाया गया (दयो० ९५)

खादितुं खाने के लिए (दयो० ९५)

खादितवान्-खाया गया (दयो० ९५)

खादिर (वि०) [खदिर+अञ्] खैर का वृक्ष। (जयो० १२/३४)

खादिरसारः (पुं०) कत्था। (जयो० १२/१३४)

खादुकः (पुं०) [खाद्+उन्+कन्] उत्पाती, द्वेषपूर्ण।

खाद्यं (नपुं०) भोजन, भोज्यपदार्थ, (जयो० वृ० १२/१२५)

खाद्यवस्तुं (नपुं०) अन्न, भोजन पदार्थ। खाने योग्य वस्तु।

खानं (नपुं०) [खन्+ल्युट्] खुदाई, क्षति, खदान।

खानक (वि०) [खन्+ण्वुल्] खोदने वाला।

खानिः (स्त्री०) खान, खदान। 'प्रवर्तते तेन विवेकखानिरयम्' (सम्य० ७५)

खानिक (वि०) [खान्+ठञ्] दरार, तरेड़।

खानित (वि०) खुदवाने वाला। (दयो० ९८)

खानिल (वि०) सेंध लगाने वाला।

खारः (पुं०) [खम् आकाशम्, आधिक्येन तृच्छति-ख+ऋ+त्रण्] माप विशेष।

खारवेली (पुं०) कलिंग देश का नरेश। (वीरो० १५/३२)

खिङ्खुरः (पुं०) लोमड़ी।

खिद् (सक०) १. प्रहार करना, मारना, काटना, खींचना, २. थकान होना, श्रान्त होना, क्लान्त होना, कष्ट होना।

खिदिरः (पुं०) [खिद्+किरच्] १. सन्यासी, २. दरिद्र, ३. चंद्र।

खिन्न (भू०क०कृ०) १. दुःखी, अप्रसन्न, व्याकुल, कष्टजन्य, पीड़ित व्यापन्न। (जयो० ३/११०) 'खिन्ना यदिव सहज-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कद्विधिना' (सुद० ७४) **'किन्नथ**-किन्नाथकरोमि खिन्न:' (दयो० २/२) **खिन्न**-उत्कण्ठित (जयो० १२/१३०) 'मालत्या: शाकमुदीक्षेऽहमेव श्रुत्वाऽऽहान्या खिन्न? (जयो० १२/१३०) 'खिन्ना किमिति मेदिनीम्' (जयो० ३/११०) 'शफास्तेषामाघातै: खिन्ना:
व्यापन्ना किमित्येवमनुनयन्। (जयो० वृ० ३/११०)

खिन्नता (वि०) व्याकुलता, कष्टजन्यता, पीड़ा युक्त। 'न मनागपि खिन्नतां गत:। (वीरो० ७/३०) 'यदगमं भवतो भुवि भिन्नतां। तदुपयामि सदैव हि खिन्नताम्। (जयो० ९/४१)

खिल: (पुं०) मरुभू, मरुधरा, ऊसर भूमि, पथरीली भूमि।

खिलं (नपुं०) मरुधरा, परती भूमि।

खिलीक (वि०) रोकना, बाधा डालना।

खिलीभू (वि०) नष्ट करना, उजाड़ना।

खुङ्गाह: (पुं०) [खुम् इत्यव्यक्तशब्दं कृत्वा गाहते-खुम्+गाह+अच्] कृष्ण-अश्व, टट्टू, ०अड़ियल घोड़ा।

खुर: (पुं०) [खुर+क] १. खुर, घोड़े का नख। २.खाट का पाया। ३. छुरा, उस्तरा, ४. पलंग का पाया।

खुरणस् (वि०) चिपटी नासिका वाला।

सुरपदं (नपुं०) घोड़े के पैर।

खुरपात: (पुं०) घोड़ों की टाप। 'खुरपात-विदारिताङ्गणै:' (जयो० १३/२६) 'खुराणां पातेन विदारितम्' (जयो० वृ० १३/२६)

खुरली (स्त्री०) सैनिक अभ्यास।

खुरलेखा (स्त्री०) खुरों की रेखाएं। (जयो० वृ० ३/२७)

खुरालक: (पुं०) [खुर इव अलति पर्याप्नोति-खुर+अल्+ण्वुल्] अयस्क बाण।

खुरालिक: (पुं०) [खुराणां आलिभि: कायति प्रकाशते-खुराणि+कै+क] छुर रखने का स्थान, उस्तरा का स्थान।

खुलोक: (पुं०) चूहा, मूषक। यै: सम्भवित्री बहुधान्यहानिर्यथा खुलोकैरवनाविदानीम्। (समु० १/२०)

खुल्ल (वि०) क्षुद्र, छोटा, लघु, अधम, निम्न।

खेचर: (पुं०) विद्याधर। (जयो० ६/६)

खेट: (पुं०) [खे अटति-अट्+अच्] १. खेड़ा, गाँव। २. एक शस्त्र, गदा।

खेटितान: (पुं०) गाकर जगाना।

खेटिन् (पुं०) [खिद्+णिनि] दुराचारी।

खेद: (पुं०) कष्ट, दु:ख, पीड़ा, अवसाद , आलस्य, थकान। 'अनिष्टलाभ: खेद:' (नि०सा०टी०६) (सुद० ८७) कस्मै मनुष्याय न कोऽपि खेद:। (वीरो० १४/५२)

खेदकर (वि०) कष्टप्रद, पीड़ादायी। सम्वेदवत्खेदकरं तदस्तु। (जयो० १६/२६)

खेदयेत्-खेद उत्पन्न करे, थकान उत्पन्न करे। नैषा वेगं तावकं संविसोढुं शक्ता नैनां खेदयेतीह वोढ:। (जयो० १७/१२८) 'एनां न खेदय खिन्नां विधेहि' (जयो० वृ० १७/१२८)

खेनोडुक: (पुं०) आकाश में तारे। खेनाकाशेनोडुकानि नक्षत्राण्येव। (जयो० १५/४२)

खेयं (नपुं०) [खन्+क्यप्] खाई, परिखा।

खेल् (सक०) हिलाना, क्रीड़ा करना, जाना कांपना। खेलितुं (जयो० २०/४५) सलालसा खेलति सा स्म तस्य। (जयो० ११/१)

खेल (वि०) [खेल्+अच्] क्रीडन, क्रीडापूर्ण। शैशवमपि शबलं किल खेलै: कृतोचितानुचितम्। (जयो० २३/५७) 'खेलै: क्रीडनै: शबलं' (जयो० वृ० २७/५७)

खेला (स्त्री०) क्रीडा, खेल।

खेलि: (स्त्री०) क्रीडा, खेल।

खोटि: (स्त्री०) चतुर स्त्री।

खोड (वि०) [खोड्+अच्] विकलांग, पंगू।

खोर (वि०) पंगू, लंगड़ा।

खोलक: (पुं०) पुरवा, सकोरा, छिलका।

खोलि: (पुं०) [खोल्+इन्] तरकस्।

ख्या (सक०) कहना, बोलना, घोषणा करना, ज्ञात करना।

ख्यात (वि०) १. कथित, प्रतिपादित। (सम्य० १९) २. प्रसिद्ध (जयो० ३/७३, जयो० १/५१)

ख्याति: (स्त्री०) प्रसिद्धि, कीर्ति, यश। (समु० १३/३२)

ख्यातिगत (वि०) प्रसिद्धियुक्त।

ख्यापनं (नपुं०) उद्घाटन, घोषणा।

ग

ग: (पुं०) यह कवर्ग का तृतीय व्यञ्जन है, इसका उच्चारण स्थान कण्ठ है। आभ्यन्तर प्रयत्न जिह्वामूल स्पर्श और बाह्य प्रयत्न संवारनाद घोष है।

ग (वि०) [गै+क] गतिमान होने वाला, ठहरने वाला, जाने वाला।

ग: (पुं०) १. गन्धर्व, २. गणेश, ३. दीर्घ मात्रा। ४. प्रशंसा, स्तुति, प्रार्थना। ५. गणधर।

गकार: (पुं०) ग व्यञ्जन। (जयो० १/४८)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गगनं (नपुं०) [गच्छन्त्यस्मिन्-गम्+ल्युट्, ग आदेशः] नभ, आकाश, देवपथ, गुह्यकाचरित, अवगाहन, अन्तरिक्ष। आगासं गगणं देवपधं गोज्झगाचरिदं अवगाहलक्खणं आधेयं वियापग-आधारो भूमित्ति एयट्ठो (धव०४/८) आधेय, व्यापक, आधार, भूमि। धरैव शय्यागगनं वितानम्' (सुद० १/३५) वियत्-गगन (जयो० १८/२२) 'वियति गगने प्रागुत्थितः पूर्वदिशि सञ्जातः' (जयो० वृ० १८/२२)

गगनंकष (वि०) गगनचुम्बी, व्योम चुम्बिन्। (जयो० २१/६३) 'यातीव स्वःपुरीं चेतुं स्व सौधैर्गगनंकषैः।' (दयो० १/१०)

गगन-कुसुमं (नपुं०) आकाश पुष्प। अवास्तविक वस्तु के लिए दिया जाने वाला दृष्टान्त।

गगनगङ्गा (स्त्री०) सुपर्ववाहिनी, आकाशगङ्गा। 'जयकुमारस्य अग्रतः सम्मुखं सुपर्ववाहिनी गगनगङ्गा समवाप।' (जयो० वृ० १३/५३)

गगनगतिः (पुं०) देव, विद्याधर।

गगनचरः (वि०) आकाश में विचरण करने वाला, नक्षत्र, ग्रह, पक्षी।

गगनचुम्बी (वि०) आकाश को स्पर्शित करने वाली। (दयो० १/१०)

गगनध्वजः (पुं०) १. सूर्य, रवि, दिनकर। २. मेघ।

गगनपतिः (पुं०) सूर्य, रवि, दिनकर।

गगनविहारि (वि०) आकाश में विचरण करने वाले।

गगनसद् (वि०) आकाश में स्थित होने वाला।

गगनसिन्धु (स्त्री०) आकाश गङ्गा।

गगनस्थ (वि०) नभस्थ, आकाश में स्थित।

गगनस्थित (वि०) नभस्थ, आकाश में विद्यमान।

गगनस्पर्शनः (पुं०) पवन, वायु, हवा।

गगनाग्रं (नपुं०) आकाश का उन्नत भाग, उच्चतम प्रदेश।

गगनाङ्गणं (नपुं०) आकाश भाग, नभाङ्गण। 'गगनाङ्गमाशु चञ्चलैर्ध्वजिनी। (जयो० १३/३७)

गगनाङ्कः (पुं०) विद्याधर, आकाशगामी। 'गगनाङ्कानामा-काशगामिनां मनुष्याणां पङ्क्तिर्वर्तते' (जयो० वृ० ६/७)

गगनापगा (स्त्री०) गङ्गानदी, आकाशनदी, स्वर्ग नदी।

गगनापगाचयः (पुं०) आकाश गंगा का प्रवाह, गंगा प्रवाह। (जयो० १३/५५)

गगनाध्वगः (पुं०) सूर्य, ग्रह, नक्षत्र।

गगनाम्बुः (नपुं०) वर्षा का जल।

गगनोदितनगरं (नपुं०) गन्धर्वनगर। आकाशे प्रकटितपुर। (जयो० २/१५४)

गङ्गराज (पुं०) सेनापति गङ्गराज। सेनापतिर्गङ्गराजश्चास्य लक्ष्मीपतिः प्रियाः। जिनपादाब्जसेवायामेवासून् विससर्ज तान्।। (वीरो० १५/५०)

गङ्गहेमाण्डि (पुं०) नाम विशेष राजा। दोर्बलगङ्गहेमाण्डि मान्धातुर्या सधर्मिणी। श्री पद्द-महादेवी बभूव जिनधर्मधृक्।। (वीरो० १५/४४)

गङ्गा (वि०) मनोहर, रमणीय, सुन्दर। (जयो० वृ० २०/६७)

गङ्गा (स्त्री०) [गम्+गन्+टाप्] गंगा नदी, हिमालय से निकलने वाली मैदानी नदी, गगनापगा। (जयो० वृ० १३/५५) 'श्री सिन्धु गङ्गान्तरतः स्थितेन' (वीरो० २/८)

गङ्गाक्षेत्रं (नपुं०) गंगा का प्रदेश।

गङ्गाजः (पुं०) भीष्म, कार्तिकेय।

गङ्गातट (नपुं०) गंगा प्रान्त। (जयो० वृ० २०/६४)

गङ्गादत्तः (पुं०) भीष्म।

गङ्गादेवी (स्त्री०) गङ्गा नामक देवी। 'गङ्गत्यभिराम मनोहरं नाम यस्यास्सा देवी' (जयो० वृ० २०/६४) सती सुलोचना के उच्चरित नमस्कार मंत्र के प्रभाव से स्त्रीरूप को छोड़कर गङ्गादेवी हुई। विपिनविहारे पन्नग-दष्टाभ्यतीत्य नारीरूपमकष्टात्। सुदृशा घोषितमनुप्रसङ्गाज्जाताहमहो देवी गङ्गा।' (जयो० २०/६७)

गङ्गाधरः (पुं०) महादेव, शिव, शंकर। 'सद्धार गङ्गा धरमुग्ररूपं तवेमभुच्चैस्तनशैलभूपम्। दिगम्बरं गौरि! विधेहि चन्द्रचूडं करिष्यामि तमामनन्द्रः।। (जयो० १६/१४) 'गलभूषणमेव गङ्गा तां धरतीति तं तथैव सती धारा यस्यास्तां गङ्गा धरतीति वा तामेव दिगम्बरं विधेहि। (जयो० वृ० १६/१४)

गङ्गापगा (स्त्री०) गङ्गा नदी। 'गङ्गापगासिन्धुनदान्तरत्र' (सुद० १/१४)

गङ्गाप्रवाहः (पुं०) सुरस्रोत, (जयो० १५/

गङ्गापुत्रः (पुं०) गङ्गा का पुत्र, भीष्म, कार्तिकेय।

गङ्गाभृत (पुं०) १. शिव, २. समुद्र।

गङ्गामध्यम् (नपुं०) गंगा तट।

गङ्गायात्रा (स्त्री०) पवित्र यात्रा।

गङ्गाक्षुतः (पुं०) भीष्म।

गङ्गाह्रदः (पुं०) एक तीर्थ।

गच्छः (पुं०) १. वृक्ष, २. गण, संघ, समुदाय। तिपुरिसओ गणो, तदुवरि गच्छो।' (धव०१३/६३) साधुसमुदाय-'एकाचार्यप्रणेय **साधुसमूहो** गच्छः। साप्तपुरुषिकी गच्छः। (जैन०ल० ४०५)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गज् (अक०) गर्जना, चिंघाड़ना, चिल्लाना, दहाड़ना, व्याकुल होना।

गजः (पुं०) [गज्+अच्] हस्ति, हाथी, करि, इभ। 'जय कुमारो भवान् स इभा गजाश्च वाजिनो।' (जयो० १३/२३)

गजकुम्भः (पुं०) गण्डस्थल, हस्तिगण्डस्थल। 'गजास्तेषां कुम्भेभ्यो गण्डस्थलेभ्यो मुक्ता' (जयो० वृ० ६/६९)

गजकर्णः (पुं०) शिव।

गजकर्माशिन् (पुं०) गरुड़।

गजगतिः (स्त्री०) हस्ति चाल, मंद गति।

गजगामिनी (वि०) हस्ति चाल वाली।

गजदध्न (वि०) हस्ति सदृश उच्च।

गजदन्तः (पुं०) हाथी दांत, १. गणपति।

गजपत्तनं (नपुं०) राजा जयकुमार का शासित नगर, हस्तिनापुर। 'गज पत्तनस्य शशंस' (जयो० १३/१) (जयो० २/१५८)

गजपत्तननायकः (पुं०) हस्तिनापुर नरेश, गजपत्तननायकः श्री जयकुमारः। (जयो० १३/१३)

गजपादः (पुं०) हस्तिपाद। 'मुदाऽऽदायमेकोऽम्बुज कलिकां पूजनार्थमायातः।' गजपादनाध्वनि मृत्वाऽसौ स्वर्गसम्पदां यातः।। (सुद० ११४)

गजपुङ्गवः (पुं०) श्रेष्ठ हस्ति।

गजपुरं (नपुं०) हस्तिनापुर। 'पत्तनं गजपुरं प्रति विनिर्गतिः' (जयो० २१/१)

गजबन्धनी (स्त्री०) १. ०वारी, ०बाड़, २. गज अस्तबल श्रृंखला। ३. गज श्रृंखला 'परास्ता ध्वस्ता वारी गजबन्धनी।' (जयो० १३/११०)

गजमारी (स्त्री०) हस्तिमृत्यु। 'गजानां मारी नामापमृत्युस्तस्य नाशनं' (जयो० वृ० १९/७७) णमो विडोसहिपत्ताणं च गजमारीनाशनं समञ्चत्। (जयो० १९/७७)

गजमुक्ता (स्त्री०) हस्तिमुक्ता, जो गज के मद से बनती है।

गजमुखः (पुं०) गणेश।

गजमौक्तिकं (नपुं०) गजमुक्ता।

गजमोटनः (पुं०) सिंह।

गजयो० गिन् (वि०) हस्ति पर आरुढ़ होकर युद्ध करने वाला।

गजराज (पुं०) द्विपेन्द्र, हस्तिराज। (वीरो० ४/५७, जयो० १३/९६)

गजराजिः (स्त्री०) हस्ति पंक्ति, हरित समूह। 'गजराजिरितः समाव्रजत्यथवा।' (जयो० १३/१४)

गजवमः (पुं०) हस्ति सुंड, हाथी की सूंड। (जयो० ६/५३) 'गजानां वमथुभिः' (जयो० वृ० ६/५३)

गजव्रजः (पुं०) हस्ति दल।

गजस्थ (वि०) हस्त्यारुढ़।

गजस्नानं (नपुं०) हस्ति स्नान।

गजाग्रणी (पुं०) उत्तम हस्ति।

गजाधिपः (पुं०) गजराज, श्रेष्ठ हाथी।

गजाधिपतिः देखें ऊपर।

गजाध्यक्षः (पुं०) हस्ति अधीक्षक।

गजाननं (पुं०) गणपति।

गजापसदः (पुं०) उन्मत्त हाथी, दुष्ट हस्ति।

गजाशनः (पुं०) अश्वत्थ वृक्ष।

गजारिः (पुं०) सिंह।

गजायुर्वेदः (पुं०) हस्ति चिकित्सा।

गजारोहः (पुं०) महावत।

गजाह्व (नपुं०) हस्तिनापुर।

गञ्ज (सक०) ध्वनि करना, विशेष आवाज करना।

गञ्जः (पुं०) [गंज्+घञ्] १. खान, आकर, खदान, २. खजाना, ३. मण्डी, ४. गोशाला, पर्णशाला, ५. अनादर, तिरस्कार। अनाज मंडी।

गञ्जन (वि०) [गञ्ज्+ल्युट्] क्षुद्र समझना, लज्जित करना।

गञ्जिका (स्त्री०) [गञ्जा+कन्+टाप्] मधुशाला, मदिरालय।

गठ-जोड़ः (वि०) गठबन्धन, अनुबन्ध।

गठबन्धनं (नपुं०) गठजोड़, अनुबन्ध। विवाह के समय वर-वधू के एक सूत्र में बांधने के लिए आपस में वस्त्र का गठबन्धन करना। अञ्चलवान्त भागस्य वस्त्रप्रान्तस्य बन्धो ग्रन्थिबन्धनाख्यो यः स' (जयो० वृ० १२/६३) उभयोः शुभयोगकृत्प्रबन्धः समभूदञ्चलवान्तभागबन्धः। न परं दृढ एव चानुबन्धो मनसोरप्यनसोः श्रियां स बन्धो।। (जयो० १२/६३)

गड् (सक०) खींचना, निकालना।

गडः (पुं०) १. खाई, परिखा, २. पर्दा, आवरण, रुकावट।

गडिः (स्त्री०) वत्स, बछड़ा।

गडु (वि०) [गड्+उन्] १. बेडौल, कुबड़ा। २. केंचुआ, ३. जलपात्र।

गडुकः (पुं०) [गडु+कै+क] जलपात्र, अंगूठी।

गडुर (वि०) कुबड़ा, बेडौल।

गडेरः (पुं०) [गड्+एरक] मेघ, बादल।

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गडोल: (पुं०) [गड्+ओलच्] कच्ची खांड।

गड्डर: (पुं०) भेड़।

गड्डरिका (स्त्री०) [गड्डरं मेषमनुधावति ठन्] १. भेड़ों की पंक्ति। २. नदी, धारा, प्रवाह, भेड़िया धसान।

गड्डुक: (पुं०) स्वर्णपात्र।

गण् (सक०) गिनना, गणना करना, हिसाब करना, जोड़ना, मूल्य निर्धारण करना, 'मानना, समझना, गणित करना। (जयो० ३)

गण: (पुं०) [गण+अच्] गणना, गिनना, मानना, समझना। (जयो० ३/३) गण: समूहे प्रमथे संख्या सैन्यप्रभेदयोरिति (जयो० वृ० ६/४४) १. समूह-माता, पिता पुत्रादि, २. प्रधान (जयो०) कुटुम्बीजन। देही देहस्वरूपं स्वं देहसम्बन्धिनं गणम्। (सुद० ४/७) ३. स्थविर सन्तति, आचार पद्धति। 'पूर्ययतिषु सन्मना गुणगृह्य एव यतिनाममहौ गण:' (जयो० २/९५) कुल समुदाय।

गणक (वि०) गणितज्ञ, दैवज्ञ, निमित्त तन्त्रि। (जयो० वृ० ३/६६)

गणकार: (पुं०) वर्गीकरण, विश्लेषण।

गणकृत्वस् (अव्य०) कई बार, अनेक बार।

गणगच्छभेद: (पुं०) गण के गच्छ का भेद। आगारवर्तिषु यतिष्वपि हन्त खेदस्तेनाऽऽश्वभृदिह तमां गण गच्छभेद:। (वीरो० २२/१८)

गणगति: (स्त्री०) उच्च संख्या, विशिष्ट गणना।

गणचक्रकं (नपुं०) गुणी समूह का स्नेह भोज, ज्योनार, सहभोज, प्रीतिभोज।

गणछन्दस् (नपुं०) विनियमित छन्द, गण के प्रयोजन से युक्त छन्द।

गणणीय (वि०) पूजनीय, आदरणीय। (जयो०) गिनने योग्य (जयो० ५/९४)

गणदीक्षा (स्त्री०) सामूहिक प्रव्रज्या।

गणदेवता (पुं०) इष्ट देवता।

गणद्रव्यं (नपुं०) सार्वजनिक सम्पत्ति।

गणधर: (पुं०) १. गण रक्षक-गणभृत्स (वीरो० १४/२) 'गणपरिरक्खो मुणेयव्वो' (मूला०४/३५) 'गणं धारयतीति गणधर:' गणान् धारयन्ति गणधरा:'

गणनं (नपुं०) १. गिनना, (जयो० ६/६२) २. मानना, संख्या (समु० १/५९)

गणनभाव: (पुं०) पूज्यभाव। (जयो०)

गणना (स्त्री०) समय (जयो० १/१६) एक, दो, तीन आदि संख्या विधान। (जयो० वृ० ११/८८)

गणनाथ: (पुं०) गणस्वामी, गच्छनायक।

गगनप्रयोग (पुं०) गुणन प्रयोग। (जयो० १/३४)

गणनायक: (पुं०) गणपति।

गणप: (पुं०) गणेश।

गणपति: (पुं०) गणेश, गणपति, गणनायक।

गणपर्वत: (नपुं०) कुलाचल, गणाचल।

गणपीठकं (नपुं०) वक्षस्थल।

गणपुंगव: (पुं०) संघ प्रमुख।

गणपूर्व: (पुं०) संघाधिपति, मुखिया।

गणभर्तृ (पुं०) शिव।

गणभृत् (पुं) देवसमूह। (जयो० १९/८५)

गणभृत्स: (पुं०) गणधर। अभूद् द्वितीयो गणभृत्स वायुभूतिस्तृतीय: सकलीकृताऽऽषु: (वीरो० १४/२)

गणयज्ञ: (पुं०) सामूहिक संस्कार।

गणराड (पुं०) गणधर। (वीरो० १४/८) वीरस्य सान्निध्यमुपेत्य जात स्तत्त्वप्रतीत्या गणराडिहात:।

गणराजदेव: (पुं०) गौतम स्वामी (वीरो० १/७) (वीरो० १४/८)

गणशरणं (नपुं०) मुनिसंघ-शरण, गच्छशरण। (समु० १३६)

गणाग्रणी (पुं०) गणपति।

गणाचल: (पुं०) मेरुपर्वत।

गणाधिप: (पुं०) १. गणपति (जयो० १/२) गणधर (जयो० १९/४४) २. सैन्यपति। ३. संघ प्रमुख, गच्छाधिपति। आचार्य, गुरुकुल का प्रमुख। 'गणाधिप: धर्माचार्यस्तादृग्गृहस्थाचार्यो वा।' (सागार ध०२/५१)

गणाधिपति: देखो ऊपर।

गणावच्छेदक: (वि०) गण का नेतृत्व करने वाला, धर्माचार्य।

गणि: (स्त्री०) [गण्+इनि] गिनना, हिसाब करना।

गणि: (पुं०) संघ नायक, आचार्य, साधुओं में अग्रणी आचार्य विशेष।

गणिका (स्त्री०) [गण+ठञ्+टाप्] वैश्या। पण्यस्त्री, सुरतस्याधिष्ठात्री। (जयो० १७/५१) (जयो० ३/८०, १/१३३)। यूथिका, जूही। (जयो० २४/११५) गणिका यूथिका वेश्या इति विश्वलोचन। (जयो० वृ० २४/११५)

गणित (वि०) [गण्+क्त] गिना हुआ, गुणित, क्षेत्रित।

गणितपदं (नपुं०) क्षेत्रफल।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गणितशास्त्रं (नपुं०) करणानुयोगशास्त्र। (जयो० वृ० १/३४)

गणितिन् (पुं०) [गणित+इनि] गणितज्ञ।

गणिनी (स्त्री०) संघ प्रमुखा, (मुनि०२८) धर्मसंघ नायिका। २. गणनाकर्त्री, अधिकारिणी। (जयो० २२/६०)

गणी (पुं०) गणधर, द्वादशांग ज्ञाता। (जयो० ९/८२) गच्छाधिपोगणी। गौतम नाम 'गणी यथा गौतमनाधेयः' (वीरो० १४/१) 'गणी बभूवाऽचल एवमन्यः प्रभो सकाशान्निजनामधन्यः'

गणीशः (पुं०) गणधर। (वीरो० १४/१९)

गणेय (वि०) गिनने योग्य।

गणेरू (स्त्री०) [गण्+एरू] १. कर्णिका वृक्ष। २. वेश्या, ३. हथिनी।

गणेरुका (स्त्री०) [गणेरू+कै नप] दूती, सेविका, कुटिनी।

गण्डः (पुं०) गाल, कपोल, गण्डस्थल।

गणेशः (पुं०) वीरोक्तमनुवदति गणेश विश्वहेतवे (वीरो० १५/९) गणधर, साधुसंघ स्वामी। (भक्ति०१०) १. आचार्य 'अर्हन्नथो सिद्धरतो गणेशश्चाध्यापकः' साधुरनन्यनेशः' (भक्ति०१९)२. लम्बोदर, गजानन (दयो० ५३)

गण्डकः (पुं०) १. गेंडा, २. रूकावट चिह्न, धब्बा।

गण्डकुसुमं (नपुं०) हस्तिमद।

गण्डकूपः (पुं०) कूट कूप।

गण्डग्रामः (पुं०० बड़ा ग्राम।

गण्डजलं (नपुं०) मद जल (जयो० १५/२८)

गण्डदेशः (पुं०) कपोल, गाल।

गण्डफलकं (नपुं०) विस्तीर्ण कपोल।

गण्डभित्तिः (स्त्री०) गण्डस्थल, छिद्र।

गण्डमण्डलः (पुं०) कपोल, गाल (जयो० १०/१०५)

गण्डमालः (पुं०) कंठ रोग। (जयो० १९/८०)

गण्डमूर्खः (पुं०) मूढ, पूर्ण मूर्ख।

गण्डशिला (स्त्री०) विशाल चट्टान।

गण्डशैलः (पुं०) विशाल चट्टान।

गण्डस्थलं (नपुं०) हस्ति कपोल, गजकुम्भ। (जयो० ६/५९)

गण्डस्थलाग्रभागः (पुं०) कपोलपालि, गलभाग। (जयो० १३/७१)

गण्डस्थली (स्त्री०) कपोल, कनपटी।

गण्डकी (स्त्री०) नदी।

गण्डलिन् (पुं०) शिव।

गण्डिः (पुं०) [गण्ड+इनि] वृक्ष तना।

गण्डिका (स्त्री०) [गण्डक+टाप्] १. पिण्ड, पीठी। २. वाक्य पद्धति। ३. एक प्रकार का पेय पदार्थ।

गण्डिकानुयोगः (पुं०) अर्थ कथन की विधि।

गण्डीरः (पुं०) [गण्ड्+ईरन्] नायक, योद्धा।

गण्डूः (पुं० स्त्री०) [गण्ड्+ड+ऊङ्] १. तकिया, २. जोड़, गांठ।

गण्डूः (स्त्री०) हड्डी।

गण्डूपदः (पुं०) एक कीट, केंचुआ।

गण्डूभवं (नपुं०) सीसा।

गण्डूपदी (स्त्री०) छोटा केंचुआ।

गण्डूषः (पुं०) [गण्ड्+ऊषन्] कुरलक, कुल्ल। (जयो० १९/६) मुट्ठीभर, हस्ति सुंड नोंक।

गण्डूषनिरुक्तिः (स्त्री०) कुरलक प्रवृत्ति (जयो० १९/६) गण्डूषाणां कुरलकानां निरुक्ति प्रवृत्तिः।

गण्डोलः (पुं०) [गंड्+ओलच्] कच्ची खांड।

गण्य (वि०) ०सर्वोत्तम, ०अग्रगण्य ०शुचि। रुचिरमग्रतो गण्यम्। (जयो० ६/९४)

गत (भू०क०कृ०) [गम्+क्त] व्यतीत, समाप्त, गया हुआ बीता, पहुंचा, सम्मिलित, अन्तर्निहित, समाहित, गतश्चतुर्वर्गबहिर्भवत्वं पुमान् समूहो न किलाप सत्त्वम्। (जयो० १/२४) श्री चक्रपाणेः स गतः प्रतिष्ठाम्। (जयो० १/१६) 'सकाशात् प्रतिष्ठां गतः प्राप्तः सन्' (जयो० वृ० १/१६) 'कौमाल्यगुणं गतः स वा। (सुद० ३/२९) **विस्तृत**-'श्रुतिप्रान्तगतो विलासः' (सुद० २/८) कानों के समीप तक विस्तृत। **अतिलङ्घित**-'वनभूमिरूपागता गता जनभूमिर्ननु जानता नता।' (जयो० १३/४२)

गतकर्म (वि०) कर्म रहित।

गतकलष (वि०) पाप मुक्त।

गतकषाय (वि०) कषाय रहित।

गतक्लम (वि०) क्लेश रहित।

गतचेतन (वि०) मूर्छित, चेतनाशून्य।

गतदिनं (वि०) बीता हुआ कल।

गतधी (वि०) बुद्धिहीन। गतधियापि मया समयः श्रियाम्। (जयो० २५/७५)

गतप्रत्यागत (वि०) जाकर आया हुआ। वृत्तिपरिसंख्यान तप।

गतप्रभ (वि०) कान्तिहीन, यश रहित।

गतप्रमाद (वि०) प्रमाद रहित, अप्रमादी।

गतप्राण (वि०) प्राण रहित।

गतप्राय (वि०) प्रायः गया हुआ।

गतप्रेम (वि०) प्रेमशून्य।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गतभर्तृका (स्त्री०) विधवा स्त्री।

गतभ्रान्ति (वि०) भ्रम रहित, संशय विमुक्त।

गतरूप (वि०) रूप रहित।

गतरूपध्यान (वि०) देहस्थ ध्यान से रहित, इन्द्रिय व्यापार से रहित।

गतलक्ष्मी (वि०) धनाभाव।

गतवयस्क (वि०) वयस्क पने से रहित, वृद्ध, बूढ़ा।

गतवर्षः (पुं०) पिछला वर्ष, बीता हुआ वर्ष।

गतवर्ष (नपुं०) पिछला साल, बीता वर्ष।

गतवान् (वि०) गया हुआ। (जयो० वृ० १/८९)

गतवैर (वि०) वैर रहित, प्रीतिभाव युक्त।

गत-व्यथ (वि०) पीड़ा मुक्त।

गतशील (वि०) शील रहित।

गतशैशव (वि०) बचपन रहित।

गतसत्त्व (वि०) जीवन रहित।

गतसत्य (वि०) सत्यनिष्ठा शून्य अलीक युक्त, मिथ्यात्व सहित।

गतसन्मति (वि०) बुद्धिहीन।

गतसन्तोषः (वि०) संतोष रहित।

गतसाधना (वि०) साधना का अभाव।

गतसम्यक्त्व (वि०) सम्यक्त्व शून्य।

गतस्पर्श (वि०) स्पर्शरहित।

गताङ्कता (वि०) अनुकूलता। 'फलितैः फलितैर्गताङ्कता' (जयो० १३/४२)

गताद्य (वि०) विद्यमानता।

गताक्ष (वि०) दृष्टिहीन, अन्धा।

गतानुगत (वि०) पूर्व परम्परा का अनुयायी। (वीरो० १०/३९)

गतानुगत (वि०) सहज गति वाला। गतमनुगच्छति यतोऽधिकांशः सहजतयैव तथा मतिमान् सः।' (वीरो० १०/३९)

गतानुगतिः (स्त्री०) १. अनुगामी। 'गतं पूर्वजननमनु पश्चाद् गतिस्तया।' (जयो० २/१४१) २. भेड़ चाल। (वीरो० ५/३३) ३. अन्योन्यानुकरण-(वीरो० ५/३३)

गतानुगतिक (वि०) अन्धानुकरण करने वाला। 'गतानुगतिकत्वेन सम्प्रदाय· प्रवर्तते' (वीरो० १०/१७)

गतानुगतिकत्थ देखो ऊपर।

गतार्थ (वि०) निर्धन, दीन।

गतासु (वि०) प्राणहीन।

गतिः (स्त्री०) [गम्+क्तिन्] १. गमन, जाना, प्राप्त करना, पहुंचना। २. अवस्था, दशा, परिणति, स्थिति, अवस्थिति। चेष्टा-वामा गतिर्हि वामानां को नामावैति वामितः' (जयो० १५०) ३. संसार, भव। ४. जीवों का परिणमन। ५. देशान्तर संचरण। ६. उत्पत्ति। 'दधती कञ्जगति स्थिराशयम्' (जयो० १३/५९) स्रोत, उद्गम, प्राप्ति स्थान, गमन, आवागमन। (जयो० १३/२४) ७. **निर्वाह**-'मकरतोऽवतरस्य सरस्वति (जयो० २/९७) भवितुमर्हति नासुमतो गतिः। (जयो० ९/६१) **प्रवृत्ति**-गतिर्ममैतस्मरणैकहस्तावलम्बनः काव्यपथे प्रशस्तरा। (सुद० १/३)

गतिनियतिः (स्त्री०) आकाश गमन। 'कियती जगतीयती गतिर्नियतिर्नो वियति स्विदित्यतः।' (जयो० १३/२४)

गतिभङ्गः (पुं०) ठहरना, रुकना, स्थान ग्रहण करना, विराम।

गतिमत् (वि०) प्रसरण। (जयो० ११/६९)

गतिरोधः (पुं०) विराम, ठहरना। 'गतिरोधवशेनासावेतस्योपरि रोपणा'

गतिविद्या (स्त्री०) गणित तथा विज्ञान विद्या। (सुद० १३३)

गतिहीन (वि०) अशरण, निस्सहाय, परित्यक्त।

गत्वर (वि०) [गम्+क्वरप्] गतिशील, जंगम, चर।

गत्वरत्व (वि०) गमनशील। 'गत्वरत्वसमयातिसत्वरः' (जयो० २१/१)

गद् (सक०) बोलना, कथन करना, वर्णन करना। निजगात् (सुद० ७७) 'राजा जगाद न हि दर्शनमस्य' (सुद० १०५) 'तदा विलक्षभावेन जगादेतीश्वरीत्वरी' (सुद० १०५) 'किमिति गदसि लज्जाऽऽस्पदं' (सुद० ८७) सज्जङ्गभावं भजतो नगत्वं जगौ परोऽमुष्य पुनस्तु सत्त्वम्। सपर्याविरो बभूवेति जगुर्न वर्याः। (वीरो० ५/६)

गदः (पुं०) [गद्+अच्] १. बात कहना, भाषण करना। २. रोग विशेष। (वीरो० वृ० ३/५) मया नावगतं भद्रे! सुहृत्त्वापतितं गदम्। (सुद० ७७)

गदयित्नु (वि०) [गद्+णिच्+इत्नुच्] १. मुखर, वाचाल, २. कामुक।

गदयित्नुः (पुं०) मदन, कामदेव।

गदा (स्त्री०) [गद्+अच्+टाप्] मुद्‌गर, एक आयुध।

गदाग्रजः (पुं०) कृष्ण।

गदाग्रपाणिः (वि०) गदा युक्त, गदाधारी। गदाञ्चितो माधव इत्थमस्य निरामयस्य क्व सपो नृपस्य। (वीरो० ३/५)

गदान्वित (वि०) गदायुक्त, गदाधारी। 'सखी तेऽप्यभवत् पश्य नरोत्तम गदान्वितः। (सुद० ७७)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गदाधिकृत (वि०) मुग्दर युक्त (समु० ७/२)
गदाभृत (वि०) गदाधारी।
गदामुद्धा (स्त्री०) उर्ध्व गधा युक्त।
गदायुद्धं (नपुं०) गदा से युद्ध करना।
गदाहस्त (वि०) हस्त में गदा धारण करने वाला।
गदित (वि०) कथित, निरूपित (वीरो० २२/४) प्रतिपादित, विवेचित। (जयो० १२/११५) इत्यनेन वचसा हृदि मोदमप्युपेत्य गदितं च वचोऽद:। (जयो० ४/५०) 'सुदतीत्थं गदितापि मुग्धिकाशु' (जयो० १२/४५)
गदिन् (वि०) गदाधर, आयुधधारी।
गद्गद (वि०) [गद् इत्यव्यक्तं वदति गद्+गद्+अच्] हकलाना। (दयो० १२) भाव विभोर शब्द, हर्ष युक्त शब्द। भृशमित्यर्थात्सुदृशः समभाद् गद्गदगिरोद्धरणम्। (जयो० १७/१२५)
गद्गदध्वनि: (स्त्री०) हर्ष ध्वनि। (जयो० २/१५८)
गद्गदवाक्यं (नपुं०) हर्ष जन्य वचन।
गद्य (सं०कृ०) [गद्+क्त] बोलने या उच्चारण करने योग्य।
गद्यं (नपुं०) गद्य रचना, छन्दादि के नियम से विमुक्त वार्तिक।
गद्यचिन्तामणि (स्त्री०) वादीभसिंहकृत रचना। (जयो० २२/८४)
गद्यात्मक (वि०) गद्य से समन्वित, गद्य में रचा गया।
गन्तु (वि०) [गम्+तृच्] घूमता, जाता।
गन्त्री (स्त्री०) [गम्+ष्ट्रन्+ङीष्] बैलगाड़ी।
गन्ध् (सक०) क्षति पहुंचाना, पूछना, मांगना, चोट पहुंचाना।
गन्ध: (पुं०) सुगन्ध, सुरभि।
गन्ध: (पुं०) सम्बन्ध, आमोद, प्रमोद। गन्धो गन्धके सम्बन्धे' इति वि० (जयो० २५/१०) गन्धो गन्धक आमोदे लेशसम्बन्धगर्वयो:' इति चान्यत्र (जयो० वृ० २५/७०)
गन्धकुटी (स्त्री०) समवसरण सभा के मध्य में सुरभि को प्रदान करने वाली कुटी। (जयो० वृ० २६/६०) 'मध्येसभं गन्धकुटीमुपेत:' (वीरो० १३/१७)
गन्धकाष्ठं (नपुं०) चन्दन की लकड़ी।
गन्धकेलिका (स्त्री०) कस्तूरी।
गन्धग्राही (स्त्री०) गन्ध ग्रहण करने वाली। (समु० ८/११)
गन्धगुणं (वि०) गन्ध युक्त द्रव्य।
गन्धघ्राणं (नपुं०) सुगन्ध ग्राहक नाक।
गन्धजलं (नपुं०) सुगन्धित जल, चन्दन युक्त जल।
गन्धज्ञा (स्त्री०) नासिका।
गन्धतूर्य (नपुं०) रण दुंदुभि।
गन्धतैलं (नपुं०) सुगन्धित तैल।
गन्धदायक (वि०) गंध देने वाला गंध प्रदतूलाश (जयो० २६/१९)
गन्धदारू (नपुं०) चन्दन, अगर की लकड़ी।
गन्धद्रव्यं (नपुं०) सुगन्धित पदार्थ।
गन्धधूलि: (स्त्री०) कस्तूरी।
गन्धनं (नपुं०) १. गन्धन सर्प विशेष। २. प्रसंग (जयो० ६/१२७)
गन्धनकुल: (पुं०) छछुन्दर।
गन्धनालिका (स्त्री०) चमेली।
गन्धपाषाण: (पुं०) गन्धक।
गन्धपिशाचिका (वि०) काले रंग का धुंआ।
गन्धपुष्पं (नपुं०) सुगन्धित पुष्प।
गन्धपुष्प: (पुं०) नीलगिरि।
गन्धपुष्पा (स्त्री०) नीलगिरि का पौधा।
गन्धफली (स्त्री०) चम्पककली, प्रियंगुलता।
गन्धबन्धु: (पुं०) आम्र वृक्ष।
गन्धमातृ (स्त्री०) भूमि, पृथ्वी।
गन्धमादन: (पुं०) भ्रमर।
गन्धमूषिक: (पुं०) छछुन्दर।
गन्धमृग: (पुं०) गन्धविलाव।
गन्धमोहिनी (स्त्री०) चम्पक कली।
गन्धयुक्ति: (स्त्री०) सुगन्धि का उपाय।
गन्धराज: (पुं०) चमेली पुष्प।
गन्धलता (स्त्री०) प्रियंगुलता, चम्पककली।
गन्धलोलुपी (स्त्री०) मधुमक्खी।
गन्धवती (वि०) गन्धवाली। (सुद० ३/२५)
गन्धवह: (पुं०) वायु, मलयानिल (वीरो० ६/३३) १. कस्तूरीमृग। 'ते शारदा गन्धवहा: सुवाहा वहन्ति सप्तच्छदगन्धवाहा:' (वीरो० २१/१४)
गन्धवहा (स्त्री०) नासिका।
गन्धवाह: (पुं०) पवन, हवा, समीर।
गन्धवाहक: (पुं०) वायु। (वीरो० २१/१४)
गन्धवाही (स्त्री०) नासिका।
गन्धर्व: (पुं०) १. गन्धर्व/दैवीय गीतकार, प्रवीण २. हय, अश्व, घोड़ा। 'निम्नानि गन्धर्व शफै: कुलानि' (जयो० ८/२७)
गन्धर्वनगरं (नपुं०) गगनोदितनगर, गीत विद्याधर नगर। (जयो० वृ० २/१५४)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गन्धर्वशफः (पुं०) अश्वखुर-'गन्धर्वाणां हयनां शफैः खुरैः (जयो० ८/२७)

गन्धविह्वलः (पुं०) गेहूं।

गन्धवाती (स्त्री०) गन्ध फैलाती। (जयो० ६/७१)

गन्धशेखरः (पुं०) कस्तूरी।

गन्धसारः (पुं०) चन्दन।

गन्धसोमः (पुं०) धवल कुमुदिनी।

गन्धहारिका (स्त्री०) गन्धकारिका। गन्ध लेकर चलने वाली।

गन्धहेतु (स्त्री०) गन्ध का कारण। (मुनि० २६)

गन्धापकर्षणं (नपुं०) आठ सुगन्धित पदार्थ का मिश्रण।

गन्धाधिक (वि०) गन्ध की अधिकता। (जयो० ५/७१)

गन्धोत्तमः (स्त्री०) शराब, मद्य, मदिरा।

गन्धोदश (नपुं०) सुगन्धित जल। (जयो० ३/८८)

गन्धोदकवृत्ति (स्त्री०) गन्धोदकबिन्दु (जयो० २६/५८)

गन्धोदसंसिक्त (वि०) सुगन्धित जल से सिंचित, गन्धोदकेन सुगन्धिजलेन संसिक्ता उक्षिताः' (जयो० ८८)

गन्धोपजीविन् (वि०) सुगन्धित पदार्थों को बेचकर आजीविका चलाने वाले।

गभस्तिः (पुं०स्त्री०) [गम्यते ज्ञायते-गम्+ड+गःविषयः तं विभस्ति, भस्+क्तिच्] १. प्रभा, कान्ति, चन्द्रकिरण। २. दिनकर, सूर्य। (वीरो० २१/३)

गभस्तिकरः (पुं०) सूर्य, दिनकर।

गभस्तिपाणिः (पुं०) सूर्य, दिनकर।

गभस्तिमाली (पुं०) सूर्य, प्रभाकर, भानु। (दयो० १८)

गभस्तिहस्तिः (पुं०) सूर्य, दिनकर।

गभीर (वि०) [गच्छति जलमत्र, गम्+ईरन्] घना, सटा हुआ। गहरी (जयो० वृ० ३/४८) गहन, दुर्गाह्य, अंगाध, गुप्त, रहस्यपूर्ण।

गभीरचरितं (नपुं०) गूढचरित। (जयो० ९/९१) (जयो० १२/४९)

गभीरता (वि०) गहनता, रहस्यपूर्ण।

गभीरताविधिः (स्त्री०) रहस्यपूर्ण विधि। प्रभुरेष गभीरताविधिः स तन्त्रा परिवारितोऽबनिधेः।

गभीरहृत (वि०) गम्भीर चित्त। (जयो० ६/२१)

गभीरार्थवती (वि०) गुर्वी। (वीरो० ७/२२)

गभीरात्मन् (पुं०) परमात्मा प्रभु, ईश्वर।

गभीरिका (स्त्री०) [गभीर+कन्+टाप्] गंभीरता, दुर्गमता युक्त।

गम् (सक०) जाना, पहुंचना, प्रस्थान करना, प्राप्त करना-'मुखमेव सखीकृत्य बिन्दुमिन्यत्र गच्छतु' (जयो० ३/५१) गच्छतु लभताम्-'बिन्दुमनुस्वारमाप्नोतु' (जयो० ३/५१) 'काशीं प्रति गन्तुमुत्सहते' (जयो० ३/९५) 'स्वैरं गच्छंती च असतीति निगद्यते' (जयो० १/२०) 'श्रयन्ति वृद्धाम्बुधिमेव गत्वा' (सुद० १/२८) 'तदेव गत्वा सुहृदाश्रयत्वम्' (सुद० ३/३७) 'जगाम धाम किञ्चासौ' (सुद० वृ० ११२)

गम (वि०) [गम्+अप्] १. जाने वाला, गमनशील, प्राप्त होने वाला, पहुंचाने वाला, प्रमाण कर्ता। २. मार्ग, पथ- (जयो० १३/२४) निजगाम गमं समुत्तरन्' (जयो० १३/१६)

गमक (वि०) [गम्+ण्वुल्] अनुक्रमण कर्ता, प्रमाण करने वाला।

गमनं (नपुं०) [गम्+ल्युट्] गति, अभियान, प्रमाण, चरण, विचरण, जाना, चलना, शनैः रिंगण। २/११५)
'समुद् गमनं तेन सहितं रिङ्गणं शनैर्गमनं तेन सुगमा' (जयो० १३/२४) यात्रा गमनमवशयमेवास्तु- (जयो० वृ० ३/९१)

गमनक्रिया (स्त्री०) ०सूर्याभिमुख होने की क्रिया। ०निर्ग्रन्थ अवस्था में स्थानक्रिया, ०आसनक्रिया, शयनक्रिया और गमनक्रिया का विशेष महत्त्व है। 'सूर्याभिमुखगमनादिका गमनक्रिया' (भ०आ०टी०८६)

गमनभावः (पुं०) प्रयाण भाव।

गमनशील (वि०) प्रयागी, प्रवासी। 'यः प्रवासी नित्यमेव गमनशीलः स सूर्यो झगिति हि' (जयो० १४/९५) चरिष्णु, संचरणशील-(जयो० ११/४)

गमनसाधनं (नपुं०) यान, विमान, सुसज्जित वाहन। 'विमानमेव सुयानं गमनसाधनम्' (जयो० ५/५८)

गमनेच्छु (वि०) गमन की इच्छा करने वाला, चरिष्णु, प्रयाणेच्छु, निकलने की इच्छा वाला। 'किमु भो भवता त्वरावता द्रुतमग्रे गमनेच्छुना हताः।' (जयो० १३/७०)

गमिक (वि०) अक्षर समानता। * गतिमान्।

गमित (वि०) अभियान कर्ता, प्रयाण करने वाला, उतारने वाले, प्रामित (जयो० १/१३) 'सुदर्शनत्वं गमितासि सन्तुष' (सुद० ३/४१)

गमितप्रजावान् (वि०) समस्त प्राणियों को पार उतारने वाले। 'वीरप्रभुः स्वीयसुबुद्धि नावा भवाब्धितीरं गमितप्रजावान्।

गमिताङ्ग (वि०) गमन रूपमित (जयो० १२/६२) (सुद० १/१)

गमिन् (वि०) प्रायाणकर्ता, यात्री।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गमनीय (पुं०) [गम्+अनीयर्] सुगम, सुबोध, अभिप्रेय, निहित, उपयुक्त, वाञ्छित।

गम्भारिका (स्त्री०) एक वृक्ष विशेष।

गम्भीर (त्रि०) १. गुर्वी, अगाध, पर्याप्त।

गम्भीरः (पुं०) कमल, नींबू।

गम्य (वि०) गया हुआ। (सम्य० १/२२)

गर (वि०) [गीर्यते-गृ+अच्] निगलने वाला, खाया जाने वाला,

गरः (पुं०) पेय पदार्थ, रस। १. रोग, २. निगलना। ३. विष, जहर-'गरं विषमिवाचरन्ति (जयो० ११/११) गरन्ति आचारार्थे क्विप् प्रत्ययः' (भक्ति०१७) 'कमलाय जलाद्बहिर्भिषजो रोगिणे गरम् (दयो० ६४) दोषात्तमोऽध्वनीनाय प्रतिभाति समुत्थितम्।। (दयो० ६४) 'गरेण नस्या दिव मोदकस्य' (समु० १/२१)

गरं (नपुं०) तर करना, छिड़कना।

गरणं (नपुं०) १. निगलना, २. विष भक्षण करना।

गरघ्नी (स्त्री०) एक मछली।

गरद (वि०) विषदाता।

गरपरिणति (स्त्री०) विषफल, विष का प्रभाव। (जयो० वृ० ११/११)

गरभः (पुं०) [गृ+अभच्] भ्रूण, गर्भस्थ शिशु।

गरलः (पुं०) [गिरति जीवनं-गृ+अलच्] विष, ज़हर।

गरित (वि०) [गर+इतच्] विषयुक्त।

गरिमन् (पुं०) [गुरु+इमनिच्] बोझ, बड़प्पन, महिमा, श्रेष्ठता।

गरिमा (स्त्री०) ऋद्धि विशेष, वज्र से गुरुतर बनाने की सिद्धि।

गरिष्ठ (वि०) [गुरु+इष्ठन्] १. अधिक, भारी, प्रबल बोझ युक्त। २. पचाने में अधिक भारी। ये नीरस प्रेमत आहरन्ति गरिष्ठमिष्टं स्वशनं गरन्ति। (भक्ति०१७)

गरिष्ठाहारः (पुं०) अपाच्य आहार।

गरीयस् (वि०) [गुरु+ईयसुन्] प्रगाढ़, अतिगाढ़, अधिक कोमल। नगरी च गरीयसी सुधार सेनैवमलङ्कृता बुधाः। (जयो० १०/९) अलका नगरी गरीयसी (समु० २/१०) गरीयसि स्वस्य गुणोऽप्य तोषः (समु० १/१८)

गरुडः (पुं०) [गरुद्भ्यां डयते-डी+ड] [गृ+उडच्] पक्षी नाम। गोविंद वाहन, पुरुषोत्तम वाहन। 'गोविंदस्य वाहनं गरुडं दृष्ट्वा अहीनां सर्पाणां तत्त्वं स्वरूपं यत्तदर्पं विषमुज्झित्य पलायते।' (जयो० ६/७९)

गरुडध्वजः (पुं०) विष्णु।

गरुडव्यूहः (पुं०) सैन्य व्यवस्था। सेना की तीन व्यवस्थाएं हैं-'चक्रव्यूह, मकरव्यूह और गरुडव्यूह। 'गरुडव्यूहात्मकं स्वसैन्यं रचयन् सन् सङ्ग्रामकरम्। (जयो० वृ० ७/११३)

गरुत् (पुं०) [गृ+उति] १. पक्षी के पर, २. निगलना। (जयो० वृ० ६/८)

गरुत्मत् (वि०) [गरुत्+मतुप्] गरुड पक्षी वाला।

गरुलः (पुं०) गरुड पक्षी।

गरेणुः (स्त्री०) हस्तिनी, हस्तिनी (जयो० १३/१०८)

गर्गः (पुं०) [गृ+ग] १. सांड। २. गर्ग ऋषि।

गर्गरः (पुं०) [गर्ग इति शब्दं राति-गर्ग रा+क] १. भंवर, जलावर्त, २. मथानी।

गर्गरी (स्त्री०) गगरी, मटका। (जयो० २१/५६)

गर्गाटः (पुं०) [गर्ग इति शब्देन अटति गर्ग+अट्+अच्] एक मछली विशेष।

गर्ज् (अक०) गर्जना, दहाड़ना, चिल्लाना, गुर्राना। 'जगर्ज चाहंशृणु विप्र! (समु० ३/३१) एवं प्रकारेण समुज्जगर्ज (सुद० १२/३६)

गर्जः (पुं०) [गर्ज्+घञ्] गड़गड़ाहट, हस्ति चिंघाड़, बादलों की गर्जना।

गर्जनं (नपुं०) [गर्ज+ल्युट्] १. दहाड़ना, गर्जना, गड़गड़ाना, २. आवेश 'मोदनोदनिधिगर्जनमेप' (जयो० ३/५७) (जयो० ५/५७) क्रोध, संग्राम, युद्ध। ३. स्पष्टपरिभाषण- 'मेघस्य गर्जनं स्पष्टपरिभाषणम्'। (जयो० १२/४९)

गर्जनयान्वित (वि०) गर्जन युक्त। गर्जना करता हुआ। इति गर्जनयान्वित स्वतो मयवर्गो व्रजति स्म वेगतः। (जयो० १३/३३)

गर्जा (स्त्री०) [गर्ज्+टाप्] गरज, गड़गड़ाहट।

गर्जित (वि०) [गर्ज्+क्त] गर्जता हुआ, गड़गड़ाता हुआ।

गर्तः (पुं०) [गृ+तन्] गड्ढा, खाई, कोटर, छिद्र, गुफा। (सुद० १०१) गर्ते भीतिमये कदापि न पतद्धास्यं पिशाचं त्यजेत्। (मुनि०३)

गर्ततुल्य (वि०) गड्ढे समान। मत्वाऽर्थसम्पूरितगर्त- तुल्यामुवाह नाभिं सुकृतैककुल्या। (सुद० २/४७)

गर्तिका (स्त्री०) [गर्तः अस्त्यास्याः गर्त्+ठन्] जुलाहे का यंत्र गर्त, खड्डी।

गर्द् (अक०) शब्द करना, दहाड़ना। गर्दति, गर्दयति।

गर्दतोयः (पुं०) तरंगित जल।

गर्दभः (पुं०) [गर्द्+अभच्] गधा। विप्लवो गर्दभेणेव वडवायाभवन्नसौ। (हित०सं०१७)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गर्दभं (नपुं०) सफेद कुमुदिनी।

गर्दभी (स्त्री०) [गर्द्+अभच्+ङीप्] गधी।

गर्धः (पुं०) [गृध्+घञ्] १. इच्छा, उत्कण्ठा, २. लोभ, लालच।

गर्धन (वि०) [गृध्+ल्युट्] लोभी, लालची। (जयो०) तृष्णापरिणाम।

गर्धिन (वि०) [गर्ध्+इनि] लोभी, लालची, इच्छुक।

गर्भः (पुं०) [गृ+भन्] उदर, पेट, गर्भाशय, भ्रूण, गर्भाधान। (स्त्री की योनि में जो वीर्य और रज का मिश्रण शुक्रशोणितयोर्गरणाद् गर्भः।

गर्भकर (वि०) गर्भ धारण करने वाली।

गर्भकालः (पुं०) गर्भ ऋतु।

गर्भकोषः (पुं०) गर्भाशय, बच्चादानी।

गर्भक्लेशः (पुं०) प्रसव पीड़ा।

गर्भक्षणं (नपुं०) गर्भकाल। (सुद० २/४२)

गर्भक्षयः (पुं०) गर्भपात।

गर्भगत (वि०) गर्भस्थ। (सुद० २/४७)

गर्भगृहं (नपुं०) गर्भाशय, मंदिर का मध्य भाग, गृह का अन्तरंग का भाग।

गर्भग्रहणं (नपुं०) गर्भधारण।

गर्भघातिन् (वि०) गर्भपात कराने वाली।

गर्भचलनं (नपुं०) गर्भ संचालन, बच्चे को गर्भ में घूमना, हिलना।

गर्भच्युतिः (स्त्री०) १. जन्म प्रसूति। २. गर्भस्राव, गर्भपात।

गर्भजन्या (वि०) गर्भ से उत्पन्न होने वाले जीव।

गर्भण्डः (पुं०) प्रारंभ से ही दास, जन्मजात दास।

गर्भद्रुह (वि०) गर्भपात कराने वाली।

गर्भधरा (वि०) गर्भवती।

गर्भधारणं (नपुं०) गर्भ में सन्तान धारण करना।

गर्भधारणा (स्त्री०) गर्भ में सन्तति का रखना।

गर्भध्वंसः (पुं०) गर्भपात।

गर्भपक्तिन् (पुं०) साठी धान्य।

गर्भपातः (पुं०) गर्भच्युति।

गर्भपोषणं (नपुं०) गर्भ में स्थित संतान की पुष्टि/पालन।

गर्भभवनं (पुं०) घर का मध्यदेश।

गर्भमण्डपः (पुं०) शयनागार, शयनकक्ष, प्रसूतिगृह।

गर्भमासः (पुं०) गर्भकालीन महिना।

गर्भमोचनं (नपुं०) प्रसव।

गर्भयोषा (स्त्री०) गर्भवती स्त्री।

गर्भरक्षणं (नपुं०) गर्भस्थ शिशु संरक्षण।

गर्भरूपः (पुं०) शिशु, तरूण।

गर्भरूपकः (पुं०) देखो ऊपर।

गर्भलक्षणं (नपुं०) गर्भस्थ शिशु संरक्षण।

गर्भलक्षणं (नपुं०) गर्भवती होने का संकेत। सूतवती (जयो० वृ० १३/५२)

गर्भवती (स्त्री०) गर्भिणी। (सुद० वृ० १३/५२)

गर्भवसतिः (स्त्री०) गर्भाशय, गर्भाधान।

गर्भवासः (पुं०) गर्भाशय।

गर्भविच्युतिः (स्त्री०) गर्भस्राव।

गर्भवेदना (स्त्री०) प्रसव पीड़ा, प्रसव कष्ट।

गर्भ-व्याकरणं (नपुं०) गर्भवृद्धि।

गर्भशय्या (स्त्री०) गर्भाशय।

गर्भसंभवः (पुं०) गर्भ होना, गर्भ ठहरना।

गर्भसंभूतिः (स्त्री०) गर्भ होना, गर्भ ठहरना।

गर्भस्तम्भा (पुं०) गर्भपात। (जयो० १९/७६)

गर्भस्थ (वि०) गर्भ में स्थित, गर्भ की विद्यमानता।

गर्भस्रावः (पुं०) गर्भपात।

गर्भाङ्कः (पुं०) अंक के मध्य।

गर्भागार (नपुं०) १. गर्भाशय, बच्चादानी। २. अन्तःपुर, भीतरी कक्ष। ३. प्रसूति का गृह। ४. पूजाकक्ष, मूर्ति स्थापना का कक्ष।

गर्भाधानं (नपुं०) गर्भधारण।

गर्भार्भकः (पुं०) गर्भस्थ शिशु। गर्भे अर्भका गर्भाभकः। (वीरो० ६/३)

गर्भाशयः (पुं०) योनि, बच्चादानी।

गर्भिणी (स्त्री०) [गर्भ+इनि+ङीप्] (जयो० १९/७६) गर्भवती। (सुद० २/४९)

गर्भेश्वरः (पुं०) गर्भ से धनी, जन्मजात प्रभुता युक्त।

गर्भोत्पत्तिः (स्त्री०) भ्रूण रचना।

गर्मुक (पुं०) १. स्वर्ण, सोना, २. घास विशेष।

गर्मुत् (पुं०) [गृ+उति+मुद्] १. स्वर्ण, सोना। २. घास विशेष।

गर्मुल्कगोलः (पुं०) सुवर्णपिण्ड 'गर्मुकस्य गोलं सुवर्णपिण्डं' (जयो० १५/१७)

गर्व् (अक०) अहंकार होना, घमण्ड होना।

गर्व (पुं०) अहंकार, घमण्ड। को नाम जातेश्च कुलस्य गर्वः। (वीरो० ११/२२)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गर्वाटः (पुं०) [गर्व्+अट्+अच्] चौकीदार, पहरेदार, द्वारपाल।

गर्विष्ठ (वि०) १. अहंकारी, अभिमानी। २. अपूर्व, अत्यधिक। वामाङ्ग्या परिभर्त्सितः स्ववपुषः सौन्दर्यगर्विष्ठयसा' (सुद० ९८)

गर्ह् (अक०) ०निन्दा करना, ०कलंक लगाना ०अपमानित करना।

गर्हणं (नपुं०) निन्दा, अपमान, कलंक, दोष। 'कस्याप्यहो गर्हणतः समेत सम्प्रार्थ्यते नाथ। मृषा क्रियेत्। (भक्ति०४३)

गर्हणीय (वि०) [गर्ह्+अणीयर] निन्दनीय। 'यतोऽतिगः कोऽपि जनोऽनणीयान् पापप्रवृत्तिः खलु गर्हणीया।' (वीरो० १७/२२) 'संसार एषोऽस्ति विगर्हणीयः' (वीरो० १७/१९)

गर्हा (स्त्री०) [गर्ह्+अ+टाप्] 'गर्हणं गर्हा कुत्सा' निन्दा, कलंक, अपमान। (जयो० वृ० १/१६५)

गर्हित (वि०) निन्दित, घृणित। कर्कशवचन। (दयो० ११८)

गर्हितभार्या (स्त्री०) निन्दित स्त्री। 'गर्हिता भार्या येन स निन्दितस्त्री' (जयो० २/१५२)

गल् (अक०) टपकना, गलना, रिसना, पसीजना, निकलना। (जयो० १५/१९) 'गलंतो निर्गच्छन्तो' (जयो० वृ० १५/१९)

गलः (पुं०) [गल्+अच्] २. गला, कण्ठ, गर्दन। (जयो० वृ० ४/३३) २. मछली पकड़ने का कांटा।

गलकन्दलः (पुं०) कण्ठनाल, गला, ग्रीवा। (जयो० १३/६३) (जयो० ५/५०) 'पराजितास्या गलकन्दलेन' (जयो० ११/४७)

गलकम्बलः (पुं०) बैल की गर्दन के नीचे लटकने वाली झालर, बलिवर्दग्रीव झालर।

गलगण्डः (पुं०) गण्डमाला, रोग विशेष, गले में गांठ।

गलग्रहः (पुं०) गला पकड़ना, गला घोंटना, श्वांस अवरोध।

गलग्रहणं (नपुं०) श्वांसावरोध, गल रुंधना।

गलचर्मन् (नपुं०) अन्ननली, गला।

गलद्द्विरेफः (वि०) निकले हुए भ्रमर। 'गलन्तो निर्गच्छन्तो द्विरेफा भ्रमरा' एवाश्रयो' (जयो० वृ० १५/१९)

गलदेशः (पुं०) कपोल। (जयो० १६/७९) 'कपोलयोर्गल्ल-देशयोः'

गलद्वारं (नपुं०) मुख।

गलनं (नपुं०) [गल्+ल्युट्] टपकना।

गलनालः (पुं०) गला, कण्ठ। 'गानमानविलसद्गलनाला' (जयो० ५/३९)

गलभूषणं (नपुं०) हार, गले का आभूषण, कण्ठमाला (जयो० वृ० १५/७६)

गलन्तिका (स्त्री०) छोटा घड़ा, घटिका, लुटिया।

गलमेखला (स्त्री०) हार।

गलवार्त (वि०) स्वस्थ, निपुण।

गलव्रतः (पुं०) मयूर, मोर।

गलशुण्डिका (स्त्री०) उपजिह्वा, गलकण्ठी।

गलशुण्डी (स्त्री०) ग्रीवा रोग।

गलसंलग्न (वि०) गले में पड़ी हुई। 'गले तासां कण्ठे संलग्नौ भुजौ यस्य स' (जयो० वृ० १३/८१)

गलस्तनं (नपुं०) १. गले के स्तन, अज के गले का स्तन। २. अर्धचन्द्राकार बाण। ३. गले से पकड़ना।

गलस्तनी (स्त्री०) अर्धचन्द्र।

गलाङ्कुरः (पुं०) गले का रोग, कण्ठरोग।

गलालङ्करणं (नपुं०) गले का आभूषण, हार। 'वीरोदयोदार-विचारचिह्नं सतां गलालङ्करणाय किन्न।' (वीरो० १/१०)

गलालकङ्कृतिः (स्त्री०) कण्ठशोभा। भटाग्रणीः प्रागपि चन्द्रहास यष्टिं गलालङ्कृतिमाप्तवान् स। (जयो० ८/२४)

गलिः (पुं०) मट्ठा बैल, जो चलने में उचित न हो। 'गिलत्येव केवलं न तु वहति गच्छति वेतिगलिः।'

गलित (भू०क०कृ०) [गल्+क्त] निर्गत, निकला हुआ, टपका हुआ। (जयो० वृ० १२/३२)

गलितकः (पुं०) नृत्य विशेष।

गल्भ् (अक०) विश्वस्त होना, आत्मस्थ होना।

गल्भ (वि०) [गल्भ्+अच्] साहसी, आत्मविश्वासी।

गल्या (वि०) [गल+यत्+टाप्] कण्ठ समूह। गलानां कण्ठानां समूहः।

गल्लः (पुं०) गला, गाल।

गल्लकः देखो ऊपर।

गल्लकः (पुं०) १. पुखराज, २. नीलमणि।

गल्लदेशः (पुं०) कपोल। (जयो० १६/७९)

गल्लकफुल्लकः (पुं०) गाल फुलाना। 'कुशीलवा गल्लकफुल्लकाः' (वीरो० ९/२६)

गल्लर्कः (पुं०) मदिरा पीने का प्याला।

गल्वर्कः (पुं०) [गर्लुमणिभेदः तस्य अर्को दीप्तिरिव] १. स्फटिक, वैडूर्यमणि। २. शकोरा, प्याला।

गल्ह् (अक०) कलंक लगाना, निन्दा करना।

गवः (पुं०) झरोखा, रोशनदान।

गवयः (पुं०) [गो+अय्+अच्] बैल के सदृश। गव+अल्+उकञ्।

गवा (पुं०) ग्वाला, गोपाल। 'सुतो बभूवाथ गवां स पत्युः'। (सुद० ४/१८)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गवाक्षः (पुं०) १. झरोखा, रोशनदान, जालक। २. वानर, बन्दर। गवाक्षीत्विन्द्रवारुण्यां पुंसि जालककीशयोः इति वि० (जयो० २४/५०)

गवाक्षपूर्णः (पुं०) १. झरोखों से परिपूर्ण, २. वानरों से पूर्ण।

गवाग्रं (नपुं०) ग्राम समूह।

गवादनं (नपुं०) चरगाह क्षेत्र, गोचर भूमि।

गवादनी (स्त्री०) गोचरभूमि।

गवाधिका (स्त्री०) लाख।

गवार्ह (वि०) गो का मूल्य।

गवाशनः (पुं०) मोची, चर्मकार।

गवाश्वं (नपुं०) बैल एवं घोड़े।

गवाकृतिः (वि०) गाय की आकृति वाला।

गवानृतं (नपुं०) अल्पक्षीर वाली गो को अधिक क्षीर वाली कहना।

गवालीकं देखो ऊपर। गो के प्रति झूठ बोलना।

गविनी (स्त्री०) गो समूह।

गवीन्द्रः (पुं०) ग्वाला, गोपालक।

गवीश्वरः (पुं०) गोपालक। सपदि मंथगुणेन गवीश्वरो यदिव दध्न उपैति नवोद्धृतम्। (जयो० वृ० २५/६३)

गवीशः (पुं०) गोपालक।

गवेडुः (पुं०) चारा, घांस।

गवेष् (सक०) खोजना, पूछना, प्रयत्न करना।

गवेष (वि०) [गवेष्+अच्] खोजने वाला, पूछताछ वाला।

गवेषः (पुं०) पूछताछ, खोज।

गवेषणं (नपुं०) [गवेष्+ल्युट्] खोज, प्रसमीक्षण। (जयो० १३/७१)

गवेषणा (स्त्री०) गृहीत अर्थ का अन्वेषण।

गवेषित (वि०) [गवेष्+क्त] पूछा गया, खोजा गया, अन्वेषण किया गया।

गव्य (वि०) [गो+यत्] उपयुक्त गायों के लिए ठीक।

गव्य (वि०) गोदुग्ध, गाय का दूध। 'पयो गव्यं गोदुग्धमिव भवति।' (जयो० वृ० २/७८)

गव्यूत देखो नीचे गव्यूति।

गव्यूतिः (स्त्री०) दो कोस, दूरी का एक माप। 'दो धणुसहस्साइं गाउयं' दो धनुष को गव्यूत कोश।

गह् (सक०) पहुंचना, सघनता होना।

गहन (वि०) [गह्+ल्युट्] १. गहरा, सघन, सान्द्र, अभेद्य, दुर्गम, अत्यधिक। 'हेऽपयोग-गहनोदधिं' (जयो० ४/३) २. कठोर, दृढ़, कष्टकर।

गहनं (नपुं०) गर्त, गह्वर, गुफा।

गहनावनि (स्त्री०) गहनभूमि, वनभूमि। (जयो० १३/५३) 'पलितेव पुनः प्रवेणिका विजरत्याः गहनावने रतः।' (जयो० १३/५३)

गह्वर (वि०) गर्त, गड्डा, गुफा, कुहर। (जयो० १०/७) गभीरतर। (जयो० १४/५८) अहो गिरेर्गह्वरमेव सौधमरण्य-देशेऽस्य पुरप्रबोधः।' (सुद० वृ० ११७)

गह्वरी (स्त्री०) गुफा, कंदरा, खोह।

गह्वरीप (वि०) गरिष्ठ। रतिप्रतीपश्च निशासु दीपः शमी स गीयाद् गुणगह्वरीपः। (सुद० वृ० ११७)

गा (स्त्री०) [गै+डा] गाना वाणी, बोलना। (सुद०) 'मातुः स्वरे गातुमभूत्' (जयो० ९८/८३७) (वीरो० ५/१) श्लोक गाथा। (सुद० १२३) गातुं कतु लग्ना। गातुमारेभे (वीरो० ५/१७)

गाङ्ग (वि०) [गङ्गा+अण्] गंगा में होने वाला। (समु० ३/१०)

गङ्गाम्भकर (पुं०) गङ्गा प्रवाह, गङ्गा गति। (समु० ३/१०)

गाङ्गटः (पुं०) एक प्रकार की मछली।

गाङ्गायनि (पुं०) भीष्म।

गाङ्गेय (वि०) [गङ्गा+ढक्] गंगा में उत्पन्न होने वाला।

गाजरं (नपुं०) गाजर।

गाञ्जिकायः (पुं०) बत्तख।

गाढ (भू०क०कृ०) [गाह्+क्त] १. गहरा, गम्भीर, सघन, प्रबल, प्रचण्ड, प्रगाढ, अत्यधिक। 'पीत्वाऽऽतनं यन्मदमाप गाढम्।' (जयो० १६/३२) २. स्नान युक्त, गोता लगाया हुआ।

गाढं (अव्य०) ध्यानपूर्वक, प्रचण्डता से, बलपूर्वक।

गाढता (वि०) सघनीभूत, अत्यधिकता। (जयो० वृ० १३/८८)

गाढदृष्टिः (स्त्री०) तीव्र विक्षेप।

गाढमुष्टि (वि०) लोलुपी, लालची, बन्द मुष्टि वाला। (जयो० ७/२१)

गाढान्धकारः (नपुं०) प्रगाढ् अन्धकार, सघन अन्धकार।

गाढालिङ्गनं (नपुं०) दृढ आलिंगन, अत्यधिक दबाना, अधिक स्नेह दर्शाना।

गाणपत (वि०) गण से सम्बन्धित।

गाणपत्य (वि०) गण का पूजक।

गाणिक्यं (नपुं०) [गणिकानां समूह] गणिका समूह।

गाण्डिवः (पुं०) [गाण्डिरस्त्यस्य संज्ञायां व पूर्वपद-दीर्घो विकल्पेन] अर्जुन का बाण।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गाण्डीविन् (पुं०) [गाण्डीव+इनि] अर्जुन।

गातागतिक (वि०) जाने आने के कारण उत्पन्न।

गातानुगतिक (वि०) अंधानुकरण से उत्पन्न।

गातु: (पुं०) [गै+तुन्] १. गीत, गाना, २. कोयल, ३. भ्रमर, ४. गन्धर्व।

गातृ (पुं०) गवैया, गन्धर्व।

गात्रं (नपुं०) [गै+त्रन्] शरीर, देह, काया, तनु। 'तप: प्रसिद्ध्यर्थमिहास्ति गात्रम्' (दयो० २/११) 'कलङ्कितामेति तुषारसारगात्रोऽपिरात्रेर्हृदयैकहार:।' (जयो० १५/५८)

गात्रकर्मन् (नपुं०) शरीर क्रिया।

गात्रकर्षणं (वि०) गात्र को कृश करने वाला।

गात्रप्रमार्जनी (स्त्री०) तौलियां।

गात्रमार्जनी (स्त्री०) अंगोछा, तौलिया, प्रक्षलिनी।

गात्रयष्टि: (स्त्री०) कृश शरीर।

गात्ररूहं (नपुं०) बाल, केश, रोम।

गात्रलता (स्त्री०) सुकुमार देह।

गात्रसंकोचिन् (पुं०) सेही, झाऊ, मूषक।

गात्रसंप्लव: (पुं०) लघु पक्षी, गोताखोर पक्षी।

गात्री (वि०) सुकुमार शरीरी। (वीरो० ३/१८)

गाथ: (पुं०) [गै+थन्] गीत, भजन, स्तवन।

गाथक (वि०) [गै+थकन्] संगीतज्ञ, संगीतवेत्ता।

गाथा (स्त्री०) १. छन्द, श्लोक, आर्या छन्द, गेय प्रधान छन्द। २. प्राकृत साहित्य का प्रसिद्ध छन्द जिसके प्रथम चरण में १२, द्वितीय चरण में १८, तृतीय में १२ और चतुर्थ चरण में १५ मात्राएं होती हैं। इसके लक्ष्मी, विद्या आदि २७ भेद होते हैं। आचार्य ज्ञान सागर ने गाथा का अर्थ प्रतीत, आभास होना भी कहा है। जिनालया: पर्वततुल्यगाथा: समग्रभूसम्भवदेणनाथा:। (सुद० १/३१)

गाथिका (स्त्री०) [गाथा+कन्+टाप्] गीत, श्लोक, छन्द।

गाध् (सक०) खड़ा होना, ठहरना, रहना, कूच करना, डुबकी लगाना, खोजना।

गाध (वि०) [गाध्+घञ्] उथला, कम गहरा।

गानं (नपुं०) [गै+ल्युट्] सङ्गीत, गीत, भजन। 'गान-मान-विलसद्गलनाला' (जयो० ५/३९)

गान्त्री (स्त्री०) [गन्त्री+अण्+ङीप्] बैलगाड़ी।

गान्दिनी (स्त्री०) [गो+दा+णिनि] गंगा।

गान्धर्व (वि०) [गन्धर्वस्येदम्] गन्धर्वों से सम्बन्ध रखने वाला।

गान्धर्व: (पुं०) १. गायक, स्वर्ग का गायक, दिव्य गायक। २. गान्धर्व विवाह पद्धति।

गान्धर्व (नपुं०) गन्धर्व कला।

गान्धार: (पुं०) [गन्ध+अण्-गान्ध:+ऋ+अण्] (जयो० ११/५७) १. राग। सङ्गीत के सप्त स्वरों में से तीसरा स्वर। 'षड्जर्षभ-गान्धार-मध्यम-पञ्चम-धैवत निषादनामकेषु सप्तस्वरेषु तृतीयस्वर-गान्धार:' (जयो० वृ० ११/४२) २. गान्धार नामक देश।

गान्धारि: (पुं०) शकुनि, दुर्योधन का मामा।

गान्धारी (स्त्री०) धृतराष्ट्र की भार्या। गान्धार के राजा सुबल की पुत्री तथा धृतराष्ट्र की पत्नी।

गान्धारेय: (पुं०) [गान्धार्या: अपत्यम् ढक्] दुर्योधन।

गान्धिक (वि०) गन्ध, अगर वाला गंधी, लिपिकार।

गान्धिकार्पित (वि०) गन्धदायक। 'गान्धिकेन गन्धदायकेनार्पित' (जयो० २८/...)

गांधी (पुं०) गांधी नाम विशेष। मोहनदास कर्मचंद गांधी, महात्मा गांधी। गांधीत 'प्रसिद्धो राष्ट्र पुरुषस्तस्येदं गांधियं शोभनं गान्धियं सुगान्धियं-गांधी सम्बंधिकार्यमिता।' (जयो० १८/८३) जिनका जन्म २ अक्तूबर १८६९- मृत्यु-१९४८।

गामधिय (वि०) प्रशंसनीय। (सुद० ९४)

गामिणी (वि०) आदर्श मार्ग अनुकरण करने वाली, परिगाहिनी। (जयो० वृ० २/११९)

गामिन् (वि०) [गम्+णिनि] भ्रमणशील।

गाम्भीर्य (वि०) गहराई, अगाधता। गाम्भीर्य कौशल कुलादसकौ विचार:। गाम्भीर्यमन्तस्थशिशौ विलोक्यं (वीरो० ६/६) (जयो० २०/२७)

गाय: (पुं०) [गै+घञ्] गाना, भजन, गीत।

गायक: (पुं०) [गै+ण्वुल्] संगीतकार, संगीतज्ञ, गायक। गायक एव जानाति रागोऽत्रायं भवेदिति। (वीरो० १६/१२)

गायत्र: (पुं०) [गायत्री+अण्] गीत, सूक्त।

गायत्री (स्त्री०) [गायन्तं त्रायते-गायत्+त्रा+क+ङीप्] गायत्री सूक्त, गायत्री छन्द।

गायन: (पुं०) [गै+ल्युट्] संगीतज्ञ, गायक। 'विनोदवशाद् गायन्तीनां गीतश्रुतेरति शयमाधुर्य।' (वीरो० वृ० २/१३)

गारुड (वि०) [गरुडस्येदम्+अण्] गरुड सदृश।

गारव: (पुं०) एक ऋद्धि, जिससे सुखसामग्री की प्राप्ति हो।

गारुड: (पुं०) १. पन्ना, एक बहुमूल्य रत्न। २. मंत्र, ३. स्वर्ण।

गारुणिक (वि०) [गारुड+ठक्] ऐन्द्रजालिक, विष नाशक औषधियों का विक्रेता। (समु० ८/१८)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गारुडि देखो ऊपर।

गारुडिन् (वि०) गारुडी, सर्प विद्या वाचक। (सुद० १३३)

गार्दभ (वि०) [गर्दभस्येदम्] गर्दभ सम्बंधी।

गार्द्ध्यं (नपुं०) [गर्द्ध+ष्यन्] लालच, प्राप्त इष्ट वस्तुओं के प्रति आसक्ति।

गार्ध (वि०) गर्भ सम्बंधी।

गार्भिक (वि०) भ्रूण विषयक, गर्भ सम्बन्धी।

गार्भिण (वि०) [गार्भिणीनां समूह भिक्षा अण्] गर्भवती स्त्रियों का समूह।

गार्हपतं (नपुं०) गृहपति पद।

गार्हपत्यः [गृहपतिना नित्यं संयुक्त संज्ञायां ञ्य] गृहपति पद।

गार्हमेध (वि०) गृहपति के योग्य।

गार्हस्थ्यं (नपुं०) [गृहस्थ+ष्यञ्] गृहस्थता (जयो० वृ० ३/६४) गृहस्थी, घर सम्बन्धी। (वीरो० ९/६)

गार्हस्थ्यमार्गः (पुं०) गृहस्थी मार्ग। (जयो० १२/१०)

गालनं (नपुं०) [गल+णिच्+ल्युट्] गलना, पिघलना, छानना।

गालवः (पुं०) [गल+घञ्] लोध्र वृक्ष।

गालिः (स्त्री०) [गल+इन्] गाली, दुर्वचन, अपशब्द।

गालित (वि०) [गल+णिच्+क्त] प्रक्षालित, छाना गया, पिघलाया गया।

गालोड्यं (नपुं०) [गालोड्य+अण्] कमल का बीज।

गाह् (अक०) स्नान करना, डुबकी लगाना, बिलोना, आलोडित करना।

गाहः (पुं०) [गाह्+घञ्] गोता लगाना, स्नान करना।

गाहनं (नपुं०) [गाह्+ल्युट्] डुबकी लगाना, गोता लगाना।

गाहित (वि०) [गाह्+क्त] गोता लगाया, स्नान किया हुआ।

गिंडोलः (पुं०) एक जंतु। (सम्य० ५१)

गिन्दुकः (पुं०) १. गेंद, २. वृक्ष विशेष।

गिर् (स्त्री०) वाणी, शब्द, भाषण, भाषा, वचन, कथन। *गिरमर्थयुतामिव स्थितां समुतां संस्कुरुते स्म तां हिताम्।* (सुद० ३/१२) 'कृत्वा हृद् गिरमपि प्रशस्तौ।' (सुद० ११५)

गिरटः (पुं०) सरट। (जयो० वृ० ५/१३)

गिरदेवी (स्त्री०) सरस्वती, भारती।

गिरा (स्त्री०) वाणी, भाषा, वचन। (जयो० १/४) 'जगौ गिरा वल्लकिकां जयन्तीं।' (सुद० २/१२) स्वयमुन्मत्त्वं विषयो दधानः स चाधुना सत्क्रियते गिरा नः।। (वीरो० १२/०) गुणैर्गिरा भोरमहो पुनीतो। (सुद० ...)

गिरिः (पुं०) पर्वत, पहाड़, नग। 'अहो गिरेर्गह्वरमेव सौधमरण्यदेशे गिरिणा (सुद० ११७)

गिरि (वि०) [गृ+इ+किच्च] पूजनीय, सम्माननीय, आदरणीय।

गिरिकच्छपः (पुं०) पर्वतीय कछुवा।

गिरिकष्टकः (पुं०) इन्द्र का वज्र।

गिरिकदम्बः (पुं०) पर्वतीय कदम्बतरु।

गिरिकन्दरः (पुं०) पर्वत की गुफा। (दयो० २२)

गिरिकर्णिका (स्त्री०) भूमि, भू।

गिरिकाननं (नपुं०) पर्वत निकुंज।

गिरिकुहरः (पुं०) पर्वत गुफा। (दयो० २२)

गिरिकूटं (नपुं०) पर्वत शिखर।

गिरिगंगा (स्त्री०) पर्वतीय नदी, गंगा नदी।

गिरिगुडः (पुं०) गेंद, कन्दक।

गिरिचर (वि०) पर्वत पर विचरण करने वाले।

गिरिजा (वि०) पर्वत पर उत्पन्न।

गिरिजा (स्त्री०) १. पार्वती, गौरी, शिवाङ्गना, पर्वत पुत्री। २. पहाड़ी कदली। ३. गंगा। ४. मल्लिका लता। गिरीश्वरः सोमसमृद्धभालभृत्वमस्ति सेयं गिरिजापि जायते। (जयो० २४/४४) 'गिरिमाश्रित्य जातेति' (जयो० वृ० २४/४४) पार्वती रूपास्ति। (जयो० वृ० २४/४४)

गिरितनयः (पुं०) कार्तिकेय।

गिरिनंदनः (पुं०) कार्तिकेय।

गिरिपतिः (पुं०) शिव, शंकर।

गिरिपुष्पकं (नपुं०) शिलाजीत, एक शक्तिशाली औषधि।

गिरिपृष्ठः (पुं०) पर्वत शिखर।

गिरिप्रपातः (पुं०) पर्वतीय ढलान।

गिरिप्रस्थः (पुं०) पर्वत प्रान्त की भूमि।

गिरिमल्लिका (स्त्री०) कुटज वृक्ष।

गिरिमानः (पुं०) विशालकाय हस्ति।

गिरिराजः (पुं०) सुमेरु पर्वत, हिमगिरि।

गिरिशः (पुं०) [गिरौ कैलासपर्वते शेते-गिरि-शी+ड वा] शिव।

गिरिशालः (पुं०) एक पक्षी।

गिरि-शृंगः (पुं०) १. उन्नत शिखर, २. गणपति।

गिरिषद् (पुं०) शिव।

गिरिसानु (नपुं०) पठार।

गिरिसारः (पुं०) अयस्क, लोह।

गिरिसुता (स्त्री०) पार्वती।

गिरिस्रवा (स्त्री०) पर्वतीय सरिता।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गिरीन्द्रः (पुं०) सुमेरु, हिमालय।

गिरीशः (पुं०) सुमेरु, हिमालय।

गिरीश्वरः (पुं०) शिव, महादेव। १. प्रशस्त वाणीश्वर। गिरां वाचामीश्वरोऽधिपः प्रशस्तवाणीश्वरोऽसि। (जयो० २४/४४) २. गिरीश्वरः शिवोऽथ च गिरीणामीश्वरः कैलासः। (जयो० २२/४४) गिरीश्वरः पर्वत मुख्यो महादेवश्च। (जयो० २४/६) ३. उर्वीधपतिः (जयो०) ४. बृहस्पति गिरामीश्वरा वाग्मिनो बृहस्पतिः। (जयो० वृ० ५/८१) ५. सुमेरू पर्वत-प्रतिभाति गिरीश्वरः स च। (वीरो० ७/१९)

गिरीशसानु (पुं०) पर्वतराजशृंग भाग। गिरीशस्य पर्वतराजस्य सानुःश्रृंग भागस्तस्मात् गगनरूप पर्वतोपरिमस्थलात्। (जयो० वृ० १५/१३)

गिल् (सक०) निगलना, चबाना।

गिल (वि०) निगला गया, उदरस्थ किया गया।

गिलः (पुं०) नींबू वृक्ष।

गिलगिलः (पुं०) मगरमच्छ, घड़ियाल।

गिलनं (नपुं०) [गिल्+ल्युट्] निगलना, खा लेना।

गिलित (वि०) [गिल्+क्त] निगला हुआ, खाया हुआ।

गिष्णुः (वि०) गाने वाला।

गीः (स्त्री०) १. वाणी, भाषा, वचनवाक्। मम सुलोचनायास्तु गीर्वाणी (जयो० वृ० २४/४४) नियोगिने तस्य समस्ति नो गीः। (जयो० वृ० २७/६) २. सरस्वती (जयो० १२/१८)

गीत (वि०) गया गया, उच्चरित किया गया, घोषित किया।

गीतं (नपुं०) गीत, गाना, भजन, कथन, प्रणीत, संकीर्तन, लयात्मक शब्द। धान्यस्थली-पालक-बालिकानां गीतश्रुतेर्निश्चलतां दधानाः। (वीरो० २/१३)

गीतकं [गीत+कन्] स्तोत्र, स्तुति, गान।

गीतक्रमः (पुं०) गान परम्परा।

गीतज्ञ (वि०) गानकला में प्रवीण।

गीतनियुक्तिः (स्त्री०) गीत शब्द, गान भाव। केवलं न भविता मृदुभुक्तिः सम्भविष्यति च गीतनियुक्तिः। (जयो० ४/५२) 'गीतानां नियुक्तिरपि सम्भावष्यति' (जयो० वृ० ४/५२)

गीतप्रिय (वि०) गान विद्या कुशल, गान विद्या प्रेमी।

गीतमोदिन् (पुं) किन्नर, गन्धर्व।

गीतवती (वि०) गान करने वाली, गाने वाली। 'विपिनेऽस्यकुतोऽपि कौतुकान् मिलिता गीतवतीसु तासु का। (समु० २/८)

गीतवन्त (वि०) गीतज्ञ, गीत गाने वाला। निवार्यमाणा अपि गीतवन्तः सत्यान्वितैरागमिभिर्हृदन्तः। (वीरो० १८/५३)

गीता (स्त्री०) कर्म प्रधान गेयात्मक काव्य।

गीतिः (स्त्री०) १. स्तुति, गान, संकीर्तन। सार्हत्सद्गुण गीतिरेव सुदृशा क्लृप्ता प्रतीतिस्तु मे। (जयो० ८/८५) २. प्रशंसा, गुणस्तवन। सा गीतिं जगाविति पुनः कलितप्रशंसा (सुद० १२३)

गीतिका (स्त्री०) [गीति+कन्+टाप्] गाना, गीत, लघुस्तुति।

गीतिन् (वि०) सस्वर पाठ युक्त।

गीतिपरायणं (नपुं०) गीतिकाव्य में निपुण। (सुद० १२३)

गीतिरीतिः (स्त्री०) गीति के प्रकार, संगीत की विविधकला। यातु ताल-लय-मूर्च्छनादिभिर्जैनकीर्तनकलाप्रसादिभिः। गीतिरीतिमपि तच्छ्रुतात्पुनर्मञ्जुवाक्त्वमिह विश्वमोहनम्।। गीतिशास्त्राद् गीतानां रीतिः प्रकारः (जयो० २/६०)

गीतिशास्त्रं (नपुं०) संगीतशास्त्र। (जयो० २/६०)

गीर्ण (वि०) [गृ+क्त] निगला हुआ, वर्णित, कथित, वर्णन किया गया, गाया गया।

गीर्णिः (स्त्री०) [गृ+क्तिन्] प्रशंसा, यश।

गी देवी (स्त्री०) सरस्वती, भारती।

गीर्वाण (पुं०) सुर, देवता।

गीर्वाण-वाणी (स्त्री०) देववाणी। सनाभयस्ते त्रय एव यज्ञानुष्ठायिनो वेदपदाऽऽशयज्ञाः। गीर्वाणवाण्यामधि-कारिणोऽपि समो ह्यमीषामपरो न कोऽपि।। (वीरो० १४/३)

गु (सक०) मलोत्सर्ग करना,

गु (स्त्री०) रश्मि, किरण। (जयो० वृ० १/९६)

गुग्गुलः (पुं०) राल, गोंद, गुग्गल, गूंगल नामक औषधि। (जयो० १९/७६)

गुग्गुलधूपः (पुं०) गुग्गल औषधि की धूप। (जयो० १९/७५)

गुच्छः (पुं०) गुच्छा, फूलों का समूह। [गु+क्विप्-गुत्] मयूरपंख।

गुच्छकः (पुं०) गुच्छा, पुष्प समूह, गुलदस्ता। कशिम्व (जयो० १५/६२)

गुज् (अक०) गुंजार करना, गुंजना, भनभनाना। गुं गुं शब्द करना, गुन गुनाना।

गुजः (पुं०) [गुज्+क] गूंजना, गुनगुनाना।

गुञ्ज् (अक०) गूंजना, शब्द टकराना। (सुद० ८२) आम्रस्य गुञ्जत्कलिकान्तरालेर्नालीकमेतत्सहकारनाम। (वीरो० ६/२१)

गुञ्जनं (नपुं०) [गुञ्ज्+ल्युट्] गूंजना, भिनभिनाना, मंद मंद शब्द करना, ध्वनि करना। 'गर्जनं वारिदस्येव दुन्दुभेरिव गुञ्जनम्' (वीरो० १५/१)

गुञ्जा (स्त्री०) [गुञ्ज्+अच्+टाप्] घुंघची, गुमुची, काञ्चीफल, कृष्णला। गुञ्जा नामक लता में लगने वाला फल, जो

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ऊपर बिन्दु से काला और शेष लाल वर्ण वाला। इसका वजन २-१/१५ ग्रेन १/४ ग्राम बराबर होता है। (जयो० २१/४८) भिल्लन्यांज्झनलम्भने स सुमणिर्गुञ्जापि गुञ्जात्र भो! (मुनि० १४) 'परं गुञ्जा इवाभान्ति' (जयो० २/१४६)

गुञ्जाफलं (नपुं०) काञ्चीफल, 'काञ्चीफलयत् गुञ्जाफलवत्' (जयो० वृ० ६/३५)

गुञ्जारित (वि०) गुंजार युक्त।

गुञ्जिका (स्त्री०) गुञ्जाफल। घुंघली, गुमुची।

गुञ्जित (भू०क०कृ) [गुञ्ज्+क्त] गुनगुनाना, मंद शब्द करना।

गुटिका (स्त्री०) [गु+टिक्+टाप्] गोली, गोला, पिण्ड।

गुटी (स्त्री०) गुटिका, गोली।

गुडः (पुं०) [गुड्+क] शीरा, राब, इक्षु रस से निर्मित गुड़। गुडाज्जातेव शर्करा (वीरो० २८/७) फाणि, मधुरं (जयो० १२/७)

गुडकः (पुं०) [गुड+कन्] ०भेली, ०पिण्ड, ०गुड की पारी, ०परिया ०गुड से तैयार औषधि।

गुडपीठी (स्त्री०) गुड भेली। (वीरो० ५/वृ० ३०३)

गुडलं (नपुं०) गुड से निर्मित।

गुडा (स्त्री०) [गुड+टाप्] कपास का पौधा। १. बटी, गोली।

गुडाका (स्त्री०) [गुड+आ+कै+क+टाप्] गुडयति संकोचयति देहेन्द्रियादीनि इति गुडः तमाकति प्रकाशयति ०तन्द्रा, ०निन्द्रा, आलस्य।

गुडागुडायनं (नपुं०) खांसी।

गुडेरः (पुं०) भेली, पिण्ड, परिया।

गुण् (सक०) ०गुणा करना, ०उपदेश देना, ०निमंत्रण करना।

गुणः (पुं०) १. स्वभाव, प्रकृति, प्रभाव, (जयो० १/२) २. परिणाम, फल, परिणति। (सुद० २/२) 'जिह्वा गुणि गुणेषु सञ्चरञ्चेतसा' (जयो० ३/२) 'गुणिनां पूज्यपुरुषाणां गुणेषु शीलेषु जिह्वया रसनया कृत्वा सञ्चरन्' (जयो० वृ० ३/२) कुतोऽत्र भो रक्त-विरक्तनामभेदं गुणे वस्तुतयेतियामः। (सम्य० १२३)

* रत्नत्रयगुण-ज्ञान, दर्शन, चारित्र।
* पुद्गलगुण रूप, रस, गन्ध वर्णवंतः। (सम्य० ११)
* वस्तुगतध्रुवांश-'ध्रुवांशमाख्यान्ति गुणेति नाम्ना' (वीरो० ७/१८)
* स्वभाव, प्रकृति-'भूरञ्जनो यस्य गुणश्च देव।' (जयो० १/३७)
* सत्कर्म- (जयो० ११/१०)
* शौर्यादि गुण। (जयो० १/१०)
* सूत्र, तन्तु धागा। (जयो० १/१०)
* गुणोदयकाव्य आचार्य ज्ञानसागर रचित (जयो० १/२)
* प्रशंसा-'गुण प्रशंसा तामित' (जयो० १/९५) 'गुणानां शीलादीनां वृद्धिर्यथोत्तरमुत्कर्षप्राप्तिः' (जयो० वृ० १/९५)
* सौन्दर्य-'गुणेन तस्या मृदुना निबद्धः'। (जयो० १/७१)
* क्षमादि विशेष (जयो० वृ० १/३२)
* शुभ्र गुण शुभैर्गुणैरर्जुन एव नान्य (जयो० १/१८)
* चाप, प्रत्यंचा -'भुवि महागुण-मार्गण-शालिना' (जयो० १/९८) गुणस्य ज्याया अधिकारेण (जयो० वृ० ६/६८)
* गुण-रज्जु, रस्सी, सूत्र, धागा। (जयो० वृ० १/३२)
* गुण-वैशेषिक मत में मान्य (जयो० वृ० २६/३२) येषां मतेनाथ गुणः स्वधाम्ना।
* गुण-विषयसेवन-'गुणो विषयसेवनं' (जयो० २/६८)
* गुण-शौर्यादि (जयो० वृ० १/३१)
* गुण-सन्धि विशेष। 'गुण एप् अदेङ्' (जयो० वृ० १/३)
* द्रव्याश्रय-द्रव्याश्रया निर्गुणा गुणा (सम्य० ५/४०)
* वर्तना-काल-परिवर्तन (त० सू० ५/३९)
* सामान्य-गुण का नाम सामान्य। (वृ० ८४) गुणाः शक्तिविशेषाः (त०भा० ५/३७)
* सरिस-सदृश परिणाम-'सरिसो जो परिणामो अणाइणिहणो हवे गुणो सो हि' (कार्ति० २४१)

गुणव (वि०) गुणन करने वाला।

गुणकार (वि०) गुणोत्पादक। (जयो० १६/८२) हितकर, लाभदायक, यथेष्ठ।

गुणकारिणी (वि०) गुणवती, गुणोत्पादिका, हितकारी, लाभकारी। (जयो० १६/८२)

गुणकारित्व (वि०) गुणकारी, गुणज्ञता प्राप्त।

गुणकीर्तनं (नपुं०) गुण स्तवन। (जयो० ६/७०)

गुणगत (वि०) गुणों को प्राप्त। (जयो० ६/३२)

गुणगह्वरः (पुं०) गुणों की गम्भीरता।

गुणगह्वरी (वि०) गुण गरिष्ठता, गुण की विशेषता। (सुद० ११७) रविप्रतीपश्च निशासु दीपः शमी स जीयाद् गुणगह्वरीपः। (सुद० ९/१)

गुणगानं (नपुं०) गुणस्तुति, गुणकीर्तन, गुण प्रशंसा। (सुद० ७०)

गुणगीता (स्त्री०) गुण परिपूर्णा, गुणवर्णन। 'गुणानां गीता

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यस्याः सा गुणपरिपूर्णा' (जयो० ५/३३) योगिराजपदताऽऽपि पुनीता यस्य विस्तृतमा गुणगीता' (समु० ५/३०)

गुण-गुणी (स्त्री०) अङ्ग अङ्गी, अवयव-अवयवी। वैशेषिक दर्शन गुण को गुणी से भिन्न मानता है। जैनदर्शन के गुण और गुणी में तादाम्य सम्बन्ध मानता है। गुण और गुणी में प्रदेश भेद न होने से एकरूपता है। मात्र संज्ञा, संख्या तथा लक्षण आदि की अपेक्षा भेद है। गुण गुणीरूप है। और गुणी गुण रूप है। अतः इनमें तादाम्य सम्बन्ध है। तादाम्य सम्बन्ध में जिस द्रव्य का जो गुण होता है उसका उसी के साथ तादाम्य होता है। (जयो० २६/८१, ८२ वृ० १२०७)

गुणगुर्वी (वि०) गुणों की परिपूर्णता अखर्व। (जयो० वृ० ६/८)

गुणगृह्य (वि०) गुण प्रशंसक, गुण ग्राहक।

गुणगेह (वि०) गुण ग्राहक।

गुणग्रहीत (वि०) दूसरों के गुणों को ग्रहण करने वाला।

गुणग्रामः (पुं०) गुण समूह।

गुणग्राहक (वि०) गुण ग्रहण करने वाला, गुण प्रशंसक। (वीरो० १/१६)

गुणग्राहिका (वि०) गुणनिका, गुण ग्रहण करने वाली। गुणग्राहिणी।

गुणग्राहिन् (वि०) गुणग्राही।

गुणज्ञ (वि०) गुण प्रशंसक।

गुणज्ञता (वि०) गुण ग्राहकता। नमतः स्म गुरुनुदारभावैर्विनयान्नास्त्यपरा गुणज्ञता वै। (जयो० १२/१०५)

गुणत्रयं (नपुं०) तीन गुण युक्त ज्ञान, दर्शन, और चारित्र युक्त।

गुणतः (पुं०) गुणस्थान से। जैनसिद्धान्त में चौदह गुणस्थान माने गए हैं। योग आत्मनि सम्पन्नो दश्मात् गुणतः परम्। (सम्य० वृ० १४२)

गुण-तन्तुः (स्त्री०) प्राणी भाव बर्तन 'प्राणीनां भाववर्तनम्' (जयो० ४/२८)

गुणधर्मः (पुं०) गुणधर्म नाम। १. गुण भाव।

गुणधर्मिणी (वि०) गुणधारिणी, गुणवाली, गुणस्वभावी, गुणश्रीर्नाम भार्याऽस्य समानगुणधर्मिणी। (दयो० १/१६)

गुणदोषः (पुं०) गुणों पर दोष। क्षीर-नीर विवेक। (जयो० वृ० ३/७)

गुणधामः (पुं०) गुणाधार, गुणों का स्थान। (जयो० ४/३)

गुणधी (स्त्री०) बुद्धिशाली।

गुणनिका (वि०) गुणग्राहिका 'गुणेन सह निका गुणनिका गुणग्राहिका।' (जयो० २४/१२९)

गुणनिका (स्त्री०) १. आवृत्ति, अध्ययन, घोकना, याद करना। २. शून्य। 'गुणेन सह निका गुणनिका गुणग्राहिका शून्यरूपा च।' (जयो० वृ० २४/१२९)

गुणनीय (वि०) [गुण+अनीयर्] १. गुणन योग, गुणा करने योग्य। २. अध्ययनीय, अभ्यासनीय।

गुणनीयः (पुं०) अभ्यास, अध्ययन।

गुणपालः (पुं०) गुणपाल नामक सेठ, उज्जयिनी नगरी का एक राजसेठ। राजा वृषभदत्त के शासन का प्रमुख सेठ। 'गुणपालाभिधो राजश्रेष्ठी सकलसम्मतः।' कुबेर इव यो वृद्धश्रवसो द्रविणाधिपः।।' (दयो० १/१४)

गुणपूर्णगाथा (वि०) गुणगान। (समु० १/३)

गुणप्रकर्षः (पुं०) गुणों की श्रेष्ठता।

गुणप्रणीतिः (स्त्री०) गुणों की खानि। सौन्दर्य शाखाप्रियकारिणीति नाम्ना सुकामादिगुणप्रणीतिः। (समु० ६/२५)

गुणप्रतिपन्न (वि०) संयम गुण को प्राप्त। गुणं संजमं संजमासंजमं वा पडिवण्णो गुणपडिवण्णो' (धव० १५/१७४)

गुणप्रत्ययः (पुं०) गुणों का आधार, सम्यक्त्व गुण का स्थान।

गुणप्रमाणं (नपुं०) गुणनं गुणः, स एव प्रमाणहेतुत्वाद् द्रव्य प्रमाणात्मकत्वाच्च प्रमाणं प्रमीयते गुणैर्द्रव्यम्' (जैन ल० वृ० ४१३) प्रमाण का हेतु, गुणों का प्रमाण।

गुणप्रयोगः (पुं०) गणनप्रयोग, गणित शास्त्र संख्या योग। (जयो० वृ० १/३४)

गुण-प्रसक्तिः (स्त्री०) गुणानुराग। 'गुणप्रसक्त्याऽतिथये विभज्य' (सुद० १३०)

गुणवृद्धि (स्त्री०) गुणों की वृद्धि। गुणश्च वृद्धिश्च गुणवृद्धिः व्याकरण शास्त्रोक्तो संज्ञे तद्वान' (जयो० वृ० १/९५)

गुणभद्र (पुं०) आचार्य गुणभद्र, जैन महापुराण के रचनाकार। (जयो० २३/४१)

गुणभद्रः (पुं०) माधुर्य गुण सहित। 'गुणेन मधुरत्वेन भद्रं मङ्गलम्' (जयो० वृ० २३/४१)

गुणभद्रभाषित (वि०) आचार्य गुण भद्र कथित। (जयो० वृ० २३/४१)

गुणभद्रभूत (वि०) आचार्य गुणभद्र के रूप में उत्पन्न हुआ। गंगेव वाणी गुणभद्रभूता, महापुराणी जगतेऽस्ति पूता। (समु० १/७)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गुणभद्राचार्यः (पुं०) आचार्य गुण भद्र, प्रसिद्ध संस्कृत पुराणकार। (जयो० वृ० २३/४१)

गुणभूमिका (स्त्री०) गुणाधिकार। गुणानां भूमिका। (जयो० १/८६)

गुणमार्गणशालिन् (वि०) गुणस्थान और मार्गणा स्थान पर विचार करने वाले। (सुद० ४/४)

गुणमाला (स्त्री०) उज्जयिनी के राजा वृषभदत्त की पुत्री। (दयो० ११०)

गुणमाला (स्त्री०) गुणसमूह। (दयो० ११०) एक राजकुमारी, श्रेष्ठी कन्या।

गुणयुक्तः (पुं०) १. गुणों से परिपूर्ण। २. डोरी सहित। चापलतेव च सुवंशजाता गुणयुक्ताऽपि वक्रिमख्याता। (सुद० १/४२) 'गुणयुक्तोन्नतवंशसंस्तुतः' (सुद० ३/६)

गुणरत्नः (पुं०) नाम विशेष।

गुणरत्नं (पुं०) गुण रूप रत्न। समुद्रवत्सद्गुणरत्नभूपः विमानवत्सौर भवादिरूपः। (सुद० २/३९) न दीपो गुणरत्नानां जगतोमेक दीपकः। (सुद० वृ० १३५)

गुणरीतिः (स्त्री०) उपकार पद्धति। 'गुणस्योपकारस्य रीतिर्यत्र' (दयो० ९४/६)

गुणलक्षणं (नपुं०) धर्माचरण रूप लक्षण। १. आन्तरिक गुण का आधार। गुणानां ज्ञानादीनां धर्माचारादीनां लक्षणम्। (जयो० १९/२३)

गुणलयनिका (स्त्री०) तम्बू।

गुणवचनं (नपुं०) विशेषण, संज्ञा की विशेषता बतलाने वाला।

गुणवाचकः (पुं०) विशेषण।

गुणवत् (वि०) [गुण+मतुप्] गुणी, श्रेष्ठ, गुणवान्, गुण युक्त। निर्निमन्त्रणतया न भवद्भिर्यातुमेवमुचितुं गुणवद्भिः' (जयो० ४/१४)

गुणवती (वि०) १. विलास विभ्रमादिवती, रुचिकारकत्व वाली। (जयो० ३/६१) सम्पन्ना गुणवती व्यञ्जनैरखिलैः पूर्णा। (जयो० ३/६१)

* गुणयुक्त, ज्ञानादिगुण सहित। 'गुणवतीव ततिर्वचसी' (जयो० वृ० ९/१०)

* सौन्दर्यादिगुण युक्त मदन-मनोहरं च गुणवत्यो नववयोऽन्वयं वनं युवत्यः (जयो० १४/१६)

गुणवती (स्त्री०) गुणवती आर्यिका। सन्निशस्य पुनेतदुदन्तं श्रीधराऽपि भगवज्जिनसन्तम् सन्निधाय हृदये गुणवत्या आर्यिकात्वमभजद्धुवि सत्याः।। (समु० ५/२५)

गुणवच्छिरोमणि (वि०) गुणीश। (जयो० वृ० ३/८९)

गुणविवेचना (स्त्री०) माधुर्य विवेचना। गुणस्य माधुर्यस्य विवेचना न्यूनाधिक्यनिर्णयस्तस्य (जयो० ६/६९)

गुणवृक्षः (पुं०) मस्तूल, स्तम्भ, जहाज को बांधने का स्तम्भ।

गुणवृत्तिः (स्त्री०) मुख्य प्रवृत्ति।

गुणव्रतं (नपुं०) अणुव्रत का उपकारक, उत्तरगुण रूप। 'गुणाय चोपकारायाऽहिंसादीनां व्रतानि तत् गुणव्रतानि' 'गुणार्थमणुव्रतानामुपकरार्थंव्रतम् गुणव्रतम्।

गुणशः (पुं०) अर्चना, पूजा (सुद० ९४) उपदेशविधानं यतोऽर्द प्रतीक्षते गुणशस्य। (सुद० ९/१)

गुणशब्दः (पुं०) विशेषण।

गुणशालिन् (वि०) गुणशाली, गुणयुक्त। भवता कलयिष्यामि, (समु० ३/४१) तदघ गुणशलिना। (समु० ३/४१)

गुणसंकीर्तनं (नपुं०) गुणवर्णन, गुण विवेचन। (जयो० ६/३२)

गुणसंक्रमः (पुं०) शुभ प्रकृतियों का क्रम।

गुणसंख्यानं (नपुं०) गुण गणना, गुणविचार।

गुणसंग्रहः (पुं०) गुण ग्रहण, गुणोपार्जन। जनोऽखिलो जन्मनि शूद्र एव यतेत विद्वान् गुणसंग्रहे वः। (वीरो० १७/३५)

गुणसंग्रहोचित (वि०) गुणों से भरे हुए। तुगहो गुणसंग्रहोचिते मृदुपल्यङ्क इवार्हतोदिते। (सुद० ३/२२)

गुणसंस्तवनं (नपुं०) गुण संकीर्तन, गुणगान, गुण विवेचन। मुक्तात्मभावोदरिणी जवेन। मुक्तात्मभावोहरिणी जवेन समर्हणीया गुणसंस्तवेन। (सुद० २/४)

गुण-संश्रवणं (नपुं०) गुण श्रवण, गुणों का सम्यक् श्रवण, गुणों का सुनना। गुण संश्रवणावसरे विजृम्भणेनानुसूचिनी शस्ताम्' (जयो० ६/३९)

गुणश्रेणी (स्त्री०) गुणों की वृद्धि, परिणामों की विशुद्धि की वृद्धि। कमप्रदेशों की निर्जरा का कारण।

गुणसमुदयः (पुं०) गुण समूह। (जयो० १/२)

गुणसागरः (पुं०) नाम विशेष, एक मुनि। १. गुण समूह।

गुणसारौः (पुं०) गुण रहस्य। गुणनांशृंगारादीना सारो विद्यते यत्र स गुणसारः। (जयो० १६/७३)

गुणसेनः (पुं०) १. नाम विशेष। २. गुणों की सेना। गुणनां धैर्य-सौन्दर्यादीनाम् यद्वा मन्त्रि- सामन्तादीनां च सेना समूहो यत्र' (जयो० ५/६५)

गुणसेवक (वि०) गुणों की सेवा करने वाला।

गुणसेविन् (वि०) गुणों का आराधक। (जयो० २०/६८)

गुणस्थः (पुं०) गुणस्थान, गुणों का आधार। स्यूतेः समं

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तूर्यगुणस्थेऽतो भवेत् प्रपूतिर्भवसिन्धुसेतो। (सम्य० पृ० १२५)

गुणस्थलः (पुं०) गुणस्थान। देवायुषो बन्धनमप्रमत्तगुणस्थलानां क्रियते जगत्तः। (सम्य० १२०)

गुणस्थानं (नपुं०) गुणों का स्थान, गुणों का आधार। मोह और योग के निमित्त से आत्मा के परिणामों में तारतम्य' (जयो० द्वि० २८/१४) गुणानां शील संयमादीना स्थानं गुणस्थानम्' (जयो० वृ० २८/१४)

गुणहीन (वि०) गुणों से रहित, ज्ञान दर्शन और चारित्रादि का अभाव। (जयो० ६/६९)

गुणहीनखट्वः (पुं०) बिना बुनी खाट रस्सी से रहित खाट। (दयो० ८९)

गुणाकरः (पुं०) गुणों की खान। 'गुणानामकरः संचयो यत्र' (जयो० २४/५२)

गुणाढ्य (वि०) गुणों की समृद्धि।

गुणाधारः (पुं०) गुणवान्, योग्य व्यक्ति, गुणशील व्यक्ति।

गुणाधिकारः (पुं०) गुणभूमिका क्षमादि के अधिकार। 'गुणानां क्षमादीनामधिकारः' (जयो० वृ० २७/२) गुणानधिकोराऽधिकरणं यत्र तां गुणभूमिकामित्यर्थः' (जयो० वृ० १/८६)

गुणाधीनं (नपुं०) गुण राग।

गुणाधीनता (वि०) गुणानुरागता। (जयो० वृ० २७/५३)

गुणाननुवदत्ता (वि०) गुणानुवाद करने वाला, गुण प्रशंसक। (जयो० १६/७०)

गुणानुरागः (पुं०) गुणाधीन, गुणों के प्रति आसक्ति।

गुणानुरागवृत्तिः (स्त्री०) गुणों के प्रति अनुराग जन्य प्रवृत्ति। (जयो० २७/५३)

गुणानुरागी (वि०) अनुरञ्जित, गुणों के प्रति रागवान्। (जयो० १७/५८) 'अनुरञ्जितः सन् गुणानुरागी भवन्' (जयो० ११/४) 'गुणानुरागी करमर्पयामि' (जयो० १७/५८)

गुणाभिषेकः (पुं०) वृद्धिकरण दीक्षा प्रयोग, दीक्षा प्रयोग। (जयो० १६/२५) शरीरिवर्गस्य तमां विवेकहान्या महान्याग गुणाभिषेकः। (जयो० १६/२५)

गुणानुमानिन् (वि०) गुणानुरागी। (जयो० १२/४५)

गुणानुवादः (पुं०) गुण विवेचन, गुण संकीर्तन। (जयो० ६/७०)

गुणान्वयः (पुं०) गुण युक्त। (सुद० २/१)

गुणान्वित (वि०) गुणयुक्त। (जयो० ३/७६)

गुणार्णवः (पुं०) गुण की अन्तिम सीमा। (जयो० ११/४२)

गुणार्पणं (नपुं०) गुणों का आरोपण। 'गुणानामर्पणा तद्गुणारोपो भवति' (जयो० १/३२)

गुणानुसारः (पुं०) गुणों के अनुसार।

गुणावती (स्त्री०) गुण समूह। (सुद० २/३०)

गुणालयः (पुं०) गुणाश्रय, गुणों का स्थान। (जयो० ७/२)

गुणाश्रयः (पुं०) गुणाधार, गुणों का स्थान, गुणालय। (सुद० ३/१०) 'निर्दोषरूपाय गुणाश्रयाय' (भक्ति० २१)

गुणास्पदः (पुं०) गुणों का स्थान। (जयो० ९/५)

गुणिका (स्त्री०) [गुण+इन+कन्+टाप्] सूजन, रसौली, गिल्टी।

गुणिगुणः (पुं०) गुणियों के गुण। गुणीनां पूज्यपुरुषाणां गुणेषु शीलेषु' (जयो० ३/२)

गुणिजनः (पुं०) ज्ञानीजन, गुणिपुरुष। 'गुणिजनेषु पुनर्बहुमूल्यता' (समु० ७/१५)

गुणित (वि०) संग्रहीत, प्रारम्भ। 'कुसुम-गुणित-दामनिर्मलं सा' (जयो० १०/११३) १. गिना हुआ, गुणा किया गया। २. गुणवत्तार (जयो० १/३९)

गुणितीरः (पुं०) गुणों जनों से घिरा, १. गुणयुक्त। गुणितीरं गुणयुक्तस्तीरो यस्य' (जयो० ६/५८)

गुणिन् (वि०) [गुण+इनि] गुण वाला, गुणी, गुणशाली।

गुणिनि (स्त्री०) गुणशालिनी। 'यदि गुणिनि स्वर्गेऽस्य विचारो' (जयो० २२/६२)

गुणिवर्गः (पुं०) ज्ञानी समूह, विद्वत् समूह। (सुद० ४/३५)

गुणिवरः (वि०) गुणीश, गुणवत् शिरोमणि। (जयो० ३/८९)

गुणी (स्त्री०) अङ्गी, अवयवी। (जयो० ३/८९) वैशेषिक दर्शन गुण को गुणी से भिन्न मानता है, जैसा कि आत्मा का ज्ञान और आकाश का शब्द गुण क्रमशः आत्मा और आकाश से भिन्न है।

गुणीभर्तृ (वि०) गुणवान्, गुणशाली। गुणी गुणवान् भर्ता स्वामी यस्य' (जयो० वृ० ४/५)

गुणीश (वि०) गुणिवर, गुणवत्, शिरोमणि, गुणशाली। (जयो० ३/८९)

गुणीशील (वि०) प्रशस्त, गुण युक्त। (जयो० ६/५८) गुणवन्तो गुणिनो वसन्ति यतः, तथैव गुणीशाली प्रशस्तः। (जयो० वृ० ६/५८)

गुणैकबन्धुः (पुं०) गुणों का स्थान, गुणाधार। गुणस्तस्येकोऽद्वितीयो बन्धुस्तस्य' (जयो० वृ० १/४९)

गुणैकवपुषं (नपुं०) सुन्दर देह, गुणमय शरीर। (जयो० ६/२७)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गुणैकसत्ता (स्त्री०) गुणों की प्रधानता, पातिव्रत्यादि गुण से युक्त। (सुद० २/६) गुणों से गुम्फित।

गुणैषणा (स्त्री०) सद् गणान्वेषिणी, उत्तम गुणों की इच्छा। (जयो० १३/४३)

गुणोत्पादिक (स्त्री०) गुणवती। (जयो० ६/८२)

गुणोदयः (पुं०) गुणों का प्रादुर्भाव। मानवर्जितमपरिमितपरिणाम' (जयो० २०/७०)

गुणोरूपूर्ति (स्त्री०) गुणों की श्रेष्ठ पूर्ति। (सम्य० ५८)

गुणोल्लसत् (वि०) गुणों से सुशोभित। 'गुणेनायुर्बलेनोल्लसति प्रभवति' (जयो० २३/३१)

गुणौघः (पुं०) गुण समूह। गुणः क्षमादिः औघः समूहः (जयो० १/३२)

गुण्ठ् (सक०) परिवृत्त करना, घेरना, लपेटना, परिवेष्टित करना।

गुण्ठनं (नपुं०) [गुण्ठ्+ल्युट्] छिपाना, ढकना।

गुण्ठित् (वि०) [गुण्ठ्+क्त] आवृत, परिवेष्टित, घिरा हुआ, आच्छादित।

गुण्ड् (सक०) ढकना, छिपाना, पीसना, चूर्ण करना।

गुण्डकः (पुं०) [गुण्ड्+अच्+कन्] चूर्ण, धूल, रज।

गुण्डिकः (पुं०) [गुण्ड्+ठन्] आटा, चूर्ण, भोजन।

गुण्डित (वि०) पिसा हुआ, आच्छादित, ढका हुआ।

गुण्य (वि०) [गुण्+यत्] प्रशस्य, उपयुक्त, समीचीन, वर्णन योग्य।

गुत्सकः (पुं०) [गुष्+स+कन्] गट्ठर, गुच्छ, ग्रन्थ का अनुच्छेद।

गुद् (सक०) खेलना, क्रीड़ा करना।

गुदं (नपुं०) गुदा।

गुदकीलं (पुं०) बवासीर।

गुद-कीलकः (पुं०) बवासीर।

गुद्गुदानं (नपुं०) मृदुल। (जयो० २७/१२)

गुदग्रहः (पुं०) कब्ज, मलावरोध।

गुदपाकः (पुं०) गुदा की सूजन।

गुदस्तम्भः (पुं०) कब्ज।

गुध् (सक०) लपेटना, ढकना, वेष्टित करना।

गुन्दलः (पुं०) शब्द विशेष, ढोल का शब्द।

गुप् (सक०) रक्षा करना, बचाना।

गुपिलः (पुं०) १. रक्षक, २. नृप।

गुप्त (भू०क०कृ०) अनभिव्यक्त, रक्षित, संयुक्त, अदृश्य। (वीरो० १२/१८) 'गुप्तोऽपि सन् धातुगतो यथार्थः।' (जयो० १६/४२)

गुप्तः (पुं०) वैश्यवर्ण 'गुप्तो वैश्यवर्णः सञ्जातो' (जयो० १८/५०)

गुप्तकः (पुं०) [गुप्त+कन्] संधारक, प्ररक्षक।

गुप्तपयोधरः (पुं०) आच्छादित स्तन। (वीरो० २१/२)

गुप्तिः (स्त्री०) [गुप्+क्तिन्] रक्षा, निग्रह, गोपन, आच्छादन, निरोध, प्रच्छादन, झम्पन, प्रवेशन, रक्षण। मन, वचन और काय की प्रवृत्ति का निरोध। 'सम्यग्योगनिग्रहो गुप्तिः' (त० सू० ९/४) १. आत्म रक्षण का नाम। 'यतः संसार-कारणादात्मनो गोपनं सा गुप्तिः' (स०सि० ९/२) 'गुत्ती जोणणिरोहो' (कार्ति० ९७) 'गुप्यतेऽनयेति संरक्ष्यते सा गुप्तिः' २. बिल, गुफा, कन्दरा, ३. कारागार, बन्दीगृह। ४. छिपाना, लुकाना, ढकना। ५. म्यान, छोटी तलवार की म्यान।

गुप्तिकर (वि०) गुप्ति का पालन करने वाले।

गुप्तित्रयात्मक (वि०) त्रिविध गुप्तियों वाले। (जयो० वृ० १/९७)

गुप्तिभाग् (वि०) गुप्तांगों का भोक्ता। उत्कोच भागी, गोपनभागी। 'गुप्तिरुत्कोचस्तं भजतीति गुप्तिभाग्।' (जयो० वृ० ३/१५)

गुफ्/गुम्फ् (सक०) गूंथना, बांधना, लपेटना, रचना, बनाना।

गुम्फित (भू०क०कृ०) बांधा हुआ, बुना हुआ।

गुम्फः (पुं०) [गुम्फ्+घञ्] बांधना, गूंथना।

गुर् (सक०) १. प्रयत्न करना, चेष्टा करना। २. क्षति पहुंचना।

गुरु (वि०) अत्यधिक, भारी, बोझल, प्रशस्त, दीर्घ, लम्बा, विस्तृत, महत्त्वपूर्ण, आवश्यक प्रभावशाली, आदरणीय।

गुरु (वि०) अध्यापक, शिक्षक, ज्ञान देने वाला। (जयो० ११/२६) १. बृहस्पति, वृषभदेव, ब्रह्मा। (जयो० ५/३२) गुणाति शास्त्रार्थमिति गुरुः। गुरोरनुग्रहप्राप्त्या समवा-पाच्छतामथ। (जयो० २८/१) गुरोः बृहस्पतेः, गुरोर्वृषभदेवस्य आदि तीर्थंकर ऋषभदेव, जैन धर्म के आद्यप्रवर्तक, आदि गुरु भी उन्हें कहा जाता है। (जयो० १/२) २. सच्चे गुरु-रत्नत्रय विशुद्ध। ३. स्थूलतर, विपुल। (जयो० ८/२) 'गुरुर्नितम्बः स्विदुरोजबिम्बः' (जयो० ११/२४) 'स्वित्तत उरोजबिम्बोऽपि गुरुरस्ति' (जयो० वृ० ११/२४) 'गुरो-र्नितम्बादबलिपर्वणा' (जयो० ११/२५)

* गुरु–सर्वश्रेष्ठ (जयो० वृ० ११/२७) गुरुणां पुरुणामाण ऋषभदेव (जयो० १/२)

* गुरु–पिता–'गुरुमाप्य स वै क्षमाधरं सुदिशो मातुरथो-दयन्नरम्। (सुद० ३/२०)

* गुरुदेव (सुद० १/९)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गुरुक (वि०) [गुरु+कन्] भारी, वजनी।

गुरुकारः (पुं०) उपासना, पूजा।

गुरुक्रमः (पुं०) उपदेश, शिक्षाक्रम।

गुरुक्तिः (स्त्री०) बृहस्पतिमत, गुर्वी उक्तिर्यस्याः सा गुरुतरप्रशंसनीय चार्वाक मत। (जयो० ५/४३)

गुरुजनः (पुं०) श्रेष्ठ पुरुष, श्रद्धेय व्यक्ति, पूजनीय व्यक्ति।

गुरुगर्जित (वि०) अत्यधिक चिंघाड़, तीव्र गर्जना। (जयो० ८/२३)

गुरुगौरवः (पुं०) अपना गौरव, निज सम्मान।

गुरुगौरवास्पदः (पुं०) जन्मदाता के गौरव पूर्ण स्थान, पितृस्थान। (जयो० २४/४२) गुरुर्जन्मदाता तस्य गौरवास्पदं स्थानम्' (जयो० वृ० २४/४२)

गुरुतर (वि०) १. उन्नत, बोझिल। 'गुरुतर-कार्येऽहं विचरामि' (सुद० ९२) कुचो गुरुतरो जातौ (जयो० १४/४१) २. श्रेष्ठतर, दुर्भरतर (जयो० १५/९६)

गुरुतरकार्यः (पुं०) कठिन से कठिन कार्य।

गुरुतरप्रतिबिम्बः (पुं०) श्रेष्ठ प्रतिबिम्ब। (जयो० १५/९६)

गुरुताप्रकाशिन् (वि०) गौरवशाली। 'गुरुतां प्रकाशयन्ति तान् गौरवप्रकाशकान्। (जयो० २/७१)

गुरुत्व (वि०) गुरुता, भारीपन, बड़कपन।

गुरुदेवः (पुं०) बृहस्पति, ब्रह्मा, गुरुदेव। (जयो० ३)

गुरुदक्षिणा (स्त्री०) शिक्षक वृत्ति।

गुरुदैवतः (पुं०) पुष्य नक्षत्र।

गुरुद्रोहः (पुं०) पूज्य के प्रति विद्रोह। कृत्येऽस्मिंस्तु महानेवं गुरुद्रहो भविष्यति। (जयो० ७/४२)

गुरुपदः (नपुं०) गुरु चरण, सच्चे गुरु की समीपता। 'गुरुपदयोर्मदयोगं त्यक्त्वा' (सुद० ९६)

गुरुपादः (पुं०) गुरु चरण, अध्यापक चरण। 'प्रसङ्गप्राप्तैरस्माकं गुरुपादैरूक्तम्' (दयो० १/१०) समुदित नेत्रवतीति प्रभवति गुरुपाद-पसद् भावधृता। (सुद० ८२)

गुरुपादपः (पुं०) उन्नत वृक्ष, उत्तम लता।

गुरुपूर्णिमा (स्त्री०) गौतम जन्म दिन, शिक्षक पूर्णिमा। (वीरो० १३/३८)

बर्धमानादनंभ्राज एवं गौतमचातकः।
लेभे सूक्तामृतं नाम्ना साऽऽषाढी गुरुपूर्णिमा।।

गुरुभम् (नपुं०) पुष्यनक्षत्र।

गुरुमर्दलः (पुं०) मृदंग।

गुरुरत्नं (पुं०) पुखराज।

गुरुलाघवं (नपुं०) अत्यधिक महत्त्व, विशिष्ट मूल्य।

गुरुवर्गः (पुं०) शिक्षक गण, पूज्यवृंद।

गुरुवर्गाश्रितमोहः (पुं०) पूज्यवृंद के आश्रित मोह 'जननी-जनकादि सम्भूतश्चासौ मोहः' (जयो० १३/२०)

गुरुवर्तिन् (पुं०) गुरु के समीप रहने वाला ब्रह्मचारी।

गुरुवर्तुलः (पुं०) श्रेष्ठ वर्तुलाकार, उत्तम गोलाकार। (जयो० ११/७) 'कलत्रचक्रे गुरुवर्तुले दृक्।' 'गुरु च वर्तुलञ्च गुरुवर्तुलं तस्मिन् प्रशस्तगोलाकारे' (जयो० वृ० ११/७)

गुरुवाक् (नपुं०) पितृ आदि का कथन। गुरुणां पित्रादीनामाज्ञा-कारिणी (जयो० ५/९९)

गुरुवासरः (पुं०) बृहस्पतिवार, गुरुवार।

गुरुवासिन् (पुं०) गुरु के समीप रहने वाला, ब्रह्मचारी।

गुरुवृत्तिः (स्त्री०) उत्तम आचरण, गुरु का आचरण।

गुरुशुक्लता (वि०) १. बृहस्पति और शुक्र का सद्भाव। २. अत्यधिक शुक्लता, सफेदी की अधिकता। 'यस्यारिभावं गुरुशुक्लतास्ति' (जयो० १५/६९) 'गुरुर्बृहस्पतिः शुक्लश्च' "भृगुस्तयोर्भावः गुरुशुक्लता यद्वा गुर्वी शुक्लता धवली भावोऽस्ति किल।" (जयो० १५/६९)

गुरुस्थानं (नपुं०) उन्नत स्थान, श्रेष्ठ स्थान। उपनीतः पुनर्भव्यो गुरुस्थानमिवालिभिः। (जयो० १०/८५)

गुर्व (वि०) साधुता, श्रेष्ठ। (सम्य० ९२)

गुर्वाभिज्ञ (वि०) श्रेष्ठता का ज्ञापक। (सम्य० १२१)

गुर्विणी (स्त्री०) गर्भवती स्त्री।

गुर्वी (वि०) गभीरार्थवती (जयो० २०/८१) 'अर्थातिशयेन गुर्वी गभीरार्थवती' (जयो० वृ० २०/८१) 'स्त्रीमात्रमुष्टाविषयमेव गुर्वी' (जयो० ११/८४) २. गुरुभाव, उत्कृष्ट भाव, उन्नत विचार। (जयो० वृ० १५/६९) ३. बड़ी, महत्। 'रत्नैकिका नैव लघुर्न गुर्वी' लध्व्याः परस्या भवति स्विदुर्वी गुर्वी समीक्ष्याथ लघुस्तृतीयां वस्तुस्वभावः गुरुरामितीयान्।। (वीरो० १९/५)

गुर्वीक (वि०) गुरु सेवक, पृथिवी सेवक, जमींदार, कृषि पण्डित। गुर्वीकः गुरुणां सेवकः धराजीविकश्च (जयो० २८/९४)

गुलावं (नपुं०) गुलाब पुष्प। (वीरो० १३/४)

गुलुच्छः (पुं०) गुच्छ, गुल्म, समूह।

गुल्गुलर (स्त्री०) नैवेद्य विशेष, मूलतः आटे में गुड़ मिलाकर तला हुआ मीठा भुजिया। अत्रत्यविस्मापन दैवशायार्पितापि नासा खलु गुल्गुलाया। (जयो० ११/६२)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गुल्फः (पुं०) टखना, घुटना।
गुल्मः (पुं०) झाड़ी, झुरमुट, लता समूह।
गुल्मिन् (वि०) [गुल्म+इनि] लता समूह वाला।
गुल्मी (स्त्री०) [गुल्म+अच्+ङीप्] तम्बू।
गुवाकः (पुं०) सुपारी का वृक्ष।
गुह् (सक०) ढकना, छिपाना, आच्छादित करना, गुप्त रखना।
गुहः (पुं०) अश्व।
गुहा (स्त्री०) गुफा, कन्दरा, बिल। शून्यागार-गुहा श्मशान-निलयप्रायो प्रतीतो मुदा' (मुनि० २९)
गुहात्मक (वि०) दरीमय, गर्त सहित। भूरिदरीमय नाना गुहात्मनोऽप्यस्ति' (जयो० वृ० २४/२०)
गुहिनं (नपुं०) अरण्य, वन।
गुहेरः (पुं०) [गुह+एरक्] १. अभिभावक, २. संरक्षक। ३. लुहार, अयस्ककार।
गुह्य (सं०कृ०) ०गोपनीय, ०छिपाने योग्य, ०गुप्त ०एकान्तिक। (सम्०) 'वर्मविधौ यद्यपि वक्त्रमुह्यं विरेचने किंतुतथैव गुह्यम्' (जयो० २६/७९)
गुह्यभाषणं (नपुं०) गुप्त बात को प्रकट करना, सत्याणुव्रत में लगने वाला दोष।
गुह्यलम्पटः (पुं०) गुप्त लालची। 'गुप्तरूपेण विषयलोलुपः' (जयो० वृ० २/३२)
गु (स्त्री०) मल, विष्टा।
गूढ (भू०क०कृ०) गुप्त, आच्छन्न, (सम्य० १२६, सुद० १०२) गंभीर, आवृत्त, छिपा हुआ। (जयो० ५/५१) आच्छादित (जयो० १७/१७)
गूढनीडः (पुं०) खंजनपक्षी।
गूढपथः (पुं०) गुप्तमार्ग, पगडंडी।
गूढपादः (पुं०) सर्प।
गूढपयोधरा (स्त्री०) नव वधू। (जयो० १४/५२)
गूढपुरुषः (पुं०) दूत, गुप्तचर, भेदिया।
गूढपुष्पकः (पुं०) बकुलतरु।
गूढब्रह्मचारी (वि०) गुप्त रूप में ब्रह्म का आचरण करने वाला।
गूढमार्गः (पुं०) गुप्तमार्ग, भूगर्भ। (जयो० २/१५४)
गूढमैथुनः (पुं०) कौवा।
गूढ रहस्यः (पुं०) गुप्त बातचीत। (जयो० १६/६२)
गूढवर्चस् (पुं०) मेंढक।
गूढसाक्षिन् (पुं०) गुप्त साक्षी।
गूढार्थः (पुं०) रहस्यपूर्ण अर्थ। (जयो० २१/८७)

गूथ् (पुं०) [गू+थक्] विष्ठा, मल।
गून (वि०) विसर्जित मल।
गूलरः (पुं०) एक फल, उदुम्बर फल।
गूषणा (स्त्री०) अक्षिकृति।
गूहनं (नपुं०) गुप्त, छिपाना, आच्छादन करना, प्रकट न करना। तत्थं गूहणं किंचि कहणं भण्णइ।
गृ (सक०) छिड़कना, तर करना।
गृज्/गृञ्ज् (अक०) गुर्राना, शब्द करना।
गृञ्जनः (पुं०) [गृञ्ज्+ल्युट्] १. गाजर, शलजम। २. गांजा।
गृध् (सक०) गृद्ध होना, आसक्त होना, ललचाना।
गृधु (वि०) [गृध्+कु] लम्पट, कामातुर।
गृध्नु (वि०) [गृध्+क्नु] लोलुपी, लोभी, लालची, लम्पट।
गृद्धिः (स्त्री०) आसक्ति। (सुद० १०२)
गृध्यं (नपुं०) लोभ, इच्छा, वाञ्छा, चाह।
गृध्र (वि०) लोलुपी, लम्पटी।
गृध्रं (नपुं०) पक्षी विशेष।
गृष्टिः (स्त्री०) [गृह्णाति सकृतगर्भम्+ग्रह+क्तिच्] वत्स देने वाली गौ।
ग्रस् (सक०) ग्रसना, निकालना। 'नृलोकमेषा ग्रसते हि पूतना' (वीरो० ९/९)
गृह् (सक०) ग्रहण करना/गृह्णीयात् (सुद०)
गृण्ह देखो ऊपर-पकड़ना, लेना।
गृहं (नपुं०) घर, निवास, आवास, स्थान, भवन।
गृह-कच्छपः (पुं०) कबूतर।
गृहकपोतः (पुं०) पालतू कबूतर।
गृहकरणं (नपुं०) गृहकार्य, गृह का कारण।
गृहकर्मन् (नपुं०) १. गृहस्थकर्म, घर का कार्य। २. मूर्ति रचना, जिनप्रतिष्ठा।
गृहकलहः (पुं०) घरेलू कलह, घर के लोगों की आपसी कलह।
गृहकल्पः (पुं०) परिग्रहजन्य वेष।
गृहकारकः (पुं०) गृह निर्माता।
गृहकुक्कुटः (पुं०) पालतू मुर्गा।
गृहकार्य (नपुं०) गृहस्थी का नाम।
गृहकार्यनिमग्न (वि०) गृहस्थी के कार्य में निमग्न/लीन। 'गृहकार्ये रन्धनक्षोटनादौ निमग्नासीत्' (जयो० २२/३७)
गृहच्छिद्रं (नपुं०) गृह की कमजोरियां, गृह में अशान्ति, राजन्निरीक्ष्यतामित्थं गृहच्छिद्रं परीक्ष्यताम्। (सुद० १०८)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गृहजः (पुं०) भृत्य, नौकर, घर में उत्पन्न, भृत्य के लिए 'गृहजात' शब्द का प्रयोग।

गृहजातः देखो ऊपर।

गृहजातिका (स्त्री०) धोखा, कपटभाव।

गृहज्ञानिन् (नपुं०) मूर्ख, जड।

गृहतटी (स्त्री०) १. वीथिका, २. चबूतरा, चौपाल।

गृहतटीपंक्ति (स्त्री०) मार्गोपमार्ग, वीथिका। (जयो० वृ० ९/८३)

गृहदेवता (स्त्री०) इष्ट देव, अधिष्ठात्री देव, कुलदेवता।

गृहदेविका (स्त्री०) १. कुलदेवी, २. गृहस्त्री। गतो विवेक्तुं निजमित्युपायादुपासनायां गृहदेविकायाः। (जयो० १६/४)

गृहदेहली (स्त्री०) घर की चौखट, गृह की देहली।

गृहनमनम् (नपुं०) वायु, पवन, हवा।

गृहनाशनः (पुं०) अरण्यक कापोत।

गृहनीडः (पुं०) गौरेया, चिड़िया।

गृहपतिः (पुं०) गृहस्थ, गृहस्वामी, ग्रामकूट, ग्राम मुखिया।

गृहपालः (पुं०) गृहसंरक्षक।

गृहपोतकः (पुं०) घर का भाग, गृह का एक हिस्सा, भूखण्ड।

गृहप्रवेशः (पुं०) विधिवत् गृह में प्रवेश करना।

गृहबभ्रुः (पुं०) पालतू नेवला।

गृहबलिः (स्त्री०) आहूति।

गृहभुज् (पुं०) काक, कौवा।

गृहभङ्गः (पुं०) प्रवासी, यात्री।

गृहभूमिः (पुं०) वास्तुस्थान।

गृहभेदिन् (वि०) गृहभेदक, घर की कमी का निरीक्षक।

गृहमणिः (स्त्री०) दीपक।

गृहमाचिका (स्त्री०) चमगादड़।

गृहमेधिन् (वि०) गृहस्थ, श्रावक, व्रतीश्रावक।

गृहमृगः (पुं०) कुत्ता, श्वान।

गृहमेधः (पुं०) गृहस्थ।

गृहमेधिन् (पुं०) गृहस्थ।

गृहयन्त्रं (नपुं०) गृह उपकरण।

गृहवाटिका (स्त्री०) गृह बगीची।

गृहवित्तः (पुं०) गृह स्वामी।

गृहशुकः (पुं०) पिंजरे का तोता, पालतू शुक।

गृहसंवेशकः (पुं०) व्यवसायिक भवननिर्माता, स्थपति।

गृहस्थः (पुं०) गृही, घर पर रहने वाला। (जयो० वृ० १/२२) 'गृहं अगारं तत्र तिष्ठन्तीति गृहस्थाः' नित्य-नैमित्तकानुष्ठानस्थो गृहस्थः' (जैन०ल० वृ० ४/८)

गृहस्थता (वि०) गृहस्थ अवस्था। कौमारमत्राधिगमय्यं कालं विद्यानुयोगेन गुरोरथालम्। मिथोऽनुभावात्सहयोगिनीया गृहस्थता स्यादुपयोगिनी या। (वीरो० १८/३३) सत्त्वुषे मैत्री गुणिषु प्रमोदं क्लिष्टेषु जीवेषु तदर्तितोदम्। साम्यं विरोधिष्वधिमग्य जीयात् प्रसादयन् बुद्धिमहो निजीयाम्। (वीरो० १८/३३)

गृहस्थराजः (पुं०) सुगेही, सद्गृहस्थ। (जयो० १८/२)

गृहस्थवर्गः (पुं०) गृहस्थ समूह। सत्कारो गृहस्थवर्णस्याद्यं कर्त्तव्यं किं' (दयो० वृ० ५८)

गृहस्थ-शिरोमणि (पुं०) अगारिराड्, अगारराज, गृहस्थ का अग्रणी मनुष्य। (जयो० वृ० २/१३९) * मुखिया।

गृहस्थाश्रमः (पुं०) गृहस्थजीवन, गृहस्थ स्थान। (जयो० वृ० २/६९) जयो० दय काव्य में आश्रम के चार भेद किए हैं—१. वर्णि, (ब्रह्मचर्याश्रम) २. गेहि (गृहस्थाश्रम), ३. वनवासि (ग्रहस्थाश्रम) वानप्रस्थाश्रम और ४. योगि (सन्याश्रम) (जयो० ११७) को गेहि एवं सदनाश्रम भी कहा जाता है। सत्कन्यका प्रददता भवता प्रपञ्चे दत्तस्त्रिवर्गसहितः सदनाश्रमश्चेत्।। (जयो० १२/१४२) त्रिवर्गलहितः सदनाश्रमो गृहस्थाश्रम एव। (जयो० वृ० १२/१४२)

गृहस्थाचार्यः (पुं०) बृद्धजन, गुरुजन, श्रेष्ठजन। (जयो० १२/९७)

गृहागतातिथिः (नपुं०) अभ्यागत, घर में समागत जन। (जयो० वृ० ३/११६)

गृहाक्षः (पुं०) झरोखा, खिड़की।

गृहाङ्गणं (नपुं०) घर का खुला स्थान, आंगन। (दयो० ६९)

गृहाश्रमः (पुं०) गृहस्थाश्रम। गृहस्थान, घर परिकर। बुद्धिं विधाने च रमां वृषक्रमे समादधाना विबभौ गृहाश्रमे' (वीरो० ५/४०) 'ध्यानसिद्धिर्गृहाश्रमे' (सम्य० ११६)

गृहिन् (वि०) गृहस्थ, गृहस्थाश्रम, 'स्यात् पर्वव्रतधारणा गृहिणां' (दयो० ७६) गेहमेकमिह भुक्तिभाजनं पुत्र तत्र धनमेव साधनम्। तच्च विश्वजन सौहृदाद् गृहीति त्रिवर्गपरिणामसंग्रही (जयो० २/२१) गृही, कामश्च धनं च धर्मश्च तेषां कर्मणि तेषु सम्प्रति मिथः। यस्माद् गृहिणोऽखिला अञ्चलाः कर्दमे पङ्के सन्ति। (जयो० वृ० २/१९)

गृहीजनः (पुं०) गृहस्था। (सम्य० १/३४)

गृहिणी (स्त्री०) [गृह+इनि+ङीप] गृह स्वामिनी, पत्नी, भार्या, गृहलक्ष्मी। (जयो० वृ० १२/९१) गेहिनीतिज्ञ। गृहिणी कौलीन्यादिगुणालंकृता पत्नी।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गृहिता (वि०) गृहस्थपना। कौमारमेके गृहितां च केऽपि नराश्च दारा अनुयान्ति तेऽपि। (सम्य० वृ० २१)

गृहिधर्मन् (नपुं०) गृहस्थधर्म। कृत्यं करोतीति कृत्यकृत्, कर्त्तव्याचरणशीलो गृही, तस्य धर्मः गृहिधर्मः। (जयो० वृ० २/७२)

दानमान-विनयैर्यथोचित्, तोषयन्निह सधर्मिसंहितम्।
कृत्यकृद्गिमतिनोऽनुकूलयन् संलभेत् गृहिधर्मतो जयम्।।
(जयो० २/७२)

गृहीत (भू०क०कृ०) [ग्रह्+क्त] पकडा हुआ, प्राप्त, दृष्टिपथगत, अधिगत। 'गृहीतमेतन्नभसा गभस्ति' (जयो० १/३३) 'करद्वय्या प्रापितौ चक्रकम्बुकौ येन स गृहीत सुदर्शन पाञ्चजन्य इति। (जयो० २४/५)

गृहीतदास (वि०) दासता को प्राप्त। (सम्य० ७०)

गृहीतमिथ्यात्व (त्रि०) तत्त्वार्थ गृहीत में अश्रद्धान्।

गृहीतमिथ्यादर्शनं (नपुं०) दूसरों के उपदेश से तत्त्वार्थ का अश्रद्धान। (सम्य० १३)

गृहीतसम्यग्दर्शनं (नपुं०) तत्त्वार्थ के प्रति श्रद्धान।

गृहीताङ्गी (स्त्री०) १. गौरी, गिरिजा, पार्वती। २. गौरवर्मा। ३. अर्धाङ्गिनी। 'गृहीतमङ्गं यस्या सा गौरी, गौरवर्णा, गिरिजा वा।' (जयो० वृ० १५/९२)

गृहीतुं (हे०कृ०) ग्रहण करने के लिए। स्वरं सुखायेन पतिं गृहीतुमभिप्रवृता सुरसुन्दरी तु।। (सम्य० ६७)

गृहीशिन् (वि०) गृहस्थ।

गृहीशितुः-गृहस्थस्य। 'सङ्ग्रहणता गृहीशिनः' (जयो० २/१०७)

गृहोद्यानं (नपुं०) उपसाद्र, उपवन। (वीरो० वृ० ५/३७)

गृह्य (वि०) [ग्रह्+क्यप्] परतन्त्र, पालतू।

गेंडुकः (पुं०) [गच्छतीति गः इन्दुरिव, गेन्दु+कन्-गेंडुक] गेंद।

गेन्दुकः (पुं०) कन्दुक, गेंद (दयो० ८) (जयो० २५/१०)

गेन्दुकक्रीडा (स्त्री०) गेंद का खेल। प्रस्थितः तन् वर्त्मनि 'गेन्दुकक्रीडानुरक्तं महाबलमवलोकयामास' (दयो० ८३)

गेन्दुकवत् (त्रि०) गेंद की तरह। 'शुभाशुभ-कर्म-काण्डप्रेरित-स्यास्य-जन्तोरेतस्यां संसृतिरङ्गभूमौ गेन्दुकवदुत्पतन-निपतने भवत एव। (दयो० वृ० ८)

गेन्दुकेलि (पुं०) कन्दुकक्रीडा। श्री गेन्दुकेलौ विभवन्ति तासो नितम्बिनीनां पदयोर्विलासा। (वीरो० ९/३८)

गेय (वि०) [गै+यत्] गायक, गाने वाला।

गेयं (नपुं०) गान, गीत, लय।

गेष् (सक०) खोजना, ढूंढना, अन्वेषण करना।

गेहं (नपुं०) आवास, निवास, घर, स्थान, आश्रमस्थल, विश्राम स्थान, कुटीर। 'ममात्मगेहमेतत्ते पवित्रैः पादपांशुभिः। (जयो० १/१०४) ग्रन्थारम्भमये गेहे कं लोकं हे महेङ्गित। शान्तिर्याति तथाप्येन विवेकस्य कलाऽततिः।। (जयो० १/११०) गेहमेकमिह भुक्तिभाजनं पुत्र तत्र धनमेव साधनम्। तच्च विश्वजनसौहृदाद् गृहीति त्रिवर्गपरिणामसंग्रही।। (जयो० २/२१) स्थान-विनाशिदेहं मलमूत्रगेहं वदामि नात्मानमतो मुदेऽहम्।। (सुद० १२१)

गेहकीरः (पुं०) गृहशुक। जम्पत्योर्यन्निशि निगदतोश्चाशृणोद् गेहकीरः। (जयो० १८/१०१)

गेहभृत् (पुं०) गृहस्थ। 'भोगेषु भो गेह भृदस्ति' (जयो० २७/१०)

गेहिन् (वि०) गृहस्थ। (जयो० २/१) 'संहितार्थमनुवच्मि गेहिनाम्' (जयो० २/१) गेहिनो हि सतृणाशिनो नराः। (जयो० २/२०) गेहिनो गृहस्था जना स्वहितार्थमेव धर्माचरणे सङ्घटिता भवन्ति' (जयो० वृ० २/२०) 'सन्ति गेहिषु च सज्जना अहा।' (जयो० २/१२) २. **गृहस्थाश्रम**। (जयो० वृ० २/११७)

गेहिधर्मः (पुं०) गृहस्थ कर्त्तव्य। श्रीजिनं तु मनसा सदोन्नयेत्तं च पर्वणि विशेषतोऽर्चयेत्। गेहिने हि जगतोऽनपायिनी भक्तिरेव खलु मुक्तिदायिनी।।

गेहिनीति (वि०) गृहिणी। (सुद० १०८) (जयो० २/३८)

गेहिभिन्नसंस्कृतिः (स्त्री०) गृहस्थ से पृथक् संस्कार, साधु चर्या। (मुनि० ३१) यस्मात् गेहिभिन्नसंस्कृतिविधौ नाना त्रुटि र्ह्रीमृषिः' (मुनि० ३१)

गेहिसदनं (नपुं०) गृहस्थ घर, नो गच्छदेतिभूमिगेहिसदनं निष्टोऽप्यनाकाङ्क्षितः' निर्गत्यान्यगृहं व्रजेदपि पुनः श्री भ्रामरी मानितः।। (मुनि० १०, २८)

गेहिसानि (नपुं०) गृहस्थमार्ग। 'विशदानि पदानि गेहिसानौ परमस्थानसमर्हणानिवानौ' (जयो० १२/७३)

गै (सक०) गाना, पाठ करना, उच्चारण करना, वर्णन करना, स्तुति करना, गुणगान करना।

गैर (वि०) [गिरि+अण्] पहाड़ से आया, पर्वत पर उत्पन्न। पर्वतागत।

गैरिकः (पुं०) १. गैरुक, रक्तरेणु। (जयो० १५) २. पर्वत पर ०उत्पक।

गैरिका (स्त्री०) रक्तमृत्तिका। (जयो० २४/४१)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गैरिकाली (स्त्री०) गेरुकी धूली। गैरिकम्याली परम्परा सैवेय रक्तप्रभा' (जयो० १८/६३)

गैरेयं (नपुं०) [गिरि+ढक्] शिलाजीत।

गो (पुं०/स्त्री०) १. गाय, २. गौ का उपकरण, ३. आकाश, ४. तारा, ५. किरण, ६. वज्र, ७. बाण, ८. सरस्वती वाणी। जल- (जयो० १४/७९)

गोकण्टकः (पुं०) गाय का खुर।

गोकर्णः (पुं०) गाय का कान।

गोकिराटिका (स्त्री०) मैना।

गोकीलः (पुं०) हल, मूसल।

गोकुलं (नपुं०) व्रजभूमि, गायों के परिभ्रमण का स्थान, चरागाह। (जयो० वृ० १०/१५) गौशाल, गोकुल नाम विशेष।

गोकुलपतिः (पुं०) गोविंद। (जयो० ५३) * कृष्ण।

गोकुल स्थानं (नपुं०) ०सुरभिस्थान ०गौशाला (जयो० १०/१५)

गोकूलिक (वि०) गाय का सहायक।

गोकृत (नपुं०) गाय का गोबर।

गोक्षीरं (नपुं०) गाय का दूध।

गोगृष्टिः (स्त्री०) तत्काल प्रसूत गाय।

गोगोष्ठं (नपुं०) गौशाला, पशुशाला।

गोग्रन्थिः (स्त्री०) सूखा गोबर।

गोग्रहः (पुं०) पशुग्रहण।

गोग्रासः (पुं०) गाय के लिए ग्रास।

गोघृतं (नपुं०) गाय का घी। (जयो० १६/६७)

गोचन्दनं (नपुं०) गोसीर चन्दन।

गोचर (वि०) १. चारागाह, २. दृष्टिगत, स्पष्ट। 'बभूव चित्रोल्लिखितेव गोचरा' (जयो० २३/३३) ३. पञ्चाङ्ग, दृष्टि, ज्योतिष सम्बन्धी विचार। (सुद० १/२१)

गोचरचारि (वि०) विषयभूत का आचरण करने वाला, विषयभूत होने वाला पद। 'न वेदनाऽङ्गस्य चेसनस्तु नासामहो गोचरचारि वस्तु। (वीरो० १२/३६)

गोचरभूमिः (स्त्री०) चारागाह स्थान। (सुद० १/२१) ०व्रजस्थल।

गोचरराशिः (स्त्री०) ग्रह गोचर युक्त राशि।

गोचर-वनं (नपुं०) चारागाह का स्थान। (दयो० ५३)

गोचराधारः (पुं०) १. गोचर भूमि का आश्रय। (दयो० ४) (सुद० १/२१) २. गोचर ग्रह का विषय।

गोचरी (स्त्री०) साधुवृत्ति, साधु की आहार चर्या। * दृष्टिगोचर करना।

गोचरीकृतभक्षणं (नपुं०) भोजन की स्वीकृति गोचरीकृत्या कृतं भक्षणं भोजन-स्वीकारो येन स गोचरीकृतः स्पष्टतां नीतो नाना तारकाणां क्षणः समयो' (जयो० २८/१६)

गोचारकः (पुं०) ग्वाला, बरेदी, चरवाहा, गाय चराने वाला। (जयो० वृ० २५/५१)

गोचरोच्चारणं (नपुं०) स्पष्ट सम्भाषण, उच्चारण रूप कारण। 'सुदधिपवदनेन्दोर्गोचरोच्चारणेन' (जयो० २०/३१)

गोजलं (नपुं०) गोमूत्र।

गोजागरिकं (नपुं०) मांगलिक आनन्द।

गोतम (वि०) मंगल गीतादि के शब्द वाले। (जयो० २०/२५)

गोतल्लजः (पुं०) सांड, बलिवर्द।

गोतीर्थ (नपुं०) १. गौशाला। २. गायादि के पानी पीने का स्थान, प्रवेशमार्ग।

गोत्व (वि०) गौ संज्ञा गत। (हित० संपाद० १४)

गोत्रं (नपुं०) सन्तान, क्रमागत परिवर्तन, गोत्रकर्म, परिवर्तन क्रम, उच्चनीच कर्म। (हित० श्लोक० ८१) एकस्मिन्नपि जनुषि गोत्रस्य परिवर्तनम्। (हित० ८१) 'गां वाचं त्रायत इति गोत्रम्' 'गूयते शब्द्यते तदिति गोत्रम' गोत्रं तु यथार्थकुलं वा।

गोत्रभित् (वि०) गोत्र को मलिन करने वाला, वंशभेदकर। (जयो० १/४१)

गोत्रि (वि०) गोत्र वाले। (जयो० १२/११२)

गोत्रिगुणं (नपुं०) गोत्री गुण, कुलगुण। 'अपि गोत्रिगुणाश्च गोपधाम्नीति' (जयो० १२/११२) 'गोत्रिषु कुलीनेषु सिद्धा ये गुणाः' (जयो० वृ० १२/११२)

गोत्रोच्चारणं (नपुं०) गोत्रोत्पन्न, कुलगत वचन। (जयो० वृ० १२/२८)

गोदन्तं (पुं०) हरताल, एक भस्म, आयुर्वेदभस्म।

गोदानं (नपुं०) संस्कार दान।

गोदारणं (नपुं०) हल, फावड़ा, खुर्पा।

गोदावरी (स्त्री०) नदी विशेष।

गोदुह् (पुं०) ग्वाला, गोपाल।

गोदोहः (पुं०) गाय का दूध, दुहने का समय।

गोदोहनं (नपुं०) गाय दुहना। गोदोहनाम्भोभरणादिकार्यंकरं पुनुर्गोपवरं स आर्यः। (सुद० ४/२२)

गोदोहनकालः (पुं०) गाय दुहने का समय। गोदोहनकाल का एक अर्थ पयोधरालिङ्गन भी है। (जयो० वृ० १७/५७)

गोद्रवः (पुं०) गोमूत्र।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गोधनं (पुं०) पर्वत।

गोधिः (पुं) घड़ियाल।

गोधिका (स्त्री०) छिपकली।

गोधूमः (पुं०) १. गेहूं, २. संतरा।

गोधूलि (स्त्री०) सन्ध्या समय।

गोधेनु (स्त्री०) दूध देने वाली गाय।

गोध्रः (पुं०) पर्वत, गिरि।

गोनन्दी (स्त्री०) सारस पक्षी। (मादा)

गोनसः (पुं०) सर्प विशेष।

गोनाथः (पुं०) १. सांड, बलिवर्द, २. ग्वाला, गोपाल।

गोनिवहः (पुं०) गो समूह। (समु० १/१९) अस्मत्क्रमो गोनिवहार्जनाय, भवेत् परः पातृमिनाभ्युपायः। (समु० १/१९)

गोपः (पुं०) १. गोप, गोपाल। (दयो० ५५) २. गुप्त, रक्षक। ३. प्रभा, कान्ति, दीप्ति।

गोपतिः (पुं०) १. गोपाल, ग्वाला। बैल हांकने वाला। २. सूर्य। 'गवां किरणानां पशूनां वा पतिरेव सूर्यः' (जयो० वृ० ८/७) चक्रवर्ती-मृदुलदुग्धकलाक्षरिणी स्वतः, किमिति गोपतिगौरुदिता यतः। (जयो० ९/७१) गोपतेश्चक्रवर्तिनो गौरेव गौर्वाणीरूपाः धेनु,' (जयो० वृ० ९/७१)

गोपतुजः (पुं०) ग्वाले का लड़का। (सुद० ४/१९) आकर्णलाब्जं च सहस्रपत्रं तेनैकदा गोपतुजैकमत्र। (सुद० १/१९)

गोपनिलयः (नपुं०) आभीर गृह, अहीरों का घर। 'गोपानां निलयान् गृहान्' (जयो० वृ० २१/५०)

गोपपतिः (पुं०) ग्वाला, धेनुरक्षक। 'गोपपतिर्नृपवरो जयकुमारः। (जयो० ३/१०७)

गोपपशुः (पुं०) यज्ञीय गाय।

गोपधामः (पुं०) गोपालक गृह। (जयो० १२/११)

गोपवधूः (स्त्री०) ग्वालिन।

गोपबलकः (पुं०) ग्वालों के लड़के।

गोपयोषितं (नपुं०) गोपांगनाओं के मुख। गोपयोषितां गोपीनां वदनं मुखं तत्खलु प्रस्फुटाः' (जयो० २१/५४)

गोपवरः (वि०) गोपों में श्रेष्ठ। 'करं पुनर्गोपवरं स आर्यः' (सुद० ४/२२)

गोपाङ्क्तित् (वि०) वाक्य परम्परा। (वीरो० ११/१)

गोपायनं (नपुं०) [गुप्+आय्+क्त] प्ररक्षित, सुरक्षित।

गोपाल (पुं०) ग्वाला। (दयो० ५३)

गोपालक (वि०) गायों का पालन करने वाला। (जयो० १२/११२) गवीश्वर-जयो० वृ० २५/६३)

गोपालकगृहं (नपुं०) गोपधाम।

गोपालपतिः (पुं०) ग्वाला। (दयो० ६१)

गोपालिका (स्त्री०) गोपी, ग्वालिन, गायों को पालने वाली, गोपी।

गोपिका (स्त्री०) ग्वालिन। (दयो० ६५)

गोपीतः (पुं०) खंजन पक्षी।

गोपुच्छं (नपुं०) गाय की पूंछ।

गोपुटिकं (नपुं०) नन्दी मस्तक।

गोपुत्रः (पुं०) वत्स, बछड़ा।

गोपुरं (नपुं०) ०नगर प्रवेश द्वार, ०मुख्य द्वार, पुरद्वार'। (जयो० ३/१०७) धैनुक। (जयो० ३/१०७)

गोपुर-मण्डलं (नपुं०) पुरद्वाराग्रभाग, नगर प्रवेश द्वार का मुख्य हिस्सा।

गोपुरीषं (नपुं०) गोबर।

गोप्रकाण्डं (नपुं०) सांड, बलिवर्द।

गोप्रचारः (पुं०) गोचरभूमि, चरगाहा क्षेत्र।

गोप्रवेशः (पुं०) गोधूलि बेला। गायों के लौटने का समय।

गोप्तृ (स्त्री०) [गुप्+तृच्] संरक्षक।

गोप्तरि (वि०) संरक्षक, प्रतिपालक। निःसाधनस्य चार्हति गोप्तरि सत्यं निर्व्यसना भूस्ते। (जयो० ८/९३)

गोबरः (पुं०) गौतम गणधर का स्थान। (वीरो० १४/४)

गोभृत् (पुं०) पर्वत, गिरि।

गोभक्षिका (स्त्री०) गोबर मक्खी।

गोमंडलं (नपुं०) गो समूह, व्रज मंडल। (वीरो० १९/५९)

गोमतल्लिका (स्त्री०) उत्तम गाय, सीधी गाय।

गोमथः (पुं०) ग्वाला।

गोमयः (पुं०) गोबर, गोपुरीष। (जयो० १७/५७) गोमयेन खलु वेदिलिम्पन प्रायकर्म लभतामितो जनः। (जयो० २/७८)

गोमयोपित (वि०) गोबर से लिपि हुई। गोमयेन धेनुशकृतोपहित-माच्छादितमास्यं मुखं यस्याः सा पक्षे गौश्चन्द्रमास्तस्य मया लक्ष्म्या, उपहितमास्यं यस्या सा। (जयो० वृ० १०/७३)

गोमांस (नपुं०) गाय का मांस। (वीरो० १५/५७)

गोमायुः (पुं०) गीदड़, मेंढक। (दयो० ९६)

गोमुखं (नपुं०) वाद्य यन्त्र।

गोमूत्रं (नपुं०) गाय का मूत्र।

गोमूत्रिका (स्त्री०) छन्द विशेष। रमयन् गमयत्वंप वाङ्मये समयं मनः। न मनागनयं द्वेषधाम वा सभयं जनः। (वीरो०

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

२२/३७) यह अनुष्टुप छन्द ही है, जिसमें आठ, आठ अक्षर हैं।

गोमृगः (पुं०) गो सदृश गवय।

गोमेदः (पुं०) गोमेद नामक रत्न।

गोयानं (नपुं०) बैलगाड़ी।

गोरक्षः (पुं०) गोपाल, ग्वाला।

गोरक्षणं (नपुं०) गउ संरक्षण।

गोरक्षणप्रणालि (स्त्री०) गोरक्षा पद्धति। (जयो० वृ० १८/८३)

गोरसः (पुं०) दहि, दूध, छांछ।

गोरस-सारिका (स्त्री०) वचन सम्बन्धी आनंद। 'ते किमु न पश्यसि गोरस-सारिके।' (जयो० २४/१३७)

गोराजः (पुं०) सांड, बलिवर्द।

गोराटिका (स्त्री०) मैना पक्षी।

गोरोपकारणं (नपुं०) गाय रोग निवारण। (जयो० १९/७९)

गोरोचना (स्त्री०) एक सुगन्धित पदार्थ।

गोर्गम् (नपुं०) [गुर्+ददन्] मस्तिष्क, दिमाग।

गोलः (पुं०) १. पिण्ड, समूह, भूगोल, लोक, अन्तरिक्ष। २. वर्तुलाकार।

गोलकः (पुं०) १. अमृत। अमृते जारजः कुण्डोऽमृते भतरि गोलक इत्यमरः। (जयो० वृ० १८/७५)
२. पिण्ड, भूगोल, ३. जारज पुत्र, विधवा पुत्र। लड्डू (जयो० वृ० १२/१३३)

गोलकावली (स्त्री०) भोले। १. लड्डू गोलकानां लड्डुकानां, करकोपलनामावलिः परम्परा। (जयो० वृ० १२/१३३)

गोलविशेषणं (नपुं०) तिलक, वर्तुलाकार तिलक। (जयो० वृ० १०/३१)

गोलवणं (नपुं०) गाय का नमक।

गोलांगुलः (पुं०) लंगूल, बन्दर।

गोलोभी (वि०) वेश्या।

गोवत्सः (पुं०) गाय का बछड़ा।

गोवर्धनः (पुं०) गोवर्धन गिरि वृन्दावन के निकट का पर्वत।

गोवाटं (नपुं०) गौशाला।

गोवासः (पुं०) गौशाला।

गोविदः (पुं०) गोपालक।

गोविंदः (पुं०) १. पुरुषोत्तम, विष्णु। पुरुषोत्तमस्य गोविंदस्य वाहनं गरुडं' (जयो० वृ० ६/७९) २. गोविन्द, गोपालक प्रधान। (दयो० ५३) गोविंदो नाम गोपालो गोकुलपतिर्मेदिनीमंडलस्य दशः। (दयो० वृ० ५३)

गोष्ठ् (अक०) इकट्ठा होना, सम्मिलित होना, ढेर लगाना।

गोष्ठः (पुं०) व्रज, गौशाला, ग्वालों का स्थान।

गोष्ठि (स्त्री०) [गोष्ठ्+इन] सभा, सम्मेलन, सामूहिक विचार का स्थान, संलाप, प्रवचन, विचार-विनिमय।

गोष्पद् दृष्टिगोचर होना, गोखुर समात दिखना। यज्ज्ञानान्तर्गत भूत्वा त्रैलोक्यं गोष्पदायते। (दयो० १/३)

गोष्पदं (नपुं०) गाय का पैर, गाय के खुर के समान चिह्न।

गोसकृत् (पुं०) गोबर, गोमय। (जयो० १५/३०)

गोस्तनी (स्त्री०) द्राक्षा, दाख। रसने समास्वादने द्राक्षेव यथा गोस्तनी तथा मृद्वी' (वीरो० १/१)

गोह्य (वि०) गोपनीय, गुप्त, प्रच्छन्न।

गौञ्जिकः (पुं०) [गुञ्जा+ठक्] सुनार। स्वर्णकार।

गौ (स्त्री०) १. रश्मि, हेतु, २. वाणी। (जयो० २०/२६), (वीरो० १/३१)

गौडः (पुं०) देश विशेष।

गौडिकः (पुं०) [गुड+ठक्] ईख, गन्ना।

गौणः (पुं०) अनावश्यक, अप्रधान। वस्तु विवेचन के मुख्य और गौण दो पक्ष होते हैं। द्रव्य की कुछ पर्यायों का ग्रहण।

गौणत्व (वि०) गौणता युक्त। ब्राह्मणत्वमपि गौडत्वाद्यपेक्षया सामान्यं। (जयो० वृ० २६/९१)

गौण्यं (नपुं०) [गुण+ष्यञ्] गुणानां भावो गौण्यम्। अनावश्यक, अप्रधान। गुणेण णिप्पण्णं गोण्णं, गुण के आश्रय से निष्पन्न।

गौतमः (पुं०) गणधर, गौतमऋषि। (वीरो० १/७) वर्धमानादनभ्राज एवं गौतमचातकः। लेभे सूक्तामृतं नाम्ना साऽऽषाढी गुरुपूर्णिमा। (वीरो० १३/३८) आषाढी पूर्णिमा के दिन गौतम ने वर्धमान के/महावीर के दिव्य संदेश को प्राप्त किया था। * गौतम बुद्ध।

गौतमकेकि (पुं०) गौतम रूपी मयूर। (वीरो० १२/३९) वीरवलाहकतोऽभ्युदियाय गौतमकेलिकृतार्थनया यः। अनुभुवनं स वारिसमुदायः श्रावणादिमदिने निरपायः।। (वीरो० १३/३९)

गौतमचातकः (पुं०) गौतम रूपी चातक। (वीरो० १३/३८)

गौतमस्वामी (पुं०) गणराजदेव। (वीरो० १/७)

गौतमी (स्त्री०) १. द्रोण भार्या, २. गोदावरी नदी। ३. हल्दी, ४. गोरोचन।

गौधूमीनम् (नपुं०) [गोधूम+खञ्] गेहूं का क्षेत्र।

गौनर्दः (पुं०) पतञ्जलि ऋषि। महाभाष्यकार।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गौपिका (स्त्री०) गोपी, ग्वालिन।

गौप्तेयः (पुं०) वैश्य पुत्र।

गौर (वि०) शुभ्र, धवल, श्वेत। उज्जवल (जयो० १/१०)

गौरा (स्त्री०) श्वेत, धवल।

गौरपरिणामा (स्त्री०) गौरी। (जयो० वृ० २२/६७)

गौरवं (नपुं०) महत्त्व, श्रेष्ठ, उत्तम, आदर, सम्मान। प्रभुत्व (जयो० १/३८) गुणावबोधप्रभव हि गौरवम् 'गौरवमेतिरात्रिः' (वीरो० ९/३२)

गौरवकारि (वि०) महत्त्वपूर्ण। (वीरो० ४/५९)

गौरवप्रकाशकः (वि०) महत्त्व उद्घाटन करने वाला। (जयो० २/७१)

गौरवरूपता (वि०) गुरुत्व, भारीपन, अत्यधिक। (जयो० वृ० २०/७१)

गौरववन्दक (वि०) महत्त्व को देने वाली वन्दना। आत्म महत्त्वशाली वन्दना।

गौरवाढ्य (वि०) १. गौरव करता हुआ। २. गौ-रवाढ्य-आवाज करता हुआ सांड। गौरवेण महत्तयाढ्यो युक्तस्ततोरवाढ्यो नादयुक्तोऽर्को गौर्वृषभ इव सन् भवन्' (जयो० वृ० ७/११२) 'मदान्धो गौरवाढ्यः सन्नर्कस्तस्थौ ततोऽमुतः'

गौरविणिः (वि०) गौरवशालिनी। (जयो० २८/५८)

गौराङ्गः (पुं०) अंग्रेज। सितरुचो गौराङ्गाः 'अंग्रेज' इति नाम्ना प्रसिद्धास्तेषां समाजः समूह इतो भारतदेशान्निर्याति निर्गच्छति स्वदेश गच्छति। (जयो० वृ० १८/८१)

गौरिका (स्त्री०) कुमारी कन्या।

गौरिलः (पुं०) [गौर+इलच्] सफेद सरसों।

गौरी (स्त्री०) [गौर+ङीष्] १. गौरी, गौरवर्णा गिरिजा वा। (जयो० १५/९२) २. पार्वती, शिवप्रिया। (जयो० १६/१४) ३. गौरीनामप्सराश्च (जयो० २२/६७) ४. बालस्वभावा (जयो० वृ० १२/३)

गौरीकृत (वि०) १. शुक्लकृत, २. पार्वतीपने को प्राप्त। गौरीति वा कृतं पार्वतीस्वरूपतः (जयो० १/१५)

गौरीकान्तः (पुं०) शिव, गिरीराज।

गोरीगुरुः (पुं०) हिमालय पर्वत।

गौरीपट्टः (पुं०) श्वेत पट।

गौरीपुत्रः (पुं०) कार्तिकेय।

गौरीललितं (नपुं०) हरताल।

गौरीदृशी (वि०) पार्वती तुल्य। (जयो० ११/८२)

गौलक्षणिकः (पुं०) शुभ लक्षण।

गौल्मिकः (पुं०) सेना की टुकड़ी।

गौशतिक (वि०) सौ गोत्रों का स्वामी।

ग्रन्थ् (अक०) टेढ़ा होना, झुकना।

ग्रन्थः (पुं०) [ग्रन्थ्+ल्युट्] १. गांठ, गुच्छा, झुण्ड, लच्छा। २. ग्रथित करना, गूथना। ग्रथ्यतेऽनेनास्मादस्मिन्निति वाऽर्थ इति ग्रन्थः' 'विप्रकीर्णार्थग्रथनाद् ग्रन्थः' **आदूरियाणमुवएसो** गंथो' १. बांधना, गूंथना, रचना, बनाना, प्रबन्ध, काव्य (जयो० १/४)

ग्रन्थकर्तृ (वि०) रचनाकार, प्रबंधकार, काव्य प्रणेता। (जयो० ७/२३)

ग्रन्थकर्ता (वि०) काव्यकार, रचनाकार, काव्य प्रस्तोता। ग्रन्थकर्ताऽऽचार्यस्तेन कृतः सन्निवेशो रचना। (जयो० वृ० १/१७)

ग्रन्थकर्तृरुद्देश्यभावः (पुं०) अनुयोग भाव।

ग्रन्थकारः (पुं०) रचनाकार, लेखक।

ग्रन्थकृत् (पुं०) रचनाकार।

ग्रन्थकृति (स्त्री०) अक्षरात्मक काव्यकृति, ग्रन्थरचना।

ग्रन्थकुटी (स्त्री०) पुस्तकालय।

ग्रन्थविस्तरः (पुं०) विस्तारशैली भाष्य पद्धति।

ग्रन्थसन्धिः (स्त्री०) पुस्तक अंश, रचना अध्याय।

ग्रन्थारम्भः (पुं०) परिग्रह व्यापार, संचय प्रवृत्ति की क्रिया। ग्रन्थारम्भमये गेहे कं लोकं हे महेङ्गित। (जयो० १/११०)

ग्रन्थिः (स्त्री०) १. पर्व, सन्धि, पोर। 'पर्वेति अवयवसन्धिर्ग्रन्थिर्वा' (जयो० वृ० ३/४०) २. गांठ, गुच्छा, समूह। ३. राग-द्वेष परिणाम।

ग्रन्थिकः (पुं०) दैवज्ञ, ज्योतिषी।

ग्रन्थित (वि०) सन्धियुक्त।

ग्रन्थिन् (पुं०) ग्रन्थ पढ़ने वाला ज्ञानी, पण्डित।

ग्रन्थिमा (वि०) ग्रथन किया हुआ, गूथा गया।

ग्रन्थिल (वि०) जटिल, कठोर, गांठ युक्त।

ग्रस् (अक०) निगलना, ग्रहण करना, भक्षण करना।

ग्रसनं (नपुं०) निगलना, भक्षण करना, गले उतारना।

ग्रस्त (भू०क०कृ०) निगला हुआ, लेना, समेटना, थमना, स्वीकार करना, धारण करना।

ग्रहः (पुं०) पकड़ना, ग्रहण करना।

ग्रहकल्लोलः (पुं०) राहु।

ग्रहपतिः (स्त्री०) ग्रहों की अवस्था।

ग्रहचिन्तकः (पुं०) ज्योतिषी, दैवज्ञ, नैमित्तक।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ग्रहणं (नपुं०) अर्थ ग्रहण, स्वीकार, अधिकृत। 'ग्रहणं सद्गुरुपदिष्टार्थविज्ञानम्' (भ०आ० ६३९)

ग्रहदशा (स्त्री०) ग्रहों की स्थिति।

ग्रहदेवता (पुं०) इष्ट देवता।

ग्रहनायकः (पुं०) सूर्य, चन्द्र।

ग्रहनेमि (स्त्री०) चन्द्रमा।

ग्रहपतिः (पुं०) सूर्य, चन्द्र।

ग्रहपीडनं (नपुं०) ग्रह जनित पीड़ा।

ग्रहमण्डलं (नपुं०) ग्रहों का वृत्त।

ग्रहयुति (स्त्री०) ग्रहों का संयोग।

ग्रहराजः (पुं०) सूर्य।

ग्रहवर्षः (पुं०) ग्रहों की स्थिति।

ग्रहविप्रः (पुं०) ज्योतिषी।

ग्रहशान्तिः (स्त्री०) ग्रहों का उपचार।

ग्रहसमं (नपुं०) समान स्वर का ग्रहण।

ग्रहिल (वि०) [ग्रह्+इलच्] स्वीकारने वाला, लेने वाला।

ग्रामः (पुं०) [ग्रस्+मन्] गांव, पुरवा, (सुद० १/२०) 'ग्रसति बुद्ध्यादीन् गुणान् इति ग्रामः' (जयो० ३/३३) 'ग्रामो जनपदाश्रितः सन्निवेशविशेषः' अनेककल्पद्रुमसन्निधाना ग्रामा लसन्ति त्रिदिवोपमाना' (वीरो० २/२०)

ग्रामकण्टकः (पुं०) पालतू मुर्गा।

ग्रामकुमारः (पुं०) ग्राम बालक।

ग्रामकूटः (पुं०) ग्राम प्रमुख।

ग्राम गोदुहः (पुं०) ग्राम का ग्वाला।

ग्रामघातः (पुं०) ग्राम का लूटना।

ग्रामघोषिन् (पुं०) इन्द्र।

ग्रामचर्या (स्त्री०) स्त्री संभोग।

ग्रामचैत्यः (पुं०) गूलर तरु।

ग्रामजालं (नपुं०) ग्राम समूह, ग्राममण्डल।

ग्रामणी (पुं०) मुखिया, प्रधान। १. विषयासक्त व्यक्ति, २. नापित।

ग्रामतक्षः (पुं०) बढ़ई, विश्वकर्मा।

ग्रामदेवता (पुं०) ग्राम का अभिरक्षक देव।

ग्रामधर्मः (पुं०) स्त्री संभोग।

ग्रामनिवासिन् (वि०) ग्राम निवासी। (दयो० ५)

ग्रामप्रेष्यः (पुं०) दूत, सेवक।

ग्राममुखः (पुं०) मण्डी, बाजार।

ग्राममृगः (पुं०) कुत्ता।

ग्रामयजकः (पुं०) पुरोहित।

ग्रामयाजिन् (पुं०) पुरोहित।

ग्रामलुण्डनं (नपुं०) गांव लूटना।

ग्रामवासः (पुं०) ग्राम निवास, ग्रामस्थान।

ग्रामषण्डः (पुं०) क्लीब, नपुंसक।

ग्रामसंघः (पुं०) ग्रामसिंहः ग्राम निगम, पंचायत।

ग्रामस्थ (वि०) ग्रामणी, गांव वाला।

ग्रामहासकः (पुं०) जीजा, बहनोई।

ग्रामिक (वि०) [ग्राम+ठञ्] गंवार, अक्कड़।

ग्रामिकः (पुं०) मुखिया, प्रधान, प्रमुख व्यक्ति।

ग्रामीणः (पुं०) [ग्राम+खञ्] ग्रामवासी।

ग्रामेय (वि०) गांव में उत्पन्न।

ग्राम्य (वि०) [ग्राम+यत्] १. गंवार, देहाती, ग्राम का निवासी। २. घरेलू, पालतू। ३. अभद्र।

ग्राम्यः (पुं०) सूकर।

ग्राम्यकर्मन् (नपुं०) ग्राम व्यवसाय।

ग्राम्यधर्मः (पुं०) ग्राम कर्त्तव्य।

ग्रामबुद्धिः (स्त्री०) जड़ बुद्धि, अनाड़ी।

ग्रासः (पुं०) [ग्रस्+घञ्] कौर, कवल। १. भोजन, २. पोषण, ३. ग्रस्त, ग्रहण युक्त, आच्छादित चन्द्र सूर्य।

ग्रासभक्षक (वि०) कवलोपसंहारक। (जयो० वृ० ७/२१)

ग्रासशल्यं (नपुं०) कांटा, मछली का कांटा।

ग्रासीकृत् (वि०) कवलित। (जयो० वृ० २५/६८)

ग्राह (वि०) पकड़ने वाला, थामने वाला।

ग्राहः (पुं०) १. पकड़ना, जकड़ना। २. घड़ियाल, मगरमच्छ।

ग्राहकः (पुं०) १. बाज, श्येन। २. विषचिकित्सक, ३. क्रेता, खरीददार, ४. पुलिस अधिकारी।

ग्रीवकः (पुं०) ग्रैवेयक पर्याय। (सम्य० ५/१६) सिंहचन्द्रमुनिराट् चरमेऽसग्रीवकेष्वजनिनाम सुरेशः। (सम्य० ५/१६)

ग्रीवा (स्त्री०) गर्दन।

ग्रीवाधोनयनं (नपुं०) कायोत्सर्ग में ग्रीवा नीचे करना।

ग्रीवोर्ध्वनयनं (नपुं०) कायोत्सर्ग में ग्रीवा ऊपर करना।

ग्रीष्म् (वि०) उष्ण, गरम।

ग्रैवेयकः (पुं०) ग्रैवेयक नाम देव, लोक रूप पुरुष के ग्रीवा स्थान पर अवस्थित विमानों के देव। (जयो० १७/३६) ग्रीवासु भवानि ग्रैवेयकाणि विमानानि, तत्साहचर्यादिन्द्रा अपि ग्रैवेयकाः। (त०वा० ४/१९) २. गले का अलंकरण, गले का हार।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ग्रैष्मक (वि०) [ग्रीष्म+वुञ्] गर्मी में बोया गया।

ग्मा (स्त्री०) भूमि, धरणी।

ग्लस् (सक०) खाना, निगलना।

ग्लपनं (नपुं०) [ग्लै+णिच्+ल्युट्] मुर्झाना, सूखना, थकना, क्लान्त होना।

ग्लपित (वि०) दुःखी, द्रवता प्राप्त बेहोश। (सुद० ८७) मुक्तात्मयत्वाच्च गभीरभावादे तस्य वार्धिर्ग्लपितः सदा वा। (वीरो० ३/२) 'ग्लपितो द्रवत्वमित एव तिष्ठति' (वीरो० ३/२) 'विलोक्यं लोकं ग्लपितं द्रुतान्त-स्तयाप्तपुण्यातिशयेन दान्तः। (भक्ति० २२)

ग्लह् (सक०) लेना, ग्रहण करना। प्राप्त करना, खेलना, पकड़ना।

ग्लहः (पुं०) [ग्लह+अप्] पासे से खेलना, दाव, बाजी लगाना।

ग्लान (भू०क०कृ०) [ग्लै+क्त] क्लान्त, श्रान्त, थका हुआ।

ग्लानिः (स्त्री०) [ग्लै+नि] घृणा, अवसाद, थकान, ह्रास, क्षय। (जयो० २/८२)

ग्लानिर्गत (वि०) घृणामवाप्त, घृणा को प्राप्त। (जयो० १४/९२)

ग्लानिमान (वि०) मलिनमुख। (जयो० ६/१७)

ग्लान्यभावः (पुं०) नैर्जुगुप्सा, घृणा का अभाव। (जयो० वृ० २/७६)

ग्लास्तु (वि०) [ग्लै+स्नु] क्लान्त, श्रान्त।

ग्लुच् (सक०) जाना, पहुंचना, चलना।

ग्लै (अक०) क्लान्त होना, थकना, मूर्च्छित होना।

ग्लौ (पुं०) [ग्लै+डौ] १. चन्द्र, २. कपूर।

घ

घः (पुं०) कवर्ग का चौथा व्यञ्जन, इसका उच्चारण स्थान कंठ या जिह्वामूल है। यह स्पर्श वर्ण है। घकार घ भाव। (जयो० वृ० १/४८)

घ (वि०) १. प्रहार करने वाला, नाशक, विध्वंसक, घातक। २. श्रम विशेष। 'घस्य शब्दस्य श्रमा' (जयो० वृ० २२/९१)

घट् (अक०) १. व्यस्त होना, प्रयत्न करना, प्रयास करना। उत्पन्न होना। उत्पन्न होना। (जयो० ६/७५) २. निष्पन्न होना, बनाना, निर्माण करना। ३. आरम्भ करना, शुरू करना।

घटः (पुं०) [अट्+अच्] घड़ा, पात्र, मर्तवान, कुम्भ। (जयो० १२/१२४)

घटक (वि०) [घट्+णि+ण्वुल्] सुसंवेदनदायक-आत्म स्वरूप का अनुभव करने वाला। (जयो० २८/५९) २. कुम्भक, कुम्भ वाला। (जयो० वृ० २८/५९) पूरणायेत्यथो वाञ्छन् घटकं प्राप्य चात्मनः। (जयो० २८/५९)

घटकल्पः (पुं०) घट युक्त, कुम्भसहित।

घटकल्पसुस्ततिः (वि०) घर के समान सुन्दर। कुम्भोपमकुचवति। (जयो० १२/१२४) 'घटकं घटकल्पसुस्तनीतः'

घटनं (नपुं०) [घट्+ल्युट्] प्रयास, प्रयत्न, घटित होना, मिलाना, एकत्रित करना, निष्पन्नता, प्रकाशन, कार्यान्विति।

घटना (स्त्री०) समस्या। (जयो० वृ० ११/२०, दयो. ४४) अघटितघटनां करोति कर्म प्राणिनां सदाऽऽपदं च शर्म।

घटा (स्त्री०) चेष्टा, प्रयत्न, प्रयास, बादलों का जमाव।

घटिकः (पुं०) [घट्+कन्] घट के सहारे पार होना।

घटिका (स्त्री०) [घटी+कन्+टाप्] छोटा घड़ा, करवा, मिट्टी का बर्तन। १. कालविशेष-द्वाविंशत्कलाभिर्घटिका' (जयो० २८/८०) २. घड़ी। घटिका घटिकार्थस्य समयः समयोऽसकौ। (जयो० २८/८०) ३. संगठनकर्त्री, सम्पन्न करने वाली। (जयो० २८/८०)

घटिकानन्तरः (पुं०) घड़ी के पश्चात्, चेष्टित्, (जयो० वृ० २७/३८)

घटिन् (पुं०) [घट्+इनि] कुम्भ राशि।

घटिन्धम (वि०) [घटी+ध्मा+खश्+मुम्] फूंक मारना।

घटिन्धय (वि०) [घटी+धेट+खश] घटभर पानी पीने वाला।

घटी (स्त्री०) मटकी, छोटा घड़ा। निधिघटीं धनहीनजनो यथाऽधिपतिरेष विषां स्वहशा तथा। (सुद० २/४९)

घटोत्कचः (पुं०) नाम विशेष, एक शक्तिशाली वीर।

घटोत्पादानुभागः (पुं०) घट के उत्पादन विषयक शक्ति।

घटोध्नी (वि०) घट सदृश स्तन वाली। 'घटवत् पृथुलाकारौ ऊधसौ स्तनौ यस्याः सा घटोध्नी' (जयो० २२/८९)

घटोपरोपिणी (वि०) कष्ट को उत्पन्न करने वाली। 'घटायाः कष्टपरम्परया उपरोपिणी प्रवर्तिनी' (जयो० वृ० २/१२६)

घट्ट (सक०) हिलाना, संचालन करना, स्पर्श करना, मलना, सहलाना।

घट्टः (पुं०) [घट्ट+घञ्] घाट, तट, किनारा।

घट्टनं (नपुं०) खण्डन, विनाश। तत्त्वोपदेशकृत्सार्वशास्त्र कापथघट्टनम्।' (सम्य० ८३)

घट्टना (स्त्री०) हिलाना, सहलाना, रगड़ना।

घडियालः (पुं०) जल जन्तु। (दयो० ४२)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

घण्टः (पुं०) [घण्ट्+अच्] एक व्यञ्जन, चटनी।

घण्टा (स्त्री०) १. घंटी, कांस पात्र का गोलाकार वादनक। 'घण्टा ननु कल्पवासिनाम्' (वीरो० ७/२) २. शिंशपावासी धीवर मृगसेन की भार्या। (दयो० १०)

घण्टाताड (वि०) घण्टा बजाने वाला। (दयो० १८)

घण्टाधीवरी (स्त्री०) घण्टा बजाने वाली धीवरी। (दयो० १२)

घण्टानादः (पुं०) घण्टे की ध्वनि।

घण्टापथः (पुं०) राजमार्ग, मुख्यपथ।

घण्टामुद्रा (स्त्री०) अंगुलियों की विशेष क्रिया।

घण्टाशब्दः (पुं०) घण्टा ध्वनि।

घण्टिका (स्त्री०) [घण्टा+ङीष्+कन्] घुंघरू, किंकिणी।

घण्टुः (स्त्री०) घुंघरू, हाथी की झालर पर झूमते हुए घुंघरू।

घण्डः (पुं०) [घण् इति शब्दं कुर्वन् डीयते-घण्+डी+ड] मधुमक्खी।

घन (वि०) १. सघन, पूर्ण, गठा हुआ, (सुद० ७८) २. बड़ा, महत्त्वपूर्ण, अभेद्य, प्रचण्ड, ३. शुभ, भाग्यशाली। बहुत (जयो० १२/१३३) निविड (जयो० २/८) *मेघात्मक (जयो० वृ० ८/८)

घन-शब्द विशेष- 'कांस्यतालदिजो घन:' **वाद्य विशेष**- 'संघनं घनमेतदास्वनत्' (जयो० वृ० १०/१६) वाद्य भेदाश्चत्वार इत्यमरकोशानुसारं तत्र घन-तुषार-तत-आनद्ध-रूपाणि' घनमेतन्नामकं वाद्यम्।' (जयो० वृ० १०/१६) २. नागमोथा, नागरमोथा एक औषधि विशेष। **यावद् घनं नेत्रवालं तावत् धान्याहिते रत:।** (जयो० २८/३०) **घन- मेघ, बादल।** घनो मेघोऽथ विस्तारे इति विश्वलोचन: (**जयो०** २४/२)

घनकफः (पुं०) ओले, हिमकण।

घनम् (नपुं०) लोहमुद्गर। (जयो० ७/८०)

घनकालः (पुं०) वर्षाकाल।

घनगर्जितं (नपुं०) मेघ ध्वनि।

घनगोलकः (पुं०) स्वर्ण, रजत मिश्रण।

घनघोरः (पुं०) मेघसमूह, अत्यधिक (सुद० ९७) मेघ घटा। (सुद० १२०) 'अकाल एतद् घनघोररूपमात्रम्'

घनजम्बालः (पुं०) प्रगाढ दलदल।

घनता (वि०) अनल्पता, प्रगाढ़ता। (जयो० १३/२३) 'जनताया घनतां श्रितो भवान्'

घनतालः (पुं०) चातक पक्षी, सारंग।

घनतोलः (पुं०) चातक पक्षी।

घननाभिः (स्त्री०) धुंआ।

घननीहारः (पुं०) सघन कुहरा।

घनपदवी (स्त्री०) अन्तरिक्ष, आकाशमार्ग।

घनपाषण्डः (पुं०) मोर, मयूर।

घनप्रसूनं (नपुं०) अत्यधिक पुष्प। लतानिकुञ्जेषु घनप्रसूनपदेन पुण्यायुधलब्धकेन।

घनमूलं (नपुं०) गणित सम्बंधी घनराशि। (जयो० २४/१०७)

घनमेचकः (पुं०) सघन मेघ। 'सद्वर्त्म लुप्तं घनमेचकेन' (वीरो० ४/८)

घनरसः (पुं०) प्रगाढ़ रस।

घनलोकः (पुं०) सप्त रज्जु प्रमाण लोक। सात राजु प्रमाण आकाश की प्रदेश पंक्ति को जगश्रेणी, जगश्रेणी के वर्ग को जगप्रतर और जगप्रतर को जगश्रेणी से गुणित करने पर घनलोक होता है।

घनवर्गः (पुं०) गणित में घन का वर्ग, प्रमाण विशेष। छटा घात।

घनवर्त्मन् (नपुं०) आकाश, नभ।

घनवल्लिका (स्त्री०) विद्युत, बिजली।

घनवासः (पुं०) कद्दू, कुम्हड़ा।

घनवाहनः (पुं०) १. शिव, २. इन्द्र।

घनविघातः (पुं०) घनों का प्रहार। 'घनविघातमुपैति तनूनपात्' (जयो० २५/५५)

घनश्यामः (वि०) काले मेघ।

घनसमयः (पुं०) वर्षा ऋतु, वर्षाकाल।

घनसारः (पुं०) १. कपूर (जयो० ११/२१) घनोऽद बहलो यो सारस्तस्य (सम्य० ६/७६) २. पारा, '**ममात्मने श्रीघनसार-वस्तु**' घनानां मेघानां सारस्य, (जयो० ११/२१)

घनसार-करणं (नपुं०) कर्पूर मिलन। (जयो० वृ० ११/२१)

घरसारपात्री (स्त्री०) रम्भा, अप्सरा। (जयो० ५/८१)

घरसारविन्दु (स्त्री०) कर्पूरांश। (जयो० १७/१०१) घनोऽप्रवि-रलश्चासारश्च विन्दु:' (जयो० वृ० १७/१०१)

घनसारसारः (पुं०) कपूर तत्त्व, कर्पूर का सत्व। गर्भार्भकस्येव यश: प्रसारैराकल्पितं वा घनसारसारै:' (वीरो० ६/३)

घनस्थली (स्त्री०) विस्तार युक्त। 'घनो विस्तारो यासां तास्ता: स्थल्यस्तासु' (जयो० वृ २४/२) घनोमेघेऽथे विस्तारे' इति विश्वलोचन:। (जयो० वृ० २४/२)

घनस्वनः (पुं०) मेघ गर्जन।

घनहस्तः (पुं०) प्रमाण विशेष, हस्त माप।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

घनागमः (पुं०) वर्षा समय, वर्षर्तुः। (जयो० २३/३६)

घनाङ्गुलं (नपुं०) एक प्रमाण विशेष, प्रतरांगुल को दूसरे सूच्यंगुल से गुणित करने पर जो प्रमाण आता वह घनाङ्गुल कहलाता है। 'घणे घणंगुलं लोगो' (ति०प० १/१३२)

घनाघनः (पुं०) प्रगाढ़ मेघ, सघन मेघ, महामेघ। (सु०वृ० ११५) घना निविडा ये घनाघना मेघाः। (जयो० २४/१९)

घनाच्छनं (नपुं०) सघन आच्छादन, प्रगाढ़ आवरण। तत्र तल्पे नभः कल्पे घनाच्छादनमन्तरा। (सुद० ७८)

घनात्ययः (पुं०) मेघों की समाप्ति।

घनान्तः (पुं०) मेघ इति श्री।

घनान्तरः (पुं०) मेघों से आवृत, मेघाच्छन्न। घनान्त राच्छन्नपयोजबन्धु रिवाबभौ स्वोचितधाम सिन्धुः। (वीरो० ६/९)

घनान्धकारः (पुं०) प्रगाढ़ सम, अत्यधिक अन्धकार, घनघोर घटा। अनारताक्रान्तघनान्धकारे भेदं निशा-वासरयोस्तथारे' (वीरो० ४/२५)

घनापित (वि०) पुञ्जीभूत (जयो० १/२३) निविडता, प्रगाढ़ता। (जयो० २४/४५)

घनामयः (पुं०) खजूर वृक्ष।

घनाश्रयः (पुं०) अन्तरिक्ष, पर्यावरण।

घनिष्ठ (वि०) प्रगाढ़, निविड। 'छायां सुशीतलतलां भवतो घनिष्ठां'।

घनीभावः (पुं०) प्रगाढ़ता का भाव। (जयो० १०/९९)

घनोपलः (पुं०) ओले हिमरुण। (जयो० २४/२७)

घनोघः (पुं०) मेघ समूह। (सम्य० ४४)

घनोदयः (पुं०) वर्षाकाल, वर्षा ऋतु। 'घनानामुदयो यत्र तं वर्षाकालमिति' (जयो० वृ० २२/२) २. घनोऽतिशयरूप उदयो यस्य' (जयो० वृ० २२/२)

घरट्टः (पुं०) [घर सेकं अट्टति अतिक्रामति-घर+अट्ट+अण्] चक्की, खरांस, घराट।

घर्घर (वि०) [घर्घ+रा+क] गरगर शब्द करने वाला, गड़गड़ाने वाला, कलकल शब्द करने वाला।

घर्घरः (पुं०) कलकल ध्वनि।

घर्घरा (स्त्री०) घुंघरूओं की ध्वनि।

घर्घरिका (स्त्री०) [घर्घर+ठन्+टाप्] एक वाद्य यन्त्र।

घर्घरितं (नपुं०) घुरघुराना।

घर्मः (पुं०) [घरति अङ्गात्-घृ+मक्] ताप, गर्मी। गर्मी धूप। (जयो० ११) सूर्यस्य घर्मत इहोत्थितमस्मि पश्य वाष्पीभवद्यदपि वारिजलाशयस्य। (वीरो० १९/४३)

घर्मजन्य (वि०) ग्रीष्मता युक्त, गर्मी उत्पादक। (जयो० २६/५६)

घर्मसत्ता (वि०) गर्मी, उष्णता (जयो० ११/४४)

घर्ष् (सक०) रगड़ना, घर्षण करना, चूरा करना, पीसना।

घर्षः (पुं०) रगड़, पीसना।

घर्षणं (नपुं०) पीसना, चूरा करना। १. मैथुन नियन घर्षणं गजिते खे इति वि' (जयो० २३/२६)

घस् (सक०) खाना, भोजन करना, निगलना।

घस्मर (वि०) [घस्+क्मरच्] खाऊ, पेटू, अधिक खाने वाला।

घस्र (वि०) [घस्+रक्] हानिकारक, दुःखयुक्त।

घाटः (पुं०) [घट्+अच्] ग्रीवा का पिछला भाग।

घाणी (स्त्री०) कोल्हू। (समु० १/५)

घाण्टिक (वि०) घंटी बजाने वाला।

घातः (पुं०) [हृ+णिच्+घञ्] ०हानि, ०नुकसान, ०प्रहार, ०नाश, ०आघात, ०संहार। (सुद० ४/२६) ०संघात 'असत्य वक्तुर्नर के निपातश्चासत्यवक्तुः स्वयमेव घातः।' (समु० १/९)

घातक (वि०) संहारक, नाशक, प्रहारक।

घातकरा (वि०) संहारक, घात करने वाला, प्रहार करने वाला। 'परघातकरः करोऽस्य चास्य' (जयो० १२/६४)

घातचन्द्रः (पुं०) अशुभ राशि पर स्थित चन्द्र।

घाततिथिः (स्त्री०) अशुभ चन्द्र तिथि/दिन।

घातन (वि०) [हृ+णिच्+ल्युट्] संहारक, हत्या करने वाला।

घातनं (नपुं०) संहार, प्रहार, घात।

घातपरायणः (पुं०) विध्वंस करने में कुशल, हानि करने में प्रवीण। 'एकः सहजसौहार्दी परो घातपरायणः' (दयो० ६२)

घातसत्त्वस्थानं (नपुं०) एक गणतीय स्थान, बन्ध सदृश अष्टांक और अर्थक के मध्य में अधस्तन ऊर्वक से अनन्तगुणा और उपरिम अष्टांक के अनन्तगुणा हीन होकर जो सत्त्वस्थान अवस्थित होता है।

घातिकर्मन् (नपुं०) घात/क्षय/क्षीण किए जाने वाले कर्म। ज्ञानावरण, दर्शनावरण, मोहनीय और अन्तराय ये चार कर्म केवलज्ञान, केवलदर्शन, सम्यक्त्व या चरित्र तथा वीर्य रूप गुणों से घात किए जाते हैं।

घातिन् (वि०) [हृ+णिच्+णिनि] घात करने वाला, नष्ट करने वाला, घातक, संहारक। (समु० ८/८) (सम्य० ४८)

घातिप्रकृतिः (स्त्री०) घातक प्रकृतियां। (वीरो० १२/३८)

घातिवनं (नपुं०) घातियां कर्म रूप वन। (भक्ति० ३२)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

घातुक (वि०) [हन्+णिच्+उकञ्] संहारक, हानिकारक।

घातोत्थित (वि०) नाश से उत्पन्न। (जयो० २/१३०)

घात्य (वि०) [हन्+णिच+ण्यत्] घात करने योग्य, नाश करने योग्य।

घारः (पुं०) [घृ+घञ्] छिड़कना, तर करना।

घार्तिकर (वि०) [घृतेन निर्वृतः-ठञ्] घी में तली हुई पूड़ी आदि।

घावः (पुं०) व्रण। (मुनि० ३१)

घासः (पुं०) आहार, भोजन, ग्रास, कवल। १. घांस।

घासकुन्दं (नपुं०) चरगाह स्थान।

घासभक्षणं (नपुं०) आहार करना, ग्रास लेना। (जयो० वृ० २/२०)

घासवद् (वि०) घास सदृश। घासेन तुल्यं घासवद् यथा पशवो घासभक्षणे तत्परा भवन्ति। (जयो० वृ० २/२०)

घु (अक०) शब्द करना, ध्वनि करना।

घुः (स्त्री०) [घु+क्विप] घु घु शब्द गुटर गूं। घुसंज्ञा (जयो० १६/७३)

घुट् (अक०) १. प्रहार करना, विरोध करना। २. वस्तु विनिमय करना।

घुटः (पुं०) [घुट्+अच्] टखना, घुटना।

घुण् (सक०) लेना, ग्रहण करना, समेटना।

घुणः (पुं०) [घुण्+क] घुन, लकड़ी में लगने वाला कीड़ा। ते इन्द्रिय जीव, तीन इन्द्रिय जीव। (वीरो० १९/३५)

घुणाक्षरं (नपुं०) १. लकड़ी या पुस्तक पर घुन कीट द्वारा बनाई गई रेखाएं। २. अक्षरात्मक रेखाएं।

घुणाक्षरन्यायः (पुं०) असंभव का कदाचित् सिद्ध होना। घुन कीट द्वारा खाए गए पुस्तक के पन्नों पर जो अक्षरात्मक रेखाएं उत्पन्न होती हैं वे प्रायः असंभव है-यदि कोई कदाचित् कार्य सिद्ध हो जाता है तो यह कार्य 'घुणाक्षरन्याय' कहलाता है। 'घुणः कृमिविशेषः स शनैः शनैः काष्ठं भक्षयति, तेन तस्य भक्षमाणस्य विचित्र रेखा भवन्ति तासां मध्यात् काचिद्रेखाऽक्षराकारा भवति। (नीतिवाक्यामृत टीका०) (जयो० १०/९३)

घुणित (वि०) घुन युक्त हुआ। (जयो० २/७७)

घुण्टः (पुं०) टखना, घुटना।

घुण्डः (पुं०) [घुण्+ड] भ्रमर, मधुकर, भौंरा।

घुर् (सक०) शब्द करना, चीखना, चिल्लाना।

घुरी (स्त्री०) [घुर्+कि+ङीप्] नाक में छेदकर रस्सी डालना।

घुर्घुरी (स्त्री०) चोलर, चिल्हड़ एक कृमि विशेष।

घुष् (सक०) घोषणा करना, ध्वनि करना। (घोषयत्) (जयो० ७/७)

घुसृणं (नपुं०) [घुष्+ऋणक्] केसर, जाफरान।

घूकः (पुं०) [घू इत्यव्यक्तं कायति-घू+कै+क] उल्लू, उलूक। काकारिपक्षी। (जयो० १८/४) 'घूकाय चान्ध्यं दददेव भास्वान्' (वीरो० १९/१३)

घूर्ण् (सक०) १. घूमना, परिभ्रमण करना, २. हिलना। घूर्णते (जयो० वृ० १८/४१) ३. चक्कर काटना। घूर्णते, घूर्णति। ४. झूमना (जयो० २६/६१)

घूर्ण (वि०) [घूर्ण+अच्] हिलाने वाला, घुमाने वाला।

घूर्णनं (नपुं०) [घूर्ण+ल्युट्] घूमना, लपेटना, समेटना।

घूर्णमानता (वि०) आप्रदक्षिणा, घूमा हुआ, चक्कर काटता हुआ। 'गर्हु प्रति आप्रदक्षिणं घूर्णमानता ह्यसत्' (जयो० वृ० २६/१५)

घृ (सक०) छिड़कना, बिखेरना, फैलाना।

घृण् (अक०) चमकना, दीप्तियुक्त होना, प्रज्वलित होना।

घृणा (स्त्री०) निन्दा, ग्लानि, अरुचि, उपेक्षा, निरर्थक। 'नीतिरैहिकसुखाप्तयेऽघृणामार्परीतिरुत कर्मणे घृणा' (जयो० २/४)

घृणाकर (वि०) निन्दा करने वाला, लज्जायुक्त। (दयो० ९८) प्रयबलाबालगोपालादीनामपि घृणाकरं कार्यमेतत्। (दयो० ९८)

घृणाकरि (वि०) निरर्थक, प्रयोजन रहित। निजरूपनिरूपिणे घृणाकरि अस्मै खलु दर्पणार्पणा' 'मुकुरदानं घृणाकरी निरपेक्षा गर्ह्याऽभवदित्यर्थः। (जयो० १०/४०)

घृणाधिकारी (वि०) घृणा का पात्र। न धर्मिणो देहमिदं विकारि (सम्य० ९१) दृष्ट्वा भवेद्यो घृणाधिकारी'। (सम्य० ९१)

घृणापरक (वि०) घृणा में तत्पर। भास्रो घृणापरकयेन्द्रदिशाश्रु दन्त' (जयो० १८/३३)

घृणापात्रं (नपुं०) घृणाधिकारी।

घृणारहित (वि०) निन्दा से रहित। घृणासद्भावविकल। (जयो० २२/८२) अघृणी।

घृणावलम्ब (वि०) घृणा पर आधारित। 'स्वरादि धर्मेण घृणा-वलम्ब्यात्' (भक्ति० ४१)

घृणावान् (वि०) ग्लानि युक्त। (जयो० १/८७)

घृणासद्भावः (पुं०) घृणा की उपस्थिति।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

घृणासहित (वि०) घृणा युक्त। (जयो० वृ० १५/२६)

घृणास्पदं (नपुं०) घृणा का स्थान। पित्रांश्च मूत्रेन्द्रियपूतिमूलं घृणास्पदं केवलमस्य तूलम्। (सुद० १०२) सौन्दर्यमङ्गे किमुपैमिभद्रे घृणास्पदं तावदिदं महद्रे। (सुद० १२०)

घृणि: (स्त्री०) [घृ+नि] गर्मी, प्रकाश, धूप।

घृणित (वि०) निन्दनीय, अपमान जन्य। (जयो० २५/५) 'कदापि कुर्याद् घृणितं न कर्म' (सम्य० २६)

घृणित-विचारवान् (वि०) मलिन स्वभाव वाला। (जयो० वृ० २५/२६)

घृणिताचरणं (नपुं०) निन्दिताचरण, अभिनिन्दिताचरण। घृणा करने वाले। वाचा वा श्रुतवचने निरतया भूया असूयाघृणी। (मुनि० ८)

घृणोत्पादक (वि०) घृणा को उत्पन्न करने वाला, ग्लानि को उत्पन्न करने वाला। (जयो० वृ० २५/२६)

घृणोद्धरण (वि०) घृणाजन्य। (जयो० २/८२)

घृतं (नपुं०) [घृ+क्त] ०घी, ०तप्त ०मक्खन। ०आज्य। (जयो० १२/११०) ०गर्मी (जयो० ११/८६) (सम्य० १५) नादिताय तु सर्दायेंग घृतं सुग्रु ईह मुविचारत: कृतम्। (जयो० २/१०३) वह्निघृतं प्राज्वयतीत्यनेन घृतं पुन: संद्रवतीतिश्रयेन:। (सम्य० ७)

घृतकृत (वि०) सर्पिर्विधानार्थ, घृत बनाने के लिए। (जयो० २/१४) तक्रता हि नवनीतमाप्यतेऽत: पुनर्घृतकृते विधाप्यते।

घृतवत् व्यञ्जनम् (नपुं०) राज्यपरिपूर्ण व्यञ्जन (जयो० १२/१२३) घेवर, राजभोग।

घृतधारा (स्त्री०) घी की धार।

घृतपाचित (वि०) घृत में पकाया गया। (जयो० १०)

घृतपूर: (पुं०) घेवर, घी से बना पकवान।

घृतलेख: (पुं०) घृत की रेखा। (जयो० २०/५९)

घृतवर: (पुं०) घृतपूर, घेवर, घी से निर्मित श्रेष्ठ पकवान्।

घृतवरभूप: (पुं०) घेवर, घी से निर्मित मिष्ठान्न। 'घृतेन कान्त्या वा वरौ श्रेष्ठौ भूम्स्थानं पातो रक्षत इति घृतवरभूपौ-व्यञ्जनविशेषौ त्रिवलिजलेविका। कपोलौ घृतवरभूपौ' (जयो० वृ० ३/६०)

घृतवरी (स्त्री०) नाम विशेष, माता का नाम। (सुद० १/४६)

घृतसिता (स्त्री०) घी-शर्करा। 'घृतं च सिता घृतसिते' (जयो० वृ० २२/३१)

घृतस्रावी (स्त्री०) एक ऋद्धि विशेष। (जयो० १९/८०)

घृताची (स्त्री०) [घृत+अञ्च्+क्विप्+ङीप्] १. रात, २. सरस्वती। एक अप्सरा। घृताची मेनका रम्भा उर्वशी च तिलोत्तमा।

घृतास्रव (पुं०) घृत का निकलना।

घृष् (सक०) रगड़ना, घिसना, पीसना, चूरा करना, कुचलना चमकना।

घृष्टि: (स्त्री०) [घृष्+क्तिच्] पीसना, चूरा करना, प्रतिद्वन्द्विता।

घृष्टि-कुट्टनं (नपुं०) पीसना-कूटना, कुचलना, मसलना। 'गतस्य सर्पस्य घृष्टिकुट्टनवद्युक्तं न भवति। (जयो० वृ० २७/४)

घृष्टिचिन्तनं (नपुं०) प्रतियोगिता का चिन्तन। शीघ्र चिन्तन। (जयो० २५/८०)

घोट: (पुं०) [घुट्+अच्] घोड़ा, अश्व।

घोटक: (पुं०) अश्व, हय, घोड़ा। (जयो० वृ० १/१९) 'वाजि-वाजिप्रमुखा घोटकप्रभृत्यो' (जयो० वृ० १/३८)

घोटकगति: (स्त्री०) घोड़े के गति, (जयो० वृ० ३/११४)

घोटकदोष: (पुं०) कायोत्सर्ग का दोष।

घोटकपक्षं (नपुं०) घोटक स्थान।

घोटकमुखं (नपुं०) घोड़े का मुख। चतुर्दशगुणस्थानमुखेन घोटकमुखे चतुर्दशप्रकारा गुणा कल्पना भवन्ति' (जयो० वृ० ३/१६४) 'चतुर्दशगुणस्थानानि मुखं द्वारं यस्येति ध्यान पक्षे' (जयो० वृ० ८/११४)

घोणस: (पुं०) रेंगने वाला जन्तु।

घोणा (स्त्री०) नाक, नथूआ।

घोणिन् (पुं०) [घोणा+इनि] सूकर।

घोण्टा (स्त्री०) [घुण+ट+टाप्] बदरीवृक्ष, उन्नाव वृक्ष।

घोण्टाफलं (नपुं०) बदरीफल।

घोर (वि०) [घुर्+अच्] भीषण, भयानक, भयंकर, अत्यधिक, घना, बहुल।

घोरडू (नपुं०) मूंग, जो सीझते नहीं, कङ्कडुक। (वीरो० १७/३३)

घोरगुणं (नपुं०) शक्तिजन्य गुण।

घोरतप: (नपुं०) प्रबलतप, कठोर तपस्या। कायक्लेशादि तप।

घोरतम: (पुं०) गहन अन्धकार। रात्रि: स्वतो घोरतमो विधात्री। (भक्ति० २५)

घोरदर्शनं (नपुं०) भयंकर दृष्टि।

घोरदृष्टि: (स्त्री०) भयानक अक्षि। डरावनी आंखें।

घोपराक्रम: (पुं०) कठिन श्रम, अधिक परिश्रम।

घोरपराक्रमी (वि०) सहनशील।

घोरब्रह्मचारित्व (वि०) चारित्र की उत्कृष्टता वाला ब्रह्मचर्य। एक ऋद्धि विशेष।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

घोरस्मरः (पुं०) प्रवल काम। स एव घोरस्मर भागयुग्मतामहो (समु० ४/३०)

घोरा (स्त्री०) श्रवण, चित्रादि नक्षत्र की गति।

घोलः (पुं०) [घुर्+घञ्] तरल, घुला हुआ पदार्थ।

घोषः (पुं०) [घुष्+घञ्] घोषणा, उद्‌घोष, ध्वनि, कोलाहल, १. आहीर वाली।

घोषणा (स्त्री०) सूचना, ढिंढोरा, राजाज्ञा।

घोषणापत्रं (नपुं०) सूचना पत्र, आदेश पत्र।

घोषकः (पुं०) अहीर, अभीर। घोषका अभीरानृपस्य (जयो० वृ० २१/५८) 'आगताश्च दधिभाजनादिभिर्घोषकान्'

घोषणं (नपुं०) [घुष्+ल्युट्] उच्चारण, ध्वनि, निनाद।

घोषकोला (स्त्री०) कुल्हड़ा, कद्दू।

घोषयित्नुः (स्त्री०) हलकारा, ढिंढोरा।

घोषवती (स्त्री०) वीणा विशेष।

घोषवल्ली (स्त्री०) कुल्हड़ा, कद्दू। (जयो० वृ० २१/५२)

घोषा (स्त्री०) सौंफ।

घ्न (वि०) विनाशक, घातक, विध्वंसक।

घ्रा (सक०) सूंघना, सुगंध लेना।

घ्राण (भू०क०कृ०) सूंघा।

घ्राणं (नपुं०) नाक, नासिका। घ्रायतेऽनेनेति घ्राणम्।

घ्राणनिरोधः (पुं०) सुगंध रहित।

घ्राणेन्द्रिय (नपुं०) घ्राण इन्द्रिय, तीसरी इन्द्रिय।

घ्रातिः (स्त्री०) सूंघने की क्रिया।

च

चः (पुं०) चवर्ग का प्रथम व्यञ्जन, इसका उच्चारण स्थान तालु है। च-चकार (जयो० वृ० १/४७)

चः (पुं०) [चण् चि+उ] चन्द्र, कच्छप। चास्य चन्द्रमस्। (जयो० २५/८६)

च (अव्य०) १. और, तथा, अन्तिम शब्द, (सुद० २/१८, २/४८) में प्रयुक्त होने वाला, दो या दो से अधिक के बीच में प्रयुक्त अथवा या आदि का बोधक। २. निश्चय, अवधारण, निर्धारण। 'निघर्षकुण्डी न च तुण्डिकेत्यरं' (जयो० ५/७८) ३. **पादपूर्तौ** (पादपूर्ति के रूप में च का **पादपूरणे**) (जयो० ३/११५) (जयो० ७/९२, २७/१) प्रयाग-गुप्तिभागिह च कामवत्तु-नः पक्षवाति च शीत-रश्मिवत्पुनः। (जयो० ३/१५) 'गदितं च वचोऽदः' (जयो० ४/५०) इस वाक्य में च पादपूर्ति के लिए है।

चक् (अक०) १. तृप्त होना, संतुष्ट होना, २. प्रतिरोध करना।

चकवी (स्त्री०) कोककुटम्बिनी (दयो० २/६)

चकारः (पुं०) चवर्ग। (जयो० १/४८)

चकित (वि०) [चक्+क्त] आश्चर्य युक्त, विश्मय जन्य, प्रकम्पित, भयभीत, भीरु, आशंका युक्त।

चकितं (अव्य०) भय से, आश्चर्य से, विश्मय से।

चकोरः (पुं०) चकोरपक्षी, चकवा, चन्द्रमा की किरणें ही जिसका आधार है। (समु० ४/२०) 'मुनीश! सच्चारुचकोरचन्दमः' जीवंजीव पक्षी–चकोरैः जीवंजीवैः पक्षिभिः 'जीवंजीवश्चकोरकः' इत्यमरः (जयो० वृ० १८/६)

चकोर चक्षुः (स्त्री०) जीवंजीव नयन, चंचल नयन, चकोर पक्षी की तरह नेत्र। 'सुदर्शन त्वञ्च चकोर-चक्षुषः' (सुद० ३/४१)

चकोरदृक् (नपुं०) चंचल नेत्र, चकोर नयन, जीवंजीव। (जयो० १८/२३) (सुद० ७४) तव चैष चकोरदृशोऽवश्यं च कौमुदाप्तिमयः' (जयो० ६/११२) 'चकोरस्य दृशाविव' (जयो० वृ० ६/११२)

चकोरलोचना (स्त्री०) चकोराक्षी। (जयो० १५/९८)

चकोरसमा (वि०) चकोर सदृश। (जयो० ६/६४)

चकोराक्षी (स्त्री०) चकोरलोचना। 'चकोरस्य अक्षिणी यस्याः सा चकोराक्षी सा बाला।' (जयो० वृ० ६/८९)

चकोरी (स्त्री०) खञ्जनिका। (दयो० ५३) पुरा तु राजीवदृशः किलोरी चकार राज्ञो दृगियं चकोरी। (जयो० ११/२)

चक्की (स्त्री०) ०घरघट्टी ०पीसनी-'चक्की' ति लोक भाषायाम्। (जयो० ७८५)

चक्रं (नपुं०) १. पहिया, चाक, गोलाकार अस्त्र, वृत्त, मण्डल। चक्रश्च कृत्रिमं चक्रे चक्रिणो दिग्जये जयम्' (जयो० ७/४१) चक्रं सैन्ये रथाङ्गेऽपि आम्रजालेऽम्भसांभ्रमे। कुलाकृत्यनिष्पत्तिभाण्डे राष्ट्रास्त्रभेदयोः।। इति विश्वलोचनः।। (भक्ति०वृ० ६) २. सेना, समूह, रथाङ्ग, आम्रजाल, रथाङ्गः चक्रं। (जयो० वृ० १/१९) ३. प्रांत, जिला, राष्ट्र, ग्राम समूह। ४. कुम्हार का चाक। अन्यातिशायी रथ एकचक्रो रवेरविश्रान्त इतीध्मशक्रः।

तमेकचक्रं च नितम्बमेनं जगज्जगी संलभते मुदे नः। (जयो० ११/२२)

'सुप्रसिद्धमेकं चक्रं परिमण्डलं' (जयो० वृ० ११/२२) * समूह (जयो० २/१२१)

चक्रः (पुं०) हंस पक्षी, चकवा।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चक्रकम्बुक: (पुं०) सुदर्शन चक्र एवं पाञ्चजन्य शङ्ख। (जयो० २४/५)

चक्रकारकं (नपुं०) १. नख, २. सुगन्धित पदार्थ।

चक्रगण्डु (स्त्री०) तकिया, मसनद, गोलाकार तकिया।

चक्रगति: (स्त्री०) वृत्ताकार परिभ्रमण, गोल घूमना।

चक्रगुच्छ: (पुं०) अशोक तरु।

चक्रग्रहणं (नपुं०) दुर्ग प्राचीर, परकोटा।

चक्रचर (वि०) चक्राकार परिभ्रमण करने वाला।

चक्रचूडामणि (स्त्री०) मुकुट मंडित मणि, गोलमणि।

चक्रचेष्टा (स्त्री०) नयचक्र, न्याय ग्रन्थ, नय पद्धति। चक्रवाक चेष्टा, भंवर संचार (वीरो० वृ० ९)

चक्रजीवक: (पुं०) कुम्भकार, कुम्हार।

चक्रतीर्थ (नपुं०) पवित्र स्थान।

चक्रदंष्ट्र (पुं०) सूकर।

चक्रधर: (पुं०) १. राजा अर्ककीर्ति, चक्रवर्ती अर्ककीर्ति, (जयो० ९/८२) २. विष्णु।

चक्रधारा (स्त्री०) चक्र का घेरा, चक्र परिधि।

चक्रधुरी (स्त्री०) चक्रनेमि, पहिए की धुरी।

चक्रनाभि: (स्त्री०) वृत्ताकार नाभि।

चक्रनामन् (पुं०) चकवा।

चक्रनायक: (पुं०) चक्रवर्ती,

चक्रनेमि: (स्त्री०) चक्रधुरी।

चक्रपाणि: (पुं०) विष्णु, चक्रधर, भरत चक्रवती, भरतेश्वर, सृष्टे: पितामह: स्रष्टा 'चक्रपाणिस्तु रक्षक:। संहर्तुमुद्यत: सद्यस्तामेनां प्रथमाधिप:॥ (जयो० वृ० ७/२३) आदिचक्रवर्ती भरत (जयो० वृ० २०/१०)

चक्रपाद: (पुं०) गाडी, यान।

चक्रपाल: (पुं०) राज्यपाल, सेनाधिकारी।

चक्रपुरं (नपुं०) भरतक्षेत्र का एक नगर। समस्त्यमुष्मिन् भरतेऽथ चक्रपुरं पुन: शक्रपुरातिशायि। (समु० ६/१)

चक्रपुरेश्वर: (पुं०) चक्रपुर का राजा चक्रायुध। (समु० ७/१)

चक्रबन्ध: (पुं०) छन्द विशेष, छन्द की प्रक्रिया 'एतच्छन्दश्चक्रबन्धे षडरात्मके लिखित्वा अग्राक्षरै: स्वयंवरफल' इति ध्येयम्। स्वप्रेष्ठ स्मरसोदरं जयनृपं तत्रागतं सादरं यत्नाद् गोपुर-मण्डलात् स्वयमथोत्सर्गस्वभावाधिप:। वप्ताऽऽनीय सुपुष्पकाशयतनोर्धागग्रभृत्युज्ज्वलं रक्त्याऽदात् स्वपुरेऽयमात्तवरदोऽरकृत्यप: श्रीधर:॥ (जयो० १/११३) (जयो० ३/११६) सर्गसूची-(जयो० ११/१००) षड्चक्रार-बन्ध-जयो० वृ० २४/१४४) (जयो० वृ० २५/८७)

चक्रबन्धप्रयोजक: (पुं०) षड्यक्रार बन्ध का कथन। (जयो० वृ० ९/९५)

चक्रवाल: (पुं०) चक्रमण्डल।

चक्रभर्तृ (पुं०) कुलाल, कुम्हार, १. चक्र का मालिक। स चक्रभर्ता मणिकादिभारकर्तापि देवाऽकथि कुम्भकार:। (जयो० १२/३७)

चक्रभृत् (पुं०) चक्रधर।

चक्रभेदिनी (स्त्री०) रजनी, रात्रि।

चक्रमण्डल: (पुं०) वृत्ताकार।

चक्रमण्डलिन् (पुं०) सर्प जाति।

चक्रमुख: (पुं०) सूकर।

चक्रयानं (नपुं०) गाड़ी, चक्के से चलने वाला वाहन।

चक्रयुग: (पुं०) चक्के में तेल। (जयो० १३/५)

चक्ररद: (पुं०) सूकर।

चक्रायुध: (पुं०) चक्रशस्त्र। (समु० ६/२४)

चक्रवर्तिन् (पुं०) सम्राट्, चक्रवर्ती राजा, षट्खण्डाधिपति। आसमुद्रक्षितीश:। (वीरो० २/) (जयो० ३/५) (जयो० ७/६०) चक्रवर्तिन: चतुर्दशरत्नाधिप: षट्खण्डभरतेश्वर: नरेन्द्र (भक्ति० ३२)

चक्रवर्तितनय: (पुं०) चक्रधर का पुत्र। (जयो० ७/७१) (जयो० ४/११) अर्ककीर्ति नाम (जयो० ४/११)

चक्रवर्तिसुत: (पुं०) चक्रवर्ती का पुत्र।

चक्रवर्तिसुतत्व (वि०) चक्रवर्ती के सुतपना। चक्रवर्ती के पुत्र के समान। चक्रवर्तिसुतत्वेन मणिकाद्यभिमानत:। (जयो० ७/८) श्री भरतसम्राडात्मजत्वेन (जयो० वृ० ७/८)

चक्रवर्तिनी (स्त्री०) साम्राज्ञी, प्रवृत्तिकर्ती। (जयो० ५/९२)

चक्रवाक: (पुं०) चकवा।

चक्रवाकनिधुन: (पुं०) कोकयुग। (जयो० वृ० १५/५१)

चक्रवाकी (स्त्री०) चकवी। (वीरो० २/४५) भर्तुर्युतिञ्झाप्ययुति वराकी तनोति सम्प्राप्य हि चक्रवाकी। (वीरो० ४/२५)

चक्रवाट: (पुं०) सीमा।

चक्रवात: (पुं०) तूफान, हवा का गोलाकार प्रवेश।

चक्रवृद्धि: (स्त्री०) ब्याज पर ब्याज।

चक्रव्यूह: (पुं०) सैन्यदल की मंडलाकार स्थापना, चक्राभ। (जयो० वृ० ७/११३)

चक्रसंज्ञ: (पुं०) चकवा।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चक्रसाह्वयः (पुं०) चकवा।

चक्रहस्तः (पुं०) विष्णु।

चक्राकार (वि०) गोलाकार, वृत्ताकार।

चक्राकृति (वि०) गोलाकार, वृत्ताकार।

चक्राधिपतिः (पुं०) षट्खण्डी, छह खण्ड का अधिपति। (जयो० वृ० १३/४६)

चक्राभः (पुं०) चक्रव्यूह, चक्राकार सैन्य रचना। (जयो० ७/११३)

चक्रायुधः (पुं०) नाम विशेष, राजा (समु० ६/२८) सुन्दरी रानी, अपराजित का पुत्र चक्रायुध। (समु० ६/१४) २. शस्त्र विशेष, चक्रशस्त्र।

चक्रावर्तः (पुं०) चक्राकार गति।

चक्राह्वयः (पुं०) चकवा। (जयो० १६/३९)

चक्रितुजः (पुं०) चक्रवर्ती का पुत्र।

चक्रित्व (वि०) चक्रवर्ती पद युक्त। (जयो० ७/७)

चक्रिपुत्रः (पुं०) चक्रितुज, (जयो० १२/७३) चक्रवर्ती तनय। (जयो० वृ० ७/७)

चक्रिसुतः (पुं०) चक्रवर्ती पुत्र। प्राह चक्रिसुत एव विशेषः। (जयो० ४/४४)

चक्री (पुं०) चक्रवर्ती (हित०सं० १२)

चक्रीश्वरः (पुं०) सर्वोच्चाधिकारी, षट्खण्डाधिपति।

चक्रोपजीविन् (पुं०) तेली।

चक्ष् (सक०) देखना, अवलोकन करना, प्राप्त करना, ग्रहण करना, कहना, घोषणा करना।

चक्षस् (पुं०) [चक्ष्+असि] अध्यापक, शिक्षक, गुरु, दीक्षागुरु।

चक्षुक्षेपः (पुं०) अवलोकन। (जयो० १६/२२)

चक्षुरिन्द्रिय (नपुं०) नेत्र इन्द्रिय, जिससे पदार्थों को देखना होता है।

चक्षुष्य (वि०) [चक्षये हितः स्यात् चक्षुस्+यत्] १. प्रियदर्शन, लुभावना, सुन्दर। २. हितकर, मनोहर।

चक्षुस् (नपुं०) [चक्ष्+उसि] आंख, नेत्र, नयन, दृष्टि दर्शन, देखने की शक्ति। (जयो० ५/३३) (जयो० १/८९)

चक्षुगोचरः (पुं०) दृष्टिगोचर।

चक्षुदानं (नपुं०) प्राण प्रतिष्ठा।

चक्षुपथ (पुं०) क्षितिज, दृष्टिगत।

चक्षुर्दर्शनं (नपुं०) चक्षु से सामान्य ग्रहण होना, सामान्य स्वसंवेदन रूप शक्ति का अनुभव होना।

चक्षुर्दर्शनावरणं (नपुं०) चक्षु इन्द्रिय द्वारा सामान्य उपयोग का आवरण।

चक्षुर्निरोधः (पुं०) नेत्रेन्द्रिय के रूपादि पर विजय।

चक्षुविषयः (पुं०) नेत्र का विषय।

चक्षुःस्पर्शः (पुं०) नेत्र का स्पर्श होना, नेत्र द्वारा ग्रहण करना।

चङ्कुणः (पुं०) १. वृक्ष, तरु, २. यान।

चङ्क्रमणं (नपुं०) [क्रम्+यङ्+ल्युट्] घूमना, परिभ्रमण करना। इतस्तो गमनम्, इतस्तो परिचरणम् (मूल० ६४९)

चङ्ग (वि०) १. वर, श्रेष्ठ, ०उत्तम, ०उचित। स्फुटरमाहेति स झर्झरोऽपि चङ्गः। (जयो० १२/७१) २. दक्ष, ०सामर्थ्यवान्, ०नवयौवनपूर्ण, ०शोभन। (जयो० १६/४) 'चक्षोदशो सामर्थ्यवान् नवयौवनपूर्णोऽपि' (जयो० वृ० १५/४) चङ्गस्तु शोभने दक्षे इति विश्वलोचनः। (भक्ति० ५) ३. अत्यन्त सुन्दर (जयो० वृ० १/१५) 'भवाद्भवान् भेदमवाप चङ्ग' ४. विचार-चङ्गो दक्षेऽथ शोभने इति वि। (जयो० वृ० २१/५७)

चञ्च् (सक०) चलाय करना, हिलाना, घुमाना, इधर-उधर करना, चमत्कार करना। अञ्चति रजनिरूदञ्चति सन्तसमं तन्वि चञ्चति च मदनः। (जयो० १६/६४) चञ्चति-चमत्करोति- (जयो० वृ० १६/६४)

चञ्चः (पुं०) [चञ्च्+अच्] मान, मापदण्ड।

चञ्चत्कान्तिः (स्त्री०) श्याम रूपा। (जयो० वृ० ६/१०७)

चञ्चच्चिद् (वि०) मापदण्ड युक्त। (सम्य० ४१)

चञ्चरिन् (पुं०) भ्रमर, अलि, भौंरा।

चञ्चरीक (पुं०) भ्रमर, अलि, भौंरा। मुहुर्मुहुश्चुम्बति चञ्चरीको (वीरो० ६/२१)

चञ्चलं (वि०) [चञ्च्+अलच्-चञ्चं गतिं लाति ला+क वा] चलायमान, अस्थिर, चपल, स्वेच्छाचारी, गतिमान।

चञ्चलचित्तं (नपुं०) चपलचित्त, चलायमान चित्त। (मुनि० २७)

चञ्चलभावः (पुं०) चपल स्वभाव।

चञ्चललोचना (स्त्री०) चपलनयना। (जयो० ३/४२) 'चञ्चले हावभावपरिपूर्णे लोचने यस्या। (जयो० वृ० ३/४२)

चञ्चलतायुक्त (वि०) चपलता सहित। (जयो० वृ० १/६०)

चञ्चला (स्त्री०) बिजली, चपला। (जयो० ६/४७)

चञ्चा (स्त्री०) गुड़िया।

चञ्चु (वि०) [चञ्च्+उन्] विख्यात, प्रसिद्ध, चतुर।

चञ्चुः (पुं०) हिरण, मृग।

चञ्चु (स्त्री०) चोंच, (जयो० वृ० ११/४७) (वीरो० ४/१९)

चञ्चुपुटं (नपुं०) चञ्च्वभ्यन्तर, बन्द चोंच। (जयो० १२

चञ्चुप्रहारः (पुं०) चोंच मारना।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चञ्चुभृत् (पुं०) पक्षी।
चञ्चुसूची (स्त्री०) बया पक्षी, सौचिक पक्षी।
चञ्चू (स्त्री०) चोंच। * छिद्र युक्त लकड़ी।
चट् (अक०) टूटना, चटकना, गिरना, अलग होना।
चटकः (पुं०) [चट्+क्वुन्] चिड़िया, गौरैया।
चटका (स्त्री०) चिड़िया। (सुद० ९४)
चटत्कृति (स्त्री०) चटचटाना, चट चट शब्द करना।
चटिका (स्त्री०) चिड़िया।
चटु (नपुं०) चाटुता।
चटुकी (स्त्री०) चुटकी। (जयो० ५/७२)
चटुल-चटिका (स्त्री०) चपल चिड़िया। 'चटुलानां चपलानां चटिकानां कलविङ्कानां निस्वनोऽस्ति' (जयो० १८/९३)
चटुलापता (वि०) मधुर आलाप। प्रासङ्गिमधुरवार्तालाप। (जयो० १३/१८)
चटुलोल (वि०) मधुरालापी, मधुरभाषी। कंपनशील।
चण (वि०) १. विख्यात, कुशल, प्रसिद्ध। २. सम्पादनः साधनं। (जयो० ९/५९)
चणकः (पुं०) [चण+क्वुन्] चना।
चण्ड (वि०) [चंड्+अच्] १. प्रचण्ड, प्रखर, तेज, उग्र, आवेशयुक्त, तीक्ष्ण, तीखा, सक्रिय, आक्रोश। २. क्रोध। ३. देदीप्यमान-'चण्डो गुणानां परम। करण्डा' (भक्ति० ३१)
चण्डमुण्डा (स्त्री०) चामुण्डा, दुर्गादेवी।
चण्डमृगः (पुं०) जंगली जानवर।
चण्डविक्रम (वि०) प्रवल शक्ति।
चण्डा (स्त्री०) दुर्गादेवी।
चण्डांशुः (पुं०) सूर्य, दिनकर। (जयो० १५/३०)
चण्डातः (पुं०) [चण्ड+अत्+अण्] सुगन्धयुक्त [illegible]।
चण्डातकः (पुं०) लहंगा, साया।
चण्डाल (वि०) [चण्ड्+आलच्] क्रूरकर्मी, घृणित कार्य करने वाला।
चण्डालः (पुं०) नीच।
चण्डालिका (स्त्री०) [चण्डाल+ठन+टाप्] चाण्डाल की वीणा।
चण्डिकादेवी (स्त्री०) दुर्गादेवी। (जयो० २४/६८)
चण्डिमन् (पुं०) [चण्ड्+इमनिच्] उग्रता, आवेश, क्रोध।
चण्डिलः (पुं०) [चन्द्र+इलच्] नाई, क्षौरकर्मी।
चण्डीशः (पुं०) महादेव। (जयो० १५/४७)
चण्डीशचूडामणिः (स्त्री०) महादेव का मुकुटमणि। चण्डीशस्य महादेवस्य चूडामणिर्मुकुटस्थनीयः। (जयो० वृ० १५/४७)
चतुर (वि०) [चत्+उरन्] निपुण। नयदिवचारश्चतुरैरवाधि (जयो० १७/९) 'समस्ति चतुरैरपि सेव्या' (जयो० ५/४७) 'मनोरमापि चतुरा समाह' (सुद० ११३)
चतुरनुयोगद्वारः (पुं०) चार अनुयोग द्वार। (जयो० वृ० १/६)
चतुरुत्तरदशप्रकारत्व (वि०) चौदह प्रकार वाले चौदह संख्या युक्त। (जयो० वृ० १/६)
चतुराननम् (नपुं०) चार मुख। (१२/४३)
चतुरगः (पुं०) चार अंग, अध्ययन, अध्यापन, आचरण, प्रचारण। (दयो० ४/१६)
चतुरगतिः (स्त्री०) कच्छप गति।
चतुरतर (वि०) सुदक्ष। (जयो० वृ० ८/४६)
चतुरशीति (वि०) चौरासी। (समु०) (जयो० २५/४२)
चतुराश्रमित्व (वि०) वर्णि-गृहस्थ वानप्रस्थर्षि' (जयो० वृ० १८/४५)
चतुराणा (पुं०) विज्ञ राजा। चत्वारः आणाः प्रकारा चतुरङ्गपूर्णा सभापति, सभ्य वादि-प्रतिवादीति' (जयो० ६/२३)
चतुरावर्त (वि०) चार आवर्त वाला। (हित० ५७)
चतुर्गतिः (स्त्री०) चार गति-नरक, तिर्यंच, मनुष्य और देव।
चतुर्थ (वि०) चौथ, चार अंश का, चार भाग।
चतुर्थकालः (पुं०) चौथा काल। (मुनि० ३२)
चतुर्थपर्वः (पुं०) चौथा अध्याय।
चतुर्थलम्बः (पुं०) चौथा अध्याय।
चतुर्थवचं (नपुं०) स्यादवक्तव्य। (जयो० १८/६२)
चतुर्थसर्गः (पुं०) चौथा अध्याय।
चतुर्था (वि०) चार प्रकार का।
चतुर्दशन् (वि०) चौदह। (दयो० २४ वीरो० ३/३०)
चतुर्दशरत्नं (नपुं०) चौदह रत्न।
चतुर्दशगुणस्थानं (नपुं०) चौदह गुण स्थान।
चतुर्दशत्व (वि०) चौदहवां (वीरो० ३/१४, जयो० ३/११४)
चतुर्दशपूर्वित्व (वि०) चौदह पूर्वगामी।
चतुर्दशी (स्त्री०) एक मांगलिक तिथि।
चतुर्शमान (वि०) चारों ओर से प्रणाम। (सुद० ९६)
चतुर्णिकायः (पुं०) चार समूह देव समूह। (वीरो० १३/१६) पादौ येषां प्रणमन्ति देवाश्चतुर्णिकायकाः। (सुद० १२६)
चतुर्भागी (वि०) चार भाग वाला। (दयो० १८)
चतुर्मुख (वि०) १. चारमुख वाला, चौराहा, चारों दिशाओं का मार्ग। २. चारद्वार, ३. ब्रह्मा। (जयो० ३/७५)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चतुरिन्द्रियः (वि०) चार इन्द्रिय वाला जीव। (वीरो० १९/३५)

चतुर्वर्ग (वि०) चार समूह। (जयो० १/२४) धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। (जयो० १/३)

चतुर्वर्ण (वि०) १. चार वर्णों वाला। २. चार प्रकार के अक्षरात्मक वर्ण। (वीरो० ३/९) ३. 'ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्य-शूद्रा' (जयो० १/२४)

चतुर्वार (वि०) चार प्रकार का। (दयो० २/१)

चतुर्विंश (वि०) चौबीस, संख्या विशेष।

चतुर्विंशति (स्त्री०) चौबीस, संख्या विशेष। (भक्ति० १८)

चतुर्विंशतिक (वि०) चौबीस संख्या सहित।

चतुर्विंशतिस्तः (पुं०) चौबीस तीर्थंकरों का स्तवन।

चतुर्विध (वि०) चार प्रकार का।

चतुर्वेद (वि०) चारों वेद वाला।

चतुर्षष्टि (स्त्री०) चौंसठ। (वीरो० ३/३०)

चतुष्क (वि०) चार से युक्त, चार के समूह वाला। चतुष्टकं चतुष्पथयुक्तम्।

चतुष्कगल (वि०) गले के चार गुण। १. गान-गीत चातुर्य। (जयो० ११/४८) २. कवित्व-कल्पनाशीलत्व। ३. मृदुता-माधुर्य। सत्य-सत्यनिष्ठा।

चतुष्कपूरणं (नपुं०) चौक पूरना। (जयो० १०/९१)

चतुष्क-चक्रं (नपुं०) चार चक्र, चार संख्या चार पहिया। (जयो० १०/४५)

चतुष्कयुक्त (वि०) चारा समूह युक्त। (वीरो० १३/३)

चतुष्चक्रं (नपुं०) चार चक्र। (जयो० ८/५)

चतुष्टय (वि०) चार से युक्त, चार संख्या सहित। (सुद०)

चतुष्ट्य (वि०) चार का समूह, चार संख्या। 'पौरुषं भवति तच्चतुष्ट्यम्' (जयो० २/१०)

चतुष्टयी (वि०) चार से युक्त। श्रीमुक्त्यर्थचतुष्टयीमिति। (मुनि० ३२)

चतुष्पथ (वि०) चौराहा, समन्तमार्ग।

चतुष्पथक (वि०) चौराहा, समन्तमार्ग। (भक्ति० १४) (वीरो० १२/३५) श्री चतुष्पथक उत्कलिताय। (जयो० ४/७) चत्वारः पन्थानो यस्य नरकगत्यादयो भवन्ति। (जयो० वृ० २५/४२)

चतुष्पादः (पुं०) चार पैर, चौपाया। (दयो० वृ० ३)

चत्वरं (नपुं०) [चत्+ष्वरच्] १. चौराहा, आंगन, गोलाकृति, २. मङ्गलमण्डप।

चत्वरगः (पुं०) चौराहा। (जयो० २/१३३)

चत्वरपूरणं (नपुं०) मण्डल पूरना, रांगोली करना। (जयो० २६/४) सर्वतश्चत्वरस्य मंगल-मंडलस्य पूरणे त्वरा शीघ्रता। (जयो० वृ० २६/४)

चत्वारिंशत् (स्त्री०) चालीस, संख्या विशेष।

चत्वालः (पुं०) हवन कुण्ड।

चद् (अक०) बोलना, प्रार्थना करना।

चदिरः (पुं०) १. चन्द्र, २. कर्पूर।

चन (अव्य०) नहीं, न केवल, भी नहीं।

चन्दः (पुं०) [चन्द्+णिच्+अच्] १. चन्द्रमा, २. कपूर।

चन्दनः (नपुं०) [चन्द्+णिच्+ल्युट्] चन्दन तरु, एक सुगन्धित पदार्थ। (जयो० ९/५५) (जयो० ११/८) (सुद० ३/७) कालागुरु मलयगिरेश्चन्दनमथ नन्दनमपि (सुद० ७१) कृष्णागुरुचन्दनकर्पूरादिकमय (सुद० ७२)

चन्दनरसचर्चित (वि०) चन्दन, रस से लिपटा हुआ। (वीरो० १२/१६) सुगन्धियुक्त रस से लिपटा हुआ।

चन्दनगिरीः (पुं०) मलयपर्वत।

चन्दनः (पुं०) चन्दन तरु, सुगन्धित वृक्ष चन्दन।

चन्दनता (वि०) मलयसुगन्धपना। (वीरो० १८/४५)

चन्दनदुजः (पुं०) चन्दन वृक्ष, चन्दन तरु। (मुनि० ७)

चन्दनद्रुमः (पुं०) चन्दन वृक्ष। खदिरादिसमाकीर्णे चन्दनद्रुमवद्वने। (सुद० १२८)

चन्दनलेपः (पुं०) चन्दन का लेप। कुङ्कुमेणप्रचन्दनलेपान्। (जयो० ५/६१)

चन्दनादिः (पुं०) मलय पर्वत।

चन्दनोदकं (नपुं०) चन्दन का जल।

चन्दिरः (पुं०) [चन्द्+किरच्] १. हस्ति, हाथी। २. चन्द्रमा।

चन्दोदयः (पुं०) चन्द्र का उदय। (वीरो० २/१५)

चन्दोपलः (पुं०) चन्द्रकान्त मणि। निशासु चन्द्रोपलाभिति। (वीरो० २/१५)

चन्द्रः (पुं०) [चन्द्+णिच्+रक्] १. चन्द्रमा, २. चन्द्रग्रह, कपूर। (दयो० १/१८) ओषधिपति (जयो० १८/१८) 'द्वितीयाचन्द्रोऽष्टमीचन्द्रो (जयो० १/५५)

* कुमुद-बन्धु-(जयो० वृ० ९/५१)

* सुधाकर--(जयो० वृ० ५/६७)

* रजनीश-(जयो० वृ० ५/६७)

* सितांशु-- (जयो० वृ० १५/५१)

* रजनीकर--(शीतरश्मि ३/१५)

चन्द्रकला (स्त्री०) चन्द्र किरण। (जयो० ३/६४) (सुद०

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१/४१) चन्द्रस्य कलामिव। (जयो० १०/११८) किन्न चकोरदृशः शान्तिमयी प्रभवति चन्द्रकला सा। (सुद० ७४)

चन्द्रकाञ्चिताश्छदा (स्त्री०) शिखिपत्र, चन्द्रकान्तमणि की प्रभा। (जयो० १३/६९)

चन्द्रकान्त (वि०) चन्द्रमा की प्रभा, (जयो० वृ० २/१४) चन्द्र ज्योत्स्ना। (वीरो० २/१५) २. चन्द्रकान्तमणि। (सुद० १/२८)

चन्द्रकान्तमणिः (स्त्री०) शलोपल, चन्द्रकान्त नाम मणि। (जयो० वृ० २४/४९)

चन्द्रकान्ता (स्त्री०) रात्रि, चांदनी, ज्योत्स्ना। चन्द्र इव मनोहरा सुलोचना सैव चन्द्रकान्ता, चन्द्रकान्तमणि। (जयो० वृ० १२/६२) 'चन्द्रकान्ता न कलावता द्रुता' (सुद० ३/४१)

चन्द्रकान्तिः (स्त्री०) चांदनी। (वीरो० २२/११)

चंदगुप्तः (पुं०) चन्द्रगुप्त राजा। (वीरो० २२/११)

चन्द्रगृह (नपुं०) कर्कराशि, राशिचक्र में चौथी राशि।

चन्द्रगोलः (पुं०) चन्द्रलोक, चन्द्रमण्डल।

चन्द्रगोलिका (स्त्री०) चांद, ज्योत्स्ना।

चन्द्रग्रहणं (नपुं०) चन्द्र का राहुग्रस्त होना।

चन्द्रचञ्चला (स्त्री०) लघु मत्स्य।

चन्द्रचूडः (पुं०) शिव, महादेव। (जयो० १६/१४) 'चन्द्रश्चूडास्थाने'

चन्द्रचूडामणिः (पुं०) शिव, महादेव।

चन्द्रतुल्य (वि०) चन्द्र के समान। (जयो० १/१०)

चन्द्रदारा (स्त्री०) नक्षत्र।

चन्द्रद्युतिः (स्त्री०) १. चन्दन की लकड़ी, २. चांदनी।

चन्द्रनामन् (पुं०) कपूर।

चन्द्रपादः (पुं०) चन्द्रकिरण।

चन्द्रप्रभा (स्त्री०) चन्द्र प्रकाश।

चन्द्रप्रज्ञप्तिः (स्त्री०) चन्द्र के स्वरूप को व्यक्त करने वाला शास्त्र।

चन्द्रप्रभः (पुं०) अष्टम तीर्थंकर। (भक्ति० १८) चन्द्रप्रभं नौमि यदङ्गसारस्तं कौमुदस्तोममुरीचकार। (वीरो० १/३) कर्तुं कुवलयानन्दं सम्वद्धुं च सुखंजनैः। चन्द्रप्रभः प्रभुः स्यान्नस्तमोप्रहाणये। (दयो० १/२) १. **ज्योत्स्ना, चांदनी**। चन्द्रस्येव प्रभा ज्योत्स्ना सौम्यलेश्याविशेषोऽस्येति चन्द्रप्रभः। चन्द्रप्रभ विस्मरामि न त्वाम्। (सुद० ८९)

चन्द्रबाला (स्त्री०) १. बड़ी एला, २. चांदनी, ज्योत्स्ना।

चन्द्र बिन्दुः (स्त्री०) अनुस्वार।

चन्द्रभस्मन् (नपुं०) कपूर।

चन्द्रभागा (स्त्री०) एक नदी विशेष।

चन्द्रभासः (पुं०) तलवार, असि।

चन्द्रभूतिः (स्त्री०) चांदी, रजत।

चन्द्रमणिः (स्त्री०) चन्द्रकान्त मणि। (जयो० वृ० १५/४८)

चन्द्रमण्डल (नपुं०) चन्द्रबिम्ब। (वीरो० ५/२१)

चन्द्रमस् (पुं०) चन्द्रसम। (सुद० १००) शीता अनुष्णा कराः किरणा यस्य तद्भावं, चन्द्रमा।

चन्द्रमस् (नपुं०) चन्द्रमा, सुधाकर, शीतधाम, अमृता, सुधारश्मि, शीतकरत्व। (जयो० वृ० १६/१०) लाञ्छनेश, निशानिशान, परीयूषपात्र, अमृतभाजन, क्षपाकर, पीयूषपाद। (जयो० १५/६८)

चन्द्रमौलि (पुं०) राजा वीरबल्लाल का मन्त्री। (वीरो० १५/४१)

चन्द्ररेखा (स्त्री०) चन्द्रकला, चन्द्र किरण।

चन्द्ररेणु (स्त्री०) चन्द्रकिरण।

चन्द्रलेखा (स्त्री०) चन्द्रकला। (जयो० ३/४०)

चन्द्रलोकः (पुं०) चन्द्रकिरण।

चन्द्रलोहकं (नपुं०) चांदी, रजत।

चन्द्रवंशः (पुं०) चन्द्रकुल।

चन्द्रवदनं (नपुं०) चन्द्रमुख।

चन्द्रविचारः (पुं०) चन्द्रप्रभा। (सुद० २/४६)

चन्द्रव्रत (नपुं०) तप विशेष।

चन्द्रशाला (स्त्री०) चौबारा, अग्गासिया, अटारी, छत का ऊपरी हिस्सा, अट्टालिका। (जयो० २१/७७)

चन्द्रशालिका (स्त्री०) चौबारा।

चन्द्रशिला (स्त्री०) चन्द्रकान्तमणि।

चन्द्रसंज्ञः (पुं०) कपूर।

चन्द्रसंभवः (पुं०) इलायची।

चन्द्रहन् (पुं०) चन्द्र का राहु द्वारा ग्रस् होना। चन्द्र ग्रहण।

चन्द्रहासः (पुं०) १. असि, तलवार। २. असिधृत, चन्द्र रूपी खड्ग। (जयो० २७/२७)

चन्द्राख्यः (पुं०) चन्द्र नाम। (जयो० वृ० १/१५) (वीरो० १/१४)

चन्द्राननं (वि०) चन्द्रमुख।

चन्द्राननः (पुं०) कार्तिकेय।

चन्द्रापीडः (पुं०) शिव शंकर।

चन्द्राभासः (पुं०) चन्द्रमा का आभास होना।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चन्द्राश्मन् (पुं०) चन्द्रकान्तमणि। (जयो० १८/२३)

चन्द्रिका (स्त्री०) १. चांदनी, ज्योत्स्ना। २. मदी (जयो० ११/५३) ३. मल्लिका लता। (जयो० ३/३७)

चन्द्रिकासारिणि (स्त्री०) चन्द्रिका सार, चांदनी का सार। कौमुदीसार। (जयो० १५/६५)

चन्द्रिलः (पुं०) शिव।

चप् (सक०) सान्त्वना देना, धैर्य बंधाना।

चपल (वि०) चंचल, अस्थिर, चलायमान (सुद० १/४२) स्फूर्तिवान्, विचारशून्य।

चपल (पुं०) १. मछली, २. चारक पक्षी।

चपलता (वि०) चंचलता, अस्थिरता। तडिदिव चपलोपहितनेता। (सुद० १/४३)

चपलत्व (वि०) चाञ्चल्य, चपलता, चंचलता। (जयो० १/४८)

चपला (स्त्री०) लक्ष्मी, श्री (जयो० वृ० ६/९९) १. विद्युत, बिजली। (जयो० वृ० ६/९९) २. जिह्वा, जीभ, ३. मदिरा।

चपेटः (पुं०) [चप्+इट्+अच्] थप्पड़, चांटा।

चपेटा (स्त्री०) [चपेट्+टाप्] चांटा, थप्पड़।

चपेटिका (स्त्री०) [चपेट+कन्+टाप्-इत्वम्] थप्पड़, चांटा।

चम् (सक०) पीना, आचमन करना चाटना।

चमत्करः (स्त्री०) चमत्कार, विस्मयजन्य, आश्चर्यशील।

चमत्करणं (नपुं०) १. विश्मय जनक, आश्चर्य युक्त। (जयो० १२/१३३) २. आनन्दानुभूति। (भक्ति० १२)

चमत्कारकः (पुं०) आश्चर्य, विश्मय। (जयो० वृ० १२/१३३)

चमत्कारकर (वि०) आश्चर्य करने वाला, (जयो० वृ० १/३४)

चमत्कार-कारकः (पुं०) आश्चर्य युक्त, विचित्रता कारक, विश्मय कारक। (जयो० वृ० १/४१)

चमत्कृत् (वि०) चमत्कार करना। (जयो० ३/१९)

चमत्कृतिः (स्त्री०) आश्चर्य, विश्मय।

चमरः (पुं०) चमर, जो भगवान् की मूर्ति के पास दाएं-बाएं भाग स्थित किए जाते हैं। २. चमर हिरण विशेष भी है।

चमरी (स्त्री०) चमरी नाम गाय। चमरी नाम गोस्तेन पुच्छस्य विलोकनेन परिचालनेन बालस्वभावं केशत्वमुत शिशुत्वं वदति (जयो० वृ० ५/८५) श्री मूर्धजैः सार्धमधीरदृष्ट्या-स्तु[illegible]णः सा चमरी च सृष्ट्याम्। बालस्वभाव चमरस्य तेन वद[illegible] पुञ्छ विलोलनेन।। (जयो० ५/८५)

चमरीपुच्छ (नपुं०) चमरी गाय की पूंछ।

चमरिकः (पुं०) [चमर+ठन्] कचनार वृक्ष, कोविदार तरु।

चमरैणः (पुं०) चमरमृग, चमर नामक हिरण। (समु० ४/१४)

चमसः (पुं०) चम्मच, यज्ञपात्र।

चमू (स्त्री०) [चम्+ऊ] सेना। 'सच्चमूक्रम- समुच्चलद्रजो-व्याजतो' (जयो० २१/१४)

चमूचरः (पुं०) योद्धा, सैनिक।

चमूनाथः (पुं०) सेनापति, सेना प्रधान।

चमूपतिः (पुं०) सेनापति। अमूः समासाद्य चमूपतिः किलाधरप्रदेशे रमते स्म निस्त्रिंशः। (जयो० २४/२) चमूपति-र्दिग्विजयकाले भरतचक्रिणः सेनापतिर्जयकुमारः'

चमूसमूहः (पुं०) सेना यूथ। (जयो० ८/१)

चमूहरः (पुं०) शिव।

चम्प् (सक०) जाना, चलना, फिरना, घूमना।

चम्पकः (पुं०) १. चम्पक पुष्प, चम्पा फूल, नागकेशर। २. स्वर्ण, ३. क्लीव, नपुंसक।

चम्पकदाम (पुं०) चम्पक की पुष्पमाला। (जयो० १४/२४)

चम्पकपुष्पं (नपुं०) चम्पाफूल, नागकेशर। चाम्पेयश्चम्पके नागकेशरे पुष्पकेशो स्वर्णे क्लीब इति विश्वलोचनः। (जयो० वृ० १४/२४)

चम्पकमाला (स्त्री०) चम्पक दाम, चम्पा पुष्पों की माला।

चम्पकवृत्तं (नपुं०) चम्पा की बोड़ी। (जयो० १४/२२) करस्फुरच्चम्पकवृन्तस्य संवादमिषादेकान्तस्य। चम्पकस्य वृत्तं यत्प्रसवबन्धनम्। (जयो० वृ० १४/२२)

चम्पकरम्भा (स्त्री०) कदली विशेष।

चम्पकालुः (पुं०) [चम्पकेन पनसावयवविशेषेण अलति, चम्पक+अल+उण्] कलहल तरु।

चम्पकावती (स्त्री०) चम्पा नगरी।

चम्पा (स्त्री०) [चम्प्+अच्+टाप्] नगरी (वीरो० १५/१३) १. चम्पा पुष्प, २. चम्पा नामक नगरी। कमलानि च कुन्दस्य च जातेः पुष्पाणि च चम्पायाः। (सुद० ७१) जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में (आर्यवर्त में) अंग नामक देश था, उस अंगदेश में चम्पा नामक नगरी थी। इसका शासक छात्रीवाहन था। जिसकी रानी अभयमती थी। (सुद० ३३)

चम्पानगरं (नपुं०) चम्पा नामक नगर। (सुद० ३२)

चम्पानगरी (स्त्री०) चम्पापुरी। (सुद०)

चम्पापुरं (नपुं०) चम्पा नगर। (सुद० ३०)

चम्पापुरी (स्त्री०) चम्पानगरी। (सुद० १/२४) भुवस्तु तस्मिंल्लपनोपमाने समुन्नतं वक्रमिवानुजाने। चम्पापुरी नाम जनाश्रयं तं श्रियो निधाने सुतरां लसन्तम्।। (सुद० १/२४)

चम्पूः (स्त्री०) [चम्प्+ऊ] गद्य-पद्य मिश्रित काव्य।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

'गद्य-पद्य-मिश्रितं काव्यं चम्पूरिति। यशस्तिलकचम्पू, दयोदय चम्पू (आचार्य ज्ञानसागर प्रणीत)

चम्पूप्रबन्धं (नपुं०) चम्पू रचना, चम्पूकाव्य प्रबन्ध। तत्प्रोक्ते प्रथमो दयोदयपदे चम्पूप्रबन्धे गतः। लम्बो यत्र यतेः समागमवशाद्धिस्त्रोऽप्यहिंसा श्रितः। (दयो० वृ० १३)

चय् (सक०) छोड़ना, जाना, परित्याग करना।

चयः (पुं०) संघात, संग्रह, समूह, ढेर, समुच्चय। (जयो० ६/२४) सविभावान् इव तेजसां चयः। (जयो० १३/१२)

* चयः समूह (जयो० वृ० १३/१२)

* **प्रवाह**-'गगनापगाचयम्' गङ्गाप्रवाहम् (जयो० वृ० १३/५५)

चयनं (नपुं०) [चि+ल्युट्] १. चुनना, इकट्ठा करना, ढेर लगाना। २. देवों को अपनी सम्पत्ति से वियोग होना। चयनं कषाय-परिणतस्य कर्मपुद्गलोपदानमात्रम्।

चयनलब्धिः (स्त्री०) अग्रायणीय पूर्व का नाम।

चयवान् (वि०) संग्रह कर्ता, संग्रहवान्। 'शैलोचित-करिचयवान्' (जयो० ६/२४)

चर् (सक०) घूमना, चलना, जाना, चक्कर काटना, भ्रमण करना, चक्कर लगाना, विचरण करना। वनाद्वनं सम्व्यचरत्सुवेशः स्वयोगभूत्या पवमान एषः। (सुद० ११८) अनुद्दिष्टां चरेद् भुक्तिम् (सुद० १३२) १. अनुष्ठान करना, अभ्यास करना, उपभोग करना। २. व्यवहार करना, आचरण करना। (जयो० २७/४०)

चर (वि०) विचरण, गमनशील, गतिशील, चलने वाला।

चरः (पुं०) दूत, अनुचर। प्रेषितश्चर इतोऽवतारणहेतवेऽर्कपादयोः सुधारणः। (जयो० ७/५६)

* चरण-स्त्वार्याभूयतया चरानि भवतः सान्निध्यमस्मिन् क्रमे। (सुद० ११३)

* चर्या-चुरादूरे चरः सर्वथा (मुनि० ३)

* त्रसजीव-जीवाः सन्ति चराः किलैवमचराः सर्वे चिदात्मत्वतः। (मुनि० १३)

* दृष्टिगोचर।

* ग्रह विशेष।

चरकः (पुं०) [चर्+ल्युट्] दूत,।

* चरकसंहिता।

चरकसंहिताकारः (पुं०) वैद्य, चरकश्चासौ आर्यश्च तस्मिंस्तत्परा अनुरागिणो दूतवद् भवन्ति। चरस्य कार्ये तत्पराः परायणा भवन्ति। चश्चारे चलेऽपि चेति प्रमाणात्। (जयो० वृ० ३/१६)

चरकार्यतत्परः (पुं०) चटकज्ञाता वैद्य, भिषज। (जयो० वृ० ३/१६)

चरणचारी (वि०) पादचारी, पगविहारी।

चरणचारित्व (वि०) पादचारी। चरणाभ्यां पादाभ्यां चरतीति पादचारी, चरणचारी। (जयो० वृ० १०/८४) १. आचरणं चारित्रमिन्द्रियनिरोधादिलक्षणं चरतीति चरणचारी। (जयो० वृ० १०/८४)

चरटः (पुं०) [चर्+अटच्] खंजन पक्षी।

चरणं (नपुं०) १. पाद, पैर।

चरणः (पुं०) २. स्तम्भ, सहारा, आश्रय। ३. छन्द का चौथाई भाग। (जयो० १/५) यत्कुलीनचरणेषु च तेषु छायया परिगतेषु मतेषु (जयो० ५/२१) पृथिव्यां लीनं चरणं-मूलम्' (जयो० वृ० ५/२१) ४. गमन,गति, चलना (सुद० ९२) यतो मस्तकेन चरणं गमनं अथवा पदभ्यां समुद्धरणं भारोत्थापनं भवति। (जयो० वृ० २/११५) ५. चारित्र, आचरण। (जयो० ५/२१)

चरणकुशीलः (वि०) विद्याश्रम भूत।

चरणजः (पुं०) शूद्र (जयो० १८/५८)

चरणघातः (पुं०) पादार्दिन, पाद प्रहार। (जयो० वृ० १५/७२)

चरणग्रन्थिः (पुं०) घुटना, टखना।

चरणदेशः (पुं०) पादभू। (जयो० १२/१०४)

चरणनिकट (नपुं०) पाद सन्निकट।

चरणन्यासः (पुं०) पग, कदम।

चरणपतनं (नपुं०) विधिवत् प्रणाम, साष्टांग प्रणाम।

चरणपतित (वि०) चरणों में नम्रीभूत।

चरणणांशु (स्त्री०) चरणरेणु, चरण रज। (जयो० वृ० १/१०४)

चरणपानं (वि०) आचार-विचार करने वाला, संयमी।

चरणपुलाकः (पुं०) मूलगुण और उत्तरगुण की प्रतिसेवना।

चरणप्रान्तः (पुं०) चरणभाग, चरण समीप। (जयो० १६/६१)

चरणमुखः (नपुं०) दूत। (जयो० ५/६४)

चरणदृष्टदेशः (पुं०) एड़िया। (जयो० ११/१७)

चरणप्रसादः (पुं०) चरण सेवा, सेवाभाव। पदरीति (जयो० वृ० १/३१) (दयो० १०७)

चरणरेणु (स्त्री०) पादपांशु, चरणरज, पैरों की धूल। (जयो० वृ० १/१०४)

चरणवती (वि०) चरणों में रहने वाली। (जयो० वृ० ४/५४)

चरणविनयः (पुं०) विनत भाव।

चरणसंपर्कः (पुं०) चरणस्पर्श, पादसमन्वय।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चरणसमीपः (पुं०) चरणभक्त। (जयो० वृ० २४/७७)

चरणसेवा (स्त्री०) सेवा शक्ति, विनम्र प्रणाम।

चरण स्पर्शः (पुं०) पादसमन्वय, चरणसम्पर्क। (जयो० वृ० १/१०५)

चरणारविंदं (नपुं०) चरण-कमल (दयो० १/५१) पद-पंकज (जयो० वृ० १/९२) तेषां श्री चरणारविन्दभजनं कुर्याः किलात्मन्वरम्। (मुनि० २५)

चरणाविंदभजनं (नपुं०) पद पंकज में नमन।

चरणारविंदयुगलं (नपुं०) पद पङ्कज द्वय। (जयो० वृ० १/९२)

चरणार्चनं (नपुं०) चरणों में नमन। (मुनि० १६)

चरणामृतं (नपुं०) चरण प्रक्षालन।

चरणानुयोगः (पुं०) १. पादारविंद प्रसाद। (जयो० वृ० १/२२) २. चारित्र बोधक विधान का शास्त्र। चारित्रवार्द्धि (जयो० वृ० १९/२७) चरणादिस्तृतीय स्यादनुयोगो जिनोदितः। यत्र चर्याविधानस्य परा शुद्धिरुदाहृता।। (जैन०ल० ४३४)

चरजीवः (पुं०) त्रसजीव। (जयो० वृ० २/१२८)

चरदन्त (वि०) पाप का विनाशक, दम्भ नाशक। चरस्य दम्भस्य पापाचारस्य दुष्टान् लेशान्-चरद-भक्षयत-विनाशयत्।

चरन् (पुं०) दूत, संदेशवाहक (जयो० ३/१४४) (जयो० वृ० १२/३)

चरम (वि०) [चर्+अमच्] अन्तिम, पश्चात्वर्ती। (वीरो० १४/२) अन्त में। प्रभासनामा चरमो गणीशः श्रीवीरदेवस्य महान् गुण सः। (वीरो० ४४/१२)

चरमकालः (पुं०) अन्त समय।

चरमपौरुषः (पुं०) अन्तिम पुरुषार्थ, मोक्ष पुरुषार्थ। (जयो० वृ० १२/९)

चरमभावः (पुं०) उत्कृष्ट भाव, विशुद्धभाव।

चरमशरीरं (नपुं०) ०वज्रवृषभ नाराच संहनन युक्त शरीर। ०रत्नत्रय आराधक का शरीर।

चरमसमयः (पुं०) अन्तिम समय।

चरमाचलः (पुं०) ०अस्ताचल पर्वत। ०पश्चिम गिरि।

चरमाद्रिः (पुं०) पश्चिमी गिरि।

चरमावस्था (स्त्री०) अन्तिम अवस्था।

चरमेस (वि०) अन्तिम भागवाला।

चरमेस-ग्रीवकः (पुं०) अन्तिम ग्रैवेयक, देवलोक की ग्रैवेयक पर्याय। (समु० ५/१६)

चरसकः (पुं०) चरस, चर्मपात्र। (जयो० २/१६)

चराचरः (पुं०) चर-त्रसजीव और अचर-स्थावर जीव। (सम्य० ७/३२) (मुनि० १३) (वीरो० वृ० ३/२७) चल-अचल अचला निश्चलापि चराचरे (जयो० १/९४) चराचरमिदं सर्वं, स्वामिस्ते ज्ञानदर्पणे प्रतिबिम्बितमस्तीति, श्रद्धाति न कः पुमान्।। (समु० ७/३२)

चराश्चर (वि०) १. चरणशील, गमन युक्त। (जयो० ८/३८) २. आचरण करने योग्य

चरिः (स्त्री०) जन्तु, प्राणी।

चरिका (स्त्री०) हाथी-घोड़े का मार्ग।

चरितं (भू०क०कृ) घटित, उदाहृत्य अनुष्ठित (जयो० ९/५५) १. ऊधाया, व्याप्त, प्राप्त, ज्ञात, प्रस्तुत। २. गया हुआ, घुमाया गया।

चरितं (नपुं०) १. चरित्र, आचरण, मृत्य, कर्म, व्यवहार, अभ्यास। २. जीवनी, आत्मकथा, ऐतिहासिक विवरण।

चरित-कथा (स्त्री०) साहसिक कथा, आत्मकथा, प्रेरक कथा।

चरित-चित्रणं (नपुं०) जीवन परिचय।

चरितधर (वि०) आचरण युक्त।

चरितनायकः (पुं०) प्रेरक नायक। (जयो० वृ० ५/२७)

चरितार्थ (वि०) सफल, अभीष्ट दायक, कार्यान्वित, सम्पन्न, समाप्त।

चरित्रं (नपुं०) [चर्+इत्र] १. आचरण, व्यवहार, स्वभाव, कर्म, अनुष्ठान। हरश्चरित्रं कृतकं सभीति तस्यानुकूलास्तु कृतः प्रणीतिः। (जयो० १/३५) २. कर्तव्य, नियम। (सम्य० ५)

चरित्रचर (वि०) चारित्रधारक, आचरणशील। स्त्रीकुर्वन्विभवं भवस्य सुतरामेतच्चरित्रचर।

चरित्रमोहः (पुं०) चारित्रमोहकर्म। (जयो० ११०) (मुनि० २५)

चरित्रवेदनं (नपुं०) चरित्र का अनुभव, चरित्र का ज्ञान। 'या पुराजन्मचरित्रस्य वेदनेऽपि' (जयो० २३/८३)

चरिष्णु (वि०) [चर्+इष्णुच्] ०गमनशील, ०संचारशील, परिभ्रमणशील, इधर-उधर गमन करने वाला। (जयो० ५/१०१) उरोजसम्भूतिभिगाम्भुहुर्वा तनुं चरिष्णुः सदृशोऽप्यपूर्वाम्। (जयो० ११/४)

चरुः (नपुं०) नैवेद्य। जल चन्दन-तन्दुलकुसुमस्रक् चरुणि दीपशिखायाः। (सुद० ७२)

चर्च् (सक०) १. पढ़ाना, अभ्यास करना, अनुशीलन करना,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अध्ययन करना। २. धिक्कारना, आवृत करना, लगाना। 'मृदुचन्दनचर्चिताङ्गवानपि गन्धोदकधत्रतः स वा। (सुद० ३/७)

चर्चनं (नपुं०) [चर्च्-ल्युट्] १. उपटन लगाना, लिप्त करना। २. अध्ययन, अभ्यास।

चर्चरिका (स्त्री०) [चर्चरी+कन्+टाप्] १. चौराहे पर गाया जाने वाला गान, ताल युक्त संगीत। २. सस्वर पाठ, उत्सव, चाचर।

चर्चा (स्त्री०) [चर्च्+अङ्+टाप्] १. पूजा, अर्चना। (जयो० ६/१३२)। २. अध्ययन, अभ्यास। ३. विचार विमर्श।

चर्चिक्यं (नपुं०) [चर्चिका+यत्] उपटन, लेप, मालिश, संघर्षण।

चर्चित (भू०क०कृ०) [चर्च्+क्त] १. आलिप्त, लेप किया हुआ। (वीरो० १२/१६) २. विचारित, चिन्तनयोग्य माननीय। (सुद० ३/७)

चर्पटः (पुं०) [चृप्+अटन्] चपेटना, थप्पड़ मारना।

चर्पटी (स्त्री०) [चर्पट्+ङीष्] चपाती, रोटी।

चर्भटः (पुं०) ककड़ी, ककड़ी विशेष।

चर्भटी (स्त्री०) ककड़ी।

चर्मम् (नपुं०) ढाल।

चर्मण्यवती (वि०) चम्बल नदी।

चर्मन् (नपुं०) [चर्+मनिन्] चमड़ा, खाल त्वचा। उपर्युपात्तं ननु चर्मणा तु विचारहीनाय परं विभातु। (सुद० १०१)

चर्मकारः (पुं०) चमार, मोची।

चर्मकारिन् (पुं०) चमार, मोची, चमड़ा रंगने वाला।

चर्मकीलः (पुं०) मस्सा, अधिमांस।

चर्मखण्डः (पुं०) चमड़े का टुकड़ा।

चर्मचित्रकं (नपुं०) सफेद दाग, सफेद कोढ़।

चर्मजं (नपुं०) केश, बाल।

चर्मतरङ्गः (पुं०) झुर्री, त्वचसंकोचन।

चर्मदण्डः (पुं०) चाबुक, चमड़े से बना चाबुक।

चर्मनालिका (स्त्री०) चाबुक।

चर्मपट्टिका (स्त्री०) चमड़े का कमर बंद, बेल्ट।

चर्मपत्रा (स्त्री०) चमगादड़।

चर्मपादुका (स्त्री०) जूता, पादत्राण।

चर्मपाशः (पुं०) गण्डकचर्मखण्ड, चमड़े की ढाल, चर्म कवच। धृतः क्षत्रत्राणकचर्मपाशः। (जयो० २७/२७)

चर्मप्रभेदिका (स्त्री०) मोची की रांपी।

चर्मप्रवेशकाः (पुं०) कमर बंद, बेल्ट, चमड़े की पट्टिका। कमरबन्ध।

चर्ममुण्डा (स्त्री०) दुर्गा देवी।

चर्मयष्टिः (स्त्री०) चाबुक।

चर्मवसनं (नपुं०) चर्मवस्त्र।

चर्मवाद्यं (नपुं०) ढोल, तबला, मृदङ्ग, नगाड़ा।

चर्मसंभव (स्त्री०) बड़ी इलायची।

चर्मसमाश्रय (पुं०) चर्म पादत्राण युक्त। स चर्मसमाश्रयो यदिता कुतः स्यात्तस्य वा न हिंमा। (सुद० १०९)

चर्मस्थ (वि०) चमड़े से युक्त।

चर्मावृत (वि०) चमड़े से आच्छादित। (सुद० १२०) (लि० सं० ४७)

चर्मिक (वि०) [चर्मन्+ठन्] ढाल से सुसज्जित।

चर्मिन् (वि०) १. ढाल से आवृत, ढाल युक्त, २. केला ३. भूर्ज तरु।

चर्मोपसृष्ट (वि०) चमड़े में रखे हुए। चर्मोपसृष्टं च रसोदकादि विचारभाजा विभुवा न्यगादि। (सुद० १२९)

चर्या (स्त्री०) [चर्+यत्+टाप्] ०चाल, ०क्रिया, ०प्रवृत्ति, ०व्यवहार, ०भ्रमरी वृत्ति (जयो० वृ० २३/४६) ०अनुष्ठान, ०विधि, ०नियम, ०परिशीलन-विचार दृष्टि।

चर्यानिमित्तं (नपुं०) चर्या का हेतु। (सुद० ११९)

चर्यापरायण (पुं०) चर्या में निपुण (वीरो० १/१०५)

चर्य्या (स्त्री०) अवस्था-यो वै चचार समदृग्वृढयोगचर्य्याम्

चर्व् (सक०) ०चबाना, ०कुतरना, ०खाना, ०निगलना, ०काटना, ०कर्तन करना, ०चूसना, ०स्वाद लेना, ०चखना।

चर्वणं (नपुं०) चबौना, कुतरना, खाना, चार्वी (जयो० १३/७२) आचमन करना, चखना, स्वाद लेना। नष्ट करना-पापस्य चर्वणं (जयो० वृ० २६/३१) 'पुमान् विधिचर्वणम्' (जयो० २५/४६)

चर्वा (स्त्री०) थप्पड़, तमाचा।

चल् (अक०) हिलना, कांपना, चलायमान, धड़कना, स्पंदन होना। सर्वेऽपि चेलुः, समुदायवित्ताः (वीरो० १४/१७) चलना (सुद० १२३) मन्दं मन्दमचलत्-(जयो० वृ० १/८९) आस्तदा सुललितं **चलितव्यम्** - (जयो० ४/७)

चल (वि०) [चल्+अच्] चलना, हिलना, कांपना। (जयो० वृ० १/९४)

चलकर्णः (पुं०) वास्तविक दूरी।

चलचञ्चुः (स्त्री०) चकोर पक्षी।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चलदलः (पुं०) अश्वस्थ वृक्ष।

चलनं (नपुं०) चरण, पाद, पैर। 'स्वयं लघुत्वाच्चलनैकहक्का' (जयो० २०/८१)

चलनकं (नपुं०) छोटा लहंगा।

चलनैकहक् (नपुं०) चरणसन्नीत दृष्टि, चरणों में संलग्न दृष्टि। (जयो० वृ० २०/८१)

चलातङ्कः (पुं०) गठिया बा., रोग, गठानों में होने वाला रोग।

चलात्मन् (वि०) चलचित्र, चलायमान मन।

चलाचलं (नपुं०) चञ्चल, चपल, अस्थिर। (जयो० २५/४)

चलित (भू०क०कृ०) आन्दोलित।

चलेन्द्रिय (वि०) चञ्चल इन्द्रिय, विषसाक्त इन्द्रिय।

चलेषुः (पुं०) लक्ष्यहीन धनुर्धर।

चलोष्ठ (वि०) चलायमान होंठ। (जयो० १३/११)

चष् (सक०) १. खाना, ग्रहण करना। २. चोट पहुंचाना।

चषकः (पुं०) [चष्+क्वुन्] सुरापात्र, मदिरा पात्र, पानपात्र, (जयो० १६/३६) जलपात्र, शकोरा। चषके पानपात्रे- (जयो० वृ० २/२०)

चषकार्पित (वि०) दानपात्रार्पित, जल को परोसने वाली। निपपौ चषकार्पित न नीरं जलदायाः प्रतिबिम्बितं शरीरम्। (जयो० १२/२०)

चषालः (पुं०) [चष्+आलच्] छत्ता।

चाकचक्यं (नपुं०) चमक, कान्ति, प्रभा।

चाकचिक्यं (नपुं०) चेष्टा। चारिभैरिङ्गिनै चाकचिक्यादिभिश्चेष्टादिभिः। (जयो० वृ० ३/८०)

चाक्र (वि०) चक्र से किया जाने वाला प्रहार, मंडलाकार युद्ध।

चाक्रिक (वि०) चक्र पर काम करने वाला, चक्राकार-कार्य करने वाला कुम्हार, तेली।

चाक्रिकः (पुं०) कुम्हार, तेली, सारथि, चालक।

चाक्रिणः (पुं०) कुम्हार पुत्र।

चाखवः (पुं०) चूल्हा। निधंग मगा किं विधेयं करोतूत सा साम्प्रतं चाखवे यद्वदौतुः। (सुद० ९५)

चाक्षुष (वि०) [चक्षुस्+अण्] दृष्टि पर निर्भर, दृष्टिगत, दृष्टि रखने वाला।

चाक्षुषं (नपुं०) चक्षु सम्बन्धी ज्ञान।

चाक्षुषज्ञानं (नपुं०) चक्षु इन्द्रिय जन्य प्रमाण, साक्षात् प्रमाण।

चाङ्गः (पुं०) १. अम्ललोणिका शाक, २. दन्त स्वच्छता।

चाञ्चल्य (वि०) [चञ्चल+ष्यञ्] चपलता, अस्थिरता, विलोलता, फरकना। (जयो० वृ० ९/१३) चाञ्चल्यपक्ष्मारनुमन्यमाना दोषाकरत्वं च मुखं दधाना। (वीरो० ३/२३)

चाटः [चट्+अच्] चाटुकार, विश्वास जमाने वाला, ठग।

चाटुः (स्त्री०) ठग, चाटूकार, चापलूस, मधुरालापी।

चाटुकारः (पुं०) चापलूस, मीठी मीठी बातें करने वाला।

चाटुवचनम् (पुं०) चाटुकारी वचन। (सम्० ३/४२)

चाणक्यः (पुं०) कौटिल्य शास्त्र प्रणेता, नागर राजनीति का पण्डित।

चाणरः (पुं०) कंस का सेवक।

चाण्डालः (पुं०) १. पतित, अधम, नीच, दुष्ट। (वीरो० १७/२२) (सुद० १०५) २. वृषल, शूद्र-वृषलश्चाण्डाल इति-(जयो० वृ० १/४०) ३. मातङ्ग-(दयो० ४९) 'मातङ्गः यद्यपि वयं चाण्डालः'

चाण्डालचेत् (पुं०) मातंग हृदय। (सुद० १०७)

चाण्डालिका (स्त्री०) चण्डाल की स्त्री, मातङ्ग स्त्री।

चाण्डाली (स्त्री०) १. चण्डाल की स्त्री, एक भाषा, प्राकृत के स्वरूप को लिए हुए। २. रीति विशेष।

चातकः (पुं०) चातक, पपीहा, चकवा। (सुद० १/४३, २/५०) (दयो० २०) कलिङ्ग इव चातकपक्षीव (जयो० वृ० ६/२१) 'चातको मेघानां वर्षणमपेक्षते' (जयो० वृ० ६/२१) 'चिरात्पतच्चातकचञ्चुमूले' (वीरो० ४/१९)

चातकगेहिनी (स्त्री०) चकवी, पपीहा पत्नी। (दयो० २०)

चातकानन्दनः (पुं०) वर्षाऋतु, मेघ, बादल।

चातकी (स्त्री०) चतकी, चातकगृहिणी। महिषी नरपालस्य चातकीवोदिताम्बुदम्। (सुद० ९९)

चातनं (नपुं०) [चत्+णिच्+ल्युट्] हटाना, क्षति पहुंचाना।

चातुर (वि०) योग्य, प्रवीण, बुद्धिमान्, मधुरभाषी।

चातुरक्षं (नपुं०) चार गोटी, पांसे, चौपड़ खेल।

चातुरी (वि०) दक्षता, बुद्धिमानता।

चातुर्दशं (नपुं०) राक्षस।

चातुर्मासः (पुं०) चातुर्मास, वर्षावास। (वीरो० १२/३६) पञ्चम्या नभतः प्रकृत्य भवतादर्जस्विनी या ह्यमा तावद् घरस्त्रशतवृधौ निवसतादेकत्र लब्ध्वा क्षमां। एतस्मिन्भवति स्वतोऽवनिरियं प्राणिव्रजैराकुला संजायेत ततोऽर्हतां सुमनसोऽसावुज्जजृम्भे तुला।। (मुनि० ५१) साधु को चाहिए कि वह सावन वदी पञ्चमी से लेकर कार्तिक की अमावस्या करता हुआ एक स्थान पर निवास करे, क्योंकि इस समय में पृथ्वी स्वयं जीवों के समूह से व्याप्त हो जाती है। इसके बाद वह

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अर्हन्तों के मन के समान निर्मल हो जाती है। यद्यपि चातुर्मास श्रावण कृष्णा प्रतिपदा से कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा तक होता है, इसलिए यहां सावन कृष्ण पञ्चमी से कार्तिक की अमावस्या तक सर्वथा आवागमन निषेध के लिए जानना।

चातुर्मासिक (वि०) वर्षावास सम्बन्धी।

चातुर्य (वि०) १. वाक्कौशल, कुशलता, दक्षता, प्रवीणता, बुद्धिमत्ता। (जयो० १६/४३) २. वैदग्ध-(जयो० वृ० ११/४०) 'यत्परप्रीत्या स्वकार्यसाधनम्' दूसरे को प्रसन्न करके जो अपना कार्य सिद्ध किया जाता है। ३. लावण्य, सौन्दर्य, रमणीयता।

चातुर्यपरम्परा (स्त्री०) चातुर्याम पद्धति -पार्श्वनाथ की शिक्षा पद्धति। (वीरो० ११/४४)

चातुर्यामः (पुं०) पार्श्वनाथ कालीन मत।

चातुर्वर्ण्य (नपुं०) [चतुर्वर्ण+ष्यञ्] चार वर्ण वाला धर्म।

चातुर्विध्यं (नपुं०) चार प्रकार, सामूहिक रूप।

चात्वालः (पुं०) [चत्+वालच] १. दर्भ, कुश। २. हवनकुण्ड।

चान्दनिक (वि०) [चन्दन+ठक्] चन्दन से निर्मित, सुगन्धि द्रव्य जिसमें चन्दन का समावेश हो।

चान्दीचय (वि०) चन्द्रिका का छिटकना। (वीरो० ४/८)

चान्द (वि०) [चन्द्र+अण्द्] चन्द्रमा

चाद्रकः (पुं०) अदरक, सोंठ।

चान्दमस् (पुं०) चन्द्रमा, शशि, निशाकर, सुधाकर।

चान्दमासः (पुं०) चन्द्रमा की तिथि के अनुसार गिना जाने वाला माह। चन्द्र के संचार से उत्पन्न होने के कारण चन्द्रमास कहलाता है।

चान्द्रायणं (नपुं०) प्रायश्चित्तात्मक तपश्चर्या।

चान्द्रायणिक (वि०) [चान्द्रायण+ठञ्] चान्द्रायण व्रत पालक।

चान्द्रीकला (स्त्री०) चन्द्रकला, चन्द्रमा की मनोहर कला। चान्द्रीं कलां दृष्ट्वा स्त्रियः पुरुषैः संगन्तुमातुरा बभूव।' (जयो० १६/८४)

चापं (नपुं०) [चप्+अण्] १. धनुष (जयो० २/१५) 'युद्धस्थले चापगुण प्रणीतिर्येषां' (वीरो० २/४१) २. वृत्त की रेखा, ३. धनुराशि।

चापलं (नपुं०) [चपल+अण्] चंचलता, अस्थिरता, विचारशून्यता, यदपि चाप लापं ललाम ते-(जयो० ३/१२) २. दुर्गति, ३. अश्व का अड़ियलपन।

चापलता (स्त्री०) १. धनुष लता, धनुर्लता (सुद० ७६) 'चाप एव लता सेव धनुर्यष्टिरिव' चपल एव चापलस्तस्य भावश्चापलता चाञ्चल्यं तदिव भूत्वा (जयो० वृ० १२/९३), २. वक्रता, तिरछापन वांकापन (सुद० १/४२) चापलतेव च सुवंशजाता गुणयुक्ताऽपि वक्रिमख्याता। (सुद० १/४२)

चापल्ली (स्त्री०) धनुष लता। 'कौटिल्यमेतत्खलु चापवल्ल्याम्' (सुद० १/३४)

चापविद्या (स्त्री०) धनुर्विद्या, धनुर्वेदित। 'सा चापविद्या नृपनायकस्य' (वीरो० ३/८)

चापल्य (वि०) चंचलता, अस्थिरता, अड़ियलपन, लोल्य। (जयो० वृ० २३/२८)

चापल्यचारु (वि०) सहजचंचल। चपलायां चारुस्तं सहजचंचलं (जयो० वृ० १७/४३)

चापार्थ (वि०) धनुष् काण्डार्थ। (जयो० ५/८४)

चापि (अव्य०) और भी, वैसे भी, तथापि, फिर भी, तो भी (जयो० १/१२) फिर भी। (सुद० ९५)

चामरः (पुं०) [चमर्याः विकारः तत्पुच्छनिर्मितत्वात्] चंवर (वीरो० २१/१८) राजा के उभय ओर पंखे की तरह हिलाए जाने वाले चमर। पतन् पार्श्वे मुहुर्यस्य चामराणां चयो बभौ। (जयो० ३/१०३)

चामरग्रहाः (पुं०) चमर युक्त।

चामरग्राहिन् (वि०) चमर ढुलाने वाली सेविका।

चामरग्रहिणी (स्त्री०) चमर ढुलाने वाली सेविका।

चामरचारः (पुं०) चमर ढुलना, चमर का संचार। चमरीबालगुच्छानां चारः प्रचारो बभौ। (जयो० वृ० ५/६६)

चामरपुष्पः (पुं०) पूगनाग तरु, सुपारी का वृक्ष।

चामर पुष्पकः (पुं०) १. सुपारी का पेड़। २. केतकी लता, ३. आम्रवृक्ष।

चामरिन् (पुं०) [चामर+इनि] अश्व, घोड़ा।

चामलसम्पदः (पुं०) चामर शोभा (जयो० २६/१६)

चामीकरं (नपुं०) [चमीकर+अण] धतूरे का पौधा, स्वर्ण, सोना। चामीकर चारुरुचिः सिंहासनवद्वरिष्ठः सः।

चामुण्डराजः (पुं०) राजा, नृप (वीरो० १५/४८) (वीरो० ४/५२)

चामुण्डा (स्त्री०) दुर्गा रूप।

चाम्पेयः (पुं०) स्वर्ण, सोना। (जयो० १४/२४) १. चाम्पेयश्चम्पके नागकेशरे पुष्पकेशरे स्वर्णे क्लीव इति विश्वलोचनः। (जयो० वृ० १४/२४)

चाम्पेय रुचिः (स्त्री०) १. स्वर्ण प्रभा, स्वर्ण कान्ति। चाम्पेयस्य

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुवर्णस्य रुचिरिव रुचि:। (जयो० वृ० १४/२४) २. चम्पक पुष्प कान्ति। चम्पकपुष्पाणां दाम माला रुचिं (जयो० वृ० १४/२४)

चाय् (सक०) १. निरीक्षण करना, पहचानना, देख लेना। २. पूजा करना।

चार: (पुं०) [चर्+घञ्] १. घूमना, परिभ्रमण करना। २. गति, मार्ग, प्रगति। (सम्य० २२) संचार (वीरो० २/१)

चारक: (वि०) [चर्+णिच्+ण्वुल्] भेदिया, ग्वाला, दूत। १. अश्वारोही, सवार। २. चारको बन्धनगृहम्-बन्धनगृहं। बन्दीगृह।

चारण: (पुं०) [चर्+णिच्+ल्युट्] भ्रमणशील, तीर्थयात्री १. नर्तक, भांड, स्तुतिपाठक (जयो० वृ० ३/१७) गन्धर्व, गवैया, भाट। २. ऋद्धि विशेष। चरणं गमनम् तद् विद्यते तेषां ते चारणा:'

चारणऋद्धि: (स्त्री०) अतिशय गमनशील ऋद्धि, जिसके प्रभाव से साधु अतिशय युक्त गमन समर्थ होते हैं। 'अतिशायिचरणसमर्थाश्चारणा:'

चारणार्द्धिक (वि०) चारण ऋद्धिधारी (समु० ४/१८)

चारतीर्थ: (पुं०) दूतशिरोमणि। (जयो० ७/६२)

चारदृक् (पुं०) गुप्तचर, दूत। चारा गुप्तचरा एव दृष्टि:। (जयो० वृ० २३/३)

चारित्रं (नपुं०) १. आचरण, शुद्ध विचार, विशुद्ध आचरण, (सम्य० ८४) मोह-क्षोभ रहित आत्मा का परिणाम। पुण्य-पाप का परिहार, विरतिभाव। चरत्यनिन्दितमनेति चरित्रं क्षयोपशमरूपम्, तस्य भावश्चारित्रम्। (जैन०ल० ४३७) २. सच्चरित्रता, ख्याति, रीति, अच्छाई, उचिताचरण सदाचरण, विशिष्ट आचार। ३. पञ्चाचार रूप में प्रसिद्ध चरित्र, ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चरित्राचार, तपाचार और वीर्याचार।

चारित्रधर्म: (पुं०) प्राणातिपातनिवृत्ति रूप धर्म।

चारित्रपण्डित: (पुं०) पञ्चविध चारित्र में से किसी एक में प्रवीण।

चारित्रबाल: (पुं०) चारित्र से रहित प्राणियों को चारित्रबाल कहा जाता है।

चारित्रशक्ति: (स्त्री०) चारित्र स्तवन, विशुद्धाचरण का गुणगान। पञ्चाचार में चारित्राचार भी एक भक्ति का रूप है। जो महाव्रती, समितिपालक, गुप्तियों से गुप्त पञ्चविध चारित्र के धारी होते हैं, उनके चारित्रगुणों की भक्ति चारित्रभक्ति है। (भक्ति संग्रह वृ० ७-९०)

चारित्रमोह: (पुं०) चारित्र मोहनीय कर्म। (सम्य० १२०)

चारित्रमोहनीय (वि०) चारित्र मोह वाला जो बाह्य और आभ्यन्तर क्रियाओं की निवृत्तिरूप चारित्र को मोहित करता/विकृत करता है।

चारित्रवार्द्धि: (स्त्री०) चरणानुयोग की वृद्धि। (जयो० १९/२७)

चारित्रविनय: (पुं०) समिति, गुप्ति आदि में प्रयत्नशील रहना, चारित्र का श्रद्धान करना, इन्द्रिय एवं कषाय के व्यापार का निरोध करना। इन्द्रिय-कषायाणां प्रसर निवारणं इन्द्रिय कषाय-व्यापारनिरोधनं इति चारित्राविनय:।' (कार्तिकेयानुप्रेक्षा टी० ४५६)

चारित्रसंवर: (पुं०) चारित्र का संवरण, चारित्र में लगने वाले नवीन कर्मों को रोकना।

चारित्राचार: (पुं०) पापक्रिया की निवृत्ति रूप परिणति। हिंसादिनिवृत्ति परिणतिश्चारित्राचार:। (भ०आ०टी० ४१९) 'पापक्रियानिवृत्ति-परिणतिश्चारित्रचार:' (भ०अ०टी० ४६)

चारित्राराधना (स्त्री०) तेरह प्रकार के विशुद्ध चारित्र का आचरण, इन्द्रियसंयम और प्राणि असंयम का परित्याग।

चारी (वि०) विचरणशील। 'स्वभावत: सद्विभवाय चारी। (जयो० २७/१)

चारु (वि०) रमणीय, मनोहर, सुन्दर, निरोग। (सुद० १२१) (जयो० वृ० १/६९) एकोऽस्ति चारुस्तु यस्य सा रुग्दारिद्र्यमन्यत्र धनं यथारुक् (सुद० १२१) २. प्रगल्भ, प्रतिष्ठित, अभीष्ट, प्रिय, मनोज्ञ। 'वचश्च चारु प्रवरेषु तासां' (जयो० १६/४४) ३. उत्तम-मुनीश: सच्चारुचकोर चन्द्रमस् (समु० ४/२०)

चारुकुच: (पुं०) उन्नत कुच, उभरे हुए कुच। 'चारु कुचौ यस्या सा' (जायो०वृ० १२/१२१)

चारुघोण (वि०) सुन्दर नाक वाला।

चारुतर (वि०) आत्मकल्याण से युक्त। तत: सदा चारुतरं विधातुं विवेकिनो हृत्सततं प्रयातु।

चारुदत्त: (पुं०) नाम विशेष। (वीरो० १७/२) (सुद० १२१)

चारुदर्शनं (नपुं०) प्रियदर्शन, लावण्यावलोकन।

चारुदृष्टि: (स्त्री०) चंचल दृष्टि, चपल दृष्टि।

चारुधारा (स्त्री०) शची, इन्द्राणी

चारुनेत्र (वि०) चंचलनेत्र, सुन्दर दृष्टि वाणी।

चारुपरिवेश: (पुं०) सुन्दर प्रसाधन, अच्छे परिधान, रमणीय वस्त्राभूषण।

चारुफला (स्त्री०) अंगुर लता।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चारुलोयणा (वि०) सुंदर नेत्रों वाली।

चारुवर्धना (वि०) लावण्ययुक्त मुख।

चारुवक्त्र (वि०) सुन्दरता बढ़ाने वाली।

चारुव्रता (वि०) उन्नत व्रत करने वाली।

चारुशिला (स्त्री०) रत्न, कीमती पत्थर।

चारुशील (वि०) कान्त प्रकृति, सदाचरण युक्त।

चारुहासिन् (वि०) मधुर मुस्कान वाली।

चार्चिक्यं (नपुं०) [चर्चिका+ष्यञ्] उपटन, लेप, सुगन्धित प्रसाधन।

चार्म (वि०) [चर्मन्+अण्] चमड़े से निर्मित, चर्माच्छादित।

चार्मण (वि०) चमड़े से ढका हुआ।

चार्मिक (वि०) चमड़े से निर्मित।

चार्मिणं (नपुं०) [चर्मिन्+अण्] कवचधारियों का समूह।

चार्वाक: (पुं०) लोकायत दर्शन। [चारु लोकसम्मतो वाको वाक्यं यस्य] जो पृथ्वी आदि भूततत्त्वों को मानता है। (जयो० वृ० २६/९३) वीरो० २०/१६

चार्वी (स्त्री०) [चारु+ङीप्] १. सुंदर स्त्री, २. ज्योत्स्ना, ३. बुद्धि, प्रज्ञा, ४. प्रभा, कान्ति, दीक्षित। ५. कुबेर की प्रिया।

चाल: (पुं०) [चल्+ण] छत, १. गृहों के समूह, २. नीलकण्ठ पक्षी। ३. चलना, संचालन करना। (सम्य० २२)

चालक: (पुं०) [चल्+ण्वुल्] दुर्दान्त हाथी।

चालनं (नपुं०) [चल्+णिच्+ल्युट्] चलना फिरना, घूमना, संचरण, परिभ्रमण, हिंडन।

चालनी (स्त्री०) चलनी, छनणी आटा छानने का उपकरण।

चालनीसमान: (पुं०) चलनी के समान। दिए गए सूत्रार्थ का चलनी के समान विस्मृत होना।

चालयति - चलायमान करता है। (जयो० ६/६२)

चालयतिका (भू०) चलाया गया। चालयतिका भिषकर्त्री सती चालस्य छद्मनो यतिका विश्रमो यत्र। (जयो० वृ० ६/६२)

चालित (भू०क०कृ०) [चल्+क्त] चलाया गया, प्रकम्पित, प्रस्तारित। (जयो० वृ० ६/७७, सुद० ३/२३)

चालितवती (वि०) आगे चलने वाली। (जयो० ६/३२)

चाष: (पुं०) [चष्+णिच्+अच्] नीलकण्ठ पक्षी।

चि (सक०) १. चुनना, संचय करना, बीनना, इकट्ठा करना, २. जड़ना, खचित करना, मढ़ना, भरना।

चिकित्सक: (पुं०) वैद्य, डाक्टर, निदानक, व्यथाहर (जयो० २६/१०१) * भिषक।

चिकित्सा (स्त्री०) [कित्+सन्+अ+टाप्] उपचार, निदान, स्वस्थ करना, औषध सेवन करना। (दयो० १/८) (जयो० १६/८) (वीरो० ११/)

चिकिल: (पुं०) [चि+इलच्] पङ्क, कीचड़, कर्दम।

चिकीर्षा (स्त्री०) [कृ+सन्+अ+टाप्] कामना, वाञ्छा, इच्छा, भावना, अभिलाषा।

चिकीर्षित (वि०) [कृ+सन्+क्त] इच्छित, अभिलषित, चाहत वाञ्छित, इच्छुक।

चिकुर (वि०) [चिइत्यव्यक्त शब्दं करोति चि+कुर्+क] चंचल, चलायमान, अस्थिर, कम्पमान, स्थिर नहीं रहने वाला।

चिकुर: (पुं०) १. सिर केश, सिर के बाल। (जयो० १८/९४) २. पर्वत, पहाड़। ३. रेंगने वाला सर्प।

चिकुर निकर: (पुं०) बालसंमूह, केशराशि। (जयो० १८/९४)

चिकूर: (पुं०) केश, बाल।

चिक्क: (पुं०) [चिक् इति अव्यक्त शब्देन कायति शब्दायते-चिक्+कै+क] छछूंदर।

चिक्कण (वि०) चिकना, चमकदार, स्निग्ध, तैल युक्त, फिसलन युक्त।

चिक्कवणता (स्त्री०) चिकनापन। (समु० ८/१०)

चिक्कणा (स्त्री०) सुपारी वृक्ष।

चिक्कस: (पुं०) [चिक्क्+असच्] जौ का आटा।

चिक्का (स्त्री०) चिकना, स्निग्ध।

चिक्किर: (पुं०) [चिक्क्+इरच्] मूसक, चूहा।

चिक्किनलिद (वि०) ताजगी, तरावट, तरी।

चिच्चित् (वि०) चिन्ता युक्त। (जयो० ८/८३)

चिञ्चा (स्त्री०) १. इमली का पेड़। २. घुंघची तरु।

चिष्टिक: (पुं०) पीपीलिका, चींटी। (जयो० वृ० ५/६२)

चिट् (सक०) भेजना, प्रेषित करना।

चित् (सक०) १. देखना, अवलोकन करना। २. जानना, समझना, सतर्क करना।

चित् (स्त्री०) [चित्+क्विप्] १. विचार, मन, प्रज्ञा, बुद्धि, समझ, ज्ञान, समझदार, प्रत्यक्षस्थित (जयो० ३/२२) २. आत्मा, जीव, चेतना, (जयो० २६/९२)

चित (भू०क०कृ०) [चि+क्त] एकत्रित, संग्रह किया हुआ, संचित, प्राप्त, गृहीत।

चितनिशा (स्त्री०) गहन अन्धकार, मन का आवरण। (सुद० ७२) 'हति: स्याच्चितनिशाया:'

चितसम्मति (स्त्री०) ०गहन सम्मति ०प्रत्यक्ष विचार ०बुद्धिजन्य विचार। (विरो० २०/८)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चिता (स्त्री०) [चित+टाप्] चितिका, चिता जहां मुर्दे को लकड़ियों के ढेर में रखा जाता है।

चितिग्निः (स्त्री०) शव को अग्नि।

चितिः (स्त्री०) [चि+क्तिन्] १. ढेर, समूह, पुंज। २. चिता, ३. आयताकार स्थान। ४. अम्बार, टाल।

चितिका (स्त्री०) [चिता+कन्+टाप्] १. चिता, २. करधनी।

चित्त (वि०) [चित्+क्त] चित्त दिया गया, प्रत्यक्ष किया गया, देखा गया, सोचा गया, मनन किया गया। २. अभिप्रेत, इच्छित, वाञ्छित, अभिलषित। (सम्य० ४५)

चित्तं (नपुं०) १. देखना, २. मनन करना, मन लगाना, विचार, चिन्तन। 'चित्तं तिकालविसयं' आत्मनः परिणाम-विशेषः। ३. अभिप्राय, उद्देश्य। ४. आत्मा (जयो० १/२२) * ५. मन, विचार, हृदय (सुद० १०४) 'मनाङ् न चित्तेऽस्यपुनर्विकारः (सुद० ९९) ६. निर्मुक्त-वल्गन-विमोचलनं तुरङ्गं स्वैरं निरङ्कुशमिवातिशयान्मतङ्गम्। श्रीपञ्जरादरणवाच्च विचारपूर्णं चित्तं जनः स्ववशमानयतात्तु तूर्णम्।। (दयो० ४०)

चित्तचारिन् (वि०) दूसरे की इच्छा पर चलने वाला।

चित्तजः (पुं०) चित्त में उत्पन्न प्रेमभाव, आवेश, रति।

चित्तजन्मन् (पुं०) प्रेम, रति, आवेश।

चित्तज्ञ (वि०) मन की बात जानने वाला।

चित्तधारक (वि०) चित्त/मन लगाने वाला, 'सुखमालभतां चित्तधारकः परमात्मनि' (सुद० १२८)

चित्तनाशः (पुं०) अचेत अवस्था, बेहोशी।

चित्तनिवृत्तिः (स्त्री०) संतोष, प्रसन्नता। शांतवृत्ति।

चित्तपरिणतिः (स्त्री०) मति, बुद्धि। (जयो० वृ० ६/८३)

चित्तप्रसाद (वि०) आनन्द, हर्ष।

चित्तप्रसन्नता (वि०) हर्षभाव युक्त।

चित्तभा (स्त्री०) मनोवृत्ति, प्रकाशकार्त्री, चित्तदीप्ति। मच्चित्तभानामसुदेवतापि' (जयो० २२/८३) चित्तभा मम चेतसि प्रकाश कर्त्री, सूर्यकान्तसदृशी। (जयो० वृ० २०/८३)

चित्तभित्ति (स्त्री०) मन की परत।

चित्तभू (पुं०) कामदेव। 'प्रेरितः सपदि चित्तभुवा यदञ्चति। (जयो० ५/४)

चित्तभेदः (पुं०) ०मन मुटाव, ०विचार मतभेद, ०असंगति, ०अस्थिरता।

चित्तमोहः (पुं०) मन में मोह, मुग्धता भाव, प्रेमभाव, आसक्ति भाव।

चित्तलेश (वि०) तत्पर चित्त वाले, मन में मोक्ष चिन्तन करने वाले। प्रवर्त्तनायोद्यताचित्तलेशतः सङ्कम्प्यते सन्नु मुदे गणेशः। (भक्ति० ११)

चित्तविक्षेपः (पुं०) उदासमन, व्याकुल मन।

चित्तवित्तः (पुं०) हृदयगत भाव। (जयो० ७/८२)

चित्तविधिः (स्त्री०) मनोवृत्ति, मनोदशा। (सुद० ३/४२)

चित्तविप्लवः (पुं०) मानसिक क्लेश, व्याकुलता, मूर्च्छाभाव, आसक्ति भाव, असंतोष, चित्त भ्रंश, उन्मत्तता।

चित्तविभ्रमः (पुं०) मानसिक क्लेश, चित्तभ्रंश, उदासीनता।

चित्तविश्लेषः (पुं०) मित्रता का अभाव, मैत्री भंग।

चित्तवृत्तिः (स्त्री०) मन की विचारधारा, रुचि, भावना, स्वभाव, मन का अभिप्राय।

चित्तवेदना (नपुं०) मानसिक असंतोष, मनोमालिन्य, मन में कुढ़ता, कष्ट, चिन्ता, उद्वेग, व्याकुल भाव।

चित्तवैकल्यं (नपुं०) मन की व्यग्रता।

चित्तहारिणी (वि०) चित्ताकर्षिणि, चित्त को आकर्षित करने वाली। जनानां चित्तहारिण्यो गणिका इव भित्तिका। (जयो० ८/८०)

चित्तानुरक्तिः (स्त्री०) मानसिक अनुराग। 'वित्ताद्यर्जनहेतवे च य इमे चित्तानुरक्तिस्तवाः' (मुनि० २२)

चित्तानुवर्तिन् (वि०) अनुरंजनकारी, अनुराग युक्त।

चित्तापहारक (वि०) आकर्षक, मनोनुकूल, मनोज्ञ, सौन्दर्ययुक्त, मनोहारी, मोहक।

चित्तापहारिन् (वि०) आकर्षक, मनोज्ञ, मनोनुकूल, मनोहारी।

चित्तभोगः (पुं०) मानसिक प्रसन्नता, मनस्कार। (जयो० वृ० ३/१०६)

चित्तासङ्गः (पुं०) चित्ताकर्षक, अनन्य, अनुराग, अत्यधिक प्रेम, प्रीतिभाव।

चित्तोल्लासः (पुं०) मानसिक शान्ति, हर्ष, आनन्द, मन में प्रसन्नता। (जयो० वृ० ९/७८)

चित्तोल्लिखित (वि०) हृदयांकित, मन में उत्कीर्ण, हृदय में प्रविष्ट। (वीरो० वृ० २/१३)

चित्र (वि०) [चित्र्+अच] १. उज्ज्वल, स्वच्छ, साफ, स्पष्ट, २. चितकबरा, विचित्र, नाना रूप वाला। (जयो० ६/११०) ३. आश्चर्यजन्य, विस्मयकारी, इत्येतच्चित्रमाश्चर्यकरणं न हि (जयो० ११/१७)

चित्रः (पुं०) चित्र, रंग, वर्ण।

चित्रं (नपुं०) छायाचित्र, चित्रकारी, आलेखन। १. नानाकार (जयो० वृ० ३/७९)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चित्रं (अव्य०) अहो! कैसा विस्मय। क्या अद्‌भुत बात।

चित्रकः (पुं०) तिलक। (जयो० ६/३०)

चित्रकरुचिः (स्त्री०) तिलक शोभा। 'चित्रक नाम तिलकं तस्य रुचिं शोभां व्रजति। (जयो० वृ० ६/३०)

चित्रकण्ठः (पुं०) कबूतर।

चित्रकथालापः (पुं०) रोचक कथा श्रवण, मनोरंजन कथा सुनना।

चित्रकम्बलः (पुं०) नाना प्रकार के वर्णों वाली झूल, हाथी की झूल, रंगों से परिपूर्ण कालीन, गलीचा।

चित्रकरः (पुं०) चित्रकार, अभिनेता।

चित्तकर्मन् (नपुं०) सजाना, अलंकृत करना, चित्र बनाना, प्रदर्शन करना, जादूगरी दिखलाना।

चित्रकायः (पुं०) चीता, चित्तल।

चित्रकारः (पुं०) रंगकर्मी।

चित्रकूटः (पुं०) पर्वत विशेष।

चित्रकृत् (पुं०) चित्रकार, चित्रकर्मी, रंगकर्मी।

चित्रक्रिया (स्त्री०) चित्रकारी, कलाकृति।

चित्रखचित (वि०) चित्र से युक्त, चित्रित, चित्र में बने हुए। 'चित्रेषु खचितानि लिखितानि' (जयो० वृ० ५/१०)

चित्रग (वि०) विचित्र, उल्लिखित, चित्रांकित।

चित्रगत (वि०) चित्र में अंकित, उल्लिखित।

चित्रगुप्तः (पुं०) यमराज का लेखाधिकारी।

चित्रगृहं (नपुं०) १. रंगशाला, नाट्यशाला। २. विचित्र गृह।

चित्रचेष्टा (स्त्री०) मूर्त चेष्टा, चित्र रचना। प्रसरन्मृदुपल्लवेष्टया सुलताङ्गीकृतचित्रचेष्टा। (जयो० १०/१४) 'चित्रस्य युवति प्रतिमूर्तेश्चेष्टा' (जयो० वृ० १०/१४)

चित्रजल्पः (पुं०) विविध वार्तालाप, नाना प्रकार से कथन।

चित्रता (वि०) शबलता। (जयो० ६/३८)

चित्रत्वच् (पुं०) भूर्जतरु।

चित्रदण्डकः (पुं०) कर्पास पादप, कपास का पौधा।

चित्रन्यस्त (वि०) चित्रित, रेखांकित।

चित्रपक्षः (पुं०) तीतर।

चित्रपटः (पुं०) आलेख, तस्वीर, छायाकृति, छायांकन।

चित्रपद (वि०) विविध रूप मे विभक्त, ललित पदावली, सुन्दर पदावली।

चित्रपादा (स्त्री०) मैना, सारिका।

चित्रपिच्छकः (पुं०) मयूर, मोर।

चित्रपृष्ठः (पुं०) चटिका, चिड़िया।

चित्रफलकं (नपुं०) चित्रपटल, चित्र रखने का काष्ठफलक।

चित्रबर्हः (पुं०) मयूर।

चित्रभानु (पुं०) १. सूर्य, वह्नि। चित्रभानुरिनेऽनले इति विश्व-लोचनः' इन सूर्य इत्यर्थः (जयो० २४/९९) (जयो० १५/२५)

चित्तिस्थिति (स्त्री०) १. परमात्मस्थिति (जयो० २/१२२) २. मदार पादप, ३. भैरव।

चित्रभित्तिः (स्त्री०) चित्र युक्त भित्तियां, विविध चित्रों से खचित दीवाल। चित्र भित्तिषु समर्पितदृष्टौ तत्र शश्वदपि मानवसृष्टौ। (जयो० ५/१९)

चित्रमण्डलः (पुं०) सर्प विशेष।

चित्रमाला (स्त्री०) एक राजपुत्री, चक्रपुर के राजा अपराजित की पुत्री। (समु० ६/१८)

चित्रमृगः (पुं०) चितकबरा हिरण।

चित्रमेखलः (पुं०) मयूर, मोर, चित्रबर्ह, चित्रपिच्छक।

चित्रयोधिन् (पुं०) अर्जुन का एक नाम।

चित्ररथः (पुं०) सूर्य, रवि। १. नाम विशेष।

चित्रल (वि०) चितकबरा।

चित्रलेख (वि०) सुन्दर रूप रेखा वाला, अत्यन्त सुंदर रेखा।

चित्रलेखकः (पुं०) चित्रकार।

चित्रलेखा (स्त्री०) नाम विशेष, प्रसिद्ध राजकन्या।

चित्रविचित्रं (स्त्री०) नाना प्रकार के वर्ण वाला।

चित्रविद्या (स्त्री०) चित्रकला।

चित्रसंस्थ (वि०) चित्रित।

चित्रहस्तः (पुं०) हाथ की विचित्र स्थिति।

चित्रा (स्त्री०) [चित्र्+अच्+टाप्] १. नक्षत्र विशेष, २. चित्रा नामक स्वर्ग अप्सरा। (जयो० वृ० १८/७४)

चित्रामः (स्त्री०) मैना, सारिका।

चित्राख्यात् (पुं०) विचित्र शोभा। चित्रो विचित्र इति ख्यातो या भा किरणः। (जयो० वृ० २२/१६)

चित्रान्नं (नपुं०) पीत, लाल वर्णादि युक्त अन्न, पीले चावल।

चित्रानुरूपः (नपुं०) नानावर्ण। (जयो० २५/१२५)

चित्रापूपः (पुं०) विविध व्यञ्जनों से परिपूर्ण पुएं, पुड़ी।

चित्रार्पित (वि०) चित्रित।

चित्रारंभः (वि०) चित्रित।

चित्रोक्तिः (स्त्री०) सुष्ठुवचन युक्त कथन/उपदेश।

चित्रोदतः (पुं०) पीत-चावल, पीले अक्षत।

चित्रोल्लिखित (वि०) चित्रयुक्त। 'बभूव चित्रोल्लिखितेव गोचरा' (जयो० २३/३३)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चिद् (पुं०) चैतन्य, जीव। (सम्य० ३१)

चिद्गुणं (नपुं०) चैतन्य गुण, चेतना लक्षण। बोध: स्फूर्जति चिद्गुणो भवति य: प्रत्यात्मवेद्य: सदा। (मुनि० १४)

चिद्गुणलब्धि: (स्त्री०) चैतन्य गुण की प्राप्ति। भव्यानितास्ताविकवर्त्म नेतुं नमामि तांश्चिद्गुणलब्धये तु। (भक्ति० १)

चिद्विलासी (वि०) ज्ञानानन्दस्वभावी। नित्योऽहमेक: खलु चिद्विलासी। (भक्ति० २६)

चिदंकश: (पुं०) ज्ञान का अंश। (सम्य० १०९)

चिदात्मत्व (वि०) चैतन्यत्व। जीवा सन्ति चरा: किलैवमचरा सर्वे चिदात्मत्वत:। (मुनि० १३)

चिदानन्द: (पुं०) चैतन्य स्वरूप आत्मा, ज्ञानस्वाभावी आत्मा। (सुद० १२१)

चिदानन्दसमाधि: (स्त्री०) ज्ञानानन्द समाधि, उत्कृष्ट सम्यक् भाव। (सुद० ४/३)।

चिदेकपिण्ड: (पुं०) एक ज्ञान शरीरी आत्मा। चिदेकपिण्ड: सुतरामखण्ड: (भक्ति० ३१)

चिन्त् (अक०) सोचना, विचार करना, हृदार्तिमेतार्मनुचिन्तयन्त:' (वीरो० १४/१४) ०चिन्तन करना, ०मनन करना, ०चिन्ता करना। 'तव आनन्दाय एव वयं चिन्तयाम: (वीरो० ५/७) 'तदेतदाकर्ण्य पिताऽप्यचिन्तयत्' (सुद० ३/४२) २. मन लगाना, ध्यान देना। वस्तुतो यदि 'चिन्त्येत चिन्तेत: कीदृशी पुन: ३. खोज करना, याद करना। (जयो० १०/३०) ४. सम्मान करना।

चिन्तयात्-संचय करें। (मुनि० २७)

चिन्तनं (नपुं०) विचारना, सोचना, (सम्य० ११५) ध्यान लगाना, एकाग्र करना। (जयो० वृ० १/३४) इति तच्चिन्तनेनैवाऽऽकृष्ट: सागरदत्तवाक्। (सुद० ३/४३)

चिन्ता (स्त्री०) [चिन्त्+णिच्+अङ्+टाप्] चिन्तन, (सम्य० ११६) मनन, ध्यान, विचार। चित्ते चिन्ता ध्यानकरणम्। (जयो० वृ० १/२२) चित्ते चेष्टवियोगानिष्टसंयोगजनिता चिन्ता भवेत्। (जयो० वृ० १/२२) २. दु:ख (जयो० वृ० ९/५) चिन्तनं चिन्ता (स०सि० १/१३) 'चिन्ता अन्त:करणवृत्ति:' (त० वा० ९/२७)

चिन्ताकर्मन् (नपुं०) चिन्ता करना, चिन्तनशील कार्य, मनन करने योग्य कर्म, ध्यान देने लायक कर्म।

चिन्ताज्ञानं (नपुं०) चिन्तन करने योग्य ज्ञान, ज्ञानादित्रयात्मक रत्नत्रय का ज्ञान।

चिन्तातुर: (पुं०) चिन्ता से व्याकुल। (दयो० १९)

चिन्तातुमनस् (वि०) चिन्ता से व्याकुल मन वाला। अनेन चिन्तातुरमानसा तु सा विपद्य च व्याघ्रि अभूदहो रुषा। (समु० ४/८)

चिन्तापर (वि०) चिन्तनशील, ध्यान करने वाला।

चिन्ताभाव: (पुं०) चिन्तन परिणाम, चिन्तन भाव।

चिन्तामणि: (पुं०) काल्पनिक रत्न। (जयो० ८/९१) चिन्तामुक्त करने वाला रत्न। चिन्तारत्न, जिससे मनोकामना भी पूर्ण होती है। वसुधैककुटुम्बिनाथ साऽऽगादुतचिन्तामणिमार्श्रित: विचारात्। (जयो० १२/८७) सर्वेभ्य: सर्वस्वदायकेन राज्ञा दरिद्रतायै चिन्तामणिर्दत्त इति भाव:। (जयो० वृ० १२/८७) भाग्यतस्तमधीयानो विषयाननुयाति य:। चिन्तामणिं क्षिपत्येष काकोड्डायनहेतवे।। (सुद० १२८)

चिन्तारत (वि०) चिन्ता युक्त, चिन्तन में तत्पर, आत्म-चिन्तन में लीन। सम्विग्न: स्वतनोश्च साधुरधुना स्वात्मीय चिन्तारत:। (मुनि०वृ० १८)

चिन्तारत्नं (नपुं०) चिन्तामणि। (दयो० १०१)
दुर्लभं नरजन्मापि नीतं विषयसेवया।
चिन्तारत्नं समुत्क्षिप्तं काकोड्डायनहेतवे।। (दयो० वृ० ९/१)

चिन्तावेश्मन् (नपुं०) परिषद् गृह, मन्त्रणाभवन।

चिन्ताहर (वि०) चिन्ता को हरण करने वाला।

चिन्ताहारी (वि०) चिन्ताहरण करने वाला।

चिन्तिडी (स्त्री०) इमली वृक्ष।

चिन्तित (वि०) [चिन्त्+क्त] विचार किया हुआ, सोचा गया, चिन्तन किया गया।

चिन्तिति: (स्त्री०) सोच, चिन्तन, विचार, मनन, ध्यान।

चिन्त्य (स०कृ०) [चिन्त्+यत्] चिन्तन करने योग्य, सोचने योग्य।

चिन्मय (वि०) [चित्+मयट्] १. आत्मिक, तात्त्विक, बौद्धिक।

चिन्मयं (नपुं०) परमात्मा, विशुद्धज्ञानमय।

चिपट (वि०) चिपटी नाक वाला।

चिपट: (पुं०) चपटा किया गया।

चिपिटक: (पुं०) चिउड़ा, पोहे, चावल के पोहे।

चिबु (स्त्री०) ठोडी।

चिबुकं (नपुं०) ठोडी।

चिमि: (स्त्री०) तोता।

चिर (वि०) [चि+रक्] दीर्घकालीन, बहुत समय से चला आया। (सुद० १००)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चिरकार (वि०) दीर्घकालीन, दीर्घसूत्री, परम्परागत।

चिरकारिक (वि०) दीर्घकालीन, दीर्घसूत्री।

चिरकारिन् (वि०) प्राचीनतम्, बहुत समय का।

चिरकालः (पुं०) बहुत समय, प्राचीन काल, दीर्घसमय, लम्बा अन्तराल।

चिरकालिक (वि०) चिरकाल से चला आया, बहुप्रतीक्षित।

चिरकालीन् (स्त्री०) बहुत समय से समागत। (मुनि० ३०)

चिरजात (वि०) पूर्व में उत्पन्न, बहुत समय से उत्पन्न हुआ।

चिरक्षुधित (वि०) बहुत भूखी, बहुत क्षुधा वाली। (दयो० २०)

चिरञ्जीव (वि०) दीर्घायु वाला।

चिरञ्जीविन् (वि०) दीर्घजीवी।

चिरटंकारः (पुं०) लम्बा उद्घोष।

चिरतपस्वी (वि०) अधिक तप वाला।

चिरदानं (नपुं०) ०अत्यधिक दान ०उचित दान, ०अपरिमित वस्तु का देना।

चिरदानी (वि०) अत्यधिक दान देने वाला।

चिरध्यानं (नपुं०) बहु समय तक ध्यान।

चिरनमन् (वि०) अधिक नम्रशील, प्रणतभाव।

चिरपरिचित (वि०) बहुत समय से परिचय वाला।

चिरपाप (वि०) अधिक पाप, पाप की बहुतायत।

चिरपुण्यं (वि०) उचित पुण्य, शुभभाव की अधिकता।

चिरपुष्पः (पुं०) बकुल का फूल।

चिरभ्रान्तिः (स्त्री०) चिरकालीन भ्रान्तियां, बहुत समय के भ्रम। (मुनि० ९०) स्वाध्यायः परमात्मबोध दियादेक उश्चिरभ्रान्तिहृत्। (मुनि० ३०)

चिरमेहिन् (पुं०) गधा, गर्दभ।

चिररज (वि०) दीर्घ कालीन रज युक्त, दीर्घकालीन कर्म युक्त।

चिररजनी (स्त्री०) लम्बी रात।

चिरत्न (वि०) [चिरे भवः-चिर+त्न] पुराना, प्राचीन।

चिरन्तन (वि०) [चिरम्+ल्युट्-तुट् च] पुराना, पुरातन, प्राचीन।

चिरविप्रोषित (वि०) दीर्घ समय से बाहर रहने वाला, प्रवासी।

चिरसंचित (वि०) बहुत समय से संगृहीत, चिरोच्चित। (जयो० वृ० १/७५)

चिरसुप्त (वि०) बहुत समय से सोया हुआ। (दयो० ३०)

चिरस्थ (वि०) चिरस्थायी, बहुत समय तक रहने वाली।

चिरस्थायिन् (वि०) चिर समय तक रहने वाली, स्थायी, टिकाऊ दृढ़। (जयो० ६/७५)

चिरायुस् (वि०) लम्बी आयु/उम्र वाला।

चिरारोधाः (पु०) अधिक रोग, दृढ़ घेरा, चक्राकार रोक।

चिरिः (पुं०) तोता।

चिरोच्चित (वि०) चिरसंचित, बहुत समय से संगृहीत। चिरेण बहुकालेन उच्चिता, संगृहीतोऽसिः। (जयो० वृ० १/७५)

चिर्भटी (स्त्री) [चिर+भट्+अच्+ङीप्] ककड़ी, भटकचरिया।

चिल् (सक०) वस्त्रधारण करना, परिधान पहनना।

चिलमीलिका (स्त्री०) १. जुगनू, २. विद्युत, ३. चमकीला हार, गले का आभूषण।

चिलाति (पुं०) राजा, कोटिवर्ष के स्थान का राजा (वीरो० १५/२०)

चिल्ल् (अक०) ढीला होना, शिथिल होना।

चिल्लः (पुं०) चील, गृद्ध पक्षी।

चिल्लिका (स्त्री०) [चिल्ल्+इन्+कन्+टाप्] झींगुर।

चिह्नं (नपुं०) [चिह्न+अच्] अंक (जयो० वृ० ६/२१) लांछन, निशान, पहचान, प्रतीक, लक्षण, संकेत, इंगित, आकार।

चिह्नकारिन् (वि०) चिह्न लगाने वाला, दाग लगाने वाला। डरावना।

चिह्नधर (वि०) लक्षण धारी।

चिह्नपत्रं (नपुं०) चिह्न युक्त पत्र, मुद्रित पत्र।

चिह्नलोकः (पुं०) आकार, संस्थान, द्रव्य, गुण और पर्यायों के आकार। जं दिट्ठं संठाणं दव्वाण गुणाण पज्जयाणं च। चिण्हलोगं वियाणाहि अणंतजिणदेसिदं (मूला० ७/५०)

चिह्नितं (वि०) लांछित, लक्षण वाला, पहचान वाला, मुद्रांकित, संकेतित।

चीच्चक्रु (भू०) चीत्कार करने लगे।

चीच्चीत्कार-(भूतकालिक)-चीत्कार करने लगे। (जयो० ८/५)

चीत्कारः (चीत्+कृ+घञ्) भयंकर गर्जन, तीव्र गर्जना, अधिक कोलाहल, विशेष क्रन्दन। स्फीत्कारचीत्कारपरम्। (जयो० २७/१८)

चीत्कृत (वि०) चिंघाड़ वाला। अथो रथानामपि चीत्कृतेन छन्नः प्रणादः पटहस्य केन। (जयो० ८/२३)

चीनः (पुं०) [चि+नक्-दीर्घः] चीन देश।

चीनांशुकं (नपुं०) चीन में निर्मित वस्त्र।

चीनाकः (पुं०) [चीन+अक्+अण्] कपूर।

चीरं (नपुं०) १. वस्त्र, परिधान, कपड़ा। (सुद० २/११) (वीरो० ३/४१) २. धजी, चिथड़ा, फटा कपड़ा। ३. वल्कल। ४. चारलड़ी वाला हार। ५. दर्पण, सीसा

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चीरपरिग्रहः (वि०) वस्त्रधारी, वल्कलधारी।

चीरिः (स्त्री०) १. अक्षी आवरण, आंख की पट्टी। २. झींगुर, ३. झालर, गोट।

चीरिका (स्त्री०) झींगुर।

चीर्ण (वि०) पालित, अनुष्ठित, बनाया गया, अधीत, विभाजित।

चीलिका (स्त्री०) झींगुर।

चीव् (सक०) पहनना, ओढ़ना, ग्रहण करना, लेना, पकड़ना।

चीवरं (नपुं०) १. वस्त्र, परिधान, कपड़ा, २. चिथड़ा, फटा वस्त्र, जीर्ण वस्त्र। ३. वल्कल। ४. भिक्षुक परिधान।

चीवरिन् (पुं०) भिक्षुक।

चु (पुं०) चवर्ग। (जयो० वृ० १/३९)

चुक्क (पुं०) चूक, छूटना।

चुक्कारः (पुं०) [चुक्क्+अच्] सिंह दहाड़, सिंह गर्जना।

चुक्रः (पुं०) [चक्र्+रक्] अमल वेंत।

चुक्रं (नपुं०) अम्लता, खटास।

चुक्रा (स्त्री०) इमली का वृक्ष।

चुक्रिमन् (पुं०) [चुक्र+इमनिच्] खट्टापन।

चुचुकः (पुं०) घुंडी, अव्यक्त शब्द।

चुञ्चुः (पुं०) प्रख्यात, प्रसिद्ध।

चुण्टा (स्त्री०) पोखर, छोटा कूप।

चुत् (अक०) चूना, टपकना, रिसना।

चुता (स्त्री०) गुदा।

चुद् (सक०) १. भेजना, प्रेरित करना, हांकना, धकेलना। २. प्रश्न करना, प्रस्तुत करना, प्रोत्साहित करना, निर्देश देना, फेंकना।

चुन्दी (स्त्री०) [चुन्द्+अच्+ङीष्] दूती, कुटनी।

चुप् (अक०) चुप रहना, चलना, चुपचाप खिसकना।

चुबकः (पुं०) ठोडी।

चुम्ब् (सक०) चूमना, चुम्बन करना, आलिंगन करना। अधरोष्ठं चुम्बति (जयो० वृ० १२/७७)

चुम्बः (पुं०) चूमना, चुम्बन।

चुम्बकः (वि०) [चुम्ब+ण्वुल्] १. चूमने वाला, कामासक्त, कामुक।

चुम्बकः (वि०) चुम्बक पत्थर, चकमक।

चुम्बतितरा (वि०) चूमता हुआ, चूमने में तत्पर हुआ। (जयो० वृ० ४/५६)

चुम्बनं (नपुं०) वटक, चूमना। (सुद० ९९) 'अतो वटकं चुम्बनमपि देहि' (जयो० १२/१२४) (सुद० १२३) 'सातिरेक-चुम्बनादिचेष्टोप देष्टुश्च' (जयो० ० १/७८)

चुम्बनदानं (नपुं०) वटक दान, चूमने का आदान-प्रदान परस्पर में चुम्बन करना। (जयो० १२/१२४)

चुम्बिः (स्त्री०) चूमा, चूमना। 'क्षीरोदपूरोदर-चुम्बितीरे' (सुद० २/११)

चुम्बिचन्द (वि०) चन्द्र की तरह चुम्बन। (जयो० २६/१३)

चुम्बित (वि०) चूमा गया, आलिंगन किया गया, चुम्बन किया गया। सुकपोले समुपेत्य चुम्बितः। (सुद० ३/११) सञ्जायते चुम्बितं (सुद० वृ० १०३)

चुर् (सक०) लूटना, चुराना, वहन करना, रखना, अधिग्रहण करना, धारण करना।

चुरा (स्त्री०) १. चोरी, चौर्यकर्म। (जयो० १६/२५) (जयो० २/१२५) २. चवर्ग एव रा धनं यस्याः सा चुरा। चतुरता, चिपुणता। (जयो० वृ० ११/७८)

चूरादूरः (पुं०) अचौर्य, अचौर्यव्रत। चोरी से दूर रहने वाला साधु नित्यं पादपकोटरादिषु वशेदन्यानपेक्षिष्ववथा- प्युद्भिन्ना-दितयोज्झितेषु च चुरादूरे चरः सर्वथा। (मुनि० ३)

चुरिः (स्त्री०) [चुर्+कि] लघु कूप।

चुलूकः (पुं०) [चुल्+उकज्] हथेली भर जल, ०चुल्लु।

चुलुकायते-चुल्लु में समा गया। (जयो० १/१०२)

चुलुकिन् (पुं०) [चुलुक+इनि] सूंस, उलूपी।

चुलुम्प् (अक०) झूलना, डोलना, हिलना, दोलायमान होना, आन्दोलित होना।

चुलुम्पः (पुं०) [चुलुम्प्+घञ्] पुचकारना, बच्चों को प्यार देना।

चुलुम्पा (स्त्री०) [चुलुम्प+टाप्] बकरी।

चुल्ल् (अक०) खेलना, क्रीड़ा करना।

चुल्लि (स्त्री०) चूल्हा। (दयो० ९३)

चुल्ली (स्त्री०) चूल्हा।

चूचुकं (नपुं०) घुण्डी, शब्द विशेष। (सुद० २/४५)

चूडकः (पुं०) [चूडा+कन्] कूप, कुंआ।

चूडा (स्त्री०) १. बालों की चोटी, चुटिका। २. कलगी, मोर का उपरिभाग। ३. मुकुट, उष्णीष। ४. सिर, शिखर, चोटी, कूट, चौबारा। ५. **चूलिका**-अनुयोग विषयों का संग्रह।

चूडाकरणं (नपुं०) मुण्डन संस्कार।

चूडाकर्मन् (नपुं०) मुण्डन संस्कार।

चूडामणिः (स्त्री०) मुकुटमणि, शिरमोरमणि, शीर्षफूल।

चूडार (वि०) शिखा युक्त, कलगीदार।

चूडारत्नं (नपुं०) चूडामणि, शीर्ष फूल, श्रेष्ठ अलंकरण।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चूतः (पुं०) १. आम्रतरु, २. कामदेव।

चूतं (नपुं०) गुदा।

चूतकः (पुं०) आम्रतरु। चूतकरस्याम्र वृक्षः (जयो० १०/११७)

चूतदार (वि०) आम्रदायिनी। (जयो० १२/१२७)

चूतोचित (वि०) आम्र सदृश। चूत इवोचितश्चूतोचितः (जयो० १६/३८)

चूरचूरा (स्त्री०) चूरमा, बाटी का शर्करा युक्त चूरा। (जयो० वृ० ६/१२)

चूर्ण् (सक०) पीसना, चूर्ण करना, मसलना, रगड़ना। चूर्णयाञ्चकार (जयो० वृ० ७/१०८)

चूर्णः (पुं०) चून, आटा, सुगन्धित द्रव्य, चन्दन चूरा। चूर्णस्य पिष्टविशेषस्य (जयो० वृ० १६/४६) चूर्णो यव-गोधूमादीनां सक्तुकणिकादि।

चूर्णं (नपुं०) चूना, खड़िया, सेटक।

चूर्णकः (पुं०) सत्तू, आटा, चूना।

चूर्णकार (वि०) चूना बनाने वाला।

चूर्णखण्डः (पुं०) रेत समूह, कंकण।

चूर्णनं (नपुं०) [चूर्ण+ल्युट्] कुलचना, पीसना।

चूर्णदोषः (पुं०) आहार उत्पादन के दोष।

चूर्णपारदः (पुं०) सिंदूर, अबीर।

चूर्णपिण्डः (पुं०) भोज्य वस्तु की प्राप्ति।

चूर्णमुष्टिः (स्त्री०) चूर्ण की मुष्टि। 'वशीकारकचूर्णमुष्टिः' (जयो० १६/४६) चूर्णस्य पिष्टविशेषस्य मुष्टिरिव मोहनाय जयेत्। (जयो० वृ० १६/४६)

चूर्णिः (स्त्री०) [चूर्ण+इन्] चूरा, चूर्ण किया गया।

चूर्णिका (स्त्री०) [चूर्ण+ठन्+टाप्] सत्तू, पिसा हुआ धान्य। अतिसूक्ष्माऽतिस्थूल-वर्जितं मुद्ग-माष-राजमाष-हरि-मंथ-कादीनां दलनं चूर्णिका (त० वा० ५/२४)

चूर्णित (वि०) चूर्ण किया गया, पीसा गया, चूर-चूर किया गया।

चूलः (पुं०) केश, बाल।

चूला (स्त्री०) चोटी, शिखर, कूट, छत, गृह का ऊपरी भाग, पर्वतशृंखला। २. धूमकेतु शिखा।

चूलिका (स्त्री०) १. चोटी, शिखर, ऊपरी भाग। (दयो० १८, वीरो० २/११) २. अनुयोग-ग्रन्थ के सूचित अर्थों की विशेष प्ररूपणा प्राकृत में विश्लेषण। जाए अत्थपरूवणाए कदाए पुव्वपरूविदत्थम्मि सिस्साणं णिच्छमो उप्पजदि सा चूलिया त्ति होदि। (धवल) ११/४०) २. गणना भेद, ३. रेखा (जयो० १२/५) 'मस्तकचूलिकाभ्यदारैः' (जयो० १२/५)

चूलिकाङ्गं (नपुं०) गणनाभेद-चौराशीलाख नयुतों का एक चूलिकाङ्ग।

चूष् (सक०) पीसना, चूसना। चुचूष सद्यश्चतुरस्तमत्यादरेण चूतोचितकं सूदत्या। (जयो० १६/३८) चुचूषास्वादितवान् (जयो० वृ० १६/३८)

चूषणं (नपुं०) [चूष्+ल्युट्] चूसना, चोंखना। (जयो० १२/१२७)

चूषा (स्त्री०) १. चूसना, २. मेखला, ३. चमड़े की तंग।

चूष्यं (नपुं०) [चूष्+ण्यत्] चूसने योग्य पदार्थ।

चेकितानः (नपुं०) शिव।

चेटः (पुं०) [चिट्+अच्] विट, भृत्य।

चेटकः (पुं०) चेटक राजा, वैशाली राजा। वैशल्या भूमिपालस्य चेटकस्य समन्वयः पूर्वस्मादेव वीरस्य मार्गमालौकि-नोऽभवत्।। (वीरो० १५/१९)

चेटिका (स्त्री०) सेविका, दासी, चेटी। (जयो० वृ० १२/१११) (सुद० १५/१९) विवाहित पत्नी के अतिरिक्त रखी हुई अन्य स्त्री। पत्नी पाणिगृहीता स्यात्तदन्या चेटिका मता।। (लाटी सं०)

चेटी (स्त्री०) दासी, सेविका। (सु० ९२) इत्युक्ताऽथ गता चेटी श्रेष्ठिनः सन्निधिं पुनः। (सुद० ७७)

चेतकोऽपि (अव्य०) कोई भी चेतना (वीरो० १९/४२) (सम्य० १३४)

चेतन (वि०) सजीव, जीवित, अन्तःकरण, मन, आत्मा, सचेत।

चेतनकः (पुं०) चेतनता, ज्ञानात्मक, प्रज्ञा, ज्ञान, बुद्धि। (वीरो० १४/२६) (जयो० २५/५५)

चेतनत्व (वि०) चेतनता।

चेतना (स्त्री०) ज्ञान, संज्ञा, बुद्धि, मति, प्राण, तत्त्व। (सुद० १९) विचार-'इहास्या इति चेतनाऽ भवत्। (समु० २/१४) (सम्य० १४३)

चेतनात्मन् (पुं०) विचारभृत। (जयो० २४/१८)

चेतस् (नपुं०) [चित्+असुन्] १. चेतना, चित्त ज्ञान, २. मन, आत्मा, हृदय। (सुद० १०३, जयो० ३/१) अन्तःकरण (जयो० ४/४४) ३. विचार, चिन्तन, मनन। वाढं चेत्त्वमिहासि कुत्सितमतिर्युक्ता क्षतिस्ते तदा। (मुनि० १४) को जानाति कदा तदेतु विलयं तस्मात्स्वतश्चेद् भवेत् (मुनि० १११) हृदय (जयो० ३/५४)

चेतदा (वि०) चैतन्यता, आत्म भावत्व। (जयो० वृ० १/२२)

चेतपततः (पुं०) चित्त रूपी पक्षी।

चेतभु (पुं०) प्रेम।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चेतविकारः (पुं०) क्षोभ, राग, द्वेष, मन का संवेग।

चेता (स्त्री०) हृदय, चेतना। (सुद० १/४३)

चेतोमत् (त्रि०) [चेतष+मतुप्] जीवित।

चेतोवृत्तिः (स्त्री०) मनश्चेष्टा। (जयो० ६/९०)

चेद् (अव्य०) यदि, फिर भी, यद्यपि, तो भी। (भक्ति० २५)

चेदात्मन् (पुं०) चैतन्य आत्मा (मुनि० १३)

चेदि (पुं०) चेदि नामक वंश।

चेद्यथा (अव्य) जैसा कि (सुद० १३४)

चेय (वि०) [चि+यत्] संग्रह करने योग्य।

चेल् (अक०) हिलना, क्षुब्ध होना, कांपना, चलना।

चेलं (नपुं०) [चिल+घञ्] वस्त्र, कपड़ा, १. दुष्ट, क्रूर।

चेलक (वि०) वस्त्रधारी।

चेलाञ्चलः (पुं०) वस्त्र प्रान्त, वस्त्र का हिस्सा। चेलानां वस्त्राणामञ्चलैः वस्त्रप्रान्तः' (जयो० १४/८७)

चेलालङ्कारः (पुं०) वस्त्राभूषण। (सुद० ११५)

चेलिका (स्त्री०) [चेल+कन्+टाप्] चोली, अँगिया।

चेष्ट् (अक०) हिलना, चेष्टा करना, सक्रिय होना, संघर्ष करना, प्रयत्न करना, अनुष्ठान करना, व्यवहार करना, गतिशील होना।

चेष्टकः (पुं०) [चेष्ट्+ण्वुल्] रतिबंध, संभोग की पद्धति।

चेष्टनं (नपुं०) [चेष्ट्+ल्युट्] गति, चेष्टा, प्रयत्न, प्रयास, अनुष्ठान, सक्रिय।

चेष्टा (स्त्री०) १. गति, प्रयत्न, प्रयास, अनुष्टान, संघर्ष। अनेकवारं पुनरित्यथेष्टा समस्ति संसारिण एव चेष्टा। (सम्य० ४६) २. **आज्ञा**- 'सेवकस्य चेष्टा सुखहेतुः' (सुद० ९२) ३. व्यवहार-'चेष्टा स्त्रियां काचिदचिन्तनीया' (सुद० १०७)

चेष्टित (भू०क०कृ०) [चेष्ट्+क्त] क्रियाशील, गतिशील, कर्मक्रिया, व्यवहार प्रक्रिया।

चेष्टितं (नपुं०) [चेष्ट्+क्त+ल्युट्] चेष्टा, कर्म, गति, क्रिया, 'मदनोदारचेष्टितम्' (सुद० ८३)

चेष्टोपदेष्टु (वि०) चेष्टावाला, प्रयत्नशील, प्रयासरत। (जयो० वृ० १/७८)

चैतन्यं (नपुं०) [चेतन+ष्यञ्] चेतना, प्राण, जीव, जीवन, संवेदन, प्रज्ञा, संज्ञा। (मुनि० २६)

चैतन्यता (वि०) चैतन्य से तन्मयता, आत्म तल्लीनता। (मुनि० २६)

चैत्तिक (त्रि०) [चित्त+ठक्] मानसिक, बौद्धिक।

चैत्यः (पुं०) स्मारक, धार्मिक स्थान, गृह में पूजा स्थान, अर्हद् बिम्बस्थान। (जयो० २४/४) देवालय, जिनालय, मन्दिर। 'चैत्यनामर्हद्बिम्बानां' (जयो० २४/४) 'चितेः लेप्यादिचयनस्य भावः कर्म वा चैत्यम्'

चैत्यगृह (नपुं०) चैत्यालय।

चैत्यनिकेतनं (नपुं०) अर्हद्बिम्बस्थान, चैत्यालय 'चैत्यानामर्हद्-बिम्बानां निकेतनं स्थानं (जयो० वृ० २४/४) वर्षेषु वर्षान्तर पर्वतेषु, नन्दीश्वरे यानि च मन्दरेषु, जले स्थले क्वाप्युदले गुहानां, चैत्यानि वन्दे जिनपुङ्गवानाम्। (भक्ति० ३४)

चैत्यशक्तिः (स्त्री०) चैत्यालयों की अर्चना/वन्दना।

स्वमुद्रया शान्तिमुदाहरन्ति,
साम्यं जना आशु समाचरन्ति।
यतः किलातोपरुषोः स्थलानां,
चैत्यानि वन्दे जिनपुङ्गवानाम्।' (भक्ति० ३६)

चैत्यप्रशंसा (स्त्री०) चैत्य में स्थित बिम्ब की स्तुति।

चैत्यवर्ण (नपुं०) चैत्य प्रशंसा।

चैत्यवृक्षः (पुं०) सिद्धार्थ तरु, कृत-कृत्य तीर्थंकरों की प्रतिमाओं से पवित्र किए गए वृक्ष।

चैत्यालयः (पुं०) देवालय, मन्दिर मूर्ति के पवित्र स्थान।

चैत्यावर्णवादः (पुं०) कुयुक्ति पूर्वक प्रतिमाओं की निन्दा।

चैत्यासनं (नपुं०) प्रतिबिम्ब की तरह आसन, पद्मासन, ध्यानावस्था का आसन।

चैत्रः (पुं०) [चित्रा+अण्] १. चित्रा नक्षत्र, २. चैत्र मास (समु० ६/२७) बाल्यं विहायापि विवाहयोग्या लतेव चैत्रे भ्रमरेण भोग्या। (समु० ६/२७)

चैत्ररथं (नपुं०) कुबेर का उद्यान। [चित्ररथ+अण]

चैत्रशुक्लं (नपुं०) चैत्रमास का शुक्ल पक्ष।

चैत्रशुक्लपक्षत्रिजया (स्त्री०) चैत्रशुक्ला त्रयोदशी। अन्तिम तीर्थंकर महावीर का जन्म दिन। चैत्रशुक्लपक्षत्रिजयायां सुतमसूत सा भूपति जा या। वैशाली गणराज्य के कुण्डपुर के राजा सिद्धार्थ का राजकुमार, रानी प्रियकारिणी त्रिशला का पुत्र।

चैत्रिः (पुं०) [चैत्री विद्यतेऽस्मिन्] चैत्रमास, चैत का महिना।

चैत्री (स्त्री०) [चित्रा+अण्+ङीष्] चैत्री पूर्णिमा।

चैद्यः (पुं०) शिशुपाल। [चेदि ष्यञ्]

चैलं (नपुं०) वस्त्र, छोटा वस्त्र।

चौक्ष (वि०) [चक्ष्+घञ्] पवित्र, स्वच्छ, साफ, सुन्दर, रमणीय, रुचिकर, हितकर, दक्ष, कुशल।

चोचं (नपुं०) [कोचति आवृणोति-कुच्+अच्] १. वल्कल, छाल, २. खाल, चर्म, ३. नारियल।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चोन्य (वि०) आश्चर्य, विस्मय।

चोटी (स्त्री०) [चुट्+अण्+ङीप्] छोटा लहंगा।

चोडा (स्त्री०) [चोडति सवृणोति शरीरम् चड्+अच्+ङीष्] चोली, अंगिया।

चोदना (स्त्री०) [चुद्+ल्युट्, स्त्रियां टाप्] फेंकना, निर्देश देना, उत्साहित करना, प्रोत्साहन देना, स्फूर्ति देना, आगे करना, हांकना, बढ़ाना। २. उपदेश, विधि।

चोद्यं (नपुं०) [चुद्+ण्यत्] आक्षेप, प्रश्न, आश्चर्य। निर्वेद्य चोद्यं चतुरा तु राजिका मनोविनोदं नयति स्म भूभुजः। (जयो० २३/८३)

चोरः (पुं०) [चुर्+णिच्+अच्] चोर। (सम्य० २८)

चोरिका (स्त्री०) चोरी, लूट।

चोरिन् (वि०) चुराया गया।

चोलः (पुं०) १. चोल देश, चोलवंश। २. चोली, अंगिया।

चोलकः (पुं०) [चोल+कै+क] वस्त्रस्त्राण, छाल, वल्कल।

चोलकिन् (पुं०) [चोलक+इनि] वस्त्रस्त्राण से सुरक्षित सैनिक, कवच, ढाल।

चोली (स्त्री०) चोली, अंगिया।

चोषः (पुं०) [चुष्+घञ्] चूसना।

चोष्यं (क्र०वि०) चूसना।

चौबीसी (वि०) चौबीस की संख्या वाला, चौबीस तीर्थंकरों की संख्या (भक्ति० १८)

चौरः (पुं०) [चुर्+णिच्+अच्, चुरा+ण] चोर, लुटेरा। (जयो० १५/८१) 'एकत्राङ्कित चौरसाधु पतिभि,'

चौरकथा (स्त्री०) चोर सम्बन्धी कथा, चोरों का वर्णन, चोरों की चर्चा। 'चोराणां चौरप्रयोग-कथनं चौरकथाविधानम्' (नियः ता०वृ० ६७)

चौरचरटः (पुं०) चोर भय। (जयो० वृ० १/३९)

चौरप्रयोगः (पुं०) चोरों की चर्चा, चोरों की अनुमोदना।

चौरयुति (स्त्री०) चोरों की संगति। (जयो० वृ० २८/५७)

चौर-लुण्टाकः (पुं०) चोर लुटेरा। (जयो० १/३०)

चौर-संयुतिः (स्त्री०) चोरों की संगति। (जयो० वृ० २८/५७)

चौरप्रिया (वि०) चोरों का विरोधी। (समु० ६/७०)

चौरार्थदानं (नपुं०) चोर द्वारा लाए गए अर्थ संग्रहण।

चौराहृतगृह (वि०) चोरी के अर्थ का ग्रहण करने वाला।

चौर्य (नपुं०) [चोर+ष्यञ्] चोरी, लूट, चुराना, अदत्त (जयो० २/१२५), स्वयं ग्राह्य वस्तु, बिना पूछे वस्तु लेना। (सम्य० २७) 'अदत्तस्य स्वयं ग्राह्यो वस्तुनः चौर्यमीर्यते' संक्लेशपरिणामेन प्रवृत्ति यत्र तत्र तत्॥ (हरिवंश पु० ५८/११) शरीरादिकों में अहंकार/ममकार लिए हुए पर-वस्तुओं का हथियाना, जबरन, अपनाना। (सम्य० वृ० २८)

चौर्यप्रयोगः (पुं०) चोरी का प्रयोग, अनुमोदना। (मुनि० २१)

चौर्यरत (वि०) अदत्तादान रहित, चोरी से रहित। (जयो० वृ० २८/५७)

चौर्यानन्दः (पुं०) रौद्रध्यान, खोटा ध्यान, चोरी करके हर्षित होना। परद्रव्यहरणे तत्परता प्रथमं रौद्रम्। (मूला०वृ० ५/१९९)

चौर्यानन्दी (वि०) रौद्रध्यान का एक भेद-हिंसानन्दी, मृषानन्दी, चौर्यानन्दी और परिग्रहानन्दी। (मुनि० २२)

चैव (अव्य०) तो भी, ऐसा भी (सुद० ७२)

चौहानवंशभृत् (वि०) चौहानवंश वाला, कीर्तिपाल नामक राजा। चौहान वंशभृत् कीर्ति-पालनाममहीपते देवी महीबलाख्याना बभूव जिनधर्मिणी। (वीरो० १५/५१)

च्यवनं (नपुं०) [च्यु+ल्युट्] उद्वर्तन, मरण, आना, अवतरण, गति, च्युतिः च्यवनं चूक-कृत्ये ममाभूच्च्यवनं तदेतत्। (भक्ति० ३८)

च्यवतः (वि०) अवतरित, च्युत होने वाले, होता हुआ, आया हुआ। (सम्य १०८)

च्यवन्त (वि०) १. च्युत होते हुए गिरते हुए। श्रद्धानतश्चा-चरणाच्च्यवन्तः संस्थापिता संतु पुनस्तदन्तः। (सम्य० ९५) २. हानि, वञ्चना, मरण, उद्वर्तन करते हुए।

च्यावित (वि०) भ्रष्ट कराए गए, च्युत कराए गए, कदलीघात, विषभक्षण, वेदना, रक्तक्षयादि से खण्डित आयु वाला शरीर। कदलीघातेन पतितं च्यावितम्।

च्यु (अक०) गिरना, नीचे आना, बाहर आना, एक पर्याय से दूसरी पर्याय को प्राप्त होना, शरीर त्यागना, नष्ट होना, छोड़ना, निकलना।

च्युत् (अक०) गिरना, निकलना, नीचे आना, छूटना, नष्ट होना, गिरना। 'पक्वफलमिव स्वयमेवायुषः क्षयेण पतितं च्युतम्।

च्युत (भू०क०कृ०) [च्यु+क्त] गिरा, आया हुआ, निकला हुआ। च्युतं त्यागं विनायुष्क क्रमक्षयगतात्मकम्। 'निरूपराग शुद्धात्मानुभूतिच्युतस्य मनोवचन काय व्यापार-कारणम्। (सम्य० १३५)

च्युतगत (वि०) बाहर निकला हुआ, गिरकर आया हुआ।

च्युताधिभार (वि०) पदच्युत किया गया।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

च्युतात्मन् (वि०) आत्मभाव से रहित दुष्टात्मा वाला।

च्युतिः (स्त्री०) [च्यु+क्तिन्] गिरना, पतन, अवतरण, आना, निकलना, रिसना, झरना, टपकना।

छ

छः (पुं०) चवर्ग का दूसरा व्यञ्जन, इसका उच्चारण स्थान तालु है।

छः (पुं०) [छो+ड] १. अंश, खण्ड, भाग, हिस्सा, प्रदेश। २. सूर्य (जयो० २८/१) छा-छोदन क्रिया छश्च छोदकार्कयोः इति वि।

छगः (पुं०) [छ यजादौ छेदन गच्छति-छ+गम+ड] बकरा।

छगलः (पुं०) बकरा, छाग, अजापुत्र। (दयो० ४४) (जयो० २५/३५, २५/१२)

छगलं (नपुं०) नील वस्त्र।

छगलकः (पुं०) बकरा।

छगी (स्त्री०) बकरी।

छज्जा (स्त्री०) वलभीतल (जयो०`० १०/६१)

छटा (स्त्री०) [छो+अटन्+टाप्] १. प्रभाव, कान्ति, प्रकाश, दीप्ति, किरण समूह। २. पुञ्ज, ढेर, ०राशि, ०ओघ। ३. रेखा, पंक्ति, लकीर। ४. आभा, ०शोभा, ०अलंकार (जयो० २/२३) ५. विचारधारा, अविच्छिन्न। धारा येषां ते प्राणाचार्यः बभूवुः। (जयो० वृ० ३/१६)

छत्रः (पुं०) [छादयति अनेन इति- छद्+णिच्-त्रन्] कुकुरमुत्ता, खुंभी।

छत्रं (नपुं०) आतपत्र, छाता। (जयो० वृ० २६/१५) १. छत्राकार योग।

छत्रत्रयः (नपुं०) तीन छत्र। चांदी या स्वर्ण निर्मित भगवान् के मस्तक के ऊपर सुशोभित होने वाले तीन छत्र। त्रिगुणं वपराप्य घूर्णते क्षयजिच्छत्रतया जगत्पतेः। (जयो० २६/६१)

छत्रधर (वि०) १. छत्र धारक। २. छत्र ग्रहण करके चलने वाला।

छत्रधार (वि०) छत्र ग्रहण करके चलने वाला।

छत्रधारणं (नपुं०) १. आतपत्र लेकर चलना, छत्र लेना छाता रखना। २. बच जाना, उड़ जाना, ३. प्रगमन करना, भटकना।

छत्रपुरी (स्त्री०) पुष्कल देश की नगरी। (वीरो० ११/३५) जिसका शासक अभिनन्दन था।

छत्रा (स्त्री०) कुकुरमुत्ता।

छत्रातिछत्रं (नपुं०) योग दृष्टि, जिसमें एक के ऊपर एक छत्र के सद्भाव के समान आकार से योग साधना की जाती है। 'छत्रात् सामान्यरूपात् उपर्यन्यान्यछत्रभावतोऽतिशायि छत्रं छत्रातिछत्रम्। (जैन०ल० ४४६) छत्रायते-छत के समान प्रतीत होना--अधस्थ-विस्फारि-फणीन्द्र दण्ड-श्छत्रायते वृत्ततयाऽप्यखण्डः। (वीरो० २/३)

छत्रिकः (पुं०) [छत्र+ठन्] छाता लेकर चलने वाला।

छत्रिन् (वि०) छाता रखने वाला।

छत्वरः (वि०) [छद्+ष्वरच्] गृह, आवास, पर्णकुटीर।

छद् (सक०) ढकना, पर्दा करना, आवरण करना, छिपाना, आच्छादित करना।

छदः (पुं०) [छद्+अन्] आवरण, चादर।

छदं (नपुं०) [छद्+ल्युट्] आवरण, पर्दा, चादर। 'प्रणष्टदण्डानि सितातपत्रच्छदानि रेजुः पतितानि तत्र।' (जयो० ८/३८) छदानि आवरणानि शूकानि। (जयो० वृ० ८/३८)

छदनं (नपुं०) १. आवरण, चादर। २. पत्र, पर्ण, ३. म्यान, खोल, संदूक, करण्य, डिबिया।

छदपत्रं (नपुं०) तेजपत्र।

छदिः (स्त्री०) १. छप्पर, छत का ऊपरी भाग। (जयो० १२/९१) गृहस्योपरिभाग। २. सञ्छादनवृत्ति, आच्छादन भाव, छिपाने का भाव। (जयो० वृ० २३/२८)

छद्मन् (नपुं०) [छद्+मनिन्] १. छिपाव, गोपन। (जयो० वृ० ६/६२) छल, कपटवश, धोखा देने वाला आवरण। २. बहाना, व्याज। (जयो० १/८३) ३. जालसाजी, चालाकी, धूर्तता, ठगी। ४. आत्म आवरण रूप कर्म, घातिया कर्म। 'छादयत्यात्मनो यथावस्थितं रूपमिति छद्म ज्ञानावरणादि-घातिकर्म-चतुष्टयम्।' (जैन०ल० ४४६)

छद्मतापसः (पुं०) वेशधारी, तपस्वी, पाखण्डी साधु।

छद्मदृक् (स्त्री०) १. छल दृष्टि। २. व्याज दृष्टि। 'छद्म छलं यस्याः सा चासौ दृक् दृष्टिश्च। (जयो० वृ० १/८३)

छद्मनामः (पुं०) उपनाम।

छद्मभावः (पुं०) व्याज, बहाना।

छद्मवेशः (पुं०) कृत्रिम वेश। (जयो० वृ० ७/४)

छद्मस्थः (वि०) छद्म में स्थित, कर्मावरण जन्य। (सम्य० ७३) ज्ञानावरण दर्शनावरण में स्थित। 'छद्म ज्ञान-दृगावरणे, तत्र तिष्ठन्तीति छद्मस्थाः। (धवला० १/१८८) 'छदुम णाम आवरणं तम्हि चिट्ठदि त्ति छदुमत्थो। (धव० १०/२९६)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

छद्मस्थमरणं (नपुं०) मनःमर्ययज्ञान वाले तक का कारण, चार क्षयोपशमिक वाले का मरण, छद्मस्थ संयतों का मरण।

छद्मिन् (वि०) [छद्मन्+इनि] ठगी करने वाला, छल करने वाला, कपट भावी।

छन्द् (सक०) प्रसन्न करना, संतुष्ट करना।

छन्दः (पुं०) [छन्द्+घञ्] अभिलाषा, इच्छा, वाञ्छा, चाह, इच्छानुकूल आचरण, चेष्टा। (जयो० वृ० २/५३)

छन्दना (स्त्री०) इच्छाकार पूर्वक ग्रहण।

छन्दस् (नपुं०) [छन्द्+असुन्] १. इच्छा अभिलाषा, वाञ्छा, चाह, स्वेच्छाचरण। २. रचना, काव्य छन्द, वृत्त।

छन्दकृत् (वि०) पद्यात्मक रचना करने वाला।

छन्दगत (वि०) छन्द सम्बन्धी, रचना, कृति सम्बन्धी।

छन्दभङ्गः (पुं०) छन्दशास्त्र के नियम का उल्लंघन।

छन्दयुगलः (वि०) छन्द समूह, युगलछन्द।

छन्दशास्त्रं (नपुं०) रचनाधर्मिता का शास्त्र, वृत्तास्त्र।

छन्दसी (वि०) छन्द वृत्ति युक्त।

छन्दोऽनुग (वि०) आज्ञानुसारिणी। (जयो० २७/२१)

छन्दोऽनुवर्ती (वि०) आज्ञानुसारी।

छन्दोबन्धः (पुं०) प्रबन्ध रचना। (दयो० पृ० ५३)

छन्दोभिधः (पुं०) छन्द नाम।

छन्दोऽभिश्चालः (पुं०) गेयात्मक पद्य का पद्धति, गीत विशेष पद्धति। छवि-रवि-कलरूपाषायात् साऽऽर्हतीतिनः स्विदपायात्। (स्थायी) वसनाभरणैरादरणीयाः सन्तु मूर्त्तयः किन्तु न हीयान्। तस् गुणः सुगुणायाश्छविरवि-कलरूपा पायात्। (सुद० वृ० ७५)

छन्न (वि०) [छद्+क्त] ढका हुआ, आवृत, लुप्त, गुप्त, आच्छादित, आवरित, आच्छन्न। रहस्यपूर्ण। (सुद० ९०) रजोऽन्धकारे जडजाधिनाथश्छन्नं न किं गोपतिरेष चाथ (जयो० ८/७)

छन्नदोषः (पुं०) आलोचना, प्रायश्चित्त।

छन्ना (वि०) प्रलुप्ता, लुप्त हो गई। छन्ना किलोच्चै स्तनशैलमूले। (जयो० ११/४९)

छन्नी-भवत्व (वि०) निष्प्रभ होता हुआ, छिपता हुआ। नियमेन तिरोभावितुं किल गतवान्। (जयो० ८/५०)

छमण्डः (पुं०) [छम्+अण्डन्] अनाथ, मातृपितृविहीन।

छर्द् (अक०) वमन करना, कै करना।

छर्दः (पुं०) [छर्द्+घञ्] वमन।

छर्दिः (स्त्री०) वमन करना।

छर्दिका (स्त्री०) [छर्दि+कन्+टाप्] वमन करना।

छर्दित (वि०) १. वमन करने वाला। २. घृतादि को गिराने का दोष वाला।

छर्दिदोषः (पुं०) आहार करते समय वमन से अन्तराय। छर्दिर्वमनमात्मनो यदि भवति। (मूला० ६/७६)

छर्दिस् (स्त्री०) वमन करना।

छलः (पुं०) छल, कपट, धूर्तता, वचन विघात। 'पशुतां छलेन' (वीरो० १४/२७) वचनविघातोऽर्थविकल्पोपपत्त्या छलं वाक्छलादि। ब्याज, बहाना। 'लोम-लाजिच्छलात्सैषा' (जयो० ३/४८) छलात्—व्याजात् (जयो० वृ० ३/४८) कालोपयोगेन हि मांसवृद्धि कुचच्छलात्तत्र समात्तगृद्धिः। (सुद० १०२)

छलं (नपुं०) १. छल, कपट, धोखा, बहाना ब्याज। २. योजना, उपाय। ३. दुष्टता। ४. दम्भ।

छलच्छिदं (नपुं०) मायाचार, कपटभाव। (दयो० वृ० २३)

छलनं (नपुं०) [छल्+ल्युट्] कपट करना, मायाचार करना, ठगना।

छलयति-धोखा देता है, ठगता है।

छलरहित (वि०) दम्भातीत, दम्भ रहित, कपट रहित। (जयो० वृ० २३/९०)

छलिकं (नपुं०) [छल+इनि] ठग, उचक्का।

छल्लि (स्त्री०) १. छाल, वल्कल। २. फैलने वाली लता। ३. सन्तान, प्रजा, सन्तति।

छवि (स्त्री०) [छयति असारं छिनत्ति तमो वा-छो वि+किच्च वा ङीप्]

* आकार, (जयो० वृ० २४/४१)
* प्रतिमूर्ति, प्रतिबिम्ब (जयो० ३/८१)
* कान्ति, शोभा, प्रभा (जयो० १०/४०)
* मुद्रा, आकृति (सुद० ७०)

राग-द्वेषरहिता सति सा छविरविरुद्धा यस्य।

* प्रकाश, दीप्ति, तेज।
* छाल, त्वच्, खाल।
* शरीर-'छविः शरीरं त्वक् वा' (त०भा० ७/२०)
* अलंकार छविः अलंकार **विशेषः**।

छविकर (वि०) प्रभा फैलाने वाला।

छविच्छलं (नपुं०) प्रतिबिम्ब के बहाने। (जयो० २४/५८)

छवि-दर्शिनी (वि०) कान्त्यवलोकिनी, सौंदर्य को देखने वाली। (जयो० १०/४०)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

छविभाक् (वि०) छवि धारक, छविं शोभां विभर्ति। (जयो० ११/१३)

छविरविकलरूप (वि०) निर्विकारता, निर्दोष मुद्रा। (सुद० ७५)

छविलाञ्छित (वि०) प्रभा से चिह्नित, कान्ति से परिपूर्ण। (जयो० १८/१०३)

छह संख्या विशेष, पट्। (भक्ति० ९)

छाग (वि०) बकरा, अज। (वीरो० १/३१)

छागं (पुं०) बकरी का दूध।

छागभोजनं (नपुं०) भेड़िया।

छागणः (पुं०) कंडा, करीष, उपलं।

छागमुखः (पुं०) कार्तिकेय।

छागल (वि०) बकरी से प्राप्त होने वाला।

छागलः (पुं०) बकरा। (जयो० २६/१०३)

छाणशः (पुं०) छौंक, बघार।

छात (वि०) विभक्त, काटा गया।

छात्रः (पुं०) [छत्रं गुरोर्वैगुण्यावरणं शीलमस्य-छत्र+ण] विद्यार्थी, शिष्य, अध्ययनशील व्यक्ति।

छात्रकर्मन् (नपुं०) छात्र क्रिया, छात्रकर्त्तव्य।

छात्रखण्डं (नपुं०) छात्र समूह।

छात्रगण्डः (पुं०) श्लोक का प्रारंभिक पद, काव्य का एक अंश।

छात्रदर्शनं (नपुं०) निकला गया नवनीत, एक दिन का निकाला गया नैनू, मक्खन।

छात्रा (स्त्री०) शिष्या।

छादं (नपुं०) [छद्+णिच्+घञ्] छप्पर, छत।

छादनं (नपुं०) १. आवरण, आच्छदन, ढकना, प्रवारण आदि। (जयो० वृ० २३/२८) अनुद्भूतवृत्तिता छादनम् प्रतिबन्धहेतुसन्निधान्। संवरण, स्थगन। २. परिधान, वस्त्र, आंचल, ३. पत्र।

छादनकर्मन् (नपुं०) आच्छादन क्रिया, संवरण क्रिया।

छादन वस्त्रं (नपुं०) अञ्चल, आंचल, चुन्नी। (जयो० १७/४३)

छादयितुं (हे०कृ०) गोप्तुम् (जयो० १३/४३) ढकने के लिए, आच्छादन के लिए।

छादित (वि०) प्रसारित, आच्छन्न, आवृत, ढका हुआ, प्रवारित। (जयो० २७/२८) छाया-छादित-सरणी गुणेन विविनाश्रियः श्रीमान् (जयो० १/८९)

छाद्मिकः (पुं०) [छद्मन्+ठक्] धूर्त, ठक, कपटी।

छान्दस् (वि०) [छन्दस्+अ चा] १. वेदज्ञ, वेदाध्ययनशील, २. छन्दोबद्ध रचना, छन्दशास्त्र। छन्द एव छान्दसं छन्दशास्त्रं (जयो० वृ० २/५३)

छायविधिः (स्त्री०) छाया विधि। प्रतिभाति गिरीश्वरः स च सफलच्छायविधिं सदाचरन्। (वीरो० ७/२९)

छाया (स्त्री०) १. कान्ति, प्रभा, प्रणाली, प्रतिमूर्ति, प्रवृत्ति। सौन्दर्य लावण्य। (जयो० ३/११३, २२/४८) छाया कान्तिर्धर्माभावात्। २. छप्पर, छत, (जयो० २२/८२) ३. परछाई, छवि, छांह, छांव। स्वल्पपापल्लवच्छाया (सुद० ११२) ४. पुद्गल का एक गुण (त०सू० ५/२४) 'छाया प्रकाशावरणनिमित्ता।' छाया प्रकाश का आवरण है। छाया तमोरूपा सा छन्ना प्रलुप्ता भवति (जयो० वृ० ११/४९) ५. मनुष्य का प्रतिबिम्ब। ६. वर्णादिविकार। छ्यति छिनत्ति वाऽऽतपमितिच्छाया। ७. प्रतिच्छन्दमात्रः छिद्यते, छिनत्त्यात्मनमिति वा छाया।

छायागतिः (स्त्री०) छाया का गमन।

छायाग्रहः (पुं०) दर्पण, शीशा।

छायाछादित (वि०) छाया से प्रवारित, (जयो० १/८९)

छायातनयः (पुं०) सूर्यपुत्र शनि।

छायातरुः (पुं०) सघन छाया वाला वृक्ष।

छाया द्वितीय (पुं०) छायाधारी, एक मात्र छाया वाला।

छायानुपातगतिः (स्त्री०) छाया के पीछे नहीं चलना, पुरुष अपनी छाया के पीछे नहीं चलता।

छायापथः (पुं०) पर्यावरण।

छायाभृत् (पुं०) चन्द्र, शशि।

छायामानः (पुं०) चन्द्र।

छायामित्रं (नपुं०) छाता, आतपत्र, छतरी।

छायामृगधर (पुं०) चन्द्र, इन्दु, शशि।

छायायन्त्रं (नपुं०) धूपघड़ी, काल बोधक यन्त्र।

छायावन्त (वि०) छाया युक्त, छायावान छाया से सहित। (वीरो० २२/२९) छायावन्तो महात्मानं पादपा इव भूतले। (वीरो० २२/२९)

छायाविहीन (वि०) अच्छाय, परछाई रहित।

छाली (स्त्री०) बकरी, अजा (जयो० ११/३२) (जयो० वृ० १११/३)

छिः (स्त्री०) [छो+कि] गाली, अपशब्द।

छिक्का (स्त्री०) छींक, छींकना।

छिछी (स्त्री०) घृणित शब्द।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

छिति (स्त्री०) भूतल, पृथिवी। (समु० १/२२)

छितिपरायणः (पुं०) १. पृथिवी प्रवीण, २. तलवार में निपुण। (समु० १/२२)

छित्तिः (स्त्री०) [छिद्+क्तिन्] काटना, खण्ड करना, विनाश करना। येनाम्रो जनिरायतिः सकुशला पश्चायतच्छित्तये। (जयो० २५/६६)

छित्तय-विनाशाय (जयो० वृ० २७/६६)

छित्वर (वि०) [छि+ष्वरप्] १. काटना, खण्ड करना, विनाश, मारना, विदीर्ण करना। २. शांत करना, सुधारना।

छिद् (सक०) काटना, फाड़ना, विदीर्ण करना, नाश करना। जीतना (समु० ८/७९) 'मोहमल्लमच्छिनत् इत्युदारात' (भक्ति० ३०)

छिदकं (नपुं०) १. वज्र, आयुध विशेष। २. हीरा, हीरक।

छिदा (स्त्री०) [छिद्+अङ्+टाप्] विभाजन, विनाश, खण्ड।

छिदि (स्त्री०) [छिद्+इन्] छेदन, कुल्हाड़ा।

छिदिभृत् (पुं०) श्वेत, सच्छिद्र। (जयो० १०/२७)

छिदिरः (पुं०) [छिद्+किरच्] कुल्हाड़ा।

छिदुर (वि०) विभक्त करने वाला, काटने वाला।

छिद्यमान (वि०) विभक्त किया गया, छेदा गया। (सम्य० १२९)

छिद्रं (नपुं०) [छिद्+रक्] बिल, गर्त, गड्डा, छेद, विवर, रन्ध्र, गह्वर (जयो० वृ० २४/४७) दरज, कटाव, दरार। (वीरो० २/११)

* दोष, सूराख। (वीरो० वृ० २/११)

छिद्र (वि०) छेदा हुआ, कटा हुआ, विभक्त, छिद्र युक्त।

छिद्रकुट (वि०) घड़े के नीचे छेद।

छिद्रकर्ण (वि०) छिदे हुए कानों वाला।

छिद्रगत (वि०) छिद्रयुक्त, दोष युक्त।

छिद्रघट (वि०) छेद वाला घड़ा।

छिद्रदर्शन (वि०) दोष प्रदर्शन।

छिद्रपूरणं (नपुं०) १. बिल भरण छिद्र, पूरना। २. दोषापकरण, कलहनिवारण। नीरपूर इव संचरन् स त्वा छिद्रपूरणविधौ विचारवान्। (जयो० ७/५६)

छिद्रानुजीविन् (वि०) दोष निकालने वाला, कलह करने वाला।

छिद्रानुसन्धानिन् (वि०) छिद्रान्वेषी, दोषी, दूसरे पर आरोप लगाने वाला।

छिद्रानुसारित्व (वि) दोष निकालने वाला। कौटिल्यमेतत्खलु चापवल्ल्यां छिद्रानुसारित्वमिदं शरल्याम्। (सुद० १/३४)

छिद्रान्तरः (पुं०) बेंत।

छिद्रात्मन् (वि०) दोष प्रकट करने वाला।

छिद्रान्वेष (वि०) दोष निकालने वाला।

छिद्रान्वेषी (वि०) दोष व्यक्त करने वाला।

छिद्रित (वि०) [छिद्र+इतच्] रन्ध्र युक्त, विवर सहित, छेद से परिपूर्ण, छिदा हुआ, बिंधा हुआ।

छिन्न (भू०क०कृ०) [छिद्+क्त] विभक्त, कटा हुआ, खण्डित, विकीर्ण, टूटा हुआ। (सम्य० १३९)

छिन्नकर्मन् (वि०) कर्म विमुक्त हुआ।

छिन्नकषाय (वि०) कषाय रहित।

छिन्नक्षोभ (वि०) राग-द्वेष रहित।

छिन्नकेश (वि०) कटे हुए केश वाला, मुण्डित।

छिन्नतप (वि०) तप से रहित।

छिन्नतरु (वि०) कटा हुआ वृक्ष।

छिन्नतेज (वि०) क्षीण तेज वाला।

छिन्नदान (वि०) दान में अन्तराय।

छिन्नदोष (वि०) दोष रहित।

छिन्नधर्म (वि०) धर्म च्युत, धर्म विमुख।

छिन्ननिमित्त (वि०) त्रैकालिक ज्ञान का कारण।

छिन्नपाप (वि०) पाप से रहित।

छिन्नपुण्य (वि०) क्षीण पुण्य वाला, विदीर्ण पुण्य।

छिन्नफल (वि०) गिरा हुआ फल।

छिन्नभिन्न (वि०) क्षत-विक्षत।

छिन्नमस्तक (वि०) कटे हुए सिर वाला।

छिन्नमूल (वि०) विमूल विनष्ट वाला, सर्वस्वक्षीण, रिक्त, अभाव।

छिन्नमोह (वि०) मोह रहित। 'छिन्नः प्रणष्टो मोहो मुग्धभावो' (जयो० वृ० १०/९६)

छिन्नश्वास (वि०) दमा युक्त।

छिन्नसंशय (वि०) संशय रहित।

छिन्नस्वप्न (वि०) परस्पर के सम्बंध से रहित स्वप्न, तीर्थंकर की माता को दिखने वाले स्वप्न।

छुछुन्दरः (पुं०) एक जन्तु, जो मूषक की जाति का होता है।

छुछुन्दरी (स्त्री०) एक जन्तु।

छुद्रघंटिका (स्त्री०) किंकिणी (वीरो० ६/२९)

छुप् (सक०) १. काटना, विभक्त करना, उत्कीर्ण करना। २. लीपना, पोतना, अवगुण्ठित करना, मिलाना।

छुरणं (नपुं०) [छुर्+ल्युट्] लीपना, सानना।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

छुरा (स्त्री०) [छुर्+क+टाप्] चूना, अरास।

छुरिका (स्त्री०) [क्षुर+क्वुन्+टाप्] ०छुरी, ०चाकू, ०कृपाण पुत्री। (जयो० १४/५१) (वीरो० १/३६)

छुरित (भू०क०कृ०) [क्षुर+क्त] खचित, जडित, आच्छादित किया।

छुरी (स्त्री०) [क्षुर्+ङीष्] चाकू, छुरी।

छृद् (सक०) जलाना, चमकना, वमन करना। छर्दति, छर्दयति।

छेक (वि०) १. शहरी, नागरिक। २. बुद्धिमान् नागर।

छेकानुप्रास (पुं०) जहां एक ही बार वर्णों की आवृत्ति होती है या एक ही बार घटने वाली समानता।

शिरीष-कोशादपि
कोमले ते पदे वदेति प्रघणं तदंते।
अस्माकमश्माधिकहीर-
वीरपूर्णं कुतोऽलङ्कुरुतोऽथ धीर।। (जयो० ३/२५)

छेदः (पुं०) [छिद्+घञ्] काटना, १. तोड़ना, भंग करना, नाश करना। २. छिन्न, ०विराम, ०गतिरोध, ०समाप्ति, ०लोप, ०अभाव, ०खण्ड, ०टुकड़ा, ०भाग, ०हिस्सा, ०निराकरण। ३. अशुद्ध उपयोग। ४. अतिचार, दोष। ५. अवयवों अपनयन। कर्णनासिका दीनामवयवानामयनयन छेदः। (स०सि० ७/२५) ६. अहापन प्रव्रज्याहापनं छेदः। अपवर्तन, अपहार

७. छेद-प्रायश्चित्त, आलोचना का भी नाम है। अवस्थान का नाम भी छेद है। स्वस्थ भाव का च्युत होना भी छेद है। 'स्वस्थभावच्युत लक्षणः छेदो भवति।' (प्रव०सा०च० ३/१०)

छेदगतिः (स्त्री०) छेद को प्राप्त होना ०छेदस्थान, ०निराकरण की अवस्था। छिन्नानां गतिः छेदगतिः। (त०वा० ५/२४)

छेदक (वि०) तक्षण, नाशक। नष्ट करने वाली। जन्म-जरा-मृत्यु-रूप-सन्ताप-त्रितयोच्छेदकस्य जिनेन्द्र एव चन्द्र। (जयो० वृ० २४/७०) परस्य शत्रोस्तक्षकः छेदकश्च जायते। (जयो० वृ० ६/१०४)

छेदनं (नपुं०) [छिद्+ल्युट्] १. खण्ड करना, विदीर्ण करना, नाश, घात, विनाश, विभक्त करना, विभाग करना, टुकड़े करना। २. अनुभाग, खण्ड, भाग, हिस्सा, अंश। छेदनं कर्मणः स्थितिघातः।

छेदनक्रिया (स्त्री०) नाशक क्रिया, विनाशक बाधा।

छेदवर्तिः (स्त्री०) संहनन विशेष, सेवार्त्त संहनन। छठा संहनन, जिसमें हड्डियां परस्पर छेद से युक्त हो, कीलों से भी सम्बद्ध न हो। वह प्रायः मनुष्यों के होता है और सदा तेलमर्दन आदि की अपेक्षा करता है।

छेदस्पृष्टः (पुं०) छेदवर्ति संहनन, सेवार्त्त संहनन।

छेदार्हः (पुं०) प्राश्यचित्त विशेष, श्रामण्य अवस्था में कुछ अंश का छेद करना।

छेदिः (पुं०) बढ़ई, सुथार, विश्वकर्मा।

छेमण्डः (पुं०) अनाथ।

छेलकः (पुं०) बकरा, छाग, अज।

छैदिकः (पुं०) बेंत, दण्डा।

छेदोपस्थापकः (पुं०) अट्ठाईस मूलगुणों में प्रमादयुक्त साधु। मूलगुणेसु पमत्तो समणो छेदोवट्ठावगो होदि। (प्रव० ३/९)

छेदोपस्थापनं (नपुं०) व्रत विनाश पर पुनः विशुद्धि करना, चारित्र में दोष लगने पर पुनः महाव्रतों में स्थापित किया जाना।

छेदोपस्थापना (स्त्री०) छेदोपस्थापन शुद्धि संयम। दोषों का उचित प्रतिकार।

छो (सक०) काटना, खण्ड करना, विदीर्ण करना।

छोटिका (स्त्री०) [छुट्+ण्वुल्+टाप्] चुटकी।

छोटित (वि०) गिराने वाला, छोड़ने वाला।

छोटित दोषः (पुं०) भोज्य सामग्री को गिराते हुए आहार करना।

छोरणं (नपुं०) [छुर्+ल्युट्] त्याग करना, छोड़ना।

ज

जः (पुं०) चवर्ग का तृतीय व्यञ्जन, इसका उच्चारण स्थान तालु है। जकार (जयो० वृ० १/५४)

जः (पुं०) १. जन्म, उत्पत्ति, २. जनक, ३. विष्णु, ४. कान्ति, प्रभाव, आभा।

ज (वि०) वंशज, कुलज, जन्मज, उद्भूत, उत्पन्न हुआ। समास के अन्त में या शब्द के अन्त में 'ज' लगने पर वह शब्द उत्पत्ति का बोध कराने लगता है।
जैसे-वंश+ज=वंशज, वंश में उत्पन्न।
वारिज-वारि में उत्पन्न होने वाला कमल।
अण्डज-अण्डे से उत्पन्न।

जकारः (पुं०) 'ज' वर्ण, जिसका उच्चारण स्थान तालु है। (जयो० १७/१८७)

जकुटः (पुं०) १. मलयपर्वत, २. श्वान, कुत्ता।

जक्ष् (सक०) उपभोग करना, खाना।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जक्षणं (नपुं०) [जक्ष+ल्युट्] उपभोग, भक्षण, भुंजन।

जगज्जयी (वि०) विश्वविजेता, लोकजयी। (जयो० ११/२२)

जगज्जिगीष (वि०) विश्व विजेता, लोकजयी। (जयो० १४/३१)

जगज्जेता (वि०) विश्वजयी, लोकजयी। जित्वाऽक्षाणि समानसंदिह जगज्जेता स आत्मप्रियः। (वीरो० १८/२७)

जगत् (वि०) संसार, लोक, विश्व। (सुद० ४/१४) (जयो० १/१०) किं किमस्ति जगति प्रसिद्धिमत्कस्य सम्पदथ कीदृशी विपद्। द्रव्य नाम समये प्रपश्यतां नो वितर्कविषया हि वस्तुता।। (जयो० २/४९) भयंकरा सा जगतोऽथ रात्रि (सम्य० १/१)

२. चेतन-अचेतन द्रव्य समुदाय का नाम जगत् है। द्रव्यों के समुदाय को जगत् कहते हैं। 'जगत् चेतनाचेतनद्रव्य-संहतिः।' (भ०आ०टी० ८२) चराचर का समुदाय भी जगत् है। 'ईशिता तु जगतां पुरुदेवः। (जयो० ४/४९)

जगत्कर्तृ (पुं०) सृष्टिकर्ता।

जगत्चक्षुः (पुं०) सूर्य।

जगत्तत्त्वं (नपुं०) विश्व के पदार्थ। जगत्तत्त्वं स्फुटीकर्तुं मनोमुकुरमात्मनः' (वीरो० १०/१५)

जगत्तिलकः (पुं०) संयम का शिरोमणि। (पु० १/९७)

जगत्पूत (पुं०) सम्यक् गुरु, सच्चे गुरु। (जयो० १/१०४)

जगत्समस्त (वि०) सम्पूर्ण लोक (जयो० वृ० १/१५)

जगतश्छायाः (स्त्री०) संसार प्रणाली। जगतः शरीरधारिणः प्राणिसत्छाया प्रतिमूर्ति। (जयो०)

जगती (स्त्री०) भूमि, पृथिवी। (जयो० १३/२४)

जगतीतलं (नपुं०) भूतल, पृथिवीतल। (समु० ८/१३) (भक्ति० ३१) कस्यापि प्रार्थनां कश्चिदित्येवमवहेलयेत्। मनुष्यतामराप्तश्चेद्यथा त्वं जगतीतले।। (सुद० १३४)

जगतीश्वरः (पुं०) नृप, राजा।

जगतीरुहः (पुं०) तरू, वृक्ष।

जगद्गुरु (पुं०) ऋषिराज। (जयो० १/३३)

जगद्व्यापिन् (वि०) विश्वव्यापी (वीरो० १०/३९)

जगदंल (नपुं०) जगत् में अन्तर। (सुद० ४/१)

जगदन्तः (पुं०) संसार के भीतर। (सुद० ८१)

जगद्विभूषणं (नपुं०) संसार का अलंकरण। (सुद० ३४)

जगद्धितं (नपुं०) लोक कल्याण (सुद० २/२६)

जगदम्बिका (स्त्री०) देवी। जगतां प्राणिनामम्बिका प्रतिपालिके यमि तस्या देव्या। (वीरो० १/३५)

जगदाह्लादक (वि०) संसार को आनन्दित करने वाला। (वीरो० ८/७)

जगदीशसुतः (पुं०) भरत। ऋषभ को जगदीश कहा गया, उनका पुत्र भरत। जगदीशस्यादीश्वरस्य सुतो भरतचक्रवर्ती। (जयो० वृ० २३/८९)

जगदीश्वरः (पुं०) ऋषभदेव। (हित०सं० ६) धर्मश्चार्थश्च कामश्च, मोक्षश्चेति चतुष्टयम्। साध्यत्वेन मनुष्यस्य समाह जगदीश्वरः।। (लि० ६)

जगदेकतात (पुं०) जगत् के अद्वितीय गुरु ऋषभ को जगत् का गुरु कहा गया क्योंकि उन्होंने सर्वप्रथम जगत् के प्राणियों के हितार्थ असि, मसि, कृषि, वाणिज्य, शिल्पादि का कथन किया था।

जगदेकदेवः (पुं०) आदीश्वर ऋषभदेव, नाभेयज, आदिब्रह्म। जगतां सर्वेषां जीवानामेको देवः, प्रकाशगत। ऋषभः (जयो० वृ २७/१)

जगदेकविभूषणं (नपुं०) एकमात्र अद्वितीय आभूषण स्वरूप। भूषणैर्भूषयामास जगदेकविभूषणम्। (वीरो० ७/३७)

जगदेवः (पुं०) जगन्नग, संसार का देव। (जयो० १/१०)

जगत्पालः (पुं०) विश्वम्भर। (वीरो० ५/२३)

जगन्नगः (पुं०) जगदेव। (दयो० १/१०)

जगन्नाथः (पुं०) विश्व का स्वामी, ऋषभदेव का एक नाम।

जगन्मोहकर (वि०) जगत् को मोह उत्पन्न करने वाला। यन्त्रं जगन्मोहकर स्वभावात्समङ्कितं मन्मथमन्त्रिणा वा। (जयो० ११/५८)

जगन्मोहिनी (स्त्री०) लक्ष्मी (सुद० १/४०)

जगन्निवासः (पुं०) परमात्मा, संसार का स्थान, लोक का आधार।

जगन्मान्य (वि०) विश्व मान्यता वाला। (वीरो० २२/७)

जगनुः (स्त्री०) अग्नि, आग।

जगप्रसूत (वि०) जग की उत्पत्ति। (वीरो० १७/१)

जगराः (पुं०) कवच।

जगराग्र (पुं०) कवच प्रान्त। (जयो० ७/१०७)

जगल (वि०) [जः जातः सन् गलति-गच्+अच्] चालाक, धूर्त।

जगलं (नपुं०) १. कवच, २. गोबर।

जग्ध (वि०) [अद्+क्त] भुंगित, खादित, खाया हुआ।

जग्धिः (स्त्री०) [अद्+क्तिन्] भोजन, खाना।

जघनं (नपुं०) [हृ+अच्, द्वित्वम्] श्रोणी, नितम्ब। (जयो० वृ० ३/६०) १. कूल्हा, चूतड़, पुट्ठा, २. स्त्रियों का पेडू, ३. सेना का पिछला भाग, सुरक्षित भाग।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जघनमूल (नपुं०) श्रोणिपूरी भाग, ऊरुस्थल। (जयो० १७/११३)

जघनस्थली (वि०) नितम्बप्रदेश वाली। (जयो० वृ० २४/२)

जघनाघातः (पुं०) श्रोणिपुर घात, नितम्बाघात। 'जघनैः श्रोणिपुरो भागैर्योसावाघातः' (जयो० वृ० २४/८४)

जघन्य (वि०) [जघने भव+यत्] सबसे पीछे, अन्तिम। १. अधम, नीच, गिरा हुआ। २. **व्रताहित**-अत्यन्त दुष्ट, पतित, क्षुद्रपरिणामी। 'गन्तोषयन् खट्टिको जघन्यः।' (वीरो० १६/१६) ३. सर्वसाधारण लोग। (दयो० वृ० ११८)

जघन्य-अन्तरात्मा (पुं०) जिवभक्तगुण ग्रहण में अनुरक्त, आत्मनिन्दा से युक्त, अविरत सम्यग्दृष्टि।

जघन्य-अन्तर्मुहूर्तः (पुं०) एक प्रमाण विशेष, एक समय अधिक आवली।

जघन्य अपहृत (वि०) बाह्य साधनों से युक्त।

जघन्यपदं (नपुं०) पतित पद।

जघन्यपात्रः (नपुं०) शीलवान्, मिथ्यादृष्टि पुरुष, अविरत सम्यग्दृष्टि जीव, व्रतरहित व्यक्ति। 'व्रतेन रहित सुदृशं जघन्यम्'। (सागार धर्मामृत ८/४४) 'जघन्यं शीलवान् मिथ्यादृष्टिश्च पुरुषो भवेत्। (महापुराण २०/१४०) 'अविरइसम्माइट्ठी जहण्णपत्तं उ अक्खियं समये।'

जघन्यभावः (पुं०) क्षुद्रभाव, दुष्ट परिणाम, बुरे विचार।

जघन्यस्थितिः (स्त्री०) एक समय प्रमाण वाली स्थिति।

जघ्निः (वि०) आक्रमणकारी।

जघ्नु (वि०) आक्रमण करने वाला, प्रहार करने वाला।

जङ्गम् (नपुं०) जंग, अयस्क/लोह पर लगने जंग।

जङ्गम (वि०) [गम्+यङ्+अच्] १. जीवित, चर, जीवधारी। चलायमान, हिलने-डुलने वाला। २. अपने बच्चे। निजमङ्गजमङ्ग जङ्गमं सहसोत्थापय धृष्ट। (जयो० १३/९५)

जङ्गमप्रतिमा (स्त्री०) अरिहंत प्रतिमा। मोक्षगमनकाले 'एकस्मिन् समये जिनप्रतिमा जङ्गमा कथ्यते' (दर्शन० ३५)

जङ्गलं (नपुं०) [गल्+यङ्+अच्] मरुधरा, मरुभूमि, मरुस्थल, जल से रहित प्रदेश, मारवाड परियात्रादि प्रदेश।

जङ्गालः (नपुं०) मेढ़, बांध, सीमा, चिह्न।

जङ्गुलं (नपुं०) [गम्+यङ्+डुल] विष, जहर।

जङ्घः (पुं०) जंघा, पिण्डली, टखने से लेकर घुटने तक का भाग। अबालभावतो जङ्घे सुवृत्ते विलसनोः। (जयो० ३/४६)

जङ्घा (स्त्री०) [जङ्घन्यते कुटिजं गच्छति-हृ+यङ्+अन्] जांघ, पिण्डली।

जङ्घाकारिक (वि०) धावक, हरकार, संदेशवाहक।

जङ्घाचारणा (स्त्री०) एक ऋद्धि विशेष, जिसके प्रभाव से पृथिवी के चार अंगुल ऊपर आकाश में घुटने मोड़े बिना बहुत योजन तक गमन करने में समर्थ कराने वाली ऋद्धि।

जङ्घात्राणं (नपुं०) जंघा रक्षक कवच, आज क्रिकेट खेल में जो पेड पहना जाता है।

जङ्घासदृशी (वि०) जंघाओं के समान। (जयो० वृ० ११/२०)

जङ्घिल (वि०) [जङ्घा+इलच्] प्रधावक, फुर्तीला, तीव्रगति वाला।

जज् (अक०) लड़ना, युद्ध करना।

जट् (अक०) जुट जाना, तत्पर होना।

जटा (स्त्री०) [जट्+अच्+टाप्] १. शाखा, जड़, २. शतावरी पादप। ३. लम्बे बालों का झुण्ड, आपस में चिपके हुए केश समूह।

जटावीरः (पुं०) शिव।

जटाधरः (पुं०) शिव।

जटाजूट (त्रि०) जटाओं युक्त।

जटाज्वालः (पुं०) दीपक, लैंप।

जटायुः (पुं०) [जटं संहनमायुः यस्य] १. श्येनी और अरुण का पुत्र। २. एक पक्षी।

जटाल (त्रि०) [जटा+लच्] जटाधारी, घुंघराले केशवाला। (सुद० ३/१४)

जटिः (स्त्री०) गूलर पादप, संघात।

जटिन् (वि०) जटाधारी।

जटिल (वि०) [जटा+इलच्] १. जटाधारी। २. अव्यवस्थित, कठिन, व्याप्त। ३. अभेद्य, सघन।

जटिलः (पुं०) सिंह।

जठर (वि०) [जायते जन्तुर्गर्भो वास्मिन्-जर-अर-ठान्तदेशः] १. कठोर, सख्त, दृढ़।

जठरः (पुं०) उदर, पेडू, गर्भाशय, उदर मध्यभाग (जयो० १३/६०)

जठर-ज्वाला (स्त्री०) उर भूख, उदराग्नि।

जठर-यंत्रणा (स्त्री०) शूल, गर्भावास का कष्ट।

जठर-यातना (स्त्री०) गर्भ पीडा।

गठरव्यथा (स्त्री०) उदरशूल।

जठर-वह्निः (स्त्री०) जठराग्नि

जठर-वह्निधरः (पुं०) उदर। जठरवह्नि धरतीति जठरवह्निधरमुदरम्। (जयो० वृ० ९/३७)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जठर-व्याधि (स्त्री०) उदरपीड़ा, गर्भ पीड़ा, गर्भाशय दुःख।

जठराग्नि: (स्त्री०) पेट में स्थित अग्नि, आहार को पचाने वाली अग्नि।

जड (वि०) [जलति घनीभवति-जल्+अच्] १. मूर्ख, अज्ञ, अनभिज्ञ, अज्ञानी। (जयो० वृ० २/१४८) अस्मिन्निदानीमजडेऽपि काले रुचिः शुचिः स्यात्खलु सन्तमाऽऽले। (सुद० १/६) २. ठिठुरा हुआ, जमा हुआ। ३. गतिहीन, मन्दर, अपंग। ४. निश्चतन, चेतना रहित, विवेकशून्य। (जयो० १/४७), ५. उदासीन, संज्ञाशून्य।

जडकर्मन् (स्त्री०) उदासीन जन्य काम।

जडजं (नपुं०) १. जलज, कमल, २. जडता युक्त (जयो० १/४७)

जडजात (वि०) जडता को प्राप्त होने वाले। जडस्य अज्ञस्य जातम् (जयो० १/५८) (सुद० ५/२) १. जहाज तोड़ने वाले। क्रियते विप्रवरैरिहादरो जडजातस्य समुत्सवतः। (सुद० ३/२)

जडजाधिनाथः (पुं०) १. मूर्खनाथ, मूर्खाधिपति। 'जडजानां मूर्खाणा वाधिनाथः स्वामी'' (जयो० वृ० ८/७) २. **कमलनाथ**- जडजानां कमलानां अधिनाथः स्वामी (जयो० वृ० ८/७)

जडता (वि०) [जड+तल्+टाप्] मूर्खत्व (जयो० २/१४६) अज्ञान, मूर्खता, आलस्यपना, बुद्धिहीनता, विपरिणाम, **निर्विचार** 'जडतया विपरिणामतया निर्विचारतया' (जयो० वृ० १/८५) 'शुमनस्ता जडतायाश्च भवत्यन्तः' (सुद० ८१)

* **अज्ञता**-'जडतायाः अपकारिणीमतः' (सुद० ३/३२)

जडत्व (वि०) मूर्खता, अज्ञानता।

जडतातिगत (वि०) अज्ञानता से दूर हुआ, वारि से दूर, विज्ञ बना। (जयो० ६/११०) 'जडतातो अति गतो दूरवर्ती भवन्नपि' (जयो० वृ० ६/११०)

जडतापकरणं (नपुं०) १. ग्रीष्म ऋतु ज्येष्ठ मास। 'जडः प्रकर्षश्चासौ तापश्च जडतापस्तस्य करणाय ज्येष्ठो गुरुः ज्येष्ठमासः' (जयो० २२/१७) २. मूर्खता को दूर करने वाली। जडताया मूर्खभावस्य करणाय विनाशनाय। (जयो० वृ० २२/१७)

जडधी (स्त्री०) जडमति, मंदबुद्धि। पापिष्ठेन दुरात्मना जडधिया मायाविना लोभिना। (मुनि० १८) वृद्धो वराको जडधी रयेण जातोऽमुना विभ्रमसंगुतानाम्। (वीरो० ४/२३)

जडधीश्वरः (पुं०) मूर्ख। (वीरो० ९/८९)

जडप्रसङ्गः (पुं०) मूर्ख की संगति, मूर्खसमागम। (वीरो० ५/१०) गतस्य जीवस्य जडप्रसङ्गम्। (वीरो० १८/३)

जडराशि (स्त्री०) जडता की प्रमुखता, मूर्खता का योग। (सुद० ३/४६)

जडान्तकरणं (नपुं०) विमूढमन। (जयो० वृ० २/१४२)

जडाशयः (पुं०) निर्विवेक, विवेक का अभाव, ज्ञानता का अभाव। (सुद० १/६) मूर्खहृदय महामूर्ख-कोई नवयुवती स्वयंवर मंडप में नवयुवकों को छोड़कर सबसे अन्त में बैठे हुए बृद्ध मनुष्य का वरण करे तो उसे महामूर्ख कहा जाएगा।

जडाशयत्व (वि०) मूर्खता युक्त, अज्ञानता करने वाला, विवेकता से विमुख हुआ। (समु० ६/४०)

जडिमन् (पुं०) [जड+इमनिच्] १. जड़ता, मन्दता, बुद्धिहीनता। २. मूर्च्छा, आसक्ति, संज्ञाहीनता।

जतु (नपुं०) [जायते वृक्षादिभ्यः जन+उ+त] लाख।

जतुकं (नपुं०) [जतु+कन्] लाख, महावर।

जतुका (नपुं०) [जतुक+टाप्] १. लाख, चमगादड़।

जतुकी (स्त्री०) [जतुक+ङीष्] चमगादड़।

जतुपरिणतिः (स्त्री०) लाख का परिणमन। (जयो० वृ० १२/१०६)

जत्रु (नपुं०) [जन्+रु] हंसुली, ग्रीवा हड्डी।

जन् (अक०) उत्पन्न होना, पैदा होना, जन्म होना, निकलना, फूटना, घटना। (जयो० वृ० १/२३)

जनः (पुं०) [जन्+अच्] १. प्राणी, मनुष्य। (जयो० वृ० १/१४) पुरुष, व्यक्ति-'भो भो जना वीरविभोर्गुणौघा -नसोऽनुकूलं स्मरतामोघा। (सुद० १/४) 'मुक्तौ जनः संसरणात्सुभोगः' (जयो० १/२२) २. जीवित प्राणी, जन्तु, जनस्य (सम्य० १५५) जनः (सम्य० १५४)

जनकः (पुं०) १. पिता, जन्मदाता, तात। (जयो० वृ० ३/११६) 'रश्मिवेग-जनकोऽप्यथ माता' (समु० ५/२४) २. पूज्य, बड़े-सोऽस्मेत्कञ्जनकायासौ राज्ञे राजा जिनाय य। (सुद० ४/२०)

जनक (वि०) [जन्+णिच्+ण्वुल्] पैदा करने वाला, जन्मदाता, उत्पन्न करने वाला।

जनकात्मजा (स्त्री०) जनक राजा की पुत्री सीता। (जयो० १३/५९)

जनकसुता (स्त्री०) सीता। (सुद० ८८)

जनकारिन् (वि०) कल्याणकारी।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जनघोषः (पुं०) जनता का स्वर, जन जन की पुकार।

जनचक्षुस् (नपुं०) सूर्य, दिनकर।

जनङ्गामः (पुं०) चाण्डाल।

जनता (स्त्री०) [जनानां समूहः] प्रजावर्ग, सर्वसाधारण जन। (जयो० १२/५७) 'जनतायाः प्रजावर्गस्य मोदसिन्धुः' (जयो० ५/३४) भूरञ्जन (जयो० १)

जनतानन्दजनकः (पुं०) जनता के आनन्द का आधार, प्रजा के आनन्द का हितैषी-'जनतायाः लोकसमूहस्य आनन्दं जगतीत्यानन्दजनकः सम्मदकरः' (जयो० वृ० २/१४३)

जनतावशगा (वि०) प्रजा का हितैषी, प्रजा का मन-पसन्द। 'जनताया वशगा भवनि यथा जनतायाः प्रसत्तिः स्यात्। (जयो० वृ० ४/११)

जनत्रा (स्त्री०) आतपत्र, छतरी, छाता।

जनदेवः (पुं०) नृप, राजा।

जनधनं (नपुं०) प्रजाधन।

जननं (नपुं०) [जन+ल्युट्] जन्म, उत्पत्ति, प्रसूति, प्रसव, सृजन, उत्पादन।

जनन (त्रि०) उत्पन्न करने वाला, जन्मदाता। १. जीवन, अस्तित्व, उदय।

जन-नायकः (पुं०) नृप, राजा। विभूतिमत्त्व दधताऽप्यनेन महेश्वरत्वं जननायकेन। (जयो० ३/१३)

जननिः (स्त्री०) [जन्+अनि] माता, मां, अम्मा, अक्का, आई।

जननी (स्त्री०) १. माता (समु० ३/११) 'जनयति प्रादुर्भावयत्यपत्यमिति जननी' सन्तान को जन्म देने वाली स्त्री। २. करुणा, दया। ३. चमगादड़, ४. लाख, लाक्षा।

जननीजनतीय (वि०) मातृतुल्य धाय। (सुद० ३/२१)

जननीमुदः (पुं०) मातृचित्तविनोद। (वीरो० ५/४१) सुपल्लवाख्यानतया सदैवाऽनुभावयन्त्यो जननीमुदे वा। देव्योऽन्वगुस्तां मधुरां निदानाल्लता यथा कौतुकसम्बिधाना।। (वीरो० ५/४१)

जनपदः (पुं०) १. राष्ट्र, नगर, साम्राज्य, राजधानी। २. जनसमुदाय। देश का एक प्रदेश/हिस्सा। जनसाधारण, प्रजा।

जनपदिन् (पुं०) राजा, नगराधिपति।

जनप्रवादः (पुं०) जनश्रुति, जनवाद, लोकापवाद, किंवदन्ती।

जनप्रिय (वि०) लोक प्रिय, जन हितेच्छु, जन-पसन्द, लोक रंजन का धारक।

जनभूमि (स्त्री०) नगर भूमि, वन भूमि। (जयो० १३/४२)

जनमतः (वि०) लोक अभिप्राय, लोगों की विचारधारा, जनादेश।

जनमञ्चः (पुं०) जन समुदाय, लोक समूह। (जयो०)

जनमर्यादा (स्त्री०) सर्वमान्य रीति, लोक पद्धति, लोकधारा।

जनमान्य (त्रि०) सकल सम्मत, सर्व सम्मत, सभी लोगों द्वारा मानी गई। (दयो० १/१४)

जनमोदः (पुं०) लोक आमोद, जनता का परम हर्ष।

जनमेजयः (पुं०) एक नृप, राजा, हस्तिनापुर का अधिपति।

जनयितृ (वि०) जन्म देने वाला, सृष्टिकर्ता।

जनयित्री (स्त्री०) [जनयितृ+ङीष्] माता, जननी।

जनरञ्जनं (नपुं०) लोक हर्ष, जन आमोद। जनकसुतादिक-वृत्तवचस्तु जनरञ्जनकृत्केवलमस्तु। (सुद० ८८)

जनवादः (पुं०) जनश्रुति, लोककथन, लोकापवाद।

जनव्यवहारः (पुं०) लोक प्रचलन, लोक व्यापार।

जनशीषः (पुं०) जन शिरोमणि। (जयो० ९/७५)

जनश्रुत (वि०) विख्यात।

जनश्रुतिः (स्त्री०) किंवदन्ती।

जनसङ्घट्टनं (नपुं०) जनसमूह, जनसमुदाय। 'जनानां संघट्टनं समर्दोऽस्ति' (जयो० १३/१५)

जनसन्निवेशः (पुं०) जन समूह। (वीरो० १८/११)

जनसमुदायः (पुं०) १. कारक, छावनी, सैनिक पड़ाव स्थान-'कटकं जनसमुदायं दधामि (जयो० वृ० १२/१२४) २. स्वजनचक्र, सुजनचक्र (जयो० वृ० ६/४८)

जनसमूहः (पुं०) १. लोक सम्प्रदाय। (दयो० १०) राज्ये संतुष्टस्य जनसमूहस्य (जयो० वृ० १/१९) २. व्रज (जयो० वृ० ५/८)

जनसाक्षी (वि०) कहावत, किंवदन्ती। जन एव साक्षी ज्ञाताऽस्ति (जयो० ६/११८)

जनसेवी (वि०) जनता का सेवक। (वीरो० १८/१२)

जनातिग (वि०) असाधारण, असामान्य, अतिमानव।

जनापवादः (पुं०) लोक निन्दा, लोकापवाद। (जयो० १/६७)

जनाधार (पुं०) जनसमूह।

जनाधिपः (पुं०) नृप, राजा।

जनाधिनाथः (पुं०) राजा, अधिपति।

जनान्तः (पुं०) शून्यस्थान, एकान्त निर्जन।

जनान्तिकं (नपुं०) गुप्त संवाद।

जनार्दनः (पुं०) विष्णु।

जनाकीर्णः (वि०) जनसमुदाय।

जनाश्रयः (पुं०) लोकाधार, जन सहारा, जनस्थान। (जयो०

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

३/७२) 'कलत्रं हि सुवर्णोरुस्तम्भं कामिजनाश्रयम्' (जयो० ३/७२) चम्पापुरी नाम जनाश्रयं तं श्रियो निधाने सुतरां लसत्तम्। (सुद० १/२४)

जनि: (स्त्री०) [जन्+इन] १. जन्म, उत्पत्ति, सृजन, प्रसूति। (सम्य० ४५) २. स्त्री, माता, पत्नी। ३. **पुत्रवधू**, स्नुषा।

जनिका (स्त्री०) [जनि+कन्+टाप्] १. पुत्रवधू-जनीवजनिका वधूत्वा (जयो० वृ० ४/५४) २. रूपवती नारी (जयो० ६/४१) पुनरनु काविल राजं जनीकया तर्जनीकया कृत्वा (जयो० ६/४१)

जनिभू (वि०) उत्पन्न करने वाली, जन्म देने वाली। (सुद० ११२)

जनित (वि०) [जन्+णिच्+क्त] उत्पन्न किया गया, प्रसूतित। (जयो० वृ० १/२२, २/३७)

जनितृ (पुं०) [जन+णिच्+तृच्] जनक, पिता।

जनित्री (स्त्री०) जननी, माता।

जनी (स्त्री०) नारी, स्त्री, महिला। (जयो० १६/४६) 'रजनीव जनी महीभुज।'

जनीका (स्त्री०) पत्नी, नारी। (जयो० ६/४१ जननशीला वीरो० ६/४०)

जनीजन: (पुं०) प्रमदासमूह, नारी समूह। (जयो० १०/५८)

जनीजन (पुं०) वृद्ध स्त्री। (सुद० ३/११) कुलदीपयश: प्रकाशितेऽपतमस्यत्र जनीजनैर्हिते। (सुद० ३/११)

जनीमनस् (पुं०) स्त्रीमन, नारी स्वभाव। रविर्धनु: प्राप्य जनीमनांसि किल प्रहर्तुं विलसमांसि। (वीरो० ९/२८)

जनीसमाज: (पुं०) स्त्री समाज, नारी वर्ग। (वीरो० ६/१७)

जनीस्वनीति: (स्त्री०) स्त्रियों की चेष्टा, नारी पद्धति। (वीरो० ६/२२)

जनु (स्त्री०) [जन्+उ] जन्म, उत्पत्ति, प्रसूति, प्रसव। (सुद० वृ० ७०)

जनुज (वि०) उत्पन्न करने वाली, जन्म देने वाली। (जयो० वृ० १२/१३३)

जनुर्मृत्यु (स्त्री०) जन्म मरण। (दयो० १०७) लाभालाभौ जनुर्मृत्युर्यशोऽपयश एव च। (दयो० १०७)

जनुरुत्सव: (पुं०) जन्मोत्सव। (भक्ति० २२) श्रीह्रीभिरासेवित-मातृकाय देवै: सुमेरौ जनुरुत्सवाय' (भक्ति० २२)

जनुस् (नपुं०) [जन्+उसि] जन्म, उत्पत्ति, प्रसूति, उत्पादन जीवन। 'अनुबुध्य जनुर्जिनेशिन:' (जयो० १२/१३८) (वीरो० ७/३)

जनुष्मता (वि०) जन्मता, उत्पत्तिपना। (दयो० ३९)

जनु:सर्थि (वि०) जन्म की सार्थकता, उत्पत्ति का महत्त्व, जन्म लेने का प्रयोजन। (सुद० ११५) तस्यैव साधोर्वचस: प्रमाणाज्जनी जनु: सार्थमिति ब्रुवाणा' (सुद० ११५)

जनेन्द्र: (पुं०) नृपति, अधिपति।

जनेश्वर: (पुं०) नृपति, अधिपति, राजा। (जयो० वृ० १२/८९)

जनेश्वरी (स्त्री०) ज्ञानी। (सुद० ८९) भोजने भुक्तोज्झिते भुवि भो जनेश्वरि। (सुद० ८९)

जनैक-बन्धु: (पुं०) प्राणिमात्र का एक मात्र मित्र। (सुद० १/३)

जनोघ: (पुं०) जन समुदाय।

जनोदाहरणं (नपुं०) यश, कीर्ति।

जन्तु: (पुं०) प्राणी, मनुष्य, जीव। (सम्य० ५३) 'संसार स्फीतये जन्तोर्भाव:' (सुद० ४/१२) सुखं च दु:खं जगतीह जन्तो: (सुद० वृ० १११)

जन्तुबध: (पुं०) प्राणिवध, प्राणियों का घात। त्वमेकदा विन्ध्यगिरेर्निवासी भिल्लस्त्वदीयाप्रियुगेदेकदासी। तयोरगाज्जीव नमत्यधेन निरन्तरं जन्तुबधाभिधेन।। (सुद० ४/१७)

जन्तुमात्र: (पुं०) प्राणि मात्र। (वीरो० १४/३७)

जन्तुविरहित (वि०) जीव रहित, चैतन्य प्राणि रहित। (हि० ४३)

जन्तूत्पत्ति: (स्त्री०) जीवोत्पत्ति। (सुद० १३०)

जन्मन् (नपुं०) [जन्+मनिन्] जन्म, उत्पत्ति (जयो० वृ० १/१५) १. उद्गम, मूल, जीव। २. कर्म के कारण, चार गति रूप उत्पत्ति।। प्राणग्रहण जन्म। (भ०आ०टी० २५) जन्म कर्मवशाच्चतुर्गतिषूत्पत्ति:।'

जन्मकील: (पुं०) विष्णु।

जन्मकुण्डली (स्त्री०) जन्मपत्रिका।

जन्मकृत् (पुं०) जनक, पिता।

जन्मगत (वि०) जन्म से प्राप्त।

जन्मक्षेत्रं (नपुं०) जन्म स्थान।

जन्मतिथि: (स्त्री०) जन्म दिन, जन्म का समय।

जन्मद: (पुं०) जनक, पिता।

जन्मदात्री (वि०) जन्म देने वाली। (समुद० ३/१२, जयो० ११/५४)

जन्मदिनं (नपुं०) जन्मतिथि, जन्म लेने का दिन।

जन्मदिवस: (पुं०) जन्मतिथि।

जन्मन् (नपुं०) उत्पत्ति। (जयो० वृ० १/३)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जन्मनक्षत्रं (नपुं०) जन्म का ग्रह।

जन्मनामन् (नपुं०) जन्म के समय रखा गया नाम।

जन्मपत्रं (नपुं०) जन्म पत्रिका, जन्मकुण्डली। (जयो० १५/६९)

जन्मपत्रिका (स्त्री०) जन्मपत्र, जन्मकुण्डली।

जन्मप्रतिष्ठा (स्त्री०) जन्मस्थान, १. मातृस्थान।

जन्मभाज् (पुं०) जीवित प्राणी।

जन्मभाषा (स्त्री०) मातृभाषा।

जन्मभूमिः (स्त्री०) मातृभूमि।

जन्मभृत् (पुं०) जीवित प्राणी। कस्मै जन्मभृतेऽप्यपद्रवकरं न स्यात् प्रभुर्भज्यताम्। (मुनि० १३)

जन्मयात्रा (स्त्री०) जीवन यात्रा। (वीरो० १८/७१)

जन्मयोगः (पुं०) जन्मपत्र, जन्म की गणना।

जन्मरोगिन् (वि०) जन्म से रोगी होने वाला।

जन्मलग्नं (नपुं०) जन्म समय।

जन्मवत् (वि०) जन्म की तरह। (जयो० १/२३)

जन्मवर्त्मन् (नपुं०) योनिस्थान, उत्पत्ति स्थान।

जन्मवार्ता (स्त्री०) जन्म लेने की कथा।

जन्मशोधणं (नपुं०) जन्म परिपालन, जन्म की सार्थकता।

जन्मसाफल्यं (नपुं०) जीवन का उद्देश्य, जीवन का लक्ष्य, जीवन की सफलता।

जन्मसंस्कारः (पुं०) प्रारम्भिक संस्कार, जन्म के समय के उचित नियम। (जयो० ११/५५)

जन्मस्थानं (नपुं०) १. जन्मभूमि, स्वदेश। २. गर्भाशय।

जन्माभिर्षयः (पुं०) जन्माभिषेक, तीर्थंकर बाल का प्रथम स्नान जो सुमेरु पर्वत की पांडुक शिला पर किया जाता।

जन्माभिषेक देखो ऊपर।

जन्मिन् (पुं०) जीवनधारी, प्राणधारी।

जन्मोत्थ-कथा (स्त्री०) जन्मवार्ता। निजीयपूर्वजन्मवार्ता। (जयो० वृ० २३/३३)

जन्य (वि०) [जन्+ण्यत्] १. जन्म लेने वाला, जनित, उत्पन्न, कुल से सम्बंधित। २. **वारयात्रिक**-बराती, वर के शोभा बढ़ाने वाले आगन्तुक कुटुम्बी (जयो० वृ० १२/१३४) ३. यान, वाहन, यात्रा का साधन। (जयो० ६/३९)

जन्यः (पुं०) १. बराती, वरयात्री, वर/दुल्हे के संगे सम्बंधी। २. जनश्रुति, किंवदन्ती।

जन्यं (नपुं०) १. उत्पत्ति, सृष्टि, जात, जन्म। २. बाजार, मेला, मण्डी। ३. अपमानजनक शब्द। ४. संग्राम, युद्ध।

जन्यजनः (पुं०) १. वार यात्रिक, बाराती। (जयो० १२/१२३) २. संवाहक लोक (जयो० ६/३३) जन्यानां जनः समूहो जन्यजनः संवाहकलोकः (जयो० वृ० ६/३३)

जन्यहस्तं (नपुं०) १. बरातियों के हाथ, प्रेमभाव। 'जन्यानां वारयात्रिकाणं हस्तपु' (जयो० वृ० १२/१३४) २. वधु/बहुत की सेविका/परिचारिका। ३. सुख, आनन्द। ४. यानवाहका। (जयो० वृ० ६/३९) उचितं चक्रुरिलापतिमितरं जन्या नयन्तस्ताम्। (जयो० वृ० ६/३९)

जन्युः (पुं०) जन्म, उत्पत्ति, प्राणी। १. बह्नि, आग, २. ब्रह्मा।

जप् (सक०) जपना, स्मरण करना, गुन गुनाना, मन्त्र उच्चारण करना, कहना, बोलना, प्रार्थना करना।

जपा (स्त्री०) जपा पुष्प। (सुद० ७६)

जपः (पुं०) [जप्+अच्] जपना, स्मरण करना, उच्चारण, कहना, दुहराना, प्रार्थना (जयो० वृ० ६/६४)

जपपरायणः (पुं०) मन्त्र साधाना में रत।

जपमाला (स्त्री०) मन्त्र जपने की माला। (जयो० वृ० १७/८२)

जपमालिका (स्त्री०) मन्त्र की माला।

जपाशं (नपुं०) जपा पुष्प, कामना करना। (जयो० वृ० ६/६४)

जप्य (वि०) [जप्+यत्] जपने योग्य, प्रार्थना करने के योग्य।

जभ्/जम्भ् (अक०) जंभाई लेना, उबासी लेना।

जम् (अक०) खाना, जीमना, भोजन करना।

जमदग्निः (पुं०) नाम विशेष, भृगुवंश में उत्पन्न ब्राह्मण।

जम्पती (पुं०) पति-पत्नी।

जम्पती-कहती हुई, कहने वाली, बोलती हुई। 'प्रत्यात्रजन्तामथ जम्पती तौ' (सुद० २/२४)

जम्बालः (पुं०) [जम्भ्+घञ्] काई, सेवार, कीचड़।

जम्बालिनी (स्त्री०) नदी विशेष।

जम्बीरः (पुं०) [जम्भ्+ईरन्] नींबू।

जम्बीरः (नपुं०) चकोतरा।

जम्बुकः (पुं०) १. गीदड़, २. अधम पुरुष। (दयो० ९६)

जम्बू (स्त्री०) [जम्+कु] जामुन, जामुन का वृक्ष। (सुद० १/१९) (जयो० वृ० १२/१४)

जम्बू (पुं०) जम्बुकुमार, एक नाम विशेष।

जम्बूकुमारः (पुं०) अर्हद्दास श्रेष्ठी का पुत्र राजपुरी नगरी के सेठ का पुत्र। श्रेष्ठिनोऽप्यर्हद्दासस्य।

जम्बू तरुः (पुं०) जामुन वृक्ष। (वीरो० वृ० १५/२५)

जम्बूद्वीपः (पुं०) मनुष्य लोक के ठीक मध्य में स्थित एक लाख योजन प्रमाण का एक द्वीप। (जयो० वृ० २३/४३)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिः (स्त्री०) भोगभूमि और कर्मभूमि के क्षेत्र का वर्णन करने वाला ग्रन्थ।

जम्बूद्रुमः (पुं०) जम्बुवृक्ष। (वीरो०

जम्बूपदः (नपुं०) जम्बूद्वीप। (सुद० १/११)

जम्बूपददः (पुं०) जम्बूद्वीप। (जयो० २४/७)

जम्बूपुर (पुं०) जम्बु नामक नगर। (जयो० २३/५५)

जम्बूलः (पुं०) एक वृक्ष विशेष।

जम्बूवृक्षः (पुं०) जम्बूद्रुम, जामुन का पेड़। (दयो० ५१)

जम्भः (पुं०) [जम्भ्+घञ्] दात। दन्त। जम्भो दन्तेऽपि जम्भीर इति विश्वलोचने' (जयो० वृ० १४/१८) २. खाना, ३. खण्ड, टुकड़ा, अंश, भाग, ४. तरतकस ५. ढोढी, ५. जम्भाई, उबासी।

जम्भजृम्भितं (नपुं०) दन्त परिवर्धन। जम्भानां दन्तानां जृम्भितं परिवर्द्धमानम् (जयो० १४/१८)

जम्भरसः (पुं०) नीबू। (जयो० २६/८०)

जम्भराज (स्त्री०) दन्तपंक्ति, प्रधानदन्त। जनयन्ति तदुज्झिताः स्म लाजा निपतन्तोऽग्निमुखे तु जम्भराजाः। (जयो० १२/७१)

जम्भारिः (पुं०) १. अग्नि, इन्द्र।

जम्भीरः (पुं०) नीबू।

जय् (जि) (सक०) जीतना, सफलता प्राप्त करना, विजय प्राप्त करना। जयेत्-प्रशंसेत्-प्रशंसा करना। (जयो० ९/१२) जयन्ति-जीतते हैं। (जयो० ३/८६) जयन्ति स्वीकुर्वन्ति (जयो० वृ० ३/८६)
जयतमाम्-विजयताम् (जयो० ९/६३) सोऽजयज्जयनृपः कृपाशनेः (जयो० ३/१९) कः सौम्यमूर्तीति जयेति सूक्तिः। (जयो० ५/१०२) जयपाय-जीतने के लिए (सुद० २/४३) 'तस्याः कृशीयानुदरो जयाय' जयतु (सम्य० ५३)
जीयात्-(सुद० ११७)
जेतुं-(सुद० २/४५)
जयन्तः-(सुद० १/१७)

जयः (पुं०) [चि+अच्] १. जय, विजय, जीत, सफलता। (जयो० १/६५) २. **उत्कर्ष**-गृहिणो धर्मस्तस्यास्त। जयमुत्कर्ष संलभते (जयो० २/७२) १. **स्वदक्षसिद्धिजय**-'जयकुमार (जयो० १/२) २. **जयनशील**-हस्तिनापुर का शासक।

जयकारः (पुं०) जयघोष। (जयो० वृ० १२/९)

जयकुमारः (पुं०) हस्तिनापुर का शासक। (जयो० १/१३) (जयो० १/५) 'स जयकुमारनामा हस्ति पुराधिराजः'

जयकुमारनृपः देखो ऊपर।

जयकुमारनृपतिः (पुं०) हस्तिनापुर नरेश। (जयो० वृ० १/१५)

जयक्कणिः (स्त्री०) विष्णुचन्द्र नरेश की भाभी-
विष्णुचन्द्रनरेशस्याग्रजजाया जयक्कणिः।
नित्यं जिनेन्द्रदेवार्चा कुर्वती समभादियम्।। (वीरो० १५/४९)

जयकोलाहलः (पुं०) जयघोष।

जयघोषः (पुं०) जयनाद।

जयढक्का (स्त्री०) विजय का ढंका, विजयसूचक वाद्य।

जयध्वनिः (स्त्री०) जयघोष।

जयदेवः (पुं०) जयकुमार (जयो० ८/४७)

जयनं (नपुं०) [जि+ल्युट्] १. जीतना, दमन करना, विजय प्राप्त करना। २. जीन, हाथी-घोड़े की पलान, झूल। 'जयनं तु जये वाजि जवन गजप्रभृति' कञ्चुके' इति विश्वलोचनः' (जयो० १३/३८)

जयनशील (वि०) जयवंत, विष्णु। (जयो० १७/२)

जयनादः (पुं०) जयघोष।

जयनृपतिः (पुं०) राजा जयकुमार, हस्तिनापुर का राजा। (जयो० ३/१९)

जयन्त (वि०) जययुक्त। (जयो० २२/४३)

जयन्ती (स्त्री०) १. अकम्पित गणधर की माता। २. पताका (जयो० ८/१५) (वीरो० १४/९)

जयन्ती-जीतती हुई (सुद० २/१२)

जयवन्त-जीतने वाली, जीतने वाला।

जयपत्रं (नपुं०) जयघोष पत्र।

जयपुत्रकः (पुं०) एक पासा।

जयमङ्गलः (पुं०) राजकीय हस्ति।

जयमहीपतिः (स्त्री०) हस्तिनापुर नरेश जयकुमार। (जयो० १/११३) जयघोष अभिलेख।

जयमाला (वि०) विजयमाला।

जयवर्मा (पुं०) राजा विशेष।

जयराजः (पुं०) जयकुमार नामक नृपति।

जयराट् (पुं०) जयराज, जयकुमार राजा, हस्तिनापुर नरेश। (जयो० १७/३७)

जयवाहिनी (स्त्री०) १. शची, इन्द्राणी, २. विजययान यात्रा।

जयवन्त (वि०) विजयशील। (सम्य० १५३)

जयशब्दः (पुं०) जयध्वनि, विजयघोष।

जयस्तम्भः (पुं०) विजय स्तम्भ, कीर्तिस्तम्भ।

जयहस्ति (पुं०) जयनामक हाथी।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जया (स्त्री०) दुर्गा, अम्बिका। १. एक वचन, जिसके सिद्धान्त कथन किया जाए। २. पोदनपुरी के राजा प्रजापति की रानी। (वीरो० ११/१७)

जयिन् (वि०) जेतु शीलमरण-विजेता।

जयेच्छु (वि०) विजयाभिलाषी, जय/विजय का इच्छुक। (जयो० ८/४६)

जयैषिणी (वि०) विजयाभिलाषिणी, विजय की कामना करने वाली। (जयो० ६/११६)

जयोक्ति (स्त्री०) जयकार, जयध्वनि, जयघोष। जयनाद-(जयो० १२/९)

जयोदयः (पुं०) जयोदय नामक महाकाव्य, जिसमें २८ सर्ग हैं। जो हस्तिनापुर नरेश के विजय अभियान से लेकर वैराग्य तक के चित्र को चित्रित करने वाला है इसके रचनाकार महाकवि भूरामल आचार्य ज्ञानसागर हैं। इसको सं० १९८३ की सावन सुदी पूर्णिमा के दिन पूर्ण किया गया। (जयो० १/१) लोकधराङ्कात्मकसंगणिते विक्रमोक्तसंवत्सरे हिते। श्रावणमासमितिं प्रति याति पूर्णं निजपर-हितैकजाति।। (जयो० २८/१०९) लोकाः त्रयः धराः पृथिव्यः अष्टौ नय-आत्मा चैक इत्थमङ्कानां वामतो गतिरिति नियमात् परिवर्तिते १९८३ तमे हितकरे। श्रीमान् श्रेष्ठिचतुर्भुजः स सुषुवे भूरामलोपाह्वयं वाणीभूषण-वर्णिनं घृतवरी देवी च यं धीचयम्। तत्काव्यं लासतात् स्वयं विधि श्री लोचनाया जयराजस्याभ्युदयं दधद् वसु दृगित्याख्यं च सर्गं जयत्।।

जयोदयप्रकाश (पुं०) जय कुमार के अभ्युदय का कथन। (दयो० १/१)

जय्य (वि०) [जि+यत्] जीतने योग्य, प्रहार्य।

जरठ (वि०) [जृ+अठच्] १. कठोर, ठोस, २. अधिक वय का परिपक्व।

जरठः (पुं०) पाण्डुनरेश।

जरण (वि०) [जृ+ल्युट्] बूढा, क्षीण, निर्बल, वृद्ध।

जरणार्थ (वि०) परिपाक के लिए। (सुद० १२०)

जरत् (वि०) [जृ+शतृ] वृद्ध, क्षीण काय, निर्बल, जीर्ण।

जरत्कुमारः (पुं०) कृष्ण को मारने वाला (मुनि० २४) (वीरो० १७/४२)

जरत्गवः (पुं०) बूढ़ा बैल।

जरती (स्त्री०) वृद्धा, बुढ़िया, अधिक उम्र की नारी। (जयो० ४/५७)

जरती-जरती (स्त्री०) वार्धक्यपालित स्त्री, वृद्धा स्त्री। (जयो० १०/२७)

जरसान्वित (वि०) वृद्धत्व प्राप्त। (जयो० १८/४१)

जरन्तः (पुं०) वृद्ध पुरुष।

जरद्गव (वि०) वृद्ध बलीवर्द, बूढ़ा बैल (जयो० २३/६७) (दयो० २०/)

जरसाञ्चित (वि०) वार्धक्यविभूषित। (जयो० ९/७२)

जरा (स्त्री०) [जृ+अङ्+टाप्] बुढ़ापा, वृद्धावस्था। (जयो० १/३६) वयो हानि, वय जीर्णता। (वीरो० ९/७) जीर्यन्ति विनश्यन्ति रूप-वयो-बल-प्रभृतयो गुणा यस्यामवस्थायां प्राणिनः सा जरा। (भ०आ०टी० ७१)

जराजीर्ण (वि०) वयोवृद्ध, निर्बलता, क्षीणता।

जरायिक (वि०) जर से निकला। जरायुरेव जरः तत्र आयः जरायः जरायो विद्यते येषां ते जरायिकः-'गो-महिषी-मनुष्यादयः सावरण-जन्मानः'

जराधीनः (पुं०) वार्धक्यापन्न, वृद्धावस्था। (जयो० ७/४६)

जरायु (नपुं०) मांस एवं रुधिर का जाल। जालवत्प्राणि-परिवरणं विततमांस-रुधिरं जरायुः कथ्यते। तत्र कर्मवशादुत्पत्त्यर्थ माय आगमनं जरायः, जरायुरेवः जरः।

जरायुज (वि०) जरायु में उत्पन्न होने वाला। 'जरायौ जाता जरायुजाः' यत्प्राणिनामानायवत् जालवत् आवरणं प्रविततं पिशितरुधिरं तद्वस्तु वस्त्राकारं जरायु'-जरायौ जाता जरायुजाः।

जरासन्धः (पुं०) नाम विशेष। (वीरो० १७/४२)

जरित (वि०) [जरा+इतच्] वृद्ध, बूढ़ा, क्षीण, निर्बल।

जरिन् (वि०) वृद्धा, बूढ़ी। (जयो० १२/११)

जरी (वि०) वृद्ध स्त्री।

जरूथं (नपुं०) मांस।

जर्जर (वि०) [जर्ज्+अर] बूढ़ा, वृद्ध, निर्बल, क्षीण।

जर्जरित (वि०) [जर्जर्+णिच्+क्त] छिन्नाभिन्न, विद्ध। जीर्ण-शीर्ण, फटा-पुराना, विदीर्ण, अयोग्य, क्षार-क्षर, घिसा-पिटा, क्षीण, हीन। कुसुमेषोः शर-जर्जरितापि या जनता स्वयमितस्तयापि। (जयो० १४/३९)

जर्जरीक (वि०) [जर्जर्+ईक] बूढ़ा, वृद्ध, क्षीण, असमर्थ, अयोग्य, छिन्नभिन्न, विदीर्ण, विखण्डित।

जर्तुः (स्त्री०) योनि।

जल (वि०) [जल्+अक्] शीतल, ठंडा, जड़। स्फूर्तिहीन, निर्बल।

जलं (नपुं०) वारि, अम्बु, पानी, नीर। (जयो० १/५) उदक।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जया (स्त्री०) दुर्गा, अम्बिका। १. एक वचन, जिसके सिद्धान्त कथन किया जाए। २. पोदनपुरी के राजा प्रजापति की रानी। (वीरो० ११/१७)

जयिन् (त्रि०) जेतु शीलमरण-विजेता।

जयेच्छु (वि०) विजयाभिलाषी, जय/विजय का इच्छुक। (जयो० ८/४६)

जयैषिणी (वि०) विजयाभिलाषिणी, विजय की कामना करने वाली। (जयो० ६/११६)

जयोक्ति (स्त्री०) जयकार, जयध्वनि, जयघोष। जयनाद-(जयो० १२/९)

जयोदयः (पुं०) जयोदय नामक महाकाव्य, जिसमें २८ सर्ग हैं। जो हस्तिनापुर नरेश के विजय अभियान से लेकर वैराग्य तक के चित्र को चित्रित करने वाला है इसके रचनाकार महाकवि भूरामल आचार्य ज्ञानसागर हैं। इसको सं० १९८३ की सावन सुदी पूर्णिमा के दिन पूर्ण किया गया। (जयो० १/१) लोकधराङ्कात्मकसंगणिते विक्रमोक्तसंवत्सरे हिते। श्रावणमासमितिं प्रति याति पूर्णं निजपर-हितैकजाति।। (जयो० २८/१०९) लोकाः त्रयः धराः पृथिव्यः अष्टौ नय-आत्मा चैक इत्थमङ्कानां वामतो गतिरिति नियमात् परिवर्तिते १९८३ तमे हितकरे। श्रीमान् श्रेष्ठिचतुर्भुजः स सुषुवे भूरामलोपाह्वयं वाणीभूषण-वर्णिनं घृतवरी देवी च यं धीचयम्। तत्काव्यं लासतात् स्वयं विधि श्री लोचनाया जयराजस्याभ्युदयं दधद् वसु दृगित्याख्यं च सर्गं जयत्।।

जयोदयप्रकाश (पुं०) जय कुमार के अभ्युदय का कथन। (दयो० १/१)

जय्य (वि०) [जि+यत्] जीतने योग्य, प्रहार्य।

जरठ (वि०) [जृ+अठच्] १. कठोर, ठोस. २. अधिक वय का परिपक्व।

जरठः (पुं०) पाण्डुनरेश।

जरण (वि०) [जृ+ल्युट्] बूढा, क्षीण, निर्बल, वृद्ध।

जरणार्थ (वि०) परिपाक के लिए। (सुद० १२०)

जरत् (वि०) [जृ+शतृ] वृद्ध, क्षीण काय, निर्बल, जीर्ण।

जरत्कुमारः (पुं०) कृष्ण को मारने वाला (मुनि० २४) (वीरो० १७/४२)

जरत्गवः (पुं०) बूढ़ा बैल।

जरती (स्त्री०) वृद्धा, बुढ़िया, अधिक उम्र की नारी। (जयो० ४/५७)

जरती-जरती (स्त्री०) वार्धक्यपालित स्त्री. वृद्धा स्त्री। (जयो० १०/२७)

जरसान्वित (वि०) वृद्धत्व प्राप्त। (जयो० १८/४१)

जरन्तः (पुं०) वृद्ध पुरुष।

जरद्गव (वि०) वृद्ध बलीवर्द, बूढ़ा बैल (जयो० २३/६७) (दयो० २०/)

जरसाञ्चित (वि०) वार्धक्यविभूषित। (जयो० ९/७२)

जरा (स्त्री०) [जृ+अङ्+टाप्] बुढ़ापा, वृद्धावस्था। (जयो० १/३६) वयो हानि, वय जीर्णता। (वीरो० ९/७) जीर्यन्ति विनश्यन्ति रूप-वयो-बल-प्रभृतयो गुणा यस्यामवस्थायां प्राणिनः सा जरा। (भ०आ०टी० ७१)

जराजीर्ण (वि०) वयोवृद्ध, निर्बलता, क्षीणता।

जरायिक (वि०) जर से निकला। जरायुरेव जरः तत्र आयः जरायः जरायो विद्यते येषां ते जरायिकः-'गो-महिषी-मनुष्यादयः सावरण-जन्मानः'

जराधीनः (पुं०) वार्धक्यापन्न, वृद्धावस्था। (जयो० ७/४६)

जरायु (नपुं०) मांस एवं रुधिर का जाल। जालवत्प्राणि-परिवरणं विततमांस-रुधिरं जरायुः कथ्यते। तत्र कर्मवशादुत्पत्त्यर्थ माय आगमनं जरायः, जरायुरेवः जरः।

जरायुज (वि०) जरायु में उत्पन्न होने वाला। 'जरायौ जाता जरायुजाः' यत्प्राणिनामानायवत् जालवत् आवरणं प्रविततं पिशितरुधिरं तद्वस्तु वस्त्राकारं जगदु'- जरायौ जाता जरायुजाः।

जरासन्धः (पुं०) नाम विशेष। (वीरो० १७/४२)

जरित (वि०) [जरा+इतच्] वृद्ध, बूढ़ा, क्षीण, निर्बल।

जरिन् (वि०) वृद्धा, बूढ़ी। (जयो० १२/११)

जरी (वि०) वृद्ध स्त्री।

जरूथं (नपुं०) मांस।

जर्जर (वि०) [जर्ज्+अर] बूढ़ा, वृद्ध, निर्बल, क्षीण।

जर्जरित (वि०) [जर्जर्+णिच्+क्त] छिन्नाभिन्न, विद्ध। जीर्ण-*शीर्ण, फटा-पुराना, विदीर्ण, अयोग्य, क्षार-क्षर, घिसा-पिटा,* क्षीण, हीन। कुसुमेषोः *शर-जर्जरितापि या जनता* स्वयमितस्तयापि। (जयो० १४/३९)

जर्जरीक (वि०) [जर्जर्+ईक] बूढ़ा, वृद्ध, क्षीण, असमर्थ, अयोग्य, छिन्नभिन्न, विदीर्ण, विखण्डित।

जर्तुः (स्त्री०) योनि।

जल (वि०) [जल्+अक्] शीतल, ठंडा, जड़। स्फूर्तिहीन, निर्बल।

जलं (नपुं०) वारि, अम्बु, पानी, नीर। (जयो० १/५) उदक।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१. पूजन के समय चढ़ाने वाला प्रासुक जल। (सुद० ५/२१) जीवन, वन, गो, पय, विष, अमृत, शिव, भुवन, तोय। पयः कीलालममृतं जीवनं भुवनं वनम् तोयं जीवनमविषम्' इति धनञ्जय इत्यमरः (जयो० वृ० १४/७९) 'अनामिषाशनीभूयाद्वस्त्रपूतं पिबेज्जलम्' (सुद० ४/४३)

जलकण्टकः (पुं०) मगरमच्छ।

जलकपि (पुं०) सूंस, सुंसुमार।

जलकपोतः (पुं०) जल कबूतर।

जलकरङ्कः (पुं०) १. श्री फल, नारिकेल, नारियल, २. बादल, मेघ, ३. कमल। ४. तरङ्ग।

जलकल्कः (पुं०) पङ्क, कीचड़।

जलकाकः (पुं०) जलकौआ।

जलकान्तः (पुं०) वायु, पवन।

जलकान्तारः (पुं०) वरुणदेव।

जलकिराटः (पुं०) मगरमच्छ, घड़ियाल।

जलक्रीडा (स्त्री०) जलकेलि। (जयो० वृ० २०/८९)

जलकुक्कुटः (पुं०) जलमुर्ग, मुर्गानी।

जलकुन्तलः (पुं०) काई, सेवाल, सेवारज।

जलकूपी (स्त्री०) झरना, कूप, कुआं, तालाब, भंवर।

जलकूर्मः (पुं०) शिंशुमार, सूंस।

जलकेलिः (स्त्री०) जलक्रीडा, जलविहार। शिव मोक्षते सुखे जले इति (जयो० १४/६०) शिवकेलि।

जलकोशः (पुं०) सेवारज, सेवाल, काई।

जलङ्गमः (पुं०) [जल+गम्+खच्] चाण्डाल।

जलगत (वि०) जल से प्राप्त।

जलगुल्मः (पुं०) १. कच्छप, कछुवा। २. बावड़ी।

जलचर (वि०) जल के विचरण करने वाले जन्तु।

जलचारणं (नपुं०) जल में चलने की ऋद्धि, जीव विराधना से रहित जल में गमन। 'जलमस्पृश्य जलोपरि गमनं जलचारणत्वम्' (जैन०ल० ४५८)

जलचारिन् (वि०) जल में विचरण करने वाले जलतन्तु।

जलजः (पुं०) शङ्ख।

जलज (वि०) जल में उत्पन्न होने वाले।

जलजं (नपुं०) कमल, वारिज, पद्म। (जयो० ३/१००)

जलजन्तु (नपुं०) जलचर जीव। (दयो० ४२)

जलजात (वि०) जल में उत्पन्न हुए कमल। (जयो० १/५८)

जलजिह्वः (पुं०) मगरमच्छ।

जलजीवः (पुं०) १. जलजन्तु, २. मछवाह, मछुआरा।

जलजीविन् (पुं०) मछुआरा, मछवाह।

जलज्योतिः (स्त्री०) जल तरङ्ग।

जलतरङ्गः (पुं०) १. एक वाद्य विशेष। २. जल की लहरें।

जलताडनं (नपुं०) जल का पीटना, जल का अपव्यय।

जलत्यज (वि०) अम्बुदादातुं-जल पिलाने के लिए। (जयो० १२/१३१)

जलत्रा (स्त्री०) छाता, आतपत्र।

जलत्रासः (पुं०) जलातङ्क रोग, पालन कुत्ते के काटने पर होने वाला रोग, हड़कायापन।

जलदः (पुं०) मेघ, बादल, वारिमुच। (जयो० वृ० १२/५१)

जलदा (स्त्री०) जल देवी। (जयो० १२/१२१)

जलदाया (वि०) जल पिलाने वाली। (जयो० १२/१२१)

जलदानं (नपुं०) प्याऊ। (जयो० २०/२)

जलदानत्व (वि०) जलप्रदान करने वाली, नीरद भाव वाली।

जलदर्दुरः (पुं०) वाद्य यन्त्र।

जलदेव (पुं०) जलदेव।

जलदेवता (पुं०) जलदेवता।

जलदेवी (स्त्री०) जलपरी।

जलद्रोणी (स्त्री०) डोलची।

जलधरः (पुं०) मेघ, बादल।

जलधारा (स्त्री०) पानी की धार।

जलधिः (पुं०) समुद्र, सागर। (सुद० २२)

जलधीश्वरा (स्त्री०) नन्दिनी, समुद्र पुत्री (सुद० १/२) (वीरो० २/१७)

जलनकुलः (पुं०) ऊद बिलाव।

जलनरः (पुं०) जल पुरुष।

जलनिधिः (पुं०) समुद्र, सागर। (वीरो० ४/५१)

जलनिर्गमः (पुं०) १. नाली, २. जलप्रपात, झरना, निर्झर।

जलनीतिः (स्त्री०) काई, सेवारज, सेबाल।

जलपटलं (नपुं०) मेघ, बादल।

जलपतिः (पुं०) समुद्र, सागर।

जलपथः (पुं०) जलयात्रा।

जलपात्रं (नपुं०) मणिका, सुराही। (जयो० वृ० २/१३३)

जलपारावतः (पुं०) जलकपोत।

जलपित्तं (नपुं०) अग्नि, आग।

जलपुष्पं (नपुं०) कमल।

जलपूरः (पुं०) जल की बाढ़, पानी का विस्तार से फैलाव। वारिगण। (जयो० २०/३२)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जलपृष्ठजा (स्त्री०) काई, सेवारज।

जलप्रदानं (नपुं०) जल तर्पण, जल चढ़ाना।

जलप्रलयः (पुं०) बाढ़ से विनाश, जल से विनाश।

जलप्रवाहः (पुं०) जल की गति, जलधारा। (जयो० ६/७५)

जलप्रान्तः (पुं०) नदी का तट, किनारा।

जलप्रायं (नपुं०) जल बहुल प्रदेश। (जयो० १२/१३९)

जलप्रायप्रदेशः (पुं०) जल की बहुलता वाला प्रवेश।

जलप्रियः (पुं०) चातक पक्षी, मछली।

जलप्लवः (पुं०) ऊदबिलाव। १. जलप्रवाह (वीरो० २/१५)

जलप्लावनं (नपुं०) बाढ़, जलप्रलय।

जलबन्धुः (स्त्री०) मछली।

जलबालकः (पुं०) विन्ध्य गिरि।

जलबालिका (स्त्री०) विद्युत, बिजली।

जलबिंदुः (पुं०) समुद्र, जलनिधि। (जयो० ९/४१)

जलबिडालः (पुं०) ऊदबिलाव।

जलबिम्बः (पुं०) जलतरङ्ग, बुलबुला।

जलबिम्बं (नपुं०) जल तरङ्ग, बुलबुला।

जलबिल्वः (पुं०) सर, सरोवर, तालाब, चौकोर, तालाब। १. कछुआ, २. केंकड़ा।

जलभू (वि०) जल में उत्पन्न।

जलभूः (पुं०) १. मेघ, बादल। २. कपूर, जल का स्थान।

जलभक्षिका (स्त्री०) जल में रहने वाला कीट।

जलमण्डूकं (नपुं०) १. मेंढक, जल दुर्दर। २. वाद्य यन्त्र।

जलमार्गः (पुं०) पनाला, नाली, जलप्रणाली।

जलमुच् (पुं०) मेघ, बादल। (समु० ७/२५)

जलमूर्तिः (पुं०) शिव।

जलमूर्तिका (स्त्री०) ओला, हिमकण, बर्फ।

जलयन्त्रं (नपुं०) नलकूप, पाताल कूप से जल निकालने का साधन।

जलमन्दिरं (नपुं०) जलगृह, फव्वारा युक्त भवन, जल के बीच स्थित भवन।

जलयात्रा (स्त्री०) जलक्रीड़ा, जलकेलि, नौकायन।

जलयानं (नपुं०) जहाज, पोत, जलपोत। (जयो० १३/३४) (दयो० वृ० ६/६६)

जलरङ्कुः (पुं०) जलकुक्कुट, जलमुर्गा।

जलरण्डः (पुं०) १. भंवर, जलावर्त। २. जलकण, जलबिन्दु। ३. जलसर्प।

जलरुण्डः (पुं०) जलावर्त, भंवर।

जलरसः (पुं०) नमक, लवण, समुद्री नमक, सांभर नमक।

जलराशिः (पुं०) समुद्र, उदधि, सागर।

जलराशिजा (स्त्री०) सरस्वती, भारती। (जयो० १९/३४)

जलरुहः (पुं०) कमल, पद्म, सरोज।

जलरुहं (नपुं०) अरविंद, सरोज, पद्म।

जलरूपः (पुं०) मगरमच्छ।

जललताः (स्त्री०) लहर, तरङ्ग।

जलवमथु (वि०) पयोनिपीत, जल में फूत्कार, बुलबुला। (जयो० वृ० १३४/१००)

जलवादः (पुं०) पानी की बहुलता। (दयो० १०)

जलवायस् (पुं०) जल निवास।

जलवाहः (पुं०) मेघ, बादल।

जलवाहिनी (स्त्री०) पानी की मोरी, नालिका, नाली।

जलविषुवत् (नपुं०) शारदीय विषुवत् [२२ या २३ सितम्बर]।

जलवृश्चिकः (पुं०) झींगा मछली।

जलव्यालः (पुं०) पानी का कार्प, जल सांप।

जलशयः (पुं०) विष्णु।

जलशयनः (पुं०) विष्णु।

जलशयिन् (पुं०) विष्णु।

जलशाला (स्त्री०) प्याऊ। (जयो० वृ० ६/८६)

जलशूकं (नपुं०) काई, सेवारज।

जलशूकरः (पुं०) मगरमच्छ।

जलशोषः (पुं०) अनावृष्टि, कम बरसात।

जलसम्वाहिका (स्त्री०) जल खींचने वाली। (जयो० ११/९७)

जलसन्ततिः (स्त्री०) जलप्रवाह। (वीरो० ७/३४)

जलसर्पिणी (स्त्री०) जोंक।

जलसिञ्चित (वि०) जल से सींचा गया। (सुद० ३/)

जलसूचिः (स्त्री०) १. जोंक, सुंसुआर।

जलस्रुति (स्त्री०) जलप्रवाह। (वीरो० १८/३२ (जयो० १४/४५)

जलस्थानं (नपुं०) सरोवर, तालाब, जलाशय।

जलस्तम्भनवृत्ति (स्त्री०) जल रोकना, जलवृष्टि रोकने की ऋद्धि। (जयो० १३/३७)

जलहं (नपुं०) जलमन्दिर, जलमहल, फव्वारा।

जलहस्तिन् (पुं०) जलहाथी, गेंडा।

जलहारिणी (स्त्री०) पनाला, नालिका।

जलांश (वि०) अर्ण अंश, जलकण शीकर। (वीरो० ४/१६, भक्ति० ६)

जलाञ्चलं (नपुं०) १. झरना, निर्झर, जलप्रपात। २. काई, सेवाल।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जलाञ्जलिः (स्त्री०) चुल्लुभर पानी। (वीरो० १/३१)
जलाटन: (पुं०) सारस।
जलाटनी (स्त्री०) जोंक।
जलायितत्त्व (नपुं०) जल तत्त्व (वीरो० २०/६)
जलाशय: (पुं०) सरोवर, तालाब। (सुद० १/१८)
जलाशयं जलाधारं जलदे तु जलाशयं इति वि (जयो० वृ० २१/३३)
जलाष्टक: (पुं०) घड़ियाल, मगरमच्छ।
जलात्यय: (पुं०) शरद, पतझड़।
जलाधिदैवत: (पुं०) वरुणदेव।
जलाधिप: (पुं०) वरुणदेव।
जलानयनदासी (स्त्री०) रहट, कुटकुटी। (जयो० २५/९)
जलाम्बिक: (पुं०) कूप, कुआं।
जलार्क: (पुं०) सूर्य प्रतिबिम्ब।
जलाजीवानार्थ (वि०) जल से आजीविका चलाने वाला। (जयो० १/३७)
जलावगाह: (पुं०) जल में तैरना। (जयो० १४/८०)
जलित्व (वि०) जलधारित्व, नीरधारी (जयो० २०/७७)
जलभिघ (वि०) तडागादिक, तालाब आदि। (जयो० वृ० १/७४)
जलार्णव: (पुं०) वर्षाऋतु।
जलार्थिन् (वि०) प्यासा।
जलार्द (वि०) गीला।
जलूका (स्त्री०) जोंक।
जलेन्द्र: (पुं०) वरुणदेव। १. समुद्र।
जलेन्धन: (पुं०) वड़वाग्नि।
जलेभ: (पुं०) जलहस्ति।
जलेश: (पुं०) वरुणदेव।
जलेशय: (पुं०) मछली।
जलोत्सर्जनं (नपुं०) जलदाय। (जयो० वृ० ६२/१२१)
जलौक: (पुं०) जोंक। (जयो० ४/२०) (समु० १/१९)
जलोदभव: (पुं०) कमल। (जयो० ४/५९) ०नीरज।
जलोद्वेलनं (नपुं०) जलप्रवाह। (जयो० ११/३)
जल्प् (अक०) बोलना, कहना। (जयो० २/१५५) संलाप करना, गुनगुनाना, प्रलाप करना। जल्पन्ती।
जल्प: (पुं०) [जल्प्+घञ्] १. भाषण २. कलकलरव (जयो० वृ० १८/५८) ३. प्रवचन, वार्तालाप, संवाद, विचार, (सुद १/१२) वितण्डावाद (जयो० वृ० १८/५८) ४. वाद-विवाद। वाक् युद्ध। (सम्य० ३३) ०साध्य के विषय में दूसरे को तिरस्कृत करना।
जल्पका (वि०) व्यर्थ का बोलने वाला, बातूनी, गप्पी, मुखरी, वाचाल।
जल्पित (वि०) भाषित। (जयो० ५/२७)
जल्ल: (पुं०) मल, शरीर पर पसीने से जमने वाला मल, मलपरीषह। 'सर्वाङ्गमलो जल्ल:' शरीरमलं जल्ल:।
जल्लौषधि: (स्त्री०) मल परीषह, एक ऋद्धिविशेष, जिसके प्रभाव से मल को दूर किया जाता है।
जव (वि०) ०स्फूर्तिमान् तंदुरुस्त, ०चुस्त। ०स्फूर्ति, ०तेजी। जवेन (तृ०ए०) (सुद० २/४२) जवात्-त्वरितमेव (जयो० १९/५)
जवञ्जय (वि०) अत्यधिक शीघ्रता। (वीरो० ९/१६) संहति-यत्क्रियते जवञ्जये (समु० ९/१३)
जवलेविका (स्त्री०) जलेबी, एक मिष्ठान्न, रस से परिपूर्ण वर्तुल। भङ्ग विभङ्गरकारो मिष्ठान्न भेद:। (जयो० २४/७७) (जयो० ९/६०)
जवन (वि०) स्फूर्ति, तेजी, गतिशीलता, शीघ्रगामी।
जवनं (नपुं०) वेग, गति, चाल।
जवनिका (स्त्री०) [जूयते आच्छदयते अनया जु+ल्युट्+ङीप्+ जवनी+कन्+टाप्] १. पर्दा, आवरण, २. दृश्य, सदृक का एक अंश, प्राकृत में रचित सदृक रचना का एक वर्ग।
जवनी (स्त्री०) पर्दा, कनात।
जवशील (वि०) वेगशील। जवत एव वेगादेव (जयो० वृ० ६/२६)
जवस: (पुं०) [जु+असच्] घांस।
जवा (स्त्री०) [जव+टाप्] जपा पुष्प। अडहुल।
जवाहर (नपुं०) एक रत्न।
जवाहरलालनेहरू (पुं०) भारत के प्रथम प्रधानमंत्री। (जयो० १८/८४) नवम्बर १४ सन् १८८९ प्रयाग आनंद भवन।
जविवाह: (पुं०) घोड़ा, घोटक, अश्व। (जयो० १३/२६)
जष् (सक०) मारना, क्षति पहुंचाना, घायल करना।
जस् (सक०) १. मुक्त करना, छोड़ना, २. प्रहार करना, मारना। ३. अपमान करना।
जह् (सक०) छोड़ना- जहाति (सुद० १२०) (जयो० १/८)
जहक: (पुं०) १. समय, २. सर्प की केंचुली।
जहत् (वि०) त्यागने वाला। जहासि-छोडते हो। (सुद० ३/३८)
जहानक: (पुं०) [हा+शानच्+कन्] महाप्रलय।
जहु: (हा+उण्) शावक, वत्स, बछड़ा।
जह्नु (पुं०) एक नृप विशेष। (जयो० ६/३३)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जह्य (वि०) छोड़ने योग्य। (सुद० ४/४२)

जह्नकन्या (स्त्री०) गंगा। (जयो० ६/३३)

जा (सक०) जाना, पहुंचना, ग्रहण करना, उत्पन्न होना। (जयो० २/११) जातु (सुद० ९४) प्राप्त होना, (जाति-सुद० १०४) जायते- (जयो० २/१४)

* समझना, ज्ञात होना। (जयो० १/१) बुधो विपदे जातु। (सुद० ८९)

जाकियव्वा (स्त्री०) सत्तरस नागार्जुन की पत्नी। (वीरो० १५/३८)

जागरः (पुं०) [जागृ+घञ्] १. जागना, सचेत रहना। २. कवच, बख्तर।

जागरणं (नपुं०) [जागृ+ल्युट्] जागना, सचेत रहना, सतर्कता।

जागरा (स्त्री०) [जागृ+अ+टाप्] जागरण, सचेतनता।

जागरित (वि०) [जागृ+क्त] सचेत हुआ, जागा हुआ।

जागरितृ (वि०) जागरणशील, प्रबुद्धशील, निन्द्रा विमुक्त। सतर्क, सचेत।

जागर्तिः (स्त्री०) जागरण, सचेतता।

जागुडं (नपुं०) [जगुड+अण्] केसर, जाफरान।

जागृ (अक०) जागना, सचेत रहना।

जाघनी (स्त्री०) [जघन+अण्+ङीप्] १. पूंछ, २. जांघ।

जागृतिः (स्त्री०) उत्थान, विकास। (जयो० ५/७०)

जाङ्गल (वि०) जंगली, अनाड़ी, असभ्य, बर्बर।

जाङ्गलः (पुं०) तीतर पक्षी, बटेर।

जाङ्गलं (नपुं०) विष, ज़हर।

जाङ्गुलिः (पुं०) विषवैद्य।

जाङ्घिकः (पुं०) [जङ्घा+ठञ्] १. दूत, २. ऊँट।

जाजिन् (पुं०) [जज्+णिनि] योद्धा, सैनिक।

जाठर (वि०) उदरवर्ती, पेट सम्बन्धी।

जाठरः (पुं०) पाचनशक्ति।

जाड्यं (नपुं०) [जड+ष्यञ्] १. जडता, निष्क्रियता, मूर्खता, आलसीपना। (वीरो० ९/१८) २. शीतलता, जाड़ा- (वीरो० ९/१८)

जात (भू०क०कृ०) १. जन्म लिया गया, पैदा किया हुआ, उगा हुआ, निकला हुआ। २. उद्भूत, उत्पन्न 'ततश्च रजकी जाता' (सुद० ४/२८) ३. नियुक्त (जयो० १२/११५)

जातः (पुं०) पुत्र।

जातं (नपुं०) प्राणी, जन्तु, जीवधारी।

जातगीतिः (स्त्री०) कुण्डलीक करणनीति उत्पन्न करने की स्थिति। जातानां जन्मवतां बालकानां गीतिं जातनां पदार्थानां गीतिं स्पष्टीकरणं। (जयो० वृ० १८/५१)

जातकाम (वि०) आसक्त।

जातपक्ष (वि०) पंख निकलने वाला।

जातपाश (वि०) बंधन वाला, बेड़ी युक्त।

जातप्रत्ययः (वि०) विश्वास करने योग्य।

जातमन्मथ (वि०) कामरञ्जित को प्राप्त, प्रेमभाव को प्राप्त हुआ।

जातमात्र (वि०) सद्योजात, तत्काल उत्पन्न।

जातरूप (वि०) सुन्दर, उज्ज्वल जन्म का रूप, दिगम्बर रूप, निर्ग्रन्थ रूप, नग्न रूप। (जयो० २८/४)

जातरूपधर (वि०) दिगम्बर रूप धारी।

जातवेदः (पुं०) वह्नि, अग्नि।

जाता (भू०क०कृ०) उत्पन्न हुई। 'रतिरिव रूपवती या जाता' (सुद० १/४१)

जातिः (स्त्री०) [जन्+क्तिन्] जन्म, उत्पत्ति। (जयो० १२/६१ प्राप्ति (सम्य ५२) १. गोत्र, परिवार, कुल, वंश, वर्ग, समुदाय। २. **वर्ग विभाजन**-मनुष्यजातिरेकैव नामकर्मोद-योद्भवा। वृत्तिभेदाः हि तद्भेदाच्चातुर्विध्यमिहा श्नुते। (हित० संपादक वृ० २०) ३. जायफल, ४. अंगीठी, ५. श्रेणी, वर्ग, प्रकार, भेद। ६. छन्द की एक विशेषता। ७. चमेली पुष्प, मल्लि। (जयो० वृ० ३/७५) ८. जिनवचन-जातिं श्री जिनवाचमेव निगदेद्यस्याः प्रमादाद्यति रात्मानं प्रति वेत्ति सत्कुलमथोद्योगं गुरोः सम्प्रति।। उस श्री जिनवाणी को ही जाति कहते हैं, जिसके प्रसाद से यति आत्मा को जानते हैं और गुरु का उद्योग समीचीन कुल है। मिथ्या उत्तर देने का नाम-

* मिथ्योत्तर यातिः यथाऽनेकान्त विद्विंषाम्।

* जातिः मातृसमुत्था-माता के वंश से जाति का प्रादुर्भाव। 'मातृपक्षो जातिः' माता का पक्ष (वीरो० १७/२६)

* जीवादि का सादृश्य परिणाम 'जातिजीवानां सदृश-परिणामः' (धव० ६/५१)

* भेदकल्पना आचारमात्रभेदेन जातीनां भेदकल्पनम्।

* साधर्म्य और वैधर्म्य से प्रत्यवस्थान होना।

जातिकथा (स्त्री०) निन्दा या प्रशंसा को उत्पन्न करने वाली कथा। उत्पत्ति सम्बंधी कथा।

जातिकुसुमं (नपुं०) चमेली का पुष्प।

जातिकुमुसस्रगं (नपुं०) मल्लिमाला। (जयो० वृ० २०/९५)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जातिकोशः (पुं०) जायफल।

जातिकोशी (स्त्री०) जावित्री, जायफल की छाल।

जातिछन्दः (पुं०) मात्रिकछन्द या वर्णिकछन्द। 'मात्रिकछन्दो जातिर्निर्णक छन्दश्च वृत्तमिति' (जयो० २२/८१) १. **जन्म मे सदाचरण युक्त** 'जात्या जन्मना वृत्तेन स्वाचरणेन च लसन्तो' (जयो० वृ० २२/८१)

जातिधर्मः (पुं०) धर्म कर्त्तव्य, धर्म आचरण, सदाचरण प्रवृत्ति।

जातिध्वंसः (पुं०) विशेषाधिकार की हानि।

जातिपत्री (स्त्री०) जावित्री।

जातिब्राह्मण (पुं०) जन्म से ब्राह्मण, नाम से ब्राह्मण।

जातिभ्रंशः (पुं०) जातिच्युत।

जातिभ्रष्ट (वि०) जातिच्युत, जाति से पृथक् किया गया।

जातिमात्रं (नपुं०) कर्त्तव्यपद, जीवन प्राप्ति।

जातिलक्षणं (नपुं०) जाति का स्वरूप, जन्मसम्बंधी विशेषताएं, वंशज स्वरूप।

जातिवाचक (वि०) जाति का प्रकट करने वाला वचन।

जातिविद्या (स्त्री०) मातृपक्ष की विद्याएं।

जातिविरोधिन् (वि०) जातिगत विरोध करने वाला। (१५/१०)

जातिवैरं (नपुं०) जातिगत द्वेष, स्वभाविक शत्रुता।

जातिवैरिन (वि०) जन्मविरोधी। सहजा सह जातिवैरिभिर्हदि मैत्री यदिमेर्धताङ्गिभिः' (जयो० २६/८३)

जातिशब्दः (पुं०) जातिबोधक वचन, ०वर्ग युक्त शब्द।

जातिसंकरः (पुं०) जातिगत द्वेष, दो परस्पर जाति के योग से उत्पन्न दोष।

जातिसम्पन्न (वि०) कुलागत विशेषता।

जातिसारं (नपुं०) जायफल।

जातिस्थाविरः (पुं०) साठ वर्ष का व्यक्ति।

जातिस्मर (वि०) जन्म का स्मरण।

जातिस्मरणं (नपुं०) पूर्व जन्म का स्मरण। (जयो० २३/१०)

जातिस्मृति (स्त्री०) जाति का स्मरण। (वीरो० ११/२३) (जयो० २३/११)

जातिस्वभावः (पुं०) जातिगत लक्षण।

जातिहीन (वि०) जाति से बहिष्कृत।

जातिहुङ्गित (वि०) वेश्यादि से उत्पन्न।

जातीयकता (वि०) जाति युक्त (वीरो० १८/४८)

जातीयता (वि०) जाति सम्बन्धी। (वीरो० २२/१८)

जातु (अव्य०) १. कभी, सर्वथा, किसी प्रकार, संभवतः, कदाचित्, किसी समय, एकवार, किसी दिन। २. जीव। (सम्य ११७/७४)।

जातुचित (वि०) रंचमात्र, किञ्चित् भी, कुछ भी। 'न जातुचिदभूल्लक्ष्यस्तत्कृतोपद्रवे पुनः' (सुद० १३५)

जातुधानः (पुं०) पिशाच, राक्षस।

जातुष (वि०) लाक्षादिघटित। (जयो० २७/३८) लाख से ढका हुआ।

जात्य (वि०) [जाति+यत्] एक ही जाति का, एक कुल से सम्बंधित।

जान-समझें।

जानकी (स्त्री०) जनक की पुत्री सीता।

जानन्ति -जानती हैं, समझती हैं। (सुद० १०७)

जानन्तु-वे समझे, वे सब जाने। (जयो० वृ० १/२०)

जानपदः (पुं०) [जनपद+यम्] ग्रामीण। १. देश, २. विषय, ३. उक्ति विचार।

जानासि-जानते हो (सुद० ४/४०)

जानु (नपुं०) [जन्+अण्] घुटना, जंघा, ऊरु। (दयो० ३९) 'वापीं तदा पीनपुनीरतजानुः' (सुद० १०१)

जानुचितलम्बबाहु (स्त्री०) घुट ने तक लम्बी भुजाएं। (वीरो० ३/११)

जानुज (वि०) जानने वाला। (सुद० ३/४)

जानुजसत्त (वि०) जानने वाला पक्षी।

जानुजाधिपति (पुं०) वैश्यराज। (सुद० ४/३)

जानुदध्न (वि०) घुटनों तक ऊँचा, घुटनों का गहरा।

जानुफलकं (नपुं०) घुटने की फाली।

जानुमण्डलं (नपुं०) घुटने की फाली, ऊरुवृत, जंघाकार। (जयो० ११/२७)

जानुसन्धि (स्त्री०) घुटनों का जोड़।

जानीहि-समझें जाने। (जयो० वृ० (सुद० २/४०), २/३)

जापः (पुं०) [जप्+घञ्] १. जपना, स्मरण करना, याद करना, प्रार्थना करना, स्तुति करना। २. प्रार्थना, जाप, स्मरण, मंत्रोच्चारण।

जाबालः (पुं०) [जबाल+अण्] रेवड़, बकरों का समूह।

जाबालोपनिषदः (पुं०) अथर्ववेद का छग सूत्र। (दयो० २२/

जामदग्न्यः (पुं०) [जमदग्नि+यञ्] पराशुराम, जमदग्नि का पुत्र।

जामा (स्त्री०) [जम्+अण्] १. पुत्री, २. स्नुषा, ३. पुत्रवधू।

जामातृ (पुं०) [जायां माति मिनोति वा] १. दामाद, जमाता। (दयो० ७३) जामातरमुज्ज्वलान्तर। (जयो० १०/३) २. स्वामी, मालिक। ३. सूरजमुखी का फूल।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जामिः (स्त्री०) [जम्+इन्] १. बहन, पुत्री, पुत्रवधू, २. नजदीकी सम्बन्ध, गुणवती स्त्री।

जामित्रं (नपुं०) जन्मकुण्डली का सातवां स्थान/घर।

जामेयः (पुं०) [जाम्या भगिन्या अपत्यम्-ढञ्] भानजा, बहन का पुत्र।

जाम्बवं (नपुं०) [जाम्बाः फलं अण् तस्य] १. सोना, स्वर्ण, २. जामुन का तरु।

जाम्बवत् (पुं०) [जाम्ब+मतुप्] ऋच्छराज। लंका पर आक्रमण कर राम को सहायता करने वाला नृप।

जाम्बीरं (नपुं०) चकोतरा।

जाम्बूनदं(नपुं०) [जम्बूनद+अण्] १. स्वर्ण, सोना, २. धतूरा।

जायमान (शानच्) उत्पन्न होने वाला। (सम्य० १२३)

जाया (स्त्री०) [जन्+यक्+टाप्] पत्नी, भार्या।

जायानुजीविन् (पुं०) नट, अभिनेता।

जायापतिः-दम्पती।

जायिन् (वि०) [जि+णिनि] जीतने वाला, दमन करने वाला।

जायुः (स्त्री०) १. औषधि। २. वैद्य। (सम्य० ५१)

जारः (पुं०) [जीर्यति अनेन स्त्रियाः सतीत्वं-जृ+घञ् जरयतीति जारः] प्रेमी, उपपति, यार।

जारजः (पुं०) चुगलखोर, दोगला।

जारजन्मन् (पुं०) चुगलखोर।

जारभरा (स्त्री०) व्यभिचारिणी स्त्री।

जारिणी (स्त्री०) [जार+इनि+ङीप्] व्यभिचारिणी स्त्री।

जालं (नपुं०) [जल्+ण] १. जाल, फंदा, पाश, २. गवाक्ष, खिड़की, झरोखा। ३. संग्रह, राशि, ढेर। ४. भ्रमजाल, जादू, धोखा, छल, व्यर्थ, प्रपञ्च (जयो० १६/७५)

जालकं (नपुं०) [जालमिव कायति-कै+क] १. जाल, फंदा। २. गवाक्ष, झरोखा। (जयो० वृ० १५/५३) उपगवाक्ष। ३. छल, भ्रम, जादू।

जालक्षः (पुं०) गवाक्ष, झरोखा।

जालपाद् (पुं०) कलहंस।

जालप्रसारः (पुं०) जाल का फैलाव। (दयो० ९७)

जालिकः (पुं०) [जाल+ठन्] १. मछुआरा, मछली पकड़ने वाला। २. बहेलिया, चिड़ीमार, ३. मकड़ी, ४. ठग।

जालिका (स्त्री०) १. जाली, २. जोंक, ३. लोहा घूंघट।

जालिनी (स्त्री०) [जाल+इनि+ङीप्] चित्रयुक्त वृक्ष।

जाल्म (वि०) [जल्+णिक्] १. क्रूर, ०निष्ठुर ०कठोर व्यक्ति, अविवेकी, शठ, मूर्ख, कुकर्मी, आचरण हीन, दुराचारी। निष्ठुर (दयो० २३) २. निर्धन, गरीब, ३. नीच, ०अधम।

जाल्मक (वि०) [जाल्म+कन्] घृणित, पापी, कुकर्मी, दुराचारी।

जावन्य (वि०) [जवन+ष्यञ्] शीघ्रता, गतिशीलता।

जाह्नवी (स्त्री०) [जह्नु+अण्+ङीप्] गङ्गा नदी।

जि (सक०) जीतना, विजय प्राप्त करना, दमन करना, हराना, पराजित करना, नियन्त्रण करना, दबाना।

जिः (पुं०) राक्षस, पिशाच।

जिगत्नुः (नपुं०) प्राण, जीवन।

जिगीषा (स्त्री०) [जि+सन्+अ+टाप्] १. जीतने की इच्छा, जीतने की अभिलाषा। (जयो० वृ० ११/२८) २. चेष्टा, व्यवसाय, जीवनचर्या,

जिगीषु (वि०) जीतने का इच्छुक, जीतने का इच्छुक वादी। पराजेतुमिच्छुर्जिगीषुः

जिघत्सु (वि०) भूखा, क्षुधा पीडित।

जिघांसा (स्त्री०) [हृ+सन्+अ+टाप्] मारने की इच्छा, विनाशेच्छा।

जिघांसु (वि०) [हृ+सन्+उ] घातक, विनाशक, चढ़ने आए। (वीरो० २१/१०) १. मारने का इच्छुक (दयो० ९६) २. बुभुक्षु। (जयो० वृ० २/१२८)

जिघृक्षा (स्त्री०) [गृह्+सन्+अ+टाप्] ग्रहण करने की इच्छा।

जिघ्र (वि०) [घ्रा+श] १. सूंघने वाला, २. निरीक्षण करने वाला।

जिघ्रासः (पुं०) घ्राण निरोध, नाक बन्द करके श्वास रोकना।

जिघ्रास-मरणं (नपुं०) घ्राण निरोध पूर्वक मरण।

जिज्ञासा (स्त्री०) [ज्ञा+सन्+अ+टाप्] पृच्छा, चाह, अभिलाषा, इच्छा, पिपासा (दयो० ८९) (जयो० वृ० ३/२६) (जयो० २३/७४)

जिज्ञासु (वि०) [ज्ञा+सन्+उ] जानने का इच्छुक, ज्ञानेप्सु, प्रयत्नशील पृच्छेच्छु।

जिज्ञीषु (वि०) जीतने के इच्छुक वादी।

जित् (वि०) जीतने वाला, परास्त करने वाला, हराने वाला। (सुद० १/२९)

जित (भू०क०कृ०) [जि+क्त] १. जीता हुआ, ०अभिजित, ०अभिभूत, ०पराभूत, ०वशीभूत, ०प्रभावित, ०पराजित। (जयो० ३/४४) २. स्वभाविकवृत्ति ०निर्बाध गति से संचार करना।

जितकर्म (वि०) कर्मजयी।

जितकषाय (वि०) कषाय को जीतने वाला।

जितकाशिन् (वि०) विजय से आशान्वित।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जितक्रोध (वि०) क्रोध को जीतने वाला।

जितक्रोध (वि०) क्रोध पर विजय प्राप्त करने वाला।

जितगतिः (वि०) गति को जीतने वाला।

जितजरा (वि०) वृद्धावस्था को जीतने वाला।

जिततृष्णा (वि०) प्यास पर विजय प्राप्त करने वाला।

जितदम्भ (वि०) अहंकार रहित।

जितपाप (वि०) पापक्षय करने वाला।

जितमोह (वि०) मोहजयी।

जितश्रम (वि०) उद्यमशील।

जिताक्ष (वि०) जितेन्द्रिय, इन्द्रियजयी। 'जिताक्षाणामहो धैर्यम्' (सुद० १२४)

जितेन्द्रिय (वि०) इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करने वाला। अक्षमाक्ष (जयो० १/१०८) (क्षुद० १०८)

जितेन्द्रियत्व (वि०) इन्द्रिय जयी। ततो जितेन्द्रियत्वेन पापवृत्तिपरान्मुखः। (सुद० १२८)

जितिः (स्त्री०) [जि+क्तिन्] विजय, दिग्विजय।

जितुभः (पुं०) मिथुन राशि।

जित्वर (वि०) जीतने वाला, विजयी, विजेता, जयनशील। मुक्त्वा क्षमामिदानीं तु जयं जयसि जित्वर। (जयो० ७/३५)

जिन (वि०) [जि+नक्] विजयी, विजेता, इन्द्रियजयी, राग-द्वेष रहित। (सम्य० ७२) 'रागादिजेतारो जिनाः' जि जये अस्य औणादिक नक प्रत्ययान्तस्य जिन इति भवति, रागादिजयाज्जिन इति'।

जिनः (पुं०) जिनदेव, अर्हत् देव, अरहंत, तीर्थंकर। (जयो० वृ० १/१) 'चतुर्थभूमौ भजतो जिनं च'। (सम्य० १००)

जिनकल्पः (पुं०) उत्तम संहनन युक्त।

जिनकल्पिक (वि०) उत्तम संहनन वाला, जित राग-द्वेष 'मोहा उपसर्ग-परीषहारिवेगसहाः जिना एव विहरन्ति इति

जिनालय (भ०आ०टी० वृ० ३५६)

जिनकृपानिधानं (नपुं०) जिनेन्द्र की कृपा दृष्टि का कारण (सुद० ५/४)

जिनगिरा (स्त्री०) जिनवचन। (मुनि० २२

जिनगृहं (नपुं०)

जिनचैत्यं (नपुं०) अर्हत् तीर्थ।

जिनतत्त्वं (नपुं०) जिनेन्द्र भगवान द्वारा प्रतिपादित तत्त्व।

जिनदेवः (पुं०) जिनेन्द्र भगवान।

जिन-देव-वाणी (स्त्री०) वीतराग वाणी। (सम्० १/५)

जिनदर्शनं (नपुं०) प्रभु अर्हत् के प्रति श्रद्धा। (सुद० ८/९१)

जिनदिनकरः (पुं०) जिनदेव सूर्य। (जयो० १०/९५)

जिनदीक्षा (स्त्री०) अर्हत् दीक्ष, आर्हती प्रव्रज्या। (सम्० २/३०)

जिनदेवराजः (पुं०) जिनप्रभु। (वीरो० १२/३९)

जिनदेवविभुः (पुं०) जिनेन्द्र भगवान। (जयो० १२/१४७)

जिनधर्मः (पुं०) जिनेन्द्र प्रभु द्वारा कथित धर्म। (सुद० ३/१२)

जिनधामः (नपुं०) जिनालय।

जिनधर्मधृक (वि०) जिनधर्म को धारण करने वाले। (वीरो० १५/४४)

जिनभक्ति (स्त्री०) जिनार्चन। (जयो० ९/५३) (वीरो० ७/१२)

जिनभास्करः (पुं०) जिनदेव रूप सूर्य। (सुद० ५/१)

जिनपादाब्जसेवा (स्त्री०) जिन चरणों से भक्ति। (वीरो० १५/५०)

जिनपः (पुं०) जिनदेव, अरहंत (जयो० १/२)

जिनपति (पुं०) जिनप्रभुः। (वीरो० १४/५३)

जिनपथं (नपुं०) जिनमार्ग, जिनेन्द्र भगवान् का मार्ग रत्नत्रय मार्ग, मोक्षमार्ग।

जिनपादः (पुं०) शिवचरण। (सुद० १३/४७)

जिनपूजा (स्त्री०) जिनार्चन। (सुद० ११४)

जिनपुंगवः (पुं०) जिनेन्द्र देव। (जयो० ५/६३) (भक्ति० ३/३६)

जिनप्रतिमा (स्त्री०) जिनमूर्ति, अर्हत् प्रतिमा।

जिनप्रभुः (पुं०) जिनदेव। (वीरो० ७/३२)

जिनप्रभुः (पुं०) अर्हत्, भगवान्।

जिनबिम्बं (नपुं०) जिनप्रतिमा।

जिनमन्दिरं (नपुं०) जिनालय। (सुद० ११४) जिनेन्द्र प्रभु का स्थान।

जिनमहालयः (पुं०) विशाल मन्दिर। (जयो० १९/४)

जिनमुद्रा (स्त्री०) पद्मासन युक्त जिन प्रतिमा की तरह एक आसन। दृढ़संयम मुद्रा, ज्ञानमुद्रा। जितेन्द्रियमुद्रा, क्रोधादि कषाय से रहित आकृति। चत्तारि अंगुलाइं पुरओ ऊणाइं जत्थ पच्छिमओ। पायाणं उस्सग्गो एसा पुण होइ जिणमुद्दा।। (चैत्यवंदवा० १६) दोनों चरणों के मध्य में आगे चार अंगुल का और पीछे इससे कुछ कम अंतर करके स्थित होते हुए उत्सर्ग करना।

जिनवाग्रय (वि०) जिनवचन का प्रभाव वाले। (जयो० ८/६७)

जिनशंसित (वि०) जिनदेव के प्रशंसा करने वाले। (सुद० ७४)

जिनसेनः (पुं०) जिनसेनाचार्य-आदिपुराण के रचनाकार (जयो० वृ० १/२०)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जिनेन्द्रमूर्ति प्रतिष्ठा (स्त्री०) जिनमूर्ति की प्रतिष्ठा। (जयो० २/३१)

जिनार्चनः (पुं०) जिनपूजा। (सुद० २/४०) (सुद० ३/३७) जिनस्य अर्चन जिनपूजनम् (जयो० वृ० ३/८३)

जिनार्चनाथ (पुं०) जिनेन्द्र देव। (सुद०)

जिनार्थ (वि०) जिनेन्द्र देव के निमित्त। (सुद० ५/१)

जिनानुशयः (पुं०) जिनचिन्तन। (जयो० २/३६)

जिनाश्रमः (पुं०) जिनालय, जिनमन्दिर। जिनस्याश्रमं मंदिर इति (जयो० ९/५२)

जिनास्थानं (नपुं०) जिनालय। (वीरो० १५/३९)

जिनास्पदं (नपुं०) जिनालय। (वीरो० १५/४७)

जिनराज (पुं०) जिनेन्द्र देव। (सम्य० १०९)

जिनराजमुद्रा (स्त्री०) शिवप्रतिमा, (जयो० १९/१४, भक्ति० २०)

जिनरूपता (वि०) निर्ग्रन्थ रूपता, दिगम्बरत्व।

जिनवाक्यसारः (पुं०) स्याद्वाद सिद्धान्त। भाष्ये निजीये जिनवाक्यसारम्पतञ्जलिश्चैतदुरीचकार। तमाममीसांक नाम कोऽपि स्ववार्तिके भट्टकुमारिलोऽपि।। (वीरो० १९/१७)

जिनवाचक (नपुं०) जिनवाणी, वीतराग वाणी।

जिनवचनं (नपुं०) सर्वज्ञवाणी, वीतराग वाणी। (मुनि० १५)

जिनवाणी (स्त्री०) जिनवचन। (जयो० १३/५८)

जिनालयः (पुं०) जिनमन्दिर। (जयो० १९/१४)

जिनशासनं (नपुं०) जिनेन्द्र कथन, (जयो० १/२२) जिनदेव का अनुशासन। (सम्य० १५५)

जिनशान्तिः (पुं०) जिनदेव शान्ति प्रभु।

जिनसंग्रह (पुं०) जिनभगवान (भक्ति० ३४)

जिनसद्मन् (नपुं०) जिनालय। (वीरो० १५/४

जिनसेवकः (पुं०) शिवभक्ति। (भक्ति० २४)

जिनाङ्कः (पुं०) जिनमुद्रा (वीरो० २/३५)

जिनागमः (पुं०) जिनशास्त्र, अर्हत्, कथित आगम, सूत्रग्रन्थ। स्वरूपाचरणं भेदविज्ञानं जिनागमे।। शुद्धोपयोगनामानि कथितानि जिनागमे।।

जिनाज्ञा (स्त्री०) जिनादेश। (भक्ति० २८) (सम्य० १४३)

जिनागमोक्त (वि०) जिनागमकथित। (जयो० १८/८)

जिनेन्द्रः (पुं०) जिनेश्वर, अर्हत्, भगवान्, वीतरागी प्रभु। (सम्य० १५३) (समु० १/४)

जिनेन्द्र देवः (पुं०) जिन। (वीरो० १३/१६)

जिनेन्द्रदेवार्चा (स्त्री०) जिनपूजा। (वीरो० १५/४९)

जिनयज्ञमहिमा (स्त्री०) जिनपूजन का महत्त्व। (सुद० ११४)

जिनेशः (पुं०) जिनेश्वर (भक्ति० २४, सुद० ७४)

जिनेशदेवः (पुं०) जिनप्रभु (वीरो० १४/२४)

जिनेशवाच (पुं०) जिनवचन। (भक्ति० ४९)

जिनेश्वरः (पुं०) जिनेन्द्र, अर्हत्, भगवान, वीतरागी प्रभु, तीर्थंकर।

जिनेशिन् (पुं०) जिनेन्द्र प्रभु युक्त। (जयो० १२/७२)

जिनोक्त (वि०) जिनदेव द्वारा कथित। (सम्य ७२)

जिन्ना (पुं०) यवननेता, १९४७ से पूर्व का नेता। (जयो० १८/८९)

जिवाजिवः (पुं०) चकोर पक्षी।

जिष्णु (वि०) [जि+गृस्नु] विजयी, जीतने वाला, विजेता। 'पापाचारं जेतुमर्हं इदं' (जयो० वृ० २७/४०) 'इन्द्रस्येव जयनशील:' (जयो० ८/३५)

जिह्म (वि०) [जहाति सरलमार्ग-हा+मन् सन्वत् अतोपश्च] १. कुटिल, तिर्यग्, तिरछा, टेढ़ा, वक्र, २. अनीतिपूर्ण, छली, कुटिलता युक्त। ३. मन्थर, आलसी।

जिह्मं (नपुं०) झूठा, असत्यव्यवहार।

जिह्मगतिः (स्त्री०) तिर्यगदृष्टि वाला, भैंगा, ऐंचकताना।

जिह्ममेहनः (पुं०) मेंढक,

जिह्मयोधिन् (वि०) युद्ध के प्रति उदासीन योद्धा, युद्ध से विमुख होने वाला।

जिह्मशल्य (पुं०) खदिर वृक्ष, खैर का वृक्ष।

जिह्वः (ह्वे+ड द्वित्वादि) जीभ। (वीरो० वृ० १/७)

जिह्वल (वि०) [जिह्व+ला+क] जिभला, चटोरा।

जिह्वा (स्त्री०) [लिहन्ति अनया] रस जीभ, रसना। (जयो० वृ० १/७) (मुनि० ३०) 'जिह्वया गुणिगुणेषु सञ्चरन्' (जयो० ३/२)

जिह्वाग्रभागः (पुं०) १. रसातल, रसना का अग्रभाग, जीभ का अग्रभाग (जयो० वृ० १/९७) २. रसातल-पातललोक (जयो० वृ० १/९७)

जिह्वानिर्लेखनं (नपुं०) जीभ से खुरचना।

जिह्वापः (पुं०) १. कुत्ता, २. बिल्ली, ३. व्याघ्र।

जिह्वामूलं (नपुं०) जीभ का मूल, रसना की जड़।

जिह्वामूलीय (वि०) क और ख से पूर्व विसर्गध्वनि तथा कण्ठ व्यञ्जनों की ध्वनि का द्योतक शब्द।

जिह्वारदः (पुं०) पक्षी। जीभ से शब्द करने वाला।

जिह्वाल (पुं०) लालची। (जयो० सुद० १२८)

जिह्वालिह् (पुं०) जीभ से चाटने वाला कुत्ता, श्वान।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जिह्वालौल्यं (नपुं०) लालच, लोभ।
जिह्वाशल्य: (पुं०) खदिर वृक्ष।
जिह्वास्वादः (पुं०) चाटना, चखना,
जिह्वोल्लेखनी (वि०) जीभ से खुरचने वाला।
जीन (वि०) [ज्या+क्त] वृद्ध, बूढ़ा, क्षीण।
जीनः (पुं०) चर्म थैली।
जीमूतः (पुं०) [जयति नभः जीयते अनिलेन जीवनस्योदका मूतं बन्धो यत्र] १. मेघ, बादल। २. इन्द्र।
जीमूतकूटः (पुं०) एक पर्वत।
जीमूतवाहनः (पुं०) इन्द्र।
जीमूतवाहिन् (पुं०) धुंआ।
जीयः (वि०) जीवन। (वीरो० १८/३९)
जीयादिदानी (वि०) जुदा जुदा। (सम० १/५)
जीरः (पुं०) [ज्या+रक्] १. असि, तलवार, २. जीरा।
जीरकः (पुं०) जीरा।
जीरणः (पुं०) जीरा, एक औषधि गुण से परिपूर्ण।
जीर्ण (वि०) [जृ+क्त] १. पुराना, पुरा, पुरातन, २. सड़ा, गला, फटा हुआ, नष्टकाय।
जीर्णः (पुं०) वृद्ध, स्थविर।
जीर्णं (नपुं०) १. गुग्गल। २. क्षीणता, ३. बुढ़ापा।
जीर्णकरः (वि०) जीर्ण हुआ, क्षीण शुष्क।
जीर्ण-ज्वरः (पुं०) पुराना बुखार, बहुत दिनों का ताप।
जीर्णपणः (पुं०) कदम्ब वृक्ष।
जीर्णवाटिका (स्त्री०) पुरानी वाटिका, सूखी बावड़ी, क्षत विक्षत वाटिका।
जीर्णवज्रं (नपुं०) वैक्रान्तमणि।
जीर्णि (स्त्री०) १. वृद्धावस्था, २. क्षीणता, कृशता, दुर्बलता।
जीव् (अक०) १. जीना, जीवित रहना, प्राणयुक्त होना। जीविष्यामि (जयो० वृ० ३/९७) २. निर्वाह करना, आजीविका करना, आश्रित रहना।
जीव (वि०) जीवित, विद्यमान, प्राणवान्।
जीवः (पुं०) प्राण, चेतना, चैतन्य 'शृणूत चेद बुद बुद् बुद्धि जीवः' (वीरो० १४/२१) श्वास, आत्मा, (सम्य० १५५) जीवो मृतिं न 'हि कदाप्युपयाति तत्त्वात्' (सुद० १२९) २. जीवद्रव्य-जीवाश्च केचित्तत्रणवः स्वतन्त्राः' (सम्य० २२) (सम्य० २१) ३. जीवन, अस्तित्व। (दयो० ३५) ४. व्यवसाय।
जीवकः (पुं०) १. जीवधारी, २. सेवक, ३. प्राणक-(जयो० २१/२७) ४. कुश, वृक्ष, (जयो० २१/३२) जीवन्धरकुमार (वीरो० १५/२४)
जीवकद्रुमः (पुं०) कुश, आसन, प्राणधारी वृक्ष। 'आसनो जीवकद्रुमे' (जयो० २१/३२)
जीवकर्मन् (नपुं०) जीवकृत कर्म। 'इदं करोमि तु जीवकर्म' (सम्य० ३३)
जीवग्रहं (नपुं०) देह, शरीर।
जीवग्राहः (पुं०) जीवित पकड़ा गया कैदी।
जीवघातः (पुं०) जीवन विनाश। (दयो० ३५) अस्तित्वघात (वीरो० २२/७) अस्तित्व की समाप्ति।
जीवजीवः (पुं०) चकवा, चकोरपक्षी।
जीवनकालः (पुं०) जीवन का समय। (जयो० वृ० ३/१)
जीवद (वि०) जीवनदायक। जीवं ददातीति जीविदो मरणासन्नो (जयो० ६/७५)
जीवदयाः (स्त्री०) जीवों के प्रति दया। (जयो० वृ० १/२१)
जीवदशा (स्त्री०) जीवन की अवस्था।
जीवधनं (नपुं०) पशुधन।
जीवधर्मन् (नपुं०) जीवन का ध्येय।
जीवधारी (वि०) जीवनधारी, प्राणधारी।
जीवन (वि०) [जीव्+ल्युट्] जीवन दायक, प्राणार्पण (जयो० २२/५५) प्राणप्रद, प्राणप्रदाता। प्राणधारक (जयो० ९/१४) (सुद० ४/२५) 'दुर्दशाः किमिव जीवनं नयेत्' (जयो० २/९४) १. जल-नदीपक्षे जीवनं जलम् (जयो० वृ० २२/५५) (जयो० वृ० १४/७९) २. वृत्ति- (वीरो० १८/२२) स्वाध्यायमेतस्य भवेदथाधो यज्जीवनं नाम समस्ति साधोः' (वीरो० १८/२२)
जीवनदायिनी (वि०) प्राणदायिनी, जीवन प्रदात्री (जयो० वृ० १/९६)
जीवनत्रुटिः (स्त्री०) जीवन का अपघात, अपमरण, अकालमृत्यु (सुद० ११६)
जीवननायकः (वि०) प्राणाधार, जीवनाधार (जयो० १२/१८)
जीवन-निर्वहणं (नपुं०) आजीविका, जीवन की वृत्ति। (सुद० १३१) (जयो० वृ० ३/७)
जीवनमूल्य (नपुं०) जल का मूल्य। (जयो० ३/१५)
जीवन-यापनं (नपुं०) आजीविका, जीवन की वृत्ति, जीविका चलाने का माध्यम्। (दयो० ४९)
जीवनयात्रा (स्त्री०) जीविका, आजीविका, जीवनवृत्ति (वीरो० १८/७)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जीवनरीतिः (स्त्री०) जीने की कला, जीवन की पद्धति। (दयो० १०८)

जीवनवृत्तिः (स्त्री०) आजीविका, जीवनयात्रा। (वीरो० १८/७)

जीवनान्तः (पु०) मृत्यु, मरण, छूटना।

जीवनाघातं (नपुं०) विष।

जीवनाधारः (पु०) जीवन का आधार।

जीवनावासः (पुं०) शरीर, देह।

जीवनोत्सर्गः (पु०) प्राणपरित्याग। (वीरो० २२/३०)

जीवनोपाय (पुं०) जीवन का उपाय, जीविका का साधन। किं जीवनोपायमिहाश्रयामि प्राणाः पुनः सन्तु कुतो वताभी। (दयो० वृ० १६)

जीवनोपयोगि (स्त्री०) जीवन सम्बन्धी। (जयो० वृ० २/११३)

जीवन्तः (पुं०) १. जीवन, २. औषधी।

जीवन्धरः (पुं०) राजपुरी नगरी का राजा जेवक, जीबन्धर (वीरो० १५/२४)

जीवभेदः (पु०) जीव के भेद। (वीरो० १९/२६)

जीवबन्धः (पु०) जीव का बन्ध।

जीवबद्ध (वि०) बद्धयुक्त जीव, बंधा हुआ जीव। (समु० ८/१३)

जीवमङ्गलं (नपुं०) जीव के हित।

जीवराशिः (स्त्री०) जीवसमूह। (वीरो० १४/५३)

जीवविचयः (पुं०) जीव के उपयोग पर विचार करना।

जीवविप्रमुक्त (वि०) जीवन से मुक्त हुआ, जीव रहित, ०अजीवत्व।

जीवविषयः (पुं०) जीव की इच्छा।

जीवसमासः (पुं०) जीवों का संक्षिप्तिकरण, विविध जातियों का परिज्ञान। 'जीवाः समस्यन्ते एष्विति जीवसमासाः' (धव० १/१३१)

जीवहिंसा (स्त्री०) जीवों का घात। (जयो० ११/२६)

जीवाजीवः (पुं०) जीव और पुद्गल।

जीवादत्त (वि०) जीव द्वारा नहीं दिया गया।

जीवानुभागः (पुं०) समस्त द्रव्यों की शक्ति।

जीविका (स्त्री०) [जीव्+अकन् अत इत्वम्] जीने का साधन, आजीविका, वृत्ति, रोजगार। (जयो० २/११२)

जीवित (वि०) [जीव्+क्त] जीता हुआ। प्राणानां धारणं, भवधारण। जीवन युक्त होता हुआ, विद्यमान, सजीवता को प्राप्त। स्वजीवन युक्त। (जयो० १/१२)

जीवितकालः (पुं०) जीवन की सीमा।

जीवितज्ञा (स्त्री०) धमनी।

जीवित-व्ययः (पुं०) प्राण परित्याग।

जीवित संशयः (पुं०) प्राण संकट।

जीविताशया (स्त्री०) जीने की कामना।

जीवितेच्छा (स्त्री०) जीवन की इच्छा।

जीवतेश्वरः (पुं०) जीवन का वाञ्छा। (जयो० वृ० ६/३)

जीविन् (वि०) विद्यमान, सजीवता।

जीवोद्धारः (पुं०) जीवों का उद्धार। (दयो० ३४) जीव कल्याण, प्राणीहित।

जीव्या (स्त्री०) [जीव्+यत्+टाप्] आजीविका का साधन।

जुगुप्सनं (नपुं०) [गुप्+सन्+ल्युट्] निन्दा, अभिरुचि, घृणा, ग्लानि। कुत्साप्रकार, व्यलीककरण।

जुगुप्सा (स्त्री०) देखो ऊपर।

जुगुप्सेऽहं यतस्तत्किं जुगुप्स्यं विश्वमस्त्यदः।
शरीरमेव तादृशं हन्त यत्रानुरज्यते।। (वीरो० १०/९)

जुप् (अक०) १. प्रसन्न होना, संतुष्ट होना, २. अनुकूल होना, चाहना, ३. अनुरक्त होना, ४. अभ्यास करना ५. आश्रय लेना।

जुष् (वि०) प्रसन्न होने वाला, संतुष्ट होने वाला, खुश।

जुष्ट (भू०क०कृ०) [जुष्+क्त] १. प्रसन्न हुआ, हर्षित हुआ, आश्रित, सम्पन्न, युक्त। २. सेवित-'यद्गुच्छायन्तः करणं हि जुष्टम्' (सम्य० ७०/

जुष्टिः (स्त्री०) उपलब्धि। -'हर्षयुक्त प्राप्ति', प्रीतिपूर्वकोपलब्धि। (जयो० १६/४६)

जुहूः (स्त्री०) काष्ठ चम्मच।

जुहोति (स्त्री०) [जु+श्तिप्] अनुष्ठानों से युक्त।

जूः (स्त्री०) [जू+क्विप्] १. चाल, २. पर्यावरण, ३. सरस्वती।

जूकः (पुं०) तुला राशि।

जूटः (पुं०) [जुट्+अच्] १. जूड़ा, केश समूह जुड़ा। २. समूह, ढेर। (वीरो० २/१८)

जूटकं (नपुं०) जटा।

जूत (वि०) जुते हुए। 'त्यमूपु वाजितं देवजूतम्' (दयो० २८)

जूतिः (स्त्री०) चाल, वेग, गति।

जूर् (सक०) चोट पहुंचाना, मारना, क्रोधित होना।

जूर्तिः (स्त्री०) [ज्वर्+क्तिन्] १. ज्वर, बुखार। (सुद० १०२) २. शक्ति (जयो० २७/४०) ३. संहार-समस्ति शार्ङ्गिणि यस्य पूर्तिर्दग्धोदरार्थे कथमस्तु जूर्तिः (दयो० प१० ३८)

जृ (सक०) नम्र बनाना, नीचा दिखाना, आगे बढ़ जाना।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जृभ्/जृम्भ् (अक०) उबासी लेना, जम्भाई लेना, विस्तार करना, खिलना, मुकुलित होना। 'करद्वयं कुड्मलतामया- सीत्तयोर्जजृम्भे मुदपां सुराशिः। (सुद० २/२५)

जृम्भः (पुं०) जमुहाई, उबासी लेना। खुलना, मुकुलित होना।

जृम्भावती (वि०) जम्भाई लेती हुई।

जृम्भिणी (वि०) जमुहाई लेती हुई। (जयो० १५/८२)

जृम्भित (वि०) परिवर्धनमान, विकसित होती हुई। 'जम्भजृम्भित कोमलभावं' (जयो० १४/१८)

जेत (वि०) जीतने वाला। (सुद० २/१३)

जेतृ (वि०) [जि+तृच्] विजयी, विजेता, जयनशील। (जयो० १७/१०) इन्द्रियाणि विजित्यैव जगज्जेतृत्वमाप्नुयात्। (वीरो० ८/२७)

जेतृत्व (वि०) विजयी, विजेता।

जेता (वि०) विजेता, विजयी (जयो० २/१२७)

जेतुः -विजयी (सुद० १/२)

जेन्ताकः (पुं०) शुष्क-उष्ण स्नान।

जेमनं (नपुं०) [जिम्+ल्युट्] भोजन। (जयो० वृ० १२/११३)

जेमनपात्रं (नपुं०) भोजन की इच्छा, खाने की इच्छा। 'अयि चेतसि जेमनोतिचारः सकलव्यञ्जनमोदनाधिकारः। (जयो० १२/११५)

जैत्र (वि०) [जेतृ+अण्] विजयी, विजेता।

जैनः (पुं०) जैन धर्मानुयायी, जिनमत का अनुयायी। जैनानां सासादन शायामिव सम्यग्दर्शनस्यापवादधारायाम्। (दयो०

जैनकीर्तनं (नपुं०) जिनदेव की अर्चना। (जयो० २/६०)

जैनकीर्तनकला (स्त्री०) जिनार्चन की शोभा (जयो० २/६०)

जैनतत्त्वं (नपुं०) जिन मत में प्रतिपादित सप्त तत्त्व, वैचारिक दृष्टि।

जैनदर्शनं (नपुं०) जिनमत द्वारा प्रतिपादित स्याद्वाद-अनेकान्त का वचन। (हित संपादक १)

जैनधर्मः (पुं०) जिनमत, जैन विचारक, जैन दृष्टि, जैन विचारधारा, जैन समुदाय। विबुधैः समितस्य जैनधर्मकृपया सम्भवताच्च नर्मशर्म। (जयो० १२/९९) जातीयतामनुबभूव च जैनधर्मः विश्वस्य यो निगदितः कलितुं सुशर्म आगारवर्तिपु यतिष्वपि हन्त खेदस्तेनाऽऽश्वभृदिह तमां गणगच्छ भेद। (वीरो० २२/१८)

जैनधर्मप्ररोहार्थ (वि०) जैनधर्म के प्रचार हेतु खारवेलोऽस्य राज्ञी च नाम्ना सिंहयश तु जैनधर्मप्ररोहार्थं प्रक्रमं भूरि चक्रतुः।। (वीरो० १५/३२)

जैनधर्मानुयाभित्व (वि०) जैनधर्म के अनुयायी होने वाले। (वीरो० १५/३४)

जैनधर्मानुयायिनी (वि०) जैनधर्म का अनुयायी। (वीरो० १५/३१)

जैनवचस् (पुं०) जिन वचन, तीर्थंकर वाणी। (जयो० २४/६१)

जैनवचनं (नपुं०) जिन वचन, जैनदर्शन, जिनवाणी, जैनसिद्धान्त (हितसंपादक १)

जैनवाक् (नपुं०) जिनवाणी। (जयो० वृ० ३/१०)

जैनसिद्धान्तः (पुं०) जिनवचन, जैनदर्शन, विरागी वचन। (जयो० १०/७७)

जैनसेननः (पुं०) जिनसेनाचार्य, महापुराण कर्ता। (सुद० ८२)

जैनी (वि०) जैनमतानुयायी।

जैनी (स्त्री०) नाम विशेष। भूत्वा परिव्राट् स गतो महेन्द्रस्वर्गं ततो राजगृहेऽपकेन्द्रः। जैन्या भवामि स्म च विश्वभूतेस्तुक् विश्वनन्दी जगतीत्यपूते।। (वीरो० ११/११)

जैनेन्द्रव्याकरणं (नपुं०) संस्कृत व्याकरण का एक प्रसिद्ध ग्रन्थ। (जयो० वृ० १५/३५)

जैमिनिः (पुं०) ऋषि।

जैवातृक (वि०) [जीव्+णिच्+आतृकन्] दीर्घजीवी।

जैवातृकः (पुं०) १. चन्द्रमा, शशि। २. कपूर, ३. पुत्र।

जैवेयः (पुं०) [जीवस्य गुरोः अपत्यम्-जीव+ढक्] एक उपाधि बृहस्पति के पुत्र कच की उपाधि।

जैह्मं (नपुं०) [जिह्म+ष्यञ्] धोखा, टेढ़ापन, झूठा व्यवहार।

जोङ्गटः (पुं०) दोहद।

जोमः (पुं०) उमंग, उत्साह।

जोषः (पुं०) [जुष्+घञ्] १. तूष्णीपूर्वक सरोष, चुप्पी। २. प्रसन्नता, आनन्द, उत्साह, उमंग। (जयो० ८/२५) ३. इच्छानुसार।

जोषा/जोषित् (स्त्री०) [जुष्यते उपभुज्यते-जुष्+घञ्-टाप् जुष्+इति] नारी, स्त्री।

जोषिका (स्त्री०) [जुष्+ण्वुल्+टाप्] स्त्री, नारी।

ज्या (स्त्री०) [ज्या+अङ्+टाप्] धनुष की डोरी। १. सीधी रेखा, एक-दूसरे अंश को मिलाने वाली रेखा। २. पृथ्वी भूमि, ३. जननी।

ज्यांशः (पुं०) धनुषगुण। (जयो० वृ० १०/११३)

ज्यानिः (स्त्री०) [ज्या+नि] बुढ़ापा। १. क्षय, २. छोड़ना, त्यागना। ३. नदी, दरिया।

ज्यायस् (वि०) १. बड़ा, वयस्क, २. श्रेष्ठतर, योग्यतर, महत्तर बृहत्तर।

ज्येष्ठ (वि०) [प्रशस्यो वा+इष्ठन्] (जयो० १५/७४) १. अतिशयेन प्रशस्यं श्रेष्ठं च प्रशंस्य श्रा, ज्या च' प्रशस्यस्थाने ज्या इत्यादेशौ। जेठा, बड़ा, २. श्रेष्ठतम, उत्तमतर, प्रमुख, प्रथम, मुख्य, उच्चतम। गुरु-(जयो० २२/१७) १: जेठ मास।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ज्येष्ठत्व (वि०) गुरुत्व को प्राप्त, श्रेष्ठता युक्त। 'महत्त्वमनुष्ठानेन वा श्रेष्ठत्वम्'

ज्येष्ठ-कन्या (स्त्री०) बड़ी पुत्री, बड़ी लड़की।

ज्येष्ठतातः (पुं०) बड़े भाई, ताऊ, दाऊ।

ज्येष्ठभ्रातृः (पुं०) बड़ा भाई, ताऊ, दाऊ।

ज्येष्ठमातृ (स्त्री०) बड़ी माता, ताई।

ज्येष्ठवर्णः (पुं०) सर्वोच्च वर्ण, सवर्ण, उत्तम कुल।

ज्येष्ठवृत्तिः (स्त्री०) पूज्य प्रवृत्ति।

ज्येष्ठव्यापारः (पुं०) उत्तम व्यवसाय।

ज्येष्ठश्वश्रूः (स्त्री०) बड़ी साली, जिठसास।

ज्येष्ठसुखं (नपुं०) उत्तम सुख। (जयो० वृ० १०७/७४)

ज्येष्ठी (स्त्री०) जेठमास की पूर्णिमा।

ज्यो (सक०) परामर्श देना, सलाह देना।

ज्योतिः (स्त्री०) प्रभा, कान्ति, आभा। तज्जयतु परं ज्योतिः समं समस्तैरनन्तपर्यायैः। (सम्य० १५३)

ज्योतिर्मयः (वि०) [ज्योतिस्+मयट्] प्रभा युक्त, कान्तिमय, नक्षत्र सहित, तारामंडल सहित।

ज्योतिरीशः (पुं०) ज्योतिर्विद् ज्योतिमान। ज्योतिषामीशस्तस्य कान्तिमतो ज्योतिर्विदो' (जयो० वृ० ६/६८)

ज्योतिष (त्रि०) [ज्योतिस्+अच्] गणित/फलित ज्योतिष। कान्तिमान् (जयो० वृ० ६/८८) 'ज्योतिषां रवि-चन्द्रादीनां श्रुतिरिवास्ति' (जयो० वृ० ५/५२)

ज्योतिषः (पुं०) दैवज्ञ, गणक।

ज्योतिषविद्या (स्त्री०) ज्योतिर्विज्ञान।

ज्योतिषी (वि०) [ज्योतिः इव कायति] १. ग्रह, तारा, नक्षत्र, दैवसम्विद्, दैवज्ञ। (समु० २/१५)

ज्योतिःशास्त्रं (नपुं०) निगमशास्त्र, (जयो० वृ० २/५८) निमित्तशास्त्र (वीरो० २/८)

ज्योतिस् (नपुं०) [द्योतते द्युत्यते वा द्युत्+इसुन्] १. प्रभा, कान्ति, दीप्ति, आभा, प्रकाश। २. विद्युत, बिजली, ज्योति। ३. नक्षत्र, ग्रह, तारा।

ज्योतिष्कः (पुं०) देव, प्रकाश युक्त विमान में उत्पन्न। द्योतयन्ति प्रकाशयन्ति जगदिति ज्योतीषि विमानानि, सेषु भवा ज्योतिष्काः।

ज्योत्स्ना (स्त्री०) [ज्योतिरस्ति अस्याम्-ज्योतिस्+न] चांदनी, चन्द्रकला, (जयो० १२/१२९) ०चन्द्रप्रभा, ०चन्द्रमा का प्रकाश (दयो० ११०) सञ्जीविनीव सा शक्तिर्विषा ज्योत्स्नेव मे विधोः। (दयो० ११०)

ज्योत्स्नाप्रियः (पुं०) चकोर पक्षी।

ज्योत्स्नावृक्षः (पुं०) दीपाधार, दीपस्तम्भ।

ज्योत्स्निका (स्त्री०) चन्द्रिका, चांदनी। (जयो० १५/६१)

ज्योतिस्नी (स्त्री०) चांदनी रात।

ज्यौतिषिकः (पुं०) [ज्योतिष+ठक्] गणक, दैवज्ञ, निमित्तज्ञाता। ज्योतिषी।

ज्यौत्स्नः (पुं०) शुक्ल पक्ष।

ज्वर् (अक०) संताप होना, बुखार होना, रुग्ण होना।

ज्वरः (पुं०) [ज्वर्+घञ्] ताप, बुखार दर्पज्वर, मदनज्वर, शीतज्वर।

ज्वरपरिहारः (पुं०) ज्वर निवन्त्रण ओं ह्रीं अर्हं णमो अरहंताणं णमो जिणाणं ह्रां, ह्री, ह्रूँ ह्रौ ह्रः अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झौं झ्री स्वाहा एव जपित्वा यन्त्रप्रक्षालनोदकस्य शिरसि धारणेन ज्वरपरिहारः स्यात्। (जयो० वृ० १९/५८)

ज्वरप्रतिकारः (पुं०) ज्वर परिहार, ज्वर निरोधक औषधि।

ज्वरयुक्त (वि०) ज्वर से पीडित।

ज्वराग्निः (स्त्री०) ज्वर की ताप।

ज्वरिन् (त्रि०) ज्वराक्रान्त, ज्वर से पीड़ित। (सुद० ९१)

ज्वरी (वि०) ज्वरयुक्त।

ज्वल् (सक०) १. चमकना, प्रदीप्त होना, दहकना, जलना। (सम्य० १०३) २. देदीप्यमान होना, प्रकाश करना।

ज्वलत् (वि०) दह्यमान। (जयो० २७/६०)

ज्वलनं (नपुं०) जलना, दहकना, चमकना।

ज्वजम्भलः (पुं०) नारंगी। (सुद० १/१९)

ज्वलनः (पुं०) अग्नि, आग।

ज्वलंत (वि०) जलता हुआ।

ज्वलन (वि०) चमकता हुआ, दहकता युक्त।

ज्वलनमुद्रा (स्त्री०) कमलाकार बैठना।

ज्वरार्त (वि०) ज्वर से पीड़ित।

ज्वलित (वि०) [ज्वल्+क्त] दग्ध, जला हुआ, प्रदीप्त, भासित।

ज्वलित काष्ठं (नपुं०) उत्सुक जलते हुए काष्ठ। (जयो० वृ० ७/७९)

ज्वलितान्तर (वि०) भीतरी भाग से जला, अन्तर में दग्ध। 'रवेर्मयूखैर्ज्वलितान्तराणाम्' (वीरो० १२/१९)

ज्वालः (पुं०) प्रकाश, दीप्ति, प्रभा।

ज्वालनं (पुं०) प्रकाश, प्रभा, कान्ति, अग्नि।

ज्वाला (स्त्री०) लौ, अग्निशिखा, दीप्ति। (सुद० २/१७) (वीरो० १२/७)

ज्वालामुखी (वि०) लावा स्थान।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ज्वालिन् (पुं०) शिव।

ज्ञः (पुं०) [ज और ञ क संयोग से ज्ञ] पण्डित, ज्ञानी (जयो० २२/२६) जानना, अनुभव करना, ज्ञान, गुणग्रहण वेत्ता। आत्मा जानोति ज्ञास्यत्यज्ञासीदनेन 'ज्ञ' इति। (वीरो० १७/३१) नास्य: कोऽपि बभूव दृशि ज्ञस्य (जयो० २२/२६)

ज्ञ (वि०) [ज्ञा+क] जानने योग्य, कार्यज्ञ, वेदज्ञ, ज्ञापक, शास्त्रज्ञ, वेत्ता, परिचित।

ज्ञदेवः (पुं०) विज्ञजन (वीरो० १७/३५)

ज्ञपित (वि०) [ज्ञा+णिच्+क्त] सूचित, व्यक्त, बोधित, ज्ञानयुक्त किया गया।

ज्ञप्तिः (स्त्री०) [ज्ञा+णिच्+क्तिन्] बुद्धि, मति, समझ, जानकारी। (दयो० ११३)

ज्ञा (सक०) जानना, सीखना, अनुभव करना, समझना, परीक्षण करना, व्यक्त करना, सूचित करना, खोजना। (ज्ञात्वा-जानकर जयो० वृ० १/२०) पितुर्ज्ञात्वा प्रभुः पुनः (वीरो० ८/२७) सच्चिदानन्दमात्मानं ज्ञानी ज्ञात्वाऽङ्गतः पृथक्। (सुद० ४/११) ज्ञा-जानाति (सम्य० १५)

ज्ञात (वि०) [ज्ञा+क्त] जाना गया, अनुभूत। (जयो० ९) समझा हुआ, सीखा गया। (वीरो० ११/१३) (वीरो० १६/७)

ज्ञातरहस्यः (पुं०) रहस्य की जानकारी। (वीरो० ११/१३)

ज्ञाता (वि०) अभीष्ट संवदक। (जयो० १५/५३) पण्डित, विद्वान्। (जयो० ३/२०)

ज्ञाताकथा (स्त्री०) उदाहरण युक्त कथा, नाम विशेष।

ज्ञातिः (पुं०) [ज्ञा+क्तिन्] पैतृक सम्बन्ध, पिता, भाई, बन्धु, बान्धव।

ज्ञातिजनः (पुं०) कुटुम्बीजन, बन्धुजन। (जयो० ६/२७)

ज्ञातिभावः (पुं०) सम्बन्ध, आपसी मेल।

ज्ञातिभेदः (पुं०) सम्बन्धियों में भेद, एक-दूसरे में भेद।

ज्ञातिविद् (वि०) सम्बन्धियों की जानकारी।

ज्ञातेयं (नपुं०) [ज्ञाति+ढक्] सम्बन्ध।

ज्ञातृ (पुं०) [ज्ञा+तृच्] १. पण्डित, ज्ञानी, विद्वान्, २. परिचित, सम्बन्धी 'ब्राह्मणादिषु ज्ञातिषु' (जयो० वृ० १/४८) ३. ज्ञान-'आत्मा ज्ञातृतया ज्ञानम्' सम्यक्त्वं चरितं हि सः। (सम्य० ८४)

ज्ञातृकथा (स्त्री०) तीर्थंकर, गणधरों की कथा, ज्ञातृपुत्र महावीर की कथा।

ज्ञातृताभावः (पुं०) जानने का भाव, ज्ञातभाव। 'पञ्चवर्णात्मकः-एवर्गज्ञातृताभावश्च' (जयो० वृ० १/४)

ज्ञातृधर्मकथा (स्त्री०) कथोपकथाओं की कथा, छठा अंगागम ग्रन्थ।

ज्ञानं (नपुं०) [ज्ञा+ल्युट्] १. चेतना, आत्मा, चैतन्यता, सजीव (सम्य० वृ० १२२) २. जानना, बोध करना, समझना, ज्ञान यानि जानना, समझना। (सम्य० १२५) प्रज्ञा, बुद्धि, प्रवीणता। ३. विद्या, शिक्षण। ४. सम्यक् ज्ञान-'संशय, विपर्यय और अनध्यवसाय से रहित ज्ञान। (तात्त्वार्थ सूत्र, १/१, वृ० ७)

* जं जाणदि तं णाणं-जो जानना होता है, वह ज्ञान है।
* पदार्थावबोध।
* विशेषावबोध, विशेषग्राहि।
* सविशेष जानना।
* स्वसंवेदन रूप।
* भूतार्थ प्रकाशक ज्ञान।
* तत्त्वार्थ उपलम्भक, तत्त्वप्रकाशन।
* सामान्य-विशेष को ग्रहण करने वाला।
* जीव शक्ति।
* साकार रूप का जानना।
* तत्त्वतो ज्ञायते येन तज्ज्ञानम्। ज्ञायन्ते परिच्छिद्यन्ते।
* द्रव्य-पर्यायविषयक बोध।
* ज्ञातिर्ज्ञानम्।
* शास्त्रावबोध
* हेयोपादेय-वस्तुविनश्चय बोध।

ज्ञानाद्विना न सद्वाक्यं ज्ञानं नैराश्यमञ्चतः।
तस्मान्नमो नमोहाय जगनातिवर्तिने।। (वीरो० २०/२४)
यज्ज्ञानमस्त-सकलप्रतिबन्धभावाद् व्याप्नोति विश्वगपि विश्व भवांश्च भावान् (वीरो० २०/२५)

* विशिष्ट ग्रहण
* स्वार्थ निर्णयात्मक।
* विकल्पाभाव रूप बोध।

ज्ञानं (सम्य० ८४) ज्ञानस्य (सम्य० ४१) ज्ञाने-(सम्य० १२१)

ज्ञानकर्मन् (नपुं०) बोधक कर्म।

ज्ञानकाण्डं (नपुं०) ज्ञान समूह, आत्मज्ञान, वेदज्ञान, ब्रह्मज्ञान।

ज्ञानक्रिया (स्त्री०) जानने का उपक्रम।

ज्ञानकुशीलः (पुं०) ज्ञानाराधना विमुख, ज्ञानाचार की आराधना से रहित।

ज्ञानकेन्द्र (नपुं०) ज्ञान का खजाना।

ज्ञानकौमुदी (स्त्री०) ज्ञानप्रभा।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ज्ञानकृत (वि०) जानकर किया गया।

ज्ञानगत (वि०) बोधगत, जाना गया।

ज्ञानगम्य (वि०) समझने योग्य, अनुभव करने योग्य।

ज्ञानगुणप्रशस्तिः (स्त्री०) वस्तु स्वरूप का गुणगान। (वीरो० १७/२१)

ज्ञानचक्षुस् (नपुं०) बौद्धिक दृष्टि, मन की दृष्टि।

ज्ञानचिन्तनं (नपुं०) बोधानुभव, आत्म-चिन्तन, आत्मा के विषय में सोचना।

ज्ञानचेतना (स्त्री०) शुद्धात्मानुभूति, वीतरागता; शुद्धोपयोग। चेत्यते अनुभूयते उपयुज्यते इति चेतना तस्य कर्मफल ज्ञानचेतना (सम्य० १३४) स्वरूपाचरणं भेद विज्ञान ज्ञान चेतना। शुद्धोपयोगनामानि कथितानि जिनागमे।। (सम्य० १४३)

* केवल ज्ञान का अनुभव करना।
* प्राणों से रहित केवल एकमात्र ज्ञान का अनुभव।
* कृतकृत्य चेतन स्वभाव का अनुभव।
* किञ्च सर्वत्र सद्दृष्टेर्नित्यं स्याज्ज्ञान चेतना, अविच्छिन्नप्रवाहेण यद्वाऽखण्डैकधारया।। (सम्य० १३३)

ज्ञानतत्त्वं (नपुं०) आत्मज्ञान, यथार्थज्ञान, सम्यग्ज्ञान।

ज्ञानतपस् (नपुं०) उत्कृष्ट तप, ज्ञान/बोधक जन्य तप।

ज्ञानतापस (वि०) ज्ञान परक तपस्या करने वाला।

ज्ञानदः (पुं०) शिक्षक, गुरु, अध्यापक।

ज्ञानदा (स्त्री०) सरस्वती, मां भारती।

ज्ञानदानं (नपुं०) चार प्रकार के दान में एक दान।

ज्ञानदुर्बल (वि०) ज्ञानाभाव, ज्ञान की कमी।

ज्ञाननयः (पुं०) ज्ञान माहात्म्य का उपदेश, ज्ञान की प्रधानता वाला विचार।

ज्ञाननिश्चयः (पुं०) बोध का स्थिरीकरण, ज्ञान की स्थिरता।

ज्ञान निरूपणं (नपुं०) ज्ञान विवेचन। (जयो० २३/७२)

ज्ञाननिष्ठ (वि०) आत्मज्ञान प्रवीण।

ज्ञानपर (वि०) ज्ञानवान, ज्ञान युक्त।

मुनिः कोपीन वासास्स्यान्नग्नो वा ध्यान तत्परः।
एवं ज्ञानपरो योगी ब्रह्म भूयाय कल्पते।। (दयो० वृ० २४)

ज्ञानपण्डितः (पुं०) सम्यग्ज्ञान से परिणत जीव, 'पञ्चविधज्ञान-परिणतो ज्ञानपण्डितः' (भ०आ०टी० २५)

ज्ञानपण्डितमरणं (नपुं०) ज्ञान परिणत जीव का मरण।

ज्ञानपथं (नपुं०) ज्ञानमार्ग।

ज्ञानपरीषहजयः (पुं०) श्रुतज्ञान के प्रति अभिमान।

ज्ञानपुलाकः (पुं०) अतिज्ञान युक्त, ज्ञान वाला साधु, ज्ञानाश्रय युक्त होता हुआ भी चारित्रहीन होना: 'स्खलितादिभिर्ज्ञानपुलाकः'

ज्ञानप्रमाणं (नपुं०) ज्ञान का प्रमाण, आत्मा का अस्तित्व।

ज्ञानप्रवादः (पुं०) पांचों ज्ञान का विचार, जिस ग्रन्थ में पांचों ज्ञान का विचार हो, ज्ञान प्ररूपणा वाला पूर्वग्रन्थ।

ज्ञानप्रवृत्तिः (स्त्री०) ज्ञानधारक।

सर्वेऽपि प्राणिनोऽस्माभिः सम ज्ञानप्रवृत्तयः।
अयं शत्रुरयं बन्धुरित्यज्ञानमयी हि धीः।। (हितसंपादक वृ० ५८)

ज्ञानशक्तिः (स्त्री०) वस्तु स्वरूप के ज्ञान का कथन।

ज्ञानबालः (पुं०) ज्ञान से रहित। 'वस्तुयाथात्म्यग्राहिज्ञानन्यूना ज्ञानबालाः' (भ०आ०टी० २५)

ज्ञानबोधिः (स्त्री०) ज्ञान की प्राप्ति। 'बोधनं बोधिः जिनधर्मलाभः। ज्ञानबोधिः-ज्ञानावरण-क्षयो पशमसम्भृता ज्ञानप्राप्तिः।

ज्ञानमदः (पुं०) ज्ञान अहंकार, विद्यामद, श्रुत के प्रति मद।

ज्ञानमय (वि०) ज्ञानयुक्त, ज्ञान सहित। 'येषां स्थितिर्ज्ञानमयैककल्पा'

ज्ञानमयी (वि०) ज्ञानयुक्त। (सम्य० ४०) (भक्ति० २)

ज्ञानमाह्वयन्त (वि०) ज्ञान का निरूपण करने वाला (जयो० २३/७२)

ज्ञानमूर्तिः (स्त्री०) ज्ञानप्रतिमा (दयो० १/४)

ज्ञानयज्ञः (पुं०) अध्यात्मवेत्ता, तत्त्वज्ञ।

ज्ञानयोगः (पुं०) ज्ञान साधन, आत्मानुभूति का उपयोग, शुद्धज्ञानोपयोग।

ज्ञानयोग्य (वि०) जानने योग्य, ज्ञाप्य। (जयो० वृ० २/६५)

ज्ञानवत् (वि०) ज्ञानी, शास्त्रज्ञ, ज्ञाप्य। (जयो० वृ० २७/४६)

ज्ञानवती (वि०) वेदिकी, वेदिनी, ज्ञानयुक्ता। (जयो० वृ० १४/९)

ज्ञानवान् (वि०) ज्ञान युक्त, ज्ञानी, शास्त्रज्ञ। पिशितस्य दयाधीनमानसो ज्ञानवानौ। (सुद० १२९)

ज्ञानवाञ्जनः (पुं०) ज्ञानी, विज्ञ। (जयो० २/६५)

ज्ञानविधायिन् (वि०) ज्ञान सहित, ज्ञानपूर्वक। 'यतो नहि ज्ञानविधायिकर्मकर्तुं तदा प्रोत्सहतेऽस्य नर्म।। (सम्य० ४१)

ज्ञानविभूषण (वि०) ज्ञानयुक्त, ज्ञान सहित।

ज्ञानविभूषणात्मक (वि०) ज्ञान से परिमंडित।

ज्ञानविभूषात्मक (वि०) ज्ञानरूप आभूषण युक्त। 'लब्ध्वा ज्ञानविभूषणात्मकतया भूरामलः संभवेत्। (मुनि० ३३)

ज्ञानविराधना (स्त्री०) ज्ञानापलाप, ज्ञान का प्रतिकूल आचरण।

ज्ञान वृत्तात्मन् (पुं०) ज्ञान युक्त आत्मा। (सम्य० ५३)

ज्ञानशास्त्रं (नपुं०) १. ज्योतिषशास्त्र, नैमित्तिक शास्त्र। २. आत्मज्ञान सम्बंधी ग्रन्थ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ज्ञानसमयः (पुं०) ज्ञानसमय, संशय, विमोह और विभ्रम रहित, निश्चयात्मक बोध, ज्ञानागम।

ज्ञानसरोवरः (पुं०) ज्ञान तडाग, ज्ञान-ध्यानरत। स्नानं ज्ञानसरोवरे यतिपतेर्वांसांसि सर्वा दिशः। (मुनि० २०)

ज्ञानसाधनं (नपुं०) आत्मज्ञान का साधन।

ज्ञानस्वरूप (पुं०) ज्ञानवान् युक्त आत्मा, सचेतनात्मा का लक्षण। सचेतनाचेतनभेद भिन्नं ज्ञानस्वरूपं च रसादिचिह्नम्। (वीरो० १४/२५)

ज्ञानस्वभावः (पुं०) ज्ञानात्मक परिणाम।

ज्ञानाकारः (पुं०) ज्ञान स्वरूप।

ज्ञानाचारः (पुं०) वस्तु के यथार्थ स्वरूप की परिणति।

ज्ञानात्मन् (वि०) सर्ववित्, सर्वज्ञायक। (वीरो० १३/२८)

ज्ञानातिचारः (पुं०) ज्ञान में दोष।

ज्ञानादरः (पुं०) ज्ञानी, वेत्ता। (जयो० २७/४५)

ज्ञानाधारः (पुं०) ज्ञानाश्रय, आत्माधीन।

ज्ञानाधीनः (पुं०) ज्ञानाश्रय।

ज्ञानानुत्पादः (पुं०) मूर्ख, मूढ।

ज्ञानामूर्तिः (वि०) शुद्धात्म का अनुभव।

ज्ञानान्तर्गत (वि०) ज्ञान के अन्दर। यज्ज्ञानान्तर्गतं भूत्वा त्रैलोक्यं गोष्पदायते। (दयो० २/३)

ज्ञानाराधना (स्त्री०) जीवादि तत्त्वों का अधिगम, श्रुतज्ञान का निरतिचार पालन।

ज्ञानार्णवः (पुं०) ज्ञानार्णव नामक ग्रन्थ, जिसके प्रणेता शुभचंद्र हैं। (जयो० २८/४८)

ज्ञानार्णवोदयः (पुं०) ज्ञानार्णव नामक ग्रन्थ का उदय। ज्ञानार्णवस्य ज्ञानसमुद्रस्य उदयाय शुभचन्द्रता शोभनचन्द्रमस्त्वन् आसीत्। ज्ञानार्णवोदयासीदमुष्य शुभचन्द्रता। योगतत्त्व-समग्रत्वभागजायत सर्वतः।। (जयो० २८/४८)

ज्ञानामृतं (नपुं०) ज्ञानात्म रूप अमृत। ज्ञानामृतं भोजनमेकमस्तु सदैव कर्मक्षपणे मनस्तु। (सुद० १२७)

ज्ञानावरणं (नपुं०) ज्ञान के आवारक कर्म। ज्ञानाच्छादन, (तत्त्वार्थ मूल० ८/४, वृ० १२३)

* आव्रियतेऽनेनावृणोतीति वावरणं, ज्ञानस्यावरणं ज्ञानावरणम्।

ज्ञानावरणीयं (नपुं०) ज्ञान के आवरक कर्म, ज्ञानाच्छादन। 'ज्ञानमावृणोतीति ज्ञानावरणीयम्' (धव० १३/२०६)

ज्ञानावरणीय-वेदना (स्त्री०) ज्ञानाच्छादन की रूप कर्म द्रव्य।

ज्ञानोपयोगः (पुं०) सम्यग्ज्ञान की प्रवृत्ति रूप उपयोग। साकार पदार्थ विषयक उपयोग। 'सागारो णाणोवजोगो' (धव० ११/३३४) 'ज्ञानभावनायां नित्ययुक्तता ज्ञानोपयोगः'

ज्ञानिन् (वि०) [ज्ञान+इनि] बुद्धिमान्, प्रज्ञावंत, विज्ञ, प्रतिभाशाली। 'न हि किञ्चिदपि निसर्गादगोचरं ज्ञानिनां भवति' (वीरो० ४/३४) 'प्रकुरु ज्ञानि भ्रातः' (सुद० ११४)

ज्ञानी (स्त्री०) वेत्ता, प्रतिभाशाली। (सुद० ४/११) सच्चिदानन्द-मात्मानं ज्ञानी ज्ञात्वाऽङ्गतः पृथक्।

ज्ञानीचित्तः (पुं०) विज्ञहृदय। (जयो० २६/७७)

ज्ञानैकता (वि०) ज्ञान में तन्मयता। (भक्ति० २९)

ज्ञानैकविलोचनं (नपुं०) ज्ञानमात्र से अवलोकन। (वीरो० ४/३६)

ज्ञापक (वि०) [ज्ञा+णिच्+ण्वुल्] संकेतक, सूचना देने वाला।

ज्ञापकः (पुं०) शिक्षक, अध्यापक।

ज्ञापकं (नपुं०) व्यञ्जनात्मक नियम।

ज्ञापनं (नपुं०) [ज्ञा+णिच्+ल्युट्] सूचना, संदेश, प्रसारण, घोषणा।

ज्ञापय् (सक०) संकेत करना, सूचित करना। ज्ञापयामास (जयो० १०५)

ज्ञापित (वि०) [ज्ञा+णिच्+क्त] सूचित, घोषित, उद्घोषित किया गया।

ज्ञाप्य (वि०) जानने योग्य, ज्ञानयोग्य। (जयो० २/६५) 'ज्ञाप्य-माप्यमथ हाप्यमप्यदः'

ज्ञायक (वि०) जानने वाला, त्रैकालविषयक ज्ञाता। 'ज्ञायको ज्ञो वा' (जैन०ल० ४७७) (सम्य० १५२)

ज्ञायकशरीरं (नपुं०) तीन काल विषयक ज्ञाता का शरीर, सशरीर सिद्ध शिलागतशरीर, निषीधिकागत शरीर-'ज्ञातुर्यच्छरीरं त्रिकालगोचरं तत् ज्ञायकशरीरम्' (स०सि० १/५)

ज्ञायक शरीर-अर्हन् (पुं०) अर्हत्-प्राभृत के ज्ञाता के त्रिकाल-सम्बंधी शरीर।

ज्ञायकशरीरद्रव्यकृतिः (स्त्री०) त्यक्त शरीर वाले कृति प्राभृत के ज्ञाता का शरीर।

ज्ञेय (वि०) जानने योग्य, ज्ञान योग्य, ज्ञाप्य। (जयो० २८/३९) सामान्य-विशेषात्मक वस्तु। (सम्य० १५२) 'यदस्ति वस्तूदितनामधेयं ज्ञेयम्' (वीरो० २०/१९) जो कोई भी वस्तु है, वह ज्ञेय है।

ज्ञेयाकारः (पुं०) प्रतिबिम्ब के आकार से परिणत, ज्ञानयोग्य-आकृति।

ज्ञेयात्मन् (पुं०) ज्ञेय स्वरूप।

झ

झः (पुं०) चवर्ग का चौथावर्ण, इसका उच्चारण स्थान तालु है।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

झः (पुं०) [झट्+ड] झंझावात, झन झन, खन खन।

झग-झगायति-चमकना, दमकना, चमचमाना।

झगति (अव्य०) झटिति, शीघ्र, तुरन्त। (जयो० ६/७२, समु० ७/१५)

झगिति देखो ऊपर।

झङ्कारः (पुं०) झन-झनाहट, भिन भिनाना।

झङ्कृतं (नपुं०) झन-झनाहट, खन खनाहट। कलकृतामितिझंकृत-नूपुरं क्वणित-किङ्किणी-कङ्कृत-कङ्कणम्। (वीरो० ६/२९)

झङ्कारिणी [झङ्कार+इनि+ङीप्] भागीरथ, गंगानदी।

भङ्कृतिः (स्त्री०) [झम्+कृ+क्तिन्] खन-खनाहट, झन-झनाहट।

झञ्झनं (नपुं०) [झञ्झ्+ल्युट्] झनझनाना, खनखनाना, आभूषणों का शब्द विशेष।

झञ्झा (स्त्री०) [झमिति अव्यक्तशब्दं कृत्वा झटिति वेगेन वहति-झम्+झट्+ड+टाप्] तूफान, आंधी, हवा और पानी।

झञ्झानिलः (पुं०) तूफान, आंधी, अन्धड़, तेज हवा, गतिवान् चक्रावात।

झञ्झानिलोऽपि किं तावत्कम्पयेन्मेका (वीरो० १०/३६)

झञ्झावातः (पुं०) तूफान, आंधी, अन्धड़, तीव्रगामी हवावेग। (वीरो० १०/१३) (जयो० वृ० १५/२१)

झञ्झावायु (स्त्री०) तीव्रवेग युक्त हवा, तूफान, आंधी, अन्धड़।

झटिति (अव्य०) शीघ्र, तुरन्त, जल्दी से।

झणझणं (नपुं०) [झणत+डाच्] झनझनाहट।

झणझायित (वि०) झन-झन करता हुआ, खन-खनाहट युक्त।

झणिका (स्त्री०) शोषिका। (जयो० २/१३३)

झणत्कारः (पुं०) झनझलाहट।

झप्पनं (नपुं०) झोंखा। (जयो० वृ० २४/११) हवा का प्रहार।

झम्पः (पुं०) छलांग, उछल कूद।

झम्पा (स्त्री०) [झम्+पत्+टाप्] छलांग, कूंद, गिरना, उछलना।

झम्पाकः (पुं०) बन्दर, लंगूर।

झरः (पुं०) झरना, प्रपात, निर्झर, जलप्रपात, प्रवाह। (जयो० १४/९३)

झरदुत्तरल (वि०) झरती हुई चंचल, झझमनुकुर्वती उत्तरले (जयो० २६/६९)

झरा (स्त्री०) निर्झर, झरना।

झर्झरः (पुं०) [झर्झ+अरन्] झांझ, मञ्जीरा. (जयो० १२/७९, १०/१९)

झर्झरिन् (पुं०) शिव।

झलज्झला (स्त्री०) [झलज्झल इत्यव्यक्तः शब्दः] झड़ी, फड़फड़ाहट।

झलंझलावशी (स्त्री०) झंझावात के आधीन। झलंझलावशीभूता समेति व्येति या ध्वजा। (वीरो० १०/१३)

झला (स्त्री०) लड़की, धूया, पुत्री, कन्या।

झल्लः (पुं०) मल्लयोद्धा।

झल्लकं (नपुं०) [झल्ल+कन्] झांझ मञ्जीरा।

झल्लरी (स्त्री०) [झर्झ्+अरन्+ङीष्] झांझ, मंजीरा, एक वाद्य विशेष चर्म से मढा हुआ गोल आकार वाला वाद्य। झल्लरी चर्मावनद्ध-विस्तीर्ण-वलयाकारा आतोद्यविशेषरूपा।

झल्लरीसंस्थानं (नपुं०) झालर के आकार वाला लोक, मध्यलोक।

झल्लिका (स्त्री०) १. उबटन, २. प्रभा, कान्ति, चमक।

झषः [झष्+अच्] मछली, मत्स्य। (दयो० २/२) (जयो० २१/६१) मगरमच्छ, मीन (वीरो० ७/११) २. गर्मी, ताप, सन्ताप।

झषकेतनः (पुं०) कामदेव, मदन।

झषकेतुः (पुं०) कामदेव।

झषता (वि०) मछलीपन। झषस्य च शफरता, रलयोरभेदात् सफलता झषता वा मुतः? (जयो० वृ० ९/१४)

झषयुग्मः (पुं०) मीन युगल, स्वप्न में दृश्य मछली का जोड़ा। 'विनोदपूर्णो झषयुग्मसम्मितिः' (वीरो० ४/५९)

झषावर्तः (पुं०) मत्स्योद्वृत्त, आचार्य वन्दनादि के लिए घूमकर जाना।

झषाशनः (पुं०) सूंस।

झाङ्कृतं (नपुं०) [झङ्कृत्+अण्] १. पायजेब, झांझन। २. छपधप शब्द।

झाटः (पुं०) [झट्+घञ्] १. पर्णशाला, लतामण्डप। २. कान्तार।

झिटिः (स्त्री०) [झिम्+रट्+अच्+ङीष्] झाड़ी विशेष।

झिरिका (स्त्री०) झींगुर।

झिल्लिः (स्त्री०) १. झींगुर, २. वाद्य यन्त्र।

झिल्लिका (स्त्री०) [झिल्लि+कन्+टाप्] १. झींगुर, २. दीप्ति, प्रभा, चमक।

झिल्ली (स्त्री०) झींगुर, दीपवर्तिका।

झीमका (स्त्री०) झींगुर।

झुण्डः (पुं०) वृक्ष, झाड़ी। (सुद० १०१)

झुषिरः (पुं०) तृण शय्या।

झोषः (पुं०) एक गणित, जिस राशि के मिलाने पर भागहार सम होता है।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ञ

ञः चवर्ग का अंतिमवर्ण, इसका उच्चारण स्थान तालू और नासिका है।

ट

टः (पुं०) यह टवर्ग का प्रथम वर्ण है, इसका उच्चारण स्थान मूर्द्धा है। इसके उच्चारण में तालु से जिह्वा लगानी पड़ती है।

टका (स्त्री०) पैसा

टकटकायते -देखते रहना (दयो० ८२)।

टङ्क (सक०) कसना, बांधना, ढकना, छिद्र करना।

टङ्कः (पुं०) [टङ्क+घञ्] १. चार मासे एक तोला, २. धातु का नियत मान। शिल्प (जयो० १७/५२) ३. सिक्का, असि, ४. टॉकी, ५. कुल्हाड़ी, कुठार। (जयो० . २४/१३६) ६. तलवार, असि, ७. टॉकी से काटा हुआ पत्थर। ८. क्रोध, अहंकार, गिरिगर्त। ९. सुहागा, खजाना, १०. म्यान, ११. पैर लात।

टङ्ककः (पुं०) चांदी का सिक्का, रजत मुद्रा टंकण।

टङ्ककृत चिह्न (नपुं०) चन्द्रचिह्न। (जयो० वृ० १५/५२)

टङ्कशाला (स्त्री०) टकसाल, टंकणयन्त्र।

टङ्कणं (नपुं०) [टङ्क+ल्युट्] १. सुहागा, २. टांका, धातु का जोड़।

टङ्कणः (पुं०) अश्व विशेष।

टङ्कणक्षारः (पुं०) सुहागा।

टङ्कणयन्त्रं (नपुं०) छापाखाना, छापने का यन्त्र।

टङ्कानकः (पुं०) ब्रह्मदारु, शहसूत।

टङ्कारः (पुं०) धनुष की डोरी की ध्वनि, चीत्कार, चीख।

टक्कारपूरित (वि०) गर्जन संभृत। (जयो० ३/११)

टङ्कारिन् (वि०) [टङ्कार+इनि] ध्वनि करने वाला, फूत्कार को ध्वनि वाला शब्द, झंकार करने वाला।

टङ्किका (स्त्री०) [टङ्क+कन्+टाप्] कुल्हाड़ी, कुठार, टांकी। (जयो० ६/६०)

टङ्कोट्टङ्कः (पुं०) १. टांकी, प्रहार, २. ग्रावदारणास्त्र।

टंगः (पुं०) कुठार, कुल्हाड़ी, कुदाल।

टङ्गणः (पुं०) सुहागा।

टङ्गा (स्त्री०) टांग, लात, पैर।

टङ्गिनी (स्त्री०) सुहागा।

टणः (पुं०) टंकार, घंटे की ध्वनि।

टनः देखो ऊपर।

टहरी (स्त्री०) [टहेति शब्दं राति रा+क+ङीप्] एक वाद्ययन्त्र, परिहास।

टाङ्कारः (पुं०) [टङ्कार+अण्] झनझनाहट, ध्वनि।

टिक् (अक०) टिकना, चलना-फिरना।

टिटिभः (पुं०) पक्षी, टिटिहिरी पक्षी।

टिप्पणी (स्त्री०) वृत्ति, टीका, व्याख्या, भाष्य, वार्तिक।

टिप्पिणिका (स्त्री०) वृत्ति, व्याख्या। भाष्य। (जयो० वृ० १८/६१)

टीक् (अक०) टहलना, चलना-फिरना।

टीका (स्त्री०) [टीक्यते गम्यते, ग्रन्थार्थो] व्याख्या, वृत्ति। टु-टवर्ग। (जयो० वृ० १/३९) (जयो० वृ० ३/३६)

टुण्टुक (वि०) [टुण्टु इति अव्यक्त शब्दं कायति] १. छोटा, अल्प, २. दुष्ट, क्रूर।

टुता (स्त्री०) टवर्ग की पालनकर्त्री। टवर्गस्य प्रतिपालनकर्त्री (जयो० २१/७८)

टेकः (पुं०) कलाधर, गीत की पुनरावृत्ति। टध्वनौ का आत्मवान्। (जयो० ५/३२)

टोलगतिवन्दनं (नपुं०) उछल कूदकर वंदना।

ठ

ठः (पुं०) टवर्ग का दूसरा वर्ण, इसका उच्चारण स्थान मूर्द्धा है।

ठः (पुं०) एक ध्वनि, ठन ठन की ध्वनि।

ठः ठः (पुं०) ठकार, मन्त्र शास्त्र में प्रयुक्त बीजाक्षर। (जयो० १६/८२) 'ठकारौ वर्णौ विलक्षतस्तराम् अतिशयेन शुशुभते' (जयो० वृ० १६/८२)

ठकः (पुं०) दिवालिया। (दयो० ११८)

ठकत्व (वि०) ठक, ठक की ध्वनि वाला। (सुद० १/३४)

ठक्कुरः (पुं०) सम्मान सूचक शब्द, पूज्य शब्द।

ठगः (पुं०) दिवालिया, ठग। (दयो० ११८)

ठालिनी (स्त्री०) करधनी।

ड

डः (पुं०) टवर्ग का तृतीय वर्ण, इसका उच्चरण स्थान मूर्द्धा है। (जयो० १४/८४)

डमः (पुं०) [ड+मा+क] डोम।

डमरः (पुं०) झगड़ा, दंगा, भगदड़, ताडन, मार।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

डमरक (वि०) प्रताड़न करने वाला, झगड़ने वाला।

डमरु (नपुं०) एक वाद्य विशेष, डुगडुगी एक हाथ में पकड़ कर हिलाने पर डुग-डुग शब्द निकलता है। यह बीच में पतला और दोनों ओर एक सा गोल, चर्म से आच्छादित, दोनों ओर रस्सियों के बंध से युक्त, उन्हीं रस्सियों से अग्रभाग में गांठ होती है, जो हाथ की मुट्ठी से बीच में पकड़कर जब हिलाया जाता है, तब डुगडुग शब्द निकलता है।

डमरुकमुद्रा (स्त्री०) आसन की एक स्थिति।

डम्ब (सक०) फेंकना, भेजना, आदेश देना, देखना।।

डम्ब (वि०) अनुकरण करना, तुलना करना।

डम्बर (वि०) [डम्ब्+अरन्] १. प्रसिद्ध, विख्यात। २. समवाय, संग्रह, संचय, समूह, ढेर। ३. सादृश, समानता, ४. अहंकार, गर्व।

डम्भ् (सक०) इकट्ठा करना, एकत्रित करना, संग्रह करना।

डयनं (नपुं०) १. उड़ान, २. पालकी, डोली।

डवित्थः (पुं०) काठ का बारहसिंहा।

डाकिनी (स्त्री०) पिशाचिनी, भूतनी।

डाङ्कृतिः (स्त्री०) [डाम्+कृ+क्तिन्] घण्टी बजने की ध्वनि।

डामर (वि०) [डमर+अण्] १. डरावना, भयावह, भयानक। २. दंगा करने वाला।

डायस्थितिः (स्त्री०) बन्ध स्थिति का एक रूप, जहां स्थिति स्थान में स्थित होकर उसी प्रकृति की उत्कृष्ट स्थिति को बांधना।

डालिमः (पुं०) दाडिम, अनार।

डाहलः (पुं०) एक देश विशेष।

डिङ्गरः (पुं०) १ सेवक, २. ठग, धूर्त।

डिण्डिमः (पुं०) [डिडीति शब्दं नाति डिण्ड+मा+क] एक छोटा ढोल। ढिंढोरी-'जिनवन्दनवेदिडिण्डिमः' (वीरो० ७/६) डिण्डिममानक प्रस्थान भेरी (जयो० १३/४)

डिण्डीरः (पुं०) १. कवच, २. झाग।

डिमः (पुं०) दश प्रकार के रूपकों के भेद में एक भेद।

डिम्बः (पुं०) [डिब्+घञ्] १. छोटा बच्चा, २. दंगा, ३. पिण्ड, ४. अण्डा।

डिम्बयुद्धं (नपुं०) छोटी लड़ाई।

डिम्बिका (स्त्री०) [डिम्ब्+ण्वुल्+टाप्] १. कामुक स्त्री २. बुलबुला।

डिम्भः (पुं०) [डिम्भ्+अच्] छोटा बालक। १. शेरनी का शावक।

डिम्भकः (पुं०) १. छोटा बालक। २. जानवर का शावक।

डी (सक०) उड़ाना, भगाना।

डीन (भू०क०कृ०) उड़ा हुआ।

डीनं (नपुं०) पक्षी उड़ान।

डुण्डुभः (पुं०) विषहीन सर्प।

डुलिः (स्त्री०) कछवी, छोटा कूर्म।

डोमः (पुं०) एक आदिवासी जाति।

ढ

ढः (पुं०) टवर्ग का चतुर्थ वर्ण, इसका उच्चारण स्थान मूर्द्धा है।

ढक्का (स्त्री०) [ढक इति शब्देन कार्यति] ढोल, नक्कार, नगाड़ा-भेरी, (जयो० २२/६१)

ढक्काढक्कारः (पुं०) ढक्का की आवाज, भेरी का प्रचण्ड गर्जन। (जयो० ३/१११)

ढक्कानिनादः (पुं०) युद्धवादित्र का घोष। (जयो० ८/६२)

ढड्ढरं (नपुं०) उच्च स्वर से उच्चारण।

ढामरा (स्त्री०) हंसनी।

ढालं (नपुं०) १. म्यान, कवच, आवरण। २. एक अध्याय।

ढालिन् (पुं०) ढालधारी योद्धा।

ढुण्ढिः (पुं०) गणपति।

ढोलः (पुं०) ढोल, मृदङ्ग, बड़ी ढपली।

ढौक् (सक०) जाना, पहुंचना।

ढौकनं (नपुं०) भेंट, उपहार।

ण

णः (पुं०) टवर्ग का पञ्चम वर्ण, इसका उच्चारण स्थान मूर्द्धा है। प्राकृत भाषा में इसका प्रयोग मिलता है। जो 'न' को 'ण' के रूप में परिवर्तित होता है।

आचार्य ज्ञानसागर के जयो० दय महाकाव्य के १९वें सर्ग में मन्त्रविधि के साथ 'ण' का प्रयोग है। 'णमोत्थु' (जयो० १९/७६) णमो परमोहि जिणाणं (जयो० २१/६०)

णः (पुं०) णकार, ज्ञान वेदिरङ्गुलिमुद्राया बुधैः संस्कृतभूतले णकारो निर्णये ज्ञाने इति च विश्वलोचनः। (जयो० २६/४४)

णकारः (पुं०) 'ण' वर्ण। णकारो निर्णय ज्ञाने इति विश्व (जयो० २६/४४)

णगण (पुं०) एक गण मात्रिक गण।

✧✧✧

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

Serving JinShasan
146907
gyanmandir@kobatirth.org

न्यू भारतीय बुक कॉरपोरेशन
5824, शिव मंदिर के पास, न्यू चन्द्रावल,
जवाहर नगर, दिल्ली - 110007
दूरभाष : 91-11-23851294, 23850437
ई मेल : newbbc@indiatimes.com

ISBN 81-8315-048-9
9788183150484

For Private and Personal Use Only